

# शान्तकुटी-वैदिकग्रन्थमाला

सा च

विश्वबन्धु-शास्त्रिणा

कर्मिष्ठसंघटकानां लम्बितप्रौढिविशेषाणामुपत्रिंशानां विदुषां सहयोग-

तश्च परामर्शकसंघटकानां नानादेशीयानामुपत्रिंशानां

विपश्चिदपश्चिमानां सन्निर्देशतश्च

संपादिता

अयं च तस्यां

४थो ग्रन्थः

लाभपुरे

विश्वेश्वरानन्द-वैदिक-शोध-संस्थानेन प्रकाशितः

२००२ वि०

## THE SĀNTAKUTĪ VEDIC SERIES

EDITED

With the co-operation of a Staff Organisation of about thirty specially  
Trained Scholars and under the general guidance  
of an inter-national Advisory Board

By

**VISVA-BANDHU ŚĀSTRĪ, M.A., M.O.L.**

**VOLUME IV**

**LAHORE**

**Published by the V. V. R. Institute**

**1945**

Acc. No. .... III

Date. .... 25-8-46

Call No. 896.2.206. Fa II Sap



# A VEDIC WORD-CONCORDANCE

being a *universal vocabulary register* of about **500** Vedic works, with  
complete textual reference and critical commentary, bearing on  
phonology, accent, etymo-morphology, grammar, metre,  
text-criticism, and ur-Aryan philology

*In five Volumes, sub-divided into fourteen Parts*

By

VISVA-BANDHU ŚĀSTRĪ

Director, the Viśveśvarānanda Vedic Research Institute and the  
D. A.-V. Collège Research Department, formerly, Principal,  
Dayānanda Brāhma-Mahāvidyālaya, Lahore

*With the immediate assistance of*

RĀMĀNANDA ŚĀSTRĪ and AMARA NĀTHA ŚĀSTRĪ

Volume III (UPANIṢADS)

PART I

Introduction, अ-न

Pages I—XLII, 1—468

LAHORE

Published by the V. V. R. Institute

1945

# वैदिक-पदानुक्रम-कोषः

स च

संहिताब्राह्मणोपनिषत्सूत्रवर्गीयोपपञ्चशत [५००] वैदिकग्रन्थस्थ-सकलपदजात-संग्रहस्वरूपः  
प्रतिपदप्रतियुक्त-श्रुतिस्थलसर्वस्व-निर्देशैः समवेतश्च यथासंगत-तत्तन्मवीनपुराण-  
वेदाङ्गीयविचारसमन्वितटिप्पणैः सनाथितश्च

संभूय चतुर्दशखण्डात्मकैः पञ्चभिर्विभागैर्व्यूढश्च

सन्

दयानन्दब्राह्ममहाविद्यालयीयाचार्यपदप्रतिष्ठितपूर्वेण, विश्वेश्वरानन्दवैदिकशोधसंस्थानस्य  
च दयानन्दमहाविद्यालयीयाऽनुसंधानविभागस्य च संचालकेन

सता

विश्वबन्धु-शास्त्रिणा

रामानन्द-शास्त्रिणः ————— अमरनाथ-शास्त्रिणश्च

नान्तरीयेण साहाय्यकेन

संपादितः

३यो विभागः (औपनिषदः)

१मः खण्डः

भूमिका, अ-न

पृष्ठानि I—XLII, १—४६८

लाभपुरे

विश्वेश्वरानन्दवैदिकशोधसंस्थानेन प्रकाशितः

२००२ वि०

R. Sa 2 V. 03  
V. P. K. Vis

A to Na

Printed at the V. V. R. I. Press, Lahore.

First edition, first issue, 1945. Quality I, 375 Copies.

Price Rs. 30/- For Standing Subscribers Rs. 27/12/-.

( अधिकार-सर्वस्वं सुरक्षितम् )

लाभपुरस्थे वि. वै. शो. सं. मुद्रागृहे मुद्रितो बद्धश्च ।

प्रथमं संस्करणम्, प्रथमः प्रकाशः, २००२ वि० । १मा कोटिः, ३७५ प्रतिकृतयः ।

मूल्यं रु. ३०-०-० । स्थिरग्राहकाणां कृते रु. २७-१२-० ।



Prepared and published under the patronage of the Central Government of India, the Provincial Governments of the Panjab, the United Provinces, Bombay and Madras, the Hyderabad, the Mysore, the Travancore, the Baroda, the Indore, the Kolhapur, the Sangli, the Patiala, the Nabha, the Sirmur, the Keonthal, the Jammu and Kashmir, the Jodhpur, the Bikaner, the Alwar and the Shahpura States, the Awagarh, the Vijayanagram and the Jammu Dewan Badri Nath Estates, the Panjab and the Calcutta Universities, the Vishveshvaranand, the Vishva-Bandhu, the Moolchand Khairatiram, the Mohini Thapar and the Chiranjit Lal Brothers Trusts and a large number of other donors and supporters, official as well as private.

*Specially recording, with appreciation, the considerable response which a number of individuals as well as institutions have made (cf. the extra leaf between Pages VI and VII) to the appeal issued for one lac of rupees to serve as the nucleus of Shri Swami Sarvadanand Memorial Foundation.*

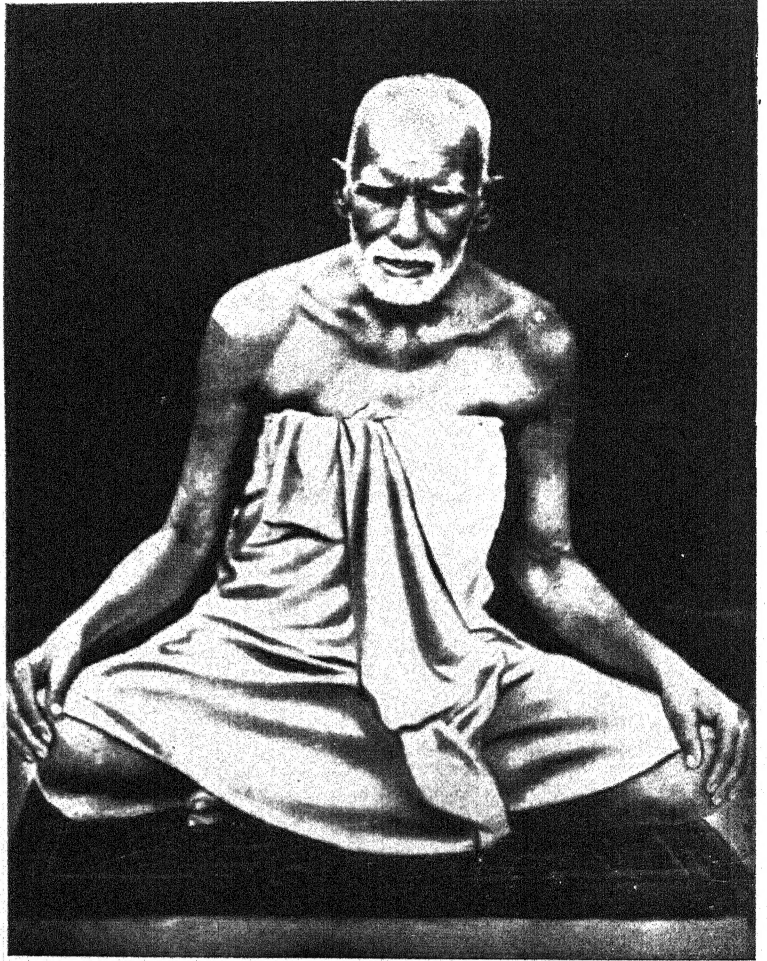
CENTRAL ANTHROPOLOGICAL  
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 3588.

Date 10 10 55.

Call No. R. 5a2v.03/v.14/v.15





स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानंद जी महाराज



# संस्कृत

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

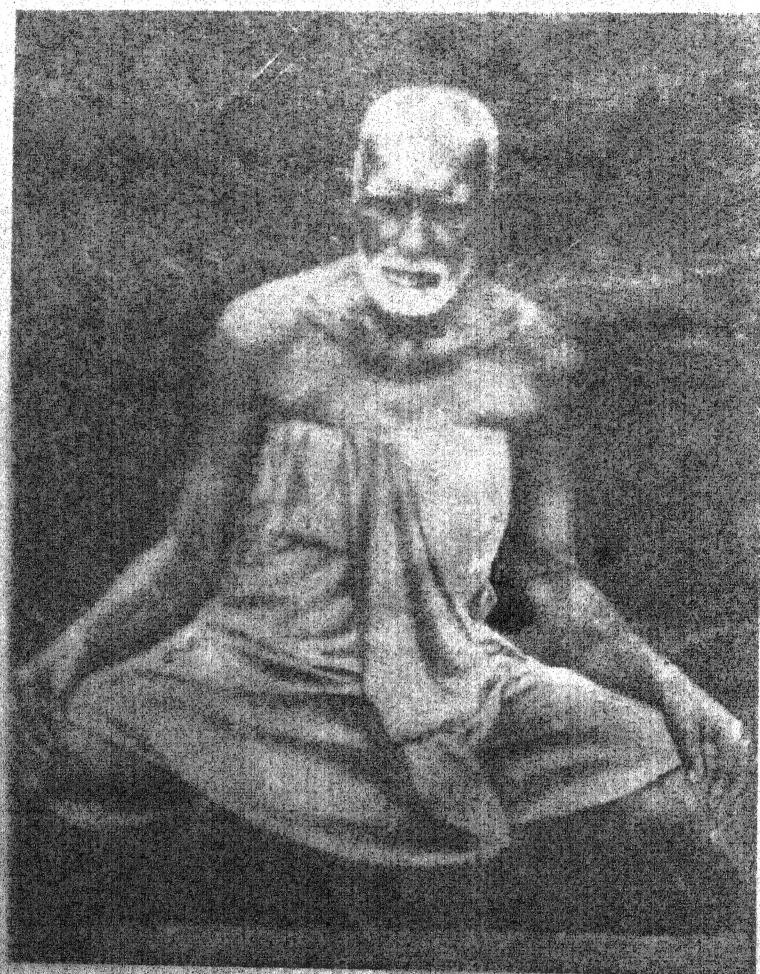
पृष्ठ संख्या

NANDA Ji

is ever been blessed

with and who was always a source of inspiration and a-  
wakening to me in my personal life and of help and  
encouragement in the matters concerning the  
V. V. R. I. organisation, of which he  
was one of the Founder Trustees  
and Executive Members.

V-B. S.



स्वर्गोप श्री स्वामी सर्वदास जी महाराज

# समर्पणम्

महात्मा सर्वदानन्दस् तपसेद्धो यतीश्वरः ।

वेदवेदाङ्गसंसेवो वेदान्तशान्तमानसः ॥ १ ॥

सामाजिककदाचार-संहार-कृतनिश्चयः ।

सत्यधर्मप्रचारात्म-लोकसेवा-दृढव्रतः ॥ २ ॥

सत्प्रेरणाभिराशीभिर् य आसीद् मुनिसत्तमः ।

अस्माकं च महामान्यः संस्थानस्य च पोषकः ॥ ३ ॥

तस्याऽस्तु अयं चिरस्मृत्यै पूजायै च मनस्विनः ।

वेदान्तविषयो ग्रन्थः श्रद्धया परयाऽर्पितः ॥ ४ ॥

यह वेदान्त-ग्रन्थ

अपने महामान्य तथा संस्थान के पोषक, वेदान्तनिष्ठ, यतिवर, पवित्रता व सरलता

की मूर्ति, निर्द्वंद्व, तपस्वी, दरिद्र-नारायण के परम भक्त, काली कंबली वाले,

सीधे-सादे साधु, सदा-हंसमुख परमहंस, महात्मा श्री

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की परम

पावनी, भव-तारिणी पुण्य-स्मृति में

सादर समर्पित ।



वि.-बं. शा.

To

The Memory of

**MAHĀTMĀ SHRĪ SWAMĪ SARVADĀNANDA JĪ,**

Who was one of the noblest souls this earth has ever been blessed with and who was always a source of inspiration and a-

wakening to me in my personal life and of help and

encouragement in the matters concerning the

V. V. R. I. organisation, of which he

was one of the Founder Trustees

and Executive Members.

V.-B. S.





# स्वामि-सर्वदानन्द-स्मारक के लिये संकल्पित दान की सूची

## (क) संरक्षकों द्वारा

|  |  |
|--|--|
| १. स्व. दी. व. राजा नरेन्द्रनाथ, लाहौर, रु० २५०० | १६. श्री मेहरचन्द महाजन, लाहौर, रु० १०००     |
| २. दी. व. कृष्णकिशोर, लाहौर, ,, २५००             | १७. रा. व. गंगासरन, लाहौर, ,, १०००           |
| ३. डा. सर गोकुलचन्द नारंग, लाहौर, ,, २५००        | १८. श्री ठाकुरदत्त शर्मा, लाहौर, ,, १०००     |
| ४. श्री रामलाल आनन्द, लाहौर, ,, २५००             | १९. डा. प्रेमनाथ, लाहौर, ,, १०००             |
| ५. श्री प्राणनाथ लांबा, लाहौर, ,, २५००           | २०. श्री खुशहालचन्द आनन्द, लाहौर, ,, १०००    |
| ६. श्री धनीराम भल्ला, लाहौर, ,, २५००             | २१. श्री मुकुन्दलाल अग्रवाल, लाहौर, ,, १०००  |
| ७. श्री देवीदास कपूर, लाहौर, ,, २५००             | २२. श्री योधराज, लाहौर, ,, १०००              |
| ८. रा. व. ईश्वरदास साहनी, नवांशहर, ,, २५००       | २३. कैप. डा. तुलसीदास, अमृतसर, ,, १०००       |
| ९. सरदार अमरसिंह, अमृतसर, ,, २५००                | २४. श्री हरिकृष्ण खन्ना, अमृतसर, ,, १०००     |
| १०. श्री दीवानचन्द विरमानी, लायलपुर, ,, २५००     | २५. श्री कर्मचन्द अग्रवाल, स्यालकोट, ,, १००० |
| ११. श्री कर्मचन्द थापर, कलकत्ता, ,, २५००         | २६. श्री शिवनारायण, आगरा, ,, १०००            |
| १२. श्री विशनदास बासिल, देहली, ,, २५००           | २७. श्री जुगलकिशोर विरला, देहली, ,, १०००     |
| १३. स्व. रा. व. मूलराज, लाहौर, ,, १०००           | २८. श्री टीकाराम, अलीगढ़, ,, १०००            |
| १४. डा. सर मनोहरलाल, लाहौर, ,, १०००              | २९. श्री महेशचन्द्र, खानेवाल, ,, १०००        |
| १५. बख्शी डा. सर टेकचन्द, लाहौर, ,, १०००         | ३०. श्री सीताराम गुजराल, रावलपिण्डी, ,, १००० |

योग रु० ४८०००

## (ख) सदस्यों द्वारा

|  |   |
|--|---|
| १. श्री मुनिलाल दुगल, अमृतसर, रु० ५००          | १९. महता रामचन्द शास्त्री, लाहौर रु० १००          |
| २. श्री सीताराम महाजन, लाहौर, ,, ५००           | २०. महता अमीचन्द, लाहौर, ,, १००                   |
| ३. श्री रामशंकर त्रिपाठी, कलकत्ता, ,, २५१      | २१. रा. व. दुर्गादास, लाहौर, ,, १००               |
| ४. श्री जमीअतराय महाजन, स्यालकोट, ,, २००       | २२. महाशय कृष्ण, लाहौर, ,, १००                    |
| ५. श्री देशराज महाजन, लाहौर, ,, १०१            | २३. श्री गोपालदास सोनी, लाहौर, ,, १००             |
| ६. श्री सुखदेव वर्मा, लाहौर, ,, १०१            | २४. भाई परमानन्द, लाहौर, ,, १००                   |
| ७. श्री मेहरसिंह, लाहौर, ,, १०१                | २५. श्री वेदव्यास, लाहौर, ,, १००                  |
| ८. श्री अमरनाथ चड्ढा, लाहौर, ,, १०१            | २६. रा. व. कैप. रामरत्नलाल भण्डारी, लाहौर, ,, १०० |
| ९. डा. गणेशीलाल अग्रवाल, लाहौर, ,, १०१         | २७. श्री गौरीशंकर महाजन, लाहौर, ,, १००            |
| १०. श्री दीपचन्द, मुज़फ्फरनगर, ,, १०१          | २८. श्री चन्द्रभान बजाज लाहौर, ,, १००             |
| ११. श्री देवीसहाय, मुज़फ्फरनगर, ,, १०१         | २९. श्री बलजित् शास्त्री, अमृतसर, ,, १००          |
| १२. श्री विश्वप्रिय शास्त्री, बल्लभगढ़, ,, १०१ | ३०. श्री विक्रमादित्य, जेहलम, ,, १००              |
| १३. श्री बाबुराम, भरतपुर, ,, १०१               | ३१. डा. हीरालाल मरवाह, जेहलम, ,, १००              |
| १४. श्री शान्तिनाथ खल्लर, शिमला, ,, १०१        | ३२. डा. कुलभूषण, श्रीनगर, ,, १००                  |
| १५. श्री रूपलाल कपूर, लाहौर, ,, १००            | ३३. श्री जयकृष्ण नन्दा, श्रीनगर, ,, १००           |
| १६. बख्शी पुष्पोत्तमलाल, लाहौर, ,, १००         | ३४. श्री चरणदास पुरी, स्यालकोट, ,, १००            |
| १७. श्री ताराचन्द, लाहौर, ,, १००               | ३५. श्री हंसराज महाजन, स्यालकोट, ,, १००           |
| १८. श्री पृथ्वीचन्द, लाहौर, ,, १००             | ३६. श्री बेलीराम महाजन, स्यालकोट, ,, १००          |



(ख) सदस्यों द्वारा (गत पृष्ठ से)

|   |         |  |         |
|---|---------|--|---------|
| ३७. श्री ईश्वरदास, भलवाल,                 | रु० १०० | ५२. श्री तनसुखराय श्रीनिवास, आगरा,         | रु० १०० |
| ३८. श्री अमोलकराम साहनी, कलकत्ता,         | ,, १००  | ५३. श्री रामभरोमेलाल, आगरा,                | ,, १००  |
| ३९. श्री नन्दलाल पुरी, कलकत्ता,           | ,, १००  | ५४. श्री विश्वम्भरनाथ खंडेलवाल, आगरा,      | ,, १००  |
| ४०. महात्मा टेकचन्द, टोबाटेकसिंह,         | ,, १००  | ५५. श्री श्यामसुन्दरलाल, आगरा,             | ,, १००  |
| ४१. रा. ब. गंगाप्रसाद, ज्वालापुर,         | ,, १००  | ५६. श्री रामकिशोर, आगरा,                   | ,, १००  |
| ४२. श्री बुधराम कुठियाला, डोईवाला,        | ,, १००  | ५७. रा. बा. कुं. जगदीशप्रसाद, मुजफ्फरनगर,, | १००     |
| ४३. रा. गु. धुरेन्द्र शास्त्री, हरदुआगंज, | ,, १००  | ५८. श्री बस्तीराम, मुजफ्फरनगर,             | ,, १००  |
| ४४. श्री हंसराज खन्ना, शिमला,             | ,, १००  | ५९. श्रीमती भगवतीदेवी, मुजफ्फरनगर,         | ,, १००  |
| ४५. श्री हरवंशलाल साहनी, रावलपिण्डी,      | ,, १००  | ६०. श्री बनारसीदास धीमान, शामली,           | ,, १००  |
| ४६. श्री जगन्नाथ विद्यार्थी, अलीगढ़,      | ,, १००  | ६१. श्री भगीरथलाल धीमान, शामली,            | ,, १००  |
| ४७. श्री मोहनलाल वर्मा, अलीगढ़,           | ,, १००  | ६२. मुंशी दयाशंकर भटनागर, फ़िरोज़ाबाद,     | ,, १००  |
| ४८. श्री रामप्रसाद, अलीगढ़,               | ,, १००  | ६३. श्री मोतीलाल तैलंग, फ़िरोज़ाबाद,       | ,, १००  |
| ४९. श्री निरञ्जनलाल, अलीगढ़,              | ,, १००  | ६४. डा. रघुवीरदत्त शर्मा, फ़रुखाबाद,       | ,, १००  |
| ५०. श्री प्रीतमलाल, अलीगढ़,               | ,, १००  | ६५. डा. विजयपालसिंह, धामपुर,               | ,, १००  |
| ५१. श्री आनन्दराय बासुदेवलाल, आगरा,       | ,, १००  | ६६. व्यक्तियों से फ़ुटकर-प्राप्ति          | ,, १७०  |

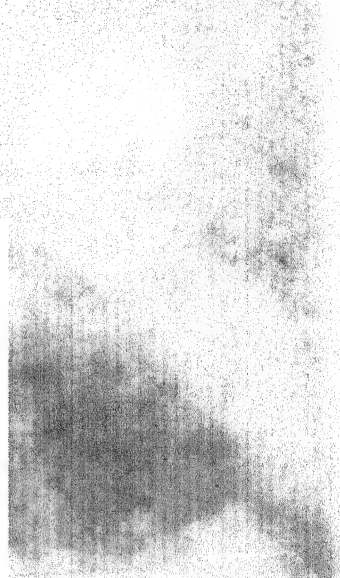
खण्ड-योग रु० ७७३१

(ग) संस्थाओं द्वारा

|  |          |                                    |         |
|--|----------|------------------------------------|---------|
| १. श्री विश्वबन्धु ट्रस्ट, लाहौर,      | रु० २५०० | १५. आर्य-समाज, फ़िरोज़ाबाद,        | रु० १०० |
| २. स. ध. प्रतिनिधि सभा, पंजाब, लाहौर,, | १०००     | १६. ,, लश्कर (ग्वालियर),           | ,, १००  |
| ३. आर्य-समाज, बच्छोवाली, लाहौर,        | ,, ५००   | १७. ,, लकड़ बाजार, शिमला,          | ,, १००  |
| ४. सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा, देहली,    | ,, २००   | १८. ,, रामामराडो (पटियाला),        | ,, १००  |
| ५. आर्य-समाज (भवानीपुर) कलकत्ता,       | ,, ११८   | १९. ,, (गु.वि.) फ़ीरोज़पुर छावनी,  | ,, १००  |
| ६. आर्य समाज (गु. वि.) स्यालकोट,       | ,, ११०   | २०. ,, भट्टारडा,                   | ,, १००  |
| ७. आर्य प्र. सभा, पंजाब, लाहौर,        | ,, १००   | २१. ,, खानेवाल,                    | ,, १००  |
| ८. न्यू बैंक आफ इण्डिया, लाहौर,        | ,, १००   | २२. स्त्री ,, (गु. वि.) मुलतान,    | ,, १००  |
| ९. आर्य-समाज, नई मराडो, मुजफ्फरनगर,,   | १००      | २३. ,, श्रद्धानन्द बाजार, अमृतसर,, | १००     |
| १०. ,, सदरबाजार, भांसी,                | ,, १००   | २४. ,, (का. वि.) वजीराबाद,         | ,, १००  |
| ११. ,, अलीगढ़,                         | ,, १००   | २५. ,, (का. वि.) जेहनम,            | ,, १००  |
| १२. ,, आगरा छावनी,                     | ,, १००   | २६. ,, भंग,                        | ,, १००  |
| १३. ,, खर्जा,                          | ,, १००   | २७. ,, कोहाट,                      | ,, १००  |
| १४. ,, फ़रुखाबाद                       | ,, १००   | २८. ,, एवटाबाद,                    | ,, १००  |
|  |          | २९. आर्यसमाजों से फ़ुटकर-प्राप्ति, | ,, ५५५  |

योग रु० ७१८३

प्राप्त-योग रु० ५१२७५ + प्राप्य-योग रु० ११६३९ = सर्व-योग रु० ६२९१४



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सगीस राजबहादुर श्री बिंदासरन, कादीर

सदाय श्री दुर्गोदास, कादीर

संरक्षक, स्वामिसर्वहृद-स्नानक ।



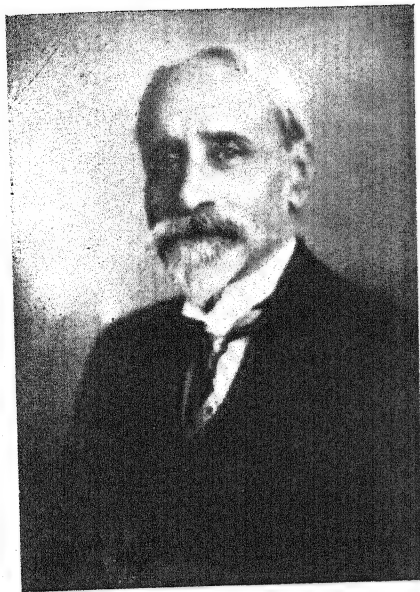
(ख) सदस्यों द्वारा (यदि यह हो)

圖書集成 卷一百一十五 四九三

(ग) संस्थाओं द्वारा

योग नं. ७१८२

$$\text{प्राप्त-योग नं० ५१२७} + \text{प्राप्त-योग नं० ११३२९} = \text{सर्व-योग नं० ६२९१४}$$



खर्गीय दीवान बहादुर राजा नरेन्द्रनाथ, लाहौर



खर्गीय रायबहादुर श्री मूलराज, लाहौर



खर्गीय रायबहादुर श्री बिंदासरन, लाहौर



खर्गीय श्री दुर्गादास, लाहौर

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।









आनरेबल डा. सर मनोहरलाल, लाहौर



डा. सर गोकुलचन्द नारंग, लाहौर



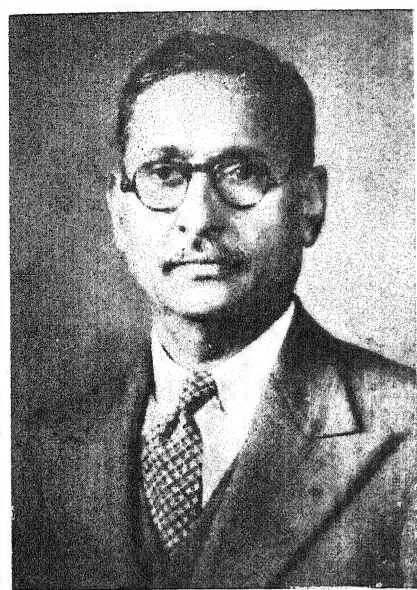
बखशी डा. सर टेकचन्द, लाहौर



आन. मि. जस्टिस मेहरचन्द महाजन, लाहौर

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।

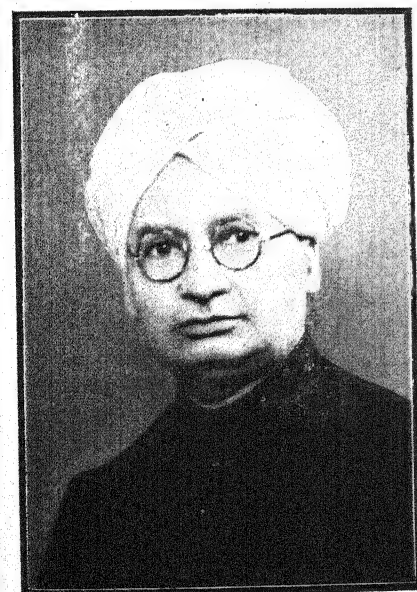




श्री विशनदास बासिल, देहली



श्री ठाकुरदत्त शर्मा, लाहौर



डा. प्रेमनाथ, लाहौर



श्री रामलाल आनन्द, लाहौर

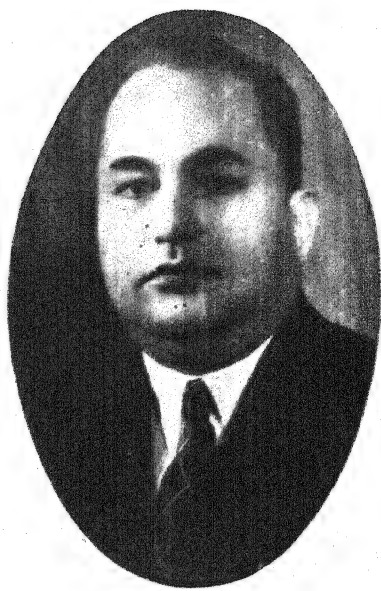
संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।







श्री जुगलकिशोर बिरला, देहली



श्री कर्मचन्द धापर, कलकत्ता



दी. ब. कृष्णकिशोर, लाहौर

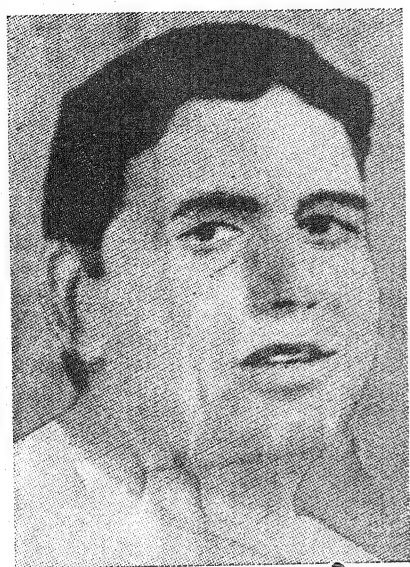


रा. ब. ईश्वरदास साहनी, नवांशहर

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।



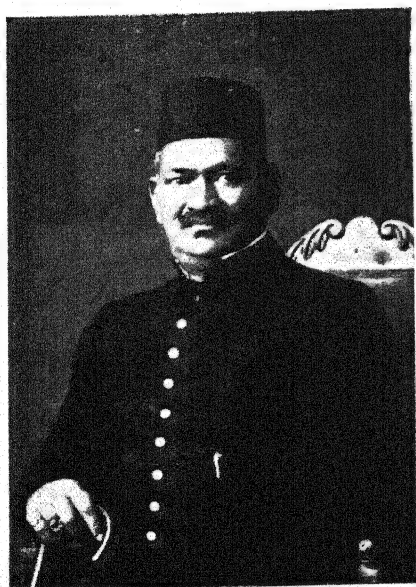




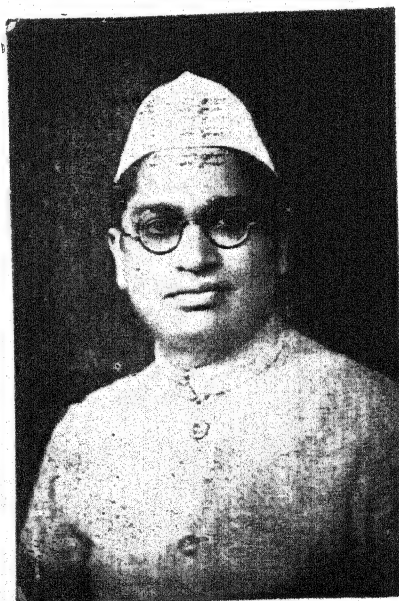
गोखामी गणेशदत्त, लाहौर



श्री खुशहालचन्द आनन्द, लाहौर



श्री मुकन्दलाल अग्रवाल, लाहौर



श्री महेशचन्द्र, खानवाल

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।







कैप्टन डा. तुलसीदास, अमृतसर



रा. सा. कर्मचन्द अग्रवाल, स्यालकोट



श्री टीकाराम गुन, अलीगढ़

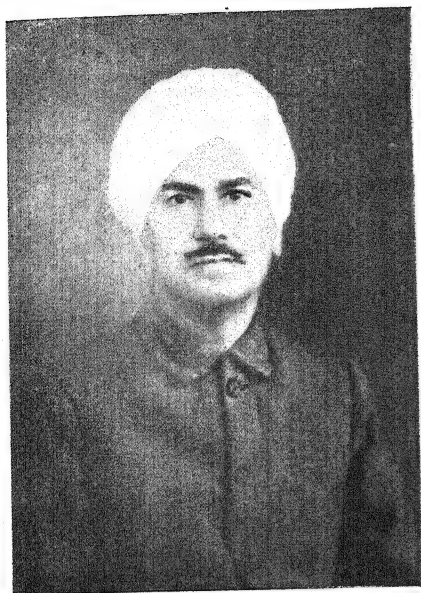


श्री शिवनारायण, आगरा

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।







श्री दीवानचन्द विरमानी, लायलपुर



श्री घनीराम भट्टा, लाहौर



श्री प्राणनाथ लांबा, लाहौर



श्री योधराज, लाहौर

संरक्षक, स्वामिसर्वदानन्द-स्मारक ।





( CONTENTS )

PREFACE—

REFACE—

|                                   |                                      |        |         |
|-----------------------------------|--------------------------------------|--------|---------|
| I. Brief History of this Volume,  | II. Salient Features of this Volume, |        |         |
| III. Kindred Multi-textual works, | IV. Acknowledgment                   | ... .. | IX-XIII |

## INTRODUCTION—

**I. BASIC TEXTS**—(a) Number and Names, (b) Editions, (c) Commentaries, (d) Order, (e) References ... .. XIV-XVIII  
**II. OUTLINES OF METHOD**—(a) General, (b) Extent of Exhaustiveness, (c) Textual Correlation and Variation, (d) Textual Establishment, (e) Pāṇinian Studies, (f) Previous Authorities, (g) Amplification of Scheme, (h) Signs and Symbols ... .. XVIII-XXIV

**प्रस्तावना—**

पृष्ठानि

१. अस्य भागस्येतिवृत्तम्, २. अस्य भागस्य स्वरूपवैशिष्ट्यम्, ३. सजातीय-ग्रन्थान्तराणि,  
 ४. आभार-प्रकाशनम् ... .. XXV-XXVII

**भूमिका—**

१. आधारग्रन्थाः — (क) संख्या नामानि च, (ख) संस्करणानि, (ग) भाष्याणि,  
(घ) क्रमः, (ङ) स्थल-निर्देशाः ... XXVIII-XXX

२. विधानक-सारसंग्रहः — (क) सामान्य-संकेतः, (ख) सामग्र्या मात्रा, (ग) पाठाना-  
मुद्धारभेदौ, (घ) पाठ-प्रतिष्ठापनम्, (ङ) अधिपाणिनीयमनुसंधानम्, (च) पूर्वोऽभ्यर्हिताः  
(छ) प्रक्रिया-परिवर्धनम्, (ज) संकेताः ... XXX-XXXIII

**संक्षेपाः —**

|                               |                      |              |               |     |          |
|-------------------------------|----------------------|--------------|---------------|-----|----------|
| संक्षेपाः —                   |                      |              |               |     | XXXIV-XL |
| (क) आधार-ग्रन्थीयाः           | (क') ग्रन्थान्तरीयाः | (ख) लेखकीयाः | (ग) सामान्याः | ... | ...      |
|                               | ...                  | ...          | ...           | ... | XLI      |
| संक्षेप-पाठप्रकारः            | ...                  | ...          | ...           | ... | १-४६८    |
| अ-न                           | ...                  | ...          | ...           | ... | ४६९-११८५ |
| प-ह, परिशिष्टम् ( २ये खण्डे ) | ...                  | ...          | ...           | ... |          |



# P R E F A C E .

## I. BRIEF HISTORY OF THIS VOLUME.

While the preparation of about a hundred thousand basic textual cards, being one-third of the total number incorporated in this Volume, goes back to 1932 and the following year, regular and organised work in this connection could not be taken up till six years later, when the organisational status of the newly constituted Vishveshvaranand Vedic Research Institute Society had become fairly dependable in respect of its capacity to command continuance of requisite financial backing (cf. Vol. I, Pre. V). After a thorough bibliographical survey had been made, the several available editions of the 206 basic texts (cf. Intro. I) were collected by the end of 1938 through the welcome co-operation of a number of individual scholars, learned bodies and publishers. As a result of the coordinated efforts of some twenty scholars, the pre-editorial stages of compilation, examination, re-examination, simple indexification and combined indexification of the textual data were over by the end of February, 1941. The editorial treatment of these materials was commenced immediately after and the printed formes began regularly to be turned out from the following autumn. In this way, it has taken about seven years in all to do this Volume from start to finish.

## II. SALIENT FEATURES OF THIS VOLUME.

1. The present Volume is devoted to the record of a special vocabulary, which represents the esoteric section of Sanskrit literature. Though originating from and based on Vedas proper, this section branched off, at a very early stage, into a distinct type, which has ever since been growing in volume through gradual assimilation of many heterogeneous esoteric traditions. As it was not practicable, at this stage, to sift and separate purely Vedic vocabulary, an advantage has been taken of the situation towards making the Volume as inclusive as possible so that the huge mass of vocabulary thus recorded could be studied as a semi-independent linguistic and literary unit, with its own grammatical and significative problems and peculiarities. To give an idea of the distinctive as well as extensive character of this vocabulary, it will suffice just to compare



the pre-Agni vocabulary of the three published Volumes of the Concordance. Thus, while it is spread over 16 pages of the Volume I and numbers 195, giving an average incidence of 12 words to a page and is spread over 4 pages of the Volume II and numbers 120, giving an average incidence of 30 words to a page, the same is spread over 8 pages of the present Volume and numbers 350, giving an average incidence of 44 words to a page, and, what is more interesting, out of these 350 words, only 40 and 30 are found in the Volumes I and II, respectively. Moreover, the relative corresponding strength of 31, 17, 143 and 183, respectively, found in *Amara-Kośa*, *Vācaspatyam*, *Monier-Williams Dictionary* and *St. Petersburg Dictionary*, as supplemented up to 1924, in respect of the first 500 entries here, clearly indicates that this vocabulary, very much neglected as it had remained, did stand in need of the present exhaustive record, both for the purposes of a further lexicographical treatment as well as a reconstruction of the cultural history of India.

2. As explained below (cf. Intro. II), the entire technique, symbolical as well as explicit, employed in recording, correlating, differentiating, emending and explaining the vocabulary has been so much extended and developed in various directions that it has very nearly become a complete lexicographical record, well equipped with a text-critical, grammatical and etymological commentary and a statement of inter-textual relationship.

3. Naturally, there has been an all round corresponding accretion to the strength of the critical apparatus. Thus, there are, altogether, 14477 footnotes to 985 pages of this Volume, exclusive of the Supplement, giving an average incidence of 15 to a page. Out of these, while 6295 are devoted to citational references, 322, 1501 and 3359 are concerned with grammar and etymology, textual emendation and textual variation, respectively. It has, however, to be noted that this analysis of the critical apparatus reveals that whereas 225 cases of Pāṇinian supplementation (cf. Vol. I, Pre. II), had to be recorded for the 592 printed pages of the Volume I, only 156 such cases have had to be indicated for 985 pages of this Volume.

4. As discussed further on (cf. Intro. II, g, 9), a peculiarly difficult situation created by the use of very long compounds in the basic texts has necessitated the non-initial components being given in the Supplement

at the end. It is interesting to note here that while the use of bi-componental compounds is quite common and that of tri-componental ones very rare in the basic contents of the Volumes I and II, this Volume records quite a number of compounds with even twenty to twenty-five components and, at least, one compound with no less than eighty components. Such words as are found used only as non-initial components, have been marked off by the left-hand top-sign to + report the supplementary nature of their registration.

5. As indicated at the proper place (cf. परि. fn. १) the Supplement (परिशिष्ट), primarily needed for the record of words, used as non-initial components, has also been utilised for making necessary additions and corrections, all these items being arranged in one common alphabetic order.

### III. KINDRED MULTI-TEXTUAL WORKS.

1. There are found appended to the different volumes of the Adyar-published Upaniṣads lists of only selected words, referred to, volume-wise, by page and line, without any kind of textual indication or grammatical treatment, the fullness whereof, alongside of the exhaustiveness of data included, makes the present work characteristically differentiable from all other kindred efforts in this field.

2. Bloomfield's Concordance as a Pāda and Pratīka-index has already been distinguished from the present work, which is a Pāda-index (cf. Vol. I, Intro. I, f, 2). Out of the 206 basic texts of this Volume, only 42 have been laid under selective contribution in that work.

3. Like Bloomfield's Concordance, the recent Bombay publication, entitled, Upaniṣad-Vākya-Mahākoṣa, in two parts, by Gajānana Śāmbhu Sādhale (1940-41) is, also a Pāda and Pratīka-index and, as such, easily distinguishable from the present work<sup>1</sup>.

<sup>1</sup> The number of its basic texts should have been given as 234 instead of 239, because Tripuropaniṣad and Tripuramahopaniṣad being identical and Bilvopaniṣad, Nos. 1 and 2 being only two portions of one and the same text, make two and not four works, and the four chapters of Gauḍapāda-Kārikā are not to be treated as four separate texts. While 10 out of our texts, namely, अज्ञा., द्वाकौल., गौ., चू., पित्र., ब्रह्म., मै., योसू., सांका., and सांसू. have not been drawn upon, the following 33 only out of

4. 'Vedic Index of Names and Subjects' by Macdonell and Keith has already been differentiated from the present work (cf. Vol. I, Intro. I, 1, f, 3). It draws very little from the basic texts of the present Volume and, to that extent, its referential utility is further reduced.

5. In so far as the texts of the present Volume are concerned, Jacob's Concordance (cf. Vol. I, Intro. I, 1, f, 1) is more useful for the study of individual words than any other kindred work. But, besides the limitation of its referential scope to 56 texts only, its selective constitution and grammatically unconsolidated treatment further adversely affect its employment as a word-referential tool<sup>2</sup>. Nevertheless, it has been thoroughly scrutinised for the present Volume and duly referred to herein with corrections, wherever necessary.

#### IV. ACKNOWLEDGMENT.

In bidding farewell to this Volume to see if, to some extent, it can lighten the labour of those who may be trying to grasp the spirit of mystic India as revealed in her ancient literary treasures, it is now my most pleasant duty thankfully to acknowledge every bit of help which I have received in its preparation and publication. And, first of all, come to my mind my old pupils of Dayānanda Brāhma-mahā-Vidyālaya, who, out of their love for me, laboured, day after day, for many months, perhaps a year, to write out the first lac of basic cards. I wish I could give their names here. But I will not do so, lest I should miss any name. Coming to the period when a separate section was organised for this Volume, while Śrī Raghu-nātha-Candra saw the preparation-work through the pre-editorial stages,

the 234 Upaniṣadic texts referred to therein still remain to be examined in respect of their inclusion here, possibly, under different names:—Anubhavasāropaniṣad, Amanasko°, Āyur-vedo°, Upaniṣatsuti, Aitareyo° (1 and 3), Gaṅgo°, Gāndharvo°, Cidambaro°, Tāro° (2), Tattvo°, Datto°, Durvāso°, Devyu° (2), Nārāyaṇīyamaho°, Nirlepo°, Puruṣasūkto°, Prasādajābālo°, Bhaktiyogo°, Mallāryu°, Yogo°, Rādhiko°, Rudro°, Lakṣmyu°, Viṣṇuhṛdayo°, Viṣṇu°, Venkateśapūrvottaratāpinyu°, Vedāntasāro°, Śivo° (2), Śrutirahasyo°, Sahavāu°, Sandhyo° and Siddhāntaviṭṭhalo°. Śrī Sādhale was requested to give some detailed information about these texts, some of which are said to be still in manuscript, and, therefore, outside our present scope, but, unfortunately, he has chosen to keep silent.

<sup>2</sup> For instance, अत्, 'an eater' is first entered as a separate word and, then,  $\sqrt{\text{अद्}}$ , 'to eat,' is taken up separately.



Śrī Rāmānanda and Śrī Amara-Nātha have creditably steered it through the editing *cum* publication stage. Śrī Bhīma-Deva's indispensable co-operation has been in requisition in many matters pertaining to the proper application and further extension of the special technique. Among other collaborators, a mention is to be made of Śyts. Nathu-Rāma, Durgā-Datta, Pitāmbara-Datta, Vijaya-Candra, Viśva-Priya, Siddha-Nātha, Śrīdharānanda, Parmānanda, Brahma-Datta, Rāma-Prasāda Pitāmbara-Nārāyaṇa, Śaṅkara-Datta, Rudra-Datta, Bābū-Rāma, Sūrya-Nārāyaṇa, Dina-Dayālu, Bhagavad-Datta, Mohana-Lāla, Vireśvara, and Govardhana-Prasāda, who have been taking great pains properly to do the portion assigned to them from time to time. In thanking the Printing Department, in general, for their full co-operation in seeing the Volume through the Press within the prescribed time, I very much appreciate the interest which the Superintendent, Śrī Deva-Datta and the Manager, Śrī Dhanapat Rai have been taking in maintaining the high measure of efficiency of the Department required for this purpose.

V. V. R. Institute, Lahore,  
August, 1944.

VIŚVA-BANDHU ŚĀSTRĪ.

# INTRODUCTION.

## I. BASIC TEXTS.

### (a) NUMBER AND NAMES.

1. The number of the texts, which now form the basis of different Volumes of this work, has risen to 460<sup>1</sup>.

2. Out of them as many as 206 have supplied the subject-matter to the present Volume.

3. As 200 out of these 206 texts are known as Upaniṣads, this Volume is designated Aupaniṣada-Vibhāga<sup>2</sup>.

4. In order to avoid unnecessary repetition, the Upaniṣadic texts are not being enumerated here, full names of the same having to be given, together, with an indication of the editions used, further on, in connection with their respective abbreviations (cf. Abb. ॠ).

5. A fairly large number of these texts are of later sectarian origin, being affiliated to the Vaiṣṇava, Śaiva, Śākta or Tāntrika and Yoga schools of Indian mysticism. They have been included here, because, in common with the earlier texts which have their roots in Vedas themselves and instructional links with the families of the Vedic seers, they embody the unbroken tradition of the spiritual and philosophic urge which has been felt, through the ages, by the Indian mind. To the historical investigator this all-inclusive grouping will provide a comprehensive view, on the basis of which he should be able to trace and inter-relate innumerable linguistic and philosophic data.

6. Similar considerations have led the following six works, which are based on or are very intimately related to Upaniṣads, to be treated of in this Volume :—

- (i) Bādarāyaṇa's Brahma-sūtra, (ii) Gauḍapāda's Kārikā, (iii) Kapila's Sāṅkhya-sūtra, (iv) Īśvara-Kṛṣṇa's Sāṅkhya-Kārikā, (v) Patañjali's Yoga-sūtra, and (vi) Bhagavad-gītā.

<sup>1</sup> The number envisaged two years ago was 425 (cf. Vol. I, Intro. II, b. 1).

<sup>2</sup> The Volumes I, II and IV are designated, on similar grounds, Sāṃhitika-Vibhāga, Brāhmaṇāranyakiya-Vibhāga and Sātra-Vibhāga, respectively.

## (b) EDITIONS.

While all the above-mentioned texts have never been published in the form of a single collection, many of them are available in print in more than one edition. These publications may be briefly noticed here as under :—

1. The eleven principal Upaniṣads, namely, Īśa, Kena, Kaṭha, Praśna, Muṇḍaka, Māṇḍūkya, Aitareya, Taittirīya, Chāndogya, Bṛhadāraṇyaka and Śvetāśvatara are available, with and without ancient and modern comments, glosses and translations, in good many editions.

2. The collection, published several times, by the Nirṇaya-Sāgara Press, Bombay, under the popular title, ईशाचष्टोत्तरशतोपनिषदः (i. e. 108 Īśa-headed Upaniṣads), really, contains 112 texts.

3. No. XXIX. of the Ānandaśrama Sanskrit Series, Poona, entitled, उपनिषदां समुच्चयः (i. e. A Collection of Upaniṣads) includes 32 Upaniṣadic texts along with the commentaries thereon by Nārāyaṇa, Śaṅkarānanda or Rāmātīrtha according as the case may be (1895).

4. The Adyar Library, Madras has to its credit the publication of the following collective volumes :—

( i ) The volume, entitled, संन्यासोपनिषदः (i. e. the Samnyāsa Upaniṣads) containing 20 texts, edited by F. O. Schrāder with critical notes and a Sanskrit gloss ( 1912 ).

( ii ) The 5 volumes, namely, योगोपनिषदः (i. e. The Yoga Upaniṣads) containing 20 texts (1920), सामान्यवेदान्तोपनिषदः (i. e. The General Vedānta-Upaniṣads) containing 24 texts (1921), वैष्णवोपनिषदः (i. e. The Vaiṣṇava-Upaniṣads) containing 17 texts ( 1923 ), शैवोपनिषदः (i. e. The Śaiva-Upaniṣads) containing 15 texts ( 1925 ), and शाक्तोपनिषदः (i. e. The Śākta-Upaniṣads) containing 8 texts (1925), all having been edited by Mahā-Deva Śāstrī with the commentary of Upaniṣad-Brahma-Yogin.

( iii ) The volume, entitled, अप्रकाशिता उपनिषदः (i. e. The Unpublished Upaniṣads) containing 70 texts, compiled under the supervision of C. K. Rajah ( 1933 ).

5. Four Unpublished Upaniṣadic Texts with the Paryāṅka-Vidyā (i. e. Kauṣītakyupaniṣad, ch. I), edited, with translation into English, by S. K. Belvalkar, being a reprint from the Report of the 3rd Oriental Conference, Madras ( 1925 ).



6. No XI. of the Tāntrika Text Series, published, under the general-editorship of A. Avalon, by Luzac and Co., London, entitled, 'Kaula and other Upaniṣads, containing 9 texts and edited by Sitā Rāma Shāstrī with the commentaries of Bhāskara Rai, Apyayadikṣita and Lakṣmīdhara, according as the case may be (1922).

7. No. XL. of the Bombay Sanskrit and Prakrit Series, entitled, 'Eleven Ātharvaṇa Upaniṣads', edited with notes, by G. A. Jacob (1916).

8. From among the Upaniṣads other than the Īśa-headed eleven, each of the following three has been separately published :—

- (i) Maitryupaniṣad, edited, with the commentary of Rāmatīrtha and his own English rendering by E.B. Cowell and issued in three fasciculi in the Bibliotheca Indica by the R.A.S. of Bengal (1862, 1863 and 1870 and, again, 1913, 1919 and 1935).
- (ii) Piṇḍabrahmaṇḍopaniṣad, edited, with a commentary, by Keśavānanda, Moradabad (1905). The late Swāmī Hari-Prasāda Vaidika-Muni told the present writer that this work was from the pen of the editor himself.
- (iii) Bhavasantāraṇopaniṣad, edited, with a Hindi commentary, by Rāma-Prapannā, Venkateśvara Press, Bombay (1907).

9. The following editions of the six extra-Upaniṣadic texts have been generally used :—

- (i) Brahma-Sūtra, published, with Śāṅkara's commentary, by the Nirṇaya-Sāgara Press, Bombay (1915).
- (ii) Gauḍapāda-Kārikā, published, together with Śāṅkara's commentary and Ānandagiri's gloss, in the Ānandāśrama Sanskrit Series, Poona (1911.)
- (iii) Sāṅkhya-Sūtra, edited, with the commentaries of Aniruddha and Mahā-Deva, by R. Garbe and published in the Bengal R.A.S.'s Bibliotheca Indica (1888).
- (iv) Sāṅkhya-Kārikā, edited, with Vācaspati-Miśra's commentary and Bālarāma's gloss, by V. Lele and published from Bombay (1928).
- (v) Yoga-Sūtra, edited, with Ananta-Deva's commentary and published from Benares (1897).
- (vi) Bhagavad-gītā, published, with Śāṅkara's commentary and its Hindi rendering, by the Gītā Press, Gorakhpur (1931).

## (c) COMMENTARIES.

1. Ancient Pada-pāṭhas, where available, in the case of Saṁhitā-citations and medieval glosses and commentaries along with modern scholarly contributions in respect of Upaniṣads proper have been fully utilised towards arriving at a right analysis and comprehension thereof.

2. As all these authorities are being duly indicated below along with their abbreviations ( cf. Abb. क and क'), the same need not be repeated here.

3. Similarly, a number of other authorities referred to in the critical apparatus are being duly noted below along with their abbreviations (cf. Abb. क and क').

## (d) ORDER.

The order in which the basic texts have been referred to here is as under:—

1. The above-mentioned eleven principal Upaniṣads, Īśa, Kena, Kaṭha etc.
2. Gauḍapāda-Kārikā.
3. Maitryupaniṣad.
4. The texts included in the Nirṇaya-Sāgara collection (cf. Intro. I, b, 2), other than those mentioned above, in the order of that collection.
5. The texts included in the Adyar volume, entitled, 'Unpublished Upaniṣads' (cf. Intro. I, b, 4, iii), other than those mentioned above, in the order of that collection.
6. The texts included in the Tāntrika Text Series volume (cf. Intro. I, b, 6), other than those mentioned above, in the order of the said volume.
7. The texts included in the Bombay Sanskrit and Prakrit Series volume (cf. Intro. I, b, 7), other than those mentioned above, in the order of the said volume.
8. Bhavasantāraṇopaniṣad.
9. Piṇḍabrahmāṇḍopaniṣad.
10. Cūlikopaniṣad.
11. Amṛtabindūpaniṣad.
12. Yoga-sūtra.
13. Sāṅkhya-Sūtra.
14. Sāṅkhya-kārikā.
15. Brahma-Sūtra.
16. Bhagavad-gītā.

## (e) REFERENCES.

1. In numerically arranging the textual references, the traditional divisional units, single, dual, triple etc., have been adhered to, unless otherwise indicated, and properly represented by corresponding punctuation marks (cf. Vol. I, Intro. IV, 7, 16 ff.).

2. But in a sufficiently large number of cases and, particularly, where no clear divisional system is in existence, references have been noted by page and line.

3. In certain lengthy single-divisional cases, references have been noted line-wise.

4. There are still half a dozen other types of cases where it has been found useful to improvise certain additional contrivances to render the referential presentation clear.

5. All these details are being duly indicated and correlated below in the respective footnotes, governing the individual names of the texts, grouped type-wise for this purpose (cf. Abb. क).

## II. OUTLINES OF METHOD.

## (a) GENERAL.

The details of the method, followed in this work, from the general point of view as well as in respect of the treatment of verbs, declinables and indeclinables and their accentual and referential data and the employment of particular signs and symbols and typographical devices have already been fully discussed (cf. Vol. I, Intro. IV). Therefore, only a few points which have a special bearing on the present Volume remain to be indicated here.

## (b) EXTENT OF EXHAUSTIVENESS.

The full measure of exhaustiveness of textual and referential registration has been maintained except in the case of the following very common words, where, without letting the scientific value of the record suffer in any way, only the number of references pertaining to each separate word-form thereof has been kept, simply to economise space, within the limit of ten :—

1. Conjugational forms of the roots √अस् (भुवि), √आह्, √कथ्, √कृ (करणे), √\*गच्छ्, गम्, √जन्, √ज्ञा, √त्यज्, √इश्, √नश् (अदर्शने), √\*पश्, √ब्रू, √भुज्, √भू, √या, √रञ्, √लभ्, √वच्, √वद्, √विद् (ज्ञाने), √वृत्, √स्था and √हु (दानाद [! दा]नयोः).



2. The क्वा-ending absolutes of simple, non-composite roots.

3. The declensional forms of अद्स्-, अष्टन्-, अस्मद्-, इद्स्-, एक्-, एतद्-, किम्-, चतुर्-, तद्-, तावत्-, त्रि-, दशन्-, द्वि-, ऽनमस्-, नवन्-, नामन्-, पञ्चन्-, यद्-, यावत्-, युष्मद्-, ऽविश्व-, षष्-, सप्तन्- and सर्व-.

4. The indeclinables अतस्, अत्र, अपि, इतस्, ऽइति, इद्, इह, उ, उत्, उपरि, एतर्हि, एव, एवम्, ओम्, कथम्, कथा, कर्हि, कुतस्, कुत्र, क, खलु, च, चन, चिद्, चेद्, तथा, तर्हि, तु, न(निषेधे), नु, नेद्, पश्चात्, पृथक्, सुवस्, भूर्, मा(निषेधे), यतस्, यत्र, यथा, यदि, सद्यस्, स्वयम्, स्वर, स्वाहा, ह and हि.

5. Bija-mantras अं, आं, इं etc.

#### (c) TEXTUAL CORRELATION AND VARIATION.

1. Every traceable case of textual borrowing from Samhitās, Brāhmaṇas and Āraṇyakas has been duly referred to the source. The cases of textual elongation in Samhitā citations have been kept intact.

2. Every case of textual variation found in the borrowed passages has been duly noted. Possibly, each variative element of this type may have to be traced to some other allo-recensional text, now no longer extant.

3. Internal mutual correlation as well as variation of the different Upaniṣadic texts has been noted.

4. Different readings found in each text, when available in two or more editions, have been noted.

5. Variant readings recorded in footnotes to these editions have been noted, when found suggestive and useful.

6. Every available commentary has been laid under contribution for the purpose of noting any textual variant that it may possess.

#### (d) TEXTUAL ESTABLISHMENT.

The basic texts of the present Volume have not yet been critically edited. The so-called editions are, in reality, dignified names of mere compilations, which have been brought out, it is rather strange to observe, without any effort having been made to compare their readings even among themselves. No wonder that page after page has been found bristling with textual problems which must first be solved before any vocabulary could be registered with some measure of confidence. Therefore, every obscure word or passage has been subjected to the closest scrutiny and every possible aid has been called into service to determine the right reading.

Besides the institution of exhaustive comparative studies, considerations of grammar, syntax, accent and metre have received proper attention. In consequence, even though a good many corrupt readings will be found to have still been left with their query-marks intact, being an indication of the failure of the present attempt to correct them, the result on the whole has been very satisfactory in that a much larger number has been found to be amenable to correction. Moreover, the differentiation which has been introduced in this Volume between graphic and phonetic corruptions (cf. *abb. लैवि. and वावि.*) will be recognised to be a very useful addition to the emendatory technique of this work, for it has successfully helped in correcting good many old corrupt readings of the Upaniṣadic texts (cf. e. g. pp. 53<sup>e</sup>, 55<sup>i</sup>, 74<sup>i</sup>, 77<sup>b</sup> and 78<sup>a</sup>) and, also, in many cases, the prevailing readings of old commentaries, including Pada-pāṭhas (cf. e. g. pp. 57<sup>e</sup> and 315<sup>p</sup>).

#### (e) PĀṆINIAN STUDIES.

1. As already explained (cf. Vol. I, Intro. IV, I, j, 4), the Pāṇinian system provides the main structural mould to this work.

2. Like the critical apparatus of the Volume I, the one attached to the present Volume will very much contribute to the furtherance of studies in that system. The main heads, under which these studies have been presented here, are (i) illustrative correlation, (ii) extension of application, (iii) supplementation of enunciation (Upasāṅkhyāna), (iv) rejection of enunciation and (v) introduction and correlation of extra-Pāṇinian material (cf. Vol. I, Intro. IV, I, 1, 2 ).

#### (f) PREVIOUS AUTHORITIES.

A substantial portion of the critical apparatus is devoted to the discussion of a large number of controversial matters. It will be seen that in each such case, the indication of our own view has been invariably accompanied by a full record of the views of the previous authorities on the point, both for and against ( cf. e. g. p. 3<sup>b</sup> etc.).

#### (g) AMPLIFICATION OF SCHEME.

While this Volume follows the general method of categorised record as already described ( cf. Vol. I, Intro. IV, 1, h), its presentation of different categories has been materially amplified towards attainment by it of further

fullness of lexicographical aspect. A few important items of this process of amplification are as under :—

1. While indication of meaning continues to be omitted in the case of roots, which are found used here exactly in the same sense as has been ascribed to them in Pāṇini's Dhātu-Pāṭha, minute differentiative indication has been added in the case of other roots.

2. When Dhātu-Pāṭha ascribes two or more meanings to a root, which is found here in one of those meanings, the same is specified.

3. A root found used here in more than one sense is generally split up sense-wise and treated as so many separate roots.

4. If it has not been practicable to separate a root of this type, form-wise and derivative-wise, then the basic multiplicity of its character is duly reported by post-bracketing the abbreviation बधा. with it.

5. Extra-Pāṇinian radical postulation, significative description and characterisation as बधा. are uniformly reported by the astrisk mark.

6. In the case of derivative entries, where the etymological aspect is not clear from the categorised record itself, the same is exhaustively noted in the critical apparatus. The astrisked postulation of new derivatives is also explained there. In both these respects, the previous authorities, for and against, if any, are duly referred to. In cases, where no etymology is suggestible, the queried abbreviation व्यु. has been put, indicating the need of fresh efforts in this behalf. This treatment has been accorded to those cases also, where a number of current etymologies have been found to be unacceptable, but it has not been practicable to discuss the same properly or suggest any substitutes (cf. e. g. उत्सुक-, कमठ-, जटा-, ज्योत्स्ना-, छन्दस्-, छात्र-, ददुर-, दार-, दारु-, नर-, १-२ पथिन्-, पादु-, स्त्रीहन्-, भीष्म-, etc.). Indeed, at this stage, it is felt that the treatment of etymologies of this kind should be taken up in a separate volume, exclusively devoted to this subject.

7. The individual significative status of practically every derivative has been determined and the same indicated as an abstract noun (भाप.), a common noun (नाप. or संप.), proper noun (वैसं or व्यसं.), an adjective (विप.), an adjectival substantive (विशेवि.), adverb (क्रिवि.), or indeclinable (अव्य.), according as the case may be.



8. The process of splitting up homonyms, sense-wise, and entering them as separate word has been very much extended. Where, however, it has not been practicable to complete the form-wise separation for this purpose, the characteristic significative multiplicity is regularly conveyed by the use of the corresponding abbreviation ब्रम्भा., followed, in the corresponding footnotes, by the list of meanings, in which each such case has been met with in the basic texts of this Volume.

9. Every composite base has been analysed and the nature of the compound indicated. A great difficulty was encountered in this connection on account of the unusually large number of inordinately unwieldy compounds used in the basic texts. Therefore, the discriminative employment of three grades of hyphen, full, half and quarter, to indicate the relative syntactical proximity or otherwise among the several single as well as composite componental units in each compound, had had to be specially improvised to overcome this difficulty. But, even though this graded use of hyphen as a grammatical tool very much facilitated the process of analytical representation, the work involved in this process was so voluminous and demanded so much of judicious revision that it could not be given a final shape till after the last page of the Volume had actually gone into print. This peculiar circumstance rendered what would otherwise appear to be a retrograde step unavoidable, namely, that the non-initial components had to be kept back for inclusion in the Supplement instead of the same being given along with the main vocabulary of the Volume.

10. Another new element has been added to the methodological technique of this work towards developing it into a ready-reference tool of encyclopaedic importance for the purpose of collecting literary data, relating to practically every department of Indian life and its ancient environments as depicted in the basic texts of this Volume. Every word has been studied from this point of view and according as the several passages where a word is met with, are likely to yield some information about any of these departments, a particular Nāgarī numeral, symbolically indicating the same, is super-fixed to it. In some cases, where a word refers to more than one of these departments, the several corresponding numerals are employed. The symbolical value of these numerals is being indicated in the sequel.

## (h) SIGNS AND SYMBOLS.

The following signs and symbols have been employed in this Volume in addition to those which it uses in common with the Volume I. ( cf. Vol. I, Intro. IV, 7 ) :—

1. —, - and - are the three grades of hyphen, full, half and quarter, respectively, which, as already indicated ( cf. Intro. II, g, 9 ), are employed as Avagrahas according to the need of each composite base.

2. ° while as a right-hand completive top-mark is super-fixed to the initial component of a bi-componental compound to denote the immediate combination of the two components, °° as a right-hand completive double top-mark is super-fixed to the initial component of a multi-componental compound to denote the presence of one or more intervening components between the initial and the final components.

3. : is used as a referential mechanism, the preceding figure being indicative of the page and the following one of the line.

4. § is used mainly as a sign-post to indicate and specify with the help of the related footnote, the citational character of a particular basic or referential entry. In a few non-citational cases, however, it is used, also, as a mere mechanism to provide additional space for the superfixation of symbolical top-figures.

5. + as a left-hand top-sign is used in the Supplement, as already indicated ( cf. Pre. II, 4 ), to mark off the actually additional vocabulary.

6. The symbolical value of the Nāgarī top-figures is as under :—

- (i) १ = a Proper Noun, being the name of an individual animate.
- (ii) २ = a Collective Noun, being the name of a class or species of animates.
- (iii) ३ = a Proper Noun, being the name of a country.
- (iv) ४ = a Proper Noun, being the name of a town.
- (v) ५ = a Proper Noun, being the name of a mountain.
- (iv) ६ = a Proper Noun, being the name of a forest.
- (vii) ७ = a Proper Noun, being the name of a river, a lake or a pond ( i. e. a water-place ).

- (viii)  $\Xi$  = a Collective Noun, being the name of a class or species of plants.
- (ix)  $\xi$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, with martial significance.
- (x)  $\xi\circ$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, with a sociological significance.
- (xi)  $\xi\xi$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, with a literary and scientific significance.
- (xii)  $\xi\mathfrak{z}$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, with a religious, ritualistic, mythological or mystic significance.
- (xiii)  $\xi\mathfrak{z}$  = a word or occurrence or occurrences thereof, as the case may be, indicative of material advancement and prosperity.
- (xiv)  $\xi\mathfrak{z}$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, indicative of some legend or historical narration.
- (xv)  $\xi\mathfrak{z}$  = a word or an occurrence or occurrences thereof, as the case may be, with an etymological, grammatical or general linguistic significance.
-



# प्रस्तावना

## १. अस्य विभागस्येतिवृत्तम्

यद्यप्यस्मिन् विभागे संगृहीतायाः पदसामग्र्यास्तृतीय इवांशः १६८६-६० अब्दे सनकृत्यत, तथापि नियमेनैतद्विषयक-कार्यस्वरूपं पङ्क्तीणां निरुद्धं सन् १६६५-६६ अब्दतः पुनरिव समवकृत, यावताऽचिरप्रवृत्तया विश्वेश्वरानन्दवैदिकशोधसंस्थानसमया द्वाराऽऽर्थिकी व्यवस्था यथापेक्षं सुसाधा स्यादित्याशोन्मेषः समभवत् (तु. विभा १, प्रस्ता ५) । तदाप्यादौ बहूनां विदुषां च विद्वत्समितीनां च ग्रन्थप्रकाशकानां चाऽभीष्टं सहयोगं प्राप्य २०६ संख्याकानामाधारत्वेनाङ्गीकृतानां ग्रन्थानां यथोपलम्भं संग्रहोऽकारि (तु. भू. १) । तदनु तावदुपविशानां संस्थानिकानां विदुषां सायुज्येन पदानां संकलनं च परीक्षणं च प्रपरीक्षणं च वैयष्टिकवर्गीमातृकाक्रमबन्धं च सामष्टिकवर्गीमातृकाक्रमबन्धं चाऽब्द्युत्तमेन परिसमाप्य संपादनसंस्कारीयं कार्यजातं समारभ्यत । मुद्रणकार्यं च ततो मासषट्कादनन्तरं व्यवस्थितं समजायत । एवं खल्वयं विभाग आ पदसंकलनप्रारम्भादा च चरमसंपादनप्रकाशनसमापनादब्देः सप्तभिरेव संसिद्धिमवाप्नोत् ।

## २. अस्य विभागस्य स्वरूप-वैशिष्ट्यम्

१. अस्मिन्स्तावद् विभागे संस्कृतवाङ्मयीयाऽध्यात्मविद्याप्रधानग्रन्थानां पदावलिः समावेशि । यद्यपि मूलत एषां ग्रन्थानां वेदैः सह तरुणीजन्यायेन जन्यजनकभावरूपः संबन्धो भवति, तथापि चिरात् कर्ममार्गात् पृथगेव सतो ज्ञानमार्गस्य स्वातन्त्र्येण परिवर्धनशीलत्वादेव ग्रन्थेषु वैदिकेतरतत्त्वसंप्रदायीयाया अध्यात्मसामग्र्या अपि पर्याप्तः संकरः समजनि । वर्तमाने तावद् वेदमूलकवेदाह्वयोरंशयोः सम्यग्विवेचनस्य दुष्करत्वात् प्रकाशं गतानामुपनिषत्साम-भाजां ग्रन्थानां साकल्येनेहोपयोग एवाभ्यरोचि । एवं चाऽस्य संग्रहस्य समुपाश्रयेणाऽध्यात्मसंप्रत्ययीयतत्त्वट्टिशेषवचनाश्च तत्तद्व्याकरणविशिष्टसमन्विताश्च सन्त इहत्याः शब्दाः स्वातन्त्र्येणाऽऽलोचनाय लभ्येरन्नित्याशयो भवति । यथा चैषां शब्दानां संस्कृतसाहित्यप्रदेशान्तरीयेभ्यः कोषान्तरेषु समाविष्टेभ्यः शब्देभ्यः स्वातन्त्र्यं च पार्थक्येनाभ्येत्यं च भवति तथोदाहरणेन संप्रति स्पष्टमुपेयात् । तथा हि, कोषस्यास्य प्रथमे विभागेऽग्नि-शब्दात् प्राक् पठितानां शब्दानां १६ पृष्ठैः संग्रहो भवति । संख्यया च ते १६५ सन्तः प्रतिपृष्ठं माध्यमिकी संख्या १२ इति संकेतयन्ति । तद्विधानामेव शब्दानां द्वितीये विभागे ४ पृष्ठैः संग्रहो भवति । ते च १२० सन्तः प्रतिपृष्ठं माध्यमिकी संख्या ३० इति संकेतयन्ति । तादृशा एवेह शब्दाः ८ पृष्ठैः समग्राहिषत । संख्यया च ते ३५० सन्तः प्रतिपृष्ठं माध्यमिकी संख्या ४४ इति संकेतयन्ति । एषां च ३५० शब्दानां मध्ये यथाक्रमं प्रथमद्वितीयविभागयोः ४० चैव ३० चैव पठ्यन्ते । अपि चैतद्विभागीयानां प्राथमिकानां ५०० शब्दानां मध्ये यथाक्रमम् अ. वाच. MW. PW. इत्येवंसंज्ञिताख्येषु कोषेषु ३१, ११७, १४३, १८३ एव पठ्यन्ते । एवं तावदनेन विभागेनाऽसंगृहीतपूर्वशब्दसामग्रीसमर्पणेन संस्कृतशब्दार्थकोषविषया च भारतीय-वैज्ञानिकाभ्युन्नयेतिहासविषया च महत्येव कापि पूर्तिरिव क्रियमाणा द्रष्टव्या ।

२. उपरिष्ठाद् विविच्यमाणेन प्रकारेण (तु. भू. २) पदानां निर्देश-संवादन-विसंवादन-शोधन-व्याख्यानाथं संकेतप्राधान्यतश्च वचनप्राधान्यतश्च प्रयुज्यमानायाः प्रक्रियाया इह नानाविधं परिवर्धनं व्यधायि । एवं च तावदयं विभागो व्याकरणनिरुक्तपाठव्यवस्थापनादिविषयिकया च तत्तत्पार्थायाऽन्योन्यसंबन्धप्रदर्शिकया च वृत्त्या सनाधितः सन् संपूर्ण-कल्पः शब्दार्थकोष इव समपादि ।

३. एवं स्थिते टिप्पणभागीया सर्वाङ्गीणा परिवृद्धिः कैमुतिकीव समजनि । तथा हि, अत्र परिशिष्टव्यतिरिक्तेषु ६८५ पृष्ठेषु १४४७७ टिप्पणानि भवन्ति, यतस्तेषां प्रतिपृष्ठं माध्यमिकी संख्या १५ इति संकेतः सुलभो भवति । एषां च मध्ये यथाक्रमं ६२६५, ३३५६, ३३२२, १५०१ पाठसंवादकानि, पाठविसंवादकानि, पाठशोधकानि, व्याकरणानि

च टिप्पणानि भवन्ति । अधिपारिणीयसुपसंख्यानां तावत् संख्या तत्र प्रथमविभागीयायास्तत्संख्याया अल्पीयसी भवति, यावता तत्रैतानि ५६२ पृष्ठेषु २२५ भवन्तीह च ६८५ पृष्ठेषु १५६ एवेति ( तु. विभा१, प्रस्ता २ ) ।

४. भूयिष्ठः सामासिकः प्रयोगो नामैतद्विभागीयाधारग्रन्थाभिसंबन्धेनाऽपरो विशेषो भवति ( तु. भू २, छ ६ ) । प्रथमद्वितीयविभागयोर्न केवलं समासानां संख्याया अल्पीयस्त्वं भवत्यपि तु तद्वत्समासानामत्रत्येभ्यः समासेभ्यः स्वरूपतोऽपि विवेकः सुकरो भवति । तत्र हि तावत् समासाः प्रायेण द्व्यवयवा भवन्ति कचिदेव च त्र्यवयवाः । इह तु यावदुपविंशतिपञ्चविंशतयवानामपि समासानां प्राचुरीव भवति, तावत् कचिद् कचिद् अशीतिपर्यन्तावयवाः समासा अन्युपलभ्यन्ते । ईदृशानां दुर्ग्रहाणां समासानामवयवविभागातिक्लिष्टत्ववैवश्यादेवेहाऽनाद्याऽवयवभूतानि प्रातिपदिकानि परिशिष्टभाग एव निर्देशायाऽलप्सत । यानि प्रातिपदिकानि तावदनया विधया तत्रैव प्रथमं निर्देशं प्रापन्, तेषामेष विशेषश्च पूर्वयोजितया रीतिरयथा + इति चिह्निकया प्रादर्शि ।

५. अपेक्षितानां सतामन्येषामपि केषांचित् परिवर्धनानां च शोधनानां च परिशिष्टभागेऽनाद्याऽवयवैः सहैव समानवर्णक्रमतया यथा समावेशो भवति तथा यथास्थानं समकेति ( तु. परि. टि१ ) ।

### ३. सजातीय-ग्रन्थान्तराणि

१. अज्यारे प्राकाश्यसुपगतानामुपनिषत्संग्रहाणां प्रत्येकं विशिष्टमात्रशब्दसूच्यवसानं भवति । तत्र च सर्वत्र तत्तत्संग्रहीयपृष्ठपङ्क्ति एवाऽनुयोगिसंकेतोऽकारि न तु तत्तदुपनिषदीयस्थलतः । किं च तत्र शब्दमात्रनिर्देशो भवति न तु व्याकरणनिरुक्तपाठमीमांसादिपरो नैर्देशिको वा टिप्पणात्मको वा संकेतः कश्चित् । अयं च ग्रन्थो यथापेक्षित-नानाविधालोचनसहकृतवैयाकरणसंनिवेशविशेषविशिष्टतत्तदाधारग्रन्थीयस्थलसंकेतसमन्विताऽनतिरिक्तपदसर्वस्वसमावेशसारः संस्ततः सर्वथाऽपि विशिष्टो भवतीति किमु वक्तव्यम् ।

२. ब्रह्मफीलडकृतो ग्रन्थः पादप्रतीकानुक्रमकोषोऽयं च ग्रन्थः पदानुक्रमकोष इत्येतयोर्विवेक उक्तपूर्वो भवति ( तु. विभा १, भू १, च २ ) । एतद्ग्रन्थीयाऽऽधारभूतानां २०६ ग्रन्थानां मध्यात् तत्र ४२ ग्रन्थानामेव समावेशः, सोऽपि व्यतिरिक्तप्रचुरांशश्चेति भवत्येवाऽपरोऽपीह विशेषः ।

३. अचिरेण सुवापुर्यां प्रकाशं प्राप्तः ( १९६७-६८ ) 'साधले' इत्युपाहृतस्य गजाननशम्भोर् भागद्वयात्मक उपनिषद्वाक्यमहाकोषोऽपि ब्रह्मफीलडकृतकोषवत् पादप्रतीकमात्रसंग्रहस्वरूपत्वादेवाऽस्मात् कोषात् सुवेचो भवति ।

४. मैकडानल-कीधान्यां कृतस्य वैदिककोषविशेषस्याऽस्माद् ग्रन्थादुक्तपूर्वो भवति विवेकः ( तु. विभा १, भू १, च ३ ) । एतद्विभागीयाऽऽधारग्रन्थोपाश्रयस्य च लेखस्य तत्राल्यल्पत्वादेतदीयविषयव्यपेक्षया तावत् तदुपयोगो भूयस्तरामिव लघीयेत ।

५. एतद्विभागीयशब्दाध्ययनौपयिकतायां जैकबीयः कोष एव सर्वेभ्यः सजातीयग्रन्थान्तरेभ्यो विशिष्यते ( तु. विभा १, भू १, च १ ) । तत्र ५६ ग्रन्थानामेव शब्दाः संगृहीतास्तेऽपि विशिष्टा एव । किं च शब्दानुक्रमोऽपि वैयाकरणसंनिवेशं नैव प्रवेशितो भवति । एवं भूयसांशेन हीयमानस्याप्यस्य कोषस्येह सम्यगुपयोगोऽकारि यथापेक्षमस्य शोधाश्च तत्र तत्र प्रादृक्षत ।

### ४. आभार-प्रकाशनम्

संपूर्तिं गतोऽयं विभागो यावत् प्राग्भारतीयामध्यात्मप्रवृत्तिं जिज्ञासमानानां कमप्युपकारलवं प्रकरिष्यमाणः प्रातिस्विकं प्राकाशिकं मार्गं प्रस्थाप्यते, तावदेव संप्रति खलु भवति ममायं प्रेषानिव नियोगो यत् सर्वानस्मिन् कर्मणि साहाय्यं कृतवतः प्रति हार्दिकमाभारप्रकाशनं कुर्यामिति । तत् सर्वप्रथमं तावदात्मनः प्रियाणां तेषां दयानन्दब्राह्ममहा-विद्यालयीयानामन्तेवासिनां स्मरामि यैर्मत्प्रेमैकवृत्तिभिः सद्भिः परिश्रमातिरेकेण पदानां प्रथमं लघुं समकलयत । मा

भूत् कथमपि कस्यापि नात्रो विस्मरजा च्युतिरिति भिया चिकीर्षन्नपि तन्नामसमुल्लेखं नेह करोमि । पश्चाच्च यदा नियत-  
रूपेणाऽस्य कार्यस्य संघटनकाल उपावृत्तस्तदा श्रीरघुनाथचन्द्रेण संकलनादिवर्णमातृकाक्रमबन्धान्तं तत्तत्कर्म निरपाद्यत ।  
तदनु संपादनप्रकाशनविषयामतिवृत्त्यां कृत्यपरंपरां श्रीरामानन्दश्च श्रीभरनाथश्च तदेकचिन्ताविव सन्तावन्ति-  
शयितोद्योगततिभिरभिनिर्वर्तितवन्तौ । नानाविधबहुविविधानकस्य चारितार्थ्यं परिवर्धनं चाधिकृत्य मध्ये मध्ये श्रीभीमदेवस्या-  
ऽऽलोचनात्मकः सौकर्यकरश्च सहयोगोऽपि परमोपयोगं गतः । किं च, यथासमयं यथानियोगं च सर्वश्री—ऋथुराम-  
पीताम्बरदत्त-विजयचन्द्र-दुर्गादत्त-विश्वप्रिय-सिद्धनाथ-परमानन्द-ब्रह्मदत्त-रामप्रसाद-श्रीधरानन्द - दुर्गादत्तचारिम-  
पीताम्बरनारायण-शङ्करदत्त-रुद्रदत्त-बाबूराम-सूर्यनारायण-दीनदयालु-भगवदत्त-मोहनलाल-गोवर्धनप्रसादाः संतत-  
परिश्रमाः सन्तस्तत्तत्कार्यं संपादितवन्तः । समयेन च गुणवैशिष्ट्येन च मुद्रणकार्यं यथावत् समपादीत्यस्मिन् विषये  
सामान्येन सर्वान् मुद्रणविभाग्यान् कर्मिष्ठानभिनन्दयन् विशेषत ईदृशस्य क्लेशसाध्यस्य कर्मणः कृते मुद्राग्रहीयां क्षमतां  
सततमनोयोगेन संपादयन्तावध्यक्षं श्रीदेवदत्तं च प्रबन्धकं श्रीधनपतिराजं च प्रशंसामि ।

लाभपुरे वि० वै० शो० संस्थाने }  
श्रावणे, वि० २००१ तमेऽब्दे }

विश्वबन्धुशास्त्री



# भूमिका

## १. आधार-ग्रन्थाः

### (क) संख्या नामानि च

१. अस्म्य कोषस्य विभागचतुष्टयस्याप्याऽऽधार-ग्रन्थानां संख्योत्तरोत्तरं वृद्धिमती सती संप्रति ४६० समपादि<sup>१</sup> ।

२. तन्मध्यान् २०६ ग्रन्थाः प्रकृतस्य विभागस्य घटकाः समजनिषत ।

३. तेषां २०६ ग्रन्थानां मध्ये २०० ग्रन्थानामुपनिषद्नाम्ना प्रसिद्धैरुपनिषदोऽयं विभाग इति प्रधान-संप्रत्ययं नामधेयमकारि<sup>२</sup> ।

४. तत्तदुपयुक्तसंस्करणसंकेतपूर्वं स्वस्वसंज्ञेपाभिसंबन्धेन सर्वेषामप्याधारग्रन्थानामुपरिष्ठाभिर्देव्यभाणत्वात् (तु. संज्ञे. क) मा भूत् पुनरुक्तमितीह तन्नामकीर्तने नादरः ।

५. एतद्विभागीयानामाधारग्रन्थानां मध्ये बहुसंख्याकाः खलु वैष्णव-शैव-शाक्त-योगाऽऽख्यसंप्रदायविशेषाभिसंबद्धाः सन्तोऽर्वाचीना एव भवन्ति । एवं सत्यपि तेषां साक्षाच्छ्रुतिप्रतिष्ठितमूलैः प्रार्चीनैर् ग्रन्थैः सहैव समावेशो व्यधायि, यतः यो भारतीयानां मनस्यध्यात्मतत्त्वानुसंधानप्रकाशः समये समये प्रत्यभात् तत्सारसमर्पणमेव तेषां सर्वेषां सामान्येन लक्ष्यं भवति । विधयाऽनयेह सहचारेण समुपस्थापितामाध्यात्मिकीं सामग्रीं समधीलैव विद्वांस एतिहासिक-प्रक्रियया तत्तद्विचारधारविश्लेषसमन्वयपरस्य वैज्ञानिकशोधकर्मण ईशेरन् ।

६. एवंविधामेव हैतुकीं प्रवृत्तिमासाद्योपनिषद्भिः समूलानां वा विशिष्टसंबन्धान्तरं भजमानानां वा सतामनु-पदं निर्दिष्टानां ग्रन्थानामप्यत्र समावेशोऽकारि—

(अ) बादरायणीयं ब्रह्मसूत्रम् । (आ) गौडपादीया कारिका । (इ) कापिलं सांख्यसूत्रम् । (ई) ईश्वर-कृष्णीया सांख्यकारिका । (उ) पातञ्जलं योगसूत्रम् । (ऊ) भगवद्-गीता ।

### (ख) संस्करणानि

यद्यपि समेषां संकेतितपूर्वार्णां ग्रन्थानां नाद्याऽवधि कोऽप्येकः संग्रहः प्राकाश्यमलब्ध, तथाप्येतेषु बहु-संख्याका बहुधा मुद्रिताः समभूवन् । एषामेव संस्करणानां संप्रति कियानपि परिचयः कार्येत । तद् यथा—

१. ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्यैतरेय-तैत्तिरीय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेताश्वतराऽऽख्याः सजातीयसाहित्यमूर्धन्यभूता एकादशोपनिषदः खलु प्रागर्वाक्यीकाटिप्पणादिभिः समवेता वा विरहिता वाऽनेकमुद्रणभाक्क्या सर्वत्र प्रसिद्धाः ।

२. 'ईशाद्यष्टोत्तरशतोपनिषदः' इत्येवं प्रसिद्धाऽसकृत्प्रकाशितश्च मुंबापुरीयनिर्णयसागरमुद्रागृहीयः संग्रहो, यत्र वस्तुतः ११२ उपनिषदां समावेशो भवति ।

३. पुण्यपत्तनीयाऽऽनन्दाश्रमसंस्कृतग्रन्थमालाऽन्तर्गतः २६ संख्याङ्कित 'उपनिषदां समुच्चयः' (१६५२), यस्मिन् ३२ उपनिषदो नारायण-शङ्करानन्द-रामतीर्थैर्यथायोगं व्याख्याताः सत्यः समाविष्टा भवन्ति ।

४. अञ्जाराऽऽख्यमद्रासनगरीयोपनगरविशेषस्थब्रह्मविद्यासमीयपुस्तकालयाल्लब्धप्रकाशा ये संग्रहास्ते ताव-दिमे भवन्ति—

१. वर्षयुग्मात् प्राक् संख्येयं ४२५ भाविनीति समभाव्यत (तु. विभा १, भू २, ख १) ।

२. प्रथमद्वितीयतुरीयाणां विभा. यथाक्रमं सांक्षितिकेऽयं ब्राह्मणारण्यकीयोऽयं सौत्रोऽयमिति नामकरणमप्येवं-जातीयकं द. ।

(अ) 'संन्यासोपनिषद्' इत्याख्यः साऽऽलोचनटिप्पणम् एक० ओ० आधरेण संस्कृतः २० उपनिषदां संग्रहः (१९६६) ।

(आ) महादेवशास्त्रिणा उपनिषद्ब्रह्मयोगिनष्टीकया सहिताः संस्कृताः 'योगोपनिषद्' (१९७७), 'सामान्य-वेदान्तोपनिषद्' (१९७८), 'वैष्णवोपनिषद्' (१९८०), 'शैवोपनिषद्' (१९८२), 'शाक्तोपनिषद्' (१९८२) इत्याख्याः पञ्च संग्रहाः, यत्र एक. २०, २४, १७, १५, ८ उपनिषदाः समावेशमाजो भवन्ति ।

(इ) चि. कु. राज-निरीक्षितसंस्कारः 'अप्रकाशिता उपनिषद्' इत्याख्यः ७० उपनिषदां संग्रहः (१९६०) ।

५. एस्. के. बिल्वालकरेण संस्कृत आङ्गलानुवादेन योजितश्चाप्रकाशितानां ४ उपनिषदां संग्रहः (१९८२) ।

६. ए. एवलानविदुषा संपादितायां लन्दनतः प्रकाशितायां तान्त्रिकग्रन्थमालायामेकादशः 'कौलाद्युपनिषद्' इत्याख्यः संग्रहः (१९७६), यत्र सीतारामशास्त्रिणा संस्कृतानां यथायोगं भास्कररायाऽप्ययदीक्षित-लक्ष्मीधराणां टीकाभिः समन्वितानां ९ उपनिषदां समावेशो भवति ।

७. मुंबापुरीयसंस्कृतप्राकृतग्रन्थमालायां चत्वारिंशद्विभाग् जैकबविदुषा सटिप्पणं संस्कृतः 'एकादशार्थवर्णो-पनिषद्' इत्याख्यः संग्रहः (१९७३) ।

८. ईशायेकादशोपनिषद्भ्य इतरासामुपनिषदां मध्ये तिस्र इमाः पृथक्प्रकाशनभाजः —

(अ) 'मैत्र्युपनिषद्' रामतीर्थकृतया टीकया सहिता ई० बी० काबलविदुषा साङ्गलानुवादं संस्कृता च (१९१६-२७, १९७०-६२) ।

(आ) 'पिण्डब्रह्माण्डोपनिषद्' वैदिकमुनिहरिप्रसादवचःप्रमाणतः स्वामिकेशवानन्देन स्वयं कृता सती स्वीयया भाषाटीकया सह प्रकाशिता (१९६२) ।

(इ) 'भवसंतारणोपनिषद्' रामप्रपन्नकृतभाषाटीकया सहिता मुंबापुरीयवैकेश्वरमुद्रागृहाल्लब्धप्रकाशा (१९६४) ।

९. उपनिषदितरेषां सतामिह समावेशभाजां ग्रन्थान्तराणां यानि संस्करणानि प्रायेणाऽस्माभिरुपयुक्तानि, तानि तावदिमानि भवन्ति—

(अ) मुंबापुरस्थनिर्णयसागरमुद्रागृहीयं शांकरभाष्यसहितब्रह्मसूत्रीयं संस्करणम् (१९७२) ।

(आ) पुरयपत्तनस्थाऽऽनन्दश्रमसंस्कृतग्रन्थमालायां प्रकाशिता शांकरभाष्येणाऽऽनन्दगिरिटीकया च सहिता गौडपादीया कारिका (१९६८) ।

(इ) गावें-विदुषा संस्कृतं सांख्यसूत्रम् (१९४५) अनिरुद्धमहादेवीयटीकाद्वयेन युतम् ।

(ई) 'सांख्यकारिका' वाचस्पतिमिश्र-बालरामकृतव्याख्याद्वयेन युता सती बि. लेले इत्यनेन मुंबापुर्यां प्रकाशिता (१९८५) ।

(उ) 'योगसूत्रम्' अनन्तदेवकृतव्याख्यया सहितं वाराणस्यां लब्धप्रकाशम् (१९५४) ।

(ऊ) 'भगवद्गीता' सशांकरभाष्या सती भाषानुवादेन युता गोरक्षपुरीयगीतामुद्रागृहात् संजातप्रकाशा (१९८८) ।

### ( ग ) भाष्याणि

१. यथायोगं पदविभागविनिर्णयाय च पदार्थावबोधाय च यावदुपलम्भं साहितिकोद्धारिण्याणां पदपाठानां बोपनिषन्मूलीयानां प्रागर्वाग्याख्यानानां चेह समुपयोगोऽकारि ।

२. तेषां स्वस्वसंज्ञेपसाहचर्येणोपरिष्ठाद् यथायथं निर्देह्यमाणात्वात् नेह तदुपवर्णनमपैक्षि (तु. संज्ञे. क, क') ।

३. यदप्यन्यदिह टिप्पणभागे प्रमाणभावेन धृतं भवति, तस्यापि तत्संज्ञेपाभिसंबद्ध एव परिचयः कारितो ब्रह्मव्यः (तु. संज्ञे. क, क') ।

## ( घ ) क्रमः

यं क्रममनुसृत्याऽऽधारग्रन्थानामिह समावेशोऽकारि, सोऽधुना प्रदर्श्यते । तद् यथा—१. संकेतितपूर्वा ईशायेकादशमुख्योपनिषदः । २. गौडपाद-कारिका । ३. मैत्र्युपनिषत् । ४. असंकेतितपूर्वाः सत्यो निर्णयसागर-संग्रहीया उपनिषदो यथातत्संग्रहक्रमम् ( तु. भू १, ख २ ) । ५. असंकेतितपूर्वाः सत्योऽध्याससंग्रहीया अप्रकाशितोपनिषदो यथातत्संग्रहक्रमम् ( तु. भू १, ख ४, इ ) । ६. असंकेतितपूर्वाः सत्यस्तान्त्रिकग्रन्थमालीयसंग्रहस्था उपनिषदो यथातत्संग्रहक्रमम् ( तु. भू १, ख ६ ) । ७. असंकेतितपूर्वाः सत्यो मुंबापुरीयसंस्कृतप्राकृतग्रन्थमालीयसंग्रहस्था उपनिषदो यथातत्संग्रहक्रमम् ( तु. भू १, ख ७ ) । ८. चूलिकोपनिषत् । ९. अमृतविन्दूपनिषत् । १०. कठश्रुतिः । ११. भवसंतारणोपनिषत् । १२. पिण्डब्रह्माण्डोपनिषत् । १३. योगसूत्रम् । १४. सांख्यसूत्रम् । १५. सांख्यकारिका । १६. ब्रह्मसूत्रम् । १७. भगवद्-गीता ।

## ( ङ ) स्थल-निर्देशः

१. तत्तद्ग्रन्थीय-स्थल-निर्देशो संख्याद्योतिताः सत्यो विभागमात्रा यथासंप्रदायप्रसिद्धयेकत्वद्वित्वत्रित्वादिविशिष्टा एव सत्यो यथायथं व्यवच्छिद्यन्ते ( तु. विभा १, भू ४, ७, १६ उउ ) ।

२. बहूनां ग्रन्थानां, विशेषतस्तेषां येषां कापि स्पष्टा विभागव्यवस्था नोपलभ्यते, स्थलानीह पृष्ठपङ्क्तिसंकेततो निरदेशिषत् ।

३. यत्रैकत्वविशिष्टाः सत्यो विपुलविस्तरा विभागमात्रा भवन्ति, तद्विषयो निर्देश इह पङ्क्तिसंकेततोऽकारि ।

४. अपि सन्ति केचिदपरे ग्रन्थाः पञ्चष-विधान्तरविशेषवद्विभागमात्रा येषां स्थलनिर्देशार्थं यथायोगं तत्तद्वैशेष्य-वद्यवस्थान्तराणि प्राक्कृत्यन्त ।

५. इह सामान्यसंकेतमात्रभाजां सतामुक्तपूर्वाणां समेषां तत्तत्स्थलनिर्देशप्रकारीयाणां विशेषाणां विस्तरो प्रत्येकग्रन्थनामसंक्षेपीयटिप्पणो यथायोगं च यथावर्गं चोपरिष्ठात् क्रियमाणो द्रष्टव्यः ( तु. संक्षे. क ) ।

## २. विधानक-सार-संग्रहः

## ( क ) सामान्य-संकेतः

समुपवर्णितचरः खलु प्रकृतग्रन्थीयो विधानक-विस्तरः सामान्यतश्च तिङन्त-सुबन्ताऽव्ययाभिसंबन्धेन यथायोगं धातु-प्रातिपदिक-रूप-स्वर-स्थलनिर्देश-तत्तत्संकेतप्रयोग-तत्तन्मुद्राप्रयोगव्यवस्थाविशेषतश्च ( तु. विभा १, भू ४ ) । अत इह प्रकृतविभागीया ये केऽपि विशेषा भवन्ति, त एव सूच्येरन् ।

## ( ख ) सामग्रया मात्रा

इहाऽनुपदपरिगण्यमानकतिपयसाधारणशब्दमात्रव्यतिरिक्तानां सर्वेषामप्यन्येषां पदानां रूपतश्च स्थलतश्च संपूर्ण एव निर्देशोऽकारि । यच्चाऽधुना परिगणनविषयं भवति, तत्रापि तत्तत्पृथग्रूपाऽभिसंबद्धानि स्थलानि दशावधिक-तया निर्दिश्यन्त एव येन तद्विषयेऽपि संग्रहस्याऽस्य वैज्ञानिकं गौरवं नैव कुतोऽपि हीयेत । अथ तत् परिगणनं क्रियते । तद् यथा—

१. एषां धातूनां तैजानि रूपाणि—√अस् (भुवि), √आह्, √कथ्, √कु, √गच्छ्, गम्, √जन्, √ज्ञा, √त्यज्, √इश्, √नश् (विनाशो), √पश्, √भुज्, √भू, √या, √रक्ष्, √लभ्, √वच्, √वद्, √विद् (ज्ञाने), √वृत्, √क्षु, √स्था, √हु (दानाद[?दा]नयोः) ।



२. अनुपसृष्टानां धातूनां क्त्वान्तानि रूपाणि ।

३. एषां प्रातिपदिकानां सौपानि रूपाणि—अद्म्-, अष्टन्-, अस्मद्-, इद्म्-, एक-, एतद्-, किम्-, चतुर्-, तद्-, त्रि-, दशन्-, द्वि-, ऽनमस्-, नवन्-, नामन्-, पञ्चन्-, यद्-, यावत्-, युष्मद्-, ऽविश्व-, षष्-, सप्तन्-, सर्व- ।

४. एतान्यव्ययानि—अतः, अत्र, अथ, अथो, अपि, इतः, ऽइति, इद्, इह, उ, उत्, उपरि, एतर्हि, एव, एवम्, ओम्, कथम्, कथा, कर्हि, कुतः, कुत्र, क्व, खलु, च, चन, चिद्, चेद्, तथा, तर्हि, तु, न (निषेधे), नु, नेद्, पश्चात्, पृथक्, भुवस्, भूर, मा (निषेधे), यतः, यत्र, यथा, यदि, सद्यस्, स्वयम्, स्वर, स्वाहा, ह, हि ।

५. वीजमन्त्राः अं, आं, ईं प्रभृ. ।

### ( ग ) पाठानामुद्धारभेदौ

१. ये तावदिह संहिताब्राह्मणारण्यकीयोद्धाररूपाः पाठा भवन्ति, ते सर्वे तत्तन्मूलसूचनपूर्वकं यथावत्तथैव निरदेशिषन् । यत्र यत्र यथा यथा च मूले सांशितिको दीर्घो दृश्यते, तत्र तत्र तथा तथैव सोऽपि निरदेशि ।

२. यान्यपि च पाठोद्धारेषु कियताचिदंशेन पाठान्तराणि भवन्ति, तानि सर्वाणीह यथायथमसूचिषत् । एवंविधानां पाठोद्धारणां विषये मुद्रकमिदं खलु संभावयितुं यथा तेषां मूलं संप्रति लोपमिवोपगतेषु तेषु तेषु नामावशेषेषु शाखाविशेषेषु सृज्यमिति ।

३. उपनिषत्स्वपि पाठतो यावन्त्योन्यं संवादविसंवादौ संभवतस्तावपि सम्यगिहाऽसूचिषाताम् ।

४. एकस्मिन्नपि ग्रन्थे संस्करणभेदतो यः पाठभेद उपलभ्यतेऽसावपीह तत्र तत्रासूचि ।

५. तत्र तत्र संस्करणे ये संपादकीयटिप्पणगता अपि पाठभेदा उपलभ्यन्ते तेऽपीहोपयोगवन्तः सन्तोऽसूचिषत् ।

६. एवं तत्तद्भाष्यटीकादिगता अपि पाठभेदा इह यथायथमसूचिषत् ।

### ( घ ) पाठ-प्रतिष्ठापनम्

एतद्विभागीयानामाधारग्रन्थानामालोचितप्रतिपदस्वरूपाणां संस्करणानां दुर्भिक्षमिव खलु भवति । यान्यपि ह्येतदीयानि मुद्रणान्युपलभ्यन्ते सर्वाणि तानि संस्करणेषु समात्राण्येव सन्ति । तेषां संपादकैरेतावानपि ह्यायासो नैवाङ्गीकृतो यदुपलभ्यमानसंस्करणान्तरमवलोक्य तावत् स्वीयं तत्तत् संस्करणं प्रकाशयन्त्विति । अत आश्चर्यमिवैकमपि तादृशं पृष्ठं यदीयं पदजातं पूर्वत एव शुद्धत्वाच्छोधान्तराऽव्यपेक्षं सद् यथोपलभ्यमानं समावेशमियात् । एवं स्थिते सर्वत्रापि यथाप्राप्तं पाठान्तरसंवादानां वैयकरणविचाराद्वा छान्दसविमर्शाद्वा यथाकथमपि पाठप्रतिष्ठापनेऽसाधारण एव कोपि प्रयत्न इहाऽवश्यकार्यतयापैक्षि । संनोषकरी चैषा वार्ता यद् येषां स्थलानां विषयेऽङ्गीकृतः क्लेशः परिश्रमस्तेषां मध्ये भूयसि तावत् पाठतः प्रतिष्ठापयितुमशक्यत, अद्वयीयांस्येव च शोधप्रयत्नान्तरसव्यपेक्षाणि सन्ति प्रश्नचिह्नसायुज्येनाऽवाशेषितेति । अस्मिन् विभागेऽपरोप्येकः शोधविधानक्रीयो विशेषोऽकारि । तथा हि । यावन्तोऽपि श्रेयविषयाः पाठा भवन्ति, सर्वेऽपि ते कालक्रमेण वाचनिकदोषप्रयोजिता वा लिपिदोषप्रयोजिता वा भवन्ति । एतयोस्तावद् श्रेयप्रकारयोरिह विवेकोऽकारि ( तु. संज्ञे. लैवि., वावि. ) । इयं च विवेचनप्रक्रियोपनिषदां च पदपाठप्रभृतिप्राचीनभाष्यग्रन्थानां च बहूनामपि श्रेषाणां शोध औपयिकतामगात् ।

### ( ङ ) अधिपाणिनीयमनुसंधानम्

१. पाणिनीयया वैयाकरणया प्रक्रिययाऽस्य ग्रन्थस्याऽनुवर्त्यनुवर्तकभावरूपः संबन्ध उपदर्शितपूर्वो भवति ( तु विभा १, भू ४, १, अ, ४ ) ।

२. प्रथमविभागीयटिप्पणभागवदेतद्विभागीयटिप्पणभागोऽपि तस्याः प्रक्रियाया अभिसंबन्धेन भूयोऽनुसंधानं प्रयोजयेत् । एतद्विषयाणामत्रत्यानां सूचनानां मुख्याः प्रकारास्तावदिमे भवन्ति— (अ) साक्षादिव लक्ष्यभूतस्य सतो निर्देशस्य पाणिनीयानुशासनेन संवादनम्, (आ) अतथाविधस्य सतो निर्देशस्य परिष्कारविशेषतो वोपसंख्यानविशेषतो वा पाणिनीयानुशासनेन संवादनम्, (इ) पाणिनीयानुशासनेन स्पष्टं विरुध्यमानस्य सतो निर्देशस्य तथात्वेन सूचनम्, (ई) नैरुक्त्या प्रक्रियया साध्यमानस्य सतो निर्देशस्य पाणिनीयया प्रक्रिययाऽनुवादनम् (तु. विभा १, भू ४, १, ठ, २) ।

### (च) पूर्वेऽभ्यर्हिताः

टिप्पणभागस्य पर्याप्तोऽंशो बहूनां विवादप्रस्तानां विषयाणां विचारेण व्याप्तो भवति । तत्र सर्वत्र स्वमतप्रकाशनं पक्षविपक्षविभक्तपूर्वाभ्यर्हितीयमतवैविध्यस्य प्रदर्शनेन सहितमेवाऽकारि (तु. तय. पृ३<sup>b</sup> प्रष्ट.) ।

### (छ) प्रक्रिया-परिवर्धनम्

वर्गितनिर्देशिकायाः सामान्यसुक्तपूर्वं (तु. विभा १, भू ४, १, ज) विधानकमनु विहितेऽप्यस्मिन् विभागे तस्य तस्य वर्गस्य निर्देशप्रकारस्तावत् तथा विपुलीभावं प्रापितो भवति यथाऽस्य पदपदार्थसमवबोधनौपयिकतायां गुणातिशयाधानमिव समजनि । तस्यैव विपुलीभावस्य केऽप्यंशाः संप्रतीह संकेत्येरन् । तद् यथा—

१. पाणिनीयधातुपाठे धातूनां येऽर्थाः पठिता भवन्ति, तेभ्य इतरे चेद् धातवीया अर्था इहोपालप्सत, तर्हि तेषां स्वरूपतः सम्यङ् निरूपणमकारि ।

२. यदि कश्चिद् धातुपाठीयोऽनेकार्थो धातुरिह कस्मिंश्चिदेकस्मिन्नेवार्थेऽवर्ति, तर्हि सोऽर्थविशेषो निरदेशि ।

३. यदि कश्चिद् धातुरिहाऽनेकार्थकतयोपालम्भि, तर्हि प्रत्यर्थं पृथग्धातुतया व्यूढस्य सतस्तस्याऽनेकसंख्याको निर्देशोऽकारि ।

४. यत्रोक्तचरोऽनेकधातुकरणो विभागः कुतश्चिद् धेतोः कर्तुं नाशान्कि, तत्र सर्वत्र बध्ना. इत्यनेन संक्षेपेण धातवीयबह्वर्थता समकेति ।

५. यत्र निर्दिष्टो धातुर्वा तदर्थो वा तद्बह्वर्थतासंकेतो वाऽतिपाणिनीयसंप्रदायो भवति, तत्र सर्वत्र तथात्व-सूचिका \* इति तारा प्रादायि ।

६. यत्र यत्र नाम्नां यौगिकी स्थितिर्वर्गितनिर्देशसामर्थ्यादेव स्पष्टा न समजनि, तत्र तद्विषयो वैयुत्पत्तिको विस्तरष्टिप्पणभागे प्रत्यपादि । यत्र च मतान्तरे पुष्टापि सती व्युत्पत्तिर्नाभ्यरोचि (तु. तय. उत्सुक-कमठ-जटा-ज्योत्स्ना-प्रभृ.), तत्र व्यु. ? इत्येवं संकेतपूर्वं परमतस्य प्रदर्शनं चाऽऽलोचनं च यथासंभवे न तु साकल्येनाऽकारिषाताम् । अर्थावगहनोऽयं विषयः । कदाचिदेतन्मात्रपरे स्वतन्त्र एव ग्रन्थेऽयं समुचितविस्तरेण प्रतिपादयितुं शक्येतेति हि सांप्रतिकी प्रतीतिः ।

७. एतद् भावपदं (भाप.), एतन् नामपदं संज्ञापदं (नाप. संप. ) वा, एतद् वैयक्तिकसंज्ञापदं व्यक्तिपरकसंज्ञापदं (वैसं. व्यसं. ) वा, एतद् विशेषणपदं (विप.), एतद् विशेष्यप्रधानं विशेषणपदं (विशे.वि.), एतद् क्रियाविशेषणं (क्रिवि.), एतच्चाऽव्ययम् (अव्य.) इत्येवं प्रतिप्रातिपदिकनिर्देशमत्र व्यव्वेचि ।

८. प्रायेणाऽर्थभेदतो बह्वर्थवन्ति प्रातिपदिकानि पृथक्प्रातिपदिकतया व्यूह्य निर्दिष्टानि भवन्ति । यत्र कुतोऽपि हेतोर्नैतद् व्यूहनं कर्तुमशान्कि, तत्र सर्वत्र बध्ना. इत्यनेन संक्षेपेण तस्य तस्य प्रातिपदिकस्य बह्वर्थतया वृत्तिः समकेति, तत्रत्ये टिप्पणभागे च तत्तदर्थनिर्देशोऽप्यकारि ।

६. समस्तानां प्रातिपदिकानामत्र सर्वत्र स्वरूप-विवेकोऽकारि । बहुसंख्याकानां समासानां बह्वयवत्वात् तद्विग्रहणं त्वतिदुष्करमिव च चिरसाध्यमिव च समजनि । अत एवाऽनाद्याऽवयवभूतानां प्रातिपदिकानामिह मूलभागे समावेशस्य दुःशकत्वात् तन्निर्देशः परिशिष्टभाग एव कथमपि कर्तुमपरि ।

१०. वाङ्मयीयं पदं पदं तत्कालीनस्येतिहासतत्त्वस्य ज्ञापकं भवतीति कृत्वाऽत्र विभागे सर्वेषां पदानामनया दृष्ट्याऽध्ययनमकारि तदुपाधयेण च प्रतिपदं प्राग्भारतीयसमाजस्य तस्यास्तस्याः स्थित्याः सूचिकायाः सत्यास्तस्यास्तस्या मूर्धन्यसंख्याया अधिरोपोऽकारि । संख्यानां चाऽऽसां संकेतिका येऽर्था भवन्ति, तेषां विस्तरस्तूपरितनस्य खण्डकस्य विषयमनुप्रविशति ।

### (ज) संकेताः

उक्तपूर्वैभ्यः संकेतेभ्यः ( तु. विभा १, भू ४, ७ ) व्यतिरेकेणह येऽपरे संकेताः प्रायुक्त, त इमे भवन्ति—

१. —, - इत्येते त्रयः पूर्णाऽर्ध-प्रार्ध-मिता विच्छेदका उक्तपूर्वेषु बह्वयवेषु समासेषु ( तु. भू २, छ ६ ) तत्तदवयवसंनिर्कर्षविप्रकर्षविवेकप्रयोजितयथायोगोपयोगाः सन्त एतद्विभागीयाया महत्या एवाऽपेक्षायाः परमसाधका भवन्ति ।

२. ° इति शीर्षणं वर्तुलकं द्वयवयवस्य सतः समासस्याऽऽद्यावयवस्योत्तरवर्तितया प्रयुक्तं सदुत्तराऽवयवस्याऽन्यवधानेन समस्यतां संकेतयति । ° ° इति शीर्षणं वर्तुलकयुग्मकं तु बह्वयवस्य सतः समासस्याऽऽद्यावयवस्योत्तरवर्तितया प्रयुक्तं सदन्त्यावयवस्य माध्यमिकैकानेकावयवान्तरव्यवहितां समस्यतां संकेतयति ।

३. : इति स्थलभागीयं बिन्दुयुगं पूर्ववर्तिनीं पृष्ठसंकेतनीं सतीं संख्यां चोत्तरवर्तिनीं पङ्क्तिः संकेतनीं सतीं संख्यां च विभाजयति ।

४. § इति स्थूणा प्रतियुक्तटिप्पणगतप्रातिस्विकमूलनिर्देशां पूर्ववर्तिनो निर्देशस्य मूलान्तरोद्धारस्वरूपतां संकेतयति । क्वचित् क्वचिदियं मूर्धन्यसंख्याऽवस्थापनमात्रौपयिकतामाप्नुयैति ।

५. + इति योजकः पूर्ववर्तीं च शीर्षणयश्च सन् वास्तविकीं नूतां निर्दिष्टि संकेतयति ।

६. १, २, ३ इत्यादयो मूर्धन्याः संख्याः प्रातिपदिकस्य वा स्थूणा-चिह्नस्य वोपरि धृताः सत्यो येषां विशिष्टा-नामार्थानां संकेतिन्यो भवन्ति ( तु. भू २, छ १० ), तेषामिदं विवरणं भवति । तद् यथा—

१ = प्राणभृद्-व्यक्ति-विशेष-

२ = प्राणभृज्-जाति-विशेष-

३ = देश-विशेष-

४ = नगर-विशेष-

५ = पर्वत-विशेष-

६ = वन-विशेष-

७ = नदनद्यादिजलस्थान-विशेष-

८ = उद्भिज्-जाति-विशेष-

९ = युद्धोपकरण-विशेष-

१० = सामाजिकस्थितिसंकेत-विशेष-

११ = विद्याकलादिसंकेत-विशेष-

१२ = धार्मिकाऽऽध्यात्मिकाऽऽचारविचारकथावार्तादि-संकेत-विशेष-

१३ = ऐहिकाऽभ्युज्जयसंकेत-विशेष-

१४ = इतिहासोपाख्यानादिसंकेत-विशेष-

१५ = वैयाकरणनैरुक्तसंकेत-विशेष-



## संक्षेपाः (Abbreviations)

(क) \*आधार-ग्रन्थीयाः (of Basic Texts and their Commentaries)

|  |  |
|--|--|
| अ. <sup>१</sup> = अथर्वशिखोपनिषद् - (निसा., ग्रान., अज्याः शै.)  | अरु. <sup>१</sup> = अरुणोपनिषद् - (तान्त्रि.)                      |
| अक्ष. <sup>१</sup> = अक्षमालिकोपनिषद् - (अज्याः शै., निसा.)      | अल्ला. <sup>१</sup> = अल्लोपनिषद् - (अज्याः अ.)                    |
| अक्षि. <sup>१</sup> = अक्ष्युपनिषद् - (निसा., अज्याः सा.)        | १अव. <sup>१</sup> = १अवधूतोपनिषद् - (निसा., अज्याः सं.)            |
| अता. <sup>१</sup> = अतयनारकोपनिषद् - (अज्याः यो., निसा.)         | २अव. <sup>१</sup> = २अवधूतोपनिषद् - (अज्याः सं.)                   |
| अदी. <sup>१</sup> = अप्यदीक्षितकृत-भाष्य - (व., भा.)             | अद्य. <sup>१</sup> = अद्यक्तोपनिषद् - (निसा., अज्याः वै.)          |
| अदे. <sup>१</sup> = अनन्तदेवकृत-व्याख्या - (योस्.)               | अशि. <sup>१</sup> = अथर्वशिर उपनिषद् - (निसा., ग्रान., अज्याः शै.) |
| अद्वे. <sup>१</sup> = अद्वैतोपनिषद् - (अज्याः अ.)                | १आ. <sup>१</sup> = १आत्मोपनिषद् - (निसा., ग्रान., अज्याः सा.)      |
| अद्वैभा. <sup>१</sup> = अद्वैतभावोपनिषद् - (तान्त्रि.)           | २आ. <sup>१</sup> = २आत्मोपनिषद् - (आन.)                            |
| अध्या. <sup>१</sup> = अध्यात्मोपनिषद् - (निसा., अज्याः सा.)      | आगि., आगिटी. = आनन्दगिरिकृत-टीका-                                  |
| अना. <sup>१</sup> = अमृतनादोपनिषद् - (निसा., ग्रान., अज्याः यो.) | आच. <sup>१</sup> = आचमनोपनिषद् - (अज्याः अ.)                       |
| अन्न. <sup>१</sup> = अन्नपूर्णोपनिषद् - (निसा., अज्याः सा.)      | आथ. <sup>१</sup> = आथर्वणद्वितीयोपनिषद् - (अज्याः अ.)              |
| अवि. <sup>१</sup> = अमृतविन्दूपनिषद् - (आन., अज्याः यो.)         | आपू. <sup>१</sup> = आत्मपूजोपनिषद् - (अज्याः अ.)                   |

\* एतद्विभागीयाऽऽधारग्रन्थीयाऽऽभ्यन्तरविभागप्रकारनानात्वमुपजीव्येत्य आधारग्रन्थीयस्थलसंकेतस्तावत् षोडशप्रकारतया विभक्तः द्र.। ते चार्थे षोडश प्रकाराः प्रक्रियमाणेऽत्र तत्तत्संक्षेपाऽभिसंबद्धतत्तदाधारग्रन्थनामनिर्देशे शीर्षग्याभिः षोडशभिरेव संख्याभिः संकेतिताः सन्तो यथाशीर्षग्यसंख्याक्रमं तत्तदभिप्रायभेदतोऽधुना विविच्येरन्। तद् यथा—

१ = सांप्रदायिकीं प्रसिद्धिमनुग्रहानः संकेतः। २ = पङ्क्तिः संकेतः। ३ = पृष्ठ-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ४ = खण्ड-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ५ = अध्याय-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ६ = पटल-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ७ = उपनिषत्-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ८ = आवरण-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ९ = प्रपाठक-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। १० = अत्र वर्गद्वयं प्रकल्पितं द्र.। प्रथमे वर्गे आ पञ्चदशश्रुतेः १, १-१५ इत्याकारको द्विधा व्यूढः संकेतः, द्वितीये च वर्गे आ एकादशश्रुतेः २, १-११ इत्येवं द्विधा व्यूढः संकेतः। तत्रैव द्वादश-त्रयोदशयोः श्रुत्योर्थथाक्रमं २, १२, १-३; १३, १-२ इत्येवं त्रिधा व्यूढः संकेतः। तत् ऊर्ध्वम् आ चतुर्दशश्रुतेर् आ अवसानात् २, १४-२० इत्याकारको द्विधा व्यूढ एव संकेतः द्र.। ११ = अत्रत्येषु १, ३-७ खण्डेषु खण्ड-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। केवलं २ खण्डे सांप्रदायिकप्रसिद्धिमनुगतः संकेतः। १२ = अत्र खण्डत्रितयं भवति। तत्र प्रथमे खण्डे खण्ड-श्लोकतः, २-३ खण्डयोश्च खण्ड-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। १३ = अत्र तावद् आद्यस्य गद्यभागस्य १ संख्यया संकेतः। ततः ३१ संख्याकस्य पद्यभागस्य यथासंख्यं २-३२ इत्येवं संकेतः। अन्यस्य गद्यभागस्य च ३३ संख्यया संकेतः। १४ = अत्र संप्रदायप्रसिद्ध्या तावत् षड्भिः संख्याभिर्विभागः कृतः द्र.। तत्र १संख्यीये विभागे संख्या-पङ्क्तितो द्विधा व्यूढः संकेतः। ततः २-६ संख्यात्मके भागे यथासंख्यं संकेतः। १५ = अत्र तावत् संप्रदाय-प्रसिद्ध्या त्रयः खण्डाः, तेषां प्रथमद्वितीययोः खण्डत एकधा संकेतः। तृतीये पद्यात्मके खण्ड-श्लोकतो द्विधा व्यूढः संकेतः। तत्रैवाऽन्ये गद्यभागे खण्डतः संकेतः। १६ = इह तावत् त्रयः खण्डाः। तेषां प्रथमद्वितीययोः खण्डतः। तृतीये च खण्ड-श्लोकतो द्विधा व्यूढः संकेतः द्र.।

\* एतत्प्रसूतिषु कोष्ठेषु यद् यत् संस्करणीयं नाम कृष्णं मुद्रितं भवति, तत्तत्संस्करणमिह कोषे प्राधान्येनोपायो जीति द्र.।

आबो.<sup>१</sup> = आत्मबोधोपनिषद्- (निसा., अड्या: सा.)  
 आरु.<sup>१</sup> = आरुणिकोपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: सं.)  
 आर्षे.<sup>१</sup> = आर्षेयोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 आश्र.<sup>१</sup> = आश्रमोपनिषद्- (अड्या: सं.)  
 इ.<sup>३</sup> = इतिहासोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 ई.<sup>१</sup> = ईशोपनिषद्- (निसा., आन.)  
 उग्र.<sup>१</sup> = उपनिषद्ब्रह्मयोगिकृत-टीका-  
 ऊ.<sup>१</sup> = ऊर्ध्वपुण्ड्रोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 ए.<sup>१</sup> = एकाक्षरोपनिषद्- (निसा., अड्या: सा.)  
 ऐ.<sup>१</sup> = ऐतरेयोपनिषद्- (निसा., आन.)  
 क.<sup>१</sup> = कठोपनिषद्- (आन., निसा.)  
 करु.<sup>१</sup> = कठरुद्रोपनिषद्- (निसा.)  
 कलि.<sup>१</sup> = कलिसंतरणोपनिषद्- (अड्या: वै., निसा.)  
 कथु.<sup>१</sup> = कठधृत्युपनिषद्- (अड्या: सं.)  
 का.<sup>१</sup> = कात्यायनोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 काम.<sup>१</sup> = कामराजकीलितोद्धारोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 कामे.<sup>१</sup> = कालीमेधादीक्षितोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 काला.<sup>१</sup> = कालामिन्द्रोपनिषद्- (निसा., अड्या: शै.)  
 कालि.<sup>१</sup> = कालिकोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 कुं.<sup>१</sup> = कुण्डिकोपनिषद्- (निसा., अड्या: सं.)  
 कृ.<sup>१</sup> = कृष्णोपनिषद्- (निसा., अड्या: वै.)  
 कृपु.<sup>१</sup> = कृष्णपुरुषोत्तमोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 के.<sup>१</sup> = केनोपनिषद्- (आन., निसा.)  
 कै.<sup>१</sup> = कैवल्योपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: शै.)  
 कौ.<sup>१</sup> = कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: सा.)  
 १कौल.<sup>१</sup> = १कौलोपनिषद्- (तान्त्रि.)  
 २कौल.<sup>१</sup> = २कौलोपनिषद्- (तान्त्रि.)  
 क्षु.<sup>१</sup> = क्षुरिकोपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: यो.)  
 ग.<sup>१</sup> = गरुडपुत्रोपनिषद्- (अड्या: शै., निसा.)  
 गरु.<sup>१</sup> = गरुडोपनिषद्- (अड्या: वै., निसा.)  
 गर्भ.<sup>१</sup> = गर्भोपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: सा.)  
 गा.<sup>१</sup> = गायत्र्युपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 गार.<sup>१</sup> = गायत्रीरहस्योपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 गी.<sup>१</sup> = गीता- (गोर., आन.)  
 गु.<sup>१</sup> = गुह्यकाल्युपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 गुषो.<sup>१</sup> = गुह्यषोढान्यासोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 गोड.<sup>१</sup> = गोपालोत्तरतापिन्युपनिषद्- (अड्या: वै., निसा.,  
 आन.)  
 गोच.<sup>१</sup> = गोपीचन्दनोपनिषद्- (अड्या: अ.)

गोपा.<sup>१</sup> = गोपालस्वामिकृत-भाष्य- (ई. प्रभु.)  
 गोपु.<sup>१</sup> = गोपालपूर्वतापिन्युपनिषद्- (अड्या: वै., निसा., आन.)  
 गौ.<sup>१</sup> = गौडपादकारिका- (आन.)  
 च.<sup>१</sup> = चतुर्वेदोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 चक्र.<sup>१</sup> = चक्रोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 चा.<sup>१</sup> = चानुषोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 चू.<sup>१</sup> = चूलिकोपनिषद्- (आन.)  
 छां.<sup>१</sup> = छान्दोग्योपनिषद्- (आन., निसा., Bch.)  
 छाग.<sup>१</sup> = छागलेयोपनिषद्- (अड्या: अ., वै.)  
 जा.<sup>१</sup> = जाबालोपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: सं.)  
 जाद.<sup>१</sup> = जाबालदर्शनोपनिषद्- (निसा., अड्या: यो.)  
 जाबा.<sup>१</sup> = जाबाल्युपनिषद्- (निसा., अड्या: शै.)  
 ता.<sup>१</sup> = तारसारोपनिषद्- (निसा., अड्या: वै.)  
 तारा.<sup>१</sup> = तारोपनिषद्- (तान्त्रि.)  
 तु.<sup>१</sup> = तुरीयोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 तुअ.<sup>१</sup> = तुरीयातीतोपनिषद्- (निसा., अड्या: सं.)  
 तुल.<sup>१</sup> = तुलस्युपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 ते.<sup>१</sup> = तेजोविन्दूपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: यो.)  
 तै.<sup>१</sup>, तैउ.<sup>१</sup> = तैत्तिरीयोपनिषद्- (आन., निसा.)  
 त्रि.<sup>१</sup> = त्रिपुरोपनिषद्- (निसा., अड्या: शा., तान्त्रि.)  
 त्रिता.<sup>१</sup> = त्रिपुरातापिन्युपनिषद्- (निसा., अड्या: शा.)  
 त्रिब्रा.<sup>१</sup> = त्रिशिखिब्राह्मणोपनिषद्- (अड्या: यो., निसा.)  
 त्रिवि.<sup>१</sup> = त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषद्- (अड्या: वै.,  
 निसा.)  
 द.<sup>१</sup> = दक्षिणामूर्त्युपनिषद्- (निसा., अड्या: शै.)  
 दत्ता.<sup>१</sup> = दत्तात्रेयोपनिषद्- (अड्या: वै., निसा.)  
 दे.<sup>१</sup> = देव्युपनिषद्- (निसा., अड्या: शा.)  
 द्व.<sup>१</sup> = द्वयोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 ध्या.<sup>१</sup> = ध्यानविन्दूपनिषद्- (अड्या: यो., निसा., आन.)  
 ना.<sup>१</sup> = नारायणोपनिषद्- (निसा., अड्या: वै.)  
 नाड.<sup>१</sup> = नारायणोत्तरतापिन्युपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 नाद.<sup>१</sup> = नादविन्दूपनिषद्- (निसा., आन., अड्या: यो.)  
 नादी.<sup>१</sup> = नारायणकृत-दीपिका- (श्वे. प्रभु.)  
 नाप.<sup>१</sup> = नारदपरिव्राजकोपनिषद्- (निसा., अड्या: सं.)  
 नापु.<sup>१</sup> = नारायणपूर्वतापिन्युपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 नार.<sup>१</sup> = नारदोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 नि.<sup>१</sup> = निरालम्बोपनिषद्- (निसा., अड्या: सा.)  
 निरु.<sup>१</sup> = निरुक्तोपनिषद्- (अड्या: अ.)  
 निर्वा.<sup>१</sup> = निर्वाणोपनिषद्- (निसा., अड्या: सं.)

नी.<sup>१</sup> = नीलरुद्रोपनिषद्- (अध्या : अ., आन.)  
 नृउ.<sup>१</sup> = नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद्- (अध्या : वै., निसा.)  
 नृपू.<sup>१</sup> = नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषद्- (अध्या : वै., निसा.)  
 नृष.<sup>१</sup> = नृसिंहपदचक्रोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 पं.<sup>१</sup> = पञ्चब्रह्मोपनिषद्- (निसा., अध्या : शै.)  
 पप.<sup>१</sup> = परमहंसपरिव्राजकोपनिषद्- (निसा., अध्या : सं.)  
 पत्र.<sup>१</sup> = पत्रहोपनिषद्- (अध्या : सं., निसा.)  
 पंह.<sup>१</sup> = परमहंसोपनिषद्- (आन., निसा., अध्या : सं.)  
 पा.<sup>१</sup> = पारमात्मिकोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 पाटी.<sup>१</sup> = पारमात्मिकोपनिषद्-टीका- (पा.)  
 पारा.<sup>१</sup> = पारायणोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 पाशु.<sup>१</sup> = पाशुपतब्रह्मोपनिषद्- (अध्या : यो., निसा.)  
 पिं.<sup>१</sup> = पिरडोपनिषद्- (अध्या : अ., आन.)  
 पित्र.<sup>१</sup> = पिरडब्रह्माण्डोपनिषद्-  
 पी.<sup>१</sup> = पीताम्बरोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 पै.<sup>१</sup>, पै.<sup>१</sup> = पैङ्गलोपनिषद्- (निसा., अध्या : सा.)  
 प्र.<sup>१</sup> = प्रश्नोपनिषद्- (आन., निसा.)  
 १प्र.<sup>१</sup> = १प्रणवोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 २प्र.<sup>१</sup> = २प्रणवोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 प्रा.<sup>१</sup> = प्राणामिहोत्रोपनिषद्- (निसा., आन., अध्या : सा.)  
 व.<sup>१</sup> = बह्वृचोपनिषद्- (निसा., अध्या : शा., तान्त्रि.)  
 वा.<sup>१</sup> = वाष्कलोपनिषद्- (अध्या : अ., वे.)  
 वाटी.<sup>१</sup> = वाष्कल-टीका- (वा.)  
 वि.<sup>१</sup> = विल्वोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 वृ.<sup>१</sup> = वृहदारण्यकोपनिषद्- (आन., निसा.)  
 बुजा.<sup>१</sup> = बृहज्जालोपनिषद्- (निसा., अध्या : शै.)  
 वे.<sup>१</sup> = वेल्वलकरुतानुवाद- (वा. प्रभृ.)  
 ब्र.<sup>१</sup> = ब्रह्मोपनिषद्- (अध्या : सं., निसा., आन.)  
 ब्रवि.<sup>१</sup> = ब्रह्मविन्दोपनिषद्- (निसा., आन.)  
 ब्रवि.<sup>१</sup> = ब्रह्मविद्योपनिषद्- (निसा., आन., अध्या : यो.)  
 ब्रसू.<sup>१</sup> = ब्रह्मसूत्र- (निसा.)  
 भ.<sup>१</sup> = भस्मजालोपनिषद्- (अध्या : शै., निसा.)  
 भव.<sup>१</sup> = भवसंतारोपनिषद्-  
 भा.<sup>१</sup> = भावनोपनिषद्- (निसा., अध्या : शा., तान्त्रि.)  
 भाभा., भारा. = भास्करायकृत-भाष्य- (१कौल-प्रभृ.)  
 भि.<sup>१</sup> = भिक्षुकोपनिषद्- (निसा., अध्या : सं.)  
 म.<sup>१</sup> = मठास्त्रायोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 मं.<sup>१</sup> = मण्डलब्राह्मणोपनिषद्- (अध्या : यो., निसा.)  
 मउ.<sup>१</sup> = महानारायणोपनिषद्- (Jc.)

मन्त्रि.<sup>१</sup> = मन्त्रिकोपनिषद्- (निसा., अध्या : सा.)  
 मना.<sup>१</sup> = महानारायणोपनिषद्- (निसा., Jc.)  
 मवा.<sup>१</sup> = महावाक्योपनिषद्- (अध्या : यो., निसा.)  
 महा.<sup>१</sup> = महोपनिषद्- (निसा., अध्या : सा.)  
 मां.<sup>१</sup> = माण्डूक्योपनिषद्- (निसा., आन.)  
 सु.<sup>१</sup> = मुक्तिकोपनिषद्- (अध्या : सा., निसा.)  
 सुं.<sup>१</sup> = मुण्डकोपनिषद्- (निसा., आन.)  
 सुह.<sup>१</sup> = मुद्रलोपनिषद्- (निसा., अध्या : सा.)  
 सृ.<sup>१</sup> = मृत्युलाङ्गलोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 मै.<sup>१</sup> = मैत्रायण्युपनिषद्- (निसा., अध्या : सा.)  
 मैत्रि.<sup>१</sup> = मैत्र्युपनिषद्- (BI., आन.)  
 मैत्रे.<sup>१</sup> = मैत्रेय्युपनिषद्- (निसा., अध्या : सं.)  
 य.<sup>१</sup> = यज्ञोपवीतोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 या.<sup>१</sup> = याज्ञवल्क्योपनिषद्- (निसा., अध्या : सं.)  
 यो.<sup>१</sup> = योगकुण्डल्युपनिषद्- (निसा., अध्या : यो.)  
 योचू.<sup>१</sup> = योगचूडामण्युपनिषद्- (निसा., अध्या : यो.)  
 १योत.<sup>१</sup> = १योगतरवोपनिषद्- (अध्या : यो., निसा.)  
 २योत.<sup>१</sup> = २योगतरवोपनिषद्- (आन.)  
 योरा.<sup>१</sup> = योगराजोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 योशि.<sup>१</sup> = योगशिक्षोपनिषद्- (निसा., अध्या : यो.)  
 योसू.<sup>१</sup> = योगसूत्र- (बना.)  
 रा.<sup>१</sup> = राजश्यामलारहस्योपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 राउ.<sup>१</sup> = रामोत्तरतापिन्युपनिषद्- (निसा., आन., अध्या : वै.)  
 राती.<sup>१</sup> = रामतीर्थकृत-टीका- (मैत्रि.)  
 राधा.<sup>१</sup> = राधोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 रापू.<sup>१</sup> = रामपूर्वतापिन्युपनिषद्- (निसा., आन., अध्या : वै.)  
 रामा.<sup>१</sup> = रामानुजाचार्यकृत-भाष्य- (ई. प्रभृ.)  
 रार.<sup>१</sup> = रामरहस्योपनिषद्- (निसा., अध्या : वै.)  
 रु.<sup>१</sup> = रुद्रोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 रुजा.<sup>१</sup> = रुद्रजालोपनिषद्- (निसा., अध्या : शै.)  
 रुह.<sup>१</sup> = रुद्रहृदयोपनिषद्- (निसा., अध्या : शै.)  
 लटी.<sup>१</sup> = लक्ष्मीधरकृत-टीका- (अरु.)  
 लां.<sup>१</sup> = लाङ्गलोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 लिं.<sup>१</sup> = लिङ्गोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 व.<sup>१</sup> = वनदुर्गोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 वटु.<sup>१</sup> = वटुकोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 वउ.<sup>१</sup> = वरदोत्तरतापिन्युपनिषद्- (आउ.)  
 वपं.<sup>१</sup> = वज्रपञ्चरोपनिषद्- (अध्या : अ.)  
 वपू.<sup>१</sup> = वरदपूर्वतापिन्युपनिषद्- (आउ.)



वरा.<sup>१</sup> = वराहोपनिषद्- (निसा., अड्या : यो.)  
 वसू.<sup>२</sup> = वसूचिकोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 वा.<sup>३</sup> = वासुदेवोपनिषद्- (निसा., अड्या : वै.)  
 वि.<sup>४</sup> = विश्रामोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 विद्या.<sup>५</sup> = विद्यातारकोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 विवि.<sup>६</sup> = विज्ञानभगवत्कृत-विवरण- (ध्वे.)  
 व्याभा.<sup>७</sup> = व्यासकृत-भाष्य- (योसू.)  
 श.<sup>८</sup> = शरभोपनिषद्- (निसा., अड्या : शै.)  
 शं.<sup>९</sup> = शंकराचार्यकृत-भाष्य- (ई. प्रभु.)  
 शंदी.<sup>१०</sup> = शंकरानन्दकृत-दीपिका- (ध्वे. प्रभु.)  
 शा.<sup>११</sup> = शाठ्यायनीयोपनिषद्- (निसा., अड्या : सं.)  
 शां.<sup>१२</sup> = शारिङ्ग्योपनिषद्- (निसा., अड्या : यो.)  
 शारी.<sup>१३</sup> = शारीरकोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 शि.<sup>१४</sup> = शिवोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 १ शिसं.<sup>१५</sup> = १ शिवसंस्कृतोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 २ शिसं.<sup>१६</sup> = २ शिवसंस्कृतोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 शु.<sup>१७</sup> = शुक्रहस्योपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 शौ.<sup>१८</sup> = शौनकोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 श्या.<sup>१९</sup> = श्यामलोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 श्री.<sup>२०</sup> = श्रीनिवास-यजुर्वेद- (पाटी.)  
 श्वे.<sup>२१</sup> = श्वेताश्वतरोपनिषद्- (निसा., अड्या : शै.)  
 षो.<sup>२२</sup> = षोडशोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 स.<sup>२३</sup> = सदानन्दोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सं.<sup>२४</sup> = संकर्षणोपनिषद्- (अड्या : अ.)

१ संन्या.<sup>२५</sup> = १ संन्यासोपनिषद्- (निसा., अड्या : सं.)  
 २ संन्या.<sup>२६</sup> = २ संन्यासोपनिषद्- (अड्या : सं.)  
 सर.<sup>२७</sup> = सरस्वतीरहस्योपनिषद्- (निसा., अड्या : शा.)  
 ससा.<sup>२८</sup> = सर्वसारोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 सांभ.<sup>२९</sup> = सांख्यसूत्रेऽनिरुद्धकृत-वृत्ति- (सांख्य.)  
 सांस्.<sup>३०</sup> = सांख्य-सूत्र-  
 सांका.<sup>३१</sup> = सांख्य-कारिका-  
 सार.<sup>३२</sup> = सामरहस्योपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सावि.<sup>३३</sup> = सावित्र्युपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 सि.<sup>३४</sup> = सिद्धान्तसारोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सिशि.<sup>३५</sup> = सिद्धान्तशिखोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सी.<sup>३६</sup> = सीतोपनिषद्- (अड्या : शा., निसा.)  
 सु.<sup>३७</sup> = सुदर्शनोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सुबा.<sup>३८</sup> = सुबालोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 सुसु.<sup>३९</sup> = सुसुख्युपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सू.<sup>४०</sup> = सूत्रोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 सूना.<sup>४१</sup> = सूर्यतापिन्युपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 सौ.<sup>४२</sup> = सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषद्- (निसा., अड्या : शा.)  
 स्क.<sup>४३</sup> = स्कन्दोपनिषद्- (निसा., अड्या : सा.)  
 स्व.<sup>४४</sup> = स्वसंवेद्योपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 ह.<sup>४५</sup> = हयग्रीवोपनिषद्- (अड्या : वै., निसा.)  
 हं.<sup>४६</sup> = हंसोपनिषद्- (अड्या : यो., निसा., अड्या.)  
 हंपो.<sup>४७</sup> = हंसषोडशोपनिषद्- (अड्या : अ.)  
 हे.<sup>४८</sup> = हेरम्बोपनिषद्- (अड्या : अ.)

(क') ग्रन्थान्तरीयाः (Of other Books)

अभा. = अमरकोशीया-भानुदीक्षितवृत्ति-  
 आपमं. = आपस्तम्ब-मन्त्रपाठ-  
 ऋ. = ऋग्वेद-  
 ऋअ. = ऋग्वेदानुक्रमणी- (कात्यायनीया सर्वानुक्रमणी-)  
 ऐआ. = ऐतरेयाऽऽरण्यक-  
 ऐब्रा. = ऐतरेय-ब्राह्मण-  
 का. कासं. = काण्व-संहिता- (शुक्लयजुर्वेदीया-)  
 काठ. = काठक-संहिता- (कृष्णयजुर्वेदीया-)  
 कौ. = कौथुम-संहिता- (सामवेदीया-)  
 खि. = खिलसूक्त-संग्रह- (ऋग्वेदीय- सात.)  
 गोब्रा. = गोपथ-ब्राह्मण-  
 जैउ., जैउब्रा. = जैमिनीयोपनिषद्- ब्राह्मण-  
 जैब्रा. = जैमिनीय-ब्राह्मण-

तैआ. = तैत्तिरीयाऽऽरण्यक-  
 तैआआ. = तैत्तिरीयारण्यक-आन्ध्रपाठ-  
 तैब्रा. = तैत्तिरीय-ब्राह्मण-  
 तैसं. = तैत्तिरीय-संहिता- (कृष्णयजुर्वेदीया-)  
 दु. = दुर्ग-कृता- (निरुद्ध-वृत्ति-)  
 दे. = देवराजयजुर्वेद-कृता- (निघण्टु-वृत्ति-)  
 पपा. = पद-पाठ- (सामान्येन)  
 पा. = पाणिनीया- (अष्टाध्यायी-)  
 पाउ. = पाणिनीय उणादिसूत्र- (शाकटायन-कृत-)  
 पाउना. = पाणिनीय उणादिवृत्ति- नारायणीया-  
 पाउभो. = पाणिनीय उणादिसूत्र- भोजीय-  
 पाका. = पाणिनीये काशिका-वृत्ति- (वामनजयादित्य-कृता-)

पाग. = पाणिनीये गणपाठ-  
 पागृ. = पारस्कर-गृह्यसूत्र-  
 पाधा. = पाणिनीये धातुपाठ-  
 पाम. = पाणिनीये महाभाष्य- (पतञ्जलि-कृत-)  
 पामाधा., पाधामा. = पाणिनीये माध्वीया- धातुवृत्ति-  
 पावा. = पाणिनीये वार्तिक- (सामान्येन)  
 पासि., पासिकौ. = पाणिनीये सिद्धान्तकौमुदी- (भट्टोजि-  
 दीक्षित-कृता-)  
 पासिवा. = पाणिनीये सिद्धान्तकौमुद्यां बालमनोरमा-  
 व्याख्या- (वासुदेवदीक्षित-कृता-)  
 पै. = पैप्पलाद-संहिता- (अथर्ववेदीया-)  
 वृभ., वृदे. = वृहदेवताऽनुक्रमणी-  
 बौध. = बौधायन-धर्मसूत्र-  
 भा. = (भट्ट)भास्करकृत-भाष्य-  
 भाग. = भागवत-पुराण-  
 मनु. = मनु-स्मृति-  
 मनुकु. = मनुस्मृति-टीका- कुल्लूक-कृता-  
 मभा. = महा-भारत-  
 मंत्रा. = मन्त्र-ब्राह्मण- (सामवेदीय-)  
 मा. = माध्यन्दिन-संहिता- (शुक्लयजुर्वेदीया-)

माशत्रा., शत्रा. = माध्यन्दिन-शतपथ-ब्राह्मण-  
 माश्रौ. = मानव-श्रौतसूत्र-  
 मैसं. = मैत्रायणी-संहिता- (ऋष्यायजुर्वेदीया-)  
 या. = यास्क-  
 वाच. = वाचस्पत्य- (तारानाथकृत-वृहत्संहकृताभिधान-)  
 वाध. = वासिष्ठ-धर्मसूत्र-  
 वारा. = वाल्मीकि-रामायण-  
 वायु. = वायु-पुराण-  
 विध. = विष्णु-धर्मसूत्र-  
 विधु. = विधुशेखर-लिखित- (IHQ) निबन्ध-  
 वैप. = वैदिक-पदानुक्रमकोष- (अस्मदीय-)  
 वैज्ञ. = वैदिक-शब्दार्थकोष- (प्रचिकीर्षित-अस्मदीय-)  
 शक. = शब्द-कल्पदुम- (ताराकान्तदेव-कृत-)  
 शत्रा. = माशत्रा.  
 शांभा. = शाङ्खायनाऽऽरण्यक-  
 शौ. = शौनक-संहिता- (अथर्ववेदीया-)  
 संत्रा. = संहितोपनिषद्-ब्राह्मण-  
 सा. = सायणकृत-भाष्य- (ऋ. प्रसू.)  
 सामंत्रा. = मंत्रा.  
 स्क. = स्कन्दस्वामिकृत-भाष्य- (निरुक्तीय-)

—०—०—

BC. = Bloomfield, (Maurice : Vedic)  
 Concordance.  
 BCH. = Böhtlingk, (Otto) : Chāndo-  
 gyopaniṣad (ed. trans.)  
 BHC. = Bhandarkar Commemora-  
 tion (Volume).  
 BW. = Böhtlingk, (Otto) : Sanskrit)  
 Wörterbuch (in Kürzeren  
 Fassung).  
 GW. = Grassmann, (H.) : Wörter-  
 buch (zum Rgveda).  
 IHQ. = Indian Historical Quarterly  
 (Calcutta).  
 JC. = Jacob, (Col. G. A. : A) Con-  
 cordance (to the Principal Up-  
 niṣads and Bhagavadgītā).

K. = Keith, (A. B., ed, trans.)  
 MW. = Monier-Williams, (Monier, :  
 A Sanskrit English Dictio-  
 nary).  
 NIA. = New Indian Antiquary  
 (Poona).  
 PW. = (St.) Petersburg (Sanskrit)  
 Wörterbuch (von Böhtlingk,  
 Otto; + Roth, Rudolph).  
 Raj. = Rajwade (Vaija nath Kashi-  
 nath).  
 Sch. = Schlegel, (W.)  
 Schr. = Schrader (F. O.)  
 WW. = Walde, (Alois, + Pokorny,  
 Julius : Vergleichendes)  
 Wörterbuch (der Indo-ger-  
 manischen Sprachen).

—०—०—

## (ख) लेखकीयाः (Of Authors)

|                      |                  |                 |                 |                  |                |
|----------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|----------------|
| अनन्तदेव-            | तु. अदे. (क)     | नारायण-         | तु. पाउना. (क') | रामानुजाचार्य-   | तु. रामा. (क)  |
| अनिरुद्ध-            | „ सांघ. (क)      | नारायण-         | „ नादी. (क)     | लक्ष्मीधर-       | „ लटी. (क)     |
| अप्यदीक्षित-         | „ अदी. (क)       | पतञ्जलि-        | „ पाम. (क')     | चामन-जयादित्य-   | „ पाका. (क')   |
| अभ्यंकर-             | „ अभ्यंयोसू. (ग) | पाणिनि-         | „ पा. (क')      | वासुदेवदीक्षित-  | „ पासिवा. (क') |
| आनन्दगिरि-           | „ आगि. (क)       | बेल्बलकर-       | „ बे. (क)       | विशुशेखर-        | „ विधु. (क')   |
| उपनिषद्ब्रह्मयोगिन्- | „ उव्र. (क)      | भट्टभास्कर-     | „ भा. (क')      | विज्ञानभगवत्-    | „ विवि. (क)    |
| कात्यायन-            | „ ऋथ. (क')       | भट्टोजिदीक्षित- | „ पासि. (क')    | व्यास-           | „ व्याभा. (क)  |
| कुल्लुकभट्ट-         | „ मनुकु. (क')    | भानुदीक्षित-    | „ अभा. (क')     | शंकराचार्य-      | „ शं. (क)      |
| गोपालस्वामिन्-       | „ गोपा. (क)      | भास्करराय-      | „ भाआ. (क)      | शंकरानन्द-       | „ शंदी. (क)    |
| ताराकान्तदेव-        | „ शक. (क')       | भोज-            | „ पाउभो. (क')   | श्रीनिवासयज्वन्- | „ श्री. (क)    |
| तारानाथ-             | „ वाच. (क')      | माधव-           | „ पामाधा. (क')  | शाकटायन-         | „ पाउ. (क')    |
| दुर्ग-               | „ दु. (क')       | यास्क-          | „ या. (क')      | सायण-            | „ सा. (क')     |
| देवराजयज्वन्-        | „ दे. (क')       | रामतीर्थ-       | „ राती. (क)     | सुरेन्द्रलाल-    | „ सुयोसू. (ग)  |
|                      |                  |                 |                 | स्कन्दस्वामिन्-  | „ स्क. (क')    |

—०—०—

Bloomfield, (M.) cf. **Bc.**  
 Böhrling, (O.) „ **Bch.** **PW**  
 Grassmann, (H.) „ **GW.**  
 Jacob, (Col. G. A.), „ **Jc.**

Keith, (A. B.) cf. **K.**  
 Rajwade, „ **Raj.**  
 Schlegel, (W.) „ **Sch.**

Schrader, (F. O.) cf. **Schr.**  
 Roth, (R.) „ **PW.**  
 Walde, (A.) „ **WW.**

—०—०—

## (ग) सामान्याः (General)

|   |   |
|---|---|
| १ = एकवचन-  | अदा. = अदादिगण-                         |
| २ = द्विवचन-  | अपा. = अधिक-पाठ-                        |
| ३ = बहुवचन-   | अभ्यंयोसू. = अभ्यंकर-संस्कृत-योग-सूत्र- |
| अङ्ग्या. = अङ्गार-संस्करण-                                | अव्य. = अव्यय-                          |
| अङ्ग्याः अ. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>अप्रकाशितोपनिषद्-       | अस. = अव्ययीभाव-समास-                   |
| अङ्ग्याः यो. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>योगोपनिषद्-            | अस्त्री. = अस्त्रियाम्                  |
| अङ्ग्याः वै. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>वैष्णवोपनिषद्-         | आउ. = आथर्वणोपनिषत्-संस्करण-            |
| अङ्ग्याः शा. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>शाक्तोपनिषद्-          | आत्म. = आत्मने-पद- (, °दिन्-)           |
| अङ्ग्याः शै. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>शैवोपनिषद्-            | आन. = आनन्दाश्रम-संस्करण-               |
| अङ्ग्याः सं. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>संन्यासोपनिषद्-        | उउ. = (अनेकत्वे सति) उत्तरवर्तिन्-      |
| अङ्ग्याः मा. = (अङ्गारसंस्करणे)<br>सामान्यवेदान्तोपनिषद्- | उप. = उत्तर-पद-                         |
|   | उपु. = उत्तम-पुरुष-                     |
|   | उस. = उपपद-समास-                        |
|   | उसं. = उपसंख्यान-, उपसंहयेय-            |
|   | एउ. = एकान्तरीय-उत्तर-                  |
|   | एषू. = एकान्तरीय-पूर्व-                 |
|   | एस्थि. = एवं-स्थित-                     |
|   | औप. = औपयिक-                            |

|                                   |
|-----------------------------------|
| कप्र. = कर्मप्रवचनीय-             |
| कस. = कर्मधारय-समास-              |
| कास. = कारक-समास-                 |
| कालि. = कालिकता-संस्करण-          |
| क्रिउ. = क्रियाऽऽच्चेपिन्-उपसर्ग- |
| क्रिप. = क्रिया-पद-               |
| क्रिवि. = क्रिया-विशेषण-          |
| ग. = गति-                         |
| गपू. = गत-पूर्व-                  |
| गस. = गति-समास-                   |
| गोर. = गोरखपुर-संस्करण-           |
| च. = चतुर्थी- (विभक्ति-)          |
| चस. = चतुर्थीतत्पुरुष-समास-       |
| चुरा. = चुरादि-गण-                |
| जु. = जुहोत्यादि-गण-              |
| टि. = टिप्पण-                     |
| टिटि. = (अनेकत्वे सति) टिप्पण-    |
| तद्य. = तद् यथा                   |



|              |                                       |
|--------------|---------------------------------------|
| तस.          | =तत्पुरुष-समास-                       |
| तान्त्र.     | =तान्त्रिक-संग्रह-                    |
| तु.          | =तुलनीय-                              |
| तृ.          | =तृतीया- (विभक्ति-)                   |
| तृतस., तृतस. | =तृतीयातत्पुरुष-समास-                 |
| द्र.         | =द्रष्टव्य-                           |
| इस.          | =इन्द्र-समास-                         |
| द्वि.        | =द्वितीया- (विभक्ति-)                 |
| द्विस.       | =द्विगु-समास-                         |
| धा.          | =धातु-                                |
| न.           | =नपुंसक-                              |
| नभा.         | =नवीना-भारती-(भाषा-)                  |
| नाड.         | =नान्तरीय- उत्तर-                     |
| नाडड.        | =(अनेकत्वे सति) नान्त-<br>रीय- उत्तर- |
| नाधा.        | =नाम-धातु-                            |
| नाप.         | =नाम-पद-                              |
| नापू.        | =नान्तरीय-पूर्व-                      |
| नि.          | =निपात-                               |
| निसा.        | =निर्णयसागर-संस्करण-                  |
| नैप्र.       | =नैहिक-प्रक्रिया-                     |
| पं.          | =पञ्चमी- (विभक्ति-)                   |
| पंस.         | =पञ्चमीतत्पुरुष-समास-                 |
| पंजा.        | =पंजाबी- (नभा.)                       |
| पर., परस्मै. | =परस्मै-पद- (,°दिन्-)                 |
| परि.         | =परिशिष्ट- (प्रप्र.)                  |
| पा.          | =पाठ-                                 |
| पाप्र.       | =पाणिनीय-प्रक्रिया-                   |
| पाभे.        | =पाठ-भेद-                             |
| पार.         | =पारसी- (ईरानी-भाषा-)                 |
| पुं.         | =पुंलिङ्ग-                            |
| पूप.         | =पूर्व-पद-                            |
| प्र.         | =प्रत्यय-                             |
| प्र.         | =प्रथमा- (विभक्ति-)                   |
| प्रप्र.      | =प्रकृत-ग्रन्थ-                       |
| प्रधा.       | =प्रकृत-धातु-                         |

|            |  |
|------------|--|
| प्रनि.     | =प्रकृत-निर्देश-   |
| प्रपु.     | =प्रथम-पुरुष-  |
| प्रप्रा.   | =प्रकृत-प्रातिपदिक-  |
| प्रभृ.     | =प्रभृति-  |
| प्रस्ता.   | =प्रस्तावना-   |
| प्राति.    | =प्रातिपदिक-   |
| प्रास.     | =प्रादि-समास-  |
| बअ.        | =बह्वर्थक-   |
| बधा.       | =बहुप्रस्थान-धातु-   |
| बना.       | =वनारस-संस्करण-  |
| बप्रा.     | =बह्वर्थ-प्रातिपदिक-   |
| बव्यु.     | =बहु-व्युत्पत्तिक-   |
| बस.        | =बहुव्रीहि-समास-   |
| भाप.       | =भाव-पद-   |
| भू.        | =भूमिका-   |
| भवा.       | =भवादि-गण-   |
| मपु.       | =मध्यम-पुरुष-  |
| मलो.       | =मध्यमपद-लौप-  |
| मुपा.      | =मुद्रित-पाठ-  |
| मूको.      | =तत्तत्संस्करणाधारभूत-<br>हस्तलिखितग्रन्थात्मक-                                  |
| मूप्र.     | =(प्रकृत) मूलग्रन्थ-   |
| मै., मैसू. | =मैसूर-संस्करण-  |
| मौआभा.     | =मौलिकाऽऽर्यभाषा-<br>(इराडो-, आर्य-, जर्मन-, यूरो-<br>पीय- इत्येवं व्यवहियमाणा-) |
| मौस्थि.    | =मौलिकी-वस्तुस्थिति-   |
| यक्र.      | =यथा-क्रम-   |
| यतु.       | =यथास्थानं तुलनीय- (,या-)  |
| यद्र.      | =यथास्थानं द्रष्टव्य-  |
| यनि.       | =यथा-निर्दिष्ट-  |
| यमु.       | =यथा-मुद्रित-  |
| यस्थ.      | =यथा-स्थल-   |
| यस्था.     | =यथा-स्थान-  |
| यस्थि.     | =यथा-स्थित-  |
| रू.        | =रूप-  |

|                 |                                |
|-----------------|--------------------------------|
| लैवि.           | =लैप-विकार-                    |
| वा.             | =वाक्याऽन्वय-                  |
| वावि.           | =वाचनिक-विकार-                 |
| वि.             | =विशेषण-                       |
| विप.            | =विशेषण-पद-                    |
| विभा.           | =विभाग-                        |
| विवि.           | =विशेषण-विशेषण-                |
| विशो.           | =विशेष्य-                      |
| विशोवि.         | =विशेष्यप्रधान-विशेषण-         |
| वैतु.           | =वैपरीत्येन तुलनीय- (,या-)     |
| वैसं.           | =वैयक्तिक-संज्ञापद-            |
| व्यधि.          | =व्यधिकरण-                     |
| व्यसं.          | =व्यक्तिपरक-संज्ञापद-          |
| व्या.           | =व्याकरण-                      |
| व्यु.           | =व्युत्पत्ति-                  |
| ष.              | =षष्ठी- (विभक्ति-)             |
| षतस., षस.       | =षष्ठीतत्पुरुष-समास-           |
| स.              | =समास-                         |
| स., सस.         | =सप्तमी- (विभक्ति-)            |
| सं.             | =संबुद्धि-                     |
| सं.             | =संस्करण-                      |
| संक्षे.         | =संक्षेप- (एतद्ग्रन्थीय-)      |
| संदि.           | =संस्कृति-टिप्पण-              |
| सतस., ससस., सस. | =सप्तमीतत्पुरुष-<br>समास-      |
| सना.            | =सर्व-नामन्-                   |
| सप्र.           | =समान-प्रकरण-                  |
| संप.            | =संज्ञा-पद-                    |
| सश्रु.          | =समान-श्रुति-                  |
| सस्थ.           | =समान-स्थल-                    |
| सात.            | =सातवलेकर-संस्करण-             |
| सासस्व.         | =सामान्य-समास-स्वर-            |
| सुयोसू.         | =सुरेन्द्रलालसंस्कृत-योगसूत्र- |
| स्त्री.         | =स्त्री-लिङ्ग-                 |
| स्थ.            | =स्थल-                         |
| स्वा.           | =स्वादि-गण-                    |
| स्वाभ.          | =स्वार्थप्रधान-अव्यय-          |

Abb.=Abbreviations (प्रप्र.)  
 ab.=abbreviation.  
 BI.=Bibliotheca Indica  
 (series)  
 cf.=Compare or Confer.  
 ch.=Chapter.

e. g. = example gratia  
 'for example.'  
 fn. = Footnote.  
 i. e. = id est 'that is'  
 Intro.= Introduction.

p. = Page.  
 pp. = p. (plural).  
 Pre. = Preface.  
 R.A.S.=Royal Asiatic  
 Society of Bengal.



## संक्षेपपाठ-प्रकारः (Method of reading abbreviations)

एते संक्षेपा इह कोषे मूलभागे च टिप्पणभागे चोभयत्र प्रयुज्यन्ते । मूलभागे तावद् ग्रन्थीया एवं संक्षेपाः प्रयुज्यन्ते, टिप्पणभागे तु ते चाऽपरे चेति सुलक्ष इव भवति कोषीयभागभेदेन संक्षेपीयभेदप्रयोगभेदः । अथ संबद्धार्थता-प्रवाहाऽतुरोधत उभयत्र मूलभागे च टिप्पणभागे च संक्षेपाः पूरयित्वा पूरयित्वा च यथाप्रकरणं विभक्तिभिर्योजयित्वा योजयित्वा च पठनीया भवन्ति । एवंस्थितेऽप्यस्मिन् संक्षेपमात्रसाधारणे तत्पाठप्रकारस्वरूपे, मूलभागीयानां संक्षेपाणां तावत् सर्वत्र सप्तम्येक वचनीययोग एव प्रयोगः प्राकरणाकृतां भजते । तय. अंश- -शः (मै २, ५ = मैत्रायण्यामुपनिषदि द्वितीये प्रपाठके पञ्चमे संदर्भे) । टिप्पणभागीयानां संक्षेपाणां तु यथाप्रकरणं नानाविभक्तियोगीयः प्रयोगः स्यात् । तथाऽसाविदानीं टिप्पणसंक्षेपीयेण तत्तद्विभक्तियोगेन विस्पष्टबोधसौकर्यार्थं मध्येटिप्पणप्रयुक्ततत्संकेतीयशाब्दिकपर्यायाऽनुवादसनाधितेन सता, निर्दिश्येत—

### पूर्तिविभक्तियोगात् पूर्वावस्था

५८४<sup>(१)</sup> वैतु. सा. (तैआ १०, ४८, १) १मे स्थ. 'ब्रह्म मेतु' (= ब्रह्म मे एतु) इत्यत्र 'ब्रह्मम् एतु' इति पदद्वयमिति । एवं 'मधु मेतु' (= मधु मे एतु) इत्यत्र 'मधुम् एतु' इति पदद्वयमिति, भा. J.C. च (तैआ.) यनि. च  $\sqrt{\text{मी}} > \text{मेतु}$  इति च पदद्वयमिति । एवं तत्रैव 'ब्रह्ममेव' इत्यत्र 'ब्रह्म मे एव' इति त्रीणि पदानि द्र. वतु. सा. (तैआ.) 'ब्रह्मम्(?) एव' इति पदे इति, नादी. तु. J.C.) 'ब्रह्म मे अव (<  $\sqrt{\text{अव}}$ )' इति त्रीणि पदानि नीति ? (वैतु. तैआ. च त्रैवं सति 'वृ' इत्यन्तोदान्तो नोप-पद्येत) । अथ ३ये स्थ. 'ब्रह्म मेधया' इति पदे द्र. [वैतु. नादी. (तु. J.C.) 'ब्रह्ममेधः-> -धया' इत्येकं पदमिति ? (वैतु. तैआ. [१०, ४९, १] यत्रैवं सति प्रतिपदस्वरपार्थक्यं नोपपद्येत) । अथापि ३ये स्थ. 'ब्रह्म मेधवा(?)या' इति शोधितं सत् पदद्वयं द्र. [= अत्र 'या' > 'मौ' > 'वा' इति लैवि. इत्यभिसंधिः (वैतु. नादी. [तु. J.C.] यनि. शोधमूरीकुर्वाणोऽपि ब्रह्म<sup>०</sup> इति स. इति [यत्र स्वरविरोधः पूर्ववत् द्र.], भा. सा. च [तैआ. १०, ५०, १] 'मेध [= यज्ञ] वत्-> -वा' [प्र१] इतीव पृथक् पदमिति ? [एवं सति स्वरविरोधस्तु द्र. मेध-इत्यस्याशुदात्तत्वान्मध्यस्वरानुपपत्तेः]] ।

### पूर्तिविभक्तियोगाद् उत्तरावस्था

५८४<sup>(१)</sup> वैपरीत्येन तुलनीयाः सायणः (तैत्तिरीया-रण्यके  $\times \times \times$ ) प्रथमे स्थले  $\times \times$  (=  $\times \times \times$ )  $\times ' \times \times ' \times \times \times$  ।  $\times ' \times \times ' (= \times \times \times) \times ' \times \times ' \times \times \times$ , भट्टभास्करः जैकबीयकोषः  $\times$  (तैत्तिरीयारण्यके)  $\times \times \times > \times \times \times \times \times$  ।  $\times \times ' \times \times ' \times ' \times \times \times ' \times \times \times$  द्रष्टव्यानि [वैपरीत्येन तुलनीये सायणः (तैत्तिरी-यारण्यके)  $\times \times ' \times \times \times$ , नारायणकृतदीपिका (तुलनी-यो जैकबीयकोषः)  $\times \times \times (< \times) \times \times \times ?$  (वैपरी-त्येन तुलनीयं तैत्तिरीयारण्यकम्  $\times \times \times \times \times \times$ )] ।  $\times$  द्वितीये स्थले  $\times \times ' \times \times$  द्रष्टव्ये [वैपरीत्येन तुल-नीया नारायणकृतदीपिका (तुलनीयो जैकबीयकोषः)  $\times > \times ' \times \times \times ?$  (वैपरीत्येन तुलनीयं तैत्तिरीया-रण्यकम्  $\times \times \times \times \times \times \times$ )] ।  $\times$  तृतीये स्थले  $\times \times ' (< \times) \times \times \times \times$  द्रष्टव्यम् (=  $\times \times > \times > \times \times$  लैपविकारः  $\times$  (वैपरीत्येन तुलनीया नारायणकृत दीपिका (तुलनीयो जैकबीयकोषः) यथानिर्दिष्टं  $\times \times \times \times$  समासः  $\times \times \times \times$  द्रष्टव्यः] भट्टभास्करः सायणः  $\times$  [तैत्तिरीयारण्यके  $\times \times \times$ ]  $\times [ = \times ] \times > \times$  [प्रथम-विभक्तेरेकवचनम्]  $\times \times \times \times ?$  [  $\times \times \times \times$  द्रष्टव्यः  $\times \times \times \times$  ] ] ।



अथ

# वैदिक-पदानुक्रम-कोषे

औपनिषदे तृतीये विभागे

प्रथमः खण्डः





अ

१अ- } &lt;अस्मद्-द्र.

३अ- &lt;इदम्, एतद्-द्र.

४अ- &lt;नञ्

अन्

५अ- २प्र ३४: १९.

अं<sup>०</sup> त्रिवि ७, ३६<sup>१</sup>; पा ८, ३;

वपं ३१२: ८; आथ ३९८: ५;

व ४३५: ५; ८; २३; ४३६:

४; ५; ४३७: २१; २२; अं-अं

सार २६०: २०; व ४३७: १.

अं-कार- -०२ अक्ष ५<sup>१</sup>.अ:० त्रिवि ७, ३६<sup>१</sup>; आथ ३९८:

६; व ४३५: ८; ४३६: ५;

४३७: २२.

अ-क-च-उ-त-प-य-श- -शान्

त्रिता १, १७.

अ-कार- -र: मां ८; ९; गौ १,

२३; ना ४; काला १३; नाद १;

अ १; टपू २, २; ५<sup>१</sup>; वृउ ३,२; ५, १; ७, ४; ८<sup>१</sup>; ध्या

१२; ब्रवि ७; आबो १; नाप

८, १<sup>१</sup>; योचू ७४<sup>१</sup>; ७५<sup>१</sup>;

राउ १, २; वा १७; त्रिता

४, २६; ग ८; ता २, १; जाबा

२१; तु १; ७; १प्र ३१: ११;

नापू १, १०; स ३७९: ५;

सिधि ३८२: १०; गु ८२; विद्या

१; गौ १०, ३३; -रम् वृउ ३, ९<sup>१</sup>;

शां १, ६; जाद ६, ३; -रस्य

ब्रवि ४; १प्र ३१: ६; -रात् ता

२, १; -रे ध्या १०; ब्रवि ६९-

७१; १योत १३८; २योत २, १;

योचू ७७; पप ४१९: २८;

-रेण वृउ ७, २<sup>१</sup>; ४; ८; १०.

अकार-उकार-मध्य- -ध्ये अद्वै

२०.

अकार-तुरीयां(य-अं)श- -शा:

वरा ४, १.

अकार-मात्र- -त्रम् अक्षि ४४.

अकार-मूर्ति- -र्तिम् जाद ६, ७.

अकार-रूप- -रै: वृउ २, ५.

अकार-वाच्य- -च्य: ता ३, १.

अकार-स्थूलां(ल-अं)श- -क्षे

वरा ४, १.

अकारो(र-अं)श- -क्षम् पप

४२०: २.

अकारा(र-अ)क्षर-संभव- -व:

गोउ ४२.

अकारा(र-अ)क्षर-संभूत, ता-

-त: राउ २, १; -ता विद्या १.

अकारा(र-आ)दि- -दय: वरा

४, १.

अकारादि-अकारा(र-अ)न्त-

-न्तानि योशि ३, ६; -न्तेन

त्रिता ४, ३६.

अकारादि-त्रय- -याणाम्

शां १, ६.

अकारादि-स्वरा(र-अ)ध्य-

क्ष- -क्षम् पं १५.

अकारा(र-आ)थ- -था: ब्रवि ६२.

अकारा(र-अ)र्ध- -र्धेन वृउ ७,

१४.

अकारो(र-उ)कार- -राभ्याम्

वृउ ५, ३; -रौ नाप ८, १<sup>०</sup>.

अकारोकार-रूप- -प: मैत्रे

३, ११.

अकारो(र-उ)कार-मकार- -रा:

गोच ६६: १७; सावि १०; -रेषु

पप ४१८: २२; -रै: ह ६.

अकारोकारमकार-प्रणवा

(व-आ)स्मक- -कम् वि २३.

अकारोकारमकार-रूप(प&gt;)

पा- -पा गार ४०६: १४.

अकारो(र-उ)कार-मकार-नाद-

बिन्दु-कला(ला-अ)नुसन्धान-

ध्याना(न-अ)ष्ट-विध- -धा:

नापू १, ९.

अकारो(र-उ)कार-मकारा(र-अ)

र्ध-मात्रा(त्रा-आत्मक&gt;)स्मि-

का- -का वरा ४, १.

अकारो(र-उ)कार-मकारा(र-अ)

र्धमात्रा-सहित- -तम् रार

१, ७.

अ-स्व-विवक्षा- -क्षायाम् गौ १, १९

अ-वर्ण-लेश- -श: २प्र ३५: १६.

आ(अ-आ)दि-क्षा(क्ष-अ)न्त<sup>१</sup>-

-न्तम् रार ३, १; -न्तान् रापू

४, ४८; रार ३, १; -न्तै: अक्ष

४; १४.

आदिक्षान्त-मूर्ति<sup>१</sup>- -र्ति:

अक्ष २.

✓अंश<sup>१</sup>अंश- -श: मै २, ५; ४, ५<sup>१</sup>;

a) आदिमो वर्णः अव्य. प्राति. इति कृत्वा प्रयुज्यमानः यनि. तत्र तत्र द्र.। b) सातुस्वारतया परिणाम-  
मात्रं भवति। c) सविसर्जनीयतया परिणाममात्रं भवति। d) 'उकारः' इति निसा. पाप्मे.। e) 'अकारो-  
कारः' इति अख्या. सुपा. असंगतः सन् यनि. सु-शोधः, 'अकारोकारमकार-' इति निसा. पा. अप्राकरणिकः। f) द्रस.  
पुप.उप. च बस. भवतः। g) नाउ. पदेन समस्तः सन् 'आदिक्षान्तरमूर्तिसंविधानुभा(व>)वा> -वा: इति अख्या.  
पाप्मे. [तु. टि. सस्थ. 'सावधान-भा(व>)वा> -वा']। h) नाउ. च अंशु- इत्यस्य च व्यु. ✓अक्ष इत्यस्याऽपे-  
क्षया नेदीयस्तयौपयिकंभावुकः भ्वा. च बधा. च पाधा. उसं. [वैतु. MW., वाच. चुरा. इति वदन्तौ वस्तुतो ण्यन्ततया  
संभवद्वयं नाउ. निष्पत्यहं नाधा. अपरमभिप्रयन्तौ पितृष्वितृतां निनीषू, वैप १, ३टिC प्रागर्वागभ्यर्हितमतमनु  
नाउ. चांशु- इत्यस्य च व्यु. प्रकारान्तरेण ✓अक्ष इत्यत एव प्रादर्शि (तु. ww १, १२८)]।

|  |  |   |
|--|--|---|
| मैत्रि २, ५; ५, २ <sup>१</sup> ; त्रित्रा २, ३ <sup>२</sup> ; जाद ८, ४; राधा १, १८; ब्रसू २, ३, ४३; गी १५, ७; -शा: शि ६, २४६; -शात् राधा ३, १६; -शाभ्याम् अव्य ६; -शन मै २, ५ <sup>२</sup> ; मैत्रि २, ५; त्रिवि ३, ५. | अ-कथ्य- -ध्यम् गौ ३, ४७.   | अ-कल- -ल: प्र ६, ५; श्वे ६, ५; त्रवि ८३.  |
| अंश-कला- -ला: सार २४९; १३; १४; २५८: १.   | अकवर्ह- -र्ह: अल्ला ३ <sup>२</sup> ; -र्ह:-र्ह: अल्ला ३ <sup>२</sup> .   | अ-कल्क- अकल्क-ता- -ता शि ७, १००.  |
| अंश-तरव-वाचक-वाच्य-स्थान-भेद-विषय-देवता-कोश-भेद-विभाग- -गा: त्रित्रा १, ४.   | १अ-करण- -णात् सांका ९; -णे भ १, ८; २, १.   | अ-कल्प- -ल्पम् वृजा ३, ३४ <sup>१</sup> .  |
| अंश-पञ्चक- -कम् सर ३, २३.  | अकरण-त्व- -त्वात् ब्रसू २, ४, ११.  | अ-कल्पक- -कम् गौ ३, ३३.   |
| अंश-मात्र- -त्रम् मैत्रि ६, ३५ <sup>४</sup> .  | २अ-करण <sup>१</sup> - -णम् वृज ९, १८.  | अ-कल्पि(त>)ता- -ता योसू ३, ४४.  |
| अंश-संभव- -व: श २२.  | अ-कर्ण, णी- -णी: श्वे ३, १९; कै २, २; नाप ९, १४; म २, १३; भव २, ४६; -णी गु ५१.   | अकल्पित-भिज्ञा(ज्ञा-आ)शिन्- -शी निर्वा २९७: ६.  |
| अंशु- -शुम् कौ २, ८९ <sup>४</sup> ; -श्वर शौ ५३: २.  | अ-कर्तव्य- -व्यम् भा २७; ४०.   | अ-कल्मष, षी- -षम् त्रित्रा २, १००; गी ६, २७; -षा पी ४२२: ८.   |
| अंशु-धारय <sup>१</sup> - -य: मैत्रि ६, ३५.   | अ-कर्तुम् सर ३, १६.  | अ-कल्याण- -णम् अज्ञ ५, ३५.  |
| अंशु-मत- -मान् नाद ३०; पै ३, १; गी १०, २१.   | अ-कर्तु- -र्ता छां ६, १६, २; ७, ९, १; श्वे १, ९; मै २, १०; मैत्रि २, ७; त्रवि ८९; नाप ९, ८; महा ४, १४; १६; ६, २; ६८; अध्या ६९; भव २, ३; -तारिम् गी ४, १३; १३, २९; -र्तु: १अव २२; सांसू १, १०५. | अ-कस्मात् पै २, ४४; पित्र १, ३.   |
| ✓अंस <sup>०</sup>  | अकर्तु-त्व- -त्वम् महा ४, ७; १४; ६, ५.   | अ-काकपृष्ठ- -ष्ठम् नाप ४, ३८.   |
| अंस- -सम् कौ २, १५; -से भ १, ६.  | अकर्तु-पद- -दम् अज्ञ १, ३०; ४, ९१.   | अ-कारड- -ण्डे महा ३, ९; आर्षे ९: ४.   |
| अंस-क-   | अकर्तु-भाव- -व: सांका १९.  | अ-काम- -म: वृ ४, ४, ६; वृज ५, १-३; सार २६१: १९; -मम् वृ ४, ३, २१; मैत्रि ३, ५; -मा: सुं ३, २, १; -मेन गोड १५. |
| अंसक-द्वय- -ये वृजा ४, १८.   | अकर्तु(र्तु-अ)विषय-प्रत्यक्प्रकाश <sup>१</sup> - -शम् पाशु २, १५.  | अकाम-त्व- -त्वेन त्रित्रा १, १६.  |
| अंस-द्वय- -यम् वृजा ४, १३.   | अ-कर्तृक- -कम् महा ५, ५४.  | अकाम-मय- -य: वृ ४, ४, ५.  |
| अंस-युग्म- -यम् वृजा ४, २५.  | अ-कर्मन्- -र्म नि ८; २५९ <sup>११</sup> ; २६; नाप ३, ७; गी ४, १६; १८; -र्मण: गी ३, ८ <sup>१</sup> ; ४, १७; -र्मणि गी २, ४७; ४, १८; -र्मसु महा ४, २३; -र्मणि सार २८१: १७.                        | अ-काम-कार- -रे ब्रसू ३, ४, ३१.  |
| ✓१अंश् अहन्- द्र.  | अ-कर्म-कृत्- -कृत् गी ३, ५.  | अ-काम-चार- -र: छां ७, २५, २; ८, १, ६.   |
| ✓२अंश्   |  | अ-कामना- -नया सी ३६.  |
| अंश्- -हस: मना २, ४७९ <sup>४</sup> ; प्रा १, १९ <sup>०</sup> ; २९ <sup>१</sup> .   |  | अ-कामयमान- -न: वृ ४, ४, ६.  |
| अ-क(थ>)था- -था त्रि १ <sup>४</sup> .   |  | अ-काम-हत- -त: वृ ४, ३, ३३ <sup>१</sup> ; -तस्य तै २, ८, २; ३ <sup>१</sup> ; ४ <sup>४</sup> ; -ता: शा ५.       |
| अकथा(था-आ)दि-श्री-पीठ- -डे त्रित्रा १, ८५.   |  | अ-कामिन्- -मी गोड १५.   |

a) तैसं २, ३, ५, ३। b) घतस. उप. ✓घ>धारि + श: प्र. (पा ३, १, १३८)। c) पाप्र. नाउ. व्यु. कृते सहने वा वहने वाऽयं पाधा. भ्वा. उसं.। मौस्थि. ✓अम् इत्यस्यैव विस्तर: द्र. (तु. वैप-१, ४८८; WW १, १७८)। d) तैत्रा ३, ७, ७, २। e) शौ ६, ९६, १। f) क १०, ९७, १५। g) दुर्गमत्वात् कथा-ऽभावविशिष्टा देवीति कृत्वा स्त्री. प्र१ द्र. (वैतु. भाआ. अकारककारषकारैरतत्तद्गर्गादिमन्वेन विशिष्टान्यच्चाराणीति कृत्वा छन्दसं न. प्र३ इति)। h) बस. इति कृत्वा एषु. तस. विवेकार्थं पृथक् निर्देशः। i) अकर्तृत्वाऽविषयत्व-प्रत्यक्प्रकाशत्व-विशिष्टश्रुतिसूच्यवयवः कस. (तु. अज्वा. मूको. पाभे.)। 'अकर्तृवि-' इति सुपा. सु-शोधः द्र.।

अ-काय- -यः ब्रवि ८१; रशिसं २२;  
-यम् ई ८.

१अ-कारण-

अकारण-प्राप्ति- -सौ सांका ६७.

२अ-कारण- -णम् ना ४; आबो १;  
महा ५, ४५; भव ३, ४.

अ-कार्पण्य- -ण्यम् गौ ३, २.

अ-कार्य- -र्यम् गौ १८, ३१.

अकार्य-कारिन्- -री मना १,  
१५.

अकार्य-त्व- -त्वे सांसू ३, ५५.

अ-काल- -लः मैत्रि ६, १५<sup>३</sup>; -लम्  
ते ५, १४; -ले यो ३, २;  
सार २८३: ८.

अ-किञ्चन-

अकिञ्चन्य<sup>b</sup>- -न्यम् नाप ३, २१.

अ-कीर्ति- -तिः गौ २, ३४; -तिम्  
गौ २, ३४.

अकीर्ति-कर- -रम् गौ २, २.

अ-कुटिल- -लम् नाप २; सु १,  
२, ६.

अ-कुण्ठ-

अकुण्ठ-मेघस्- -घसे गोपू ३७;  
सार २७५: १९.

अ-कुर्वन्- -र्वन्तः वरा ४, २५; -र्वन्  
नाप ७; अञ्ज १, ५७; २, १०;  
पप ४१९: ९; १संन्या २, ५९.

अ-कुर्वाण- -णः भव १, ३५.

अ-कुशल- -लम् गौ १८, १०.

अ-कुसीद- -दस्य योसू ४, २८.

अ-कृत, ता- -तः सुं १, २, १२;  
ब्रवि ८३; -तम् छां ८, १३, १;  
वृ १, ४, १५; अशि ३, ३;  
योशि १, १४५; च २१: १८;  
वटु ३१५: ३; -ता गौ ४,

९; -तेन महा ४, ४१; गौ ३,  
१८.

अकृता(त-अ)म्भस्- -म्भसा शि  
५, ४९.

अ-कृत-घ्न- -घ्नाय श ३५.

अ-कृत-बुद्धित्व- -त्वात् गौ १८,  
१६.

अ-कृता(त-आ)त्मन्- -त्मानः गौ  
१५, ११.

अ-कृता(त-अ)र्थ- -र्थः मै २, ९;  
मैत्रि २, ६.

अ-कृतो(त-उ)द्वाह- -हः नाप ३,  
१४; -हाः नाप ३, १५.

अ-कृत-रुच्- -रुक् व ४६०:  
२०९<sup>c</sup>.

अ-कृत्रिम- -मम् महा ५, १७१;  
अञ्ज ५, ४५; ५१; अक्षि ३.

अकृत्रिम-मणि-प्रभ- -भम् त्रिवा  
२, १५८.

अकृत्रिमा(म-आ)नन्द- -न्दम् ते  
१, ३८.

अ-कृत्वा छां ७, २१, १; नाप ३,  
८६; भ १, ८; ९; भव ४, १५.

अ-कृत्स्न- -त्स्नः वृ १, ४, ७<sup>d</sup>; १७.

अ-कृत्स्नविद्- -विदः गौ ३, २९.

अ-कृष्ट-

अकृष्ट-पच्य-

अकृष्टपच्यौ(च्य-ओ)षधि-वन-  
स्पति- -तिभिः आश्र ३.

अ-कृष्ण- -ष्णः वटु ३१४: २१;

अ-केतु- -तवे व ४३७: २०९<sup>d</sup>.

अ(क>)का- ✓अञ्ज द.

अ-क्रतु- -तुः क १, २, २०९<sup>e</sup>; व  
४६०: ८९<sup>f</sup>; -तुम् खे ३,  
२०९<sup>g</sup>; मना २, १२, १;

नाप ९, १३; श १८;

नाउ १, ८; पा ९, ३.

अ-क्रम- -मम् योसू ३, ५५.

अक्रम-शस्(>) सांसू २, ३२.

अ-क्रिय- -यः गौ ६, १; -यम्  
अध्या २१.

अक्रिय-त्व-तस्(>) १अव १३.

अ-क्रिया- -यया निर्वा २९८: १४<sup>h</sup>.

अ-क्रोध- -घः नाप ३, २४; राउ ५,  
२७; शारी १, शि ७, १००;

भव ५, १२; गौ १६, २.

अक्रोध-मय- -यः वृ ४, ४, ५.

अक्रोधा(ध-आ)द्य- -द्याः शि ७,  
१०१.

अ-क्रोध-मत्सर- -राः इ १५: २१<sup>i</sup>.

अ-क्लम- -मम् अञ्ज ५, ११२.

अ-क्लिष्ट(>)ष्टा- -ष्टाः सांसू २, ३३.

अ-क्लेद्य- -द्यः भव २, ४०; गौ २,  
१४.

अ-क्लेश-जनन- -नम् शां १, १<sup>j</sup>.

✓अक्ष

१अक्ष<sup>k</sup>- -क्षः छाग २५: २०.

२अक्ष<sup>l</sup>- -क्षम् रुजा १, १५;  
२, १; १३; १५; १६; -क्षाणि

रुजा १, २३; -भ्रे अक्ष ५<sup>m</sup>;  
-क्षौ छां ७, ३, १.

अक्ष-प्रथित- -तान् रुजा १,  
२२.

अक्ष-माला- -ला राधा २, १०;

-लाम् द ३; १०; अक्ष १४;  
-ले अक्ष १५.

अक्षमाला-भेद-विधि-

-धिम् अक्ष १.

अक्ष-मालिका- -कया अक्ष  
१६; -काम् अक्ष ६; ७; ८;

a) वस. इति कृत्वा एषू. तस. पृथक् निर्दिश्यते। b) भावे यक् प्र. द.। निमा. सुपा. 'अकिञ्चनम्' इत्यशुद्धः। अन्वयविरोधात्। c) कृ १०, ८४, ४। d) कृ १, ६, ३। e) 'अक्रतुम्' इति तैशा (१०, १०, १) पाभे.। f) ऋ १०, ८३, ५। g) तैशा १०, १०, १। h) 'अक्रिया' इति अख्या. पाभे.। i) 'रौ' इति शोधः द.। j) 'क्लेशजननम्' इति निमा. पाभे. प्रकरणविरुद्ध इव। k) देवनं प्रकरणायं प्राति. द.। l) रुद्राक्षप्रकरणीयं प्राति. द.।



-०के अक्ष १५.

अक्ष-संबन्ध- -न्धात् सांस् १,  
१६१.

अक्ष-सूत्र-

अक्षसूत्रा(त्र-अ)कुवा-ध-

(र>)रा- -रा सर ३, ३.

अक्षा(क्ष-अ)धिदेवता-रूप-

-पै: त्रिवा १, ८.

अक्षा(क्ष-अ)ध्यक्ष- -क्ष: मैत्रि  
६, १.

अक्षन्- -क्षन् वृ २, २, ५; ३, २;  
४, २, २; ५, ५, २; ४; कौ ४,  
१६; १७; -क्षणि वृ ४, २, ३;  
-क्षभि: प्र मुं मां अशि अ  
वृजा नृपू नाप सी श मना  
त्रिवि रार रापू शां पप अन्न  
सू १आ पाशु पत्र त्रिता देवी  
भा ब्रह्म भ ग मवा गोपू  
कृ ह दत्ता गरु अवि पहं सि  
शां; नृपू २, १५९; पित्र शां;  
-क्षण: छां १, ७, ४; रार २,  
१३; -क्षणो: व शां; त्रिवा २,  
१३२.

अक्ष(र>)ण-वत्- -ण्वन्त:  
नापू ४, १२९.

अक्षर, रा- -र: कै १, ८९; मैत्रि  
७, ६; मना २, १३, २; नृपू १,  
८; आबो ४; त्रिवि २, १६;  
महा १, १; योशि ३, १६; रह  
२३; गोड ४०; च २१: ६;  
सूता १, ६; नापू ३, ६९; कालि  
४०३: ७; भव २, ३०; गी ८,  
२१; १५, १६; -रम् क १, २,  
१६; ३, २; प्र ४, १०; ११;  
मुं १, १, ५; २, १३; २, २, २;  
३; मां १, छां १; १, १; ५; ७;  
८; २, १४; ४, १; ४; ५; २,  
१०, ३; वृ ३, ८, ८; १०;

११; ५, २, १-३; ३, १; ५,  
१; ३; ४; श्रे १, ७; ८; ४, १८; मै  
५, ५; मैत्रि ६, ४; ५; २३; ७,  
११; मना २, १३, १; ३४;  
३७; वृ १; २; अना २५; ब्रवि  
१६; अशि १, ८; ३, ६;  
नृपू २, ५; १३; ४, ३; ५,  
८; नृड १, २; सुवा २; ७;  
११; १४; १५; ते ६, ४;  
अ १; १योत १३५; २योत  
१, ७; नाप ३, २०; ७७; ५,  
१; ९, ७; त्रिवि २, १; ७,  
१७; राड ३, १; शां ३, १;  
योशि ३, २; १६; ६, ५४; कुं  
१४; पत्र २; ३, १; त्रिता १,  
२३; २५; ३८; ३९; ४४; ४५;  
४६; ४८; २, ६८; ३, २९;  
४, १३; ५, १६; रह ३४;  
३६; यो २, १९; भ २, ३;  
जाद १, २५; ४, ६२; ता २,  
१; ५; गोड ३९; ४०; सु २, २,  
७३; च २१: २०; २प्र ३२: ५;  
३३: १५; शौ ५१: १३; १४;  
५२: १; नापू १, १६; वड  
३१५; ५; गु ६१; व ४६१:  
२१९; भव २, ५; अवि १६;  
ब्रसू १, ३, १०; गी ८, ३; ११;  
१०, २५; ११, १८; ३७; १२,  
१; ३; -रम् छां १, १, ९; १०;  
वृ ३, ८, ९; मै ५, ४; -क्षरा:  
त्रि १; -राणाम् नृपू २, ५; १योत  
१३५; गी १०, ३३; -राणि  
छां २, १०, ४; २३, २; ८, ३,  
५; वृ ५, १४, १-३; नृपू २,  
३; योचू ७४; रापू ४, ४६; शां  
३, १; योशि ३, ६; सू २५;  
त्रिता ४, २३; भ २, ४; ह ८;  
गा १; ५; भव ३, २७; -रात्

मुं १, १, ७; २, १, १; २;  
अशि ६, १२; गोड ४०; वड  
३१७: १८; गी १५, १८; -रे  
प्र. ४, ९; छां १, १, ६; वृ ३,  
८, ११; ५, ५, १; ३; ४; श्रे ४,  
८९; ५, १; ना ३; मना १, १;  
२योत १, ७; वृजा ६, १२९;  
नृपू ४, ८; ९९; सुवा २; नाद  
४९; ध्या २; राड ५, २९९;  
अव्य ५; ए १; सू २५; त्रिता २,  
२९; ५, २१; हं ७; ८; व २२९;  
२प्र ३३: १५; शौ ५३: १८;  
सूता ३, १; गु ५३९; -रेण प्र  
५, ५; मै ५, २; ते ५, ५६; २प्र  
३२: २; -रेभ्य: योशि ३, ६;  
-रेषु गोपू २५; -रै: रार २,  
१२; वृजा ३, १२; अक्ष १४;  
अव्य ५.

अक्षर-तन्मात्र- -त्र: पै ४,  
१७.

अक्षर-त्रय- -यम् भ २, ४.

अक्षर-त्व- -त्वात् १अव १.

अक्षर-दैवत- -तानि गार ४०६:  
११.

अक्षर-द्वय- -यम् सू २५; गोच  
६७: ११; शि १, १७; १८;

-येन त्रिता ४, ६; २८.

अक्षर-धी- -धियाम् ब्रसू ३, ३,  
३३.

अक्षर-पञ्चक- -कम् गोच ६७:  
१२.

अक्षर-प्राप्ति- -प्ति: भव ३, २.

अक्षर-लक्षक- -कम् रार ४, ७.

अक्षर-वायु- -युना ब्रवि ७१.

अक्षर-वासु(>) अव्य २.

अक्षर-संज्ञा-

अक्षरसंज्ञित- -त: नाड  
३, ४.

a) अक्ष १, ८९, ८। b) अक्ष १०, ७१, ७। c) तैआ १०, ११, २। d) तैआ १०, १५, १।  
e) अक्ष १, १६४, ३९।



अक्षर-समुद्भव- -वम् गी ३, १५.  
 अक्षरा(र-आ)त्मन्- -स्मा ते ४, ७८.  
 अक्षरै(र-ए)क- -केण त्रिता ४, ६.  
 अक्षरो(र-उ)च्चारण- -णम् ते ५, २१.  
 अक्षि- -क्षि सु २, २, २३; -क्षिणि छां १, ७, ५; ४, १५, १; ८, ७, ४; मै ५, ६; ७; मैत्रि ६, ६; ७; ३५; ७, ११<sup>२</sup>; -क्षिणी ऐ १, ४; २, ४; छां १, ६, ७.  
 अक्षि-तेजस्- -जसे अक्षि १<sup>३</sup>; चा ९.  
 अक्षि-दृग्-दृश्य<sup>४</sup>- -दृष्ये महा ५, ७०<sup>५</sup>.  
 अक्षि-पुट- -टाभ्याम् रुजा १, २.  
 अक्षि-रोग- -नाः अक्षि १; चा १३.  
 अक्षि-क्षि(रस्>)रो-मु(ख>)- -खा<sup>६</sup>- -खा गु ४८.  
 अक्षि-स्पन्द- -न्दम् व ४३२: १७.  
 अक्षय(क्षि-अ)न्तस्-तारा- -रयोः अता ९.  
 अक्षया(क्षि-आ)दि-निमीलन<sup>७</sup>- -नः त्रिबा २, ८ ६.  
 अक्षी- -क्षीभ्याम् ऐ १, ४; -क्ष्योः मना २, ७२९<sup>८</sup>.  
 अक्ष्ण-  
 अक्ष्णया वृ १, ५, १७.  
 अक्ष्णवत्- ✓अक्ष>अक्षन्- द.  
 अक्षत- -तम् महा ४, ११९; १२१; -ताः मं २, २, ५९<sup>९</sup>; आपू ४९<sup>१०</sup>; -ते आबो १<sup>१</sup>.  
 अक्षत-पुष्प- -ष्यैः अक्ष ४.  
 अक्षति- -तेः त्रिता १, २८.

अक्षममान- -नानाम् शि ५, ३९.  
 अक्षमा- -माम् अशि ५, १८; वडु ३१७: ६.  
 अक्षय,या- -यः त्रिवि ८३; महा ६, ५७; गी १०, ३३; -यम् निर्वा २९७: २; महा ५, ११४; अन्न ५, ८; त्रि १६; इ १५: २३; गोच ६७: १३; शि ६, ४२; ९९; १०१; १२६; गी ५, २१; -या गौ ३, ४०; -याय लां २१६: ६.  
 अक्षया(य-आ)त्मन्- -त्मनः भव २, ५०.  
 अक्षया(य-आत्मक>)त्मिका- -काम् अन्न ४, ७५.  
 अक्षय्य- -य्यः मै २, ४; मैत्रि २, ४; ६, २८; -य्यम् मैत्रि ४, ४; ६, ३०; भव ४, २; वृ २०.  
 अक्षर- ✓अक्ष द.  
 अक्षार-लवणा(ण-आ)शिन्- -शी आश्र १.  
 अक्षित- -तः मना २, ६७; -तम् छां ३, १७, ६; मना २, ६७.  
 अक्षिति- -तयः वृ २, २, २; -तिः वृ १, ५, २<sup>३</sup>; -तिम् वृ १, ५, १; २; कौ ३, २.  
 अक्षु(ब्ध>)ब्धा- -ब्धा अन्न १, ४९.  
 अक्षुब्ध-चित्त- -तः वरा ४, २९.  
 अक्षुब्ध-महाब्धि-  
 अक्षुब्धमहाब्धि-वत् महा ४, ११; ६, ५३.  
 अक्षेत्र-क्ष- -क्षाः छां ८, ३, २.  
 अक्षेम- -मम् नी १, ३.  
 अक्षोभ-  
 अक्षोभ-कर- -कर अक्ष ५.  
 अक्षोभ्य-  
 अक्षोभ्य-मुनि<sup>१४</sup>- -निः तारा ८३: १४.

अक्षोभ्य-मौली(ति-इ)न्दु-प्रज्व-  
 लि(त>)ता- -ता तारा ८३: २१.  
 अखण्ड- -ण्डः त्रिवि ८५: वरा ३, १: -ण्डम् महा ५, ११८; अथ्या ३२; वरा ३, ४; ६; सौ २, ११; -ण्डः भ २, २५.  
 अखण्ड-चि(त्>)द्व-घना(न-आ)  
 नन्द-विशेष- -यम् त्रिवि ६, २३; सि ५, १४.  
 अखण्डचिद्वनानन्द-स्वरूप- -यम् त्रिवि ४, १.  
 अखण्ड-चेतन- -नम् वरा ३, ८.  
 अखण्ड-ज्ञान- -नेन त्रिवि २, ६.  
 अखण्ड-ते(जस्>)जो-मण्डल-  
 विशेष- -यम् सि ५, ८; ६, ३७.  
 अखण्ड-दिव्य-ते(जस्>)जो-  
 मण्डला(ल-आ)कार- -रम् त्रिवि ७, ७; सि ५, ३.  
 अखण्ड-परमा(म-आ)नन्द-वि-  
 शेष- -यम् त्रिवि ७, १९; सि ६, ५.  
 अखण्ड-परिपूर्ण-परमा(म-आ)न-  
 न्द-लक्षण-परब्रह्मन्- -ह्यणः त्रिवि ६, १६.  
 अखण्ड-बोध- -धः कुं १७: वरा ३, ३; -धम् कै १, १५.  
 अखण्डबोध-विमान- -नम् त्रिवि ६, २४.  
 अखण्ड-ब्रह्म-तेजो-मण्डल-  
 -लम् मं २, १, ५.  
 अखण्ड-भाव- -वेन अथ्या ७.  
 अखण्ड-मण्डल- -लम् मं २, १, ४.  
 अखण्डमण्डला(ल-आ)कार-  
 -रम् भा १; म ४८: ५.  
 अखण्डमण्डलाकार-ज्यो-  
 तिसु- -तिः मं २, १, ७.

a) 'दृग्दृश्ये' इति अव्या. पाठे.। b) 'भगवती' इत्यस्य वि. सत् बस. द.। c) कूर्मवायोः वि. सत् बस. भवति। d) तैसं ५, ५, ९, २।

अखण्ड-रूपक- -कम् ते २, ११.

अखण्ड-लक्षण-

अखण्डलक्षणा(रा-अ)खण्ड-परि-

पूर्ण-सच्चिदानन्द-स्वप्रकाश-

-शम् त्रिवि ४, १.

अखण्ड-विग्रह- -हम् शु २, ५.

अखण्ड-शुद्ध-चैतन्य-निजमूर्ति-

विशेष-विग्रह- -हम् त्रिवि ७, २०.

अखण्ड-सुखा(स-अ)म्भोधि- -धौ कुं १४.

अखण्ड(रुड-आ)कार- -रम् मैत्रे ३, २०; निर्वा २९८: १७.

अखण्डाकार-रू(प>)पा- -पा पै ४, ११.

अखण्ड(ण्ड-आ)काश-रूप- -यः मैत्रे ३, २०.

अखण्ड(रुड-अ)द्वैत-परमा(स-आ)-  
नन्द-लक्षण-पर-ब्रह्मन् -

-ह्यणः त्रिवि २, ११<sup>५</sup>; ७, २०.

अखण्ड(रुड-आ)नन्द- -न्दः त्रिवि १, १; -न्दम् त १, २४; अध्या २७; वरा ३, २.

अखण्डानन्द-ते(जस् >)जो-  
मण्डल- -लम् त्रिवि ६, २५;  
मि ५, १९.

अखण्डानन्द-ते(जस् >)जो-  
राश्य(शि-अ)न्तर-स्थित-  
-तम् त्रिवि ७, २१.

अखण्डानन्द-ते(जस् >)जो-  
राश्य(शि-अ)न्तर-नात- -तम्  
त्रिवि ७, २८.

अखण्डानन्द-निरस्त-सर्व-  
क्लेश-कश्मल- -लः मं ३,  
२, १.

अखण्डानन्द-पीयूष-पूर्ण-  
ब्रह्म-महा(हा-अ)र्णव- -वे  
अध्या ६, ६.

अखण्डानन्द-पूर्ण- -र्णः मं ३,  
१, ६.

अखण्डानन्द-बोध- -धः वि  
२५.

अखण्डानन्द-ब्रह्म-चैतन्या  
(न्य-अ)धिदेवता-स्वरूप-  
-पम् त्रिवि ७, २०.

अखण्डानन्द-रूप- -पम् सि  
१, ५.

अखण्डानन्दरूप-वन्-  
-वान् ते ३, ७<sup>५</sup>.

अखण्डानन्द-विग्रह- -हः  
मैत्रे ३, ८.

अखण्डानन्द-संबोध-

अखण्डानन्दसंबोध-मय-  
-यः वि २८.

अखण्डानन्द-स्वभाव- -वम्  
वस् २५.

अखण्डानन्द-स्वरूप- -पम्  
त्रिवि ७, १७.

अखण्डानन्दा(न्द-अ)मित-वै-  
ष्णव-दिव्यतेजोराश्य(शि-अ)-  
न्तर्गत-विलसत्- -सत् त्रिवि  
१, ११.

अखण्डानन्दा(न्द-अ)मृत-वि-  
शेष- -पम् त्रिवि ७, १७.

अखण्डानन्दा(न्द-आ)ह्लादा-  
(द-अ)नन्त-प्रवाह-दिव्य-  
सुगन्ध- -न्वैः सि ६, २०.

अखण्डानन्दै(न्द-ए)क-रसा(स-  
आ)त्मक- -कम् त्रिवि १, ११.

अखण्ड(रुड-अ)र्थ- -र्थम् व ५;  
१४.

अखण्डै(रुड-ए)क-रस,सा- -सः  
ते २, १<sup>५</sup>; २; ४<sup>५</sup>; ६<sup>५</sup>; ७; ८;

११; १२; १३<sup>५</sup>; १४; १६;  
१७; १८<sup>५</sup>; १९<sup>५</sup>; २०; २३<sup>५</sup>;

४२; ३, ३७; ५, ७; -सम् ते

२, १<sup>५</sup>; २<sup>५</sup>; ४<sup>५</sup>; ६<sup>५</sup>; ७<sup>५</sup>; ८<sup>५</sup>;

९<sup>५</sup>; ११<sup>५</sup>; १२; १४<sup>५</sup>; १६<sup>५</sup>;

१७; १९; २०<sup>५</sup>; २१<sup>५</sup>; २२<sup>५</sup>;

२४<sup>५</sup>; २६; २८, ४१; -सा ते  
२, २; ३<sup>५</sup>; ८; १२; १३; १७;

-साः ते २, १७; -सात् ते  
२, ९; १०<sup>५</sup>.

अखण्डैकरस-चिन्मात्र-स्व-  
रूप- -पम् ते २, १.

अखण्डैकरसा(स-आ)त्मन्-  
-त्मा राउ ४, २.

अखण्डैकरसा(स-आ)दिक-  
-कम् ते २, १२.

अखण्डैकरसा(स-आ)नन्द-  
-न्दः राउ ५, २.

अखण्डै करसा(स-अ)मृत-  
-तम् ते २, १५.

अ-खण्डित- -तम् महा २, ७५; ५,  
५६; ११६; अन्न १, २२; अध्या  
६४; १आ २४; अद्वै २७.

अखण्डित-ब्रह्मन्- -ह्य अद्वै ४.

अ-खादत्- -दत् छां १, १०, ४.

अ-खिल,ला- -लम् नि ४; नाद २१;  
३२; त्रिवि १५; त्रिब्रा १, ३; ४;

सी ३३; श २२; त्रिवि २, १६;

रापू १, १; पै १, १०; महा २,  
१६<sup>५</sup>; ३१; ७२; ५, १३३; ६,

७; ९; योशि ५, ५३; १संन्या २,  
१००; अन्न १, ४४; ५५; अक्षि  
४३; पाशु २, ४६; दे १; करु

३६; गोपू २; १८<sup>५</sup>; वरा २,  
२७; शा ६; सर २, ९; सं १४;

वि १९; शि ४, ३२; पित्र १, २;  
गी ४, ३३; ७, २९; १५,

१२; -ला वरा २, ७१; -लाः  
आबो २३; योशि १, १४९; यो  
१, ७६; वरा २, ५७; -लाम्  
मैत्रे २, २८; अन्न ५, १०४;

a) 'परंब्रह्मणः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः द्र.। b) 'अनन्तानन्दरूपवान्' इति अज्या. पाभे.।

c) 'सम्' इति निसा. पाभे.।

वरा ४, १९; से ८; -लः शा  
२६.  
अखिल-कर्मा(र्म-अ)तीत- -तः  
त्रिवि १, ११.  
अखिल-कार्य-कारण-जाल- -लम्  
त्रिवि २, ४.  
अखिल-कार्य-कारण-स्वरूप-  
-नम् त्रिवि ४, १.  
अखिल-जन्तु- -न्तूनाम् अत्र १,  
३६.  
अखिल-दुरित-अय- -यः त्रिवि  
१, ६.  
अखिल-दृष्टि- -दृष्टि १ संन्या २, २४.  
अखिल-परिपूर्ण- -णस्य त्रिवि २,  
१४.  
अखिल-पवित्र- -आणाम् त्रिवि ६,  
२२; सि. ४, १०.  
अखिल-प्रमाणा(ण-अ)गोचर-  
-नम् त्रिवि १, ५.  
अखिल-प्रमाणा(ण-अ)तीत- -तम्  
त्रिवि ७, १७; सि ६, २.  
अखिल-मोक्ष-साधन- -नम् त्रिवि  
१, १.  
अखिल-लोक- -काः त्रिवि २, १६.  
अखिललोक-स्वर्ग-प्रजापति-  
-तयः त्रिवि २, १६.  
अखिल-वर्मन्- -र्मन्ता सर २, ९.  
अखिल-वाङ्मय- -०य अत्र १.  
अखिल-विश्व-रूप- -०य व  
४३४: ३.  
अखिल-शास्त्र- -स्त्रैः त्रिवि १, १.  
अखिला(ल-आ)गम- -मैः त्रिवि  
१, १.

अखिला(ल-अ)ण्ड-  
अखिलाण्ड-कोटि-ब्रह्माण्ड-  
नाय(क>)की- -०कि व ४३६:  
२१.  
अखिला(ल-आ)मन्- -न्मा ते ४,  
७०; -मनाम् कृ २४.  
अखिला(ल-आ)धार- -रः ते ६, ४५.  
अखिला(ल-आ)धारिन्- -रिणः  
गोप् १७९.  
अखिला(ल-अ)पवर्ग-परि-पालक-  
-कम् त्रिवि ६, २०.  
अखिला(ल-अ)मर- -रैः त्रिवि  
१, १.  
अखिले(ल-इ)न्द्रिय-श्रव-वश-  
-ज्ञान् मं ३, १, ३.  
अखिलो(ल-उ)गधि-विनिर्-मुक्त-  
-कम् नि १३.  
अ-खेद-  
अखेद-ज- -जात् शां १, ७, २८.  
अ-गणित-  
अगणिता(त-आ)नन्द-दायिन्-  
-यिने सार २६१: १५.  
अ-गता(त-अ)मु- -सून् गी २, ११.  
अ-गद- -दः छां ३, १६, २; ४; ६;  
कौ २, १५.  
अ-गन्तव्य- -व्यम् वृ ९, १८.  
अ-गन्ध- -न्धः त्रिवि ८२; -न्धम् वृ  
३, ८, ८; वृ ९, १८; सुवा ३.  
अ-गन्धवत्- -वत् क १, ३, १५; पै  
३, ४; यो ३, ३५; सु २, २, ७२.  
अ-गम्य, म्या- -म्यः सार २३५:  
१७; -म्या अत्रि ४१; -म्या:  
राउ ५, १६.

?अगम्य-ग- ?अ-गम्यत- टि. ३.  
अगम्य-व- -न्वान् महा २, ३;  
१ संन्या २, २८.  
अगम्या(म्य-आ)गम-कर्तृ-  
-नारः ते १, ४.  
अगम्या-गमन- -नम् कालि ४०२:  
१८; -नात् सुद ४; स. २८;  
नाउ ३, ८.  
\*अगम्यक- नाउ. टि. ३.  
?अ-गम्यत- -तः ते ५, ९.  
?अगर-  
अगर-त्रितय- -यम् वृजा ३, २८.  
अ-गर्हित- -तम् आश्र २.  
अग(ऽ)स्ति-  
अगस्त्य- -स्त्यः वसु १४; गार २,  
२०; ६०; ९८; १०२; विद्या १;  
४; -स्त्यम् गार ४०७; १४.  
आगस्त्य- -स्त्यम् त्रिता १,  
६८; ७३; ७७.  
आगस्त्य-विद्या- -द्याम्  
त्रिता १, ७२.  
अ-गात्र- -त्रः त्रिवि ८४.  
अ-गा(घ>)धा- -धा गोउ २.  
अगाध-ज(ल>)ला- -ला सार  
२६९: ८.  
अगाध-जल-पूरि(त>)ता- -ताः  
सार २६७: १६.  
अगाध-तलस्पर्श-रहि(त>)ता-  
-ता गोउ २.  
अगाध-तम्(>) नापृ. ३. १.  
अगाध-महिमन्- -मः राधा ३,  
१७.  
अ-गामिन्- -मी वि ३३; सृ ६.

a) 'अखिलधारिणः' इति सूको. पामे. । b) अ-गम- इति नञ्-पूर्वं मध्ये प्राति. इति उत्र. ।  
c) 'कर्ता यः' इति निसा. द्वि-पदः पामे. द. । d) वेदवाक्यकरणक-गम्यता-रहित इत्यर्थतः वस. द. [वैतु.  
?अगम्य-ग- इति अज्या. पामे. (=स्वार्थिक-क-प्रत्ययान्तस्य सतः \*अगम्यक- इत्यस्य विकारो वा 'अगम्य-गान-' इति  
वा 'अगम्य-गमन-' इत्यर्थो वा द.) । उप. \*ग-<√गै इति वा √गा इति वेत्यभिसंधेः] । e) व्यु. ? । नञ्-पूर्वं  
तस. इति वाच. , वस. इति शक. (=उभयत्र √गृ>\*गरु- इति उप.) । यद्वा (√\*अर्गु दीप्तौ)>\*अर्ग- +\*र(<√रा)  
=अर्ग-र- इत्यस्य नैप्र. परिणामः स्यात् । f) कम. द. (वैतु. 'अगाध-तः, स्पर्शरहिता' इति पृथक्-पदद्वयात्मकः  
निसा. पामे. । g) बहुवचनात्मकः पामे. अपि द. (वैतु. अज्या. सं. टि.) ।



१अ-गुण- -णाः अन्न ४, २१.

२अ-गुण- -णः त्रिवि ८७; -णम्  
नृउ ९, १८; -णस्य सांका ६०;  
-णाव सार २७७: १०.

अगुरु-

अगुरु-चन्द्र-केसरी-सृगमद-क-  
पूरा(र-आ-घ- -याः सार  
२३७: १७.

अगुरु-रस- -सार सार २२५: २१.

अगुरु-रस-सम्पूर्णमाण- -णाः  
सार २३३: २१.

अगुरु-वासित-कवरी-सुगोप्य-  
मान- -नानि सा २६४: १९.

अ-गृहीत-

अगृहीत-कलङ्का(क-अ-क- -कः  
महा ६, ६९.

अ-गृह्य- -ह्यः वृ ३, ९, २६; ४, २,  
४; ४, २२; ५, १५.

अ-गोचर, रा- -रः महा २, ११; -रम्  
अन्न ३, १९<sup>१</sup>; मैत्रि १, ४, ९; ते  
१, ४९; त्रिवि १, ५; ६, १५;  
७, १७; अक्षि ४८; अथ्या ६३;  
सि ६, ३; -रा त्रिवि ४, १३.

अ-गोत्र- -त्रः त्रिवि ८४; -त्रम् सुं १,  
१, ६; पाशु २, २८; रुह ३१.

अग्नि- -मवः तै १, ९, १; छां ४,  
१०, २; ४; गर्भ ५; मना २,  
७८<sup>१</sup>; ७९<sup>१</sup>; त्रिवि ३; योत  
१३५; रयोत १, ६; राउ ४, १९;  
वा १६; शां ३, १; रुह ४; प्रा  
२, १; १प्र ३१: ३; गोच ६६:  
१६; -मनवे छां २, २४, ५; ५,  
९, २; वृ ६, २, १४; ३, ३; ४,

१९; मैत्रि ६, ३५; मना  
१, १२; २, ३-५; ६७<sup>१</sup>; अशि  
६, २९<sup>१</sup>; रसंन्या १६: ९; त्रिवि  
७, ४७; गोउ ६६; कः १; आर्षे  
९: २०; व ४६५: ३९<sup>१</sup>; कश्चु २,  
३; कौल ३; -ग्निः के ३, ४; ४,  
२; क १, १, १६; १९; २, १०;  
२, १, ८; २, ९; १५; ३, ३;  
प्र १, ७; २, २; ५; सुं २, १,  
४; ५; २, १०; तै १, ३, २, ५,  
२; ७, १; २, १, १; ८, १; ऐ  
१, ४; २, ४; छां १, ३, ७; ६,  
१<sup>१</sup>; १३, १; २, २, १; २: २०,  
१; २१, १; ३, १३, ३; १८,  
२; ४, ३, १, ६, १; २; ७, ३; ११,  
१; ५, ४-८, १; २१, २<sup>१</sup>; ७, १२,  
१; ८, १, ३; वृ १, १, १; २,  
२; ७; ३, १२<sup>१</sup>; ४, ६; ५, ११<sup>१</sup>;  
२२; २, २, २; ५, ३; ३, १,  
३; २, १; ७, ५<sup>१</sup>; ९, ३; ७;  
१०; २४; ४, ३, ४; ५, ९, १;  
१४, ८; ६, २, ९-१३; १४<sup>१</sup>;  
४, ५; २४; श्वे १, १५; २, ६;  
४, २९<sup>१</sup>; ६, १४; १५; कौ २,  
९; १२; ४, १६<sup>१</sup>; मै १, १;  
२, ८<sup>१</sup>; ३, ३; ४, ४, १०; १२;  
५, २<sup>१</sup>; ५<sup>१</sup>; मैत्रि १, २, २, ६<sup>१</sup>;  
३, ३; ४, ५; ५, १; ६, २;  
५<sup>१</sup>; ८; ९<sup>१</sup>; १०; १२; ३३<sup>१</sup>;  
३४<sup>१</sup>; ३५; ७, १; ७; मैत्रि १,  
१; कै १, ८९<sup>१</sup>; जा ४; हं  
५; ६<sup>१</sup>; मना १, २९<sup>१</sup>; ७; २,  
१<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; २; १३, २;

३१९<sup>१</sup>; ३३; ३५; ४४९<sup>१</sup>;  
७९९<sup>१</sup>; ८०९<sup>१</sup>; व २; ३, १०;  
अशि २, ४; ५, २०; अ १,  
नृपू १, ८; २, २; १४; ५, २०;  
वृजा २, १<sup>१</sup>; ४; ११; ३, २६<sup>१</sup>;  
७, १; ८९<sup>१</sup>; ८, ६; नृउ २, ८;  
३, ५; काला १; ६; सुवा १;  
५; ६; ते २, २७; ५, ३६; ६,  
८९; ध्या ९; योत १२४; नाप  
३, ७७; ४, ३८; त्रिना १, ९;  
२, १३८; योचू ७२; मुद्र ३;  
पै १, १६; महा १, १; योशि ५,  
३०; ३२; ६, ७०; ७६; १संन्या  
२, ७२; पप ४१८: ९; अव्य  
२; ए ११<sup>१</sup>; अन्न ५, २९; कुं  
६; सावि १<sup>१</sup>; १०<sup>१</sup>; त्रिता १,  
७९<sup>१</sup>; कः १४; भा ८; यो १,  
८४; ३, १४; भ १, ५; २,  
२९<sup>१</sup>; १०; १९; ग ६; प्रा १,  
५; ६; २, १<sup>१</sup>; गोपू २५;  
गोउ ८<sup>१</sup>; या १, १; जाबा १६;  
इ ११<sup>१</sup>; ४; १३: २१; १५: ६;  
१२; च २०: २; २१: ३; २प्र  
३६: १६; नाउ १, १५; सार  
२३९: २१; २६४: ११; २७२:  
१२; २९१: ७; सु २९४: १;  
पारा ४; ९; वद ३१३: ७;  
३१७: ११; रु १०; रशिसं १०;  
सिधि ३८०: ११; कालि ४४३:  
८; गार ४०५: ७; १७; ४०८:  
८; गा २७; गु ४५; ५२; व  
४३०: ७९<sup>१</sup>; ४३७: ९९<sup>१</sup>;  
१७९<sup>१</sup>; ४३९: ८; ९; ४४४: १२;

a) वच. इति कृत्वा नादू. तस. पृथक् निर्दिश्यते। b) 'रः' इति निसा. पामे.। c) तैआ १०, ६२, १। d) तैआ १०, ६३, १। e) मा १०, ५; एकत्र। f) शौ ७, ९२, १। g) तैआ २, १२, १। h) मा ३२, १। i) 'अग्नेः' इति अज्या. पामे.। j) तैआ १०, ११, २। k) अज्या. नास्त्वयं पाठः। l) मा ३२, १। m) ऋ १, ९९, १। n) शौ ७, ६५, १। o) तैआ १०, २४, १। p) तैसं ३, ३, १, २। q) तैआ १०, ६३, १। r) तैआ १०, ६४, १। s) मा ३, ९। t) 'अन्यथम' इति निसा. भद्रः पाठः। u) ऋ १, ९९, १। v) तैआ ८, ८, १। w) ऋ ८, ४४, १६। x) ऋ ८, १८, १।



४६०: १५<sup>१</sup>; ४६१: ७<sup>१</sup>;  
 १५<sup>१</sup>; ४६३: ७; कौल १; अरु  
 २९; भव १, १४; ३, २१;  
 पित्र २, ६; गी ४, ३७; ८, २४;  
 ९, १६; ११, ३९; १८, ४८;  
 -गिनता छां ३, ६, १; ६, ३;  
 १८, ३; वृ १, ४, १५; ३, १,  
 ३; ४, ३, ४; मै ३, ३; ५, ८;  
 मैत्रि ३, ३; ६, ८; १०; वृजा  
 २, १०; १योन ८२; शां १; ४<sup>१</sup>;  
 महा ४, २६; योशि १, ५६;  
 ८५; ५, ५०; यो १, ६६; ३,  
 ३०; त्रिवा २, ६५; य ८; इ  
 १५; १०; सार २३९: २०; सु  
 २९३: ८; २९४: १; -गिनभि:  
 आर्षे ७; ४; व ४३७: १७<sup>१</sup>;  
 -गिनम् के ३, ३; क १, १, १३-  
 १५; १९; छां २, १२, २; ३,  
 १५, ६; ४, ६-८, १; १७,  
 १; वृ १, ४, ६; ३, २, १३;  
 ७, ५; ६, ३, १; ६<sup>१</sup>; ४, १२;  
 २४; जा ४<sup>१</sup>; मना २, १९<sup>०</sup>;  
 ५०<sup>१</sup>; अना २०; कौ २, ३; ४;  
 १५; वृजा ३, ११; २५; ८, २;  
 वृषू ५, १४; सुबा ९<sup>१</sup>; नाप ३,  
 ७७<sup>१</sup>; ४, ३८<sup>१</sup>; २संन्या १७: ५;  
 ६; पप ४१८: १२; १३; १४<sup>१</sup>;  
 १८; कुं २; ९; त्रिवा २, ३१;  
 ३, २३; कर् १<sup>१</sup>; जाद ५; ८,  
 २; या १, १<sup>१</sup>; आर्षे ९: १६; इ  
 १४: २१; २प्र ३२: १०; ३६:  
 १७<sup>१</sup>; लां २१६: २; शि ४,  
 ४९<sup>१</sup>; ६, २१३; ७, ६९; ७०; ७१;  
 व ४३७: ११<sup>१</sup>; १२<sup>१</sup>; ४३९:  
 १४<sup>१</sup>; ४४४: १९<sup>१</sup>; ४५०:

३९<sup>१</sup>; ४५३: १२<sup>१</sup>; ४६१:  
 १४<sup>१</sup>; अरु १५: ३२; -गिनपु  
 पि ५; -गनी २संन्या १७: ७;  
 -गनीच्छां ४, १०, १; २; १४, २;  
 ५, १०, १०; मैत्रि १, १; मना २,  
 ७२<sup>१</sup>; १संन्या २, १००; २संन्या  
 १५: ४; कश्चु ३, १; -०ग्ने ई  
 १८; वृ ५, १५, १९<sup>१</sup>; जा ४<sup>१</sup>;  
 मना १, ५; २, १<sup>१</sup>; ४;  
 ६; ७; ४८<sup>१</sup>; ७६<sup>१</sup>; २संन्या  
 १७: ५; या १, १९<sup>१</sup>; नाप ३,  
 ७७<sup>१</sup>; ४, ३८; पप ४१८: ११<sup>१</sup>;  
 २प्र ३६: २१<sup>१</sup>; पा २, ३; व  
 ४३९: ९; ४४३: २१; ४६१:  
 १०<sup>१</sup>; १२<sup>१</sup>; १७<sup>१</sup>; -ग्ने: तै  
 २, १, १; छां १, ३, ५; २, २२,  
 १; ३, १३, ७; ४, ६-८,  
 १; १७, २; ५, २, ७; ६,  
 ४, १<sup>१</sup>; वृ १, ५, १८; २, १,  
 २०; ५, ३; ३, ७, ५; श्वे २,  
 १; जा ४; कौ ३, ३<sup>१</sup>; ४, १९;  
 मैत्रि ६, ३१<sup>१</sup>; व ३, ३; वृजा  
 २, ४; ६; १०; १२; कालि  
 ४०३: ३; सुबा १; ते ६, ८३;  
 ५या ४७; नाप ३, ७७; ८३;  
 ४, ३८; पप्र ३, ७; योचू ७२;  
 वा ३६; शां १, ४; पै १, १६;  
 शारी १; पप ४१८: १२; कर्  
 १४; म १, ६; २, ५; या १,  
 १; नाउ १, १५; सार २९०:  
 १४; गार ४०५: ७; छाग २३:  
 ११; २४: १४; -गनौ तै १, ६,  
 १; छां २, १२, १; २; ५, २, ४;  
 ५<sup>१</sup>; ४-८, २; २१, २; २४, ३;  
 वृ १, ४, १५: २, १, ७; ५, ३;

३, ७, ५; ४, ३, ५; ६; ५, ११,  
 १; १४, ८; ६, २, ९-१४; ३,  
 २<sup>१</sup>; ३<sup>१</sup>; श्वे २, १७; कौ ४, ८;  
 मै ४, ४, १०; मैत्रि ६, १७<sup>१</sup>;  
 २४; २६<sup>१</sup>; ३४<sup>१</sup>; ३५<sup>१</sup>; ३७<sup>१</sup>;  
 ७, ७; ११; अशि ६, १९<sup>१</sup>; २९<sup>१</sup>;  
 २संन्या १६: १५; वृजा ७, ८;  
 सुबा ५; ध्या ७९; त्रिवा १, ९;  
 २, १४४; योचू ५१; मुद्र २;  
 शारी १; योशि ५, ४१; ५०;  
 अच्य ३: ४; अन्न ४, ९; कर् १;  
 म १, ८; २, २; ७; गोउ ८; वरा  
 ५, ८; शा १५; इ १०: १५;  
 सार २४३: १०; २शिंसं ३५<sup>१</sup>;  
 शि ४, ३३; ३५; ३९; ४१; ४२;  
 ४७; ७, ७३; गा २७; व ४३८:  
 १७<sup>१</sup>; भव १, २४; कश्चु २,  
 ३; गी १५, १२.

आग्नेय- -य: अना ३१; -यम्  
 मैत्रि ६, १४<sup>१</sup>; काला ६; शि ५,  
 १; १३; १६; २९; ३१; ३२; ६,  
 ७३; गार ४०७: ५; -ये हं ८.

आग्नेयी- -०वि व  
 ४३१: १६; ४४९: २३; -यी  
 नाद ६; -यीम् जा ४; -याम्  
 नाप ३, ७७<sup>१</sup>; ६, १; पप ४१८: ९;  
 या १, १; शि २, १७; ६, ८३; व  
 ४३०: १५; ४३९: ८; ४४४:  
 १२; ४४९: २२; राधा १,  
 २०.

आग्नेय-दल- -लम्, -ले  
 ध्या ९३, ३.

आग्नेय-पत्र- -त्रे सूता ४, ३.  
 आग्नेय-भाग- -गात् शि  
 ४, ७.

- a) ऋ १०, ८४, २। b) ऋ १, ९९, १। c) शौ ७, ६५, १। d) ऋ ८, १८, ९।  
 e) तैत्रा ३, २, १, १५। f) ऋ १, १, १। g) ऋ १०, १०१, १। h) ऋ १, १२, १। i) तैत्रा  
 १०, ६३, १। j) ऋ १, १८९, १। k) ऋ ३, २९, १०। l) ऋ १, १८९, २; ५, ४, ९; ८, ११,  
 १०। m) तैसं ४, १, ७, ४। n) ऋ २, १, १। o) कौ १, १। p) शौ ७, ९२, १। q) माश्री  
 ६, २, ४। r) तैसं ५, ५, १, ३। s) तैसं ५, ५, १, २। t) 'आग्नेयीम्' इति अख्या. पाप्मे.।

आग्नेया(य-आ)दि- दिपु  
 राप् ४, ३५; तारा ८४: २.  
 अग्नि-क- -कः ते ६, १९.  
 अग्नि-कण-पङ्क्ति- -ङ्क्तयः  
 १मेन्या २, २३.  
 अग्नि-काय- -यम् भ २, २७.  
 अग्नि-कार्य- -यम् पै ४, ६; शि  
 २, २४.  
 अग्निकार्य-ज्ञानेन्द्रिय-विषय-  
 -याः त्रिवा १, ६.  
 अग्निकार्या(य-आ)दि-कार्य-  
 -यम् नाप ६, ३३.  
 अग्नि-कुमार<sup>१</sup>- -राः सार २४०: २१;  
 २४१: १; ३; २४३: ४; ११;  
 १७; २४६: २२.  
 अग्नि-ग(र्म>)र्मा- -र्मा वृ ६, ४,  
 २२.  
 अग्नि-गुण- -णाः शारी १.  
 अग्नि-चित्त्वे(त्या-इ)ष्टका- -काः  
 २शिसं १४.  
 अग्नि-जापिव- -पी पारा १३.  
 अग्नि-जावा<sup>१</sup>- -याम् द २.  
 अग्नि-ज्वलन- -नात् वरा ५, ३६.  
 अग्नि-तीर्थ<sup>१</sup>- -यम् आच ४.  
 अग्नि-वृत्त- -सम् आच ८.  
 अग्नि-त्रय-  
 अग्नित्रय-कलो(ला-उ)पेत-  
 -त्तम् पाशु १, १४.  
 अग्नित्रय-स्वरूपक- -कम् रुजा  
 २, ३.  
 अग्नि-त्व- -त्वम् छां ६, ४, १.  
 अग्नि-दण्ड<sup>१</sup>- -०ण्ड व ४३५: ११.  
 अग्नि-दल- -ले वि ३.  
 अग्नि-दीप्त- -०प्त तां २१४: १२.  
 अग्नि-दुर्गा- -०र्गे व ४३७: १.  
 अग्नि-दूत- -तः १<sup>१</sup>व ४४०: २;

४४५: ७; ४५०: १०;  
 ४५३: १९.  
 अग्नि-देवत- -तः वृ ३, ९, २४.  
 अग्नि-देशा(श-आ)दिक- -कात्  
 राप् ५, ३.  
 अग्नि-द्वार- -रम् व ४२७: २१.  
 अग्नि-नारायण-युक्त- -क्तम् सू २.  
 अग्नि-परि-चरण- -णम् आश्र ३.  
 अग्नि-पुत्र<sup>१</sup>- -त्राः सार २४८: १४.  
 अग्नि-पूत- -तः कै २, ५; अशि ७,  
 २; वृजा ८, १; वृप् ५, १२; नि  
 ५, ७; रार ५, १७; राउ ५, ४;  
 सुद्र ४; पै ४, २३; ता ३, ९;  
 सौ ३, १; महा ६, ८३; वरा  
 ५, ७६; च २१: ८; वट्ट ३१८:  
 ४; स ३७९: २२.  
 अग्नि-प्र-वेश- -शम् कृ १; कशु  
 २, ३; -शे जा ५; पप ४१८:  
 १६; या २, १.  
 अग्नि-बीज- -जम् ध्या ९५; जाद  
 ५, ८; पी ४२१: ८.  
 अग्नि-मण्डल- -लम् मं २, १, ५;  
 व ४३९: ९; १०; -ले १योत  
 ९४<sup>१</sup>; त्रिता २, ६८.  
 अग्निमण्डल-युत- -तम् शां १, ५  
 अग्नि-माथा- -याम् सुमु ४.  
 अग्नि-मूषा<sup>१</sup>-  
 अग्निमूषा-हिरण्य-वत् यो १,  
 ७६.  
 अग्नि-रूप, पा- -पम् नृउ ३, ९; वि  
 १४; -पा सौ १५; -पाः व  
 ४६०: १४९<sup>१</sup>; -पेण शि ५, २.  
 अग्नि-लोक- -कः ते ६, १९;  
 -कम् कौ १, ३.  
 अग्नि-लोक-ज्ञान- -नम् शां १,  
 ७, ५२.

अग्नि-वन्दन- -नम् ते ६, २३.  
 अग्नि-व(र्ण>)र्णा- -र्णाम् मना २,  
 १; दे ४; व ४६१: ८९<sup>१</sup>; ४६५:  
 २०.  
 अग्नि-वायु-सूर्य-रूप(प>)पा- -पा  
 गार ४०७: १.  
 अग्नि-वृताले<sup>१</sup>- -लम् व ४३०: १६.  
 अग्नि-वेश<sup>१</sup>-  
 अग्निवेश्य<sup>१</sup>- -इयः, -इयात् वृ  
 २, ६, २; ४, ६, २.  
 अग्नि-व्रत-धातक- -काः सार  
 २३१: २०.  
 अग्नि-(स्तो>)ष्टोम<sup>१</sup>- -मः कृ १;  
 कशु २, ३; -मेन मैत्रि ६, ३६;  
 वृप् ५, १७.  
 अग्निष्टोम-सहस्र- -स्त्राणि  
 गोत्र ६८: १७.  
 अग्निष्टोमा(म-आ)दि-यज्ञ-  
 -ज्ञानाम् श्या २१.  
 अग्नि-संज्ञ- -ज्ञः मैत्रि ६, १०.  
 अग्नि-संस्थित- -तानि कशु २, ३.  
 अग्नि-संकाश- -शः ब्रवि ८; १प्र  
 ३१: १३.  
 अग्नि-सूर्य- -य्योः मैत्रि ६, २७.  
 अग्नि-सेवा- -वाम् नाप ७.  
 अग्नि-स्तम्भन- -नम् व ४५७:  
 १६.  
 अग्नि-स्थान- -नम् त्रिवा २, १३८;  
 -ने गर्भ २.  
 अग्नि-होत्र<sup>१</sup>- -त्रम् सुं १, २, ३; तै  
 १, ८, १; ९, १; छां ५, २४, १-२;  
 ५<sup>१</sup>; कौ २, ५<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ३६; ३८;  
 मना २, ७८९<sup>१</sup>; ७९<sup>१</sup>९<sup>१</sup>; ८०९<sup>१</sup>;  
 कृ १; प्रा २, १; इ १२: १५;  
 कशु २, ३; -त्रे वृ ४, ३, १;  
 मना २, ७८९<sup>१</sup>; -त्रेण प्रा १, १.

a) मुपा. 'ते अग्निकुमारा ऊचुः । नम आनन्दरसदायिने । प्रमानन्दाय रतिदायकसुरतानन्दाय नमः ।'  
 इत्येवं सु-श्लोकः ३. । b) ऋ १०, १४, १३ । c) 'कुण्डके' इति अश्व्या. पा.मे. । d) ऋ १०, ८५, १ ।  
 e) शि १०, १२७, १२ । f) निता. नास्त्ययं पाठः । g) तैआ १०, ६२, १ । h) तैआ १०, ६३, १ ।  
 i) तैआ १०, ६४, १ ।

अग्निहोत्र-ज- -जम् वृजा ६, १.  
 अग्निहोत्र-भस्मित- -तात् ६, ६.  
 अग्निहोत्र-समुद्भव- -वम्  
 वृजा ५, ३.  
 अग्निहोत्र-समुद्भूत- -तम्  
 वृजा ३, ३४, १.  
 अग्निहोत्र-हव(न>ण>)  
 णी<sup>१</sup>- -णी मना २, २६.  
 अग्निहोत्रा(त्र-आ)दि- -दि  
 वसू ४, १, १६; -दिभिः सी  
 ३६.  
 अग्निहोत्रिन्- -त्री १ संन्या २,  
 १००; इ १५: १२.  
 अग्नी(मि-इ)धू- -ग्नीव मना २,  
 ८०<sup>१</sup>.  
 आग्नीध्र-  
 आग्नीध्रीय<sup>१</sup>- -यस्य वां  
 २, २४, ७; -या: २ प्र ३३: २३.  
 अग्नी(मि-इ)ध्वना(न-आ)द्य(दि-  
 अ)नपेक्षा- -क्षा वसू ३, ४,  
 २५.  
 अग्नी(मि-ई)ज्ञा(श-अ)सुर-वायव्य-  
 पुर:(<स्)-वृष्ट- -वृष्ट राव  
 ३, १<sup>१</sup>.  
 अग्नी-षो(<सो)म- -माम्याम् हं  
 १२; -मौ हं १४; महा १, १.  
 अग्नीषोम-पुट- -टम् वृजा २,  
 १५.  
 अग्नीषोम(म-आ)त्मक- -कम्  
 वृजा २, १<sup>१</sup>; ४; सार ५, ९; राप्  
 ४, ६; रुह ९.  
 अग्न्यं(मि-अं)क्ष- -क्ष: जाद ८, ४;  
 -क्षा: पै २, ६; -क्षे जाद ८, ६.  
 अग्न्य(मि-अ)यस्कारा(र-आ)दि-  
 -दय: मैत्रि ६, २७.  
 अग्न्य(मि-अ)र्विस्- -र्वि: वृ २,  
 ३, ६.

अग्न्या(मि-आ)त्मक- -कम् वृजा  
 २, ६.  
 अग्न्या(मि-आ)दि-गति-श्रुति-  
 -ते: वसू ३, १, ४.  
 अग्न्या(मि-आ)वन- -ने त्रिता २,  
 ३१.  
 अग्न्यु(मि-उ)पर्वीत- -तम् आह १.  
 अग्न्यु(मि-उ)पासक- -का: सार  
 २७३: ६.  
 अग्र- -ग्रम् वृ ४, ४, २; मैत्रि ६,  
 २१; २३; ध्या १८; ३७; रुह  
 १४; वरा ५, ७०; व ४६०:  
 १२९<sup>१</sup>; व १; -मे तै २,  
 ७, १; ऐ १, १; ४, ३<sup>१</sup>; वां  
 १, ८, २; १०, ५; ३, १९, १;  
 ६, २, १<sup>१</sup>; २; ११, ७१; वृ १,  
 २, १; ४, १<sup>१</sup>; १०; ११; १७;  
 ५, २<sup>१</sup>; ५, ५, १; ध्वे ५, २; कौ  
 १, ५; मै २, ६; मैत्रि २, ६;  
 ५, २; ६, १७; मना २, ७९<sup>१</sup>;  
 ना ३; वृजा १, १; सुवा १: ३९<sup>१</sup>;  
 ६; वसू १५; ते ४, ३२; पै १, २;  
 ए २; त्रि ४; त्रिता ३, ९; भ  
 १, ६<sup>१</sup>; २, ४; व १; इ १७: ३;  
 पा १, ९; २, ६; राधा १, २१;  
 २ प्र ३३: ९; स्व १, ५; शि ६,  
 १; गोच ६७: ११; ६९: १०;  
 सार २५७: १६; व १; पित्र  
 १, १०; गी १८, ३७-३९;  
 -मे-मे सार २६४: १०.  
 अग्र-गण्य- -ण्य: हे ११.  
 अग्र-तस्(>) राप् ४, ३२; अक्ष १,  
 ९; त्रिता २, ३८; जाद ६, ४०;  
 सार २६८: १८; व ४६५: १६.  
 अग्र-सुब्- -भुक् मना २, १३, २.  
 अग्र-याण-  
 अग्रयाण-तस्(>) गौ ४, ९०.

अंघ्रा(प्र-अ)र्ध- -अंघ्राप- टि. द.  
 अंघ्र्य, इया- -अंघ्र्यम् वृ ४, ४, १८;  
 ध्वे ३, १९; व २; नाप ४,  
 ३८९<sup>१</sup>; ९, १६; श २; भव २,  
 ४६; सांका ७०; -अंघ्र्या क १,  
 ३, १२; -अंघ्या: मै ४, ५; मैत्रि  
 ४, ६<sup>१</sup>; -अंघ्याम् गु ५१.  
 अ-ग्रस्त- -स्त: १ आ १५; -स्ता:  
 वां २, २२, ५.  
 अ-ग्रह- -हम् गौ ३, ३२.  
 अ-ग्रहण- -णम् गौ १, १३; -णाव  
 वसू ३, २, १९.  
 अंघ्राप- -शि ४, १८.  
 अ-ग्राह्य, ह्य- -ह्य: मै २, ५; मैत्रि  
 २, ५; व्रवि ८४; -ह्यम् सुं १,  
 १, ६; सां ७; वृप् ४, ७; वृज  
 १, १२; नि ११; ५०<sup>१</sup>; ५१; शां  
 २, १; महा ५, ४६; पाशु २,  
 २८; रुह ३१; नाप ८, २०; ९,  
 २०; राउ ३, १; -ह्या अन्न ५,  
 ८९; -ह्याम् विद्या ४; -ह्येण  
 अशि ३, ६; वट ३१५: ६.  
 अग्राह्य-त्व- -त्वात् मै २, १०;  
 मैत्रि २, ७.  
 अग्राह्य-भाव- -वेन गौ ३, २६.  
 अघ-  
 अघ- -घम् कौ २, ८; १०; राउ  
 ५, १८; २०; २३; गी ३, १३;  
 -अस्य व ४६४: १५९<sup>१</sup>; -वै:  
 वरा ४, ४५.  
 अघ-मर्षण- -ण: मना १, १३;  
 १४<sup>१</sup>; १५.  
 अघ-हरण-सुदक्ष- -क्षौ सावि  
 १०.  
 अघा(घ-आ)युस्<sup>१</sup>- -यु: गी ३,  
 १६.  
 अघा(घ-अ)सुर- -र: कृ १५.

- a) तैआ १०, ६४, १। b) ऋ १०, ८३, ७। c) तैआ १०, ६३, १। d) तैआ ८, ७, १।  
 e) पाठ २, २, १०। f) सुप. विहृत इव सन् \*अघ्रा(प्र-अ)र्ध->-र्धम् इत्येवं सु-शोच: द.। g) तैआ  
 ४, ३८, १। h) √अघ्राव->-यु- (तु. PW; वैप१) इत्येतेन न संभेदव्यम् [तु. सं., वाच., Sch(PW.)]।



अ-घोर, रा-रा: पाशु १, १०; पं  
१; नापू १, १०; व ४६३: १३;  
-रम् पं ३; सिशि ३८२: १३;  
-रा श्वे ३, ५; शां ३, १; नी  
१, ८९<sup>१</sup>; लि ३०९: ७९<sup>१</sup>; -रात्  
वृजा १, १; सिशि ३८१: ८;  
-राय शु २, ५; -रेण वृजा ३,  
३१; ४, १; ३; रुजा १, २१; वपं  
३१२: ६; ७; -रेभ्यः मना २,  
१९; व ४६२: २२९<sup>१</sup>.  
अघोर-तत्पुरुषे(प-ई)ज्ञान-परमे-  
श्वर-रा: नापू ६, १०.  
अघोर-बीज-मन्त्र- -त्रेण रुजा  
१, २२.  
अघोर-रूप- -पाय व ४३४: १४.  
अ-घोष- -वम् अना २५.  
अ-घ्रात- -ता मैत्रि ६, ११.  
✓अङ्ग>अङ्गि, अङ्गवेत् सु २९४: १०.  
अङ्ग- -के वृ ६, ४, २४; म २, २८.  
अङ्ग-स्थित(त>)ता- -ताम् रापू  
४, २९.  
अङ्गित-  
अङ्गिता(त-अ)ङ्ग-भृत्- -भृत्  
रापू ४, ८.  
अङ्कुर-रा: गौ ४, ५९; योशि  
३, ३; -रा: मैत्रि ६, ३१; ३५;  
-रे सांस् ६, ६१; -रेषु वृ ९,  
६.  
अङ्कुर-ता- -ताम् महा ५,  
१८०.  
अङ्कुरा(र-आ)दि-वत् सांस्  
५, ४८.  
अङ्कुरी/भू  
अङ्कुरी-भूय यो ३, १८.  
अङ्कुश- -शा: निर्वा २९७: १३;  
भा २३; सांश ५१; -शम्  
सूता ६, ४; -शेन सु २, २, ४४.  
अङ्कुश-धारिन्- -रिणम् ग ११.

अङ्कुश-रूप-  
अङ्कुश-रूपि(न् >)णी-  
-णी आथ ३९८: २३.  
अङ्कुशा(श-आ)कृति- -ति:  
त्रिता ३, ६; ९.  
अङ्कुशा(श-आव्य>)व्या-  
-०व्य त्रिता ३, ११.

✓अङ्ग

१अङ्ग- -ङ्गम् ऐ ४, २; कौ ३, ५१०;  
वृपू १, ६<sup>१</sup>; ते ६, ७; रार २,  
५७९<sup>१</sup>; ६१; त्रिता ३, २९; पा  
७, १; पी ४२२: ६; -ङ्गात्  
-ङ्गात् वृ १, ३, १९; ६, ४, ९९<sup>१</sup>;  
कौ २, ११९<sup>१</sup>; पा ३, ३; -ङ्गान्  
कश्रु १, १; -ङ्गानाम् छां १,  
२, १०; वृ १, ३, ८; १९<sup>१</sup>; ते १,  
२८; ध्या ७१; योचू ४१; रार  
१, ८; -ङ्गानि के शां<sup>१</sup>; ते १,  
५, १; छां शां<sup>१</sup>; वृ १, १, १; ३,  
७, २; कौ २, ३; ४; मना २, ७२;  
मै मैत्रि शां<sup>१</sup>; अशि ४, १२; ५, २२;  
वृजा ४, १; वृपू १, ५; २, ४<sup>१</sup>;  
४, २; ते १, १६; त्रिता १, ८<sup>१</sup>;  
त्रिवि ७, ४८; रार १, ७<sup>१</sup>; २,  
२; ३२; ५३; शां १, १; योचू  
वा शां<sup>१</sup>; महा शां<sup>१</sup>; ५, ७५;  
अव्य शां<sup>१</sup>; २; पाशु १, १७;  
नाप ३, ७४; कुं सावि रुजा  
जाद जाबा शां<sup>१</sup>; छु ३; गह ११;  
सु २, २, ४२; नापू ५, ३६;  
वटु ३१६: ३; ३१७: १३; शि  
७, ६७; योचू २, २९; गौ २,  
५८; -ङ्गे १योत ६२; त्रिता २,  
११३; महा १, १; ऊ ६४: १;  
गोव ६६: १; पा १, ९; श्या ९;  
व्रस् ४, १, ६; -ङ्गे -ङ्गे मै २,  
७; मैत्रि २, ६; -ङ्गेन छां २,  
१९, २; म २, २८; -ङ्गेभ्यः ऐ

४, १; वृ ४, ३, ३६; -ङ्गेषु  
छां २, १९, १; २; अना ३६;  
वृप ८५: ७; ८; ११; व्रस् ३,  
३, ६१; -ङ्गे: प्र सुं मां अशि  
अवृजा शां<sup>१</sup>; वृपू शां<sup>१</sup>; २, १५९<sup>१</sup>;  
नाप सी श त्रिवि रार रापू शां  
पप अल सू १अथा पाशु पत्र  
त्रिता दे भा भ ग मवा गोपू कृ  
ह दत्ता गरु अवि पहं सि पित्र  
शां<sup>१</sup>; रार ३, १<sup>१</sup>; महा ५, ७५;  
रुजा १, २३; सौ १, २; ३; सु २,  
२, ४२; भव ३, २९.  
अङ्ग-कलर(न>)ना- -ना रार  
२, ३६, ५५.  
अङ्ग-कषाय- -य: वृ ६, ४, ९.  
अङ्ग-क्रिया- -या रार २, ४२.  
अङ्ग-चप(ल>)ला<sup>१</sup>- -ला सार  
२३८: १०.  
अङ्ग-चेष्टा(ष्टा-अ)र्पण- -णम् द  
१५.  
अङ्ग-ज- -ज: श १.  
अङ्ग-ज्ञान- -नम् त्रिता १, ८.  
अङ्ग-द- -दम् रार १, ७; रापू  
४, ३६.  
अङ्ग-न्यास- -स: द १; ह ६;  
सौ १, १<sup>१</sup>; सर १, ४; -सम्  
रार २, ८९; -सा: नापू ४, २०.  
अङ्ग-पञ्जर- -ने महा ३, ३९;  
या २, ५.  
अङ्ग-प्रत्यङ्ग- -ङ्गम् सार २५९:  
२३; -ङ्गेषु सार २३४: १२.  
अङ्ग-बन्धन-वागुरा- -रा: या  
२, ११; महा ३, ४५.  
अङ्ग-भूषण- -णै: सार २६३:  
१४.  
अङ्ग-मन्त्र- -न्त्रान् वृपू ४, १.  
अङ्ग-योग्य-भेदा(द-अ)भि-  
(त्र>)जा<sup>१</sup>- -जा सार २६३: ८.

a) तैसं ४, ५, १, ११ b) मा १६, २१ c) मैसं २, ९, १०१ d) 'अङ्गन्यासम्' इति  
अव्या. पाभे. e) सामग्रा १, ५, १६१ f) ऋ १, ८९, ८१



अङ्ग-रस-भेद-गुण—(त्र>)

ज्ञा'—ज्ञा सार २६३: ९.

अङ्ग-राग'—-गा: सार २६४:

१९; -गेण सार २४०: १५.

अङ्गराग-सम्पूर्ण—-णम् सार २६४: १२.

अङ्गराग-स्थान—-नम् सार २६४: १३.

अङ्ग-वासुदेवा(व-आ)दि-स्वम-पया(णी-आ)दि-स्वशक्ती(क्ति-इ)

मन्त्रा(न्द्र-आ)दि-वसुदेवा(व-आ)

दि-पार्था(र्थ-आ)दि-निध्या(धि-आ)

वीत'—-तम् गोपू १८.

अङ्ग-विकल—-ल: नाप ३, १; १ संन्या २, ३.

अङ्ग-व्यूहा(ह-अ)निलजा(ज-आ)द्य'—-द्य: रापू ५, ६.

अङ्ग-शूल-

अङ्गशूल-अक्षिशूल-क्षिरदशूल-

गुल्मशूल-उदरशूल-कर्णशूल-

नेत्रशूल-गुदशूल-कटिशूल-जा-

नुशूल-जङ्घाशूल-हस्तशूल-पा-

दशूल-गुल्फशूल-वातशूल-पि-

त्तशूल-पायुशूल-स्वनशूल-परि-

णामशूल-परिधामशूल-परिवा-

णशूल-दन्तशूल-कुक्षिशूल-सुम-

नदशूल-सर्वशूल—-लानि लां

२१५: ५-८.

अङ्ग-शोभा-

अङ्गशोभा-सौरभ्य-कमनीया-

(य-आ)दि—-द्य: नाप ४, २७.

अङ्ग-पटक—-कम् हंषो ४.

अङ्ग-धो(ठ>)डा-डाम् पो २२.

अङ्ग-संबलि(त>)ता'—-ता सार

२३४: ८.

अङ्ग-संविद्—-विदम् अन्न ३, १५.

अङ्ग-संस्पर्श—-र्श: अन्न ५, २८.

अङ्ग-सङ्ग—-ङ्गम् कृ २.

अङ्ग-सुख-दायिन्—-यि सार २६४: १३.

अङ्ग-स्पर्श—-र्शात् सुह २.

अङ्ग-स्पर्शन—-नात् कृ १.

अङ्ग-हीन—-नानि शु १, १४.

अङ्गा(ङ्ग-आ)दि—-दि सी १, ३.

अङ्गा(ङ्ग-अ)भिर्बर्धन—-नम् शि ७, ८४.

अङ्गा(ङ्ग-अ)वबद्ध—-द्धा: व्रम् ३, ३, ५५.

अङ्गिन्—-ङ्गी छां २, १९, २; ते ६, १३.

अङ्गि-त्व-

अङ्गि:वा(त्व-अ)नुपपत्ति—

-त्त: व्रम् २, २, ८.

अङ्गी/कृ

अङ्गी-कृत-

अङ्गीकृता(त-आ)का-

(र>)रा—-रा महा ४, ११२.

अङ्गी-कृष्य नाप ४, ३८; ५, १; महा ५, ९५.

अङ्गण—-णम् शि २, १३; -णे महा २, २३.

अङ्गार—-र: छां ६, ७, ३; -रम् छां ६, ७, ५; -रा: छां २, १२, १;

५, ४-८, १; वृ ६, २, ९-१३; १४<sup>३</sup>; -रान् छां ५, २४, १.

अङ्गार-क'—-काय व ४३७: १०.

अङ्गारा(र-अ)वक्षयण—-णम् वृ ३, ९, १८.

अङ्गारा(र-आ)वर्तन—-नम् महा ४, २६.

अङ्गिर'—-ङ्गिरे मुं १, १, २.

अङ्गिरस्'—-रस: मैत्रि ७, ५; २ प्र ३७: ३; -रसम् मुं १, १, ३;

व्र १; वृपू ५, १८; वृजा ८, ५;

-रसाम् २ प्र ३३: ३; व ४६४:

१४९<sup>३</sup>; -रसे मुं १, १, २; -रा:

मुं ३, २, ११; छां १, २, १०;

अ १; १ आ १; २ आ १.

आङ्गिरस्'—-रस: छां ३, १७, ६;

वृ १, ३, ८; १९; २४; २, ६;

३; ३, ३, १; ४, ६, ३; -रसम्

छां १, २, १०; गार ४०७:

१४; १५; -रसात् वृ २, ६, ३;

४, ६, ३.

अङ्गु-

अङ्गु(स्थ>)ष्ठ—-ष्ठम् मना २,

७१९<sup>१</sup>; त्रिवा २, ५०; -ष्ठयो:

वृजा ७, ८; म २, २; -ष्ठाम्

शु १, १८; २, ५<sup>३</sup>; जाद ६, ३४;

गरु ३; लां २१३: ५; व ४२६:

५; -ष्ठेन लु ६; १ योत ३६; शां

१, ३, ३; प्रा १, ६; -ष्ठौ त्रिता

३, ७; १०; १३; १४.

अङ्गुष्ठ-तर्जनी—-नीभ्याम्

यो १, १२; -न्यो: आच ४.

अङ्गुष्ठ-तल-मूल—-ले

शि ५, ४५.

अङ्गुष्ठ-प्रादेश-शरीर-

मात्र—-त्रम् मैत्रि ६, ३८.

अङ्गुष्ठ-मात्र—-त्र: क २,

१, १२; १३; ३, १७; धे

३, १३; ५, ८; मना २, ७१९<sup>३</sup>; मं

१, ४, १; -त्रम् ध्या १९; पै

३, १; यो ३, २६; सौ ३, १;

स ३७८: ७.

अङ्गुष्ठ-मूल—-ले आच ४.

अङ्गुष्ठा(ष्ठ-अ)ग्र—-ग्रे प्रा

२, १.

अङ्गुष्ठा(ष्ठ-आ)दि—-स्वावय-

वा(व-अ)स्फुरणा(ण-अ)वर्ध-

न—-नै: त्रिवा २, १२१.

अङ्गुष्ठा(ष्ठ-अ)वधि—-धि

जाद ३, ४.

अ) "स्वशक्तिम् नन्दादि... निध्यादिवीतम्" इति निषा. पामे. । b) 'अङ्गव्यूहानि जलौघैश्च' इति आन. पामे. । c) तैआ ४, ३८, १ । d) तैआ १०, ३८, १ ।

अङ्गुल- लात् का ९.  
 अङ्गुल-राशि- -शिना शि २,  
 १२.  
 अङ्गुला(ल-अ)न्त- -न्ते अता  
 ६.  
 अङ्गुलि- -ह्या अशि ६, १४;  
 अना २०; वृ ३१७: २०.  
 अङ्गुली-  
 अङ्गुली-मध्यमान- -नात्  
 गार ४०५: ५.  
 अङ्गुलि-स्फोटन- -नम् योत्  
 ४०.  
 अङ्गुल्य(लि-अ)प्र- -प्रे आच  
 ३; -प्रेण यो २, ४१.  
 अङ्गुलीय-  
 अङ्गुलीया(य-अ)क्षस्त्र-  
 -त्रम् शि ७, ४४.  
 २अङ्गु छां ४, १, ५; ६, १२, १;  
 १३, १; मै ५, ७.  
 अङ्गुण-, अङ्गार-, अङ्गिर-, अङ्गिर-,  
 अङ्गिरस्-, अङ्गु-, अङ्गुल-,  
 अङ्गुलि-, अङ्गुह- ✓ अङ्गु द.  
 ✓ अङ्गु  
 अङ्गु- -हिप्रपु राप् ५, ३.  
 अङ्गु-युगल- -लम् योच्  
 ११४.  
 अ-चक्षुस्- -क्षु: स्वे ३, १९; कै २,  
 २; नाप ९, १४; अ २, १३;  
 गु ५१; भव २, ४६.  
 अ-चक्षु(स्)> -क्ष- -क्ष: ब्रवि ८४;  
 -क्षम् वृ ३, ८, ८; सुवा ३.  
 अ-चक्षु(स्)> -क्षोत्र- -त्रम् सुं १,  
 १, ६; शां २, १; पाशु २, २९;  
 सह ३१.  
 अचक्षु:प्रोत्र-नामक- -कम् योशि  
 ३, १९.  
 अ-चक्षु(ल)> -ला- -ला वा ४०.  
 अ-चर- -रम् पा १, ६; ४, २; ६,  
 २; गी १३, १५.

अ-चल, ला- -ल: गौ ३, ३७;  
 मै २, ११; मैत्रि २, ७; ते ५,  
 ६८; आबो १; अन्न ३, १७;  
 भव २, ४०; गी २, २१; -लम्  
 मैत्रि ६, २३; ३८; ७, ३; पदं  
 २; शु १, १८; ध्या १९; मं ३,  
 १, ३; त्रिवि ७, १७; महा २,  
 २६; ३५; ५, ९८; योशि ३,  
 २१; जाद ९, ३०; गी ६, १३;  
 १२, ३; -लम् -लम् व ४३८;  
 १३; ४३९: १; ११; २१;  
 ४४०: ८; १८; ४४१: ६; १६;  
 ४४२: ४; १५; ४४३: २; १२;  
 ४४४: ६; १६; ४४५: ३; १४;  
 ४४६: १; १३; २३; ४४७:  
 ११; २२; ४४८: १०; २१;  
 -ला ऊ ६४: ९; पी ४२२: ८;  
 गी २, ५३; -लम् गी ७, २१;  
 -लेन गी ८, १०.  
 अचल-त्व- -त्वम् वसू ४, १, ९.  
 अचल-प्रतिष्ठ- -ष्ठम् १अव ७; गी  
 २, ७०.  
 अचल-संपूर्ण-भावा(व-अ)भाव-वि-  
 हीन- -कैवल्य-ज्योतिस्- -ति:  
 मं २, ३, १.  
 अ-चलाचल- -ल: महा ६, ३६.  
 अ-चालुष- -षम् अन्न ५, ७३; जाद  
 ९, ४; -षाणाम् सांस् १,  
 ६०.  
 अ-चाण्डाल- -ल: वृ ४, ३, २२.  
 अ-चातुर्मास्य- -स्यम् सुं १, २, ३.  
 अ-चापल- -लम् गी १६, २.  
 अ-चित्त- -त्त: छां ७, ५, २१; महा  
 ६, ३५; -त्तम् मैत्रि ६, १९;  
 -त्ता: अन्न ४, ५३.  
 अचित्त-तस्(>) -तस् बरा ३, ३१०.  
 अचित्त-ता- -ताम् महा ४, ९३;  
 अन्न ४, ८६; ५, ४३; सु २,  
 २, २८.

अचित्त-त्व- -त्वम् महा ४, ६; ५,  
 ६०; अन्न ४, ५०.  
 अ-चित्तक- -क: अन्न ४, ८.  
 अ-चिन्त्य, न्त्या- -न्त्य ह ५; -न्त्य:  
 मैत्रि ६, १७; ७, १; ब्रवि ८१;  
 ८३; १आ १; २आ ३; गी ३;  
 २५; -न्त्यम् मां ७; मैत्रि ६,  
 १९; ब्रवि ६३; कै १, ६; वृप्  
 ४, ७; वृत् १, १२; ६, ३; सुवा  
 ८; ते १, ९; ११; ६, ४१; नाप  
 ८, २०; स्क १३; राउ ३, १;  
 योशि ३, १७; त्रिता ५, ६;  
 २शिसं १२; भव ३, ३; अवि ६;  
 गी १२, ३; -न्त्या: गौ ४,  
 ५२; -न्त्यान् गौ ४, ४१;  
 -न्त्याम् विद्या ४; -न्त्याय मै  
 ४, ४, १५; मैत्रि ५, १.  
 अचिन्त्य-रूप- -रूपम् सुं ३, १, ७;  
 सुवा ८; त्रिवि ४, ६; अन्न १,  
 ५४; गु ३६; गी ८, ९.  
 अचिन्त्य-शक्ति- -क्ति: कै २, २; रा  
 २०; -क्तिम् नाप ९, १६.  
 अचिन्त्यशक्ति-मत्- -मान् यो-  
 शि १, ४४.  
 अ-चिर- -रात् त्रिधा २, १४५; त्रिवि  
 ५, ७; ८, ११; योशि २, ७;  
 २०; १संन्या २, ३१; सु १, १,  
 २७; स ३७९: ४; -रेण मैत्रि  
 ६, २७३; गी ४, ३९.  
 ?अचीर्- -रम् तै १, ४, १.  
 अ-चीर्ण-व्रत- -त: सुं ३, २, ११.  
 अ-चेतन- -न: १संन्या २, १४-१७;  
 १९; शि ७, १०६; -नम् मै २,  
 ३; मैत्रि २, ३; महा ५, ५०;  
 १संन्या २, १८; जाद ८, ९; शि  
 ६, १९६; पित्र ४, ५३; ६३;  
 सांका ११; २०.  
 अचेतन-त्व- -त्वे सांस् ३, ५९.  
 अ-चेतस्- -तस: पि २; गी ३, ३२;

१५, ११; १७, ६; -तसाम्  
योशि ३, २०.  
अ-चैत्य-चिह्न- -हम् महा ४, ९.  
अ-चोदना- -ना वस् ३, ४, १८.  
✓<sup>१</sup>अच्छ  
१अच्छ, च्छा- -च्छम् अन्न ५, ६३;  
-च्छा महा ५, ११९; -च्छाम्  
महा ५, १४७; -च्छैः महा ५,  
११७.  
अच्छो(च्छ-उ)द्- -दम् सार  
२८६; १; -दे सार २८६;  
२; ५.  
२अच्छा नाप ४, ३८९.  
अच्छा/वद्, अच्छावदामसि  
नील १, ६९<sup>७</sup>.  
अच्छावद्- -दः छाग २३;  
९; २४; १२; -दम् छाग २३; ७.  
अ-व्-छन्न- -न्नः वरा ४, २४<sup>८</sup>.  
अ-व्-छाय- -यम् प्र ४, १०; वृ ३,  
८, ८.  
अ-व्-छिद्रित-  
अच्छिद्रित-सप्त-शृङ्ग- -ज्ञाणि सार  
२५५: १६.  
अ-व्-छिन्न- -न्नम् वरा ५, ६९;  
योच् ८०; ध्या १८; ३७<sup>९</sup>.  
अ-व्-छेद्य- -द्यः जाद १, ८; गोउ  
१५; भव २, ४०; गी २, २४;  
-द्यम् योशि ३, १७.  
अ-च्युत- -त्त नाउ ३, २०; वा  
११; गोच ६६: ९; गी १, २१;  
११, ४२; १८, ७३; -तः मै ४,  
४, १३; मैत्रि ५, १; ६, ३८;  
७, ७; ना ४; वृजा ६, ८; ध्या  
९४; व्रवि ६०; ८१; आबो १;  
स्क १; ४; महा ५, ८९; योशि ५,  
२९; ५६; -तम् छां ३, १७, ६;  
मैत्रि ६, २३; ३८; ७, ३; मना

२, १३, १; ते १, ८; व्रवि ४२;  
१योत ९०; अन्न ५, ६४; यो २,  
१२; ग १३; -ताय त्रिवि ७,  
४१; -ते आबो १.  
अच्युत-क्षिति- -तये मना २,  
६७<sup>९</sup>.  
अच्युता(त-आ)त्मक- -के योशि  
५, ४३.  
✓अज्, ज<sup>०</sup> अर ८.  
अज, जा- -जः क १, २, १८; मुं  
२, १, २; वृ ४, ४, २०; २२;  
२४; २५; शे ४, ५<sup>१०</sup>; मना २,  
१२, १<sup>११</sup>; ३; गौ ४, ७४<sup>१</sup>;  
मै २, ४; मैत्रि २, ४; ६, १७;  
२८; ७, १; अशि ४, १५; सुबा  
७; ते २, ४; ३, ४८; व्रवि ८१;  
आबो ६; स्क ३; त्रिवि ८, ५;  
महा ३, ५१; ४, ५६; अथ्या १;  
गोउ ३५; सर ३, १४; मु २,  
२, ७५; नापू ५, २१<sup>१२</sup>; वृ  
३१६: ८; रशिसं २२; स ३७९;  
७; भव २, ३७; सांस् ५, ९८;  
गी २, २०; ४, ६; -जम् शे २,  
१५; गौ १, १६; ३, १; १९;  
२६; ३३<sup>१</sup>; ३६; ४३; ४७; ४,  
११; १२; ३८; ४८<sup>१</sup>; ५७; ८०;  
८१; ९३; ९६; १००; सुबा ३;  
सं ३, १, ३; महा ४, ९; ५,  
५३; योशि ३, १९; अन्न ३,  
२४; ५, ६४; ६७; अशि २; मु  
२, २, ७३; भव ३, ३; गौ २,  
२१; ७, २५; १०, ३; १२;  
-जया गोउ ५८; वृउ २, ४;  
-जस्य क २, २, १; -जा वृ १,  
४, ४; शे १, ९; दे १; १७<sup>१</sup>;  
नाप २, ८; भव २, ३; -जा:  
छां २, ६, १; १८, १; गौ ४,

४६; -जात् गौ ४, १३; -जाम्  
शे ४, ५९<sup>१</sup>; मना २, १२, १९<sup>१</sup>;  
मन्त्रि ३; नापू ५, २०९<sup>१</sup>; वृ ३,  
शि ६, २००; -जे गौ ४,  
९५; ते ५, २९; -जेन गौ ३,  
३३; ४७; -जेषु गौ ४, ६०;  
९६; -जौ शे १, ९; नाप २,  
८; भव २, ३.  
आज<sup>१</sup>- -जम् त्रि १२.  
अज-कुक्षि- -क्षौ ते ६, ९९.  
अज-गर-  
अजगर-वृत्ति- -सिः नाप  
५, १; ७; -त्या नाप ५, १;  
१संन्या २, १३.  
अज-स्व- -स्वात् वृउ ७, २.  
अज-मोर्द- -दम् शि ६,  
७५.  
अज-रूप- -पः ते ३, ४२.  
अज-वत् सांस् ४, २९.  
अजा(ज-अ)चल- -लम् गौ  
४, ४५.  
अजा(ज-आ)त्मन्- -त्मा ते ४,  
३५.  
अजा(जा-अ)वि- -वयः वृ १,  
४, ४,  
अजिन- -तम् नाप ७.  
अजिर- -रम् १शिसं ६९<sup>१</sup>; २शिसं  
५९<sup>१</sup>.  
आजि- -जेः छां १, ३, ५.  
अ-जड, डा- -डः योशि १, २६;  
अन्न ४, ५७; ५८; ६३; -डम्  
महा ५, ५०<sup>१</sup>; -डामहा २, ४८;  
५, ७; अन्न ४, ५९; -डा:  
ससा ३.  
अजड-स्व- -स्वम् ते ३, ७०.  
अजडा(ड-आ)त्मक- -कम् अन्न ४,  
२४.

a) तैत्रा २, ५, ८, ८। b) मा १६, ४। c) 'अत्यच्छः' इति अज्या. पामे.। d) नापू. रु.  
विरुद्धः निरा. मुपा. उपेक्ष्यः। e) लोटि क्रिप.। पूर्वावयवस्य छान्दसो लोपः द्र.। f) तैत्रा १०, १०, १।  
g) तस्वेदमित्यर्थे अण् प्र. तद्धितः। h) मा ३४, ६। i) 'डत्वम्' इति अज्या. पामे.।



अ-जन्मन्-

अजन्मन्-ता-ता अज ५, ४.

अ-जपा-यया मवा ६; -पा निर्व

२९८: १; त्रिता ४, ३२; ३५;

त्रवि ७८; ध्या ६३; योचू ३३.

अजपा-सो(सः-अ)हं-महा-मन्त्र-

-न्त्रः म ४९: १५.

अजपो(पा-उ)पसंहार-रम् हं  
१४<sup>a</sup>.अ-जर, रा-रः वृ ४, ४, २५; ५, १४,  
८; कौ ३, ९; मना २, १३, २;

ते ३, २१; ६, ६९; त्रवि ८३;

आबो ३; यो २, १<sup>b</sup>; अज ५,

९२; ९३; अध्या ५५; म २,

१३; गोउ ४०; सु २, २, ७५;

आर्षे ९: १२; बा २४; पा ८,

२; गा २८; -रम् प्र ५, ७;

नृउ १, ३; २, ३; सुबा ५१;

नाप ८, ४; महा २, ६८; अज

५, ६४; कुं १४; त्रि ४; पा १,

८; ८, ६; भव ३, ३; -रा त्रि

१; -०३ तुल ७०: १८.

अजर-त्व-त्वात् नृउ ७, २.

अजरा(र-अ)मर-रः योशि १,  
४३.अजरा(मर-पिण्ड)-ण्डः योशि  
१, १६१.

अ-जर्य-र्यम् गौ ५२: ९; १०.

अ-जस्व-स्वम् मै ५, ४; मैत्रि ४,

४; ६, ४; ३५; ७, ११; वृपू २,

८; ते १, २५; ५, ६४; आबो

१; नाप ४, ३८; ६, १; अज

५, १०३; इ १८: ११; १२<sup>c</sup>;

पा ८, ९; शि ६, १६४; व ४३४:

३; गौ १६, १९.

अ-जाप्रत्-स्वप्न-निद्र-द्रस्य महा  
५, ५०.

अ-जाद्वय-संविन्म(इ-म)नन-नम्

महा ५, ४९.

अ-जात-तः श्वे ४, २१; गौ ३, २०;

४, ६; त्रवि ८६; -तम् गौ ४,

२९; सुबा ३; ए २; -तस्य

गौ ३, २०; ४, ६; ७७; अध्या

५८.

अजात-पुत्र-त्रस्य कौ २, ८.

अजात-शत्रु-त्रुः वृ २, १, १-

१७; कौ ४, १-१७; १८<sup>d</sup>; १९;

-त्रुम् वृ २, १, १; कौ ४, १.

१अ-जाति-तिः गौ ४, १९; २९;

-तिम् गौ ४, ४; ५; -तेः गौ ४,

२१; ४२; ४३.

२अ-जाति-ति गौ ३, २; ३८.

अ-जानत्-नतः गौ १, १५; -नता

गी ११, ४१; -नन्तः गौ ७,

२४; ९, ११; १३, २५.

अ-जायमान-नः गौ ३, २४; मुद्र ३.

अ-जित-तः पा १, १.

अ-जित्वा योशि १, ६३.

अजिन-, अजिर-अज् द.

अ-जिह्वा-हम् नाप ३, ७४.

अ-जिह्व-हः नाप ३, ६२; -हम्

नाप ३, ६३<sup>e</sup>; शां २, १.

अ-जीर्यत्-र्यताम् क १, १, २८.

अ-जीवत्-वतः महा ४, ४०.

अ-जुर्य-र्यम् ह १८<sup>f</sup>.

अ-जुपत्-पन्तः पा ९, ५.

अ-जे(य)या-या कृ ५.

अ-ज्ञा, ज्ञा-ज्ञः मं ५, ९; त्रिवि ५, ४;

महा ४, १३०<sup>g</sup>; शि १, १४;४, ४५<sup>h</sup>; गौ ४, ४०; -ज्ञस्य

महा ५, ९७; १०५; अज १,

२६; वरा २, २२; सु २, १,

३९; सांका ५७; -ज्ञाः १अव

११; शि १, ३२; -ज्ञानाम्

१४, ८.

ते १, ३३; जाद ४, ५६<sup>i</sup>;

५९; गौ ३, २६; -ज्ञाम्

मन्त्रि ३; -ज्ञैः नाप ५, २८.

अज्ञ-त्व-

अज्ञत्व-सम्भव-वाः महा

५, ३.

अ-ज्ञात, ता-तः नृउ ९, १९; -तम्

कृ ४०; योशि ५, ६०; -ताः

पै ३, १; अध्या ३६.

अज्ञात-काल-विषय-यः सार

२२७: १८.

अज्ञात-चरित-तम् नाप ४, ३५.

अज्ञात-चर्या-र्याम् नाप ५, १९.

अज्ञात-तत्त्व-त्वाः १अव १६.

अज्ञात-तत्त्व-पद-दः सु २, २, ३०.

अ-ज्ञात्वा १आ १६; सार २५५: ७.

१अ-ज्ञान-नम् मै ३, ५; मैत्रि ३, ५;

ससा १, ४१; नि ८; २९; ३१;

नाद २६; ते ५, ३४; १०४; आबो

२१; नाप ९, २०; पै २, ४४;

योशि १, १५; २४; १अव २८;

वरा २, ७३; शि १, १२; ७,

६१; कौल ११; भव २, ५६; गौ

५, १६; १३, ११; १४, १६;

१७; १६, ४; -नस्य महा ५,

२०; जाद ६, ५०; -नात् १योत

१६; आबो ३१; योशि ४, ९;

यो ३, ३०; जाद ५, १४; ६,

४९; लिं ३०९: ३; सिसि ३८१:

५; ३८३: ४; -ने योचू ७८<sup>i</sup>;

अज्ञि ३०; जाद ४, ६३; ६, ५०;

वरा २, ५९; शि १, १३; -नेन

नाप ५, १; स्व ६१: ३; ५;

सार २८९: २३; गौ ५, १५.

अज्ञान-कार्य-र्यस्य अध्या ५९.

अज्ञान-ज-जम् गौ १०, ११;

१४, ८.

अ) 'रः' इति अज्या. पामे. । ब) 'अजरा(मरः)' इति अज्या. पामे. । c) वस. इति कृत्वा नापू. पृथक् निर्देशः द. । d) नृ ३, ५३, १५ (वैतु 'र्याम्' इति अज्या. पामे.) । e) 'यावत्-सुरौ(र-ओ)षधी-यज्ञं तिलतुल्यं फलं स्पृष्टम्' इति पा. शोधः द. । f) 'अज्ञानी(नि)नाम्' इति अज्या. पामे. ।

अज्ञान-जन्य-कर्त्रा(तृ-आदि-का-  
रक-उत्पन्न-कर्मन्- -मंगा  
वरा २, ४८.  
अज्ञान-तमस्- -मसि निरु २, ५.  
अज्ञान-तस्(>) सु १, १, ४६;  
इ १६: ३.  
अज्ञान-ता- -तया ते १, ४६.  
अज्ञान-निर्मल्य- -स्यम् मैत्रे २,  
१; स्क १०.  
अज्ञान-पङ्क-निमग्न- -प्रप् शि ७,  
४१.  
अज्ञान-प्राबल्य- -स्यम्, -स्यात्  
त्रिवि ५, ४.  
अज्ञान-भू- -भू: महा ५, १.  
अज्ञान-भेदन- -नम् वसू १.  
अज्ञान-मल-पङ्क- -ङ्कम् जाद  
५, १४.  
अज्ञान-माया-शक्ति- -कै: कर्  
१२.  
अज्ञान-योग-  
अज्ञानयोग-तस् (>) योशि  
४, २४.  
अज्ञान-विमोहित- -ता: गी १६,  
१५.  
अज्ञान-वृत्ति- -स्या मं २, ४, ४.  
अज्ञान-सङ्ग- -ङ्गात् सिशि ३८०:  
१०.  
अज्ञान-संभूत- -तम् गी ४, १२.  
अज्ञान-संसोह- -ह: गी १८, ७२.  
अज्ञान-सु-घना(न-आ/का(र>))  
रा- -रा सु २, २, ६२.  
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि- -न्ये: अघ्या  
१७.  
अज्ञाना(न-अ)न्धत(मस्>)मो-  
रूप- -पम् वरा २, १२.  
अज्ञाना(न-अ)पह- -हम् द १४.  
अज्ञाना(न-अ)वृत्त- -त: आबो २७.  
अज्ञानो(न-उ)पहत- -त: महा ६,  
२३.

२अज्ञान-  
अज्ञान-जन-बोधा(ध-अ)र्थ- -र्थम्  
नाद २९.  
अज्ञान-जन्तु- -न्तूनाम् नि ३.  
अज्ञान-चक्षुस्- -क्षु: महा ४, ८०;  
वरा २, १९.  
अज्ञानिन्- -निल: योशि ४, २१;  
स्व ६१: २०.  
अज्ञानि-कृत-  
अज्ञानिकृत-मार्ग- -गाम् स्व  
६१: १२.  
अज्ञे(य>)या- -या दे १७<sup>१</sup>; ५<sup>१</sup>.  
अ-ज्या-  
अज्या-म(य>)यी- -यी अरु  
२६.  
अ-ज्वलत्- -लन्तम् वृउ ६, १.  
✓अज्ज-  
अ(क्त>)का- -क्ता: वृ ६, ४,  
१२.  
अज्जन<sup>१</sup>- -नै: सु २, २, ४६.  
अज्जन-शलाका- -काम् शि ६,  
२३४.  
अज्जना<sup>१</sup>-  
आज्जनेय<sup>१</sup>- -०य रार १, ७;  
२, १; ३, १.  
अज्जना-गर्भ-संभूत- -०त लां  
२१४: ८.  
अज्जना-सुत- -०त सु १, १,  
२८; लां २१६: १५.  
अज्जना-सूनु- -नु: लां २१३:  
३.  
अज्ज(न्>)न्ती- -न्त्य: सार २२८:  
२१.  
अज्जलि- -लिम् त्रिता ३, १२;  
व्वाग २५: १६; -लौ छां ५, २,  
६; सि ७, २०.  
अजस्- -जसा वृ ३, ९, २८; ४,  
४, १५; आबो २१; त्रिता २,  
२८; १संन्या २, ५८;

१अव २७; सु १, १, ८;  
सौ २, १२; शौ ५२: ३; ७;  
पित्र १, १.  
आज्जस्य- -स्यात् साम् १,  
१२५; ३, ७२; -स्वेन साम्  
२, ८.  
✓अट्, अटसि सार २३०: १४.  
अटत्- -टन्त: सार २४६: १५.  
अटन- -नम् नाप ३, ६५.  
आट-  
आटि(क>)की- -क्या छां १,  
१०, १.  
✓अट्ट-  
अट्ट-  
अट्ट-हास-  
अट्टहासि(न्>)नी- -०नि व  
४३७: २.  
✓अण-  
१अणु- -णव: त्रसू २, ४, ७; -णुसुं  
२, २, २; ते ३, ७४; ४, १०;  
२०<sup>१</sup>; २४; २९; ५, १३; ६,  
२३; -णु: क १, १, २१; सुं ३,  
१, ९; वृ ४, ४, ८; मैत्रि ७,  
११<sup>१</sup>; रापु ४, ११; महा २,  
३; योशि ४, ९; अज २, २०;  
त्रसू २, ३, २१; ४, १३;  
-णुम्य: सुं २, २, २; -णुम्  
क १, २, १३; मैत्रि ६, ३५;  
मन्त्रि १; -णो: क १, २, २०;  
श्वे ३, २०५<sup>b</sup>; मैत्रि ६, २०; ३८;  
७, ११; मना २, १२, १; कै  
२, १; वृउ १, १; वृजा  
३, २९; नाप ९, १३५<sup>b</sup>;  
श १८; नाउ १, ७५<sup>b</sup>; पा  
९, ३५<sup>b</sup>; भव २, ४३; गी  
८, ९.  
अण्वी- -ण्व्य: छां ६, १२,  
१; कौ ४, १९.  
आणव- -वम् ते १, १.

a) वस. इति कृत्वा पृथक् निर्देशः । b) तैआ १०, १०, ११ ।

अणिमन्त्र- मा छां ६, ६, १-  
४; ८, ७; ९, ४; १०-१५, २;  
-मानम् छां ६, १२, २; वृ  
४, ३, ३६; -मन्त्रः छां ६, १२,  
२; ८, ६, १; -म्ना वृ ४, ३,  
२०; कौ ४, १९.

अणिमा(म-आ)दि- -दयः  
भा ९; सार २२३: २१; -दि:  
रार ४, १०.

अणिमादि-गुण-प्रद-  
-दम् १योत १०५.

अणिमादि-गुणा(ण-अ)  
न्वित- -तः १योत १०९;  
-तम् १योत २२.

अणिमादि-पद- -दम्  
योशि १, १३८.

अणिमादि-प्रादुर्भाव-  
-वः योस् ३, ४६.

अणिमादि-फल- -लम्  
त्रिवा २, १६०.

अणिमादि-योग- -गः  
सांस् ५, ८२.

अणिमादि-वक्ष- -शात्  
वरा ४, ३९.

अणिमादि-विभूति-  
-तयः ते ६, २९; -तये त्रिवि  
२४; -तीनाम् कालि ४०२:  
६.

अणिमादि-सिद्धि- -द्धि:  
मं १, ३, ४; अता ११; आथ  
३९४: २१.

अणिमादिसिद्धि-प्रद-  
-०द अच ५.

अणिमादि(दि-अ)ष्टै-  
(इ-रे)द्वय-यु(त>)ता- -ता  
सी ३७.

अणिमादिष्टैद्वयार्थ(य-आ)-

शा-सिद्ध-संकल्प- -ल्पः नि  
३६.

अणिमा(म-आ)दिक- -कम्  
योशि २, ७; २०; ५, ५१.

अणिमा-सिद्धि- -द्धिः आथ  
३९३: २.

अणिमासिद्धया(दि-आ)  
दि-दशक- -कम् आथ ३९३:  
१.

अणिष्ट- -ष्टः छां ६, ५, १-३;  
मैत्रि २, ६; -ष्टम् मै २, ७.

अणीयस्- -यः श्वे ३, ९; मना  
२, १२, ३; गु ४६; -यसम्  
मना १, १; -यांसम् मैत्रि ६,  
२०; वृट् १, १; भव २, ४३;  
गौ ८, ९; -यान् क १, २,  
८; २०; छां ३, १४, ३; श्वे ३,  
२०९; कै २, १; मैत्रि ७,  
७; मना २, १२, १; नाप ९,  
१३९; श १८; नाउ १, ७९;  
पा ९, ३९.

अणीयो(यस्-ऊ)र्ध्व- -ध्वः  
मना २, १३, २; महा १, १;  
वा २१; च २१: ४; गोच ६६:  
२३.

अणु-कोटर- -रे महा ४, ६४.  
अणुकोटर-विस्तीर्ण- -र्णः  
ते ६, ८७.

अणु-त्व- -त्वे भव २, ३१.  
अणु-नित्यता- -ता सांस् ५,  
८७.

अणु-परिमाण- -णम् सांस् ३,  
१४.

अणु-प्रमाण- -णात् क १, २, ८.  
अणु-मात्र- -त्रम् ते ६, ४०;  
४१; प्या २३, १; त्रिवि ८, २;  
१५; -त्रे गौ ४, १७.

अणुमात्रक- -कम् ते ६,  
४१; शि ७, १३२.

अणुमात्र-लसद्रू(त-रु)प-  
-पम् ते ६, ४०.

अणुमात्र-विवर्जित- -तः  
ते ५, ७०.

अणु-रूप- -पाय सार २४७:  
१०.

अणु-वत् सांस् १, ७४; ६, ३५;  
३७.

अणु-वाते(त-ई)रित- -तः मैत्रि  
६, ३५.

अणु-स्थूला(ल-आ)दि-  
वर्जित- -तः ते ४, ४८.

अणु(णु-उ)प(म>)मा- -मा  
मना २, १३, २; नाउ १, १९;  
कालि ४०३: ५.

अण्व(णु-अ)न्त- -न्तान् वृ ४,  
१, १<sup>d</sup>.

अण्व्य- -ण्व्यम् मैत्रि ६, ३८.  
२अणु-

अणु-प्रियङ्गु- -ङ्गवः वृ ६, ३, १३.  
अणि- -णी ऐ कौ नाद आबो निर्वा  
मुद्र अच सौ सर व शा<sup>१</sup>.

अण्ड<sup>१</sup>- -ण्डम् ऐ १, १४; अशि ६,  
१५; सुबा १; त्रिवि ६, ३; पै  
३, १; महा १, १; अव्य १;  
यो ३, २३; ता १, २<sup>६</sup>; वृट्  
३१७: २१; गार ४०५: ६;  
-ण्डात् अशि ६: १५; वृट् ३१७:  
२१; गार ४०५: ६; -ण्डे त्रिवि  
८, ४; पै १, २५; -ण्डेन मैत्रि  
६, ८; -ण्डेषु त्रिवि २, १६.

आण्ड- -ण्डम् छां ३, १९, १.  
आण्ड-कपाल- -ले छां ३,  
१९, १.

आण्ड-कोश- -शाः बा ९.

a) तैआ १०, १०, ११ b) संधिरार्थः द. । c) 'रेणु-कोटरे' इति निसा. पामे. ।  
d) 'अण्वन्तादि' इति निसा. पामे. । e) प्रकरणेऽणोरपि छिद्रान्वेषकम् इति कृत्वा ततोऽपि सूक्ष्मतर-  
मित्यर्थः । f) आण्ड- (तु. वैप१) दि. द. । g) 'अण्डविराट्' इति अज्वा. पामे. ।



आण्डी/भू, आण्डीभव  
अरु ८.  
अण्ड-कटाह- -हा: सार २२१: ३.  
अण्ड-कोश- -शा: आर्षे ७: १७;  
-शेन नि १२.  
अण्ड-ज- -ज: सार २७२: १८;  
-जम् छां ६, १<sup>a</sup>; व ५; -जा:  
नापू ५, २२; -जान् गौ ४, ६३;  
६५; -जानि ऐ ५, ३; -जाय  
त्रिवि ७, ३८.  
अण्डज-स्वेदजो(ज-उ)द्विज-  
जरायुज-मनसिजा(ज-आ)दि-  
-वृष: नापू ५, १८.  
अण्ड-परिपालक- -कस्व त्रिवि ३, ५.  
अण्डपरिपालक-नारायण- -णम्  
त्रिवि ३, ४.  
अण्डपरिपालक-महा-विष्णु-  
-ष्णो: त्रिवि ३, ६.  
अण्ड-प्रमाण- -णम् त्रिवि ६, ५.  
अण्ड-भित्ति-विशाल- -लम् त्रिवि  
६, ४.  
अण्ड-विराट्-  
अण्डविराट्-कैवल्य- -स्वम्  
त्रिवि ५, १४.  
अण्ड-विराट्-पुरुष- -ष: त्रिवि  
३, ४.  
अण्ड-विराट्-स्वरूप- -प:  
त्रिवि २, १६.  
अण्ड-स्थ- -स्थानि पै १, २७.  
अण्ड-स्वरूप- -पम् त्रिवि ६, १.  
अण्डा(ण्ड-आ)कार- -रम् वरा ५,  
२१.  
अण्डा(ण्ड-आ)कृति- -ति त्रिवा २,  
५९; शां १, ४.  
अण्डा(ण्ड-अ)न्तरा(र-अ)न्तर-व-  
हि(स्<)-प्रपञ्च-ज्ञान-  
-नम् त्रिवि ६, १.

अण्डा(ण्ड-अ)भ्य(भि-अ)न्तर-  
प्रपञ्च(घ-ए)क-देश- -राम्  
त्रिवि ६, १.  
अण्य- ✓अण् द.  
✓अत्  
अतस- -सा मना १, ९ §<sup>b</sup>.  
अतसी-  
अतसी-तैल- -लम् शि ४,  
५८.  
अतसी-पुण्य-  
अतसीपुण्य-संकाश-  
-शम् ध्या ३०.  
अतिथि- -थय: तै १, ९, १; -थि:  
क १, १, ७; ९; २, २, २; वृष  
३, ६९<sup>c</sup>; त्रिवा ४, २७९<sup>c</sup>; मना  
२, १२, २९<sup>c</sup>; ४०९<sup>c</sup>; नापू ५,  
१९<sup>c</sup>; इ १२: १५.  
आतिथ्य-  
आतिथ्य-भ्रातृ-यज्ञ-  
-ज्ञेषु नापू ६, ३.  
अतिथि-देव- -व: तै १, ११, २.  
अतिथि-वर्जित- -तम् सुं १, २, ३.  
अ-तच्छ(द-रा)ब्द- -ब्दात् ब्रम्  
१, ३, ३.  
अ-तच्छु(द-धु)ति- -ते: ब्रम् २, ३, २१  
अ-तत्त्वार्थवत्- -वत् गौ १८, २२.  
अ-तद्ध(द-ध)र्मे-  
अतद्धर्मे-स्व- -स्वम् सांस् ६, ३९.  
अ-तद्ध(द-ध)र्मा(र्मे-अ)भिलाप-  
-पात् ब्रम् १, २, १९.  
अ-तद्भा(द-भा)व- -व: ब्रम् ३, ४, ४०.  
अ-तद्द्रू(द-रू)प-  
अतद्द्रूप-प्रतिष्ठ- -ष्ठम् योस् १, ८.  
अ-तद्ध(द-व)चन- -नात् ब्रम् ३, २,  
१२.  
अ-तद्-व्यावृत्ति-रूप- -प: सु  
२, २, ५५; -पेय वरा ४, ३७.

अ-तनु- -नव: अज ४, २४.  
अ-तन्द्र- -न्द्र: योशि १, १०८.  
अ-तन्द्रित- -त: १योत ७२; २संन्या  
१७: ७; यो २, १५; भव १,  
३७; गौ ३, २३.  
अ-तपस्- -पसे अव्य ७.  
अ-तपस्क- -स्कस्य मै ४, ३; मैत्रि  
४, ३; -स्काय गौ १८, ६७.  
अ-तप्त-  
अतप्त-तनू- -नू: सु २९३: १८९<sup>d</sup>.  
अ-तमस्- -म: वृ ३, ८, ८; शं ४,  
१८; मैत्रि ६, २४<sup>e</sup>; -मा: वृ  
७, ३; ८; १४<sup>f</sup>.  
अ-तमस्क- -स्क: ब्रवि ८७; -स्कम्  
वृ २, १८.  
अ-तमा(मस्-आ)विष्ट- -ष्टम् मैत्रि  
६, २४.  
अ-तर्क्य- -र्क्य: मैत्रि ६, १७; ब्रवि  
८१; -र्क्यम् क १, २, ८.  
अ-तल-  
अतल-तलातल-वितल-सुतल-  
रसातल-महातल-पाताल-  
-लम् आर १.  
अतल-लोक-ज्ञान- -नम् शां १,  
७, ५२.  
अ-तस्(>) ३अ- <एतद्- द.  
अतस-, अतसी- ✓अत् द.  
अ-तापस- -स: वृ ४, ३, २२.  
अति वृ ३, १, ८; वृजा ६, ८; श  
१०; यो १, ७६; गौ १२, २०.  
अति-काम-म(नस्)>नो-रथ-  
-थम् सार २५२: ८.  
अति-कृच्छ-  
अतिकृच्छ-मात्र- -त्रम् मैत्रे १, ४,  
१४.  
अति-कृपा-शालिन्- -ली सार  
२४३: २०.

a) 'आण्डजम्' इति आन. पाभे. (तु. शं. रामा. च तादितो व्यु. भुवाणौ)। b) ऋ १०, ८९, ५।  
c) ऋ ४, ४०, ५। d) ऋ ९, ८३, १। e) वैतु. माध्यकर्तुः पदविभागः। f) 'अमनाः' इति निरा. पाभे।  
g) संधिरार्थः द.। h) 'अतल-पाताल-वितल-सुतल-रसातल-तलातल-महातलम्' इति अन्वा. पाभे।

अति-कौतुक- -कम् त्रिवि ६, १६.  
 अति/कम्, अतिक्रामति वृ ४,  
 ३, ७; पित्र ६, ३; अतिक्राम-  
 न्ति सार २६८: ६; अत्यक्रामत्  
 वृ ३, ९, २६; अतिक्रामेत् वृ  
 ६, ४, ७; १संन्या २, ६३.  
 अति-कर्म्य कौ ३, १; मैत्रि ६, २८;  
 ३०; हं ६; त्रिवा २, १०४; मं  
 १, २, ३; त्रिवि ५, १२<sup>१</sup>; ६,  
 २१<sup>१</sup>; ७, १<sup>१</sup>; १६.  
 अति-कान्त, न्ता- -न्तः वृ १, ३,  
 १२-१४; १६<sup>१</sup>; -न्ताः वृ १,  
 ३, १५.  
 अति-कामत् -मन् भव १, १५.  
 अतिक्रामन्ती- -न्त्यः सार  
 २६८: ९.  
 अति-क्रीडा-पर- -राणि सार २८३:  
 १९.  
 अति/क्षम् > क्षामि, अति...क्षामत्  
 वृ ४६१, १५<sup>१</sup>; मना २, १<sup>१</sup>.  
 अति-गम्भीर- -रम् गौ ४, १००.  
 अति/गा, अत्यगात् छाग २३: ८;  
 भव १, ३९.  
 अति-गुण-गणना- -नया सार  
 २२९: २.  
 अतिगुणगणना-र(त>)ता- -ताः  
 सार २३०: ७.  
 अति-गुण-मग्न- -न्याः सार २७३:  
 २०.  
 अति-गुण-संवलित- -तम् सार  
 २७७: १.  
 अति-गूढ- -वः मं २, १, २.  
 अति-ग्रह- -हाः वृ ३, २, १<sup>१</sup>; ९.  
 अति-ग्राह- -हेण वृ ३, २, २-९.  
 अति-ग्री- अति/हन् द.  
 अति-चञ्चल- -लम् अना ५; सु २,  
 २, २५.  
 अति-चिर- -रेण वृ ३, १, २३.  
 अति-चञ्चल- -न्हाः वृ ४, ३,

२१.  
 अति-जन- -ने छां ६, १४, १.  
 अति/ज्वल  
 अति-ज्वलत् -लत् वृ ७, १३.  
 अति-तर-  
 अतितर-स्नेह-सम्पन्न- -जौ सार  
 २८९: ४.  
 अतितराम् के ४, २; ३; शां ३,  
 १; अन्न ५, ६५; सार २२६:  
 ११; २२८: ३; ५; २२९: १७;  
 २३४: १५; २३८: २३; २३९:  
 ३; २४४: १६; १९; २१;  
 २४५: १३; २३; २४६: १६;  
 १८; २५०: १८; २५१: ३; ७;  
 २५२: १९; २५३: ५; ११;  
 २०; २५४: ३; १७; २१; २५५:  
 १; १२; १९; २५६: ८; ११; १३;  
 १५; १७; २५८: १५; २१;  
 २५९: २; १०; १५; १८; २२;  
 २६२: २; १४; २०<sup>१</sup>; २६३:  
 १३; २१; २२; २६४, ८-१०;  
 १२; १५; २६५: ३; २६६: १;  
 १<sup>१</sup>; १२; १५; २०; २३; २६८:  
 ४; २७०: २३; २७१: ५; ६;  
 १०; १४; १७; २७२: २२;  
 २७४: ७-९; २७६: २२;  
 २७८: १८; २७९: ४; २८०:  
 ११; २८१: ७; २८३: ९;  
 २८५: ६; २१; २२; २८७:  
 १७; २८८: १२; २९०: २०.  
 अति-तिरस्कृत- -ताः सार २६५:  
 १३.  
 अति/तृ > तर, अतितरन्ति गौ १३,  
 २५; अति...तरामि मना २,  
 ५०९<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup> अति...तरेम मना १,  
 ११; त्रिवि ७, ४; सु २९३: १५.  
 अति-तेजस्-  
 अतिते(जस् >)जो-मय- -यम् सार  
 २६६: २३.

अति-दिव्य-मङ्गला(त-आ)कार-  
 -रम् त्रिवि ४, १.  
 अति/दिश  
 अति-देश- -शात् वृ ३, ३, ४६.  
 अति-दीर्घ- -वै क १, १, २८.  
 अति-दुःख- -खाय महा ५, ८६.  
 अति-दुर्ज्ञेय- -यम् सु २.  
 अति-दुर्लभ- -भान् त्रिवि ५, ४.  
 अतिदुर्लभ-तर- -रम् सार २८८:  
 २३.  
 अति-दुश्चर- -रम् मना २,  
 ७८९<sup>१</sup>.  
 अति-दुष्कर- -रम् मना २,  
 ७८९<sup>१</sup>.  
 अति-दूर- -रम् मैत्रि ६, १४; -रात्  
 सांका ७; -रे महा ३, ४४; या  
 २, १०; वरा २, ७३.  
 अतिदूर-तस्(>) ते ५, ५.  
 अतिदूरा(र-आ)दि- -देः सांस् १,  
 १०८.  
 अति-देव- -वम् पित्र ६, १५.  
 अति-धन्वर्न- -न्वा छां १, ९, ३.  
 अति-जमामि- -मि वृ ७,  
 १३.  
 अति/निद्, अतिनेदन्ते वृ ३, १,  
 ८<sup>१</sup>.  
 अति-निर्-भय- -यः अन्ति ३९;  
 जाद १०, १३; वरा ४, १७.  
 अति-निर्-मल- -लम् त्रिवि ४, १;  
 योशि ३, १७; -लेन सार २३३:  
 २२.  
 अतिनिर्मला(त-अ)नन्तकोटि-  
 रवि-प्रकाशै(श-ए)क-स्फु-  
 लिङ्ग- -ङ्गम् त्रिवि ७, १७.  
 अतिनिर्मलानन्तकोटिरवि-प्रकाशै-  
 (श-ए)को(क-उ)ज्ज्वल- -लम्  
 सि ६, १.  
 अति/नी, अतिनयेत् छां १, ८,  
 ५; ७.

a) शौ ७, ६५, ११ b) तैब्रा १, २, १, १५। c) तैब्रा ३, १२, ३, ४। d) तैब्रा १०, ६२, ११।

अति-नीच- -चम् १योत् ३५; गी ६, ११.

अति-नृ-सिंह- -हः वृत् ७, १३.

अति-पङ्क- -ङ्कम् नाप ६, १०.

अति/पत्, अतिपेतुः छां ४, १, २.

अति/पद्

अति-पद्यमान- -नानि सार २८७: ३.

अति-पवि(त्र>)त्रा- -त्रा सार २४३: ३.

अति-पितृ- -ता वृ ६, ४, २८.

अति-पितामह- -हः वृ ६, ४, २८.

अति-पु(ष्ट>)ष्टा- -ष्टा: सार २७६: २.

अतिपुष्ट-पुष्कर-

अतिपुष्ट-पुष्करिन्- -रिणि सार २४६: ७.

अति-पूर्व-

अतिपूर्व-शक्त- -क्ताय लां २१६: ६.

अति/पृ>पारि, अति...पर्वत् मना

२, १९<sup>b</sup>; व ४६१: १५९<sup>b</sup>;

अति...पर्वत् व ४३०: ७९<sup>c</sup>;

४६१: ७९<sup>c</sup>; त्रिता १, ७९<sup>c</sup>;

अति...पर्वत् त्रिता २, ३२९<sup>c</sup>;

अतिपर्वि मना २, १९<sup>d</sup>; व

४६१: १२९<sup>d</sup>.

अति...पारय मना २, १९<sup>e</sup>;

व ४६१: १०९<sup>e</sup>.

अति/प्रच्छ>पृच्छ, अतिपृच्छसि वृ ३, ६, १.

अतिप्राक्षी: वृ ३, ६, १<sup>f</sup>.

अति-प्रश्न- -भान् प्र ३, २.

अति-प्रयत्न-

अतिप्रयत्न-तस्(>) अक्षि ४५.

अति-प्रवर्जित- -ता: सार २६२: १९.

अति-प्र/सज्>ञ्ज

अतिप्र-सक्ति- -क्ति: सांस् १, ५४;

-क्ते: सांस् १, १६.

अतिप्र-सङ्ग- -ङ्ग: योम् ४, २०.

अति-प्रसन्न- -न्न: त्रिवि १, २.

अति-प्रीत- -त: सार २५२: ९.

अति-प्रीति- -त्या सार २७४: ४.

अति-प्रेमन्- -म्या सार २६६: २.

अति-प्रेमा(म-आ)नन्द-प्राप्ति- -सिम् सार २५६: २.

अति-वद्ध-

अतिवद्ध-वत् अन्न १, ५६.

अति-व(ल>)ला- -ले सावि १०.

अति-बहु-ङ्ग- -ङ्ग: महा ५, ८७.

अति-बाह्य- -ह्यम् महा २, ७३.

अति-भद्र- -द्र: वृत् ७, १३.

अति-भयङ्क(यं-क)र-ज्वर-

अतिभयङ्करज्वर-महेश्वरज्वर-वि-

ष्णुज्वर-ब्रह्मज्वर-वेतालब्रह्मरा-

क्षसज्वर-पित्तज्वर-श्लेष्मसाङ्गि-

पातिकज्वर-विषमज्वर-शीत-

ज्वर-एकाङ्गिकज्वर-द्वयाङ्गिकज्वर-

र-त्र्यङ्गिकज्वर-चतुर्थाङ्गिकज्वर-

(र-अ)र्धमासिकज्वर-मासिक-

ज्वर-षाण्मासिकज्वर-सांवत्स-

रिकज्वर(र-अ)स्थान्तर्गतज्वर-

महापरुमार-अमिकापरुमार-

-रान् लां २१४: २३.

अति-भव- -वे मना २, १७.

अति-भाव-स्व-रूप- -प:ते ३, ३४.

अति-भावा(व-आ)प(ल>)त्रा- -त्रा:

सार २२९: १३.

अति-भीषण- -ण: वृत् ७, १३.

अति/भुज्

अति-भुक्त- -क्तम् योचू ६८.

अति-भुञ्जान- -ना: सार २८८:

१४.

अति-भोग-प्रिय- -याय सार

२६१: ४.

अति-भ्रमण-शील- -ल: शि ७,

६१.

अति-मङ्गल- -लम् त्रिवि ६, १८;

२२; ७, २१; ४९; सि २, ९;

४, ५; ५, १७; ६, १०; १२.

अति-मान- -न: गी १६, ४.

अतिमाना(न-आ)नुरता- -तया सार २२५: १५.

अति-मनो(नस्-उ)त्साह'- -हम् सार २८५: ५.

अति-म(नस्>)नो-हर-रूप-

-पेण सार २४१: २१.

अति-महत्- -हत: त्रिवि १, १;

-हान् वृत् ७, १३.

अति-महा-मोहन-रूप- -पम् सार २८६: १०.

अति-मानुष-वेष्टा(ष्टा-आ)दि-

-दि १योत् ५५.

अति/मुच्, अतिमुच्यते वृ ३, १, ३-५; अत्यमुच्यते वृ १, ३, १२-१६.

अति-मुक्ति- -क्ति: वृ ३, १, ३-६.

अति-मुच्य के १, २.

अति-मोक्ष- -क्षा: वृ ३, १, ६.

अति-मूढ- -ढ: शा २७.

अति-मृग-मदा(द-अ)गुह-र-चित- -तौ सार २४४: २३.

अति-मृत्यु- -त्यु छां २, १०, १; ६.

अतिमृत्यु-मृत्यु- -त्यु: वृत् ७,

१३.

अति-मैथुन- -नात् यो १, ५६.

अति-मोह-कर(>)री- -री श २१.

अति-मोहन- -नस्य सार २४९: १९; -नेन सार २६०: १७.

अति-मोहन-रूप- -पे सार २५३: १७.

अति-रञ्जित- -तानि सार २२८: १७.

अति-रति- -तिम् २७३: १५; २८७: ८; -ते: सार २५०: १४.

a) 'अपि पङ्के' इति अन्वा. पाये. । b) शौ ७, ६५, १। c) श्र १, ९९, १। d) श्र ५, ४, ९। e) श्र १, १८९, २। f) संधिरार्षः ।



|   |   |   |
|---|---|---|
| अतिरति-विम्बा(म्ब-अ)धरो(र-<br>त्रो)ह-हो सार २६५: ६.   | अति-रसा(स-आ)ह्य- -ह्या: सार<br>२८४: १०.   | अतिवर्णाश्रमिन्-मी नाप ६,<br>१०; ११; १२; १अव २.   |
| अति-रति-कौतुक-काय सार<br>२६१: १५.   | अति-रहस्य-स्यम् नाप २; मं ३,<br>१, २: सुद्र ४.  | अति-वृह(म>)भा-भा सार २८५:<br>९.   |
| अति-रति(त>)ज्ञा-ज्ञा सार २६८:<br>१०.  | अति-रात्रि-त्रेण मैत्रि ६, ३६; वृष<br>५, १७.  | अति/वह्, अतिवहति वृ १, ३, १६;<br>अत्यवहत् वृ १, ३, ११-१६.                                       |
| अति-रति-प्रीति'- -ति: सार<br>२७५: ३.  | अतिरात्रा(त्र-अ)ग्नि-होत्र-<br>भस्मन्-स्मना वा ३३ <sup>a</sup> .                                | अति-वाह <sup>b</sup> -<br>आतिवाहिक'-कम् यो १,<br>७८; -कस्य सांसू ५, १०३;<br>-का: ब्रसू ४, ३, ४. |
| अति-रति-भक्ति-क्ति: २७६: १०.  | अति/रिच्>रेचि, अतिरिच्यते धे<br>२, ६; सार ५, १५; सार २८७:<br>१९; गी २, ३४.                      | आतिवाहिक-ता-ताम् यो<br>१, ७७.   |
| अति-रति-भोक्त्री'- -त्री सार<br>२६३: ३.   | अत्यरेचयत् मना २, ७८९ <sup>b</sup> ;<br>अति...रेचयिष्यथ ह्यग २४:<br>९; अत्यरीरिचम् वृ ६, ४, २४. | अति-वाच्-वाचम् इ ११: १४ <sup>c</sup> .  |
| अति-रति-म(म>)शा- -ना: सार<br>२७४: २२.   | अति-रिक्त- -क्त: सार २२०: १७:<br>२८२: १९; -क्तम् कुं १०:<br>ते ३, २०; मना २, ७९९ <sup>d</sup> . | अति-वाद-, अतिवादिन्-अति/वदद्.<br>अति-विदूर-<br>अतिविदूर-कर्मन्-मां नाप ५, १.                    |
| अति-रति-रमण-कोटि-काम-<br>पूर्ण-र्णम् सार २६२: ११.   | अति-रेक-कात् ब्रसू १, ४, ११.  | अति-वि-मल-लम् त्रिवि ५, ६; यो<br>१, ७७.   |
| अति-रति-विहारिन्- -रिणे सार<br>२६१: ५.  | अति/रुच्, अतिरोचते वृ २, १, ९.  | अति-वि-रक्त- -क्त: त्रिवि १, ४.   |
| अति-रति-संचरि(त>)ता- -ता:<br>सार २६४: १८.   | अति/रुह्, अतिरोहति धे ३, १५९ <sup>d</sup> ;<br>मुवा ६९ <sup>d</sup> .                           | अति-विलास-व(त>)ती- -ती<br>सार २६५: १६.  |
| अति-रम्य- -म्याणि शि ७, १२९.  | अति-रूप-लावण्य-लवक-<br>सूक्ष्म-स्वरूप- -पेण सार<br>२५२: १५.                                     | अति-वि-विक- -क्ते सार २६८: ४.   |
| अति-रस-सात् वपं ३१२: १८.  | अति-रेक-अति/रिच् द्र.   | अति-विष्णु- -ष्णु: वृउ ७, १३.   |
| अतिरस-क्रीडा- -डा सार २७४:<br>१३.   | अति-लोल- -लम् सार २५६: १०.  | अति-वि-स्मित- -ता: मैत्रि ४, १.   |
| अति-रस-गुणा(ण-आद्य>)ह्या-<br>-ह्या सार २८४: १०.   | अति-लोलुप- -पे सार २५१: ७.  | अति-वीर- -र: वृउ ७, १३.   |
| अति-रस-दाना(न-अ)मि(त>)<br>ज्ञा-ज्ञा सार २८४: १६.  | अति/वद्, अतिवदति ह्यं ७, १६,<br>१ <sup>e</sup> ; अतिवदानि ह्यं ७, १६, १.                        | अति/वृत्, अतिवर्तते गी ६, ४४;<br>१४, २१; अतिवर्तन्ति मुं ३,<br>२, १.                            |
| अति-रस-पूर्ण- -र्णा: सार २७५:<br>२३.  | अत्यवादी: वृ ३, ९, १९.  | अति/शिप्, अतिशिष्यते ह्यं २, १०,<br>३; ८, १, ४.   |
| अति-रस-मग्न, ग्ना- -ग्न: सार<br>२८८: २; -ग्ना: सार २३६:<br>२२; २६८: २३; २७३: ३ <sup>f</sup> ;<br>२७४: १३; २७८: १२; २८७:<br>२१; २८८: १३. | अति-वाद- -दान् नाप ३, ४२; ५,<br>२१.   | अति-शि(ष्ट>)/ष्टा- -ष्टा ह्यं ६, ७,<br>३; ६.  |
| अति-रस-रमणा(ण-आ)नन्द-<br>योग्य- -ग्यानि सार २६२: १६.  | अति-वादिन्- -दी मुं ३, १, ४; ह्यं<br>७, १५, ४ <sup>f</sup> .                                    | अति-शेष- -षान् ह्यं १, १०, ५.   |
| अति-रस-लम्पट- -ट: सार २२५:<br>१५.   | अति-वन-लीला- -लायाम् सार<br>२८९: ७.   | अति/शी, अतिशीयते ह्यं ३, १२, २;<br>अतिशीयन्ते ह्यं ३, १२, ३, ४.                                 |
|   | अति-वर्णा(र्य-अ)श्रम- -मम् वरा<br>२, ६; -माणाम् वृजा ५, ७.                                      | अति-शय-<br>अतिशय-भक्ति-मार्ग-र(त>)<br>ता-ता सार २८९: ४.   |

a) 'स्मान्ने:' इति अज्या. पाप्मे.। b) तैज्या १०, ६३, ११। c) तैज्या १०, ६३, ११।  
d) ऋ १०, ९०, २। e) नाव. व्यु. औपविकं प्राति. द्र.। f) नापू. तद्धित-वृत्तं द्र.।

अतिशया(य-आ)विर्भाव-वम्  
सार २८० : २३.  
अति-शीत-  
अतिशीत-जला(ल-आ)कीर्ण-  
-ने शि ७, ८६.  
अति-शुद्ध, जा- -द्धम् त्रिवि ४, १;  
-द्धया महा ४, २६.  
अति/शुष् > शोषि, अतिशोषय-  
अतिशोषय लां २१४:१९.  
अति-शून्य- -न्यः सौ २, ८.  
अति-शोभन- -नम् शि ४, ९.  
अति-शोभायमा(न>)ना- -ना:  
सार २७६ : १९.  
अति-शोभित- -तम् त्रिवि ६, २१;  
२२; ७, २१; ४९; शि ६, १३४;  
सि २, ४; ३, ४; ४, ३; ४.  
अति/ष्ठा(<स्था)>तिष्ठ, अत्यति-  
ष्ठत् श्वे ३, १४९<sup>१</sup>; मुद्र २.  
अति-ष्ठा- -ष्ठाः वृ २, १, २<sup>१</sup>; कौ  
४, २<sup>१</sup>.  
अति-सक्त- -क्तः सार २९१ : ९;  
-क्ताः सार २७८ : २३;  
२७९ : १.  
अति-संकट- -टे महा ३, २५.  
अति-संधि-(ल>)ज्ञा<sup>१</sup>- -ज्ञा सार  
२६३ : ५.  
अति-सर्व(तम्>)तो-मुख- -खः  
वृ ७, १३.  
अति-सु-कोमल-  
अतिसुकोमल-लाव(रय>)ण्या-  
-ण्या सार २८६ : ११.  
अति-सुख-दायिन्- -यिनः सार  
२६४ : १५.  
अति-सु-गन्ध, न्धा- -न्धाः सार  
२७० : २३; -न्धेन सार  
२८७ : ३.  
अति-सु-भग- -नौ सार २८९ : ४.  
अति-सु-शोभमान- -नाः सार  
२३३ : १३.

अति-सूक्ष्म, दमा- -क्ष्मः त्रिवि ८६;  
-क्ष्मम् श्वे ४, १६; गु ५९;  
-क्ष्मा लु ९.  
अति-सूक्ष्मतर- -रः त्रिवि १, १.  
अति/सृज्, अतिसृजते कौ १, २<sup>१</sup>;  
अतिसृज क १, १, २१; अत्य-  
सृजत वृ १, ४, ११; १४.  
अत्यस्त्राक्षीः क १, २, ३; ११.  
अति-सृष्टि- -ष्टिः वृ १, ४, ६<sup>१</sup>;  
-ष्ट्याम् वृ १, ४, ६.  
अति-सेवा-पर-  
अतिसेवापर-भक्त-गुणवच्छि-  
(त्-शि)ष्य- -ष्याय दत्ता १, ६.  
अति-स्नेह- -हेन सार २८९ : ५.  
अतिस्नेह-संकलित-म(नम्>)नो<sup>१</sup>-  
सन्न- -न्न सार २४८ : ४.  
अति-स्वप्न-  
अतिस्वप्न(प्र-अ)ति-जागर- -रम्  
अना २८.  
अति-स्वप्न-शील- -लस्य गी ६,  
१६.  
अति-स्वादु- -द्वनि सार २६६:१०.  
अति/स्वृ, अतिस्वरति छां १, ४, ४.  
अति/हन् > जिघांस, अत्यजिघांसत्  
ऐ ३, ३.  
अति-(त्र>)क्षी- -क्षीम् वृ २, १, १९.  
अति-हर्ष- -र्षेण त्रिवि ३, ४; ५, ४.  
अति-ह्लाद-मय- -यम् सार २८०:  
१५.  
अती(ति/इ), अत्येति ई ४; क २, १,  
९; २, ८; ३, १; वृ ३, ५, १;  
कै १, ९; मना २, १२, १;  
४०; कौ १, ४<sup>१</sup>; हे ८; सार  
२४४ : २१; <sup>१</sup>वृ ४४२:२०;  
४४८ : ३; ४५२ : १०; गी ८,  
२८; <sup>१</sup>अति... एति श्वे ३, ८;  
६, १५; अत्ययाम वृ १, ३, १;  
अतीयीमहि आषे ७ : ८.  
अत्येध्यन्ति वृ १, ३, २-७.

अती(ति-इ)त, ता- -तः ते ४, ५३;  
महा ६, ५६; गी १४, २१;  
१५, १८; -तम् शु २, ५; योशि  
१, ११६; ६, ६६; अन्न २, २८;  
-ता दे १७; -तान् नाप ३,  
२५; -तानि १संन्या २, ७; -ते  
त्रिवि १, १; अन्न २, २५.  
अतीत-विषय- -यः अन्न ५,  
९६.  
अतीता(त-अ)तीत-भाव- -वः  
ते ४, ५३.  
अतीता(त-अ)नागत- -तम्  
१योत १२७; योसू ४, १२.  
अतीतानागत-ज्ञान- -नम्  
शां १, ७, ५२; योसू ३, १६.  
अतीतानागता(त-अ)नेक-  
देह- -हानाम् वसू ५.  
अती(ति-इ)त्य मैत्रि ६, २२; नाप  
६, १२; १३; त्रिवि ४, १४; ५,  
१४; ७, १६; ए १४; म २, २५;  
मु २, २, ७५; गी १४, २०.  
अती(ति-इ)न्द्रिय- -यम् नाद १८;  
योशि ३, १५; १८; सांसू २,  
२३; गी ६, २१; -याणाम्  
सांका ६.  
अतीन्द्रिय-ज्ञान- -नेन सार २४६:  
१८.  
अतीन्द्रिय-त्व- -त्वात् सांसू ५,  
४१.  
अतीन्द्रिय-भूत- -तस्य मै २, ३;  
मैत्रि २, ३.  
अ(ति>)ती-पान- -नात् मना १, १३.  
अ-तुल, ला- -लम् ध्वा ६९; योचू  
४०; -लान् ध्वा ४२; -लाम्  
त्रिता ३, २४; -लायाम्, -०ले  
तुल ७० : १९.  
अतुल-रूप(प>)पा- -पा तुल ७०:  
१८.  
अ-तुष्ट- -ष्टाय मुद्र ४.

a) ऋ १०, ९०, १। b) संधिरार्षः द्र.। c) ऋ ९, ९६, ६। d) मा ३१, १८।

## अ-तुष्टि-

अतुष्टि-पर्य(रि-अन्त>)न्ता-न्ता  
अन्त ५, ३७.

अ-तृणा(ण-अ)द्-दः वृ १, ५, २.

अ-तृप्त-प्तः त्रिवि ५, ४.

अ-तृप्ते(प्त-इ)न्द्रिय-यः सार  
२५७ : १६.

## अ-तेजस्-

अतेजस्(ज>)जो-मय-यः वृ ४, ४, ५.

अ-तेजस्क-स्कः त्रिवि ८६<sup>b</sup>; -स्कम्  
वृ ३, ८, ८; सुबा ३.

अत्ति-, अत्तम्-, अत्त- / अद् द्र.

अत्य(ति-अ)द्(द-भु)त, ता-तम् गी  
१८, ७७; -ताः सार २६० : १३.

अत्यद्भुत-चारित्र-त्राय सार  
२६१ : ६.

अत्यद्भुत-सु-रचित(त>)ता-

-तायाम् सार २६३ : २२.

अत्य(ति-अ)न्त-न्तः सार २५१ : २;

-न्तम् क १, १, १७; छ २,

२३, १; खे ४, ११; १४; अशि

५, ६; गोउ ५६<sup>b</sup>; १थोत १०२;

नाप ८, १९; १संन्या २, १३;

३४; अय्या २३; सार २२८ :

१५; २३४ : १५; २४१ : १९;

२७१ : २; २८० : ४; २८५ :

२२; २८८ : २३; २९१ : ८; गु

५७; ब्रसू २, २, १७; गी ६, २८.

आत्यन्तिक-कम् योशि ३,

१५; सांस् ३, २७; सांका ६८;

गी ६, २१;

आत्यन्तिकी-की भव १,

३१.

अत्यन्त-कव्वाण-यम् कर २७.

अत्यन्त-क्रीडा-

अत्यन्तक्रीडा-आन्ति-संवलि-

त-वदन-नाय सार २५१ : १९

अत्यन्त-गाढ-प्रेमन्-ग्या सार

२४६ : २०.

अत्यन्त-दानरूपिन्-पिणे सार

२७७ : १८.

अत्यन्त-दुःख-निवृत्ति-त्या सांस्  
६, ५.

अत्यन्त-दुःखा(ख-आ)कार-रः  
त्रिवि ५, ४.

अत्यन्त-दुर्ल(भ>)भा-भाः सार  
२३६ : १६.

अत्यन्त-निगूढ-भाव-संमोहित-  
-तायाम् सार २४८ : ६.

अत्यन्त-निर्-मल-लः जाद १,  
२१; सु २, २, ६७; -ले त्रिबा

२, १५२.

अत्यन्त-पक्व-वैराग्य-न्यात् महा  
५, ६४;

अत्यन्त-पुरुषा(प-अ)र्थ-र्थः सांस्  
१, १.

अत्यन्त-प्रदीप्त-प्तेन यो १, ४४.

अत्यन्त-प्रवीण-

अत्यन्तप्रवीण-रससुखरसिक-

शिरोमणि-भोग-भावुका(क-

आ)मन्-स्मने सार २५२ : ५.

अत्यन्त-प्रियतम-मः सार २८८ :  
११.

अत्यन्त-प्रेम-भजन-नम् सार  
२५४ : १०.

अत्यन्त-बाध-घः सांस् ५, २६.

अत्यन्त-भाव-लीला-लायाम्  
सार २४० : १४.

अत्यन्त-भेद-दः त्रिवि ४, १४.

अत्यन्त-म(म>)ग्ना-ग्नाः सार  
२२५ : १८.

अत्यन्त-मणि-ज्योत्स्ना-त्स्नाभिः  
सार २२४ : १२.

अत्यन्त-म(नस्>)नो-हर-

अत्यन्तमनोहर-चातुर्या-

(यै-अ)सीम-गुण-ज्ञ-ज्ञः सार

२२६ : ९.

अत्यन्त-मलिन-नः जाद १, २१;

सु २, २, ६७.

अत्यन्त-रत्या(ति-आ)विष्ट-चि-  
(त>)त्ता-त्ता सार २८८ :  
२१.

अत्यन्त-रस-मग्न-ग्नानि सार  
२२८ : ४.

अत्यन्त-रस-लीला-मग्न-ग्नाः  
सार २४८ : २३.

अत्यन्त-वल्लभ, भा-भः सार  
२८८ : ३; -भा सार २२० : ६.

अत्यन्त-विरुद्ध-द्धम् त्रिवि २, १.

अत्यन्त-शोभायमान-नम् सार

२६४ : ४.

अत्यन्त-संवास-सः भव १, २०.

अत्यन्त-सखी-भाव-वम् सार  
२८० : २.

अत्यन्त-सङ्ग-ङ्गम् सार २८० : ३.

अत्यन्त-सुख-खम् सार २८८ :  
१४.

अत्यन्तसुख-देह-

अत्यन्तसुखदेहिन्-हिने  
सार २४७ : १३.

अत्यन्तसुख-श्रेणि-सञ्चार(र>)  
रा-रा सार २७२ : ६.

अत्यन्त-सुख-दायक-रूप-येण  
सार २६४ : ११.

अत्यन्त-सुखिन्-खिनः सार  
२६० : ३.

अत्यन्त-सो(स-उ)ल्लास-सानि  
सार २८२ : ४.

अत्यन्त-स्तवन-नम् सार २४६ :  
२२.

अत्यन्त-स्नेह-हौ सार २५१ : २.

अत्यन्त-स्नेहा(ह-आ)विष्ट-  
मनस्-नाः सार २८८ : २२.

अत्यन्त-हरित-तानि सार  
२८२ : ६.

अत्यन्ता(न्त-आ)नन्द-मग्न-ग्नानि  
सार २६६ : २.

a) 'अतेजसः' इति अज्या. पाभे. । b) यनि. मूको. पा. (तु. अज्या. संति.; वैतु. निसा. अज्या. च 'अन्तम्' इति पा.) ।



अत्यन्ता(न्त-अ)न्त(रु>):करण-  
मालिन्य-विशेष<sup>a</sup>- यात् त्रिवि  
५, ४.  
अत्यन्ता(न्त-अ)सक्त- -क्तः सार  
२९२ : १४.  
अत्यन्ता(न्त-अ)संकीर्ण- -र्णयोः  
योस् ३, ३६.  
अत्यन्तो(न्त-उ)च्छेद- -दः सांस् १,  
१५९.  
अत्यन्तो(न्त-उ)पहत- -ते सुवा ८.  
अत्या(ति-अ)मृत- -तम् सार २६४ :  
१३.  
अत्या(ति-अ)र्थ- -र्थम्<sup>b</sup> अज्ञ ५, ७२;  
कुं ११; पाशु २, २९; पत्र ३,  
१०; करु ४; रुह ३१; जाद ९,  
३; सिधि ३८१ : १६; कथु ३,  
४; गी ७, १७.  
अत्या(ति-अ)हृ, अति...अर्हात् व  
४३७ : १३९.  
अत्या(ति-अ)ल्प- -ल्पम् मिशि ३८३ :  
६.  
अत्या(ति-अ)श्व- -श्नतः गी ६,  
१६.  
अत्या(ति-अ)हम् वृत् ७, १३.  
अत्यागिन्- -गिनाम् गी १८, १२.  
अत्या(ति-अ)दर-पूर्वक<sup>b</sup>- -कम्  
त्रिवि १, ५; ३, ४; ५, ४.  
अत्या(ति-अ)नन्द- -न्दः सार २५२ :  
२०.  
अत्यानन्द-मय-  
अत्यानन्दमय-लोक- -कम् सार  
२३२ : ४.  
अत्या(ति-अ)नन्द-दायक- -काय  
सार २६१ : ८.  
अत्या(ति-अ)नन्द-रूप- -ये सार  
२८६ : १०.  
अत्या(ति-अ)शन- -नात् मना १,

१३.  
अत्या(ति-अ)श्चर्य- -र्थम् सार २२६ :  
१४; २५७ : २२; २५८ : ३;  
२८५ : ११.  
अत्याश्चर्या(र्य-अ)न(न्-अ)न्त-वि-  
भूति-सम- -मम् सि २, ६.  
अत्याश्चर्या(र्य-अ)नन्तविभूति-सम-  
ष्ट्या(ष्टि-आ)कार- -रम् त्रिवि  
६, १८; सि २, ८.  
अत्याश्चर्या(र्य-अ)मृत-सागर- -रे  
त्रिवि ६, १०.  
अत्याश्चर्य-वत्- -वान् सार  
२५७ : १७.  
अत्याश्चर्य-सागरा(र-आ)नन्द-  
लक्षण- -णम् त्रिवि ६,  
१६.  
अत्या(ति-अ)श्रम- -माणाम् लि  
३१० : ६.  
अत्याश्रमिन्- -मिभ्यः स्वे ६, २१;  
-मी कै २, २४.  
अत्या(ति-अ)सक्त, क्ता- -क्ताः सार  
२५४ : ९; २७९ : २०; २८८ :  
९; -क्तौ सार २८९ : ७; ११.  
अत्या(ति-अ)हार- -रम् अना २८.  
अत्यु(ति-उ)ग्र- -ग्रः वृत् ७, १३.  
अत्युग्र-तीव्र-तपम्- -पसा त्रिवि  
१, १.  
अत्युग्र-राग-द्वेष-विहिंसा-दम्भा-  
(म्भ-आ)द्य(दि-अ)पेक्षित-  
-तम् नि ४६.  
अत्यु(ति-उ)च्चैस्(>) महा ५, ९६;  
अज्ञ १, ३०.  
अत्यु(ति-उ)च्छिन्न, ता- -तम् १योत  
३५; गी ६, ११; -ताम् शि  
६, ११९.  
अत्यु(ति-उ)न्नत-श्रेणि- -णिषु सार  
२६३ : १५.  
अत्यु(ति-उ)ष्ण- -ष्णम् शां १, ४;

-ष्णान् सार २२५ : २०.  
१अज्ञ ३अ-एतद्-द्र.  
२अ-अ- -अम् वृ ५, १३, ४.  
अत्रि- ✓अद् द्र.  
अ-त्रि-युत- -तम् पी ४२१ : ९.  
अथ ई १७; के १, ३; २, १; ५; ३;  
७; ११; ४, ५; क १, १, १५;  
२, १, २; ३, १४; १५; १८; प्र  
१, ३; ६; १०; ११; २, १; ४;  
१०; ३, १; ७; ४, १; ६; ५, १;  
४; ६, १; मुं १, १, ५; तै १,  
३, १; २, २, १; ३, १; ऐ ३,  
११; ४, १; ४; वृ १, २, ३; ४,  
४, १४; कौ १, २; ६; २, ३;  
मै ५, १; २; मैत्रि १, ४; मैत्रे १,  
२; ४, १; २, १; अशि ४, १;  
६; ७; ९; १०; १२; १३; १५;  
१८ मना १, १९; २, १४;  
१९; जा २; ३; ४; ५; हं ४;  
१०; आरु ४; गर्भ ३; ४; पदं  
१; ४; व २; अना १; २; कला  
१; २; ११; मन्त्रि ११; १२; शु  
१, १; २, १; नाद १४; ते १,  
४९; २, १; ब्रवि ७; नाप १;  
२; त्रिवा १, ५; ९; २, ९६;  
सी ९; श १; त्रिवि १, १; २,  
१; ३, १; ५, १; ७, १; सुद्र  
२; पै १, १; मि १; ३; ५; ७;  
१२; महा १, १; ५, १; शारी १;  
योशि १, १०; तुअ १; १संन्या  
१, १; २संन्या १५; १; १७; ४;  
पप ४१७; १; ४१८ : ११; अक्ष  
१; ए ११; १२; सू १; कुं ४;  
१आ १; २आ १-३; पाशु १, १;  
पत्र २; १अव १; २अव २४१ :  
१; त्रिता १, १; १२; २, १; क  
१; म १, १; मवा १; ३; पं १;  
प्रा १, १; या १, १९; वरा १, १;

a) 'मलिन' इति निरा. पाभे. । b) द्वि. १ सन् वा. त्रिवि. भवति । c) ऋ २, २३, १५ ।  
d) 'अत्यन्नतः' इति Schr. पाभे. [वैतु. वे. (NIA. २, २३१)] । e) ऋ ३, ४७, २ । f) ऋ ३, २९, १० ।

४, १; शा ५; ११; जावा १;  
नौ १, १; सु १, २, १; २, २,  
४; १९; ५०, ७१; चा १; इ  
१०: १; छाग २३: १; द १;  
२प्र ३४; २; सूता १, १; २, १९;  
स्व ६०: ५; का १; गोच ६६:  
२१; ३०; नार १; नापू १, १;  
२; ३, १८; ४, १८; नृष ८४: ६;  
१४; राधा १, १; ३, १; ४, १; सं  
१; पारा १; वि १; नृ १; ३; लि  
३१०: १६; वट ३१६: ७; शि  
२, १; ३, १; पी ४२१: १;  
गुषो ४२०: ११; १५; ४२१:  
३; रा ४२३: ८; द्या १; चक्र  
१; विद्या १; षो ४; ८; सिशि  
३८०: ६; ३८१: २२; ३८२:  
३; ३८३: २; ७; ८; ११; सि  
१, १; हे १; कालि ४०१: १;  
४०२: १, १०; १४; ४०३: १;  
१७; २०; काम १०; २४; गार  
४०५: ३; गा २०; गु १४;  
कौल ७; भव १, २; पित्र १, ५;  
६; चू ११; सांसू १, १; योसू  
१, १; ब्रसू १, १, १; ३, १,  
२६; गी १, २०; २६; २, २६;  
३३; ३, ३६.

अथ-कार-र: छां १, १३, १.

अथवा छां ७, ९, १; नाप ३, १०;

७७; ८६; त्रिवा २, ७९; महा

४, ४०; अक्ष २, ११; १अव २३;

भव १, १५; आध्र १; गी ६,

४२; १०, ४२; ११, ४२.

अथो के शां; क १, १, १४;

तै २, २, १; छां शां; वृ १, ३,

२५; ५, १९; ४, ३, १४; कौ  
३, १; मै शां; मैत्रि ३, २; मैत्रे  
शां; हं ९; मना १, २; १४९;  
२, २६; आरु शां; अशि ६,  
८९; योचू वा महा १ प्रन्या  
अव्य कुं सावि रुजा जाद जावा  
शां; शौ ५१: १६; ५३: २०;  
नी २, ३९; ८९; ब्रसू ३, २,  
१७; गी ४, ३५.

✓\*अथर्\*

\*अथर्-

अथर्व(र-व)<sup>१</sup>-वार्थसुं १, १, १.

अथर्वन्-वर्णः वृ २, ६,

३; अशि ६, ७९; सी २५;

-वर्णम् वृजा ८, ५; २प्र ३३: ९;

११; ३६: २३; -वर्णे सुं १, १,

२; २संन्या १६: ९; गु १; -वर्

सुं १, १, २; वृ २, ६, ३; ४,

६, ३; अशि ६, ६९; अ १;

शां १, १; ४; २, १; ३, १;

त्रि १६; सू ११; -वर्णः मन्त्रि

१०; चू १०; -वर्णम् अ १;

शां १, १; ४; २, १; ३, १;

चू १४.

आथर्वण-ग: छां ७,

१, ४; वृ २, ५, १६-१९;

६, ३; ३, ७, १; ४, ६, ३;

-णम् छां ७, १, २; २, १; ७, १;

-णात् वृ २, ६, ३; ४, ६, ३;

-णाय वृ २, ५, १७९; -णै:

नृउ ३, ५.

आथर्वणी-णी दे

१; भव ३, २.

अथर्व-विदित-तै: मन्त्रि

१३.

अथर्व-विद्या-द्याम् कालि

४०३: १४.

अथर्व-विहित-तै: चू १३.

अथर्व-वेद-द: सुं १, १,

५; अ १; नृपू २, २; नृउ ३, ५;

सुवा २; महा १, १; रुह २९;

आच ७; च २०: ८; सिशि

३८२: १३; गार ४०६: ५; -दम्

२प्र ३३: २; ३७: १; -दे २प्र

३४: १८.

अथर्ववेद-ग(त>)ता-

-तानाम् सु १, २, ५.

अथर्ववेद-मध्य-ध्ये

गु १.

अथर्ववेद-स्व-रूप-

अथर्ववेदस्वरूपक-

-कम् पं ११.

अथर्व-शिरस्-र: ना ४;

अशि ७, १; ८; ग १६; मवा

१२; सु २९५: ३; -रस: मन्त्रि

१४.

अथर्वशिरः-शिखा-

(ख-अ)ध्यापक-केन वृजा

८, ६; नृपू ५, १९.

अथर्वशिरः-शिखा-

ध्यापक-शत-तम् वृजा ८,

६; नृपू ५, १९.

अथर्व-शीर्ष-र्षम् दे २०;

ग १७.

अथर्व(र्व-अ)ङ्गिरस्-र:

तुल ७०: १; नापू ५, ४०;

-रस: तै २, ३, १; छां ३, ४,

१; २; वृ २, ४, १०; ४, १, २;

a) ऋ १, ५०, १२। b) ऋ १०, १९०, १। c) शौ १०, २, २७। d) तैसं ४, ५, १, ३।

e) मा १६, १२। f) मौस्वि. नाउ. निष्पन्नः सन् पात्र. नाउउ. व्यु. औपयिकः नाथा. द्र.। g) मौस्वि.

[✓\*१अस् (दीप्तौ [यतु. वेप१])>] अस्-+(✓वृ>)वर- इति कृत्वा तस. \*अस्तर्- इत्यस्य नैप्र. यनि. सतः नापू.

पात्र. भावे क्तिन्तत्वं सुवचम् (वेप १, ९३-९४ अपि समाने प्रकरणा एतदनु शोधपरो विशेष आधेयः)। h) वने:

प्र. सकर्त्तृभावुकस्ततोऽन्य इव वः प्र. तद्धितः द्र. [वैतु. विष्णु. (IHQ १७, ८९) -°वन्-> -°व- इत्येवं भावुकः]।

i) शौ १०, २, २७। j) शौ १०, २, २६। k) ऋ १, ११७, २२।

५, ११; मैत्रि ६, ३२; अशि  
१, ७; मी २२९<sup>१</sup>; अव्य ५;  
-रसम् सी २३; -रसाम् प्र २, ८.  
अथर्वण<sup>१</sup> - गम् नृपू ५, १८;  
-गस्य सु १, १, १३; -गैः नृपू  
२, २.

अथर्वण-मन्त्र - न्नैः अ १.

अथर्वण-वाक्य - क्यम् ग  
१८.

अथर्वण-वेद-पठन - नम् म  
४८: १९.

अथर्वण-वेद-सिद्ध-स्थिर-  
काला(ल-अ)विन-निराहारक-  
-क लां २१४: १२.

✓अद्, अत्ति सुं ३, १, १; तै २,  
२, १; छां ४, ३, ७; ५, १०,  
६; १२-१७, २; वृ १, २, ५;  
३, १८; ५, १; २; खे ४, ६९<sup>१</sup>;  
मै २, ९; ५, १; २<sup>१</sup>; मैत्रि २,  
६; ६, १; २<sup>१</sup>; १२; १३; ३१;  
मना २, ८०९<sup>१</sup>; वृ ४, ४<sup>१</sup>;  
१योत ७१; शां ३, १; नाउ १,  
४९<sup>१</sup>; गु ३३; भव २, २; अदन्ति  
मैत्रि ६, १३; अस्ति छां ५,  
१२-१७, २; कौ २, ९<sup>१</sup>; अथ छां  
५, १८, १; आशि तै ३, १०, ६;  
नृपू २, १८९<sup>१</sup>; अदाम ऐ २, १;  
छां १, १२, ५; अद्यात् १मंन्या  
२, ७६; करु १; अद्युः वृ ३, ९, २५.  
अत्स्यन्ति छां ४, १, १<sup>१</sup>.  
अद्यते तै २, २, १; वृ १, ३,  
१७<sup>१</sup>; ५, २; २, २, ४; ५, ९, १;  
मै २, ८; मैत्रि २, ६; ६, १२.

अत्ति<sup>१</sup> - त्ति: वृ २, २, ४<sup>१</sup>.

अत्तुम् वृ १, २, ५.

अत्तु - त्ता प्र २, ११; वृ १, २, ५;  
२, २, ४; मैत्रि ६, ९; ब्रसू १,

२, ९.

अत्तु-त्व - त्वात् नृउ ७, ९.

अत्रि<sup>१</sup> - त्रये शां ३, १; -त्रि: वृ २,  
२, ४<sup>१</sup>; जा २; ५; राउ ३, १;  
पा २, १; सर २, २; शि ७,  
१३५; -त्रे: शां ३, १.

आत्रेय<sup>१</sup> - ०य दत्ता १, ५;

-य: वृ २, ६, ३; ४, ६, ३;  
छाग २३: ९; २४: १२; ब्रसू  
३, ४, ४४; -यम् छाग २३:  
७; गार ४०७: १४; -यात् वृ  
२, ६, ३; ४, ६, ३.

आत्रेयी<sup>१</sup> -

आत्रेयी-पुत्र - त्रः,

-त्रात् वृ ६, ५, २.

अत्रि-पुत्र - त्राय दत्ता २.

अत्रि-वत् मना २, १९<sup>१</sup>; व  
४६१: १३.

अदत् - दन्तम् तै ३, १०, ६; नृपू  
२, १८९<sup>१</sup>.

१अदत्क - त्कम् छां ८, १८, १.

अद्यमान - नानि वृ १, ५, १; २.

अद्य - अद्य: मैत्रि ५, १; -अद्यम् प्र  
१, १४; २, १०; ३, ५; ६, ४;  
सुं १, १, ८; ९; तै १, ५, ३;  
२, १, १; २, १<sup>१</sup>; ३, १, १;  
२, १<sup>१</sup>; ७-९, १<sup>१</sup>; १०, १<sup>१</sup>;  
६<sup>१</sup>; ऐ २, १; ३, १-१०; छां  
१, ३, ६; ८, ४; ११, ९<sup>१</sup>; १२,  
२; ५<sup>१</sup>; १३, २; २, २२, २; ४,  
३, ६; ८; ११, १; ५, २, १<sup>१</sup>; ६,  
२; ७, २; १०, ४; ६; १२-१८,  
२<sup>१</sup>; ६, २, ४<sup>१</sup>; ५, १; ७,  
४, २; ७, १; ९, १<sup>१</sup>; २<sup>१</sup>;  
१०, १<sup>१</sup>; २६, १; वृ १, २, ५<sup>१</sup>;  
३, १७; १८<sup>१</sup>; ४, ६<sup>१</sup>; ५, १;  
२<sup>१</sup>; २, १, ३; २, १; २; ४<sup>१</sup>;

३, २, १०<sup>१</sup>; ९, ८; ४, २, ३;  
५, ९, १; १२, १<sup>१</sup>; ६, १, १४<sup>१</sup>;  
२, ११; १२; १६<sup>१</sup>; ३, ४; मै  
२, ८; ५, १; २; ५; ६; १५;  
मैत्रि २, ६; ४, ५; ६, १; २<sup>१</sup>;  
५; ९; १०<sup>१</sup>; ११; १२<sup>१</sup>; १३<sup>१</sup>;  
१४; १५; १७; ३६; ३७; ७, ७;  
मना २, ३<sup>१</sup>; १५; २९; ६४९<sup>१</sup>;  
७९<sup>१</sup>; नृपू १, ८; २, १८९<sup>१</sup>;  
सुवा ५<sup>१</sup>; १२<sup>१</sup>; १४<sup>१</sup>; नाप ४,  
३८; ७<sup>१</sup>; त्रिभा २, ५; ८३;  
शां १, ४<sup>१</sup>; योशि ५, २३;  
१संन्या २, ७०; ७६; ७९<sup>१</sup>;  
९२; पप ४१९: ९; अज १,  
६; ८; सू ८; कुं १४; पाशु  
२, ३८; भा २०; भ १, ८;  
२, २१; प्रा १, १; ५; इ  
११: २; ३; १५: ३; १८:  
१; च २०: ४; नाउ १, १६;  
राधा ४, ७; रु २२; शि ६, १;  
भव ४, १९; गी १५, १४;  
-अत्स्य ऐ ३, १०; छां १, ८,  
४; १०, ६; ६, ४, १-४; ६; ६,  
२; ७, ४, २; ९, १; २; कौ ४,  
३<sup>१</sup>; मैत्रि २, ६; ६, १३; १४;  
प्रा १, ४९<sup>१</sup>; वरा ५, ४८; इ  
१८: ९; शि ५, ४; -आत् प्र  
६, ४; सुं १, १, ८; तै २, १,  
१; २, १<sup>१</sup>; ३, २, १; छां ६,  
८, ४; ७, ९, २<sup>१</sup>; १०, १; वृ  
५, १२, १; मैत्रि ६, ११; १२;  
३७; मना २, ७९९<sup>१</sup>; कुं १४;  
नाउ १, १६; गी ३, १४; -आनि  
वृ १, ५, १; २; सार २३७:  
१५; २८१: ५; -अ सुं २,  
२, ७; तै ३, ७-९, १<sup>१</sup>; छां  
१, ३, ६; वृ १, ३, १८; २७;

a) तैत्रि ३, १२, ८, २। b) ऋ १, १६४, २०। c) तैत्रि १०, ६४, १। d) कौ ३, १, ९।

e) 'अदन्ति' इति निसा. पा.मे.। f) ऋ ५, ४, ९। g) तैत्रि १०, ६४। h) तैत्रि १०, ६३, १।

i) मा ११, ८३।



सार २२३ : ९; त्रुम् १, ४,  
१३; -न्तेन तै १, ५, ३; २, २,  
१; ३, २, १; छां ६, ७, ६; ८,  
४; स्वे ३, १५९; मैत्रि ६, ११;  
१२; मना २, ७०<sup>१</sup> ९<sup>२</sup>; ७४९<sup>३</sup>;  
७९९<sup>४</sup>; सुबा ६९<sup>५</sup>; सी १३;  
इ १९; ५; -वैः वृ ४, ३, ३७.  
अन्न-काम- -मेन मैत्रि ६, १२.  
अन्न-कार्य- -र्षाणाम् ससा १,  
११.  
अन्न-कोश-

अन्नकोश-विहीना(न-आ)-  
त्मन्- -त्मा ते ४, ७४.

अन्न-तम- -मः मैत्रि ३, ५.

अन्न-त्व- -स्त्वम् मैत्रि ६, ९;  
१०<sup>२</sup>.

अन्न-दोष- -रेण १संन्या २, ७२.

अन्न-धातु- -तुम् मै २, ७.

अन्न-पति- -०ते छां १, १२, ५;  
प्रा १, १; ४.

अन्न-पान- -नम् मना २, ६३९<sup>३</sup>;  
चू २०; -ने तै १, ४, २; छां  
८, २, ७; व ४६६ : १२९<sup>४</sup>;  
-नैः मैत्रि ६, ३६.

अन्नपान-पर- -रः १संन्या  
२, १५.

अन्नपान-लोक- -केन छां ८,  
२, ७.

अन्नपानलोक-काम-  
-मः छां ८, २, ७.

अन्नपान-विशेष- -वैः शि  
७, ७७.

अन्नपाना(न-आ)दि- -दि  
सी १५; -दिभिः सी ३६.

अन्न-पान-फला(ल-आ)दिक-  
-कम् शि ६, ३८.

अन्न-पानी(न-आ)पधि-  
-वीनाम् शि ६, २८१.

अन्न-पूर्णा(र्णा)णी- -ण्या सार  
२२३ : १०; २२५ : २०; २३७ :  
१५; -र्णा अन्न १, ६; ९;  
-०र्णे अन्न १, ८; त्रिवि ७,  
३५.

अन्नपूर्णा(र्णा-आ)द्या- -द्याः  
सार २७० : १२.

अन्नपूर्णे(र्णा-ई)शरी- -०रि  
व ४२८ : ८; ४५९ : ३.

अन्नपूर्णेद्वरी-मन्त्र-  
-न्त्रः त्रिवि ७, ३५.

अन्नपूर्णे(र्णा-उ)पनिषद्-  
-षदम् अन्न ५, १२०.

अन्न-बहु- -हुम् मैत्रि ६, ३७.

अन्न-बुद्धि- -द्धिः सार २७९ :  
१३.

अन्न-भूत- -तम् मैत्रि ६, १०.

अन्न-मय- -यः मैत्रि ६, ११;  
सुबा ५; ससा १, १२; त्रिवा २,  
६; करु १७; १९; -यम् तै २,  
८, ५; ३, १०, ५; छां ६, ५, ४;  
६, ५; ७, ६; -ये त्रिवा २, १२.

अन्नमय-कोश- -शाः पै २,  
२०; -को ससा १, १३.

अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-  
विज्ञानमय- -यम् मना २,  
६६९<sup>४</sup>.

अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-  
विज्ञानमया(य-आ)नन्दमय-  
-याः मुद्र ४; पै २, १८.

अन्नमयप्राणमयमनोमय-  
विज्ञानमयानन्दमय-कोश-  
-शाः ससा १, २.

अन्न-रस- -सः कौ ३, ५; -सम्  
कौ ३, ७<sup>३</sup>; ८; -साः सार २८३ :  
२२; -सात् कौ १, ७; २, १५<sup>२</sup>;  
३, ६; सार २२५ : २०; -सेन  
पै २, १९<sup>१</sup>.

अन्नरस-मय- -यः तै २,  
१, १; -यात् तै २, २, १.

अन्नरसमय-पृथिवी-  
-व्याम् पै २, १९.

अन्नरस-विज्ञातृ- -तारम्  
कौ ३, ८.

अन्न-रूप- -येण रुद्र ३३.

अन्न-वत्- -वतः छां ७, ९, २;  
-वात् छां १, ३, ७; १३, ४; २, ८,  
३; तै ३, ६-९, १; मैत्रि ६, १३.

अन्न-वस्त्रा(स्त्र-अ)र्थ- -र्थम्  
मैत्रे २, २०.

अन्न-विवेचन- -ने शि ५, १७.

अन्न-शुद्धि- -द्ध्या भव ४, ९.

अन्न-संभव- -वः गी ३, १४.

अन्न-सार- -रम् योशि ५, २५.

अन्न-सूत्र- -त्रम् प्रा १, १<sup>६</sup>.

अन्ना(न्न-अ)द, दा- -दः तै ३,  
६-८, १; ९, १<sup>३</sup>; १०, ६<sup>३</sup>;  
छां १, ३, ७; १३, ४; २,  
८, ३; १२, २; १४, २; ३, १३,  
१; ३; ४, ३, ८; वृ १, ३, १८;  
४, ६<sup>२</sup>; ४, ४, २४; मैत्रि ६,  
१०<sup>३</sup>; सुबा १४<sup>३</sup>; पाशु २, ३८;  
-दम् तै ३, ७, १; ८, १; कौ  
२, ९<sup>५</sup>; सुबा १४<sup>५</sup>; -दा, -दाः  
सुबा १४; -दानाम् १अव्य २;  
-दानि सुबा १४.

अन्नादी- -दी छां ४, ३, ८.

अन्ना(न्न-अ)दन-पर- -रः  
१संन्या २, १३.

अन्ना(न्न-आ)दि- -दि वरा ५,  
४७.

अन्ना(न्न-अ)द्य- -द्यम् छां ३, १,  
३; २-५, २; १३, १; ३; ६,  
२, ४; वृ १, ३, १७; २८; ५,  
२; कौ २, १५; -येन तै १,  
३, ४; छां ५, १९-२३, २.

a) अ १०, १०, २। b) तै १०, ३६, १। c) तै १०, ३७, १। d) तै १०,  
६३, १। e) तै ७, ४, २। f) तै १०, ५७, १। g) 'सूक्तम्' इति निसा. पाठे.।

अज्ञाद्य-काम- -मः सूता १,  
२२.  
अज्ञाद्य-वत् सांसू १, १०५.  
अज्ञा(न्न-अर्थ)-र्थम् शि ४,  
६१.  
अज्ञा(न्न-आ)हारिन्- -सी नाप  
५, १; १संन्या २, १३.  
१आद्य- -द्यम् सुमु ८; -द्यस्य प्र  
२, ११.  
अ-दक्षिण- -णम् गी १७, १३.  
अ-दग्ध- -ग्धम् १संन्या २, १०.  
१अदत्क- ✓अद द.  
२अ-दत्क- -कम् छां ८, १४, १.  
अ-दत्त- -त्तम् अशि ३, ३; च २१:  
१७; वटु ३१५ : २; -त्तानाम्  
भव ५, ५.  
अ-दत्त्वा अथ्या ५३.  
अ-ददान- -नम् छां ८, ८, ५.  
अ-दध्य- -ध्यः १५व ४४२ : ९;  
४४७:१५; ४५२:२; ४५५:७.  
अ-दम्भ- -म्भः नाप ३, २१; वटु  
३१४ : १७.  
अ-दम्भित्व- -त्वम् शारी २; गी  
१३, ७.  
अ-दर्श- -शम् सुं १, २, ३.  
अ-दर्शन- -नम् २प्र ३५ : ७.  
अ-दर्शनीय- -यम् छां १, २, ४.  
अदस्- →  
अदस्- -दः ई शां; ऐ १, २; वृ  
५, १, १; १४, ७; खे वृजा हं  
पहं सुबा मन्त्रि नि त्रिवा मं  
अता पै भितुअ अथ्या ता या शा  
शां; मु शां; १, २, २; गा  
२३; पारा ३; ६; म ४९:११.  
अ(दस्)>दो-मय- -यः वृ ४,  
४, ५.  
अ(दस्)>दो-वज- -जम् मै २,  
१०.

अमी-मी वृ ६, २, १५; गौ ४,  
६८-७०; रापू १, ९; ते ६, ३;  
शा ११; छाग २३ : ९; २४ :  
११; गी ११, २१; २६; २८.  
अमु- -मुना छां १, ७, ७; ३, १५,  
३१; पै ३, १; अथ्या ३९:  
-मुम् तै २, ३, १; छां १, ३,  
२; १०, ७; २, ९, १; ८;  
७, ३, १; ७, १; १४, १; ८,  
६, २; वृ १, ४, ६; ५; २०; मै १,  
५; वृजा ६, १; योशि ६, ५४;  
२संन्या १६:३:४; १अव १८;  
गोपू ४७; ध्या ६२; योचू ३२;  
व ४४३ : २१; ४६४ : १७७;  
-मुष्मात् छां १, ६, ८; ७, ७;  
८, ६, २; १२, २; कौ २, ३;  
अरु ३३; -मुष्मिन् ऐ ४, ६; ५,  
४; छां १, ९, ४; ४, ११-१३,  
२; ५, १, ३; ८, ६, २; वृ ५, ५,  
२; कौ ३, २; गोपू १४; -मुष्य  
छां १, ७, ५; ८, ५, ७; ६, ९, २;  
मना २, ९; १आ २६; ह २०;  
आर्षे ७:११; -मुष्याः श्या १७.  
अमुक- -कम् व ४२८:५; ४३२:  
१५; ४३५ : ५; -कस्मै गोउ १.  
अमु-तस्(>) छाग २५ : १;  
वा १५.  
अमु-त्र क २, १, १; छां ८, १,  
६; वरा २, ३; गोपू १४; शि ६,  
१९२; अरु २७; भव ५, ७;  
गी ६, ४०.  
अमुत्र-भूय- -यात् मना २,  
४८७.  
अमुर्हि वृ १, ५, २३.  
अमुष्मिन्-  
आमुष्मिक-  
आमुष्मिक-पुरुष- -पः  
लि ३११ : ६.

अमू- -मूनि वृजा ४, २७; अज  
३, ७; -मूम् वृ ५, १४, ४;  
६, ४, ९; वा ३; गा १५.  
असौ- -सौ ई १६; प्र १, १६;  
६, १; तै १, ५, १; ६, १; २,  
८, ५; ३, १०, ४; छां १, ३, १;  
२; ५, १; ८, ५; १०, ६; २, १०,  
५; ३, १, १; १९, ३; ५, ३, ३;  
८, ६, १; वृ १, २, ३; ३,  
१४; १६; ४, १०; ५, ४; १२;  
१३; ३, १, ४; ५, ४, १; ५,  
२; ६, ४, १२; २२; खे १,  
१५; गौ २, २९; ४, ५९; ८२;  
कौ १, ७; २, ४; ११; मै ३,  
३; ५, १; ४; ७; जा १; हं ७;  
मना २, ७९७; पहं १; व ३,  
१०; अना २६; ३१; वृजा ६,  
१; वृपू १, १५; वृउ ४, ४;  
६, १; गा २३; पारा ३; ६;  
मन्त्रि ७; ते १, २७; ४, ४०;  
नाद १२; २०; व्रवि ३३; १योत  
१९; ५५; ९४; नाप ४, १६; ९,  
१; त्रिवा २, १७; मं ५, ९; द  
१९; श १; अता १८; रार २,  
७१; राउ १, १; शां १, ४; महा  
२, २; ६; ८; १३; १९; २१; २२;  
४८; योशि १, ५; १६; २७;  
३३; ३९; ४७; ५७; १०१;  
११०; अव्य २; सू १४; आक्षि  
९; १५; २४; १अव १९;  
२६; कुरु २५; यो १, ५१; ३,  
८; म २, १५; जाद १०, ११;  
मवा ६; ११; गोपू ४; क २०;  
वरा २, ४२; ५, ७; २३; २६;  
६५; व १८; मु २, २, ५;  
३१; ३५; ५५; छाग २४ :  
८; १०; २३; व १५; म ४९ :  
११; शौ ५३ : ८; १२; १८;

a) अ १, ८९, ५। b) उ>अ इत्यक्षरव्युदिकरः शोधः द्र. (तु. तैत्रा. ३, १, २, ५)। c) तैत्रा ४, ३९, १।  
d) तैस ४, १, ७, ४। e) तैत्रा १०, ६३, १।

सूता १, ९; १०; १२९; राधा  
१, १; सार २६१ : २१; नी  
१, ९९; स ३७९ : ७; १२;  
गार ४०५ : १७; व ४६४ :  
१५९; पित्र २, ४; चू ७;  
गी ११, २६; १६, १४;  
-सौ-सौ वृ ५, १५, १.  
असौ-नामन्-नामा वृ १, ४,  
७.

अ-दान्त-न्ताय अव्य ७.

अ-दाह्य-ह्यः भव २, ४०; गी २,  
२४.

अ-दिग्-देश-काल-लम् त्रिवि  
७, १७.

अ-दिति- -तिः क २, १, ७; मना  
२, २८; दे ८; कृ २१; कृपु  
१६; गार ४०७ : १६; -तिम्  
दे ६; -तेः वृ १, २, ५.

आदित्य- -न्त्य मं १, १, १;  
सू ८; -त्थः प्र १५; ६; ३, ८;  
तै १, ३, २; ५, २; ७, १०;  
ऐ १, ४; २, ४; छां १, ३, ७;  
५, १; ६, ३; ११, ७; १३, २;  
२, २, १; २; १०, ५; २०, १;  
२१, १; ३, १, १; ६-१०, ४;  
१३, १; १८, २; १९, १; ३;  
४, ११, १; ५, ४, १; १९, २;  
८, ६, १; वृ १, ३, १४; ५,  
१२; २२; २, २, २; ५, ५;  
३, १, ४; ७, १; ९, ३; ७;  
२०; ५, ५, २; ६, २, ९; १५;  
१६; खे ४, २९; कौ २, १२;  
मै ५, १; ३; ४; ५; ६; ७; मैत्रि  
४, ५; ६, १; ३; ४-७;  
१६; ३०; ३३; मना १, १;  
७; २, १; १४; १५; ३७;  
७९; अव्य २; सू २; १४-  
१८; २५; सावि ६; १०;  
अक्षि १; मवा ६; वृपू ४, ८;  
सुवा ५; त्रिवि ७, ४४; २प्र  
३६; २०; शौ ५३; ८; सूता  
२, १०९; ३, २; नाउ २, १०;  
ब्र २; गार ४०९; १७; व ४६१;  
२०; २१९; ४६३; ६; -त्यम्  
प्र १, १०; छां १, ११, ७; २, ९,  
१; ८; १०, ५; २४, ११; १३;  
३, १, ४; २-५, ३, १५, ६;  
१९, ४; ४, १५, ५; १७, १;  
५, १०, २; १३, १; ८, ६, ५;  
वृ १, २, ३; ३, २ १३; ७, ९;  
५, १०, १; ६, २, १५; ३, ६;  
कौ २, ७; १२; मै १, १; मैत्रि  
१, २; ६, १६; ३७; मैत्रे १, १;  
अक्षि १; भ २, २; २१; ब्रवि  
१५; वृजा ८, २; वृपू ५, १४;  
सुवा ९; पाशु १, २७; मं १,  
१, १; २प्र ३२; १५; गार  
४०७; ६; व ४६२; ३; -त्यस्य  
छां १, ६, ५, ६; २, १०, ६;  
३, १, ४; २-५, ३; ६, ४, २;  
८, ६, २; वृ २, ५, ५; कौ २,  
८; ९; मना २, ८०; मं २, २, ३;  
-त्याः छां २, २४, १६; ३, ८,  
१; १६, ५; ६; वृ १, ४, १२;  
३, ९, २; ५; मैत्रि ७, ३; ना १;  
महा ४, १७; दे १०; गोउ २३;  
६२; अ १, कौ २, ८९; वृजा  
६, १२; त्रिवि २, १६; वृपू २,  
२; ४, १५, १९; ५, ८; सुवा  
६; ते ५, १०४; राउ ४,  
३४; नापू ५, २५; कृपु ८;  
-त्यात् छां २, १०, ५; ४, १५,  
५; १७, २; ५, १०, २; ६, ४,  
२; ८, ६, २; वृ १, ५, १९;  
३, ७, ९; ६, २, १५; ५, ३;  
मैत्रि ६, १५; ३७; सू १२;  
१३; १४; ३७; ३४; ३५;  
३७; ७, ७; ११; मना २, १४;  
७९; १संन्या १, १; वृ १, ८;  
सुवा ५; १२; पाशु १, २१;  
कश्रु १, १; -त्येन तै १, ५, २;  
छां ३, १८, ५; वृ ३, १, ४; ४,  
३, २; -त्येभ्यः छां २, २४, १४,  
-त्येषु गोउ ६३; -त्यैः दे  
१९; सिशि ३८२; २१; अरु  
४; ५.  
आदित्य-गत- -तम् गी  
१५, १२.  
आदित्य-जय- -यात् छां २;  
१०, ६.  
आदित्य-ज्योतिस्- -तिः वृ  
४, ३, २.  
आदित्य-त्व- -त्वम् छां ६,  
४, २; मैत्रि ६, ३५.  
आदित्य-देवत्- -तः वृ ३,  
९, २०.

a) मा १६, ७। b) तैसं ४, ५, १, २। c) तैआ ४, ३८, १। d) मा ३२, १। e) तैआ  
१०, ६३, १। f) अ १, ५०, १३। g) तैआ १०, १५, १। h) 'त्येन' इति निप्ता. पाभे.।  
i) तैआ १०, ६४, १। j) तैसं २, ३, ५, ३। k) अ १०, १२५, १।



आदित्य-पथ-गामि(न>) नी- नी गार ४०६ : १८; २१; २३.  
 आदित्य-पूत- -तः पै ४, २३; वृषू ५, १२; राउ ५, ४; ता ३, ९; मुद्र ४.  
 आदित्य-मण्डल- -लम् वोचू ९७.  
 आदित्यमण्डल-पुरुष- -वम् सं २, १, १.  
 आदित्यमण्डला(ल-आ)- कार- -रम् योशि १, ७३.  
 आदित्य-माहात्म्य- -स्यम् सूता १, ३४.  
 आदित्य-लोक<sup>१</sup>- -कम् त्रिवा १, १; मं १, १, १; अलि १; कौ १, ३; -काः वृ ३, ६, १; -के इ १० : ६; -केषु वृ ३, ६, १.  
 आदित्य-वत् कुं १६; गी ५, १६.  
 आदित्य-वर्ण,र्णा- -र्णम् रवे ३, ८९<sup>०</sup>; मैत्रि ६, २४; मवा ८; त्रिवि ४, ५९<sup>०</sup>; ६; का ११; पा ७, ५९<sup>०</sup>; रशिसं १५९<sup>०</sup>; गी ८, ९; -०र्णे नार २९<sup>०</sup>; इ १८ : १३.  
 आदित्य-संनिधि- -धौ वरा ३, १४.  
 आदित्य-सवितृ-सूर्य-खग- पूष-गमस्ति-मार्तण्ड-जगन्- क्षुस्- -क्षुर्भिः सूता ४, ६.  
 आदित्य-सोम- -माभ्याम् सी ३७.  
 आदित्या(त्य-आ)त्मन्- -स्मा मैत्रि ६, १६.  
 आदित्या(त्य-आ)दि- -दयः सार २५७ : १८.

आदित्यादि-मति- -तयः व्रसू ४, १, ६.  
 आदित्याद्य(दि-अ)नुगृ- हीत- -तैः ससा १, ७.  
 आदित्या(त्य-आ)द्य- -द्यः मैत्रि ६, १५.  
 आदित्या(त्य-आ)भि-मुख- -खः भ १, ११; मवा १२; ना ५.  
 अदिति-स्व<sup>१</sup>- -स्वम् वृ १, २, ५<sup>१</sup>.  
 अ-दीक्षित- -ताय मुद्र ४; अव्य ७.  
 अ-दीन- अदीन-स्व- -स्वम् नाप ४, ११.  
 अ-दीर्घ- -र्घः ब्रवि ८८; -र्घम् वृ ३, ८, ८; सुबा ३; योशि ३, १९.  
 अदीर्घ-स्व- -स्वात् गौ २, २.  
 अ-दुग्ध-दोहि(न>)नी- नीम् वृजा ३, १.  
 अ-दु(ग्ध>)ग्धा- -ग्धाः अशि ४, २१९<sup>०</sup>; वट्ट ३१६ : १३९<sup>०</sup>.  
 अ-दुष्ट,ष्टा- -ष्टम् शि ६, २०४; -ष्टा जाद २, ८.  
 अ-दुष्ट-कारण-जन्यत्व- -त्वात् सांसू १, ७९; ६, ५२.  
 अ-दूर- अदूर-गत-सादृश्य>)इया- -इया अन्न १, ५२.  
 अ-दूषयत्- -यन् नाप ४, १८; ५, ३०; शा ३०.  
 अ-दृढ- -ढाः मुं १, २, ७.  
 अ-दृश्य- -श्यः मै २, ५; ५, २; मैत्रि २, ५; ६, २; ब्रवि ८५<sup>०</sup>; -श्यम् हं २०; मं १, ३, ६; राउ ३, १; -श्ये तै २, ७, १.  
 अदृश्य-कर(ण>)णी<sup>१०</sup>- -णी १योत ७४.

अदृश्य-ता- -ताम् ते १, ५०.  
 अदृश्य-त्व- -त्वात् मै २, १०; मैत्रि २, ७.  
 अदृश्यत्वा(त्व-आ)दि-गुणक- -कः व्रसू १, २, २१.  
 अदृश्यत्वा(त्व-आ)दि-लक्षण- -णे कर २६.  
 अ-दृश्यमा(न>)ना- -ना अव्य १; सूता ३, ५.  
 अ-दृष्ट,ष्टा- -ष्टः वृ ३, ७, २३; वृउ ९, १२; १९; ब्रवि ८५; -ष्टम् प्र ४, ५; मां ७; वृ ३, ८, ११; वृषू ४, ७; वृउ १, १२; नाप ८, २०; अन्न ४, ५५; -ष्टाम् विद्या ४; -ष्टे सांसू ५, ५०; सांका ३०.  
 अदृष्ट-खेदा(द-अ)खेद- -दः महा ४, ३६.  
 अदृष्ट-स्व- -स्वात् व्रसू २, २, २६.  
 अदृष्ट-द्वार- -द्वारा सांसू ६, ६१.  
 अदृष्ट-वक्त्र- -क्तात् सांसू १, ३०.  
 अदृष्टा(ष्ट-अ)नियम- -मात् व्रसू २, ३, ५१.  
 अदृष्टा(ष्ट-अ)श्रुत-विविध-विविचित्रा- (त्र-अ)नन्त-विशेष- -वैः त्रिवि ६, ५.  
 अदृष्टो(ष्ट-उ)द्धृति- अदृष्टोद्धृति-वत् सांसू ६, ६५.  
 अदृष्टो(ष्ट-उ)भवन-कोटिक- -कम् अन्न ५, ८.  
 अदृष्टो(ष्ट-उ)क्लास- -सात् सांसू २, ३६.  
 अदृष्ट-पार-पर्यन्त- -न्ते महा ५, १६०.  
 अ-दृष्ट-गोचर- -रम् सार २५९ : ६.  
 अ-दृष्ट-पूर्व- -र्वम् गी ११, ४५; -र्वाणि गी ११, ६.

a) मा ३१, १८। b) लि ५, ८७, ६। c) ऋ ७, ३२, २२। d) 'अदृश्यः' इति अख्या.  
 पाने.। e) करणे व्युद् प्र. इ।

अ-दृष्ट-बाह्या(ह्य-आ)त्मन्-स्मा  
ते ४, ५५; ५६.

अ-दृष्टा वृ १, ४, १५.

अ-देय-यम् ते १, ११, ३.

अ-देव-वाः वृ ४, ३, २२; त्रिता  
५, १.

अ-देश-काल-ले गी १७, २२.

अ-देह-हाः महा ५, ४०.

अदेह-सुक्ति<sup>१</sup>.

अदेहसुक्त-स्व-स्वम् पै ३, ३;

महा २, ६३; यो ३, ३४; सु २,  
२, ७६.

अदेह-सुक्ति<sup>१</sup>.

अदेहसुक्ति-क<sup>२</sup>-के अज ४, १८.

अदो-मय-, अदो-वंश-अदस्-द्र.

अ-दोष-यः सांस् १, १२३; -षात्  
ब्रसू ४, ३, १५.

अद्-धा छां ३, १४, ४; मैत्रि १, १;  
वा ३; ६; ९; १०९<sup>०</sup>.

अद्भुत-०त् ९<sup>०</sup>व ४४१ : १०;  
४४६:१६; ४५१ : १०; ४५४:  
१६; -तः ब्रवि ८५; -तम् मना  
१, ४९<sup>०</sup>; कै १, ६; योच ११०;  
महा ५, ५८; अध्या ६५; जाद  
६, ४६; सार २३०:१०; २४८:  
३; २५७:६; पित्र ६, १९; गी  
११, २०; १८, ७४; ७६.

अद्भुत-कर्मन्-मैत्रिः ब्रवि १;  
१प्र ३० : ३.

अद्भुता(त-आ)त्मन्-स्मा आबो ९.

अद्भुता(त-आ)नन्दा(न्द-आ)अर्थ-  
विभूति-विशेषा(ष-आ)कार-  
-स्म त्रिवि ४, १.

अद्य क १, १, ५; १६; २, १,  
१३; छां ६, ४, ५; ८, ८, ५;

वृ १, ५, २३<sup>३</sup>; ३, १, ७-१०;

६, ४, ५९<sup>१</sup>; मना २, १२, २;

३९; १अव २८; वृजा ६, १; शु

१, ३; ११; आबो २२; राप् ४,

२५; महा ५, १३६; अज १,

३९; ५, ५८; वरा २, ६६;

५, ६०; सूता २, ६९<sup>०</sup>; ८९<sup>१</sup>;

११; ३, १०९<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>व ४४०:२२;

४४६ : ५; ४५१ : १; ४५४:

८; भव १, २३; ३८; ५, १७;

सांस् १, १५८; गी ४, ३; ११,

७; १६, १३.

अद्य-जा(त>)ता-ताम् नाप ३,  
६४.

अ-द्रष्टृ-धा छां ७, ९, १; मैत्रि ६,  
११; -ष्टारम् महा ५, ६३.

अ-द्रष्टृ-क-कम् महा ५, ५४.

अ-द्रि<sup>१</sup>-द्रयः महा ४, १३३; -द्रि  
लां २१६:१९; -द्रौ सार २७६:  
१६; १७.

अ-द्रि-जा-जाः क २, २,

२९<sup>१</sup>; मना २, १२, २९<sup>१</sup>; ४०९<sup>१</sup>;

वृप् ३, ६९<sup>१</sup>; नाप ५, १९<sup>१</sup>; त्रिता

४, २८<sup>१</sup>; २९<sup>१</sup>.

अ-द्रि-वत्-०वः व ४४९:  
१२९<sup>१</sup>.

अ-द्रेश्य<sup>१</sup>-द्रयम् मुं १, १, ६; रुह  
३१; पाशु २, २८.

अ-द्रोह-हः गी १६, ३.

अ-द्रोहिन्-ही जा ५; नाप ७;  
पप ४१९ : ७; या २, १.

अ-द्रुद्ध-न्द्रम् महा ४, ७०; अज  
४, २९; कठ ३४; रुह २६;  
वरा २, २०.

अ-द्वय,या-यः गौ २, ३५; नृउ

८, १; ९, ८; १३<sup>१</sup>; ते ६, ६०;

ब्रवि ८२; ८९; आबो ९; २०;

३०; अज २, २१; कुं २६; १आ

१; -यम् कै १, १९; गौ ३,

३०<sup>३</sup>; ४, ४५; ६२<sup>३</sup>; ८०;

८५; वृउ ८, ५; ९, १६; १७<sup>३</sup>;

१८; २०; ते १, २४; २६;

३, २६; ५, २७; ७८; ६, ३९;

४९; आबो ११; नाप ३, २०;

मं ३, १, ३; वा २७; अध्या

२१; ६३; कुं २७; जाद ४,

६०; ९, ३; पं ३३; गोउ ४१;

वरा २, २१<sup>०</sup>; ३, २; ६<sup>३</sup>; ८;

मु २, २, ७३; -या गौ ४,

७७; -ये वृउ ९, ९; या २, ३;

-येन गौ २, ३३<sup>३</sup>; वृउ ९, १४.

अद्वय-कुञ्जरा(र-आ)कृति-ति:

हे ६.

अद्वय-ता-ता गौ २, २३.

अद्वय-तारको(क-उ)पनिषद्-

-षदम् अता १.

अद्वय-पर-ब्रह्म-विहार-मण्डल<sup>१</sup>-

-लम् त्रिवि ७, २०.

अद्वय-ब्रह्म-रूप-पेण आबो १३<sup>१</sup>.

अद्वया(य-आ)नन्द-न्दः नृउ ९,

८; त्रिआ १, २<sup>१</sup>.

अद्वयानन्द-मात्र-त्रः ते ६,

६५.

अद्वयानन्द-विज्ञान-घन-नः

पहं २; ब्रवि ८९.

अ-द्वितीय,या-यः नृउ ९, २; मैत्रे

१, ४, ११; मं २, ४, ४; वरा २,

६५; -यम् छां ६, २, १<sup>३</sup>; २; कै

२, ४; मैत्रे २, १५; नि १३; शु

१, १८<sup>३</sup>; ३, ५; वसू २२; २९;

a) यद्वा 'देयम्' इति पदं द्र. (तु. दि. आन.)। b) निसा. आदावकारः संकेतनीयः। c) अ ३, ५४, ५। d) अ ८, २६, २१। e) मा ३२, १३। f) तैआ १, ३०, १। g) खि १, ५०, २। h) अ १, ५०, ११। i) तैआ ३, ७, १, २१। j) अ १, २५, १९। k) तु. वैप १, १०२ टि K.। l) ऋ ४, ४०, ५। m) अ ८, ६४, १। n) उप. < √ 'द्रेक्ष' [= √ द्रक्ष (तु विष्. IHO १७, ८९)] यद्र.। o) 'अव्ययम्' इति अज्या. पाप्मे.। p) 'परंब्रह्म' इति मुपा. कु-सोचः द्र.। q) 'द्वयानन्दरू' इति अज्या. पाप्मे.। r) 'अद्वयः' इति निसा. पाप्मे.।

ते ३, ३९; त्रिवि ३, २; ४, १;  
३; ७, १७; शां २, १; पै १, ३;  
योशि १, ९०; अघ ५, ६४;  
त्रिता १, ४१; गोउ ४०; सि ६,  
११; व १४; -यस्य रापू १,  
७; -ग्राम् त्रिवि ६, २१; -याय  
गोपू ४२; -ये नि ३०; अध्या  
२४; १आ ३०.  
अद्वितीय-स्व- स्वात् नृउ ८, ५.  
अद्वितीय-परमानन्द-शुद्ध-बुद्ध-  
मुक्त-सत्यस्वरूप-व्यापका-  
(क-अ)भिन्ना(न-अ)परिच्छिन्न-  
-त्तम् त्रिवि १, ५.  
अद्वितीय-पर-संविद्(द-अ)ज्ञा-  
अद्वितीयपरसंविदंश-क- -कम्  
वरा ३, ८.  
अद्वितीय-ब्रह्म-तत्त्व- -त्वम् वरा  
२, ५७.  
अद्वितीय-ब्रह्म-संविद्धि- -त्तिः व  
१०<sup>b</sup>.  
अद्वितीय-भाव- -वः वरा २, २३.  
अद्वितीय-स्व-भाव- -वः, -वम्  
पित्र ४, ४.  
अद्वितीय(य-अ)खण्ड(राड-आ)-  
नन्द-ब्रह्म-स्व-रूप- -पम्  
त्रिवि ४, १.  
अद्वितीय(य-आ)त्म-चैतन्य-  
वृन्त- -न्तैः सि ६, १९.  
अ-द्वितीयक- -कः ते ५, ६६.  
अ-द्वेष्टृ- -ष्टा गी १२, १३.  
अ-द्वैत, ता- -तः मां १२; वृ ४, ३,  
३२; गौ १, १०; वृउ २,  
१०; त्रिवि ८८; अन्न ५, ७६;  
पाशु २, २०; -तम् मां ७; गौ  
१, १६; १७; २, १८; ३६; ३,  
१८; वृपू ४, ७; वृउ १, १२;

६, ३; मन्त्रि १५; ते ५, २७;  
३७; ६, १; नाप ८, २०; त्रिवि १,  
५; राउ ३, १; योशि ५, ५९;  
१संन्या २, ९६; पप ४२० : ६;  
पाशु २, २०; रुह ४७; म १, १;  
२, ३; १८; जाद १०, ३; पं ३४;  
अद्वै १; १८; चू १५; सांमू १,  
१५७; ५, ६१; -ता महा ६, ६२;  
सर २, २; -ताम् विद्या ४; -ते  
गौ २, ३६; पदं ३; अक्षि ३१;  
३८; वरा २, ७०; ४, १२; १७.  
अद्वैत-ग्रन्थि- -न्थिः पाशु १, १४;  
-न्थिम् पत्र २.  
अद्वैत-ज्ञान(न-आ)दि- -दीन्  
कालि ४०२ : ९.  
अद्वैत-स्व- स्वात् नृउ ७, २.  
अद्वैत-निष्ठा-पर- -रः तुअ २३.  
अद्वैत-परमा(म-आ)नन्द- -न्दः  
त्रिवि १, ११; राउ ४, १; ५, १;  
-न्दम् त्रिवि ७, ५०.  
अद्वैतपरमानन्द-लक्षण- -णस्य  
त्रिवि २, १४.  
अद्वैतपरमानन्दलक्षण-पर-  
ब्रह्मन्- -ह्म त्रिवि ८, १९<sup>d</sup>;  
-ह्मणः त्रिवि २, १३<sup>e</sup>; ७,  
२०<sup>f</sup>; ८, २.  
अद्वैत-पुरुष- -पस्य अद्वै १; ९.  
अद्वैत-भावना- -ना मैत्रे २, १०;  
-नाम् अद्वै भा १.  
अद्वैत-मात्रक- -कः अक्षि ३४;  
-के वरा ४, १४.  
अद्वैत-योग- -गम् त्रिवि ८, ५.  
अद्वैत-रूप- -पः काम १६; -पम्  
पै ४, ११.  
अद्वैतरूपिन्- -पिणे नाउ २, ४.  
अद्वैत-वाद- -दम् योशि ५, ५९.

अद्वैत-शिव-रूत्रक- -काः सि २, १२  
अद्वैत-श्रुति-विरोध- -धः सांमू  
१, १५४.  
अद्वैत-संस्थान- -नम् त्रिवि ७,  
१६; १७.  
अद्वैत-सदा(दा-आ)नन्द- -न्दः  
निर्वा २९८ : ७.  
अद्वैत-स्व-रूप- -पम् त्रिवि ४, २.  
अद्वैता(त-अ)खण्ड-परिपूर्ण-निर-  
तिशयपरमानन्द-शुद्ध-बुद्ध-  
मुक्त-सत्याऽऽत्मक-ब्रह्म-चैत-  
न्य-साकार-  
अद्वैताखण्डपरिपूर्णनिरतिशय-  
परमानन्दशुद्धबुद्धमुक्तसत्यात्म-  
कब्रह्मचैतन्यसाकार-स्व- स्वात्  
त्रिवि २, ८.  
अद्वैता(त-आ)त्म-दर्शन- -नम्  
अध्या १७.  
अद्वैती✓भू  
अद्वैती-भूत- -तम् मै ५, ७;  
मैत्रि ६, ७.

✓अध्

अध्वन्<sup>१</sup>- -ध्वनः क १, ३, ९; भव  
२, १२; -ध्वना त्रिता १, ४०;  
२, १५; ४, १६; ३१; -ध्वनाम्  
वृ २, ४, ११; ४, ५, १२;  
-ध्वनि इ १० : १४; -ध्वसु  
गौ ४, २७; इ १२:८; -ध्वा  
नाप ५, २०; -ध्वानम् छां ५,  
१०, ५; वृ ४, २, १; इ १३:  
१९; १४: ५; १३<sup>१</sup>.  
अध्व-ग- -गैः महा ५, ७२.  
अध्व-भेद- -दात् योसू ४, १२.  
अध्वर<sup>२</sup>- -रे ए १०; -रेण पा १०,  
४; -रेषु मना २, १५<sup>b</sup>; व  
४६१ : १६.

- a) 'परसंविदंश-' इति निसा. मूको. पाभे.। b) 'तीया ब्रह्म-संविद्धिः' इति द्विपदात्मकः अज्या. पाभे.।  
c) 'नन्दनिरन्तर-' इति निसा. समस्तः पाभे.। d) 'लक्षणं परब्रह्म' इति द्विपदः निसा. पाभे.। e) अत्रैकतरत्र  
नाउ. रु. च 'परं' इति अज्या. पाभे. यनि. शोधः द.। f) तु. यक. वैप १, १३० टि a, b, g.।  
g) 'अध्वानगते' इति मुपा. यनि. द्विपदात्मकतया सु-शोधः द.। h) ऋ ८, ११, १०।



✓अध्वर्युः

अध्वर्युः<sup>१३</sup>—यवः सु३;  
—युः तै १, ८, १; छां ४, १६,  
२; वृ ३, १, ४<sup>३</sup>; ८; मना २,  
८०<sup>१३</sup>; कौ २, ६; पाशु १, ११;  
२९<sup>३</sup>; प्रा ३, १; ४, १; वा १५;  
गु २९; —युणा वृ ३, १, ४.

अध, धा ऐ ४, ५<sup>०</sup>; व ४६०: ११<sup>१३</sup>.

अधन्य—न्यस् वरा ५, ३६.

अधम, अधर—अधस्—द्र.

अधर्मे—र्मः छां ७, २, १; नाद २;  
पाशु २, २३; कौल ११; आश्र ४;  
गी १, ४०; —र्मस् छां ७, २, १;  
७, १; ते ५, १३; महा २, ५२;  
१संन्या २, १२; इ ११: १०;  
गी १८, ३१; ३२; —र्मस्य गी  
४, ७; —र्मोः सार २८१: १७;  
—र्मो क १, २, १४; —र्मोय  
मना २, ६७; —र्मोण सांका ४४.

अधर्मे-कारणा(य-अ)ज्ञान—नस्  
कौल १०.

अधर्मे-मय—यः वृ ४, ४, ५.

अधर्मो(र्म-अ)भिभव—वात् गी १,  
४१.

अधर्मे-शील—लाय अव्य ७.

अधस्<sup>१४</sup>—धः प्र १, ६; मुं २, २, ११;  
वृ ३, १, ८; ६, ४, २<sup>३</sup>; स्वे  
५, ४; मै ४, ३; मना २, १३,  
२; ना २; अना २३; अशि १,  
४; वृष १, ७<sup>३</sup>; वृजा २, ६; ते  
६, ८३; व्या ४७; ५०; ५८;  
नाप ४, ७; त्रिवा २, ४५; ६६;  
शां १, ३, ८; १, ४<sup>३</sup>; १, ७, १३;  
१५; ३७; महा ५, १५६; ६, १०;  
शारी ५; योशि १, १०८; १२६;  
६, १५; ३५; ५१; १संन्या २,  
८९, ९४; अथ ४, ९; योचू १०;

१४; २८; ३०; ४९; १अव ४;  
त्रिता १, ६३; ६७; दे १; यो  
२, ३४; ३६; भजा १, ६;  
जाद ३, ७; ४, २; ११; १८;  
६, ३९; त्रि ११; शा २०; सु  
२, २, ७४; अद्वै ९; सूता ३, ८;  
सार २२२: २३; २६६: ११<sup>३</sup>;  
शि ४, १४; १८; ५, ४६; ६,  
१४५; गार ४०६: ८; गु ६४;  
अद्वैभा १७; गी १४, १८; १५,  
२; —धः-धः महा ५, ९३.

अध(स्)>:-पुण्य—व्यस् ध्या  
३३.

अध(स्)>:-पूर्ण—र्णस् सु २,  
२, ५६.

अध(स्)>:-शक्ति—क्ते: योरा  
२१.

अधःशक्ति-मय<sup>१५</sup>—यः वृजा  
२, ५.

अध(स्)>:-शास्त्र—स्त्रस् योशि  
६, १४; गी १५, १.

अध(स्)>:-शायिन्—यी मना  
२, १३, २.

अध(स्)>:-शिरस्—रः १योत  
१२४.

अध(स्)>:-स्तम्ब—स्त्वेन मैत्रि  
७, ८.

अधस्तन—नस् त्रिवि १, ११.

अधस्तन-पाद—दे त्रिवि  
२, १४.

अधस्तात् ऐ १, २; छां ४, १, ८;  
७, २५, १<sup>३</sup>; २; वृ १, ४, ११;  
वृजा २, ७<sup>३</sup>; मैत्रि ६, ३०; ७, ६;  
सुवा १; अशि ४, ७; शां १, ७,  
१२; ३, १; योशि १, १११; त्रिता  
३, ५; यो १, ५२; २, ३५; प्रा २,  
१; वरा ५, २०; वट्ट ३१५: २२;

व ४४२: २२; ४४८: ६;  
४५२: १३; सांका ४४.

अधो(<धस्-अ)क्ष-

अधोक्ष-ज—जस् त्रिवा २,  
१५३; —जाय त्रिवि ७, ४१.

अ(धस्)>धो-ग(त)>ता—ता  
त्रिवा २, ७३; —ता: योशि  
५, २६.

अ(धस्)>धो-गति—तिस् यो  
१, ४२; ६३.

अ(धस्)>धो-गामिन्—मि  
योचू ५०.

अधोगामि-न(भस्)>भो-  
जल—लस् ध्या ७७.

अ(धस्)>धो-द्वार—रस् व  
४२८: ३.

अधो(<धस्-उ)पहास<sup>१६</sup>—सस्  
वृ ६, ४, ३<sup>३</sup>; ४.

अ(धस्)>धो-बिन्दु—न्दु:  
१योत १३८; २योत १, ९.

अ(धस्)>धो-भाग—गस् शि  
६, १५०; —गो सी १९; योशि  
५, २९; शि २, ५.

अ(धस्)>धो-मुख, खा—ख:  
योचू ७३; ७८; योशि ५, ३३;

—खस् मना २, १३, २; ब्र  
३, १२; ध्या ३३; १योत  
१३७; २योत १, ९; महा १,  
१; सौ ३, १; योरा १०; च  
२१: २; —खा: योशि ५, २६.

अधोमुखी<sup>१७</sup>—खी योशि  
५, २५.

अ(धस्)>धो-या(त)>ता—  
ता त्रिवा २, ७४.

अधो(<धस्-ऊ)र्ध्व<sup>१८</sup>—

अधोर्ध्व-ग>गा—गा शां  
१, ४.

a) तु. यक. वैप १, १३२ टिप्प. n. 1 b) तैत्ति १०, ६४, १। c) 'अधः' इति यनि. सु-शोधः  
द. (तु. ऋ ४, २७, १)। d) ऋ १०, ८३, ७। e) तु. वैप १, १३५ टिप्प. f) 'अधोशक्ति' इति निस्सा.  
पाणि. g) संक्षिप्तः द. h) अत्र स्त्री. वैचक्षणिकः ङीष् प्र. (पा ४, १, ५४)।

अधोर्ध्व-रजस्- -रजः यो  
१, ७५.  
अ(धस्>)धो-लिङ्ग- -ङ्गम् त्रिवि  
८०.  
अधम, मा- -मः त्रित्रा २, १०४;  
जाद ६, १४; रु ३; छाग २४;  
१; -मम् रुजा १, ७; २०; -मा  
मैत्रे २, २१; -माम् गी १६,  
२०; -मे त्रित्रा २, १०६; योचू  
१०४; १०५.  
अधमा(मा-अ)धमा- -मा मैत्रे  
२, २१.  
अधर, रा- -रः व ४६४: १५९<sup>०</sup>;  
-रया वृ २, २, २; -रा तै १, ३,  
४; -रान् सूता ३, ११९<sup>०</sup>.  
अधरा(र/अ)न्च्  
अधरा(र/अन्च्>)च्- -राक्  
छां ६, १४, १.  
अधरात्  
अधरात्ता(त्-ता)त् सू  
२३९<sup>०</sup>; ग ४.  
अधरो(र-उ)त्तर-भाग- -गेन  
शि ६, १४९.  
अधर<sup>१</sup>-  
अधर-संयुत- -तः दे १४.  
अ-धार्मिक-  
अधार्मिक-नृपा(प-आ)क्रान्त- -न्ते  
शि ७, ८६.  
अधि के १, ३; क २, ३, ७; ऐ ४,  
३<sup>१</sup>; तै १, ४, ११; छां ५, २,  
३; ६, २, ३; ४; वृ ६, ४,  
१९<sup>०</sup>; मना १, १९<sup>१</sup>; २९<sup>०</sup>;  
१३९<sup>०</sup>; १४९<sup>१</sup>; १५; राउ ५,  
२९९<sup>१</sup>; नृपू ४, ९९<sup>१</sup>; वृजा १,  
१९<sup>१</sup>; ६, १२९<sup>१</sup>; प्रा ४, १; यु

५३९<sup>१</sup>; व २३९<sup>१</sup>; कौ २, ८;  
११९<sup>०</sup>; नाप ४, ३८; अशि  
६, ७९<sup>१</sup>; महा १, १; बा ११;  
नापू ४, ९९<sup>१</sup>; नी १, २; वसू  
१, ३, ८; ४, ३, ३.  
अधि-क, का<sup>१</sup>- -कः ते ४, १६; ६,  
२६; त्रित्रा २, ५४; श २९;  
योशि ५, ५६; अव्य ५<sup>१</sup>; सार  
२२०: २; रु १७; गी ६, ४६<sup>१</sup>;  
-कम् वृजा ३, २२; अ ३; १योत  
१२५; नाप ३, २८; सी २८;  
योशि ३, १३; सार २२१: २;  
२७८: १; शि ५, १३; व ४६५:  
११; वसू २, १, २२; गी ६, २२;  
-कस्य नाप ३, २९; सार २२१:  
६; -का गु ६७; -कानि हं ११;  
वरा ५, ३; -केन अज ४, ७६; ७७.  
आधिक्य<sup>१२</sup>- -क्ये गौ ३, १०.  
आधिक्य-सिद्धि- -द्धिः सांसू  
१, ८७.  
अधिक-तर- -रः श १; गी १२, ५.  
अधिकतर(र-अ)भ्यास- -सात्  
१योत ५३; ५४; ५८.  
अधिक-ता- -ताम् महा ५, १६९.  
अधिक-तेजस्- -जसः वृजा ६, ५.  
अधिको(क-उ)पदेन- -सात् वसू  
३, ४, ८.  
अधि/क, अधिकुर्वन्ति सार २६४:  
१९.  
अधि-करण- -णे सार २२२: ४;  
-णेषु तै १, ३, १.  
अधि-कार- -रः मैत्रे २, १८; नाप ५,  
१; रार ५, १५; १अव १३; गी  
२, ४७; -रात् वृजा २, १३; वसू  
३, ३, ३; -राव वृजा २, १२.

आधिकारिक<sup>१३</sup>- -कम् वसू  
३, ४, ४१; -काणाम् वसू ३,  
३, ३२.

आधिकारिक-मण्डल-  
स्थो(स्थ-उ)क्ति- -क्तेः वसू  
४, ४, १८.

अधिकार-विशेष- -वेण नाप ७.  
अधिकारिन्- -रिणः नाप ३, १;  
१संन्या २, ३; १अव १३; म १,  
१; -रिणाम् त्रिवि ८, ११.

अधिकारि-त्रैविध्य- -ध्यात्  
सांसू १, ७०; ६, २२.

अधिकारि-प्र-भेद- -दात्  
सांसू ३, ७६.

अधि-कृत- -तम् सार २२७: ४;  
-ताः नाप ३, ८४; व ३, ४;  
पत्र ३, ८; -तान् प्र ३, ४.

अधि/रक्षि, अधिक्षियन्ति नृपू २,  
१३९<sup>०</sup>; सुबा २९<sup>०</sup>; नापू ४,  
११९<sup>०</sup>.

अधि/क्षिप्

अधि-क्षिप्त- -प्तः शि ५, ३९.

अधि/गम्, च्छु, अधिगच्छति क १,  
३, ७; मैत्रि ६, २२; त्रिवि १७; पै ४,  
१६; १संन्या २, ६; अक्षि १४;  
त्रिता ५, १७; गोउ ३०; ६०; इ १३:  
१९; भव १, ३४; अवि १७; गी  
२, ६४; ७१; ४, ३९; ५, ६; २४;  
६, १५; १४, १९; १८, ४९.

अधिगम्यते मुं १, १, ५.

अधि-गत-

अधिगत-आच्य- -च्यः अक्षि  
१२<sup>१०</sup>.

अधि-गम- -मः मै ४, ३.

अधि-गम्य<sup>१४</sup> पप ४१८: ३.

a) तैत्रा ४, ३८, १। b) तैत्रा ३, ७, ९, २१। c) ऋ १०, ३६, १४। d) १संन्याकाद् वृत्तिसा-  
म्वेऽपि संज्ञाविशेषत्वात् पृथक् निर्देशः। e) मंत्रा १, ५, १६। f) ऋ १, १६४, ३९। g) मा ३२, २। h) ऋ  
१०, १९०, १। i) ऋ १०, १९०, २। j) शौ १०, २, २६। k) ऋ १०, ७१, २। l) कम् प्रत्ययः (पा ५,  
२, ७३)। m) भावार्थीयः प्यञ् प्र. (पा ५, १, १२४)। n) तात्रनियुक्तिकम् ठक्>इकः प्र. (पा ४, ४, ६९)।  
o) ऋ १, १५४, २। p) 'अधिगतश्चाम्यः' इति निसा. पाप्मे. सु-शोधः द.। q) 'अधगम्य' इति अज्या. पाप्मे.।

अधि/गा, अव्ययीष्ठाः छां ७, १, ३.

अधि-ज्य- -ज्यम् वृ ३, ८, २.

अधि-ज्योतिष- -षम् तै १, ३, १; २.

अधि-तत्-स्थान- -नम् सार २५३: २२.

अधि-तन्म(त-म)ण्डल- -लम् सार २७४: ६.

अधि-त्यका- -कासु सार २२२: १२.

अधि-देव-

आधिदैविक- -कः सार २४१: १७; २५९: १५; -कम् सार २२४: १४; १७; २४६: ७; २७२: १३; -काः सार २२१: १५; २४१: १७; -कानि त्रित्रा १, ८; सार २५५: ३; -केन सार २२४: १५; २२८: ९; २३३: ७; २६३: १९; २६४: ११; २७२: १; १२; १७; २८०: १७.

आधिदैविकी- -की सार २२१: २३; २४५: २१; -कीम् सार २२१: २२; २२४: १०; २४१: १६; २५४: २१; २५५: १३.

आधिदैविक-रूप- -पाः सार २५५: ६; -पेज सार २४६: ४.

आधिदैविक-विग्रह- -हे यो १, ७७.

अधि-देवता- -ता योशि १, १७७; ५, १३; १४; १५; अक्ष १; जाद ४, ३६; -ताः वृजा ४, १९.

अधि-दैव- -वम् सर २, ४; ते ६, ९; गी ८, १.

अधिदैव-स्व- -स्वम् मैत्रि ४, ४.

अधिदैवा(व-आ)दि- -दिषु त्रसू १, २, १२.

अधि-दैवत- -तम् के ४, ४; छां १,

३, १; ५, २; ६, ८; ३, १८, १९; २; ४; ३, २; वृ १, ५, २२; २, ३, ३; ३, ७, १४; कौ २, १२; ४, ९; सुबा ५<sup>१५</sup>; गी ८, ४.

अधि-ना(य)था- -थाः त्रि २.

अधि-पति- -तयः योचू ७२; -ति:

छां ५, २, ६; वृ १, ३, १८; २, ५, १५; ४, ३, ३३; ४, २२; ५, ६, १; ६, ३, ५; मै ४, ५; ५, ५; मैत्रि ५, २; वृषू १, १२; मना २, १५, २१; अव्य ६; पा १, १; ह ९; शि ६, १४; पित्र ३, ४; ५; -तिम् वृ ६, ३, ५, -तिषु पित्र ३, ४; -तौ पित्र ३, ५.

आधिपत्य- -त्यम् छां ३, ६- १०, ४; ५, २, ६; कौ ४, २०; अव्य ६; गी २, ८; -स्याव अव्य ६.

अधिपति-व(त)ती- -ती मैत्रि ६, ५.

अधि/रपा

अधि-प- -पः श्वे ४, १३; ६, ९; गु ६८; भव २, ४४.

अधि-पा- -पाः व ४६०: २१९<sup>d</sup>.

अधि-प्रज- -जम् तै १, ३, १; ३.

अधि-प्रज्ञ- -ज्ञम् कौ ३, ८.

अधि-भूत- -तम् तै १, ७, १; वृ ३, ७, १४; कौ ३, ८; सुबा ५<sup>१५</sup>; ते ६, ९; गी ८, १; ४.

आधिभौतिक- -काः सार २५९: ११; -कानि त्रित्रा १, ८.

आधिभौतिक-देह- -हम् यो १, ७७.

अधि-मात्र- -त्रम् मां ८.

अधि-यज्ञ- -ज्ञः गी ८, २; ४.

अधि/रुह, अधिरोहति महा ५, ९६.

अधि-लोक- -कम् तै १, ३, १; २.

अधि/वच

अध्युच्यते कश्चु ३, १९<sup>०</sup>; कुं ९.

अधि/वस् > वासि, अधिवसति

त्रिता ५, २१; सार २५६: ५.

अध्युवास-अध्युवास अव्य १.

अधिवासयेत् शि २, २३.

अधि-वास- -सः सुं १, २, ५.

अधि-वासित- -तम् सांका ४०.

अधि/रवह

अध्यु(धि-ऊ)ढ- -ढम् छां १, ६, १<sup>३</sup>-५<sup>३</sup>; ७, १<sup>३</sup>-४<sup>३</sup>.

अधि-विद्य- -द्यम् तै १, ३, १-३.

अधि-वि/घा

अधिवि-घाय तै १, ७, १.

अधि/रुही, अधिशेते वृ ३, १, ८<sup>३</sup>.

अधि/श्रि

अधि-श्रित,ता- -तम् सार २२५:

४; -ताः श्वे ४, १३; सार २२५: ५.

अधि-श्रित्य भ २: १५.

अधि/रुषु(<सु)

अधि-षवण- -णे वृ ६, ४, ३.

अधि/पृष्ठा(<स्था) > तिष्ठ, अधिति-

ष्ठति श्वे १, ३; ४, ११; ५,

२; ४; ५; अशि ४, ११; ५, ५;

नाप ९, २; योशि ६, ३८; भ २,

१९; वट्ट ३१६: २; शि ४, ३१;

अधितिष्ठतः छां ५, १९, २;

२१, २; २२, २; २३, २; अधि-

तिष्ठन्ति छां ५, २०, २;

शि ४, १०; अधितिष्ठत् पा

१०, ३; अधितिष्ठस्व प्र ३, ४;

अधितिष्ठेत् अव्य ६; शि ७,

५१.

अधि-प्रातृ- -ता भ २, ११.

अधिप्रातृ-स्व- -स्वम् सांसू १,

९६; ९९.

a) अस. इति कृत्वा वा. क्रिवि. इ.। b) आस्टेड्यै त्यक्त् प्र. (पा ५, २, ३४)। c) तात्रम-  
विकः ठगु > हकः प्र. (पावा ४, ३, ६०)। d) ऋ १०, ८४, ५। e) शौ ११, ८, ३४।



अधि-ष्ठान- -नम् छां ८, १२, १;  
महा ४, ८६; अज ४, ३५;  
अध्या ८; पाशु २, २८; रु ४८;  
वरा ५, ५५; ब १५; सार २२५;  
१०; २४५:६; २६०:४<sup>३</sup>; ५; ६;  
सांसू ५, ३; गी ३, ४०; १८,  
१४; -नात् सांसू १, १४२; ५,  
११४; सांका १७; -ने अज ४,  
१०; नाद २८; सांसू २, २३.

अधिष्ठान-विशेष-

अधिष्ठानविशेष-निरति-  
शया(य-अ)हित-परमानन्दलक्ष-  
ण-पर-ब्रह्म-विलास-विग्रह-  
-हः त्रिवि २, १५.

अधिष्ठाना(न-अ)नु(न-उ)पप-  
ति- -त्ते: ब्रसू २, २, ३९.

अधि-ष्ठाय पै १, १७; २, २५; २७;  
त्रि १; राधा ३, ७; गी ४, ६;  
१५, ९.

अधि-ष्ठित, ता- -तः गोउ ३३;  
-तम् त्रिवि ६, ५; ७, २;  
२०<sup>३</sup>; सि १, ७; त्रिता २, ५०;  
५२; ५४; ५६; ५८; ६२; ६४<sup>३</sup>;  
६६; रा ३, १; मन्त्रि ४; -ता  
त्रिता १, ६०; चू ४; -ता: श्वे  
१, १; -तानि त्रिपा ६, ७;  
त्रिवि ६, ७.

अधी(धि/इ), अध्या(धि/१आ)पि,  
अधीते मुं ३, २, ११; छां ७,  
३, १; १४, १; कै २, ५; ना  
१-४; अशि ७, १; वृजा ८,  
१-४; ५<sup>१३</sup>; नृपू ५, १२-१६;  
१८<sup>१५</sup>; काला २२; नि ५६; शु  
३, २३; १योत १३५; २योत १,  
७; द २१; त्रिवि ८, १९; रार  
५, १७; राउ १, २; ५, ४; बा  
३८; ४२; मुद्र ४; पै ४, २३;  
महा ६, ८३; अव्य ७<sup>३</sup>; अज

५, १२०; अक्षि १; १अव ३३;  
त्रिता १, २१; ५५; ३, ३; ५;  
दे २०; रुजा ३, १; ग १६;  
१८; ता ३, ९; मवा १२; पं  
२६; वरा ५, ७६; दत्ता ३; सौ  
३, १; इ १०: २; ६; च २१:  
७; चा १३; नाउ ३, ६; नृष  
८५: १५; मु २९५: ३; वि ३३;  
वदु ३१८: ३; हे १४; गार  
४०८: १३; श्या १९; आश्र १;  
अध्येति छां ५, ११, २<sup>०</sup>; ४;  
ना ३; अधीयते २प्र ३६: १८;  
२०; २२; ३७: १; सार २४६:  
१०; ब्रसू १, २, २०; २६; ४, ९;  
२, ३, ४३; अधीयन्ते २प्र ३६:  
११; अध्येति क १, १, १३; छां  
५, ११, ६; अध्येमि छां ७, १,  
२<sup>३</sup>; अधीमहि २प्र ३५: २३;  
अधीमः श्वे १, ५; नाप ९,  
४; अधीहि तै ३, १-५, १; छां  
७, १, १; वृजा ७; ७; ९; कै १, १;  
काला ३; वा १ शां २, १; करु  
१, म १, १; रुजा ३, १; वरा  
२, १; ह १; सूता १, २; ऊ ६३:  
१; का १; तार १; वि १; हे १;  
कथु २, २; अधीध्वै छाग  
२३: ३; अधीयीत मैत्रि ७,  
१०; २शिसं २७; शि ७,  
२५; ६१; अधीयीय छां ७,  
३, १.  
अधीयुः शा ५; अध्येष्यते गी  
१८, ७०; अध्येष्यति त्रिवि ८,  
२२.  
अध्यापयन्तु १अव १३; अध्या-  
पयेत् नाप ५, १; शि ७, ६३.  
अधी(धि-इ)त- -तः काला १९; पै  
४, २३; दत्ता १, ७; नृष ८५:  
१५; गार ४०८: १७; श्या ७;

-तम् क शां<sup>३</sup>; २, ३, १९;  
तै शां<sup>३</sup> २, १, १; इते कै  
गर्भ ना मना व अना काला  
नु ससा शु ते ध्या त्रिवि १योत  
द स्क शारी ए अक्षि १अव  
करु रुह यो पं प्रा वरा कलि हे  
शां<sup>३</sup> वृजा ५, ७; योशि शां<sup>३</sup>; २, ४;  
१प्र ३०: २९<sup>७</sup>; व ४६६: १७<sup>७</sup>;  
१७; -तेन<sup>७</sup> ऐ कौ नाद आनो  
सौ सर ब निर्वा मुद्र अक्ष शां<sup>३</sup>.

अधीत-वेद- -दः वृ ४, २, १.  
अधी(धि-इ)त्य छां ६, १, २; ८,  
१५, १; अना १; अ ३; कौ १,  
१; नाप ५, १; निर्वा २९८: १६<sup>३</sup>;  
कुं १; करु १, मु १, २, ६; २,  
२, ६५; सार २३४: २२;  
कथु २, ३.

अधी(धि-इ)यान, ना- -नः छां ८,  
१५, १; ना ५<sup>३</sup>; त्रिता ४,  
३०; दे २२<sup>३</sup>; म १, ११; रुजा  
३, १<sup>३</sup>; ग १६<sup>३</sup>; मवा १२<sup>३</sup>;  
नाउ ३, १०; सिशि ३८३:  
१३<sup>३</sup>; गार ४०८: १५; तारा  
८३: ५; अक्ष १६<sup>३</sup>; दत्ता १,  
६; सं २१<sup>३</sup>; -ना तारा ८३: ८;  
-ना: वृ ३, ७, १; आश्र २<sup>३</sup>.

अध्य(धि-अ)यन- -नम् छां २, २३,  
१; नाप ३, ७७; सांका ५१.

अध्ययन-मात्र-

अध्ययनमात्र-वत्- -वतः

ब्रसू ३, ४, १२.

अध्ययन-कील- -लः नाप ३,  
७३.

अध्या(धि-आ)पक- -कः मुद्र ४, १.

अध्या(धि-आ)पयत्- -यन्तः आश्र  
२<sup>३</sup>.

अध्या(धि-आ)पित- -ता: शा ३५.

अध्या(धि-आ)य- -यै: शि ७, १४०.

अ) 'अध्येति' इति निसा. पामे. । b) तैजा ८, १, १। c) तु. सा. ऐजा. (२, ७, १) यदनु  
आ/चै>आ-धीत->'आ-धीतेन' इतीव पदच्छेदः स्यात्।

अध्यायक<sup>१</sup> - कः तै २, ८, १.  
 अध्ये(धि-ए)तय्य- व्यः नाप ५, १.  
 अध्ये(धि-ए)तृ- ना मुद्र ४.  
 अधीत-, अधीत्य- अधी(धि/इ) द्र.  
 अधी(धि-इ)न- नम् पं ७.  
 अधीयान- अधी(धि/इ) द्र.  
 अधी(धि-ई)श- नाः रशिसं १८; स  
 ३७८: १०.  
 अधुना शु ३, ५; रापू ४, २४; ४०;  
 ५७; महा ५, ५८; योशि १, ७९;  
 अध्या ६५; १अव ९; कृ ३;  
 सार २५८: ३; पा १०, ४;  
 गु ७९.  
 अधुना-त(न>)नी- नीम् सार  
 २४४: २.  
 अधूम-  
 अधूम-ज्योति(?)ती- रूपक- कम्  
 पै ३, १०; यो ३, २६.  
 अधूमक- कः क २, १; १३; मै १, १;  
 मैत्रि १, २; मैत्रे १, १; -के मैत्रि  
 ६, १७.  
 अधृति- ति: वृ १, ५, ३; मैत्रि  
 ६, ६०.  
 अधेनु- नुम् सि ७, ८१.  
 अध्य(धि-अ)क्ष- अक्षः मै ५, १; -क्षे  
 वम् ४, २, ४; -क्षेण गी ९,  
 १०.  
 अध्य(धि-अ)क्षर<sup>२</sup> - रम् मां ८.  
 अध्ययन- अधी(धि/इ) द्र.  
 अध्याधि/अधृ, अध्याधौव वृ ३,  
 १, ९.  
 अध्य(धि-अ)धै- धै: वृ ३, ९, १;  
 ८; ९.  
 अध्याधि(अ)व/सो>सा, अध्याव-  
 स्यते निह १, १४.  
 अध्याव-साय- यः क ६; वरा १,  
 १३; कथु ३, ६; सांस् २, १३;

सांका २३; -यम् आपै ९: ११;  
 -यस्य मैत्रि ६, ३०.  
 अध्यवसाय-संकल्पा(ल्प-अ)-  
 भिमान- ना: मैत्रि ६, १०.  
 अध्यवसायसंकल्पाभिमान-  
 लिङ्ग- ङ्गः मैत्रि ६, ३०.<sup>१</sup>  
 अध्यवसाया(य-आ)त्म-बन्ध-  
 न्धम् मैत्रि ६, ३०.  
 अध्य(धि/२अ)स्  
 अध्य(धि-अ)स्त- स्तः नाद २४;  
 -स्तम् पाशु २, ११; १२;  
 -स्तस्य नाद २५; अध्या  
 ५८.  
 अध्यस्त-रूपो(प-उ)पासन-  
 नात् सांस् ४, २१.  
 अध्या(धि-आ)स- सः अध्या १.  
 अध्यास-सिद्धि- -द्धिः सांस्  
 २, ५.  
 अध्या(धि-आ)त्म<sup>३</sup> - त्मम् के ४, ५; क  
 २, ३, १८; प्र ३, १; १२; तै १, ३,  
 १; ४<sup>१</sup>; ७, १; छां १, २, १४; ५,  
 ३; ७, १; ३, १८, १<sup>२</sup>; २<sup>३</sup>; ४,  
 ३, ३; वृ १, ५, २१; २, ५, १-  
 १२; ३, १, १०; ५, १४, ४;  
 कौ २, १२; ४, ९; सुवा ५<sup>१५</sup>;  
 तै १, ९; सर २, ४; २प्र ३२:  
 ११; १४; ३३: १; ४; ८;  
 ३४: १२; गा १४; कौल २२;  
 कथु ३, १; गी ७, २९; ८,  
 १; ३.  
 आध्यात्मिक<sup>४</sup> - कम् गौ २,  
 ३८; तै ६, ९; -कान् गौ २,  
 १६; -कानि त्रिवा १, ८;  
 -केषु रा११, ४.  
 आध्यात्मिकी- कीम्  
 १संन्या २, ८४; -क्यः सांका  
 ५०.

आध्यात्मिका(क-आ)दि-मे-  
 द- -दात् सांस् ३, ४३.  
 आध्यात्मिका(क-आ)धिभौ-  
 तिका(क-आ)धिदैविक- कम्  
 मुद्र ४.  
 अध्यात्म-कथन-क्रम- -मै: अत्रि  
 १६.  
 अध्यात्म-चेतस्- -तसा गी ३, ३०.  
 अध्यात्म-ज्ञान<sup>५</sup>-  
 अध्यात्मज्ञान-नित्यत्व- -त्वम्  
 गी १३; ११.  
 अध्यात्म-नित्य- -स्याः गी १५, ५.  
 अध्यात्म-निष्ठ- -ष्ठः जा ६; नाप  
 ३, ८६; पप ४१९: ३; या  
 २, १.  
 अध्यात्मनिष्ठ-ता- -तया नि  
 २४.  
 अध्यात्म-प्रसाद- -दः योसू १, ४७.  
 अध्यात्म-ब्रह्म-कल्प- -ल्पस्य  
 पाशु २, २.  
 अध्यात्म-मन्त्र- -न्त्रात् कुं ९; क  
 १; कथु ३, १.  
 अध्यात्म-योगा(ग-अ)धिगम-  
 -मेन क १, २, १२.  
 अध्यात्म-रति- -ति: नाप ३, ४४;  
 महा २, ४७; अन्न २, ३६.  
 अध्यात्म-विद्या- -द्या शां १, १;  
 -द्या गी १०, ३२.  
 अध्यात्मविद्या(द्या-अ)धिगम-  
 -मः सु २, २, ४४.  
 अध्यात्म-शास्त्र- -स्त्राणाम् अन्न  
 ५, ११२.  
 अध्यात्मशास्त्र-मन्त्र- -न्त्रेण  
 अन्न ५, १४.  
 अध्यात्म-संज्ञा<sup>६</sup>-  
 अध्यात्मसंज्ञित<sup>७</sup>- -तम् गी  
 ११, १.

a) 'आध्यात्मिक' इति तैत्ति. (८, ८, १) पाठे. (वृ. JC.)। b) अस. इति कृत्वा वा. क्वि. द्र.।  
 c) 'आधिदैविक' इत्यत्र टि. द्र.। d) नाद. व्यु. औपयिकं प्राति. द्र.। e) 'तदस्य संजातम्' (पा ५,  
 १, ३६) इति इत्यम् प्र.।

अध्यात्म-संबन्ध-भूमन्- -मा वसु  
१, १, २९.  
अध्यात्मा(त्म-अ)भिमान- -नः वरा  
३, २३.  
अध्यापक-अध्यापयत्-अध्यापित-  
अध्याय-अध्यायक-अधी  
(धि/इ) द.  
अध्या(धि-आ)रुह>रोपि  
अध्या-रोप-  
अध्यारोपा(प-अ)पवाद- -दौ  
ते ४, २३.  
अध्यारोपापवाद-वस्(>)  
पै २, ५२.  
अध्या(धि/आ)प्, अध्यासते ज्ञाग  
२४: ७; सार २३८: २१.  
अध्यासि(त>)ता- -ता मन्त्रि  
४<sup>३</sup>; चू ४.  
अध्यास-अव्य(धि/२अ)स् द.  
अध्या(धि-आ)सित- एव. टि. द.  
अध्युह-अधि/वह द.  
अध्येतव्य-अध्येत-अधी(धि/इ) द.  
अधुव-वस् मैत्र २, ५; गी १७,  
१८; -वे शि ७, ५९; -वेषु क  
२, १, २; -वै: क १, २, १०.  
अधुव-जीवन- -नः महा ३, ५०.  
अध्वन्, अध्वर-, अध्वर्य, अध्वर्यु-  
अध्व द.  
अध्वान-, अध्वान-गत- अध्वन्-  
इत्यत्र टि१. द.  
अध्वान्, अन्यात् तै २, ७, १.  
अध्वान- -नः छां ५, २, १; वृ १, ५,  
३; -नम् वृ ६, १, १४; -नस्य  
छां ५, २, १; वृ ६, १, १४; -नेन  
वृ १, ३, १७; -नौ प्रा २, ११<sup>०</sup>.  
अनल- -लः वृजा २, ५; ४, १६९;  
ते ५, ७६; १योत ८४; राप् ४,

६२<sup>०</sup>; राउ ५, ७; महा ५, १४९;  
अन्न ३, ११; ग ६; गरु ५; गी  
७, ४; -लम् वे ६, १९; -लस्य  
योचू ९९; शां १, ७, ८; -ले  
शां १, ७, २१; शि ४, ३६;  
-लेन गी ३, ३९.  
अनल-जाया- -याम् द ९.  
अनल-वर्चस्- -र्चसा तु १८.  
अनल-शिखा- -खा यो १, ४३.  
अनला(ल-आत्मक>)त्मिका-  
-का वृजा २, २<sup>१</sup>.  
अनलो(ल-उ)द्भव- -वम् वृजा  
५, ६.  
अनिल- -लः कै २, ४; वृजा ४,  
१६; राप् ४, ३८; ६२; अन्न  
३, १५; १७; ग ६; जाद ४,  
२६; -लम् ई १७; वृ ५, १५,  
१; ध्या ६९; १योत ९२; त्रित्रा  
२, ५५; योचू ४०; शां १, ७,  
४१; यो १, ३०; ३७; जाद ६,  
५; ९; ७, ११; -ले जाद ६, ४४.  
अनिल-स्पन्द- -न्दम् महा  
५, १४८.  
अनिलां(ल-आं)श-  
अनिलांशक- -कः जाद ८,  
४; -के जाद ८, ६.  
अन- √अन् द.  
अन- इदम् द.  
अन(न्-अ)लार- -रम् योशि ३, १५.  
अनन्- -नः छां ५, २, २; -नम्  
वृ ६, १, १४.  
अन(न्-अ)लिक- -कः नाप ३, १; ३;  
७७; १संन्या २, ३; पप ४१८:  
५; या १, १; इ १३: २१; २२;  
-कस्य इ १३: २१.  
अन(न्-अ)ग्नि-सेविन्- -वी पप

४१९: १३.  
अन(न्-अ)ग्निहोत्रिन्-  
अनग्निहोत्र्य(त्रि-अ)नग्निचिद्(त्-अ)-  
ज्ञा(ज्ञ-अ)नभिध्यायिन्-  
-यिनाम् मैत्रि ६, ३४.  
अन(न्-अ)घ्न, घ्रा- -घ्न महा ५, २१;  
६, १; १२; अन्न १, १८; २६; ४,  
१६; ५, ४; ११४; अध्या २०; १६;  
अक्षि ४७; जाद ६, ३६; बि १७;  
गी ३, ३; १४, ६; १५, २०; -वम्  
व ४५६: १५; -०वे वृजा ६, ४.  
अन(न्-अ)ङ्ग- -ङ्गः ब्रवि ८१; अध्या  
६८; नाप् ४, ३९<sup>१</sup>; -ङ्गम्  
राप् ४, ४३९<sup>१</sup>.  
अनङ्ग-कुसुमा- -मा आथ ३९५:  
२०.  
अनङ्गकुसुमा(मा-आ)दि-शक्ति-  
-क्तयः भा १२.  
अनङ्गकुसुमा(मा-अ)ष्टक- -कम्  
आथ ३९५: १९.  
अनङ्ग-गायत्री- -त्रीम् गोप् १८.  
अनङ्ग-मद(न>)ता- -ता आथ  
३९५: २२.  
अनङ्ग-मदना(न-आ)तु(र>)रा-  
-रा आथ ३९५: २३.  
अनङ्ग-मालि(न्>)नी- -नी आथ  
३९६: ४.  
अनङ्ग-मेखला- -ला आथ ३९५:  
२१.  
अनङ्ग-राज-सदन- -ने व ४५६:  
२१.  
अनङ्ग-रेखा- -खा आथ ३९६: १.  
अनङ्ग-वे(ग>)गा- -गा आथ  
३९६: २.  
अनङ्गा(ङ्ग-अ)ङ्कु(श>)शा- -शा  
आथ ३९६: ३.

a) अध्यासित-> -ता (पुं. प्र१) इतीव कृत्वा उत्र. व्याचक्षाणः द. । b) तु. निसा. अध्या. च;  
वैतु. आन. अमृत-योनि-> -नौ इति पाठे. (तु. सस्य. टि. अमृत-> -ताय) । c) अलच् प्र. (पाठ १, १०६;  
वैतु. नन्पूर्वत्वे सति <अल् इति शक. वाच. च) । d) 'अनिलः' इति आन. पाठे. । e) कृतद्वितान्यतर-  
वृत्तिसौलभ्ये तु. वैप १, १५५टि, १५६टि ।



अन(न-अज)>जा- जा दे १.

अनदुह- अनसू- द.

अन(न-अ)राण- शु वृ ३, ८, ८; मुवा ३;

सी ३६; योशि ३, १९; अय्य १.

अन(न-अ)तिक्रम्य सार २६८: १२.

अन(न-अ)तिप्र(रन्ध्र)> श्रन्या-

-श्रन्याम् वृ ३, ६, १.

अन(न-अ)द्यमान- न: छां ४, ३, ७.

अन(न-अ)धिकार- रम् ब्रसू १, ३, ३१.

अन(न-अ)धिकारिन्- रिणाम् त्रिवि ८, ११.

अन(न-अ)धिष्ठित- तस्य सांसू ६, ६०.

अन(न-अ)धीत- त: इ १३: २२.

अन(न-अ)धीत-गति- ति: हंघो २०.

अन(न-अ)धीत-वेद- दाय मुद्र ४.

अन(न-अ)ध्व-ग- गा: इ १२: ८.

अन(न-अ)नुगच्छति महा ५, १८२.

अन(न-अ)नुपाति(न->)नी- नी अज १, ४१.

अन(न-अ)नुभूत- तम् प्र ४, ५.

अन(न-अ)नुविद्य छां ८, १, ६; ८, ४.

अन(न-अ)नुशिष्य छां ५, ३, ४; वृ ४, १, २-७.

अन(न-अ)नुष्ठान-

अननुष्ठान-लक्षण- गम् सांसू १, ८.

अन(न-अ)नुस्मरत्- नन् तुअ १९.

अन(न-अ)नूक्त- क: वृ १, ४, १५.

अन(न-अ)नूचान- नाय अय्य ७<sup>b</sup>; सा ३३<sup>b</sup>.

अन(न-अ)नूच्य छां ६, १, १.

अन(न-अ)न्त,न्ता- -न्त नापू ३,

१६; गी ११, ३७; -न्त: छां १,

१, २; वृ ४, १, ५; वे १, ९;

गी २, २६; मै २, ४; मैत्रि २,

४; ६, १७<sup>a</sup>; २८<sup>a</sup>; ७, ४; जा

२<sup>a</sup>; अशि ३, ११<sup>a</sup>; ४, ६९<sup>a</sup>;

७; वृ २, १३; नाप ९, ८;

रापू ४, ५३<sup>a</sup>; राउ ३, १<sup>a</sup>;

अध्या ६८; भ २, ३; गोड ३०;

गरु ५; आर्षे ९: १२; वदु ३१५:

१२<sup>a</sup>; २१९<sup>a</sup>; २३; विद्या २;

भव २, ३; गी १०, २९९<sup>a</sup>;

-न्तम् क १, ३, १५; तै २, १, १;

वृ १, ५, १३; २, ४, १२; ३,

१, ९<sup>a</sup>; २, १२<sup>a</sup>; ब्रवि ९; मना

२, १३, २; वृ २, ४; ससा

१, २९; ३१; ३३; ३४; सुवा

५<sup>a</sup>; ९<sup>a</sup>; नि १४; शु १, १८<sup>a</sup>;

ते ६, ७२; नाप ९, १७; त्रिवा

२, १५७; योचू १०; ११३;

स्क १३; त्रिवि १, ५; ३, २;

शां २, १; पै ३, ४; महा २, ६८;

५, ५३; योशि २, १७; अय्य १;

अज १, ५५; ५, ६४; ७४;

असि २; अध्या ६१; त्रिता ५,

९; यो ३, ३५; भ १, १; जाद

२, ९; ९, ५; वरा ३, २; सौ

२, ११; म ४९: ११; नाउ १,

१४; सि १, ६; भव ३, ३२;

अवि ९; गी ११, ११; ४७;

-न्तस्य वृ ६, २, ७; महा ५,

१७८; -न्ता दे १७<sup>a</sup>; ९<sup>a</sup>; सर

२, ३; इ १०: १२; -न्ता: वृ

१, ५, १३; ३, १, ९; २, १२; ४,

१, ५; मैत्रि ६, ३०; पा ९, १०;

गी २, ४१; -न्तान् वृ १, ५,

१३; त्रिवि ७, १; -न्तानाम्

महा ५, ८५; -न्तानि वृ २, ५,

१९; महा ५, १६३; सिशि

३८१: ३; -न्ताम् दे १०; तुल

७०: ४; -न्ताय त्रिवि ७, ४२;

४८; १९न्या २, ३२; वरा २, ३४;

सार २५७: २३; २६०: २०;

२७५: १९; -न्ते के ४, ९; श्वे ५,

१; कौ २, ५; मैत्रि १, ४, १४; रापू

१, ६; वरा २, २३; -न्तेन ब्रसू

३, २, २६; -न्तै: गौ २, १९;

त्रिवि ६, २१; ७, २; सि २, ३.

आनन्त्य- -न्त्यम् क १, २, ११<sup>a</sup>;

शि ७, ११८; -न्त्यात् योसू ४,

३०; -न्त्याय क १, ३, १७<sup>a</sup>;

श्वे ५, ९; भव २, ३६.

अनन्त-कर्मन्- -र्म पै ४, १८.

अनन्त-कोटि-

अनन्तकोटि-कारण-जल-

-लानि राधा १, ८.

अनन्तकोटि-ब्रह्मा(द्वा-अ)ण्ड-

-ण्डानाम् त्रिवि २, १५; राधा

१, ५; -ण्डानि पै १, २०;

त्रिवि २, १६; ६, ६; ८; ९; ८, ४;

राधा १, ८.

अनन्तकोटि-रवि-प्रकाश- -शै:

त्रिवि ७, ५०.

अनन्तकोटिरविप्रकाशा-

(श-अ)तिशय-प्रकाश- -शम्

त्रिवि ७, २२<sup>d</sup>.

अनन्त-ग- -गा: रापू ४, ६२.

अनन्त-गण-सेवित-शिवा(व-आ)

लय- -यस्य सि ६, ३३.

अनन्त-गारुड-विष्वक्सेन- -ना:

त्रिवि ७, २०९<sup>a</sup>.

अनन्त-वरित्र-दायिन्- -यिने सार

२७७: १३.

अनन्त-चित्-सागर-कछोल-जा-

ल-शिक्षरा(र-आ)कार- -रम्

सि ६, ५.

॥ पा. चिन्ता: । ननु-इत्यस्य प्रसङ्गार्थगमकत्वे सति संकल्पनाशानपर-कर्तृकस्य भूयोऽनुगमनात्मकस्य नितरामनशीलस्य सतः संसारप्रसक्तवर्षस्य प्रतीतिः 'ननु गच्छति' इत्येवं पदद्वयात्मकः शोधः द्र.। नाउ. श्लोके चैतदुप-पाद्यमानं द्र.। b) 'अनूचानाय' इति निसा. मुपा. प्रष्टः। c) हस्वादिः पाप्मे. आन. द्र. (वैतु. तदीयः मूको. एकदेशः)। d) 'शयप्रकारम्' इति निसा. पाप्मे.।

अनन्त-चिदा(त्-आ)दित्य-सम-  
ष्ट्या(ष्टि-आ)कार- -रम् त्रिवि  
७, ९; सि ६, ३८.  
अनन्त-चिद्वि(त्-वि)लास-विभू-  
ति-विशेष-समष्टि-मण्डल-  
-लम् त्रिवि ७, २०.  
अनन्त-चिद्विलास-विभूति-सम-  
ष्ट्या(ष्टि-आ)कार- -रम् त्रिवि  
४, १.  
अनन्त-चिन्मय-प्रासाद-जाल-  
संकुल- -लम् त्रिवि ६, १८;  
सि ३, ६.  
अनन्त-चिन्मया(य-आ)सन- -नम्  
सि ३, ८.  
अनन्त-ज्वाला-जाल- -लैः त्रिवि  
७, ६; सि ५, १६.  
अनन्त-ता- -तया महा २, ६६;  
-ता वृ ४, १, ५; गौ ४,  
३०.  
अनन्त-तेज(स्)>:-पर्वत-राजि-  
-जिषु त्रिवि ६, २३.  
अनन्त-ते(जस्)>जो-राश्य-  
(शि-अ)न्तर-गत- -तम्  
त्रिवि ७, ४९.  
अनन्त-दिव्य-तीर्थ- -र्थानाम्  
त्रिवि ७, ६.  
अनन्त-दिव्य-तेज(स्)>:-पर्वत-  
-लैः त्रिवि ७, १.  
अनन्तदिव्यतेजःपर्वत-समष्ट्या-  
(ष्टि-आ)कार- -रम् त्रिवि ६,  
२३; सि ५, ६; १५.  
अनन्त-दिव्य-ते(जस्)>जो-ज्वा-  
ला-जाल- -लैः त्रिवि ६, १०;  
२०; सि २, ७; ४, ६.  
अनन्त-दिव्य-मङ्गला(ल-आ)स-  
न- -नम् सि २, ११.  
अनन्त-दिव्या(व्य-अ)पार-ब्रह्म-वि-  
द्या-साम्राज्या(ज्य-अ)धि-दै-  
वत- -तम् सि ४, ७.

अनन्त-दिव्या(व्य-आ)युध-  
दिव्य-शक्ति-  
अनन्तदिव्यायुधदिव्यशक्ति-  
समष्टि-रूप- -पम् त्रिवि ७, ६.  
अनन्त-नित्य-परि-जन- -नैः  
त्रिवि ६, २३.  
अनन्त-नित्य-मुक्त- -कैः त्रिवि ६,  
१८; २२; सि २, ११; ३, ७;  
६, ३४.  
अनन्त-निरतिशया(य-आ)नन्द-  
समुद्र- -द्रान् त्रिवि ७, १६.  
अनन्त-पद- -दै महा ५, १२१.  
अनन्त-परम-मूर्ति-समष्टि-मण्ड-  
ल- -लम् त्रिवि ७, २०.  
अनन्त-परमा(म-आ)नन्द-विभू-  
ति- -तयः त्रिवि ८, ४.  
अनन्तपरमानन्दविभूति-सम-  
ष्टि-विशेष- -षान् त्रिवि ७, १६.  
अनन्त-परमानन्द-समुद्रा-  
(द्र-आ)दि- -दयः त्रिवि ८, ४.  
अनन्त-परमानन्दा(न्द-अ)मृत-र-  
सा(स-अ)न्वि-कलोल-तरङ्गा-  
(ङ्ग-अ)वलि- -लिभिः सि  
६, १५.  
अनन्त-परिपूर्णा(र्ण-आ)नन्द-  
दिव्य-सौदामिनी-निचया-  
(य-आ)कार- -रम् त्रिवि ४, १.  
अनन्त-प्रकारा(र-आ)नन्दा-  
(न्द-अ)मृत-दिव्य-मंगल-  
विमान- -नैः सि ४, ८.  
अनन्त-आकार- -रैः सि २, ३.  
अनन्त-फल- -लम् दत्ता ३; सि ६,  
१०९.  
अनन्त-बाहु- -हुम् गौ ११, १९.  
अनन्त-बोध-सौध-विशेष- -वैः  
त्रिवि ६, २३; सि ५, ११.  
अनन्त-बोधा(ध-अ)चल- -लैः  
त्रिवि ७, २०.  
अनन्त-बोधा(ध-आ)नन्द-इयु-

ह- -हैः त्रिवि ६, २०; सि २, १.  
अनन्त-बोधा(ध-आ)नन्दा-  
(न्द-अ)चल- -लैः त्रिवि ७, २०.  
अनन्त-ब्रह्म-गन्धा(न्ध-आ)कार-  
समष्टि-विशेष- -षम् त्रिवि  
७, ५०.  
अनन्त-ब्रह्म-चारिन्- -नी म ४९;  
१०.  
अनन्त-ब्रह्मते(जस्)>जोमय-  
विल्व-कल्प-तर्ह-वन- -नैः सि  
६, १६.  
अनन्त-ब्रह्मते(जस्)>जो-राशि-  
समष्ट्या(ष्टि-आ)कार- -रम्  
त्रिवि ६, २२; सि ४, ६.  
अनन्त-ब्रह्म-वन- -नैः त्रिवि ६,  
१८; २१; सि २, ४; १०; ४, ३.  
अनन्त-ब्रह्मा(द्वा-आ)नन्द-समष्टि-  
कन्द- -न्दम् त्रिवि ७, १७.  
अनन्त-ब्रह्मानन्दा(न्द-अ)नुभव-  
पताका-ध्वज-तोरण- -णैः सि  
३, ६.  
अनन्त-भूषण- -०ण लां २१६; १;  
-णैः त्रिवि ७, ५०.  
अनन्त-भोग-वर्धि(र्ध-अ)नी- -न्यै  
सार २४७; ५.  
अनन्त-महामाया-जाल-विशेष-  
-वैः त्रिवि ६, १६.  
अनन्त-महामायाजाल-जनन-  
मन्दिरा<sup>१</sup>- -रा त्रिवि ४, १३.  
अनन्त-महामाया-विलास-  
-सानाम् त्रिवि २, १५; ६, १०.  
अनन्त-महामाया-विशेषण-वि-  
शेषि(त)>जा- -ता त्रिवि ३, ७.  
अनन्त-महामाया-शक्ति-समष्ट्या-  
(ष्टि-आ)का(र-अ)रा- -राम्  
त्रिवि ६, १०.  
अनन्त-मात्र- -त्रः गौ १, २९.  
अनन्त-योग-माया-विलास<sup>२</sup>-  
-सान् त्रिवि ६, १७.

a) 'माया जाल' इति निसा. असमस्तः पामे. । b) 'न्तमाया' इति निसा. पामे. ।

अनन्त-मूर्ति- तैयः त्रिवि ८, ३.

अनन्त-मोक्ष-साम्राज्य-लक्ष्मी-

-क्ष्मीम् त्रिवि ६, २१.

अनन्त-मोक्ष-साम्राज्या(ज्य-अ-)

द्वितीय- यम् सि २, ४.

अनन्त-योजन- नम् मुद्र १, १; २.

अनन्त-रस-भोग-दा(<द)-

-दाम् तुल ७०:४.

अनन्त-रस-संपाद-कारिन्-

-रिणे सार २५१:१४.

१ अनन्त-रूप-

अनन्तरूप-वत्- वान् योशि

१, १५०.

अनन्तरूपिन् - निणे वम् १,

-पी राप् २, १.

२ अनन्त-रूप- -प गी ११, ३८;

-पः राप् ४, ५; -पम् त्रिवि

४, ७७<sup>b</sup>; कै १, ६; मना १, १;

अस १, १९; गी ११, १६.

अनन्त-रोम-कूप-पेषु राषा १, ८.

अनन्त-लोक- -काः त्रिवि ८, ४.

अनन्तलोका(व-आ/सि- -सिम्  
क १, १, १४.

अनन्त-वाचक- -कः मुद्र १, १.

अनन्त-वासुकि-तक्षक-ककौटक-

पञ्चक-महापञ्चक-शङ्खक-गु-

लिक-पौष्क-कालिक-नागक-

गह २४४<sup>१</sup>.

अनन्त-विजय- -यम् गी १, १६.

अनन्त-विभव- -वम् त्रिवि ६, २२;

७, २; सि १, ८; २, ५; ४, ५.

अनन्त-विभूति- -तयः त्रिवि ८, ४.

अनन्त-विरोध- -धः त्रिवि २, १२.

अनन्त-विहार- -राय सार

२४७:८.

अनन्त-वीर्य- -व्यं गी ११, ४०;

-व्यम् गी ११, १९.

अनन्त-हृन्दा-वन- -नैः त्रिवि ६, २१

अनन्त-वैकुण्ठ- -गशः त्रिवि ८, ३;

४<sup>३</sup>; -ण्डान् त्रिवि ६, २१; २३;

७, १; १५.

१ अनन्त-शक्ति-

अनन्तशक्ति-मत्-

अनन्तशक्तिमत्-त्व- -स्वम्

योशि ३, २५.

अनन्तशक्ति-संयुक्त- -क्तः त्रिवा

२, ९.

२ अनन्त-शक्ति- -क्तये सार २७५:

२०; -क्तिः मैत्रि ७, २; अन्य

४; हे १०.

अनन्त-शिखरो(र-उ)ज्ज्वल- -लम्

सि ५, ७.

अनन्त-शीर्षन्- -र्षा त्रिवि २, १५.

अनन्त-शुद्ध-बोध-विमान-जाल-

संकुल(ल-आ)नन्दा(न्द-अ)-

चल-श्रेणि<sup>१</sup> -णिषु त्रिवि ६, २३.

अनन्त-शुद्धा(द-आ)नन्द-परि-

ध- -वैः सि २, ७.

अनन्त-श्रवण- -णः त्रिवि २, १५.

अनन्त-समुद्र- -द्रान् त्रिवि ६,

२१<sup>२</sup>.

अनन्त-सहस्र-कैवल्य(ल्य-आ)-

नन्द-वनो(न-उ)प-वन- -नैः

सि ६, ८.

अनन्त-सहस्रा(स-आ)नन्द-प्रा-

कार- -रैः सि ५, ९.

अनन्त-सुख- -खम् सार २८०:१.

अनन्तसुख-संपत्ति-

अनन्तसुखसंपत्ति-ता-

-तया सार २५४:१८.

अनन्तसुख-संभव- -वाय सार

२४७:१४.

अनन्ता(न्त-अ)क्षि-पाणि-पाद-

-दः त्रिवि २, १५.

अनन्ता(न्त-अ)खिला(ल-अ)जा-

(ज-अ)ण्ड-भूत- -तम् मवा ४.

अनन्ता(न्त-आ)दि-दुष्ट-नाग-

-गानाम् लां २१६:२.

अनन्ता(न्त-आ)द्य- -द्यैः सिशि

३८२:२१.

अनन्ता(न्त-आ)नन्दचित्-सा-

गर-मथनो(न-उ)द्भूत-रस-

प्रवाह- -हैः सि ६, १०.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-तुलसी-

माल्य- -ल्यैः त्रिवि ७, ५०.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-पर्वत- -तैः

त्रिवि ६, २०; सि ५, १.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-पर्वत-

शिखर- -रैः सि २, १.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-प्रवाह- -हैः

त्रिवि ७, १९.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-बोध-

सौघ-विशेष- -वैः सि ६, ६.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-विभूति-

दिव्यतेज(स्>)-पर्वत-समष्ट्या-

(ष्टि-आ)कार- -रम् सि ६, ९.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-विभूति-

विशेष-समष्टि-रूप- -पम्

त्रिवि ७, १७.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-विमान-जा-

ल-संकुल- -लम् त्रिवि ६,

२३, सि ५, ११.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-समुद्र-सम-

ष्ट्या(ष्टि-आ)कार- -रम् त्रिवि

७, २०.

अनन्तानन्दसमुद्रा(द-आ)दि-

-दयः त्रिवि ८, ३.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-संभोग(>)

गा- -गा १ संन्या २, २४.

अनन्ता(न्त-आ)नन्द-सौदामि-

नी-परम-विलास- -सम्

त्रिवि ७, २; सि १, १६.

अनन्ता(न्त-आ)नन्दा(न्द-आ)श्र-

य-सागर- -रम् त्रिवि ७, २१.

a) वस. इति कृत्वा १ संख्याकात् पृथक् निर्देशः। b) तैआ १०, १, १। c) 'इत्येतेषाम्' इत्ये-  
तत्समानाधिकरणोऽविभक्तिको निर्देशः [अन्यथा 'काः' (प्र३) इत्येवं शोधः दः]। d) 'चलश्रेणी' इति निसा. पाठे।



अनन्ता(न्त-अ)वयवा(व-अ)कर<sup>a</sup>-  
-रः नाप ८, १.  
अनन्ता(न्त-अ)वयवा(व-अ)न्वित-  
-तः तु २.  
अनन्ता(न्त-अ)श्चर्य-सागर- -रम्  
त्रिवि ७, १९.  
अनन्ता(न्त-अ)सन- -रम् त्रिवि  
७, २८.  
अनन्ते(न्त-इ)न्दु-रवि-प्रभ-  
-भम् भ १, १.  
अनन्तो(न्त-उ)त्कट-जल-द-  
मण्डल- -रम् सि १, १५.  
अनन्तो(न्त-उ)त्कट-जलद(त-अ)-  
र-मण्डल- -रम् त्रिवि ७, २.  
अनन्तो(न्त-उ)पनिषद(द-अ)र्थ-  
स्व-रूप- -रम् त्रिवि ७, १७;  
सि ६, २.  
अनन्तो(न्त-उ)पनिषद(द-अ)र्या-  
(र्य-अ)राम-जाल-संकुल-  
-रम् त्रिवि ७, २१.  
अनन्तो(न्त-उ)पनिषद-विमृश्य-  
-रम् त्रिवि १, १; -रम् त्रिवि  
७, २०.  
अनन्तक<sup>b</sup>- -कः गरु १३.  
अनन्तक-वृत्त- -तः गरु १३.  
अन(न्-अ)न्तर- -रः वृ ४, ५, १३;  
कौ २, १; २; गौ १, २६; त्रिवि  
८८; -रम् वृ २, ५, १९; ३, ८,  
८; वृजा ४, २५; सुबा ३; योशि  
१, ११३; ग ७; वरा ५, २७;  
राधा ३, १; सार २६४:११;  
२७४:५; २८७:६; शि १,  
३१; ५, ५२; भव १, १०<sup>c</sup>; गी  
१२, १२; -रा: सार २४९:१६.  
अनन्तर्य<sup>d</sup>- -र्यम् योसू ४, ९.  
अनन्तरा(र-अ)र-युग्म- -रमे वरा  
५, २४.

अन(न्-अ)न्तर्हित- -तेन वृ ६, ४,  
२५.  
अन(न्-अ)न्तवत्- -वतः छां ४, ६,  
४; -वान् छां ४, ६, ३; ४<sup>e</sup>.  
अन(न्-अ)न्ते-वासिन्- -सिने वृ  
६, ३, १२.  
अनन्द- -न्द्रा: क १, १, ३; वृ ४,  
४, ११<sup>f</sup>.  
अन(न्-अ)न्ध- -न्धः छां ८, ४, २;  
१०, १; ३.  
अन(न्-अ)घ्न- -घ्नम् छां ४, ३, ७;  
५, २, १; वृ ६, १, १४<sup>g</sup>.  
अन(न्-अ)न्य, न्या- -न्यः ते ५, ७४;  
वृउ ९, १३; त्रिवि ८७; -न्यत्<sup>d</sup>  
अव्य १; -न्यम् करु १; -न्यया  
गी ८, २२; ११, ५४; -न्या  
सार २७९:२; -न्या: गी ९,  
२२; -न्यानि सार २७८:८;  
-न्येन गी १२, ६.  
अनन्य-चेतस्<sup>h</sup>- -ता: गी ८, १४.  
अनन्य-ता- -ताम् योशि १, १६४.  
अनन्य-त्व- -त्वम् गौ ३, १३; ४,  
१२.  
अनन्य-धर्म- -र्मान् सार २५०:  
९; -र्मे सार २५०:१२.  
अनन्य-धी- -धी: रार २, ४७; ४,  
४; सु १, १, २२.  
अनन्य-पर- -रा: सार २७८:१२.  
अनन्य-भक्त- -क्ताय मैत्रि ६, २९.  
अनन्य-भक्ति-परा-काष्ठा- -ष्ठा  
सार २४९:२३.  
अनन्य-भजन-सिद्ध- -द्धा: सार  
२७२:२१.  
अनन्य-भाज्- -भाक् गी ९, ३०.  
अनन्य-भाव-  
अनन्यभाव-रूप-शोभा-  
अनन्यभावरूपशोभा-संच-

रित-स्वारस्य-संवर्धित-गुण-  
गणन- -नाभ्याम् सार  
२४८:७.  
अनन्य-भावन- -नः त्रिवा २, २१.  
अनन्य-मनस्- -नसः गी ९, १३.  
अनन्य-मार्ग-  
अनन्यमार्गा(र्ग-अ)न्ध- -न्ध्या:  
सार २७९:७.  
अनन्यमार्गीय- -या: सार  
२२६:१९.  
अनन्य-योग- -गेन गी १३, १०.  
अनन्या(न्य-अ)श्रय- -या: सार  
२७८:५.  
अनन्याश्रय-धर्मो(र्म-उ)त्पत्ति-  
-त्ति: सार २८७:१३.  
अनन्याश्रय-युक्त- -क्ता: सार  
२३५:१५.  
अनन्यो(न्य-उ)पासक- -का: सार  
२७२:२०.  
अन(न्-अ)न्य-प्रोक्त- -क्ते क १, २, ८.  
अन(न्-अ)न्या(न्य-अ)धि-पति-  
-ति: ब्रसू ४, ४, ९.  
अन(न्-अ)न्यो(न्य-उ)द्वेग-का-  
रिन्- -रीणि अस्ति ६.  
अन(न्-अ)न्वा(नु-अ)गत- -तः वृ  
४, ३, १५; १६; -तम् वृ ४,  
३, २२<sup>i</sup>.  
अन(न्-अ)पग- -गा: वृ २, १, ११;  
कौ ४, ११.  
अन(न्-अ)पजय्य- -ज्यम् मना १, १०.  
अन(न्-अ)पत्य- -त्यः इ १०:१६.  
अन(न्-अ)पद्मव- -वः ना ३; भ १,  
११.  
अन(न्-अ)पर- -रः गौ १, २६;  
-रम् वृ २, ५, १९.  
अन(न्-अ)पानत्- -तः छां १, १,  
३; ४<sup>j</sup>; ५.

a) 'वाकारः' इति निसा. पामे. । b) भावे ष्वच् प्र. (पा ५, १, १२४) । c) 'असुर्वाः' इति  
मा. (४०, ३) पामे. । d) स्वमोः 'अदद्' इत्यादेशः (पा ७, १, २५) । e) वैतु. घं. षञ+\*?अन्य-चेतस्-  
इति कृत्वा तस. इति व्याचक्षाणः ।

अन(न्-अ)पानयितव्य- न्यम् नृउ  
९, १८.  
अन(न्-अ)पायि(न्-अ)नी- नी सी  
३४.  
अनपायि-स्व- स्वात् सांसू १, ८.  
अन(न्-अ)पावृत्- तम् सुबा ३.  
अन(न्-अ)पेक्ष- क्षा आबो ३; गी १२,  
१६; क्षा: सार २८३: १०.  
अनपेक्ष-स्व- स्वात् ब्रसू २, २, ४.  
अन(न्-अ)पेक्षा- क्षा ब्रसू २, २, १७  
अन(न्-अ)पेक्ष्य महा २, ४९; गी  
१८, २५.  
अन(न्-अ)भिगम्यमान- नाय पा  
१, ८.  
अन(न्-अ)भिनिहित- ता: छां २,  
२२, ५.  
अन(न्-अ)भिभव- वम् ब्रसू ३, ४,  
३५.  
अन(न्-अ)भिभूत- त: मैत्रि २, ७.  
अन(न्-अ)भिमानमय- येन मैत्रि  
६, २८.  
अन(न्-अ)मिस्त्रात-  
आनमिस्त्रात'- त: -तात् वृ २,  
६, २१.  
अन(न्-अ)मिवाञ्छन- नात् महा  
६, १४.  
अन(न्-अ)मिव्यक्त- कम् महा २,  
६५; यो ३, २५.  
अनमिव्यक्त-स्व-रूप-  
अनमिव्यक्तस्वरूप-स्व- स्वात्  
ब्रसू ३, २, ३.  
अन(न्-अ)मिशङ्कित- त: जु १४.  
अन(न्-अ)मिष्वङ्ग- ङ: गी १३, ९.  
अन(न्-अ)मिसंघान- नात् सांसू  
३, ६१.  
अन(न्-अ)मिसंघाय गी १७, २५.

अन(न्-अ)भिस्नेह- ह: पहे ४; तुअ  
१८; गी २, ५७.  
अन(न्-अ)भ्यर्च्य भ २, २१.  
अन(न्-अ)भ्यासवत्- वत: १योट  
८०.  
अन(न्-अ)भ्युदित- तम् के १, ४.  
अनमामि<sup>१</sup> नृउ ६, १.  
अन(न्-अ)मीव- वस्य प्रा १, ४९.  
अनया इदम्- द्र.  
अन(न्-अ)गल-  
अनगल-प्रवाह-विग्रह<sup>२</sup>- हम्  
त्रिवि ७, ६.  
अन(न्-अ)र्थ- र्थ: भव १, ४९;  
-र्था: मै ४, २; मैत्रि ४, २;  
मैत्रे १, ४, १; -र्थाय ब्रवि ३२;  
सु २, २, १; भव १, ४८.  
अनर्थ-कर्तृ- नृ भव १, ४९.  
अनर्थ-ख्यापन- नम् सांसू ५,  
११९.  
अन(न्-अ)र्थक-  
आनर्थक्य<sup>३</sup>- क्यम् सांसू ४,  
१५; ब्रसू ३, १, १०.  
अन(न्-अ)र्पित- तम् भव ४, १२.  
अनल- √१अन् द्र.  
अन(न्-अ)ल्प- ल्प: नृउ ५, ३; ब्रवि  
१०; ल्पम् सुबा ३; सार  
२४८: १७; ल्पे यो १, ७६.  
अन(न्-अ)वकाश- शात् अता ९.  
अनवकाशा(श-अ)न्तर-गत-सु-प-  
ण-स्व-रूप- प: पाशु १, १३.  
अन(न्-अ)वच्छिन्न- नम् योचू ७२.  
अन(न्-अ)वच्छेद- दात् योसू १,  
२६.  
अन(न्-अ)वद्य, द्या- द्य: मैत्रि ७,  
१; आबो ७; -द्यानि तै १, ११,  
२; -द्याम् व ४६५: १४; सुसु

१; -०द्ये व ४६६: ९.  
अन(न्-अ)वब्रव- व: व ४६०: २१९.  
अन(न्-अ)वरत- तम् त्रिवि ५, ४;  
पप ४२०: १७; सार २५४: ८.  
अनवरत-सह(ह-अ)श्रयि(न्-अ)-  
णी- णी सी ३४.  
अन(न्-अ)वरुध्य वृ १, २, ७.  
अन(न्-अ)वलोकयत्- यन् गी ६,  
१३.  
अन(न्-अ)वस्थ- स्थ: मै २, १०.  
मैत्रि २, ७; ४, ३; -स्थेषु क  
१, २, २३; नाप ९, १५.  
अन(न्-अ)वस्थिति- ते: ब्रसू १, २,  
१७; २, २, १३.  
अन(न्-अ)वाप्त- प्तम् गी ३, २२.  
अन(न्-अ)वेद्यमाण- ण: १संन्या  
१, १; कश्चु १, १; -णा: करु  
१; कश्चु २, २.  
अन(न्-अ)वेद्यमाण- ण: शा १८.  
अन(न्-अ)शान- नम् करु १; कश्चु  
२, ३; -नात् मना २, ७८९<sup>४</sup>.  
अन(न्-अ)शानाय-  
अनशानाय-स्व- स्वात् नृउ ७, २.  
अन(न्-अ)शितुम् छां ४, १०, ३.  
अन(न्-अ)श्नत्- श्नत: गी ६, १६;  
-श्न क १, १, ८; ९; सुं ३,  
१, १; श्वे ४, ६९<sup>५</sup>; ग १८;  
नाउ १, ४९<sup>६</sup>; भव २, २.  
अन(न्-अ)शुवत्- वत् आप् ७: ३.  
अनश्वर-  
अनश्वर-स्व-रूप- पम् नाप ९,  
१३.  
अनष्ट- ष्टम् योसू २, २२.  
अनस्<sup>७</sup>- न: वृ ४, ३; ३५.  
अनहु(ह-उ)ह<sup>८</sup>- ह्वाच् श्वे ५, ४;  
सुबा २: मन्त्रि ११; वृ ११.

a) 'अनवेद्य' इति JC. पाठे. b) आत्मनो नमिकर्तृत्वकर्मत्वोभयविषयत्वाभावप्रतिपत्त्यर्थं नञ-  
स्तिङ्ग समासः द. c) मा ११, ८३. d) 'छप्रताप' इति निषा. पाठे. e) भावे व्यञ् प्र. (पा ५, १,  
११४). f) 'मनोऽप्ये' इति अश्या. पाठे. g) अ १०, ८४, ५. h) तैआ १०, ६२, १. i) अ १,  
१६४, २०. j) तु. वैप १, १६४ तिज. k) तु. वैप १, १६५ तिज.

अन(न्-अ)सूय- -यः गी १८, ७१.  
 अन(न्-अ)सूयत्- -यन्तः गी ३, ३१.  
 अन(न्-अ)सूया- -यायाम् शां ३, १.  
 अनसूया(या-आ)नन्द-वर्धन-  
 -नाय दत्ता २.  
 अन(न्-अ)सूयावत्- -वताम् इ १०:  
 १८.  
 अन(न्-अ)सूयु- -यवः द्वाग २४:  
 १०; -यवे गी ९, १; -युः  
 त्रिवि ८, २३.  
 अन(न्-अ)सूरि- -रिः छां ४, ३, ७.  
 अन(न्-अ)स्तमित, ता- -तः महा ४,  
 ५६; -ता वृ १, ५, २२.  
 अन(न्-अ)हं-कर्तयितव्य- -व्यम्  
 वृ ९, १८.  
 अन(न्-अ)हं-कार- -रः नाप ५, १७;  
 गी १३, ८.  
 अन(न्-अ)हं-कृति- -तिः अक्षि ३८;  
 वरा ४, १७; पित्र ६, १७.  
 अन(न्-अ)हं-भाव-  
 अनहंभाव-शलाका- -कया महा ६,  
 ४०.  
 अन(न्-अ)हं-वादिन्- -दी गी १८,  
 २६.  
 अना(न्-आ)काश- -शः त्रिवि ८६;  
 -शम् वृ ३, ८, ८; महा २, ५;  
 अक्ष ५, ७३; जाद ९, ४.  
 अना(न्-आ)ख्य- -ख्यम् महा २, ६५;  
 ५, १०; यो १, ६०; ३, २५.  
 अनाख्य-स्व- -स्वात् महा २, ३.  
 अना(न्-आ)ख्येय- -यम् हं ३; महा  
 ४, ११८.  
 अना(न्-आ)गत- -तम् योसू २, १६;  
 -तान् नाप ३, २५; -तानाम्  
 महा ५, १७१.  
 अना(न्-आ)गा(स्क>)स्का- -स्का  
 अक्ष ५, २२.

अना(न्-आ)गार- -रः हं ६.  
 अना(न्-आ)प्रयण- -णम् मुं १, २, ३.  
 अना(न्-आ)चान्त- -न्तम् शि ७, ६.  
 अना(न्-आ)ज्ञात-  
 अनाज्ञात-त्रय- -यम् वृजा ३, १६.  
 अना(न्-आ)तत- -ताय नी २, ३९.  
 अना(न्-आ)त्मक- -कम् १आ ९.  
 अना(न्-आ)त्मन्- -त्मनः गी ६, ६;  
 -त्मना सांस् ५, ६२; -त्मनाम्  
 ससा १, ४; -त्मनि महा ४,  
 १२८; १३०; अध्या १; भव ३,  
 ९; -त्मा ते ५, १५१; १६१;  
 १७; ३१; ४२; ५०; व ९;  
 -त्मानम् आबो १८.  
 अनात्म-ता- -ताम् महा ४, ८३;  
 वरा २, ४९.  
 अनात्म-त्व- -त्वेन अक्ष १, २८.  
 अनात्म-दृष्टि- -ष्टेः शु ३, ९.  
 अनात्म-भाव- -वेन जाद १, १२.  
 अनात्म-मय- -यम् महा ६, १०.  
 अनात्म-रूप- -पः नि ३२.  
 अनात्मरूप-चोर- -रः ते ६,  
 १०२.  
 अनात्मा(त्म-आ)ख्य-गिरि- -रीन्  
 ते ३, ७१.  
 अनात्माख्या(ख्य-अ)सुर- -रान्  
 ते ३, ७२.  
 अनात्मा(त्म-अ)सुर-मर्दन- -नः  
 ते ३, ७१.  
 अनात्म्य- -स्ये ते २, ७, १.  
 अना(न्-आ)त्म-प्रकाश- -शम् वृ ७,  
 २.  
 अना(न्-आ)त्म-विद्- -वित् अक्ष  
 ४, २; वरा ३, २६; -विदः  
 महा ३, १५; -विदे शा ३३.  
 अनात्मवि(द>)त्-स्व- -स्वात् वसू  
 ३, १, ७.

अना(न्-आ)त्म-विष(य>)या- -याः  
 रुह ३०.  
 अना(न्-आ)दर- -रः छां ३, १४, २; ४.  
 अनादव(र>)ती- -ती चू ५.  
 अना(न्-आ)दातव्य- -व्यम् वृ ९,  
 १८.  
 अना(न्-आ)दि- -दयः गौ ४, ९१;  
 भव २, १; -दि क १, ३, १५;  
 नि १३; पै ३, ४; महा २, ६८०;  
 अव्य १; यो ३, ३५; भ १, १;  
 -दिः गौ ४, १४; ससा १, ३९;  
 त्रिवि ८२; सार २२१ : ८; भव  
 ४, ५; सांस् ६, १२; ६७; -दिम्  
 नाउ १, २४; अवि ९; गी १०,  
 ३; -दी गी १३, १९; -देः गौ  
 ४, २३; ३०; -दौ अध्या ३७;  
 सांस् १, १५८.  
 अनादि-तस्(>) सांस् ३, ६२.  
 अनादि-त्व- -त्वम् योसू ४, १०;  
 -त्वात् वसू २, १, ३५; गी १३,  
 ३१.  
 अनादि-परम्परा- -रा त्रिवि ४, १४.  
 अनादि-पाद-विभूति-वैकुण्ठ-  
 -ण्ठम् त्रिवि ६, १८.  
 अनादि-माया- -यया गौ १, १६.  
 अनादि-मूला(ल-अ)-विद्या-प्रल-  
 य-क(र>)री- -रीम् त्रिवि  
 ६, २१.  
 अनादि-योगि(न्>)नी- -नि व  
 ४३६ : १९.  
 अनादि-वासना-पटुत्व- -स्वात्  
 सांस् २, ३'.  
 अनादि-विषयो(य-उ)पराग-नि-  
 मित्त- -न्तः सांस् १, २७.  
 अनादि-संसार- -रे पै ३, १.  
 अनादिसंसार-भ्रम- -मः त्रिवि  
 ५, ३.

a) तस. उप. नञ्-पूर्वः तस. यद्र. । b) मा १६, १४। c) 'स्मत्वासु' इति अख्या. पाभे. ।  
 d) 'गौरनादवती' = गौर-ना० इत्येवं नारायणीयो विवरणविकल्पोऽस्वारसिकः प्रौढिवाद एवेति द्र. । e) 'धि'  
 इति अख्या. पाभे. । f) 'नायाः बलवत्वात्' इत्यपि पाभे. ।



अनादिसंसार-विपरीत-अम-  
-मात् त्रिवि ४, १४; ५, ४.  
अनादिसंसारिन्-री त्रिवि  
५, ४.  
अनादि-संसिद्ध, द्वा- -द्वः सार  
२८९:१७; २१; २३; -द्वा सार  
२९०:१; -द्वा: सार २२१:७;  
२५०:२३.  
अनादि-सर्व-प्रपञ्च- -अः त्रिवि  
३, २.  
अनादि-सिद्ध- -द्वः द्व ३.  
अनादि-सुख-समृद्धि-संपत्ति-  
-तयः सार २५४:१५.  
अनाद्य(दि-अ)खिल-कारण-कार-  
(ण>)णा- -णा त्रिवि ३, ७.  
अनाद्य(दि-अ)न(न्-अ)न्त- -न्तम्  
क १, ३, १५; श्वे ५, १३.  
अनाद्य(दि-अ)-विद्या-वासना-  
-न्या नि ३४.  
अना(न्-अ)दि-निघन, ना- -नम्  
योचू ७२, -ना सर २, ३;  
-नाथ मै ४, १५; मैत्रि ५, १.  
अना(न्-अ)दिमत्- -मत् श्वे ४, ४;  
गी १३, १२.  
अना(न्-अ)दि-मध्य- -ध्यम् महा  
४, ९.  
अना(न्-अ)दि-मध्य-पर्यन्त-  
-न्तम् महा २, ६८.  
अना(न्-अ)दि-मध्या(ध्य-अ)न्त-  
-न्तम् नाप ९, १७; गी ११, १९.  
अना(न्-अ)दित्य वृ ६, २, ३; पत्र  
३, १५.  
अना(न्-अ)द्य- -द्यम् त्रिवि ९;  
अच ३, २४.  
अना(न्-अ)द्य(दि-अ)न्त- -न्तः मैत्रि  
७, १; २; -न्तम् अच ४, ६८;

५, १०; ५०; ६४; अध्या ६०;  
त्रिता ५, ९; म २, ३; १८;  
-न्ते<sup>१</sup> अच ४, ६२.  
अनाद्यन्ता(न्त-अ)वभासा(स-अ)-  
-त्मन्- -त्मा अच २, ३५.  
अना(न्-अ)द्यन्तव(त>)ती- -तीः  
मन्त्रि ५.  
अना(न्-अ)धार- -रम् सुबा ६<sup>७</sup>;  
त्रिवि ७, १७; योशि ३, १८;  
म २, १८.  
अना(न्-अ)धेय- -यम् अध्या ६२.  
अना(न्-अ)नन्द-  
अनानन्द-पद- -दम् अच २, १४.  
अनानन्द-महानन्द-काला(ल-अ)-  
-सीत<sup>८</sup>- -तः अच २, १५.  
अनानन्द-समानन्द-मुग्धा(ग्ध-अ)-  
-मुग्ध-सुख-द्युति<sup>९</sup>- -तिः अच  
१, २७.  
अना(न्-अ)नन्दयितव्य- -व्यम्  
वृ ९, १८.  
अनानात्व- -त्वम् गौ ४, १००.  
अ-नाना-नन्दना(न-अ)तीत-  
-तम् ते १, ८.  
अना(न्-अ)पद्- -दि १ संन्या २, ९२.  
अना(न्-अ)पञ्च-  
अनापञ्चा(ञ-अ)दि-मध्या(ध्य-अ)-  
-न्त- -न्तम् गौ ४, ८५.  
अना(न्-अ)नुवत्- -वत् गौ ४, ७८.  
अना(न्-अ)भास- -सम् गौ ३, ४६;  
४, ४७; ४८; महा ५, ४५.  
अ-नामक- -कम् नौ ३, ३६; ते ६,  
७०; महा ५, ४५; २५ ३५:२.  
अनामिका- -कया प्रा १, ६;  
-कान्याम् शु १, १८; २, ५<sup>३</sup>; गरु  
३; लां २१३:८; व ४२६:  
७; -०के त्रिता ३, ८; १३.

अनामिका(का-अ)ङ्गुलि- -ल्या  
वा १२; गोच ६६:११.  
अनामिका(का-अ)ङ्गु-  
-ष्टाम्याम् वृ ६, ४, ५.  
अनामिको(का-उ)परि त्रिता  
३, ४.

अ-नाम-गोत्र- -त्रम् सुबा ३; सु २,  
२, २७.

अना(न्-अ)मय, या- -यः त्रिवि ८८;  
अच ५, ६०; -यम् श्वे ३, १०;  
मैत्रि ४, ४; जा ४; अशि ५,  
१४<sup>४</sup>; नाप ३, ७७; योचू ३७;  
राउ ४, १; ते ६, ७२; पै ४, ९;  
महा ५, ४५; योशि २, १७; ३,  
१८; पप ४१८:१५; अच ५,  
५०; ६३; कु ९; म १, १; या  
१, १; वरा १, १५; नापू १, १९;  
गी २, ५१; १४, ६; -या अच  
२, १८; -ये मैत्रि ६, २६.

अ-ना(मन्>)मा-

अनामा-मध्यमा(मा-अ)ङ्गुष्ठ- -ष्ठैः  
वृजा ४, ११.

अना(न्-अ)म्नान- -नात् ब्रसू ३, ३,  
२४.

अना(न्-अ)यास- -सेन त्रिवि ८,  
११; १३; सु १, १, ६.

अनायास-तस्(>) गोपू ४७.

अनायास-फल-द- -दः राउ ५, ७.

अना(न्-अ)रत- -तः महा २, ४३;  
-तम्<sup>६</sup> योशि १, १४६; अचि  
२४; -तौ महा ६, ४७.

अना(न्-अ)रब्ध-

अनारब्ध-कार्य- -र्ये ब्रसू ४, १, १५.

अना(न्-अ)रम्भ- -म्भम् आर्षे ७:  
१६; -म्भात् भव १, ५२; गी  
३, ४; -म्भे सांसू ४, १२.

४) 'अनाद्यन्ते' इति मुपा. 'अनाद्यन्तम्' (=तत्) इति शोधः द्र. (तु. यनि. संदि.) । ५) 'राः' इति  
अध्या. पाठे. । ६) वच. [=बाह्यानन्दनिरपेक्ष- (वैतु. उत्र. √१अन्>अन- इति पूष. इति)] । ७) 'न्दकला'  
इति अध्या. संदि. पाठे. । ८) अयम् अध्या. संदि. पा. शुद्धः (१मे मुग्ध- इत्यत्र मावे कः द्र.) । अध्या. निसा.  
'न्दमुग्धमुग्ध' इति पाठे. (तु. उत्र.) । ९) 'पञ्चनामकम्' इति आन. पाठे. । १०) वा. किवि. द्र. ।

अना(न-आ)रम्भण<sup>a</sup> - णम् वृ ३,  
६, १; -णानि छां २, ९, ४.  
अना(न-आ)रोग्य - ण्यम् शि ५, १६.  
अना(न-आ)र्त - र्तम् अर्थे ७ : १५;  
८ : ६; २२; ९ : १०.  
अना(न-आ)र्द्र - र्द्रः भ २, ३  
अना(न-आ)र्य - र्येण महा ४, २२.  
अनार्य-बुध - धम् गी २, २.  
अना(न-आ)विष्कुर्वत् - र्वन् ब्रसू  
३, ४, ५०.  
अना(न-आ)वृत् - तम् वृ २, ५, १८;  
१आ २८; -ते नाप ५, १२.  
अना(न-आ)वृत्ति - त्तिः ब्रसू ४, ४,  
२२<sup>b</sup>; -त्तिम् गी ८, २३; २६.  
अनावृत्ति-धृति - तिः सांसू १,  
८३; -तेः सांसू ६, १७.  
१अना(न-आ)शक<sup>c</sup> - के जा ५; पप  
४१८ : १६; या २, १; -केन  
वृ ४, ४, २२; सुबा ३<sup>d</sup>.  
अनाशका(क-अ)यन - नम् छां ८,  
५, ३.  
२अनाशक<sup>e</sup> -  
अनाशक-क<sup>f</sup> -  
अनाशकिका<sup>g</sup> -  
अनाशकी<sup>h</sup> - की अरु २६.  
अना(न-आ)दाय - यम् योसू ४, ६.  
अनाशिन - शिनः गी २, १८.  
अना(न-आ)श्रम - मम् शा २७.  
अना(न-आ)श्रय - यम् अध्या ६२;  
पित्र ४, १०.  
अना(न-आ)श्रित - तः गी ६, १;  
-ताः सार २४९:२०; २७३:५.  
अना(न-आ)श्वस् - श्वान् वा २०.  
अनासिक - कम् अना २५.  
अनास्तिक्य - क्यम् भव ५, २०.

अना(न-आ)स्था - स्थया अन्ति २४;  
-स्था महा ४, १११; -स्थायाम्  
शां १, ७, २७.  
अनास्था-मात्र - त्रम् महा ५, ८५.  
१अना(न-आ)हत -  
अनाहत-सिद्धि -  
अनाहतसिद्धि-दा (<द)<sup>b</sup> - दा  
सौ ३, १.  
२अना(न-आ)हत<sup>c</sup> - तम् हं ६; ध्या  
३; योशि १, १७३:५, ९; यो ३,  
१०; ११; -तस्य मं ५, १, ४;  
योशि ६, २१; -ते हंषो ९.  
अनाहत-ध्वनि-युत - तम् ब्रवि २०.  
अनाहत-मन्त्र - न्त्रः निर्वा २९८:  
१४.  
अनाहत-स्व-रूप - पेण योचू ७९.  
अनाहता(त-आ)ख्य - ख्यम् यो  
१, ६९.  
अनाहता(त-आ)ङ्ग<sup>d</sup> -  
अनाहताङ्गिन् - ङ्गी निर्वा २९८:  
१२.  
अना(न-आ)हार - रम् अना २८.  
अना(न-आ)हिता(त-आ)ग्नि - ग्नः  
छां ५, ११, ५.  
अना(न-आ)हुत - तम् शि ५, १४.  
अ-निकेत - तः पदं ४; नाप ३, ८६;  
७; पप ४१९ : १३; कुं ९; कर  
१; कधु ३, १; गी १२, १९.  
अ-निकेतन - नः नाप ४, १६; ५,  
१४; पै ४, ४.  
अ-निकेत-निवासिन् - सी या  
२, १.  
अ-निकेत-वासिन् - सी जा ६.  
अनि(न-इ)ङ्गन - नम् गौ ३, ४६.  
अनि(न-इ)च्छ - च्छः ब्रवि ८९;

-च्छेन मं २, ४.  
अनि(न-इ)च्छत् - च्छताम् भव १,  
१२; -च्छन् गौ ३, ३६.  
अनि(न-इ)च्छा - च्छा महा ५, १७३.  
अ-नित्य, न्या - न्यः त्रिवि ३, २;  
-त्यम् क १, २, १०; नाप  
३, ४७; निर्वा २९७ : ११;  
कौल १०; त्रिवि २, १<sup>e</sup>; ४; सांसू  
१, १२४; ५, ७२; सांका १०;  
गी ९, ३३; -त्याः योशि १,  
१५३; गी २, १४; -त्यानाम्  
क २, २, १३; -त्यैः क १, २, १०.  
अनित्य-त्व - त्वम् त्रिवि २, १;  
३, २<sup>f</sup>.  
अनित्य-संसार-सुख-दुःख-विषय -  
समस्त-श्रेष्ठ-ममता-बन्ध -  
क्षय - यः नि ४१.  
अनिश्या(त्य-अ)क्षुचि-दुःखा(ख-अ)-  
नात्मन् - त्सु योसू २, ५.  
अ-निद्र - द्रम् गौ १, १६; ३, ३६;  
४, ८१.  
अनिद्र-स्वप्न-दर्शन<sup>g</sup> - नम् महा  
५, ५४.  
अ-निघन - नम् ब्र १.  
अ-निन्दित, ता - ताम् अज ४,  
१०; सु २, २, ४३; -तैः भव  
३, २२.  
अ-निन्द्य - न्यम् नाप ५, १२.  
अनि(न-इ)न्द्रिय - यः वृपू २, १२;  
वृउ ७, ८; -यम् वृउ ९, १८.  
अनि(न-इ)न्धन - नः शा २१.  
अ-निमित्त - त्तः गौ ४, २७; नाप  
५, १; -त्तम् भव १, ४१;  
-तस्य गौ ४, ७७.  
अनिमित्त-ता - ताम् गौ ४, ७८.

a) 'रम्भण' इति आन. पाठे. b) तस. उप. √२अश् > आश- > आश-क- इति. c) वस.  
कबन्तः । उप. <√२अश् । d) स्वार्थिक-सामासान्तिकयोः क-प्रत्यययोः विवेकः द्र. e) स्त्री. टाप्  
द्वितीयप्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्याऽकारस्येत्वं द्र. f) नैप्र. नाप्. विपरिणामः द्र. g) तस. उप. √२अश् +  
कसुः प्र. इडभावश्च (पा ३, २, १०९) । h) दु. अज्या. पा. (वैतु. निसा. 'ता सिद्धिदा' इति व्यस्तः पाठे.) ।  
i) उप. <√अङ् (यद्र.) भावप्रधानं द्र. j) पप. किवि. द्र. ।

अनिमित्त-स्व- स्वम् गौ ४, २५.  
 अनिमित्त-संन्यास- -सः तार ५, १.  
 अ-नियत- -तम् गर्भ ५.  
 अनियत-स्व- स्वे सांस् १, २६;  
 ५, ११.  
 अ-नियम- -मः नाप ५, १; १ संन्या  
 २, १३; ब्रम् २, ३, ३७; ३,  
 ३, ३१; -मात् गौ ४, ३४;  
 -मेन तुअ १४; तारा ८४ : ५.  
 अ-नियामक-  
 अनियामक-स्व-  
 अनियामक-स्व-निर्मल-शक्ति-  
 -क्तिः निर्वा २९८ : ८.  
 अ-निरस्त- -स्ताः छां २, २२, ५.  
 अनि(र-इर)>रा- -रा व ४४३ : २०.  
 अ-निराकरण- -णम् के छां मै मैत्रे  
 आरु शां<sup>१</sup>; मना २, ९; ह २०;  
 योचू वा महा १ संन्या अव्य कुं  
 सावि रुजा जाद जावा शां<sup>१</sup>.  
 अ-निरा(इ-आ)कार- -रम् स  
 ३७८ : ८.  
 अ-निरा(इ-आ)श- -शः मैत्रि ६, ३०.  
 अ-निरिद्वय- -द्वयम् म २, १८.  
 अ-निरुक्त- -क्तः छां १, १३, ३; २,  
 २२, १; -कम् तै २, ६, १; ब्र  
 १; म २, १८; -के तै २, ७, १.  
 अ-निरुद्ध<sup>१</sup>- -द्ध व ४३४ : ३;  
 -द्धः गोड ३५; ४३; राधा २,  
 ५; सं ३; -द्धम् त्रिआ २, १४३;  
 -द्धस्व मुद्र १, ४; गोड २५;  
 -द्धाव शु २, ५; त्रिवि ७, ४१;  
 गोड ६४.  
 अनिरुद्ध-नारा(र-अ)यण- -यः,  
 -येन मुद्र २.  
 अनिरुद्ध-अधुमन-सङ्कर्षण-वासुदेव-  
 -वाः व ४३४ : २.  
 अनिरुद्ध-मूर्ति- -तिः गोड २५.

अनिरुद्ध-सरस्वती- -ती कालि  
 ४०२ : १०; ४०३ : १२.  
 अ-निरूपण- -णात् पं ३३.  
 अ-निरूप्य- -प्यम् जाद ८, ९.  
 अनिरूप्य-स्व-रूप- -पम् अघ्या  
 ६३.  
 अ-निरोध-  
 अनिरोध-तत्(ः) १ योत ८२.  
 अ-निर्देश्य- -श्यः मैत्रि ७, १; ब्रवि  
 ८४; -श्यम् क २, २, १४; सुवा  
 ३; त्रिवि १, ११; ७, १७; शां  
 २, १; ३, १; महा २, ५; योशि  
 २, १६; ३, १८; म २, १८;  
 भव ३, ३; गौ १२, ३.  
 अ-निर्मिण- -णम् पा १०, ७.  
 अ-निर्वचन-  
 अनिर्वचन-विहार-  
 अनिर्वचनविहारिन्- -रिणे सार  
 २७७ : ८.  
 अ-निर्वचनीय,या- -यः सार २५४;  
 ११; २९१ : ६; -यस्य सांस्  
 ५, ५४; -या ससा १, ४२.  
 अनिर्वचनीय-ज्योतिस्- -तिः मं  
 ४, १, ३.  
 अ-निर्वर्ण्य- -र्ण्यः १ आ १.  
 अ-निर्वाच्य,च्या- -च्यम् नि १४;  
 त्रिवि १, ५; ११; ७, १७;  
 सि १, ५; -च्या त्रिवि २, ७.  
 अनिर्वाच्य-पद<sup>१</sup>- -दम् १ योत  
 ७.  
 अ-निर्वाण- -णः अचि ३९.  
 अ-निर्विण-  
 अनिर्विण-चेतस्- -तसा गौ ६, २३.  
 अ-निर्वृत्ति- -त्तिः मैत्रि ७, १.  
 अनिल- ✓ १ अन्न ६.  
 अ-निलय- -यम् त्रिता १, ७९.  
 अ-निलयन- -नम् तै २, ६, १; -ने

तै २, ७, १.  
 अ-निर्वर्तक- -कम् मैत्रि ४, २.  
 अ-निर्वेद्य शि ७, २४.  
 अ-निशा<sup>१</sup>- -शम् १ योत ११७; त्रिवि  
 ६, २३; ७, १७; ५०<sup>३</sup>; रार २,  
 २४; योशि १, ८५; ४, २१;  
 अन्न ३, १०; ५, २५; २६; म  
 १, १; सि २, ८; ४, ७; ५,  
 ११; ६, ६; ११; व ४६६ : ९.  
 अ-निश्चित(त>)ता- -ता गौ २, १७.  
 अ-निषिद्ध- -द्धम् शि २, २८.  
 अनि(र-इ)ष्ट- -ष्टम् त्रिवि ५, ४<sup>१</sup>; अद्वै  
 २५; गौ १८, १२; -ष्टेन मैत्रि  
 २, ४; ५; ३, ५; -ष्टेषु मै ३, ५.  
 अनिष्ट-चिन्तन- -नम् भव ५, ३.  
 अनिष्ट-प्रसङ्ग- -ङ्गात् योस् ३, ५२.  
 अनिष्ट-विषय- -ये ससा १, १९.  
 अनि(र-इ)ष्टा(ष्ट-आ)दि-कारिन्-  
 -रिणाम् ब्रस् ३, १, १२.  
 अ-निष्पन्द- -न्दम् अन्न ३, २२.  
 अ-निस्तिष्ठत्- -ष्ठन् छां ७,  
 २०, १.  
 अनीक<sup>१</sup>- -कम् त्रिवि ६, २०; -कैः  
 बा १०.  
 अ-नीड-  
 अनीडा(ड-आ)ख्य<sup>१</sup>- -ख्यम् श्वे ५,  
 १४.  
 अनी(र-ई)दृश- -शम् अघ्या ६३;  
 सौ २, १३.  
 अनी(र-ई)रयित्वा २ प्र ३३ : २२.  
 अनी(र-ई)श- -शः श्वे १, २; ८;  
 नाप २, १; ७; भव २, ५.  
 अनीशा(श-आ)मन्- -म्मा मै २, ४.  
 अनी(र-ई)शा<sup>१</sup>- -शया मुं ३, १, २;  
 श्वे ४, ७.  
 अनी(र-ई)शा(श-अ)र्चन- -नम्  
 वृजा ५, १६.

अ) एष. तृप्त. सति कस. द. । 'यमाश्चिर्मल' इति अघ्या. मूको. पाभे. । b) 'व्यं पदम्' इति  
 निरा. असमस्तः पाभे. । c) वा. क्वि. द. । d) तु. वैप १, १७५ टिप्प. । e) 'अनीक्या' इति आन.  
 पाभे. । f) उप. भावे अः प्र. (पा ३, ३, १०३) ।



अनी(न-ई)श्वर-स्मृ त्रिवि ४, १;  
गी १६, ८; -रात्र अना ८.

अनी(न-ई)हित-तम् १संन्या २, ३७.

अनु क २, १, १०; २, १५<sup>१</sup>; सुं २,  
२, १०; तै २, २-५, १;  
६, १९<sup>१</sup>; छां ३, १९, ३<sup>०</sup>;  
४, १६, ५<sup>१</sup>; १७, ९; ५,  
३, १; ४; १९-२३, २; ८, ९, १;  
२; वृ १, १, २<sup>१</sup>; ३, १८<sup>१</sup>; ३,  
८, ९; ६, २, १; खे २, १६; ६,  
१४; जा १; मना १, ३९<sup>०</sup>;  
२, २९<sup>१</sup>; अशि ५, १९<sup>०</sup>;  
८<sup>१</sup>; त्रिवि, ४, १४; राउ  
१, १; गोउ ५; यो १, ३०; बा  
४: १५; शौ ५१: ४; ५;  
५२: ६<sup>१</sup>; सूता १, १०९<sup>१</sup>; पा ६,  
४: ८, ८; १०, ३; नी २, ९९<sup>१</sup>;  
वटु ३१६: २०९<sup>१</sup>; गु ४५; व  
४४३: ६९<sup>१</sup>; ४४८: १३९<sup>१</sup>;  
४५२: १७९<sup>१</sup>; ४६१: १८९<sup>१</sup>;  
४६४: १६<sup>१</sup>; ब्रसू ४, २, २.

अनु/कम्प

अनु-कम्पा-स्वया गौ ३, १६;  
सांका ७०.

अनु-कम्पा(म्पा-अर्थ)-र्थम् गौ  
१०, ११.

अनु-कल्प-स्वम् वृजा ३, ३४<sup>१</sup>.

अनु-कूल-लम्<sup>१</sup> व ४६२: ७;  
-लेन गोपू २५<sup>१</sup>.

अनु/कृ, अनुकृति शि ७, ३९.

अनु-कृति-ति: तै १, ८, १; -ते:  
ब्रसू १, ३: २२.

अनु(न-उ)क-कम् अल ३, २२;  
शि ७, १३३.

अनु/कम्

अनु-कमण-णम् मै ४, २; मैत्रि  
४, ३.

अनु-क्रम-मात्र त्रिवा २, ४; रार  
२, २०; अना ३६; -मेण खे  
५, ११; १संन्या १, १; भव २,  
२४; कथु १, १.

अनु-क्षण-णम् गु ८३.

अनुक्षम् अनु/घम् द.

अनु/गम् > ष्, अनुगच्छति शि  
६, १६७.

अनु-ग(त>)ता-ता: महा ५,  
१२३.

अनु-गम-मात्र ब्रपू १, १, २८.

अनु-गामिन्-मिना महा ३, १९.

अनु/गा, अन्वगात् महा ४, ८७.

अनु/गुप्

अनु-गोपू-सा पा ४, ९.

अनु(न-उ)ग्र-ग्रम् नुउ ६, १.

अनु/ग्र(>ए)ह, अनुगृह्णाति अशि  
४, २३; वटु ३१६: १२;

अनुगृह्णन्तु अक्ष १२.

अनुगृह्णन्ते सार २५७: ३.

अनु-गृहीत, ता-न्त: सार २८३: ८;

-ता मैत्रि २, ६; सार २४४: १;

-ता: सार २३५: १७; २७५:  
२१; -तान् म् सार २४३: २०;

-ताम् सार २४३: १३.

अनु-गृह्णन्-न: प्र ३, ८.

१अनु-ग्रह-ह: शां १, १; सार  
२४१: ५; २७९: २०; २८८:

२०; -हम् १संन्या २, ८५;

सार २५७: ११; २७३: २२;

-हात् सार २५७: १; २७३:

२१; २८८: ११; २९१: १६<sup>१</sup>;

-हेण सार २३३: २; २८७: १२.

अनुग्रह-तस्(>) सार २५०:  
१४.

अनुग्रह-रु(प>)पा-पा नापू  
२, ९.

अनुग्रह-लिङ्ग-क्लेषु लि ३१०:  
१७.

अनुग्रहा(ह-अर्थ)-र्थम् गोच  
६७: १७.

२अनु-ग्रह(>)हा-हायै त्रिवि  
७, ४८.

अनु-ग्राह-

अनुग्राह्या(द्य-अ)नुग्राहक-

भाव-वेन सार २५०: १४.

अनु/घस्, अनुभम् वा २१.

अनु/चर्

अनु-चरण-णम् मै ४, ३; मैत्रि  
४, ३.

a) लक्षणे कप्र. 'तम्' इत्येतदन्वितः । तद्वाननिमित्तस्य सर्वभानस्य न तु सर्वाऽनुभानस्य श्रावणे स्वा-  
रस्यप्रतीतिः ( वैतु. शं. प्रमृ. अनु/मा इत्येवमुपपन्नं धा. दर्शकाः ) । b) तैआ ८, ६, १ । लक्षणे कप्र. द्र. [वैतु.  
वैप २, ५४ (अनुग्राविशत्) यत्राऽय ग. इति निर्देशः सुशोचः द्र.] । c) लक्षणे कप्र. 'तं जायमानम्' इत्येतद-  
न्वितः [तु. सस्थ. टि. १अनूत्वा (अनु-उद्/स्था); शं. (तु. आन. संटि. शुद्धः पा.); वैतु. PW. प्रमृ. 'अनूदतिष्ठन्त'  
इत्येवं मन्वानाः] । d) लक्षणार्थस्य प्राधान्यात् कप्र. द्र. (वैतु. शं. प्रमृ. अनु-प्रति/स्था>०तिष्ठति इति) ।  
e) मा ३२, ४ । f) तैआ १०, १, १६ (तु. वैप २, ६३टि) । g) साहस्यतात्पर्यके लक्षणे कप्र. यद्योग-  
सामर्थ्यात् 'पञ्चवः' इत्यत्र द्वि. अर्थः द्र. । h) तैआ १०, १, ३ । i) लि ७, ५५, ११ । j) लक्षणे कप्र.  
'मिरीम्' इत्येतदन्वितः । तस्माद् मूले (तैआ ४, ३९, १) नाउ. क्रिप. पृथक् स्वरो भवति (एतदनु वैप २, ५४  
यथाक्ञ् छेधः द्र.) । k) अस. इति कृत्वा वा. क्रिवि. द्र. । l) 'मायानु' इति निसा. पाम्ने. । m) अस.  
इति कृत्वा प्राधान्येन पृथक् निर्देशः द्र. । n) कर्तरि पञ्चअजन्तमिति कृत्वा सरूपाद् भावनिष्पन्नात् १संख्याकात्  
पृथक् निर्देशः द्र. ।

अनु/चिन्त&gt;चिन्ति

अनु-चिन्तयत्-यन् वृत् ३, १;  
नाप ९, १२; रार ४, ५; गी  
८, ८.अनु(न-उ)च्छित्ति- -त्ति: सांस् ६,  
१३.अनुच्छित्ति-धर्मन्- -र्मा वृ ४, ५,  
१४.

अनु(न-उ)च्छिष्ट- -ष्टम् सार २७३:४.

अनु/जन्>जा, अन्वजायत वृ १,  
१, २; अन्वजायन्त दे ८.अनु-ज- -ज: राप् ४, २३; -जेन  
राप् ४, १०.

अनु/जप्

अनु-जापिन्- -पी कालि ४०२:१०.

अनु-जावर- -र: अव्य ६<sup>३</sup>.अनु/ज्ञा>जा, ज्ञापि, अनुजानाति तै  
१, ८, १; छां १, १, ८; वृत् ८, ३<sup>३</sup>;  
४<sup>३</sup>; अनुजानन्ति शौ ५१: १३;अनुजानीहि जाद ४, ३; अनुजा-  
नीष्वम् वृत् ९, १९.अनु-ज्ञा- -ज्ञया रा ४२३: १०;  
४२४: १८; -ज्ञा छां १, १,  
८; वृत् ९, १९; जाद १, १५;-ज्ञाम् वृत् ९, २०; गोउ ३<sup>०</sup>.अनुज्ञा(ज्ञा-अ)श्र- -रम् छां  
१, १, ८.

अनुज्ञा-त्व- -त्वात् वृत् २, ९.

अनुज्ञा-परिहार- -रौ ऋस् २, ३,  
४८.अनुज्ञै(ज्ञा-ए)करस- -स: वृत्  
२, ८; ८, ४<sup>३</sup>.अनु-ज्ञात- -त: त्रिवि ६, १०;  
१७; ऊं १; वृत् ३१८: ६; शि  
७, १७; -उस्य कर १; कश्चु  
२, ३.

अनु-ज्ञातवत्- -वान् महा ३, १.

अनु-ज्ञात्- -ता वृत् २, ८<sup>३</sup>; ८,  
३<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; -ताम् वृत् ९, २०.

अनुज्ञात्-त्व- -त्वात् वृत् २, ९.

अनु-ज्ञाप्य नाप ६, २९.

अनु-तिष्ठत्, अनु-तिष्ठमान- अनु-  
√ष्ठा<स्था द्र.

अनु(न-उ)त्क्रान्त- -न्त: छां ८, ६, ४.

अनु(न-उ)त्तम, मा- -म: योस् २,  
४२; -मम् ऋवि ६५<sup>०</sup>; वा  
३४; नाप ६, २७; २८; अन्न  
४, ११; पं ७; ह ९; शि ५,  
३२; ७, १; गी ७, २४; -माम्  
अन्न १, १७; गी ७, १८; -मेषु  
छां ३, १३, ७.अनु(न-उ)त्पत्ति- -त्ति: गौ ४, ७७;  
अध्या ४२.अनु(न-उ)त्पन्न- -न्नम् ते ६, ५८; ६३;  
७१; महा ५, ५८; -न्ना: गौ  
४, १३.अनु(न-उ)दात्त-  
अनुदात्तो(त-उ)दात्त-द्वि-पद-  
-पद: २५ ३४: १८.अनु(न-उ)दानयितव्य- -व्यम् वृत्  
९, १८.अनु/दृश्  
अनु-दृश्य- -व्यम् वृ ४, ४,  
१९; २०.

अनु/द्रु, अनुद्रवन्ति शौ ५२: ९.

अनु(न-उ)द्वाह- -ह: या २, १६.

अनु(न-उ)द्विग- -द्वा: १ संन्या २, ६०.

अनुद्विग-मनस्- -ना: गी २, ५६.

अनु(न-उ)द्वेग- -गम् महा ५, ८८.

अनु(न-उ)द्वेग-कर- -रम् गी १७,  
१५.अनु/१धाव्, अनुधावति अन्न ४,  
३; वरा ३, २८; अनुधावन्ति  
महा ३, ५२.

अनु/धृ&gt;धारि

अनु-धारयत्-यन् ध्या ९३; योच्  
६६.अनु/धे>धापि, अनुधापयन्ति वृ १,  
५, २.अनु/ध्वे>ध्या, अनुध्यायते योशि  
१, ७०; अनुध्यायन्ति कौ ३, २;

अनुध्यायेत् योशि ५, ४४.

अनुध्यायात् वृ ४, ४, २१; अन्न  
४, ३७; शा २३; वरा ४, ३३.अनु-ध्यात- -त: अशि ७, ४; महा  
६, ८३; वृत् ३१८: ६.

अनु-ध्यायत्-यन् हं ९.

अनु/नी, अनुनीयसे मु २, २, ३.  
अनु-नीत- -तेन शु ३, १६.अनु(न-उ)न्मत्त- -त्त: तुश २१; पप  
४१९: १७; -त्ता: जा ६; या  
२, १; आश्र ४.अनुन्मत्तो(त-उ)न्मत्त-  
अनुन्मत्तोन्मत्त-वत् नाप ३, ८६.

अनु(न-उ)न्मेष- -षम् अन्न ५, ४०.

अनु(न-उ)पकारिन्- -रिण: सांका  
६०; -रिणे गी १७, २०.अनु/पच्, अनुपचति निरु २, ४.  
अनु(न-उ)पतस्थि- -स्थि: वा ६.

अनु(न-उ)पतापिन्- -पी छां ८, ४, २.

अनु-पद- -दम् पा ६, ३.

अनु(न-उ)पदेश- -श: सांस् १, ९.

अनु(न-उ)पनीत- -त: अशि ७, २;  
महा ६, ८३; च २१: ८;  
ऊ ६४: १३; वृत् ३१८: ४.अनुपनीत-शत- -तम् वृत् ८, ६;  
वृप् ५, १९.अनुपनीतो(त-उ)पनयना(न-अ)-  
न(न-अ)न्तर- -रम् नाप २.

अनु(न-उ)पनीय छां ५, ११, ७.

अनु(न-उ)पपत्ति- -त्ते: सांस् ५, ३५;

a) व्युत्पत्त्यायर्थं वृ. वैप १, १९८टि। b) 'अन्नं ज्ञात्वा' इति निसा. पामे. । 'आज्ञाम्'  
इति च आन. पामे. द. । c) यस. उप. कवत्वं भवति । d) 'ज्ञातः' इति निसा. पामे. । e) 'अनूपमम्'  
इति अज्या. पामे. । f) अस. इति कृत्वा वा. किंवि. द. ।

ब्रसू १, १, १६; २, ३; २, २, ३२; ३, ९.  
 अनु(न-उ)पमोग- नो सांसू ६, ४०.  
 अनु(न-उ)पम- मः अध्या २९.  
 अनु-परि/वृत्, अनुपरिवर्तन्ते वृ ६, २, १६.  
 अनु(न-उ)पलब्धि- धिः सांसू १, १०९; -न्धेः ब्रसू २, १, २; २, ३०.  
 अनुपलब्धि-तस्(>) आक्षि ४३.  
 अनु(न-उ)पलभ्य- छां ८, ८, ४.  
 अनु(न-उ)पलम्भ- मः सांसू १, १५६; -म्मस् गी ४, ८८.  
 अनु(न-उ)पलम्भन- नाव महा ५, ३४; वरा ४, १०.  
 अनु(न-उ)पविश्य तै २, ३, १.  
 अनु/पद्, अनुपश्यति ई ६; क २, १, ४; प्र ४, ५; वृ ४, ४, १५; स्वे १, १५; ब्रवि १५; ब्र ३, १०; त्रिता ५, १५; अवि १५; गी १३, ३०; १४, १९; अनुपश्यन्ति क २, २, १२; १३; स्वे ६, १२; कौ ३, २; अशि ५, १७; ब्र ३, ८; वट्ट ३१३ : २; स ३७८ : १२; गु ४४; भव २, ४८; गी १५, १०; अनुपश्यामि गी १, ३१; अनुपश्यामः छाग २५ : ८; अनुपश्य क १, १, ६.  
 अनु-पश्यत्- -श्यतः ई ७; नाप ९, १२९<sup>a</sup>; वरा ४, ४२९<sup>a</sup>.  
 अनु(न-उ)पसन्न- ज्ञाय शा ३३; -न्धेः २ प्र ३६ : ९.  
 अनु/१पा  
 अनु-पान- नम् छां १, १०, ३.  
 अनु(न-उ)पादेय- नम् मैत्रे १, ४, १०; अध्या ६२.  
 अनु(न-उ)पाधि- धिमिः कर १.

अनु-पाल<sup>b</sup>-  
 अनुपालि, अनुपालयेत् शि ६, २२४; ७, १२४.  
 अनुपालयत्- यन् नाप ४, १८.  
 अनु-पूर्व<sup>c</sup>-  
 आनुपूर्व्य- न्यात् शि ७, १३१; -न्धेः २ प्र ३६ : ४.  
 अनुपूर्व-शस्(>) शि ६, २२.  
 अनु-पृष्ठ<sup>d</sup>-  
 अनुपृष्ठ-तस्(>) शि ७, १७.  
 अनु(न-उ)पेत्य इ १८ : १.  
 अनु(न-उ)पोष्य ब्रसू ४, २, ७.  
 अनु/प्र(>पृ)च्छ, अनुपृच्छसि सूता १, ३४.  
 अनुप्राक्षीः क १, १, २५.  
 अनु-प्र/पद्, अनुप्राप्ति<sup>e</sup> छां ८, १४, १.  
 अनुप्र-पञ्च- न्नाः गी ९, २१.  
 अनु-प्र/भू  
 अनुप्र-भूत- तः छां ६, ११, १.  
 अनु-प्र/विश, अनुप्रविशति अशि ७, ९; अनुप्राविशत् पा ३, ३; ६, २; पै १, २९.  
 अनुप्र-विश्य तै २, ६, १; छां ६, ३, २; ३; वृ १, ५, १४; पाशु २, ११; पा १०, ४; व ११.  
 अनुप्र-विष्ट- -ष्टः क १, १, २९; कौ ४, १९; शौ ५४ : १; -ष्टम् क १, २, १२; पै ४, ११.  
 अनु-प्र/स्था>तिष्ठ, अनुप्रातिष्ठन् छाग २५ : ६.  
 अनु-प्रा(प्र/१अ)न् >ण, अनुप्रा- गन्ति तै २, ३, १; कौ ३, २.  
 अनु-प्रा(प्र/आ)प्  
 अनुप्रा(प्र-आ)स- सः अशि ४, ५; वट्ट ३१५ : २१.

अनुप्रा(प्र-आ)प्य पाशु २, १४; रुजा १, ३.  
 अनु-फल- लैः मै ३, २; मैत्रि ३, २.  
 अनु/बन्ध, अनुबन्धीत नाप ५, २२.  
 अनु-बन्ध- न्धः ब्रसू ३, ३, ५२; -न्धम् गी १८, २५; -न्धे गी १८, ३९.  
 अनुबन्ध-चतुष्क- -ष्कम् ते ५, ३५.  
 अनुबन्ध-पर- -रे अक्ष २, २९.  
 अनुबन्धा(न्ध-आ)दि- दिभ्यः ब्रसू ३, ३, ५०.  
 अनु-विभ्रती- अनु/भृद्.  
 अनु/बुध्, अनुबुध्धिरे छां ८, ७, २.  
 अनु/भू, अनुभूते वृ १, ४, १६; अनुभूमः वृ ५, १४, ५; गा १७; अनुभूहि मैत्रि ४, ४; मैत्रे २, १; वृजा ३, १; ते २-५, १; मं १, १, १; ४, १, १; रार ३-५, १; राउ ५, १; शां १, १; पै १, २; ३, १; अन्न १, २; या १, १; वरा ४, १; ५, १; सौ ३, १; सु १, २, १; रा ४२३ : ६; अनुभवाम छाग २४ : १९; अनुब्रवीत् वृ ६, ४, १४-१६; १८; अनुब्रूवात् वृ ५, १४, ५; छाग २४ : १६; गा १८.  
 अनु-बुवाण- -णाः आर्षे ७ : १.  
 अनु/भज्, अनुभजन्ति गोप् १९; २०.  
 अनु/भुज्  
 अनु-भुजान- नः कुं २७.  
 अनु/भू>भावि, अनुभवति प्र ४, ५; ५, ३; छां ७, ३, १<sup>f</sup>; वृ १, ३, १८; हं १६; नाप ५, १; द २१; १ संन्या २, ५९; अक्षि १९;

a) मा ४०, ७। b) तु. वैप १, २०५टि। c) अस.। d) 'नाभ्यवीमावात्' (पा २, ४, ८३) इति सुब-लुकरच पं. अमादेशस्य चाऽभावे सति पं. अर्थे तसिः प्र. इ.। e) आत्म. लुङि उपु १ इ. [ वैतु. शं. रामा. JC. च अनु-प्रा(प्र/आ)प् इत्यस्य सनीव रु. इति च्युतसंस्कारा इव सन्तोऽप्राकरणिकं वदन्तः ]।



सार २६८ : १४; ४१; अनुभ-  
वन्ति सार २४० : ६; १२;  
२०; २५४ : २२; २५६ : २;  
२५९ : ६; २८८ : १४; अनु-  
भवन्तितराम् सार २५४ : १२;  
अनुभवसि छां ६, ७, ३; ६; द  
१; अनुभवे सावि १०; अन्वभ-  
वत् २प्र ३२ : ८; ९; १२; १४;  
३३ : २; ४; ७; ८; अन्वभवत्  
सार २४८ : ११; अनुभवेयम्  
२प्र ३२ : ४.  
अन्वभूत् सार २२९ : ९.  
अनुभूयते वृत् ९, ९; अन्न १,  
५५; ५, २१; सु २, २, ५१;  
सर २, ६; सार २७१ : २०;  
अनुभूयन्ते सार २५० : १६;  
अनुभूयताम् शु ३, ६.  
अनु-भव- -वः १अव २१; सार  
२४१ : ३; २६९ : १४; -वम्  
सार २३२ : २१; २४६ : ६.  
अनुभविक- -केन सार  
२२७ : १४.  
अनुभव-कया- -थायाम् सार  
२५७ : २.  
अनुभव-पर्यन्त(न्ता- -न्ता  
वरा ४, ४३.  
अनुभव-लीला- -लाम् सार  
२४८ : २२.  
अनुभव-संभव- -वः सार  
२५७ : ५.  
अनुभवा(व-आ)त्मन्- -त्मनि  
वृत् ९, ९; -स्मा ववि ८७.  
अनुभविन्- -विनः सार  
२५७ : ४.  
अनुभवै(व-ए)क-वेद्य- -यम्  
वत् २५.

अनु-भवत्- -वन् वृत् ७, ७;  
सार २२९ : ७; २७८ : १८;  
२८१ : १५; २८४ : २२; -वन्तः  
सार २६६ : २२; २७२ : २;  
२७३ : ४; २०; २८६ : ४;  
२८७ : १९; २९२ : २३; -वन्तौ  
सार २७१ : २०.  
अनुभवन्ती- -न्ती सार २८३ :  
१९; २८५ : ६; २८६ : १७;  
-न्त्यः सार २३९ : २२; २४० :  
२; २७२ : ५; २८२ : १२.  
अनु-भाव- -वेन अवि ७.  
अनु-भावित- -ताः सार २४६ : १९.  
अनु-भूत,ता- -तः योशि ४, १०;  
सार २२७ : १०; -तम् प्र ४,  
५; पा ८, १; -ता सार २२७ :  
५; -ताः सार २२६ : २१.  
अनुभूत-विषया(य-अ)-संप्र-  
मोष- -वः योसु १, ११.  
अनु-भूति- -तिः वृत् ७, ६; ९, ४;  
अन्न २, १८; -तिम् मैत्रे २,  
२२; -तेः वृत् ९, ३.  
अनुभूति-मय- -यम् अन्न २, १७.  
!अनु-भूत्वा<sup>१</sup> मुं १, २, १०.  
अनु-भूय प्र ५, ४; वृत् १, ३;  
३, ७; नाप ५, १; ७, ८, ४;  
त्रिवि ५, ४; १संन्या २, १३;  
निह २, ९; सार २४० : ४;  
२५७ : १६; व्रसू ३, १, १३.  
अनु-भूमि- -मिः पा ४, ५.  
अनु/भृ  
अनु-विभ्र(वृ>)ती- -तीम् पी  
४२१ : ५.  
अनु/मद्, अनुमदन्तु अह ६<sup>१</sup>-८<sup>२</sup>;  
१२.  
अनु/मन्, अनुमेने आषे ७ : ९; अनु/मृज्, अनुमार्ष्टि वृ ६, ४, २१.

२१; ९; ३; अनुमेनिरे अव्य ६.  
अनु-मति- -तये वृ ६, ४, १९;  
२संन्या १६ : ९; -तिः व्रसू  
३, ४, १४.  
अनु-मन्- -न्ता वृत् ९, २; गी  
१३, २२.  
अनु/मन्त्र(<मन्त्र-), अनुमन्त्रयते  
कौ २, १५; प्रा १, १; अनु...  
मन्त्रयेत वृ ६, ४, ५; अनुमन्त्र-  
येत् कश्चु १, १; १संन्या १, १.  
अनु-मन्त्र- -न्त्रान् ह १५.  
अनु/मा, अनुमीयते मै ५, १;  
मैत्रि ६, १; अनुमीयन्ते पै  
३, १; अध्या ३६.  
अनु-मान- -नम् सांसू १, १००; ५,  
११; १००; सांका ४; ५; व्रसू  
१, २, २५; ३, ३; २, २, १; -नाम्  
त्रिवि २, १; सांसू २, ४३;  
सांका ६; -नेन सांसू १, ६०.  
आनुमानिक- -कम् व्रसू  
१, ४, १.  
अनुमान-संभव-वार्ता- -र्ताः  
ध्या ९३, १२.  
अनुमाना(न-अ)पेक्षा- -क्षा व्रसू  
१, १, १८.  
अनु-मेय- -यम् वृजा ५, ११; सू  
२, १, ११.  
अनुमेय-त्व- -त्वम् सांसू ५,  
१०१.  
अनु/मुद् >मोदि, अनुमोदामहे  
गौ ४, ५.  
अनु-मोदक- -कः तुअ १८.  
अनु-मोदयित्वा<sup>१</sup> १संन्या १, १;  
पप ४१८ : ८; शा १८; कश्चु  
१, १.  
अनु/मृज्, अनुमार्ष्टि वृ ६, ४, २१.

अ) 'छान्दसो व्यवभाष इति शं. प्रसू.। न त्वेवं संभाव्येत। सकर्मकस्य चवान्तस्य कर्माश्रुतावनुपयोगात्। एस्थि.  
छन्दोऽनुसन्धानतः 'नाकस्य पृष्ठे सुकृतेन भूत्वा, 'इमं लोकं हीनतरं विज्ञान्ति' इत्यस्यैवं मूलतः सतस्त्रैष्टुभपादद्वयस्य  
स्थाने यथोपलभ्यं पा. विहृतः द. (ते, वा इति पदयोरन्वयासिद्धत्वाच्च नाकविशेषणतया सुकृते इति पदस्य चमत्कारा-  
भावाच्चेति दिक्)। b) व्यवभाषरछान्दसः द.।

## अनु/यञ्

अनु-याज<sup>१</sup> - जा: प्रा ३, १; ४, १.

## अनु-यत्न-

अनुयत्न-तस्(&gt;) शि ६, २२८.

अनु/या, अनुयाति सार २७४ :

१६: अनुयान्ति श ५.

अनु-यात- -त: १संन्या २, ५५.

अनु/युञ्ज, अनुयुञ्जीत शि ७, ३९;

अन्वयुक्त का १.

अनु-यु(क्त)&gt;का- -क्ता राधा १,

७; १५; २, १.

## अनु/रच्

अनु-रचित- -तम् सार २५३:७.

अनु/रञ्ज, अनुरज्यते गी ११, ३६.

अनु-रक्त- -क्तानि भव ३, २७.

अनु-रक्ति- -क्ति: त्रिषा २, २९;

२भव ३३७ : ४.

## अनु-राग-

अनुराग-संवलि(त)&gt;ता-

-ताम् राधा ३, १०.

## अनु/राध्

अनु(>)नू-राधा<sup>१</sup> - -धा सार

२६२:२२; २६८:१०; -धायै

व ४३८:६.

अनु/रिष्, अनुरिष्यति छां४, १६, ३.

अनु/रुध्, अनुरुध्यते निरु१, १<sup>१</sup>; २<sup>१</sup>.अनु-रूप, पा- -पम्<sup>२</sup> वरा ४, २४;

नि २, ९; -पामि: कश्च २, ३;

-पाम् सु २, २, २४<sup>३</sup>.

अनुरूप-तस्(&gt;) शि ३, १४.

## अनु/लिप्

अनु-लिप्त- -सम् मै ३, ४; मैत्रि

३, ४; मैत्रे १, ३.

अनु/ली, अनुलीयते जाद १०, ७.

अनु-लो(म)&gt;मा- -माम् वृ६, ४, २१.

अनुलोम-वि-लोम- -मेन वो १४.

## अनु/वच्

अनु-वाक्<sup>१</sup> - -क: पा ४, १; -कै:

२संन्या १७:३.

अनु-वा(क्य)>क्या<sup>२</sup> - -क्या:

छाग २३:१०; २४:१३.

अनु(नु-उ) क- -कम् वृ १, ५, १७.

अनु(नु-ऊ)वान, ना- -न: वृ २,

१, १; शा ५; कौ ४, १; -नम्

ग ४; -ना: सुवा ९; -नाम्

अव्य २.

अनूचान-तम- -म: वृ ३, १, १.

अनूचान-मानिन्- -नी छां ६,

१, २.

अनु(नु-उ)च्य तै १, ११, १.

अनु(नु-उ)च्य- -च्ये कौ १, ५.

अनु/वद्, अनुवदति वृ ५, २, ३;

अनुवदन्ति कौ ३, २.

अनु/वस्, अनुवत्स्ये शौ ५१:१२.

## अनु/वा

अनु-वात- -ते शि ७, १५.

अनु-वासर<sup>१</sup> - -रम् अत्रि ४.

अनु/१विद्, अनु...अवेदम् ऐ४, ५.

अनु/२विद्, अनुविन्दते छां ८, ५,

१; ३; अनुविन्दन्ति छां ८, ४,

३; ५, ४; अन्वविन्दन् मना

२, १२, ३९<sup>०</sup>; २, ७९<sup>१</sup>; अनु-

विन्देत् वृ १, ४, ७.

अनु-वित्त- -त्त: वृ ४, ४, ८; ९;

१३; जा ५; या २, १.

अनु-विद्य छां ८, १, ६; ५, २;

१२, ६.

अनु/विष्, अनुवेधति अरु २९.

अनु-विध<sup>१</sup> - -धम् पा ८, १.

अनु-वि/धा, अनुविधीयते गी२, ६७.

अनु-वि/१धाच्, अनुविधावति क

२, १, १४; यु ४३.

अनु-वि/२नश्, अनुविनश्यति वृ

२, ४, १२; ४, ५, १३.

## अनु-वि-प्र/युञ्

अनुविप्र-यु(क्त)>का<sup>१</sup> - -क्ता: प्र

५, ६.

## अनु-वि/मृज्

अनुवि-मृज्य कौ २, ३; ४.

अनु-वि/ली, अनुविलीयते वृ २,

४, १२.

अनु/विश्, अनुविशन्ति भ २, २८.

## अनु-वि/ष(&lt;स)द्

अनुवि-षण- -णम् छां ८, १२, ४.

## अनु-वी(वि/ई)च्

अनुवी(वि-ई)श्च वृ १, ४, १.

अनु/वृज्&gt;वर्जि, अनुवर्जयेत् वृजा

४, ९.

अनु/वृत्&gt;वर्ति, अनुवर्तते शि ७,

१२३; भव १, ११; गी ३,

२१; अनुवर्तन्ते महा ५, १७७;

गी ३, २३<sup>०</sup>; ४, ११; अनुवर्त-

ध्वम् अक्ष ११.

अनुवर्तयति गी ३, १६.

## अनु-वृत्ति-

अनुवृत्ति-दर्शन- -नात् सांस्

१, २.

अनु-व्या(वि-आ)/ख्या, अनुव्या-

ख्यास्यामि छां ८, ९, ३; १०,

४; ११, ३.

अनुव्या-ख्यान- -नानि वृ २, ४,

१०; ४, १, २; ५, ११; मैत्रि

६, ३२.

## अनु-व्या(वि/आ)प्

अनुव्याप्त, सा- -सम् वृ२, १०<sup>१</sup>;

त्रिता ४, १९; -सा: मै २, ७.

अनु-व्या(वि-आ)/ह, अनुव्याहरत्

मै ५, ६; मैत्रि ६, ६.

a) वा. किवि. द्र.। b) 'पा' इति निसा. पामे.। c) ऋ ४, ५८, ४। d) तैआ १०, ६३, १।

e) अस. यथार्थे च पूष. द्र. (तु. पा २, १, ६)। उप. वि-धा- &lt;वि/धा यद्र. (वैतु. श्री. अनु/व्यच् इत्यस्य

कान्ततयैव व्याचक्षाणः संस्कारविस्मारतस्त्वोद्यः)। f) वैतु. शं. रामा. च 'अनविप्रयुक्ताः' इति पामे. नुवाणौ।

g) 'अनुवर्जयेत्' इति Schr. पामे. (वैतु. वे. (NIA. २, २३१))। h) 'व्याप्तम्' इति निसा. पामे.।

## अनु/व्रज्

अनु-व्रजत्- -जन् शु ३, २१; क  
१; कश्च २, २.

अनु-व्रत\* - तम् नाप ४, ३५.

अनु/शंस, अनुशंसन्ति मन्त्रि ९;  
चू ९.

अनु/शास् शासि, अनुशास्ति तै  
१, ११, १; अनुशासति वृ १, ५,  
१७; अनुशाधि मैत्रि ४, १;  
अनु...शाधि छां ४, २, ४; वृ  
४, २, १; अनुशिष्यात् के १, ३;  
छां ४, १४, २.

अनुशासस छां ४, १, २; ११-  
१३, १; १४, २; वृ ४, ३, ३२;  
नृउ ९, १९; अनु...अशिषत्  
छां ५, ३, १; अन्वशिषन् छाग  
२० : १७; अनु...अशिषम् छां  
५, ३, ४.

अनुशासस्य भ १, १.

अनु-शासन- -नम् क २, ३, १५;  
तै १, ११, ४; वृ २, ५, १९.

अनु-शासमान- -नानाम् २प्र  
३३ : ५.

अनु-शासितृ- -तारः व ४३४ : १;  
-तारम् गी ८, ९.

अनु-तिष्ठ- -ष्टः क १, १, २०;  
छां ५, ३, ४; वृ ६, २, १;  
-ष्टम् वृ १, ५, १७; -ष्टान्  
वृ ६, २, ३.

अनु/शी, ९<sup>b</sup>अनुशोते शे ४, ५;  
मना २, १३, १; नापू ५, २१.

अनु-शय-

अनुशय-वत्- -वान् ब्रसू ३,  
१, ८.

अनुशयिन्- -यिनः सांसू ५,  
१२६.

## अनु-शील°

✓अनुशीलि°

अनुशीलय(त् >)न्ती- -न्त्यः  
सार २३२ : १९.

अनु/रशुच्, अनुशोचति सौ २,  
१३; अनुशोचन्ति गी २, ११;  
अन्वशोचः गी २, ११°.

अनु-शोचितुम् गी २, २५.

अनु/शुष्य, अनुशुष्यति वृ १, ५, २१.  
अनु-शुष्य वृ १, ५, २१.

अनु/श्रु > श्र, अनुश्रुणोति प्र ४,  
५; अनुश्रुण्वन्ति कौ ३, २.

अनुशुश्रुम गी १, ४४.

अनु-श्रव-

आनुश्रविक- -कः सांका २;  
-कात् सांसू १, ८२.

अनु/ष(<स)ञ्ज्, अनुषज्जते अज २,  
५; गी ६, ४; १८, १०.

अनु-ष(ज्)-क्

आनुषक्! - षक् व ४५९ :  
३१९°.

अनु-षक्- -क्तः मैत्रि ४, ६.

अनु/ष्टु(<स्तु)म्

अनु-ष्टुम्! - -ष्टुप् वृ ५, १४, ५;

मैत्रि ७, ४; अशि १, ६; नृपू  
१, २; २, ३; ७; ५, ६;  
काला १; द ११; रार २, ८२;

अव्य ५; दत्ता १, ७; ३; सौ  
१, १; सर १, ४; २, १०;  
सूता १, २९; वृष ८५ : ८; लां  
२१३ : २; मृ २; कालि ४०३ :

११; गार ४०७ : १६; व  
४२६ : २; हंषो ३; -ष्टुभः  
नृपू १, २; -ष्टुभम् वृ ५, १४,

५; नृपू १, २; नृउ ४, ४; गा  
१७; -ष्टुमा नृपू १, २; २, ३;

४; ७; ५, ६; १०; नृउ २,  
११; ४, १; ३; ६, ३;  
गा १७.

आनुष्टुभ- -भः द १३;

रार २, ८२; दत्ता १, ७; -भम्  
नृपू १, २; १५; २, १; ७;  
५, ८; १२-१६; १८; महा १,

१; अव्य ६; च २० : ७; २प्र  
३३ : ३; -भस्य नृपू ३-५, १;  
११; -भान्याम्, -भे अव्य ५;

-भेन त्रिता ४, ४; १६.

आनुष्टुभी- -भीम्

अव्य २; ६.

आनुष्टुभ(भ-ञ्च)र्च्-

-भर्चा अव्य ३.

आनुष्टुभा(भ-ञ्च)भिम-

न्त्रित- -तैः अव्य ६.

अनुष्टु(म् >)प्-प्रतिष्ठित- -तम्  
अव्य ५.

अनुष्टु(म् >)ब्-द्वय- -यम् नापू  
३, १८.

अनु/ष्टा(<स्था), अनुतिष्ठति कुं ७;

अनुतिष्ठन्ति भव १, ५७; गी  
३, ३१; ३२; अनुतिष्ठामि, अनु-

तिष्ठन्तु १अव १२; अनुतिष्ठेत्  
अव्य ४.

अनु-तिष्ठत्- -ष्टन् नाप ३, २३.

अनु-तिष्ठमान- -नः सु २९४ : १.

अनु-ष्ठान-

अनुष्ठान-मात्र- -त्रेण राउ ५,  
१८.

अनु-ष्टाय क २, २, १.

अनु-ष्ठित- -तम् वृजा ५, ७; योशि  
२, ४.

अनु-ष्ठेय- -यम् क ७; कश्च ३, ७;  
ब्रसू ३, ४, १९.

a) अस्. इति कृत्वा वा. क्रि. द. । 'व्रतः' इति अज्या. पा. मे. । b) तैआ १०, १०, १। c) अनु-  
वर्त शीलमिति कृत्वा प्रास. द. । d) नापू. तत्करोत्यर्थे णिजन्तः नाधा. द. । वा. अकर्मकतापेक्षया च कृत्यपेक्षया च  
भ्वा. चुरा. च पठितान्यां पाधा. (मौत्वि. शील- इत्यतः समानं नाधा. सङ्ग्रहाम्) विवेकः सुकरः स्यात् ।  
e) 'अनुशोचम्' इति Schr. पा. मे. (वैतु. वे. (NIA २, २३१)) । f) तु. वैप १, २१७टिह. i. । g) ऋ १०, ८३, १।



अनु(र-उ)ष्ण-

अनुष्ण-गु<sup>a</sup>-अनुष्णगु-विश्व<sup>b</sup>- -श्वः राष्ट्र ४, ६.अनु-प्व(<स्व)ध- -धम् मना २,  
१२, २९°.

अनु-सं/वृज्, अनुसंवृज् छां ४, ४, ५.

अनु-सं/प्र(&gt;गृह्)

अनुसं-गृह् वृजा ३, ३४.

अनु-सं/चर, अनुसंचरति वृ ४,  
३, ७; १८°.

अनुसं-चरत्- -रत् तै ३, १०, ५.

अनु-सं/ज्वर, अनुसंज्वरेत् वृ ४,  
४, १२; शा २२.अनु-सं/तन्, अनुसंतनुत् छां ३,  
१६, २; ४; ६.

अनुसं-तत्- -तामि गी १५, २.

अनु-सं/!३दा<sup>d</sup>अनुसं-दित<sup>e</sup>-अनुसंदिता(त-आ)न<sup>f</sup>- -नम् पा  
६, २.अनु-सं/धा, अनुसंदध्यात् वृउ १,  
४; २, ११; ४, १; २; ७, ८;  
नाद ४१; नाप ८, ६.

अनुसं-दधत्- -धत् १अब १०.

अनुसं-धान- -नः नापू १, १२;  
-नम् नाप ६, १; वै ३, १; भा ३५.अनुसंधान-राहित्य- -त्यम् ते  
१, ४०.अनुसं-धाय नाप १; पत्र २; पी  
४२१ : ७.

अनुसं-धि- -धिः योशि २, २१.

अनुसं-धेय- -यः अता ९; वरा २,  
८३; -यम् मुद्र २.अनु-समा(म-आ)/ह, अनुसमा-  
हरति छां १, ५, ५°.अनु-समि(म्/इ) अनुसंयन्ति क २,  
२, ७; २शिसं २.

अनु/सिध्

अनु-स्यूत, ता- -तः वा २८; त्रिवा  
२, ११; -तम् वसू २४; -ते  
योशि ५, १८.

अनुस्यूत-स्व- -स्वेन ससा १, २८.

अनु/स्, अनुसरति मैत्रि ६, ३४;  
७, ११; अनुसरन्ति वरा ४,  
३४; ३५.

अनु-सार- -रेण शि ६, १९५.

अनु/स्मृ, अनुस्मर गी ८, ७;  
अनुस्मरेत् जाद ५, ९; गी ८, ९.अनु-स्मरत्- -रत् त्रिवि ६५; त्रिवि  
८, ५; १योत ९३; नाप ३, ८६;  
७°; गी ८, १३; -रतः योशि  
३, २५.अनु-स्मृति- -तेः वसू १, २, ३०;  
२, २, २५.अनु-स्मृत्य गौ ३, ४३°; कुं ८;  
गार ४०८ : २.

अनु/स्वृ

अनु-स्वार- -रः ग ७; ८.

अनुस्वार-संयु(त>)ता- -ता  
रापू ४, ६०.अनूक्त-, अनूचान-, अनूच्य, अनूच्य-  
अनु/वन् द.अनू(नु-उद्)>त्/कम्, अनूक्ता-  
मति वृ ४, ४, २; अनूक्तामन्ते

त्र १; अनूक्तामन्ति वृ ४, ४, २.

अनूत्-क्रामत्- -मन्तम् वृ ४, ४, २.

!अनूत्था(अनु-उद्>त्/स्था)<sup>g</sup>>-  
तिष्ठ, अनूत्तिष्ठन्ति छां ३, १९, ३.अनूदि(अनु-उद्/इ), अनूदेति वृ २,  
१, १०.

अनूद्-यत्- -यन्तम् आर्षे ८ : २०.

अनू(नु-उ)प/चर्

अनूप-चार- -रः भा २८.

!अनूपम<sup>h</sup>- -मम् योशि २, १७; ३, १७;  
नाद १८; अश ५, ७३; जाद ९, ४.

अनूपम्य- -म्यम् त्रिवि ६४.

अनू-राधा- अनु/राध् द.

अनू(न्-ऊ)ह्य<sup>i</sup>- -ह्यः मैत्रि ६, १७.

a) 'अनुष्णा गावः (=किरणाः) यस्य' इति कृत्वा बस. द.। b) बस. (= °शु विश्वं यस्य)। यद्वा पूष. विसर्गान्तं सत् पृथक् पदं स्यात्। एस्थि. विश्व- इति पुं. सत् तत्समानाधिकरणं स्यादिति विवेको विमृश्यः (तु. उग्र.)। c) श्रु २, ३, ११। तु. वैप १, २१९ टि०। d) एउ. टि. द.। e) नाउ. टि. द.। f) बस. (= °तः आनः येन यस्य वा। प्रथमे कल्पे 'नम्' इति रु. वा. क्वि. द.। उत्तरे तु अनुप्रवेशान्तरसमानाधिकरणमिति विवेकः सुदर्शः)। पूष. अनु-सं/धा> '°-धित-' इति सत् नैप्र. -दित- इति विपरिणतमिति कृत्वा एपू. धा. च नापू. कान्तस्य च सुकल्पता द.। उप. <√१अन् वद्र.। g) धा. द्रुपपृष्टिं प्रति संदेहः। यस्व. 'नु उत्तिष्ठन्ति' इति पदद्वयात्मकतया पा. व्यवस्थे- यत्वोपगमात्। नापू. वाक्ये भूयमाख्यस्य 'अनु' इत्येतस्य कप्र. पर्यायत्वभाजा 'प्रति' इत्यनेन कप्र. उदयप्रत्यायनपदयोर्योगे सति पश्चादाद्यर्थकस्योपसर्गत्याभीष्टस्य 'अनु' इत्यस्य साक्षाद्व्यपूरकस्य सतोऽन्वयस्य कस्यचित् संप्र. अश्रवणमपीह ज्ञापकं स्यात् [वैतु. शं. नापू. वाक्ये अनुं कप्र. प्रतिपाद्याऽपि (मुपा. त्वेत्स्वरतया सुस्रोधः द. [तु. संटि.]) तत्संयोगमेव सन्तमेनमि- हाऽतथयितुकाम इव आन. मुपा. अशुद्धत्वादाभास्यमानः ('उच्छ्रुतः नु उत्तिष्ठन्ति' इति पदत्रयं मूल इत्यमिसन्धेः [तु. शं. स्वयं प्रसिद्धयर्थानुवादेनाऽवसायुकः; आगि. च उत्थानमात्रं संवादुकः])]। h) बस.। पूष. प्रति संदेहः। तच्चेद् विशेषीयः अन् इति स्यात्, तर्हि उप. आदिदीर्घश्चान्दसः द.। अथवा 'अनुयतं व्याप्तम् उपमाम् उपमासर्वस्वम्, तत्तन्नेतरस्य स्वतःसारस्य सत् उपमानस्याऽभावात्' इति कृत्वाऽनु-पूर्वः प्राप्त. अपि सुवचः। i) तस.। यतु राती. उप. /१वह्>उह्य- इतीव व्याख्यत्, तच्चाऽऽद्रियेत। उप. दीर्घादित्वाऽनुपपत्तेरप्राकरयिकत्वाच्च।

अनृ(नृ-ञ्)क्ष(र>)रा- -रा मना १,  
१०९<sup>a</sup>.

अनृ(नृ-ञ्)च<sup>h</sup>- -चः इ १३:३<sup>c</sup>;  
१४:१७.

अनृ(नृ-ञ्)जु- -जवे शा ३३; सु १,  
१, ५१९<sup>d</sup>.

अनृ(नृ-ञ्)ण- -णः मना २, ७९९<sup>e</sup>;  
नाप ३, २३; शा ६; -णम्  
मना २, ७९९<sup>e</sup>.

\*आनृण्य- नाउ. टि. द्र

अनृ(नृ-ञ्)ण्य<sup>f</sup>-

अनृण्य-ता<sup>g</sup>- -ता मना २, ६३; ६४.

अनृ(नृ-ञ्)त,ता- -तम् प्र १, १६;  
६, १; सु ३, १, ६; तै २, ६, १;  
छां १, २, ३; ६, १६, १; ७,  
२, १<sup>h</sup>; ७, १; ८, ३, १; वृ ५,  
५, १<sup>i</sup>; मैत्रि ७, १०; गौ १,  
१२; आबो ३०; नाप ४, ५;  
५, १७; इ ११: ७; १०; भव  
५, ४; आश्र ४; -ता मै ४, ४,  
२; मैत्रि ६, ३४; मैत्रे १, ४,  
४; -ताम् नाप ३, ४३; -ते  
शि ७, ६६; -तेन छां ६, १६,  
१; ८, ३, २.

अनृत-भाषिन्- -विणे रा ३३.

अनृत-वादिन्- -दी नाप ५, १; ७, १.

अनृता(त-अ)दि- -दिना जाद २, ८.

अनृता(त-अ)पिधान- -ना: छां ८,  
३, १; २.

अनृता(त-अ)मिशसिन्- -सिनः  
मैत्रि ७, १०.

अनृता(त-अ)मिसंध- -धः छां ६,  
१६, १.

अनृतिन्- -तिने अव्य ७.

अनृशंस-

आनृशंस्य- -स्वम् भव ५, २१.

अनृ(नृ-ञ्)पि- -पवः कृप ७.

अनृसिंह- -हम् वृ ६, १.

अने(नृ-ए)क,का- -कः अज २, २१;

-कम् अज ३, २३; शौ ५१:

१५; सांस् १, १२४; सांका १०;

-का: सु १, १, ११; -कान् खे

४, १; वृ २, ५; -कानि शि ६,

१२४; -केषाम् योसू ४, ५; -केषु

वा २८; -कै: कै २, ३; भा ५.

अनेक-कला-को-वि(द>)दा- -दा:

सार २२२: ५; २८४: १७.

अनेक-कृत-पाप- -पः रार १, ९.

अनेक-कोटि-ब्रह्मा(द्वा-अ)ण्ड-

-ण्डम् ते ५, ५४.

अनेक-कोमल-कल- -लम् सार

२५३: १५.

अनेक-माण- -णा: भ २, २८.

अनेक-चित्त-विभ्रान्त- -न्ता: गी

१६, १६.

अनेक-जन्मन्-

अनेकजन्म-कृत- -तम् रुजा

३, १.

अनेकजन्म-संसिद्ध- -द्धः गी

६, ४५.

अनेकजन्म-संस्कार-गुरु-देव-

प्रसाद-

अनेकजन्मसंस्कारगुरुदेव-

प्रसाद-तस्(>): वरा ५, ६६.

अनेकजन्मा(न्म-अ)भ्यास-

-सेन वरा ४, ४१.

अनेकजन्मा(म-अ)र्जित-पुण्य-

पुञ्ज-पक्-कैवल्य-फल- -लः

मं ३, २, १.

अनेक-जल-क्रीडो(डा-उ)पकर-

(ण>)णा- -णा सार २६७:

१९.

अनेक-जाति-संभव- -वा: वसू

१२<sup>h</sup>.

अनेक-जीव-स(त>)इ-भाव-

-वम् ते ५, ८४.

अनेक-दिव्या(व्य-आ)भरण- -णम्

गी ११, १०.

अनेक-दुःख- -स्वानि भव १, २८.

अनेक-देह-संभव- -वात् वसू ६.

अनेक-दोष-दुष्ट- -ष्टस्य शि ७,

१२३.

अनेक-धा मैत्रि ६, २५; ना ४; सुवा

४<sup>i</sup>; ११; रार २, १७; वरा ५, ९;

सार २२३: १६; गी ११, १३.

अनेक-नयना(न-आ)कीर्ण- -र्णम्

त्रिवा २, १५५.

अनेक-पुष्प-गुच्छ-लता- -प्रथि-

(त>)ता- -ता: सार २६७: १४.

अनेक-प्रतिपत्ति- -त्ते: वसू १, ३, २७.

अनेक-बाहू(हु-उ)दर-वक्त्र-नेत्र-

-त्रम् गी ११, १६.

अनेक-भुज-संयुक्त- -क्तम् त्रिवा

२, १५४.

अनेक-भूमि- -मय: सार २७२: ७.

अनेक-भोग-रस- -रति-सुख-

-खम् सार २८४: ८.

अनेक-मणि-लता-प्रवर-ज्यो-

त्स्ना-पुष्प-लता- -ता: सार

२६६: ७.

अनेक-महा-राज<sup>j</sup>- -जाय इ १८:

२०.

अनेक-यज्ञ-दान- -नानि योशि ६,

४६.

अनेक-रङ्ग-

अनेकरङ्ग-रञ्जिता(त-अ)न्त-

(र>)रा- -रा सार २७१: १३.

अनेकरङ्ग-विचि(त्र>)त्रा- -त्रा:

सार २७६: २०.

अनेक-रसा(स-आ)स्वाद-सुख-

(द>)दा- -दा: सार २६७: ७.

a) ऋ १, २२, १५। b) तु.वैप १, २२४ टि। c) हविषो यावतः पितृदानं सः अनृचः प्राप्तातीति  
स्कन्धः पा. द्र। d) वाघ २, ८। e) तैआ १०, ६३, १। f) वि.द्र. (तु. BW. MW.; वै. तु. PW. अनृन्-ञ्)ण->  
भावे \*आनृण्य- इत्यनेन संभेदुक्तमित्यः। g) 'आनृण्यम्' इति JC. नादी. पा. मे.। h) 'वात्' इति अ. व्या. पा. मे.।

अनेक-रूप, पा- -यम् श्वे ४, १४;

५, १३; -याम् क १, १, १६;

-यैः सार २३८ : १३.

अनेक-लता- -ताः सार २२९ : १२.

अनेकलता-प्रथि(त&gt;)ता-

-ताः सार २६७ : १५.

अनेकलता(ता-अ)न्तर- -रे सार  
२८३ : १७.अनेक-वक्त्र-नयन- -नम् गी ११,  
१०.

अनेक-वट-शक्ति- -क्तिः नृउ २, ५.

अनेक-वदना(न-अ)न्वित- -तम्  
त्रिवा २, १५४.अनेक-वर्ण, णी- -णम् गी ११, २४;  
-र्णानाम् त्रिवि १९; त्रिवा ५,  
१९; अवि १९.अनेक-विहार-देह-धारिन्- -रिणे  
सार २७७ : १४.अनेक-क्षय्या- -य्यायाः सार २८६ :  
२२.अनेक-शस्त्र(ः) श २४; महा ५,  
१६१; सु २, २, ६५; सार  
२२३ : ७; ११; २३५ : ८;  
२३९ : १४; २४० : ३; २४६ :  
१६; २४९ : १३; २५३ : ५;  
९; १४; १६; २५६ : २१; २५७ :  
१५; २५८ : २; १३; १४; २६६ :  
१४; २६७ : ५; १३; २७० :  
५; ८; २७१ : १; २; २७४ :  
१५; १६; २७६ : ४; १९;  
२७७ : १९; २७८ : ४; २८० :  
१६; २३; २८३ : २२; २८५ :  
१९; २९० : २०.अनेक-शिल्लरा(र-आ)कीर्ण- -णम्  
शि ६, १०६.

अनेक-सखी- -खः सार २७२ : ४.

अनेक-सुगन्ध-रस- -साः सार  
२३७ : १७.अनेक-स्वादु-युत- -ताः सार  
२२५ : १९.अनेका(क-आ)कार-स्वचित- -तम्  
त्रिवा २, १५४.अनेका(क-आ)कार-संस्थि(त>)-  
ता- -ताम् शि ७, १२७.

अनेका(क-अ)क्षर- -रम् गोउ ३९.

अनेका(क-अ)द्भुत-दर्शन- -नम्  
गो ११, १०.अनेका(क-आ)नना(न-आख्य>)-  
ख्या- -ख्याम् गु ५७.अनेका(क-आ)युध-गण- -णैः त्रिवि  
७, ५०.अनेकायुध-मण्डित- -तम् त्रिवा  
२, १५४.अने(न-ए)काग्रय- -ग्रयम् महा  
५, ९.अने(न-ए)जल- -जल ई ४; गोपू  
४८९.

अनेन- इदम्- द्र.

अने(न-ए)वम् ब्रम् ३, १, ८.

अने(न-ए)वं-विद्- -विव वृ १, ४,  
१५; -विदम् छां ४, १७, १०.अने(न-ए)वणा(णा-आ)त्मन्-  
-त्मानः सार २८३ : १०.अनौ(न-ओ)कृत- -तम् पित्र २, ५;  
३, ९.

अनौ(न-ओ)द्वत्य- -त्यम् नाप ४, ११.

अनौ(न-ओ)पम्य- -म्यम् मै ५, ७;  
मैत्रि ६, ७; महा ४, ८६; पाशु  
२, २८.अन्त, न्ता<sup>b</sup>- -न्तः श्वे ६, २०; गौ  
१, २७; अशि ४, ७; या २,  
१७; दे १७; नापू ५, १७;  
रशिसं १३९<sup>c</sup>; वट ३१५ : २२;  
गी २, १६; १०, १९; २०;  
३२; ४०; १५, ३; -न्तम्  
छां ८, १, ५; २, १०; वृ १, ३,१०; ५, ३; २, ४, १; ४, १,  
५; ४, ३; ६; ५, २; अशि  
६, ८९<sup>d</sup>; मना २, १३, २; ते  
५, ७८; ६, ५; शां १, ७, ३३;  
२, १; महा ६, ३४<sup>e</sup>; ५१; छाग  
२५ : ६; पा ८, ४; गी ११,  
१६; -न्तात् छां ६, १३, २;  
-न्ताम् वृ ३, ३, १; -न्ताम् पा  
९, ६; ८; -न्ताय वृ ४, ३, १९;  
-न्ते छां ५, ३, ६; वृ ६, २, ५; श्वे  
१, १०; ४, १; गौ २, ६; ४,  
३१; मै १, १; मैत्रि १, २; मैत्रि  
१, १; सुवा २; ते १, २३; २योत  
१, ७; नाद ३५; मना २, १३,  
२; ब्रवि ४२; नाप ५, १; ६,  
२७; २८; ९, ९; निर्वा २९८ :  
१६; द ४; रार २, ७७; ७९;  
८०; ३, १; रापू ४, ४६; राउ  
५, २८; पै २, ५०; योशि ६, ९;  
१संन्या २, ४१; अन्न २, ३९;  
कर १; भ १, ३; पं १८; प्रा २,  
१; वरा २, ५१; शा ८; दत्ता  
१, ६; सौ २, ११; इ १७ :  
४; निरु १, २२; सूता १, ३३;  
वि १९; शि २, २२; ४, ३१;  
५, ३०; ६, ६९; ९५; १२८;  
१७६; २११; कौल १५; कश्रु  
२, ३; गी ७, १९; ८, ६;  
-न्तेन वृजा ४, ४; -न्तेभ्यः  
वृ ४, ३, ३३; -न्तेषु छां ८,  
७, ४; -न्तौ वृ ४, ३, १८.अन्त-काल- -ले वृ ४, ३, ३८;  
श्वे ३, २; अशि ५, ४; वृउ  
२, ८; वा ३; वट ३१७ : ३;  
गी २, ७२; ८, ५.अन्त-गत<sup>f</sup>- -तम् गी ७, २८.अन्त-तस् (>) तै २, २, १; ३,  
१०, १; छां १, २, ९; ३, १२;

a) मा ४०, ४। b) तु. वैप १, २२६ दिह। c) मा १७, २। d) 'अन्तम्' इति घौ. (१०, २, २७) पाठे.। e) 'अन्तद्' इति अघ्या. पाठे.। f) अन्तर्गत- इति मन्वानः j.c. विमृश्यः।



वृ १, ४, ११; १५; ५, २१;  
 ६, ३, ६; मैत्रि ६, ११; २४;  
 शौ ५२ : ७.  
 अन्त-वत्-वत् छां १, ८, ८; वृ  
 ३, ८, १०; गी ७, २३; वत्तः  
 वृ १, ५, १३; वन्तः गी २,  
 १८; वन्तम् वृ १, ५, १३.  
 अन्तवती-ती ससा १,  
 ३९; वत्तः कौ २, ५.  
 अन्तवत्-त्व-त्वम् गौ ४,  
 ३०; वृ २, २, ४१.  
 अन्त-वेला-लायाम् छां ३,  
 १७, ६.  
 अन्ता(न्त-अ)-भाव-वे ते ५,  
 २८.  
 √अन्ति  
 अन्तक-क १, १, २६;  
 -कः मना २, ७४९; राउ ४,  
 १४; वृ ४, १५, २६.  
 अन्ते-वासिन्-सिनः छां ४, १०,  
 १; -सिनम् तै १, ११, १;  
 म १, १; -सिने छां ३, ११,  
 ५; वृ ६, ३, ७-१२; -सिन्धः  
 वृ ६, ३, १२; -सी तै १, ३, ३.  
 अन्त्य-न्त्या-न्त्यः वृ ७, ७;  
 -न्त्यम् त्रिता १, ४६; ४८<sup>b</sup>;  
 -न्त्यया त्रिता ५, १; -न्त्ये सार  
 २७४ : ५.  
 अन्त्य-ज-जम् नाप ७;  
 १संन्या २, ७९.  
 अन्त्यज-दर्शन-ने वृजा  
 ४, ७.  
 अन्त्य-माया-याम् त्रिता १,  
 ७२.

अन्त्य-रूप-पम् ग ८.  
 अन्त्या(न्त्य-अ)ङ्घ्री(ङ्घ्रि-ई)-  
 श-विषद्वि(द्व-वि)न्दु-नाद-  
 -दैः रापू ४, ५६.  
 अन्त्या(न्त्य-अ)वस्थिति-तेः  
 वृ २, २, ३६.  
 अन्त(न्त-तै)र(>); श<sup>१</sup> ई ५, क २,  
 १, १०; प्र ६, २; सुं २, २, ६;  
 ३, १, ५; तै १, ६, १; छां १,  
 ६, ६; ७, ५; ३, १२, ४; ८;  
 १३, ७; १४, ३<sup>१</sup>; ४; ५, ८,  
 १; ९, १; ८, १, १-३; वृ  
 १, ३, ८; १०; २, १, १७;  
 ३, ४; ५; ४, २, ३<sup>१</sup>; ४, २२;  
 ५, ६, १; ९, १; ६, २, १३;  
 श्वे २, १६; गौ २, ९; १०; १३;  
 १४; १५; ४, ३३; कौ २, १०९<sup>१</sup>;  
 मै २, ८; ४, ५<sup>१</sup>; ५, १; मैत्रि ५,  
 २<sup>१</sup>; ६, १<sup>१</sup>; ३६; ७, १-७; मैत्रे  
 १, ४, १२; ना २; मना १, १९<sup>१</sup>;  
 ३९<sup>b</sup>; २, १३, २; २, १४; ४०९<sup>१</sup>;  
 ६८; अशि ५, २९<sup>b</sup>; ६, १९<sup>१</sup>;  
 ३९<sup>१</sup>; वृ १, १; पाशु १, २७;  
 सुबा ७; ८; मन्त्रि २; ससा १,  
 १८; वस् २४; ते २, १५; ३१;  
 ४, २; ४; ५, ९; २८; रार २,  
 ४८; वृ ७२; १योत ११७;  
 सी १५; नाप ३, २६; ८६;  
 ४, ३८; ५, ३६; ८, १;  
 १०; रापू ५, ५; महा २, ४;  
 ४४; ५२; ४, ३१; ९६; ५,  
 १९; ५३; १३३; ६, ३६;  
 ६८; ७०; योशि १, ६४; ६,  
 २१<sup>१</sup>; १संन्या २, २९; पप

४१९; ६; ए १०; अन्न १,  
 ३६; ३७; ५५; ५७; २, २४;  
 ४४; ३, १०; ४, ५१; ६२; ५,  
 ९; १४; २९; ३९; ९०; ९८;  
 ११५; ११६; वृजा १, १; त्रिवि  
 ७, १७; अघ्या १; २७; पाशु १,  
 १३; २१; २५; शां १, ७, १४;  
 पत्र २; ३, १०; १३; दे ३९<sup>b</sup>;  
 भा २४; यो ३, ३२; म २, १६;  
 १८; ३०; गोउ २४; शा ११; २७;  
 वरा ४, २४; सर ३, १८; व ८;  
 ११; या २, १; आपै ९; ५; १५;  
 छाग २४ : ९; पा १, ८; ३, २;  
 ८, ३; ८; वृ ३१६; १८; २१९<sup>१</sup>;  
 सूता १, ९; ११९<sup>१</sup>; नापू १, १५;  
 सार २२० : १८<sup>m</sup>; २६६; १५;  
 २६८ : १९; १शिसं २९<sup>m</sup>; ३९<sup>१</sup>;  
 २शिसं ३९<sup>m</sup>; ४९<sup>१</sup>; शि २, ८<sup>१</sup>; ७,  
 १२७; स ३७९ : १९; गु ४६;  
 पी ४२२ : ७; कौल २०; चू २;  
 वृ १, १, २०; गी १३, १५.  
 अन्तःकरण-णम् ते ५, ८९;  
 १०१; त्रिवि ५, ६; ७; पै १,  
 २४; २, १३; शि १, २४;  
 सांका ३३; -णस्य सांसू १,  
 ६४; ९९; -णानि त्रिवि ४,  
 १४; -णेन मै ४, ४, ९; मैत्रि  
 ६, ३४; मव ३, ३१.  
 अन्तःकरण-क-कम् ते ६, ५५.  
 अन्तःकरण-चतुष्टय-यम् पै  
 २, २४; ३, १; शारी १; -यैः  
 शारी ५.  
 अन्तःकरणचतुष्टया(य-आ)-  
 त्मन्-त्मा राउ ४, ११.

a) तैश्चा १०, ३७, १। b) 'अन्तिमाक्षरम्' इति निसा. संटि. पामे.। c) 'न्योर्धोऽक्षयुतो विन्दु-  
 नादधीजम्' इति आन. 'अन्त्यार्धोऽक्षवि-' इति च अघ्या. पामे.। d) तु. वैप १, २८८ टि। e) वैतु. शं.  
 'आमन्' इति नाउ. पदं स१ सदप्यनेन समस्येव द्वि१ इतीव कृत्वा तात्पर्यमात्रतो व्याख्यायुकः। f) मंत्रा १, ५,  
 १०। g) मा ३१, १९। h) मा ३२, ४। i) अ ४, ५८, ६। j) शौ ७, ९२, १।  
 k) अ १०, १३५, ७। l) तैश्चा १०, १, ३। m) 'सष्टिम्' (=स. अर्थे द्वि.) इत्येतदन्वितः कप्र. भवति।  
 n) मा ३४, २। o) मा ३४, ३।

अन्तःकरण-जृम्भण- -णात्  
स्क २.  
अन्तःकरण-धर्म-  
अन्तःकरणधर्म-स्व- -स्वम्  
सांस् ५, २५.  
अन्तःकरण-नाश- -शेन स्क २.  
अन्तःकरण-प्रतिबिम्बित-  
चैतन्य- -न्यम् पै २, ३२.  
अन्तःकरण-म(नम् >)नो-बुद्धि-  
चित्ता(त-अ)ङ्कार- -राः त्रिन्ना  
१, ५; पै २, १३; सू १५.  
अन्तःकरण-व्याना(न-अ)क्षि-  
रस-पायु-न(भम् >)मः-कर्म-  
-मात् त्रिन्ना २, १.  
अन्तःकरण-संस्तुति- -तिः ते  
६, १७.  
अन्तःकरण-स(त् >)द-भाव-  
-वः ते ५, ५३.  
अन्तःकरण-संबन्ध- -न्धात्  
कह ३९.  
अन्तःकरण-संभिन्न-बोध-  
-वः अघ्या ३१; पै ३, १.  
अन्तःकरण-संभृत- -तम्  
सी २९.  
अन्तःकरणो(ण-उ)पाधिक-  
-काः त्रिवि ४, १४.  
अन्तःकेसर- -रः राधा १, १४.  
अन्तःक्षीणा(ण-अ)विद्य- -द्यः  
महा ४, १२७.  
अन्तः-पदार्थ-विवेचन- -ने  
अता १०.  
अन्तः-पुर-स्थ- -स्थम् महा ३,  
२५.  
अन्तः-पुरा(र-अ)जिर- -रे महा  
२, २४; ४, ३८.  
अन्तः-पुरुष- -वः मै ३, ३; मैत्रि ३,  
३; त्रिता ५, १; -वेण मै ३, ३;

मैत्रि ३, ३.  
अन्तः-पूर्ण- -र्णः मैत्रे २, २७; वरा  
४, १८.  
अन्तः-प्रकाश- -शेन १ संन्या २,  
२३.  
अन्तः-प्रज्ञ- -ज्ञः मां ४; गौ १, १;  
तृपू ४, ५; सुवा ५; राउ ३,  
१; -ज्ञम् मां ७; तृपू ४, ७;  
नाप २, २०; राउ ३, १.  
अन्तः-प्रणव- -वः, -वम् नाप ८, १.  
अन्तः-प्रणव-नादा(द-आ)ख्य-  
-स्वः पाशु २, ३.  
अन्तः-प्रतिष्ठान- -नात् वसू १,  
२, २६.  
अन्तः-प्रबोध-  
अन्तः-प्रबोध-वत्- -वान् अक्षि  
३५.  
अन्तः-प्रलीन- -नम् गरु ९.  
अन्तः-शरीर-स्थ- -स्थम् गौ  
१७, ६.  
अन्तः-शान्त-समस्ते(स्त-ई)ह<sup>b</sup>-  
-हः सु २, २, ७०.  
अन्तः-शिखो(खा-उ)पवीत-  
अन्तःशिखोपवीतिन्-  
अन्तःशिखोपवीति-स्व-  
-स्वम् पत्र २.  
अन्तः-शिखो(खा-उ)पवीत-  
धारण- -णम् पत्र २.  
अन्तः-शीतलता- -तायाम् अन्न  
१, ३५.  
अन्तः-शीतल(ल >)ला- -लया महा  
६, ४३<sup>c</sup>; अन्न १, २८; १ संन्या  
२, ४०.  
अन्तः-शुद्ध- -द्धः मैत्रि ७, ४; वरा  
४, १८.  
अन्तः-शून्य- -न्यः मैत्रे २, २७.  
अन्तः-सङ्ग- -ङ्गम् वरा २, ३६.

अन्तःसङ्ग-परित्यागिन्<sup>d</sup>- -गी  
नाप ६, ३७; महा ६, ७०.  
अन्तः-संस्थित-सर्वा(र्वि-आ)हा-  
-शः महा ६, ६७.  
अन्तः-संन्या(स >)सा- -सा अक्षि  
२८<sup>e</sup>.  
अन्तः-सुख- -खः गौ ५, २४.  
अन्तः-सुगन्ध-तैल-  
अन्तःसुगन्धतैला(ल-अ)-  
गुरुरस-कर्पूर-शृगमद-केसर-  
रस<sup>f</sup>- -साः सार २६४ : ६.  
अन्त(इ >): -स्था  
अन्तः-स्थ, स्था- -स्थम् मैत्रि  
६, १३; पै ३, २; यो३, २६; जाद  
४, ५८; -स्थया अन्न २, ४२;  
-स्थानि नाप ३, २६; गौ ८, २२.  
अन्तः-स्थ-संवि(द >)न्-  
मात्र-पर- -रः महा ४, ८३;  
वरा २, ५०<sup>f</sup>.  
अन्तः-स्थान- -नात् गौ २, १;  
४; -नेभ्यः अ २.  
अन्तः-स्थित(त >)ता- -ता महा  
५, २६.  
अन्तर(इ-अ)ङ्ग- -ङ्गम् भव २, २७;  
योसू ३, ७.  
अन्तरङ्ग-तरङ्ग- -ङ्गस्य नाद ४६<sup>g</sup>.  
अन्तरङ्ग-भुजङ्ग(जम्-ग)म-  
-मम् नाद ४३<sup>h</sup>.  
अन्तरङ्ग-सारङ्ग-बन्धन- -ने  
नाद ४५.  
अन्तर(इ-अ)मृता(त-अ)कु(रक >)-  
रिका- -का अक्षि २७.  
अन्तरा(र-आ)काश- -शे मैत्रि ६,  
२८.  
अन्तरा(इ-आ)त्मक-  
अन्तरात्मकी- -क्या मैत्रि  
६, १.

a) 'रसपायू' इति अज्या.मूको.पाभे.। b) 'शान्तः समस्तेहः' इति पदद्वयात्मकः निसा. पाभे.। c) 'अतः  
क्षी-' इति निसा.मूको.पाभे.। d) उप.परि/त्थञ्+विनुण् प्र.उसं.(पा३, २, १४२)। e) 'साम्' इति अज्या. पाभे.।  
f) 'स्थः संविन्मात्रपरः' इति पदद्वयात्मकः निसा.पाभे.। g) 'समुद्रस्य' इति निसा.पाभे.। h) 'मः' इति निसा.पाभे.।

अन्तरा(र-आ)स्मन्- स्मनः मैत्रि  
६, १; भव १, ५; स्मना मै ५,  
१; गी ६, ४७; स्मने सार  
२६१: ५; स्मा क २, ३, १७; मुं  
२, १, ९; स्वे ३, १३; मै ५, १;  
मैत्रि ६, १; मना २, १२, १; २,  
६६७; पै ४, १२; १आ १; ३;  
२आ १; २; त्रिवि १, ११; रुह  
१३; म २, ७; काला १४; शा  
२०; जाबा २३; अद्वै ३; सूता  
४, १०; पा १, २; २, २; ७;  
५, ७; १०, २; गार ४०५:  
२०; राधा ४, २२; स्मानम्  
नि ४६; त्रिवि ५, १२; रापू ५,  
५; रुह १२.

अन्तरात्मक- कः ते ४, ४४.

अन्तरा(र-आ)राम- मः गी ५, २४.

अन्तरा(र-आ)ल- लम् त्रिता २,  
४०; ले मै २, ८; लेषु शि ६, ७६.

अन्तरालिक- कम् सार २७८:

७; ९; काः सार २७८: ६;

कानि सार २७८: ७.

अन्तरा(र-आ)स्था- स्थाम् महा  
६, १.

अन्तरि(र-इ)

अन्तरा(र-आ)य- यः हे १३;

याः योस् १, ३०.

अन्तराय- अस्ति- स्ते:

सांस् ६, २०.

अन्तराया(य-अ)भाव-

-वः योस् १, २९.

अन्तरि(र-इ)व, ता- तम् गोपू

२३; ते, तौ त्रिता ३, १४.

अन्तरि(र-ई)क्षण- गेन अता १०.

अन्तरा(र-उ)पवीत- लक्षण- णम्  
पत्र २.

अन्तर- गम्

अन्तर-ग- नः मैत्रि ६, ३५.

अन्तर-गत, ता- तः पाशु १,  
१३; तम् मै ४, ४, १०;  
मैत्रि ६, ३४; व ३, १; नाद  
३१; नाप ३, ८१; मं ५, १, ४;  
पत्र ६, २१; जाद ४, ५४;  
तस्य मैत्रि ६, ३५; -ता ध्या  
८०; योचू ५२; योशि ५, ४०.  
अन्तर्गत-प्रमा-गूढ- ढम्  
पाशु २, ३.

अन्तर-गूढ-प्रमा- मा पाशु  
२, ५.

अन्तर-ज्योतिस्- तिः वृ ४, ३,  
७; आर्षे ९: १३; गी ५, २४.

अन्तर-दृष्टि- दृष्टिः अता १०;  
-ध्या अता २; ५; ९; १०.

अन्तर्दृष्टि-मत्- मत् षो १२.

अन्तर-धा, अन्तर्दधे रापू ५, ९;  
सार २३३: ३.

अन्तरधीयत अन्न १, १२.

अन्तर-धान- नम् शि ७, ४७;

योस् ३, २१; ने गोउ २६;

६२; ६७; नेषु गोउ ६३.

अन्तर-धाय छां ६, १६, १; २;

मै २, ११; मैत्रि २, ७; कौ २, १५.

अन्तर-हित, ता- तः गोपू २५;

इ १०: ३; तम्, -ता मै ५,

६; मैत्रि ६, ६.

अन्तर्हिते(त-इ)न्द्रिय- यः

मैत्रि ६, २५.

अन्तर-धारण-शक्त- केन स  
३७९: १.

अन्तर-ध्वै

अन्तर-ध्यायमा(न>)ना-

-नाम् गु ३५.

अन्तर-निर्लिप्त- सम् म २, १८.

अन्तर-निश्चय- यम् महा ६, ४२.

अन्तर-बन्ध- न्वः महा ४, ४७.

अन्तर-बहिस(>र) नाप ३, ८६.

अन्तर्बहिर-धारित- तम् स  
३७८: ३.

अन्तर्बहिर-व्यापक- कः त्रिवि  
१, १.

अन्तर-बा(ह्य>)ह्या- ह्यायाम् मं  
१, ३, ५.

अन्तर्बाह्य-लक्ष्य- लक्ष्ये अता १२.

अन्तर्बाह्ये(ह्य-इ)न्द्रिय- यैः मं  
१, ३, ६.

अन्तर-भाग- ने सार २७०: २१.

अन्तर-भू > भावि, अन्तर्भवति  
रु ३.

अन्तर्भाव्यताम् महा ५,  
११८.

अन्तर-भवन- नम् पै २, ३९.

अन्तर-भाव- वात् वसू २,  
३, ५३; ३, २, २०.

अन्तर-भावना- ना महा ५,  
११३.

अन्तर-भूत- तस्य मैत्रि ७,  
११; -ता, तौ त्रित्रा १, ६.

अन्तर-मल-नाशि(न>)नी-

नीम् तुल ७०: ८.

अन्तर-मुख- खः नाप ६, ३६;

त्रित्रा २, १२०; अन्न ५, ११५;

-स्वाय मवा २.

अन्तर्मुख-ता- तया अन्न १,

३४; ५, १२; अहि ३६; वरा

४, १५.

अन्तर्मुख-सु-विभ्रम- मः ते

६, २९.

अन्तर्मुख-स्थिति- ते: अन्न १,

३२.

अन्तर्मुखी/भू

अन्तर्मुखी-भाव- वः त्रित्रा

२, ३०; २आ ३३७: ७.

अन्तर-श्यम्

अन्तर-याम- मः मैत्रि २, ६;

a) तैत्ति २, ६९ । b) तु. F.W. प्रसू. (वैतु. वाच. प्रसू. अन्तर-आल- इति पदविभागः) ।  
c) 'अन्तर' इति पृथगेव वा द्र. (तु. नाउ. पादे 'बहिर' इति) । यनि. वा. विधेयत्वं द्र. । d) 'नः' इति निप्ता. पाभे.।



-मम् मै २, ८<sup>१</sup>; मैत्रि २, ६;  
 सुबा ९<sup>२</sup>; १५.  
 अन्तर-यामिन्-मिणम् वृ ३,  
 ७, १<sup>१</sup>; २; -मिणे सार २६१:  
 १३; -मी मां ६; वृ ३, ७,  
 ३-२२; २३<sup>३</sup>; मै २, ८<sup>१</sup>; वृप्  
 ४, ६; वृउ १, ९; सुबा ५; वृ १;  
 ससा १, ३; २८; वृवि ८४; नाप  
 ८, १४; राउ ३, १; विद्या ४;  
 गोउ ६४; व ४२६: २; व्रम्  
 १, २, १८.  
 अन्तर्यामि-त्व-स्वेन नि  
 १५.  
 अन्तर्याम्या(मि-आ)स्मन्-  
 स्मना सर २, ५.  
 अन्तर-बाग-ना: पाशु १, २०;  
 -नाम् १अव ६.  
 अन्तर-लक्ष्य-क्ष्य: मं १, ४, ४;  
 -क्ष्यम् अता १३; मं १, ३, ६;  
 ४, १<sup>१</sup>.  
 अन्तर्लक्ष्य-ज्वल(त् >)ज्-ज्यो-  
 (तिसु >)ति:स्वरूप-पम्  
 अता १३.  
 अन्तर्लक्ष्य-दर्शन-नेन मं १,  
 ४, ४.  
 अन्तर्लक्ष्य-लक्षण-णम्  
 अता ५.  
 अन्तर्लक्ष्य-विलीन-चित्त-  
 पवन<sup>१</sup>-न: शां १, ७, १५.  
 अन्तर्लक्ष्य(द्य-आ)दिक-कम्  
 मं २, १, १.  
 अन्तर-लीन-नेन योशि ३, २३.  
 अन्तर्लीन-समारम्भ-शुभा(म-  
 अ-शुभ-महा(ह-अ)ङ्कुर<sup>२</sup>-  
 -रम् अण ४, ३९.  
 अन्तर-वर्ति-दृष्टि-दृष्टि महा २,

४६; ६, ४८<sup>१</sup>.  
 अन्तर-वासना-नासु अक्षि ४.  
 अन्तर-वीथी-थी गु १०.  
 अन्तर-वृत्त-वीथी-थ्याम् त्रिवि  
 ७, ४८.  
 अन्तर-वृत्ति-त्तय: नाप ५, १.  
 अन्तर-वेदि-दि: गर्भ ५; -द्याम्  
 मैत्रि ६, ३६.  
 अन्तर-वैराग्य-यम् महा ६, ७१.  
 अन्तर-हृदय-य: मैत्रि ६, २९; ३०.  
 अन्तर्हृदया(य-आ)काश-शाम्  
 मैत्रि ६, २७; -शस्य मैत्रि ६, २८.  
 अन्तर्हृदयाकाश-शब्द-  
 -शब्दम् मैत्रि ६, २२.  
 अन्तर(र > >)श्-चित्त-त्ते गौ २,  
 १३.  
 अन्तर(र > >)श्-चेतस्-तत्ता गौ  
 २, ९; १०.  
 अन्तर(र > >)स्-तत्त्व-मेलन-  
 -नम् पत्र २.  
 अन्तर(र > >)स्-तीर्थ-र्थम् जाद  
 ४, ५३.  
 अन्तर(र > >)स्-तृष्णा-ष्णा मैत्रि  
 ३, ५.  
 अन्तस्तृष्णो(ष्णा-उ)त्तस-स्ता-  
 नाम् अण १, ३५.  
 अन्तर(र > >)स्-तोष-पम्  
 १ संन्या २, ५२.  
 अन्तस्त्रि(स्-त्रि-कोणा(ण-अ)प्र-  
 (ग >)गा-गा: भा २४.  
 अ(न्-त)न्तर<sup>३</sup>-र: तै २, २-५, १;  
 वृ ३, ७, १; ३<sup>१</sup>-२३<sup>३</sup>; मैत्रि ३,  
 १८; वृवि २२; कर् १८<sup>३</sup>; व्रस्  
 १, २, १३; -रम् तै २, ७, १; खे १,  
 ७; पर्व ३; अशि १, ३<sup>३</sup>; नाप ४,  
 २६; ९, ६; द ४; स्क ९; १०;

त्रिवि ६, २५; महा ४, ७९; योशि  
 ४, ८; कर् २८; जाद १, २१; सु  
 २, २, ६७; भव २, ६; गी ११,  
 २०; १३, ३४; -रात् मैत्रि ३,  
 १८; अशि १, ३; -रे क १,  
 २, ५; सुं १, २, ८; मै ५, १;  
 २; मैत्रि ६, १; २; ७, ९; सुबा  
 ५<sup>१२</sup>; ७<sup>१३</sup>; त्रिवा २, १२; ४१;  
 शां १, ३, १; ७, ४८; अद्या  
 १<sup>१३</sup>; अण १, ४०; त्रिता १, १;  
 जाद ३, २; ४, ५५; आर्षे ७:  
 २; ८: १६; गोच ६९: १५;  
 गी ५, २७; -रेण सुं १, २, २;  
 तै १, ६, १; वृ ३, ३, २; ६,  
 ४, ५; वरा ३, ११; आर्षे ७:  
 ९; शि ७, ६८.  
 अन्तर-र: आबो १०; आर्षे  
 ९: १२; -रम् वृ ४, ३, २१<sup>३</sup>; कौ  
 २, ५<sup>१३</sup>; मैत्रि २, २३; वृउ २, २०;  
 नाप ८, १७; १९; शां १, १<sup>३</sup>;  
 अक्ष ३; अक्षि २४; वरा ५, ७३;  
 सु २, २, ६३; वृष ८४: १४;  
 सांस् २, १९; -राणि वृष ८४:  
 १४; १७; -रे अता १०; -रै:  
 सार २७१: ३.  
 अन्तर-चिन्ता-  
 अन्तरचिन्तिका-का  
 शां १, ७, २०; वरा २, ४४.  
 अन्तर-प्रणव-व: नाप ७.  
 अन्तर-वल्लव-यम् वृष  
 ८४: १०.  
 अन्तर-तर-रम् वृ १, ४, ८.  
 अन्तर-तस्(>) वृ १, ४, ६<sup>३</sup>; ३,  
 ९, २८.  
 अन्तर-स्थित-त: कर् १९.  
 अन्तरा(र-अ)ग्नि-ग्नि: गर्भ २.

a) 'मः' इति अज्या. पामे.। b) 'मम्' इति अज्या. पामे.। c) 'क्ष्यजलज्यो-' इति निसा.  
 पामे.। d) अन्तर्लक्ष्यविलीनौ चित्तं च (प्राणात्मकः) पवनश्च यस्येति कृत्वा वस. द्र.। e) 'रम्भः शुभा-'  
 इति निसा. असमस्तः पामे.। f) 'र्तिवृत्ति-' इति अज्या. पामे.। g) तु. वैप १, २३५ टि। h) 'अन्त-  
 रम्' इति निसा. पामे.।

अन्तरा(र-अ)न्तर- -रः मैत्रि  
७, १.  
अन्तरान्तर-रूप- -यः ते ३, ८.  
अन्तरा(र-अ)न्तर(मि-अ)न्तर- -रम्  
महा २, ७३.  
अन्तर्य-  
अन्तर्या(र्य-अ)न्तर(रड-उ)-  
पयोग- -गात् मैत्रि ६, ३६.  
अन्तरा प्र ३, ८; छां ८, १४, १; वृ  
३, ८, ३, ४; ६, ७; ६, २, २५<sup>b</sup>;  
मैत्रि २, ६<sup>c</sup>; १योत १२९; २प्र  
३७ : २; पित्र ५, ९; ब्रह्म २,  
३, १५; ३, ३, ३५; ४, ३६.  
अन्तरा-दिश- -दिशः प्र १, ६.  
अन्तरात्मन्-, अन्तराय-, अन्त-  
राराम-, अन्तराल-, अन्तरित-  
अन्तर्-<sup>d</sup> द.  
अन्तरि-<sup>e</sup> -अस्म प्र ५, ४; ७; मुं२,  
२, ५; तै १, ५, १; ७, १; ऐ १,  
२; छां १, ३, ७; ६, २; २, २,  
१; २; १७, १; ३, १, १; १५,  
५; ४, ६, ३; ७, ६, १; ८, १;  
१०, १; वृ १, १, १; २, ३, २,  
३, ३; ३, १, ६; ७, ६<sup>f</sup>; ९, ३;  
७; ५, १४, १; मैत्रि ६, ३३<sup>g</sup>;  
३४; मना १, २, १४५<sup>d</sup>; २,  
७९<sup>h</sup>; अशि २, १३; अ १;  
वृष १, ३; २, २; वृष ३, ३;  
काला १४; प्या १०; त्रिवि ५;  
अव्य १; ए ७; जाबा २३; आपै  
७:१०; १प्र ३१:७; २प्र ३२:  
१२; ३६:१८; वदु ३१४:६;  
२शिसं ९; गार ४०६:१४;  
या १; व ४३६: १२; -आणि  
अशि ६, १; -आत् छां ३,  
१४, ३; ४, १७, १; वृ २, ३,

२; ३, ७, ६; -आय मना २,  
३-५; ६७; -अ प्र २, ९; छां  
२, ९, ४; वृ ३, ७, ६; मना  
१, १४; अशि ६, ६; कौ ३,  
१; सार २७२ : १६; नी २,  
१०५<sup>i</sup>; व ४४३: ६५<sup>j</sup>; ४४८:  
१४५<sup>k</sup>; ४५२:१७५<sup>l</sup>.  
आन्तरि(द्य>)क्ष्या- -क्ष्या: बा  
१३.  
अन्तरिक्ष-क्षित्- -क्षिते छां २, २४,  
९; मैत्रि ६, ३५.  
अन्तरिक्ष-गत- -तः योशि ५, ३२.  
अन्तरिक्ष-लोक- -कः वृ १, ५, ४;  
गार ४०५ : १५; -कम् वृ ३,  
१, १०; -काः, -केषु वृ ३, ६, १.  
अन्तरिक्ष-सद्- -सत् क २, २, २५<sup>m</sup>;  
वृष ३, ६५<sup>n</sup>; नाप ५, १; मना  
२, १२, २; २, ४०५<sup>o</sup>; त्रिता ४,  
२७५<sup>p</sup>; -सदः अक्ष ७.  
अन्तरिक्षो(त्त-उ)दर- -रः छां ३,  
१५, १.  
अन्तरीक्षण-, अन्तरूपवीतलक्षण-  
अन्तर्-<sup>q</sup> द.  
अन्तर्य- अन्तर-<sup>r</sup> द.  
अन्ति-<sup>s</sup> -व ४२९:१३; ४६२:१७.  
अन्ति-क- -कम् मै १, १; मैत्रि  
१, २; ७, १०; मैत्रे १, १; ते ४,  
१५; ५, ३७; ६, ७; -कात् क  
२, १, ५; -के ई ५; मुं ३, १, ७;  
आपै ८:११; पा ८, ९; गौ १३,  
१५.  
अन्ति-म- -माम्याम् भव २, ६४.  
\*१अन्-<sup>t</sup>घा<sup>t</sup>  
१अन्ध- -न्धः छां ५, १३, २; ८,  
४, २; ९, १; २; नाप ३, २;  
६२; ६६; अक्षि १; चा ६; १३;

मृ १०; शि ४, ४८; -न्धम् ई ९;  
१२; छां ८, १०, १; ३; वृ ४,  
४, १०; -न्धस्य वरा २, २३;  
-न्धा: क १, २, ५; मुं १, २, ८; छां  
५, १, ९; वृ ६, १, ९; मैत्रि ७,  
९; गर्म ३; वृष ६, ४; -न्धान्  
कौ ३, ३; -न्धे छां ८, ९, १, २; गु  
३२; -न्धेन ई ३; क १, २, ५; मुं  
१, २, ८; वृ ४, ४, ११; मैत्रि ७, ९.  
आन्ध्य- -न्ध्यम् ते ४, २४.  
अन्ध-कार- -रः आबो २५;  
अता १६; मवा ५; द्र १०; -रे  
गौ २, १७.  
अन्धकार-निरोधिन्-  
अन्धकारनिरोधि-स्व-  
-त्वात् अता १६; द्र ११.  
अन्धकार-मय- -यम् मं ४,  
१, ३.  
अन्ध-तामिस्त्र- -स्त्रः सांका ४८.  
अन्ध-परम्परा- -रा सांसू ३, ८१.  
अन्ध-वत् अना १५; नाप ४,  
२२; ३६; महा ४, ८०; वरा २, १९.  
अन्ध-संज्ञा-  
अन्धसंज्ञित-<sup>u</sup> -तः भव ३,  
१०.  
अन्धा(न्ध-अ)दृष्टि- -दृष्ट्या  
सांसू १, १५६.  
अन्धो(न्ध-उ)द-पान-स्थ-  
-स्थः मै १, ७; मैत्रि १, ४; मैत्रे  
१, २.  
\*२अन्-<sup>v</sup>घा  
\*२अन्ध-  
✓\*अन्धि  
अन्धस्-<sup>w</sup> -न्धः महा ३, ४२;  
या २, ८.  
अन्न-<sup>x</sup>अद् द.

a) वैदु. राती. आन्तरा(र-आ)न्तर- इति व्याख्यायुक्तः। b) अ १०, ८८, १५। c) तु. वैप १, २३७ टि। d) अ १०, १९०, ३। e) तैआ १०, ६३, १। f) वि ७, ५५, ११। g) अ ४, ४०, ५। h) अ ९, ६७, २१ (तु. वैप १, २४१ टि)। i) तु. डि. \*१अन्-<sup>y</sup>घा (वैप १, २४२)। j) भावे व्यञ्ज प्र. (पा ५, १, १२४)। k) संजातार्थे इत्यु प्र. (पा ५, २, ३६)। l) तु. वैप १, २४३ टि।

अन्य,न्या- न्यः क १, १, २२<sup>१</sup>; २,  
३, १८; सुं ३, १, १<sup>१</sup>; तै २,  
२-५, १; छां ७, २४, २; वृ १,  
४, १०<sup>१</sup>; ३, ७, २३<sup>१</sup>; ४, ३,  
३१<sup>१</sup>; स्वे ३, ८५<sup>१</sup>; ४, ५५<sup>१</sup>;  
६५<sup>१</sup>; ९; ५, १; ६, ४; ६;  
१५५<sup>१</sup>; १७; गौ ३, ३४; मै ३,  
१; २; मैत्रि ३, १; २; ६, ३०;  
मैत्रि ३, ८; ब्रवि<sup>१</sup>; कै १, ९; मना  
२, १२, १५<sup>१</sup>; २, ५४५<sup>१</sup>; अशि  
१, २; कौ १, २; वृपू २, १०५<sup>१</sup>;  
वृउ २, २; ते ६, ३१; ध्या १; ब्रवि  
३१; नाप ४, ३८; ७; ८, ९; ९,  
१<sup>१</sup>; त्रिवि १, १; ४, ५५<sup>१</sup>; सुह ४;  
शां १, ७, २८; महा ४, १२७;  
६, १२; अलि १२<sup>१</sup>; तुअ १७;  
१मंन्या २, ८५; अन्न २, ४; २१;  
पाशु १, २; ९; २, १३; त्रिता  
५, ५; कठ १८: १९; म२, ७;  
जाद १, १८; ५, १४; १०, ६;  
मवा १३५<sup>१</sup>; गोउ १३; वरा २,  
२२; पा ६, ८५<sup>१</sup>; रु १०; सिशि  
३८१: २०; हे ८; कालि ४०२:  
१५; गु ५४; भव २, १<sup>१</sup>; ४१;  
६१; पित्र २, १०; ३, १०; ४, २;  
बा १; १२; स्व ६२; ६; गोच  
६६: २१; नापू ५, २१५<sup>१</sup>;  
नाउ १, ४५<sup>१</sup>; ३, ४; योसू १,  
१८; ब्रसू १, १, २१; गी २,  
२९<sup>१</sup>; ४, ३१; ८, २०; ११, ४३;  
१५, १७; १६, १५; १८, ६९;  
न्यत्<sup>१</sup> ई १०<sup>१</sup>; १३<sup>१</sup>; कै १, ३;  
क १, २, १; सुं १, २, १०; मां  
१; ऐ १, १; छां २, २१, ३; ७,  
२४, १<sup>१</sup>; ८, ३, २; वृ १, ४, १<sup>१</sup>;

२; १५; २, ३, २; ४; ६; ३, ४,  
२; ५, १; ७, २३; ८, ११<sup>१</sup>; ९,  
२६; ४, ३, ३१<sup>१</sup>; ४, ४<sup>१</sup>; ३१;  
५, १; गौ ४, ५३; मैत्रि ६, ९;  
३०; अशि ६, १०; अ ३; कौ १,  
६; वृउ ५, २; ७, ७; ९, ३;  
ते १, २५; २, ९; ३, २५; ३२;  
३३; ४, ४५; ६१; ५, ३५;  
४४; ४७; ४८; ६, ३९; ४०;  
४२; ४५<sup>१</sup>; ४६<sup>१</sup>; ४७; ४९;  
५०<sup>१</sup>; ५१<sup>१</sup>; ५२; ७३; आरु ५;  
मना १, १५<sup>१</sup>; ब्रवि २७; नाप ५,  
१; ६, १; १५; त्रित्रा २, ५६;  
१५९; श २३; ३०; राउ ३, १;  
महा ४, १; १०; १८; ६३; ५,  
६९; ८९; ६, ११; १२;  
योशि १, ७०; १४१; ४, ३;  
अन्न १, ४७; २, ४४; ५, ५९;  
१मंन्या १, १; अध्या २०; ६६;  
पाशु २, २२; त्रिता १, ६३; म  
१, ८; १०; २, २१; २६; ता २,  
५; जाद १, १०; २, ७; ४, ५३;  
गोपू ३२; वरा २, ७<sup>१</sup>; २५<sup>१</sup>;  
३, २; ४, ३२; व ५; सु २, २,  
६६; स्व ६२: ५; तुल ७३: १८;  
नाउ ३, ५; सार २५०: १३;  
२५१: ४; २५६: २०; वटु  
३१७: १५; शि २, ६; ३, १०;  
विद्या १; भव २, ५६; ३, ११;  
पित्र ४, २; ५, ६; कश्रु १,  
१; सांसू ५, ७२; ६, ६६; वउ  
१, ३; गी २, ३१; ४२; ७, २;  
७; ११, ७; १६, ८<sup>१</sup>; न्यस् क  
१, १, २१; २९; सुं ३, १, २; ऐ  
३, १३; छां ५, ११, ३; वृ १, ४,

८; ४, ४, ३<sup>१</sup>; स्वे ४, ७; कौ १,  
१; मैत्रि ४, ५<sup>१</sup>; वृपू २, ८५<sup>१</sup>; ते  
६, ४; नाप ४, ८; ५, १; महा  
६, २०; यो १, ६; म२, २५;  
सार २३२: १८; २३६: २२;  
२७२: १८; २७३: १; शि ६,  
२८१; ७, २२; पित्र ४, २; गी  
१४, १९; न्यया शां १, ७, १;  
गी ८, २६; न्यस्मात् वृ १, ४,  
८; नाप ५, १<sup>१</sup>; न्यस्मिन् छां  
७, २४, २; त्रित्रा २, ३७; वउ  
६, ४४; न्यस्मै छां ३, ११,  
६; वृपू १, ९; वपू २, १;  
न्यस्य गौ ४, ३६; ५३; वृउ  
८, ३; नाप ७; कालि ४०१: ५;  
४०३: १५; श्या १७; २०;  
पित्र ६, १; सांसू ५, ११७;  
न्या मैत्रि ४, १; व ३, ३;  
नाप ३, ८३; पै २, ४६; ते ६,  
४६; महा ४, ११९; ५, ४७;  
७६; पत्र ३, ७; गोपू १३; त्रि  
१६; नाउ ३, ५; सार २२२: १;  
शि ४, १५; १७; ६, १६९;  
सांका ६६; ब्रसू ४, १, १७; न्या:  
क २, ३, १६; सुं २, २, ५; तै १,  
५, १; छां ८, ६, ६; वृ १, ५,  
२२<sup>१</sup>; ३, ८, ९<sup>१</sup>; कौ २, ५; ते  
६, ५८; शां १, ४; योशि ६, ४;  
सार २२३: ५; २२४: २२;  
२२५: १; २३४: ७; ९; २३८:  
११; २४०: १२; २४९: १४;  
२५२: १८; २६७: ३; २६८:  
१५; २२; २६९: ९; २७०: १३;  
२७२: ४; २८०: २२; २८४:  
१७; कृपु १९; शि ४, २६; पित्र

- a) तु. वैप १, २४४ टि b) मा ३१, १८। c) तैआ १०, १०, १। d) ऋ १, १६४, २०।  
e) ऋ १०, १२१, १०। f) मा ८, ३६। g) 'अन्यः' इति अज्या. पामे.। h) तैआ ३, १२, ७।  
i) स्वमोर् अदद् इत्यादेशः (पा ७, १, २५)। j) तैआ १०, १, १। k) 'न्यतया' इति अज्या. पामे.।  
l) 'अकिञ्चित्कम्' इति Schr. पामे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। m) ऋ २, ३३, ११। n) 'अन्यभाषा'  
इति अज्या. पामे.।



२, ५; न्यानाम् ४; के ४, २; ३;  
छां १, ११, २; ४, १०, १; मै  
१, १; मैत्रि १, २; मैत्रे १, १;  
वृजा ४, ७; शास्त्र २०; गी ११, ३४;  
न्यानाम् १ मै १, ७; मैत्रि १, ४;  
न्यानि छां १, ३, ५; वृ १, ५,  
२१; ४, ३, ३२; त्रिवि ३०; पाशु  
२, ९; १४; गोड २३; सार  
२५५: ३; २७२: १३; २८७:  
१६; शि ६, २१; ८०; २७६;  
७, ५३; भव २, ३८; वड ६,  
४६; गी २, २२; न्याम्याम्  
जाद ६, ३४<sup>१</sup>; न्याम् वृ १, ४,  
१०; ६, ४, १९; वृजा ६, ७; अक्षि  
१५; ३७; सार २५०: ५; कामे  
१; गी ७, ५; न्ये क २, २, ७;  
प्र १, ११; छां १, १०, २; १२,  
२; ४, ३, ८<sup>१</sup>; ९, २; खे ६, १;  
गौ १, ७; ९; मै १, ५; ६; मैत्रि १,  
४<sup>१</sup>; ६, ३४; ७, ८<sup>१</sup>; मन्त्रि १९;  
त्रिवा २, ७१; त्रिवि ३, २; ४,  
१३; रार १, २; महा ५, १३७;  
योशि १, ४८; ६, १८; ए ८<sup>१</sup>;  
अव्य २; यो १, १८; भ २, २;  
३०; जाद ६, ४९; कृ १; सु १,  
१, १६; १७; इ १०: १९; सार  
२२१: १६; २२३: १४; २३;  
२२४: १२; २२५: २३; २३५:  
१७; २३६: १८; २४२: १५;  
२४९: १५; २१; २२; २५२:  
१३; २५६: १८; २६६: २२;  
२७२: १६; २७३: ९; २७८:  
११; २८०: २१; २८९: १५;  
स्व ६१: १६; सि १, ४; पित्र ३,  
८; सां ३, १८; वसू ३, २७;

गी १, ९; ४, २६<sup>१</sup>; ९, १५; १३,  
२४; २५: १७, ४; न्येन क १, २,  
९; वृ १, ३, २४; ५, १६; ५, ३,  
१<sup>१</sup>; कै १, १०; वृजा ३, १७; ६,  
१; नाप ३, ८६<sup>१</sup>; महा ४, १०७;  
करु २; २१; २२; राधा १, २९;  
३, १८; ४, २६; सार २८६:  
१३; भव १, २०; न्येभ्यः वृ ४,  
४, २; ए ८<sup>१</sup>; गी १३, २५;  
न्येषाम् वृ ४, ३, ३३; ४, ४;  
वृषू १, ११; वृजा ५, ६; नाप  
७; रार १, ७; पाशु २, १३; यो  
२, १३; भ २, २८; गह २४;  
सार २४९: १०; शि ६, २६५;  
सांसू १, ७३; ६, ३२; न्येषु भ २,  
३०; वरा ३, १६; शि ६, १९१;  
ब्रसू ३, ४, २; न्यै: सुं ३, १,  
८; गौ १, ७; मै ३, ४; मैत्रि ३,  
४; मैत्रे १, ३; अशि ४, १८;  
सुबा ९; शां १, ७, ३६; योशि १,  
२८; २९; अव्य २; भ २, २१;  
सु १, १, २; सार २२४: १९;  
२३१: ११; १३; १८; २४४:  
११; वड ३१६: ११; शि १, ७;  
३, १; ७, १०; सिशि ३८३: ८;  
९; गु ३७.

अन्य-क-कः ते ६, १८; अक्ष ५,  
६१; कम् ते ६, २.

अन्य-कथा-धर्म-दान-व्रत-तीर्थ-  
साधन-नानि सार २५०: २.

अन्य-कलना-त्याग-गाम् अक्ष  
५, ३३.

अन्य-कल्पन-नात् १ अव १४.

अन्य-कृत-तस्य मना २, ५९९<sup>१</sup>.

अन्य-ग-गः भव २, ५१.

अन्य-गत-ताः नाप ६, १४.

अन्य-गो-क्षार-रम् वृजा ३, १.

अन्य-चिन्ता-विवर्जित-तः ते  
४, ६.

अन्य-तम-मम् मैत्रि ७, १०.

अन्य-तर, रा-रम् ते ६, ४९; -रा  
छां ४, १६, ३; ४; -राम् छां ४,  
१६, २; ३.

अन्यतर-तस्(>) कौ ३, ९.

अन्यतर-नियम-मः वसू २,  
३, ३२.

अन्यतर-योग-गः सांसू १, ७५.

अन्यतर-सिद्धि-ह्वे: सांसू १,  
११२.

अन्यतरा(र-अ)पेक्ष-क्षम् ब्रसू  
४, ४, १६.

अन्यतरा(र-अ)भाव-वात्  
सांसू १, ९३.

अन्य-तस्(>) सार २६६: १६.

अन्यतस्-न्य<sup>१</sup>-

अन्यतस्-जायिन्<sup>१</sup>-न्यी  
वृ २, १, ६; कौ ४, ७.

अन्य(तस्>)तो-भू-भुवः गौ  
४, ४९; ५०.

अन्य-ता-

अन्यता(ता-अ)त्मन्-त्मानः  
मैत्रि ७, १०.

अन्यता(ता-अ)न(न-अ)वच्छेद-  
दात् योसू ३, ५३.

अन्यत्-काम<sup>१</sup>-मः महा १, १<sup>१</sup>.

अन्य-त्र क १, २, १४<sup>१</sup>; २, ३, १२;

छां ६, ८, २<sup>१</sup>; ४; ६; ८, ११, ३;

१५, १; वृ २, ४, ६<sup>१</sup>; ३, ९, २५<sup>१</sup>;

४, ५, ७<sup>१</sup>; गौ ४, ४९; ५१; ९०;

मै २, ८; ३, ३-५; ५, ४; ५;

a) छान्दसः सर्वनामत्वाऽभावः (पा १, १, २७) अन्येषामित्यर्थे द्र. । b) 'अधानाम्याम्' इति निरा.  
अष्टः मुपा. । c) अत्र द्वितीये पादे निरा. अख्या. तद्वतयोः संदि. च पा. स्थाने 'अन्येभ्योऽधिष्ठोऽथ तमो निरुध्य'  
इति सु-शोधः पा. द्र. । d) 'आस्येन' इति अख्या. पाथे. । e) तु. एप्टि. । f) तैत्र्या १०, ५९ ।  
g) नाव. व्यु. औपयिकं त्यक्तं प्राप्ति. द्र. (पा ४, २, १०४) । h) उप. √जि + णिनिः प्र. । i) घतस. पूष.  
दुर्गागमः उसं. (पाम ६, ३, ९९) ।

मैत्रि २, ६; ३, ३-५; ४, २; ६, ४;  
 ५, १२-१४; १९-२८; कौ ३,  
 ७; वृ ९, ३; नाप २, ३, ८६;  
 ४, १५; त्रिवि १, ९; २, ४; नाद  
 ३७; त्रिवि ४४; १संन्या २, ८०;  
 अन्न ५, २२; पाशु १, २५; सार  
 २५० : १२; २५५ : १४;  
 २९० : २२; रु १२; शि ६,  
 १९३; ७, ३६; भव २, ५२; ब्रसू  
 २, २, ५; ४, १७; ३, ३, १०; २०;  
 गी ३, ९.  
 अन्यत्र-मनस्- -ना: वृ १, ५, ३.  
 अन्य-त्व- -त्वे सांसू १, ३४; ५, १६.  
 अन्य-था ई २; छां ७, २५, २; गौ १,  
 १५; ३, १५; १९; ४, २४; मै  
 ४, ३; मैत्रि ४, ३; ६, २२; ७,  
 ९; मैत्रे २, १९; वृ ५, २; मन्त्रि  
 ३; वसू २८; नाप ५, १; योचू  
 ९८; ११८; त्रिवि २, १३;  
 राउ ३, ४; शां १, ७, ६; महा  
 ५, २; योशि १, ४; ५०; ५१;  
 ६०; १३९; १४४; १संन्या २,  
 १५; पाशु २, १८; कुं २८; १अव  
 २२; कुरु २३; यो २, २५; २६;  
 ३, २; भ १, ९; २, २१; जाद  
 १, ७; १८; ४, ५१; सर ३,  
 १६; बा १९; तुल ७०: १९; शि  
 ३, ११; काम ११; रा ४२६ : ३;  
 चू ३; भव २, ६२; पित्र ४, ९;  
 वउ ६, ७; ४७; सांसू १, २६; ५,  
 ११४; ६, १२; १३; १८; ब्रसू  
 २, १, ११; २, २१; ३, ३२; ४३;  
 ३, ३, २९; ३६; गी १३, ११.  
 अन्यथा-क्याति- -ति: सांसू  
 ५, ५५.  
 अन्यथा(था-आ)चार-पर- -र:  
 नाप ५, १.  
 अन्यथा-त्व- -त्वम् ब्रसू ३, ३, ६.

अन्यथा(था-अ)नुमिति- -तौ  
 ब्रसू २, २, ९.  
 अन्यथा-भाव- -व: गौ ३, २१;  
 ४, ७; २९.  
 अन्यथा-सिद्धि- -द्वे: सांसू  
 ५, १००.  
 अन्यदीय- -न्य: २प्र ३५ : ६; -ये  
 जाद १, ११.  
 अन्य-देवता- -ता: गी ७, २०.  
 अन्यदेवता-भक्त- -क्ता: गी  
 ९, २३.  
 अन्य-द्रव्य- -ष्टा पप ४२० : १४.  
 अन्य-धर्म- -र्मम् सार २३६ : १८.  
 अन्यधर्म-त्व- -त्वात् सांसू १,  
 १६; -त्वे सांसू १, १७; ५४;  
 १५३.  
 अन्यधर्म-दृढा(द-आ)स(क>)-  
 क्ता- -क्ता: सार २७३ : १३.  
 अन्यधर्म-रत- -ता: सार  
 २२० : ८.  
 अन्यधर्म-रहित- -ता: सार  
 २७३ : ८; -तानाम् सार  
 २९१ : २.  
 अन्यधर्मरहित-त्व- -त्वेन  
 सार २५६ : १७.  
 अन्यधर्म-विस्मरण-पूर्व(क>)-  
 र्विका- -का सार २२७ : ११.  
 अन्यधर्मा(र्म-आ)सक्त- -क्ता:  
 सार २७२ : १९.  
 अन्य-निवृत्ति-रूप-  
 अन्यनिवृत्तिरूप-त्व- -त्वम्  
 सांसू ५, ९३.  
 अन्य-नि(स-स्पृ)स्पृ(ह>)हा- -हा  
 भव ३, २९.  
 अन्य-पर-  
 अन्यपर-त्व- -त्वम् सांसू ५, ६४.  
 अन्य-पातक- -कै: वि २५.  
 अन्य-प्रकार- -रेण कालि ४०३: २०

अन्य-प्रतिपत्ति-सहित- -त: सार  
 २८७ : २१.  
 अन्य-प्रतिषेध- -धात् ब्रसू ३,  
 २, ३६.  
 अन्य-भाव- -व: गौ ४, ५३; -वेन  
 सार २५६ : २०.  
 अन्यभाव-व्यावृत्ति- -त्ते: ब्रसू  
 १, ३, १२.  
 अन्य-मन्त्र- -न्त्रम् ते ३, ६०.  
 अन्य-मार्ग- -र्गम् सार २९०: १४.  
 अन्यमार्ग-रहित- -ता: सार  
 २८३ : १२.  
 अन्य-योग- -यो सांसू २, ८.  
 अन्य-रस- -सम् सार २७२ : २२.  
 अन्य-राजन- -जान: छां ७, २५, २.  
 अन्य-वत् ते ३, १७.  
 अन्य-विद्या-परिज्ञान- -नम् शु  
 ३, १४.  
 अन्य-विद्या-हवि- -न्वि: सार  
 २५० : ११.  
 अन्य-विद्यो(धा-उ)पासक- -का:  
 सार २७३ : १०.  
 अन्य-विष(य>)या- -या योसू  
 १, ४९.  
 अन्य-संस्कार-प्रतिबन्धिन्- -न्धी  
 योसू १, ५०.  
 अन्य-साधारण-  
 अन्यसाधारण-त्व- -त्वात् योसू  
 २, २२.  
 अन्य-सुख- -खम् सार २४१ : ६.  
 अन्य-सुष्टु(ष्टि-उ)पराग- -नो  
 सांसू ३, ६६.  
 अन्य-स्मृत्य(ति-अ)न(न-अ)व-  
 काश-दोष-प्रसङ्ग- -ङ्गात् ब्रसू  
 २, १, १.  
 अन्य-हीन-स्व-भाव-  
 अन्यहीनस्वभावा(व-आ)त्मन्-  
 -स्मा ते ४, ७१.

अ) तस्येदमित्यर्थे छ>ह्रस्वः प्र. (पा ४, २, १३८; ७, १, २) । पूष. दुर्गागमः (पाम ६, ३, ९९) । ब) कस.  
 गर्भितः बस. [= 'अन्वेन (प्रतियोगिना) हीनः स्वभाव आत्मा (स्वरूपं) यस्य' ] ।

अन्य-हीन-स्वयं-प्रभ- -भः ते  
४, ७१.  
अन्य-हेतु- -तुना पं १८.  
अन्य-हेतुक- -कः गौ २, १४.  
अ(न्य>)न्या-दश- -शाः छां ४,  
१४, २.  
अन्या(न्य-अ-)-दृश्य-रूप<sup>b</sup>- -पम्  
शां १, ७, ५२.  
अन्या(न्य-अ)धिकार- -रः नाप ७.  
अन्या(न्य-अ)चिन्तित- -तेषु ब्रसू  
३, १, २४.  
अन्या(न्य-आ)नन्द- -न्दम् पित्र  
६, २०.  
अन्या(न्य-अ)न(न-अ)पेक्ष- -क्षम्  
भ १, १.  
अन्या(न्य-अ)भाव- -वात् १आ  
२८.  
अन्या(न्य-आ)रोपित-वह्नि- -ह्निना  
१अव १५.  
अन्या(न्य-आ)रोपित-संसार-  
धर्मन्- -र्मा १अव १५.  
अन्या(न्य-अ)र्थ- -र्थः ब्रसू १, ३,  
२०; -र्थम् ब्रसू १, ४, १८.  
अन्यायो(पे-उ)पदेश- -क्षे सांसू  
४, २.  
अन्या(न्य-अ)वस्था- -स्थासु त्रिवा  
२, १०.  
अन्या(न्य-अ)विवेक- -कस्य सांसू  
१, ५७.  
अन्या(न्य-आ)सक्त- -क्तः शि  
७, १६.  
अन्या(न्य-आ)सक्ति- -क्तिम् सार  
२७३: २३.  
अन्यासक्ति-रहित- -ताः सार  
२७३: ८.  
अन्यो(न्यस्-अ)न्य- -न्यम् त्रिवा २,

४; त्रिता ३, १२; वरा २, ४६;  
निरु २, ४; पित्र १, २; सांसू १,  
१२७; १२८; -न्यस्मिन् वृ ५,  
५, २; -न्यस्य छां १, १, ६; १योत  
६६; छाग २४: ८; -न्येन वृ १,  
५, २१.  
अन्योन्य-दृश्य- -श्ये गौ ४, ६७.  
अन्योन्य-वायु-परिपीडित-शु-  
क्र-द्वैविध्य- -ध्यात् गर्भ ३.  
अन्योन्य-विग्रह- -हम् कृ १.  
अन्योन्य-सक्त- -क्ताः प्र ५, ६.  
अन्योन्य-संबन्ध- -न्धाः शि  
६, २४६.  
अन्योन्या(न्य-अ)भाव- -वात्  
वउ ५, ३.  
अन्योन्या(न्य-अ)नामिका- -के  
त्रिता ३, ९.  
अन्योन्या(न्य-अ)भिभवा-  
(व-आ)श्रय-जनन-मिथुन-वृत्ति-  
-त्तयः सांका १२.  
अन्योन्या(न्य-आ)श्रय-  
अन्योन्याश्रय-त्व- -त्वम्  
सांसू ५, १४.  
अन्यो(न्य-उ)पदेश-कृत्- -कृत्  
महा ३, ४९.  
अन्यो(न्य-उ)पसर्पण- -गे सांसू  
६, ४४.  
अन्यो(न्य-उ)पादान-  
अन्योपादान-ता- -ता सांसू  
५, १०९.  
अन्यो(न्य-उ)पासक- -काः सार  
२७३: ५; २९०: १४.  
अन्यसन- -नात् वृष ८५: १३.  
अन्याय- -यः लिं ३१०: ७; कौल  
१७; -येन १संन्या २, १०२; गौ  
१६, १२.

अन्यून- -नः का ९.  
अन्वय- -अन्वि(तु/इ) ३.  
अन्व(तु-अ)र्थ-  
अन्वर्थ-वाचिन्- -ची २प्र ३५: ८.  
अन्वर्था(र्थ-आ)दि-  
अन्वर्थादि-संज्ञक- -कः राष्ट्र  
१, ११.  
अन्व(तु-अ)व/क्रम, अन्ववक्रामति  
वृ ४, ४, १; २.  
अन्व(तु-अ)व/सो, अन्ववस्यति,  
अन्ववस्यन्ति कौ ४, २०.  
अन्ववा(तु-अव/अ)र्ज, अन्ववार्जत्<sup>c</sup>  
ऐ २, १.  
अन्ववे(तु-अव/इ), अन्ववायानि वृ  
१, ३, १०.  
अन्ववे(तु-अव/ई)क्ष, अन्ववेक्षते  
कौ २, १५.  
अन्व(तु-अ)ह<sup>d</sup>- -हम् नाप ८, १८;  
रार १, ७; १संन्या २, १०४; अन्न  
१, ८; अक्षि ४; गु ७४.  
अन्वा(तु-आ)/भज्  
अन्वा-भक्त- -क्तः शौ ५२: ३.  
अन्वा(तु-आ)/यत्  
अन्वा-यत्त, ता- -त्तः वृ २, २, २;  
आर्षे ७: १२; ८: ३; -त्तम् आर्षे  
७: १२<sup>१</sup>; १३; ८: २<sup>२</sup>; ३: ४; शौ  
५२: २; -त्ता छा १, १०, ९-११;  
११, ४-९; वृ २, २, २; -त्ताः छां  
२, ९, २; ३; ५-८; ३, १६, १;  
३; ५; वृ ३, ८, ९; -त्तानि छां  
२, ९, २; ४; शौ ५१: २.  
अन्वा(तु-आ)/रम्, अन्वारभामहे  
मना २, ४७९.  
अन्वा(तु-आ)/रुह  
अन्वा-रुढ- -ढः वृ ४, ३,  
३५.

a) क्विबि. इव युक्तेन सता वृत्तस. गर्भितः वस. [= अन्येन (प्रतियोगिना) हीनं (यथा स्यात्तथा) स्वयं (स्वतः) प्रभा यस्य ] । b) कस. (= अन्यैरदृश्यं रूपम्) । 'अं रूपम्' इति निसा. संति. पाप्मे. । c) 'अन्वार्जत्' इति निसा. पाप्मे. । d) अस्. इति कृत्वा वा. क्विबि. द्र. । उप. वैकल्पिके टचि टिलोपः (पा ५, ४, १०९; ६, ४, १४४) । e) तैमा ३, ७, ७, २ ।



अन्वा(नु-आ)/लभ्

अन्वा-लभ्य प्रा १, ६.

अन्वा(नु-आ)/विश्, अन्वाविशन्ति

छां ८, १, ५.

अन्वा(नु-आ)/वृत्&gt;वर्ति, अन्वा-

वर्तते कौ २, ८, ९; अन्वावर्तन्ते,

अन्वावर्ते कौ २, ९.

अन्वावर्तयति कौ २, ८.

अन्वा(नु/आ)ह्, अन्वाह वृ ५, १४,

४<sup>१</sup>; ६, २, ६; अन्वाहुः वृ ५,

१४, ५; गा १७.

अन्वा(नु-आ)/ह्

अन्वा-हार्य-

अन्वाहार्य-पचन- -नः प्र ४,

३; छां ४, १२, १; ५, १८, २;

-नम् मना २, ७९९<sup>१</sup>; -ने १संन्या

१, १; कथु १, १.

अन्वि(नु/इ), अन्वेति प्र ५, २; ७;

कौ ४, १२; नाद ५४; अरु २७;

अनुयन्ति क २, १, १२; छां ५,

१४, १; मना २, ४९९<sup>१</sup>.

अन्व(नु-अ)य- -यात् वसू ३, ३,

१७; ४, ५०.

अन्वय-व्यतिरेक- -कात् सांसू

६, १५; ६३.

अन्वि(नु-इ)त, ता- -तम् व ३, १७;

-ताः गी ९, २३; १७, १; -ताम्

महा ६, ५१.

१अन्वि(नु/इ)ष्ट, अन्विष्टेत् नाप ७.

अन्वि(नु-इ)ष्य प्र १, १०; छां ४,

१, ७; ८, ७, २; वृत् ३, १; ५,

३; ६, ३; ७, २<sup>१</sup>; ८, १०; शि

६, २४७.

अन्वे(नु-ए)षण- -णात्सांसू १, १२२.

अन्वे(नु-ए)पणा- -णा छां ४, १, ७.

अन्वे(नु-ए)पणीय- -यम् शि ७, ८३.

अन्वे(नु-ए)पमाण- -णाः प्र १, १.

अन्वे(नु-ए)ष्टव्य- -व्यः छां ८, ७,

१; ३; मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; व्रवि

८५; पं ३५; -व्यम् छां ८, १,

१; २; सु २, २, ६३.

अन्वे(नु-ए)ष्य- -व्यम् शि ६, २४९.

२अन्वि(नु/इ)ष्ट&gt;च्छ, अन्विच्छ-

मः छां ८, ७, २; अन्विच्छ छां ६,

८, ४<sup>१</sup>; ६<sup>१</sup>; गी २, ४९; अन्विच्छेत्

जा ६; नाप ३, ८६; वृत् ७, ४;

७; १०; या २, १.

अन्वि(नु-इ)च्छत्- -च्छन्तः पित्र

१, ३.

अन्वी(नु/ई)क्ष्

अन्वीक्ष्य छां ८, ८, ४; भ १, २.

✓\*अप्

अप्-&gt;\*अध्&gt;द्-, आप्-

\*अध्&gt;द्-अङ्गिः छां ३, ११, ६;

५, २, २; ६, ८, ४; ६; वृ ६, ४,

२३; मैत्रि ६, ९<sup>१</sup>; कुं १२; करु ३;

प्रा २, १; आर्षे ७:५; भव ३, १८;

आश्र २; कथु ३, ३; अद्भयः क

२, १, ६; तै २, १, १; ऐ १, ३;

छां ६, २, ४; ८, ६; ७, १०, २<sup>१</sup>;

११, १; वृ १, ५, २०; ३, ७, ४;

मना १, ३९<sup>१</sup>; १२९<sup>१</sup>; २, ६७९<sup>१</sup>;७६९<sup>१</sup>; सुबा १; योचू ७२; पै १,

कुं १४; करु १४; २प्र ३७ : १;

१६; नाउ १, १६; कौल ३.

अप् २प्र ३७ : ३; अपः ई ४; ऐ

२, ३; छां ५, १६, १; ६, २, ३; ७,

१; ८, ३; ४; ७, २, १; ७, १;

१०, १; २<sup>१</sup>; ११, १<sup>१</sup>; वृ ३, ७,४; ६, ४, ५९<sup>१</sup>; मै ४, ४, १०; कौ२, ७; सुबा ७:११; २प्र ३२:९<sup>१</sup>;सावि १०<sup>१</sup>; अश्या १; आर्षे ७:१९; २, ५<sup>१</sup>; पा ५, ७; ७, ४;

अपाम् छां १, १, २; ८, ५; ६, ४,

१-४; ६, ६, ३; ७, १०, २; वृ

१, २, २; २, ४, ११; ५, २; ३, २,

१०; ४, ५, १२; ६, ४, १; मै ४,

४, १०; मैत्रि ६, ३१:३४; जा ५;

मना १, १३९<sup>१</sup>; १५९<sup>१</sup>; त्रिभा २,

१३६; १योत् ८८; महा ५, १५०;

शारी १; अव्य ६; करु १; जाद

८, ४; वरा ५, ४१; या २, १; इ

१८:९; २प्र ३७:३; सु २९४:

६; शि ४, ६३; व ४३७:१०९<sup>१</sup>;

कथु २, ३.

अप्सु क २, ३, ५; तै ३, ८,

१; छां २, ४, १; २<sup>१</sup>; ८, ७,

४; वृ १, २, ३; २, १, ८; ५,

२; ३, २, १३; ६, १; ७, ४; ९,

१६; २२; रवे २, १७; मैत्रि ७,

११; जा ४; ६; आरु २; मना १,

१३९<sup>१</sup>; अशि ६, १९<sup>१</sup>; ३९<sup>१</sup>; ४९<sup>१</sup>;१४; कौ ४, ९<sup>१</sup>; सुबा २; नाप ३,९; ७७; ८६<sup>१</sup>; ४, ३८<sup>१</sup>; ५, १;

त्रिभा १, ९; शारी १; तुअ ८;

१संन्या २, ६; पप ४१८:१४;

२१; २३; ४१९:१२; दे ३९<sup>१</sup>;करु १<sup>१</sup>; भ २, ७९<sup>१</sup>; गोउ ९; या१, १; २, १; इ १०:१५<sup>१</sup>; नी२, ११९<sup>१</sup>; वृ ३१७ : २०;२शिसं ३५९<sup>१</sup>; व ४३८:१७९<sup>१</sup>;कथु २, ३<sup>१</sup>; गी ७, ८.

a) 'नः' इति तैआ. (१०, ६३, १) पाभे. । b) तैआ ३, १५, १। c) तु. वैप १, २५७ टिप।

d) तु. वैप १, २५८ टिह। e) तैआ १०, १, ३। f) तैआ १०, १, १२। g) तैआआ १०, ६७। h) क २,

१, १। i) 'आपः' इति तैआ. (१, ३०, १) पाभे. । j) मुपा. च्युतविसर्गपुनःप्रदानः शोधः द्र. । k) असंगतः पा. (तु.

अश्या. एतदभावः) । l) पा. असंगत इव सन् 'अपि' इति वा 'अध' इति वा शोध-पूर्वं सुपठः स्यात् । m) तैआ

१०, १, १३। n) तैआ १०, १, १५। o) ऋ ८, ४४, १६। p) शौ ७, ९२, १। q) माथौ ६, २, ४। r) तैसं

५, ५, ३। s) ऋ १०, १२५, ७। t) तैसं ५, ५, १, ३। u) मा १३, ८।

आप्- आपः प्र२, २; ४, ८; ६, ४;  
 सु२, १, २; तै१, २, २; ४, २; ७, १;  
 २, १, १; ३, ८, १; ऐ१, २; ४;  
 २, ४; ५, ३; छां१, १, २; ८, ४;  
 ३, १, २; २-५, १; छ, ३, २; १२,  
 १; १४, ३; ५, २, २; ३, ३; ९, १;  
 ६, २, ३; ४; ५, २; ८, ३; ७,  
 ४, २; ६, १; १०, १; २६, १;  
 वृ१, २, १; २; ५, १३; २, २, २;  
 ५, २; ३, ६, १; ७, ४; ९,  
 १६; २२; ५, ५, १; ६, १, १४;  
 २, २; ४, १; श्वे१, १५; ४, २९;  
 मै५, ५; मैत्रि६, ५; ७; ३४;  
 ३५; कै१, १५; २, ४; जा४९;  
 ५; कौ१, ७; गर्मे१; ना१;  
 मना१, २; ११; ११; १२;  
 १४; २, २९; ३०; ३१;  
 ३५; ३७; ६८; ३, १०;  
 अशि१, ८; २, १५; ६, १४; १७;  
 वृजा१, १; १आ१; वृपू१, १;  
 सुबा१; २; ७; ११; १३;  
 १४; ते५, ७६; योचू७२;  
 त्रिबा१, ५; १; १योत८४; नाप  
 ३, ७७; त्रिवि७, ४४; पै१,  
 १६; महा१, १; शारी१; १संन्या  
 २, ७२; पप४१८; १४; २२;  
 सु१२; अघ्या१; कुं१४; सावि  
 २; १०; १अव७; कठ१४; म  
 १, ६; ८; २, ११; २१; ग६; प्रा  
 १, ६; ११; ११; गोपू२५; गोव  
 ९; या१, १; वरा१, ५; इ१५; ६;  
 च२०; २; ४; २प्र३६; २३;  
 नाव१, १५; गोच६९; १०;  
 नापू१, ४; ७; पा२, ४; ५, ७;  
 ७, ६; कृपु२३; सार२९१; ७;

लि३१० : ७; वडु३१४ : ८;  
 ३१७ : २०; ३१८ : १; २शिसं  
 ११; सिशि३८२ : ११; गार  
 ४०५ : १८; गु५२; व४६१ :  
 २२; मव२, १५; ३९; वपू१,  
 २; वड२, २०; वसू२, ३, ११;  
 गी२, २३; ७०; ७, ४.

आप्-यम् शि६, ३६;  
 पैः शि४, २३.

अपो-मात्रा- -याः प्र४, ८.

अप्सु-

अप्सु-चारिन्- -रिणः  
 मैत्रि६, २६.

अप्सु-मत्- -मते मना

१, १२; -मान् छां२, ४, २.

अबं(प-अ)श- -शाः पै२, ६;

शारी१; -शे त्रिबा२, १४३.

अबा(प-आ)त्मन्- -त्मा जाद  
 ४, ३७.

अबा(प-आ)श्रित- -ताः  
 त्रिबा१, ६.

अ(प-ज)ञ- -ञः पा९, ५.

अञ्ज-काण्ड- -ण्डम्  
 क२४.

अञ्ज-पत्र- -त्रम् ध्या  
 ३३.

अञ्ज-योनि- -निः गोउ  
 १७; १८; ३९; ६२.

अ(प-जा)ञ्जा- -ञ्जाः क  
 २, २, २; मना२, १२, २; ४०;  
 वृपू३, ६; त्रिता४, २७; नाप  
 ५, १; वपू२, ३.

अब्द- -ब्दम् शि६, २२४;

-ब्दाः गु२१; -ब्दात् ध्या७२;

योचू४२; वसू४, ३, २; -ब्दात्

शि४, ४३.

अब्द-कोटि- -टिम् शि  
 ६, ३०.

अब्द-सलिलो(ल-उ)-

स्थित- -त्तम् शि६, ११४.

अब्दा(ब्द-अ)युत-

-तानाम् शि६, ४७.

अब्दय(प-दि-अ)शुक्- -काय  
 शु२, ५.

अ(प>)ब-धि- -धिः अञ  
 २, ४१; -धिम् रापू४, २५;  
 -ब्धौ ते६, ८१.

अधि-पावन- -नात्  
 महा३, २०.

अधि-वत् नाप५, १०;

महा४, २०; अञ५, १०.

अ(प>)ब-बिन्दु- -न्दुः  
 मैत्रि३, २.

अभ्र- -भ्रम् छां५, ५, १;

१०, ५; ६; ८, १२, २; दे९; त्रि८;

-भ्रस्य व४३८; १९; ४३९;

६; १६; ४४० : ३; १३; ४४१;

१; १०; २१; ४४२ : १०; २०;

४४३; ७; १७; ४४४; १०; २०;

४४५; ८; १८; ४४६; ७; १७;

४४७; ५; १६; ४४८; ४; १५;

४४९; २; १३; २०; ४५०; ४;

११; १८; ४५१; ३; ११; १८;

४५२ : २; ११; १८; ४५३ :

२; ८; १४; २०; ४५४; ३; १०;

१७; ४५५; १; ८; -भ्राणि छां

२, १५, १; वृ६, २, १०; -भ्रैः

आबो२६.

अभ्र-गजा(ज-आ)दि-

तुल्य- -ल्यम् निर्वा२९७; ११.

a) मा३२, १। b) ऐत्रा२, १६। c) मा३२, १; तैत्रा१०, १, २। d) मा६, २२; ऋ१०, ९, १।

e) ऋ१०, ९, ३। f) तैत्रा१०, १, १४। g) तैत्रा१०, २२, १। h) तैत्रा१०, २३, १। i) तैत्रा१०, २७, १।

j) तैत्रा१०, १५, १। k) समूहेऽयं अञ् प्र. (पा४, २, ३७)। l) तु. वैप१, २६६टि। m) तैत्रा१०, १, १२।

n) ऋ४, ४०, ५। o) तु. वैप१, २६७टि। p) 'अब्द-' इत्यस्य स्थाने 'अञ्ज-' इति सुसंगतः पा.। q) तु.

वैप१, २६८टि। r) खि५, ८४, १।

अभ्र-च्छाया-कर्तुरित-  
चन्द्र-न्द्रः सार २६५ : २.  
अभ्रा(भ्र-आ)भ- -भम्  
गोपू ७.  
अभ्राभ-नाल- -लम्  
द १०.  
अभ्रा(भ्र-अ)चिष्-  
-चिष्ः मैत्रि ६, ३५.  
अपस्- -ऽपसः १शिसं २;  
२शिसं ३.  
अप्नु<sup>१</sup>-  
अप्नोर्-याम<sup>२</sup>- -मेण नृपू ५,  
१७; वउ ५, १५.  
अप छाग २३:२.<sup>३</sup>  
अप/कृ  
अप-कार- -रः शि ७, ११२; -रात्  
कलि ३.  
अप-कारिन्- -रिणि या २, २०.  
अप/१कृप > कल्प > कल्प, अप-  
कल्पते १अव १८.  
अप/कृष्, अपकर्षति व १.  
अप-कृष्ट- -ष्टम् अध्या १५.  
अप/क्र(>क्रा)म्, अपक्रामति सुबा  
११; अपक्रामन्ति इ १० : १८.  
अप-क्रान्त-  
अपक्रान्त-तेजस्- -जांसि २प्र  
३६ : ७.  
अ-पक्- -कः योशि १, २७; -कम्  
योशि १, ६३; १संन्या २, ९४;  
-काः योशि १, २५; २६.  
अपक्-कषाय- -यः नृउ ६, २.  
अ-पक्ष-पात- -तः भव ५, १३.

अप/क्षि, अप...क्षीयते वृ १, ५,  
१४; १५; अपक्षीयति सूता १,  
१०; अपक्षीयस्व वृ ६, २, १६.  
अप-क्षीयमाण-  
अपक्षीयमाण-पक्ष- -क्षम्,  
-क्षात् वृ ६, २, १६.  
अप/गम् > च्छ्, गमि, अपगच्छतात्  
मना १, १३९<sup>४</sup>; अप(गमयन्तु) व  
४३७ : १८९<sup>५</sup>.  
अप-गत-  
अपगता(त-आ)शय- -यः अन्न  
२, ३१.  
अप/गा, अपगात् छां ६, ४, १-४;  
छाग २५ : ७; १०.  
अप-घ्न- अप/हन् द.  
अप/चत् > चाति, अप...चात-  
यात् प्रा १, ३९<sup>६</sup>.  
अप/चि  
अप-चिति- -त्यै छां १, १, ९; वृ  
१, ५, १४.  
अप/जि, अप...जयति वृ १, २, ७; ५,  
२<sup>७</sup>; ३, २, १०; ३, २; सूता १, ९.  
अप-जिघांसत्- अप/हन् द.  
अ-पञ्च-भूत- -तानि दे १.  
अ-पञ्ची-करण- -णम् पै ३, १<sup>८</sup>.  
अ-पञ्ची-कृत- -तः कृ १३; १४.  
अपञ्चीकृत-महा-भूत-रजो(जस्-  
अं)श-भाग-त्रय-समष्टि-  
अपञ्चीकृतमहाभूतरजोशभाग-  
त्रयसमष्टि-उस्(>) पै २, ९.  
अपञ्चीकृत-भूतो(त-उ)स्थ-सुक्ष्मा-  
(क्ष्म-अ)ङ्ग- -ङ्गम् त्रिवि ५, १३<sup>९</sup>.

अ-पतत्- -तता वा १६.  
अ-पथ्य- -थ्यम् योचू ६८; अन्न  
५, ३.  
अपथ्या(थ्य-अ-हित-  
अपथ्याहित-गुडा(ड-आ)दि-  
-दिना स्व ६१ : १४.  
अ-पद्- -पत् वृ ५, १४, ७.  
?अ-प(द>)दा<sup>१०</sup>- -दा गा २२.  
अप/द्रु, अपद्रवतः कौ १, ५; अप-  
द्रवन्ति कौ १, ४.  
अप/ध्वं(>ध्व)स्, अपध्वस्यति  
२प्र ३६ : १२.  
अप-ध्वस्त, स्ता- -स्तम् पृहं २<sup>१</sup>;  
-स्ता २प्र ३६ : १२.  
अप/ध्वन्  
अप-ध्वान्त- -न्तम् छां २, २२, १.  
अप निलयन्ताम्<sup>१</sup> व ४५९ : १७.  
अप-नि/हु, अप...निह्वते छां ४,  
१४, २.  
अप/नी  
अप-नीय शि ६, २२०.  
अप/नुद् > नोदि, अपनुदति मना  
२, ७९९<sup>११</sup>; अप...नुदस्व मना  
१, ११९<sup>१२</sup>; अपानुदन्त मना २,  
७९९<sup>१३</sup>.  
अपनुद्यात् गी २, ८.  
अपनोद्यते राउ ५, १९.  
अप-नोद्य- -द्यम् राउ ५, २१.  
अप-परा/जि  
अपपरा-जित- -ऽतासः व ४६१ :  
४; ४६४ : २१; अप(पराजितासः)  
व ४५९ : १७.

a) मा ३४, २। b) तु. वैप १, २७१टि। c) तैआ १०, १, १३। d) ऋ८, १८, ९। e) 'अप...सेषसि'  
इति शौ. (६, ८१, १) विशिष्टः पामे.। f) 'स्थम्, सुक्ष्माङ्गम्' इति निता. असमस्तः पामे.। g) तस. [तु. माश्रावा १४, ८,  
१५, १० यत्राऽस्याऽऽद्युदात्तत्वं श्रूयमाणमत्र ज्ञापकं भवति (पा६, २, २)]। उप /पद् + कर्तरि क्तिप्। h) पा.। मूलतः  
'अपदसि' (तु. माश्रावा १४, ८, १५, १०) इत्येवं सतः 'अपदा सा' इत्येतद् विकारमात्रमिति कृत्वा नापू. अनर्थान्तरं  
स्यात्। यद्वा भवति शाखाभेदेन कश्चिद् विशेष इति कृत्वा पृथगेतत् प्राति. द्र.। एस्थि. अपि उप. पद- इति नापू.  
संवाद्यः कर्त्रर्थ इति कृत्वा तस. स्यादथ तदकर्त्रर्थकं संप. इति कृत्वा बस. स्यादिति संदेहः। i) 'स्तसंशय-' इति निता.  
पामे.। j) एतदेकं द्रुपसृष्टं पदमिति मा शङ्कि (तु. ऋ १०, ८४, ७)। k) 'अपनुदन्ति' इति तैआ. (१०, ६३, १)  
पामे.। l) ऋ ३, ४७, २। m) तैआ १०, ६१, १। n) ऋ १०, ८४, ७ (तु. वैप १, २७८टि)।



अप-पाप्मन्- -प्मा नार २९२ः  
१४.

अप-मृत्यु- -मृत्युम् वृ२, १६; त्रि३  
२, १०४.

अप/या, अपयति सर ३, २१.

अपर, रा- -रः खे ५, ८; १२; मै ३,  
२; मैत्रि ३, २; नाप ८, २०;  
महा २, ६९; ५, ४; १आ २२;  
शि ६, १६३; भव ३, ७; -रम्  
प्र ५, २; वृ ४, २, १८; खे ३,  
१९; गौ १, २६; मै ५, ५; मैत्रि  
६, ५; १०; मना २, १२, ३९;  
अशि ३, ३; ४, १४; ५, १६;  
त्र १; अना २७; रार २, २४;  
महा ५, १; योशि ३, १३; अव्य  
१; १आ ४; त्रिता १, ५०; ५,  
१६; यो २, १९; ३, ४; जाद  
४, ६०; मवा ५; इ ११: ११;  
१२: ७; च २१: १८; १प्र ३१:  
१८; वटु ३१५: ३; ३१६: ६;  
गु ४६; पित्र २, २; गौ ४, ४;  
६, २२; -रस्मै वृ ३, ८, ५;  
-रा सुं १, १, ४; ५; पाशु २,  
४४; रुह २८; सर ३, १९;  
भव ३, २; गौ ७, ५; -राणि छां  
८, ९, ३; १०, ४; ११, ३;  
मैत्रि ४, ३; भव २, ३८; पित्र  
१, १०; गौ २, २२; -रान् गौ  
२, १३; शा ३१; त्रि३ २, ३;  
शि ६, २०८; गौ १६, १४; -रे  
क १, १, ६; वृ १, १, २; गौ १,  
९; २, २६; २७; ४, ३; मन्त्रि  
१४; मं १, ४, १; त्रिवि ४, १४;  
शारी ६; सु १, १, १६; चू १३;  
सां ३, १९; गौ ४, २५; ३;  
२७-३०; १३, २४; १८, ३;  
-रौ कौ १, ५.

अपर-पक्ष- -क्षम्, -क्षात् छां ५,  
१०, ३; -क्षे कौ १, २.

अपरपक्षीय- -प्राणाम् २प्र ३५:  
१९.

अपर-प्रयोज्य- -ज्यः मैत्रि ७, २.

अपर-ब्रह्म-विद्या-साम्राज्या-  
(ज्य-अ)धि-दैवत- -तम् सि२, ४.

अपरां(र-अं)श-

अपरांश-क- -के योशि ६, ४९.

अपरा(र-अ)ह- -हः छां २, १४,

१; -ह्वात् छां २, ९, ६; ७;

-ह्मे १संन्या २, ७३.

अ-परमा(म-आ)त्मन्- -त्मनि नाप  
३, १८.

अ-परस्प(स्-प)र-संभूत- -तम्  
गौ १६, ८.

अ-पराजित, ता- -तव ४५८: १३;

-तः गौ १, १७; -तम् कौ १,

३; ५; -ता छां ८, ५, ३; वृ २,

१, ६; कौ ४, ७; कालि ४०१:

११; रया १३; अरु २५.

अ-पराजिष्णु- -ष्णुः वृ २, १, ६;  
कौ ४, ७.

अप/राष्ट्र, अपराधाः वृ ६, २, ८.

अ-परा(र-अ)न्त-

अपरान्त-ज्ञान- -तम् योसू  
३, २३.

अ-परामृष्ट- -ष्टः योसू १, २४.

अ-परिहीण- -णम् राउ ५, २२.

अ-परिखेद-

अपरिखेद-तस्(>) गौ ३, ४१.

अ-परिग्रह- -हः जा ५; नाप ३, ८६;

ते १, ३; या २, १; गौ ६, १०;

-हम् आरु ३; -ह्वात् वृ २,

२, १७.

अपरिग्रह-स्थैर्य- -र्ये योसू २, ३९.

अ-परिच्छिन्न- -न्नः मैत्रि ७, २.

अपरिच्छिन्न-तिरस्करिण्या(णी-आ)-

कारा- -रा त्रिवि ६, १६.

अपरिच्छिन्न-मण्डल- -लानि त्रिवि  
१, ११.

अपरिच्छिन्न-रूप- -पः ते ३, ७.

अपरिच्छिन्नरूपा(प-आ)त्मन्-  
-प्मा ते ४, ४८.

अपरिच्छिन्ना(ज-अ)नन्त-दिव्य-

ते(जस्>)जो-राश्या(शि-आ)-

कार- -रम् त्रिवि ७, १२.

अपरिच्छिन्ना(ज-अ)नन्त-शुद्ध-बो-

धा(ध-आ)नन्द-मण्डल-

-लम् त्रिवि ६, २३; सि ५, ६;

१५.

अपरिच्छिन्ना(ज-आ)नन्द-सागरा-

(र-आ)कार- -रम् त्रिवि ६,

२३; सि ५, ९.

अ-परिच्छेद्य- -द्यम् योशि २, १७.

अ-परिज्ञात-

अपरिज्ञात-कुल-शील- -लाय मुवा  
१६.

अ-परिज्ञान- -तम् गौ ४, १९.

अ-परिणाम- -मात् योसू ४, १७.

अ-परित्यज्य वृजा ३, १.

अ-परित्यागिन्- -नी आश्र १.

अ-परित्याज्य- -ज्यः लिं ६१०: १६.

अ-परिमित- -तः मैत्रि ६, १७; ७,

२; -तम् मैत्रि ४, ४; ६, ३०;

३७; ७, ११.

अपरिमित-द्युति-निभ- -भम् मं

४, १, ३.

अपरिमित-धा मै ४, ५; मैत्रि ५, २;

६, २६.

अपरिमिता(त-आ)नन्द-विशेष-

-षम् त्रिवि ७, १७.

अपरिमिता(त-आ)नन्द-समुद्र-

-द्रः ससा १, ३६.

अ-परिमे(य>)या- -याम् गौ १६,

११.

अ-परिशेष- -षम् सांका ६४.

अ-परिहार्य- -र्ये गौ २, २७.

अ-परोक्ष- -क्षम् अच्या ४०;

वरा २, ६९; -क्षात् वृ ३, ४, १;

२; ५, १; सांस् १, ५९.  
 अपरोक्ष-ज्ञाना(न-अ)भि- -भिना  
 नि ४७.  
 अपरोक्ष-ता- -तया वस् २५.  
 अपरोक्ष-प्रतीति- -ते: सांस् ५,  
 १०१.  
 अपरोक्ष-सिद्धि- -द्धि: शां १, ७, ४३.  
 अपरोक्षा(क्ष-अ)त्म-सिद्धि- -द्धये  
 वा ३६.  
 अपरोक्षा(क्ष-अ)नुभव-परो-  
 (र-उ)पनिषद्- -षदम् मवा १.  
 अपरोक्षी/कृ<sup>०</sup>  
 अपरोक्षी-कृत- -त: द १.  
 अपरोक्षी-कृत्य वस् २६.  
 अ-पर्य(रि-अ)न्त- -न्तस्य वृ ६, २, ७.  
 अ-पर्याप्त- -सम् गी १, १०.  
 अप/लप  
 अप-लपनी(य>)या- -या: सांस्  
 ५, १२९.  
 अप-लाप- -प: सांस् १, ११२;  
 १३७; १४७.  
 अ-पलायन- -नम् गी १८, ४३.  
 अप/वद्, अपवदति वस् ३, ४, १८.  
 अप-वाद- -दात् गौ ३, २५.  
 अपवाद-मात्र- -त्रम् सांस् १,  
 ४५.  
 अप-वद्भि- -द्भि गा २८.  
 अप-चासन- -नम्<sup>०</sup> महा ६, ३०.  
 अ-पवित्र- -त्र: ह १२; -त्रम् महा  
 ६, २२; अत्र ५, ३; शि ५, १४.  
 अप/वृज्  
 अप-वर्ग- -र्ग: सांस् ३, ६५; सांका  
 ४४; -र्गम् स ३७८:२; -र्गस्य  
 पत्र २.  
 अप/व्यष्  
 अप-विद्- -दात् वा ४.

अ-पशु- -शव: त्रिता ५, १; इ १९: ११.  
 अ-पश्यत्- -श्यत: वृ ४, १, ४; महा  
 ५, ६३; -श्यन् शां १, ७, १५;  
 -श्यन्त: छां ५, १, ९; वृ ६, १, ९.  
 अपस्- ✓\*अप् द.  
 अप-सिद्धा(द्ध-अ)न्त- -न्त: सांस्  
 १, ५०.  
 अप/स्, अपसरति मैत्रि ६, १४.  
 अप-सरण- -णम् मै १, ७; मैत्रि  
 १, ४; मैत्रे १, २.  
 अप/स्था>तिष्ठ, अपतिष्ठति  
 २प्र ३६: १२.  
 अप/स्मृ  
 अप-स्मार<sup>१</sup>-  
 आपस्मारिक<sup>०</sup>- -कम् व  
 ४३३: २०.  
 अपस्मारा(रि-अ)दि- -दय:  
 अव्य ७.  
 अप/हन्, >जिवांस, अपहते छां ४,  
 ११-१३, २; अव्य ५; अपहन्ति  
 छां १, ३, १; अपजहि छां २, २४,  
 ६; १०; अपहत छां २, २४, १५;  
 अपहनानि शौ ५२: ३.  
 अपाजिघांसन् शौ ५३: ३.  
 अप-घ्न- -घ्नम् मना १, ४९<sup>d</sup>.  
 अप-हत-  
 अपहत-तमस्क- -स्कान् छां ७,  
 ११, २.  
 अपहत-पाप्मन्- -प्मा छां १, २,  
 ९; ८, १, ५; ४, १; ७, १; ३;  
 वृ ४, ३, २१; मै ५, १; मैत्रि  
 ४, ४; ६, १; ७, ७; सुबा ७; अध्या  
 १; -प्मान: मै २, ३; मैत्रि २, ३.  
 अप-हृति- -ति: छां ८, १२, १.  
 अप-हृत्य के ४, ९; वृ १, ३, १०;  
 ११.

अप-हन्- -न्ता छां १, ३, १.  
 अप/हा(न्यागे)  
 अप-हाय कृ १.  
 अप/हृ, अपजहु: वृ ३, ९, २६; अप-  
 हार्षात् छां ६, १६, १.  
 अप-हार- -रेण राज ५, १४.  
 अप-हृत-  
 अपहत-चेतस्- -तसाम् गी २,  
 ४४.  
 अपहत-ज्ञान- -ना: गी ७, १५.  
 अप/हु, अपहुवीत् छां ७, १५, ४.  
 अपा(प-अ)ङ्ग-  
 अपाङ्गा(ङ्ग-अ)<sup>०</sup>त- -न्ते अता ६.  
 अ-पाणि- -णि: भ २, १३.  
 अ-पाणि-पद्- -दम् छ ३१; पाशु  
 २, २९.  
 अ-पाणि-पाद, दा- -द: स्वे ३, १९;  
 कै २, २; नाप ९, १४; भव २,  
 ४६; -दम् सुं १, १, ६; शां २,  
 १; व २; सुबा ३; -दा गु ५१.  
 अ-पात्र- -त्रेभ्य: गी ६७, २२.  
 अ-पाद्- -द: भ २, १३.  
 अपा(प-आ)/दा (दाने)  
 अपा-न्त- -न्तम् वृ ६, २, ७<sup>०</sup>.  
 ?अपा-दाय<sup>१</sup> वृ ४, ३, ९; ४, ४.  
 अपा(प/अ)न्(प्राणने), अपानिति  
 छां १, ३, ३; वृ ३, ४, १६; अपा-  
 न्यात् वृ १, ५, २३; ६, ४, १०.  
 अपा(प-आ)न<sup>१</sup>- -न: प्र ४, ३; तै १,  
 ५, ३; ७, १; २, २, १; ऐ १, ४, २;  
 ४; छां १, ३, ३; ३, १३, ३;  
 ५, २१, १; वृ १, ५, ३; ३, १,  
 १०; ९, २६; ५, १४, ३; मै २,  
 ६; ७; ५, ५; मैत्रि २, ६;  
 ६, ५; ३३; ७, ३; अना ३५;  
 ३७; त्रि ६६; १योट ६५; योच्

अ) असाक्षाद्भूतस्य सतः साक्षात्करणे तात्पर्याच् च्यन्त-पूर्वः गस. द्र. (यक. पा ५, ४, ५०; १, ४, ६१; २, १८)। b) वा. क्तिवि. द्र.। c) उत्पत्तेऽर्थे ठ>इकः प्र. (पा ५, १, ३८)। d) तैआ १०, १, ४। e) 'उपाचम' इति निसा. पाप्मे.। f) पा. ? [तु. शं; वैतु. रामा., निसा. 'उपादाय' इति पाप्मे. च (तु. आगिटी.)]। g) मुपा. 'अपानीति' इति छान्दसो दीर्घ इति शं.।

२३; ३०; त्रित्रा २, ८०; ध्या  
५६; ६०; गर्भः शां १, ४; योशि  
६, ५३; अन्न ५, २६; २९; ३१;  
३२; सू १६; यो १, ६४; जाद  
४, २३; २५; २७; प्रा ४, १; सु २,  
२, ५२; गा ५; -नम् क २, २,  
३; प्र ३, ५; ८; मना २, ७०<sup>६</sup>;  
सुबा ९; १५; त्रित्रा २, ११५;  
१योत १२१; योचू ३०<sup>७</sup>; ४०;  
४६; १००; ध्या ६२; ७५;  
शां १, ४; १, ७, १३; योशि ६,  
५३; यो १, ४२; ६३; जाद ६,  
३३; वरा ५, ३३; ३८; सौ २, ३;  
गी ४, २९; -नात् ऐ १, ४; सुबा  
२; ध्या ६०; त्रित्रा २, ६६; जाद  
७, ९; -नाय छां ५, २१, १९<sup>८</sup>;  
मैत्रि ६, ९; मना २, ६९<sup>९</sup>; प्रा  
१, ६; -ने छां ५, २१, २; वृ ३,  
९, २६; मै २, ७; मैत्रि २, ६;  
मना २, ६९<sup>९</sup>; ७०<sup>९</sup>; यो १,  
४३; प्रा १, ६; सु २, २, ५१; योरा  
६; गी ४, २९; -नेन क २, २,  
५; ऐ ३, १०; ११; वृ ३, २,  
२<sup>१</sup>; ४, १; सुबा ४; शां १, ४.  
अपान-प्राण- -णयोः अन्न ५,  
३०; योचू ४७; ध्या ७३.  
अपान-मुख्य-  
अपानमुख्य-त्व- -स्वेन भा  
१९.  
अपान-योग- -नोत त्रित्रा १, ९.  
अपान-वद्धि-सहित- -तम्  
योचू १०७.  
अपान-वायु- -युः त्रित्रा २, ८४.

अपानवायु-कर्मन्- -मं शां  
१, ४.  
अपाना(न-आ)ल्य- -ल्यस्य  
जाद ४, ३१.  
अपाना(न-आ)मन्- -तमने गोउ  
६४.  
अपाना(न-आ)दित्य-संनिभ-  
-भम् ध्या ९५.  
अपानो(न-उ)दय-कोटि-ग-  
-गम् अन्न ५, ३०.  
अपानो(न-उ)द्वार-धूपित- -तम्  
नाप ४, ३०.  
अपा(प-अ)न्य वृ ६, ४, ११.  
अपा(प-अ)न्तर-तम- -सः, -माथ  
सुबा ७९<sup>१</sup>; अध्या ७०<sup>१</sup>.  
अ-पाप- -पः ना ५; मना १, १३<sup>२</sup>;  
अन्न १६; दे २२; ग १६; मवा  
१२; इ १०; १७; सिशि ३८३;  
१४; -पम् नाप ३, ७४.  
अ-पाप-काशिनी- -ऽनी स्वे ३,  
५<sup>१</sup>; नी १, ८; लि ३०२; ७.  
अ-पाप-विद्ध- -द्धम् ई ८.  
अ-पायिन्- -यी बि ३३.  
अ-पार- -रः आर्षे ९; १२; -रम् वृ २,  
४, १२; सुबा ३; -ने मना १, १९<sup>१</sup>;  
-रेण मैत्रि ६, २१.  
अपार-गुण-सागर- -रः अन्न ४, ६४.  
अपार-पार- -रम् योशि ३, १७.  
अपार-ब्रह्म-विद्या-साम्राज्या-  
(ज्य-अ)धि-देवता- -ताम्  
त्रिवि ६, २१.  
अपारा(र-अ)मृत-वृत्ति- -त्तिः मं  
२, २, ५.

अपा(प-अ)र्थक- -कम् सांका ६०.  
अपा(प-अर्थ>)र्था- -र्था सांका १.  
अ-पालयत्- -यन्तः भव २, ६५.  
अपा(प-आ)वृ(आच्छादने), अपावृणु  
ई १५; छां २, २४, ४; ८;  
१२; १३; वृ ५, १५, १; मैत्रि  
६, ३५.  
अपा(प-आ)वृत्- -तम् गी २, ३२.  
अपा(प-आ)वृत्-  
अपा(प-आ)वृ(त>)त्ता- -त्ता सार  
२४२; १; ४<sup>६</sup>.  
अपा(प-अ)स् (भुवि), अप...अस्मि  
वृ ४६०; ७९<sup>१</sup>.  
अपि के २, १; ३, ५; ९; क १, १, १५;  
२१; २२; २६; २, ७; २३; सुं  
३, १, ८; २, ४; मां १; तै २, ४,  
१; ५, १; छां १, ५, ५; २, १,  
२; ३, ११, ६; वृ १, ३, २४;  
४, १; १०; ११; गी ३, ३१<sup>३</sup>.  
अपि/गच्छ, ?अपिगच्छति<sup>४</sup> वृ  
१, ५, १; २.  
अपि/गृह  
अपि-गृह छां ३, १३, ७.  
अ-पितृ- -ता वृ ४, ३, २२.  
अपि/धा  
अपि-धान- -नम् छां ८, ३, १; प्रा  
१, ६; शि ४, ६.  
अपि-धाय वृ ५, ९, १; मै २, ८;  
मैत्रि २, ६.  
अपि-हित, ता- -तः तै १, ४, १;  
नाप ४, ३८; -तम् ई १५; वृ ५,  
१५, १; -ता इ १२; ३<sup>१</sup>-६<sup>१</sup>.  
अ-पिपास- -सः छां ३, १७, ६०; ८,

a) तैआ १०, ३६, १। b) 'अपानेन' इति अत्र्या पामे। c) मा २२, २३। d) तैआआ १०, ६९। e) 'अपालन' इति ल-मध्यः सुपा. चिन्त्यः [तु. प्राण-मुख्य-(भा १८)]। अत्र 'नाग-' इति तान्त्रि. पामे। f) वैतु. PW. प्रसू. अपान्तरतमस्- इति वदन्तश्चिन्त्याः। यथोपलब्धयोः ह. अनुपपत्तेः। g) तैआ १०, १, १३। h) मा १६, २। i) 'पापकाशिनी' इति पा. मन्यमानः JC. विमृश्यः। j) तैआ १०, १, १। 'पारे' इति पा. मन्वानः सा. सुवेचः। k) 'अपापावृत्ता' इति मुद्रणप्रमादजः सुपा. चिन्त्यः। l) ऋ १०, ८३, ५। m) 'सर्वकिल्बिषैः' इति, Schir. विशिष्टः पामे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। n) पा. ? [तु. शं.; वैतु. निसा. 'अपियच्छति' (<अपि/यच्छ [नियमने] इति पा.)]। o) 'अपिपासः' (मैत्रि ७, ७) इति पामे. यनि. नैप्र. विपरिणामः द्र. (तु. राती.)।



१, ५; ७, १; ३.  
 अपिपास-स्व- स्वात् वृड ७, २.  
 अपी(पि/इ), अप्येति छां ४, ३, १<sup>३</sup>;  
 ३; वृ ३, २, १३; ४, १, २-७;  
 ४, ६; कौ ३, ३<sup>६</sup>; ४, १९<sup>४</sup>; वृपू  
 २, १२; वृड ५, १-३; सुबा ३;  
 ९<sup>६</sup>; १आ २१; यो २, ३३;  
 अपियन्ति मुं १, २, ७; २, १,  
 १; तै २, २, १; ८, ३; छां ४,  
 ३, २; ६, १०, १; वृ ४, ४, ८;  
 १४; श्वे ३, १०; शा ११.  
 अपी(पि-इ)त- -तः छां ६, ८, १<sup>२</sup>;  
 ८, ११, १; २.  
 अपी(पि-इ)ति- -तिः मां ११; वृड  
 २, ७; -तेः मां ११; वृड २, ७;  
 व्रसू ४, २, ८; -तौ व्रसू २, १, ८.  
 अ-पुंस- -पुमात् अशि १, ५.  
 अ-पु(ग्य>)ण्या- -ण्याम् महा  
 ६, ४०.  
 अ-पुत्र- -त्रः १संन्या १, १; कश्चु १,  
 १; -त्राः इ १२ : ११; -त्राणाम्  
 रापू ४, ६६; -त्राय वृ ६, ३, १२;  
 श्वे ६, २२; मैत्रि ६, २९; सुबा  
 १६; व्रवि ४७.  
 अ-पुत्रिन्- -त्री श्या १२.  
 अ-पुनरा(र-आ)वर्तन- -नम् कुं ९.  
 अ-पुनरा(र-आ)वृत्ति- -त्तिम् गी  
 ५, १७.  
 अ-पुनर-जन्मन्-  
 अपुनरजन्म-कारि(न्>)णी- -णी  
 अन्न ५, ६.  
 अ-पुनर-भव,वा- -व्या, -वा सुबा  
 ११; -वाय मैत्रे २, २६.  
 अ-पुरुषा(प-अ)र्थ-  
 अपुरुषार्थ-स्व- स्वम् सांसू १, ४७;  
 ८२; ६, ९; १८.  
 अपुरुषार्थत्वा(त्व-आ)दि-दोष-  
 -वात् सांसू ५, ७८.

अ-पु(ष्य>)ण्या- -ण्याः प्रा १, २९<sup>६</sup>.  
 अ-पूत- -तः गोड २; -तानि १आ १;  
 २आ ३.  
 अपूप<sup>१</sup>- -/\*अस्पृ द.  
 अ-पूर्ण- -र्णः व्रवि ८८.  
 अपूर्ण-त्व- -त्वम् तै ५, २८.  
 अ-पूर्व- -र्वः गौ १, २६; -र्वम् वृ  
 २, ५, १९; गौ २, ८; जाद ४,  
 ६०; १शिसं २९<sup>१</sup>; २शिसं ३९<sup>१</sup>;  
 व्रसू ३, ३, १८.  
 अपूर्व-त्व- -त्वात् व्रसू ३, ४, २१.  
 अपूर्व-पुण्य-स्थल- -लानि नाप १.  
 अ-पृथक् गौ २, ३४; पदं ४; नाप  
 ३, ८६.  
 अ-पृथ(क्>)ग्-धर्मिन्- -र्मिणः  
 मैत्रि ६, २२.  
 अ-पृथग्-भाव- -वैः गौ २, ३०.  
 अ-पृथग्-विवेक्य- -क्याः मैत्रि  
 ६, २२.  
 अ-पृष्ट- -ष्टः १संन्या २, १०२.  
 अपे(प/इ), अपैतु मना २, ४५<sup>९</sup>.  
 अपे(प-इ)त- -ताः सार २९२ : १.  
 अपेत-रजस्-तमस्- -मः अन्न  
 ४, २४.  
 अपे(प/ई)क्ष्, अपेक्षते वृपू १, ९;  
 १५; वृड ७, ११; नाद ४२;  
 १आ ५; ७; अक्षि ६; अन्न २,  
 २८; नाप ३, ६; वपू २, १;  
 अपेक्षन्ते अरु ३१.  
 अपे(प-ई)क्षा- -क्षया गौ ४, १८;  
 व्रसू १, ३, २५; -क्षा नाप  
 ५, १.  
 आपेक्षिक- -कः सांसू २, ४५.  
 अपे(प-ई)क्ष्य सर ३, २४; व्रसू ४,  
 १, ९.  
 अ-पेय-  
 अपेय-पाद- -पात् गा ४०८ : १७.  
 अ-पेशस्- -शसे व ४३७ : २०<sup>९</sup>.

अ-पैथुन- -नम् गौ १६, २.  
 अपो(प/उ)ज्ज्  
 अपो(प-उ)ज्जित- -तः छाग २<sup>५</sup> :  
 १२; १३; १८.  
 अपो-मात्रा- -/\*अप् द.  
 अपो(प/ऊ)र्णु, ९<sup>६</sup>अप...ऊर्णुहि  
 मना २, ७३; चा २०.  
 १अपो(प/ऊ)हू(वहते)  
 अपोह्य छां ५, २४, १; महा ५,  
 १७५; छाग २<sup>५</sup> : ७.  
 २अपो(प/ऊ)हू(वितर्क)  
 अपो(प-ऊ)हन- -नम् गौ १५, १५.  
 अ-पौरुषेय-  
 अपौरुषेय-स्व- -त्वात् सांसू ५,  
 ४१; ४८.  
 अ-पौर्णमास- -सम् मुं १, २, ३.  
 अ-पौलकस- -सः वृ ४, ३, २२.  
 अप्तोर्याम- -/\*अप् द.  
 अ-प्रकाश- -शः वरा २, ९; गौ १४,  
 १३.  
 अ-प्रकाशि(त्>)नी- -नी गोड ६३.  
 अ-प्रकाश्य- -श्यम् सुबा ३; वड ६,  
 ३२.  
 अ-प्रच्यव- -वम् भ २, १८.  
 अ-प्रच्युत, ता- -तः गौ २, ३८;  
 -ता जाद १, १८.  
 अ-प्रजायमान- -ताः वृ ६, १, १२.  
 अ-प्रज्ञ,ज्ञा- -ज्ञः सुबा ५; -ज्ञम् मां  
 ७; वृपू ४, ७; वृड १, १२; नाप  
 ८, १९; २०; राड ३, १; वड  
 १, १३; -ज्ञाम् विद्या ४.  
 अ-प्रणीय वा ७.  
 अ-प्रतर्क्य- -र्क्यः आबो ५; वड ३,  
 ६१; -र्क्यम् सुबा ३; योशि  
 ३, १७.  
 अप्रतर्क्य-सुख-प्रद- -दः तै ३, ७०.  
 अ-प्रतिगृह्य- -ग्रह्य वृ ४, १, ३.  
 अ-प्रतिबद्ध- -द्धम् अच्या ४०.

a) ऋ १०, ९७, १५ । b) मा ३४, २ । c) तैत्रा ३, ७, १४, ४ । d) ऋ १, ६, ३ । e) ऋ  
 १०, ७३, ११ ।

अप्रतिबद्धा(ङ-अ)परोक्ष-साक्षा-  
त्-कार- -रम् पै ३, १.  
अ-प्रतिबन्ध- -न्वः ब्रसू ३, ३, ४२.  
अ-प्रतिभूतक- -कम् गु ३२.  
अ-प्रतिम-  
अप्रतिम-प्रभाव- -व गी ११, ४३.  
अ-प्रति-रूप- -यः कौ ४, १०; चा  
१२; -यम् वृ १, ३, २-६; २, १, ८.  
अ-प्रतिशासन- -न गरु ६.  
अ-प्रतिष्ठ- -ष्ठः गी ६, ३८; -ष्ठम्  
गी १६, ८.  
अ-प्रतिष्ठित- -त्तम् छां १, ८, ६;  
सुबा ३; अव्य ६; इ १३: १०.  
अ-प्रतिसंक्र(म>)मा- -मायाः योसू  
४, २१.  
अ-प्रतीकार- -रम् गी १, ४६.  
अ-प्रतीका(क-आ)लम्बन- -नात्  
ब्रसू ४, ३, १५.  
अ-प्रत्यय-  
अप्रत्यय-कारिन्- -रिणः सार  
२९०: १३.  
अ-प्रदाय गी ३, १२.  
अ-प्रदाह- -हाय मना २, ६९: ९७.  
अ-प्रफुल्ल- -ल्लम् महा ५, १७.  
अ-प्रबुद्ध-द्धा- -द्धम् ते १, ११; -द्धाः  
मैत्रि २, ६.  
अ-प्रमेद्य- -द्यः आबो ७.  
अ-प्रमत्त- -त्तः क २, ३, ११; छां १,  
३, १२; स्वे २, ९; नाप ३, ७७;  
६, २६; सौ २, १; भव ३, २६;  
-त्तम् शा ३४; सु १, १, ५२; -त्तेन  
सुं २, २, ४; ल्ह ३८; ध्या १५.  
अ-प्रमाण- -णम् योशि ३, १८.  
अ-प्रमाद- -देन करु ५; म १, ७; २,  
३०: ३; कशु ३, ५.  
अप्रमाद-तस(>) योशि २, २.  
अ-प्रमेय- -यः मैत्रि ७, १; वड २,  
२९; -यम् वृ ४, ४, २०; ब्रवि

२; वृड ५, २; सुबा ३; वसू २;  
योशि २, १६; ३, १८; अन्न ५,  
७३; अध्या ६०; त्रिता ५, ९;  
भ १, १; २, ३; मं ३, १, ३;  
जाद २, ४; रक्षिं १२; अवि  
२; गी ११, १७; ४२; -यस्य  
गी २, १८; -याय मै ४, ४, १५;  
मैत्रि ५, १; -यैः सर ३, ९.  
अप्रमेया(य-अ)खण्ड-परिपूर्ण-  
-र्णम् त्रिवि १, ५.  
अ-प्रयत-मानस- -साय शा ३३.  
अ-प्रयत्न- -न्नः जा ६; यो २, १.  
अ-प्रयोजक- -कम् योसू ४, ३.  
अ-प्रवर्तिन्- -र्तिं छां ३, १२, ९; वृ  
२, १, ५; कौ ४, ६.  
अप्रवर्तिनी- -नीम् छां ३, १२, ९.  
अ-प्रवृत्त- -त्तस्य गौ ४, ८०.  
अ-प्रवृत्ति- -त्तिः गी १४, १३.  
अ-प्रशस्त- -स्ताः सर २, १०९.  
अ-प्रशान्त- -न्ताय स्वे ६, २२; सुबा  
१६; अन्न ५, ११९; गु ७५.  
अ-प्रसाह- -हः छां ५, २, ७.  
अ-प्रसिद्ध- -द्धस्य गौ ४, १७.  
अप्रसिद्ध-त्व- -त्वात् गौ ४, ३८.  
अ-प्रस्तुत-प्रतिबन्ध- -न्धे ब्रसू ३,  
४, ५१.  
अ-प्राण, णा- -णः सुं २, १, २; मै  
२, ४; मैत्रि २, ४; ६, २८; ७,  
४; वृड ७, ३; ८; १४; ससा २;  
ब्रवि ८१; ८३; -णम् वृ ३, ८,  
८; सुबा ३; -णाः मै २, ६; मैत्रि  
२, ६; -णात् मैत्रि ६, ११.  
अ-प्राणत्- -णतः वृ ४, १, ३; -णन्  
छां १, ३, ३; ४: ५.  
अ-प्राणयितव्य- -व्यम् वृड ९, १८.  
अ-प्राणा(ण-आ)ख्य- -ख्यः मैत्रि ६,  
२६.  
अ-प्राप्त- -सम् महा ४, ३६.

अप्राप्त-प्रकाशक-  
अप्राप्तप्रकाशक-त्व- -त्वम् सांसू  
५, १०४.  
अप्राप्त-शरीर-संयोग- -गम् ससा  
१, २०.  
अ-प्राप्ति- -प्तेः सांसू ५, १०४.  
अ-प्राप्य तै २, ४, १; ९, १; छां ८,  
९-११, १; ब्र ३, १६; ते १, २०;  
श १७; शां २, १; गी ६, ३७;  
९, १३; १६, २०.  
अ-प्राप्य- -प्यः १ संन्या २, १५;  
-प्यम् वड ३, १०; ११.  
अ-ग्रामाण्य- -ण्यम् सांसू १, ८.  
अ-प्रिय- -यम् वृ १, ४, १०; शि ७,  
३७; गी ५, २०; -याः तै ३, १०,  
४; कौ १, ४; -येषु नाप ३, ५१;  
-यैः भव १, ४.  
अप्रिय-वादिन्- -दिने मुद्र ४.  
अप्रिय-वेत्त- -त्ता छां ८, १०, २; ४.  
अ-प्रोच्य छां ४, १०, २.  
अ-प्रौढ-  
अप्रौढा(ढ-आ)त्म-विवेक- -का-  
नाम् महा ३, १०.  
?अप्-सर-  
अप्सरा- -रासु मना २, ४२९.  
?अप्-सरस्- -रसः कौ १, ३; मैत्रि  
६, ३१; मुद्र ३; गोड २६; -रसा  
सार २५६: ३; -रसाम् कौ १,  
४; -रःसु गोड ६३.  
अप्सरः-पुष्करिणी- -ण्याम् सार  
२४३: १४; २८६: ५.  
अ-फल-प्रेप्सु- -प्सुना गी १८, २३.  
अ-फ(ल>)ला- -लाः प्रा १, २९.  
अ-फला(ल-आ)काङ्क्षिन्-  
-क्षिभिः गी १७, ११; १७.  
अबंश- ✓\*अप् द.  
अ-बद्ध- -द्धः महा ५, ७४.  
अ-बधत्- -धन्तौ योचू १०२.

a) वा. क्रि. द.। b) तैआआ १०, ६९। c) ऋ २, ४१, १६। d) तु. वैप १, ३१३ टि। e) तैआ  
१०, ४१, ११। f) तु. वैप १, ३१३ टि। g) ऋ १०, ९७, १५।

अ-बल(त>)ला-लानाम् छां ४, ४, ५.

अबल्य-ल्यम् वृ ४, ४, १<sup>b</sup>; कौ ३, ३.

अ-बलिमन्-मानम् छां ८, ६, ४.

अ-बलीयस्-यान् वृ १, ४, १४.

?अबल्य-द्विप्. टि. द्र.

अ-बाध-धात् सांस् १, ७९; व्रस् ३, ४, २९; -धे सौ २, २; सांस् ५, १७.

अ-बाधक-

अबाधक-रह-स्थल-निकेतन-

-नः या २, १.

अबाधक-रहस्य-स्थल-वास-

-सः पप ४१९ : १५.

अ-बाधित-तः मुद्र ४; -तस् त्रिवि ८, १५; गोउ ३०.

अबाधित-त्व-त्वेन वरा ३, ९.

अबाधित-परम-तत्त्व-तत्त्वम् त्रिवि ७, २०.

अबाधित-ब्रह्म-सुख-विषय-वधे त्रिवि ५, ४.

अ-बाध्य-

अबाध्य-स्व-रूप-पः वृउ ९, १०.

अ-बाह्य-ह्यः वृ ४, ५, १३<sup>c</sup>; गौ १, २६; त्रिवि ८८<sup>o</sup>; -ह्यम् वृ २, ५, १९; ३, ८, ८; सुबा ३.

अबाह्य-प्रत्यक्ष-

अबाह्यप्रत्यक्ष-त्व-त्वात् सांस् १, ९०.

अ-बिभ्रत्-भ्रत् मना १, ५९<sup>d</sup>.

अ-बुद्ध-द्वानाम् गौ ३, ८; अन्न ५, ११०; सांस् १, ४५.

अ-बुद्धि-द्वयः गौ ७, २४.

अ-बुद्धि-पूर्व-वर्म्म मैत्रि २, ५<sup>e</sup>.

अ-बुध्-बुधः वृ ४, ४, ११९<sup>f</sup>.

अ-बुध-भाः महा ५, १४४.

अ-बृहत्-हन्तस् सुबा ३.

अ-बोद्धव्य-व्यम् वृउ ९, १८.

अ-बोद्ध-द्वा छां ७, ९, १.

अब्ज-, अब्जा-, अब्ज-√\*अप् द्र.

?अब्ज-त-तेषु भव १, ४०.

अब्जगुण-, अब्धि-, अब्धिन्दु-√\*अप् द्र.

अ-ब्रह्म-चारिन्-रिणे अव्य ७; -नी ह १२; गार ४०८ : १९.

अ-ब्रह्मन्-ह्य २प्र ३३ : २२.

अब्रह्म-जन्म-दोष-धाः दत्ता १, ७.

अ-ब्रह्म-विद्-वित् सुं ३, २, ९; मां १०; शा ४.

अ-ब्रह्म-हन्-हा वि ३३.

अ-ब्राह्मण-णः छां ४, ४, ५.

अ-भक्त-क्तान् सार २७२ : २३; २७३ : ५; -क्तय सूता १, ३८; गौ १८, ६७.

अ-भक्ष्य-क्ष्यम् मैत्रि २, १०; पाशु २, ३७; रुजा २, १७; भव ४, १४; -क्ष्यस्य पाशु २, ३६.

अभक्ष्य-परिहार-रः भव ३, २२.

अभक्ष्य-भक्ष-क्षात् नाउ ३, ९.

अभक्ष्य-भक्षण-णात् सू २८; गार ४०८ : १८; मुद्र ४.

अभक्ष्यभक्षणो(ण-उ)त्पञ्च-न्नम् राउ ५, १३.

अभक्ष्या(द्य-अ)न्न-निधेवण-णात् भव ४, ११.

अ-भद्र-द्रम् वृउ ६, १.

अभद्र-क-कम् शि ७, ८१.

अ-भय-भयं लां २१५ : २३; -भयः वृ ४, ४, २५; गौ ३, ३७; त्रिवि ८१; गोउ ४०; पा ३, ७; -भयम् क १, ३, २; प्र १, १०; ५, ७; तै २, ७, १<sup>g</sup>; छां १, ४, ४; ५;

४, १५, १; ८, ३, ४; ७, ४;

८, ३; १०, १; ११, १; वृ ४,

२, ४<sup>h</sup>; ३, २१; ४, २५<sup>i</sup>; गौ

३, ४०; ४, ७८; मै २, २;

५, ८; मैत्रि २, २; ६, ८; २३;

७, ३; आरु ३; मना १, ९९<sup>b</sup>;

११९<sup>j</sup>; २, ४५<sup>k</sup>; वृउ १, ३;

२, ३; ८, २<sup>l</sup>-५<sup>l</sup>; ९, १८; सुबा

५<sup>m</sup>; ९<sup>n</sup>; तै ५, २३; आबो १;

नाप ३, १; ४, ३८; ५, १६;

पप ४१८ : २७; ३०; कृ २७;

ग ११; प्रा १, ५; ६; गोउ ४०;

४८; व ४६३ : २२<sup>o</sup>; गौ १०,

४; १६, १; -व्यस्य क १, २, ११;

-याः छां १, ४, ४; -यात् तै ५,

२३; -याय मैत्रि ७, ९; -ये गौ

३, ३९.

अभय-कर-करः मना १, ९; २, ५५; व ४६४ : २.

अभय-त्व-त्वात् वृउ ७, २.

अभय-दायि(न्>)नी-नी सार २४४ : १५.

अभय-प्रद-द्रम् गोउ ४९; वपू २, २.

अभय-वर-कर(र>)रा-राम् व ४२७ : ४.

अभय-वर-द-पञ्च-व(र>)रा-रा सी ३७.

अ-भवित्-त्ता गौ २, २०.

अ-भाग-गाः व ४६० : ७९<sup>l</sup>; -गस्य सांस् ५, ८१.

अ-भाव-वः गौ २, ३; त्रिवि ७; भ १, १०; अवि ७; व्रस् २, २, २८; गौ २, १६; १०, ४; -वम् महा ३, ५१; अन्न ५, ३८; व्रस् ४, ४, १०; -वस्य अन्न ४, ५०;

g) भावे व्यञ् प्र. (पा ५, १, १२४)। h) तु. रामा.: वैतु. शं. प्रसृ. ?अबल्य-इति पठन्तः सधु. (तु. नाउ.) उपेक्षुका इव।

o) 'अबाध्यः' इति अज्या. पामे.। d) तैआ १०, १, ५। e) वा. क्विवि. भवति। f) 'आत्महन्' इति मा. (४०, ३) पामे.।

g) प्रकरणतो वर्णविकारतश्च अवृत्त->तेषु इति पा. संभाव्येत, यमु. अनर्थकत्वात्। h) अ ८, ६१, १३। i) अ ३, ४७, २। j) तैआ ३, ७, १४, ४। k) अ १०, १५२, २ (एतदु वैपरी, ३१६ स्थ. शोधः द्र.)। l) अ १०, ८३, ५।



|  |  |  |
|--|--|--|
| <p>-चात् अञ ५, १०९; सांस् १, १५८; ५, ४६; सांका ८; वस् २, २, ५; वे स्वे ६, ४; शि ४, ५; ६५; ५, ६; सांस् १, ८०; योस् ४, ११; वेन शि ४, ६२; ६३.</p> <p>अभाव-तस्(&gt;) करु ३१.</p> <p>अभाव-प्रत्यया(य-या)लम्ब-<br/>(न&gt;)ना--ना योस् १, १०.</p> <p>अभाव-भावना--नाम् पित्र ५, १०.</p> <p>अभावा(व-अ)त्य(ति-अ)न्त-<br/>भावन--नात् अञ १, २३.</p> <p>अ-भावक--कः ते ४, ७७.</p> <p>अ-भावन--नम् अञि २४; अञ ४, ५०; नात् महा ५, १२; ३२; वरा ४, ८.</p> <p>अ-भावयत्--यतः गी २, ६६.</p> <p>अ-भास्क(स्-क)र--रम् सुवा १५.</p> <p>अभि क १, १, १०; २, ३, १६<sup>a</sup>; छां ८, ६, ६<sup>a</sup>; वृ ६, २, ७; ४, २५; मना १, ४९<sup>b</sup>; २, ३८९<sup>c</sup>; ४५९<sup>d</sup> अशि ४, २०९<sup>e</sup>; योशि ६, ४<sup>a</sup>; त्रिवि ४, ९९<sup>f</sup>; वटु ३१६:१३९<sup>g</sup>; व ४६०:१०९<sup>h</sup>; ११९<sup>i</sup>; १४९<sup>j</sup>; ४६१:१९९<sup>k</sup>.</p> <p>अभि-तस्(&gt;) छां ३, १, ४; २-५, ३; ८, ६, ४; वृ १, १, २; त्रिवि ६, १८<sup>l</sup>; रापू ४, ४४; महा ५, ८५; १३६; नी १, ९९<sup>m</sup>.</p> <p>अभि/कम्<br/>अभि-काम--मः छां ८, २, १०; मा: छां ८, १, ५.</p> <p>अभि/काश् &gt; चाकश्, अभिचाक-<br/>शीति मुं ३, १, १९<sup>n</sup>; वृ ४, ३,</p> | <p>११; स्वे ४, ६९<sup>o</sup>; नाउ १, ४९<sup>p</sup>;<br/>भव २, २९<sup>q</sup>; अभिचाकशीमि<br/>मना २, ४०९<sup>m</sup>; अभिचाकशात्<br/>नी १, ८९<sup>n</sup>; अभिचाकशीहि<br/>स्वे ३, ५९<sup>o</sup>.</p> <p>अभि-चाकशान--नः वा ११.</p> <p>अभि/कृप्(सामर्थ्ये)&gt;कलप्<br/>अभि-कलस,सा--९<sup>p</sup>सः क २, ३, ९;<br/>स्वे ३, १३; ४, १७; मना<br/>१, ३; त्रिवि ६, १४; -सा गु<br/>६०९<sup>n</sup>; -साम् गु ६३९<sup>n</sup>.</p> <p>अभि/कृत् &gt; कीर्ति, अभ्यकीर्तयः<br/>शौ ५१:११.</p> <p>अभि/क्रम, &gt; चङ्क्रम, अभिचङ्क-<br/>मीति वा ३.</p> <p>अभि-क्रम--<br/>अभिक्रम-नाश--शः गी २, ४०.</p> <p>अभि-क्रम्य वृ ६, ४, ६.</p> <p>अभि/क्षर, अभिक्षरन्ति वृ ४, १,<br/>२-७.</p> <p>अभि/क्षिप्<br/>अभि-क्षिपत्--पन् आर्षे ९:१४.</p> <p>अभि/गच्छ, अभिगच्छति अना<br/>२६; वृजा १, १; वृपू १, १;<br/>अभिगच्छन्ति ई ३; वृ ४, ४,<br/>११९<sup>r</sup>; अभिगच्छेत् मुं १, २,<br/>१२; शि ७, ३१.</p> <p>अभि/गा, अभिगाम् छां ८, १४, १<sup>s</sup>.</p> <p>अभि/गै, &gt; गा, अभिगायति छां<br/>२, २४, ३; ७; ११; अभिगायतात्<br/>छां १, ५, ४.</p> <p>अभ्यगासिषम् छां १, ५, २<sup>t</sup>; ४.</p> <p>अभि/ग्रन्थ, अभिग्रथन्ति आर्षे</p> | <p>७: ५.</p> <p>अभि/*गृह् &gt; जिघृक्ष<br/>अभि-जिघृक्षमाण--णानि मैत्रि<br/>६, १२.</p> <p>अभि/घ्रा &gt; जिघ्र, अभिजिघ्रामि,<br/>अभिजिघ्रेत् कौ २, ११.</p> <p>अभि/चक्ष, अभिचक्षते आर्षे ७:<br/>१६; ८: १०; अभिचक्षीरन् शौ<br/>५२: ७; २०.</p> <p>अभि/चर्<br/>अभि-चार<sup>u</sup>--<br/>अभिचार--<br/>अभिचार-सामान्य--<br/>न्येन सी २४.</p> <p>अभिचार-घ्न--०घ्न अञ्च ५.</p> <p>अभि-चाकशान--अभि/काश् द.</p> <p>अभि/चेष्ट<br/>अभि-चेष्टा--ष्टा सांस् २, ४६.</p> <p>अभि/जन्, &gt; जा, अभिजायते मुं १,<br/>१, ८; छां ७, १२, १; अना<br/>३२<sup>v</sup>; वृजा २, १५; नि ५८<sup>w</sup>;<br/>पि ९; गी २, ६२; ६, ४१; १३,<br/>२३.</p> <p>अभि-जन--<br/>अभिजन-वत्--वान् गी १६,<br/>१५.</p> <p>!अभिजन्यु: २संन्या १६: ४<sup>x</sup>.</p> <p>अभि-जात--तः गी १६, ५;<br/>तस्य योस् १, ४१; गी १६, ३; ४.</p> <p>!अभिजन्यु:<sup>u</sup><br/>अभि/जि, अभिजयति मना २<br/>८०९<sup>v</sup>; मैत्रि ६, ३६; अभिजय-<br/>न्ते प्र १, ९; १०; अभ्यजयत</p> |
|--|--|--|

a) 'सुर्चानम्' इत्येतदन्वितः कप्र. द्र. (वैतु. शं. PW. प्रसू. च 'अभिनिःसृता' इति)। b) मा ३२, ११। c) तैत्र्या १०, ४८, १। d) तैत्र्या ३, ७, १४, ५। e) ऋ ७, ३२, २२। f) ऋ १०, ९०, ४। g) ऋ १०, ८३, ६। h) ऋ १०, ८३, ७। i) ऋ १०, ८४, १। j) तैत्र्या १०, १, १६। k) तैसं ४, ५, १, २। l) ऋ १, १६४, २०। m) ऋ ४, ५८, ५। n) 'अभिचाकशीहि' इति मा. (१६, २) पामे.। o) मा १६, २। p) तैत्र्या १०, १, ३। q) 'अभिक्लसः' इति तैत्र्या. (१०, १, ३) पामे.। r) मा ४०, ३। s) निसा. मध्यतः 'आ' इत्येतद्विवर्तनः शोधः द्र.। t) पा. ? नाउटि. द्र.। u) सुपा. अनुरोधतः अभि/जन् इत्यत्रास्य निर्देशः द्र.। ('अभि/जि') अभि-जिघ्र- > -जिघ्र(यद्- >) यः' इति तु मूलतो द्विपदः पा. संभाव्येत [वृ. संटि. पामे., तैत्र्या. (३, १, २, ५) च]। v) तैत्र्या १०, ६४, १।

अव्य ६; अभ्यजयन् मना १, १०५<sup>a</sup>.  
 अभि-जित्- एप्, टि. द.  
 अभि-जिति- -त्यै व ४३८ : ५.  
 अभि-जिघांसु- अभि/हृद् द.  
 अभि-जिघृक्षमाण- अभि/\*गृह् द.  
 अभि/क्षा, > जा, जिज्ञास, अभि-  
 जानाति गी ४, १४; ७, १३;  
 २५; १८, ५५; अभिजानन्ति  
 रुह ७; गी ९, २४; अभि-  
 जानीम वप् १, ६.  
 अभिजिज्ञौ शा ५.  
 अभिजिज्ञासत अव्य १.  
 अभि-ज्ञ- -ज्ञस्य अज्ञ ५, २७;  
 -ज्ञा: वप् १७.  
 अभि-ज्ञात- -तम् महा २, ३२.  
 अभि/तप्, अभितपति छां ७, ११  
 १; अभ्यतपत् ऐ १, ४; ३, २;  
 छां २, २३, २<sup>१</sup>; ४, १७, १-३;  
 अभ्यतपन् छां ३, १, ३; २-५, २.  
 अभि-तप्त, सा- -सम् सु २९४:३;  
 -स्य ऐ १, ४; छां ३, १, ३;  
 २-५, २; -साम्य: ऐ ३, २;  
 -साया: छां २, २३, २; -सेभ्य:  
 छां २, २३, २; ३.  
 अभि/तृद्, अभितृन्दन्ति आपे  
 ७:६.  
 अभि/त्वर  
 अभि-स्वर<sup>b</sup>- -रम् शौ ५१ : १५.  
 अभि/दास्, अभिदासति छां १, २, ८.  
 अभि/हु, अभ्यद्रवत् के ३, ४; ८; ११.  
 अभि-द्रुत्य वृ १, ३, २-७.  
 अभि/घा, अभिघत्ते प्र ३, १; शौ  
 ५३:२०.  
 अभिघास्यति त्रिवि ८, २१; गी  
 १८, ६८; अभिघास्यामि पित्र  
 १, ७.  
 अभिघीयते मैत्रि ६, २५; हं

१४; व १; वृजा ३, १; ते १,  
 ३७; नाद १०; योचू १२; ६५;  
 ७५; ११२; त्रिवि ७८; ७९;  
 ध्या ९२; त्रिवा २, ३२; अता  
 १५; १६; २अव ३३८ : २;  
 राप् १, ६; महा २, ४१<sup>१</sup>; ४,  
 ४७; ५१; ६१; ६२; ५, ४२;  
 योशि १, १३०; १३३; २,  
 १०; ११; ३, ४; १संन्या २,  
 ४२; अन्न २, २५; ४, ५६;  
 अध्या ३५; त्रिता १, १७; करु  
 ३८; ३९; ४१; वरा ५, ७;  
 सौ २, १४-१८; सु १, १, २२;  
 २, २, १६; द्र ७; ११; नाउ १,  
 २७; नाप् ५, २९; गु ३४; भव  
 १, ५३; २, ३२; ३, ३०; गी  
 १३, १; १७, २७; १८, ११;  
 अभिघीयेत मैत्रि ७, ९.  
 अभि-घा- -घा सुवा १.  
 अभि-धान- -नात् वप् ४, ३, १०.  
 अभि-घाय त्रिवि ६, २५; त्रिता  
 १, ५८.  
 अभि-हित, ता- -तः, मै ४, ३;  
 मैत्रि ४, ३; महा ५, ९३; -तम्  
 मैत्रि ६, ३५९<sup>c</sup>; ३७; ७, १०;  
 ११; -ता गी २, ३९.  
 अभि/धाव(गती), अभिधावति  
 महा ३, १८; अभिधावत कौ  
 १, ३.  
 अभि/घृ  
 अभि-धारण- -णे वपं ३१३:१.  
 अभि/घ्यै, > ध्या, अभिध्यायति  
 मैत्रि ६, ९; अभिध्यायन्ति मैत्रि  
 ४, ५; भ २, २७; अभिध्या-  
 यत् मै २, ६; अभिध्यायीत  
 प्र ५, १; ३; ५; अभिध्यायेत्  
 मैत्रि १, १; ४, ६; ६, ९; अज्ञ  
 ५, ७४; जाद ५, ९.

अभिध्यायात् कौ २, ३.  
 अभि-ध्या-  
 अभिध्या(ध्या-उ)पदेश- -ज्ञात्  
 वप् १, ४, २४.  
 अभि-ध्यातव्य- -व्य: मैत्रि ६, ३४.  
 अभि-ध्यातृ- -ता मैत्रि ६, २२;  
 -तु: मैत्रि ७, ११.  
 अभि-ध्यातृवा<sup>d</sup> मैत्रि २, ६.  
 अभि-ध्यान- -नम् भव ५, ३;  
 -नात् एवे १, १०; ११; नाप  
 ९, ९<sup>e</sup>; १०.  
 अभि-ध्यायन्- -यन् क १, १,  
 २८; २, ३; भ २, २; २१;  
 -यन्तः भ २, २९.  
 अभि-ध्यायमान- -तः मैत्रि ६,  
 ३८; -ने मवा ६७.  
 अभि-ध्यय- -यः मैत्रि १, १; -यम्  
 मैत्रि ६, ३४; -ये मैत्रि ६, २२.  
 अभि-नद्ध- अभि/नहृ द.  
 अभि/नन्द, अभिनन्दति महा ४,  
 ३७; अन्न २, ५; शा ३६; गी  
 २, ५७; अभिनन्दन्ति सुं १,  
 २, ७; अभिनन्देत नाप ३  
 ६०; ६१<sup>f</sup>; अभिनन्देत् नाप  
 ३, २५.  
 अभि-नन्द- -न्दा: छां ५, ८, १;  
 वृ ६, २, १३.  
 अभि/नम्  
 अभि-नम्य भ १, ५.  
 अभि-नव- -वम् त्रिवि ७, ५०.  
 अभिनव-कला- -ला: मार २७०:  
 १६.  
 अभिनव-जल-द-नी(ल>)ला-  
 -ला रया १०.  
 अभिनव-जल-द-संका(श>)-  
 शा- -शा कालि ४०१:७.  
 अभि/नह  
 अभि-नह-

a) तैत्ति १०, १, १०। b) पा. १ प्रकरणतः 'सर्वाणि भूतान्य अभि (कप्र.) इत्वर- (<√ह>) -रम् इति' च पदद्वयान्तकः  
 शोधः स्यात्। c) अप्रहितम् इति मा. (४०, १७) पामे.। d) ल्यबभावः उत्सं. (पा ७, १, ३७)। e) 'तदभि' इति अन्धा. पामे.।

अभिनद्धा(द-अ)क्ष-क्षः छां ६,  
१४, १<sup>३</sup>; -क्षम् छां ६, १४, १.  
अभि-नहन-नम् छां ६, १४, २.  
अभि-नि/धा>धापि, अभिनिवा-  
पयन्ति शौ ५१: १४.  
अभि-नि/पद्, अभिनिपद्यते कौ  
२, १५.  
अभि-नि/विश  
अभिनिवेश-शः योस् २, ९.  
अभि-नि(स्)>प्/पद्, अभि-  
निपद्यते छां ८, ३, ४;  
४, २; १२, ३; मै २, २;  
मैत्रि २, २; अभिनिपद्यन्ते छां  
८, १२, २; ३; वृ ६, २, १६.  
अभिन्न-न्नः वृ ९, १३; -न्नम्  
पत्र २, १; कृ २५.  
अभिन्न-रूप-यः वृ ५, ३.  
अभि/पत्>पाति, अभिपातयति  
छाग २५, ३; अभिपातयेत् छाग  
२५: २.  
अभि/पद्, अभिपद्यते वृ ६, ४,  
२०; अभिपद्यन्ते आर्षे ८: ९;  
११; ९: ३; शौ ५१: १२;  
अभि...पद्यन्ते आर्षे ८: १५;  
अभ्यपद्यन्त शि ६, ११५.  
अभि-पद्य कौ ४, १८; आर्षे ८:  
१०.  
अभि-पद्य-न्नम् वृ ३, १, २-५.  
अभि-परी(रि/इ)  
अभिपरी(रि-इ)त्य निह २, ८.  
अभि/पश्य, अभिपश्यति आर्षे ९:  
११; अभिपश्यन्ति छां ४, ३, ६;  
आर्षे ७: १९.  
अभि-पाल-नाट. व्यु. औप. द.  
/अभिपालि\*  
अभिपालि(त)>ता-ताम्  
महा २, २०.

अभि/पूज  
अभि-पूजित-तः त्रिवि ५, १२<sup>४</sup>;  
६, १९; २१; २३<sup>३</sup>; २४; ७,  
१; १५.  
अभिपूजित-लाम-भात्, -भैः  
नाप ५, ७.  
अभि-पूज्य त्रिवि ५, १२; अ २,  
२१; २३.  
अभि/पू>पूर  
अभि-पू(र्ण)>र्णा-र्णाम् पा  
६, ७.  
अभि-प्र/ज्ञा>जा, अभिप्रजानीहि  
ऐ १, २.  
अभि-प्र/सु (</तु)  
अभिप्र-सुत्य-स्यम् आर्षे ९: १५.  
अभि-प्र/तन्, अभिप्रतन्वन्ति कौ  
४, १९.  
अभि-प्र/तृ  
अभिप्र-त्तारिन्-रिणम् छां ४, ३,  
५; -रिन् छां ४, ३, ६.  
अभि-प्र/पद्, अभिप्रपद्यन्ते शौ  
५३: १९.  
अभि-प्र/वृत्, अभिप्रवर्तयताम् कौ  
२, १३.  
अभिप्र-वृत्त-त्तः गी ४, २०.  
अभि-प्र/वृज्, अभिप्रवृज्जां छां  
८, ७, २.  
अभिप्र-वृज्य<sup>b</sup> कौ २, ३; ४.  
अभि-प्र/स्था>तिष्ठ, स्थापि, अभि-  
प्रतिष्ठन्ते वृ २, १, १९.  
अभिप्र-स्थापयत्-यन् छां ४,  
४, ५.  
अभिप्र-स्थापया<sup>c</sup>-  
अभिप्रस्थापयां/कृ, अभिप्र-  
स्थापयांचकार छां ४, ६-८, १.  
अभि-प्र/हन्  
अभिप्र-हत्य वृ ४, ३, ११.

अभि-प्रा[प्र/अन् (प्राणने)]ण, अभि-  
प्राण्यात् वृ ६, ४, ११.  
अभिप्रा(प्र-अ)णित-तम् ऐ ३,  
११.  
अभिप्रा(प्र-अ)ण्य ऐ ३, ४; वृ ६,  
४, १०.  
अभि-प्रातर(>) वृ ६, ४, १९.  
अभि-प्रा(प्र/आ)प्, >प्रेप्स, अभि-  
प्राप्नुवन्ति छां ५, १०, ३.  
अभिप्रे(प्र-ई)प्सु-प्सुः शि ७, ८.  
अभि-प्रा(प्र/अ)स् (क्षेपणे)  
अभिप्रा(प्र-अ)स्य छां ६, १३, २<sup>d</sup>.  
अभिप्रे(प्र/इ), अभिप्रैति कौ १, ४<sup>i</sup>.  
अभिप्रा(प्र-आ)य<sup>e</sup>-यः वसू २८.  
अभि-प्रे(प्र/ई)क्ष्, अभिप्रेक्षन्ते  
आश्र ३.  
अभि/भाष्, अभिभाषते अक्षि ७.  
अभि/भू, अभिभवति मै २, ८;  
मैत्रि २, ६; गी १, ४०; अभि-  
भवन्ति मैत्रि ६, २७; अभ्य-  
भवाम् तै ३, १०, ६; वृ २, १८.  
अभिबभूवुः कौ ४, २०; अभि-  
...बभूवुः छां ४, ६-८, १;  
अभिभविव्यासः छां १, २, १.  
अभिभूयति<sup>f</sup> मै ३, ३<sup>३</sup>; मैत्रि  
३, ३<sup>३</sup>.  
अभि-भव-वात् सांक्र ७.  
अभिभव-प्रादुर्भाव-वौ योस्  
३, ९.  
अभि-भवन-नम् भव १, ४.  
अभि-भू-भूः मना २, ३५<sup>g</sup>.  
अभि-भूत-तः प्र ४, ६; मै ३,  
२; ३<sup>३</sup>; ५; मैत्रि ३, २; ३<sup>३</sup>;  
५; ४, ४; -तम् पा २, १०.  
अभिभूत-स्व-त्वात् मै ३, २;  
मैत्रि ३, २.  
अभि-भूति-न्ते व ४६१: १५<sup>h</sup>.

a) तु. वैप १, २०५ टि b)। b) 'अभिप्रवृज्य' इति निरा. पामे.। c) तु. वैप १, ३७६ टि e)। d) 'अभि-  
प्राश्य' इति निरा. पा. सु-शोधः द.। e) <अभि/प्री इति अभा.। f) पर. उतं. (पा १, ३, १३)। g) तैआआ  
१०, ३५। h) ऋ १०, ८४, ६।



अभिभूयो(ति-ओ)जस्- -जाः  
व ४६० : ५९<sup>a</sup>.  
अभि-भूय गी १४, १०.  
अभि-भूयमान- -नः मै २, १०;  
३, १२; २१; मैत्रि ३, १२;  
२४; निरु २, ७.  
अभि-भूत्वा<sup>b</sup> हे १०.  
अभि/मन्त्र, अभिमन्त्रयेत् ससा १, ४;  
वरा २, ६७; ६८; अभिमन्त्रयन्ति<sup>c</sup>  
मुं १, २, ९.  
अभिमन्स्ये वृ १, २, ५.  
अभि-मत्, ता- -तम् महा ६, ६५;  
त्रिवि २, १३; ८, ४; -ताः  
महा ५, २२; सांका ५०; -ताम्  
सुमु ३.  
अभिमत्-कन्या- -न्याम् नाप २.  
अभिमत्-कर्तृ-  
अभिमत्कर्तृ-स्व- -स्वात्  
महा ५, ७९.  
अभि-मन्त्र- -न्ता वृ २, ७.  
अभि-मान- -नः ससा १, ५; वरा  
१, १३; वउ ४, २२; सांस्  
२, १६; ६, २८; सांका २४;  
-नात् प्र २, ४.  
अभिमान-गुण- -णान् सार  
२९० : २१.  
अभिमान-वत्- -वान् शारी ३.  
अभिमान-शून्य- -न्यः मैत्रे १,  
४, १४.  
अभिमाना(न-अ)ध्य(धि-अ)-  
क्ष- -क्षः मैत्रि ६, २८.  
अभिमानो(न-उ)त्पत्ति-प्रणव-  
-वः तु ४<sup>d</sup>.  
अभि-मानिन्-  
अभिमानि-स्व- -स्वम् मै ३, २.  
मैत्रि ३, २; ६, ३०.

अभिमानि-व्यपदेश- -शः व्रम्  
२, १, ५.  
अभि/मन्त्रि(<मन्त्र-) अभिमन्त्र-  
यते वृ ६, ४, २८; अभिमन्त्रयेत्  
वृ ६, ४, ६; अभिमन्त्रयेत् वृ ३  
३, ३; १ संन्या २, ६; नार ५.  
अभि-मन्त्रण- -णम् वउ ६, ४०.  
अभि-मन्त्रित, ता- -तम् वृ ४,  
१; -ता मना १, ८.  
अभि-मन्त्र्य वृ ६, ७<sup>e</sup>; ७, १;  
काला ७; ऊ ६३ : ११; गोच  
६६ : ८; वा १०; नाप ४, ३८;  
पप ४१८ : २०; जावा १६;  
वपं ३११ : २; ३; वउ ६, ३९.  
अभि/मन्थ, अभिमन्थति छां २,  
१२, १; अभ्यमन्थत् वृ १,  
४, ६.  
अभिमन्थते श्वे २, ६.  
अभि/मा (माने)  
अभि-माति- -तिम् व ४६० :  
१७९<sup>f</sup>; वा १०.  
अभिमाति-वाह- -हः व ४६० :  
५९<sup>g</sup>.  
अभि-मुख- -खः रापू ४, ३<sup>h</sup>; -खाः  
गी ११, २८.  
आभिमुख्य- -ह्येन तारा ८३ :  
१६.  
अभिमुख-ग(त>)ता- -ताम् कालि  
४०१ : ४.  
अभिमुख-तस्(>) कौ २, १५.  
अभिमुखी/भू, अभिमुखीभवेयुः  
२ प्र ३३ : १२.  
अभि/मृद्, अभिमृद्वाति छाग २५ :  
२<sup>i</sup>; ३<sup>j</sup>.  
अभि/मृश, >मर्शि, अभिमृशति वृ  
६, ३, ४; कौ २, ११; अशि ४,

१२; वट्ट ३१६ : ३; अभिमृशत्  
वृ ६, ४, ५; कौ २, १०.  
अभि-मर्श्य छाग २५ : १५.  
अभि-मृशमान- -नः मै १, १<sup>k</sup>;  
मैत्रि १, २.  
अभि-मृश्य वृ ६, ४, ९.  
अभि/या, अभियाति वृ १.  
अभि/युज्  
अभि-युक्त- -क्तः गोउ ३८.  
अभि/रन्, अभिरक्षति छां ४, १७,  
१०<sup>l</sup>; अशि ६, ८९<sup>m</sup>; अभि-  
रक्षन्तु गी १, ११.  
अभि-रक्षण- -णात् वृ १, १.  
अभि/रम्, अभिरमिरे पित्र ५, ४;  
अभि-रत- -तः गी १८, ४५; -ताः  
शि ७, १२९.  
अभि-राम- -मः योचू ७३; -मेण  
रापू १, ३.  
अभि/रुच्  
अभि-रोचन- -ने नी २, १०९<sup>n</sup>.  
अभि/रै, अभिराय व ४६४ : १९.  
अभि/लप्  
अभि-लाप- -पात् व्रस् ३, १, २४.  
अभि/लष्, अभिलषन्ति सार २५७ :  
१८.  
अभि-लषित- -तः सार २६१ : २१;  
-तम् अल १, ६; ८.  
अभि-लाष- -षः सार २२७ : १९;  
सांस् ६, ६; -वेण सार २२७ : २०.  
अभि-लाषित्- -षिणि मैत्रि ६, ३०.  
अभि/लिख्, अभिलिखति त्रिता  
३, ३६.  
अभि/लिम्प्, अभिलिम्पन्ति आपे  
७ : ६.  
अभि-लिम्प(त>)न्ती- -न्त्यः सार  
२२८ : २०.

a) ऋ १०, ८३, ४ । b) तस. (=अभिमुखो भूत्वा) मयूरव्यंसकादित्वम् उस्सं. (पा २, १, ७२) ।  
c) पर. उस्सं. (पा १, ३, १२) । d) 'ओमित्युच्चार्यमाण उत्पत्ति' इति शोधः द्र. (तु. सस्व. दि. विधार्थ-कथन-) ।  
e) ऋ १०, ८४, ३ । f) 'अभिमृद्वात्' इति शोधः द्र. (वेतु. 'अभिमृद्वात्' इति वे. पाप्मे.) । g) 'अभिमृद्वाति'  
इति वे. पाप्मे. । h) शौ १०, २, २७ । i) 'अमी, रोचने' इति मा. (१३, ८) पाप्मे. ।

अभि/वच्, अभ्युवाच सूता ३, ५;  
अव्य १.

अभ्यु(मि-उ)क्त, का- -क्तम् प्र १,  
७; सुं ३, २, १०; वृ ४, ४,  
२३; वृजा ६, १२; ८, ६;  
वृषू ४, ९; ५, ९; २१; सार  
५, १७; रत्न ५, २९; शा ११;  
१८; २६; ३०; ३३; वरा ५,  
७६; सु १, १, ५१; २, २,  
७७; शौ ५३ : १३; २१; का  
७; नार ७; -क्ता तै २, १,  
१; वर ४, २.

अभि/वद्, > वादि, अभिवदते  
प्र ४, २; अभिवदति प्र ६, १;  
वृ २, ४, १४; ३, २, ३; ४, ५,  
१५; सार २५० : १६; २५६;  
१३; अभिवदन्ति प्र २, २;  
वृ ३, ८, ८; अभ्यवदत् के ३,  
४; ८; अभिवदेत् क १, १,  
१०; वृ २, ४, १४; ४, ५,  
१५.

अभ्युदे छां ४, १४, २; अभ्युवाद  
छां ४, १, २; ८; २, १; ४, ५,  
१; ६, २; ७, १; ८, २; ९, १;  
१४, १; वृ ६, २, १.

अभ्युद्यते के १, ४.

अभि-वद्व- -वन् मवा ८९<sup>a</sup>; पा  
७, ५.

अभिवदन्ती- -न्त्यः सुं १, २, ६.

अभि-वादिन्- -दी मैत्रि ४, ५<sup>१</sup>;  
वपू २, २.

अभि-वाद्य आर्षे ९ : २०.

अभि/वन्द

अभि-वन्दन- -नात् तुल ७० : ६.

अभि-वर्तन- -अभि/वृत् द.

अभि-वर्ध् अभि/वृष्ट द.

अभि/वाग्ध्, अभिवाग्नन्ति महा  
६, २०; पित्र ५, १, अभि-

वाग्धमि महा ६, ११.

अभि-वादिन्-, अभि-वाद्य अभि-  
/वद् द.

अभि-वि/ज्वल्

अभिवि-ज्वलत्- -लन्ति गी ११,  
२८.

अभि-वि/मा (माने)

अभिवि-मान- -न्म् छां ५,  
१८, १.

अभि-वि/सृज्, अभिविसृजते कौ  
३, ४<sup>५b</sup>.

अभि-वी(वि/ई)क्ष् > क्षि

अभिवी(वि-ई)क्ष्यत्- -यन् शि  
७, २०.

अभि-वी(वि/ई)क्ष्य<sup>०</sup>, अभिव्यैक्ष्यत्  
ऐ ३, १३.

अभि/वृ (वरणे), अभिवृणीते क १,  
२, २.

अभि-वृत्- -त्तः द ५.

अभि/वृत्

अभि-वर्तन- -नानि छाग २३:  
११; २४ : १४.

अभि/वृष्ट्, > वर्धि, अभिवर्धते नाप  
३, ३७.

अभिवर्धयेत् महा ४, ४; शि  
६, १६८; १६९.

अभि-वर्ध् शि ६, १६०.

अभि-वृद्धि- -द्धिम् पै २, १९.

अभि/वृष्ट्, अभिवर्षति प्र २, १०.

अभि-व्य(वि/अ)ञ्

अभिव्य(वि-अ)क्त-

अभिव्यक्त-नाद- -दः शां १,  
७, १४.

अभिव्य(वि-अ)क्ति- -क्तिः सांस् ५,  
५९; योस् ४, ८; -क्तेः वस् १,  
२, २९.

अभिव्यक्ति-कर- -राणि श्वे  
२, ११.

अभिव्यक्ति-निबन्धन- -नौ सांस्  
१, १२०.

अभिव्यक्ति-योग- -गात् वस्  
२, ३, ३१.

अभि-व्या(वि-आ)/दा (दाने),

अभिव्याददात् वृ १, २, ४.

अभि-व्या(वि/आ)प्

अभिव्या(वि-आ)प्त- -सम् त्रिवि

६, १८; २१-२३; ७, २१; सि २,

१; ३; ११; ३, ७; ४, ११;

६, ३५.

अभिव्या(वि-आ)प्य गोच ६८ : ४.

अभि-व्या(वि-आ)/ह्, अभिव्या-

हरति छां १, ३, ३; ४; अभिव्या-

हराणि छां ८, १२, ४.

अभिव्याहियते कौ १, ६.

अभिव्या-हार- -राय छां ८,  
१२, ४.

अभिव्या-हृत- -तम् ऐ ३, ११.

अभिव्या-हृत्य ऐ ३, ३०.

अभि/व्रज्, अभिव्रजन्ति अशि ४,

१७; वट्ट ३१६ : ९.

अभि/शंस

अभि-शस्त- -स्तम् १संन्या २,

७४; -स्तानाम् १संन्या २, ४.

अभि-शस्त-क<sup>d</sup>- -कः इ

१७ : ८.

अभि-शस्त-पतित-वर्जन-

पूर्वक- -कम् नाप ५, १.

अभि-शस्त-पतित-वर्जित- -तेषु

पप ४१९ : ७.

अभि-शस्ति- -स्तेः मना २,  
४८९<sup>e</sup>.

अभि/शुम् > शोमि

अभि-शोमित- -तम् त्रिवि ६,

२३; सि ६, ३६.

अभि-षावित्र- अभि/षु द.

अभि/षि(<सि)च्, >ञ्च्, अभि-

a) तैत्ति ३, १२, ७। b) 'अभि, विसृज्यन्ते' इति पदद्वयाऽऽत्मकः JC. पाप्मे. । c) /ईक्ष् > नैप्र.  
/ईक्ष् (वैतु. MW., JC. प्रकृति प्रत्यावर्तुकी) । d) वैतु. MW. 'अभि-शस्तकः' इत्येवमवगृह्णानः । e) कौ ७, ५५, १।

विञ्चति ग १८.  
 अभिषिच्यते वृ० १, ६; ४,  
 ८; सूता ३, ३.  
 अभि-षिक्त- -क्तम् वृ० १, ६; ४,  
 ८; सूता ३, ३; -क्ताः मैत्रि  
 ६, १२.  
 अभि-षिच्य ब्रवि २३; अव्य ६; म२,  
 ३; २०; २२<sup>१</sup>; २३; २४; २५<sup>२</sup>;  
 त्रिवि ६, २५; शि ६, १२९;  
 वउ ६, २२; २४.  
 अभि-षिच्यमा(न>)ना- -ना सी  
 ३७.  
 अभि-षेक- -कम् ते ६, २२.  
 अभिषेक-तीर्थ- -थम् रु २७.  
 अभि/षि(<सि)ष्>षीवि,  
 अभिषीवयन्ति आर्षे ७ : ५.  
 अभि/षु(<सु अभिषवे)>षावि  
 अभि-षावित्र- -त्राणि छाग २३:  
 १२; २४ : १४.  
 अभि-ष्टि- -ष्टये २प्र ३७ : १९<sup>b</sup>.  
 अभि/ष्टु(<√स्तु)  
 अभि-ष्टुत- -तः म २, ९.  
 अभि-ष्टुत्य १अभ्यस्त्य टि. द्र.  
 अभि-ष्टुवमान- -नम् मैत्रि  
 ६, ३८.  
 अभि-ष्टोष्यत्- -ष्यन् छां १, ३,  
 ९; ११.  
 अभि/ष्व(<स्व)ञ्ज  
 अभि-ष्वङ्ग- -ङ्गः मै ३, ५; मैत्रि  
 ३, ५.  
 अभि-ष्वङ्गिन्- -ङ्गिणः मैत्रि  
 ७, १०.  
 अभि-सं/वाञ्छ, अभि...संवाञ्छ-  
 न्ति के ४, ६.  
 अभि-सं/विश, अभिसंविशति छां  
 ३, ६-१०, ३; अभिसंविशन्ति

तै ३, १-६, १; छां १, ११, ५;  
 ३, ६-१०, ३; वृ १, ३, १८;  
 वृ० १, २; ३, ५; म२, ९९<sup>d</sup>;  
 वृ० १, ४; २, ३; अभिसंविशत  
 वृ १, ३, १८.  
 अभि-सं/स्तु  
 अभिसं-स्तुय कौ २, १४<sup>e</sup>.  
 अभि-सं/स्था>स्थापि, अभिसं-  
 स्थापयामः छां १, ८, ५<sup>f</sup>; ७.  
 अभि-सं/धा  
 अभिसं-धाय गी १७, १२; गोच  
 ६९ : १२; १३.  
 अभिसं-धि-  
 अभिसंघ्या(धि-आ)दि- -दिषु  
 ब्रम् २, ३, ५२.  
 अभि-समा(म्-आ)/वृत्  
 अभिसमा-वृत्त्य छां ८, १५, १.  
 अभि-समि(म्/इ), अभिसंयन्ति छां  
 ४, १५, २<sup>१</sup>.  
 अभिसमीयुः छाग २४ : १९.  
 अभि-समी(म्/ई)ञ्  
 अभि-समीक्षा-  
 अभिसमीक्षाम(म्/अ)स्  
 (भुवि), अभिसमीक्षामासुः छाग  
 २४ : ८.  
 अभि-समे(म्-आ/इ), अभिसमेति  
 छां ४, १, ४; ६; अभिसमा-  
 यन्ति वृ ४, ३, ३८<sup>२</sup>; ४, १.  
 अभिसमे(मा-इ)त- -ताः वृ ३, १, १.  
 अभिसमे(मा-इ)त्व छां ५, १, १२;  
 मैत्रि ४, १; पित्र १, १.  
 अभि-सं/पद्, अभिसंपद्यते प्र ५,  
 ३, छां ८, १५, १; वृ ४, ४,  
 ५; सुवा ११; अभिसंपद्यन्ते  
 वृ ४, ३, ३३.  
 अभिसं-पद्यमान- -नः वृ ४, ३, ८.

अभिसं-पद्य- -द्याः वृ ६, १, ४.  
 अभि-सं/पूज>पूजि, अभिसंपूज-  
 येत् म २, २०.  
 अभि-सं-प्र/पद्, अभिसंपपद्यते शे  
 ५, ११; मव २, २४.  
 अभि-सं/भू, अभिसंभवन्ति छां  
 ४, १५, ५; ५, १०, १; ३; वृ  
 ६, २, १५; १६; अभिसंभवामि  
 छां ८, १३, १<sup>१</sup>.  
 अभिसंभवितास्मि छां ३,  
 १४, ४.  
 अभि/सिष्, अभिसिष्यति छां ७,  
 ४, ३; ५, ३; ७, २; ९, २;  
 ११, २; १२, २.  
 अभि/सृ  
 अभि-सृत्वर- -राणाम् छाग २४:  
 २२.  
 अभि/सृज्, अभ्यसृजत् वृ ६, ४, २.  
 अभि/स्ना, अभिस्नाति वृजा २,  
 ११.  
 अभि/हन्, >जिघांस, अभिज्जन्ति  
 आर्षे ७ : ५.  
 अभिहन्त्यते शि ७, १०४;  
 अभ्यहन्त्यन्त गी १, १३.  
 अभि-जिघांसु- -सुः २प्र ३३:  
 १२.  
 अभि-हत- -ते मै १, ३; मैत्रि  
 १, ३.  
 अभि-हिं/कु, अभिहिंक्रोमि, अभि-  
 हिंक्रुषां कौ २, ११.  
 अभि-हित- अभि/धा द.  
 अभि/हु, अभिहुहोति मैत्रि ६, ९.  
 अभि/ह, अभिहरन्ति वृ ५, ३, १.  
 अभि-हा(र्व>)र्वा-  
 /अभिहार्य<sup>१</sup>, अभिहार्यते वृ  
 ४, १, ६<sup>१</sup>.

अ) वृ. वैप १, ३६३व। b) ऋ १०, ९, ४। c) विनुज प्र. उसं. (पा ३, २, १४२)। d) तैआ ९, १, १।  
 e) अत्र विसर्गहीनः निसा. पा. चिन्त्यः। f) करप् प्र. (पा ३, २, १६३)। g) ष्यत् प्र. (पा ३, १, १२४)। h) क्लिबन्तः  
 नाम्ना. द.। i) कर्तृगत्वात् फलस्य आत्म. द. [= अभिहार्यं करोति (वैतु. MW. यनि. संस्कारमपश्यन्निदं रु. अभि/हर्षं  
 इत्येतदीयं इत्तं मृषाऽनुप्रवेशुकः)]।



अमी(मि/इ), अभ्येति त्रिवि ३, ४<sup>३</sup>;

५; ६; महा ५, ९७; त्रिता ४,

२४; सु २, २, ३९; सार २२८:

५; २३८: २०; २३९: ६;

२४४: २; २४५: ५; ८; ९;

१४; १८; २३; २५३: १२;

२६४: १३; २६५: ६; २७४:

१८; २८५: २; २८८: १८;

अभ्येतितराम् सार २५३: ११;

अमीतः सार २४५: ७; अभि-

यन्ति सार २३९: ७; २४६:

३; २४९: ६; २५३: १०;

२५४: १९; २७३: १९;

२७६: ४; अभ्येतु महा ३,

२८; अमीहि व ४६०: ३९<sup>४</sup>;

अम्बावन् शौ ५१: ३; ५२:

१४; ५३: २.

अमीक, का<sup>१</sup> - कः वा १२; काम्  
त्रि १३.

अमी(मि-ई)ञ्

अमी(मि-ई)क्षण - णे द १९.

अमी-क्षण(<चण-)- क्षणम् के  
४, ५.

अमी(मि/इ)न्ध

अमी(मि-इ)ह - ह्यात् मना १,  
१३९<sup>०</sup>.

अमीप्सु - अम्बाप् द.

अमी(मि/ई)श्

अमी(मि-ई)शु<sup>१</sup> - ई<sup>२</sup>शुभिः १शिसं  
६; २शिसं ५.

अमी(मि/इ)व्

अमी(मि-इ)ह - हम् राउ ३, २; हे

१०; सार २७४: ५; २७८: २;

-द्यानि सार २४०: ४.

अमीह-गणा(स-अ)धिप - यम्

व ४५६: १८.

अमीह-द - दः राउ ५, ४.

अमीह-फल - लम् व ४६२: ६.

अमीहफल-दा(<द)- दाम्

व ४३३: ८.

अमीह-सिद्धि - द्विम् हे १४.

अमीह(प-अ)सि - सवेद १४.

अ-भीषण - णम् वृउ ६, १.

अ-भुक्त - कम् सुवा ४.

अ-भुञ्जान - नः १आ १३.

अ-भूत - तः गौ ४, २६; तम् गौ ४,

४; सुवा ३; तस्य गौ ४, ३;

३८.

अभूत-तस्(>) गौ ३, २३.

अभूता(त-अ)भिनिवेश - शः गौ

४, ७५; -शात् गौ ४, ७९.

अ-भूति - तिम् मना २, ६६९<sup>१</sup>;

-त्यै वृ १, ४, १०.

अ-भूमि-पात - तम् वृजा ३, ८.

अ-भूषित - ते महा ५, १६७.

अ-भेद - दः त्रिवि १, ११; २, ९;

१०; १२; पाछु १, १९; -दात्

ब्रस् ३, ३, १९; -दे नाप ४,

२९; -देन गौ ३, १३.

अभेद-तस्(>) सांसू १, १२५.

अभेद-दशन - नम् मैत्रे २, २;

स्क ११.

अभेद-भावन - नम् भा ८.

अभेद-वाचक - कम् शु २, ५.

अ-भोक्तृ - का गौ १३; अथ्या ६९;

१आ १३.

अभोक्तृ-त्व - स्वात् सांसू ३, ५८.

अ-भोजन - नम् १संन्या २, ९७.

अ-भोज्य - ज्यम् मना २, ३०९<sup>६</sup>;

प्रा १, ६.

अभ्य(मि/अ)ञ्ज

अभ्य(मि-अ)ञ्ज - जम् नाप ७;

१संन्या २, ७९.

अभ्यञ्जो(ञ-उ)द्वर्तन<sup>१३</sup> - नम् शि  
६, २१९; ७, ३२.

अभ्य(मि-अ)धि-क - कः इवे ६, ४;  
भव २, ४५; गी ११, ४३.

अभ्य(मि-अ)नु/ज्ञा

अभ्यनु-ज्ञा(त>)ता - ता मना  
२, ३६९<sup>४</sup>.

अभ्य(मि-अ)नु/वच्

अभ्यनु(नु-उ)क्त, का<sup>१</sup> - कम् छां  
३, १२, ५; -क्ता वृपू १, १; वृजा  
१, १.

अभ्य(मि-अ)नु/शास्, अभ्यनु-  
शासनि छां ५, ११, ३.

अभ्य(मि-अ)न्तर - रम् मै २, ६<sup>३</sup>;  
मैत्रि २, ६<sup>३</sup>.

आभ्यन्तर - रम् सांका ३३;

-राणाम् महा ५, ३२; वरा ४,  
८; -रान् अज ३, ४.

अभ्यन्तर-निश्चला(ल-आ)स्मन् -  
त्स्मा पै ४, १२<sup>१</sup>.

अभ्य(मि-अ)पा(प/अ)न् (प्राणने)  
अभ्यपा(प-अ)नित - तम् ऐ ३,  
११.

अभ्य(मि/अ)र्च, > अर्चि, अभ्यर्चयेत्  
रापू ५, ६.

अभ्यर्च्यन्ते कौ २, ६<sup>४</sup>.

अभ्य(मि-अ)र्चित - तम् त्रिवि ७,  
४९.

अभ्य(मि-अ)र्च्य नाप ४, ३८;

त्रिवि ५, १२<sup>१</sup>; रार ३, १; ४,

७<sup>१</sup>; त्रिता ४, ३२; भ १, १;

२, ३; २०; २४<sup>३</sup>; सर ३, ७;

शि ६, ८१; कालि ४०१: ८;

पी ४२२: ७; १४; गी १८,

४६.

a) ऋ १०, ८३, ३। b) वृ. वैप १, ३६९g। c) ऋ १०, १९०, १। d) वृ. वैप १, ३७१a।

e) मा ३४, ६। f) लि ५, ८७, ८। g) तैआ १०, २३, १। h) तैआ १०, ३०, १। i) 'तत्' इत्येतदन्वितः लङ्गे कप्र. वा द. (वृ. वैप १, ३३३d)। j) 'अभ्यन्तरम्' इति पृथक्-पदतया वा सु-शोधं द. (वृ. नापू, 'बाह्यम्' इति पदम्)। k) 'अभ्यर्चन्ते' इति आन. पाभे.।

अभ्य(भि-अ)च्यमान(न>)ना- ना  
सी ३७.  
अभ्य(भि-अ)र्ह- -तम् आबो १;  
भ २, १८.  
अभ्य(भि-अ)व/दा (दाने)<sup>a</sup>  
\*अभ्यवदान- नाड. व्यु. औप. द.  
\*अभ्यवदान्य<sup>b</sup>- न्यः वृ ६, २, ७.  
अभ्य(भि-अ)श् (व्याप्तौ)  
अभ्या(भि-अ)श- -शः छां १, ३,  
१२; २, १, ४; ३, १९, ४;  
५, १०, ७.  
अभ्य(भि-अ)स् (क्षिपणे), अभ्यसे गर्भं  
४; अभ्यसेव मैत्रि ६, २३; हं  
१७; ते १, ४२; ३, ५९; ६, ११०;  
१योत १५; ७९; ८१; ११५;  
१२५; १२६; १२८; नाप ३,  
७२; ५, २२; ६, २१; योचू ६७;  
६९; मं १, ३, २; वा २४; शां १,  
७, १४; १८; अना २६; योशि  
१, १४; ६६; ८४; ८८; १०८;  
१०९; १संन्या २, १०३; यो १,  
२०; जाद ३, ३; ६, १८; गोपू  
२३; सार २३२: १४; २३६:  
४; शि १, २१; ७, १२७.  
अभ्यस्यते अना २९; १योत  
११७; अभ्यस्यन्ते गोपू २४.  
अभ्य(भि-अ)सत्- -सतः जाद ६,  
४३<sup>d</sup>; ४४<sup>d</sup>; ७, १४<sup>d</sup>.  
अभ्य(भि-अ)सन-  
अभ्यसनीय<sup>e</sup>- -यः ते १, १७;  
३४.  
अभ्य(भि-अ)सित<sup>f</sup>- -तः वरा ५,  
४६; -ते वरा ५, ४७.

अभ्य(भि-अ)स्त- -स्ताः मु २, २,  
११<sup>e</sup>.  
अभ्य(भि-अ)स्तव(त्>)ती- -स्यः  
सार २३२: १६.  
अभ्य(भि-अ)स्य त्रिवि १८; नाप १;  
५, १; अना १; अवि १८;  
१संन्या २, १३; त्रिता ५, १८;  
सार २९२: १२.  
अभ्य(भि-अ)स्यत्- -स्यतः त्रिब्रा  
२, ११२<sup>d</sup>.  
अभ्य(भि-अ)स्यमान- -नः नाद ३२.  
अभ्या(भि-अ)स- -सः १योत ६७;  
योसू १, १३; -सम् १योत ६२;  
शां १, ७, १; महा ५, १५; अक्षि  
३७; यो १, ५८; २, ५-७; १५;  
२४; ३९; ४०; वरा ४, १६;  
-सस्य मु २, २, ८; -सात् मं १,  
२, १३; १४; त्रिवि ५, ९; शां  
१, ७, ३१; यो १, ८; योशि १,  
११५; अक्षि १८; सांस् ३,  
३६; ब्रसू १, १, १२; ३, २,  
२५; गी १२, १२; १८, ३६;  
-से शां १, ७, ५; नाद ३३;  
गी १२, १०; -सेन महा ४, ५;  
२६; अक्ष २, ३२; गी ६, ३५.  
अभ्यास-काल- -ले १योत ४८;  
शां १, ७, ५.  
अभ्यास-चित्त- -तः वरा ५,  
५९<sup>i</sup>.  
अभ्यास-तस्(>) जाद ६, १०.  
अभ्यास-पाटव- -वात् पै ३, १.  
अभ्यास-प्रयोग- -गाम्याम्  
अक्ष ५, ४१.  
अभ्यास-भेद-

अभ्यासभेद-तस्(>) १योत  
१११.  
अभ्यास-मात्र- -त्रेण ते ६,  
१११.  
अभ्यासमात्र-निरत- -ताः  
यो २, ५.  
अभ्यास-युक्त- -क्तस्य १योत  
१२३; जाद ७, ९; ९, ६.  
अभ्यास-योग- -गेन १योत ६४;  
त्रिब्रा २, २२; योशि १, १२६;  
६, ७६; यो ३, १५; वरा ५,  
४६; गी १२, ९.  
अभ्यासयोग-तस्(>) १योत  
८१; अक्ष २, १३; वरा ५, ४५.  
अभ्यासयोग-युक्त- -क्तेन  
गी ८, ८.  
अभ्यास-योगिन्- -गिना योशि  
१, ९१.  
अभ्यास-रत- -तः त्रिवि २५.  
अभ्यास-लक्षण- -णम् योशि  
१, १२९.  
अभ्यास-वश- -शात् मु २, २, ८.  
अभ्यास-वासना-शक्ति- -क्त्या  
योशि ६, ७९; यो ३, १८.  
अभ्यास-विधि- -धौ कौ २, ३.  
अभ्यास-वैराग्य- -व्याभ्याम्  
योसू १, १२.  
अभ्य(भि-अ)सूय, अभ्यसूयति गी  
१८, ६७.  
अभ्य(भि-अ)सूयक- -काः गी १६,  
१८.  
अभ्य(भि-अ)सूयत्- -यन्तः गी ३,  
३२.  
?अभ्यस्तूय<sup>k</sup> २प्र ३४: १४.

a) वैतु. वैप २, ११७ 'अवखण्डने' इति । b) वैतु. सं. 'अभि, \*अ-वदान्य-' इत्येवं विभाजकः  
संरिचन्त्यः, ऐकस्वर्यानुपपत्तेः (तु. गपू. वैप.) । c) भावे घञ् प्र. । वा. 'स्यात्' इति शेषः । d) 'अभ्यासतः' इति निसा.  
संदि. पाभे. । e) तादर्थिकः छ>ईयः प्र. उसं. [पा ५, १, ६९, (तु. वैप १, १६३b)] । f) इदो निषेधाऽभावः उसं.  
(पा ७, २, १०) । g) 'अभ्यस्ता' इति अख्या. संदि. पाभे. । h) 'अभ्यस्यतुः' इति मुपा. संस्कारभ्रष्टः (तु. अख्या. संदि.  
पाभे., 'अभ्यासतः' इति च निसा. पाभे.) । i) अभ्यासयुक्तः इति अख्या. संदि. पाभे. । j) विभुण् प्र. उसं. (पा ३, २,  
१४२) । k) 'अभि-स्तूय' इति शोधः द्र. ।

## अभ्या(भि-आ)/ख्या

अभ्या(भि-आ)ख्यात- तेषु ते १,  
११, ४.

अभ्या(भि-आ)/गच्छ, गम्, अभ्या  
गच्छाम छां ५, ११, २; ४; पित्र  
१, २.

अभ्याजग्मुः छां ५, ११, २; ४.

अभ्या(भि-आ)ग(त>)ता- ता  
१संन्या २, ४२.

अभ्या(भि-आ)/दा(दाने), अभ्या-  
ददते शौ ५१ : १४.

अभ्या-त्त- -त्तः छां ३, १४, २; ४;  
-त्तम् शौ ५१ : १५.

अभ्या-दान- ?अभ्या-धान- टि. द.

अभ्या(भि-आ)/धा, अभ्यादधाति  
गा २७; अभ्यादधाति वृ ५,  
११, १; १४, ८.

?अभ्या-धान- -ने २प्र ३५:१४.

अभ्या-हित- -तस्य छां ६, ७, ३; ५<sup>b</sup>;  
वृ ४, ५, ११; मैत्रि ६, ३२;  
-तात् वृ २, ४, १०.

अभ्या(भि-आ)/नी, अभ्यानयत्<sup>c</sup>  
गोपू २६.

अभ्या(भि-आ)प>अभीप्स

अभीप्सु- -प्सुः वृजा ३, २२.

अभ्या(भि-आ)/रुह

अभ्यारोह- -हः वृ १, ३, २८.

अभ्याश- अभ्याश् द.

अभ्यास- अभ्यास् द.

अभ्या(भि-आ)/हन्, अभ्याहन्वात्  
छां ६, ११, १<sup>१</sup>.

अभ्या-हित- अभ्या/धा द.

अभ्युक्त- अभि/वच् द.

अभ्यु(भि-उ)ञ्, >उक्षि, अभ्युक्षति  
वृ ६, ४, १९; २३.

अभ्युक्षेत् सि ५, ३६.

अभ्यु(भि-उ)क्ष्य भ १, ४.

अभ्यु(भि-उ)ञ्(द/च)र्, अभ्यु-  
ञ्चरन्ति मैत्रि ६, २६; ३१;  
३५.

अभ्युत्था(भि-उद्>व/स्था)

अभ्यु(द्>)त्-स्थान- -नम् गी  
४, ७.

अभ्यु(द्>)त्-स्थित- -तम् महा  
२, १५; ३०.

अभ्युदि(भि-उद्/इ), अभ्युदेति अज  
४, १०.

अभ्युद(द्-अ)य- -यः महा ५, ९७;  
मु २, २, ३८.

अभ्युदया(य-अ)र्थ-

अभ्युदयार्थ-स्व- स्वात् रार  
५, ६.

अभ्युद(द्-अ)यत्- -यत् २संन्या  
१६ : ३.

अभ्युदि(द्-इ)त- -तः अज ५, ३१;  
मु २, २, ५१; -तम् अन्न ५,  
४५; -ताः महा ४, १७; -ते  
शु ३, ९.

अभ्यु(भि-उ)द्वा(द्/हात्यागे),

अभ्युजिहते छां १, ११, ५.

अभ्यु(भि-उ)प/गम्

अभ्युप-गम- -मात् व्रसू २, ३,  
२४; -मे व्रसू २, २, ६.

अभ्ये(भि-आ/इ), अभ्येहि सार  
२५९ : २२.

अभ्ये(भ्या-इ)त्य त्रिवि ८, ५; महा  
२, ४; ५, १५९; सार २३९;  
३; २४५ : १६; २४६ : १;  
२५१ : ६; २७४ : ८.

अभ्ये(भ्या-इ)त्य त्रिवि ८, ५; महा  
२, ४; ५, १५९; सार २३९;  
३; २४५ : १६; २४६ : १;  
२५१ : ६; २७४ : ८.

अभ्र- /अप् द.

अ-भ्रान्ति- -न्तिः ते ५, ४२<sup>d</sup>.

अ-भ्रूण-हन् -हा वृ ४, ३, २२.

\*१अम-

अमा छां ५, २, ६; वृ १, ५,  
२०; मं २, १, ६; प्रा १, ६.

अमा-त्य-

अमात्य-बुद्धि- -द्धिम् सिशि

३८० : ७.

अमा-दृष्टि- -ष्टिः मं २, १, ६.

अमा-वास्या<sup>१</sup>- -स्या यो ३,  
१; २; जाद ४, ४३; -स्याम्  
वृ १, ५, १४; इ १९ : ३;

-स्यायाम् छां ५, २, ४; कौ  
२, ३; ८; मं २, २४; २संन्या  
१५ : ३; गरु १२; २५.

२अम- -मः<sup>१</sup> छां १, ६, १-४; ६;  
७, १-४; ५, ३, ६; वृ १, ३,  
२२; ६, ४, २०<sup>१</sup>.

अ-मत- -तः वृ ३, ७, २३; ब्रवि ८६;  
-तम् के २, ३; छां ६, १, ३; ४,  
५; वृ ३, ८, ११; पं २८.

अ-मति<sup>१</sup>- -तिम् ह १८९<sup>b</sup>.

अ-मत्वा छां ७, १८, १.

अ-मत्सर- -राः सार २३५ : २२,  
अ-मद(द्-अ)र्थ- -र्थम् वरा २, ७.

अ-मनन- -नः १संन्या २, १९.

अ-मनस्- -नः वृ ३, ८, ८; सुबा ३;  
-नसः छां ५, १, ११; वृ ४, १,  
६; -नाः मुं २, १, २; ससा २.

अमनस्-ता- -स्ता अन्न ४, ४८;  
मु २, २, २९; -स्ताम् गौ ३,  
३२.

अमनस्-त्व- -स्त्वम् अन्न ५, ३८.

अमनी/भू

अमनी-भाव- -वः त्रिता ५, ४;  
-वम् मै ४, ४, ७; मैत्रि ६, ३४;  
-वे गौ ३, ३१.

अ-मनस्क- -स्कः क १, ३, ७;

a) 'अभ्या(भि-आ)दान->ने' इति मुपा. सु-शोधः द. (तु. पा ८, २, ८७)। b) 'हृतस्य' इति निसा. पामे.।  
c) पा. ? 'येत्' इत्येवं सु-शोधः द.। यद्वा क्विप्. इति कृत्वा यनि. श्रान्तं द. (वैतु. अख्या. 'नत्' इति पामे.)। d) 'अभ्रान्ति'  
इति अख्या. पामे.। e) तु. वैप १, ३७९। f) 'साम' इत्यत्र सङ्कितिके विभागे शब्दमात्ररूप उत्तरांशः द.। g) 'अभ्युत्ति'-  
इति अख्या. पामे.। h) अ ३, ५३, १५।



-स्कम् २; मं १, ३, १; ४;  
२, २, ४; ५; ३, १, २; ५;  
अता ८<sup>१</sup>; ११.  
अमनस्क-फल-प्रद- -दम् अता ७.  
अमनस्क-लक्षण- -णम् मं ३, १, १.  
अमनस्क-सुख-ब्रह्मा(ह्य-आ)-  
नन्द-समुद्र- -त्रे मं ३, १, ३.  
अमनस्क-स्व-रूप- -पम् महा  
५, ५१.  
अमनस्का(स्व-आ)भ्यास- -सेन मं  
५, १, ८.  
अ-मन(स्>):प्राण- -णः २अव  
३३८: ५.  
अ-म(नस्>)नो-मोह- -हः सार  
२७८: १८.  
अ-मन्तव्य- -व्यम् नृउ ९, १८.  
अ-मन्तु- -न्ता व्वां ७, ९, १; मैत्रि  
६, ११.  
१अ-मन्त्र- -न्त्रम् ते ५, १४; नाप  
३, ८६.  
२अ-मन्त्र- -न्त्राय इ १३: ६.  
अमन्त्र-वत् आह २; तुअ ९.  
अ-मन्यमान- -नः नाप ३, ८६.  
अ-मन्वान- -नस्य ते २, ७, १.  
अ-मर- -रः वृ ४, ४, २५; ते ३,  
२१; ६, ६९; ब्रवि ८५; अन्न  
५, ९३; अध्या ५५; यो २,  
१; गोउ ४०; मु २, २, ७५;  
-रम् अन्न ३, २४; कुं १४.  
\*अमर-क-  
\*अमरिका-  
?अमरी<sup>०</sup>- -रीम् १योत  
१२८९<sup>१</sup>.  
अमर-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
अमर-दुर्गा- -०र्गे व ४५७: २०.  
अमर-पद- -दम् निर्वा २९८: १.

\*अमर-बल-  
\*अमरबल-क-  
\*अमरबलिका-  
\*अमरबली<sup>०</sup>-  
!अमरोली<sup>०</sup>- -ली  
१योत २७९<sup>१</sup>; १२८९<sup>१</sup>.  
अमर(>ल)-वर(>)रा- ?अमल-  
वरयूम् टि. द.  
अमर-विभूषि(त>)ता- -ता राप्  
४, ५८.  
अ-मर्त्यु<sup>०</sup>- -त्यंवे कौ १, २.  
अ-मर्याद- -दम् सुवा १५.  
अ-मल,ला- -लः ससा ४; महा २,  
२७; -लम् हं २०; पै ३, ४; महा  
६, ७५; अन्न ३, २४; ४, ७२;  
५, ६५; ६६; ७२; अक्षि ४८; यो  
१, ७८; ३, ३५; त्रिता १, ३४;  
सौ २, ४; -ला सार २८३: १६९<sup>१</sup>;  
-ला: राप् ५, १०<sup>२</sup>; -लान् गी  
१४, १४; -लानि नाप ३, ३०;  
शि ६, २६२; २६६; -लाम् अक्षि  
१५.  
अमल-ता- -ताम् भव १, ५०.  
अमल-प्रज्ञ- -ज्ञः महा २, १४.  
अमल-वासना- -ना: मु २, २, ६९.  
अमल-विग्रह- -हम् महा ५,  
१५७.  
अमला(ल-आ)का(र>)रा- -रा  
महा ५, १०३.  
अमला(ल-आ)क्य- -क्यः पा ८, २.  
अमला(ल-आ)त्मक- -कम् अन्न  
३, २०.  
अमला(ल-आ)त्मन्- -त्मनि महा  
२, ७७.  
अमला(ल-आ)म्बर- -रै: सार  
२४५: ६.

अमले(ल-ई)क्षण- -णाय चा २२.  
!अमलवरयूम्<sup>०</sup> व ४५७: २३.  
अ-महत्- -हान्तम् नृउ ६, १; सुवा ३.  
अमा \*?१अम- द.  
अ-मातृ- -ता वृ ४, ३, २२.  
अमात्य- \*?१अम- द.  
अ-मात्र- -त्रः मां १, १२; गौ १, २९;  
नृउ २, १०; -त्रम् वृ ३, ८, ८;  
अना ३२; -त्रे गौ १, २३.  
अ-मान-  
अमाना(न-आ)त्मन्- -स्मा ते ४, ७०  
अ-मानव- -वः व्वां ४, १५, ५, ५, १०, २  
अ-मानिन्-  
अमानि-त्व- -त्वम् शारी २; गौ  
१३, ७.  
अमानित्वा(त्व-आ)दि-  
लक्षणो(ण-उ)पलक्षित-  
-तः त्रिवि ८, १०.  
अमानित्वा(त्व-आ)दि-संपन्न-  
-न्नः पै ४, १.  
अ-माय- -यः ब्रवि ८७; -यम् नृउ  
९, १८.  
अमावास्या- \*?१अम- द.  
अ-मित,ता -तः पा २, ८; -ता  
कालि ४०१: १०९<sup>१</sup>; इया  
१२९<sup>१</sup>; -ता: गु २०.  
१अमित-तेजस्- -जसम् रार २,  
५; -जसे त्रिवि ७, ४६; रार २,  
९१; नाउ २, २.  
२अमित-तेजस्-  
अमिततेज(स्>):प्रवाहा-  
(ह-आ)कार-  
अमिततेजःप्रवाहाकार-ता-  
-तया त्रिवि १, ११.  
अमितते(जस्>)जो-राशि-  
-शिः त्रिवि ५, १४.

a) बस. इति कृत्वा नापू. पृथक् निर्देशः द.। b) व्यु? नैप्र. नापू. एव वर्णतो विपरिणतं स्यात्। c) व्यु? नापू. बस्य वत्वे सति मध्यतः 'रव->' 'नो-' इति नैप्र. वर्णविपरिणामः स्यात्। d) तस. उप. स्यु- इत्येतत्-सनाभि सत् यद् [वितु. शांआ. (३, २) स्यु- इत्येव उप. इति]। e) अमर(>ल)-वर(>)रा-> -रे-+ओम् इत्यत्रा-SSर्वे संघौ 'रयोम्' >यनि. विपरिणामः स्यात् f) बस. इति कृत्वा नाउ. पृथक् निर्देशः द.।

अमिततेजोराशि—स्वा-  
(स्व-आ)स्म-ज्योतिस्- -ति: सि  
१, १३.  
अमिततेजोराश्य(शि-अ)न्त-  
गं(र-ग)त-ते(जस्>)जो—  
विशेष- -यम् त्रिवि ७, १९.  
अमिततेजोराश्य(शि-अ)न्त-  
गं(र-ग)त-दिव्य-ते(जस्>)-  
जो-राशि—विशेष- -यम्  
त्रिवि ६, २२.  
अमिततेजोराश्या(शि-आ)-  
कार- -रम् त्रिवि ६, २२; सि  
४, ६; -रेषु त्रिवि ६, २३.  
अमित-धुति- -ति: नृपू १, १२.  
अमित-परम-तेजस्- -ज: त्रिवि  
७, ८; सि ५, ४.  
अमित-पुष्प-वृष्टि- -ष्टिभि: त्रिवि  
७, १९.  
अमित-बल-पराक्रम- -माय नाउ  
२, ६.  
अमित-बोध-सागर- -रम् त्रिवि  
७, १७; सि १, ५.  
अमित-बोधा(ध-आ)नन्दा-  
(न्द-अ)चल- -ल: सि ४, १.  
अमितबोधानन्दाचलो(ल-उ)-  
परि-स्थित- -तम् त्रिवि ६,  
२२; सि २, ५.  
अमित-भर-  
?अमितभर-अ- -त्रे पा ९, ४.  
अमित-विक्रम- -मम् त्रिवि ६, २०.  
अमित-विज्ञान-तरङ्गिणी- -ग्या:  
सि २, ९.  
अमित-वेदा(द-अ)न्त-वेद्य-  
-यम् त्रिवि १, ५.  
अमिता(त-आ)नन्द-चिद्रू(त-रू)पा-  
(प-अ)चल- -लम् त्रिवि ७,  
१९; सि ६, ४.

अमिता(त-आ)नन्द-समुद्र- -द्रम्  
त्रिवि ७, १७; सि १, ५.  
अमिता(त-आ)नन्दा(न्द-अ)चलो-  
(ल-उ)परि-विहारि(न->)-  
णी- -णीम् त्रिवि ६, १०.  
अमिता(त-अ)परिच्छिन्ना(ज-अ)-  
द्वैत-परमानन्द-लक्षण-  
अमितापरिच्छिन्नाद्वैतपरमानन्द-  
लक्षण-ते(जस्>)जो-राश्य-  
(शि-अ)न्तगं(र-ग)त- -त:  
त्रिवि १, ११.  
अमिता(त-अ)परिच्छिन्ना(ज-अ)-  
नन्त-तम(स्>):—सागर-  
-रम् त्रिवि ६, १०.  
अमितौ(त-ओ)जस्- -जसम् कौ १,  
५; -जा: कौ १, ३.  
अ-मित्र-  
अमित्र-हन्- -हा व ४६० : ४९०.  
अमी- अदस्- द्र.  
अ-मीमांस्य- -स्या: शि ७, ३०.  
अमु- , अमुक- अदस्- द्र.  
अ-मुक्त- -क्त: अन्न ४, २; वरा  
३, २६.  
अ-मुख- -खम् वृ ३, ८, ८; सुबा ३.  
अमु-तस् , अमु-त्र, अमु-हिं, अमू-  
अदस्- द्र.  
अ-मूक- -क: त्रिवि ८३.  
अ-मूढ- -ढ: नृउ ९, ८; अद्वै १८;  
-ढा: गी १५, ५.  
अ-मूर्त- -र्त: मुं २, १, २; गौ २,  
२३; मैत्रि ७, १; २; ध्या १०२;  
-तैम् प्र १, ५; वृ २, ३, १;  
३; ५; मै ५, ३; मैत्रि ६, ३;  
-तैस्य वृ २, ३, ३; ५.  
अ-मूर्ति-  
अमूर्ति-तारक- -कम् मं १, ३, १;  
अता १०.

अ-मूर्ति-मत्- -मत् अता १०; ११;  
-मान् मैत्रि ६, १४.  
अ-मूल- -लम् छां ६, ८, ३; ५; सुबा  
६; सांस् १, ६७.  
अ-मृज-  
अमृजा(ज-अङ्ग>)ङ्गी- -ङ्गीम् पा  
६, ६.  
अ-मृत, ता- -त: क २, ३, १४; १५;  
प्र ३, ११; ६, ५; मुं १, २, ११;  
३, २, ९; तै १, ६, १; ऐ ४, ६;  
५, ४; वृ ३, ७, ३-२२; २३; ४,  
३, १२; ४, ७; १७; २५; ५,  
१४, ८; श्वे ६, १७; गौ ३, २०;  
२२; ४, ६; ८; मैत्रि ३, २;  
मना २, १५<sup>१</sup>; कौ ३, ९; नृपू  
१, १३; नृउ ३, ७; ते ५, ६८;  
त्रिवि ८२; आवो १; त्रिवि ४,  
५९; शां १, ७, ४३; महा ४,  
८१; ता १, २; मवा १३९;  
पं २३; प्रा २, १; गोपू ५; गोउ  
४०; जा ३; वरा २, १९; शा  
२५; सौ २, ११; सु २, २,  
७५; निरु १, २; गा २८; कृपु  
१२; गु ७४; तम् ई ११; १४;  
१७; के २, ४; क २, २, ८;  
३, १; १७; प्र १, १०; २,  
५; ३, १२; ५, ७; मुं १,  
१, ८; २, २, २; ७; ११; तै  
१, ६, २; ३, १०, ३; छां १,  
४, ४; ५; ३, ६-१०, १; ३;  
१२, ६९; ४, १५, १; ७, २४,  
१; ८, ३, ४; ५; ७, ४; ८,  
३; १०, १; ११, १; १४, १;  
वृ १, ३, २८; ६, ३; २, ३,  
१; ३; ५; ५, १-१४; ३, ९,  
१०; ४, ४, १६; १७; ५, १५,  
१९; श्वे ५, १; ६, ६; गौ ३, १९;

a) पू. त्रिवि. इति कृत्वा उप्त. उप. / मृ+खच् प्र. उप्. (पा ३, २, ४६)। प्रकरणतो धनुःपरत्वं द्र.। b) तुलस.  
उप. कर्तरि < / त्रै। c) अ १०, ८३, ३। d) तैआ १०, १४, १। e) 'अति, मृत्यु' इति मा. (३१, १८) पाभे.।  
f) अ १०, ९०, ३। g) मा ४०, १५।

२१<sup>३</sup>; ४, ७<sup>३</sup>; श्वे ५, १; ६, ६;  
मै २, २; मैत्रि २, २; ६, २२-२४;  
३५<sup>३</sup>; ३८; ७, ३; ९; अशि २, १९;  
३, ५९<sup>३</sup>; ६, १७९<sup>३</sup>; कै १, ६; मना  
१, २९<sup>३</sup>; ३९<sup>३</sup>; ४९<sup>३</sup>; २, २९९<sup>३</sup>;  
३५९<sup>३</sup>; ३७९<sup>३</sup>; ४५९<sup>३</sup>; ६८९<sup>३</sup>;  
४९९<sup>३</sup>; ७०९<sup>३</sup>; कौ ३, २<sup>३</sup>; वृजा  
२, १; ६; ३, १८; वृ १, ८;  
२, १६९<sup>३</sup>; वृ १, ३; २, ३;  
८, २-५; सुबा ४; ५<sup>३</sup>; ८; ९<sup>३</sup>;  
आबो १७; २७; नाप ८, ४;  
सी ४; त्रिवि १, ११; ४, ३; ९९<sup>३</sup>;  
१०; ६, १६; ७, ४४९<sup>३</sup>; राउ  
४, १६; शां १, ५; २, १; ३,  
१; महा ४, १०१; योशि १, ९०;  
५, ३३; ४४; ४९; ६, ७५; अक्षि  
१९<sup>३</sup>; पाशु २, ३०; भा १७; रुह  
३७; यो ३, १४; जाद ५, ६; ६,  
२६; २७; २९; प्रा १, ६<sup>३</sup>; वरा  
५, ३३; ह १०; १८९<sup>३</sup>; च २१:  
१९९<sup>३</sup>; चा ११; बा १६; २३;  
शौ ५२: ९; १०; का ५; नार  
४; पा २, ३; कृपु १७;  
२३<sup>३</sup>; सार २८१: ७; १शिं  
३९<sup>३</sup>; २शिसं ४९<sup>३</sup>; ३४९<sup>३</sup>; शि  
७, १३१; बि १३; १६; २९;  
वट ३१५: ४९<sup>३</sup>; ३१८: १; पी  
४२२: १७; व ४३७: ६९<sup>३</sup>;  
४६१: २२९<sup>३</sup>; भव ३, १९<sup>३</sup>; गी  
९, १९; १०, १८; १३, १२;

१४, २०; -तस्य सु २, २, ५;  
तै १, ४, १; ३, १०, ६; छां  
८, १२, १; वृ २, ३, ३; ५;  
मैत्रि ४, ६; ६, २७; श्वे २,  
५९<sup>३</sup>; ६, १९; जा ३; मना २,  
१२, २९<sup>३</sup>; २, ४०९<sup>३</sup>; वृपू २,  
१८९<sup>३</sup>; नाप ३, ४०; ४, ३८९<sup>३</sup>;  
त्रिवि ७, ५; सु २९३: १६९<sup>३</sup>;  
२९४: ३; लि ३१०: ४९<sup>३</sup>;  
गी १४, २७; -ता वृ २, ४, २;  
३; ४, ५, ३; ४; मना २, २८९<sup>३</sup>;  
तुल ७०: २; ११; -ता: के १,  
२; २, ५; क २, ३, २; ९९<sup>३</sup>; छां  
१, ४, ४; ३, १, २; २-५, १; ५, ४;  
वृ १, ५, १७; ४, ४, १४; श्वे ३,  
१; ७; १०; १३९<sup>३</sup>; ४, १७९<sup>३</sup>;  
२०९<sup>३</sup>; ५, ६; मना १, ३९<sup>३</sup>;  
अशि ३, ४९<sup>३</sup>; त्रिवि ६, १४९<sup>३</sup>;  
शा १८; इ ११: ८; च २१: १८<sup>३</sup>;  
गु ६०; ६३९<sup>३</sup>; वट ३१५: ३०;  
-तावृ तै १, ४, १; मना २, ११९<sup>३</sup>;  
५६९<sup>३</sup>; नाप ४, ३८९<sup>३</sup>; त्रिता १,  
९९<sup>३</sup>; कृपु २३; २शिसं २४९<sup>३</sup>;  
९<sup>३</sup> व ४३०: २; ४३८: १७;  
४३९: ४; ४४०: १; ११; २१;  
४४१: ९; १९; ४४२: ७;  
१८; ४४३: ५; १५; ४४४: ९;  
१९; ४४५: ६; १७; ४४६:  
४; १६; ४४७: ३; १४; ४४८:  
२; १३; ४४९: १; ११; १८;

४५०: २; ९; १६; २३; ४५१: ९;  
१६; २३; ४५२: ९; १६; ४५३:  
१; ६; १२; १८; ४५४: १;  
७; १५; २१; ४५५: ५; -तावृ  
१, ४, ६; -तानाम् क १, १, २८;  
छां ३, ५, ४; -तानि छां ३,  
५, ४<sup>३</sup>; -ताम् सुबा ९<sup>३</sup>; पा ६,  
७; गु ६६; -ताय वरा ५, ६३;  
प्रा २, ११<sup>३</sup>; चा ८; -ताय तुल  
७०: ११; -ते वट ५, ४४; -० ते  
तुल ७०: १३; -तेन वृजा २, ४;  
त्रिवि २३; पै ४, ९; सी १३;  
इ ११: ८; सार २३७: २;  
१शिसं ४९<sup>३</sup>; २शिसं १९<sup>३</sup>; अरु  
२२९<sup>३</sup>; -तै: अक्ष ४.

अमृत-कर-तला(ल-अ)ग्र'- -ग्रौ  
सावि १०.

अमृत-कलश-त्रिद्या- -व्याम् द ३.

अमृत-कलशो(श-उ)द्व- -वाय  
व ४६५: ५.

अमृत-कलश-तल- -रवे त्रिवि ७,  
४३.

अमृत-कल्प-तल- -वन- -नै: सि ३, ३

अमृत-कल्लो(ल-अ)नन्द-क्रिवा-  
या निर्वा २९८: ५.

अमृत-कुण्ड- -इन्द्र राधा ४, ७.

अमृत-जल- -लै: सी ३७.

अमृत-चर'- -राणाम् पा १, ८.

अ) सं १ 'अमृत' इति शोधः द. (तु. ऋ ८, ४८, ३; अञ्जा. च) । b) तैआ १०, १५, १ । c) 'तुद् वृद्ध' इति  
मा. (३२, १) । d) मा ३२, ९ । e) मा ३२, १० । f) तैआ १०, २२, १ । g) तैआ १०, २७, १ । h) तैआ ३, ७,  
१४, ४ । i) तैआआ १०, ६९ । j) तैआ १०, ३६, १ । k) ऋ १०, १२१, २ । l) ऋ १०, ९०, ३ । m) शत्रा १४, ४,  
१, ३० । n) ऋ ३, ५३, १५ । o) '-त' इति ऋ (८, ४८, ३) । p) सुपा. अनुस्वारपुनःप्रदानः शोधः द. । q) मा  
३४, ३ । r) ऋ १, ३५, २ । s) मा ४०, १४ । t) ऋ १०, १३, १ । u) ऋ ४, ५८, १ । v) तैसं ४, २, ९, ६ ।  
w) कौ ३, १, ९ । x) तैआ ७, ४, १ । y) तैआ ३, १२, ३, ४ । z) ऋ २, ४०, १ । a') तैआ १०, २१, १ । b') तैआ  
१०, १, ३ । c') ऋ ८, ४८, ३ । d') तैआ १०, ९, १ । e') ऋ ७, ५९, १२ । f') तैआ ७, ४, १ । g') तु. निसा. अञ्जा.  
च; वैतु. आन. अमृत-योनि- > -नौ इति (तु. सस्व. टि. अन-> -नौ) । h') मा ३४, ४ । i') तैआ १, २७, ३ ।  
j') वस. (= अमृतपुत्रानि करतलाग्रणि वयोः) द. । -आऽऽर्द्र- > -आर्द्रौ इति निसा. यनि. सु-शोधः (तु. संटि. अञ्जा. च) ।  
k') पृ. कृते तु. वैप १, ३१६h ।



अमृत-त्व- -त्वम् के २, ४; क १,  
१, १३; २, १, १; २; ३, ८;  
१६; छां २, २२, २; २३, १;  
८, ६, ६; वृ ४, ५, १५; श्वे  
१, ६; कै १, ३९; जा ३; ना ३;  
मना २, १२, २९; ३९; कौ ३,  
२; मैत्रि ६, २४; वृजा ७, ७;  
तृपू १, ३; ६-१०; ११; १२; १३;  
१४; १५; २, ६; ७; २, ३; ४,  
२; १६; म २, ८; लु २५; आवो  
१; नाप ९, ५; मं १, २, १०;  
अता ६; राउ १, २; ५, १; ४;  
महा ६, ८३; योशि ६, ४;  
अव्य २; १अव ५; त्रिता २,  
७३; ३, ३६; ४, १३; ३८; ५,  
२१; त्रि ९; च २१: १३; गोच  
६७: १३; पारा १७; का ३; नार  
२; स ३७९: १०; आष ३९९:  
२०; कालि ४०२: १०; व ४६६:  
१५९; चक्र ६; षो ९; हंषो १९;  
भव २, ४; वपू १, ६; २, १;  
२; ३, २; वउ ५, ४; ६, ४८;  
५४; ब्रसू ४, २, ७; स्वस्य वृ २,  
४, २; ४, ५, ३; श्वे ३, १५९;  
सुबा ६९; कौ २, ८; स्वात्  
वृउ ७, २; स्वाव गौ ४, ९२;  
मना २, ६९; वृजा २, १६;  
मैत्रि ६, ३६; त्रिवि १३; नाप ३,  
४५; ५, ११; १संन्या २, ७८;  
२संन्या १६: १; प्रा १, ६; १प्र  
३२: २; भव ५, ९; गी २, १५.  
अमृतत्व-प्रदायि(न>)नी-  
-नि तुल ७०: १३.  
अमृतत्व-फल(ल>)ला- ला  
का १४.

अमृत-धारा- -रा पै ३, १.  
अमृतधारा-प्रवाह- -ह: सौ  
३, १.  
अमृत-निषेवण- -णम् हं १९.  
अमृत-निष्पत्ति- -त्ति: वृजा २, ४.  
अमृत-पीठ- -ठम् त्रिता ५, २१.  
अमृत-पूर्ण, पूर्णा- -र्णा: सार २८१:  
७; -र्णै: अव्य ६.  
अमृत-प्लावन- -नम् वृजा २, १४;  
वरा ५, ३४; ३९.  
अमृत-फलक- -का: पाशु १, २६.  
अमृत-फल-फलित- -त्ता: सार  
२६६: ८.  
अमृत-बन्धु- -न्धव: दे ८.  
अमृत-भाग- -ग: शां १, ४.  
अमृत-मधु-धारा- -रा: सार  
२८१: ६.  
अमृत-मध्य- -ध्येन त्रिता २, १३.  
अमृत-मय- -य: वृ २, ५, १२-१२;  
१३; १४; वृउ ३, ८; त्रिवि  
१, १; सार २४५: ११; -यम्  
वृजा ६, १२; तृपू ५, ८; सार  
२७४: १९; -यै: त्रिवि १, १.  
अमृतमयी- -य्य: सार २८३:  
२१.  
अमृत-योनि- -नौ मना २, ३१९<sup>h</sup>;  
३२९<sup>l</sup>; प्रा २, १.  
अमृत-रस- -सम् सार २७४: २१.  
अमृतरस-मञ्जरी- -रीम् तुल  
७०: ४.  
अमृतरस-संज्ञा-  
अमृतरससंज्ञि(त>)ता-  
-ता: सार २७५: २२.  
अमृत-रू(प>)पा- -पा सी १३;  
तुल ७०: १३.

अमृतरूपि(न>)णी- -णीम्  
त्रिता २, ९.  
अमृत-वर्ष- -र्षीय व ४५९: ८;  
-र्षेण वृजा २, १३.  
अमृत-वर्षि(न>)णी- -णी त्रिवि  
७६.  
अमृत-वल्ली-  
अमृतवल्लय(ली-अ)मृत-फल-  
-लै: सार २६७: १३.  
अमृत-स्थान- -नम् ध्या ४०<sup>k</sup>.  
अमृता(त-आ)कषि(न>)णी- -णी  
आथ ३९५: १४.  
अमृता(त-अ)क्षर- -रम् श्वे १,  
१०; नाप ९, ९.  
अमृता(त-आ)ख्य- -ख्य: मै ५, ७;  
मैत्रि ६, ७.  
अमृता(त-आ)स्मक- -क: ते ४,  
६९.  
अमृता(त-आ)स्मन्- -स्मा ते ४  
३५; ६९; पा ९, ९.  
अमृतास्म-रूप- -पम् पा ६, १०.  
अमृता(त-अ)पिधान- -नम् मना  
२, ६९९<sup>g</sup>.  
अमृता(त-आ)प्याय-कारक- -क:  
योशि १, १११.  
अमृता(त-अ)भिवर्षण- -णाय व  
४५९: ८.  
अमृता(त-अ)वकुण्ठ- -ण्ठ: वि ३०.  
अमृता(त-अ)वयव-देवी- -वी सी  
५<sup>l</sup>.  
अमृता(त-आ)हुति- -त्ती: कौ २,  
५१<sup>m</sup>.  
अमृती/भू  
अमृती-भूत्वा<sup>n</sup> जा १; तृपू १,  
१५; राउ १, १; ता १, १०.

- a) तैआ १०, १०, ३। b) ऋ ४, ५८, १। c) 'अमृतत्वभाक्' इति तान्नि। d) ऋ ९, ९४, ४।  
e) ऋ १०, ९०, २। f) 'अमृतत्वम्, अस्व' इति अश्व्या। g) तैआआ १०, ६९। h) तैआ १०, २४, १।  
i) तैआ १०, २५, १। j) तु. सस्थ. अमृत-> लाय, अन-> नौ। k) 'अमृतम्, स्थानम्' इति निसा।  
l) 'दिव्यालंकार-' इति समस्त: निसा। m) 'वी' इति शोष: द्र। 'अमृते आहुती' इति शांआ. (४, ५)।  
n) ल्यबभाव: उत्सं. (पा ७, १, २०)। o) 'अमृत: भूत्वा' इति अश्व्या।

|   |  |   |
|---|--|---|
| अमृतो(त-उ)क्षित <sup>a</sup> -तः तै १,<br>१०, १; नाप ४, ३८ <sup>b</sup> .               | अमेया(य-आ)स्मन्-स्मा ते ४, ७०.   | व ४२७: ४.   |
| अमृतो(त-उ)द, दा- -दम् सार<br>२८१: ८९ <sup>b</sup> ; -दा सार २२८:<br>२; -दै: सार २५८: ९. | अ-मो(घ>)घा- -घा रापू ४, ५९;<br>-घा: छां ७, १४, २.  | अम्बिका <sup>c</sup> -का व १९; -काम् नृपू<br>३, ४; -०के व ४३१: १७.  |
| अमृतो(त-उ)दक- -क्रेन सार<br>२६४: ३.   | अमोघ-निज-मन्द-कटा(उ-अ)-<br>क्ष- -क्षेण त्रिवि ६, २१.                                       | अम्बिका-पति- -तये मना २,<br>२२९ <sup>d</sup> .  |
| अमृतो(त-उ)दधि-संकाश- -शम्<br>योचू ९६.   | अमोघनिजमन्दकटाक्ष-चिदा-<br>नन्दमया(य-अ)ने(न-ए)क-<br>प्रासाद-विशेष- -वै: सि ४, ७.           | अम्बिके(का-ई)श्वर- -र: गोउ<br>२३.   |
| अमृतो(त-उ)द्वव, वा- -वम् गी<br>१०, २७; -वाम् तुल ७०: ४.                                 | अ-मोह-<br>अमोह-स्व- -स्वात् नृउ ७, २.  | ?अम्बावयवा <sup>e</sup> -वा: कौ १, ३.   |
| अमृतो(त-उ)पनिषद्-र(स>)सा-<br>-०से तुल ७१: ९.  | अ-मोहित- -त: नाप २, २०.  | अम्बि <sup>f</sup> -<br>अम्बि-तमा- -०मे सर २,<br>१० <sup>g</sup> .  |
| अमृतो(त-उ)पम- -मम् गी १८,<br>३७; ३८.  | अ-मौन- -नम् वृ ३, ५, १.  | ?अम्बु- -म्बु भव १, ५१; -म्बु: २प्र<br>३५: २० <sup>h</sup> ; -म्बुभि: महा ५,<br>१७३; सि ६, १९७.   |
| अमृतो(त-उ)पस्तरण- -णम् मना<br>२, ६९९ <sup>i</sup> ; प्रा १, ६.                          | अमौन-क- -कम् ते २, ३७.   | अम्बु-ज- -जम् गोपू १८.  |
| अ-मृत्यु- -मृत्यु: वदु ३१४: १२.   | ?अम्ब <sup>j</sup> -<br>?अम्बक <sup>k</sup> -कम् त्रिता ४, ५.                              | अम्बुज-क(र>)रा- -राम् रार<br>२, ९७.   |
| अ-मृत्यु-मृत्यु- -मृत्युम् नृउ ६, १.  | अम्ब-या <sup>l</sup> -या: कौ १, ३.   | अम्बु-द- -दम् महा ६, ३२.  |
| अ-मृषा वृ ३, ९, २८, १.  | अम्बर <sup>m</sup> -रम् कै २, ४; १संन्या २,<br>९०; अज ४, २३; यो १, ११;                     | अम्बु-धि- -धौ महा २, ७७.  |
| अ-मृष्ट- -ष्टम् महा २, ५४.  | -रे मैत्रे २, २७; शां १, ७, ३२ <sup>n</sup> ;<br>अज ५, ९४; वरा ४, १८; -रेण<br>महा ५, ५२.   | अम्बु-मक्ष- -क्ष: कुं ४.  |
| अ-मेध्य- -ध्यम् मना १, १३९ <sup>d</sup> ;<br>भव ४, १३; गी १७, १०.                       | अम्बर-ना- -ग: ए ८ <sup>l</sup> .   | अम्बु-मण्डल-भूषित- -तम् यो<br>२, १७.  |
| अमेध्या(ध्य-अ)क्लार-भस्मन्-<br>-स्मानि सि ७, ५१.  | अम्बरा(र-अ)न्त-धृति- -ते: व्रसू<br>१, ३, १०.   | अम्बु-वत् व्रसू ३, २, १९.   |
| अमेध्या(ध्य-अ)मेध्यक <sup>o</sup> -कम् ते<br>६, ११.                                     | अम्बरो(र-उ)त्पत्ति- -त्ति: गोपू<br>३१.   | अम्बु-वेग- -गा: गी ११, २८.  |
| अ-मेय- -यम् नृउ ५, २ <sup>i</sup> .   | अम्बा <sup>m</sup> -०म्ब सर २, १०९ <sup>n</sup> ; -म्बा:<br>कौ १, ३; -म्बाम् त्रिता २, ३२; | अम्भस् <sup>p</sup> -म्भ: ऐ १, २ <sup>q</sup> ; त्रिता २,<br>१३७; कृपु १३; -म्भसा योचू ८८;<br>योशि ५, ५०; शि <sup>r</sup> , ३२; ७, ४३;<br>गी ५, १०; -म्भसि मना १, १९ <sup>s</sup> ; |

अ) यनि. साधूनाहो 'अमृतः अ-क्षितः' इत्येवं विभाज्यमित्यत्राऽनध्यवसायः द. [तु. वैप २, १२३; १२४; टिटि. अमृत-; ?अमृतोक्षित- (तु. शं., भा. [तैआ.]); वैतु. गोपा. उत्तरं कल्पमेव प्रदर्शकः]। b) तैआ ७, १०, १। 'तोऽक्षि-' इति अज्या.। c) तैआ १०, ६९। d) तैआ १०, १, १३। e) '-ध्यम्, मे-' इति अज्या.। f) 'अप्रमेय- > -यम् इति निसा. गपू. यद्र.। g) व्यु. ? (तु. वैप १, ३९०-j)। त्रि<sup>o</sup> - इत्यत्र उप. सत् यद्र.। h) त्रि<sup>o</sup> - इत्यत्र वस. सति समासान्तः कप् प्र. भवति न तु यनि. केवलात् उप. तत्संभव इति कृत्वाऽस्य प्राति. सत्तां प्रति संदेहः (वैतु. प्रकृते स्थ. षत्स. इति कृत्वा यनि. नापू. एव स्वार्थिक-काऽन्तमितीव आव्यमाणम्)। i) व्यु. ? /वा>वा- इति उप. (तु. संदी., MW.)। यद्वा अम्बि- > -म्बवः इति पा. इति कृत्वा -या > -यो इति तत्परः शोचः द.। j) तु. वैप १, ३९०-j। k) 'विमलाम्ब-' इति अज्या.। l) 'अम्बरवानचके' इति अज्या.। m) तु. वैप १, ३९१b। n) श्रु २, ४१, १६। o) तु. वैप १, ३९१f। p) तैआ १०, १८, ११। q) पा. ? [तु. अज्या. (उज्ज.) यनि. इति; वैतु. आन. (संदी.), शांआ. (३, १) च 'अम्बायवी- > -वीः इति]। उभयथाऽपि व्यु. ?। r) तु. वैप १, ३९१j। s) एतदत्र श्रु २, ४१, १६। t) पा. ? 'आमोः' इति द्विपदः शोचः द.। u) तु. वैप १, ३९१m। v) तैआ १०, १, १।

|  |  |  |
|--|--|--|
| २, १९ <sup>०</sup> ; शि १, १७; ४, ६३;<br>गी २, ६७.   | अ(यस्)>यो-वन- नैः आर्षे<br>७ : ५.  | अ-याज्य- -ज्यम् वृ ४, १, ३.  |
| अ(म्भस्)>म्भो-धि- -धिः महा<br>४, ४१.   | अ(यस्)>यो-दाह-<br>अयोदाह-वत् सांस् २, ८.   | अयाज्य-याजक- -काः मैत्रि ७, ८.   |
| अम्भोधि-वत् कुं १६.  | अ-यक्ष्म, क्षमा- -क्षम् नी १, ६९ <sup>१</sup> ;<br>-क्षया नी २, १७९ <sup>१</sup> .   | अयाज्य-याजन- -नात् मुद्र ४.  |
| अम्भिणी <sup>१</sup> - गी, -व्याः वृ ६, ५, ३.  | अ-यजमान- -नम् छां ८, ८, ५.   | अ-यात-याम-   |
| अम्भिष्य- , अम्भृण- नाप्. टि. द्र.   | अ-यज्ञ- -ज्ञस्य गी ४, ३१.  | अयातयाम-ब्रह्म १- -ह्य २ प्र ३२:५.   |
| अम्ल- -म्लम् १ योत ४७.   | अ-यज्ञ-शील- -लाय मुद्र ४.  | अ-यास्य <sup>१</sup> - -स्यः छां १, २, १२; वृ<br>१, ३, ८; १९; २४; २, ६, ३; ४;<br>६, ३; -स्यम् छां १, २, १२;<br>-स्यात् वृ २, ६, ३; ४, ६, ३.  |
| अ-म्लान- -नम् महा ४, १२३.  | अ-यज्ञो(ज्ञ-उ)पवीत- -ताः वृ ६, ४.  | अ-युक्त- -क्तः गी ५, १२; १८, २८;<br>-क्तम् <sup>१</sup> मैत्रि ४, ३; ते १, २२;<br>रुजा १, १२; -क्तस्य गी २, ६६ <sup>१</sup> ;<br>-क्तेन क १, ३, ५.   |
| अम्लान-पुष्प- -प्यैः सार २३३:१५.   | अ-यज्ञोपवीतिन्- -त्ती पप ४२०:<br>५; नाप ३, ७७; जा ५; या २, १.  | अ-युग-प(इ)>त्-प्रवृत्ति- -त्तेः<br>सांका १८.   |
| ✓*अय्  | अ-यज्वन्- -ज्वनः अरु ३०९ <sup>१</sup> .  | ९*अ-युज्- -युजः मना २, २; व<br>४६१: १८.  |
| अयत्- -यन्तम् वा ४.  | अयत्- ✓*अय् द्र.   | अ-युत <sup>१</sup> - -तम् अशि ७, ६; मना २,<br>५७९ <sup>१</sup> ; पै ४, २३; महा ६, ८३;<br>ता ३, ९; इ १९: ४; च २१:<br>१२; नापू ४, २८; २ शिसं १३९ <sup>१</sup> ;<br>१४; शि ६, ४; ६; गुषो ४२१:<br>५; -तेन शि ६, १२८. |
| अयन- -नम् मना २, ४९९ <sup>१</sup> ; सी<br>२८; त्रिवि ३, ४; सुवा २;<br>गार ४०६: ९; गु २०; -नात्<br>मै ५, ७; ९ <sup>१</sup> -नाय श्वे ३, ८; ६, १५;<br>नाप ९, १; त्रिवि ४, ५; मवा ९;<br>-वे प्र १, ९; त्रिवा २, १५;<br>त्रवि ५५; रुजा २, १८; वसू ४,<br>२, २०; -नेषु गी १, ११. | अयति- -तिः गी ६, ३७ <sup>१</sup> .   | अयुत-कुक्षु(क्षि-उ)पलक्षित- -तम्<br>त्रिवि ७, २.   |
| अयन-क्षौर- -रम् नाप ७.   | अ-यत्न- -त्नेन तुअ १३ <sup>१</sup> ; नाप ७;<br>भा ४२.  | अयुत-कोटि-जप- -पाः राउ ५, ४ <sup>१</sup> .   |
| अयन-द्वय- -यम् त्रिवि ३, ४.  | अयत्नो(त्न-उ)पनत- -तेषु महा ५,<br>७०; मु २, २, २३.   | अयुत-द्वय- -यम् तारा ८४: १३.   |
| अयस्- -यसे वा २२.  | अ-यथावत् गी १८, ३१.  | अयुतद्वय-कोटि-योजन-प्र-<br>माण- -णम् त्रिवि ६, ५.  |
| आय(स)>सी- -सीः ऐ ४,<br>५९ <sup>०</sup> .   | अयन- ✓*अय् द्र.  | अयुता(त-अ)युत-कोटि-योज-<br>न-विशाल- -लम् त्रिवि ७, ६.  |
| अ(यस्)>यः-शलाका-सदृश-<br>-क्षाः महा ३, ५.  | १अ-यशस्- -शः गी १०, ५.   | अयुता(त-अ)र-ज्वलत्- -लन्तम्<br>त्रिवि ७, ६ <sup>१</sup> .  |
| अय(<यस्)-स्थूण-  | २अ-यशस् <sup>१</sup> - -क्षाः वृ ६, ४, ७.  |  |
| आयस्थूण <sup>१</sup> - -णः वृ ६, ३,<br>११; -णाय वृ ६, ३, १०.   | अयस्- ✓*अय् द्र.   |  |
| अयस्-पिण्ड- -ण्डः मै ३, ३;<br>मैत्रि ३, ३; -ण्डम् मैत्रि ६, २७ <sup>१</sup> ;<br>-ण्डे मै ३, ३; मैत्रि ३, ३.   | अ-याचमान, ना- -नाः कौ २, १ <sup>१०</sup> ;<br>-नाय कौ २, १; २ <sup>१</sup> .   |  |
|  | अ-याचित- -तम् मना २, ३८९ <sup>१</sup> ;<br>३९९ <sup>१</sup> ; ४०९ <sup>१</sup> ; सुवा १२; नाप<br>५, ४; १ संन्या २, ६२; ६५; ६८;<br>शा १९; वि २४; -तात् १ संन्या<br>२, ६२. |  |

a) तैश्चा १०, १, १६। b) वैसं.। अम्भृण- > आम्भृणी- (तु. ऋ १०, १२५ इत्यस्यार्थः) इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः द्र.। रामा. अम्भिष्य- इत्यपि रूपान्तरं द्र.। c) तैश्चा ३, १५, १। d) मा ३१, १८। e) ऋ ४, २७, १। f) मा १६, ४। g) मा १६, ११। h) तैश्चा १, २७, २। i) 'अयतः' इति SCHR. [वैतु. MW.; वे. (NIA २, २३१)]। j) 'अप्रयत्नेन' इति अज्या.। k) पा. १ असहृदिपर्याय इति पाटी.। तदुपपत्त्यपेक्षं द्र.। l) बस. इति कृत्वा नापू. पृथक् निर्दिश्यते। m) 'अयाचमानाय' इति अज्या. आन. शांआ. (४, १) च। n) तैश्चा १०, ४८, १। o) तैश्चा १०, ५०, १। p) तु. वैप १, ३९६। q) वा. कचित् क्वि. भवति। r) तु. वैप १, ३९६। s) तैश्चा ३, १०, ८, २। t) मा १७, २। u) 'दिग्गहाः' इति अज्या.। v) 'अयुतारम्, ज्वलन्तम्' इति निपा.।



अयुता(त-अ)र-समष्टया(ऽ-आ)-  
कार-रम् त्रिवि ७, ६.  
अयुता(त-अ)वयवा(व-अ)न्वित-  
तः नाप ८, १; तुअ १.

अ-योग-

अयोग-तस् (>) गी ५, ६.  
अ-योग-युक्ति-तया वृजा २, १२.  
अ-योगिन्-गिने मुद्र ४.  
अ-योग्य-

अयोग्य-स्व-स्वात् सांस् ५,  
४७.

अ-यो(व्य>)ध्या-ध्या अरु  
१९९°.

अयोध्या-नगर-रे रार २, ४४;  
सु १, १, १.

अ-योनि-निः मैत्रि ६, २०; वृउ  
९, ९.

अ-यौक्तिक-कस्य सांस् १,  
२६.

✓\*अर°

\*अर°-  
अरम् ते २, ७, १; ना १, १२९°;  
महा ५, १७५°.

अरं/कृ  
९°अरं-कृत-तः व

४४०:२; ४४५: ८; ४५०: १०;  
४५३: २०.

२अर°-राः प्र २, ६; ६, ६; सुं २,  
२, ६; छां ७, १५, १; वृ २, ५,  
१५; कौ ३, ९; वृप् ५, २; ७;  
१शिसं ५९°; २शिसं ६९°; पित्र  
६, ६; -रेवरा ५, २५; -रेषु कौ

३, ९; त्रिवा २, ६१; वरा ५,  
२७; -रैः वृप् ५, ७.  
३अर°-रः छां ८, ५, ३; -रम् छां ८,  
५, ४.

अ-रङ्ग°-ङ्गम् महा ५, ५४.  
अ-रज°-जम् अज ४, ७२<sup>m</sup>.

अ-रजस्क-स्कः त्रिवि ८७; -स्कम्  
वृउ ९, १८.

\*अरण°-

अरण्य°-ण्यः अशि १, ८; -ण्यम्  
वृ ५, ११, १; मै १, १; ५, ८;  
मैत्रि १, २; ६, ८; मैत्रे १, १;  
अज १, ३४; कः १; कश्रु २, ३;

-ण्यस्य इ १२: २; -ण्यानि शि  
७, १२९; -ण्ये सुं १, २, ११;  
छां ५, १०, १; वृ ६, २, १५; मना  
२, ७८९°; वृजा ३, ३४; २संन्या  
१५: ३; पित्र ४, ९.

अरण्यानी-नीः पित्र १, ३;  
-न्यः पित्र १, १३°.

आरण्य°-ण्यम् शि ५, ६;  
-ण्याः छां २, ९, ७; -ण्यान्  
सुवा २.

आरण्य-क-कम् आरु  
२.

अरण्य-धर्म-  
अरण्यधर्मिन्-मिणः सार

२४८: १८.

अरण्या(ण्य-अ)वन-नम् छां  
८, ५, ३.

अरणि°-णिम् श्वे १, १४; व ३,  
९; ध्या २२; द १६; स ३७९:

१७; -णी वृ ६, ४, २२; २संन्या  
२६: १५; -ण्योः क २, १, ८९°;  
इ १५: ६.  
अरणी-णीषु श्वे १, १५; व ३,  
१०.

अरणि-देश-शात् कः १; कश्रु  
२, ३.

आरण्य-अरण्य-द्र.

अ-रति-तिः महा २, ७१; ३, ६; गी  
१३, १०.

अ-रप्-राः व ४३७: १७९°.

अ-रमा-मा सुवा ११.

अ-रम्य-म्यम् अज ५, ११८.

अरम्य-ता-ता महा ६, २४.

अ-रस्-सः त्रिवि ८२; -सम् क १,  
३, १५; वृ ३, ८, ८; सुवा ३;

वृउ ९, १८; पै ३, ४; यो ३, ३५;  
सु २, २, ७२; सेषु महा ५,  
६४.

अ-रसयित्-ता मैत्रि ६, ११.

अ-रसिक-काः सार २५०: १०.

अ-राग-त्रेष-

अरागद्वेष-तस् (>) गी १८, २३.

अ-राजक-के नाप ६, ३७.

अ-राजन्-जा महा ४, १०५.

अ-राति-तिः अशि ३, ५९°; वदु  
३१५: ४९°; -तिम् मना १,  
११९°; त्रिवि ७, ४९°; सु २९३:

१५९°; -तीः मना २, ७९९°; वप्  
१, ४.

✓अरातीय  
९°अरातीयत्-वतः मना २, १;

a) शौ १०, २, ३१। b) तु. वैप १, ३९७p। c) तु. वैप १, ३९८a। d) तु. वैप १, ३९८b। e) ऋ १०, ९, ३। f) 'उदात्तम्' इति अच्चा। g) ऋ १०, १४, १३। h) तु. वैप १, ३९९g। i) मा ३४, ५। j) 'अरण्य' इत्यस्य शब्दस्यैकदेशः। k) वस.। उप. <√रञ्ज् यद्र.। l) वस.। उप. अकारान्तं सत् <√रञ्ज् यद्र.। m) 'अचरम्' इति संदि.। n) तु. वैप १, ४००c। o) तु. वैप १, ४००। p) तैच्चा १०, ६२, १। q) तु. वैप १, ४०१a। r) तु. वैप १, ४०१g। s) ऋ ३, २९, २। t) ऋ ८, १८, ९। u) तस. [वैतु. अच्चा. (४, १०४) 'अराजा' इति व्यर्थं तृ१ सत् यनि. सु-बोधम्, निसा. 'अराजकः' इत्युत्तरेण पदेन 'कः' इत्यनेनैकपिण्डतामापादितोऽशुद्धः पा. च]। v) तु. वैप १, ४०५। w) ऋ ८, ४८, ३। x) तैच्चा ३, १२, ३, ४। y) तैच्चा १०, ६३, १। z) ऋ १, ९९, १।

त्रिता १, ६; व ४३०:६;  
४६१:६.  
अराचन्<sup>१</sup>- रावा मना २,६०९<sup>१</sup>.  
अरि<sup>२</sup>-रयः महा ४,९४; अज २,४३;  
व ४६२: १५९<sup>३</sup>; -रि: व ४६५:  
११; -रीणाम् छाग २४:२३<sup>३</sup>.  
अरे<sup>४</sup> छां ४,१,३; ५; ७; ८; वृ २,  
४,१; ४; ५<sup>५</sup>; १०; १२<sup>५</sup>; १३<sup>५</sup>;  
१४; ४, ५, २; ६<sup>५</sup>; ११; १३<sup>५</sup>;  
१४<sup>५</sup>; १५; औषे ९: १२.  
अरि-गति- -तिम् व ४६६: ८.  
अरि-निग्रह- -हे रार २,१०३.  
अरि-मर्दन- -०न सु २,२,८; -नम्  
रापू ४,३६.  
अरि-मारण- -णम् रापू ४, १६<sup>६</sup>.  
अरि-मित्रा(त्र-आ)दि-लक्षण-  
-णम् श्या १६.  
अरि-वर्ग-  
अरिवर्ग-क- -कम् ते ६,५७.  
अरि-शङ्ख-कृपाण-खेट-बाण- -णान्  
व ४२६: १०.  
अरि-षट्क- -का: वरा १, ११<sup>७</sup>.  
अरि-व(पू>दु>)द्व-वर्ग- -गः  
मुद्र ४.  
अरिषद्वर्ग-मुक- -कः मैत्रे ३,  
१८.  
अरि-सूदन- -०न गी २,४.  
अरिणि: पा ५,४.  
अरिन्- अरि-> -रीणाम् टि. द.  
अरिन्- एपू. टि. द.  
अरिष्ट, छा- -ष्टम् छां ३, १५, ३; २योत  
२, ६<sup>३</sup>; सार २२१: १३; व  
४३७: ५; ४६५: १; अरु २९९<sup>१</sup>;  
-द्या मना २, ७२९<sup>५</sup>; -द्यानि त्रिआ

२, १२८; -ष्टे सार २२६: २१;  
२६०: १०; -ष्टेभ्यः योम् ३, २३;  
-ष्टे: त्रिआ २, १२१.  
अरिष्ट-कारिन्- -रिणम् व ४३३:  
१०.  
अरिष्टकारिणी-  
अरिष्टकारिणी-छेदिनी-  
परकृतसंज्ञापद्रव- -वेभ्यः व  
४३३: १४.  
अरिष्टकारिणी-विभावि-  
नी-परकृतदुष्टग्रहमन्त्रतन्त्रो-  
च्चाटिनीप्रेरित-ब्रह्मराक्षस-शा-  
किनी-डाकिनी-छायाव. सिनी-  
कङ्काली-हिरण्याक्ष-संविग्रह-मु-  
क्कदेश्या(शी-आ)दि-विशाच-  
-वेभ्यः व ४३३: १२.  
अरिष्टकारि-भूत-प्रेत-विशाच-  
-चान् व ४३२: २.  
अरिष्ट-निरसन- -नम् रुजा २, १.  
अरिष्ट-नेमि- ९<sup>१</sup>-मि: प्रमुं मां शां<sup>३</sup>;  
मना १, ९; अशि अ वृजा नृपू  
नाप सी अवि श त्रिवि रार रापू  
शां पप अज सू १आ पाशु पत्र  
त्रिता दे भा भ ग मवा गोपू कृ  
ह दत्ता पदं सि गरु शां<sup>३</sup>; ए ४;  
रा ४२३: २; धिअ शां<sup>३</sup>.  
अरिष्ट-युक्त-प्रकृति-काल- -ले व  
४३३: १०.  
अरिष्टि- -ष्टिम् वृ १, ४, १६<sup>३</sup>; -ष्ट्यै  
कौ २, ११;  
अरुचि- -चि: सार २५०: १२.  
अरुण, णा<sup>३</sup>- -ण: वृ ६, ५, ३; नी १,  
९९<sup>३</sup>; -णा त्रि १३; आय ३९८:  
११९<sup>३</sup>; -णात् वृ ६, ५, ३.

आरुणि<sup>१</sup>- -ण्ये छां ३, ११, ४;  
-णि: क १, १, ११; छां ५, ११,  
२; ६, ८, १; वृ ३, ७, १; २३; ६,  
३, ७; ४, ४; मना २, ७९९<sup>३</sup>; आरु  
१; सु १, ७, ३१; -णिम् छां ५,  
१७, १; कौ १, १.  
आरुण्य- -य: छां ५, ३, १;  
६, १, १; वृ ६, ३, १.  
अरुण-कमल-सं(स्थ>)स्था- -स्था  
सौ १, १<sup>१</sup>.  
अरुण-त्रि-ने(त्र>)त्रा- -त्रा तारा  
८३: २१.  
अरुण-सूर्य-वेदाङ्ग-मान्वि(तु-इ)न्द्र-  
रवि-गमस्ति-यम-सुवर्णरे(तस्  
>)तो-दिवाकर-मित्र-विष्णु-  
माघा(घ-आ)दि-द्वादश-मासा-  
(स-अ)धि-पति- -तय: सूता ५, ९.  
अरुणि(त>)ता<sup>१</sup>- -ता: वपं ३१२:  
१९.  
अरुणि<sup>२</sup>-  
अरुणी<sup>३</sup>- -णी व ४५८: १५.  
अरुण्य(त>)ती<sup>३</sup>- -०ति नी ३, २९<sup>६</sup>;  
-ती वृजा ६, १९<sup>६</sup>; यो १, १९<sup>६</sup>;  
-तीम् वृजा ६, १९<sup>६</sup>.  
अरुण- -दम् महा ५, १४.  
अरूप- -प: ते ३, २८; अवि ८२;  
अज ४, १४<sup>३</sup>; सु २, २, ३२<sup>३</sup>;  
३५; -पम् क १, ३, १५; रवे ३,  
१०; कै १, ६; तृत् ९, १८; सुवा  
३; ८; पै ३, ४; अव्य १; यो ३,  
३५; सु २, २, ७२; भव ३, ३;  
-पस्य शां ३, १.  
अरूप-नाश- -श: अज ४, १८.  
अरूपक- -कम् गौ ३, ३६; ते ६, ७०.

a) तु. वैप १, ४०८। b) अ १०, ३७, १२। c) तु. वैप १, ४०९। d) वृथ ८, ४५। e) पा. १ अर-  
+ इति: प्र. (=१अरिन्-चकपवायि: >) 'अरिणाम्' इत्येवं सु-शोधः (तु. वे.)। f) तु. वैप १, ४१०। g) 'आखर-  
मारणम्' इति आन.। h) 'अरिषद्वा' इति निशा.। i) व्यु. १ अर-> १ अरिन्-+(✓नी>) \*नि- इति स्थिते  
तस. इतीव पाटी. द.। j) तैआ १, २७, ४। k) तैसं ५, ५, ९, २। l) अ १, ८९, ६। m) तु. वैप १, ४११।  
n) तैसं ४, ५, १, २। o) तैआ १०, ६३, १। p) 'अमलकमलसंस्था' इति अव्या.। q) इवच् प्र. (पा ५, २, ३६)।  
r) तु. वैप १, ४१२। s) तु. वैप १, ४१३। t) तु. वैप १, ४१३।

अ-रूप-ज्ञ- -ज्ञः वृ ४, ४, १.

अ-रूपवत्- -वत् ब्रसू ३, २, १४;  
-वान् वउ २, १४.

अरे अरि-द्र.

अ-रेतस्- -ताः वृ ६, ४, १०.

अ-रेफ-जात- -तम् अना २५.

अ-रोग-

आरोग्य- -ग्यम् इवेर, १३; त्रित्रा  
२, ११३; योचू ९९; शां १, ७, ८;  
रुजा २, ६, ८; १६; कालि ४०२:  
१; व ४५९ : ११; भव ४, १०.आरोग्य-काम- -मः सूता १,  
२२.आरोग्य-प्र(द>)दा- -दा रा  
४२३ : २१.आरोग्य-वत्- -वन्तः सूता  
१, २०; -वान् वउ ३१८ : ७.

अरोग-वत्- -वान् सौ २, ५.

अरोगिन्- -गी सुद्र ४.

✓\*अर्ण, \*अर्ण, \*अर्ण-र-अगर्-टि.द्र.

✓\*अर्ण तु. टि. ✓अर्ण

अर्ण-

अर्ण्य- -र्ण्यः वउ ६, २८; -र्ण्यम्  
वृ ६, २, ४; मं २, २, ५; भा ३१;  
आपू २; शि ५, ५२; -र्ण्यणि  
सूता ५, १४; -र्ण्ये वउ ६, २८.अर्ण्य-दान- -नम् सूता २, ३;  
२२; ६, ९; -ने सूता ३, ११.अर्ण्य-पात्रा(त्र-आ)दि-सं-  
अय- -नम् शि ३, ४.

अर्ण्य-प्रिय- -यः सूता ६, ९.

अर्ण्यो(र्ण्य-उ)दक- -केन वउ  
६, १२.✓अर्ण्य, (=✓अर्ण्य यद्र.)<sup>a</sup>>अर्णि,  
अर्ण्यन्ति अशि ६, १६; रुह ६<sup>१</sup>;  
वउ ६, ४५<sup>१</sup>; अर्ण्य वि १७;  
१८; अर्ण्येत् सुं ३, १, १०; मैत्रि४, ६; त्रवि ५६<sup>१</sup>; ७७; नाप  
४, ३८; राप् ५, ३; ५; राउ ३,  
६; गोउ ३२; ३५; बि १३;  
शि ३, ९; काम २४<sup>१</sup>.

अर्चयिष्यन्ति भव १, ५६.

अर्क<sup>br</sup>- -र्कः वृ १, २, २; ७; मै ५,  
८; मैत्रि ६, ८; मवा ११; गोपू  
२५; -र्कम् व ४६२ : १; -र्कस्य  
प्र ४, २; वृ १, २, १; -र्कं अन्न ४,  
९; महा ५, १०७; शि ५, ३५;  
-र्केषु महा ४, २९.

अर्क-काल- -लौ भव ३, २१.

अर्क-चन्द्र-वह्नि- -ह्नीनाम् ध्या  
३४.

अर्क-ज्योतिस्- -तिः मवा ११.

अर्क-स्व- -स्वम् वृ १, २, १<sup>१</sup>.अर्क-विध्व(धु-अ)ग्न-तेजस्-  
-जांसि राप् ५, ४.

अर्का(र्क-अ)र्ण- -र्णः रार २, ५५.

अर्का(र्क-अ)इवमेध- -धौ वृ १,  
२, ७.अर्क(र्क-इ)न्दु-वरुण- -णाः महा  
५, १३९.

अर्चव्- -र्चतः, -र्चते, -र्चन् वृ १, २, १.

अर्चन- -नम् वृ ५, १०; ते ६,  
२२; नाप ६, ३४; रुजा ३, १;  
शि ४, ६६; -नात् भ २, १६;  
-नैः सी ३६.अर्चन-भोजन- -नम् शि ६,  
१४१.

अर्चनीय- -यः सु २९४ : १६.

अर्चयत्- -यन्तः प्र ६, ८.

अर्चयन्ती- -न्त्यः सुं १, २, ६.

अर्चयित्वा राप् ५, २; शि ६, १०२.

अर्चा- -र्चां दे २०.

अर्चा-विधि- -धौ राप् ५, १.

अर्चा-सिद्धि- -द्धिम् दे २०.

अर्चि-

अर्चि-मन्- -मन् सुं २, २, २;

त्रिवि ७, ५९<sup>१</sup>; सु २९३ : १५९<sup>१</sup>.अर्चित, ता- -तः भ २, २०<sup>१</sup>; -ताः  
मैत्रि ६, ५; -तानि राप् ५, ४.

अर्चितुम् गी ७, २१.

अर्चिस्- -र्चिः सुं १, २, २; छां ५,

४-८, १; वृ ६, २, ९-१३; १४<sup>१</sup>;१५; मना २, १४९<sup>d</sup>; महा १,१९<sup>१</sup>; आर्षे ८ : ७; -र्चिषः सुं २,

१, ८; छां ४, १५, ५; ५, १०, १;

वृ ६, २, १५; मैत्रि ६, ३५; मना

२, १२, १९<sup>१</sup>; -र्चिषम् छां ४, १५,

५; ५, १०, १; -र्चिषि मना २,

१४९<sup>d</sup>.अर्चि(स् >): -सम-प्रभ- -भः  
अना ३८.अर्चिरा(स् > र-आ)दि- -दिना  
ब्रसू ४, ३, १.अर्चि(स् >) र-मार्ग-विस्त-  
-तम् गोच ६९ : १३.✓अर्चि, अर्चि छां ४, १, ७<sup>१</sup>.

✓अर्चि

अर्चुन<sup>१</sup>- -र्चुः न गी २, २; ४५; ३,

७; ४, ५; ९; ३७; ६, १६; ३२;

४६; ७, १६; २६; ८, १६; २७

९, १९; १०, ३२; ३९; ४२; ११,

४७; ५४; १८, ९; ३४; ६१;

९<sup>१</sup>-नः गी १, ४७; २, ४; ५४; ३,

१; ३६; ४, ४; ५, १; ६, ३३; ३७,

८, १; १०, १२; ११, १; १५; ३६;

५१; १२, १; १४, २१; १७, १;

१८, १; ७३; -नम् गी ११, ५०९<sup>१</sup>.अर्चुन-काम्बित- -तम् त्रित्रा २,  
१३७.अर्ण<sup>१</sup>- -र्णः दे १४; -र्णां रार २,  
४३; -र्णेन त्रित्रा २, १३.

a) तु. वैप १, ४१५r । b) तु. वैप १, ४१६d । c) तैत्रा ३, १२, ३, ४ । d) तैत्रा १०, १३, १ । e) तैत्रा

१०, ११, २ । f) तैत्रा १०, १०, १ । g) तु. सं., रामा.; वैतु. निषा. ✓आर्च्ये &gt; आर्च्ये, सं. jC. ✓अर्च्ये &gt; अर्च्ये ।

h) तु. वैप १, ४१५n । i) तु. वैप १, ४२०c ।



!अर्णकोपिष्ट- -ऋः सूता २, १६.  
अर्णव<sup>१</sup>- -वः मैत्रि ६, ३५; मना १,  
१३५<sup>०</sup>; -वाः महा ४, १७;  
-वान् मना १, १४५<sup>१</sup>; -वे ऐ २,  
१; मैत्रि २, २७; महा ५, ११९;  
बरा ४, १८; आर्षे २: १९; -वौ  
छां ८, ५, ३: ४.

अर्णस्<sup>२</sup>- -र्णः सर २, ५५<sup>१</sup>.

✓अर्थ<sup>३</sup>

अर्थ<sup>३</sup>- -र्थः गौ ४, २६; मैत्रि ७,  
१०; वृष ४, १०; रार ५, ३: ४;  
मह २, ३३; ४, ४१; अव्य ३;  
पाशु २, २१; रुह २३; सु २,  
२, २०<sup>३</sup>; सूता ३, ४; २प्र ३: ५;  
७; गी २, ४६; ३, १८; -र्थस् प्र  
४, ५; वृह ४, ९-११; २१; गौ ४,  
२६; मैत्रि ७, ८; कौ २, ३; द  
१४; १७; राप् १, १२; ह १३;  
मव १, ४२; सांका ३६; -र्थाः  
क १, ३, १०; स्वे ६, २३; मै ४,  
२; मैत्रि ४, २; सुबा १६; योशि  
२, २२; अव्य ७; २प्र ३३:  
१०; गु ४१; ७६; सांका ७२<sup>३</sup>;  
-र्थात् क १, २, १; महा ५, ५;  
मव १, ४२; सांस् ५, २८; -र्थात्  
ई ८; मै २, ९; मैत्रि २, ६;  
-र्थानाम् महा ३, २१; योशि ६,  
५९; -र्थे गर्भे ४; मै ४, १३;  
मैत्रि ५, १; त्रिबा २, २६; रार  
५, १३; १४; पै ३, १; महा ५,  
१६७; अप्या ३४; कुं ३; सार  
२४१: ६; शि ६, १६६; गी १,  
३३; २, २७; ३, ३४; -र्थेन छां  
५, ११, ६; -र्थेभ्यः क १, ३, १०;  
गु ४१; -र्थेषु अच ३, ६; अलि  
२१.

अर्थ-काम- -मान् गी २, ५<sup>१</sup>.

अर्थ-ज्ञ- -ज्ञाः जाद २, ४.

अर्थ-तस्(>) यो २, ३; ९;  
सांका १३.

अर्थ-नाशक- -काः शि ४, २२.

अर्थ-मात्र-

अर्थमात्र-निर्मास, सा- -सम्

योस् ३, ३; -सा योस् १, ४३.

अर्थ-लोभ- -भात् योशि २, ३.

अर्थ-वत्- -वत् २प्र ३: ९; ७;  
व्रस् १, ४, ३; -वन्ति १आ १०.

अर्थवत्-स्व- -रस् व्रस् ३,  
३, २९.

अर्थ-वश- -शात् सांका ६: ५.

अर्थ-विरति- -ने: वरा ४, ६.

अर्थ-व्यपाश्रय- -यः गी ३, १८.

अर्थ-संचय- -यान् गी १६, १२.

अर्थ-सर(गि)>णी- -णी शु  
३, १०.

अर्थ-सामान्य- -न्यात् व्रस् ३,  
३, १३.

अर्थ-स्त्री-पुत्र-गरा(व्)>क>-  
इ-मुख- -खः पप्र ४१९: १७<sup>६</sup>.

अर्थ-स्वरूप- -पस् जाद ६,  
४९.

अर्थ-हानि- -नौ शां १, १.

अर्था(र्थ-अ)नुसंधान- -तम्

अध्या ३३.

अर्था(र्थ-अ)न्तर- -रस् महा  
५, ५.

अर्थान्तर-स्व-

अर्थान्तरस्वा(त्व-अ)दि-

व्यपदेश- -शात् व्रस् १, ३, ४१.

अर्था(र्थ-अ)भाव- -वात् व्रस्  
२, २, ६.

अर्था(र्थ-अ)भास- -सः, -सम्

गी ४, २६.

अर्था(र्थ-अ)भेद- -दान् व्रस्  
३, ३, ५.

अर्था(र्थ-अ)र्थिन्- -र्थी गी ७,  
१६.

अर्थिन्- -र्थिनाम् शि ६, २५४;  
-र्थिभ्यः शां १, २; -र्थिषु भव  
५, १३.

अर्थो(र्थ-उ)पार्जन- -नम् मै ३,  
५; मैत्रि ३, ५.

✓अर्थ<sup>४</sup>

अर्थ- -धम् छां ५, ३, ४; ६; मैत्रि  
६, १४<sup>३</sup>; वृजा ४, १२; १योत  
१३५; २योत १, ७; अद्वै २८;  
शि ६, १४; -र्थे प्र १, ११; -धन  
सुबा २<sup>३</sup>; शि २, १०; ११.

अर्थ-चतसृ- -स्रः निह २, २;  
२प्र ३४: १९.

अर्थ-चतुर्थ(र्थ)>र्थी- -र्थी अशि  
५, १३; २प्र ३४: २३.

अर्थचतुर्थ-मात्र<sup>५</sup>- -त्रेण

अशि ५, ८.

अर्थ-चन्द्र- -न्द्रस् १योत ८८;  
-न्द्रः शि ६, १३७.

अर्थचन्द्र-विभूषित- -तम्  
रार २, १.

अर्थचन्द्र-समा(म-आ)कार-

-रम् त्रिबा २, १३७.

अर्थचन्द्रा(न्द्र-आ)कृति- -ति  
योशि १, १७६; ५, १३; -ति:  
प्रा २, १.

अर्थ-दिवस- -साः सुबा ६.

अर्थ-नारी(री-ई)श- -शः रुजा  
२, २.

अर्थ-नारी(री-ई)स्वर- -रः शु  
२, ५; व ४६३: १४.

a) पा. ! 'आखोऽयं वर्णः कोपिष्टः इति श्लोच-प्रस्तावः । b) तु. वैप १, ४२०j । c) ऋ १०, १९०, १ ।  
d) ऋ १०, १९०, २ । e) तु. वैप १, ४२१d । f) एकतरत्र ऋ १, ३, १२ । g) तु. वैप १, ४२२c । h) तु. वैप १,  
४२२d । i) 'अर्थैः' इति अख्या । j) 'अर्थकामः' इति SCHR. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)] । k) 'अर्थकीपुर-  
पराङ्मुखः' इति अख्या । l) तु. वैप १, ४२२n । m) मुपा. ! यनि. सु-श्लोचः ।

अर्धनारीश्वरा(र-आ)मक-  
-कम् रुजा २, २.

अर्ध-पञ्चा(ब-अ)शर-रु-

(प>)पा-पा तारा ८३: १.

अर्ध-प्रबुद्ध-द्वस्य महा ५,  
१०५.

अर्ध-वृगल<sup>१</sup>-लम् वृ १, ४, ३.

अर्ध-भाग-स्थ-स्थम् शि २,  
१०.

अर्ध-भुक्त-कम् शि ५, ५.

अर्ध-मातृ(क>)का<sup>१</sup>-का  
विद्या १.

अर्ध-मात्र-त्र: राउ १, २; -त्रम्  
ध्या ३६.

अर्ध-मात्र-प्रणव-व: तु २.

अर्ध-मात्रा-त्रा अ १<sup>१</sup>; १योत

१३९; २योत २, १; वृपू २, २;

वृउ ३, ५; नाद १, ७; ब्रवि ३;

९; ४०; नाप ८, १; तु ८; १५

३१: ४<sup>०</sup>; १६; स ३७९: ६;

विद्या १; -त्रा: राउ ४, ४०;

वृपू ४, १५, १२; -त्राया: रार १,

७; -त्रायाम् पप ४१९: २९.

अर्ध-मात्रा(त्रा-अं)न-शम्  
पप ४२०: ३.

अर्ध-मात्रा-तुरीयां-

(य-अंश>)ना-शा वरा ४, १<sup>१</sup>.

अर्ध-मात्रा(त्रा-आ)मक-क:

राउ २, २; गोउ ४३; -कम् ध्या

३९<sup>०</sup>; त्रिवि ७, ५०.

अर्ध-मात्रा-प्रणव-व: नाप

८, १<sup>१</sup>.

अर्ध-मात्रा-समायुक्त-क:

ध्या १७.

अर्ध-मात्रा-स्थूलां(त-अं)न-

-शे वरा ४, १.

अर्ध-मात्रिका-तु. टि. ? अर्ध-

मातृका-

अर्ध-मास-मा: वृ १, १, १;

३, ८, ९; मना १, २५<sup>१</sup>; २, ८०५<sup>१</sup>.

अर्ध-मासा(स-अ)म्य(मि-अ)-

न्तर-र गर्भे ३<sup>१</sup>.

अर्ध-मासिक-कम् व ४३३:

११.

अर्ध-रात्र-त्रम् नाप ६, १<sup>१</sup>;

-त्रे शां १, ७, २; १योत ४३;

त्रिमा २, १०१; शि ५, १७.

अर्ध(र्ध-अ)र्ध-चान्याम् अव्य

५; -चै: सूता १, ३१.

अर्ध-चै-न्यास-स: सूता ३,

११.

अर्ध-संपत्ति-त्ति: त्रसू ३, २, १०.

अर्ध-सुप्त-प्रबुद्धा(द-आ)म-

-म: अज ५, ८३.

अर्ध-स्थान-ने अद्वे २७.

अर्ध(र्ध-अ)व-शिरस्क<sup>१</sup>-स्कम्

त्रिता १, ६८.

अर्ध(र्ध-इ)न्दु-लसित-तम्

दे ११; ग ७.

अर्ध(र्ध-उ)न्मीलित-तम्

मं २, १, ६.

अर्धोन्मीलित-लोचन-न:

शां १, ७, १६; अज ३, ४.

✓\*अर्प, >अर्पि<sup>१</sup>, अर्पयेत् वि ३०;

शि ७, २०; २१; ६८.

अर्पण-णम् श २६; गी ४, २४.

अर्पित, ता<sup>१</sup>-तम् प्र १, ११; श्वे १,

१६; १संन्या २, ४१; अद्वे २४;

गु २४; -ता मे ५, ५; कौ ३, १<sup>१</sup>;

-ता: क २, १, ९; मैत्रि ६, ५; कौ

३, २<sup>१</sup>; इ १८: ३; पितृ ६, ६<sup>१</sup>.

अर्पित-मनो-बुद्धि-द्वि: गी ८,

७; १२, १४.

अर्पिता(त-अ-अ)खिल-कर्मन्-

-मां भ २, २०.

अर्बुद<sup>१</sup>-द: नि १, १०; -दम् २शिसं

१३७<sup>०</sup>.

✓\*अर्भ<sup>१</sup>

अर्भ<sup>१</sup>-

अर्भ-क<sup>१</sup>-०क पप ४२०: ६;

-क: १संन्या २, ३; नाप ३, १;

-इ<sup>१</sup>कम् मना २, ५२; २शिसं २८.

अर्भकौ(क-अ)कम्-

अर्भकौकम्-स्व-स्वात्

त्रसू १, १, ७.

✓\*अर्भ<sup>१</sup>

अर्भ<sup>१</sup>-चै: व ४३७: १३७<sup>१</sup>.

अर्भ-म<sup>१</sup>-मम् अक्षा २<sup>१</sup>.

अर्भ-मन्<sup>१</sup>-मा तै शां<sup>१</sup>५<sup>१</sup>; १, १, १;

१२, १; विद्या शां<sup>१</sup>५<sup>१</sup>; वृपू २,

१७५<sup>१</sup>; सुबा ६; गी १०, २९.

आयमण-णम् गार ४०७: ६.

अर्वत्<sup>१</sup>-इ<sup>१</sup>र्वन्तम् व ४४१: २०;

४४७: ३; ४५१: १७; ४५४:

२२.

अर्वन्<sup>१</sup>-वां वृ १, १, २.

a) वैतु. 'वृगलम्' इति jc. । b) मुपा. 'अर्ध-मात्रिका' इति शेषः d. । c) पूर्वेण संधिस्त्वान्दसः  
d. (तु. सस्थ. मात्रा->त्रा: ) । d) 'त्राप्रविभक्तप्रथमद्वितीयतृतीयांशाः' इति अज्या. । e) 'अर्धमात्राम् रज्जुम्'  
इति आन. । f) तैआ १०, १, २ । g) तैआ १०, ६४, १ । h) '-रेण' इति आन. अज्या. च । i) 'त्रागतम्' इति  
समस्तः अज्या. । j) तस. । पृ. क्वि. । उप. यद्र. । k) तु. वैप १, ४२४ । l) तु. वैप १, ४२५ । m) 'तः'  
इति आन. । n) तु. वैप १, ४२५ । o) मा १७, २ । p) तु. वैप १, ४२५ । q) तु. वैप १, ४२६ । r) ऋ १,  
११४, ७ । s) तु. वैप १, ४२६ । t) ऋ २, २३, १५ । u) उप. क्विचिदिव भिन्नसाधने सति नाउ. (तु.टि.) एव  
रूपान्तरमकारान्ततया व्यवहार्यं d. । v) तु. वैप १, ४२८ । w) ऋ १, ५०, ९ । x) ऋ १, ४०, ५ । y) तु. वैप १,  
४२९ । z) ऋ १, ९१, २० । a') तु. वैप १, ४२८ ।

\*अर्वा

अर्वा(र्वा-अ)च्, ण्व- -वाक् वृ ४,  
४, १६; मैत्रि ६, २; मना १, १९<sup>१०</sup>;  
सृ ११; वज्र ६, ११; -वाङ् छां  
३, १०, ४; व ४६०: १९<sup>१०</sup>;  
-वाङ् छां १, ७, ६: ८.

अर्वा(र्वा > क्) ग-बिल- -लः वृ  
२, २, ३<sup>१</sup>.

✓अर्ष[=✓अर्ष(गतौ)]

अर्षत् - -र्षत् ई ४<sup>१</sup>; गोप  
४८९<sup>०</sup>.

✓अर्ह<sup>१</sup>(=✓अर्ह), अर्हति क १, २,  
२१; छां ४, ४, ५; वृ ६, २, ८;  
मैत्रि २, २०; नाप २, ३, १८; पै  
४, १५<sup>१</sup>; १संन्या २, १<sup>१</sup>; ३;  
पत्र ३, १३<sup>१</sup>; वरा २, १२; ३,  
३०; इ १४: २३; गी २, १७;  
अर्हन्ति नाप ३, ३; योशि ६,  
४१; ४३; ४६; १संन्या २, ६; वज्र  
१, १८; अर्हसि मै १, ७; मैत्रि  
१, ४; मैत्रे १, २; वृजा ३, ३३;  
नाद २१; नाप ५, १; शां ३, १; गी  
२, २५-२७; ३०; ३१; ३, २०; ६,  
३९; १०, १६; ११, ४४; १६, २४;  
अर्हामि प्र ६, १.

अर्ह- -र्हा: गी १, ३७; -र्हाणि छां  
५, ११, ५.

अर्हत् - -र्हते पा २, ६.

अर्हा- -र्हाम् छां ५, ३, ६.

✓अल्(=✓अर्)

अल्<sup>१</sup> - -ल्म् ऐ २, २<sup>१</sup>; वृ १, ३,  
१८<sup>१</sup>; २, ४, १३; वृजा ६, १; ते  
५, ३७; सं २, ४, ३<sup>१</sup>; महा ३, ४७;  
५, ८४; १८६; १संन्या २, ४२;  
अक्ष ३, ७; ४, ७५; योशि ४, १७;  
यो १, ५५; या २, १३; सु १, १,  
२६; २, २, १२; सार २६७: ६.  
अल्/कृ, अल्कृकुर्वन्ति कौ १, ४.  
अल्ङ्कार सी ३७.

अल्-कार - -रेण छां ८, ८, ५.

अल्ङ्कार-स्त्र(ज् > ग्) -

इ-मौक्तिका(क-आ)द्या(दि-आ)-  
भरणा(गा-अ)लङ्क(त >)ता<sup>१</sup>-  
-ता सी ५.

अल्-कृत, ता - -तः कौ १,  
४; रापू ४, ३९; शि ६, १६२;  
-तम् त्रिवि ६, १८; २२; २३;  
७, ६; १९; २१; ४३; ४९; ५०<sup>३</sup>;  
सि २, ९; ३, ७; ५, १३; १६; १७;  
६, ११; १६; २०; २४; ३७; -ता  
सी १, १; -ताम् त्रिवि ७, १;  
-ताम् त्रिवि ६, १०.

अल्-कृत्य त्रिवि ६, २५.

१अल्-बुद्धि-

अल्बुद्धि-पर्यै(रि-अ)न्त-  
-न्तम् नाप ५, १.

२अल्-बुद्धि<sup>१</sup> - -द्धि: पप ४१९:  
१०.

१अल्-बु(स >)सा<sup>११</sup> - -सा ध्या

५३; त्रिवा २, ७३; योचू १७;  
२०; शां १, ४; योशि ५, २२;  
भा १३; जाद ४, ८; १७; वरा  
५, २३; -साया: जाद ४, ३७.

अलि<sup>१</sup> - -लि: सार २२६: १६;  
२२७: ७; -ले सार २२६: १५.

अलक<sup>१</sup> - -कम् नापू ४, १२९<sup>०</sup>.

\*१अलका - नाउ. व्यु. औप. द्र.

अलक-नन्दा<sup>१२</sup> -

अलकनन्दा-तीर्थ - -र्थम् म  
४८: १९.

\*अ-लक्ष - एपू. डि. द्र.

अ-लक्षण, णा - -णः त्रिवि ८४; -णम्  
मां ७; मैत्रि ६, २४<sup>१</sup>; दृपू ४, ७;  
वृज १, १२; ९, १८; नाप ८, २०;  
राउ ३, १; योशि ३, १७; भव  
४, २; वज्र १, १६; ५, ३९; -णाम्  
विद्या ४; -णे शि ७, ३.

अ-लक्षित-

अलक्षित-शील-वृत्त - -तः शा २१.

अलक्षिता(त-अ)न्तः - -शिखो-

(खा-उ)पवीत-

अलक्षितान्तःशिखोपवीतिन्-

अलक्षितान्तःशिखोपवीति-

स्व-स्वम् पत्र २.

अ-लक्ष्मी<sup>१</sup> - -क्ष्मी: वृजा ३, १९<sup>१०</sup>; सू

२७; मना १, १०९<sup>१०</sup>; २, ६६९<sup>१०</sup>;

व ४६२: १४९<sup>१०</sup>.

a) तु. वैप १, ४३० g। b) ऋ १०, ८९, ५। c) ऋ १०, ८३, ६। d) कारवीयमुपनिषदिति कृत्वा मूर्धन्यमध्यः  
पा. उरीकार्यः [तु. कासं. (सात ४०, १, ४। वैतु. वैप १, ४३२ अक्षत्-इति संस्करणान्तरीयम्।); वैतु. निसा. तालव्यमध्यः  
पा.]। एस्थि. अपि तत्त्वतोऽभेदः द्र.। ✓अर्ष, ✓अर्ष इत्येतयोः सजातयोः ✓अर्(गतौ) इत्यत्र प्रतिष्ठितयोश्च सतोः समान-  
गत्यर्थशक्त्यभ्युपगमाऽभिसंधेः (तु. वैप १, ४३२ i)। e) कासं ४०, १, ४। f) तु. वैप १, ४३३ m। g) 'अर्हन्ति' इति  
अख्या.। h) तु. वैप १, ४३४ j। i) मुपा. अकारः यनि. सु-शोधः द्र.। j) वैतु. उन्न. पदद्वयं प्रकल्पकः। k) बस. इति  
कृत्वा १संन्याकात् सत्पात पृथक् द्र.। l) व्यु. नाडीप्रकरणे वैसं. द्र.। उप. <✓पुष् सत् नैत्र. यनि. विपरिणतमिति  
संभान्येत (तु. शक., MW.)। m) तु. अमा २, ५, २९। n) तु. वैप १, ४३४ n। o) ऋ १०, ७१, ६। p) व्यु. नदी-  
विशेषस्य वैसं. द्र.। उम. इति कृत्वा पू. कुबेरपुर्याः वैसं. सत् स. पुंवद्भावं गतम्। उप. च कर्तरि <✓नन्द इत्येकः  
कल्पः। कस. इति कृत्वा पू. च उप. नोभे अपि गाङ्गोतोविशेषौ स्यातामित्यपरः कल्पः (तु. चन्द्र-भागा-). अथापि  
वा \*अ-लक्ष- > नैत्र. पू. (=अलक्षं यथा स्यात्तथा नन्दयति) इति कृत्वा उस. इति विमृश्यम्। q) वैतु. राती.  
पदविभागः। r) तु. वैप १, ४३४ o। s) तैत्त्या १०, १, १०। t) 'अलक्ष्मीम्' इति खि. (५, ८७, ८) पाभे.।



अलक्ष्मी-मल-नाशन- -नम् शि  
५, १.  
अलक्ष्य-क्षया- -क्षयम् पदं ४; नाप ३,  
८६; योशि ३, १७; -क्षया दे १७.  
अलं-कार-, अलं-कृत-, अलं-कृत्य  
✓अल् > द.  
अलङ्घय- -ङ्घये महा ३, २३.  
अ-ल(ज)>ज्जा'- -ज्जा सार २६८:  
२२.  
अ-लब्ध-  
अलब्ध-विस्तार- -रम् महा ५, ७३.  
अलब्धा(ब्ध-आ)वरण- -णा: गौ  
४, १८.  
अ-लब्धवत्- -वन्तः मैत्रे २, २५.  
अ-लब्धि- -ब्धि: यो १, ६१.  
अ-लब्ध्वा- -त्वां ६, ८, २१; वरा ४, ४०.  
अ-लभमान- -नः शां २, १.  
अ-लभ्यमान- -नः या २, १५.  
?अलं-बुसा- ✓अल् > द.  
अ-लस- -सः गौ १८, २८.  
आलस्य- -स्यम् अना २८; ते १,  
४०; १योत ३०; योशि ५, ४२;  
हंषो ११; -स्वात् योशि १, ७६.  
आलस्या(स्य-आ)क्य- -क्यम्  
यो १, ५९.  
?अलात- -तम् गौ ४, ४८; ४९;  
-तात् गौ ४, ५०; -ते गौ ४, ४९.  
अलात-चक्र- -क्रम् मैत्रि ६, २४.  
अलात-स्पन्दित- -तम् गौ ४, ४७.  
?अलावु<sup>b</sup>-  
अलावु-पात्र- -त्रम् आरु ४.  
अ-लाभ- -भे वृजा ३, १; नाप ५, ६.  
\*अलार्ध- तु. टि. ?अलात-

अलि- ✓अल् > द.  
अ-लिङ्ग- -ङ्गः क २, ३, ८; मैत्रि ७,  
२; त्रवि ८३; अध्या ६८; -ङ्गम्  
मैत्रि ६, ३५; वृज ६, ३; -ङ्गस्य  
मैत्रि ६, ३१; आबो २३; -ङ्गान्  
मुं ३, २, ४.  
अलिङ्ग-पर्यवसान- -नम् योम् १,  
४५.  
अलीक- -के वृजा ४, २१.  
?अलीया<sup>a</sup> मवा ७.  
अ-लू(=रु)त्त- -क्षा: ते १, ११, ४.  
अ-लेप- -पः मैत्रे ११; त्रवि ८९; -पस्य  
१अव २२.  
अ-लेपक- -कः अज ५, ९२; -कम्  
अज ४, ६५; सु २, २, ७३.  
अ-लेप्य- -प्यः मैत्रि २, ७.  
अ-लोक- -का: वृ ४, ३, २२; त्रिता ५,  
१; सार २१९: ६.  
अ-लोक्य-  
अलोक्य-ता- -तार्यं वृ १, ३, २८.  
अ-लोप- -पः व्रम् ३, ३, ४०.  
अ-लोमक, का- -कम्, -का वृ १, ४, ६.  
अ-लोलुप- -पः नाप ३, ३१; ४, १७.  
अ-लोलुपत्व- -त्वम् श्वे २, १३.  
अ-लोलुप्त्व- -प्त्वम् गौ १६, २.  
अ-लोहित- -तम् प्र ४, १०; वृ ३,  
८, ८; मुवा ३.  
अ-लौकिक, का- -कम् स ३७९: ८;  
-का: सार २३२: १९.१; -कौ  
महा ५, १५.  
अलौकिक-गुण- -णः योशि १, १६०.  
अलौकिक-परमानन्द-लक्षणा-  
(ण-अ-स्वङा(गङ-अ-मित-

ने(जम्)>जो-गति- -ति:  
त्रिवि १, ११.

✓\*अल्प

अल्प- -ल्पः गौ ४, ४३; वृज  
९, १२; १३; -ल्पम् क १, १, २६;  
वृ ७, २४, ११; श्वे २, १३; ते  
४, २०; महा ४, ७९; क २८;  
शि ६, ४२; २८३; योम् ४, ३०;  
गौ १८, २२; -ल्पा: वृ ७, ६, १;  
वृज ९, ७; -ल्पे वृ ७, २३, १;  
यो १, ७६; -ल्पेन १संन्या २, १४.  
अल्प-क- -कः महा ५, ७३.  
अल्प-काल- -कालम् महा ५, १६.  
अल्पकाल-भय- -यात् योचु  
९२.  
अल्प-ग्रन्थ- -ग्रन्थम् शि १, ८.  
अल्प-ता- -ता ते ६, २७.  
अल्प-दिन- -नैः भव १, २१.  
अल्प-द्वार- -रम् शां १, ५.  
अल्प-बुद्धि- -द्ध्यः गौ १६, ९;  
-द्धिः १योत २२; अज ४, ५.  
अल्प-भोजिन्- -जी सौ २, २.  
अल्प-मूत्र- -त्रः त्रिवा २, १०७.  
अल्प-मूत्र-पुरीष- -षः १योत  
५७.  
अल्पमूत्रपुरीष-मितभोजन-  
दहाङ्गा(ङ-अ)जात्यनिद्रा-दग्वा-  
युचलनाभाव-ब्रह्म-दर्शना-  
(न-अ)ज्ञात-सुख-स्व-रूप-  
सिद्धि<sup>b</sup>- -द्धिः मं ५, १, ८.  
अल्प-सृष्टा(ष्ट-अ)क्षान- -ना-  
भ्याम् जाद १, ११.  
अल्प-मेधस्- -धसः क १, १, ८;

a) व्यु. ? ✓वृ दीप्तौ > ✓अल् > अल + अर्ध- इति स्थिते षस. मतः \*अला(ल-अ)र्ध- इत्यस्य नैप्रविपरि-  
णामः स्यात् (तु. WW १, ८८; वैतु. अभा. (२, ९, ३०) बस. इति कृत्वा नभ्यपूर्वः कान्तः < ✓ला इति) । b) तु. वैप  
१, ४३५j; वैतु. अभा. [२, ४, १५६ (पाठ १, ८७)] तस. इति कृत्वा नञि पूष. सति उप. < ✓लम्ब- अवनसने इति  
मन्वानाश्चिन्त्यः । उत्तराशुदातातुपपत्तेः । c) तु. वैप १, ४३६e । d) पा. ! 'अलिप्या' इति निसा. (वैतु. उज्ज.  
नभ्यपूर्वम् उप. < ✓ली इति) । e) तु. वैप १, ४३६g । f) पा. ! -कीः इत्येवं शोषः स्यात् । यद्वा लौकिक- इति  
भाष. इति कृत्वा तद्वहिताः अ<sup>०</sup> इत्येवं बस. इ. । g) तु. वैप १, ४३६० । h) इन्द्रगर्भित-पद्ममीतसुरगर्भित-  
बहुमीहिगर्भितः कस. ।

-घसाम् गो ७, २३.  
अल्प-वित्त- -सैः शि ३, १.  
अल्प-विद्- -वित् छां ७, ५, २.  
अल्प-विह- -हः त्रिा २, १०७.  
अल्प-वी(र्व >)यां- -यां: योशि  
१, १५३.  
अल्प-श्रुति- -सैः ब्रम् १, ३, २१.  
अल्पा(ल्प-आ)गम- -मे शि  
७, ३.  
अल्पा(ल्प-आ)युम्- -युः भव  
४, ३.  
अल्पा(ल्प-आ)शान्- -शी त्रिा  
२, १०३.  
अल्पा(ल्प-आ)श्रय- -श्रयः पित्र  
४, ३.  
अल्पा(ल्प-आ)हार- -रः १ योत  
१२४.  
अल्पा(ल्प-उ)पासक- -काः सार  
२२० : ४.  
✓अव्, >आवि<sup>०</sup>, अवते वट् ३१६ :  
१८; अवति छां १, २, ९; वृ १,  
५, ८-१०; अवन्ति वृ १, ५, २०<sup>३</sup>;  
अवतु क शां<sup>०</sup>; तै शां<sup>०</sup>; ऽ<sup>०</sup>२३;  
ॽ<sup>०</sup>; ऐ शां<sup>०</sup>; श्वे शां<sup>०</sup>; कौ  
नाद आबो निर्वा मुद्र अक्ष सौ सर  
व शां<sup>०</sup>; कै गर्भ ना मना व  
अना काला लु ससा शु ते ध्या ब्रवि  
१ योत शां<sup>०</sup>; व शां<sup>०</sup>; ८;  
शारी स्क योशि ए अक्षि १ अव  
कर हृह यो पं प्रा वरा कलि  
शां<sup>०</sup>; मु १, २, ३९<sup>०</sup>; वषं शां<sup>०</sup>;  
हे शां<sup>०</sup>; व ४६६: १७९<sup>०</sup>; १ कौल

शां<sup>०</sup>; वउ शां<sup>०</sup>; अवन्तु वा  
८; ऊ ६३: ११; गोच ६६:  
७९<sup>०</sup>; अव ग ४<sup>३</sup>.  
आवयत् ऐ ३, १०.  
अव- -वः प्रा २, १.  
अवति- -तिम् २ प्र ३५: ५.  
अवनि- -निः कृपु १५.  
अवनि-कृ(श्च)त-जानु-मण्डल-  
-लम् त्रिा ३, १.  
अवनि-पाल-संव- -वैः गो ११,  
२६.  
१ अवमान- -नः अशि ६, ७९<sup>०</sup>.  
१ अवस्- -वः बा ८; ११; -वसे बा  
१२; व ४३७: १२९<sup>०</sup>; ४४२:  
८९<sup>०</sup>; ४४७: १५९<sup>०</sup>; ४५२:  
१९<sup>०</sup>; ४५५: ६९<sup>०</sup>; आषे ९: १८;  
-ॽवांसि व ४४१: १०; ४४६:  
१७; ४५१: १०; ४५४: १६.  
✓अवस्य  
अवस्यु- -स्युः बा ९; ९<sup>०</sup>व  
४४०: २२; ४४६: ५; ४५१: १;  
४५४: ८.  
अवितु- -ता मना २, १९<sup>०</sup>; अरु ६९<sup>०</sup>;  
व ४६१: १३९<sup>०</sup>.  
अवित्री- -त्री सर २, १९<sup>०</sup>.  
ऊति- -ॽतये मना १, ९; व ४६३:  
२३; -ॽतिभिः त्रिा ३, २८;  
व ४२९: १०; वृ १, ५; -ती  
व ४३७: १९९<sup>०</sup>; -ती: बा ११.  
ओम्-  
✓ओम्<sup>२</sup>  
ओम्- ओम्, ओ३म्, ४<sup>०</sup>

ई १७; क १, २, १५; प्र ५, ५;  
मुं २, २, ६; मां १; तै १, २, १; छां  
१, १, १<sup>३</sup>; ५, ३; १२, ५; वृ ३, ९,  
१<sup>३</sup>; ५, १, १; मै ५, २; ३;  
मैत्रि ४, ४; व ४५७: २३<sup>२</sup>;  
ओम्-ओम् व ७.  
ओम्/कृ, ओङ्करोति,  
ओङ्कर्वन्ति पित्र ३, ९.  
ओं-कार- -रः प्र ५, २;  
मां १<sup>३</sup>; ८; १२; छां २, २३, ३<sup>३</sup>; गो  
१, २९; मैत्रि ६, २३; हं १४; अशि  
३, १०<sup>३</sup>; ४, १९<sup>०</sup>; २; ६, १५;  
अ १<sup>३</sup>; ३; वृ २, २; ५; ४, ३<sup>३</sup>;  
१५, ११; वृ १, २<sup>३</sup>; २, ९<sup>३</sup>; १०;  
३, ५; ४, ४; ८, १; २<sup>३</sup>; ३<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; ५<sup>३</sup>;  
नाद ८९<sup>०</sup>; योचू १०३; ब्रवि १२;  
सी २०; राउ ३, १<sup>३</sup>; ४, ३९; कर  
१; प्रा ४, १९<sup>०</sup>; गोउ ४०; १ प्र  
३१: २२; २ प्र ३४: १; ३; १५;  
१७<sup>३</sup>; १८; ३५: ४<sup>३</sup>; ६; १४९<sup>०</sup>;  
लि ३१०: १४९<sup>०</sup>; वट् ३१५: १०;  
११; १६९<sup>०</sup>; १७; ३१७: २२;  
स ३७९: ६; गार ४०५: ७;  
पित्र २, २; १०; ३, १; ४, १; २;  
कश्रु २, २; वउ १, २; ३; गो ९,  
१७; -रम् प्र ५, १; गो १, २४<sup>३</sup>; २८;  
मैत्रि ६, २५; गर्भ ३<sup>०</sup>; वृ १, १;  
३, ९; ४, १-३; ९, १; तै ६, ४३;  
ध्या १४; १९; २०; २४; ब्रवि  
७४; योचू ७१; नाप ८, ३; योशि  
१, ७१; २ प्र ३३: १९; ३४: २;  
५; १०; १२; १६; ३६: १५; गोच

a) -रा-> -रा इत्येवं कृत्वा अच्चा. करणी-विशेषणं द्र. । b) तु. वैप १, ४३७b । c) तैआ ८, १, १ ।  
d) ऐआ २, ७, १ । e) तैआ ७, १, १ । f) ऋ १, २२, १६ । g) तु. आन. नादी.; वैतु. अच्चा. उत्र. महानव- इति  
प्राति. । h) द्वित्वन्तः घा. निर्देशः द्र. । i) तु. वैप १, ४४०f । j) कस. । पूप. सतस. सति यनि. शोधः द्र. । उप.  
षस. । k) 'पुवमानः' इति शौ १०, २, २६; आन., अच्चा. व । l) ऋ १०, १०१, १ । m) ऋ १, ८९, ५ । n) ऋ  
८, २६, २१ । o) ऋ १, २५, १९ । p) ऋ ५, ४, ९ । q) ऋ १०, १५७, ३ । r) ऋ ६, ६१, ४ । s) तु. वैप १, ४४४a ।  
t) 'ऊतिभिः' इति ऋ ८, ६१, १३ । u) ऋ २, २३, ११ । v) ऋ ४, ३१, १ । w) तु. वैप १, ४४६d । x) तु. वैप  
१, ४४६e; वैतु. २ प्र. (३५: ५) यत्र ✓आप् न तु ✓अव् प्रकृतिरिति पक्षो मकार-कौतस्त्यं प्रति समानमक्षिप्तरः ।  
y) तु. वैप १, ४४६e । z) तु. दि. !अमलवरयूस् । a') -रम् इति शोधः द्र. । b') 'मोक्षम्' इति आन. ।

६९:११;२शिसं२१;शि१,२४<sup>१</sup>;  
तारा ८३:२३; पित्र २,५;७:९;  
३,८;९;४,३;४;१०; -रस्य गोउ  
२९<sup>१</sup>;४५<sup>१</sup>; २प्र ३५: २; पित्र  
२,७; -रात् अशि ६,१५; सी२०;  
वटु ३१७: २२; गार ४०५:७;  
पित्र २,३<sup>१</sup>;४<sup>१</sup>;८<sup>१</sup>;९; -राय रापू  
४,१३; -रे वृउ ६,४; पित्र २,६;  
९<sup>१</sup>; -रेण प्र ५,७; छां २, २३,  
३; वृउ २,४; गोपूर ३; २प्र ३३:  
२३; ३७: ३.  
ओंकार-गति-  
-तिम् अ ३.  
ओंकार-ध्वनि-  
नाद- -देन ध्या २३.  
ओंकार-पीठ-  
-ठम् त्रिता २, ६८.  
ओंकारपीठ-  
देवता- -ता आथ ३९९:११.  
ओंकार-प्रभव-  
-वम् ध्या १६; -वा: ध्या १६<sup>१</sup>.  
ओंकार-प्रयुक्त-  
का- -क्तवा २प्र ३३:१३<sup>१</sup>.  
ओंकार-प्रसाद-  
-देन पित्र २,७.  
ओंकार-प्लव-  
-वेन मैत्रि ६,२८.  
ओंकार-बीज-सं-  
बलित- -तम् सार २७६:१४.  
ओंकार-मात्र-  
-त्रम् अशि ४३.  
ओंकार-रथ-  
-थम् अना २.  
ओंकार-रूप-  
-रूपम् अ २,२८; -वे वृउ २,९.

ओंकार-वाच्य-  
हीना(न-आ)त्मन्- -रमा ते ४,  
७८.  
ओंकार-संभूत-  
-त: गोउ ४५.  
ओंकार-स्वर-भू-  
षित- -तम् पं १४.  
ओंकार-स्व-रूप-  
ओंकारस्व-  
रूपिन्- -पिणम् भ १, १.  
ओंकारा(र-अ)प्र-  
विद्योत- -तम् वृउ ६,१;२;३<sup>१</sup>.  
ओंकारा(र-आ)-  
न्तरालिक- -कम् गोपू २६.  
ओंकारा(र-अ)धि-  
कारिन्- -री वा १८.  
ओंकारा(र-अ)र्थ-  
स्व-रूप- -प: ते ३,४३.  
ओंकारा(र-आ)-  
विभाव-लीला-रूप-श्री-रा-  
धारसिकानन्द-रूप- -पम् सार  
२५१: ८.  
ओंकारो(र-उ)चा-  
रण-प्रा(प्र-अ)न्त-शब्द-तरवा-  
(त्व-अ)नुभावन- -नात् शां  
१, ७, २९.  
ओंकृत- -तम् पित्र  
२, ५.  
अव्/काश्  
अव-काश- -शम् मैत्रि ६,२२; नाप  
७; आपै ७: २०; -शेषु नाप  
६, २.  
अवकाश-प्रदान- -ने गर्भ १.  
अवकाश-विभूत-दर्शन-पिण्डी-  
करण-धारणा- -णा: त्रिमा १, ७.

अव्/कुण्ड > कुण्ड, अवकुण्डय वि  
२८.  
अव्/कृप्(सामर्थ्ये) > कल्प, अव-  
कल्पते राजा ३, १; वृत् ५, १०;  
वृजा ६, १२; १अव १८<sup>१</sup>.  
अव्/कृ > कीर  
अव-कीर्ण-  
अवकीर्णिन्- -णीं मना १,  
१५९<sup>१</sup>; इ १७: ७.  
अव-कीर्णं पै ४, ५.  
अ-वक्तव्य- -व्यम् वृउ ९, १८.  
अ-वक्तृ- -क्ता मैत्रि ६, ११.  
अ-वक्त्र-  
अवक्त्र-चेतस्- -तस: क २, २, १.  
अव्/क्रम > क्राम्, अवक्रामेत् मना  
२, ११९<sup>१</sup>.  
अव्/क्री, अवक्रीणीयात् वृ ६, ४, ७.  
अव्/क्षि(क्षये) > क्षी, अवक्षीयस्व कौ  
२, ९९<sup>१</sup>; अवक्षेष्टा: कौ २, ९९<sup>१</sup>.  
अव्/गच्छ, गम्, अवगच्छति पित्र  
३, ४; अवगच्छ अव्य १, गो १०, ४१.  
अवगच्छते महा ४, ५७; भव २,  
५६; अवगम्यताम् महा ४, ५२.  
अव-गच्छत्- -च्छसु पित्र ३, ४.  
अव-गत- -त: वृउ ९, ८; -तम्  
पप ४१७: २.  
अवगत-विगतै(त-ए)क-तत्-  
स्व-रूप- -प: अज ४, ७२.  
अव-गत्य गु ४६.  
अव-गन्तव्य- -व्यम् जाद २, ९.  
अव्/गाह्, अवगाहते सांका ३५.  
अव-गाह् सृता १, २३.  
अव-गुण- -णा: सार २९१:१२.  
अ-वचन- -नेन वृउ ७, ७<sup>१</sup>.  
अ-वचनीय- -व: सार २४४: ५.

a) 'न:' इति शोब: इ. । b) 'न:' इति निसा. । c) 'नम्' इति अ. न. । d) 'ओंकारम् प्रयुक्ते'  
इति गोत्रा १, १, २२ । e) 'ओंकाराप्र' इति निसा. । f) निसा. अज्या. च 'रान्त' इत्यक्षरद्वयं मध्यतश्च्युतं इ. ।  
g) 'उपकल्पते' इति अज्या. । h) तैत्ति १०, १, १५ । i) तैत्ति १०, ९, १ । j) 'अपक्षीयस्व' इति अज्या. शांका  
४, ९, च । k) 'अवक्षेष्टा:' इति शांका ४, ९, 'अवक्षिष्टा:' इति च अज्या. । l) परंपरितेन कस. (=ज्ञाताऽज्ञातोभय-  
विलक्षणं सद् अवगतं च विगतं च यत्तदेकं च तच्च) गर्भितः वस. (वैतु. उत्र. अन्यथा-विग्रहः, अंशतो विकलितपाठश्च) ।



अव/ज्ञा, > जा, अवजानन्ति गी ९,  
११.

अव-ज्ञा- -ज्ञया महा २, २२.

अव-ज्ञात- -तम् गी १७, २२.

अव-ज्ञान- -ने लि ३११:९.

अवट<sup>१</sup>- -टं मैत्रि ६, २८; -टेषु नी २,  
२३७<sup>b</sup>.

अवट-कृत- -कृत मैत्रि ६, २८.

अव/तन्

अव-तस्य नी २, १०५<sup>c</sup>.

१ अवतारान्तेहि<sup>१</sup> कृपु १९.

अवति- /अव् द.

अव/तृ > तारि, तीर, अवतारय-अव-  
तारय तां २१५: २३; अवता-  
रयेत् सु २, २, ६; शि ६,  
१४४.

अव-तार- -रः गोउ १८; नापू ५,

१; -रस्य गोउ १८; -राः कृ १;

गोउ ३३<sup>०</sup>; नापू ५, ४; सार

२४९: १३; -राणाम् गोउ १८;

-रान् कृ १<sup>१</sup>; -राय गौ ३, १५;

अवतार-कला- -लाः सार

२७५: १५.

अव-तीर्ण- -र्णः कृ ७; गोउ १६;

वउ ५, ३३; -र्णस्य त्रिवि

३, ५.

अ-वदत्- -दतः वृ ४, १, २; -दन्तः

छां ५, १, ८; वृ ६, १, ८.

अव/दा<sup>१</sup>

अव-दान- -नम् मैत्रि ६, ३३.

\*१ अवदान्य- अभ्यव/दा > \*अ-

भ्यवदान्य- टि. ३.

अव/दै > दा (शोधने)

अव-दात-

अवदात-मनस्- -नाः मै ५, १;

मैत्रि ६, १.

अ-वय- -यम् कृ १.

अव/धा, अवाधा: <sup>b</sup> छां ६, १३, १.

अव-धाय छां ६, १३, १.

अव-धि- -धिः ते ५, १; अश्या

४१.

अव-हित, ता- -तः वृ १, ४, ७; नाप

२; ३, १; पप ४१९: १९; -ताम्

मना २, ११५<sup>१</sup>.

अव/धू, अवधून्वन्ति मना २,

७९५<sup>१</sup>.

अव-धूत<sup>१</sup>- -तः नि ५६; मं ५, १, ९;

नाप ५, १<sup>१</sup>; अ २३; १ संन्या २,

१३; १ अव १<sup>१</sup>; २; -तम् शां ३,

१; १ अव १; -तस्य नाप ५, १;

७<sup>३</sup>; -ताय दत्ता २.

अवधूत-क<sup>१</sup>- -कम् सु १, १,

३७.

अवधूत-मार्ग-स्थ- -स्थः अ ३.

अवधूता(त-आ)दि-संज्ञव- -वम्

मैत्रे १, ४, ९.

अव/धृ, > धारि, अवधारय जाद ४,

६१<sup>१</sup>; गु २५; अवधारयेत् नाद

४०.

अव-धार- -रम् पा ६, १.

अव-धारण- -णात् ब्रम् ३, ३, १७.

अव-धारणा- -णा वरा १, १३.

अव-धारयत्- -यन् पा ६, १.

अव-धार्य गोउ ३०; शि ६, १४४.

अव-धृत- -तः वृजा २, ८; -तम् का

१०.

अ-वध्य- -व्यः गी २, ३०.

अव/नह

अव-नह- -हम् मैत्रि ३, ४.

अवनि- /अव् द.

अव/नी, अवनयति वृ ६, ३, २<sup>०</sup>; ३<sup>१</sup>;

अवनयेत् छां ५, २, ४; ५<sup>१</sup>.

अव/पद्, अवपद्यन्ते छां २, ९, ६.

अव/पद्, अवपश्यति भ २, २५;

२९<sup>१</sup>; अवपश्यन्ति, अवपश्येताम्

भ २, २९.

अव/वन्ध

अव-बद्ध- -द्धम् मै ३, ४; मैत्रे १, ३.

अव/वुध

अव-बुद्ध- -द्धाः अज ५, ४९.

अव-बुध्य त्रिवि ६, १; १०; ८, १३.

अव-बोध- -धम् महा ५, २३.

अवबोधै(ध-ए)क-रस- -सः

आवो ४.

अव-बोधन- -नम् महा ५, ३३; वरा

४, ९; -नात् योशि २, ७.

अव/भास्, > भासि, अवभासते

त्रिब्रा १, २; सर ३, २०; अव्य ७.

अवभास्यन्ते १ संन्या २, २२.

अव-भासक- -कः १ संन्या २, २०;

-कम् १ आ ९.

अव-भासय(त् >)न्ती- -न्ती व ८.

अव/भृ

अव-भृथ<sup>१</sup>- -थः छां ३, १७, ५; मना

२, ८०५<sup>१</sup>; -थम् प्रा ३, १; ४, १.

अव/मन्, > मानि, अवमन्यन्ते नाप

६, ४; अवमन्येत नाप ३, ४२;

अवमन्येरन् नाप ५, ३०.

अव-मत- -तः नाप ३, ४१; ५,

२९.

अव-मन्तृ- -न्ता नाप ३, ४१.

२ अव-मान- -नम् नाद ५४; -नस्य

नाप ३, ४०.

अव-मानयत्- -यन्तम् मैत्रे १, ४,

१२.

अव-मानित- -तः नाप ५, २७; -ताः

इ १२: १६.

१ अवमान- /अव् द.

a) तु. वैप १, ४५० g. b) मा १३, ७। c) मा १६, १३। d) पा. १ 'अवताराः। अतः। हि' इति सु-शोधः पदविभागः द.। e) 'रभेद-' इति निसा., अश्या. संटि.; 'अधिकारभेद-' इति आन. च। f) एकतरत्र 'राः' इति अश्या.। g) दानार्थे शक्ये सत्यवच्छब्दनाऽर्थो ध्वन्यमानः द.। h) 'अवाधाः' इति निसा. पा. उपेक्ष्यः। i) तैआ १०, ९, १। j) तैआ १०, ६३, १। k) 'पुत्रधारय' इति मुपा. यनि. सु-शोधः द.। l) तु. वैप १, ४५० b। m) तैआ १०, ६४, १।

२अव-मान- अव/मन् द्र.  
 अव/मुच् अवमुच्यते शि ६,१८०.  
 अव/मु, अवम्रियते आर्षे ८:४.  
 अव/मुश्, अवमर्शतु मना १,१३९<sup>a</sup>.  
 अव-मुश्च छां ६,१३,१.  
 अव/यज्, अवयजामहे मना २,  
 ५७९<sup>b</sup>.  
 अव-यजन- नम् मना २,५९१<sup>c</sup>.  
 अव-यत्- १अवे द्र.  
 अव/यु  
 अव-यव- -वा: नाप ६,१; गार  
 ४०६:१२; -वै: गु ५५.  
 अवयव-भूत- -तै: श्वे ४,१०.  
 अवर्- -र: कौ ३,१; -रम् मुं १,२,७;  
 वृ ४,३,१२; शौ ५२:१०; गी  
 २,४९; -रस्य व्रम् २,१,१६;  
 -राणि मना २,७८९<sup>d</sup>; -रेण क  
 १,२,८.  
 अवर्-पुरुष- -पा: छां ४,११-१३,  
 २.  
 अव/रुध्, अवरुध्ने छां २,१५,२;  
 वउ ३,१२; अवरुणद्धि वृ २,  
 २,१; अवरुन्धाम् कौ २,३९<sup>e</sup>;  
 अवारुन्ध<sup>f</sup> वृ १,५,२१.  
 अवरुणो वृ ३,१,१.  
 अव-रोध- -व: व्रम् ३,३,३३.  
 अव-रोधि(न् >)नी- नी कौ २,३<sup>g</sup>.  
 अव/रुह्, अवारुह् नी १,२.  
 अव-रोहत्- -हन्तम् नी १,१;  
 २,१.  
 अव-वर्ण- -र्ण: श्वे ४,१; व्रवि ८५; सार  
 २७९:२२; -र्णम् मुं १,१,६.  
 अव-वर्ण-भोजन<sup>h</sup>- -न: नाप ४,३१.  
 अव-वर्ण- -वर्ण: २आ ३.

अव/लम्ब्, अवलम्बते तै १,६,१;  
 अवलम्बन्ते भव १,३६.  
 अव-लम्ब- -म्बम् नाद ५६.  
 अव-लम्ब्य सं १,२,३; महा ५,  
 १७२; ६,३८; तुअ ७; २२;  
 १संन्या २,५०; पत्र ३,१५.  
 अव/लिप्  
 अव-ल्लि- -ल्लै: शि ७,८५.  
 अव/लुप् >म्, अवलुम्पतु मना  
 २,३१९<sup>i</sup>; ३२९<sup>j</sup>.  
 अव/लोक्, > लोकि, अवलोक्य  
 अन्न ५,४४; अवलोकयेत् सं १,  
 २,३; महा ४,२३.  
 अवलोक्यते महा ४,५; २६;  
 ५,७२.  
 अव-लोक- -कम् पठं ४<sup>k</sup>.  
 अव-लोकयत्- -यन् अता २; शि  
 ७,५७.  
 अव-लोकित- -त: अभ्या २५.  
 अव-लोक्य नाप १<sup>l</sup>; २<sup>m</sup>; त्रिवि ६,  
 १५; १७:२०; २१:२३; २५:७,  
 १<sup>n</sup>; १५:८,१४; महा २,२८:५,  
 १५८.  
 अव-वश- -श: मैत्रि ६,३०; महा ४,  
 १३१; छाग २५:८, गी ३,५;  
 ६,४४:८, १९; १८,६०; -शम्  
 वा ५; गी ९,८; -शै: शि ६,  
 १६५.  
 अव/शिष्, >शेषि, अवशिष्यते ई  
 शां<sup>o</sup>; वृ शां<sup>p</sup>; ५,१,१; जा हं पठं  
 सुवा. मन्त्रि नि त्रिजा सं शां<sup>q</sup>;  
 शु ३,१२; अता शां<sup>r</sup>; ३; शां  
 १,७,२३; पै शां<sup>s</sup>; २,५४; महा  
 २,६५; ४,१६; ५३; ५५; ६,२;

३; १संन्या २,२७; अन्न २,३२;  
 ३३:५,३६; भितुअ अभ्या ना या  
 शा शां<sup>t</sup>; कठ ४३; यो ३,२५;  
 नु शां<sup>u</sup>; सार २७८:१; २८७:  
 १८; गी ७,२.  
 अवशेषयेत् १संन्या २,५९.  
 अव-शिष्ट- -ष्टम् मैत्रि ६,९; १यौत  
 १४३; अन्न ५,९५; त्रिवि ४,  
 १०; -ष्टानाम् वउ ४,२१.  
 अवशिष्ट-ता- -तया ससा १,  
 २६.  
 अवशिष्ट-द्रा-द्रन-स्थान-  
 -नेषु त्रिवि ७,४१.  
 अवशिष्ट-मुख-स्व-रूप<sup>v</sup>- -प:  
 ससा १,३५.  
 अवश्य- -श्य: २प्र ३४:२९<sup>w</sup>; -श्यम्<sup>x</sup>  
 शु ३,१४; नाप ४,४; त्रिवि २,  
 ४; म १,१०; स्व ६२:५; शि  
 ७,१२१; व ४५९:३; ४६५:  
 १५; भव १,४२; -श्यानि क १,  
 ३,५.  
 आवश्यक-  
 आवश्यक(क-आ)दिक-  
 -कम् वृजा ४,६.  
 अवश्यं-भाविन्-  
 अवश्यंभावि-त्व- -त्वात् सांम्  
 ५,८२.  
 अवश्या(श्य-अ)नुष्ठेय-  
 अवश्यानुष्ठेय-त्व- -त्वात् व्रम्  
 ३,४,२७.  
 अव-ष्टब्ध-, अव-ष्टम्ब अव/स्त-  
 म् द्र.  
 १अवस्- /अव् द्र.  
 २अवस्<sup>y</sup>- -व: नी १,१.

a) तैआ १०,१,१३। b) तैआ ३,१०,८,२। c) तैआआ १०,५९। d) तु. वैप १,४६१b इत्यत्र चरमः कल्पो यत्र प्रस्तावितचरम् उप. भर- इति मौषि. \*भर्- + \*भर्- इत्येतज्जः बस. स्वादिति विशेषस्तु द्र.। e) तैआ १०,६२,१। f) 'अवरुण्वात्' इति शांआ ४,३<sup>1</sup>। g) 'अवारुण्वात्' इति निसा.पा.उत्सृजः द्र.। h) 'वर्ण- वर्णः' इति अख्या. संटि.। i) तैआ १०,२४,१। j) तैआ १०,२५,१। k) 'अवलोकनम्' इति निसा., 'अवलोकनमात्रेण' इति अख्या. च। l) तु. वैप १,४६५d। m) 'अवि' इति शोबः द्र.(तु. आन.)। n) 'अवशः' इति गोत्रा १,१,२३। o) द्वि१ सत् वा. कचिद् क्विबि. भवति। p) तु. वैप १,४६५k।

!अव-सक्तिका- -काम् शि ७, १८.  
अव/सद्, >सीद्, सादि, अवसी-  
दति महा ६, ६३; ६५; शि ७,  
१२४.

अवसादयेत् गी ६, ५.

अव-सादयत् -यन् छां २, २३, १.

अव/सृ

अव-सर- -रः योशि ४, ४; अज ५,  
७०; -रम् अध्या ५; -रे सार  
२७५; १०; ११; २२.

अव/सृज्, अवासृजत् पा ६, १.

अव-सृष्ट- -ष्टः मैत्रि ६, ३६.

अव/सृप्, अवसर्पति सूता १, १२९<sup>b</sup>.

अव/सो >सूसा, अवस्यतम् लि  
३१० : २९०.

अव-सान- -ने अ १<sup>३</sup>; वृष् २, २;  
वृड ३, ५; स्व ६१ : १; शि २,  
२५; -नेभ्यः मना २, ६७९<sup>d</sup>.

अवसान-वति- -तिभ्यः मना २,  
६७९<sup>d</sup>.

अव-साय छाग २५ : ७.

अव/स्कन्द, अवस्कन्दति प्रा२, १०.

अव/स्तम्भ

अव-ष्टब्ध-

अवष्टब्ध-तत्-पद- -दः महा  
४, ९८.

अव-ष्टम्भ प्र२, २; ३; ६, ८; हं ६; वृड  
३, १०; त्रिवा २, ४७; छां १,  
३, १०; महा ६, ६६; अज २,  
१९; ४, ६४; त्रिता ३, ८; गी ९,  
८; १६, ९.

अ-वस्तु- -स्तु गौ ४, ८७; ८८; महा

३, १७; -स्तुनः सांसू १, ७८;

-स्तुना सांसू १ २०.

अ-वस्तुक- -कः, -कम् गौ ४, ३६.

अ-वस्तुतस्(>) पाद्य २, २७.

अ-वस्तुत्व- -स्वम् गौ ४, ४५; सांसू  
१, ७९.

अव/स्था, >तिष्ठ, अवतिष्ठते वृजा  
७, ४; ते ४, ४; नाप ३, ५२; ६,  
१; तुअ ५; पदं १; पप ४२०:  
११; गी ६, १८; अवतिष्ठति ब्रवि  
११<sup>१</sup>; योशि १, ५७; अता ७;  
गी १४, २३; अवतिष्ठन्ते क २,  
३, १०; मैत्रि ६, ३०; अवतिष्ठे  
३, १०.

अवस्थायते पदं १; ४<sup>१</sup>.

अव-स्थ- -स्थः मैत्रि २, ७.

अव-स्था- -स्थया नाद ५३; -स्था  
१योत २०; नाप ५, १; निर्वा  
२९८: ४; शां १, ७, १०; १संन्या  
२, ४६; अज ५, ८६; यो १, ८७;  
वरा २, ७६; ७७; सार २८९ :  
२१; -स्थाः महा ५, २०; शारी  
५; वा १६; नाप ६, १<sup>१</sup>; योचू  
७२; मं २, ४, १; पप ४१९ :  
२२<sup>३</sup>; २३; गोच ६६ : १६;  
-स्थानाम् योचू ७२; -स्थाम्  
सार २२० : २१; शि ७, १२३;  
-स्थायाम् महा ५, १९; -स्थासु  
मैत्रि ६, १०; त्रिवा २, १३; योचू  
७३.

अवस्था-चतुष्टय- -यम् ते ६,  
१०५.

अवस्थाचतुष्टय-चतुष्टय-गो-  
चर- -रः पप ४१९ : २१.

अवस्था-तस्(>) सांसू १, १४.

अवस्था-त्रय- -यम् नाद ५४;

अद्वै ४; -याणाम् मा ३७<sup>b</sup>.

अवस्थात्रय-भाज् -भाक्

पै २, ३३.

अवस्थात्रय-भावा(व-अ)-

भाव-साक्षिन् -क्षि<sup>१</sup> सता १,  
१०<sup>१</sup>.

अवस्थात्रय-हीना(न-आ)-

स्मन् -स्मा ते ४, ७८.

अवस्था-त्रितय- -यम् ते ५,  
८०; वरा १, ६; -येषु राड ५,  
२३; २४.

अवस्थात्रितया(य-अ)तीत-

-तम् पं १३.

अवस्था-भेद- -दस्य मं २, ४,  
४; -दात् नाप ५, १.

अवस्था-वत् सांसू २, २७.

अवस्थे(स्था-ई)श्वर-भेद- -दः  
नाप ५, १.

अव-स्थानुम् गी १, ३०.

अव-स्थान- -नम् सोसू १, ३.

अव-स्थित, ता- -तः हं २१; अ १;

मै २, १०; ११; ४, ३; मैत्रि २,

७<sup>३</sup>; ६, ६; ७, ११; छु २; ब्रवि

३३; वा २९; ३०; महा २, ५१;

तुअ ६; पप ४२० : ११; अव्य

२; जाद ५, ३; सार २५० : ४;

सांका ६५; गी ९, ४; १३, ३२;

-तम् क १, २, २२; नाप ९, १५;

त्रिवि ६, २५; ७, ५०; महा ६,

४; अज २, ३७<sup>१</sup>; ५, २१; शि

५, ४५; गी १५, ११; -ता मैत्रि

७, ११; -ताः मै ५, ७; वृड ६,

३; गी १, ११; ३३; २, ६<sup>१</sup>; ११,

३२; -तान् त्रिवि ६, २०; २३;

७, १; गी १, २२; २७; -तैः १संन्या

१, १; कश्चु १, १.

!अवस्थित-स्व- -स्वम् मै ३, ५<sup>३३</sup>.

a) 'अव-सक्तिका' इति शोधः द्र. (तु. मनु ४, ११२)। b) मा १६, ७। c) ऋ ६, ७४, ३। d) तैत्तिर्या  
१०, ६७। e) 'अविस्कन्दति' इति आन.। f) 'इव तिष्ठति' इति अज्या., 'एव तिष्ठति' इति आन. च। g) 'अव-  
तिष्ठते' इति अज्या.। h) 'अवस्थात्रयैकीकरणम्' इति अज्या.। i) 'क्षी' इति मुपा. यनि. सु-शोधः द्र.। j) 'अव-  
स्थात्रयभावाद्, भावसाक्षि' इति आन.। k) 'इव स्थितम्' इति मूको.। l) 'नः स्थिताः' इति SCHR. [विदु. वे.  
(NIA २, २३१)]। m) 'अनवस्थितत्वम्' इति शोधः द्र.। 'अस्थिरत्वम्' इति अज्या.।





अवाप्स्यसि महा २, १९; गी २, ३३; ३८; ५३; १२, १०; अवाप्स्यथ गी ३, ११; अवाप्स्यामि शां २, १.  
अवाप्स्यते अन्न १, ३०; गी १२, ५.  
अवा(व-आ)स-सः क १, २, ३.  
अवा(व-आ)सवत्-वान् महा २, १; शि ७, १३१.  
अवा(व-आ)स्य-स्यम् गी ३, २२.  
अवा(व-आ)प्तुम् गी ६, ३६.  
अवा(व-आ)प्य नाप ७; पै २, ४१; अन्य ३; भ २, २५; गी २, ८.  
अवाय- १ अवे द.  
अ-वायु-यु वृ ३, ८, ८; युः ब्रवि ८६.  
अ-चारित-तम् कुं १३.  
अ-वासन-नम् अन्न १, २९; ३०.  
अवासन-त्व-स्वात् अन्न ४, ४८; सु २, २, २९.  
अवासन-म (नस् >) नो-ध्यान-नात् शां १, ७, ३५.  
अ-वासस्-साः नाप ३, ११; ४, १७; शां ३, १.  
अ-वास्तव-वम् वरा ४, ३०.  
१ अवि-√ अ वृ द.  
२ अवि-वयः छां २, ६, १; १८, १; -विः वृ १, ४, ४.  
आविक-कम् १ संन्या २, ९५.  
अवय-अवे मना १, १५९<sup>b</sup>.  
अ-विकम्प-म्पेन गी १०, ७.  
अ-विकल-लः मैत्रि १, १; आबो ६.  
अविकले(ल-इ)न्द्रिय-यः नाप ३, ६८.  
अ-विकल्प-ल्पः ब्रवि ९०; नृउ २, ९; ८, ५<sup>१</sup>; स्पेन अध्या १७.  
अविकल्प-तस् (>) शि ६, १२२.  
अविकल्प-रूप-पम् नृउ २, ९.

अविकल्परूप-त्व-स्वात् नृउ २, ९.  
१ अ-विकार-अविकारिन्-री ब्रवि ८६.  
अविकारि-त्व-स्वात् नृउ ८, ३.  
२ अ-विकार-रः-रः नृउ ९, २; अध्या ६९; कुं २५; रस्मि २८; कुं २३.  
अ-विकार्य-यः गी २, २५.  
अ-विकृति-तिः भव २, १४; सांका ३.  
अ-विक्रिय-यः नृउ २, ३; ९, ११; ब्रवि ८९; -यम् नृउ ९, १८; अध्या ६०; पै १, ३; -ये नृउ ९, ९.  
अविक्रिया(य-आ)त्मक-कः सु २, २, ७४.  
अ-विघात-तः सांका ४५.  
अ-विचार-राब पित्र ५, ६; ७<sup>३</sup>; -रेण ब्रवि २८.  
अविचार-कृत-तः पै २, ५१.  
अविचार-तस् (>) शि ७, ३०.  
अ-विचिकित्स-त्सः वृ ४, ४, २३; मैत्रि ७, ७<sup>d</sup>.  
अ-विचिकित्सत्-त्सन् नृउ ७, ८<sup>३</sup>; १४.  
अ-विचेतन-इ<sup>१</sup> नानि ह १५; सर २, ७.  
अ-विच्छिन्न, छा-छाः ब्रवि ४४; पै २, ३०; -न्नम् वरा ५, ४६; -न्ना सार २८८ : २३.  
अविच्छिन्न-चिदा(त्-आ)त्मन्-त्मने १ संन्या २, ३१.  
अविच्छिन्न-ज्ञान-नात् नाप ७.  
अ-विच्छेद-दात् ब्रम् २, २, २२.  
अ-विजानत्-नन् छां ७, १७, १; -नताम् के २, ३.  
अ-विज्ञात, ता-तः वृ १, ५, १०; ३, ७, २३; -तम् के २, ३; छां ६, १, ३; ४, ५; ७<sup>३</sup>; वृ १, ५, ८; १०; ३, ८,

११; पं २८; नाप ५, १; पित्र १, ७; -ताम् मन्त्रि ६६.  
अ-विज्ञात्-ता छां ७, ९, १.  
अ-विज्ञान-नम् तै २, ६, १.  
अ-विज्ञानवत्-वान् क १, ३, ५; ७.  
अ-विज्ञाप्य शि ७, २४.  
अ-विज्ञाय-वे ६, २०; योशि १, ६२; नाद २७.  
अ-विज्ञेय-यम् अव्य १<sup>३</sup>; गी १३, १५.  
अ-विज्वलत्-लन् ब्रवि ९०.  
अ-वि-तथ-थाः गौ २, ६; ४, ३१.  
अचित्-√ अ वृ द.  
अ-वित्ति-त्या छां १, ११, २.  
अ-वित्त्वा छां १, २, ९.  
अवित्री-√ अ वृ द.  
अ-विदित-तः वृ १, ४, १५; -तम् त्रिवि ८, १४<sup>३</sup>; -तात् के १, ३; पाशु २, १३.  
अ-विदित्वा वृ ३, ८, १०<sup>३</sup>.  
अ-वि-दूर-रे छाग २३ : ७.  
अ-विद्ध-द्धः छां ८, ४, २.  
अ-विद्य-अविद्य-त्व-त्वम् या २, १६.  
अ-विद्यमा(न >) ना-ना महा ४, १३३.  
अविद्यमान-कलु-विषय-सुखा-(ख-आ)शय-याः त्रिवि ४, १४.  
अ-विद्या-द्यया ई १०; ११; वृ ४, ३, २०; मैत्रि ७, ९; महा ५, १०९; भव ३, १९<sup>b</sup>; -द्या क १, २, ४; छां १, १, १०; स्वे ५, १; मैत्रि ७, ९; त्रिवि ४, ८; शां ३, १<sup>१</sup>; महा ४, १०२; ११४; ११६; १२८; १३३; ५, ११३; १३२; १ संन्या २, ८३९<sup>१५</sup>; अन्न ५, १०; ११२; पाशु २, १८; मवा ३<sup>११</sup>; १ आ ४;

४) तु. वैप १, ४० १२। ५) ऋ ९, ९७, ४०। ६) वस. इति कृत्वा १ संख्याकात् स-रूपात् पृथङ् निर्दिश्यते।  
७) वैतु. राती. 'अविधिषत्सः' इति। ८) ऋ ८, १००, १०। ९) 'विज्ञातम्' इति निसा। १०) 'ता' इति अज्या। ११) मा ४०, १४। १२) 'विद्या' इति अज्या। १३) 'अविद्या लोकाऽण्डं तमोऽद्वक्' इति सु-शोधा चतुष्पदी द.  
[न्लोकाऽण्डभूतं चाऽदर्शनरूपं च तम एवाऽविद्या (वैतु. उब्र. एकमेव पदमिति प्रतिपादुकोऽसंगतार्थः)]।

वृत् ९,२;५;९; ससा १, १;६;  
 ते ५,९४;६,२०; दे १; भव ३,  
 १०; सांसू ५, ६५; योसू २,४;  
 ५,२४; -द्याः सार २५८: १३;  
 -द्याम् ई ९;११; वृ ४,४,३;४;  
 १०९<sup>a</sup>; मैत्रि ७,९<sup>c</sup>; अन्न ४,३;  
 भव ३,१९<sup>d</sup>; -द्यायाः प्र ६, ८;  
 ते ५, ५३; त्रिवि ४, १२<sup>e</sup>; ५,  
 १;२; भव ३, ८; ११; -द्यायाम्  
 क १,२,५; मुं १,२,८; ९; मैत्रि  
 ७,९.  
 आविद्यक<sup>b</sup> - कम् त्रिवि २,४.  
 अविद्या(द्या-अं)श- -शे महा ५,  
 १६७.  
 अविद्या-कार्य- -याणि त्रिवि ४,  
 १२;१४.  
 अविद्याकार्य-हीन- -नः त्रिवि  
 ९०.  
 अविद्या-क्षय- -यः महा ४, १०८.  
 अविद्या(द्या-आ)ख्या- -ख्याम् पित्र  
 ६,१४.  
 अविद्या-ग्रन्थि- -न्थिम् मुं २,१,१०.  
 अविद्या(द्या-अ)ण्ड- -ण्डम् त्रिवि  
 २,१६;६,१९.  
 अविद्या-तत्सु(>) सांसू १,२०.  
 अविद्या-तत्कार्य-हीन,ना- -नः वृत्  
 २,११; राउ ३,१; वउ १, १६;  
 ५,४२; -ना विद्या ४<sup>g</sup>.  
 अविद्या-तरु-संभूत-बीज- -जम्  
 भव ३,९.  
 अविद्या-तिमिरा(र-अ)तीत- -तम्  
 अत्ति ४८.  
 अविद्या-त्व- -त्वम् अन्न ५,१९.  
 अविद्या-धारक- -कः त्रिवि १,१.  
 अविद्या-नाश- -शः महा ४,११०.  
 अविद्या-पाद<sup>f</sup>- -दः त्रिवि १,७;९;  
 -दम् त्रिवि ४, १<sup>h</sup>; ३; ६,१९<sup>g</sup>;

-दे त्रिवि २,४;८,४.  
 अविद्या-प्रपञ्च- -ञ्चः त्रिवि ३,२<sup>i</sup>;  
 -ञ्चस्य त्रिवि ३,२.  
 अविद्याप्रपञ्च-ज्ञान- -नम् त्रिवि  
 ६,१.  
 अविद्या-भूत-वेष्टित- -तः पै २,४८.  
 अविद्या-मय- -यान् वरा ३, २८;  
 अन्न ४,४.  
 अविद्या-मल- -लम् महा ५,१०६.  
 अविद्या-महा-ग्रन्थि- -न्थिम् रुह  
 ३७.  
 अविद्या-लक्ष्मी- -क्ष्मीम् त्रिवि ६,  
 १०.  
 अविद्या(द्या-आ)वरण- -णम् स  
 ३७९: २०.  
 अविद्या-वश- -शः कर ३९.  
 अविद्या-विहार- -रः त्रिवि १,१.  
 अविद्या-शक्ति-योग- -गः सांसू  
 ५,१३.  
 अविद्या-शबल- -लम् त्रिप्रा १,२;  
 त्रिवि १,११;२,१४.  
 अविद्या(द्या-आ)श्रय- -यम् त्रिवि  
 ४,१०.  
 अविद्या-सागर-प्रतिबिम्बित-नि-  
 त्य-वैकुण्ठ-प्रति-वैकुण्ठ-  
 -ण्डम् त्रिवि ६,१६.  
 अविद्या(द्या-अ)स्मिता-राग-द्वेषा-  
 (ष-अ)मिनिवेश- -शाः योसू  
 २,३.  
 अ-चिद्वस्- -दुषः सार २३५: ११;  
 -दुषाम् छां ८,६,५; -द्वांसः वृ  
 ४,४,११९<sup>i</sup>;६,१,११;४,४;मना  
 २,५९९<sup>j</sup>; गी ३,२५; -द्वात् तै  
 २,६,१; छां १,१०,९-११;११,  
 ४-९;५,११,५;२४,१;वृ ३,७,  
 १;६,४,३; वरा २,७; आर्षे ७:  
 १३;८:३.

अ-विधान-

अविधान-तत्सु(>) नाप ४, २५;  
 भव ५,५  
 अ-विधि- -धिना मुं १,२,३.  
 अ-विधि-पूर्वक- -कम् गी ९,२३;  
 १६,१७.  
 अ-विनश्यत्- -श्यन्तम् गी १३,२७.  
 अ-विना<sup>k</sup>  
 अविना<sup>l</sup>/भू  
 अविना-भाविन्- -विनी अन्न  
 ५,५२.  
 अविना-भाव्य- -व्यः रापू ४,४.  
 अ-विनाश-  
 अविनाशा(श-आ)त्मन्- -स्मा महा  
 ५,१००.  
 अविनाशिन्- -शिअन्न १,२२;२,३९;  
 ससा १,३१९<sup>m</sup>;३२; गी २,१७;  
 -शिनम् गी २,२१; वीवृ ४,५,१४  
 अविनाशिनी- -नीम् अन्न  
 २,१४.  
 अविनाशि-त्व- -त्वात् वृ ४,३,  
 २३-३०.  
 अ-विनिवृत्ति- -त्तेः सांका ५५.  
 अ-विपर्यय- -यात् सांका ६४; -ये  
 १अव १७.  
 अ-विपश्चि(श-चि)त्- -चितः गी ४,  
 ९७; गी २,४२.  
 ?अ-विपाश<sup>n</sup>- -शः मैत्रि ७,७.  
 अ-विप्ल(व>)वा- -वा योसू २,२६.  
 अ-विभक्त- -कम् गी १३,१६; १८,  
 २०; -क्तात् वृ ३,१०.  
 अ-विभाग- -गः ब्रसू २, १, १३;४,  
 २,१६; -गात् सांका १५; -गेन  
 ब्रसू ४,४,४.  
 अ-विभात- -तम् वृ ६,३.  
 अ-विभावित(>)ता- -ता महा ५,  
 १२२.

a) मा ४०, १२ । b) बुब्>अकः प्र. उसं. (पा ४, २, १२७) । c) तु. सस्थ. टि. विद्या- > -द्या ।  
 d) 'पारम्' इति अज्या. संटि. । e) 'विद्या पादम्' इति निसा. । f) विशिष्ट इह मा. (४०, ३) पा. । g) तैआआ  
 १०,५९ । h) सह-पर्यायः द. । i) तु. टि. अपिपास- > -सः (छां ३,१७,६) ।



## अ-विमुक्त-

अ-विमुक्त-क्तः जा २<sup>१</sup>; राउ ३, १<sup>३</sup>;  
-क्तम् कै २, ५; जा १<sup>१</sup>; श ३६;  
राउ १, १<sup>३</sup>; २; ३, १; म २, १८;  
ता १, १<sup>३</sup>; शि ६, १९२; विद्या  
१; -क्तात् म २, १७<sup>३</sup>; -क्ते जा  
२; राउ ३, १; ५; म २, ४; १७.

## अ-विमोक्ष-

अविमोक्ष-प्रसङ्ग-ङ्गः ब्रसू २, १,  
११.

अ-विरक्त-क्तः शि ४, ३०.

अ-विरत-तः क १, २, २४; नाप  
९, १९; महा ४, ६९; -तम्  
महा ५, १४३.

अ-विरुद्ध-द्धः गौ ४, २.

अ-विरोध-धः सांसू ६, २१; ब्रसू  
१, ३, ३०; ४, १०; २, २, ३५; ३,  
२३; ३, १, १६; ३, ३१; ५६;  
-धम् ब्रसू १, २, २८; ४, ४, ७;  
-धात् सांसू ६, ४८; ब्रसू १, १,  
२७; -धेन १योत ३७; ६६;  
अना १७; नाप ६, २७.

अविरोध-तस्( > ) १योत ३९.

अ-विलक्षण-णः गौ ३, ९.

अ-विचरा-राः मैत्रि ६, २५.

अ-विवाद-दः गौ ४, २; -दम् गौ  
४, ५.

१अ-विवेक-कः सांसू ३, ६८; ६, १२;  
१६; -कम् तेषु ३४; -कस्य सांसू  
३, ७४; -कात् सांसू १, ५५;  
१०६; ३, ७१; ६, ११; २७.

अविवेक-निद्रा-द्राम् शु ३, ९.

अविवेक-निमित्तक-कः सांसू ६,  
६८.

अविवेक-प्रकृति-संगति-त्या  
त्रिमा २, १६.

२अ-विवेक-कानाम् सांसू ५, ६४.

अ-विवेकिन्-किं सांका ११;  
-किनाम् वरा २, ४०.

अविवेक्या(कि-आ)दि-देः सांका  
१४.

अ-विशङ्कित-तः गौ २, ३०.

अ-विशिष्ट-

अविशिष्ट-फल-

अविशिष्टफल-स्व-त्वात् ब्रसू  
३, ३, ५९.

अ-विशुद्ध-द्धाय शा ३३.

अ-विशुद्धि-

अविशुद्धि-क्षया(य-अ)तिशय-

युक्त-क्तः सांका २.

अ-विशेष-षः नृउ ९, १३; पैष्ठ, १०;

सांसू १, ६; ६, २६; ब्रसू २, २,  
३६; -षम् भव २, १३; -षाः

सांका ३८; -षाणाम् सांसू ३, ४;

-षात् सांसू ३, १; ब्रसू १, ४, ८;

२, २, २४; ३, १५; ३, ३, ६; ४,

१३; ४, १, ११; -षेण महा ४, ७६;

वरा २, ६३.

अविशेष-तस्( > ) गौ ४, ५०; पं  
३६.

अविशेष-विज्ञान-नम् मैत्रि ६,  
२४.

अविशेष-विशेष-षाभ्याम् ब्रसू ४,  
३, २.

अविशेषा(ष-आ)पत्ति-न्तिः सांसू  
६, १९.

अ-विश्रान्त-न्तम् ब्रवि १९<sup>६</sup>; योचू  
४८; वरा ५, ६.

अविश्रान्त-मनस्-नाः महा २,  
१२.

अविश्रान्त-महा-स-ग-नाः

ध्या ७५.

अ-विश्व-श्वम् अशि ३, ३; च २१;  
१८; वडु ३१<sup>५</sup>; २.

१अ-विषय-या-यः ते १, ३९<sup>९</sup>; सांसू  
१, १०८; -याम् मन्त्रि ६.

अविषयी/भू

अविषयी-भूत-

अविषयीभूत-स्व-त्वात्

योसू ३, २०.

२अ-विषय-यः ब्रवि ८७; -यम्  
नृउ ९, १८.

अ-विषय-ज्ञान-

अविषयज्ञान-स्व-त्वात् नृउ ९, ३.

अ-विष्णु-ष्णुम् नृउ ६, १.

अ-विष्णु-भक्त-क्ताय अव्य ७.

अ-विसर्जयितव्य-व्यम् नृउ ९,  
१८.

अ-विस्फुट-टम् अन्न १, ५६.

अ-विस्मृत्य १योत ७९.

अ-विहिंसक-कः नाप ५, १८.

अ-वीत-राग-गाय शा ३३.

अ-वीर-रम् नृउ ६, १.

अवीर-हन्-हा नी १, ३.

अ-वृत्त'-वृक्ष तुल ७०; १७.

अ-वृजिन-नः वृ ४, ३, ३३<sup>३</sup>.

अ-वृत्त'-तेषु भव १, ४०.

१अवे(व/ई), अवैति वड ३, ५५;

अवयन्ति मना १, १९<sup>६</sup>; अवैतु

वृ ६, ४, २३; अवेहि कै १, २<sup>१</sup>;

वपू १, ५.

अव-य(त >)ती-तीः आर्षे ९; ७.

अवा(व-अ)य<sup>१</sup>-यः वा २.

२अवे(व/ई), अव...ईमहे नी १, १९<sup>६</sup>.

अवे(व/ई)क्ष, अवेक्षते अक्षि ८;

अवेक्षे गी १, २३; अवेक्षेयाम्

४) द्वि१ सत् वा. क्रिवि. द्र. । ५) 'मित्तः' इति मूको. । ८) बस. इति कृत्वा १संख्याकात् स-रूपात् पृथक् निर्दिश्यते । ८) 'अविश्रामम्' इति अख्या. । ९) तु. सस्थ. टि. विषय- > -यः । १०) तस. नियतलिङ्गत्वात् पुं. सन् वी. (=तुलसी- इत्यनेन) समानाधिकरणः द्र. (मुपा. उत्तरेणैकपद्याऽऽभासः सु-शोधः द्र.) । ११) तु. टि. ?अब्दत- । १२) तैआ १०, १, १ । १३) 'अवेहि' इति निसा. पा. उत्सूत्रः । १४) तु. व्यवाय- इत्यत्रत्या व्यु; वैतु. बाटी. 'आवाय-' इति । १५) मा १६, ६ ।

|  |  |  |
|--|--|--|
| छां ८, ८, २; अवेक्षेत भव १, ३.<br>अवे(व-ई)क्षमाण- -णम् रार २, ५;<br>१३.<br>अवे(व-ई)क्षा-<br>अवेक्षां/कृ, अवेक्षांचक्राते छां<br>८, ८, १; २.<br>अवे(व-ई)क्ष्य छां ८, ८, १; महा १, ५,<br>८४; वउ ६, १७; गी २, ३१.<br>अ-वेद- -दा: वृ ४, ३, २२.<br>अ-वेदन- -नम् अलि ३; -नात् अज<br>५, ११७.<br>अ-वेद-विद्- -वित् शा ४; इ<br>१२: १२.<br>अ-वैदिक- -कम् मैत्रि ७, १०.<br>अ-वैयर्थ्य- -थ्यात् ब्रसू ३, २, १५.<br>अ-वैशेष्य- -व्यम् ब्रसू ३, २, २५.<br>अ-वैश्वदेव- -वम् सुं १, २, ३.<br>अ-वैष्णव- -व: भव ५, २३; -वाय<br>सुद्र ४.<br>अव्य- २अवि- द.<br>अ-व्यक्त, क्ता- -क्त: जा २ <sup>३</sup> ; ते ४, ५;<br>ब्रवि ८८; मं २, १, २; राउ ३,<br>१; गोउ ३०; वउ २, १७; गी<br>२, २५; ८, २०; २१; -क्तम् क १,<br>३, ११; २, ३, ७; मैत्रि ६, १०;<br>सुबा २; ७ <sup>३</sup> ; ११ <sup>३</sup> ; १३; १४ <sup>३</sup> ;<br>१५; मन्त्रि १५; स्क १३; त्रिवि<br>३, ७ <sup>३</sup> ; ४, ७ <sup>३</sup> ; त्रिबा १, ३;<br>पै ३, १; शारी ९; अव्य १ <sup>३</sup> ;<br>अज ५, ६४; अध्या १ <sup>३</sup> ; पत्र २;<br>रुह १०; कै १, ६; मना १, १९ <sup>३</sup> ;<br>जाद ८, ९; पं १४; गोउ ४०;<br>शा ९; २६; स ३७८: ११; गु<br>४२; भव २, १३; २०; ३, ३; चू<br>१४; सांसू १, १३६; सांका १०;<br>१४; १६; ५८; ब्रसू ३, २, २३; गी<br>७, २४; १२, १, ३; १३, ५; -क्ता | योशि २, १२; गी १२, ५; -क्ता:<br>गौ २, १५; -क्तात् क १, ३, ११;<br>२, ३, ८; त्रिवि २, १४; त्रिबा १,<br>३; अव्य १; ३; गु ४२; गी ८,<br>१८; २०; -क्ते मैत्रि ६, २२; अशि<br>४, १३; सुबा २; पै ३, १; वउ<br>३१६: ५; स ३७८: ४.<br>अव्यक्त-क- -कम् स ३७८: ६.<br>अव्यक्त-गायत्री- -त्री शु १, १८;<br>२, ५; हं १० <sup>३</sup> .<br>अव्यक्त-ता- -ताम् मन्त्रि १८.<br>अव्यक्त-त्व- -त्वात् मै २, १०; मैत्रि<br>२, ७.<br>अव्यक्त-निधन- -नानि गी २, २८.<br>अव्यक्त-परिपूर्णा(शी-आ)नन्दै-<br>(न्द-ए)क-चिदा(त्-आ)त्मन्-<br>-त्मा राउ ३, १.<br>अव्यक्त-भाव- -वै: मना २, ६६ <sup>३</sup> .<br>अव्यक्त-महद(त्-अ)हंकार <sup>३</sup> - -रा:<br>भा २३ <sup>३</sup> .<br>१अव्यक्त-मुख- -खेन मैत्रि ६, १०.<br>२अव्यक्त-मुख <sup>३</sup> - -ख: मैत्रि ६.<br>१०.<br>अव्यक्त-मूर्ति- -र्तिना गी ९, ४.<br>अव्यक्त-रूप-<br>अव्यक्तरूपि(न् >)णी- -णी<br>सी ५.<br>अव्यक्त-लिङ्ग- -ङ्ग: नाप ३, ८६;<br>५, २३; पप ४१९: १८; -ङ्गा:<br>जा ६; या २, १; आश्र ४ <sup>३</sup> .<br>अव्यक्त-लेशा(श-अ)ज्ञाना(न-आ)-<br>च्छादित- -पारमार्थिक-जीव-<br>-वस्य पै २, ३१.<br>अव्यक्त-शालिन्- -लिन: मन्त्रि<br>२० <sup>३</sup> .<br>अव्यक्त-संज्ञक- -के गी ८, १८.<br>अव्यक्त-समन्वित- -त: पै २, २९. | अव्यक्त-स्व-रू(प >)पा- -पा<br>सी ६.<br>अव्यक्ता(क्त-आख्य >)ख्या- -ख्या<br>पै १, ६.<br>अव्यक्ता(क्त-आ)चार- -र: नाप ३,<br>८६; पप ४१९: १८; -रा: जा ६;<br>या २, १; आश्र ४.<br>अव्यक्ता(क्त-आ)दि- -दि: शु २, ५;<br>-दीनि गी २, २८.<br>अव्यक्तादि-सृष्टि-प्रपञ्च- -त्रेषु<br>ससा १, ३४.<br>अव्यक्ता(क्त-आ)र्थ- -र्थ: नाप ५, २३.<br>अव्यक्ता(क्त-आ)सक्त-चेतस्-<br>-तसाम् गी १२, ५.<br>अव्यक्ती/भू<br>अव्यक्ती-भू(त >)ता- -ता अशि<br>५, १३.<br>अव्यक्तै(क्त-ए)काक्षर <sup>३</sup> - -रम् मु १,<br>१, ३६.<br>अ-व्य(वि-अ)ग्र- -ग्र: मै २, ११; मैत्रि<br>२, ७; महा ४, ९२; शा १५;<br>-ग्रम् जाद ६, २६.<br>अ-व्यञ्जन- -नम् अना २५.<br>अ-व्यतिकर- -र: ब्रसू २, ३, ४९.<br>अ-व्यतिरेक- -कात् ब्रसू २, ३, ६.<br>अ-व्यथमान- -न: छां ७, ४, ३; ५, ३;<br>मै २, २; -नान् छां ७, ४, ३;<br>५, ३.<br>अ-व्यपदेश-<br>अव्यपदेशा(श-आ)त्मन्- -त्मा महा<br>२, ६७.<br>अ-व्यपदेश्य, द्या- -इयम् मां ७;<br>नृपू ४, ७; वउ १, १२; ९, १८;<br>नाप ८, २०; राउ ३, १; वउ १,<br>१४; ५, ३९; -इयाम् विदा ४.<br>अ-व्यभिचार- -रात् सांसू २, ४१;<br>-रेण गी १४, २६. |
|--|--|--|

a) तैआ १०, १, १। b) 'अव्यक्ता गायत्री' इति निसा.। c) तैआ १०, ६६। d) इतरेतरद्वन्द्व: द. (तु. अदी., तान्त्रि.: संटि. वैतु. भारा. समाहारद्वन्द्वं कारुः)। e) 'अव्यक्तमहत्त्वमहदहंकार-' इति निसा., 'अव्यक्तमहत्त्वाहंकार-' इति च अज्या.। f) बस. इति कृत्वा नापू. पृथक् द.। g) 'अलिङ्गाः' इति संटि.।



अ-व्यभिचारिन्-रि ससा १,२६<sup>a</sup>;

-रिगम् नृउ २,१०<sup>b</sup>; -री ब्रवि ८६.

अव्यभिचारिणी-णी गी १३,१०;

-ण्या गी १८,३३.

अ-व्यय,या-यः खे ३, १२; गौ

१,२६; ते २,८; ३,६; ११; २८;

४, ३५; ५, ४; ध्या १७; आबो

३; नाप ८, १३; श २४; अन्न

२, २१; अध्या ६९; सु २, २,

७५; तुल ७१; २; भव २, ४१;

वउ २, ३०; गी ११, १८; १३,

३१; १५, १७; -यम् क १, ३,

१५; मुं १, १, ६; मै ४, ४, ४;

मैत्रि ६, २०; ३४; ३५; खे ६,

१०; मना २, १३, २९<sup>c</sup>; सुबा

३; मन्त्रि १; शु २, ५; ते १,

२<sup>d</sup>; ८<sup>e</sup>; ६, १; ४९<sup>f</sup>; ७२; ब्रवि

५४; नाप ८, ३; ९, १७; त्रिब्रा

२, २७; १५६; योचू ७१; स्क

१३; वा २७; पै ३, २; ४; महा

४, ८६; योशि ३, १९; अलि २;

अध्या ६१; कुं १४; २१; पाशु

२, २९; रूह ३२; यो ३, २६;

३५; म २, ३; १८; गोपू ३१;

मु १, १, २४; २, २, ७२; नापू १,

१४; २२ ३५; ११९<sup>g</sup>; भव ३,

३; चू १; गी २, २१; ४, १; १३;

७, १३; २४; २५; ९, २; १३;

१८; ११, २; ४; १४, ५; १५, १;

५; १८, २०; ५६; -यस्य गी २,

१७; १४, २७; -याम् गी २,

३४; -वे मुं ३, २, ७; मैत्रि ६,

१८; योशि १, १५६.

अव्यया(य-आ)स्मन्-स्मा मुं १,

२, ११; गी ४, ६.

अव्ययी/भू

अव्ययी-भूत-तम् २२ ३५:८.

अ-व्ययमान-नः मैत्रि २, २.

अ-व्यवच्छिन्न-ज्ञम् कौ २, ५.

अ-व्यवधान-नेन अन्न ५, ७८; जाद

१०, ९.

अ-व्यवसायिन्-यिनाम् गी २, ४१.

अ-व्यवहार्य,र्या-यः मां १२; नृउ

८, १; ९, १२; -यम् मां ७; नाप

८, २०; ९, २०; नृपू ४, ७; नृउ

१, १२; ९, १६; १७; राउ ३, १;

वउ १, १३; ५, ३९; -र्याम्

विद्या ४.

अ-व्याकुल-लस्य त्रिब्रा २, २४.

अ-व्याकृत-तम् वृ १, ४, ७.

अव्याकृत-विहारि(न्)णी-ण्यै

सार २४७: ३.

अ-व्यानयितव्य-व्यम् नृउ ९, १८.

अ-व्यापिन्-पि सांक्रा १०.

अ-व्याप्त-सम् वृजा २, ९.

अ-व्यावृत्त-तम् अव्य ५.

अ-व्याहत-तः भव १, २४.

अ-व्याहृत-तम् मैत्रि ६, ६.

अ-व्युत्पन्न-मनस्-नाः सु २, २,

३०.

अ-व्रण-णम् ई ८; नाप ४, ३८.

अ-व्रतिन्-ती जा ४; नाप ३, ७७;

पप ४१८: ५; गोउ २; या १, १.

✓अशु<sup>h</sup>(व्याप्तौ), अशीमहि मना २,

४७९<sup>i</sup>; इ १२: ११; लि ३०९:

८९<sup>j</sup>.

अशुते ई ११: १४; प्र ३, १२<sup>k</sup>;

तै २, १, १; वृ १, ३, २२; कै २,

५<sup>l</sup>; गौ १, १५; ४, ७८; ना ३<sup>m</sup>;

मै ४, ४, ४; मैत्रि ४, ४; ६, २०;

३४; ७, ९; मैत्रे १, ४, ६; नि ३;

वृजा ७, १-३; ७; ८; नृपू ३, २;

४, १२; शु ३, २३<sup>n</sup>; नाद २०;

ब्रवि ५३; १योत १०२<sup>o</sup>; १३३<sup>p</sup>;

त्रिब्रा २, २५; ११३; १६६; शां

१, ७, ४७; महा ४, ८८; २अव

३३८: ९; १०; योशि १, १४३;

६, २४; अध्या १३; ४२; त्रिता

३, ३; ४, ३०; करु ११; रुजा ३,

१<sup>q</sup>; म १, ११; २, २१; गोउ

३०; ४५; दत्ता ३; बा १९;

सूता २, २४; गोच ६७: १३;

१९; ६८: ४; नाउ ३, १५; सु

२९३: १८९<sup>r</sup>; कालि ४०३:

१४; पी ४२२: १७; रा ४२४:

२; ५; ७; १३; ४२५: १३;

भव १, ५२; ३, १९<sup>s</sup>; वपू २, २;

३, १; गी ३, ४; ५, २१; ६, २८<sup>t</sup>;

१३, १२; १४, २०; अशुनोति

आर्षे ९: ४; ६; १४; बा २०<sup>u</sup>;

शौ ५१: १३; अशुवन्ति आर्षे

७: १६; अश्ववत् आर्षे ७: ३;

बा ३; १०; अश्ववन् आर्षे ९:

१६; ९<sup>v</sup>आनशु: कै १, ३; मना

२, १२, ३; १अव ५; स ३७९:

१०.

अशनि<sup>w</sup>-नि: छां ५, ५, १; वृ ३,

९, ६; ६, २, १०.

अशुवान-ना: शा ११.

अशमन्<sup>x</sup>-शमन: मना २, ७६९<sup>y</sup>;

-शमा छां १, २, ८; कौ २, ११९<sup>z</sup>;

मैत्रि २, ६; -शमानम् छां १, २,

७; ८; वृ १, ३, ७.

अशम-मय-यम् सार २३६:

११.

- a) '-री' इति निसा. अच्चा. च। b) 'असुसुसव्यभि' इति निसां.। c) तैब्रा १०, ११, २। d) 'दुराश्रयम्' इति आन.। e) 'अद्वयम्' इति संटि. अच्चा.। f) 'अद्वयम्' इति अच्चा.। g) गोब्रा १, १, २६। h) तु. वैप १, ४७९g। i) तैब्रा ३, ७, ७, ३। j) 'सचेमहि' इति ऋ १०, ५७, ६। k) 'अशुनोति' इति च्युतमध्योकारः सुपा. यनि. सु-शोचः द्र. (तु. निसा.)। l) ऋ ९, ८३, १। m) मा ४०, १४। n) 'अभिगच्छति' इति SCHR. [वैतु. बे.(NIA २, २३१)]। o) तैब्रा १०, १०, ३। p) तु. वैप १, ४८१s। q) तु. वैप १, ४८२f। r) ऋ २, १, १। s) राब्रा १४, ९, ४, २६।



\*अश्म-रथ-

आश्मरथ्य<sup>१</sup> - -थ्यः व्रसू १,  
२,२९; ४,२०.

अश्म(म-आ)दि-

अश्मादि-वत् व्रसू २,१,२३.

अश्व,श्वा<sup>२</sup> - -श्वः छां ८, १३, १; वृ  
१,१,२; २,७; ३,४,२; सुबा २;  
१योत ११०; -श्वम् ऐ २, २;  
वृ १,२,२<sup>३</sup>; मना १,५९<sup>b</sup>; -श्वस्य  
वृ १,१,१<sup>३</sup>; २,५,१६९<sup>c</sup>; -श्वा  
छां ४,१७,१०; -श्वाः ऐ १,३;  
छां २,६,१; १८,१; छाग २,५:  
११; -श्वान् क १,१,२३; १शिसं  
६९<sup>d</sup>; २शिसं ५९<sup>d</sup>; -श्वानाम् गी  
१०, २७; -श्वेषु श्वेषु ४, २२; मना  
२,५३९<sup>e</sup>; २शिसं २९९<sup>e</sup>.

अश्व-क्रा(न्त)न्ता- -ऽन्ते  
मना १,८; ऊद ३:७; व४६४:९.

अश्व-चण्डाल-गो-खर- -रम् या  
२, ४.

अश्व-तर<sup>१</sup> - -रम् शि ६, २०४;  
-रौ नी ३, ८.

अश्वतरी-

अश्वतरी-रथ- -थः  
छां ४,२,२; ४; ५,१३,२; -थम्  
छां ४,२,१; ३.

अश्वतरा(र-अ)श्व<sup>१</sup>-

आश्वतराश्वि<sup>१</sup> - -श्विः छां  
५,११,१; -श्विम् छां ५,१६,१;  
वृ ५,१४,८; गा ४१०: २५<sup>b</sup>.  
अश्व(श्व-स्था)स्थामन्<sup>१</sup> - -मा गी  
१, ८.

अश्व-नाय- -यः छां ६, ८, ३; ५.

अश्व-पति<sup>१</sup> - -तिः छां ५, ११, ४.

अश्व-मेघ<sup>१</sup> - -घः वृ १, २, ७;

पाशु १,३१; -धम् वृ १, २, ७;  
१अव ६; इ १९: १४; -धस्य  
वृ १,२,७; -धेन वृ ५, १७.

अश्वमेघ-त्व- -त्वम् वृ १,  
२, ७.

अश्वमेघ-याजिन्- -जिनः वृ  
३, ३, २<sup>३</sup>.

अश्वमेघ-सम- -मम् गोच  
६८: १९.

अश्वमेघ-सहस्र- -स्राणि  
योशि ६, ४३; वउ १, २७.

अश्व-युज<sup>१</sup>-

अश्वयुक्त्व(ज् > क्-शु > छु)-  
कृ-पक्ष<sup>१</sup> - -क्षस्य इ १९: ४.

अश्व-ल<sup>१</sup> - -लः वृ ३, १, २<sup>३</sup>; १०.

आश्वलायन<sup>१</sup> - -नः प्र १, १;  
३, १; कै १, १; सर १, ४<sup>३</sup>; -नम्  
सर १, १.

अश्व-वत् व्रसू ३, ४, २६.

अश्व-वध- -धात् भ १, ११.

अश्व-वृष- -षः वृ १, ४, ४.

अश्व(श्व-आ)रूढ,डा- -डः व  
४४१: १३; -डा व २१.

अश्वय- -श्वयम् वृ २, ५, १७९<sup>k</sup>.

अश्विन्<sup>१</sup> - -श्विना मना २, ४८९<sup>m</sup>;  
-०दिवना वृ २, ५, १७९<sup>k</sup>; -श्विनौ  
वृ २, ६, ३; ४, ६, ३; ६, ४, २१;  
२२; मना २, ४२९<sup>n</sup>; वृजा ४,  
२०; सुबा ६; दे १९<sup>o</sup>; गार ४०८:  
७; वउ ४, १६; गी ११, ६; २२;  
-श्विभ्याम् वृ २, ५, १६-१९; ६,  
३; ४, ६, ३; सिसि ३८२: २०.

अश्विनी<sup>१</sup> - -नी भा १३<sup>p</sup>;  
-न्यै व ४३८: १.

आश्विन<sup>१</sup> - -नम् गार ४०७: ९.

आश्विनी- -न्याम् सार  
२३२: २१.

आनशान- -नाः मना १, ४९<sup>r</sup>.

✓अश्व(भोजने) > आशि, अशिशिष,

अश्नाति छां १, २, ९; ३, १७, २;  
वृ ३, ८, ८<sup>३</sup>; मैत्रि ६, ९: ११<sup>३</sup>;

मना २, ८०९<sup>s</sup>; सुबा ३<sup>३</sup>; शि ६,  
३९; भव ४, ८; अश्नन्ति छां ३,  
६-१०, १; इ १३: १४; १८: २;

शि ६, १९८; गी ९, २०; अश्नासि  
छां ४, १०, ३; गी ९, २७;

अश्नामि भ २, २०; गी ९, २६;  
अश्नान छां ४, १०, ३; ६, ७, ३;

अश्नानि मैत्रि २, ६; अश्नीयात्  
छां २, १९, २<sup>३</sup>; ७, ९, १; सुबा  
१२; आह ३; १संन्या १, १; भ  
१, ८; २, २१<sup>३</sup>; शि ६, १; वश्रु  
१, १; अश्नीयाताम् वृ ६, ४,  
१४-१८; अश्नीयाम् कौ २, १; २.

आश छां ६, ७, २; ४; अशिशिषमि  
छां ४, १०, ३; अशीः छां ६, ७, १.

अशिशिषति छां ३, १७, १; ६, ८, ३.

अश्नान- -नम् वृ १, ४, १६; १संन्या  
१, १<sup>३</sup>; आह २; ३<sup>३</sup>; कश्रु १, १.

अश्नान-वत् व्रसू ३, ४, ४२;  
✓अश्नाय, अश्नायाम् छां १,  
१२, २.

अश्नाया- -यया वृ १, २, १;  
-या छां ६, ८, ३; वृ १, २, १९<sup>३</sup>;  
४९<sup>३</sup>.

अश्नाया-पिपासा- -से  
क १, १, १२; वृ ३, ५, १.

अश्नाया-पिपासा-शोक-  
मोह-जरा-मरण- -णानि  
सुद्र ४.

a) तु. वैप १, ४८३। b) तैत्ति १०, १, ५। c) ऋ १, ११६, १२। d) मा ३४, ६। e) ऋ १, ११४, ८।  
f) तैत्ति १०, १, ८। g) तु. वैप १, ४८७। h) 'अश्वि' इति सुपा. यनि. सु-शोधः द्र.। i) तु. वैप १, ४८८। j) वृद्धावचरः सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. पा ४, ३, ३६)। k) ऋ १, ११७, २२। l) तु. वैप १, ४९०। m) तैत्ति  
४, १, ७, ४। n) तैत्ति १०, ४०, १। o) 'अश्विना' इति ऋ १०, १२५, १। p) 'पयस्विनी' इति तान्त्रि.। q) तु. वैप  
१, ४९३। r) मा ३२, १०। s) तैत्ति १०, ६४, १।

अशना- ना वरा १, ९.  
अशना-पिपासा- साभ्याम् ऐ  
२, १; से ऐ २, ५; छां ६, ८, ३.  
अशित- तम् छां ६, ५, १; ३;  
८, ३.  
अशित-पीत- तेन<sup>a</sup> गर्भ ३.  
अशित-पीत-लीढ-स्वादित-  
-तानि प्रा २, १.  
अशित-पीत-लेह्य-चोष्य- घ्यम्  
गर्भ ५.  
अशित्वा वृ ६, १, १४.  
अशिव्यत्- घ्यन्तः छां ५, २, २;  
वृ ६, १, १४.  
अश्वत्- अश्व नाप ३, ६३; पप  
४१९: ९.  
अश्वमान- नस्य छां ६, ६, २, ४.  
अशक्त- क्तः वृजा ४, २८; त्रिब्रा  
२, ५२; शां १, ३, १२; १संन्या  
१, १; जाद ३, १२; रार १, ९;  
सार २, ५६: १४; कलि ४०२:  
१२<sup>b</sup>; कथु १, १; गी १२, ११;  
-क्तेन स ३७९: १.  
अशक्ति- क्तः गौ ४, १९; सांसू ३,  
३८; सांक्रा ४७; ४९.  
अशक्ति-वश- शात् नाप ५, १.  
अशक्य- क्यः मन्त्रि ३; ते ५, ९;  
चू ३; क्यम् मै १, १; मैत्रे १,  
१; वपं ३१२: १७.  
अशक्यो(क्य-उ)पदेश- शः सांसू  
१, ११.  
अशक्योपदेश-विधि- धिः  
सांसू १, ९.  
अशङ्कि(त>)ता- ता महा ५, ७२.  
अशठ- ठम् नाप ३, ७४.  
अशनि- ✓अश (व्याप्तौ) द्र.  
अशपत्- पतः सूता २, १२९<sup>c</sup>.  
अशब्द- द्दः मैत्रि ६, २२; ब्रवि

८२; -द्दम् क १, ३, १५; मैत्रि  
६, २२; २३; ७, ३; वृज ८, २;  
९, १८; सुबा ३; पै ३, ४; यो ३,  
३५; योशि ३, १९; सु २, २, ७२;  
ब्रसू १, १, ५; -द्दे मैत्रि ६, २२.  
अशम- मः गी १४, १२.  
अशरीर, रा- रः छां ८, १२, २; वृ  
४, ४, ७; वृज ७, ३; ८; १४; वरा  
२, ६८; -रम् क १, २, २२; प्र  
४, १०; छां ८, १२, १; सुबा ८;  
नाप ९, १५; शां २, १; १आ  
१४; जाद ४, ६२; -र्या सार  
२३२: २२; -रस्य छां ८, १२, १;  
मैत्रि ४, ६; ६, २७; -राणि छां ८,  
१२, २.  
अशरीरिन्- रिणः रापू १, ७; -री  
१आ १४.  
अशस्त्र- स्त्रम् गी १, ४६.  
अशान्त, न्ता- न्तः क १, २, २४;  
नाप ९, १९; महा ४, ६९; -न्तम्  
मना १, १३९<sup>d</sup>; -न्तस्य महा ३,  
१५; गी २, ६६; -न्ताम् वृजा  
३, १; -न्ताय मैत्रि ६, २९; अव्य  
७.  
अशान्त-मानस- सः क १, २, २४<sup>e</sup>;  
नाप ९, १९<sup>e</sup>; महा ४, ६९<sup>e</sup>.  
अशाश्वत- तम् मै १, १; मैत्रि १,  
२; मैत्रे १, १; गी ८, १५.  
अशास्त्र-विहित- तम् गी १७, ५.  
अशिक्षित- ताय व ४५८: २३.  
अशिक्ष- स्वाः वृज ६, ४.  
अशिखिन्- स्त्री पप ४२०: ५.  
अशिथिल- लः अव्य ६.  
अशिरस्- राः भ २, १३.  
अशिरस्क- स्कम् सुबा ३.  
अशिव- वम् मैत्रि ७, ९<sup>f</sup>; -वाः शि  
१, १०.

अ-शिवा(व-आ)दि-चिह्ना(ह-अ)-  
न्वि(त>)ता- ताम् वृजा  
३, १.

अ-शिवा(व-आ)लय- यम् वृजा ५,  
१६.

अ-शिवा(व-आ)श्र(य>)या- याम्  
वृजा ५, १६.

अशिष्य- ष्याय श्वे ६, २२; मैत्रि ६,  
२९; सुबा १६; ब्रवि ४७; अश  
५, ११९; ग १७; गु ७५.

अशीति- तिः अना ३४.

अशीति-पर्य(रि-अ)न्त- न्तम् शां  
१, ७, २; १योत ४३; त्रिब्रा २,  
१०१.

अशीर्य- र्यः वृ ३, ९, २६; ४, २, ४;  
४, २२; ५, १५.

अशुक्ल-

अशुक्ला(ह-अ)कृष्ण- णम् योसू  
४, ७.

अशुचि- चि जाद ४, ५४; -चिः क  
१, ३, ७; ब्र २; नाप ३, ८०; योचू  
८८; महा ४, १३१; कलि ३;  
गी १८, २७; -चिम् शि ७, ६९;  
-चौ गी १६, १६.

अशुचि-स्व- स्वम् पत्र ३, ४; सिशि  
३८१: १०.

अशुचि-व्रत- ताः गी १६, १०.

अशुद्ध- द्दः योशि ४, २०; -द्दम् मै  
४, ४, ६; मैत्रि ६, ३४<sup>g</sup>; ब्रवि १<sup>h</sup>;  
ते ५, १३; त्रिता ५, २<sup>h</sup>; जाद  
७, ३; अबि १<sup>h</sup>; ब्रसू ३, १, २५;  
-द्धानि १आ १; २आ ३.

अशुद्ध-भूतल- ले वृजा ४, ८.

अशुद्ध-वैरिन्- रिणे गोपू ४२.

अशुद्ध-लेपन- नम् १संन्या २, ७९;  
नाप ७<sup>h</sup>.

अ-शुद्ध-भाव- वः शि ५, ४३.

a) 'त' इत्यविभक्तिकश्चोत्तरेण समस्त इव च सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. सस्थ. टि. मातृ- > मात्रा, नाडी-  
सूत्रगत- > तेन)। b) 'मैथुनासक्तमानसः' इति तान्त्रि.। c) 'अशरत्' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. तैआ २, ५, २)।  
d) तैआ १०, १, १३। e) 'मनसः' इति निसा.। f) तु. वैप १, ४९. g) 'कृकृ' इति अदे.। h) 'द्विले' इति निसा.।

## अ-शुद्धि-

अशुद्धि-क्षय-यात् योसू २, ४३;  
-ये योसू २, २८.  
अ-शुभ-भः सु २, २, ३, ४; -भम् ते  
५, २३; ब्रवि २७; -भात् ते ५,  
२३; सु २, २, ७; गी ४, १६;  
९, १; -भान् गी १६, १९<sup>३</sup>; -भेषु  
सु २, २, ६.  
अशुभ-कर्म-निर्मूलन-पर-रः  
जा ६.  
अशुभ-क्षय-कर्तृ-तारम् गर्भ ४<sup>३</sup>.  
अशुभा(भ-आ)गम-मे अज्ञ ५, ५९  
अ-शुभा(भ-आ)शुभ-संकल्प-  
-ल्पः १ संन्या २, ४९.  
अ-शुश्रूषु-पवे त्रिवि ८, २०; गी  
१८, ६७.  
अ-शून्य-न्यः सूता १, १५; -न्यम्  
ते १, १०<sup>७</sup>; ६, १७; दे १.  
अ-शूर-रेण महा ३, ५४.  
अ-शृङ्ग-ङ्गम् वृ ६, ५.  
अ-शृणवत्-ण्वतः वृ ४, १, ५;  
-ण्वन्तः छां ५, १, १०; वृ ६,  
१, १०.  
अ-शृत-तासः अरु ३०९<sup>०</sup>.  
अ-शेष-षम् त्रिता १, ५४; अज्ञ १,  
२२; -षाणाम् नाप ४, २७; -षेण  
महा २, ३९; अक्षि १४; गी ४,  
३५; १०, १६; १८, २९; ६३.  
अशेष-क-कैः शि १, १२१.  
अशेष-कल्पा(प-आ)धार-रम्  
वसू २३.  
अशेष-कुल-ज-जैः शि ४, ५३.  
अशेष-नाण-संयुत-तः शि ६,  
११२.  
अशेष-चित्त-वृत्ति-त्तीनाम् नाप  
४, २५.

अशेष-तत्(>) आरु १; त्रिता ५,  
१८; १योत ४५; ब्रवि १८; भव  
१, ५३; २, ५३; अवि १८; गी  
६, २४; ३९; ७, २; १८, ११.  
अशेष-इदय-इये महा ४, ५५.  
अशेष-पातक-कैः शि १, २०.  
अशेष-पाप-पात् दत्ता ३.  
अशेषपाप-निर्मुक्त-क्तः शि ६,  
१७८; १८२.  
अशेष-फल-दान-नेन शि ६, ३३.  
अशेष-बाह्य-रहित-तम् शां १,  
७, १६.  
अशेष-भूता(त-अ)न्तर-यामिन्-  
अशेषभूतान्तर्यामि-त्वेन  
वसू २४.  
अशेष-रस-दान-नस्य शि ६, ७२.  
अशेष-लावण्य-सुन्दर(>)री-री  
राधा ३, १५.  
अशेष-लोभा(भ-आ)दि-निरस्त-  
सङ्ग-ङ्गम् गोपू ३२.  
अशेष-वेद-वेदान्त-वेद्य-द्यम्  
भ २, १८.  
अशेष-संस्कारा(र-आ)धार-  
अशेषसंस्काराधार-त्वात्  
सांसू २, ४२.  
अशेष-सङ्ग-ङ्गान् शि ७, ११६.  
अशेष-साक्षिन्-क्षी कुं १७.  
अशेष-स्तम्भिन(>)नी-० नि  
अक्ष १५.  
अशेषा(ष-अ)मर-पूजित-तम्  
शि १, १.  
अशेषा(ष-अ)मर-संयुत-तम्  
शि ६, १०६.  
अशेषा(ष-अ)र्थ-प्रसाधक-कम्  
शि ४, ५.  
अ-शोक<sup>१</sup>-कः ब्रवि ९०; रापू ४,

३७९<sup>१०</sup>; -कम् वृ ५, १०, १; मैत्रि  
६, २३; ७, ३; सुबा १५<sup>१५</sup>; १५<sup>१५</sup>.

अशोक-त्व-त्वात् वृ ७, २.

अ-शोच्य-न्यान् गी २, ११.

अ-शोभन-नम् महा ४, २३.

अ-शोष्य-ष्यः भव २, ४०; गी २,  
२४.

अ-शौच-चम् पै ४, ६; -चे शि ७,  
६६.

अश्नत्-√अश् (भोजने) द.

अश्नुवान-अश्मन्-√अश् (व्याप्तौ) द.

अश्ममान-√अश् (भोजने) द.

अश्र<sup>१</sup>-श्रैः योरा १७.

अ-श्रद्(त-द)धत्-धत् छां ७,  
१९, १.

अ-श्रद्(त-द)धान-नः गी ४, ४०;  
-नम् छां ८, ८, ५; -नाः प्र २, ३;  
गी ९, ३; -नाय अव्य ७; वृष  
८५; १९<sup>३</sup>.

अ-श्र(त-धा)द्धा-द्धया तै १, ११, ३;  
गी १७, २८; -द्धा वृ १, ५, ३;  
मैत्रि ६, ३०.

अ-श्रमण-णः वृ ४, ३, २२.

अ-श्रवण-णात् ब्रसू ३, १, ५.

अ-श्रवणीय-यम् छां १, २, ५.

अ-श्राद्ध-मित्र-त्रः इ १२: १०.

अ-श्री-श्रीः अज्ञ ४, २१.

अश्रु<sup>१</sup>-श्रु कुं ४<sup>१५</sup>; -श्रुम् कर १<sup>३</sup>;  
कश्रु २, २<sup>१</sup>.

अश्रु-पूर्णा(र्ण-आ)कुले(ल-ई)क्षण-  
-णम् गी २, १.

अश्रु-बिन्दु-न्दवः रुजा १, ३.

अ-श्रुत-तः वृ ३, ७, २३; ब्रवि ८५;  
सर ३, १०; -तम् प्र ४, ५; छां  
६, १, ३; ४, ५; वृ ३, ८, ११;  
नाप ४, ३४; पं २८.

a) 'अशुभासु' इति SCHR. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)] । b) 'न्ये' इति आन. । c) तैआ १, २७, ४ ।  
d) तु. वैप १, ४९८८ । e) 'अकोपः' इति आन. । f) व्यु. ? √अश् (वलने) इत्यतो वर्त्येत [तु. वैप. (१, ४९८०)]  
यत्रैतत्परो विशेषः उसं; वैतु. WW. (१, २८) हिंसाविशेषभूत-निशानार्थात् स-रूपाद् वर्तुकः । g) तु. वैप १,  
४९९८ । h) विशिष्ट इह अज्या. पा. ।



अश्रुत-स्व- स्वात् ब्रसू ३, १, ६.  
 अ-श्रुति- -ते: ब्रसू २, ३, १; १७.  
 अ-श्रोत- -ता छां ७, ९, १; मैत्रि ६, ११; ब्रवि ८८.  
 अ-श्रोत्र- -त्रम् वृ ३, ८, ८; ब्र २; सुबा ३.  
 अ-श्रोत्रिय- -य: अशि ७, १; महा ६, ८३; गोउ २; च २१: ७; ऊ ६४: १३; वड ३१८: ३; -यम् इ १३: १.  
 अ-श्रौत- -तम् लि ३१०: १८.  
 अ-श्लेष-  
 अश्लेष-विनाश- -शौ ब्रसू ४, १, १३.  
 अश्व- / अश् (व्याप्तौ) द.  
 अश्वत्थ<sup>a</sup>- -स्थ: क २, ३, १; छां ८, ५, ३; गी १०, २६; -स्थम् गी १५, १; ३; -स्थे शि ४, ६४.  
 आश्वत्थ- -स्थम् आर ५.  
 अश्वत्थ-कपिला- -लाम् शि ७, ८८.  
 अश्वत्थ-दल- -ले त्रिबा २, ७६<sup>b</sup>.  
 अश्वत्थ-नामन्- -मा मैत्रि ६, ४.  
 अश्वत्था(त्थ-आ)दि-पत्र- -त्रम् शां १, ४.  
 अश्वत्थामन्- / अश् (व्याप्तौ) द.  
 अश्वालक<sup>c</sup>- -क: व ४४६: २०.  
 अश्विन्- , अश्व्य- / अश् (व्याप्तौ) द.  
 अष्टन्- -ष्ट छां १, १; रापू १, ८<sup>d</sup>; ४, ५१; नाप ४, ३८; इ १४: ६; नापू १, ८; ५, २५; सार २६७: ५; २७४: १०; -ष्टभि: खे ६, ३; अता ६; अक्ष ४; सूता ४, ६; शि ४, २३; -ष्टसु वृ ५, ८; सूता ६, ४; -ष्टौ वृ ३, २, १<sup>e</sup>; ११, ९, २; २६<sup>f</sup>; ५, १४, १-३; आर ४; गर्भ ३; मना १, ३५<sup>g</sup>; अशि २, ८; ९; वृजा ४, ४; १६; वृपू ४, १५, १६; १७; २०; रापू ४, ५४; शां १, १; १५४१९: १०.

अष्ट-क- -कम् शि ७, २६; -कस्थ सौ १, १; -कै: खे १, ४; नाप २, ३.  
 अष्टक-पल- -लानि निरु २, ३.  
 अष्ट-कवल- -लम् नाप ५, १.  
 अष्टकवला(ल-आ)शिन्- -शी नाप ५, १; १संन्या २, १३.  
 अष्ट-गृह- -हेषु नाप ५, १.  
 अष्ट-चत्वारिंशत्-  
 अष्टचत्वारिंश- -शे अक्ष ५.  
 अष्ट-जाति-  
 अष्टजाती(य>)या- -याम् सुमु १७.  
 अष्ट-त्रिंशत्-  
 अष्टत्रिंशद(त्-अ)क्षर-मन्त्र-  
 -न्त्र: त्रिवि ७, ४१.  
 अष्टत्रिंश- -शे अक्ष ५.  
 अष्ट-दल- -लम् सौ ३, १; रापू ४, ४६; रार ३, १; नापू ६, २; -ला: नापू ६, ७.  
 अष्टदल-केसर- -रे राधा १, १६.  
 अष्टदलकेसर-मध्य- -ध्ये राधा १, १३.  
 अष्टदल-पञ्च- -चम् ध्या ९३, १; रार ३, १; त्रिवि ७, ३१; ३८.  
 अष्टदल-पूजा- -जा सूता ४, ५.  
 अष्टदल-मूल- -ले रार ३, १<sup>h</sup>.  
 अष्टदला(ल-अ)नुग(त>)ता-  
 -ता: पी ४२२: ९.  
 अष्ट-दि(श्>)क-पाल- -लभि:<sup>i</sup> गोउ ५१.  
 अष्ट-दि(श्>)क-पालका(क-अ)-  
 व्यं-पूर्वक- -कम् नाप ४, ३८.  
 अष्ट-दिन- -नेषु नाप ४, ३८.  
 अष्ट-दिश- -दिक्षु भ १, ३.  
 अष्ट-धा मै ४, ५; मैत्रि ५, २; हं ८; नाप ८, १; त्रिबा २, ६३; योचू ३६; ४४; रार ५, २; योशि १, ८२; ता २, १; वृजा ४, ३;

सर २, ७; सांस् ३, ४०; ४४: सांका ४७; गी ७, ४.  
 अष्ट-नाग- -नै: रार ३, १.  
 अष्ट-पत्र- -त्रम् ध्या २६; गोउ ४६; सौ १, ३; वृपू ५, ३; सुमु ७; वपू ३, १; -त्रे रापू ४, ४५.  
 अष्टपत्र-(ग>)गा- -गा: कालि ४०१: ११<sup>g</sup>; श्या १४.  
 अष्टपत्र-संवृत- -तम् त्रिता २, ४५.  
 अष्टपत्रा(त्र-अ)न्तर-स्थित-  
 -तम् पं ९.  
 अष्ट-पाद- -दम् मैत्रि ६, ३५; मन्त्रि १; चू १.  
 अष्ट-पुर- -रम् पै २, २४.  
 अष्ट-प्रकृति-रूप(प>)पा- -पा त्रिबा २, ६३; शां १, ४; जाद ४, ११.  
 अष्ट-म- -म: छां १, १, ३; हं १६; वरा ५, १२; नापू १, ६; ५, ७; -मम् वृजा ४, २५; वृपू २, ६; त्रिता २, ६२; यो १, ६०; २, १९; जाद १, ५; दत्ता १, ६; सौ ३, १; योरा १६; ऊ ६४: ८; नापू ६, ४; शि ५, ३१; ६, ६६; गार ४०७: ६; ११; -मे गर्भ ३; हं १९; अक्ष ५; त्रिता १, ६८; इ १५: २२; निरु १, १३; सूता ५, ११; -मेन पिं १४.  
 अष्टमी- -मी वृ २, २, ३<sup>h</sup>; नाद १०; नाप ८, १; त्रिता ३, १२; तु ९; अद्वै २४; सार २६७: १०; -मीम् गोउ २६; -म्याम् नाद १५; रा ४२५: १४.  
 अष्टम-श्रेणि- -श्रेणाम् सार २७०: १४.  
 अष्टमा(म-अ)क्षर- -र: ता २, १.  
 अष्ट-महा-काली- -ल व ४३१: ५.

a) तु. वैप १, ४९९n। b) 'लै:' इति संदि। c) तु. वैप १, ५०१d। d) तु. सस्थ. ?द्वि०। e) तैश्चा १०, १, ३। f) 'लकै:' इति शोध: द. (तु. निसा.)। g) 'गा' इति तान्त्रि.।

अष्ट-महा-भैरव-

अष्टमहाभैरव-नवब्रह्म-

स्व-रूप- -०५ लां २१६: ११.

अष्ट-मात्रा(त्रा-अ)धि-दैवत- -तम्  
रजा २, ९.

अष्ट-मूर्ति- -तिं नापू १, ४.

अष्टमूर्त्य ( ति-अ )ष्ट-मन्त्र-  
-न्त्रा: दत्ता ३.

अष्टमूर्त्य(ति-अ)ष्ट-विद्ये-

(या-ई)श- -शान् वृजा ४, १५.

अष्ट-योन्य(नि-अ)ङ्कित- -तम्  
त्रिता २, ४०.अष्ट-रूप(प>)पा- -पाम् मन्त्रि ३;  
चू ३.

अष्ट-लक्ष- -क्षम् शि ६, १३.

अष्ट-लोह-स्पर्श- -शै: षो २२.

अष्ट-वक्त्र- -क्त्रम् रजा २, ९.

अष्ट-वर्ग- -गान् रार ३, १<sup>a</sup>.अष्ट-वर्ण- -र्णान् रार ३, १<sup>b</sup>.

अष्ट-वर्ष(&gt;)र्षा- -र्षा इ १६: १६.

अष्ट-वसु-

अष्टवस्वे(सु-ए)कादशरुद्र-द्वा-

दशादित्य-मन्त्र- -न्त्रा: रार ३, १

अष्ट-विकल्प- -ल्प: सांका ५३.

अष्ट-विध- -ध: सांका ४८; -धम्  
शि ५, ४४.

अष्टविध-मन्त्र- -न्त्रम् ता ३, ९.

अष्ट-शत- -तम् शि २, २४.

अष्ट-शूला(त-अ)ङ्कित- -भू-चक्र-  
-क्रम् त्रिवि ७, ४५; ४७.

अष्ट-श्राद्ध- -द्धम् नाप ४, ३८;

-द्धानि नाप ४, ३८<sup>c</sup>.

अष्ट-सहस्र- -क्षे कृपु ३; कृ १३.

अष्ट-सिद्धि-

अष्टसिद्धि-दातृ- -ता षो १८.

अष्टसिद्धि-नवनिधि- -धय:

कृपु ११.

अष्ट-स्थान- -नम् वृजा ४, २४;

-ने वृजा ४, १२.

अष्ट-हस्त-प्रमाण-

अष्टहस्तप्रमाण-तस्(>) शि  
३, ३.

अष्टा-कपाल- -लम् निरु २, १.

अष्टा(ष्ट-अ)क्षर, रा- -र: वृपू २,  
३; रार २, २६; ३८; ३९; नापू १,

१२; २, २; सू २६; मर, ४; दत्ता १,

४; -रम् वृ ५, १४, १-३; ना ३<sup>c</sup>;

वृपू १, ६; ४, ८; ५, ८; ता १, २;

गा १; ३; ५; सूता ३, २; नापू

१, ४; ९; -रस्य रार २, २७; ३५;

-रा वृपू ५, ३; वपू ३, १; -रा:

वृपू २, ३.

अष्टाक्षर-पा(द&gt;)द्-

अष्टाक्षरपदा- -दा अव्य ५.

अष्टाक्षर-संज्ञा(ज्ञ-आ)वरण-

देवता-पूजा- -जा नापू ६, १५.

अष्टाक्षर-समायुक्त- -कम् पं ९.

अष्टा(ष्ट-अ)क्षर(&gt;)री-

अष्टाक्षरी-पद्म-विभूषित-

-तम् त्रिवि ७, २६.

अष्टाक्षरी-मण्डप- -प: त्रिवि ७,  
२३.

१ अष्टा(ष्ट-अ)ङ्ग-

अष्टाङ्ग-संयुत- -त: वरा ५, १०;

भव ३, १३; -तम् १योत ३.

२ अष्टा(ष्ट-अ)ङ्ग<sup>०</sup> - -ङ्ग: नाप ८, ९;

-ङ्गम् ध्या १३; करु ६; कथु ३, ६.

अष्टाङ्ग-योग- -गम् शां १, १.

अष्टाङ्गयोग-सिद्धि- -द्धि:

ह १०.

अष्टा-च(क>)का- -का अरु १८९<sup>d</sup>.

अष्टा-चत्वारिंशत्-

अष्टाचत्वारिंशद(त्-अ)क्षर(&gt;)-

रा- -रा छां ३, १६, ५.

अष्टाचत्वारिंशद(त्-व)र्ष-

-र्षाणि छां ३, १६, ५; आश्र १.

अष्टाचत्वारिंशद्वर्ष-वासिन्-  
-सी आश्र १.

अष्टा(ष्ट-आ)त्मक- -क: ता २, १.

अष्टा-दशन्- -श रापू १, ९; द्व १<sup>e</sup>;

कृपु ११; १२; नापू ५, ३९; व

४३२: ३; -शसु रार १, ३<sup>f</sup>;

शां १, ८.

अष्टादश-कोटि-भूत-प्रेत-

पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-

डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-

याकिनी-राकिनी-लाकिनी-

वेताल-कामिनी-ग्रह- -हान्

व ४४४: ३; १३; २३; ४४५:

१२; २२; ४४६: १०; २०;

४४७: ८; १९; ४४८: ७; १९.

अष्टादश-दल-पद्म- -द्मम्

त्रिवि ७, ३७.

अष्टादश-धा सांका ४८.

अष्टादश-पीठ-रूप-

अष्टादशपीठरूपि-

(न&gt;)णी- -०णि व ४५७: २३.

अष्टादश-भेद- -देषु त्रिवा  
२, १२९.

अष्टादशा(श-अ)क्षर- -र:

रार २, ६३.

अष्टादशा(श-अ)र्ण- -र्ण:

द ७.

अष्टादशार्ण-स्व-रूप-

-पम् गोपू २५<sup>f</sup>.अष्टादशो(श-उ)क्त<sup>g</sup> - -कम्

सुं १, २, ७.

अष्टा-दश- -शम् गार ४०७:

८; १४; -शे अच ५.

अष्टा(ष्ट-अ)ध्वर-पक्ष- -क्षे नाप

४, ३८.

a) 'षड्वर्गान्' इति श्रव्या. । b) 'अष्टवर्गान्' इति श्रव्या. । c) वस. इति कृत्वा १संख्याकात् स-रूपात् पृथक् द. । d) शौ १०, २, ३१ । e) वा. ? । f) '०र्णम् स्व०' इति श्रान. । g) वस. (तु. शं.; वैतु. jc 'श उ' इति पृथक् पदे मन्वानश्चिन्त्यः) ।

अष्टा-पा(द&gt;)द्व-

१<sup>b</sup>अष्टापदी--दी ह१६; चक्र३.

अष्टा(ष्ट-अप्-ज)ञ्ज--ञ्जे सुमु१३.

अष्टा(ष्ट-अ-)युत--तान् शि ६,  
२२६.अष्टा(ष्ट-अ)र--रम् नृप् ५,३; नृष  
८४:३;४.अष्टार-चक्रा(क-आ)द्य(दि-अ)-  
न्त-विदि(श्)>क-कोणा-

(रा-अ)प्र-

अष्टारचक्राद्यन्तविदिक्को-

णाप्र-तत्स(&gt;:) त्रिता २,४१.

अष्टा(ष्ट-अ)र्ण--र्णः रार २,२७.

अष्टा(ष्ट-अ)वरण-संयुक्त--कम्  
शि ६,१०५.

अष्टा-विंशति-

अष्टाविंशति-कोटी--टीषु

ध्या ९८.

अष्टाविंशति-धा मांसू३,३८

अष्टाविंशति-भे(द&gt;)दा-

-दा सांक्रा ४७.

अष्टाविंशति-वर्णक--कः

रार २,७९.

अष्टाविंशत्यु(ति-उ)त्तर-

शत<sup>०</sup>--तेन रा ४२३:११.

अष्टाविंशत्युत्तरशत-

भेद--दः रार २,१९.

अष्टाविंशत्युत्तर-

शतभेद-मात्रा--स्वरूप<sup>०</sup>-

-यम् नाप ८,१; तु १३.

अष्टाविंश--शे अक्ष ५.

अष्टा(ष्ट-आ)शा-पति<sup>०</sup>--तिम् सूता  
१,२६.अष्टा(ष्ट-अ)श्र--श्रम् त्रिवा २,  
५७; शि २,४.

अष्टा(ष्ट-अ)ष्टक--कम् चक्र ५.

अष्टा(ष्ट-अ)ह-

अष्टाहिक--कम् व ४३३:१८.

अष्टो(ष्ट-उ)त्तर--रम् सु १,१,४४;  
४५;५०; दे २०.

अष्टोत्तर-शत--तम् भ १,९;

रार १,९६; अक्ष १४; सु १,१,

२९;४०;४२;४७; नैः रुजा १,

१७.

अष्टोत्तरशता(त-अ)नुलो-

म-विलोमा(म-आ)कृति--

क्रम--मेण षो १६.

अष्टोत्तरशतो(त-उ)पनि-

षद्--षदः सु २,१,१; -षदम्

सु १,२,६.

अष्टोत्तर-संधि-शत<sup>१</sup>--तम्

निरु २,१.

अष्टोत्तर-सहस्र--स्रम् भ १,३.

?अष्टशापेतिम्<sup>०</sup> सूता १,२६.✓अस्<sup>१</sup>(भुवि), अस्ति ई २; के २,५;

क१,१,१२;२०; प्र ६,७; सुं १,

२,१२; तै २,६,१; छां २,२१,

३; वृ १,३,२८; खे ३,९९<sup>६</sup>; गौ३,६; मै ३,२; ए १<sup>१</sup>; स्तः महा

२, ४६; ६, ४८; १आ २६;

गोउ २४; सन्ति वस् १२:१६;

१७; २१; मवा १०९<sup>m</sup>; वरा४, ३४; आबो २३<sup>m</sup>; २४; सु २,

२,४५; इ १९:११; रात्रा ३,

३; ८; सार २२१:११; १२;

सन्तितराम् सार २८०:२३;

२८७:१; असि के ३, ४; ८;

क १,२,९; प्र २, ८<sup>१</sup>; ९; ३,२;तै शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; छां १, ५, २; खे ४,३; मैत्रि २,१; ४, ५<sup>१</sup>; मैत्रे १, ४,१; आह ३<sup>१</sup>; मना १, ८<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;कौ १,१; २<sup>१</sup>५; ५; ६<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; असी ३वृ ३,१,२; स्थः ऐ शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; वृ ३,

९,२६; क्रौ नाद आबो निर्वा मुद्र

अक्ष त्रि सौ ब शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; स्थ>स्था<sup>१</sup>मना १,११९<sup>०</sup>; २प्र ३६:१९<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;कृपु १६<sup>m</sup>; अस्मि ई १६; के ३,४<sup>१</sup>; ८<sup>१</sup>; क १,२,१०; तै १,१०,

१; छां १,११,१; वृ १,४,१; ५;

१०<sup>१</sup>; २,४,१; कौ १,२<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; मैत्रि६,३; महा ३, ६; ८<sup>१</sup>; १९; अत्र३, ८; ९<sup>१</sup>; ५, ६५<sup>१</sup>; स्त्रः छां ८,

८, ३; स्मः छां १, ८, १; ४, ५,

१; वृ ३,१,२; छांग २३:४;

२४:१०<sup>a</sup>; २प्र ३६:८; पित्र१, ६; स्मसि सर २, १०९<sup>b</sup>;

असत् वृ ५, ४, १; मना १,

४९<sup>०</sup>; वृजा १, १<sup>a</sup>; वा १९;नी १, ६९<sup>०</sup>; ९<sup>१</sup>व ४४२:९;

४४७:१५; ४५२:१; ४५५:७;

a) तु. वैप १,५०३h। b) ऋ १,१६४,४१। c) 'शदु-' इति सुपा. यनि. सु-शोचः। d) 'रभे-' इति सुपा. यनि. सु-शोचः द. (तु. अज्या.)। e) तु. सस्थ. ?अष्टशापेतिम्<sup>०</sup>। f) 'स्रम्' इति निसा.। g) 'मदष्टोत्तर' इति अज्या.। h) '०३ सं०' इति सुपा. यनि. सु-शोचः द.। i) 'अष्टाशापतिम्' इति शोचः द.। j) यद्यप्यस्य धा. इह सामान्येन भव्यमात्रे वृत्तिर्भवति, तथापि यत्र कुत्राऽर्थान्तरमपि संकेतितं द. (तु. टि. गप् २८g, वैप १, ५०५a)। k) तैत्रा १०,१०,३<sup>१</sup>। l) 'असि' इति निसा. संटि., अज्या.। m) ऋ १,१६४,५०। n) 'विद्यते' इति अज्या.। o) ऐत्रा ७,१,१। p) तैत्रा १०,१,८। q) एकतरत्र 'अस्मि' इति आन.। r) 'अस्मि' इति शांत्रा ३, ६। s) ऐत्रा २७,१। t) साहितिको दीर्घः। u) ऋ १०, ९, १। v) एकतरत्र मा १,१। w) तु. सस्थ. ?अस्ता। x) एकतरत्र 'असि' इति अज्या., वे., शांत्रा ३, २ च। y) 'अस्मिन्' इति अज्या.। z) 'असि' इति अज्या.। a') उत्तरेण 'उप-स्र' > 'आः' इत्यनेन संधिरार्थः। b') ऋ २,४१,१६। c') मा ३२, ९। d') 'आसन्' इति अज्या.। e') मा १६,४। f') ऋ १,८९,५।



अस्तु के शां<sup>१</sup>; क शां<sup>१</sup>; १, १, १; तै शां<sup>१</sup>; छां शां<sup>१</sup>; ४, २, ३; वृ ३, ८, ५; मना शां<sup>१</sup>; २, १९<sup>१</sup>; मै मेत्रे शां<sup>१</sup>; सन्तु के छां शां<sup>१</sup>; वृ ६, ३, ६९<sup>१</sup>; मना १, ११९<sup>१</sup>; २, ३९९<sup>१</sup>; राउ ३, ४; एथि क १, १, २४; छां ५, १, १२; नाप ४, ३८<sup>१</sup>; व ४६०: १५९<sup>१</sup>; ४६१: २९<sup>१</sup>; असानि तै १, ४, ३; छां ५, २, ६; असाम वृ १, ५, २१; आसीत् तै २, ७, १; ऐ १, १; छां ३, १९, १; वृ १, २, १; २, ४; ६; ४, १, ७; १०; ११; १७; ३, १, ७, १; मै ५, ६; मैत्रि ५, २; वृजा १, १९<sup>१</sup>; अशि ६, ११; वृपू १, १९<sup>१</sup>; २, १३; मुद्र २<sup>१</sup>; आसन् मैत्रि ६, २; वृजा ६, १२; वृपू १, १; मुद्र १, ६९<sup>१</sup>; २; मवा १०९<sup>१</sup>; २ प्र ३३: १९; शौ ५१: १; गोच ६९: १०; सार २३०: ६; अलसम् अशि १, २; वा १९; सार २४३: २२; गी २, १२; स्यात् क १, १, १०; तै १, ११, ३; ऐ ३, ११; छां १, ३, ८; ९; १०; ११; १०, ३; वृ १, २, ७; ४, ७; गौ १, १९; २०; कौ २, १५; मै ४, ४, ५; मैत्रि ५, २; ७, १०; सूता ६, ३<sup>१</sup>; स्याताम् शां १, ७, ४५; गु १२; १३; शि ७, २३; स्यु: तै १, ११, ४; गौ ४, ५०; कौ ३, ८; वृजा ७, ३; १योत ३०; सी २५; स्क१०; रापू २, ३; राउ ३, ७; शां

१, ४; स्याम् तै २, ६, १; छां ६, २, ३; वृ १, २, १; ७; शां ३, १; १ संन्या २, १३; शा ३३९<sup>१</sup>; रार १, ७; मु१, १, ५१९<sup>१</sup>; चा ६; गी ३, २४; १८, ७०; स्याम् छां ६, २, ४; मना २, ५४९<sup>१</sup>; पा ६, ८९<sup>१</sup>; गी १, ३७. आस क १, १, १; छां ४, १, १; ६, १, १; वृ १, २, ४; ४, ३; २, १, १; १३; ५, ४, १; ६, २, ४; कौ ४, १; १८; मै ४, ५; त्रि ३; पा ७, ६; व ४६०: १९<sup>१</sup>; आसु: वृ ५, ५, १; गोउ ५.

\*अस्-✓\*अथर>\*अथर-डि.द्र.

अस्ति<sup>१</sup>

अस्ति-पद- -दम् शु २, ५.

अस्तिपद-महा-मन्त्र-

-न्त्रस्य शु २, ५.

अस्ति<sup>१</sup>

आस्तिक-

आस्तिक-त्व- -त्वम्

शारी २.

आस्तिक्य- -क्यम् त्रिवा

२, ३३; शां १, २९<sup>१</sup>; जाद २, १;

६९<sup>१</sup>; वरा ५, १३; गी १८, ४२.

अस्ति-ता-

अस्तिता-रूप- -पम् पाशु

२, ४३; वरा २, २६.

अस्तिता-लक्षण(ण>)णा- -णा

पाशु २, ४४.

अस्ति-त्व- -त्वे ते ६, १०१.

अस्ति-त्व-लक्षण- -णम् पाशु

२, ४३; -वरा २, २६.

अस्ति-त्व-वर्जित- -त:ते ५, ७०.

अस्ति-रूप- -पम् ते ६, ८४.

अस्ति-वस्तुत्व-वादिन्-

-दिनाम् गौ ४, ४२.

अस्मि<sup>१</sup>

अस्मि-ता- -ता योसू २, ६.

अस्मिता-मात्र- -त्रात् योसू

४, ४.

अस्मी(स्मि-इ)ति-शब्द-वि-

द्ध- -द्ध: सर ३, २८.

१सत्- सत् प्र २, ५; ४, ५; सुं २,

२, १९<sup>१</sup>; तै २, ३, १; ७, १; छां

३, १९, १; ६, २, १; २; ८, ४; ६;

वृ १, ३, २८<sup>१</sup>; ४, ११; ६, ३;

२, ३, १; २, ४; गौ २, ९; १०; ४,

२२; ३७; ४०; मैत्रि ६, २७९<sup>१</sup>;

वृउ ७, ५; ६; ८, १; ९, ५; ९;

सुबा १; २; ४; ११; १३-१५; शु

३, ५; तै २, ३०; ३, ३९; ५, ११;

३८; ६२; ६७; ६, ९४; राउ ३, १;

वा १७; पै १, २; महा २, ६५; ६७;

५, ४६; ९८; अन्न ३, १८; ५, ३३;

अक्षि १९<sup>१</sup>; अघ्या ४०; ६३<sup>१</sup>;

१आ २१; पन्न २, १; यो ३,

२५; गोउ ३०<sup>१</sup>; ६४<sup>१</sup>; दत्ता

१, १; व १५; चा ११; सार

२८९: १८; कालि ४०३: १६;

गा ११; गु ६१; विद्या ४; वउ

१, १८; ४, १; सांका ९; गी ९,

१९; ११, ३७; १३, १२; १७, २३;

२६; २७<sup>१</sup>; सत: सुं १, १, ७; छां

६, १०, २; ८, ५, २; १२, १;

वृ २, ३, २; ४<sup>१</sup>; गौ ३, २७;

मना १, १०९<sup>१</sup>; वृजा १, १९<sup>१</sup>;

a) तैआ ८, १, १। b) तैआ १०, ७, १। c) ऋ १, ९०, ६। d) मा ६, २२। e) 'एहि' इति तैत्रा २, ५, ८, ८। f) ऋ १०, ८४, २। g) ऋ १०, ८४, ६। h) ऋ १०, १२९, ४। i) एकतरत्र विशिष्ट इह अज्या. पा.। j) ऋ १०, ९०, १५। k) ऋ १, १६४, ५०। l) 'आसीत्' इति आन.। m) पा. वा. च?। n) संत्रा ३। o) ऋ १०, १२१, १०। p) ऋ १०, ८३, २। q) एतत् क्रिप. सदपि नाउउ. स. पूष. भवतीति कृत्वा पृथक् प्राति. निर्दिष्टं द्र.। विभक्त्यन्तरानर्हत्वाऽस्याऽन्ते विच्छेदकाऽभावः। r) मध्यतः इति-पदं लुप्तं द्र.। s) शौ १०, ८, ६ (वैतु. शं. संहित->-तम् इति)। t) 'सः' इति अज्या. संटि.। u) शत्रा १४, ४, १, ३२। v) 'सत्यम्' इति निसा. संटि.। w) मा १३, ३। x) ऋ १०, १२९, ४।

वृष १, १९<sup>०</sup>; महा ६, २४; अन्न १, ४१; २संन्या १६: ८९<sup>०</sup>; २शिसं ३२९<sup>०</sup>; सांस् ५, ५३; सांका ६०; ब्रस् २, ३, ९; ३१; गौ २, १६; सता छां ६, ८, १; सताम् छां ८, ३, १; गौ १, ६; मना २, ८९<sup>०</sup>; ७८९<sup>०</sup>; वृजा २, १४; नाप ४, १८; ५, ३०; ६, ४; त्रिवा २, ११८; महा ६, ५६; सार २३४: २०; वपं ३१३: २; भव ५, २१; सति छां ६, ९, २<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ३०; शु ३, ११; नाप ४, ३३; त्रिवा २, ९९; त्रिवि २, १२; महा ३, २१; ५, ४०; १०७<sup>३</sup>; योशि १, ६४; १३५; ६, ५९; १आ ६<sup>३</sup>; पाशु २, १७; २५; यो १, ४८; शि १, १३; ७, ५९; ११९; १२६; भव २, ३१; सांका ६६; योस् २, १३; ४९; गौ १८, १६; सत्सु महा ६, ५२; सद्भि: त्रिवि ५, ६; कै १, १; महा २, ३९; वि १; सन् ए ४, ५९<sup>०</sup>; छां ८, ४, २<sup>३</sup>; वृ १, ४, ६; ६, ३; ४, २, १; ३, ७, ४, ६; गौ ४, १७; वृजा ७, ७; वृज ४, ४; ५, १-३; सुबा ३; नाप ६, १९; रार २, ३८; राप् ४, २१; ३०; मुद्र २; महा २, ६४; योशि ४, १०; पप ४१८: २७; अन्न ४, ६४; ५, ७६; ११; अक्षि ३६; जाद १०, २; गोपू १९; वरा ४, १५; सार २५७: २२; हे १०; कालि ४०२: ७; व ४३७: १६९<sup>१</sup>; ४६०: ७९<sup>६</sup>; गौ ४, ६<sup>३</sup>; सन्त: छां ४, ३, ८; गौ २, ६; ४, ३१; वस् १९; महा

५, ३८; छाग २४: ७; स्व ६२: ३; सार २८३: १३; गौ ३, १३; सन्तम् क १, १, २; तै २, ६, १; ऐ ३, १४; छां १, ११, ७; ४, १, ३; ८, १२, १; वृ ४, २, २; कौ २, ७; नाप ४, ३४; १आ १४; गोपू १५. सती- ती वृ २, ४, ४; ४, ५, ५; मैत्रि ७, ११; ससा १, ३९; ४०: त्रिवा २, ६५; अन्न २, १३; इ १८: ७; सार २७६: ८; तीषु सु २, २, ४६; त्याम् अता १२.

✓अस्(क्षेपणे), > आसि, अस्यति क २, २, ३.

आसय-आसय लां २१६: १६.

१अस्त-

अस्त-तन्द्र- -न्द्र: ते १, ५<sup>०</sup>.

अस्त-दोष- -षम् भव २, ५६.

अस्त-समीहित- -तम् अन्न ५, ६०.

९अस्तवे श्वे ३, ६; नी १, ५.

अस्यत्- -स्यन्तम् नी १, १.

अ-संयत-

असंयता(त-आ)त्मन्- -त्मना गौ ६, ३६.

अ-संयोज्य मैत्रि ६, २१.

अ-संवत्सर-रात्रो(त्र-उ)षित- -ताय सुबा १६.

अ-संवत्सर-वासिन्- -सिनाम् छाग २४: १६.

अ-संवत्सर-वेदिन्- -दिने मुद्र ४.

अ-संविच्छि- -च्छि: वृज ९, १३.

अ-संविद्- -वित् अन्न ४, ५८; ५, ४३.

अ-संविदान- -न: आर्षे ९: ४; -ना:

आर्षे ८: १५<sup>६</sup>; -नौ छां ८, ७, २.

अ-संवृत- -तम् वृ २, ५, १८; नाप २, १८; सुबा ३.

अ-संवेदन- -नम् महा ५, ४७; अन्न ४, ६१.

असंवेदन-रू(प>)पा- -पा अन्न ५, ८४; ८८.

अ-संशय- -य: १अव १६; जाद ४, २९<sup>१</sup>; महा ४, ६०; गौ ८, ७; १८, ६८; -यम् नाप ३, ३६; त्रिवि १, १२; २, १६; ८, ६; गौ ६, ३५; ७, १.

अ-संशयवत्- -वताम् मैत्रे २, १६.

अ-संश्रय- -ये शि ७, १५.

अ-संश्लेष- -ष: ब्रस् ४, १, १४.

अ-संसक्त- -क्त: अन्न २, ५; ६.

अ-संसक्ति- -क्ति: वरा ४, १.

असंसक्ति-ना(मक>)मिका- -का महा ५, २५; ३१; वरा ४, २, ७.

अ-संसर्ग- -नो: अक्षि २०; योस् २, ४०; -नोम् अक्षि २०.

असंसर्ग-कला<sup>m</sup>- -ला महा ५, ३१.

असंसर्ग-फ(ल>)ला<sup>n</sup>- -ला वरा ४, ७.

असंसर्गा(र्ग-अ)भि(ध>)धा- -धाम् अक्षि १५.

असंसर्ग-मनस्- -ना: अन्न २, २९.

अ-संसिद्ध- -द्ध: सार २९१: १०.

अ-संस्कृ(त>)ता- -ता इ १६: १८. ?असंस्कृता(त-अ)ध्व-ना(ग-आ)-

लोक<sup>o</sup>- -के अन्न ५, २२.

अ-संस्पृशत्- -शन् त्रिवा २, ९२.

अ-संस्पृश्य त्रिवा २, १४६.

अ-संस्पृश्य- -श्यम् अन्न ५, ७३; जाद ९, ४.

a) ऋ १०, १२९, ४। b) मा १३, ३। c) 'स चौ' इति सुपा. यनि. सु-शोध: द्र. (तु. तैआ १०, ६, १)। d) तैआ १०, ६२, १। e) ऋ ४, २७, १। f) ऋ १, ६९, १। g) ऋ १०, ८३, ५। h) 'न्द्री' इति अच्चा. (तु. उन्न.)। i) मा १६, ३। j) तु. शं., वैप १, ८१; ५२६। k) 'दा:' इति वे.। l) 'यम्' इति अच्चा. संदि.। m) उप.१ उन्न. यनि. इति कृत्वा विरलाऽभिधायित्व इव तत्तात्पर्यं प्रतिपेदे? ✓कृ>करा- इत्येवं वा फ(ल>)ला- इत्येवं वा शोध: द्र.। यथेह पा. तथैव सधृ. सति नाउ. इति तु दिक्। n) तु. नापू. टि.। o) विग्रह: ? यनि. तु. उन्न.।

## अ-संस्पृष्ट-

असंस्पृष्ट-चेतस्- -ताः वसू २७.

असंस्पृष्ट-विकल्पां(ल्प-अं)श-

-शम् शां १,७,३४<sup>a</sup>.अ-सकृत्<sup>b</sup> मै १,७; मैत्रि १,४; मैत्रे

१,२; वृजा २,१०; नाप ५,९;

१संन्या २, ७७; गोपू १३;

सुद्र ४.

असकृदा(त्-आ)वर्तिन्- -तीनि छां

५,१०,८.

असकृदु(त्-उ)पदेश- -शात् सांस्पृष्ट,

३; वसू ४,१,१.

अ-सक्त- -क्तः गी ३,७; १९<sup>c</sup>; २५;

-क्तम् अज १,५६; ५,१०७;

वरा २,१८; सांका ४०; गी ९,

९; १३, १४.

असक्त-बुद्धि- -द्धिः गी १८,४९.

असक्ता(क्त-आ)स्मन्- -स्मा गी ५,

२१.

अ-सक्ति- -क्तिः गी १३,९.

अ-संकल्प- -ल्पात् अज ५, १०२;

-ल्पेन अज २,७.

असंकल्प-मात्र- -त्रेण महा ४,

११६.

असंकल्पा(ल्प-अ)ति-साम्राज्य-

-ज्ये महा ४,९८.

अ-संकल्पन-

असंकल्पन-मात्रै(त्र-ए)क-साध्य-

-ध्ये महा ४,९८.

असंकल्पन-शास्त्र- -स्त्रेण महा ४,

९१.

अ-संकल्पनीय- -यम् छां १,२,६.

अ-संक्रान्त- -न्तम् गौ ४,९६.

अ-संक्लृप्त- -सम् सुबा १२; नाप ५,

१०; १संन्या २, ६५.

असंक्लृप्त-माधुकरा(र-अ)बा-

(ब-आ)शिन्- -शी नाप ५,१;

१संन्या २,१३.

अ-संख्य- -ख्यः मैत्रि ६,२०; -ख्यान्

त्रिवि ५,४; -ख्यानि महा ५,२;

-ख्यैः त्रिवि ७,५०; सि ६,२५.

असंख्य-जन्मन्- -न्मानः महा ५,

१३८.

असंख्य-पाद- -दम् वउ ४,३१.

असंख्य-शीर्ष- -र्षम् वउ ४, ३०.

अ-संख्याक- -कान् त्रिवि ७,१.

असंख्याका(क-आ)नन्द-समुद्र-

-दम् सि ५,१६.

अ-संख्यात- -ताः त्रिवि ८,६; चू ६.

अ-संख्येय-

असंख्येय-वासना- -नाभिः योसू

४,२३.

१अ-सङ्ग- -ङ्गेन अज ५,३८.

असङ्ग-ता- -ता गौ ४,९७; -ताम्

अज ५,७.

असङ्ग-शस्त्र- -स्त्रेण गी १५,३.

असङ्ग-सुख-सौख्य- -ख्येन अक्षि

१७.

असङ्ग-स्थिति- -तिम् अज २,३.

२अ-सङ्ग<sup>d</sup>- -ङ्गः वृ ३,९,२६; ४,२,४;

३,१५; १६; ४,२२; ५, १५;

सुबा १३; अज २,४; शा २१;

सर ३,२७; अध्या ६८; वृउ ५,

२; ९,१५; सांस् १, १५; योसू

३,४०; -ङ्गम् वृ ३, ८, ८; गौ

४,७२; ९६; वृउ ९, १८; मैत्रे

१,४,१२; सुबा ८; अध्या ५१;

पिंज ३,८; -ङ्गाः वृउ ९,१६.

असङ्ग-त्व- -त्वात् वृउ ८,३.

असङ्ग-व्यवहार-

असङ्गव्यवहार-त्व- -त्वात् सु

२,२,२८.

असङ्ग-स्वरूप- -पः ते ३, ६.

असङ्गा(ङ्ग-आ)दि-श्रुति<sup>e</sup>- -ते:

सांस् ६,१०.

अ-संगत- -तानि इ १२:९.

अ-संगम- -मः अक्षि २४.

अ-सङ्गिन्- -ङ्गिनः महा ३,५.

अ-संघात- -तम् ते १, ७<sup>f</sup>.

असच्छास्त्र- -असत्-&gt; द्र.

अ-संचरत्- -रन् वृ १,५,२०; २१.

अ-सञ्जन- -नम् अक्षि २१.

अ-सत्- -सत् प्र २, ५; ४,५; तै २,

६,१; ७,१; छां ३, १९, १; द्, २,

१; वृ १,३, २८<sup>g</sup>; श्वे ४,

१८; गौ २,९; १०; ४,२२; ३९;

४०<sup>h</sup>; सुबा १; २; ३९<sup>h</sup>; ४; ११;

१३-१५; ते २, ३०; ३, ४८;

४९<sup>i</sup>-५४<sup>i</sup>; ५५<sup>i</sup>; ५६<sup>i</sup>; ५७<sup>i</sup>;५८<sup>i</sup>; ५९; ५, ११; ३८; द्, ४७;५१; ५२; ५३; ५४; ५५<sup>i</sup>; ५६;

६१; ६२; महा २,६४; ६७; ५,

४६; ९८; १६६; द्, ३४; वृउ ९,

९; अज ३,१८; ५, ३३; १आ

९; अक्षि ३८; पत्र २, १; वरा

४, १७; बा १९; गु ६१; भव

४,९; सांका ९; वसू २, १, ७;

गी ९,१९; ११,३७; १२,१२;

१७, २८; -सतः छां ६, २, १;

२; वृ १, ३, २८<sup>i</sup>; गौ ३, २८;मना १,१०<sup>j</sup>; २संन्या १६:८<sup>j</sup>;अक्षि १९<sup>k</sup>; अध्या ५८; चा १०;२शिसं ३२<sup>l</sup>; सांस् ५, ५२;

वसू २, २, २६; गी २, १६;

-सताम् मना २, ३०<sup>l</sup>; प्रा १,६९<sup>l</sup>; -सति मैत्रि २,७; वृजा १,१९<sup>k</sup>; वृपू १, १९<sup>k</sup>; लि ३११;

९; कर २४; वसू १,४,१३; २,

२, २१; -सत्सु महा ६, ५२;

-सङ्गिः गौ २,३३; नाप ५,२७;

-सन् तै २,६,१; अज २, २०;

a) 'विकारां' इति अज्या. । b) तस. । उप. यद्र. । वा. क्रिवि. द्र. । c) 'माधुकरम्' इति अज्या. ।

d) वस. इति कृत्वा १संख्याकात् स-रूपात् पृथक् द्र. । e) 'सङ्गस्वा' इति मूको. । f) विशिष्ट इह आन. पा. ।

g) तैआ ८,७,१ । h) मा १३,३ । i) शत्रा १४,४,१,३० । j) तैआ १०, २३, १ । k) ऋ १०, १२९, ४ ।



असत्-नाप ४, ३४; जाद ४, ६३; पा ७, १; ८.  
 असती-ती ससा १, ३९; ४१;  
 -तीम् नृउ ४, ५.  
 असच्छा(त्>च्-शा>छा)छ-  
 -छेषु नाप ५, २१.  
 असच्छाछ-गर्त-तेषु मु १, १, ४८.  
 असत्-कर-  
 असत्कर-त्व-स्वम् सांस् १, ९४.  
 असत्-कल्प-ल्पः अध्या २२.  
 असत्-कृत्य-परित्याग-नाः भव ५, १९.  
 असत्-ता-त्ता महा ६, २४; अज ४, २२; -ताम् महा ४, ५५; १संन्या २, २८.  
 असत्-त्व-स्वम् नृउ ९, ४; -त्वात् नाद २३.  
 असत्-संसार-विषय-जन-सं-सर्ग-नीः नि ३४.  
 असत्-सम-माः अज १, ३३.  
 असत्-संभाषण-णात् सू २९.  
 असदा(त्-आ)रमक-कम् ते ६, ५६.  
 असदु(त्-उ)त्पाद-दः सांस् १, ११४.  
 अस(त्>)द्-माह-हात् गी १६, १०.  
 असद्धे(त्-हे)तुक-कम् गौ ४, ४०.  
 असद्धा(त्-भा)व-वम् ते ५, ९३.  
 असद्रू(त्-रू)प-पः योशि ४, १०; -पम् अज ४, ५१.  
 असद्रूप-वत् अज १, २४.  
 असद्-व्यपदेश-शात् ब्रसू २, १, १७.  
 अस(त्>)न-मय-यः अज ५, ९१;  
 -यम् ते ३, ५४; ५५; ५६; ५७;  
 ५८.

अ-सत्कृत-तः गी ११, ४२; -तम् गी १७, २२.  
 २अ-सत्त्व-त्वः ब्रवि ८७; -त्वम् नृउ ९, १८; -त्वात् नृउ ८, ३.  
 अ-सत्य-त्यम् मै ५, ३; मैत्रि ६, ३; ते ३, ४८; ५, २२; ३७; ६, ५६; ५७; व २; गी १६, ८; -त्यस्य अध्या ५८.  
 असत्य-क-कम् ते ६, ४१.  
 असत्य-त्व-स्वम् ते ५, २२; -त्वेन १आ ५.  
 असत्य-नाश-शात् वरा ३, ४.  
 अ-संतति-तेः ब्रसू २, २, ४९.  
 अ-संनिकृष्ट-  
 असंनिकृष्टा(ष्ट-अ)र्थ-परिच्छित्ति-  
 -त्तिः सांस् १, ८७.  
 अ-संनिहित-  
 असंनिहित-त्व-त्वात् ब्रसू ४, ४, १७.  
 अ-संन्यस्त-  
 असंन्यस्त-संकल्प-ल्पः गी ६, २.  
 अ-सपत्न-तः वृ १, ५, १२; -तम् गी २, ८.  
 अ-सम-मः १आ १३; -माः नापू ४, १३९.  
 असम-त्व-स्वम् मै ३, ५; मैत्रि ३, ५.  
 अ-समञ्जस-सम् ब्रसू २, १, ८; २, १०.  
 अ-समर्थे-र्थः गी १२, १०.  
 अ-समानयितव्य-व्यम् नृउ ९, १८.  
 अ-समाप्य<sup>१</sup> शा ३३.  
 अ-समाहित-तः क १, २, २४; नाप ९, १९; महा ४, ६९.  
 अ-समिद्ध-द्धे शि ४, ४८.  
 अ-समीक्ष्य २प्र ३६; ५.  
 अ-समुद्भि-द्धिम् मना २, ६६९.  
 अ-सप्रज्ञात-  
 असंप्रज्ञात-नामन्-मा सु २, २, ५४.  
 अ-संप्राप्त-सम् महा ४, ३७.  
 अ-संबद्ध-द्धस्य सांस् ६, ६१.  
 असंबद्ध-प्रलाप-पः भव ५, ४.  
 अ-संबन्ध-न्धः गौ ४, १६; -न्धात् अज १, ३३.  
 अ-संवाध-धात् छां ७, १२, २.  
 अ-संभव-वः ब्रसू २, २, ९; -वात् ई १३; अज ५, १०९; ब्रसू १, २, १७; २६; ३, १८; ३१; २, २, ३३; ३, ३; ४, २; -वे शि ४, ६३; ६५; ६, १२०.  
 अ-संभवत्-वत् अज ५, ३६.  
 अ-संभाषण-  
 असंभाषण-पर-रः तुअ २१.  
 अ-संभूति-तिम् ई १२.  
 अ-संभेद-दाय छां ८, ४, १; वृ ४, ४, २२.  
 अ-संमूढ-ढः ध्या ६; गी ५, २०; १०, ३; १५, १९.  
 अ-संमोह-हः गी १०, ४.  
 अ-सर्व-र्वम् अशि ३, ३; अज ३, २३; व २१; १७; वदु ३१५; २.  
 अ-सर्वज्ञता-ता ब्रसू २, २, ४१.  
 अ-सर्व(तस्>)तो-मुख-खम् नृउ ६, १.  
 अ-सव्य-व्येन शि ५, ५१.  
 अ-सहमान-नः वृजा ६, १; -नाः वउ ४, २७.  
 अ-सहस्र-स्त्रेण छां ४, ४, ५.  
 अ-सहाय-यः सुबा १३; १आ १२.  
 असहाय-ता-ता नाप ३, ५४.  
 अ-सहायक-कः नाप ३, ५३.  
 अ-साधन-  
 असाधना(न-अ)नुचिन्तन-नम्

a) 'अपि शास्त्र' इति निसा. । b) वलिः प्र. (=असद्रूपेष्विव) । c) 'असत्त्वम्' इति अज्या. ।  
 d) 'असत्त्वस्य' इति अज्या. संटि. । e) 'सत्त्वता' इति निसा. संटि. । f) अ १०, ७१, ७ । g) 'माय' इति अज्या. ।  
 h) सि ५, ८७, ८ ।

सांसू ४,८.  
 अ-साधारण- -णम् शि ५,१५.  
 अ-साधारण्य- -ण्यात् सांसू ५,११२.  
 अ-साधु- -धुं छां २, १, १; ३; ७,  
 २, १; ७, १; वृ ५, १२, १; कौ  
 ३, ९; नाप ५, २४; -धुना छां  
 २, १, २; वृ ४, ४, २२; कौ ३,  
 ९; -धनाम् मना १, १२९<sup>b</sup>.  
 अ-साध्यं शि ७, ६२.  
 अ-साध्य- -ध्यम् त्रिवि ८, १८.  
 असाध्य-साध(न>)नी- -०नि व  
 ४५७: १९.  
 अ-सामञ्जस्य- -स्यात् ब्रसू २, २७.  
 अ-सामन्- -म छां २, १, १; ३; -आ  
 छां २, १, २.  
 अ-सामान्य(न्य>)न्या- -न्या सांका  
 २९.  
 अ-सामान्य-विशेषण- -णम् मैत्रे  
 १, ४, १०.  
 अ-सार- -रम् मै ४, २; मैत्रि ४, २;  
 जाद ४, ६१<sup>d</sup>.  
 असार-रस-संपद्- -पदः पित्र ५, २.  
 असार-संसार-चक्र- -क्रे त्रिवि  
 ४, १४.  
 अ-सार्वत्रिक(क>)की- -की ब्रसू ३,  
 ४, १०.  
 असि ✓अस् (भुवि) द्र.  
 असि<sup>६</sup>-  
 असि-कण्टक-धारि(न>)णी-  
 -०णि व ४५७: १९.  
 असि-धारा- -राम् मना २, ११९<sup>f</sup>.  
 असि-पत्र-वन-श्रेणी- -णी नाप  
 ३, ४९.  
 असि-हस्त- -स्तेन व ४५३: ११.  
 असिक्ली<sup>६</sup>- -क्रिया मना १, १३९<sup>b</sup>.

१अ-सित<sup>१</sup>- -तः वृ ३, ९, २६; ४, २,  
 ४; ४, २२; ५, १५.  
 २असि(त>)ता<sup>१</sup>- -ता मन्त्रि ५; वृ ५.  
 असिता(त-त्र)ङ्ग<sup>१</sup>- -ङ्गः सूता ५, ११.  
 असिताङ्गी<sup>१</sup>- -ङ्गी स्या १९.  
 असिताङ्गयु(ङी-उ)पनिषद्-  
 -षदम् स्या १९.  
 ३असित<sup>१</sup>- -तः वृ ६, ५, ३; गी १०,  
 १३; -तात् वृ ६, ५, ३.  
 अ-सिद्ध- -द्धम् वृ ९, ९; सु १, १,  
 २७; सार २५२: ८; सांका ६.  
 अ-सिद्धि- -द्धौ गी ४, २२.  
 असु<sup>१</sup>- -सुः ऐ ५, २; वृ २, १, १०; ३,  
 ९, १५९<sup>f</sup>; कौ ४, १२<sup>१</sup>.  
 असु-नियम- -मे वृ ३, ७.  
 असु-द- -दः पा १०, २.  
 १अ-सुख- -खम् छां ७, २२, १.  
 २अ-सुख<sup>१</sup>- -खम् गी ९, ३३.  
 अ-सुख-दुःख- -खः वृ ९, १३.  
 अ-सुप्त- -सः वृ ४, ३, ११.  
 १असुर<sup>१</sup>- -रः अद्वैता ६; -रम् रापू  
 ४, १९; -राः छां १, २, २-७; ८,  
 ८, ४; वृ १, ३, १<sup>१</sup>; ७; ५, २, १;  
 ३; मैत्रि ७, १०; मना २, २८९<sup>०</sup>;  
 कौ ४, २०; मुद्र ३; दे १०;  
 नि ६; २१; इ १६: ५; २प्र  
 ३३: १८; शौ ५२: १०; १३;  
 २२; ५३: १; सार २५८: १४;  
 २७३: १७; २९०: १३; -राणाम्  
 छां ८, ७, २; ८, ५; -रान् छां ८,  
 ८, ४; वृ १, १, २; ३, १; मना २,  
 ७९९<sup>p</sup>; कौ ४, २०; रापू ४, २६;  
 २प्र ३३: १९; २०; ३४: १;  
 शौ ५३: ९; -रेभ्यः मैत्रि ७,  
 ९; -रैः २प्र ३३: २३.

आसुर- -रः छां ८, ८, ५; वृ ७,  
 ६, १<sup>१</sup>; २; रापू ४, १७; वरा ३,  
 २४; गी १६, ६; -रम् वृ ६, १;  
 नि १०; ४५; ४७; इ १६: ४;  
 गी ७, १५; १६, ६; -राः सार  
 २२०: ४; ८; ९; २५०: ६; गी  
 १६, ७.

आसुरी- -री तुल ७१:  
 १६; गी १६, ५; -रीम् गी ९, १२;  
 १६, ४; २०; -रीषु गी १६, १९.

आसुर-स्व-

आसुरस्व-तस्(>): वरा  
 ३, २३.

आसुर-निश्चय- -यान् गी  
 १७, ६.

असुर-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-भू-  
 ता(त-आ)दि-भूत-शरीर-रू-  
 (प>)पा- -पा सी १०.

असुरा(र-अ)न्तक-चक्र- -क्रम नृष  
 ८४: ८; ८५: ४.

\*२असुर<sup>१</sup>-

आसुरि<sup>१</sup>- -रये सांका ७०; -रि:  
 वृ २, ६, ३; ४, ६, ३; ६, ५, २;  
 सांका ७०; -रैः वृ २, ६, ३; ४,  
 ६, ३; ६, ५, २.

आसुरायण<sup>१</sup>- -णः, -णात्  
 वृ २, ६, ३; ४, ६, ३; ६, ५, २.

आसुरि-वासिन्- -सिनः वृ  
 ६, ५, २.

\*३असुर<sup>१</sup>-

\*असुरिक<sup>१</sup>-

असुर्य<sup>१</sup>- -र्याः ई ३.

\*१४असु(र>)रा- -राम् सुबा ९<sup>१</sup>.

अ-सुषुप्त- -सम् वृ २, १<sup>१</sup>.

अ-सूत्र<sup>१</sup>- -त्रः कश्च ३, १.

a) वा. क्रिवि. भवति । b) तैआ १०, १, १२ । c) नञ्-समासेऽपि ह्यप् उसं. (पा ७, १, ३७) । d) 'सदा  
 सारम्' इति सुपा.पूप.प्रक्रिष्टिः यनि. सु-शोधा द्र. । e) तु.वैप १, ५३१ । f) तैआ १०, ९, १ । g) तु.वैप १, ५३२b ।  
 h) 'बन्धा' इति ऋ १०, ७५, ५ । i) तु.वैप १, ५३२c । j) तु.वैप १, ५३२d । k) तु.वैप १, ५३३f । l) 'आयुः'  
 इति अन्ध्या. । m) बस. इति कृत्वा नापू. पृथक् द्र. । n) तु.वैप १, ५३४ । o) तैआ १०, २१, १ । p) तैआ १०,  
 ६३, १ । q) तु.वैप १, ५३७j, k, l । r) उत्तरेणाऽऽर्षः संधिः द्र. ।

\*अस्य-

✓अस्य

१<sup>७</sup>अस्यक-काय शा ३३; सु

१,१,५१.

असूया-

असूया-वत्-वत्ते अव्य ७.

असूयित-तः नाप ५,२७.

असूज-सूक्ते ४,२४; छाग २५:

११; गार ४०८:१०.

अ-सूष्ट-

असूष्टा(ष्ट-अ)अ-अम् गी १७,

१३<sup>१</sup>.

अ-सोम-य-पा: दे १०.

अ-स्खलित-

अस्खलित-स्व-स्व-रूप-ध्यान-

-नेन नाप १.

१अस्त-✓अस् (क्षेपणे) द्र.

२अस्त-स्तम् मैत्रि ६,१४; वरा ४,२२.

अस्त-ग&gt;गा-गा यो ३, १९.

अस्तम्<sup>१</sup>

अस्तं/गच्छ, गम्, अस्तं...

गच्छति क२,१,९; वृ१,५,२३;

अस्तंगच्छन्ति प्र ६,५<sup>१</sup>; सुं ३,

२,८; अस्तं...गच्छन्ति गु ३८.

अस्तंगच्छत्-च्छतः प्र

४,२.

अस्तंगत,ता-तः अज

३,११<sup>१</sup>; ५,३१; ३२; ता: मैत्रि

६,२२; ते सु २, २, ५१; ५२;

-तायाम् महा ५,११५.

अस्तमि(म्/इ) अस्तमेति छां

४,३,१<sup>१</sup>; मैत्रे २,१४; महा २,६४; ५, १०२; सुवा ९<sup>१</sup>;

सूता १, १०; अस्तयन्ति छां

१, ९, १; अस्तमेतु वरा २,

६६.

अस्तं-यत्-यन् छां २,१४,

१; यन्तम् कौ २,७.

अस्तम(म्-अ)य-यः अज

४,२२; -यात् छां २, ९, ७; -ये

सूता १,१५.

अस्तमि(म्-इ)त-ते वृ ४,

३,३; ४<sup>१</sup>-६<sup>१</sup>; १संन्या १,१; कश्रु

१,१.

अस्तमित-द्वित्व-स्वम्

अज २,३८.

अस्तमित-शायिन्-यी

नाप ५,१४.

अस्तमिता(त-अ)हंत-

-तः आबो १.

अस्तमे(म्-ए)वृ-ता छां ३,

६,४; ७,४; ८-१०,४<sup>१</sup>; ११,१.

\*अस्तर-✓\*अथर&gt;\*अथर-टि.द्र.

अस्तवे ✓अस् (क्षेपणे) द्र.

१अस्ता<sup>१</sup> कृपु १६.

अस्ति ✓अस् (भुवि) द्र.

अ-स्तुत-तम् कौ २,११९<sup>१</sup>.

अ-स्तेन-नः वृ ४,३,२२.

अ-स्तेय-यम् नाप ३,२४; त्रिवा २,

३२; शां १,१; जाद १,६; ११;

१२; वरा ५, १२; शि १, २७;

७,१००; भव ५,१२.

अस्तेय-प्रतिष्ठा-ष्टायाम् योसू २,

३७.

अस्तेय-ब्रह्मचर्या(र्य-अ)परिग्रह-

-हा: नाप ४,१०; शारी १.

अ-स्तेयिन्-यी वि ३३; मृ ६.

अस्त्र<sup>१</sup>-अस्त्र रार २,६१; ८४; महा

५,११०; व ४२६: ८; -आणि

रापू ४,२७<sup>१</sup>; -आय वृपू २,४;

शु १,१८; लां २१३: ११; वपू

२,२; -खे दत्ता १,५-७; -खेण महा

५,११०; -खै: व ४३८: १४;

४३९: १; ११; २१; ४४०: ८;

१९; ४४१: ६; १७; ४४२: ४;

१५; ४४३: २; १३; ४४४: ६;

१६; ४४५: ३; १४; ४४६: १;

१३; २३; ४४७: ११; २२;

४४८: १०; २१.

अस्त्र-क-कम् रार २,१२.

अस्त्र-त्रिशूल-डमरु-खड्ग-काल-

मृत्यु-रूपाल-खट्वाङ्ग-धर-

-०२ लां २१५: २२.

अस्त्र-मण्डल-ले भ २,३०.

अस्त्र-मन्त्र-न्त्रेण वृजा ४,१.

अस्थान<sup>१</sup>-स्था जाद ४,१०.अ-स्थान-नम् मै १,७<sup>१</sup>; मैत्रे १,२<sup>१</sup>.अस्थि<sup>१</sup>-स्थिते १,७,१; छां २,१९,

१; ६, ५, ३; ते ४, २५; ६, ७;

महा ४, २३; पिं १०; -स्थिनः नि

२३; -स्थिभिः मै ३, ४; मैत्रि

३, ४; मैत्रे १, ३; -स्थिभ्यः सुवा

२; गर्भ २; निरु १, ५; -स्थीनि

वृ १, १, १; ३, ९, २६; २८;

गर्भ २, ५; मना २, ६५<sup>१</sup>; महा

४, १२७; छाग २५: ११; निरु

१, ५; गार ४०८: १०.

अस्थि-चर्म-नाडी-रोम-मांस-सा:

शारी १.

अस्थि-चर्म-आयु-मज्जा-मांस-शुक्र-

शोणित-श्लेष्मा(ष्म-अ)श्रु-दू-

षिका-विष्णु(ष् &gt; दू-मू)त्र-

वात-पित्त-कफ-संघात-ते मै

१, २<sup>१</sup>; मैत्रि १, ३<sup>१</sup>.

a) तु. वैप १, ५३८। b) संन्या ३। c) तु. वैप १, ५३९८। d) 'अमृष्टाजम्' इति SCHR [वैतु. वे.

(NIA २, २३१)]। e) तु. वैप १, ५४०८। f) तु. वैप १, ५४०८। g) सुपा. १. 'स्थ&gt;स्था' इति शोधः द्र.।

h) 'अस्तुतम्' इति शब्दा १४, १, ४, २६। i) ✓अस्(क्षेपणे)+त्रः प्र. उसं. (पाठ ४, १६७)। j) 'अस्त्राज्' इति आन.।

k) तु. वैप १, ५४११। l) निसा. पा. अनन्पूर्वः सन् यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। m) तु. वैप १, ५४२८।

n) तैय्या १०, ५४, १। o) 'दूषिते विष्णुत्र' इति निसा. पा. यनि. सु-शोधः द्र.। p) 'मज्ज' इति सुपा. यनि. सु-शोधः द्र.।



अस्थि-मध्य- -ध्ये योशि<sup>५,३०;३१</sup>  
 अस्थि-स्थूण- -णम् नाप ३,४६.  
 अस्थि-स्नाय्वा(यु-आ)दि-रूप-  
 -पः कर १७.  
 अ-स्थिर- -रः मै ३,२; मैत्रि ३,२;  
 ६,३०; -रम् भव १,१९; गी ६,  
 २६; -राः महा ३,४; भव १,२६.  
 अस्थिर-त्व- -त्वम् मैत्रि ३,५.  
 अ-स्थूल- -लम् वृ ३,८,८; सुबा ३;  
 नाप ९,२०; योशि ३,१९; अञ्ज  
 ५,७३; जाद ९,४.  
 अस्थूल-रूप- -पम् अव्य १.  
 अस्थूला(ल-अ)स्थूला(ल-अ)-  
 स्थूल<sup>१</sup>- -लः वउ २,१९.  
 अ-स्नातक- -कः जा ४; नाप ३,७७;  
 पप ४१८: ५; या १,१.  
 अ-स्नाविर<sup>१</sup>- -रम् ई ८.  
 अ-स्निग्ध- -ग्धम् सुबा ३.  
 १अ-स्नेह- -हः नाप ४,११.  
 २अ-स्नेह<sup>१</sup>- -हम् वृ ३,८,८.  
 अस्नेह-दीप-  
 अस्नेहदीप-वत् महा २,७६.  
 अ-स्पन्द-  
 अस्पन्द-ता- -ताम् पै ३,३; महा  
 २,६३; यो ३,३४; सु २,२,७६.  
 अ-स्पन्दमान- -नम् गौ ४,४८<sup>२</sup>.  
 अ-स्पर्श- -शः त्रवि ८२; -शम् क  
 १,३,१५; वृउ ९,१८; सुबा ३;  
 पै ३,४; यो ३,३५; सु २,२,७२.  
 अस्पर्श-योग- -नः गौ ३,३९; ४,२.  
 अ-स्पर्श-रूप- -पम् योशि ३,१९.

✓\*अस्पृ  
 \*अपुर्-  
 \*अपुव<sup>१</sup>-  
 अपूप<sup>१</sup>- -पः छां ३, १, १;  
 -पानाम् वपू २,५.  
 अपूप-कूला- -लाः इ  
 १०: ९.  
 अ-स्पृष्ट- -ष्टः गौ ४,८४.  
 अ-स्पृष्ट- -ष्टा मैत्रि ६,११.  
 अस्मद्<sup>१</sup>-  
 अस्म- -स्मभ्यम् मना २,१९<sup>१</sup>; स्व  
 ६१: १६; व ४६१: ३; १७९<sup>१</sup>;  
 ४६४: २९<sup>१</sup>; -स्मान् ई १८; वृ  
 ५,१५,१९<sup>१</sup>; ६,४,२८; मना १,  
 ११९<sup>१</sup>; २,१९<sup>१</sup>; ७३९<sup>१</sup>; कौ २,  
 ९; दे ५,९<sup>१</sup>; १०; सर २, ८९<sup>१</sup>;  
 चा २१९<sup>१</sup>; छाग २४: ८; पा  
 २,९; -स्माभिः सार २४६: ५;  
 सिशि ३८३: १०; गी १, ३९;  
 -स्मासु व ४३७: १४९<sup>१</sup>; ४६०:  
 ६९<sup>१</sup>; -स्मे नाप ४, ३८९<sup>१</sup>; व  
 ४६०: १७९<sup>१</sup>; लिं ३१०: १९<sup>१</sup>.  
 अस्मद्- -स्मत् ई १८; तै १,११,  
 ३; वृ ३, ९, २५<sup>१</sup>; ५,१५,१९<sup>१</sup>;  
 मना २, ४८९<sup>१</sup>; वृपू २, ८९<sup>१</sup>;  
 छाग २४: ११; लिं ३१०: २९<sup>१</sup>.  
 अस्मच्छ(द्-श)ब्द- -ब्दम् द२.  
 अस्म(द्>)त्-कुल-  
 अस्मत्कुलीन- -नः छां ६,  
 १,१.  
 अस्म(द्>)त्-कृत- -तस्य मना

२,५९<sup>१</sup>.  
 अस्म(द्>)त्-पितृ- -तरम् पा  
 ९,९.  
 अस्म(द्>)त्-प्रत्यय-शब्द-  
 -ब्दयोः अध्या ३१.  
 अस्म(द्>)त्-प्रत्यया(य-अ)व-  
 लम्बन- -नः पै ३,१.  
 अस्मद(द्-अ)वकुण्ठन- -नात्  
 वि २९.  
 अस्मदा(द्-आ)दि- -दीनाम्  
 राधा ३,१६.  
 अस्मदादि-वत् सांसू ५,  
 १०९.  
 अस्मदीय- -यैः गी ११,२६.  
 अस्मद्-वसु-विलुम्पक- -कान्  
 व ४३४: १९.  
 अस्मद्-विद्या- -द्या छां ४,  
 १४,१<sup>१</sup>.  
 अस्माक<sup>१</sup>- -कम् के ३, १<sup>१</sup>; प्र ६,  
 ८; तै १,११,२; मना २, १९<sup>१</sup>;  
 कौ २,८; ९; अव्य ६; अरु ६९<sup>१</sup>;  
 व ४३९: ५९<sup>१</sup>.  
 अहम्<sup>१</sup> ई१६; के शां<sup>१</sup>; २,२; ३,४<sup>१</sup>;  
 ८<sup>१</sup>; क १, १,२०; २,१०; प्र २,  
 ३; ३,२; ६,१<sup>१</sup>; ७; तै १, ४,३;  
 ऐ४,५९<sup>१</sup>; छां शां<sup>१</sup>; १,५,२; ४;  
 ८,७; ८; ११,१; वृ १,४,१<sup>१</sup>; कै  
 १,१९; २,१<sup>१</sup>; कौ १, १<sup>१</sup>; ६<sup>१</sup>;  
 २,१; २; ८; १०९<sup>१</sup>; ३, ७९<sup>१</sup>;  
 ससा १, ४२<sup>१</sup>; मन्त्रि १<sup>१</sup>;  
 अहोम्<sup>१</sup> मवा ११; अहम्-अहम्

a) अभ्यासो गुणप्रकर्षमाह । b) तु. वैप १,५४३i । c) वस. इति कृत्वा नापू. पृथक् द्र. । d) तु. वैप १,  
 ५४३j, l । e) व्यु. च १अं-, २अ- (=वैप १,१ यक् १अं-, २अं-) इत्यंतद्विषयेऽस्मिमतस्य सतो निर्देश-शोधस्य  
 च कृते तु. वैप १,५४३q । f) अ ८,११,१० । g) अ १०,८४,७ । h) अ १,१८९,१ । i) मा ६, २२; तैसं १,  
 ४,४१,१; ७,३,११,१ । j) अ १,१८९,२ । k) अ १०,७३,११ । l) अ ८,१००,११ । m) अ २, २३, १५ ।  
 n) अ १०,८३,४ । o) तैत्रा २,५,८,८ । p) अ १०,८४,३ । q) अ ६,७४,३ । r) शौ ७, ५५, १ । s) अ २,  
 ३३,११ । t) तैत्रा १०,५९ । u) 'अस्माद्विद्या' इति निसा. । v) तु. वैप १,५५०e । w) अ ५,४,९ । x) अ  
 १०,१५७,३ । y) अ १,७,१० । z) तु. वैप १, ५५१g । a') अ ४, २७, १ । b') 'इदम्' इति अज्या. ।  
 c') 'त्वम्' इति शांआ ४,१० । d') 'आवाम्' इति शांआ ५,७ । e') 'एवम्' इति अज्या. । f') पा. १ तु. सस्थ.  
 ?तेजसोह-> -हम् । g') अहमष्टेरोमादेशे यनि. द्र. ।

बा २३.  
अहं-शेषां(ष-अं)श-ज्योती-  
(<तिसु>र)-रूप-यः राधा  
४,३.  
अहं-श्रेयस्-यसि छां ५,१,६;  
-यसे कौ २,१४.  
अहं/कृ,अहंकरोति नाप ६,१.  
अहं-कर्तव्य-व्यम् प्र ४,८;  
सुबा ५,६;९; -व्ये सुबा ५.  
अहं-कार-रः प्र ४,८; मै  
५,५; मैत्रि ६,५; ते ४,७; ५,  
३२; ७६; १००; सुबा ५,६; ७;  
ससा १,४३; नाप ४,६; ५,१;  
त्रिबा १,३; ९; त्रिवि २,१४;  
महा १,१; ५,९२; १२५; १३०;  
शारी १; ६; अध्या १; प्रा ४,  
१; गोड ४०; ५५; वरा १,४;  
शि १,११; भव २,२२; २७;  
सांसू १,६१; ७२; २,१६; ६,  
५४; सांका २२; २४; गी ७,४;  
१३,५; -रम् ते ३,४८; सुबा ७;  
९; योशि १, ३७; पै ३, १;  
अध्या १; शि ७,११६; सं १०;  
वउ ४,११; गी १६, १८; १८,  
५३; ५९; -रस्य शारी १; सांसू  
१, ६३; -रात् महा ३, १६;  
त्रिबा १,३; त्रिवि २,१४; गोड  
४०; सांसू १,६१; २,१८; सांका  
२५; गी १८, ५८; -रे सुबा ५;  
पै ३, १; -रेण नाप ६, १; -रैः मना  
२, ६६९; -रौ महा ५, ९५.  
आहंकारिक-  
आहंकारिक-त्व-  
श्रुति-तेः सांसू २, २०; ५, ८४.  
अहंकार-कर्त्रे(त्वे-अ)धी-  
(न>)ना-ना सांसू ६, ६४.  
अहंकार-कला-त्याग-  
नो अच ५, १११.  
अहंकार-कला-युक्त-

-क्तम् महा ५, १५३.  
अहंकार-क्षय-ये योशि  
१, १५०.  
अहंकार-गृह-स्थ-  
स्थस्य महा ३, २८.  
अहंकार-ग्रह-हात्  
अध्या ११.  
अहंकार-ता-ताम् महा  
५, १२४.  
अहंकार-धर्म-मां:  
सांसू ६, ६२.  
अहंकार-नामन्-मा  
सं ३.  
अहंकार-म(य>)यी-  
यीम् महा २, ४५; ६, ४५.  
अहंकार-रिक्त-  
अहंकाररिक्त-ता-  
ता महा ३, १७.  
अहंकार-वश-शात्  
महा ३, १६; १७.  
अहंकार-विमूढा(द-आ)-  
त्मन्-रमा गी ३, २७.  
अहंकार-विलय-ये  
अज्ञ ५, ५४.  
अहंकार-समन्वित-तः  
पै १, २६.  
अहंकार-संबन्ध-न्भात्  
वरा ३, २०.  
अहंकार-सुत-तम् मैत्रे  
२, १२.  
अहंकारा(र-आ)कर्षि-  
(न>)णी-णी आथ ३, ९५; ३.  
अहंकारा(र-आ)दि-देहा-  
(ह-अ)न्त-न्तम् शु ३, ७<sup>b</sup>;  
आबो ३०.  
अहंकारा(र-आ)दि-  
पञ्च-त(द्>)न्-मात्र-त्राणि  
वउ २, ३२.  
अहंकारा(र-आ)देश-

-शः छां ७, २५, १.  
अहंकारा(र-अ)भि-  
(ध>)धा-धा पै १, १३.  
अहंकारा(र-अ)भिमान-  
नेन त्रिबा २, १६.  
अहंकारा(र-आ)विष्ट-  
ष्टः जावा ८.  
अहं-कृत-तः १ संन्या २,  
३९; वरा ४, २५; गी १८, १७.  
अहं-कृति-तिः महा ५,  
८९; ९०; ९५; योशि १, ८; ३४;  
३६; १ योत १०; गु ७; -तिम् सु  
२, २, ५३.  
अहं-ता-ता ते ६, ५१; महा  
५, ४४.  
अहंतां(ता-अं)श-शे महा  
५, ७.  
अहं-त्व-त्वात् नृउ ७, ९.  
अहंत्व-वेदन-नम् महा  
५, २.  
अहं-वी-धियम् अध्या ९.  
अहं-नामन्-मा वृ १, ४, १.  
अहमा(म्-आ)दि-दिषु अध्या  
१८.  
अहमि(म्-इ)स्या(ति-आ)दि-  
संकल्प-ल्पः नि ३५.  
अहं-भाव-वः अच ५, ११;  
अध्या ४५; -वम् ते ६, १०४;  
सौ २, १३.  
अहंभाव-म(य>)यी-यीम्  
महा ६, ४०.  
अहंभाव-रहित-ताः सार  
२३५; २२.  
अहंभावा(व-अ)नहंभाव-  
-वौ अच ५, १०७.  
अहंभावो(व-उ)दया(य-अ)-  
भाव-वः अध्या ४१.  
अहं-मति-तिम् वरा २, ५; -स्या  
अच ५, ९३.

a) तैआआ १०, ६६ । b) 'न्तात्' इति अख्या ।

अहं-मम-स्वम-गति- -तिम्  
 शु ३, ९१.  
 आव<sup>b</sup> -वयोः त्रिवि ६, २५; ८,  
 २२; कालि ४०२; ७; २१; गी  
 १८, ७०; चाभ्याम् ऐ २, ५;  
 -वाम् छां ८, ५; ३; वृ ३, २, १३.  
 \*नृ (<\*१अ- <\*अर्-)- नः ई  
 १०; १३; के १, ३; क १, १,  
 २९; प्र शां; २, १३; तै १, १२,  
 १५; ऐ २, १; २; छां १, १२, २;  
 २, १, ३; वृ १, ३, २-७; श्वे  
 ३, ४; ५९<sup>d</sup>; जा ४९<sup>e</sup>; नौ क  
 शां; तै शां; वृ ३, २, १३.  
 मद्<sup>f</sup> -मत् क १, २, २१; ऐ ३, ११;  
 छां ५, १, ८-११; वृ ६, १,  
 ८-१२; पाशु १, ९; मं २, ४, ४;  
 वरा ३, १; बा २१; वउ ३, ५६.  
 मच्चि(दु>त-चि)त्त- -त्तः गी  
 ६, १४; १८, ५७; ५८; -त्तम् अञ  
 १, १६; -त्ताः गी १०, ९.  
 मच्चि(दु>त-चि)न्तन- -नम्  
 वरा २, ४६.  
 मच्छ(दु>त-श>छ)रीरक-  
 पञ्जर- -रात् १ संन्या २, ३८.  
 म(दु>ज-ज्ञ)ज्ज्ञ- -ज्ज्ञः छां २,  
 १९, २१.  
 मत्-कथन- -नम् वरा २, ४६.  
 मत्-कर्म-कृत्- -कृत् गी ११,  
 ५५.  
 मत्-कर्म-परम- -मः गी १२,  
 १०.  
 मत्-कारिन्- -री<sup>g</sup> गर ९;  
 १२-२३.  
 मत्-तत्स(>) अशि १, २; आरु  
 ३; वरा २, ३८; तुअ १६; पप  
 ४१८; २७; ३०; तै ३, ३३; ६,

७३; नाप ४, ३८<sup>h</sup>; ७; दे १; भ  
 २, ७; २६; जाद १०, ६; वउ ३,  
 २६; ४, ४३; ४४; गी ७, ७; १२;  
 १०, ५; ८; १५, १५; १८, ९.  
 मत्-तार- -रम् सु १, १, १९;  
 २१.  
 मत्-त्यक्त- -क्तम् ते ३, १९.  
 मत्-पर- -रः गी २, ६१; ६, १४;  
 १८, ५७; -राः गी १२, ६.  
 मत्-परम- -मः गी ११, ५५;  
 -माः गी १२, २०.  
 मत्-परा(र-अ)यण- -णः गी  
 ९, ३४.  
 मत्-पादा(द-आ)कृति- -तयः  
 ऊ ६४; ५.  
 मत्-पुत्र- -०त्र नाप २.  
 मत्-पूजा- -जायाः वि २१.  
 मत्-प्र(त>)त्ता- -त्ताभिः क  
 १, १, २५.  
 मत्-प्रभाषण- -णम् वरा २,  
 ४६.  
 मत्-प्रसाद- -दात् गी १८, ५६;  
 ५८.  
 मत्-प्रसृष्ट- -ष्टः क १, १, ११.  
 मत्-संवर्धित<sup>h</sup> -ताः पाशु १, ७.  
 मत्-संस्था- -स्थाम् गी ६, १५.  
 मत्-सदृश- -शः रार १, ९.  
 मत्-संनिधि- -धौ वरा ३, १४.  
 मत्-सांनिध्य- -ध्यात् ससा ३.  
 मत्-सामीप्य- -प्यम् सु १, १,  
 २३.  
 मत्-सायुज्य- -ज्यम् त्रिवि ८,  
 २३; वा २०; सु १, १, २४; गोच  
 ६६; १९.  
 मत्सायुज्य-पदवी- -वीम्  
 सु १, १, १५.

मत्-सार-भूत- -तम् गोउ ५०.  
 मत्-सारूप्य- -प्यम् सु १, १,  
 २१.  
 मत्-स्थ- -स्थानि गी ९, ४-६.  
 मत्-स्व-रूप- -पः वि २; त्रिवि  
 ८, २.  
 मत्स्वरूप-परिज्ञान- -नात्  
 वरा २, २८.  
 मद(दु-अ)ङ्ग-लेपन- -नम् वा  
 ४; गोच ६६; २.  
 मद(दु-अ)धिष्ठान-  
 मदधिष्ठान-तत्स(>) योशि  
 २, ८.  
 मद(दु-अ)नुग्रह- -हात् वि २९;  
 -हाय गी ११, १.  
 मद(दु-अ)नुस्मरण- -णात्  
 योशि ३, २५.  
 मद(दु-अ)भिमत-रहस्य-  
 -स्यम् नाप २.  
 मद(दु-अ)र्चन- -नम् वि ६.  
 मद(दु-अ)र्थ- -र्थम् वरा २, ८;  
 गी १२, १०; -र्थे गी १, ९.  
 मद(दु-अ)र्वण- -णम् गी ९,  
 २७.  
 मद(दु-अ)र्पित-कर्मन्- -र्मणाम्  
 भ २, २८.  
 मद(दु-अ)सूया-पर- -राय  
 त्रिवि ८, २०.  
 मदा(दु-आ)त्मक- -कम् यो १, ७८  
 मदात्मक-ता- -तया वरा  
 २, ६५.  
 मदा(दु-आ)विष्ट-चेतस्-  
 -त्तसाम् भ २, २८.  
 मदा(दु-आ)श्रय- -यः गी ७, १.  
 मदि(दु-इ)ष्ट- -ष्टम् नाप २.  
 मदीय- -यम् ते ५, ५०.

a) व्यस्त इव सन् मुपा. यनि. सु-शोधः द्र. । b) तु. वैप १, ५५४b । c) तु. वैप १, ५५४ । d) मा १६, २ ।  
 e) ऋ ३, २९, १० । f) तु. वैप १, ५६५f । g) प्रकृतसर्पादिविषधरीयं विप. (वैतु. अज्या. -रि इति ह्रस्वान्तं सद् विष-  
 गामितया नेयं रु.) । उप. <✓कृ हिंसायां यद्र. (तु. सस्थ. टि. तत्-कारिन्- ) । h) मति<sup>o</sup> इति मुपा. यनि.  
 सु-शोधः द्र. ।



मदीयो(य-उ)पासक- -कस्य  
त्रिवि ८, १८.

मदीयो(य-उ)पासना-  
-नाम् त्रिवि ८, १५.

मदु(द-उ)पासक- -कः त्रिवि  
८, १८<sup>१</sup>.

मदु(द-उ)पासना- -नया त्रिवि  
८, १८<sup>१</sup>; सु १, १, २५.

मदे(द-ए)क-परम- -मः वरा  
२, ४६.

मदे(द-ए)क-पूजा- -निरत-  
-तः भ २, २०.

मद्-गत- -तेन गी ६, ४७.

मद्गत-प्राण- -णाः गी १०, ९.

मद्-द(त>)ता- -त्ताम् वउ  
३, ४६.

मद्-देह- -हे वउ ३, २०.

मद्-भक्त- -क्तः योशि २, २१;

सार २६१: १९; गी ९, ३४;

११, ५५; १२, १४; १६; १३, १८;

१८, ६५; -क्ताः गी ७, ३;

-क्तानाम् सार २४९: २३; -क्ताय

सु १, १, ४९; -केषु त्रिवि ८, २१;

गी १८, ६८; -क्तः वा ३; गोच

६५: ३; सार २४६: ११.

मद्-भक्ति- -क्तिम् गी १८, ५४;

-क्त्या वा ३३.

मद्भक्ति-निष्ठ- -ष्ठः त्रिवि ८,

१५; २१.

मद्भक्ति-वि-मुख- -स्त्राय सु

१, १, ४८.

मद्भक्ति-विहीन- -नाय त्रिवि

८, २०.

मद्-भाव- -वम् गी ४, १०; ८,

५; १४, १९; -वाः गी १०, ६; -चात्

वि १, १३; -वाय गी १३, १८.

मद्-भिन्न- -ज्ञाः वउ ४, ४५.

मद्-याजिन्- -जिनः गी ९, २५;

-जी गी ९, ३४; १८, ६५.

मद्-योग- -नाम् गी १२, ११.

मद्-रूप- -पम् वा २६; सु १,

१, २४; -पस्य योशि २, ७.

मद्द्रूप-ता- -ता भ २, २८.

मद्-वचन- -नात् वृजा ६, ५.

मद्-वा(त्>क्>)ग-वृष्टि-

बला(ल-अ)-बल- -लम् महा

५, १०९.

मद्-विश्व-रूप- -पम् रार १, ९.

मद्-व्यतिरिक्त- -क्तम् त्रिवि ८,

२; १५<sup>१</sup>.

मद्-व्यपाश्रय- -यः गी १८, ५६.

म(द्व>)न्-नाम-भजन- -नात्

सु १, १, १८.

म(द्व>)न्-नाम-सहस्र- -स्रम्

रार १, ९.

म(द्व>)न्-मनस्- -नाः भ २,

२०; गी ९, ३४; १८, ६५.

म(द्व>)न्-मन्त्र- -न्त्रम् राउ

३, ८.

म(द्व>)न्-मय- -याः गी ४, १०.

म(द्व>)ल्-लोक- -कम्, -कात्

भ २, २५.

मल्लोक-काम- -मः भ २, २५.

\*ममर्<sup>b</sup>-

मम केशा<sup>१</sup>; तै १, ४, २; छांशा<sup>१</sup>; १,

५, २; ४; वृद्ध, ४, १२<sup>५</sup>; हं २; आरु

शा<sup>१</sup>; मना १, ४९<sup>०</sup>; पदं २; मै

शा<sup>१</sup>; ३, २; मैत्रेशा<sup>१</sup>; २, ८; कौ

१, ३; सुता २, ११९<sup>d</sup>.

\*माम-

माम-क<sup>०</sup>- -कम् दत्ता

१, १; सु १, १, २७; २, २, ४;

गी १५, १२; -काः २प्र ३६:  
११; गी १, १.

मामकी-

-कीम् सु १, १, ४३.

मामिका-

-काम् २प्र ३६: १०; गी ९, ७.

मामक-पद- -दम्

वरा २, ४५.

मम-ता-

ममता(ता-आ)दि-

-दिभिः श २८.

ममता-मति- -तिम् वरा

२, ४.

मम-त्व- -त्वम् नाप ४, ६;

-त्वेन योच् ८४.

१मय<sup>१</sup>- मया क १, १, ५; २, १०;

छां १, ११, ५; ७; ९<sup>१</sup>; वृ ४, ४,

८; आरु ३<sup>१</sup>; गर्भ ४<sup>१</sup>; मना

१, ८९<sup>०</sup>; वृजा ६, ५; शु १, ४;

ते ३, २०; नाप ४, ३८<sup>५</sup>; -मयि

के छां शा<sup>१</sup>; वृ ६, ४, ६; ९; २४;

आरु मै मैत्रेशा<sup>१</sup>; मना २, ३१९<sup>b</sup>;

पदं १; कौ २, ४<sup>१</sup>; शु ३, २.

२मय<sup>१</sup>- मे क १, १, ९<sup>१</sup>; १४; २७;

२, ६; प्र १, ४; तै १, ४, १<sup>१</sup>; २;

ऐ शा<sup>१</sup>; छां १, ५, ४; वृ १, २,

४; ७; ४, १७; कौ शा<sup>१</sup>; १, ७;

आरु ३९<sup>१</sup>; मना १, ७९<sup>k</sup>.

मय<sup>१</sup>- ह्यम् क १, १, १३; मना १,

५९<sup>m</sup>; ते ४, २८; मं २, १, १; यो

२, १३; गोपू २५; वरा २, ३३;

३४<sup>१</sup>; ह ७; ८; वि २४.

१मा<sup>१</sup>- माम् क १, १, ४; प्र ६, १;

तै शा<sup>१</sup>; ऐशा<sup>१</sup>; छां २, ९, १<sup>१</sup>;

५, १२-१४, २; वृ ४, ४, ८; २३;

मै ५, १; मैत्रेशा<sup>१</sup>; १, ४, १२; २, २५;

a) 'गृष्टि-' इति अथ्या.संदि.। b) तु. वैप १, ५६६j। c) तैआ १०, १, ४। d) 'महम्' इति अ १, ५०, १३। e) तु. वैप १, ५६७d। f) तु. वैप १, ५६७j। g) तैआ १०, १, ८। h) तैआ १०, २४, १। i) तु. वैप १, ५६८d। j) बौध ३, २, ६। k) तैआ १०, १, ७। l) तु. वैप १, ५७१b। m) तैआ १०, १, ५। n) तु. वैप १, ५७२b। o) ऐआ २, ७, १।

|   |   |   |
|---|---|---|
| कौ शां <sup>१९</sup> ; १, १; मना १, ८९ <sup>७</sup> ;<br>१५ <sup>१९</sup> ; ते ३, ५२; नाद आबो<br>निर्वा मुद्र अक्ष सौ सर बि विद्या<br>शां <sup>१९</sup> .   | अ-स्वातन्त्र्य- -न्यम् मे ४, २; मैत्रि<br>४, २.   | १८; १९.   |
| मा-दृश्- -दृशाम् महा ६, २५.<br>रमा <sup>१</sup> - मा क १, १, १०; २१ <sup>१</sup> ; तै<br>१, ४, १; ३; ३, १०, ६ <sup>१</sup> ; छां १,<br>१०, ६; ११, ४; ६; १२, ३; ४,<br>२, ४; ४, ४; १४, २; वृ १, ३, १८;<br>५, १७; २३; आह ३९ <sup>०</sup> ; मना<br>२, ३१९ <sup>१</sup> ; कौ १, १; वृ २,<br>१८९ <sup>१</sup> . | अ-स्वादु- -दु ऐ ५, १; शु ३, १.<br>अह <sup>१</sup> छां ८, ११, १ <sup>३</sup> ; २ <sup>३</sup> .<br>अहो <sup>१</sup> गर्भे ४; कौ १, १; महा ४,<br>१३२; अक्ष १, १०; १अव ३१ <sup>१</sup> ;<br>३२ <sup>१</sup> ; कृप २४; सार २१९: २;<br>गी १, ४५<br>अ-हत- -तम् १संन्या २, १०; शा १९;<br>-तेन कौ २, १५<br>अहत-वाच्- -वाचम् कालि ४०२: २<br>अहत-वासस्- -सा: वृ ६, ४, १३.<br>अ-हत्वा गी २, ५.<br>अहन् <sup>०</sup> -<br>अहन्- -हनि १संन्या १, १; इ १४:<br>८; सार २२४: ६; शि ६, १४३;<br>कशु १, १; -हानि छां ६, ७, १;<br>२; महा २, २३; -ह्वा: छां ४,<br>१५, ५; ५, १०, १; वृ ६, २, १५;<br>सूता १, १५; -ह्वा मना २, ३१९ <sup>१</sup> ;<br>३४ <sup>१९</sup> -ह्वा यो १, ५५; मृ<br>१९; सिधि ३८३: १३ <sup>१</sup> .<br>अहर- -ह: प्र १, १३; छां ४, १५,<br>५; ५, ४, १; १०, १; ८, ४, २; वृ<br>१, १, २९ <sup>१</sup> ; ५, २ <sup>१</sup> ; ६, २, ९९ <sup>१</sup> ;<br>१५; जा ४ <sup>१</sup> ; नाप ३, ७७ <sup>१</sup> ; या<br>१, १ <sup>१</sup> ; पप ४१८: ६ <sup>१</sup> ; मना<br>२, ३१९ <sup>१</sup> ; त्रिवा २, १२०; गी<br>८, १७; २४; -ह: -ह: प्र ४, ४;<br>छां ८, ३, २; ३; ५; वृ २, १, ३;<br>मैत्रि ६, १२; वृजा ७, ८; सू २६;<br>भ २, २; १८.<br>अहरा(र-आ)शम- -मे गी ८, | अहर-गण- -णा: मना २, ८०९ <sup>१</sup> .<br>अहर-जर- -रम् तै १, ४, ३.<br>अहर-निदा <sup>१</sup> - -शम् १योत ७९;<br>पत्र ३, १; भ २, २७; सु १, १, २;<br>शि ६, १६४; स ३७८: ७.<br>अहस्- -होभि: वृ ४, ४, १६.<br>अ(हस् >)हो-रात्र- -त्र: प्र १,<br>१३९ <sup>१</sup> ; -त्रम् सार २२४: ६;<br>२३१: ९; २३२: १७; २३६:<br>१३; २८३: ७; गार ४०८: ११;<br>गु १८; -त्रयो: वृ ३, १, ४; हं ११;<br>-त्रा: मना १, २९ <sup>१</sup> ; -त्राणि वृ<br>१, १, १; ३, ८, ९; मना १, १४९ <sup>१</sup> ;<br>-त्रान् ऐ कौ आबो निर्वा मुद्र<br>अक्ष सौ सर ब शां <sup>१९</sup> ; -त्राभ्याम्<br>वृ ३, १, ४ <sup>१</sup> ; कौ २, ७; -त्रे छां<br>८, ४, १; मै ५, १; कौ १, ४; मना<br>२, ८०९ <sup>१</sup> ; त्रिवि ३, ४-७; -त्रेण<br>मैत्रि ६, १; कुं २; -त्रौ अव्य ५.<br>अहोरात्र-कृत- -तम् गोच<br>६७: १८.<br>अहोरात्र-प्रमाण-<br>अहोरात्रप्रमाण-तस्(>:)<br>अना ३४.<br>अहोरात्र-वह- -है: वरा ५, ३.<br>अहोरात्र-विद्- -विद: गी<br>८, १७.<br>अहोरात्रा(त्र-आ)दि- -दय:<br>पाशु १, ६ <sup>१</sup> .<br>अहोरात्रा(त्र-आ)दिक-<br>-कम् ते ५, ४२.<br>अ(हस् >)हो-रात्रि- -नाउ. टि. द. |

a) ऐआ २, ७, १। b) तैआ १०, १, ८। c) तैआ १०, १, १५। एतन्मूलमनु 'ऑ' इति मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. सस्थ. टिटि. रजस्- > -ज:; भूमि- > -मि:; वैतु. नादी. मुपा. समर्थक: )। d) तु. वैप १, ५७३८। e) बौध ३, २, ६। f) तैआ १०, २४, १। g) कौ ३, १, ९। h) तु. वैप १, ५७५४। i) मा १३, २१। j) 'मत:' इति SCHR. [वैतु. वे. (NIA. २, २३१)]। k) अर्बरूप<sup>१</sup> इति अज्या.। l) तु. वैप १, ५८०b। m) 'अहम्' इति निसा.। n) तु. वैप १, ९७८। o) तु. वैप १, ५८०k। p) 'ह्वा' इति मुपा. (तु. तैआआ १०, ३४) यनि. सु-शोध: द.। q) उत्तरेण 'कृत- > -तम्' इत्यनेनाऽस्य संबन्ध: द.। r) यद्<sup>०</sup>, तद्<sup>०</sup> इति समस्ते इति jc. बभ्राम। s) तैआ १०, ६४, १। t) अस.। वा. किवि. भवति। u) तैआ १०, १, २। v) ऋ १०, १९०, २। w) 'दि' इति मुपा. यनि. सु-शोध: द.।

अहन्-&gt;

!अहोरात्रि-संज्ञिक<sup>a</sup>- -कौ  
त्रिवि ३, ५-७.  
अ(हस्>)हो-वाहिन्- -हिनि  
अत्ति १<sup>b</sup>.  
!अहोवाहिनी<sup>c</sup>- -नी चा १९<sup>२</sup>  
अहल्या<sup>d</sup>- -त्याम् वृजा ६, ५.  
!अहल्लिक<sup>e</sup>- -०क वृ ३, ९, २५.  
अ-हार्य-  
अहार्य-वत् कुं १६.  
१अहि<sup>f</sup>- -हिः अत्ति १३; वरा २, ३७;  
-हिम् १सन्धा २, ७९; नाप ७;  
वा २९<sup>१</sup>.  
अहि-कुण्डल-  
अहिकुण्डल-वत् व्रसू ३, २, २७.  
अहि-घ्न- -घ्नम् अर्षे ९ : १९.  
अहि-निमोक-  
अहिनिमोक-वत् पै ४, ४.  
!अहि-निर्बल्यनी<sup>g</sup>- -नी वृ ४, ४, ७;  
वरा २, ६७; १आ १७.  
अहिनिर्बल्यनी-वत् सांसू ४, ६.  
अहि-मर्दिन्- -र्दिने गोपू ३९.  
अहि-राज्- -राद् यो १, ८५.  
\*२अहि<sup>h</sup>- (बुध्य-)<sup>h</sup> -हिः (-ध्यः)  
चा ३.  
अहिंसत्- -सन् छां ८, १५, १.  
अहिंसा- -सया नाप ३, ४५; भव ५,  
९; -सा छां ३, १७, ४; नाप ४,  
१०; १योत २९; त्रिआ २, ३२;  
शां १, १<sup>i</sup>; शारी १; पाशु १,  
२९; जाद १, ६; ८; प्रा ३, १;

४, १; वरा ५, १२; शा १४;  
शि १, २५; ७, १००; भव ५, ८;  
गी १०, ५; १३, ७; -साः प्रा ४, १;  
-साम् आरु ३; भव ३, १६.  
अहिंसा(सा-आ)दि-साधन- -नैः  
जाद १, २५.  
अहिंसा(सा-आ)द्य- -द्याः शि ७,  
१०१.  
अहिंसा-प्रतिष्ठा- -ष्ठायाम् योसू २,  
३५.  
अहिंसा-सत्या(त्य-अ)स्तेय-ब्रह्म-  
चर्या(र्य-अ)परिग्रह- -हाः योसू  
२, ३०.  
अहिंसा-सत्या(त्य-अ)स्तेय-ब्रह्म-  
चर्य-दया(या-आ)र्जव-क्षमा-  
धृति-मिताहार-शौच- -चानि  
शां १, १.  
अहिंस-  
अहिंस-ता- -ता शारी २<sup>i</sup>.  
अ-हित- -ताः गी २, ३६; १६, १.  
अ-हिम- -मस् वृ ५, १०, १.  
!अहीदृशत्<sup>k</sup> छाग २५ : ७.  
अ-हुत- -तम् सुं १, २, ३; अशि ३, २;  
च २१ : १७; वटु ३१५ : २.  
अ-हृदय- -यस्य वृ ४, १, ७.  
अ-हृदय-ह- -हः छां ७, २, १; -हम्  
छां ७, २, १; ७, १.  
अ-हेडमान- -डनः व ४४० : २३;  
४४६ : ६; ४५१ : २; ४५४ : ९.  
अ-हेय- -यम् मैत्रे १, ४, १०; अध्या ६२.

अ-हेतुक- -कम् गी १८, २२.  
अ-ह्रस्व- -ह्रस्व वृ ३, ८, ८; सुबा ३.  
अह्रस्वा(स्व-अ)ह्रस्वा(स्व-अ)-  
ह्रस्व<sup>m</sup>- -स्वः वट २, १८.

आ

१आ<sup>n</sup> छां २, ८, १.  
१आ-कार- -रः तारा ८३ : २३.  
आकार-पकार- -रौ २प्र  
३५ : १२.  
आकार-योजन- -नम् रार  
५, ५.  
आइ के ४, ४<sup>१</sup>.  
आं त्रिवि ७, ३६; दत्ता १, ५; आथ  
३९४ : २; व ४२८ : ९; ११;  
१३; १५; १७; १९; २२.  
आं-कार- -०र अक्ष ५.  
२आ<sup>o</sup> छां १, ६, ६; ५, २, १<sup>i</sup>; ८, ८, १<sup>i</sup>;  
वृ १, ४, ४; ७; १६; ६, १, १४<sup>i</sup>; ५,  
४; मना १, १४९<sup>p</sup>; कौ ४, १९<sup>i</sup>;  
नाप ६, १६; गरु ५<sup>i</sup>; महा ६, ८३<sup>i</sup>;  
सर २, २९<sup>q</sup>; मं १, २, ६<sup>i</sup>; अशि  
७, ७; मैत्रि ६, ३६; १योत ८८;  
९१; ९५; ९८; पै ३, २<sup>i</sup>; यो ३,  
३<sup>i</sup>; त्रिवि ५, १२; अव्य ७<sup>i</sup>;  
भा ३७ : ३८; १कौल ४ : २;  
इ १९ : १२; च २१ : १२; १३;  
ऊ ६४ : १३; आश्र १; शि  
५, २०; व ४६६ : १४९<sup>g</sup>;

a) पा. पू. अहोरात्रि- इत्यतः समासान्ताऽभावो वा उसं. (पा ५, ४, ८७)। उप. 'ज्ञक' इति वा  
'ज्ञित' इति वा शोधः द. (तु. यक. निसा. अज्या. संटि.)। b) पा. निसा. यनि., -हिनी- > -नी इति अज्या.।  
'हिने' (च१) इति शोधस् त्विष्यते (तु. सस्थ. टि. वाहिन्- > -हिने)। c) नापू. टि. अन्विहापि पा. सु-शोधः।  
d) यनि. तु. शं. प्रम्.। अपि स्यादिह \*अभद्रिका- > \*अहल्लिका- इत्यस्य प्र१ सदनभिमतिथोतनार्थमब्रह्मण्यो-  
द्घोषणादिवदन्तर्ग-भावेन आवितमिति विमृश्यम्। e) तु. वैप १, ५१५h। f) अ १, ३२, २। g) 'स्वै' इति मुपा.  
यनि. वा 'स्वै' इत्येवं वा सु-शोधः। h) तु. वैप १, ५८७e। i) 'हिंसा' इति निसा.। j) 'अहिंसता' इति अज्या.।  
k) मुपा. 'अदीदृशत्' इति शोधः (तु. त्रै.)। l) अ १, २४, ११। m) तु. सस्थ. टि. अस्थूलास्थूला-। n) वर्याः  
द.। o) स्वात्र. वा कप्र. वा। p) तैआ १०, १, १४; पा. 'रोदसी' इति द्वि. युक्तः कप्र. (तु. सस्थ. टिटि. अपि,  
\*रजस्व(स्व)- > -स्वम्, इदम्- > इमाः, वैतु. नादी. किउ. इति, सा. तैआ. अन्तरिक्षे इत्येतद्गामितया व्याप्ती  
स्वात्र. इति च)। q) अ ५, ४३, ११। r) 'आरम्य' इति निसा.। s) अ ९, ९४, ४।



वपू १, ४९<sup>०</sup>; सांस् ३, ४; ४७; योस्  
२, २८; ब्रस् ४, १, १२; गी ८,  
१६.

३आ(<३अ)- इदम्-द्र.

आ-कण्ठ- -ण्ठम् गरु ५<sup>१</sup> b.

आ/कम्प>कम्पि, आकम्पयते छां  
७, ८, १.

आ-कर- आ/कृ (विच्छेपे) द्र.

आकरा<sup>१</sup>- -रा सुसु १२.

आ/कर्णि(<कर्ण-), आकर्णयन्ति  
मैत्रि ६, २२; आकर्णय महा ५, २१.

आ-कर्णय त्रिवि ८, १३.

आ-कर्षक-, १, २ आ-कर्षण- आ-  
/कृष द्र.

आ-कल्पा(ल्प-अ)न्त- -न्तम् अव्य  
७<sup>०</sup>.

आ/काङ्क्ष, आकाङ्क्षते पित्र ६,  
२०; आकाङ्क्षति त्रिवि ५, ७;  
आकाङ्क्षेत १ संन्या २, ६१; नाप  
३, ४०; शि ६, ९४.

१आ-कार- १आ द्र.

२आ-कार- आ/कृ द्र.

आ/काश

आ-काश- -शः प्र २, २; ३, ८; ४,  
८; तै १, ३, १; ६, १; ७, १; २, १,  
१; २, १; ७, १; ३, ९, १<sup>१</sup>; ऐ ५, ३;  
छां १, ९, १<sup>१</sup>; ३, १२, ७<sup>१</sup>; ८<sup>१</sup>; ९;  
१३, ५; १८, १; ४, १३, १; ५, ६,  
१; २३, २<sup>१</sup>; ७, १२, १; २६, १; ८,  
१, १; २; ३<sup>१</sup>; १४, १; वृ १, ४, ३;  
२, १, १७; ३, ४; ५, ५, १०<sup>१</sup>; ३,  
३, २; ७, १२<sup>१</sup>; ८, ७; ११; ९, १३;  
४, १, २-७; २, ३; ४, १७; २२;  
गौ ३, १२; मना २, १५<sup>१</sup>; अना  
३२; मै ५, २; मैत्रि ६, २; वृपू

३, ५; सुबा ७<sup>१</sup>; १४<sup>१</sup>; ते २, २७;  
योचू ७२; ब्रवि १४; त्रिवा १,  
५; ९; १ योत ८३; पै १, १५; महा  
५, ९९; योशि १, ४२; अन्न ५,  
७७; अध्या १<sup>१</sup>; सावि ३<sup>१</sup>; त्रिता  
१, ५१; ५, २१; करु १३; जाद  
१०, ३; पं ३५; वरा ५, २<sup>१</sup>; गोड  
६<sup>१</sup>; सूता २, १५; नापू १, ५;  
नाड १, १५<sup>१</sup>; लिं ३१०: ७;  
वटु ३१४: १३; सिशि ३८२:  
१५; गार ४०८: ८; वपू २, ३;  
वज २, २०; ब्रसू १, १, २२; ३,  
४१; -शम् छां १, ९, १; ४, १०,  
५; ५, १०, ४; ५; १५, १; ७, २, १;  
४, २; ११, १; १२, १<sup>१</sup>; २; ८, १२,  
४; वृ ३, २, १३; ७, १२; ६, २,  
१६; श्वे ६, २०; ब्रवि १३<sup>१</sup>; गर्भ  
१<sup>१</sup>; ब्र २<sup>१</sup>; अना १२<sup>१</sup>; अशि २,  
२०; मैत्रि ६, ३८; वृजा १, १;  
वृपू ३, ५<sup>१</sup>; सुबा १<sup>१</sup>; २; ७; ११<sup>१</sup>;  
१३<sup>१</sup>; ते ५, १०२; त्रिवा २, २;  
मं ४, १, २; ३; पै ३, १; ४, २२;  
महा २, ५; ४, ५८; शारी १; योशि  
१, १५७<sup>१</sup>; अबि १३<sup>१</sup>; अध्या १;  
१आ १; पाशु २, ३५; त्रिता ५,  
१३<sup>१</sup>; रुह ५१; गोपू २५; वरा  
१, ५<sup>१</sup>; औषे ७: ३; रशिसं १६;  
व ४३६: १२; षो १६; भव २,  
१५; पित्र ४, ७; वपू २, ३; गी  
१३, ३२; -शस्य छां ७, १२,  
२; वृ २, ५, १०; गौ ३, ६; ७;  
महा ३, ११; शारी १<sup>१</sup>; सांस्  
१, १५०; -शात् तै २, १, १; छां  
१, ९, १; ५, १०, ४; ५; ७, १२,  
२<sup>१</sup>; १३, १; ८, १२, २; वृ ३, ७,

१२; ४, २०; ६, २, १६; मैत्रि  
६, १७; कौ १, ६; वृपू ३, ५<sup>१</sup>;  
सुबा १; ते ३, २९; ब्रवि ९२; योचू  
७२; पै १, १६; महा २, ३; योशि  
१, ४२; कुं १४; त्रिता १, ५१; ५,  
२१; करु १४; नाड १, १५<sup>१</sup>;  
वपू २, ३; -शे के ३, १२; तै ३,  
९, १; १०, ३; छां ५, २३, २; ७,  
१२, १<sup>१</sup>; वृ २, १, ५; ५, १०; ३,  
७, १२; ८, ४; ७; ४, ३, १९; कौ  
४, ६; गौ १, २; ३, ४; ब्र २<sup>१</sup>; सुबा  
२; ४; ५<sup>१</sup>; १ योत ९८; १०४;  
त्रिवा १, ९; पै ३, १; शारी १;  
योशि ४, १६; ५, ५१; त्रिता ५,  
२१; गोड ६; व ४३०: १९;  
ब्रसू २, २, २४; -शेन छां ७, १२,  
१<sup>१</sup>; गौ ३, ९.

आकाश-कल्प- -ल्पेन गौ ४, १.

आकाश-कार्या(र्य-अ)न्तः-

करण-विषय- -या: त्रिवा  
१, ६<sup>१</sup>.

आकाश-कोश-तनु- -नव: अन्न  
४, २४.

आकाश-ग- -ग: पिं ६.

आकाश-गमन- -नम् शां १, ७,  
५२; योशि ५, ५१; योसू ३, ४३.

आकाशगमना(न-आ)दिक-  
-कम् अन्न ४, १.

आकाश-चक्र- -कम् सौ ३, १.

आकाश-ज- -जम् त्रिता ५, २१<sup>१</sup>.

आकाश-ता- -ताम् अन्न १, ३२.

आकाश-दिश- -दिशम् व  
४२८: २३.

आकाश-द्वय(द्वि-अ)शुक्- -काय  
शु २, ५.

a) ऋ ८, ८१, १। b) 'न्थम्' इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः। c) 'न्ते' इति मुपा. यनि. सु-शोधः। d) वैतु. JC. एकतरत्र ह्यद्य(दि-आ)काश- इति समस्तं प्राति. इव प्रतिपादयन् स्वरतोऽनुपपन्नः (तु. शत्रा १४, ५, ५, ४)। e) तैत्रा १०, १४, १। f) 'श' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः। g) तैत्रा ८, १, १। h) 'शे' इति अज्या.। i) तु. सस्थ. 'काशी->-शीम्'। j) 'शः' इति एकतरत्र अज्या.। k) 'शः' इति अज्या.। l) 'याः अन्तः-' इति अज्या. संटि.। m) 'आकाशम्' इति अज्या.।

आकाश-धारण- -णात् १योत्  
१०२.  
आकाश-नाभिक- -कम् वउ ४,  
३६.  
आकाश-पीठ- -ठम् त्रिता ५, २१.  
आकाश-प्र-भेद-  
आकाशप्रभेद-तस्(>:) रुह  
४३.  
आकाश-बीज- -जम् वपू २, ३.  
आकाश-भावना- -नाम् महा  
५, १४७.  
आकाश-मण्डल- -लम् योशि  
१, १७८; ५, १५.  
आकाश-मध्य- -ध्ये अ ३.  
आकाश-मय- -यः वृ ४, ४, ५;  
-यम् मैत्रि ६, २७.  
आकाशमय-विग्रह- -हम्  
पं १५.  
आकाश-मात्रा- -त्रा प्र ४, ८.  
आकाश-मूर्ति-मन्त्र- -न्त्रेण  
शि ५, ३५.  
आकाश-रूप- -पः ते ५, ५९.  
आकाश-वत्- -वतः छां ७,  
१२, २.  
आकाश-वत् गौ ३, ३; ४, ९१;  
ससा १, ३८; कुं १६; शां २, १;  
पै ४, १२; वसू २४; सांसू १, ५१.  
आकाश-वात- -ताम्याम् महा  
५, १४८.  
आकाश-वायव(यु-अ)ग्न्यु-  
(मि-उ)दक-भूम्या(मि-आ)दि-  
-द्वयः मै ५, ४; मैत्रि ६, ४.  
आकाश-वासिन्- -सी व  
४४७: १९.  
आकाश-शत-भागा(ग-अ)-  
(च्छ>)च्छा- -च्छा महा ५,  
१०१.

आकाश-शरीर- -रम् तै १, ६, २.  
आकाश-शोभन- -नः महा ६,  
६९.  
आकाश-संकल्प- -ल्पः नाद ४७.  
आकाश-सदृश- -शः ते ३, १०;  
ब्रवि ९१.  
आकाश-स्थान- -नम् १योत् ९८.  
आकाश-स्थित- -तः गौ ९, ६.  
आकाशां(श-अं)श- -शः जाद  
८, ५; -शे जाद ८, ६.  
आकाशा(श-आ)त्मक- -कम्  
पं १४.  
आकाशा(श-आ)त्मन्- -स्मा छां  
३, १४, २; मैत्रि २, ६; ६, १७.  
आकाशा(श-आ)दि- -दिभ्यः  
सांसू २, १२; दिषु ब्रसू १, ४, १४.  
आकाशादि-र(जस्>)जो-  
गुण- -तुरीय-भाग- -गेन पै २,  
११.  
आकाशाद्य(दि-अ)नुक्रम-  
-मेण त्रिता ५, २१.  
आकाशा(श-आ)धार- -रम्  
निर्वा २९८: १०.  
आकिञ्चन्य- -अ-किञ्चन- -द्र.  
आ-कीट-पतंग-पिपीलिक- -कम्  
छां ७, २, १; ७, १; ८, १; १०, १.  
आ/कुञ्च्, > कुञ्चि, आकुञ्चति वस  
५, ३८.  
आकुञ्चयेत् १योत् १२०; योचू  
४६; ध्या ७४; योशि १, १०४.  
आ-कुञ्चन- -नम् योशि १, ८३; -नेन  
शां १, ७, ३७; यो १, ४२; ६४.  
आ-कुञ्चित-  
आकुञ्चित-शिर- -रः त्रिब्रा  
२, ९३.  
आ-कुञ्च्य १योत् ११८; शां १, ७,  
४३; योशि १, ११०; ५, ३७;

यो १, ८३.  
आ/कुट् > कोटि  
आ-कोट्य शि ३, २.  
आकुल, ता- -लम् शि ७, ६; सि ६,  
१७; -ला सुसु १२९.  
आकुल-ता- -ताम् अन्न ३, ८.  
आ/कृ  
२आ-कार- -रम् सार २२४: २.  
आकारिन्- -रि महा २, ६६?  
आकारो(र-उ)परागो(ग-उ)-  
च्छित्ति- -त्तिः सांसू ५, ७७.  
आ-कृति- -तिः पाशु २, २; ५; राधा  
२, ९; -स्या महा ४, १९.  
आकृति-विशिष्ट- -ष्टम् पारा  
११.  
आकृति-विस्तार- -रम् हं ३.  
आ/कृष्, > कर्षि, आकर्षति ब्र १;  
योशि १, १२५.  
आकृष्येत् त्रिब्रा २, ११५.  
आकृष्यते योचू २९.  
आकर्षयति वृपू ५, १५; त्रिता  
३, २; २०; पी ४२२: ५; वउ ५,  
१०; ११; आकर्षय-आकर्षय दत्ता  
२; आकर्षयेत् अना १३; यो १,  
१३; ध्या ३८; योरा ८.  
आ-कर्षक-  
आकर्षका(क-आ)कृष्ट- -ष्टम्  
त्रिब्रा २, ४३.  
१आ-कर्षण- -णम् अना १०.  
आकर्षणा(ण-आ)त्मक- -०क  
अच् ५.  
२आ-कर्षण- -णाय व ४५६: १०.  
आ-कृष्य ब्र १; अना २०; वउ ७,  
२; १५; त्रिब्रा २, १११; योचू  
४६; त्रिवि ५, १२; ध्या १००;  
शां १, ७, १४; ४५; ४६; योशि  
१, ९३; ६, ७४; त्रिता २, ३८;

अ) -लिक- इति मूको.। b) उप. शिर- इत्यकारान्तं सत् शिरस्- इत्यतोऽन्यदेव द्र.। c) व्यु? <आ/कुल  
इति वाच., <आ/कृ इति PW.। d) 'कारः' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अच्चा.)। e) गतिवि० इति  
आन.। f) 'आकृष्यति' इति अच्चा.। g) 'आकृष्य' इति अच्चा. संदि.। h) नापू. भाव इह तु कर्तरि कृत् द्र.।

यो १, २६; ३०; ३, १२; जाद ५,  
७; ६, ३; २५-२७; ३०; ७, ५;  
१०; वरा ५, ३३; सौ २, ३.  
आ-कृष्यमाण- -णः पा ३, १.  
आ/कृ (शब्दे)  
१<sup>a</sup>आचके<sup>b</sup> व ४४०:२२; ४४६:५;  
४५१:१; ४५४:८.  
आ/कृ (विलेपे)  
आ-कृ- -रम् महा ५, ८५.  
आ-केश- -राम शां १, ७, १४.  
आ-कोश-  
आकोश-संनिभ- -मम् मना २,  
१३, २९<sup>c</sup>; महा १, १; च २१:१.  
आ/क्रन्द्, आक्रान् मना १, १५<sup>d</sup>.  
आ/क्रम्, >क्राम्, आक्रमते छां ८,  
६, ५; वृ ३, १, ६; ५, १०, १<sup>e</sup>;  
आक्रामति व ३, ६; आक्रमन्ति  
मुं ३, १, ६.  
आ-क्रम- -मम् वृ ४, ३, ९<sup>e</sup>; ४, ३<sup>e</sup>;  
-मेण वृ ३, १, ६.  
आ-क्रमत्- -मताम् अज ५, २८.  
आ-क्रम्य वृ ४, २, ९; ४, ३<sup>e</sup>; महा ४,  
१०४; ५, ७५; मैत्रि ६, ३०; शां  
१, ७, ३०; शि ७, ४७; आक्रम्य-  
आक्रम्य वृ ३८:१४; ४३९:१;  
११; २१; ४४०:८; १८; ४४१:  
६; १६; ४४२:४; १५; ४४३:२;  
१२; ४४४:६; १६; ४४५:  
३; १४; ४४६:१; १३; २३;  
४४७:११; २२; ४४८:१०;

२१.  
आ-क्रान्त, न्ता- -न्तः महा ५, ७४;  
-न्तम् महा ३, ३८; -न्ताः सार  
२८४:५.  
आ/कुश  
आ-कुष्ट- -ष्टः नाप ३, ४३; शि ५,  
३९.  
आ/क्षिप्  
आ-क्षिप्त- -सः ध्या ५९; योचू २७;  
योशि ६, ५२.  
आ/खण्  
आ-खण- -णः छां १, २, ८; -णम्<sup>f</sup>  
छां १, २, ७; ८.  
आ/खण्ड  
\*आ-खण्ड- -नाड. व्यु. औप. द्र.  
आखण्ड-ल<sup>h</sup>-  
आखण्डला(ल-आ)द्य- -द्यैः  
व ४२७:१३.  
आखु<sup>h</sup>- -खुः महा ३, ३७<sup>g</sup>; -खुना  
महा ५, ६५<sup>h</sup>.  
आ/ख्या, >ख्यापि, आख्याहि यो ३,  
१; गोपू ६; गी ११, ३१.  
आख्यायन्ते वृ १, ४, १२; ५, २१;  
६, ५, ३.  
आख्यापयेत् गोच ६७:३.  
आ-ख्यात, ता- -तः नाद ८; योचू  
२५; -तम् वा ४; योशि ३, १;  
त्रिता ४, २; यो२, १८; १९; गोच  
६६:१; सांका ५; गी १८, ६३;  
-ता मैत्रि २, ३; यो २, ३७.

आख्यातो(त-उ)पसर्गा(गे-अ)-  
नुदात्त-स्वरित-लङ्ग-विभक्ति-  
वचन- -नानि २३ ३५:१७<sup>i</sup> १७<sup>j</sup>.  
आ-ख्या(यक>)यिका-  
आख्यायिका-विरहित- -ताः  
सांका ७२.  
आ/गच्छ, गम्, >जगम्य, आ-  
गच्छते वृ ३, ११; आगच्छति  
वृ २, १, १२; ४, ३, ३७<sup>k</sup>; ५, १०,  
१<sup>l</sup>; मै ५, ७; मैत्रि ६, २४; कौ १,  
३<sup>l</sup>; ४<sup>l</sup>; ५<sup>l</sup>; आगच्छन्ति मैत्रि ६,  
७; आगच्छामहे छां ६, १०, २;  
आगच्छ नाप ४, ७; ३८; आ-  
गच्छ-आगच्छ वृ ४५७:१५;  
आगच्छेत् छां ५, १९, १; शां १,  
७, ३७; योशि १, ७७<sup>l</sup>; शि ६,  
११३; गी ३, ३४; आ<sup>l</sup>गच्छेयुः  
छां २, १, ४; ३, १९, ४.  
आ<sup>l</sup>गन्तु सर २, २९<sup>m</sup>; आगहि  
मना १, ५९<sup>n</sup>.  
आजगाम के ३, १२; छां ४, १४,  
१; वृ ६, २, ३; ४; मै १, १; मैत्रि  
१, २; मैत्रे १, १; शा ३ ३९<sup>o</sup>; मु १,  
१, ५१९<sup>o</sup>; आजगमतुः छां ८, ७,  
२; वृ २, १, १५; आ(आ-अ)गन्  
मना २, ४५९<sup>p</sup>; आ(अगमन्)  
वृजा ३, ३९<sup>q</sup>; आगमः छां ८, ९,  
२; १०, ३; ११, २; आगमिष्यः  
छां ५, १२-१७, २.  
आ<sup>l</sup>जगम्या मना २, ४३९<sup>r</sup>.

a) ऋ १, २५, १९। b) पाधा. /कृ उस्.। ततः नैप्र. \*आचके> यनि. रु. द्र. (वैप१ यद्र.)।  
c) तैत्रा १०, ११, २। d) 'अक्रान्' इति ऋ २, ९७, ४०। e) 'आक्रम्य' इति निसा.। f) घ-प्रकरणे प्रकृतः धा. उस्.  
[पा ३, ३, १२५ (वैतु. रामा. PW. प्रभृ. च आ/खन् > आ-खन- इति सिद्धे सति कृति णत्वमादेशुकाः, शं. ?अ-खण-  
इति नञ्पूर्वात् तस. सतो दीर्घादिः स्वार्थिकस्तादृष्ट इति)]। g) प्र१ इति रामा. ? ('स एषः' इत्युपसंहारवाक्यस्थस्यै-  
तदः पापकामपरत्वेन तदिष्टस्य व्याख्यानस्याऽप्राकरणीकत्वात्)। h) व्यु. वैप१ यद्र.। i) 'आयुः' इति निसा.  
मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। j) 'अधुना' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः। k) '-दात्तः स्व-' इति मुपा.  
यनि. सु-शोधः (तु. गोत्रा १, १, २७)। l) 'आवर्तेत्' इति आन.। m) ऋ ५, ४३, ११। n) तैत्रा १०, १, ५।  
o) संज्ञा ३। p) तैत्रा ३, ७, १४, ४ (वैतु. पाय ५, ११ आऽगात् इति)। q) ऋ ६, २८, १। r) पा. ? तस्य  
आ<sup>l</sup>जगम्यात् इत्येवं सुशोधत्वात् [वैतु. एतच्छोधसापेक्षः वैप २, ११५१, सा. च (तैत्रा १०, ४२, १) मुपा. साधूकृत्य  
कृत्यतयोपपादनपरः]।



आ-गत, ता- -तः अक्षि १०; जाद  
 ४, ४७; ते ६, ८०; इ १२, १५;  
 -तम् कौ १, २; नाप १०; सुबा १२;  
 इ १६; ११; सार २७५: १८;  
 सांका ७१; -ता महा ५, ८६;  
 सार २४१: १९; २७५: १२;  
 २७६: ६; -ता: महा ४, ३५;  
 ५, ३६; ब्रवि २५; अन्न ५, ५०;  
 भव १, ४४; गी ४, १०; १४, २;  
 -तानाम् महा ५, १७१; शि २,  
 २९; -तायाम् महा ५, ५३; -ते  
 अन्न २, ३२; अक्षि ३०.  
 आगत-श्री- -श्री: मना २, ४१९<sup>b</sup>.  
 आ-गल्य वृ ६, १, ८-१२; वृजा  
 १, १; ते ६, ८५; रापू ४, २६.  
 आ-गम- -मः सिशि ३८२: १५;  
 अद्वैता ९; -मस्य अना १७; -मा:  
 सिशि ३८२: ७; इ १०: १९;  
 -मेन वृजा ४, १.  
 आगम-पुराणे(ष-इ)तिहास-धर्म-  
 शास्त्र- -क्षेषु स्व ६१: १.  
 आगम-मन्त्र-तन्त्रौ(न्त्र-श्री)-  
 षधि-रस-ज्योतिष-वाग्बिलास-  
 प्रपञ्च- -ज्ञान् सार २९०: १९.  
 आगम-वादिन्- -दी तारा ८३:  
 ११.  
 आगमा(म-ग्र)न्त- -न्तै: आबो ८.  
 आगमा(म-ग्र)पाय-  
 आगमापायिन्- -यिन: गी  
 २, १४.  
 आ-गमन- -नम् मै ४, २; मैत्रि ४,  
 २; रुजा ३, १; शि ७, ३५.  
 आ-गम्य छां ६, १०, २.  
 आ-गामिक- -कानि १ संन्या २, ७.  
 आगस्त्य- अग(s)स्ति- द.

आ/गा, आगात् वृ २, १, १६; कौ ४,  
 १८; १९; मना २, ४१९<sup>d</sup>; ४९९<sup>o</sup>.  
 आ/गृह्  
 आ-गृह्य छां ७, ११, १.  
 आ/गै, > गा, आगायति छां १, २,  
 १३; वृ १, ३, २८; आगायतु छां १,  
 १२, २; आगायति छां १, ७, ९;  
 २, २२, २<sup>३</sup>; आगायत् वृ १, ३,  
 २-६; १७; आगायेत् छां २,  
 २२, २; वृ १, ३, २८.  
 आ-गावृ- -ता छां १, २, १४.  
 आ-गायमा(न>)ना- -ना सार  
 २८६: १९; २०.  
 आग्निवेद्य-, आग्नीध्रीय-, अग्नेय-  
 अग्नि- द.  
 आ/घुष्  
 आ-घोष्ट- -प्या त्रिता ५, १.  
 आ/घृ  
 आ-घार<sup>१</sup>- -रौ प्रा ३, १; ४, १<sup>१</sup>;  
 वृजा ३, १३.  
 आ/घ्रा, > जिघ्र, घ्रापि, आजिघ्रति  
 ऐ ५, १; आजिघ्रेत् जा ४; पप  
 ४१८: १२; १४; या १, १<sup>२</sup>.  
 आघ्रापयेत् जा ४<sup>६</sup>.  
 आं-कार- १ आ द.  
 आङ्गिरस- ✓ अङ्ग द.  
 आचके आ/कृ द.  
 आ-चक्र<sup>१</sup>- -क्रम् नृष ८४: ६; ८५:  
 १; ४; -क्राय त्रिवि ७, ४२.  
 \*आचके एप्. टि. द.  
 आ/चक्ष, आचष्टे छां ६, ८, ५; नृपू  
 १, ७<sup>३</sup>; ९; जा २; राउ ३, १; वपू  
 २, १; आचक्षते प्र ४, २; तै १,  
 ३, १; २, ६, १; ३, १०, १; ऐ  
 ३, १४; छां १, ३, २; ६; २, १, १;

४, १५, २; ५, १, १५; ६, ८, १;  
 ३; ७, २४, २; २६, २<sup>३</sup>; ८, ५,  
 १<sup>३</sup>-३<sup>३</sup>; वृ १, ५, २१; ३, ८, ३;  
 ४; ६; ७; ९, ९; ४, २, २; कौ २, ५;  
 १५; वृजा २, १; नृपू १, २; सुबा  
 ४; २; त्रिता १, ४१; ६१; २, ५;  
 ८; वपू १, ४; वउ ३, २; ४; ब्रसू  
 ३, २, ४; आचक्ष्व पित्र १, ६.  
 आचक्ष्वे वा २; नापू ६, १;  
 आचक्षीरन् आर्षे ९: १<sup>५</sup>.  
 आ/चम्, > चाम्, आचामति छां  
 ५, २, ७<sup>३</sup>; वृ ६, ३, ६; आचामन्ति  
 वृ ६, १, १४<sup>३</sup>; आचाम् छां ६,  
 १३, २<sup>३</sup>; आचामेत् छां २, १२,  
 २; आच ६; शि ७, ४९.  
 आ-चमन- -नम् नाप ५, ९.  
 आचमन-पूर्वक- -कम् नार ४,  
 ३८<sup>३</sup>.  
 आचमन-विधि- -धिम् आच १.  
 आचमनीय- -यम् आपू ३; भा ३१  
 आ-चम्य वृ ६, ३, ६; कौ २, ७९<sup>३</sup>;  
 वृजा ३, २३<sup>३</sup>; ४, १; जा ५; नाप  
 ४, ३८<sup>३</sup>; या २, १; शि ५, ४५.  
 आ-चान्त- -न्त: मैत्रि ६, ९.  
 आ/चर, आचरते द २; आचरति  
 कौ ४, १५; त्रिवि ८, ६; १८;  
 गी ३, २१; १६, २२; आ-  
 चरन्ति मना २, ७९९<sup>३</sup>; महा ५,  
 ३८; पाशु १, २२; २८; ३१;  
 आचरथ सुं १, २, १<sup>६</sup>; आचर सु  
 २, २, १६; ३०; सार २६०: १४;  
 आचरत् सार २६०: १६; आ-  
 चरेत् आर २<sup>३</sup>; ३; गौ २, ३६; मैत्रे  
 २, ३<sup>३</sup>; शां १, ७, ४; योचू ४१;  
 ब्रवि ५२<sup>३</sup>; नाप ३, ७४; ४, २५;

a) 'तः' इति अज्या. । b) तैआ १०, ३९, १ [तु. सा. (मुपा. तु यनि. सु-श्लोघः); वैतु. आ. नादी. १८. गत-श्री- इतीच्छन्तः, वैप २, ११५१ यत्राऽऽशङ्क्यमानः स्वरविरोधः समाहितो भवति] । c) इकञ् प्र. उस्सं. (पाउ २, ४५) । d) तैआ १०, ३९, १ । e) तैआ ३, १५, १ । f) 'आध्वरौ, अध्वरौ' इति अज्या. संदि. । g) 'आजि-  
 घ्रेत्' इति अज्या. । h) 'आक्षीरन्' इति वे. । i) 'आनीय' इति शांआ ४, ७ । j) तैआ १०, ६३, १ । k) 'त' इति  
 विष्णु. (IMQ १७, ८९) श्लोघः । l) 'आदिशेत्' इति अज्या. ।

५, ९; मं ५, १, ७; स्क १२<sup>२</sup>;  
 रार २, ५३; १०२; शां १, ५;  
 १संन्या २, ७३; ७७; १०२; कुं  
 १२; करु ३; यो २, ४२; भ १,  
 ५; इ १४: २२; काम २५; य  
 ९; सार २८७: १७; २९३:  
 ९; शि ५, १७; २९; कश्रु ३, ३.

आ-चरण- -णम् निर्वी २९८: १५;  
 -णे छां ८, १२, ३.

आ-चरत्- -रतः नाप ४, ४; गी ४,  
 २३; -रन् छां ५, १०, ९, १०; जा  
 ६; चउ ६, ४; नाप ३, ८६; मं २,  
 ४, ४; महा ५, ८८; तुअ १०;  
 पप ४१९: २; १५; १७; या २,  
 १<sup>१</sup>; भव ५, १४; गी ३, १९;  
 -रन्तः जा ६; मि १३; या २,  
 १; आश्र ४.

आचरन्ती- -न्ती सार २७६: १७.

आ-चरित- -तम् सार २७५: ३.

आ-चरितव(त् >)ती- -ती सार

२७६: १७; वल्यः सार २७५: ७.

आ-चार- -रः १कौल ६: २; भव  
 ४, १; २; ४; गी १६, ७; -रम्  
 महा ५, ३८; -रात् भव ४, २<sup>३</sup>;  
 ब्रसू ३, ४, ४३.

आचार-दर्शन- -नात् ब्रसू ३, ४, ३

आचार-प्रसक्ति- -क्तिः नाप ५, १.

आचार-भेद- -दः नाप ५, १<sup>१</sup>.

आचार-विद्या-दूर- -रः नाप

५, १.

आचार-विहीन- -नः १कौल

८: ३.

आचार-स्थापन- -नात् द्र ८.

\*आ-चारिक\*-

आ-चार्य- -०र्यं गी १, ३; -र्यः

तै १, ३, २; ११, १; छां ४, ९, १;

१४, १<sup>३</sup>; ७, १५, १; वृपू १, ७;

ब्रवि ५२; अता १४; द्र ४; ९९<sup>१४</sup>;

अद्वैभा ८; पित्र १, १६; -र्यम् छां  
 ७, १५, २; कौ १, १; शि ७, ८८;  
 गी १, २; -र्यस्य य ९; सु २९३:  
 ९; -र्याः २प्र ३५: १८; सांसू ५,  
 ३१; ६, ३०; गी १, ३४; -र्यात् छां  
 ४, ९, ३; -र्यान् गी १, २६; -र्याय  
 तै १, ११, १; -र्यैः नाप ४, ३८.

आचार्य-कुल- -लम् छां ४,

५, १; ९, १; -लात् छां ८, १५, १;

-ले छां २, २३, १.

आचार्यकुल-वासिन्-

-सी छां २, २३, १.

आचार्य-जाया- -या छां ४,

१०, ३.

आचार्य-देव- -वः तै १,

११, २.

आचार्य-भाषण- -णम् ते

५, ८६.

आचार्य-मुख- -लेन वृपू १,

११.

आचार्य-वत्- -वान् छां ६,

१४, २; वृ ४, १, २-७.

आचार्य-व्यतिरिक्त- -क्तम्

अव्य ७.

आचार्य-शास्त्र-मार्ग- -र्गेण

वरा ४, ३१.

आचार्य-हन्- -हा छां ७,

१५, २; ३.

आचार्या(र्य-आ)दि- -दिभिः

नाप ४, ३८.

आचार्यो(र्य-उ)क्त- -क्तम्

सार २३४: २२.

आचार्यो(र्य-उ)पासन- -नम्

गी १३, ७.

आ-चाण्डाला(ल-आ)दि<sup>b</sup>-

आचाण्डालादि-पर्य(रि-अ)न्त<sup>c</sup>-

-न्तानाम् वसू ८.

आ-चान्त- आ/चम् द्र.

आ/चि(चयने), आचिनोति द्र ८.

आ/च्छद्>च्छादि

आ-च्छादन्- -नम् पदं १, २; आरु

१; नाप ३, ८६; शा १९.

आ-च्छादित- -तम् सार २२५: ८;

२७०: ४; -ताः सार २२३: १.

आ-च्छाद्य योचू ३७; ३८; ध्या ६६;

शां १, ७, ३७.

आ/च्छिद्, आच्छिदन् छाग २३: २.

आ-च्छिद्य- छाग २३: ५<sup>११</sup>.

आच्य- आ(आ/अ)ञ्च् द्र.

आ/छि<sup>०</sup>, आछिनोति अद्वै १२.

आज= /अज् द्र.

आ/जन् > जा, आजायते क १, १,

६; कौ ४, १०.

आ-जान<sup>a</sup>-

आजान-ज- -जानाम् तै २, ८,

२; ३.

आजान-देव- -वानाम् वृ ४, ३,

३३<sup>२</sup>.

आ-जायमान- -नः नाप ४, ३८९<sup>१</sup>.

आ-जानु-कटि<sup>b</sup>-

आजानुकटि-पर्य(रि-अ)न्त<sup>c</sup>-

-न्तम् त्रिवा २, १३६.

आ-जानु-पाद<sup>b</sup>-

आजानुपाद-पर्य(रि-अ)न्त<sup>c</sup>-

-न्तम् त्रिवा २, १३५.

आजि- /अज् द्र.

आ/ज्ञा, > ज्ञापि

आ-ज्ञा- -ज्ञया रापू ४, १९; पाशु

१, २; शि ७, २५; -ज्ञा योशि

१, १७५; ५, ११; १कौल ८: २;

-ज्ञाम् हं ६; सार २४८: २०;

पारा ११; शि ७, २८<sup>१</sup>.

आज्ञा-चक्र<sup>११</sup>- -क्रम् यो ३, १०;

११; सौ ३, १.

आज्ञा-भय-संशया(य-आ)स्म-

गुण-संकल्प- -ल्पः नि ३८.

a) वैपश् यद्र. । b) मार्यादिकः अस्र. । c) उप. विप. यद्र. । d) 'इच्छाच्चित्' इति मुपा. यनि. सु-श्लोघः (लु. वे.) । e) अपसरणे पाधा. स्वा. उसं. । f) तैत्रा २, ५, ८, ८ ।

आज्ञा-सिद्धि- -द्धि: लिं ३११:  
८; १कौल ८: २; २कौल  
१३.  
आ-ज्ञान- -नम् ऐ ५, २.  
\*आ-ज्ञापया-  
\*आज्ञापयां/कृ, आज्ञापयां-  
चकार छां ५, ३, ७.  
?१आज्य<sup>a</sup>- -ज्यम् शि ६, ३२.  
आ(आ/अ)ञ्च्  
आ(आ-अ)च्य कौ २, ३.  
आ(आ/अ)ञ्ज  
२आ(आ-अ)ज्य<sup>ab</sup>- -ज्यम् वृ ६, ३,  
१; ४, १९; मना २, ८०९<sup>o</sup>; नाप  
७; मुद्र २९<sup>1</sup>; १संन्या २, ७९;  
इ १७: २१; छाग २३: १०;  
२४: १३; गी ९, १६; -ज्यस्य  
छां ५, २, ४; ५<sup>५</sup>; वृ ६, ३, १३;  
म १, ३; -ज्येन म २, २२.  
आज्य-भाग<sup>1</sup>- -नौ मुं १, २, २;  
वृजा ३, १३; प्रा ३, १; ४, १.  
आज्यभाग(ग-अ)न्त-  
-न्तम् नाप ४, ३८.  
आज्य-लेप- -पेन कौ २, ३; ४.  
आज्य-स्था(ल>)ली<sup>1</sup>- -ली  
प्रा ३, १; ४, १.  
आज्या(ज्य-अक्र>)क्ता- -क्ता  
शि ४, ४४.  
आज्या(ज्य-अ)भाव- -वे शि  
४, ६०.  
आज्या(ज्य-आ)हुति<sup>1</sup>- -ति:  
सुबा ६; -तिम् नाप ४, ३८;  
शि ४, ५०; -ती: कौ २, ३; ४;  
२संन्या १७: ४.

आज्यो(ज्य-उ)भ-प- -पाणाम्  
गु १५.  
आ(आ-अ)जन- -नम् छाग २५: ११.  
आजन-ह(स्त>)स्ता- -स्ता:  
कौ १, ४.  
आज्जनेय- , आज्जस्य- /अञ्ज द्र.  
आट- /अट् द्र.  
आढक<sup>1</sup>- -कम् गर्भ ५.  
आढ्य<sup>o</sup>- -ढ्य: वृ ४, २, १; रार २,  
६<sup>1</sup>; गी १६, १५.  
आणव- , आणि- /अण् द्र.  
आण्ड- अण्ड- द्र.  
आत् छां ३, १७, ७९<sup>६</sup>.  
आ/तन्, आतनोति सार २७४: ६;  
२७६: २२; २८७: ७; ८; २९०:  
२२; आतन्वन्ति सार २२८:  
१७; २४५: २०; आतनोत् सार  
२२९: ५; २४६: ८; २४८:  
१७; २५३: १; २५५: २०; २३;  
२५७: ८; २७५: ६; ११; आ-  
तन्वन् सार २३९: ५; २४३:  
१२; २४९: १०; २६४: २०.  
आतेने सार २७६: ८; आ<sup>1</sup>  
ततान ह १८९<sup>1</sup>.  
आतन्यत सार २५६: ३; ४; १०.  
आ-तत- -त: छां ८, ६, २; -तम् प्र  
३, ३; छां ४, १, २; स्क १४९<sup>1</sup>;  
राउ ५, २९९<sup>1</sup>; आह ५९<sup>1</sup>; वृजा  
८, ६९<sup>1</sup>; वृषू ५, २१९<sup>1</sup>; सुबा ६९<sup>1</sup>;  
पै ४, २३९<sup>1</sup>; महा ४, २१; ५, ४७;  
५२; ६, १२; ३१<sup>1</sup>; अन्न ४, ६१;  
अन्ति १६; त्रिता ४, १९९<sup>1</sup>; ता  
३, ९९<sup>1</sup>; गोपू २७९<sup>1</sup>; वरा ५,

७६९<sup>1</sup>; सु २, २, ७७९<sup>1</sup>.  
आतता(त-आ)यिन्- -यिन: गी  
१, ३६.  
आ-ततान- -न: बा १२.  
आ/तप्  
आ-तप-  
आतप-त्र<sup>1</sup>- -त्रम् गोउ ५२.  
आतिथ्य- /अत् द्र.  
आतिवाहिक- अति/वह द्र.  
आ-तुर<sup>b</sup>- -र: जा ५; नाप ३, ४; ८९<sup>1</sup>;  
५, १३९<sup>1</sup>; १संन्या २, ५९९<sup>1</sup>; पप  
४१८: १४; १७; सार २४३: ८;  
गु ८४; -रम् नाप ३, ४७; -रा:  
मुं १, २, ९; स्वद १: १४; -रे नाप  
३, ५; ६; ४, ३८; भव १, २; -रेण  
नाप ३, ३; १संन्या २, ६.  
आतुर-काल- -ल: नाप ३, ४.  
आतुर-कुटीचक<sup>1</sup>- -कयो: नाप ५,  
१; १संन्या २, ५९.  
आतुर-संज्ञक- -क: नाप ३, ४<sup>1</sup>.  
आतुर-संन्यास- -से नाप ३, ८.  
आ/तद्  
आ-तृण- -ण्णात् वृ ३, ९, २८, २.  
आ-त्त- आ/दा(दाने) द्र.  
आत्म<sup>k</sup>- -स्माय मना २, १६९<sup>1</sup>.  
१आत्म-क- -क: पा १०, ६.  
आत्म-भरि<sup>m</sup>-  
आत्मभरि-ता- -तया महा ३,  
३८.  
आत्म-लिङ्ग- -ङ्गाय मना २, १६९<sup>1</sup>.  
आत्मन्<sup>b</sup>- -स्मन् क २, १, १<sup>n</sup>;  
वृ २, ३, ४; ५; अशि ५, ८; मैत्रि  
४, ४; ६, ९<sup>1</sup>; -स्मन: क १, २,

a) मांस-विषयं विप. । व्यु? <अज- इति स्यात् । b) वैप१ यद्र. । c) तैत्रा १०, ६४, १ । d) व्यु? नैप्र. <\*अर्धक- स्यात् (वैतु. अभा. वाच. च पृषोदरीभाव: <√दौक् इति) । e) व्यु? नैप्र. <\*अर्धिक- (<√अर्ध=√कृच्) स्यात् (वैतु. अभा. <आ/व्यै इति, MW. <\*आर्ध- इति, BW. <\*आर्ध- इति च) । f) 'नाढ्य:' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: । g) ऋ ८, ६, ३० । अन्व. (वैप१ यद्र.) । h) ऋ ३, ५३, १५ । 'आ<sup>1</sup>ततान' इति निसा. । i) ऋ १, २२, २० । j) 'ज्ञित:' इति अज्या. । k) आत्मन्- इत्यस्य या व्यु. (वैप१ यद्र.), यनि. अपि सैव प्र. भेदेन द्र. । l) तैत्रा १०, १६ । m) यनि. प्राति. आत्मन्- इति पूष. इति कृत्वा निपातित्वात्रं मा भूदित्यर्थ एष. पूष. सति /मृ इत्यत: खिन् प्र. उंसं. (वैतु. पा ३, २, २६) । n) तु. सस्थ. टि. अन्तर<sup>\*</sup> ।



२०९<sup>a</sup>; प्र ३, ३; तै १, ४, २; २,  
१, १; छां ५, १२-१८, २; ८, ५,  
२; ८, १; १२, १; वृ १, ४, १, ४;  
८, १५; २, १, २०; ४, ५<sup>१</sup>; ६<sup>१</sup>; ५,  
१४; ३, ९, १०<sup>१</sup>-१७<sup>१</sup>; ४, २, ३;  
५, ६<sup>१</sup>; ७<sup>१</sup>; ६, ४, २; कौ ३, ३<sup>१</sup>;  
४, १९; २०<sup>१</sup>९<sup>b</sup>; गौ ३, ७; मै ३,  
१; मैत्रि ३, १; ६, ७; ११; १४;  
ब्रवि १६<sup>c</sup>; अना ५; वृषू २,  
८-१२; वृज ९, ६; अध्या ४; ससा  
१, ५; ७; ९; १०; नि २३; ते ४,  
६१; ६, ४०; ४५<sup>१</sup>; ४६<sup>१</sup>; ४७; नाप  
३, १; ६, ११; योचू ७२; त्रिवा  
२, १९; १२१; १२७; पै १, १५;  
महा ५, १८०; ६, २७; ३६; योशि  
५, ५९; अन्न २, ४०; ५, ५९;  
त्रिता १, ५१; ५, १६; यो २, ४५;  
३, ४; म १, ६; जाद ४, ५८; ६३;  
वरा २, ५१; ३, २०; ब्र १; नाउ  
१, १५९<sup>d</sup>; सार २७३:२; शिदि,  
३९; ७, ४४; ५५; व ४६६:  
११९<sup>e</sup>; २कौल ५; भव २, ५८;  
५, १४; अवि ४; १६; सांसू २,  
२९; ५, ६१; ६, १०; ३३; ब्रसू ३,  
३, ५३; गौ ४, ४२; ५, १६; ६,  
५<sup>१</sup>; ६; ११; १९; ८, १२; १०,  
१८; १६, २१; २२; १७, १९;  
१८, ३९; -स्मना के २, ४; प्र ३,  
१०; मां १२; ऐ ५, ४; छां ६,  
३, २; ३; ११, १; वृ १, २, ५; ३,  
७; ४, १७; ५, १५; ४, ३, ६; २१;  
३५; गौ २, १२; मै ३, २; ५, ७;  
मैत्रि ३, २; ६, २०<sup>१</sup>; ३०; मना १,  
४९<sup>f</sup>; अना ३२; वृज १, ३; २, १०;  
७, २; ते ३, २८; आबो १; नाप  
३, १; ४४; ५, २८; ब्रवि १७;  
२९; महा ५, ११९; ६, ७८;

अन्न २, ३८; ३, ९; ४, ३; ५, ५८;  
जाद ४, ६१; ७, १३; वरा ३, २७;  
५, ७५; शा ११; मु २, २, ५८;  
इ १२: ६; छाग २५: १३; तु  
१०; म ४८: १०; १५; २०; ४९:  
५; १२; २०; पा ६, २; सार २८०:  
१८; शि ६, १; व ४५९: ३;  
विद्या ४; वपू १, २; सांका ६३;  
गौ २, ५५; ३, ४३; ६, ५; ६; २०;  
१०, १५; १३, २४; २८; -स्मनि  
ई ६९<sup>g</sup>; के शां<sup>१</sup>; क १, ३, १३<sup>१</sup>;  
२, १, १२; ३, ५; प्र ४, ७; ९; ऐ  
४, १; छां शां<sup>१</sup>; ५, २४, ४; ८, १५,  
१; वृ २, १, १३; ५, १४; १५; ३,  
३, २; ४, २३; खे १, १५; गौ ३,  
४; मै शां<sup>१</sup>; ४, ४, २; ४९; मैत्रि ६,  
२०; ३२; ३४<sup>१</sup>; मैत्रे शां<sup>१</sup>; १, ४,  
६; आरु शां<sup>१</sup>; २; कै १, १०; पहं  
४; ब्र ३, १०; अना १६; ३२;  
वृषू १, १५; वृज ५, १-३; ६, ४;  
सुबा ९; १०<sup>१</sup>; ते ३, २२; २४;  
२८; ४, ८१; ५, ६५; १योत ७२<sup>h</sup>;  
२योत २, ३; नाप ४, १; ३८; ६,  
१३; १४; १९; ७; द १; ध्या ६;  
योचू शां<sup>१</sup>; रार २, ५; शां<sup>१</sup> १, ७, ४८;  
१, ९; २, १; ना शां<sup>१</sup>; महा शां<sup>१</sup>; २,  
१३; ७६; ४, १४; ३९; १२६;  
५, ११९; योशि ३, १४; ४, २४;  
तुअ १७; १संन्या शां<sup>१</sup>; २, १००;  
पप ४१८: १८; ४१९: ३; अन्य  
शां<sup>१</sup>; ४; ६; ७; सावि शां<sup>१</sup>; अन्न  
१, २४; २, ११; २५; ४, ३; ६०;  
५, ९६; ११५; अध्या ५, २७;  
६४; १आ२४; २९; पाशु २, ११;  
४५<sup>i</sup>; १अव २; रुजा शां<sup>१</sup>; जाद  
शां<sup>१</sup>; १, १२; ४, ५९; ७, १३; ८,  
९<sup>१</sup>; जाबा शां<sup>१</sup>; वरा २, १६; ३,

२७; रुह ३२; इ १५; ६; शि ६,  
४०; ४२; ७, ११२; ११६; तारा  
८३: २२; भव ३, ३१; ब्रसू २, १,  
२८; ३, २, ७; गौ २, ५५; ३, १७;  
४, ३५; ३८; ५, २१; ६, १८; २०;  
२६; २९; १३, २४; १५, ११;  
-स्मने छां २, २२, २; वृ १, २, ७;  
३, २-६; १७; १८; २८<sup>१</sup>; ५, १;  
३<sup>१</sup>; रापू ३, २; १संन्या २, ३१; वउ  
२, २<sup>१</sup>; ३; -स्मभि: कौ ४, २०; अन्न  
२, ४१; -स्मसु छां ५, १८, १; २४,  
२; -स्मा ई ७; क १, २, २०९<sup>j</sup>;  
२३; ३, १०; २, १, १५; २, ६;  
३, ७; प्र ३, ६; मुं २, ४; ७;  
३, १, ५; ९<sup>१</sup>; २, ३<sup>१</sup>; ४<sup>१</sup>; ७; मां  
२<sup>१</sup>; ७; ८; १२; तै १, ५, १, ७, १;  
२, १, १; २, १<sup>१</sup>; ३-५, १<sup>१</sup>; ६,  
१; ऐ १, १; ४, ४<sup>१</sup>; ५, १<sup>१</sup>; छां  
१, ७, २<sup>१</sup>; १३, १; ३, १४, ३<sup>१</sup>; ४;  
४, ३, ७; १५, १; ५, ११-१७, १;  
१८, २; ६, ८, ७; ९, ४; १०-१६,  
३; ७, ३, १; ५, २; २५, २<sup>१</sup>; ८, १,  
५; ३, ३; ४; ४, १; ५, ३; ७, १; ३;  
४; ८, ३; ४<sup>१</sup>; १०, १; ११, १;  
१२, ४<sup>१</sup>; ५; १४, १; वृ १, १, १;  
२, ४; ७<sup>१</sup>; ४, १; ७<sup>१</sup>; ८; १०; १६;  
१७; ५, ३; १५; २०; ६, ३<sup>१</sup>; २,  
४, ५; ६; १४; ५, १; १४<sup>१</sup>; १५;  
१९; ३, २, १३; ४, १<sup>१</sup>; २<sup>१</sup>; ५, १<sup>१</sup>;  
७, ३-२२; २३<sup>१</sup>; ९, ४; २६<sup>१</sup>; ४,  
२, ४; ३, ६; ७; ३५; ४, १-५; १३;  
२०; २२<sup>१</sup>; २४; २५; ५, ७; १३;  
१४; १५<sup>१</sup>; खे १, २; ८; ९; १५;  
३, २०९<sup>k</sup>; कौ १, ६; २, ६<sup>१</sup>; ११९<sup>k</sup>;  
३, ९<sup>१</sup>; ४, ३<sup>१</sup>-५<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; १५; १६<sup>१</sup>;  
१७<sup>१</sup>; १९; २०; गौ २, १२; १७;  
३, ३; ८; ११; मै २, १; २<sup>१</sup>; ९;

a) 'ईश्वर' इति तैत्र्या १०, १०, १। b) 'आत्मानः' इति शांन्या ६, २०। c) 'आप्नुयात्' इति श्रान.।

d) तैत्र्या ८, १, १। e) तैत्र्या ७, ४, २। f) मा ३२, ११। g) 'आत्मन्' इति मा ४०, ६। h) 'सौख्यम्' इति निसा.।

i) स्वा<sup>०</sup> इति निसा.। j) तैत्र्या १०, १०, १। k) मन्त्रा १, ५, १६।

१०; ३, १; २; ४, ३; ५, ७;  
 ८; मैत्रि २, १; २; ३; ४, ३;  
 ५, २; ६, ३; ७; ८; १२; १५;  
 ३१; ७, १; ७; मैत्रि १, ४, १;  
 २; मना २, १२, १९; १३, १९;  
 २, १५; ६६; ६८;  
 ६९; ८०; ब्रवि ११; जा २;  
 गर्म ५; ब्र १; ३, १०; १४; अ १;  
 वृष ४, ३; ७; वृष १, २; ५, १०;  
 १२; २, ८; ९; १०; ५, १; २;  
 ३; ७, ४; ८, १; ३; ९, २; ३;  
 ४; ८; १०; ११; ५; १७; १९;  
 सुबा २; ४; ५; ८; ९; १०;  
 १३; ससा १, १४; २८; शु २, ४;  
 ते २, ६; ३, ९; १७; ३५; ४, ३६;  
 ६२; ६३; ७७; ५, ४; ८; १०;  
 १२; १८; ६, ३९; ५८; ६२; नाद  
 ३०; ध्या ८; १४; १०४; नाप  
 ४, ३८; ८, ७; १२; ९, १; ७; ८;  
 १३; योच ८४; शा १५; १८;  
 वा २७; २९; १०; ६९; ७०;  
 ७१; त्रिबा १, १; २, १५; मं  
 १, ४, २; २, ४, ६; त्रिवि १, ११;  
 ७, ४३; रापू ४, १; राउ ३, १;  
 ४, १-४७; ५, १; शां १, ८; २, १;  
 ३, १; ९; पै ३, १; ४, १२; मि  
 ११; महा १, १; २, ३; ४, २६;  
 ४३; ४५; ११८; ५, १२०; ६,  
 १०; १२; ६१; ७७; योशि ४, ४;  
 २०; ६, ६०; १०; २१; अन्न  
 १, ४५; २, ३; २०; ३५; ३६;  
 ३८; ४१; ४२; ५, ७५; ७७; सू  
 ७९; ८; १आ १; ६; त्रिता ५, १;  
 ११; कृ १७; १८; १९; २०;  
 रुह १३; ३०; ३८; म २, ७; ११;  
 अध्या ५२; ग २; जाद १, ८;

१८; ५, १३; १०, २; ४; मवा ५;  
 प्रा ४, १; गोउ ६-१०; ११;  
 १६; या २, १; हरि ३; गरु १९;  
 व ९; १७; सु १, १, ३७; अद्वै  
 २८; आर्षे ८; ९; ९; १२; इ ११;  
 १७; १२; १३; १५; ६; १७;  
 १६; छाग २५; १०; १९; म  
 ४८; १९; नाउ १, ७; १७;  
 २३; वृष ८५; २; पा ३, ६; ९,  
 ३९; १०, ३; राधा २, ८; कृपु  
 १०; सार २७२; २२; २९२;  
 १३; रु २०; रशिसं २२; कालि  
 ४०२; ३; गु ४१; विद्या १; ४;  
 रकौल ११; भव २, ३; ५; २०;  
 २६; २७; ३०; पित्र ६, ११;  
 अवि ११; वउ १, ४; १५; २,  
 ३७; ५, ३३; ३४; ४१; सांस् १,  
 ३३; ५, ६५; ६, १; योस् २, २१;  
 ब्रस् २, ३, १७; ४, १, ३; ४, ३;  
 गी ६, ५; ६; ७, १८; ९, ५;  
 १०, २०; १३, ३२; स्मानः छां  
 २, २२, ३; वृ १, २, ७; २, ५,  
 १५; कौ ४, २०; वा १६; गोच  
 ६६; १६; स्मानस् ६; क १,  
 २, २२; ३, ३; २, १, ४; ५; प्र १,  
 १०; २, ३; ३, १; सुं २, २, ५; ६;  
 मां १२; तै २, ७, १; ८, ५; ९, १;  
 ३, १०, ५; ऐ ४, १-३; छां १,  
 ३, १२; २, ९, ४; २२, ५; २३, १;  
 ५, ११, २; ४; ६; १२-१७, १; २;  
 १८, १; ६, १६, १; २; ८, १,  
 ६; ५, १; २; ७, १; २; ३;  
 ८, १; ४; ११, १; २; १२, ६; वृ  
 १, २, ३; ४, ३; ८; १०; १५; ३,  
 ५, १; ४, ३, ३८; ४, ३; १२; १५;  
 १७; २३; ६, ४, ६; श्वे १, ६; १६;

गौ १, १२; २, १२; मे २, ६;  
 ९; ११; ३, २; ५, १; ३; मैत्रि १,  
 १; २, ६; ७; ३, २; ६, १; ३; ९;  
 २०; २६; ३०; मैत्रि २, २५; २९;  
 कै १, १०; ११; जा ६; मना १,  
 ४९; २, ११; ७९; ११; १३;  
 ब्र १, ३, ८; १४; १७; अना १६;  
 कौ २, ६; ४, २०; वृष ५, २;  
 वृष १, १; ३; ४; २, १; १०; ११;  
 ३, १०; ४, १; २; ३; ५, २; ३;  
 ६, १; २-४; ७, २; ४; ८; ९, १;  
 १७; सुबा २; ३; ५; ८; ९; लु  
 ४; वस् २२; २९; ते ४, ४०;  
 ८०; ८१; नाद २१; ध्या २२;  
 ३५; नाप ३, ८; ४, ३८; ५,  
 २३; २८; ६, १९; ८, ४; ५, ९, ५;  
 १५; ब्रवि २९; आबो ११; १८;  
 २१; त्रिवि ५, १२; रापू ५, ५;  
 रार २, ५; सुद २; बां १, ७, १९;  
 ४८; पै ३, १; ४, १; १४; महा ४,  
 ९२; १०७; ५, ८१; ६, १८; १९;  
 ३७; ७८; योशि ३, १४; ५, ५३;  
 १संन्या १, १; २, ५०; अव्य १;  
 ४; अन्न २, ४२; ५, ७४; ७९;  
 अध्या ५; ७; १९; २७; ५५; ६४;  
 त्रिता १, ३२; कृ १; १२; मा  
 १; रुह १२; ३२; यो ३, २५;  
 २६; जाद १, २५; ४, ६१; ९,  
 ५; १०, १०; १२; गोपू २६; गोउ  
 ३०; ३५; या २, १; वरा २, १०;  
 १३; ४२; ४, २०; शा ११; १५;  
 २२; आर्षे ७; २०; इ १२; १२;  
 २प्र ३३; २; शौ ५२; ८; २०;  
 गोच ६६; १९; २१; नापू १, १४;  
 सार २३९; १५; २४६; १५;  
 २४८; १६; १७; २७३; ९;

a) तैआ १०, १०, १। b) तैआ १०, ११, १। c) तैआआ १०, १६। d) तैआआ १०, ६६। e) तैआ  
 १०, २९, १। f) तैआआ १०, ६९। g) तैआ १०, ६४, १। h) तैआ ८, ४, १। i) ऋ १, ११५, १। j) मा १२, ४।  
 k) 'आत्मनः' इति सुपा. यनि. सु-बोधः। l) मा ३२, ११। m) तैआ १०, ९, १। n) तैआ १०, ६३, १।  
 o) 'हंसा' इति निपा.। p) 'आत्मा' इति आन.। q) एकतरत्र 'आत्मनः' इति आन.।

२७५: २१; २८३: १२; २८४:  
८; २८७: १९; २९०: २१; २९२:  
१; १०; ११; स३७८: ८; ३७९:  
१७; कालि ४०२: १३; व ४५५:  
२२९<sup>१</sup>; विद्या ४; भव २, ४; १०;  
पिब ३, १०; ६, ६-८; आश्र २<sup>४</sup>-४<sup>९</sup>;  
कश्रु १, १<sup>१</sup>; वपू १, २; वउ १, २०;  
३, १५; २५; ५५; ६, १२; १७;  
सांसू ३, ७३; सांका ५९; ६३;  
गी ३, ४३; ४, ७; ६, ५<sup>१</sup>; १०;  
१५; २०; २८; २९; २, ३४; १०,  
१५; ११, ३; ४; १३, २४; २८;  
२९; १८, १६; ५१; त्मानौ ब्रसू  
१, २, ११.  
२<sup>०</sup>आत्म-क<sup>०</sup> -कः ते ४, ७९.  
आत्म-काम- -मः वृ ४, ४, ६; नाप  
९, १०; वृउ ५, १-३; सुवा १३;  
ब्रवि ९२; पिब १, १; ५, १; १०;  
-मम् वृ ४, ३, २१; मैत्रि ७,  
१०<sup>१</sup>; -मेन मै ५, ७; मैत्रि ६, ७.  
आत्म-कारण- -णात् गी ३, १३.  
आत्म-कुक्षि- -क्षौ ते ६, ९९.  
आत्म-कृत- -तम् य ९; सु २९३:  
९; -तस्य मना २, ५९९<sup>१</sup>.  
आत्म-कृति- -ते: ब्रसू १, ४, २६.  
आत्म-क्रीड- -डः मुं ३, १, ४; छां  
४, २५, २; नाप ५, २५; -डस्य  
शां ३, १; -डा: वृउ ६, ४.  
आत्म-गुण- -णेन श्वे ५, ८; -णै: श्वे  
५, १२; ६, ३.  
आत्म-गु(त>)सा- -साम् पा ९, ६.  
आत्म-गृहीति- -ति: ब्रसू ३, ३, १६.  
आत्म-गो-च(र>)रा- -रा: अध्या  
३६; पै ३, १.  
आत्म-चक्षुस्- -क्षुषाम् पा ३, ६.  
आत्म-चिन्तक- -कः नाप ३, ७२.

आत्म-चिन्ता- -न्ता नाप ६, १.  
आत्म-चैतन्य-रूप- -पः ब्रवि ९१;  
-पम् वृउ ३, १०.  
आत्म-ज- -जम् कृ १९; -जे महा  
२, १६.  
आत्म-ज्ञ- -ज्ञः मै २, १<sup>१</sup>; मैत्रि २,  
१; मैत्रे १, ४, १; अन्न ४, ३; वरा  
३, २७; या २, ३; -ज्ञम् मुं ३, १,  
१०; -ज्ञस्य अन्न ४, ३; वरा ३,  
२७; -ज्ञा: वृउ ९, १५.  
आत्म-ज्ञान- -नम् पप ४२०: ६;  
-नात् १कौल ६: ३; -नेन अशि  
४, २३; वटु ३१६: १६.  
आत्मज्ञान-गुणो(श-उ)पेत-  
-तः नाप ३, ३५.  
आत्मज्ञान-विवेक-  
आत्मज्ञानविवेक-तस् (>)  
त्रिवा २, १८.  
आत्म-ज्ञेया(य-आ)दि-हीना-  
(न-आ)त्मन्- -त्मा ते ४, ७९.  
आत्म-ज्योतिस्- -ति: अ १; मवा  
११; व ४६२: २.  
आत्मज्यो(तिस्>)ती-रस्-  
-स: ते ३, १०<sup>०</sup>.  
आत्म-तत्त्व- -त्त्वम् श्वे २, १४; मं  
१, १, १; महा ५, १४४; अन्न १,  
२; ११; ५५; ४, ७२; -त्त्वस्य महा  
५, १७८; -त्वेन श्वे २, १५.  
आत्मतत्त्व-प्र(ज>)जा- -जा  
पाशु २, २.  
आत्मतत्त्वो(त्त्व-उ)स्थ- -स्थम्  
महा ६, १७.  
आत्म-तस् (>) छां ७, २६, १<sup>१९</sup>.  
आत्म-ता- -तया पाशु २, ४१;  
-ता महा ५, ४४; योशि ४, २३;  
अन्न ५, ११; -ताम् ते १, ३४.

आत्मता-परता- -ते १संन्या २,  
५०.  
आत्म-तीर्थ- -र्थम् जाद ४, ५०;  
५३; -र्थे म ४८: १०; १५; २०;  
४९: ५; १२; २०.  
आत्म-तुल्य-सु-वर्णा(र्ण-आ)दि-  
दान- -नै: राउ ५, २२.  
आत्म-तृप्त- -प्तः गी ३, १७.  
आत्म-तेजस्- -जसा १संन्या २, २२.  
आत्म-त्व- -त्वम् अध्या १८; -त्वेन  
मं २, ४, ६; योशि ४, ९; ससा  
१, ४; गोउ ३०.  
आत्म-दर्शनो(न-उ)पाय- -यम् ध्या  
९३, १५<sup>१</sup>.  
९<sup>१</sup>आत्म-दा- -दा: वृपू २, १६;  
२शिसं ३४.  
आत्म-धर्म- -र्मम् शा २६; ३०; ३३.  
आत्म-ध्यान- -नम् ते १, १६; १संन्या  
१, १; कश्रु १, १; -ने मै ४, ३<sup>१</sup>.  
आत्मध्यान-म(य>)यी- -यी  
१संन्या २, ४४.  
आत्मध्यान-युत- -तः योचू  
१०७.  
आत्म-नामन्- -न्ना सार २७९: ८.  
आत्म-निर्णय- -यम् ध्या ९३, १.  
आत्म-निष्ठ- -ष्ठम् अन्न १, १४; -ष्टा:  
भि १२; -ष्ठानाम् पाशु २, ४५.  
आत्म-निष्ठा- -९<sup>१</sup>ष्ठाम् शा ३४;  
सु १, १, ५२.  
आत्मन्-विन्<sup>१</sup>- -न्वी वृ १, २, १; ७;  
२, १, १३<sup>१</sup>.  
आत्मन्विनी- -नी वृ २, १, १३.  
आत्म-पद- -दम् गोपू २१.  
१आत्म-पर<sup>१</sup>-  
आत्मपर-देह- -हेषु गी १६, १८.  
२आत्म-पर<sup>१</sup>- -र: अन्न ५, ६९.

अ) तैआ ३, ११, १। b) पदान्तरादिरात्मान्तः बस. कबन्तः द्र.। c) मा ८, १३। d) 'जः' इति  
निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ.)। e) 'ज्योतिः रसः' इति व्यस्तः निसा. पा.। f) 'याः' इति निसा.।  
g) ऋ १०, १२१, २। h) 'ज्ञाने' इति अख्या.। i) विध २९, १०। j) विनिः प्र. उसं. (पा ५, २, १२१)।  
k) दस.। l) बस.।



आत्म-परमात्म-दैव(त्य>)त्वा-  
-त्ये का १३; नार ११.  
आत्म-पितामह-प्रपितामह- -हान्  
नाप ४,३८.  
आत्म-पितृ-पितामह- -हान् नाप  
४,३८.  
आत्म-पूजा- -जाम् त्रिवि ५, १२;  
१३; ६, २१.  
आत्म-पूत- -तः कै २, ५.  
आत्म-प्रकाश- -शम् नृउ ६, ४.  
आत्मप्रकाश-रूप- -पः ते ३, १०.  
आत्म-प्रतीति- -तिः योशि १, १२४.  
आत्म-प्रबु(द्ध>)द्धा- -द्धाः मै २, ६.  
आत्म-प्रबोधो(ध-उ)पनिषद्<sup>१</sup>-  
-षदम् आबो ३१<sup>१०</sup>.  
आत्म-प्रयत्न-सा(स-अ)पे(त्त>)-  
क्षा- -क्षा भव ३, १२.  
आत्म-बुद्धि- -द्धिः भव ३, ९; -द्ध्या  
त्रिब्रा २, १४७.  
आत्मबुद्धि-प्रकाश, शा- -शम्  
वे ६, १८; गोपू २२; -शाम् गु ७२.  
आत्मबुद्धि-प्रसाद-ज- -जम् गी  
१८, ३७.  
आत्म-भाव- -वः सार २७२: २२;  
२७४: ४; -वम् ते २, २६; सार  
२९२: १२; -वाः सार २७२:  
२१<sup>१</sup>; २७३: १; २७५: २१;  
-वात् वे १, २; नाप ९, १; -वे सार  
२४०: २; २८७: ६; -वेन गौ  
२, ३४; महा ४, १३०; सार  
२८७: ७.  
आत्मभाव-भावना-निवृत्ति-  
-त्तिः योसू ४, २४<sup>७</sup>.  
आत्मभाव-स्थ- -स्थः गी १०, ११  
आत्म-भावन- -नात् महा ४, १२८.  
आत्म-भास्- -भासा शा २६.

आत्म-भूत- -तस्य कौ १, ६५<sup>०</sup>;  
-तानाम् २योत २, ६.  
आत्म-भूय- -यम् ऐ ४, २.  
आत्म-मति- -तिम् अध्या २.  
आत्म-मध्य- -ध्ये शां १, ७, १९.  
आत्म-मन(स्)>)श्-चक्षु(स्)>:-  
संयोग- -गेन अता १०.  
आत्म-मनस्- -नसोः वरा २, ७५;  
सौ २, १४.  
आत्म-मन्त्र-सदा(दा-अ)भ्यास-  
-सात् योशि २, १८.  
आत्म-मय- -यम् ते ६, ४६; ४७.  
आत्म-मात्र- -त्रम् नृउ ५, २; -त्रेण  
१योत १४३; ते ४, १.  
आत्ममात्र-दृश्- -दृक् अज ४,  
३; वरा ३, २७.  
आत्म-माया- -यया गी ४, ६; -या  
वरा २, ६९.  
आत्ममाया-रत- -तम् शां ३, १.  
आत्ममाया-विसर्जित- -ताः  
गौ ३, १०<sup>६</sup>.  
आत्म-मिथुन- -नः छां ७, २५, २;  
-नाः नृउ ६, ४.  
आत्म-मूर्ति- -तैये रापू ४, १३.  
आत्म-यज्ञ- -ज्ञस्य मैत्रि ६, १०.  
आत्म-यत्न- -त्नेन अज ५, ११८.  
आत्म-याजिन्- -जी मैत्रि ६, १०<sup>३</sup>.  
आत्म-याथात्म्य- -स्यम् शां १, १०.  
आत्म-योग- -नात् गी ११, ४७.  
आत्म-योनि- -निः वे ६, १६; भव  
२, ४७.  
आत्म-रक्षा- -क्षा व ४३४: १५<sup>१०</sup>.  
आत्मरक्षा-कर- -०र लां २१४:  
११.  
आत्मरक्षा-सु-नियम-भूत-  
बुद्धि-प्राणस्थापन-प्रणवावर्तन-

मातृपूजना(न-अ)न्तर्मातृका-  
(क-अ)न्तर्यागा(ग-आ)दि- -दि  
वउ ६, ४.  
१ आत्म-रति-  
आत्मरति-गुण- -णाः सार  
२७९: ७.  
२ आत्म-रति- -तयः नृउ ६, ४;  
-तिः सुं ३, १, ४; छां ७, २५, २;  
नाप ५, २५; अज १, ३७<sup>६</sup>; गी  
३, १७.  
आत्म-रत्न- -त्नस्य ते ६, १०२.  
आत्म-रस- -सम् अज २, ९.  
आत्मरस-भावित- -ताः सार  
२७३: २.  
आत्म-रहस्य- -स्यम् १कौल ६: १;  
२कौल ६.  
आत्म-रूप- -पः पै ४, ११; -पम्  
ब्रवि ७७; ते ४, ६१; गोपू २३;  
-पाय नाउ २, ५.  
आत्मरूपिन्- -पिणे सार २७७:  
१२.  
आत्म-लाम- -भः अज ४, ८; सांस्  
६, ३४.  
आत्मलाभो(भ-उ)दया(य-अ)-  
भिध- -धः वरा ३, ३०.  
आत्मलाभो(भ-उ)पाय-भूत-  
-तम् शां १, १.  
आत्म-लिङ्ग-शान्त्य(न्ति-अ)र्थ-  
-र्थे म ४९: १९.  
आत्म-लीला(ला-अ)र्थ- -र्थे सार  
२९२: ६.  
आत्म-लोक-जय- -प्रद- -दः ते ३,  
६९.  
आत्म-वत्- -वन्तम् गी ४, ४१;  
-वान् नाप ५, २५; त्रिब्रा २,  
१०७; १संन्या २, ५९; अज ४,

अ) 'वत्' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। b) 'नाविनि' इत्यपि पाठे। c) 'स्मा भू' इति शांशा ३, ६। d) 'याविवर्जि' इति ज. c.। e) स्यादिति शेषः। 'क्षा' इत्येवं समासाभिमुखः सुपा. यनि. सु-शोधः [तु. सत्य. टिटि. अक्षि-रक्षा- (परि.), उदक-रक्षा-, पर-रक्षा-, प्रत्यक्ष-रक्षा-, वायु-रक्षा-, महान्धकारोलका-विषुदम्यनिलचोरसञ्ज्ञा-]। f) बस. इति कृत्वा एष, तस. सतः पृथक् द.। g) स्वात्म इति अज्या.।

३८; शा २४; भव ४, १; गी २, ४५.  
 आत्म-वत् मैत्रि ६, ३०; नाप ४, २२;  
 अन्न १, ३८; सांसू ६, १३.  
 आत्म-वश्य- -इयैः गी २, ६४.  
 आत्म-विज्ञान- -ने नाद २२.  
 आत्मविज्ञानिन्- -नी शां २, १.  
 आत्म-विद्- -वित् छां ७, १, ३३;  
 वृ ३, ७, १; मै १, १३; मैत्रि १, २३; ६, ३३; मैत्रे १, १३; १आ २४; नाप ३, ७७; यो २, २८;  
 नृउ ८, ३; -विदः सुं २, २, ९;  
 सार २३१: २; -विदे मैत्रि ६, ३३; -विद्भिः जाद १, १२.  
 आत्म-विद्या- -द्या छां ४, १४, १; सर ३, ११; -द्याम् हे १.  
 आत्मविद्या-त(पस्)>पो-मूल-  
 -लम् श्वे १, १६; नाप ९, १२; वृ ३, १७.  
 आत्मविद्या-संरक्षक- -क लां २१४: १२.  
 आत्म-विनिग्रह- -हः गी १३, ७; १७, १६.  
 आत्म-विनिश्चय- -यः गौ २, १८.  
 आत्म-विभूति- -तयः गी १०, १६; १९.  
 आत्म-विवृद्धि<sup>a</sup>- -द्धि श्वे ५, ११; भव २, २४.  
 आत्म-विशुद्धि- -द्धये गी ६, १२.  
 आत्म-विस्मृति- -तेः अध्या ५.  
 आत्म-वेदन- -नम् महा ५, ४७; -नेन सार २५६: २२.  
 आत्म-वेदिन्- -दिना नाप ६, १४; -दिनाम् जाद १, २४.  
 आत्म-व्यापक- -कम् अद्वै २८.  
 आत्म-शक्ति- -क्तिः दे १०; -क्ते:

शां ३, १०; -क्त्या शां ३, १; महा ५, १२०.  
 आत्मशक्ति-प्रधान- -नः शां २, १.  
 आत्म-शब्द- -ब्दात् ब्रसू १, १, ६; ३, ३, १५.  
 आत्मशब्दा(ब्द-अ)र्थ-वर्जित-  
 -तः ते ५, ८.  
 आत्म-शुचि- -ची मैत्रि ६, ३६.  
 आत्म-शुद्धि- -द्धये गी ५, ११.  
 आत्म-श्राद्ध- -द्धम् पप ४१८: १८; -द्धे नाप ४, ३८.  
 आत्म-संयम-योगा(ग-अ)ग्नि<sup>c</sup>-  
 -ग्नौ गी ४, २७.  
 आत्म-संस्थ- -स्थः ब्रवि ९२; -स्थम् श्वे १, १२; गौ ३, ३८; नाप ९, ११; ध्या ९३, १४; भव २, ५७; गी ६, २५.  
 आत्म-संग- -गम् वरा २, ३६.  
 आत्म-संज्ञ- -ज्ञः १आ १.  
 आत्म-सत्या(त्य-अ)नुबोध- -धेन गौ ३, ३२.  
 आत्म-संनिधि- -धौ ससा १, २२.  
 आत्म-समर्पण- -णम् सार २२०: ११  
 आत्म-समाना(न-अ)नन्द<sup>d</sup>-  
 आत्मसमानानन्द-विभूति-  
 पुरुषा(ष-अ)नन्ता(न्त-अ)-  
 नन्द-मण्डित<sup>e</sup>- -तम् सि १, ७.  
 आत्म-संबोधना(न-अ)र्थ- -र्थम् मैत्रि ६, १४.  
 आत्म-संभावित- -ताः गी १६, १७.  
 आत्म-संमित- -तम् छां २, १०, १; ६; १संन्या २, ५९.  
 आत्म-साक्षिक- -कम् मैत्रि ६, २४.  
 आत्म-सात्  
 आत्मसात्/कृ, आत्मसात्करोति

नृउ ८, ३.  
 आत्मसात्-कर्तुम् महा ३, ३८.  
 आत्म-सिद्ध- -द्धम् नृउ ९, १९.  
 आत्म-सुखा(ख-अ)र्थ- -र्थम् सार २७४: १२.  
 आत्म-स्थ, स्था- -स्थम् क२, २, १२; १३; श्वे ६, ६; १२; मै ३, २; मैत्रि ३, २; अशि ५, १७; वट्ट ३१३: २; स ३७८: १२; भव २, ४८; -स्थाम् गु ४४: ६६.  
 आत्म-स्वरूप- -पम् ता १, २; स्व ६२: २; -पेण ध्या ९३, १५; सार २३९: २०.  
 आत्मस्वरूप-विज्ञान- -नात् जाद ६, ५०.  
 आत्म-हन्- -हनः ई३; -हा प६४.  
 आत्म-हिता(त-अ)र्थ- -र्थाय शि ७, १२७.  
 आत्मा(त्म-आ)कर्षि(न्>)णी- -णी आथ ३९५: १३.  
 आत्मा(त्म-अ)कात्स्न्य- -त्स्न्यम् ब्रसू २, २, ३४.  
 आत्मा(त्म-आ)काश<sup>f</sup>- -शः ते ३, २७  
 आत्मा(त्म-आ)ख्य- -ख्यः मैत्रि ३, १; -ख्यम् पाशु २, २.  
 आत्मा(त्म-अ)ज्ञान- -नम् ते ३, ६९  
 आत्मा(त्म-आ)त्मक- -कानि मैत्रि ६, ३१.  
 आत्मा(त्म-आ)दि- -दिभिः नाप ४, ३८.  
 आत्माद्या(दि-आ)वरण- -णम् सार ३, १.  
 आत्मा(त्म-आ)दि(क>)का- -काः महा ४, ५७.  
 आत्मा(त्म-आ)देश- -शः छां ७, २५, २.

a) 'प्रासाऽऽम्बु वृष्ट्या चा(वा)ऽऽत्म-विवृद्धि जन्म' [=यथा प्रासः शस्यादिकं भोजनमम्बु जलं (च) वृष्ट्याऽऽत्मविवृद्धिकरं जन्म प्राप्नुतः] इति वा. ? (वैतु. अन्येऽन्यथाविग्रहा उत्तरेण जन्म इत्यनेन समस्य श्रावुकाः, निसा. 'द्ध' इत्यपरः पा. विशेषश्च) । b) 'आत्मशक्तिक्रीडस्य' इति अज्या. । c) वैतु. शं. आत्म-संयम-योगा(ग-अ)ग्नि-इति विग्रहकः । d) व्यधिकरणः बस. । e) कस. गर्भितेन षस. गर्भितः तृस. । f) व्यधिकरणे बस. उप. भावे द्र. ।

आत्मा(त्म-आ)धार-रः आपू ७.  
 आत्मा(त्म-आ)नन्द-न्दः छां ७,  
 २५,२; नन्दम् सार २४६:१२;  
 नन्दाः वृ३६,४; नन्दे सार २७२:  
 २२; २३<sup>१</sup>; २७९: १९.  
 आत्मानन्द-रूप-  
 आत्मानन्दरूपिन्-पिणः  
 सार २३९: ९.  
 आत्मानन्द-स्व-रूप-पः ते  
 ३,९.  
 आत्मा(त्म-अ)नात्म-विवेक-कः  
 योशि ४,२२; कम् ते ५,१.  
 आत्मानात्मविवेका(क-आ)दि-  
 आत्मानात्मविवेकादि-भेदा-  
 भेद-विवर्जित-तः ते ५,४.  
 आत्मा(त्म-अ)नुभव-वम् ते ३,१.  
 आत्मा(त्म-अ)नुसंधान-नम् नाप  
 ७.<sup>२</sup>  
 आत्मा(त्म-आ)पत्ति-त्या मै ४,३;  
 मैत्रे १,४,२.  
 आत्मा(त्म-अ)भिजुषाण-णम् पा  
 १,८.  
 आत्मा(त्म-अ)भेद-  
 आत्माभेद-ता-त्या तारा ८३:  
 २२.  
 आत्मा(त्म-आ)झाय-यः म ४९:  
 १४.  
 आत्मा(त्म-आ)राम-मः नाप ५,  
 २४; त्रिवि १,११; कुं २८; मस्य  
 त्रिवि २, १४; ४, ११; महा ४,  
 ३५; ५, ३६; मान् त्रिवि ७, १.  
 आत्माराम-स्व-रूप-पः ते  
 ३,९.  
 आत्मा(त्म-अ)र्थ-र्थः सांस् २, ११.  
 आत्मार्थ-त्व-त्वात् सांस् २,  
 ११.

आत्मा(त्म-अ)वलोकना(न-अ)र्थ-  
 र्थम् अत्र १, ४६<sup>३</sup>.  
 आत्मा(त्म-अ)वलोक(क-इ)च्छा-  
 च्छा महा ४, ११४.  
 आत्मा(त्म-अ)वशेषक-कः ते ४, ५.  
 आत्मा(त्म-अ)विभेद-  
 आत्माविभेद-तस्(>)यो २, ४९  
 आत्मा(त्म-आ)विभाव-वेन सार  
 २८४: १.  
 ?आत्मा(त्म-आ)श्रयिन्-  
 आत्माश्रयि-त्व-त्वात् सिशि  
 ३८१: ९.  
 आत्मा(त्म-आ)सन-रूप-  
 आत्मासनरूपि(न्>)णी-णीम्  
 त्रिता २, १८.  
 आत्मीय-यम् महा ५, १५८; पा  
 २, ८: ९.  
 आत्मे(त्म-इ)ज्यान-नः मैत्रि ६, ९.  
 आत्मे(त्म-इ)न्द्रिय-म(नस्>)नो-  
 युक्त-कम् क १, ३, ४; पै ४, ३;  
 भव २, ११.  
 आत्मे(त्म-ई)श्वर-रम् मना २,  
 १३, १९<sup>४</sup>.  
 आत्मे(त्म-ए)कत्व-त्वम् महा ४, ११  
 आत्मो(त्म-उ)द्धारा(र-अ)र्थ-र्थे  
 म ४८: १०; १५; २१; ४९: ५;  
 १२; २०.  
 आत्मो(त्म-उद्>)न्-मुख-खः  
 जाद ६, ३७.  
 आत्मो(त्म-उ)पदेश-शात् ब्रस् १,  
 १, २१.  
 आत्मो(त्म-उ)पाधि-धिः ससा १,  
 २३.  
 आत्मौ(त्म-औ)पम्य-म्येन गी ६,  
 ३२.  
 आत्यन्तिक-अत्यन्त-द.

आत्रेय-अद् द.  
 आथर्वण-अथर्व द.  
 ?आद(धा>)दायत्-, \*आ-दध-, आ-  
 दधान्, आ-दधान-, \*आद-  
 धाय आ/धा द.  
 आ-दर-, आ-दर्य- आ/द द.  
 आ-दर्श- आ/दृश द.  
 आ-दशम-मम् गोच ६९: ७.  
 आ/दह  
 आ-दहन-नः वृजा २, ७.  
 आ/दा(दाने), आदत्ते प्र ४, २; श्वे ५,  
 १०; वृ २, १२; शां ३, १; महा  
 ५, १४५; १५५; अत्र ५, २; गु  
 ६५; भव २, २५; पित्र ६, ९; गी  
 ५, १५; आददाति मैत्रि ६, १२;  
 आददते छां ३, १६, ५; आदस्त्व  
 के ३, १०; आददीत वृ २, ४, १२;  
 १ संन्या २, १२; आदद्यात् शि ५,  
 ८; आददीय के ३, ९.  
 आददे वृ ६, ४, ५; ७; १०; १२<sup>५</sup>;  
 रापू ४, १७; मुद्र २.  
 आदीयते शि ६, १७४.  
 आ-त्त-त्तः छां ८, १२, १; -त्तम्  
 छां ८, १२, १; मै ५, ४; -त्ताः छां  
 ८, १२, ६.  
 आत्त-सर्वे(र्व-ई)ह-हः सु २,  
 २, १९.  
 आ-दान-नस्य क १, २, १; -नाः  
 वृ ३, ९, ५<sup>६</sup>.  
 आ-दातव्य-व्यम् प्र ४, ८; सुवा  
 ५; ६; ९<sup>७</sup>; -व्ये सुवा ५.  
 आ-दातुम् के ३, १०.  
 आ-दान-नम् नाप ६, १; अत्र ४,  
 ४६; सु २, २, ५७; -नात् मैत्रि ६, ७  
 ?आदान-करण-णौ २ प्र ३५:  
 १५.

a) 'नविधि' इति अज्या. । b) 'र्थः' इति अज्या. संटि. । c) ताच्छील्ये कृत् । 'मिन्' इति मुपा. यनि. सु-शोषः । d) तैआ १०, ११, १ । e) 'आधानकरणौ' इति मुपा. यनि. सु-शोषः (तु. गोत्रा १, १, २७ यत्रत्यो नादानुप्रदानकरणौ इति पा. कामं ज्ञापयेदिहापि नादादा<sup>८</sup> इति पा. सतः यनि. च्युतशेषमात्रमित्यथवा नादपदार्थः प्रकरणगम्य इति) ।



आ-दाय ई शाँः छाँ २,९,४;४,२,  
१,३; वृ शाँः २, १,१५; १७;  
४, ३, ११; ५, १,१; ६, ४,५;  
जा पहं सुवा शाँः कौ १,३; वृजा  
३,३०;४,१०;६,१;७; वृउ४,  
३; योचू ३९; ध्या ६७; रापू४,  
२५;२७;२९; राउ ३,१; वा ७;  
पै २,४; महा ५, ८८; ६, ६०;  
७०;७३;७८; त्रिता १,३९; ३,  
१३; गोपू १३; गोउ ३०; गोच  
६६;६; य १; सु २९३:२; शि  
१,७;विद्या४;वउ१,२०;३,५४.  
१ आ-दि- -दि ते ६,५; -दि: मां९;  
छाँ २,८,१;९,४;१०,२; श्वे ६,  
५; गौ १, २७; ४, १४<sup>३</sup>; १५<sup>३</sup>;  
२३<sup>३</sup>; अशि ३,१; वृउ २,५;७,  
४; ते २,३१; ५, ७८; च २१:  
१६; पा ६,१; वउ३१५:१; वउ  
३,५६; गी १०, २; २०; ३२;  
१५, ३; -दिम् २१४; गी ११,  
१६; -दे: २५ ३५:१४; -दौ श्वे  
४,१; गौ २,६;४,३१;९८; महा  
४,४;५,७५;१०४;१४६; योशि  
१,१४;६६;१४६; ५,१३;३६;  
वरा५,६४; तुअ ६; अज२,३९;  
५,७१; यो १,२;९;२,१५;जाद  
६, ३६; गोपू १३; पं १; १८;  
१योत १६; सी २६; मं २,१,५;  
१०; नाप२;३,१; त्रिबा २,५३;  
द१;४;त्रिवि७,३०;रार २,७७;  
८०;३,१<sup>३</sup>; रापू ४,३४; अ १<sup>३</sup>;  
वृजा १,१; ते १,२३; नाद ३४;  
सु २,२,४२; सूता ५,३;पा२,९;  
सार २२१:७; रया २;१५; सुसु  
७; भव २,६८; गौ३,४१;४,४.  
२ आद्य,द्या- -०द्य व४३४:३;  
-द्य: अना३५; द ५; रार२,४२;

५,१२; श १५; त्रिता १, ४६;  
सर३,३०<sup>३</sup>;सूता२,१६;३,११;  
शि ६,१०१<sup>३</sup>;वउ२,३०; -द्यम्  
मैत्रि ६,२८; त्रिता २, ४<sup>३</sup>;१०;  
१७;३,२९;अज १,१९;३,२४;  
४,६८;९,१;५,६४; जाद४,४४;  
सी २१; वृपू १,९<sup>५</sup>;१३<sup>५</sup>; महा  
५,५३; वि २७; शि १, ९; ७,  
८४; काम ५; ११; पी ४२२:  
६; भव ३, ३२; सांसू १, ७१;  
गी ८,२८;११,३१;४७;१५,४;  
-द्यया गोउ ५८<sup>३</sup>; -द्या त्रिता १,  
२०; ३, १६; गोउ ५६; ५७;  
राधा ३,१५; गु २; -द्या: त्रिता  
३,१५;गोउ ६३; -द्यात् अव्य५;  
-द्यानि त्रिता १, १०; गु ८०;  
-द्याम् त्रिता१,५८;-द्येन रार२,  
७; -द्यै: अव्य५; -द्यौ गौ१,१४.  
आद्य-कारण-

आद्यकारण-

आद्यकारणता-

हानि- -नि: सांसू ६,३७.

आद्य-त्रय- -यम् सर ३,  
२४.

आद्य-मध्यमा(म-अ)व-  
सान- -नेषु त्रिता २,२.

आद्य-योन्य(नि-अ)-  
न्तर- -रे पी ४२१: ७.

आद्य-शक्ति- -क्तिम् सुसु  
१७.

आद्य-हेतु-

आद्यहेतु-ता- -ता  
सांसू १,७४.

आद्या(य-अ)र्धा(र्ध-अ)-  
न्त्य- -न्त्यम् वृपू १,११<sup>५</sup>.

आद्यो(य-उ)पादान-  
आद्योपादान-ता-

-ता सांसू ६,३२.

आदि-कर्तृ- -र्ता पै १, ८; -अं  
सार २७७: ६; गी ११,३७.

आदि-कला- -लाम् षो १०.

आदिकला-पुटि(त>)ता-  
-ताम् षो १०.

आदि-कर्म- -मार्ग त्रिवि ७,४८.

आदि-गणे(ण-ई)श- -श: वउ  
४,२२.

आदि-गायत्री- -त्री रार २,२२.

आदि-चैतन्य-मात्र- -त्र: ते ३,  
३७<sup>०</sup>.

आदि-तस्(>) ऐ ४, १; २प्र  
३४: १०;३५: १३; ३६:१०;  
१५; शि ४,२३.

आदि-देव- -व: श १९;गी११,  
३८; -वम् गी १०,१२.

आदि-देश-काल-वस्तु<sup>३</sup>- -स्तु  
त्रिवि १,११.

आदि-द्वा-दश-वन-विहारा-  
(र-आ)स्मन्- -स्मने सार  
३७७: १९.

आदि-नारा(र-अ)यण- -ण:  
त्रिवि १,११;३,७; ६,२५<sup>३</sup>; ८,  
१५<sup>३</sup>; पप ४१८: १९<sup>३</sup>; सौ १,  
१९<sup>३</sup>; -णम् त्रिवि५,१४;६,१९;  
२५;७,५०;तुअ २९<sup>३</sup>;पप४१७:  
१९<sup>३</sup>; -णस्य त्रिवि२,१४<sup>३</sup>;३,५;  
७;४,११<sup>६</sup>.

आदि-पति-योगि(न>)नी-  
-०नि व ४३६: १९.

आदि-पुरुष- -पस्य कलि १.  
आदिपुरुष-रूप- -पम् वउ  
४,१८.

आदि-बुद्ध- -द्धा: गौ ४,९२.

आदि-ब्रह्मन्- -ह्य निर्वा  
२९८: १.

a) च्युत-विसर्ग: निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: । b) यनि. सुपा. अथ इत्येवं सु-शोध: । c) एकतरत्र  
'आद्यन्तवन्त:' इति निसा. । d) 'मायया' इति आन. । e) 'न्यरूप:' इति अज्या. । f) द्वन्द्वगर्भितेन सस. गर्भित:  
कस. । g) अनादि<sup>०</sup> इति निसा. ।

आदि-भवानी- -० नि व ४३६:

१९; २१.

आदि-भाजिन्- -जीनि छां २,  
९,४.

आदि-भूत- -तः त्रिता १,३१.

आदि-म- -मैः रापू ५,४.

आदिम-गिर- -गिराम् द  
१४.

आदि-मत्- -मतः गौ ४,३०.

आदिमत्-त्व- -त्वात् मां  
९; नृउ २,५.

आदि-मध्या(ध्य-अ)न्त-

आदिमध्यान्त-वर्जित- -तः

ते ४, ७६; -तम् जाद ९, ३;

अन्न ५,६७; ७२; वा २७.

आदिमध्यान्त-विहीन-

-नम् कै १,७.

आदिमध्यान्त-शून्य- -न्यम्

त्रिवि १,५; ७,१७.

आदिमध्यान्त-हीन- -नः ते

३,१०; ब्रवि ९१.

आदि-मध्या(ध्य-अ)न्तरङ्ग-

-ङ्गम् ते ५,८०.

आदि-मध्या(ध्य-अ)वसान-

-नेषु अक्षि ४७.

आदि-वराह- -हः म ४९; २.

आदि-विद्या- -द्या त्रि ८.

आदि-विरा(जु)>द-पुरुष-

-षः, -षस्य त्रिवि ३,६.

आदि-विराट्-स्व-रूप- -पम्

त्रिवि ६,१५.

आदि-शक्ति- -क्तिः त्रि १३;

-क्त्या त्रिता १,२१<sup>a</sup>.

आदि-शान्त- -न्ताः गौ ४,९३.

आदि-शून्य- -न्यः आबो ९.

आदि-शेष- -षः ते ३,३५.

आदि-सामान्य- -न्यम् गौ १,

१९.

आदि-सिद्धि- -द्धिम् द १२.

आदि-हेतु-रति-दातृ- -त्रे सार  
२७७: ६.

आद्य(दि-अ)क्षर- -रः राउ ५,१;

-रे त्रिता २,९.

आद्य(दि-अ)नादि-रूप-संसि-  
द्ध-भक्ति-रूप-

आद्यनादिरूपसंसिद्धभक्ति-

रूपिन्- -पिणे सार २७७: १६.

आद्य(दि-अ)नादि-संभोग-सु-

ख-भोक्तृ-भोग<sup>b</sup>- -गाभ्याम्

सार २४७: २०.

आद्य(दि-अ)न्त- -न्तम् बृजा ३,

१२; ते २,३०; रापू ४,२०; पत्र

२<sup>c</sup>; -न्तयोः पत्र २; त्रिता २,१९;

-न्ते राउ २,३९; -न्तौ राउ ४,

२; ता ३,८.

आद्यन्त-ग्रह-संमेलन-

-नम् पत्र २.

आद्यन्त-निहितो(त-अो)-

ङ्कार- -रेण अव्य २.

आद्यन्त-युक्त- -क्तम् मैत्रे १,

४,१४.

आद्यन्त-रहित- -तम् अन्न

५,६५.

आद्यन्त-वत्- -वन्तः गौ

५,२२.

आद्यन्तवत्-त्व- -त्वेन

गौ २,७; ४,३२.

आद्यन्त-शून्य- -न्यः त्रिवि

१,११; २,६; -न्याः व ४३४: १.

आद्यन्ता(त-अ-भाव-

आद्यन्ताभाव-वत्-

-वान् ते ३,२९.

२<sup>c</sup>आदि<sup>d</sup>-

०आदि-वाक्य- -क्यानि पै २,

३१.

०आदि-हीना(न-आ)त्मन्-

-त्मा ते ४,७७.

आ-दीयमान- -ने वृ १,४,१०.

आदि-क्षान्त- -प अ द.

आदित्य- -अदिति- द.

✓\*आदिध्,\*आ-दिध- आ/धा द.

आ/दिश्,>देशि, आदिशन्ते ब्रवि

६३<sup>e</sup>; आदिशन्ति सी २४; आ-

दिशेत् शि ४,२३; ७,३०.

आ-दिश्- -दिशः वा १७.

आ-दिष्ट- -ष्टम् छां ३,१८,१; २; सु

१,१,४५.

आ-देश- -शाः के ४,४; तै १,११,

४; २,३,१; छां ३,१९,१; ६,१,

३; ६; वृ २,३,६; म २,१५; नृउ

१,१२; २,१०; नाप ८,१८; -शम्

छां ६,१,२; -शाः छां ३,५,१; २.

आदेश-कारिन्- -रिणः अव्य ७.

आ-देशयत्- -यन्तः त्रि ९<sup>f</sup>.

आ-देष्टृ- -ष्टा त्रिता ५,१<sup>g</sup>.

आ/दीप्

आ-दीप्त- -प्तम् मैत्रि ६,१८.

आ/ट्, आद्रियन्ते शा ३५९<sup>h</sup>.

आ-द्र- -रात् १योत ६२; त्रिब्रा

२,५०; अन्न ४, ७६; शि ६,

२८४; ब्रसू ३,३,४०; -रेण जाद

९,२; वरा ३,१३.

आ-दर्तव्य- -व्यम् २प्र ३५: ३.

आ/दृश्

आ-दर्श<sup>i</sup>- -र्शः गौ ३,३८; -र्शे क

२,३,५; छां ८, ७, ४; वृ २, १,

९; ३,९,१५; कौ ४,१०.

आ-देह-मध्य-कटि-

आदेहमध्यकट्य(टि-अ)न्त- -न्तम्

त्रिब्रा २,१३८.

१आद्य- ✓अद् द.

a) यनि. मुपा. 'क्तिर या' इति द्विपदतया सु-शोधः (वैतु. उब्र. यनि. एव) । b) द्वस. गर्भितेन कस. गर्भि-  
तेन षस. गर्भितः बस. । c) 'न्तः' इति निसा. । d) यनि. एकाऽनेकपूर्वपदयुक्तं द. । e) 'आदिश्यन्ते' इति अज्या. ।  
f) 'आवेशयन्तः' इति तान्त्रि. । g) 'प्रष्टा' इति निसा. संटि. । h) वाध २,११ ।

२आद्य- आ/दा(दाने) द.

आ/द्, आदवति वृ ४, ३, १५-१७;  
३४; ३६.

आ/धा, > दधा, आदधाति पा ६, ३;  
आदधते त्रिता ४, २१; आदधामि  
वृ ६, ४, ८; ११; आधत्ताम् वृ ६,  
४, २१; मना २, ४२९<sup>५</sup>; आधत्स्व  
गी १२, ८; आदधीत वृजा  
३, ७.

आधाम् वा १७.

\*आ-दध<sup>५</sup>-

✓\*आदधाय<sup>५</sup>

!आद(धा>)दायत्<sup>d</sup>- -यन्

मुं १, २, ५.

आ-दधातृ- -त्रे पा ७, १०.

आ-दधान- -नः पा ३, १०; ४, ३;  
४; ७; ७, ७; -नाय पा ३, ९;  
४, ८.

\*आ-दिध<sup>५</sup>-

✓\*आदिध<sup>५</sup>, आदिधेयुः अव्य  
७<sup>५</sup>.

आ-धातव्य- -व्याः मना २, ७८९<sup>b</sup>.

आ-धान- -नम् वृ २, २, १.

आ-धाय छां ४, ६-८, १; ५, २, ६; वृ  
६, ४, २४; त्रिवा २, १९; अक्षि  
१६; कुं २; त्रिता ३, २३; राधा  
१, १; सार २५६: १२; गी ५,  
१०; ८, १२.

आ-धि- -धयः अक्षि २३; -धिम्यः  
इ १०: १४.

आधि-रहित- -तः त्रिता १, १४.

आधि-व्याधि-भुजं-न- -गेन

गोपू ४३.

आ-धेय-

आधेय-शक्ति-योग- -गे सांसू  
५, ३२.

आधेय-शक्ति-सिद्धि- -द्धौ  
सांसू ५, ३६.

आ-हित- -तः पा १, ५; -तम् पत्र  
२; इ १८: ८; -ताः महा ५,  
१३५.

आहिता(त-अ)भि- -भिः नाप  
३, ९; २संन्या १५: १; इ १४: ३.

आहिता(त-अ)सु- -सुः भ २,  
२०.

आधारा<sup>५</sup>- -रा पी ४२२: ९.

आधिकारिक- -अधि/कृ द.

आधिक्य- -अधिक- द.

आधिदैविक- -अधि-देव- द.

आधिपत्य- -अधि-पति- द.

आधिभौतिक- -अधि-भूत- द.

आ-धीत- आ/ध्वै द.

आ/धृ

आ-धार- -रः नाप ८, २०; पा ५, ७;

१०, ६; -रम् मैत्रि ६, ३६; ध्या

४३; कै १, १४; ९<sup>५</sup>योचू ४; ६;

योशि ३, १८; ६, २२; २४; २९<sup>३</sup>;

यो ३, १०९<sup>५</sup>; शि ६, ५३; -रात्

हं ६; ९; योशि ६, २२; -९<sup>५</sup>रे योशि

६, २९<sup>३</sup>; ३०; ३१; जाद ४, ४९;

सौ ३, १; स ३७८: ४.

आधार-चक्र<sup>५</sup>- -क्रम् सौ ३, १.

आधारचक्र-महस्- -हसा

योशि ६, २६; २७.

आधार-नवक-मुद्रा- -द्राः

भा ४.

आधार-पश्चिम- -मे योशि ६,  
३२; ३३.

आधार-पात्र- -त्राणि शि ६, ६०.

आधार-भाजन- -नम् शि ६,  
२५३.

आधार-रहित- -तः मैत्रे ३, ९.

आधार-रूप-शिवा(व-आ)त्मा-

(त्मा-अ)क्षर- -रम् त्रिता १, ५३.

आधार-वात-रोध- -धेन योशि

६, २७; २८<sup>३</sup>; २९.

आधार-शक्ति- -क्तिः योशि २,

१२; -क्त्या वृजा २, ८; -क्त्यै

त्रिवि ७, ४८.

आधारशक्ति-निद्रा- -द्रायाम्

योशि ६, २३.

आधारशक्ति-मूलप्रकृति-

कूर्मा(र्म-अ)नन्त-वराह-पृथिवी-

सुवर्णमण्डप-रत्नसिंहासन- -नैः

सूता ४, ६.

आधारशक्त्या(क्ति-आ)दि-

वैष्णव-पीठ- -ठम् रार ३, १.

आधारा(र-आ)ख्य- -ख्ये ध्या

४४.

आधारा(र-आ)ख्य(क>)का-

-काम् रापू ५, २.

आधारा(र-आ)धे(य>)या- -या

सी १७.

आधाराधेय-वत् अनप, ५३.

आ/ध्मा

आ-ध्मात- -तः वृ ३, २, ११.

a) तैआ १०, ४०, १। b) सोपसर्गादपि शः प्र. उंसं. (पा ३, १, १३९)। c) नापू. लोहितादिष्वन्तर्भाव्य  
कथं प्र. उंसं. (पा ३, १, १३)। तेन नाउ. परस्मैपदत्वं द. (पा १, ३, ९०)। d) नैप्र. वर्णविकारः द. [=एतेषु(=आ-  
वितपूर्वजिह्वासप्तकविशिष्टेष्वभिषु) यो यथाकालमादधायन् (=अग्रयाधान-कारी सन्) आहुतयः (?'-तीर् यः' इति शोध-  
सापेक्षः पा.) चरते इति वा. स्यात् (यत्र 'यः' इत्यस्य द्विरुक्तिः द.); वैतु. शं. गंपू. शोधमपश्यन् यनि. रू. आहुतयः इत्ये-  
तत्समानाधिकरणं सन् प्र३ <आ-ददा(न)>ना- (=आदीयमाना-) इत्यभिमानुकः? (तु. MW., विधु. [IHQ. १७, ९०],  
नादी. आ इत्यस्य चरते इत्यनेन संबन्धः, कृच <✓दै शोधने वा खण्डने वेति)]। e) सोपसर्गादपि शः प्र. उंसं.  
(पा ३, १, १३९)। अग्र्यासस्येत्त्वम् (पा ७, ४, ७८)। f) बाधने वृत्तिः द.। g) 'अधिदेयुः' इति निसा. संटि., अग्र्या. च।  
h) तैआ १०, ६२, १।



\*आ-ध्माय<sup>a</sup>-✓<sup>a</sup>आध्माय<sup>b</sup>, आध्मायति वृ ३,  
२,११.

आध्यात्मिक- अध्यात्म- द्र.

आ/ध्वै&gt;ध्या

आ-धीत- तु.गपू ३९८.

आ-ध्यान- नाय ब्रसू ३,३,१४.

आ-नखा(ख-अ)ग्र- ग्रम् शां १,७,  
१४.

आ-नत- आ/नम् द्र.

आ-नद्ध- आ/नह् द्र.

आनन<sup>११०</sup>- नम् सार २६५:१९;  
-ने १योत ५७; योचू २०.

आनन-सुद्रा- द्रा महा ४,२६.

आनन्तर्य- अनन्तर- द्र.

आनन्त्य- अनन्त- द्र.

आ/नन्द,>नन्दि, आनन्दते पा ५,  
४:९.आनन्दयते प्र ४,२; ब्र १; आ-  
नन्दयति कर २५; आनन्दयाति  
तै २,७,१.आ-नन्द- न्दः तै २,५,१;७,१;८,  
२<sup>५</sup>; ३<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; ३,६,१;१०,३; वृ  
४,१,६<sup>३</sup>; ३,३२; ३३<sup>८</sup>; गौ १,४;  
मना २,७९९<sup>d</sup>; कौ ३,५; ९; ससा  
१,३६; ते ५,७; ६६; अध्या २९;  
१अव ३; कर ३०; नापू १,२;  
सार २५२:११;१८; पित्र ५,  
५; वड ५,४८; ६,५०; न्दम्  
तै २,४,१; ९,१; ३,६,१; वृ ३,  
९,२८,७; कौ १,७; २,१५<sup>३</sup>;  
३,६; ७<sup>३</sup>; ८; मैत्रि ६,१३; २३;  
२७; ७,३; कै १,१४; ब्र १<sup>३</sup>;  
३,१६; मैत्रे १,४,१२; सुबा ८;  
९<sup>३</sup>; ससा १,२९; ३५<sup>०</sup>; ते ६,  
४२; ध्या ९३,११; नाप ७;द १; श १७९<sup>३</sup>; त्रिवि ७,५०;  
शां ३,१; महा २,९; ३,२६;  
५,९८; ६,७८; अक्षि ४८; ४९;  
अध्या ४२; जाद ४, ६०; ६२;  
९, ३; ब १२२; म ४८:१४;  
नाउ १,१; सार २५४:९; २७३:  
२<sup>३</sup>; २७४:३; पित्र ६, २०;  
-न्दस्य तै २,८,१; वृ २,१,१९;  
४, ३, ३२; कौ ३, ८; -न्दा:  
तै २, ८, १; २<sup>३</sup>-४<sup>३</sup>; वृ ४, ३,  
१०; ३३<sup>३</sup>; -न्दात् तै ३, ६, १;  
सार २३९:१८; -न्दान् वृ ४,  
३, ९; १०; -न्दानाम् वृ २, ४,  
११; ४, ५, १२; -न्दाय महा ३,  
७; नाउ २, ५; -न्दे सुबा ५<sup>१५</sup>; सार  
२४९:२; २७३:५; विद्या ३;  
-न्देन तै ३, ६, १; मै ५, ८; कर २१.  
आनन्द-कर्म-चिह्नीते(त-इ)-  
निद्रासुत- -ता: सौ १,१९<sup>३</sup>.  
आनन्द-कलश- -क्षै: त्रिवि ६,  
२५.आनन्द-कल्प-तरु- -रवे त्रिवि  
७,४३.

आनन्दकल्पतरु-वन- -नै:

सि ४,३.

आनन्द-कोश- -शेन कर २९.

आनन्द-कोश-हीना-

(न-आ)त्मन्- -स्मा ते ४, ७५.

आनन्द-क्रिया- -या का १४.

आनन्द-क्रीडा-स्थान- -नम्

सार २५३:६.

आनन्द-ग्रहण- -णम् नाप ६, १.

आनन्द-घन- -न: वृउ ८, १;

ते ३, २६; गोउ ६३<sup>६</sup>; -नम् वृउ

२, ३; ६, ३; त्रिवि ७, २०; अध्या

६१.

आनन्दघन-रूप- -प: ते ४, ३.

आनन्दघन-सागर- -रा: सि

५, २१.

आनन्द-चि(त&gt;)द्-घन- -न:

त्रिवि ९१; -नम् वृउ ९, ९.

आनन्द-चि(त&gt;)द्-रूप-

आनन्दचिद्रूप-त्व- -त्वे

सांसू ५, ६६.

आनन्द-तरङ्गिणी- -ण्या: त्रिवि

६, २३.

आनन्द-ता- -ता वृ ४, १, ६.

आनन्द-त्व- -त्वम् वरा ३, १०;

-त्वात् आबो ३१.

आनन्द-दर्शन- -नम् सार २६०:

१७.

आनन्द-दायक- -०क दत्ता १, ७.

आनन्द-दायिन्- -यिने सार

२५२:७.

आनन्द-ध्यान- -नात् सार

२५९:२१.

आनन्द-परिपालक- -कम् त्रिवि

५, १४.

आनन्द-पाद- -द: त्रिवि १, ७; ९.

आनन्द-पारा(र-अ)यण- -ण:

र २९.

आनन्द-पुरुष- -वै: त्रिवि ७, २;

सि १, ६.

आनन्द-पूर्ण- -र्ण: पारा १०.

आनन्द-प्राधान्य- -न्येन त्रिवि

२, १०.

आनन्द-बुद्धि-पूर्ण- -र्णस्य

आबो २०.

आनन्द-ब्रह्म-चारिन्- -री म

४८:१९.

आनन्द-भरित-स्वान्त- -न्त:

ते ४, ३८.

a) वस. (पावा २, २, २४)। उप. भावे <✓ध्मा यद्र.। b) आचारे किप् [वैतु. MW. आ/ध्मा इत्यतः कर्मणि यकमुचिवात् स्वरूपरादः (तु. शब्दा १४, ६, २, १२)। c) व्यु. ? <✓अन् इति प्रतीयमानेऽपि [तु. अभा., शक., MW., WW. (१, ५६; वैप १, १५६)] किमर्थोऽसौ धा. कथं च प्राति. दीर्घादित्वमित्यस्य भूयोविमर्शसहृत्वात्। d) तैआ १०, ६३, १। e) 'न्दः' इति आन.। f) तैआ ८, ४, १। g) 'नस' इति अख्या. संटि.।

आनन्द-मिक्षा(क्षा-आ)शिन-  
-शी निर्वा २९८:२.

आनन्द-भुज्-भुक् मां ५; गौ  
१,३; नाप ८, १३; योचू ७२;  
राउ ३, १; वृपू ४, ६; वृउ १,  
८; वउ १, १०; ५, ३६.

आनन्द-भोग-गात् वृउ १, ४;  
नाप ८, ७.

आनन्द-मग्न-मा:सार २२८:५.

आनन्द-मठ-ठम् निर्वा  
२९८:३.

आनन्द-मन्थर-रम् अज ४,  
२४.

आनन्द-मय-य: मां ५; तै २,  
५, १; राउ ३, १; वृपू ४, ६; वृउ  
१, ८; सुबा ५; ससा १, १७; सू  
१८; कः १९, २१; ग ५; सार  
२२०:२; २२१:१०; १४;  
२५४:२०; २५५:१९; २८९:  
१८; २९२:९; ब्रसू १, १, १२;  
-यम् तै २, ८, ५; ३, १०, ५; मना  
२, ६६९<sup>a</sup>; अव्य १; त्रिवा २,  
१५७; वरा २, २२; सार २२३:  
१८; -ये सार २६०: १४; -येन  
सार २५६: ६; १३; -यै: त्रिवि  
७, २२.

आनन्दमयी-यी सार  
२५४: २३; २६९: १४.

आनन्दमय-काम-केलि-

कौतुक-रति-रास-विनोद-

कुञ्ज-आ: सार २५८:७.

आनन्दमय-कोश-श: पै  
२, २२.

आनन्दमय-तत्त्वमय-ते-

(जस्>)जोमय-सर्वमय-य:

अतै २२.

आनन्दमय-ता-तया सार

२९२: १०.

आनन्दमया(य-अ)न(न-अ)-  
न्त-विमान-जाल-लै: त्रिवि  
६, २२.

आनन्दमया(य-अ)न(न-अ)-  
न्त-विमाना(न-आ)वली-  
-लीभि: सि २, ६.

आनन्दमया(य-अ)न-  
(न-अ)न्त-शिखर-रै: त्रिवि  
७, २१.

आनन्द-मात्र-त्र: सार २४५:  
१०.

आनन्द-मात्रा-त्राम् पित्र ५, ४.

आनन्द-माला-ला निर्वा  
२९७: ६.

आनन्द-युत-ता:सार २७३:३.

आनन्द-योगि(न>)नी-०नि  
व ४३६: १९.

आनन्द-योग्यता-ताम् सार  
२४६: १५.

आनन्द-रति-ति: ते ४, ५.

आनन्द-रमणा(ण-आ)नन्द-रू-  
(प>)पा-पाम् सार २३८: १७.

आनन्द-रस-स: सार २२०:  
१३; २३९: ८; २९०: ११; -सम्  
सार २७३: १४; -सा:सार २२०:

१३; -सेन सार २६६: २.

आनन्दरस-दायिन्-यिने

सार २४६: २३.

आनन्दरस-निमग्न-मा:

सार २७९: १७.

आनन्दरस-निर्भर-रै:

त्रिवि ६, २१; सि २, २.

आनन्दरस-प्रवाह-है:

त्रिवि ६, १८; सि २, ८.

आनन्द-रसिक-कम् सार

२५८: १२.

आनन्दरसिक-शि(रस्>)-

रो-मणि-मोहन-नेन सार

२४४: ८.

आनन्द-रूप, पा-प: राउ ३, १;

वृउ २, ११; ते ६, ५९; वरा ३,

३; वउ १, १७; २, २९; -पम्

सुं २, २, ७; सार २५२: ७; वउ

३, २९; -पा नि ३२; अज ५,

८३; -पा: प्र २, १०; सार २९०:

६; -पे सार २९२: ९; -पेषु सार

२२०: १४.

आनन्दरूप-तस्(>) आबो

१६.

आनन्द-वत्-वान् मैत्रि ६,

१३; ते ३, २७; वउ ६, ५३.

आनन्द-वन-ने निर्वा २९८: ३.

आनन्दवन-विभूषि(त>)-

ता-ता त्रिवि ५, १४; ७, २४;

सि १, १२.

आनन्द-वारि-संप्रदाय-य: म

४८: १७.

आनन्द-विग्रह-ह: ते ३, २६.

आनन्द-विभूति-पुरुष-पान

त्रिवि ७, १.

आनन्द-विहार-सर्व(स्व<sup>b</sup>)-

प्रदायिन्-यिभ्याम् सार

२४८: २.

आनन्द-वेदिका-का त्रिवि ५,

१४; सि १, १२.

आनन्दवेदी<sup>c</sup>-०दि व

४३७: ७.

आनन्द-व्यूह-मध्य-ध्ये

त्रिवि ७, २१.

आनन्द-शालिन्-लिने सार

२४७: ७.

आनन्द-संवलि(त>)ता-तया

सार २९०: ११.

आनन्द-समुद्र-द्रान्त्रिवि ७, १.

आनन्दसमुद्र-मग्न-मा: मं

२, ५, ३.

a) 'मया:' इति तैआ १०, ५७, १। b) सुपा. यथाकोष्ठपूर्ति सुश्रोत्र:। c) नैप्र. इआ->ई- इति विपरिणाम: (तु. वैप १, ५८८b)।

आनन्द-साकार- -रः त्रिवि २,  
६; १०.

आनन्द-सागर-नित्य-वृत्त-  
-साः सि ५, २०.

आनन्द-सुख-समृद्धि-सिद्धि-  
-द्वयः सार २५४ : १५.

आनन्द-स्थान- -नम् सार २५९ :  
२०; २१.

आनन्द-स्यन्दि(न् >)नी- नी  
महा ४, ६१.

आनन्द-स्वरूप- -पः ध्या  
९३, १५.

आनन्दस्वरूपिन्- -पिणे  
सार २७७ : ९.

आनन्दा(न्द-आ)त्मक- -कः सार  
२९० : ११; -कम् सार २४० :  
१२.

आनन्दात्मक-पुरुषो(ष-उ)-  
त्तम- -मः सार २३८ : १६.

आनन्दा(न्द-आ)त्मन्- -त्मा ते  
४, ३६.

आनन्दा(न्द-आ)दि- -दयः ब्रह्म  
३, ३, ११.

आनन्दादि-विहीना(न-आ)-  
त्मन्- -त्मा ते ४, ६९.

आनन्दाद्यु(दि-ऋ)षि- -षयः  
सौ १, १.

आनन्दा(न्द-अ)नानन्द- -न्दाः  
दे १.

आनन्दा(न्द-अप् >)ब्-धि-  
-विधः मैत्रे १, ४, ११.

आनन्दा(न्द-अ)भिव्यक्ति-  
-क्तिः सांसू ५, ७४.

आनन्दा(न्द-अ)मृत- -तम्  
राउ ४, ३; -तेन वृत्त ३, १०.

आनन्दाद्युत-कल्लोला-  
(ल-अ)न(न्-अ)न्त-पुष्प-  
-न्यैः सि ६, १९.

आनन्दाद्युत-मय- -न्यैः त्रिवि  
६, २१; सि २, ३.

आनन्दाद्युत-रूप- -पः ब्रवि  
९२; -पम् वृत्त ३, ९.

आनन्दा(न्द-आ)विर्भाव- -वः  
जाद ६, ३५.

आनन्दा(न्द-आ)विर्भाव- -वेन  
सार २५२ : २३.

आनन्दा(न्द-आ)वेश- -शेन  
सार २५९ : २०.

आनन्दिन्- -न्दिनः छां ७, १०,  
१; -न्दी तै २, ७, १; वृ १, ५,  
१९; मैत्रि ६, ३३.

आनन्दे(न्द-ई)श्वर- -राय व  
४६३ : १४.

आनन्दै(न्द-ए)क-वना-  
(न-आ)का(र >)रा- -रा अञ  
५, ८४; ८८.

आनन्दै(न्द-ए)क-रूप- -पम्  
गोच ६९ : १५.

आनन्दै(न्द-ए)का(क-अ)न्त-  
शील-

आनन्दैकान्तशील-स्व-  
-त्वात् अञ २, १४.

आनन्दो(न्द-उ)त्सर्ग-

आनन्दोत्सर्ग-क- -कौ भव  
२, १९.

आ-नन्दन- -नम् त्रि ४; -ने गर्भ १<sup>b</sup>.

आ-नन्दयितव्य- -व्यम् प्र ४, ८;  
सुबा ५; ६; ९<sup>c</sup>; -न्ये सुबा ५.

आ-नन्दयितृ- -ता मै ५, ७; मैत्रि  
६, ७.

आ-नन्दि(त >)ता- -ता १ संन्या  
२, ५७.

आनभिम्लात- अनभिम्लात- द.

आ/नम्

आ-नत- -तान् शि ६, १७३.

आनर्थक्य- अनर्थक- द.

आनशान- ✓अश् (व्याप्तौ) द.  
आ/नह्

आ-नह- -हम् छाग २५:८.

आ/नी, आनयति सार २६६ : २;

आनयन्ति छां ६, १६, १; आनय

व ४२९ : ८; १३; १७; २२;

४३० : ५; १०; ४३५ : ५;

आनयत् ऐ २, २<sup>c</sup>; ३; आनयेत्

शि ७, २७; काम ९.

आ-नीत- -तः छां ६, १४, १; -तम्  
१ संन्या २, ७०.

आ-नीय छां ६, १४, १; शां १, ७,  
४७; महा २, २८; अक्षि ८; भ

२, २८; ऊ ६३:४; सार २८३:

६; शि ५, ९; ३०; ६, १४३;

१५४; २४८; २५१; ७, ७१;

कालि ४०३ : ३.

आनुपूर्व्य- अनु-पूर्व- द.

आनुभविक- अनु✓भू द.

आनुमानिक- अनु✓मा(माने) द.

आनुश्रविक- अनु✓श्रु द.

आनुषक्- अनु✓षञ्ज द.

आनुष्टुभ- अनु✓ष्टुम् द.

\*आनुष्य- अन्वृण- द.

आनुशंस्य- अन्वृशंस- द.

आ(आ-अ)न्त- -न्तम् निरु २, ८.

आन्तर- अन्तर- द.

आन्तरिक्ष्य- अन्तरि<sup>c</sup>क्ष- द.

आन्दोल<sup>d</sup>-

✓आन्दोलि, आन्दोलयति महा ४,  
११३.

आन्ध्य- \*अन्✓धा द.

✓आप्, >२आपि, ईप्स्, आप्सोति क

१, ३, ७-९; २, १, १०; मां ९; तै १,

६, २<sup>c</sup>; २, १, १; छां १, ४, ४; ७; ८;

२, १०, ५; ६; ७, १०, २; २६, २;

८, १, ४; ७, १-३; १२, ६; वृ १, २,

७; ४, १७; ४, ४, १९; कौ १, ७९<sup>d</sup>;

a) समाहारे द्रस. । यद्वा कस. वा बस. वा । b) 'आनन्दः' इति अज्या. । c) तु. नभा. हंडोला । d) 'आ-  
मोषि' इति आन., वे., शांशा ३, ७ च ।



३,२;४;६;१०; मै ३,५; मैत्रि  
३,५;७,११; कै २,५; मना २,  
१५<sup>१०</sup>; ७९<sup>१०</sup>; ८०<sup>१०</sup>; अना ३०;  
नृपू ३,३; नृउ २,५; ८,५; छ १,  
१७; आबो १; योचू ८९; १०५;  
११०; रापू ५,८; शां ३,१; महा  
४, ३१; योशि १, ४५; १२८;  
अन्न १, ३९; २, १९<sup>१०</sup>; ४, २;  
१अव ७; त्रिता ३, ३६; ४, ८;  
दे ३; कर ९; यो २, ८; ९; भ  
२, १२; २०; जाद ६, १९; वरा  
३, २६; शा ३०; सु १, १, १९;  
२प्र ३५: ६; गोच ६७: १३;  
सार २९१: १०; सु २९४: २;  
बि १; १४; २०; शि २, २२;  
६, ५८; १५८; २१९; २२०; ७,  
१२३; स ३७९: २०; कालि  
४०१: १; ४०२: १९; पो ४२१:  
१; रा ४२३: १०; १६<sup>३</sup>; १७;  
१८; ४२४: १०; ११; १४; १६<sup>३</sup>;  
१८; ४२५: ३; ६; ८; ९; ११;  
१३; १७; व ४६५: १५; श्या  
१; तारा ८३: १; भव १, ४२;  
२, १२; ४, ८; पित्र ३, ६; वउ  
४, १; सांका ६८; गी २, ७०;  
३, १९; ४, २१; ५, १२; १८,  
४७; ५०<sup>०</sup>; आप्नुवन्ति तै २, २,  
१; वउ ३, ५; गी ८, १५; आमोषि  
अन्न ४, ७६; आमोमि महा २,  
३५<sup>१</sup>; आप्नुवत् वृ १, ५, २३;  
आमोतु शि ६, १५७; आप्नुहि

सु २, २, ४; आमोत् वृ १, ५,  
२१<sup>३</sup>; आप्नुवन् ई ४; गोपू  
४८९<sup>६</sup>; आप्नुयात् क १, २, २४;  
वृ ५, १४, ६<sup>३</sup>; मैत्रे २, ४; १६;  
१योत ८७; नाप ३, ११; ९,  
१९; त्रित्रा २, १५; स्क १२;  
वा ३०; महा २, ३७; ४, ६९;  
५, १६४; योशि १, १४१; ५,  
४७; ५१; १संन्या २, ९६; अव्य  
७; अक्षि ४०; रुजा २, १६;  
जाद ६, २६; कलि ३; सु १, १,  
१९; इ १४: १६; गा २०; २१;  
शि २, ३१; ४, २९; ४०; ५, २६;  
४३; ६, २२; ३३; ४६; ७१; ९३;  
१०९; १२६; १७६; १९४; २०२;  
२२३; २२४; ७, ९८; काम १२;  
२२; वपू २, २; आप्नुयु: वि  
२२; आप्नुयाम् गी ३, २.  
आप्स्यसि महा ६, ७८; आप:  
क १, २, ९.  
आप्स्यते योशि १, ४९.  
आप्स्यत: छां १, १, ६.  
आपीपिपत्<sup>h</sup> वृ ४, ५, १४.  
आपन<sup>१</sup>—  
?आपनेया<sup>१</sup>—या क १, २, ९.  
आपयितृ—ता छां १, १, ७.  
आपस्<sup>k</sup>—  
आ(पस् >)पो-गण—  
आपोगणा(ण-अ)पाय—ये  
वरा ५, ४.  
आ(पस् >)पो-मय—य: छां ६,

५, ४; ६, ५; ७, १; ६; वृ ४, ४, ५;  
-यस् २प्र ३७: २.  
१आपि<sup>१</sup>—पे: १प्र ३५: ६.  
२आपि<sup>m</sup>—पि: बा १३; -पे: व  
४६०: १०९<sup>n</sup>.  
आस—सस् वृ ३, १, ३-५; अन्न  
४, ९२.  
आस-काम—म: वृ ४, ४, ६; श्वे  
१, ११; नृउ ५, १-३; सुबा १३;  
-मस् वृ ४, ३, २१; -मस्य गौ १,  
९; -मा: सुं ३, १, ६.  
आस-तम—म: नृउ ५, १; ३.  
आसतमा(म-अ)र्थ—र्थ: नृउ  
५, १.  
आस-बन्धु—  
आसबन्धु-वत् १संन्या २, ३४  
आस-बन्धु-वर्ग—गम् पप  
४१८: ७.  
आस-यौव(न>)ना—ना सार  
२८५: १६.  
आस-वचन—नम् सांका ४, ५.  
आस-श्रुति—ति: सांका ५.  
आसा(स-अ)गम—मात्  
सांका ६.  
आसो(स-उ)पदेश—श: सांस  
१, १०१.  
आसोपदेश-गम्य—म्य:  
ब्रवि ३३.  
आसवत्—वान् महा २, २०.  
आसव्य—व्यस् क २, १, ११.  
१आसि<sup>१</sup>—?सि: २प्र ३५: ५.

a) तैत्र्या १०, १६ । b) तैत्र्या १०, ६३, १ । c) तैत्र्या १०, ६४, १ । d) 'आयाति' इति अज्या. संदि. ।  
e) 'प्राप्नोति' इति SCHR. [वैतु. बे. (NIA. २, २३१)] । f) 'आप्नोति' इति अज्या. । g) मा ४०, ४ । h) तु.  
रामा.; वैतु. शं. <आ/पादि(<√पद्) । यनि. पीकारो वृथाऽऽपन्नः द्र. । i) नाउ. टि. द्र. । j) पदस्वरूपं प्रति  
संदेहः । एकमेव पदमिति कृत्वा (√आप्>) आपनीय— इतीव कृत्यान्तरमितीव रामा., MW., पक्षे शं. च (यः पक्षा-  
न्तरे <आ(अ-अ)प/नी इत्येवमप्याह) । PW. तु √आप्> आपन— (=नापू. भाप.) > तद्धित इतीव विशेषमाद-  
ध्यात् । वस्तुतस्तु आपने (भवतीति शषः) इति च या (=मतिः) इति च कृत्वा पृथगेव द्वे पदे द्र. । तथा हि द्वितीये पादे  
स्वारस्यविशेषाधानदर्शनात् । k) असुन् प्र. (तु. वाच.; वैतु. PW. प्रमृ. सकृत्मात्रे सति अप्— इत्यत्राऽस्य मूलमन्वे-  
षुकाः सन्तः मौस्थि. चिन्त्याः) । l) =√आप् । m) व्यु. वैपश् यद्र. । n) ऋ १०, ८३, ६ । o) 'आप्नुयात्' इति  
अज्या. । p) 'सेः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।

२आसि-सिम् क १,२,११; वृ ३,  
१,३-५; से: मां९; वृ २,५.  
आसि-सामान्य-न्यम् गौ १,  
१९.

आप्तुम् मैत्रे २,२०; गी ५,६; १२,९.  
आप्त्वा ऐ ४,६; ५,४; वृ १,५,२१;  
मैत्रि ४,३; आबो १.

आप्नोति<sup>a</sup>-ति: २प्र ३५: १२.

आप्य<sup>b</sup> क १,२,१३; द २०.

आप्य-प्यम् वृ ५,१४,६.

ईप्सित,ता-तम् महा २, २९;  
अव्य ३; सार २२७: २१; -ता:  
भव ४,२.

ईप्सिता(त-अ)नीप्सित-ते  
महा २,४६; ६,४८.

आप-✓अप् द.

आ✓पत्,>पाति,आपतेत् ते ५,२३.

आपातयेत् क १<sup>c</sup>; कथु २,२<sup>c</sup>.

आ-पतत्-तत्सु महा २,४३; ६,  
४७.

आ✓पद्,>पादि,आपद्यते क १,२,  
६; मै ३, १; २; मैत्रि ३, १; २<sup>c</sup>;  
त्रिता १,५३; ३, १५; सार २१९:  
३; २२०: ३; २४३: २०; २४४:  
६; २५४: १८; २७६: १०; ११;  
२७९: १२; २८३: २०; २९१:  
५; आपद्यन्ते वृ ६,२,२०; आर्षे  
७: १७; सार २२८: २०; २२९:  
६; २३९: १७; २४९: १६;  
२५६: १७; २७९: ५; २८३: ७;  
२९०: १६; २९१: २३; आपद्यथ  
प्र २,३; आपद्यस्व सार २८६: ३;  
आपद्यत सार २४३: १०, आ-  
पद्यन्त सार २४६: १६; १८; १९;  
२४८: २२; २५४: ११; आपद्येत  
सार २३६: ११; आपद्येरन् छां  
५,१०,७<sup>d</sup>.

आपेदे २प्र ३२: २; ३६: ६; सार  
२६०: १७; २०; २८९: १२;  
आपेदिरे सार २७५: ७; ८; आ-  
पेदु: सार २५१: ६.

आपादयति पत्र १.

आपाद्यते त्रिवि २,१३<sup>d</sup>.

आ-पद्-पत् मैत्रे १,४,१२; महा  
२, ५५; ३, १६; अन्न ४, १३;  
-पत्सु १संन्या २,९२; -पद: महा  
३, ५३; भव १, १४; १८; -पदाम्  
वृजा १, १; भव १, २६; -पदि  
महा ४, १८; १संन्या २, ७४;  
भव १, १७.

आप(द>)त्-करञ-परञ्चु-

-शुम् अन्न २, ४१.

आप(द>)त्-काल-ले शि ४,  
६६.

आपञ्चि(द-नि)वारण-णाय रार  
२, ६६.

आ-पद्यमान,ना-न: सार २१९:  
५; २३९: ११; २७६: ५; -नम्  
सार २३८: २३; २४६: ५; -ना:  
सार २६५: १५; २७३: १५;  
२७८: १३; २७९: ९; १०;  
-नानि सार २८०: २३.

आ-पन्न,ञा-ञ: सार २३६: १३;  
१५; २७५: १६; -ञम् योशि १,  
१६५; सार २२१: १; २२७: १३;  
गी ७, २४; -ञा सार २२९:  
२३; -ञा: सार २३३: ५; २३६:  
१७; २३९: २२; गी १६, २०.

आपन्न-भाव-वा: सार  
२५१: ८.

आ-पाद्य पत्र २<sup>e</sup>; तुरी १३.

आपन-, आपनेया-✓आप् द.

आ✓पम्<sup>o</sup>

आ-पान्त-

आपान्त-मन्यु-न्यु: मना  
१, ९९<sup>f</sup>.

आपयित्-, आपस्-✓आप् द.

आ-पाण्डुर-र: अना ३८<sup>g</sup>.

आ-पाद-तल-लम् पित्र १, ९.

आ-पाद-तल-मस्तक-कम् मना  
२, १३, २१<sup>h</sup>; वृजा ३, ३२; ४, १;  
योचू ५६; जाद ७, ११.

आ-पाद-मस्तक-कम् पै २, ३६;  
महा ६, ५५.

आ-पाद-शीर्ष-वैम् म १, ५.

✓१आपि अधी (धि✓ई) द.

✓२आपि, १, २आपि-✓आप् द.

आ✓पिष्

आ-पेषम् वृ २, १, १५.

आ✓पीङ्

आ-पीङ्गमान-न: गर्भे ४<sup>i</sup>.

आपीपिपत् ✓आप् द.

आ✓पृ>पूर, आ<sup>\*\*\*</sup>पूर्यते वृ १, ५,  
१४; १५.

आ-पूरण-णम् जाद ६, १२.

आ-पूरित-तेन शि ४, ५१.

आ-पूर्ण-णम् मैत्रे २, २५.

आ-पूर्य ध्या २०; ९३; योचू ६६;  
१योत ३८; ३९; ४१<sup>j</sup>; ४२<sup>j</sup>;  
त्रिआ २, ९६; शां १, ५<sup>k</sup>; ६; १, ७,  
१<sup>k</sup>; ४३<sup>k</sup>; महा ५, १७९; योशि  
१, १२०; जाद ५, ९; ६, ७; ९;  
वरा ५, ७३; सौ २, ३; गी ११,  
३०.

आ-पूर्यमाण-णम् १अव ७; गी  
२, ७०.

आपूर्यमाण-पक्ष-क्षम् छां ४,  
१५, ५; ५, १०, १; वृ ६, २, १५;

-क्षस्य वृ ६, ३, १; -क्षात् छां ४,  
१५, ५; ५, १०, १; वृ ६, २, १५.

आपेक्षिक-अपे(प✓ई)द् द.

a) तु. टि. अवति-। b) असमासेऽपि ल्यप् उंसं. (पा ७, १, ३७)। c) प्लुतो भवति। d) 'आपद्यते'  
इति अच्चा. संदि., 'आपद्येत' इति निसा. च। e) तु. वैपश् यस्या.। f) ऋ १०, ८९, ५। g) °ण्डुरः इति आन.।  
h) 'कः' इति निसा. गुपा. यनि. सु-शोधः (तु. तैआ १०, ११, २)। i) परिपी° इति अच्चा.। j) 'आरोप्य' इति निसा.।

आपोगण-आपोमय-, आपोमात्र-,  
आस-, आसव्य-, १,२असि-,  
आप्नुम्, आप्त्वा, आपोति-,  
आप्य, आप्य- / आप् द.

आ/प्यै, >प्यायि, आप्यायते गर्भे ३:  
कौ १,२; आप्यायन्तु के छां आरु  
मै मैत्रे योचू वा महा १संन्या अव्य  
कुं सावि रुजा जाद जावा शां<sup>१</sup>९<sup>a</sup>;  
मु १,२,४९<sup>a</sup>; आप्यायस्व वृ ६,  
२,१६; मना २,७०<sup>५</sup>९<sup>b</sup>; ७४९<sup>c</sup>;  
कौ २,८९<sup>d</sup>; व ४३७: ८९<sup>d</sup>.  
आप्याययति अन्न ५, २९;  
आप्याययन्ति कौ २,८; आप्या-  
ययस्व कौ २,८<sup>e</sup>; आप्याययन्  
२प्र ३६:१४; आप्याययिष्यसि  
शौ ५१:११.

१आ-प्यायन- -न: वरा ५,६९.

२आ-प्यायन-

आप्यायन-व(त् >)ती- -ती मै  
५,५; मैत्रि ६,५.

आ-प्रलय- -यम् शि ६,९७.

आ/प्लु, >प्लावि, आल्लवस्व अरु  
७९<sup>f</sup>.

आ-प्लावित- -तम् वृजा २,१२.

आ-प्लाव्य<sup>h</sup> वउ ६,२५.

आ-प्लुत्य वृ ६,४,१३.

आ/बन्ध

आ-बद्ध- -द्धा: वृ ३,१,१.

आबद्ध-वितान- -ने रार २,४४.

आ-बद्धय नृउ ६,५; शि ६,१५०.

आबल्य- अ-बल- द्र.

आ-ब्रह्म- -ह्य राउ ५,२५.

!आब्रह्म-शास्त्र- -स्त्रा: मै ५,४.

आ-ब्रह्म-स्तम्ब-

आब्रह्मस्तम्ब-पर्ये(रि-अ)न्त-

-न्तम् गु २३; सांस् ३,४७.

आ-ब्रह्म-स्थावर-

आब्रह्मस्थावरा(र-अ)न्त- -न्तम्  
मवा ४.

आ/भज्, आभजन्ति शौ ५१:१०;

आभजामि ऐ २, ५; आभजस्व  
वृ १,३,१८.

आ/भा, आभाति त्रिवि ६,१८<sup>g</sup>; १९;

२०; २२; ७,२; १०; ११; योशि  
४, १८; २०; सर ३, १२; १प्र  
३१: ११; सि ५, १; सार २३९:  
२१<sup>१</sup>; आभामि ते ३, १७; १८.

आ/भाष्

आ-भाष्य पी ४२२: १; सुसु ३.

आ/भास्

आ-भास- -स: पाशु २, २४<sup>१</sup>; ब्रस् २,

३, ५०; -सस्य गौ ४, ५०; -सा:

गौ ४, ४९; ५१; -सेन नृउ ९, ५.

आभास-ब्राह्मण- -णस्य पत्र २.

आभास-मात्र- -त्रम् अन्न ५,

३३; सांस् ४, ३०.

आभास-मात्रक- -कम् अन्न ५,

३४.

आ-भास्वर- -रम् महा ४, ९.

आभिमुख्य- अभि-मुख- द्र.

आ/भू, आभवन्ति छां ६, ९, ३; १०,

२; आभवेत् वृ ३, ९, २८, ६.

आबभूव व ४६०: २२९<sup>k</sup>.

आ-भु- -भु: नी २, १३९<sup>l</sup>.

आ-भूति- -ति: -ते: ९<sup>m</sup> वृ २, ६, ३;

४, ६, ३; -त्या व ४६१: १९<sup>m</sup>.

आ-भूत-संभव- -वम् शि ४, २७;

५३; ६, २२७.

आ-भू-मण्डल- -लम् गोपू १८.

आ/भू, आभर > रा नी २, ११९<sup>n</sup>;

व ४६०: ४९<sup>o</sup>; आभरत् ध्वे

२, १<sup>n</sup>.

आ-भरण- -णानि गोउ ६२<sup>p</sup>.

आभरण-रचि(त>)ता- -ता

सार २४४: १७.

आ-भृत- -तम् कौ १, २.

आभ्यन्तर- अभ्यन्तर- द्र.

आम् २प्र ३५, २०<sup>r</sup>.

आम<sup>s</sup>- -म: सु २९३: १८९<sup>t</sup>.

आम-वटा(ट-अ)म्बु-

आमवटाम्बु-वत् शा ३६.

आम-पात्र- -त्रे वृ ६, ४, १२.

आ/मन्, आमंसि, आमंहि वृ ६, ३, ५.

आ/मन्त्रि(<मन्त्र-)

\*आ-मन्त्रया-

\*आमन्त्रयां/कृ, आमन्त्रयांचक्रे

छां ४, ४, १; वृ २, १, १५; कौ

४, १८.

आ-मन्त्रित- -त: वृ १, ४, १.

आमय<sup>u</sup>- -यै: मैत्रि ३, ४.

आ-मरण- -णम् पित्र ५, १.

आ-मरणा(ण-अ)न्तिक- -कम् शा

१२; जाद ७, ३.

आमलक<sup>v</sup>- -के छां ७, ३, १.

आमलकी- -क्या: शि ६, २१.

आ-महा-प्रलय- -यम् शि ६, ९३.

आ-मानव-

आमानवा(व-अ)न्त- -न्तम् म २,

१४.

a) पाठ ३, १५, २३ । b) तैश्चा १०, ३६, १ । c) तैश्चा १०, ३७, १ । d) ऋ १, ९१, १६ । e) 'आप्याय-  
यिष्ठाः' इति अत्र्या. आन. च । f) कर्तरि कृदिति कृत्वा नाउ. भावे कृतः पृथक् द्र. । g) तैश्चा १, २७, १ । h) 'महा'  
इति मुपा. । i) पा. ? 'वा आ-' इति मुपा. 'त्रिपाद् ब्रह्म शास्त्राः' इत्येवं सु-शोधः (तु. मैत्रि ६, ४) । j) 'से' इति मुपा. यनि.  
सु-शोधः । k) 'आबभूव' इति ऋ १०, ८४, ५ । l) मा १६, १० । 'शिवः' इति आन. । m) ऋ १०, ८४, ६ । n) विशिष्ट  
इह मा १६, १३ पा. । 'आभव' इति JC. । o) ऋ १०, ८३, ३ । p) 'आभरत्' इति आन. । q) 'अवधारणाः' इति  
आन. । r) तु. टि. ?अम्बु- । s) व्यु. वैप १ यद्र. । t) ऋ ९, ८३, १ । u) व्यु. ? आद्य आकारस्तीक्ष्णीभावरूप-  
हिंसावृत्ते: / \*अर (तु. वैप १, ३९७p) इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः स्यात् (तु. टि. आन्न-; वैतु. वाच. <आ/मल् इति) ।



## आ/मुद्

आ-मोद- -दः महा ५, १०७.

आमोद-गन्ध-लुब्ध- -ब्धाः

सार २५४:३.

आमोद-मदिरो(रा-उ)न्मत्त-

-त्तम् मै ४, २.

आमोदा(द-आ)नन्दा(द-आ)-

सन-दान- -नम् भा ३०<sup>a</sup>.

आमुष्मिक- अदस्- द.

आ-मोक्ष- -क्षम् भ १, १.

आ/स्ना, &gt; मन्, आमनन्ति क १,

२, १५; सूता १, ५; गु ३९; ब्रसू

१, २, ३२.

आ-झाय- -याः १ कौल ४:१; -यात्

गौ ३, २४.

आझाय-मस्तक- -कम् १ अव

२४.

आम्भृणी- अम्भिणी- टि. द.

आम्ब<sup>b</sup>- -म्ब वृ ४, ३, ३६.

आम्ब-कदम्ब-कदली-चम्पका(क-अ)-

शोक-पुञ्जाग-रोध-मन्दार-पारि-

जात-कल्पक-नीप-नीरवट-न्य-

ग्रोधो(ध-उ)दुम्बर-जम्बूवृक्ष-स-

रल-शिमुपा-खदिर-वकुल-पि-

प्पल-इलेष्मातक-बदरी-ताल-

तालीवनमधुरशाखा-लवङ्गै-

(ङ-ए)ला-जाती-त्वक्-पूग-नालि-

केर-मातुलुङ्ग-कमुक-कण्टकिन्-

-किनः सार २६७:१०.

आम्ब-फल- -लम् शि ६, ६.

आम्ब-मञ्जरि-संयुत- -तम् शि ६,

८८.

आम्ब-वृक्ष- -क्षाः सार

२८०:१.

आ/यज्, <sup>f</sup>आयजस्व मना २, १; व

४६१:१७.

## आ/यत्

आ-यतन- -नम् के ४, ८; क १, १,

२३; प्र १, १०; ऐ २, १; छां ५,

१, ५<sup>३</sup>; १४<sup>३</sup>; ६, ८, २<sup>३</sup>; वृ ३, ९,१०-१७; ४, १, २<sup>३</sup>-६<sup>३</sup>; ७<sup>३</sup>; ६, १,५<sup>३</sup>; १४<sup>३</sup>; कै १, १६; मना २,१३, २९<sup>d</sup>; ब्र ३, १२; कौ १, ३;

५; लु ७; शि १, २४; ३७; २,

२०; गार ४०६:१०; -नानि छां

७, २४, २; वृ ३, ९, २६; शि २,

२१; ५, ३७; गार ४०६:१४;

-नाय छां ५, २, ५; वृ ६, ३, २;

-ने शि २, २०; ७, ७५; -नेन प्र

५, २; ७.

आयतन-वत्- -वतः छां ४, ८,

४; -वान् छां ४, ८, ३; ४<sup>३</sup>.

आयतना(न-आ)दि- -दिभ्यः

ब्रसू ३, ३, ३९.

आ-यत्त, त्ता- -त्तः मै ५, ६; -त्ता वृ

१, ५, ३.

आ-यत्- ए (आ/इ) द.

आ/यम् (दैर्घ्ये)

आ-यत्, ता- -तः गौ ४, ५६; गोच

६८:४; -तम् वृ ४, ३, १४<sup>०</sup>; त्रिब्रा

२, ५८; वरा ५, २१; नार ८; -ता

त्रिब्रा २, ७३; -ते त्रिब्रा २, ९१.

आयत्त-प्राण- -णः अना ११;

योशि ६, ७.

आ-यति- तिस्र प्र ३, १२.

आ-यमन- -नम् छां १, ३, ५.

आ-यम्य मुं २, २, ३; मुद्र ४; सूता

१, २५.

आ-याम- -मः यो १, १९९<sup>१५</sup>; -मम्

शि २, १०; -मात् शि ३, ६.

आयाम-विस्तार- -रम् जाद ४,

४; शि ४, २३.

आयाम-शब्दा(ब्द-आ)दि-

दिभ्यः ब्रसू ३, २, ३७.

आयामो(म-उ)द्वर्तन-क्रिया-

-याः शि ७, १९.

## आ/यस्

आ-यस्त- -स्तः छां ५, ३, ४.

आ-यास-

आयास-कारण- -णम् महा ३,

१०.

आयास-साध्य- -ध्यैः रार २,

३८.

आयसी-, आयस्थूण- ✓\*अय् द.

आ/या, आयाति प्र ३, १; ३; १०; वृ

४, ३, ३७<sup>३</sup>; लु ११; ध्या ९०;महा २, ३०; ३, २४; २६<sup>३</sup>; ५१;

५, १०२; १२७; १८०; योशि १,

३०; १३५; १६२; १संन्या २,

३५; अज २, ३२; ५, ९८<sup>३</sup>; वरा

५, ४; मु २, २, १७; अवि ४;

आयान्ति मन्त्रि २०; ते १, ४०;

४६; त्रिवि ५, ७; रार २, ३५;

महा ३, ५३<sup>३</sup>; ४, १८; सिशि

३८२:८; आयासि अज ५, ७;

आयातु मना २, ३४९<sup>३</sup>; १संन्या

२, ३५; अज १, ३९; आयान्तु

सार २४१:१८; आयाहि २प्र

३६:२१९<sup>६</sup>; आयात् मुं १, २,

१२.

आ-यात्- -यान्तम् वृ ४, ३, ३७;

रार २, ८५; शि ७, १७.

आ-यात्, ता- -ता महा ३, ६; -ते

योशि १, १६३; अजि ३१; वरा

४, १२.

आ-यै<sup>b</sup> छां ७, ९, १<sup>१</sup>.

## आ/युज्

आ-युक्त- -क्ताः तै १, ११, ४<sup>२</sup>.

a) 'सनम् दानम्' इति अज्या. । b) व्यु. ? आद्य आकारस्तैर्जायवृत्ते: ✓\*अय् (तु. टि. आमलक-) इत्यतः नैप्र. विपरिणतः द्र. [वैतु. पाठ. (२, १६) < ✓अम् इति, ww. (१, १७९) < अम- इति च] । c) ऋ ८, ११, १० । d) तैश्चा १०, ११, २ । e) वा. क्रिवि. भवति । 'आयतनम्'. इति निसा. । f) तैश्चा १०, २६, १ । g) ऋ ६, १६, १० । h) तु. वैप १, ४६०e । i) 'आये' इति निसा., 'आयी' इति jc. ।

आ/युध्

आ-युध् - धम् १ संन्या २, ८८;  
-धा व ४६० : १४९<sup>०</sup>; -धानाम्  
शि २, १९; गी १०, २८; -धानि  
सु २९४ : ५९<sup>०</sup>; -धाय नी २,  
६९<sup>०</sup>; -धे शि ६, २४४.

आयुध-प्रभाव-

आयुधप्रभाव-तस्(&gt;)हे३.

आयुधिन- -धी इ १७ : ७.

आयुस्- -युः प्र सुं मां शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; ऐ ३,  
१०<sup>०</sup>; तै २, ११<sup>०</sup>; छां २, ११-२०,  
२; ३, १६, ६; ४, ११-१३, २; वृ  
२, १, १०; १२; ४, ४, १६; ६, ४,  
१४-१८; ना ३; मना २, ३६९<sup>०</sup>;  
५१९<sup>०</sup>; व १; कौ ३, २<sup>०</sup>; अशि  
शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; १, ११; अ शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; मैत्रि  
५, १; वृजा शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; वृषू शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;  
२, १५९<sup>०</sup>; नाप शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; ३, ६१;  
२ संन्या १७ : ७९<sup>०</sup>; सी श त्रिवि  
रार राप् शां पप अच आ पाशु  
पत्र शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; त्रिवा २, १०४; १११;  
मुद्र २; महा ३, १०; सू शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;  
२४९<sup>०</sup>; अक्षि १६; देवी भा शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;  
त्रिता शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; ४, २४; अ शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>;  
१, ११; ग मवा शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; प्रा १,  
३; गोपू क ह दत्ता गरु अवि पहं  
शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; आषे ८ : ४; १८; २१;  
९ : ७; ९; पि १३; गोच ६७ :  
१७; पा ४, ३; ७, १; कृपु १६<sup>०</sup>;  
शि १, ६; ६, १६४; कालि ४०२ :  
१; सि शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; ९<sup>०</sup> व ४३५ : १४;  
४४१ : १; ४४६ : ६; ४५१ :

३; ४५४ : १०; अरु २३९<sup>०</sup>;  
पित्र शां<sup>१</sup>९<sup>०</sup>; भव ४, २; -युषः छां  
२, २४, ६; १०; १५; कौ २, ११;  
-युषा अशि १, ११; नाप ४,  
३८९<sup>०</sup>; रशिसं २३; -युषि श्वे  
४, २२९<sup>०</sup>; मना २, ५३९<sup>०</sup>; स्क  
९; महा ३, ११; रशिसं २९९<sup>०</sup>;  
-युषे वृषू ३, ४; त्रिता ५, २१;  
वपू २, २.

आयु(स्)>:-क्षर-कारण- -गम्  
त्रिवा २, १२८<sup>०</sup>.आयु(स्)>:-प्रज्ञा-विवर्धन->-  
नी- -नीम् व ४३३ : ५.आयु(स्)>:-सत्त्व-बला(ल-आ)-  
रोग्य-सुख-प्रीति-विवर्धन-  
-नाः गी १७, ८.आयुरा(स्)>:-र-आ)रोग्य-वर्धन-  
-नम् राप् ४, ६५.आयु(स्)>:-र-यश(स्)>:-कीर्ति-  
ज्ञानै(न-ऐ)श्वर्य-आयुर्यशःकीर्तिज्ञानैश्वर्य-वत्-  
-वान् वृषू १, ६.आयु(स्)>:-र-वेद- -दः सी ३०;  
नाप ५, ३८.आयु(स्)>:-ष्-काम- -मः सूता १,  
२२.आयुष्मत्- -ष्मन्तम् नाप ४, ३८<sup>०</sup>;  
-ष्मान् शि ३, ११.१ आयुष्य<sup>०</sup>- -ष्यम् व २; नाप ४,  
३८९<sup>०</sup>; राउ ५, २८; त्रिता ३, ३६;  
गोच ६८ : १५; रा ४२५ : १३.

आयुष्य-वत्- -वन्तः सूता १, २०.

२ आयुष्य<sup>०</sup>- -ष्यः इ १० : १३.

आ-यै आ/या द्र.

आ(आ/अ)र<sup>०</sup> (हिंसायाम्)

आ(आ-अ)र्त- -र्तः कौ ३, ३; गी  
७, १६; -र्तम् वृ ३, ४, २; ५, १;  
७, २३; आषे ७ : ९; २२; ८ : १३;  
-र्तस्य शि ६, २१९; -र्तानाम्  
शि ६, २८०; २८२; -र्ताय शि  
६, २००.

आ(आ-अ)र्ति- -र्तिम् आषे ७ : १३;  
८ : ४; २०; शौ ५१ : ५; -र्तिषु  
पा १, १०.

१ आर- -रे<sup>०</sup> नी २, १५९<sup>०</sup>.२ आर<sup>०</sup>-आर-कूट<sup>०</sup>-आरकूट-म(य)>)-यी- -यीम् शि  
६, १२०.३ आ(र)>)-रा<sup>०</sup>-

आरा(रा-अ)प्र-

आराप्र-मात्र- -त्रः श्वे ५, ८.

४ आर<sup>०</sup>- -रः कौ १, ३; -रम् कौ १, ४.

आ-र(क्र)&gt;)-क्ता- -क्ताः सार २६६ : ७.

आरक्त-नी(ल)>)-ला- -लाम् पा  
६, ७.आरक्त-मणि-स्वचित-यन्त्र-कवाट-  
स्थल-हाटक-जटित-मणि-राजि-राजमान- -नम् सार  
२६६ : १८.आरक्त-मणि-यु(न)>)-ता- -ता सार  
२७१ : १२.

आरण्य- \*अरण- द्र.

आरन्द<sup>०</sup>- -न्दः पा ५, ४<sup>०</sup>.

a) ऋ १०, ८४, १। b) ऋ ९, ९६, १९। c) मा १६, १४। d) ऋ १, ८९, ८। e) 'अज्ञायुः' इति JC.।  
f) शौ १९, ७१, १। g) तैआ ३, १५, १। h) शौ ७, ८७, २। i) ऋ १०, ३६, १४। j) 'यु' इति सुपा. यनि. सु-शोधः  
द्र.। k) ऋ १, २४, ११। l) तैआ १, २७, ३। m) तैआ २, १८, १। n) 'आयु' इति ऋ १, ११४, ८। o) इष्टायुः-  
क्षय<sup>०</sup> इति निसा. °क्षय<sup>०</sup> इति च अज्या. संटि.। p) 'ष्मन्तः' इति निसा. पा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.। q) स्वार्थे  
तद्धितः। r) पाठ २, २, १०। s) विप. भवति। t) तु. वैप १, ३९७७। u) पाप्र. अन्व. (वैप १ यद्र.। v) मा १६,  
१२। w) व्यु. ? \*अर्ध- (तु. नभा. भर्त = मिश्रितधातुविशेषः) इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः द्र.। x) तु. पंजा. भंगार  
(=नापू.। y) व्यु. ? \*अर्ध- (तु. पंजा. /षद् कर्त्तने, घोर = छिद्र) इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः द्र.। z) व्यु. ?  
हृदविशेषवाचकं सत् वैसं. भवति। a') व्यु. ? तु. आ समन्तादरं वेगं ददातीति पाटी., सस्थ. टि. आचारन्द-।

आ/रम्, >म्, आरभते गी ३, ७;

आरभन्ते सार २६३: १७; आ-

रभस्व शौ ५२: १८; आरभध्वम्

कौ १, २९<sup>a</sup>; आरभेत् नाप ५, २२.

आरभ्यते गी १८, २५.

आ-रब्ध- -ब्धम् अध्या ५३.

आरब्ध-कर्मन्- -र्मणि १अव  
१९.

आ-रभमाण- -णः का ६; नार ५.

आ-रभ्यश्चे ६, ४; अक्ष १४; जाद ५,

५; सी १४<sup>३</sup>; त्रिवि ५६; अता ५;

इ १६: १; सार २४३: १२; २८६:

१४; २८९: १३; शि ७, ६२.

आ-रम्भ- -म्भः वरा ५, ७१; ७३;

१योत २०; सांसू २, ११; सांका

५६; गी १४, १२; -म्भान् नाप

५, २२; -म्भे सी २, ६; शि ७, ९.

आरम्भ-संभ(व>)वा- -वा

१योत ६४.

आ-रम्भक- -कस्य सांसू २, २१.

आ-रम्भण-

आरम्भण-शब्दा(ब्द-आ)दि-

-दिभ्यः ब्रसू २, १, १४.

आरम्भणी(य>)या- -या मैत्रि

७, ९.

आ/रम्

आ-राम- -राम् वृ ४, ३, १४.

?आरात्रिक<sup>१b</sup>- -कम् सुसु १६.

आ/राष्, >राषि, आराधयति भव

२, ६२; आराधयन्ति गोपू १५<sup>c</sup>;

आराधयामि गोपू ४६; आ-

राधयेत् राप् ५, ७.

आराध्यते तारा ८४: १०.

आ-राधन- -नम् त्रिवा २, ३३.

\*आ-राधया-

\*आराधयाम(म्/अ)स्, आ-

राधयामासु: गोच ६९: १९.

आ-राधित, ता- -तः राउ ५, २८;

-०ते अक्ष १५.

आ-राध्य १योत ३; त्रिवि ५, १२<sup>२</sup>;

१४; ६, १०; १५; १७; २०; २१;

२३; ७, १५; अक्ष ४.

आ-राध्य- -ध्यः आबो ८; भव २,

६१.

\*आराधिक- ?आरात्रिक- टि. द.

आरिष<sup>d</sup>- -षम् शि ५, ४७; -षेण शि

५, ५०.

आ/रुज्

आ-रुजत्- -जन्तः व ४६०: १३९<sup>e</sup>.

आरुण-, आरुणेय- अरुण- द्र.

आ/रुष्, आरुषे कौ २, २९<sup>f</sup>.

आरुषे व ४६०: १८९<sup>g</sup>.

आ/रुह्, >रोपि, रुह्, आरोहति

कौ १, ५; आरोह जा ४९<sup>h</sup>; नाप

३, ७७<sup>h</sup>; ४, ३८; पप ४१८:

११९<sup>h</sup>; या १, १९<sup>h</sup>; आरोहेत् नाप

५, १.

आ-रुह्- -रुहो: गी ६, ३.

आ-रुह्य प्र ६, १; मना १, १३९<sup>i</sup>;

त्रिवि ५, १२; ७, १; योशि १,

६३; अना २; रा ४२३: १७.

आ-रुह- -हः मं २, ४, ४; शि ६,

२६१; -हा: मैत्रि ६, २९; महा

५, १७६.

आरुह-व्युत- -तम् शा २९.

आरुह-पतित-

आरुहपतिता(त-अ)पत्य-

-त्यम् १संन्या २, ३.

आ-रोप- -पात् सर ३, २०; सांसू

१, १५३.

आ-रोपित- -तस्य वरा २, ६५;

-ता: नाप ६, १४.

आरोपिता(त-अ-शेषा(ष-आ)-

भास-वस्तु-निरास-

आरोपिताशेषाभासवस्तु-

निरास-तत्स(>) अध्या २१.

आ-रोप्य नृउ १, ३; १योत ८६: ८९;

९२; ९९; त्रिवा २, ३७; १३६;

१३७; १४०; १४२; नाप ४,

३८; शां १, ७, ४९; ५०; योशि १,

७१; पप ४१८: १८; जाद ६,

२९.

आ-रोह-

आरोहा(ह-अ)वरोह- -हौ ब्रसू

३, १, १३.

आरोहावरोह-क्रम- -मेण

शां १, ८.

आ-रोहण- -णम् इ १६: १.

आ-रोहत्- -हन् सूता २, ८९<sup>j</sup>.

आरोग्य- अ-रोग- द्र.

आ(आ/अ)च्छ, आच्छति आपे ८: ४.

आर्जव- /अर्ज द्र.

आर्जकी(य>)या<sup>k</sup>- -०ये मना १,

१३९<sup>l</sup>.

आर्त- आ(आ/अ)र् द्र.

आर्तभाग-, आर्तव- /अर् द्र.

आर्ति- आ(आ/अ)र् द्र.

आर्त्त<sup>k</sup>- -र्त्तियो: नी २, ८९<sup>m</sup>.

आर्त्विज्य- /अर् द्र.

आर्द्र, दर्द्र<sup>k</sup>- -र्द्रम् वृ १, ४, ६; मना

१, १५९<sup>n</sup>; सिसि ३८०: ११;

-र्द्रै वृ ६, ३, ४; -र्द्रै: भ २, ३;

a) 'आमरध्वम्' इति आन., वे., शांत्रा १, २., JC. च। b) व्यु. ? \*भद्रार्ध->\*भद्रार्धिक->\*आरा-  
धिक- इत्यस्य नैप्र. विपरिणामस्य सतो लिपिविकारः स्यात् [=मङ्गलदीपः (वैतु. MW. <आ-रात्रि- इति कल्पकः?)]।  
c) 'रसन्ति' इति आन.। d) ऋषि->आर्ष-> यनि. छान्दसो विपरिणामः द्र.। e) ऋ १०, ८४, १। f) 'आरुध्वते'  
इति शांत्रा ४, २। g) ऋ १०, ८४, ३। h) 'आसीद' इति ऋ ३, २९, १०। i) तैश्चा १०, १, १३। j) ऋ १, ५०,  
११। k) व्यु. वैपश् यद्र.। l) ऋ १०, ७५, ५। m) 'आन्याः' इति मा १६, ९; 'राज्ञोः' इति आन.।  
n) तैश्चा १०, १, १५।



-द्रायाम् म २,२४९<sup>११</sup>; -द्रायि व ४३८:२९<sup>११</sup>.  
 अर्द्रि(र्द्र-ए)धा(अ-अ)मि- -मे: वृ २, ४, १०; ४, ५, ११; मैत्रि ६, ३२.  
 आर्य, र्या<sup>११</sup> - -०र्य नाप ८, ३; -र्य: अक्षि १०; -र्यम् व ४५९: २२९<sup>b</sup>; -र्याणाम् इ १९: २२; -र्यामि: सांका ७१.  
 आर्य-मति- -तिना सांका ७१.  
 आर्य-संमत- -त: नाप ३, ४.  
 आर्य- , आर्यभ- , आर्यभेय- , आर्यिक- , आर्येय- / ऋष् (बधा.) द.  
 आल<sup>११</sup> -  
 आल-भूषित- -तम् शि २, १४.  
 आ/लप्, >लापि, आलपेत् नाप ३, ५९; सार २३१: २२; २५०: ७.  
 आलापयिष्यथा: छां ४, २, ५.  
 आ-लाप- -प: नाप ६, ३२; -पात् सार २३४: १८.  
 आ/लभ्, आलभन्ते वृ १, २, ७<sup>d</sup>; पित्र ५, ९; १०; आलभत वृ १, २, ७.  
 आलभे २प्र ३४: १६<sup>१०</sup>.  
 आ-लभ्य शि ५, २२; ३३; वउ ६, ३; १२.  
 आ/लम्ब, आलम्बते वृ १<sup>१</sup>; आ-लम्बस्व पित्र ५, १०.  
 आ-लम्ब<sup>१</sup> -  
 आल(म्ब>)म्बी<sup>१</sup> -  
 आलम्बी-पुत्र- -त्र: वृ ६, ५, २; -त्रात् वृ ६, ५, १; २.  
 आलम्बाय(न>)नी<sup>१</sup> -  
 आलम्बायनी-पुत्र- -त्र: , -त्रात् वृ ६, ५, २.

आ-लम्बन- -नम् क १, २, १७<sup>३</sup>; गु ४०<sup>३</sup>.  
 आलम्बन-ता- -तया अध्या ३१.  
 आ-लम्ब्य महा ४, १०४; अन्न ३, १३; १७; ५, ५८; सार २८९: १०; भव २, ६०.  
 आ/लल्>लालि  
 आ-लालयत्- -यन् पा ६, ७.  
 आलवाल<sup>११</sup> - -लानि सार २३७: ३.  
 आलस्य- -अलस- द.  
 आ/ला, आलाति गोउ ३०.  
 आ/लिख्, आलिखेत् रापू ४, ४१; ४३; ४५.  
 आ-लिख्य रापू ४, ४०; ४१; ५४.  
 आ/लिङ्, आलिङ्गते पित्र ३, ६; आलिङ्गथ, आलिङ्गाम: कृ १.  
 आलिङ्गयते जाद ४, ५१<sup>१</sup>.  
 आ-लिङ्गन-  
 आलिङ्गन-चुम्बन-नमित-प्रेम-भर-रस-सुख- -खम् सार २८४: २०.  
 आलिङ्गन-चुम्बन-सुरत-सुख-संवलित-वदन- -नाय सार २५१: २१.  
 आलिङ्गन-प्रिय- -याय सार २६१: ३.  
 आ-लिङ्गित- -तम् अव्य २; -तस्य ध्या ८४; योचू ५७.  
 आ-लिङ्ग्य अन्न २, ४२; त्रिता ३, ८; वि ५.  
 आ/लिप्  
 आ-लिप्त- -सम् गोच ६६: १; वा ४.  
 आ-लिप्य वा ३०; अन्न ४.

आ/ली  
 आ-लय- -यम् वृ १; महा ५, ८५; शि ४, २१.  
 आलय-मध्य-गत- -तम् सि ६, २७.  
 आ/लोक, >लोकि, आलोकयति मैत्रि ६, २८; आलोकयामि अन्न ३, ७.  
 आ-लोक- -क: महा ५, १०७.  
 आलोक-वत्- -वान् महा ५, ८३.  
 आ-लोकन- -नम् जाद २, ४<sup>b</sup>.  
 आ-लोकयत्- -यन्तम् मैत्रि १, ४, १२.  
 आ-लोक्य शु ३, २०; वृवि ३६<sup>३</sup>; शां १, ७, १८; योशि ६, ६२; ६३; ६४<sup>३</sup>; यो ३, ५.  
 आ/लोच  
 आ-लोचन-  
 आलोचन-मात्र- -त्रम् सांका २८.  
 आ-लोच्य नाप ७; पप ४१९: ५.  
 ?आलोभस्वरितोदात्त: २प्र ३४: १६<sup>११</sup>.  
 आव<sup>\*</sup> अस्मद्- द.  
 ?आवयत: आ/वे द.  
 आ-वरण- आ/वृ(आवरणे) द.  
 आ-वर्त- , आ-वर्तन- , आ-वर्तमान- , आ-वर्त्य आ/वृत् द.  
 आ/वल्  
 आ-वलि(त>)ता- -ता १संन्या २, २९.  
 आवश्यक- अ-वश्य- द.  
 आ/वस् (निवासे), आवसेत् महा ४, २२.  
 आ-वसत्- -सन् छां ५, १०, ९.

a) व्यु. वैप १ यद. । b) ऋ १०, ८३, १ । c) व्यु.? (तु. अभा. </अल् वा आ/ला वेति, वाच. <आ/अल् इति च) । d) 'आलभन्त' इति निसा. । e) तु. सस्थ. टि. ?आलोभ<sup>१</sup> । f) 'लम्बते' इति आन. । g) व्यु.? पू. खननरूपहिंसावृत्ते: (तु. वैप १, ३९७p) / \*अर्ध इत्यतो निष्पन्नं सत् \*अर्ध->नैप्र. आल- इति खात-पर्याय: (तु. पंजा. खाल, नमा. खाडी, खाली, प्रम्.) तस्य च /वल वलने (तु. VW १, २९८) >वाल- (=वलन: ) इत्यनेन उप. सता कस. स्यात् [वैतु. अभा. वाच. (आ/ल्ल >) आलव- + आल- (<आ/ला) इति, VW १, १५७ पू. </अल् भुग्रीभावे इति?] । h) 'लोच' इति निसा. संटि. । i) यनि. मुपा. 'आलभे स्वरितोदात्त:' इत्येवं सु-शोध: (तु. गोत्रा १, १, २५) ।

आ-वसथ<sup>१</sup> -थः ऐ ३, १२<sup>३</sup>; -थाः  
ऐ ३, १२; -थान् छां ४, १, १; -थे  
१ संन्या २, १३; -थैः वृ ४, ३, ३७.  
आ/वह्, >वाहि, आवहन्ति तै १,  
५, ३; आवह तै १, ४, २; मना  
१, ५९<sup>३</sup>; २, १२, २९<sup>३</sup>; व ४५९:  
६; ४६६: १२; ९<sup>०</sup> आवहत् कुं  
९<sup>१</sup>; कृ १<sup>१</sup>; कश्चु ३, २; २ संन्या  
२०: ५; आवहेत् शि ३, ११.  
आवाहयामि मना २, ३५<sup>१</sup>; सुसु  
१; आवाहयेत् रापू ५, ६; सौ १, २.  
आ-वहत् -हन्तः पित्र १, ४.  
आवहन्ती -न्ती तै १, ४, १;  
व ४६६: ११९<sup>१</sup>.  
आ-वाहन -नम् पदं ४; नाप ३,  
८६; मं २, २, ५; मा २९; आपू  
१; कालि ४०१: १२.  
आवाहन-मुख -खान् वृजा.  
३, २५.  
आवाहन(न-आ)दि -दि सौ १, २  
आ-वाह्य त्रिता २, ६९; सूता ५, ४;  
सुसु ८; वज ६, १९.  
आ/वा, आवाति मना २, ७९९<sup>३</sup>.  
!आवा: <sup>१</sup> तै ३, १०, ६; वृपू २, १८९<sup>१</sup>.  
!आवारन्द(म्-द)<sup>१</sup> -न्दः पा ५, ४.  
आ-चार्य आ/व (वरणे) द.  
आविक -२ अवि- द.  
आ/विद्(ज्ञाने) >वेदि  
आ-वेदित, ता- -तः महा २, २१;  
-ताम् त्रिता २, २३.  
आविद्यक -अविद्या- द.  
आ/विश्, >वेशि, आविशति वृ १,  
५, १७-२०; आविशन्ति मुं ३,

२, ५; वृ १, ५, १७; त्रि ७; भव  
१, ९; आविश-आविश गरु ६;  
आविशत् वृ २, ५, १८; आ-  
विशेत् नाप ३, ५५; ५, १९; सार  
२३५: ६; ७; ९; शि ७, ६०.  
आविवेशक १, १, २; प्र ४, ११;  
मना २, ८९<sup>३</sup>; २, १२, २९<sup>१</sup>; श्वे २:  
१७; वृपू २, १०९<sup>३</sup>; अशि ६, १९<sup>३</sup>;  
मैत्रि ६, ३८; मर, ७९<sup>३</sup>; शौ ५३:  
१७९<sup>१</sup>; ५४: १; २ शिसं ३५९<sup>३</sup>;  
आविविशु: पित्र १, ३.  
आवेशव-आवेशय गरु १०; व  
४३४: १४.  
आ-विश्य त्रिवि ५, १२<sup>३</sup>; १३; ६,  
२१; गोड १५; वटु ३१६: १८;  
भव २, ४१; गी १५, १३; १७.  
आ-विष्ट, ष्टा -ष्टः अव्य ६<sup>१</sup>; गी १,  
२७; -ष्टम् मैत्रि ६, २४; ३१;  
गी २, १; -ष्टा सार २६७: १८.  
आविष्ट-चित्त -त्तौ सार  
२८९: ५.  
आविष्ट-सुखा(ख-आद्य) >-  
द्व्या -द्व्या सार २८४: ११.  
आ-वेश -शः ब्रसू ४, ४, १५; -शा:  
सार २४९: १३९<sup>१</sup>; -शेन सार  
२४८: १३; २५७: १०.  
आ-वेशित-  
आवेशित-चेतस् -तसाम् गी  
१२, ७.  
आ-वेश्य सर २, ५; १०; गी ८, १०;  
१२, २.  
आविस्\* -वि: मुं २, २, १; -वी:  
ऐ कौ नाद आबो निर्वा मुद्र अच्

सौ सर ब शां<sup>१</sup> ९.  
आविर(स् > र/अ)स्<sup>१</sup>, आवि: \*\*\*  
एधि ऐ कौ नाद आबो निर्वा मुद्र  
अच् सौ सर ब शां<sup>१</sup> ९.  
आवि(स् >) र/भू, > भावि,  
आविर्भवति पै ३, १; मवा ६;  
सार २५०: १३; १४; २७१: ७;  
२८७: १३; आविर्भवेत् नाद ३०.  
आविर्भव गोपू २५; आवि-  
र्भवतु: गोच ६९: १३; आवि-  
र्भविष्यति गोच ६९: १६;  
आविरभूवन् सार २६२: १.  
आविर्भावयति पै १, ९.  
आविर्-भाव -व: मं १, ३, ३;  
त्रिवि २, ६; ब्रसू ४, ४, १; -वा:  
२४९: २२; -वेन सार २२९: ५;  
२३८: १९.  
आविर्भाव-ति(रस् >) रो-  
धाना(न-आत्मक) > स्मिका-  
का त्रिवि ३, ७<sup>१</sup>.  
आविर्भाव-ति(रस् >) रो-  
भाव -वौ छां ७, २६, १.  
आविर्भावतिरोभा-  
(व >) वा<sup>१</sup> -वा गोड ६३<sup>१</sup>.  
आविर्भावतिरोभाव-  
ज्ञातृ -ता ससा १, २४.  
आविर्भावतिरोभाव-  
भाविन् -विन: भव १, १८.  
आविर्भावतिरोभाव-  
रहित -त: ससा १, २५<sup>१</sup>.  
आविर्-भूत, ता- -तम् ग १३;  
अता ११; -तया सार २५०:  
१५; -ते मैत्रि ६, २८.

a) तैत्र्या १०, १, ५। b) ऋ २, ३, ११। c) शौ ११, ८, १। d) 'आवहम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः  
(तु. शौ ११, ८, १)। e) तैत्र्या १०, ३५। f) तैत्र्या ७, ४, १। g) तैत्र्या १०, ६३, १। h) रु. ? [तु. <आ/वृ  
वरण इति सा. (तैत्र्या २, ८, ८, १), <अ/वृ इति शं. (तै. उ.)]। i) कौ ३, १, ९। j) व्यु. ? उस. पूष. <आ(आ-आ)-  
वा(व/आ) पीडयामिति पाटी., <आ/वृ आवरण इति BW. च। k) तैत्र्या १०, १, ६। l) ऋ ४, ५८, ३। m) मा  
८, ३६। n) शौ ७, ९२, १। o) 'दिष्टः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. उत्र.)। p) व्यु. वैपश् यद्र. [तु. सा.  
(ऐत्र्या २, ७, १); वैटु. तत्रैव K २३६]। q) ऐत्र्या २, ७, १। r) तु. K. (ऐत्र्या २, ७, १); वैटु. सा. तत्रैव। s) 'रोभावा-  
स्मिका' इति निसा.। t) मत्वर्थे अच् प्र.। u) 'भावा तिरो' इति व्यस्तः आन. पा.। v) 'हीनः' इति आन.।

आविर्भूत—महा-प्रणव—  
गरुड—डम् त्रिवि ५, १२.  
आविर्भूत—स्वरूप—पः  
ब्रह्म १, ३, १९.  
आवि(स् >)ष्/कृ, आविष्कृणोमि  
वृ २, ५, १६९.  
आविष्करोति सार २४१:१०.  
आविष्कृत्यते मैत्रि ६, २२.  
आविष्-कृत—तम् मैत्रि ६,  
३४; ब्रह्म ४, ४, १६.  
आविष्-कृत्य—सार २५२:१८.  
आविस्-तर—  
आविस्तराम् शौ ५३: १०.  
आ/वृ(वरणे), >वारि, आवृणीमहे स  
शां९<sup>b</sup>; ९<sup>व</sup> ४४१:१०; ४४६:  
१७; ४५१: १०; ४५४: १६.  
आ-वार्य<sup>d</sup> शि ७, ११.  
आ/वृ (आवरणे), आवृणुते नाद  
३२; आवृणोति गौ ४, ८३;  
अध्या १५; सर ३, १९; आ-  
वृणोत् श्वे ६, १००; भव २,  
४८.  
आव्रियते गौ ४, ८२; गी ३, ३८.  
आ-वरण—णम् राधा १, १५; सार  
२८१: १८; २८४: ३; -णस्य  
सार २८१: १; -णानि सता ५, ४;  
सार २२१: २; -णे सार २८२:  
२; ६; ७; १६; २८३: ७; १४; १८;  
२८४: २; ७; २८५: १; २८७:  
२२; २८८: १.  
आवरण-ज्युति—ति: गौ ४, ९७.  
आवरण-ज्योतिस्—ति: सार  
२८१: १.  
आवरण-मध्य—-ध्ये सार  
२८१: १९.

आवरण-लीला—वार्ता—  
-र्तायाम् सार २८३: २.  
आवरण-विनाशन—नम् कलि २.  
आवरण-शक्ति—-क्ति: पै १, ६.  
आ-वृत्, ता—-त: गौ ४, ८४; रापू  
४, ३७; ३८; प्रा १, ६; अरु २१;  
गी ३, ३८; -तम् वृ १, २, १; श्वे  
६, २; मना १, १९<sup>f</sup>; त्रिवि ६, ३;  
नाप ९, १८; ए १२; गोड ४०;  
सि ४, ४; ५, १८; ६, २५; गी ३,  
३८<sup>g</sup>; ३९; ५, १५; -ता गोड २१;  
गी १८, ३२; -ता: ई ३; वृ ४,  
४, ११९<sup>h</sup>; अन्न ४, ३६; पाशु २,  
३३; रुह ४९; स्व ६१: ३; गी  
१८, ४८; -ताम् अरु २२९<sup>i</sup>; -ते  
नाप ५, १२; वरा २, ६२.  
आ-वृत्ति—-ति: १आ २८; सार ३, १<sup>j</sup>;  
-ते: १आ २७<sup>j</sup>; -तौ सर ३, २१.  
आवृत्ति-नाश—-शेन सर ३, २२.  
आ-वृत्त्य श्वे ३, १६; १योत ११६<sup>k</sup>;  
त्रिवि २, १५; वरा ५, ६१; सर  
३, २१; मा १; गु ४८; गी ३,  
४०; १३, १३; १४, ९.  
आ/वृज्ज, आ...वृज्जते वृ ६, ४, ३<sup>l</sup>.  
आ/वृत्, >वर्ति, वरीवृत्, आवर्तते  
प्र ५, ४; छां ४, १७, ९; ८, १५,  
१<sup>m</sup>; अ १; मै २, ५; मैत्रि २, ५;  
गर्म २; वृजा ७, २<sup>n</sup>; ७<sup>n</sup>; भ २,  
२५<sup>n</sup>; रुजा ३, १<sup>n</sup>; काला २१<sup>n</sup>;  
नि ५७<sup>n</sup>; आबो ३१<sup>n</sup>; नाप ९,  
२०<sup>n</sup>; श ३६<sup>n</sup>; वा ४०; ४१; अव्य  
३; १आ २५; सौ ३, १<sup>n</sup>; जाबा  
२८; २९; द्व १७<sup>n</sup>; क ६४:  
१४<sup>n</sup>; वि ३३<sup>n</sup>; गी ८, २६;  
आवर्तन्ते प्र १, ९; १०; छां ४,

१५, ५<sup>n</sup>; ५, ३, २; अव्य ७; भ  
२, १४; २८; आवर्ते कौ २, ८;  
९; आवर्तय छां ४, ४, ५.  
आवृत्स्व व ४६०: १०९<sup>m</sup>;  
ओ<sup>p</sup>...वृत्त्याम् २संन्या १७: १.  
आवर्तयति कालि ४०१: १३;  
आवर्तयत् छाग २३: १०; २४:  
१२; आवर्तयेत् आरु २<sup>q</sup>; भ १,  
११; गोपू २६<sup>q</sup>; २८<sup>q</sup>; २९<sup>q</sup>;  
४७; २प्र ३३: १६; कशु ३, १.  
आवरीवर्ति अशि ६, ११.  
आ-वर्त<sup>r</sup>—-तम् छां ४, १५, ५; तै:  
महा ४, १०६.  
आवर्ता(त-अ)न्तर-कीट—  
आवर्तान्तरकीट-वत् पै २, ४९  
आ-वर्तन—नम् मै १, ७; मैत्रि १,  
४; पी ४२२: ५.  
आ-वर्तमान—-न: व ४३७: ६९<sup>p</sup>.  
आ-वर्त्य पत्र २<sup>q</sup>; शि १, ३४; वड  
६, २६.  
आ-वृत्—-वृत्तम् कौ २, ८<sup>q</sup>; ९<sup>q</sup>;  
-वृता वृ ६, ३, १; कौ २, ४; ७<sup>q</sup>;  
८; ९.  
आ-वृत्त—-त्ता: छां २, २, ३; -त्तेषु  
छां २, २, २.  
आवृत्त-चक्र—-क्रम मैत्रि ६, २८.  
आवृत्त-चक्षुस्—-क्षु: क २, १,  
१; मै ५, १; मैत्रि ६, १.  
आ-वृत्ति—-त्ति: सांस् ३, ५२; ४, ३;  
२२; ६, ५६; ब्रह्म १, १; -त्तिम्  
गी ८, २३; ब्रह्म १, ३, २०; -त्या  
रार ३, १.  
आवृत्ति-योग—-गात् सांस्  
१, ८२.  
आ-वृत्त्य करु १<sup>r</sup>; कशु २, २.

a) ऋ १, ११६, १२। b) खि १०, १९१, १५। c) ऋ ८, २६, २१। d) =वलोपहारपूर्वकम्।  
e) 'आवृणोति' इति निसा.। f) तैआ १०, १, १। g) 'आवृत्:' इति SCHR. [वैतु.वे.(NIA.२, २३१)]। h) मा ४०,  
३। i) तैआ १, २७, ३। j) 'अवृते:' इति निसा.। k) 'आहृत्य' इति अज्या. संटि.। l) निसा. अनुपसृष्टं रु.।  
m) ऋ १०, ८३, ६। n) 'आ-उ' इति समुदितं द्र.। o) 'आवर्तयन्' इति आन.। p) ऋ १, ३५, २। q) 'आवृत्त्य'  
इति निसा.। r) 'वृत्त्य' इति सुपा. यनि. सु-शोधः।



आ/बृह, आबृहेयुः वृ ३, ९, २८, ६.

आ/वे, आवयतः<sup>a</sup> कौ १, ३.

ओ(आ-उ)त, ता- -तः वृ ३, ६, १;

८, ७; ११; वृ २, ८; ८, १<sup>३</sup>; ३;

४; -तम् मुं २, २, ५; ३, १, ९; वृ

३, ६, १; ८, ३; ४; ६; ७; मै ५, ३;

ते ३, ५४; वृ २, १०; वृ २, २०;

शां २, १; त्रिवा २, ४; १ शिसं

५९<sup>b</sup>; २ शिसं ६९<sup>b</sup>; कालि ४०२:

१७; -ताः वृ ३, ६, १<sup>०</sup>; मैत्रि ७,

७; सुबा १०<sup>११</sup>; गोड १७; -तेन

वृ २, २०.

ओत-त्व- -त्वात् वृ २, ९.

ओत-प्रोत- -तम् ब्र २; अशि

४, ५<sup>०</sup>; ६, १०; त्रिता ४, १९;

वृ ३, १५; २०; ३, १७; १४.

ओता(त-अ)नुज्ञात्र(त-अ)नुज्ञा-

(ज्ञा-अ)विकल्प- -ह्यैः वृ १,

११; २, ८; ९.

ओतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्प-

रूप, पा- -पम् वृ ३, ६; १०;

-पा वृ ३, १.

आ-वेदित- आ/विद्(ज्ञाने) द्र.

आ-वेश-, आ-वेश्य आ/विश् द्र.

आ/वेद्

आ-वेष्टित- -तम् राधा १, १३.

आ/वृज्, आव्रजेत् वृ २, २०.

आवव्राज वृ ४, १, १.

आ/शंस, आशंसते वृ १, ४, १४;

आशंस अव्य ३<sup>d</sup>.

आ/शङ्, आशङ्क्यते सार २६५:

१२.

आ-शङ्क्य नि ४; ११.

आ-शशि-तार- -रम् वरा २, ६६.

१ आशा<sup>a</sup> -शया छां ७, १४, २; महा

६, ७५; -शा छां ७, १४, १; २६,

१; वृ १, ३, २८; २, ४, २; ४, ५,

३; अज ५, ३८; प्रा ४, १; -शा:

पा ८, ८; -शाम् छां २, २२, २;

७, १४, १; २<sup>३</sup>; -शायाः छां ७,

१४, २<sup>३</sup>; १५, १.

आशा-निवृत्त- -त्तः नाप १, ५, ३९.

आशा-पत्नी- -त्नीम् मैत्रे २, १२.

आशा-पराकाश- -शौ वृ ६, ४, १२.

आशा-पाश-विधायक- -कम् महा

५, १३३.

आशा-पाशा(श-अ)त्तल- -लम्

१ संन्या २, ४८.

आशा-पाश-शत- -तैः गी १६, १२.

आशा-पिशाची- -चीम् मैत्रे १, ४,

१२.

आशा-प्रतीक्षा- -क्षे क १, १, ८.

आशा-भुजं-ग- -गानाम् महा ५,

१६६.

आशा-वशा(श-अ)नुग- -गम् अज

४, ४०.

आशा-वैवश्य- -श्यम् अज ५, ७.

आशा-शर-शलाका(का-आ)ब्ध-

-ब्ध्याः महा ५, ७७.

आशा(श-अ)सूत्रे(या-ई)र्व्या-

(र्व्या-अ)हंकार- -रम् नाप २;

१ संन्या २, १.

आशो(शा-इ)द्ध- -द्धः छां ७, १४, १.

आशो(शा-उद्)> न-मुख- -खे

महा ६, ७०.

२ आशा<sup>f</sup> -शाः महा ६, ७९.

१ आशा(शा-अ)म्बर<sup>g</sup>-

आशाम्बर-धर- -रः नाप ५, ३९.

२ आशा(शा-अ)म्बर<sup>h</sup> - -रः पदं ४<sup>i</sup>;

पप ४२०: १४; या २, १.

आशा-विद्- -विदः रापू ४, २४.

आशा-व्याशा- -शासु रापू ५, ५.

आ(आ-आ)शा(शा-अ)न्त- -न्तम्

महा ५, ४७.

आ/शास्, > शिस्, <sup>j</sup> आशास्ते व

४४०: २३; ४४६: ६; ४५१: २;

४५४: ९.

आ-शास्य- -स्यम् भ १, १; २, १८.

आ-शास्यमान- -नः त्रिवि ५, ४;

-नम् त्रिवि ७, २०.

आ-शिस्- -शिषः छां ७, १४, २;

पा ४, ७; योसू ४, १०; -शिषाम्

गोड ३; पा ४, ५<sup>k</sup>; -शिषि प्रा

१, ६<sup>१</sup>; -शिषे पा १०, ८.

आ(शिस्)> शी-राशि- -शिः पा

४, ५.

आ(शिस्)> शी-समृद्धि- -द्धिः

छां १, ३, ८.

आ(शिस्)> शी-युक्त- -क्तानि

नाप ५, २०.

✓ आशि(< ✓ अश् भोजने)

आशित<sup>m</sup> - -तम् वृ ४, १, २; ५, ११.

आशि<sup>n</sup> - -शिः पा ४, ५.

आशि-भू(त)> ता- -ता पा ४, ५.

आ-शिर<sup>o</sup> - -शिरम् वा ८.

आ/शी

आ-शय- -यात् गी १५, ८.

आशय-ज्ञ- -ज्ञः महा ६, ६५.

आ-शयध्वे वा १८.

a) आ-वय(त)> न्ती-> न्यौ इति शोधः द्र. (तु. बे. मूको. च शांआ ३, ३ च पाभे. -तौ इति च -न्ति इति च)। b) मा ३४, ५। c) 'ओतम् प्रोतम्' इति अज्या.। d) अज्या. अनुपसष्टः पा.। e) व्यु? < ✓ \*आश् इच्छायाम् (तु. आशि-, यस्या. वैप १ च)। f) व्यु. वैप १ यद्र.। g) कस.। h) बस.। i) आकाश<sup>०</sup> इति निसा.। j) ऋ १, २४, ११। k) °षम् इति मुपा. यनि. सु-शोधः। l) पा.१ (तु. अज्या., सस्य. ✓ हु> होम्य-> न्यम् इति च; वैतु. निसा. जुहोम्याशिष्यन्तः इति, आन. जुहोम्यमाशिष्यन्तः इति च तस्य तथा व्याख्यानं च)। m) तु. सस्य. पायित-< ✓ पायि< ✓ पा पाने, वैप १ च यस्या.। n) = आशिस्-। व्यु? < ✓ \*आश् इच्छायाम् (तु. १ आशा-, यस्या. वैप १ च)।

## आ-शीतल-

आशीतला(त-अ)न्त(र&gt;):-

करण-णः अञ ५, ६९.

आशु<sup>a</sup>-शु<sup>b</sup> राप् ४, १६; २२; राउ  
३, ४; शां १, ७, १२; महा २, ३०;  
योशि १, १११; अञ ४, ४२; यो १,  
५२; वरा ४, ३१; सु २, २, ४; व  
४६६: ८१<sup>०</sup>; -शु-शु राप् ४, २५;  
-<sup>१०</sup>शुम् व ४४१: २०; ४४७:  
३; ४५१: १७; ४५४: २२.

आशिष्ठ<sup>c</sup>-ष्ठः तै २, ८, १.आशुशुन्ति<sup>d</sup>-णिः मना २, ७६४<sup>f</sup>.

आश्वर्य<sup>e</sup>-र्यः क१, २, ७<sup>३</sup>; सार २४१:  
१९; -र्यम् वृजा ६, ७; ८; -र्याणि  
गी ११, ६.

आश्वर्य-रूप-पाः वृउ ९, १९.

आश्वर्य-वत् गी २, २९<sup>१</sup>.आश्म-आश्मरथ्य-<sup>१</sup>अश्(व्याप्तौ)द्र.

## आ/श्रम्

आ-श्रम-मः सार २३१: ५;  
२७९: २; -मम् योशि १, ९७;  
गोउ ३; शा ६; -माः गौ २, २७;  
३, १६; पित्र ६, १२; नाप ६, १४;  
पाशु २, २२; सार २९०: ४;  
आश्र १; -मात् शि ७, ४६; -मात्  
नाप ६, १२; १अव २; -मे वरा  
१, १७; शा ६; -मेण सार २८२:  
२१; -मेषु मै ४, ३; मैत्रि ४, ३;  
-मैः सुबा ९.

आश्रम-कर्मन्-मं व्रसू ३,  
४, ३२.

आश्रम-क्रमा(म-अ)नुसार-

-रेण नाप ५, १; १संन्या २, १३.

आश्रम-त्रय-यम् नाप ६, २८.

आश्रम-पद-दम् वृजा ६, ५.

आश्रम-पार-रम् २संन्या

१५: २.

आश्रम-वासिन्-सिनाम् रार  
५, १६.

आश्रमिन्-मिभिः भव ५, ११;

-मी मै ४, ३; मैत्रि ४, ३; कुं १.

आ/श्रि, आश्रयते पित्र ४, २; आ-

श्रयन्ति मैत्रि ६, १८<sup>१</sup>; आश्रयसि

महा ६, ३५; आश्रय त्रिवि ८,

१२; महा ६, ७२; वरा २, ८०;

३, ६; ८; पित्र २, ९; ३, १०;

आश्रयेत् पित्र ४, २१<sup>b</sup>; आश्रयेत्नाप ५, २१; ते ६, १०१<sup>१</sup>; योशि

६, २९; सह १२; वि ९; गी १, ३६.

आ-श्रय-यः वरा ५, ५४<sup>१</sup>; पित्र२, २; १०<sup>१</sup>; ३, ९; -यम् मैत्रि १,४, १२<sup>१</sup>; पित्र २, १; सांका ४१;

-येण मैत्रि ६, २७.

आश्रय-वर्जित-तम् शि ६, ४०.

आश्रय-वश-शात् मैत्रि ६, ३५.

आश्रय-विशेष-ये सांस् ५,

१२७.

आश्रया(य-अ)-भाव-वात्

महा २, ८.

आश्रया(य-अ)-सिद्धि-हे:

सांस् ५, १२८.

आश्रयिन्-

आश्रय्या(यि-अ)श्रय-

हीन-नः मैत्रि ३, ९<sup>k</sup>.

आ-श्रित, ता-तः कै २, ५; अना

३५; मै ५, १; २; मैत्रि ६, १;

२; ध्या ७; व्रवि ३५<sup>१</sup>; ७८; श३६; राउ १, २; नाप ३, १५<sup>m</sup>;

योशि ५, ३२; जाद २, १४; वरा

५, ५७; सार २७८: १७; विद्या

१; भव १, १; गी १२, ११;

१५, १४; -तम् अञ ४, ६१;

शि ६, १४०; सांस् १, १२४;

सांका १०; गी ९, ११; -तस्य

मै १, ७; मैत्रि १, २; -ता योशि ५,

२२; -ताः महा ४, ७४<sup>१</sup>; ५, ३६;वरा २, ५५<sup>१</sup>; सार २९२: ८;

९; शि १, ३२; गी ७, १५; ९,

१३; -ते त्रिवा २, १२६.

आश्रित-त्व-त्वात् व्रसू १,

१, ३१.

आश्रितो(त-उ)पाश्रित-तै:

शि ६, ११२.

आ-श्रित्य व्र १; लु १२; नि १५;

व्रवि ६४; नाप ३, ४२; २अव

३३८: ९; त्रिवा २, २; ४; ८;

१६६; मं २, ४, ४; शां १, ४;

पै २, ३९; ५१; महा ४, १५;

९३; १०४; १२८; ५, ८४;

१संन्या २, ९६; अञ ४, ९०;

त्रिता १, १; कठ ३१; वरा २,

४५; व ४५८: ७; भव १, २२;

५०; २, १४; पित्र ६, १८; गी ७,

२९; १६, १०; १८, ५९.

## आ/श्रिष्

आ-श्रिष्<sup>१</sup>-षायै व ४३८: ३.

आ/श्रु&gt;आवि, आश्रावयति छां १,

१, ९; आश्रावयन्ति तै १, ८, १.

आ/श्रिष्ठ, आश्रिष्यन्ति मैत्रि ७, ८.

आश्वतराश्वि-<sup>१</sup>अश्(व्याप्तौ)द्र.

आश्वत्थ-अश्वत्थ-द्र.

आश्वलायन-<sup>१</sup>अश्(व्याप्तौ)द्र.

आ/श्वस्,&gt;वासि

आ-श्वस्त-

आश्वस्त-मति-तिः महा ६, ६९.

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) वा. किवि. भवति । c) 'आसु' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । d) ऋ १, ९१, २० । e) यत्तु आन. 'आन्नास्तुतमः' इतीव शं. भाष्यं पिपाठयिषितम् । तत्र । क्षिप्रकारित्वस्यैव श्रुतिप्रसङ्गानुकूलतरत्वात् (तु.संदि. संकेतितैः मूको.यनि.पोषः) । f) ऋ २, १, १ । g) व्यु? (तु. पा ६, १, १४ <आ/चर इति) । h) 'आश्रयत' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । i) 'आप्नुयात्' इति अज्या. । j) 'यन्तम्' इति अज्या. । k) 'श्रयाश्रयि' इति अज्या. । l) 'आस्थितः' इति अज्या. । m) '-ताः' इति अज्या. ।

\*आ-श्वासया-

\*आश्वासयाम(म्/अ)स्, आ-  
श्वासयामास गी ११, ५०.

आश्विन- ✓अश (व्याप्तौ) द.

✓आस्, आस्ते तै ३, १०, ५; वृ ४, ३,  
२-६; मना २, ४०९<sup>०</sup>; कौ १, १९<sup>०</sup>;  
५; वृ २, ८; पै ३, २; अक्षि ३३;  
यो १, ६८; जाद १०, १३<sup>०</sup>; त्रिबा  
२, ३७९<sup>०</sup>; आसाते सार २७१:  
२०; आसते वृ २, २, ३<sup>१</sup>; मना  
२, ४०९<sup>०</sup>; वृ ५, ८; सार २४३:  
१९; आस्ते छां ४, २, ४; आध्वै  
छाग २३: ३; आस्ताम् महा २,  
२२; वरा २, ६६; सार २४९: ९;  
आसाताम् सार २८९: ५; ६;  
आसताम् सार २५०: १९; २५१:  
७; आस्व वृ २, ४, ४; अन्न ५,  
११५; अक्षि २; आस्त सार  
२२०: ७; २५१: ७; २५२: १०;  
१४; २८५: १६; २८६: १७;  
आस्त छाग २३: १; ९; २४: १२;  
सार २४८: २३; २४९: ४; २५२:  
१४; १७; २६२: २१; २७५: ७;  
आसीत कौ २, १५९<sup>०</sup>; सौ २,  
२१<sup>१</sup>; गी २, ५४; ६१; ६, १४;  
आसीरन् छां ७, १३, १.

आसिष्टअव्य२; आसिषम्अव्य१

आसन- नम् वृ ६, २, ४; लु २;  
तै १, १५; २५; २अव ३३७: ५;  
१योत २४; त्रिबा २, २९; ३५;  
४४; ४६; ५२; ९१<sup>१</sup>; ९२; योचू २;  
मं २, २, ५; ध्या ४१; शां १, ३,  
१२; योशि १, ७०; ५, ३६;  
१संन्या २, ७९; ८०; अक्षि २६;  
भा ३०; यो १, २; ४; ५३; २, ४५;  
जाद १, ४; ३, १३; ५, ५; वरा ५,

११; योरा २; आपू २; राधा २,  
८; सार २३८: ८; शि ७, ३५;  
६४; ८७; ९०; ९१; वज ५, ३२;  
६, १८; २७; ३५; सांसू ३, ३३;  
६, २४; योसू २, ४६; गी ६, ११;  
-नात् सार २३४: १८; -नानि  
ध्या ४२; त्रिबा २, ३४; शां १,  
१; ३, १; वरा ५, १५; -ने त्रिबा  
२, ९०; यो १, २३; गी ६, १२;  
-नेन तै १, ११, ३; शां १, ३, १२;  
योचू १०९; -नै: त्रिबा २, ५३.  
आसन-दढ- -ढ: शां १, ७, १.  
आसन-नियम- -म: मं १, १, ५.  
आसन-बन्ध-

आसनबन्ध-तस् (>) योशि  
१, १२६.

आसनबन्धा(न्ध-आ)दि-

-दि वज ६, ४.

आसन-भूषण- -णम् शि ७, १२.

आसन-भेद- -दान् सार  
२७०: १७.

आसनभेद-संयोग-सुख-

दातृ- -दात्रे सार २५१: २३.

आसनभेदा(द-अ)भि(ज्ञ&gt;)-

ज्ञा'- -ज्ञा सार २८४: १६.

आसन-शयना(न-आ)दिक-

-कम् आरु ४६.

आसन-स्थ- -स्थस्य १योत ५२.

आसना(न-अ)न्तर-योजना-

-ना वज ६, ३७.

आसना(न-अ)शन-योग- -गेन  
अन्न ४, ८७.

\*आसा-

\*आसां/कृ, आसांचक्रे वृ ४, १,

१; आसांचक्रिरे छां १, १०, ११.

आसीन- -न: क १, २, २१; वृ ६,

३, ६; महा २, ४७; १संन्या २,  
३३; नाप ३, ४४; द ५; म २, ३;  
सूता १, २४; शि ७, १६; ३१;  
ब्रसू ४, १, ७; गी १४, २३; -नम्  
क २, २, ३; कौ १, १९<sup>०</sup>; अव्य  
६; शि ७, ३१; रा ४२३: ४;  
पिब्र १, ४; गी ९, ९; -ना: छां  
८, ६, ४; म २, २९.

आ/सञ्ज्

आ-सक्त- -क्त: मै ४, २<sup>१</sup>; सार २९१:

९; -क्ता: सार २२०: १८;

२७४: १.

आसक्त-मनस्- -ना: गी ७, १.

आ-सक्ति- -क्ति: सार २३१: ९;

२५६: १७; २५७: २.

आ-सत्य-लोक-

आसत्यलोका(क-अ)न्त- -न्तम्

त्रिवि ३, ४<sup>१</sup>.

आ/सद्, &gt; सीद्, सादि, आसीदन्ति

सार २६६: २१; २७४: ३; २८१:

१२; आसीद् नाप ४, ३८९<sup>०</sup>;९<sup>१</sup> आ...सीद् त्रिता ३, २८; व  
४२९: १०.

आसादयति म २, १५; आ-

सादयसि अन्न ४, ७५; ७७.

आसाद्यते महा ४, २८; ५, ११४;

६, २६; अन्न १, २७.

आ-सञ्ज- -ञ्ज: योसू १, २१.

आ-सादि(त &gt;) ता- -ता सार

२४३: २२.

आ-साद्य कौ १, १, ३९<sup>०</sup>; नाप १, २<sup>१</sup>;८, १<sup>१</sup>; पै ३, १; महा ३, ३७;

५, ६६; ६, ३३; १संन्या २, ५५;

अन्न ३, १७; १८; मं २, ४, ४;

त्रिवि १, ४; ५, १२; ६, २१; तु १४;

सि ६, २९; ३१; ३२; गी ९, २०.

a) तैसं ४, २, ९, ६। b) 'अस्ति' इति आन. शांआ ३, १. च। c) 'आस्थे' इति अज्या. संदि.। d) तैआ  
३, १२, ७। e) 'आसीनाय' इति शांआ ४, १५। f) 'शीत' इति मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.)। g) 'नाभ्याम्'  
इति आन.। h) 'अभ्यागतम्' इति बे., शांआ ३, १। i) 'सक्तः' इति अज्या.। j) आ-सत्य- (=अस.) > 'लोक-  
(तस.) > कानाम् इति अज्या.। k) तैआ २, ५, ८, ८। l) ऋ २, २३, १। m) 'आपद्य' इति आन., बे., शांआ ३, ३. च।



आ-सेदिवस्- -दिवान् सार २२९;  
९; २७४: ६; १८; २७५: ११;  
१६; -दुषः सार २८८: १२;  
-दुषाम् सार २८९: ७.  
आसेदुषी- -षी सार २८६: ५;  
-व्यः सार २६५: १५; २७६: २.  
आसन्<sup>११</sup>- -सन् मना २, ७२९<sup>b</sup>;  
-स्ति मैत्रि ६, ३६.  
आसन्य- -न्यम् वृ १, ३, ७.  
आसन्दी<sup>१२</sup>- -न्दी कौ १, ३१<sup>c</sup>; -न्दीम्  
कौ १, ५.  
आ-सव्य-कर्ण-  
आसव्यकर्णा(र्ण-अ)न्त- -न्तम् शां  
१, ४.  
\*आसा- /आस् द्र.  
आ/सिच्, >न्च्, आसिञ्चतु वृ ६,  
४, २१.  
आ-सिक्त- -क्तम् क २, १, १५.  
आ-सिच्यमान(न्)>ना- -ना सौ १, २.  
आ/सु (अभिषेव)  
आ-सुत- -तम् छां ५, १२, १.  
आसुर- १ असुर- द्र.  
आसुरायण- , आसुरि- २ असुर- द्र.  
आ/सू (प्रेरणे), आसुव मना २, ३९९<sup>d</sup>.  
आ/सृप्, आससृप्: छां १, १२, ४.  
आ/सेव्, आसेवते सार २८७: ९.  
आ-सेवमान- -ना: सार २७९: ११.  
आ-सेवा- -वाम् सार २२९: ५.  
आ/स्कन्द, आस्कन्दन् छाग २५: १४  
आस्तिक- /अस् (भुवि) द्र.  
आं/स्तु  
आ-स्ताव<sup>१३</sup>- -वे छां १, १०, ८.  
आ/स्तृ>स्तद्  
आ-स्तरण- -णानि सार २८६: २२.  
आस्तरण-यु(क्त)>क्ता- -क्ता:

सार २६७: ८.  
आ/स्था, >तिष्ठ, आतिष्ठ गी ४,  
४२; आतिष्ठेत् त्रिवा २, ४१;  
१ संन्या २, ९७.  
आ<sup>१४</sup>तस्थु: श्वे २, ५९<sup>e</sup>.  
आ-स्था- -स्था महा ३, ११; अञ  
५, ११; भव १, २१; -स्थाम् महा  
६, ३४.  
आस्था-परिग्रह- -हः महा  
४, १११.  
आस्था-परिवर्जन- -नम् महा  
४, ११०.  
आस्था-मात्र- -त्रम् महा ५, ८५.  
आ-स्थाय मै १, १; मैत्रि १, २; मैत्रे  
१, १; कै १, १२; श्रु २; १ योत ६९;  
नाप ५, १५; श ४; त्रिवि ८, ५;  
त्रिवा २, ८९<sup>f</sup>; महा ५, ८८; अञ  
३, २; ४, ५०; कुं १८; जाद ६,  
३२; इ १६: २; हे ९; गी ७, २०.  
आ-स्थित, ता- -तः ब्र २; लु २१;  
ब्रवि ७१; नाप ३, ८०; योशि ५,  
३६; अञ १, १०; यो १, ५३; पा  
३, २; गी ५, ४; ६, ३१; ७, १८; ८,  
१२; -तम् रुह ३४; -ता: मैत्रि ४,  
२; गी ३, २०; -ताम् अक्षि १३.  
आ-स्थिति- -ति: द १५.  
आस्पद- -दम् अञ ४, २३.  
आ/स्फ(र)>ल् >स्फालि, आ-  
स्फालयेत् वरा ५, ६०; ६२.  
आस्य<sup>१५</sup>- -स्यम् छां ५, १८, २; मैत्रि  
६, ३६; -स्यात् छां १, २, १२;  
-स्ये वृ १, ३, ८; -स्येन नाप ५,  
११; १ संन्या २, ७८.  
आस्य-नासिका- -कयो: त्रिवा २,  
७९; जाद ४, २६.

आस्य-नासिका-कण्ठ-नाभि-पादा-  
कुष्ठद्वय-कुण्डल्यधजध्वभाग-  
-गेषु शां १, ४१<sup>g</sup>.  
आस्य-पात्र- -त्रेण १ संन्या २, ५९.  
आ/स्य, आस्यति वृ ४, २, ३.  
आ-स्यत्- -वत् वृ ४, २, ३.  
आ/स्वद्, >स्वादि, आस्वादयेत्  
गौ ३, ४५.  
आस्वाद्यते महा ३, ४२; या २, ८.  
आ-स्वाद-  
आस्वाद-वश- -शात् यो १, ७३.  
आ-स्वादित- -तः जाद ६, ४८.  
✓आह<sup>१६</sup>, आह क १, १, १५; तै १, ८,  
१; छां १, १, ८; वृ १, ४, ३; ज  
४; मना २, ७८९<sup>h</sup>; पंहं १; अशि  
७, ७; मै २, २; कौ १, ३१; आहु:  
ई १०<sup>i</sup>; के १, ५; क १, ३, ४<sup>j</sup>;  
प्र १, ११<sup>k</sup>; छां २, १, २३; वृ १,  
३, २७; श्वे ३, १९; गौ २, १;  
कौ ३, २; अशि ५, ७; मै ५, ७<sup>l</sup>;  
आथ क १, १, २२; छां ४, १,  
३; वृ ३, ९, १०; गी ११, ३.  
आहंकारिक- अस्मद्- द्र.  
आ/हन्, आहन्ति मैत्रि ७, ११.  
आ-हत, ता- -तः ब्रवि १८; -तम्  
भ २, २; -ता यो १, ४३<sup>m</sup>; -तात्  
वृ ३, ९, २८, २.  
आ-हत्य वरा १, ७; १५.  
आ-हर-, आ-हरण-, आ-हरत्-  
आ/ह द्र.  
आ-हव<sup>१७</sup>- आ/हे द्र.  
आ-हवन- आ/हु द्र.  
\*आ-हारया, आ-हार्य आ/ह द्र.  
आ/हिस्, आहिंसत् पा ६, ३.  
आ-हित- आ/धा द्र.

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) शौ १९, ६०, १ । c) निसा. -न्धि(न्धी<>न्दी) इति, अज्या. °ण(°णा=  
णा+आ)सन्धि(न्धी) इति च विकृतौ सन्तौ मुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. आन., JC.) । d) ऋ ५, ८२, ५ । e) ऋ १०,  
१३, १ । f) 'आसाद्य' इति निसा. । g) °धश्चो° इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः । h) तैआ १०, ६२, १ । i) 'तं'°°अभि-  
धावत' (इति स्वजनान्) 'ब्रह्माऽऽह' इति वा. (तु. आन.; वैतु. अज्या. शांआ ३, ३ च 'ब्रह्मा हामिधावत' इत्ययुक्त  
इव पा.) । j) 'हता' इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः ।

आ/हु

आ-हवन-

आहवनीय<sup>१</sup>—यः प्र ४,३; छां ४, १३, १; ५, १८, २; मना २, ७९<sup>१</sup>; ८०<sup>१</sup>; गर्भ ५<sup>१</sup>; अग्नि १, ६; अ १; मै ५, ५; मैत्रि ६, ५; ३४; नृप २, २; नृउ ३, ४; जाबा २४; काला १६; त्रवि ६; प्रा २, १; १प्र ३१: ९; -यम् मैत्रि ६, ३६; पं ७; कशु २, ३; -यस्य छां २, २४, ११; -यात् नाप ३, ७७; -ये छां ४, १७, ६; १संन्या १, १; प्रा१, ६; कशु १, १. आहवनीय-गार्हपत्य-दक्षिण-सम्भ्या(भ्य-अ)ग्नि-—मिषुपत्र २. आहवनीय-गार्हपत्य-दक्षिणा-(ण-अ)ग्नि-—रु(प>)पा-—पा गार ४०७: १.

आ-हुत-—तः, -तम् इ १२: ११.

आ-हुति<sup>१</sup>—तयः मुं १, २, ५; ६; मना २, २६<sup>१</sup>; कौ २, ५; मैत्रि ६, ९; प्रा २, १; -ति: मना २, ८०<sup>१</sup>; २संन्या १६: १; मैत्रि ६, ३७; शि ४, ५१; -तिभिः वउ ६, ४६; -तिम् छां ५, १९, १; -ती प्र ४, ४; -ती: मुं १, २, २; ५<sup>१</sup>; वृ ३, १, ८; प्रा २, १; -ते: छां ५, ४-८, २; -ती छां ५, ३, ३; ९, १; -त्याम् वृ ६, २, २; -त्यै वृ ६, २, ९-१३.

आहुति-चत् नाप ३, ७.

आहुति-विधि-—धिम् नाप ४, ३८.

आ/हु, >हारि, आहर छां ४, ४, ५; ६, १२, १; १३, १; वृ ३, २, १२;

आहर-आहर छां १, १२, ५; आहरेत् छां १, १२, ५; पा १०, ५; आहरेत् वृजा ३, १; ६; १०; १९; २९; १संन्या २, ५९.

आजहार छां १, १०, ५; ४, २, ५; आजहु: छां १, २, १; महा २, २६; आहरिष्यामि वृजा ३, १९.

आ-हर<sup>१</sup>—रः पा २, ४.

आ-हरण-—णम् शां १, ८; जाद ७, २.

आहरण-धारण-प्रकाश-कर-  
-रम् सांका ३२.

आ-हरत्—रन् अन्न ५, ३९; १संन्या २, ५९; नाप २; ३, ८६; ७<sup>१</sup>.

आ-हार<sup>१</sup>—रः भव ३, २१; गी १७, ७; -रम् मना २, १३, २९<sup>१</sup>; नाप २; ५, ११; ७; १संन्या २, ५९; ७८; शि ५, ५; ६, २२८; -रस्य १संन्या २, ५९; -रा: गर्भ ४; १योत १२३<sup>१</sup>; निरु १, १७; गी १७, ८; ९.

आहार-पर-—रः नाप ५, १; १संन्या २, १३.

आहार-परिमाण-—णात् गर्भ ५<sup>१</sup>.  
आहार-शुद्धि-—द्धौ छां ७, २६, २; पाशु २, ३६.

आहारा(र-आ)चार-धर्म-  
-मर्णाम् शि ७, ३९.

आहारा(र-आ)पान-सिक्त-

आहारापानसिक्त-त्व-  
-त्वात् निरु २, ४.

\*आ-हारया-

\*आहारयां/कृ, आहारयांचकार  
वृ ६, २, ४.

आ-हार्य-—र्यम् सांका ३२.

आ-हत-

आहतो(त-उ)ञ्छ-वृत्ति-—त्तिम्  
आश्र २.

आ-हत्य तै १, ११, १; वृ ६, २, ४; जा ४; ध्या ३५; नाप ३, ७७; पप ४१८: १३; कुं २; कर १; या १, १; गोच ६५: ४; कशु २, ३. आहो<sup>१</sup> तै २, ६, १; वृ ३, २, ११; गी १७, १.

आ/हाद्

आ-हाद-—दा: छां ७, ११, १.

आ/ह्लाद्

आ-ह्लाद-—दः गोच ६७: ६; ९.

आ-ह्लादन-—नम् गोच ६७: ६.

आ/ह्वे, आह्वयति छां ७, १२, १; कौ २, १५; आह्वयति शि ७, २२.

आह्वहाव शु ३, २१.

आ-हव<sup>१</sup>—वे रापू ४, २३; २८; गी १, ३१.

आ-ह्वय रापू ४, २०; २४; २७; पी ४२१: ७.

आ-ह्वयित्वे आपे ७: १.

आ-ह्वान-

आह्वान-कर्मन्—र्मणि त्रिता २, ३३.

इ

इ<sup>k</sup>

इं त्रिवि ७, ३६; आथ ३९८: ५<sup>१</sup>; व ४३५: ६.

इं-कार-—०र अक्ष ५.

इ/इ, अयते<sup>m</sup> छां १, २, १२; सार २२७: १८; एति क१, १, १७; २, ३, १६;

a) तैआ १०, ६३, १। b) तैआ १०, ६४, १। c) 'यम्' इति आन. अज्या. च। d) तैआ १०, १९, १। e) 'आहुतयः' इति मुपा. 'आहुतीर यः' इत्येवं सु-स्रोधः (तु. सस्थ.टि. आ/वा>?आद(वा>)दायत्- )। f) वैतु. पाटी. क्रिप. इति। g) तैआ १०, ११, २। h) 'रः' इति संटि., निसा.। i) विशिष्ट इह अज्या. पा.। j) व्यु. ? \*आत्थो [ <आत्थ(<आह्) + उ ] इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः स्यात् (वैतु. वाच., शक. <आ/हन् इति )। प्रश्नेऽन्तर्गः नि. द्र. (तु. वैप१, CVI<sup>१</sup>; पंजा. अभ्युपगमतात्पर्यके प्रश्नेऽस्य प्रयोगश्च)। k) =वर्णः। l) 'ई' इति मुपा. यनि. सु-स्रोधः। m) तु. वैप१, ३९२b, तत्रैव यस्या. इ/इ इति च।

छां १, ५, १; ३; २, ११-२०, २;  
२३, १; ३, १७, २; ३; ४, ११-१३,  
२; १५, ५; ५, १०, १; ३; ८, ३, ३;  
५; ६, ६; वृ १, २, ३; २, १, १०;  
१२; ४, १, ३; ४; ६; ७; ५, ३, १;  
६, २, १५; १६; श्वे १, ६; ४, ११;  
१४; कौ २, १४; ४, १२; हं ५;  
मैत्रि ४, ६; ६, १७; २२; २७; कै  
१, १२; १३; जा ५; ना ३; अशि  
५, ६; काला २१; नाप ३, ५१;  
२, ५; सुबा ९; मं १, २, १०;  
श ३६; त्रिवि १, १२; ३, ५;  
८, २३; मुद्र २; शां २, १; महा  
२, ६४; ४, ११७; ५, २९; ७१;  
१०२; १११; १२०; १२९; १५४;  
६, ५२; ७५; योशि १, १२६;  
६, ४; अन्न १, ३२; ४, ७२; त्रिता  
४, २४; मं १, ११; २, ८; २४;  
या २, १; वरा २, ३६; ३, ११;  
४, ५; योचू ९४; कलि ३; सु  
१, १, ५०; २, २, ३४; ३७; त्रि  
१२; १५; आर्षे ८; १२; १८; २१;  
९; ७-९; छाग २५; १३; बा १४;  
सूता १, १५; का ३; गोच ६७;  
१७; नार २; सं २३; सार २४४;  
२; २६४; २२; २६७; २३; नो  
१, ३; १शिंसं १९; २शिंसं ८९;  
सु २९४; ४; पारा १; स ३८०;  
२; गु ५७; अरु २६; भव २,  
४; ३, १९; ३२; गी ४, ९; ८, ६;  
११, ५५; यन्ति क २, १, २;  
तै १, ४, ३; २, ३, १; छां १, ९, १;  
वृ ३, ९, ५; मैत्रि ६, ११; १५;  
टपू १, १४; बा ६; सार २४८;  
१५; २शिंसं २; वपू १, २; एषि  
महा ४, ६०; एमि क १, १, ५;

शौ ५३; ९; एतु मना १, ९९;  
२, ३८; ९; ५५; वरा २, ६६;  
नी १, ३; व ४६४; २९; आयन्  
मना २, ७९; अशि १, १६;  
व ४६६; १५; च २१; १५;  
तृष ८४; १; ऐम वृ ३, ३, १;  
इयात् वृ १, ३, १०; ६, ४,  
१४-१८; नाद ५५; १योत ११०;  
त्रिमा २, १२९; यो १, ७७; जाद  
६, २५; इयाम् वा १३;  
इयाय छां १, १०, ७; कौ ३, १;  
ईयतुः कौ ४, १८; एष्यति गौ  
३, २०; ४, ६; ग ६; अन्न १, ४०;  
४१; गी ८, ७; ९, ३४; १८, ६५;  
६८; एष्यामि १संन्या २, ५२.  
ईयते वृ २, ५, १९.

अयसे<sup>k</sup> वा २२.

इत्या-त्या कौ ३, ५; -त्याः कौ १,  
७; ३, ६; -स्याम् कौ २, १५;  
३, ७; ८.

एतु-ता छां २, २४, ५; ९; १५;  
-तारम् कौ ३, ८; मैत्रि ४, ४.

एष्यत्-ष्यन् वृ ४, २, १.

यत्-यत् वृ २, ३, १; यन् छां ४, १६,  
१; यन्तः अरु ३१; यन्तम् वृ  
२, १, १०.

इच्छु<sup>m</sup>-

इच्छु-दण्ड-वडानि शि ६, २५.

इच्छु-धनुस्-नुः भा २३.

इच्छु-पर्ण-र्णानि शि ६, २६.

इच्छु-रस-संन्या(त)सा-सा  
आवो १३.

इक्ष्वाकु<sup>m</sup>-कवे गी ४, १.

ऐक्ष्वाक-क मै १, १; मैत्रि  
१, २; -के सं ११.

इक्ष्वाकु-वंश-ध्वज--०जमैत्रि २, १

इक्ष्वाकु-वंश-ध्वज-शीर्ष-०र्ष  
मै २, १; मैत्रे १, ४, १.

✓इक्ष्वाकु-इक्ष्वाते छाग २५; ९;  
१८; गी ६, १९; १४, २३; इक्ष्वा  
छाग २५; १३.

इक्ष्वायन्ति सर २, ६; नापू  
५, ३३.

✓\*इच्छ, इष (इच्छायाम्) > एषि,

इच्छते छां ७, ३, १; १४, १; वृ

१, ४, १६; इच्छति क १, २, १६;

मै ५, ४; मैत्रि ६, ४; ३४; पै ४,

१६; योशि १, ६३; इक्ष्वा १८; गु

३३; पित्र ३, ६; गी ७, २१; इच्छन्ते

वृ १, ४, १५; इच्छन्ति वृ १,

४, १६; गौ ३, २०; ४, ३; ६; तृपू

१, ७; वरा १, १; इ ११; २२; सार

२७८; १४; इच्छसि क १, २, ३;

अन्न ४, ८६; गी ११, ७; १८,

६०; ६३; इच्छामि शु १, ११;

त्रिवि ३, १; योशि २, १; पप

४१७; ३; कुं ९; पाशु १, २;

१अव १४; सु १, १, ५; गार

४०५; २; गी १, ३५; ११, ३;

३१; ४६; १८, १; इच्छामहे रुजा

३, १; इच्छासै वृ ६, २, ७; इच्छ

वृ ६, ४, १९; गी १२, ९; इच्छ-

ध्वम् अरु १५९; ऐच्छत् वृ १,

४, ३; ऐच्छन् वृ ६, १; इच्छेत

वृ १, ३, २५; नाप ३, १२; इच्छेत्

वृ १, ४, १६; ६, ४, ९-१२;

१४-१८; त्रिवि १६; १संन्या २,

६१; त्रिता ५, १६; यो ३, ४;

२प्र ३३; १५; अवि १६; इच्छेय

छां ७, ३, १.

इष्यते गी ४, २५; ३७; ६४;

६६; ८७; ९६; सु १, १, २३;

भ) मा ३४, १। b) 'तीर्त्वा' इति मा ४०, १४। c) 'यान्ति' इति निसा। d) ऋ १०, १५२, २।

e) तैत्र्या १०, ४८, १। f) तैत्र्या १०, ६३, १। g) 'अगमन्' इति अख्या। h) ऋ ९, ९४, ४। i) पा. 'इमाम्' इति वे।

j) 'आजगमन्' इति आन। k) तुमर्थे असे प्र. [पा ३, ४, ९ (एतदनु गप. ९२ पृ. अयस्- > -यसे इति सु-बोधम्)]। l) 'स्याः'

इति आन. अख्या. च। m) व्यु. वैपश् यद्र.। n) ऋ १, १६४, ४५। o) तैत्र्या १, २७, २। p) 'इच्छन्ति' इति अख्या।



ब्रवि ३; ७; ते ५, २३; १योत  
१०८; त्रिवा २, ४८; ५५; ५९;  
१३५; अता १०; सुत्र २; शां १,  
४; अन्न २, २३; अघ्या १२; ४४;  
४७; ४९; त्रिता ५, १; ७; जाद  
४, १८; १९; २१; २२; शि १,  
२४; भव ४, ४; अवि ३; ७; सांका  
२८; ४४; इत्येते गौ १, ११.  
इच्छत् - च्छता योशि २, २१; वरा  
२, ८३; ५, २; ब्रवि १२; १३३१;  
२२१; शि ६, ३९; च्छत्सु पित्र  
३, ६; च्छन्निः स्वद २; ३; च्छन्  
क २, १, १; छां ८, ३, २; ९, २; १०,  
३; ११, २; वृ १, ४, १७; ४, १,  
१; ४, १२; वरा २, १५; शा २२;  
-च्छन्तः क १, २, १५; वृ ४, ४, २२;  
गौ ४, १०; मना २, ६७<sup>b</sup>; गु ३९;  
गी ८, ११; -च्छन्तौ छां ८, ७, ३.  
इच्छा - च्छवा अना ३०; सुबा ११;  
योशि १, ११०; शि ४, २७; ३०;  
५, २६; ६, १८०; -च्छा सुबा  
११; १योत १०७; योचू ८६;  
वरा ४, ३; महा ५, २७; १३२;  
१७३; अन्न ४, ७<sup>c</sup>; सार २५८;  
१७; सु १, १, २९; पा १०, ८;  
गी १३, ६; -च्छाम् महा ६, ५१.  
ऐच्छिक - कः त्रिवि २, ७.  
इच्छा-क्रिया (या-अ) निवत-  
-तम् पं ४.  
इच्छा-ज्ञान-क्रिया (या-आ)-  
त्मक-ब्रह्म-ग्रन्थि-  
इच्छाज्ञानक्रियात्मकब्रह्म-  
ग्रन्थि-मत्-  
इच्छाज्ञानक्रियात्मकब्रह्म-  
ग्रन्थिमत् (त्-र) स-तन्तु-ब्रह्म-  
नाडी - डी मा ३३.  
इच्छा-ज्ञान-क्रिया-शक्ति-रू-  
(प>) पा - पा गार ४०७:४.

इच्छा (च्छा-आ) दि - दि: ससा  
१, २१.  
इच्छा-द्वेष-समुत्थ - -स्थेन  
१संन्या २, ३०; गी ७, २७.  
इच्छा-मय - -येन मैत्रि ६, २८.  
इच्छा-मात्र - -त्रम् गौ १, ८;  
महा ४, ११६.  
इच्छा-रूप, पा - -पः योशि १,  
४३; -पा: योशि १, १५५.  
इच्छा-वश - -शात् त्रिवि ३, ७.  
इच्छा-शक्ति - -क्तिः सी ११;  
१२; ३५; काला १५; भा ७;  
जाबा २३.  
इच्छाशक्ति-रूप (प>) पा -  
-पाम् विद्या ३.  
इच्छाशक्ति-स्वरूप-  
इच्छाशक्तिस्वरूपि-  
(न>) गी - गीम् विद्या २.  
इच्छाशक्त्या (क्ति-आत्मक>)  
त्मिका - -काम् विद्या १.  
इच्छा-सिद्धि - -द्धिः आथ ३९३;  
८; ३९९: २.  
इष्ट, ष्टा - -ष्टः अघ्या ५६; गी १८,  
६४; -ष्टम् त्रिवा २, ५९; नि ५२;  
त्रिवि ५, ४<sup>c</sup>; महा ३, २९; ३०;  
नाप ३, ६३<sup>d</sup>; १अव २०; सार  
२५०: १३; शि ३, १२; ६, ३८;  
व ४३७: ५; ४६५: १; सांका  
४; १३; गी १८, १२; -ष्टा त्रि  
६; -ष्टा: गी १७, ९; -ष्टान् गी  
३, १२; -ष्टे लिं ३११: ८; -ष्टेषु  
मै ३, ५; मैत्रि ३, ५.  
इष्ट-काम - दुह - -धुक् गी ३, १०.  
इष्ट-तम - -मम् गोउ ३.  
इष्टतम - वस्तु-पात्र-देहा-  
(ह-आ) दि - दि सार २२७: १४.  
इष्ट (द>) दा - -दाम् १योत  
१०५.

इष्ट-देवता - -ताम् १योत ३६;  
व ४३४: २१.  
इष्टदेवता-संप्रयोग - -गः  
योम् २, ४४.  
इष्ट-प्राणा (ण-अ-) भाव - -वेषु  
लिं ३११: ७.  
इष्ट-फल - -लम् प्र ४, ४.  
इष्ट-विपत्ति - -त्तिषु भव १, २८.  
इष्ट-विषय - -ये त्रिवि ५, ४; ससा  
१, १८.  
इष्ट-संसिद्धि - -द्धये रार ४, १२.  
इष्टा (ष्ट-अ) निष्ट-शब्द - -संज्ञ-  
-ज्ञा: गर्भे १<sup>d</sup>.  
इष्टा (ष्ट-अ) निष्टो (ष्ट-उ) पपत्ति -  
-त्तिषु गी १३, ९.  
इष्टा (ष्ट-अ) र्थ - -र्थे रार २, ३;  
८२; ९६; सर २, १-३.  
इष्टार्थ-सिद्धि - -द्धये व  
४३६: १.  
एषणा - -णे वृ ३, ५, १; ४, ४, २२.  
एषणा-त्रय -  
एषणात्रय-वत्<sup>e</sup> - -वान् ते  
३, ४६.  
एषणात्रय-वासनात्रय-  
ममत्वा (त्व-अ) हंकारा (र-आ)-  
दिक - -कम् पप ४१८: २.  
एष्टय - -व्या: इ १९: १३.  
इज्या - , इज्यमान - / यज् द.  
इडा<sup>f</sup> (> ता)<sup>g</sup> - -डया ध्या २०; १योत  
३७; ३९; ४१; त्रिवा २, ९६;  
योशि १, ९३; योचू ९८; शां १,  
५<sup>h</sup>; ६; ७, १; १४; ४८; यो १,  
२४; २७; ३७; जाद ५, ७<sup>h</sup>; ९; ६,  
३; ९<sup>i</sup>; २७; २८; -डा वृ ६, ४,  
२८; लु १६; ध्या ५२; ५५; त्रिवा  
२, ७०<sup>i</sup>; योचू १६; १८; शां १,  
४<sup>i</sup>; योशि ५, १८; ६, ६; भा १४;  
जाद ४, ७; १३; १९; प्रा ३, १;

a) 'इच्छति' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । b) तैश्चात्रा १०, ६७ । c) 'सृष्टम्' इति अघ्या. । d) 'निष्टाः' शब्द<sup>o</sup>  
इति आन. । e) नेष<sup>o</sup> इति मुपा. नैष<sup>o</sup> इत्येवं सु-शोधः । f) व्यु. वैपश् यद. । g) 'इडायाः' इति अघ्या. संति. ।

४, १; सौ ३, १; कृपु १६; योरा  
१२; -डाया: जाद ४, १४; ३५;  
४६<sup>a</sup>; -डायाम् शां १, ४; योशि  
५, १९; यो १, १०; जाद ४,  
३९; ४०; ४१<sup>b</sup>.

इडा(डा-आख्य)>ख्या-ख्या वरा  
५, २६.

इडा(डा-आ)दि-मार्ग-द्वय-यम्  
शां १, ७, ३७.

इडा-पिङ्गला-लयो: जाद ४, ४२;  
वरा ५, ६७; शां १, ७, ४१; योशि  
६, ९.

इडा-पिङ्गला-सुषुम्ना-ज्ञा: ध्या  
५५.

इडा-पिङ्गला-सौषुम्न-ज्ञा: योचू २१  
इडा-पृष्ठ-भाग-गात् शां १, ४.

इत्<sup>c</sup> के ४, ४<sup>d</sup>; तै ३, १०, ६; छां ३,  
१७, ७९<sup>e</sup>; वृ १, ३, १०; ५, २३;  
श्वे २, ४९<sup>f</sup>; वृजा ६, १२९<sup>g</sup>; चपू  
२, १८९<sup>h</sup>; राउ ५, २९९<sup>i</sup>; नी  
१, ६९<sup>j</sup>; रशिसं ३३९<sup>k</sup>.

इतर<sup>l</sup>, रा-र: ऐ ४, ४; वृ १, ४,  
४<sup>m</sup>; २, ४, १४<sup>n</sup>; ४, ५, १५<sup>o</sup>; गौ १,  
२९; कौ २, १५; मना २, ४६९<sup>p</sup>;  
सुबा २<sup>q</sup>; १योत २८; नाप ३, ४;  
महा २, ११; अन्न २, ४; रत्न<sup>r</sup> गौ  
३, २३; महा ४, २४; योशि ४, ३;  
९<sup>s</sup>; अन्न ५, ८; मु २, २, ७; ब १३;  
सांसू ३, ७; ६४; ब्रसू ३, ४, ३९;  
-रम् वृ २, ४, १४<sup>t</sup>; ४, ५, १५<sup>u</sup>;  
शां १, ३, ५; -रयो: पै २, ३२; ब्रसू  
२, ४, २१; -रस्मिन् प्र १, १२;  
शां १, ३, ४; -रस्य इ १३: ५;  
सांसू ३, ५; ८; २७; ब्रसू ४, १,  
१४; -रस्या: वृ ६, ४, १९; सांसू  
३, ४२; -रा वृ १, ४, ४<sup>v</sup>; सुबा २<sup>w</sup>;

-राणि तै १, ११, २; ३; ऐ ५,  
३<sup>x</sup>; वृ १, ३, २८; मै ४, ३; पित्र  
६, ४; -रात् सांसू ३, ४५; ८४;  
-रान् प्र ३, ४; छां १, २, ९; ५,  
१, १२; शौ ५१: ५; -राम् अक्षि  
१०; -राय या २, १; पै ४, ५;  
-रे प्र १, १२; २, ४; वृ ४, ४, १४;  
श्वे ३, १०; ब्र ३, ३; ते १, ४५;  
नाप ३, ८३; अन्न ४, ३६; पाशु  
२, ३३; पत्र ३, ७; रुह ४९; -रेण  
क २, २, ५; मुद्र २; अन्न ५, ९७;  
-रेभ्य: ब्रवि ४८; शि ४, ४५;  
-रेषाम् क २, २, १२; १३; श्वे ६,  
१२; ब्र ३, ८; अशि ५, १७;  
त्रिब्रा २, ६७; पत्र ३, ११; गोपू  
१९; २०; वटु ३१३: २; स  
३७८: १३; गु ४४; -रेषु भव १,  
३६; -रौ बा ६; ब्रसू १, २, २२.

इतर-कला-कलन-नम् अन्न  
१, १९.

इतर-त्र शां १, ७, ३७; योसू १, ४;  
ब्रसू ३, ३, ३९.

इतर-था जा ४; शु ३, ११; नाप ३,  
७७; पप ४१८: ४; या १, १;  
सांसू ५, ४.

इतर-परामर्श-शाल् ब्रसू १, ३, १८.

इतर-लक्षण-शू(न्य)>न्या-न्या  
ससा १, ४०.

इतर-लाभ-भे सांसू ४, २२.

इतर-वत् ब्रसू ३, ३, १६; ३७.

इतर-वियोग-

इतरवियोग-वत् सांसू ५, ८२.

इतर-व्यपदेश-शात् ब्रसू २, १,  
२१.

इतर-शास्त्र-प्रवृत्ति-त्ति: नाप ५,  
१; १संन्या २, ५९.

इतर-हान-नेन सांसू ३, ४५.

इतरा(र-अ)धिकार-रात् ब्रसू  
२, ३, २१.

इतर(र-इ)तर-प्रत्यय-

इतरैतरप्रत्यय-स्व-स्वात् ब्रसू  
२, २, १९.

इतर(र-इ)तरा(र-अ)ध्यास-सात्  
योसू ३, १७.

इतर(र>)रा<sup>m</sup>-

ऐतरेय<sup>n</sup>-य: छां ३, १६, ७; -यम्  
मु १, १, ३०.

ऐतरेय-कौषीतकि-नादविन्द्व-  
(न्दु-आ)त्मप्रबोध-निर्वाण-मुद्र-  
ला(ल-अ)भ्रमालिका-त्रिपुरा-  
सौभाग्य-बहुच-चानाम् मु १,  
२, १.

इतस्, इति, इति इदम्-द्र.

इतिहास<sup>o</sup>-स: वृ २, ४, १०; ४, १,  
२; ५, ११; मैत्रि ६, ३२; ३३;  
इ १०: १; १२; ११: ९; १८:  
१९; -सम् इ १०: ३; ६; ७; ९;  
१०; -सा: स्व ६०: ४; -से जाद  
२, १२.

इतिहास-पुराण-ण: छां ७, १, ४;  
-णम् छां ३, ४, १, २; ७, १, २;  
२, १; ७, १; २प्र ३३: ४;  
-णानाम् अशि ७, ५; पै ४, २३;  
राउ ५, ४; महा ६, ८३; ता ३,  
९; च २१: ११; २शिसं २७.

इतिहासपुराणा(ण-आ)ख्य-  
-ख्यम् सी २९.

इत्थम्, इत्था इदम्-द्र.

इत्या-√इ द्र.

इदम्<sup>p</sup>-

इअ, आ-अस्मात् के १, २; २, ५;  
क १, २, १४; मुं २, १, ९; तै २,

a) 'इड्या' इति अञ्जा. । b) 'इडाया:' इति अञ्जा. । c) व्यु. वैपश् यद्र. । d) 'इति' इति निसा. ।  
e) अ ८, ६, ३० । f) मा ११, ४ । g) अ १, १६४, ३९ । h) कौ ३, १, ९ । i) मा १६, ४ । j) अ १०, १२१, ३ ।  
k) अ १०, १८, १ । l) स्वयोर् अद्वयदेश: (पा ७, १, २५) । m) व्यु. ? । n) अस्य च पाप्र. अन्वेतददेशभूताना-  
मवान्तराणां सतां प्राति. च व्यु. वैपश् यद्र. ।

८, १, ५; ३, १०, ५; ऐ ४, ६; वृ  
१, ३, ९; ३, २, ११; ८, १२; मना  
२, १२, १९; अस्मिन् प्र ३, १;  
३; ४, १; ऐ २, १; छां १, ९, ३;  
४; ८, ९, १, २; वृ १, ३, १८;  
५, १७; २, १, १०; १२; धे १,  
६; ५, ३; गर्भ १; कौ ३, २;  
३; मै ५, ३; मैत्रे १, २; मना  
२, १२, २९; द्यु ३, ३; अस्मै  
तै १, ५, ३; छां १, ३, ७; १२; वृ  
१, २, १; कौ २, १; ६; शा ३, ४, ९;  
इ १०; ३; व ४, ४, ७; ४, ९; कश्चु  
१, १; अस्य ई ५; के २, १;  
क १, १, १५; २२; २, ७; २०, ९;  
प्र ३, ११; सुं २, १, ४; २८;  
मां १०; ऐ ४, १; ४; छां १,  
८, ७; धे ३, २०, ९; मै २, ४;  
४, ३; अस्याः छां ४, १७, ८; वृ  
१, ३, ९; ४, १, ५; मै ५, ६; मैत्रि  
६, ६; कौ ३, ५, ९; योचू ३, ३;  
यो २, १; महा ४, ११४; ११५;  
अक्ष १, १०; अक्ष ४, ५५;  
अस्याम् ऐ २, ५; छां ३, १२, २;  
वृ २, ५, १; ८; मन्त्रि ८; अक्ष २,  
१४; सार २५५; १२; गु ५; चू  
८; गी २, ७२; अस्त्यै वृ २, ५,  
१; ८; आभिः क १, १, २५; कृ  
२५; बार ०; पित्र ६, ११; आभ्यः  
छां ८, ६, २; आभ्याम् राप् ३, १;  
आसाम् प्र ६, ५; छां ४, १७, ८;  
६, १२, १; वृ १, ३, १०; २, ५, २;  
मना २, ४०, ९; राप् १, ८; महा  
५, २६; सार २५०; ४; तारा ८, ३;  
९; आसु प्र ३, ६; छां ८, ६, २;  
३; वृ २, ५, २; ६; महा ५, ४२;  
एभिः छां १, ४, २; ११, २; वृ १,

३, २२; शां १, ७, ३६; महा ६,  
४१; योशि १, ११; अक्ष ४, ८४;  
१योत १३; रुह २४; गु ८२;  
गी ७, १३; १८, ४०; एभ्यः ऐ  
३, १; छां १, २, १३; ९, १, ३;  
११, ३; वृ १, ४, १६; कौ ३, ९;  
२प्र ३६; १०; गी ३, १२;  
एषाम् के ३, २; प्र २, १; ऐ ४,  
३; छां १, १, २; ४, १७, ८; वृ १,  
४, १०; ५, २२; ३, १, १; ६, ४, १;  
धे १, २; कुं १४; नि ३; वृज  
७, १२; एषु वृ १, ३, १; ३, ९,  
८; ५, १४, १; राप् ४, ३, ४;  
२अन, ना- -नया वृ २, ४, १; ४,  
५, २; नाप ५, २४; योचू ३, ४;  
मुद्र १, ४-६; महा ३, ५; -नयोः  
योशि ४, ११; गी २, १६; -नेन  
के ४, ५; ऐ शां; छां १, २,  
१; ३, १६, ७; वृ १, २, ७; ३, १७;  
४, ७; ५, १७; जा ४; आरु ३;  
मै २, ९; वृजा ३, २०; त्रिता १,  
५३; काला ७.  
अयम्- -यम् के ३, १; क १, १,  
१६; २०; सुं २, २, १०; ३, २, ३;  
मां २; ८; तै १, ५, १; २, १, १;  
ऐ २, २; छां १, २, ७; ३, २;  
वृ १, २, ७; जा ५; पदं १;  
कौ १, ३.  
इत्स(>) ई २; छां १, १०, २;  
ऐ ४, ४; वृ १, ३, २४; ५, १७;  
अद्वै ९; आपे ७; ३; छाग २५;  
१; २; बा ५; सार २४३; २२;  
२५९; ११; कश्चु २, २.  
इति ई १०; १३; के १, ३; क १,  
१, ४, ९; प्र १, १; सुं १, १, ३;  
मां ८; तै १, २, १; ऐ १, १, ३;

छां १, १, १; वृ ३, ९, २८; त्रिता  
१, ५८.

२०इति

इत्यादि-ति-आदि- -दि त्रिता २,  
१; २६; २८; ३०; ३३; सौ १, २;  
-दिना त्रिता १, ३५; ५४; २, ११;  
१२; १४; २७; -दिभिः वृजा २,  
११; ७, ८; भ २, २; -दौ महा  
४, ५४.

इत्यादि-कल्पना- -नाम् घ्या  
९३, १२.

इत्यादि-कृता(त-अ)भि-

(ध>)घा- -घा महा ५, १००.

इत्यादि-चेष्टन- -नम् त्रिवा  
२, ८४.

इत्यादि-द्वा-त्रिंशद्(त-अ)-  
क्ष(र>)री- -रीम् त्रिता १, ३७.

इत्यादि-नाना-पु(र>)री-  
-री राधा ४, ७.

इत्यादि-नाना-सखी- -ख्यः  
सार २८२ : १२.

इत्यादि-पञ्च-ब्रह्म-मन्त्र-  
-न्त्रैः भ १, ५.

इत्यादि-प्रकार- -रेण सी १४.

इत्यादि-मन्त्र- -न्त्रेण वृजा  
३, २६.

इत्यादि-महा-वाक्या-  
(क्य-अ)र्था(र्थ-अ)नुभव-  
ज्ञान- -नात् नि ५३.

इत्यादि-वाक्य-विचार-

-रः म ४८; ९; १५; ४९; ४; ११.

इत्यादि-वाचक-वाच्य-

-च्यः त्रिवि १, ११.

इत्यादि-वाच्य- -च्यम् नि १४

इत्यादि-व्यवहार- -रः १अव  
१८.

a) तैआ १०, १०, १। b) अ ४, ५८, २। c) विघ २९, १०। d) अ १, ९१, २०। e) एकतरत्र  
'अस्माः' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः। f) 'अस्य' इति अज्या.। g) अ ४, ५८, ५। h) तु. सस्थ. ?द्विं।  
i) 'एषा' इति निसा.। j) 'एषः' इति आन. अज्या. च। k) तैआ ३, ११, ८, १। l) 'एवम्' इति अज्या.। m) यनि.  
एकाऽनकपूर्वपदयुक्तमिति कृत्वैव नाप्, पृथक्कृतं द्र.।



इत्यादि-स्थान- -नेषु वृजा  
४, २९.

इत्याद्य(दि-अ)न(न्-अ)-  
न्ता(न्त-आ)कार- -रेण त्रिवि  
७, ५०.

इत्याद्यु(दि-उ)पनिषत्-का-  
रण- -णात् रु ११.

इत्या(ति-आ)दि(क>)का- -का  
महा ४, ४५.

इत्या(ति-आ)द्य, द्या- -द्याः सौ १,  
११<sup>a</sup>; -द्यान् शि ६, २०८; ७, ८०.

इत्ये(ति-ए)वमा(म्-आ)दि-  
-दिम् २प्र ३६ : १७; २०; २२;  
३७ : १.

इत्ये(ति-ए)वमा(म्-आ)दिक-  
-कम् शि ४, ६०.

इत्ये(ति-ए)वमा(म्-आ)द्य-  
-द्यान् शि ६, ६१.

इत्यम् छां ५, १०, १; ७, ५, २; वृ १,  
३, ८; वृजा २, ९; वृज ९, ९;  
ससा १, ४२; त्रिब्रा २, ११९;  
वरा ५, ६; सी ३२; अध्या ३३;  
महा ५, ६९.

इत्थं-विद्- -वित् कौ १, ३९<sup>b</sup>; ५.  
इत्थं-भूत-मति- -तिः अत्ति  
१४.

इत्था क १, २, २५; आर्षे ९:४; बा  
२; ६; ७; ११; १८; छाग २३:  
५<sup>c</sup>; शौ ५२:२१; इत्था-इत्था  
आर्षे ७:११; २१.

इदम्- -दम् ईशा<sup>d</sup>; के १, ४<sup>e</sup>;  
५<sup>f</sup>; क १, १, २९; प्र २, १३;  
सुं १, १, ३; मां १:११; तै १,  
७, १; ऐ १, १; छां ५, २, १; २४,  
१; वृ शां<sup>g</sup>; १, २, १; ५.

इदं-रूप- -पः वृ १, ४, ७<sup>h</sup>.

इदं-द्र- -द्रः ऐ ३, १४<sup>i</sup>; -द्रम्  
ऐ ३, १४.

इदं-पारा(र-अ)यण- -वश-  
-शात् पारा १०.

इदं-भाव- -वः अध्या ४५.

इदं-मय- -यः वृ ४, ४, ५.

इदानीम् वृ ५, १४, ४; मैत्रि ७, ८;  
वृजा ६, ५; शु १, ३; त्रिब्रा २४;  
मं २, ४, ४; महा २, ३६; पप  
४१७ : २; यो १, १९; सु १,  
१, ५.

इम, मा- -मम् क १, ३, १७; २,  
१, ५; प्र ६, १<sup>j</sup>; सुं १, २, १०;  
छां १, ३, २<sup>k</sup>; ५, ११, २; वृ १,  
२, ५; ३, ७; मना १, १३९<sup>l</sup>; २,  
३९९<sup>m</sup>; कौ २, ९; तै १, ३८;  
नाप ३, ४२; ४७; -माः क १, १,  
२५; २, २, १५; प्र १, ३; १४;  
२, ७; सुं २, २, १०; तै १, ३,  
४; छां ४, २, ५; ४, ५; वृ १, ३,  
१५; ५, २०; मै ५, २; ७; मैत्रि  
६, २; मना १, १४९<sup>n</sup>; सुबा ६;  
-मान् तै ३, १०, ५; ऐ १, २;  
छां १, १०, ४; वृ ५, ४, १; १४,  
६; मै ५, ७; मैत्रि ६, ७; मना  
१, १०९<sup>o</sup>; २प्र ३३ : १९; शौ  
५३ : २०; वटु ३१७ : २; गार  
४०५ : २१; गा १९; गी १०,  
१६; १८, १७; -मानि तै ३, १,  
१; २, १; ऐ ५, ३<sup>p</sup>; छां १, ९, १;  
११, ५; ७; ९; २, ९, २; वृ २, ४, ६;  
४, ५, ७; मै २, ९<sup>q</sup>; ५, ७; मैत्रि ६,  
७; सू ७; त्रिता ५, २१; -माम् के  
१, १; क १, १, १६; १७; छां ३,  
११, ६; वृ ६, ४, ९; मैत्रे १, १;  
त्रिवि २८; नाप ६, २९; महा ५,

२१; योशि ३, १०; त्रिता १,  
७२; यो २, २; २२; -मे सुं २, १,  
८; ऐ १, ३; ३, १; ४, ३; छां १,  
७, ६; वृ १, २, ७; ६, १, ४; ७;  
श्वे ४, ८९<sup>b</sup>; मना १, २९<sup>i</sup>; २,  
१२, १९<sup>j</sup>; वृजा ६, १२९<sup>k</sup>; राउ ५,  
२९९<sup>l</sup>; -मौ छां ८, ८, ३; वृ २,  
२, ४<sup>m</sup>; वरा ४, ४२; गी १५, १६.

इयत्-

इयदा(त-आ)मनन- -नात् ब्रस्  
३, ३, ३४.

इयम्- -यम् क १, १, २०; तै २,  
८, १; छां १, १, ९; ६, १<sup>n</sup>; वृ  
१, ४, ४; मै २, ३; शु १, १५;  
योचू ५५; ७०; शां १, ७, १५;  
महा ३, ८; अन्न ४, ६६.

इह ई २; के २, ५<sup>o</sup>; क १, १, १६; सुं  
१, १, ७; ऐ ३, १३; छां १, १२, ३;  
५<sup>p</sup>; वृ १, २, १; मना १, १०९<sup>q</sup>;  
कौ १, २<sup>r</sup>; वृजा २, ९.

ऐहिक- -कम् रार ४, ११;  
ब्रस् ३, ४, ५१; -केषु रार ४, १०.

ऐहिका(क-आ)मुष्मिक-  
-कम् व ४६५ : १३.

ऐहिकामुष्मिक-वा-  
त-सिद्धि- -द्वयै १अव ९.

ऐहिकामुष्मिक-सु-  
ख-श्रम- -मम् पप ४१८ : २.

ऐहिकामुष्मिका-  
(क-अ)पेक्ष- -क्षः नाप ५, १.

इह-कार<sup>r</sup>- -रः छां १, १३, १.

इह-लोक-

ऐहलौकिक- -कम् राउ ५,  
११.

इहा(ह-अ)मुन्न-विवर्जित- -तः  
तै ४, ७२.

a) इत्या<sup>o</sup> इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । b) °विध् इति अज्या. । c) 'इच्छा' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. वे.) । d) ऋ १०, ७५, ५ । e) तैआ १०, ५०, १ । f) निसा. च सा. (तैआ १०, १, १४) संमतश्च 'इमान्' इति पाप्मे. यनि. सु-शोधः (तु. सस्थ. टि. अपि, आ, रजस्व(स्-व)->-स्वस्) । g) तैआ १०, १, १० । h) ऋ १, १६४, ३९ । i) तैआ १०, १, २ । j) तैआ १०, १०, १ । k) खि ५, ८७, ९ ।

ईदम्- -इक् छाग २५:९; गी ११,४९.  
 ईद(श्)>क्-वेष्ट- -ष्टः नाप ५,५.  
 ईदम्- -शः वृ ३,५,१; मै २,३; मैत्रि २,३; वृजा ६,७; महा ३,३; -शम् महा २, १८; योशि १,२४; ४९; अञ्ज १,२; सु २, २, ७२; गी २, ३२; ६, ४२; -शस्य मै २,५; -शाः क १, १, २५; छां ४, १४, २; -शो योशि १,७३; -शोन मै २, ४; मैत्रि २, ४१; ५.  
 ईदम्- -शी महा ५, १११.  
 ईदम्(श-ई)श्वर-सिद्धि- -द्धिः सांस् ३,५७.  
 √इष्ट>न्व, ऐधीत्<sup>१</sup> बा १५.  
 इष्ट, द्वा- -द्धः मैत्रि ७,७; -द्धम् चू १; -द्धा महा ४, १६; ५, ११२; ६, ७८.  
 इष्टम्- -ध्मः वृ ६,३, १३; -ध्मम् मना २, ८०<sup>१</sup>; मुद्र २.  
 इष्टम्- -न्वः वृ ४, २, २९<sup>१</sup>; -न्वम् वृ ४, २, २९<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ३५.  
 इष्टम्- -न्म् महा ३, ४४; या २, १०; शि ६, २८३; -नानाम् शि ४, ६२.  
 इष्टम्-योनि-गृह- -द्वाः श्वे १, १३.  
 इष्टम्- -नः मना २, ५०<sup>१</sup>.  
 इष्टम्- -धांसि गी ४, ३७.  
 इष्टम्- -नाम् राप् ४, ५२; -नेन वड ३, ७.

√इन्दु  
 इन्दि>)न्दी-  
 इन्दी-वर-  
 इन्दीवर-दल-प्र(ख्य)>-  
 ख्या- -ख्या शां ३, १.  
 इन्दु- -न्दवः महा ४, १७; -न्दुः मना १, १५<sup>१</sup>; मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; ध्या ८८; योच ६२; गोपू २५; योशि १, १३३; वड २, १; -न्दुम् रशिसं १६; -न्दोः यो २, २०; त्रि ४; व ४२७:१२.  
 ऐन्दव- -वेन त्रिता ३, १९.  
 इन्दु-खण्ड- -ण्डम् पीछ २१:८.  
 इन्दुखण्डा(ण्ड-अ)न्त-  
 मौलि- -लिम् व ४२६:१२.  
 इन्दुखण्डा(ण्ड-अ)व-  
 व(ड)>द्वा- -द्वाम् व ४२७:१.  
 इन्दु-मण्डल- -ले अञ्ज ४, ९.  
 इन्दी(न्दु-ई)श-घात्र(तृ-अ)-  
 नन्त- -न्ताः राप् ४, ३८.  
 इन्द्र- -न्द्र वृ ६, ४, २३; मना १, ११<sup>१</sup>; २, २९<sup>१</sup>; कौ २, ११<sup>१</sup>; वड ३१६:१४<sup>१</sup>; व ४३८:२२; ४६१:१८<sup>१</sup>; ४६३:२२<sup>१</sup>; वपू १, ४९<sup>१</sup>; -न्द्रः के ४, २; ३; क २, ३; प्र शां<sup>१</sup>; २, ९; सुं शां<sup>१</sup>; तै शां<sup>१</sup>; १, १, १; ४, १; १२, १; २, ८, १; ऐ ३, १४<sup>१</sup>; छां ८, ७, २; ९, १; वृ १, ४, ११; ५, १२; २, १, ६; २, २; ५, १९; ३, ३, २; ९, २; ६; ४, २, २; गौ ३, २४; अशि शां<sup>१</sup>; २, ३; अ शां<sup>१</sup>; कै १,

८९<sup>१</sup>; मना १, ९<sup>१</sup>; १०<sup>१</sup>; १२<sup>१</sup>; २, ८<sup>१</sup>; १२, ३९<sup>१</sup>; १३, २९<sup>१</sup>; २, ४२<sup>१</sup>; ४४<sup>१</sup>; ५५<sup>१</sup>; ६८<sup>१</sup>; मै ४, ४, १२; ५, ८; मैत्रि ५, १; ६, ८; ३३; ७, २; ११; कौ ३, १<sup>१</sup>; २; ४, ७; २०; वपू शां<sup>१</sup>; १, ८९<sup>१</sup>; २, १४; १७<sup>१</sup>; योच ७२; वृजा शां<sup>१</sup>; ४, २२; नि ५, २०; नाप शां<sup>१</sup>; ४, ३८<sup>१</sup>; त्रिवि शां<sup>१</sup>; २, १६; शां शां<sup>१</sup>; ३, १; त्रि ८; अव्य ५<sup>१</sup>; ६; ए १२; अध्या २०; पाशु शां<sup>१</sup>; १, ११; २९; दे शां<sup>१</sup>; २; भ शां<sup>१</sup>; १, ९; २, १०<sup>१</sup>; २७; ग गोपू सी श रार राप् पप अञ्ज सू १ आ पत्र त्रिता भा मव ह दत्ता अभि पहे शां<sup>१</sup>; कृ शां<sup>१</sup>; ८; गरु शां<sup>१</sup>; १; २ प्र ३४:१४; बा १; ४:१०; शौ ५१:१; ५, १६; ५२: ११; १२; ५३: ३; ४; ६; २१; सूता १, ५; नापू ३, ६९<sup>१</sup>; कृपु ८; सार २७२: १४; वट ३१३:६; सि शां<sup>१</sup>; हे ७; अज्ञा २<sup>१</sup>; कालि ४०३:७९<sup>१</sup>; गार ४०५:१८; १९; रा ४२३: १९<sup>१</sup>; व ४३८:२१; २२; ४४४: २; ४६०:१९<sup>१</sup>; २१९<sup>१</sup>; ४६४: २९<sup>१</sup>; ४६५: २; अरु २९<sup>१</sup>; ४९<sup>१</sup>; ५९<sup>१</sup>; पित्र शां<sup>१</sup>; वपू १, २<sup>१</sup>; २, ३; वड २, १; २६; ३, ४१; ४, १७; -न्द्रम् के ३, ११; छां २, २२, ३; मना १, ९९<sup>१</sup>; २, ७३<sup>१</sup>; सुबा ९<sup>१</sup>; अव्य ६; आर्षे ९:१७;

a) 'इयेन' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ.)। b) लुङि प्रपु १ (तु. बाटी.)। c) 'इच्छया' इति निसा. सटि., अख्या.। d) तैत्रा १०, ६४, १। e) इन्द्र- इत्येवं प्राति. मौलिकतया यनि. सु-शोधम्। f) तैत्रा १, २, १, १५। g) व्यु. वैपरी यद्र.। h) अ ९, ९७, ४०। i) अ ३, ४७, २। j) तैत्रा १०, १, १६। k) अ २, २१, ६। l) अ ७, ३२, २२। m) अ ८, ६१, १३। n) अ ८, ८१, १। o) अ १, ८९, ६। p) तैत्रा १०, ११, २। q) अ १, ८९, ६; १०, १५२, २। r) तैत्रा १०, १, १०। s) तैत्रा १०, १, १२। t) तैत्रा १०, ६, १। u) अ ४, ५८, ४। v) तैत्रा १०, ४२, १। w) तैसं ३, ३, १, २। x) अ १०, १५२, २। y) तैत्रा १०, ३१, १। z) अ १, ४०, ५। a') तैत्रा ७, ४, १। b') तैत्रा ८, ८, १। c') अ १०, ८३, २। d') अ १०, ८४, ५। e') अ १०, १५७, १। f') अ १०, १५७, २। g') १०, १५७, ३। h') पूष. संधिराषेः। i') अ १०, ८९, ५। j') अ १०, ७३, ११।

चा २०९<sup>a</sup>; शौ ५२:२; ९<sup>b</sup>व  
४३९:४; ४४४:९; ४४९:१८;  
४५३:६; अरु ३२९<sup>c</sup>; -न्द्रस्य  
तै २,८,३;४; छां २, २२, १;३;  
वृ ६,४,२३; मैत्रि ७,९; मना १,  
४९<sup>d</sup>; आरु ३९<sup>e</sup>; नाद १५; नाप  
४,३८<sup>f</sup>; पप ४१८:३१; भ २,  
५; गरु ९; १२<sup>g</sup>-२३<sup>h</sup>; २४; व  
४५५:२२; सांसू ४, १८; -न्द्राय  
मैत्रि ६, ३३; त्रिवि ७, ४७; मना  
१, १२९<sup>i</sup>; २, ६७<sup>j</sup>; सुद्र २<sup>k</sup>;  
गोड ६६; गरु १; आर्षे ९:२१;  
व ४६५:२; -न्द्रे छां २, २२, ५;  
सुबा ५; -न्द्रेण छां ३, ७, १;३;  
वृ ६, ४, २२.

इन्द्राणी- -०णि व ४३१:  
१६; १८; ४४९:१५; ४५८:  
११; सुमु १४; -ण्यै व ४३१:६.

इन्द्राणी-शक्ति- -क्ति:  
आथ ३९४:७.

ऐन्द्र- -न्द्रम् शि ५, ३५;  
७, ८२.

ऐन्द्री- -न्द्री नाद  
१०; व ४५८:५; -न्द्रीम् शि  
५, ३५.

ऐन्द्र-पञ्चम- -मम् शि  
५, ३१.

इन्द्र-गोप<sup>१</sup>- -प: वृ २, ३, ६.

इन्द्रगोप-वर्ण- -णैम् ध्या  
९३, १३<sup>१</sup>h.

इन्द्रगोप-सम-प्रभ- -भ:  
अना ३७<sup>i</sup>.

इन्द्र-जाल<sup>१</sup>- -लम् मै ४, २<sup>j</sup>;  
मैत्रि ४, २; -लेन महा ४, १२९.

इन्द्रजाल-वत् मैत्रि ७, १०.

इन्द्रजाल-श्री- -श्री: महा  
४, ४५; ४९.

इन्द्र-दण्ड<sup>१</sup>- -०ण्ड व  
४३५:१०.

इन्द्र-सुखा<sup>१</sup>- -स्र: छां ५, ११, १;  
-स्रम् छां ५, १४, १.

इन्द्र-नगर<sup>१</sup>- -रम् २प्र ३३:  
१८९<sup>k</sup>.

इन्द्र-नाग-

इन्द्रनाग-भुजगे(ग-इ)न्द्रा-  
(न्द्र-आ)धार- -रम् अव्य ६.

इन्द्र-नील<sup>१</sup>-

ऐन्द्रनील- -लम् सिशि  
३८२:१८.

इन्द्रनील-निभ- -भम् शां  
३, १.

इन्द्रनील-प्रदान- -नेन शि  
६, ९८.

इन्द्रनील-वर्णा(र्ण-आभ>)-  
भा- -भा तारा ८३:१६.

इन्द्र-पराजय-महो(हा-उ)स्स-  
व- -वे सार २५६:७.

इन्द्र-प्रजापति- -ती कौ १, ३, ५.  
इन्द्र-मण्डल- -लम् व ४३८:  
२२; २३.

इन्द्र-मुख्य- -ख्या: श १.  
इन्द्र-योनि- -नि: तै १, ६, १.

इन्द्र-रूप-

इन्द्ररूपिन्- -पिणम् योशि  
५, ५३.

इन्द्र-लोक<sup>१</sup>- -कम् कौ १, ३;  
-का: वृ ३, ६, १; -के सार २४२:  
१४; -केषु वृ ३, ६, १.

इन्द्रलोक-ज्ञान- -नम् शां  
१, ७, ५२.

इन्द्र-वज्र- -ज्र: लु १३<sup>१</sup>.

इन्द्र-सेना- -ना नृप ३, ४; वपु  
२, २.

इन्द्रा(न्द्र-अत्त>)श्री- -०क्षि  
व ४४९:७.

इन्द्रा(न्द्रा-अ)भि- -भी दे १९<sup>m</sup>;  
भ २, २९; गार ४०८:८.

ऐन्द्राभ- -भम् गार ४०७:७.

इन्द्रा(द्र-अ)भि-यम-निर्कृति-व-  
रुण-वासु-कुबेरे(र-ई)शान-  
-नाम् सुमु १०.

इन्द्रा(न्द्र-आ)दि- -दय: मं २,  
५, ४; पाशु १, १०; सूता ५, १२;

बि १२; -दिभि: रार ३, १; लौ  
१, ३.

इन्द्रादि-पद-योग- -ग:  
सांसू ५, ८३.

इन्द्राद्या(दि-आ)वरण-  
-णम् रार ३, १.

इ(न्द्र>)न्द्रा-वत्- -वत: व  
४३७, १२९<sup>n</sup>.

इन्द्रिय<sup>०</sup>- -यम् प्र ६, ४; छां ३,  
१, ३; २-५, २; वृ ६, ४, ५; ६; मना

२, ४४९<sup>o</sup>; ते ३, ४४<sup>१</sup>q; ४, ७; ६,  
३२<sup>r</sup>; सु २, २, २२; वज ३, ८;

सांसू १, ६१; २, २३; सांका २७;  
-यस्य सांसू १, १०८; गी ३, ३४<sup>s</sup>;

-याणाम् क२, ३, ६; मैत्रि ६, २५;  
पहं ४; नाप ३, ३६; ४५; शां १,  
८; शारी १; पाशु २, १३; जाद

७, १; वरा २, ८०; नाड ३, ३;  
भव ५, ८; ९; सांसू २, २९; ५,  
८४; १०४; योसू २, ५४; ५५;

गी २, ८; ६७; १०, २२; -याणि  
के शां<sup>t</sup>; क १, ३, ४-६; छां शां<sup>१</sup>;

a) ऋ १०, ७३, ११। b) ऋ १, ७, १०। c) तैआ १, २७, ५। d) मा ३२, १३। e) आपमं २, ९, ५।

f) तैआ १०, १, १२। g) तैआआ १०, ६७। h) 'कोप' इति सुपा. यनि. सु-सोष:। i) 'पकसंनिभ: इति आन.,  
'कोप' इति अज्या.। j) 'ल:' इति अज्या.। k) ऐन्द्र' इति गोवा १, १, २३। l) 'अम्' इति आन.। m) ऋ  
१०, १२५, १। n) ऋ १०, १०१, १। o) व्यु. वैपरी यद्र.। p) तैसं ३, ३, १, २। q) 'या:' इति सुपा. यनि.  
सु-सोष:। r) 'र्य:' इति सुपा. यनि. सु-सोष: (तु. अज्या.)।



श्व २,८; मै शां<sup>१</sup>; मैत्रि ६,२१;  
३१; मैत्रे आरु शां<sup>१</sup>; अ ३; कौ  
२, १५; वृषू १, ८; वृष ९, ८;  
सुबा २; १४<sup>१</sup>; ससा १, ४२;  
ते ५, ८०; १योत ६८; नाप ३,  
२६; ७४; ४, १; मुद्र २; पै ४,  
२; महा शां<sup>१</sup>; १, १; ५, १२६;  
योचू वा १संन्या अव्य कुं सावि  
रुजा शां<sup>१</sup>; योशि १, ३९; १६४;  
३, १२; जाद शां<sup>१</sup>; ८, ९; १०,  
४; जाबा शां<sup>१</sup>; २२ ३२: ११;  
१४; ३३: १; ४; ८; सार २४०:  
४; २८३: ६; शि १, ११; गु ३२;  
भव २, ११; २२; २७; ३, २५; ४,  
१८; कश्रु ३, ७; वसू २, ४, १७;  
गी २, ५८; ६०; ६१; ६८; ३, ७;  
४०-४२; ४, २६; ५, ९; १३,  
५; १५, ७; -याय मना २, ८९<sup>१</sup>;  
-येण वृ ६, ४, ७; ८; १०; ११;  
-येभ्यः क १, ३, १०; २, ३, ७;  
सार २४३: ९; गु ४१; भव २,  
२०; गी ३, ४२; -येषु सुबा २;  
सांसू २, ३९; -यै: प्र ३, ९; कौ  
२, १५; योचू ८४; अज ५, ३९;  
योशि १, २७; गी २, ६४; ५, ११.  
इन्द्रिय-कर्मन्- -माणि मैत्रि  
६, १०; गी ४, २७.

इन्द्रिय-कृत- -ता: अना ७;  
-वान् जा २<sup>२</sup>; राउ ३, १.

इन्द्रिय-गण- -०णा: अज  
३, ८.

इन्द्रिय-गो-चर- -रा: गी  
१३, ५.

इन्द्रिय-ग्राम- -मम् त्रिवा  
२, १४७; गी ६, २४; १२, ४.

इन्द्रियग्राम-संयम- -म:  
ते १, १७.

इन्द्रिय-घात- -तात् सांका७

इन्द्रिय-जय- -य: योसू  
३, ४८.

इन्द्रिय-तन्मात्र-जाल-  
-लम् अज ३, १५<sup>१</sup>.

इन्द्रिय-ता- -ताम् महा  
५, १२६.

इन्द्रिय-स्व- -स्वात् सांसू  
५, ६९.

इन्द्रिय-धारणा- -णाम् क  
२, ३, ११.

इन्द्रिय-निग्रह- -ह: मैत्रे २,  
२; नाप ३, २४; स्क ११; भव  
५, १२.

इन्द्रिय-पालक- -कान् पै  
१, २५.

इन्द्रिय-प्रवृत्ति- -त्ते:  
अता ९.

इन्द्रिय-प्राण- -णौ वरा ३,  
१२१<sup>०</sup>.

इन्द्रिय-बल- -ले मैत्रि ६,  
२५.

इन्द्रिय-वध- -धा: सांका४९  
इन्द्रिय-वृत्ति- -त्ति: सांसू  
२, ३२.

इन्द्रिय-शक्ति-  
इन्द्रियशक्ति-तसु(>):

सांसू ५, ११३.

इन्द्रिय-शुद्धि-प्रेमन्- -म्णा  
सार २८६: ११.

इन्द्रिय-संयम- -म: शि  
५, ४४.

इन्द्रिय-संघात- -तै: पै  
२, ४५.

इन्द्रिया(य-अ)क्रान्ति-  
-न्ते: महा ५, ७९.

इन्द्रिया(य-अ)भि- -भिषु  
गी ४, २६.

इन्द्रिया(य-अ)त्मन्- -त्मा

सुबा ५; गोउ ६४.

इन्द्रिया(य-अ)दि- -दि: शु  
३, १०.

इन्द्रियादि-भाव-  
इन्द्रियादिभाव-

मय- -या: सार २३७: २१.

इन्द्रिया(य-अ)दिक- -कम्  
ते ६, ५५.

इन्द्रिया(य-अ)न्त- -न्तम्  
मं १, ३, १; अता १०.

इन्द्रिया(य-अ)न्तर- -रे गौ  
२, १५.

इन्द्रिया(य-अ)भाव-  
रूप- -प: ते ३, ३६.

इन्द्रिया(य-अ)राम- -म:  
गी ३, १६.

इन्द्रिया(य-अ)रि- -रय:  
महा ५, ७६; -रीन् महा ५, ८४;  
६, २१.

इन्द्रिया(य-अ)र्थ- -र्थान्  
मैत्रि ६, ८; १०; १९; भव २, १७;

गी ३, ६; -र्थे सार २५७: २;  
-र्थेभ्यः १योत ६८; मं १, १, ७;

गी २, ५८; ६८; -र्थेषु मै ३, ५;  
मैत्रि ३, ५; महा ५, २९; वरा

४, ५; गी ५, ९; ६, ४; १३, ८.

इन्द्रियार्थ-विमूढ-  
-ढस्य मै ४, ४, २; मैत्रि ६, ३४;

मैत्रे १, ४, ४.

इन्द्रियार्थ-श्री- -श्री:  
महा ५, १७४.

इन्ध- , इन्धन- , इन्धान- ✓इध् द.  
इभ<sup>१</sup>-

इभ्य- -भ्यम् छां १, १०, २.

इभ्य-ग्राम- -मे छां १, १०, १.

इम- इदम्- द.  
\*इय<sup>०</sup>-

✓इयाय, इयायते<sup>१</sup> प्र ४, २.

a) तैश्वा १०, ६, ११। b) °तादात्म्यम् जालम् इति अल्पा। c) °-णः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः।  
d) व्यु. वैप१ यद्र.। e) नैप्र. <इर्य- (वैप१ यद्र.)। f) वैतु. आनि. ✓इ इत्यस्य यङ् वृत्तमिति।

इयत्-इयम्- इदम्- द्र.

इ(र&gt;)रा- -रा कौ १,५.

इरं-मद-

ऐरंमदीय<sup>b</sup>- -यम् छां ८,५,३.

इरा-वत्-

ऐरावत्<sup>c</sup>- -तः महा ४, ६४;

-तम् गी १०, २७.

ऐरावत्-पुण्डरीक-वामन-

कुमुदाजन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-

सुप्रतीकाक्ष- -क्षाः नापू ६, १४.

ऐरावत्(त-आ)रूढ- -ढः व

४३८: २१.

इरिण<sup>d</sup>- -णे इ १३: ९.इलले<sup>e</sup> अल्ला १<sup>f</sup>.१इ(ल>)ला<sup>g</sup>-इल्य<sup>h</sup>- -ल्यः कौ १, ३; -ल्यम् कौ १, ५.२इला<sup>i</sup>- -लाम् अल्ला १<sup>j</sup>; २<sup>k</sup>; ३<sup>l</sup>.इले(ला-इ)ला अल्ला ३<sup>m</sup>.इल्ल<sup>n</sup>-

ऐल्ल- -यम् छाग २३: १.

इव क १, ४, ८९<sup>o</sup>; खे ३, ९९<sup>p</sup>; नाप ४,३८९<sup>q</sup>; महा ३, १९<sup>r</sup>; आर्षे ८:२३<sup>s</sup>; ९: १.✓इष्(गतौ<sup>k</sup>)इष्- इषम् अशि<sup>u</sup>, ७; १९; दे<sup>v</sup>५९<sup>w</sup>;सर<sup>x</sup>२, ८९<sup>y</sup>; इषे २प्र३६: १९९<sup>z</sup>.

इषित, ता- -तम्, -ताम् के १, १.

एषितव्य<sup>aa</sup>- -व्यः गौ ४, १६.इषीका<sup>ab</sup>- -काम् क २, ३, १७.

इषीका-तुल- -लम् छां ५, २४, ३.

इषु<sup>ac</sup>- -षवः नी २, ९९<sup>ad</sup>; १३९<sup>ae</sup>;२२९<sup>af</sup>; -षवे नी १, ४; -षुः नी १,७९<sup>ag</sup>; -षुणा मैत्रि ६, २८<sup>ah</sup>; -षुभिःत्रि १३; गी २, ४; -९<sup>ai</sup>षुम् खे ३,

६; नी १, ५.

इषु-कार-

इषुकार-वत् सांसू ४, १४.

इषु-क्षेप-त्रय- -यम् १संन्या २, ११

इषु-धि<sup>aj</sup>- -धिः नी २, १५९<sup>ak</sup>.

१इष्ट- ✓इच्छ, इष् द्र.

२इष्ट- ✓यज् द्र.

इष्टक, का<sup>al</sup>- -काः क १, १, १५; मैत्रि६, ३३<sup>am</sup>; -कानि शि ५, ७;-९<sup>an</sup>के मना १, ८; व ४६४: ८.ऐष्टक- -कम् कौ २, ६९<sup>ao</sup>; शि

४, ११.

इष्टवत्-इष्टा-पूर्त-इष्टा-पूर्ति-इष्टा-

सुकृत-इष्टि-इष्ट्वा/यज् द्र.

इह इदम्- द्र.

ई

१ई<sup>ap</sup> व ४२९: ७; ११; १५; २०; ४३०:

३; ८.

ई-कार- -रः छां १, १३, १; सी

३; -रम् त्रिता १, २६; ६५.

ईकार-रूप-

ईकाररूपि(न्&gt;)णी-

-णी सी ५; ६.

ईकारा(र-आ)क्षर- -रम् त्रिता

१, २७.

ईतस्(&gt;) गोपू २५.

ई गरु ६; त्रिवि ७, ३६; नृपू ३, ४;

आथ ३९४: ३; व ४२८: १; २<sup>aq</sup>.

ई-कार- -र अत् ५.

ईकार-प्रथमा(म-आ)क्षर-

-रः व ४५६: २०.

ईकार-स्व-रूप- -यम् सुमु ५

२ई<sup>ar</sup>- ईम् पा ५, ३.✓ई, ईयते वृष्ट, ३, १२; सूता १, १४९<sup>as</sup>;

श्या २१.

ईयमान- -नः वृ ४, ३, १३.

✓ईच्, ईक्षते प्र ५, ५; शु ३, १; नाप ६,

१९; गी ६, २९; १८, २०; ईक्ष-

न्ति मैत्रि ७, १-६; ईक्षसे पित्र

५, ८; ६, २; ईक्षत<sup>at</sup> ऐ १, १; ३;३, १; ११<sup>au</sup>; ऐक्षत छां ६, २, ३<sup>av</sup>;

३, २; वृ १, २, ५; ऐक्षत् क २,

१, १; ऐक्षन्त के ३, १; छां ६, २,

४; नृड ६, १; ईक्षेत महा ४,

८०; वरा २, १८.

ईक्षण-

ईक्षणा(ण-आ)दि-प्रवेशा-

(श-अन्त&gt;)न्ता- -न्ता वरा

२५४; महा ४, ७३.

ईक्षति- -तेः ब्रस् १, १, ५.

ईक्षति-कर्म-व्यपदेश- -शात्

ब्रस् १, २, १३.

ईक्षमाण- -णः मै १, १; मैत्रे १, १.

\*ईक्षा-

\*ईक्षां/कृ, ईक्षाञ्चके प्र ६, ३;

वृ १, ४, २; ४; ६, ४, २.

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) वैतु. शं. (इरा->) ऐर-> -रम् इति च (मद->) मदीय-> -यम् इति च द्वे पदे इति । c) अर्थतोऽसंबद्धं सद् मुहम्मदीय-देवनमस्कारीयशब्दविशेषानुकृतिमात्रं द्र. । d) =इरा । e) प्राति. ? (तु. PW. प्रभृ; वैतु. निसा. ?तिल्य- इति) । f) व्यु. ? MW. <✓इल् इति । g) ऋ ३, २९, २ । h) तैआ १०, १०, ३ । i) तैआ ७, १०, १ । j) 'एव' इति अज्या. । k) अयमर्थनिर्देश इच्छेतराऽर्थसामान्यस्योपलक्षकः [तु. वैप१, टिटि. ✓अश् (व्याप्तौ), ✓अस् (भुवि)] । l) ऋ ८, १००, ११ । m) मा १, १ । n) वैतु. MW. <आहपूर्वात् प्रधा. इति । o) मा १६, ९ । p) मा १६, १० । q) मा १३, ७ । r) तैसं ४, ५, १, १ । s) मा १६, ३ । t) मा १६, १२ । u) व्यु. ? (तु. यस्था. वैप१; वैतु. पा ६, ३, ६५ मूलतो ह्रस्वान्ततामप्रमाणक इव) । v) मा १३, २१ । w) 'ऐष्टिकम्' इति शांआ ४, ६; JC. । x) =वर्णः । y) =लक्ष्मीपर्यायः (तु. पाटी.) । z) तैआ ३, १२, ९, १ । a') आडभावे लङि रु. द्र. ।

ईक्षितुम् रापू ४, १८.  
 ✓ ईज् > जि, ईजयेत् वृजा ३, ११.  
 ईजान- ईज्यान- ✓ यज् द्र.  
 ✓ ईङ्, ङ्, ईङ्गे त्रि १६; ईङ्गे व  
 ४६०: २९<sup>०</sup>; ईङ्गे द ३; १०; २प्र  
 ३६: १७; वपू १, ४, २, ३.  
 ईङ्ग- ङ्ग: क २, १, ८९<sup>०</sup>; मना  
 २, १९<sup>०</sup>; ब्रवि ९३; श १९; गोपू  
 १९; व ४६१: १६९<sup>०</sup>; ङ्गम्  
 क १, १, १७; श्वे ४, ११; ६, ५;  
 ७; अशि ५, ५; श ३; गी ११,  
 ४४.  
 ईङ्गित- ङ्ग: व ४६०: १९९<sup>०</sup>.  
 ईतस्(>): १ई द्र.  
 ईदृश- ईदृश- इदम्- द्र.  
 ✓ ईप्स्, ईप्सित- ✓ आप् द्र.  
 ईम् व २, ५, १६९<sup>०</sup>; नापू ४, ११९<sup>०</sup>;  
 वपू २, २९<sup>०</sup>.  
 ईयमान- ✓ ई द्र.  
 ✓ ईर > ईरि, ईरयति छां ७, ४, १<sup>०</sup>;  
 ५, १<sup>०</sup>.  
 ईर्यते शु ३, ३; ५, ८; ते ५, ९२;  
 योशि ३, १५; १अव १; नाउ  
 ३, २२.  
 ईर-  
 ईर-ज-  
 ईरजा(ज-आ)दि- दीनाम्  
 रापू ४, ४९<sup>०</sup>.  
 ईरित, वा- त: मैत्रि २, ६; रार २,  
 १९; ६०; ते ५, ९२; जाद १०,  
 ३; अन्न ५, ७७; १संन्या २, ८३;  
 शा १५; रापू ४, ५७<sup>०</sup>; मुद्र १, ९;  
 तम् मै २, ९; ४, ५<sup>०</sup>; मैत्रि ५, २<sup>०</sup>;  
 ते ५, ९५; ९६; १०३; त्रिवा २,  
 ४३; १३९; रार २, ६१; महा ४,

७, ५, ७; अन्न ४, १६; पन्न ३, ६;  
 यो १, ६; रुजा २, १२<sup>०</sup>; वरा १,  
 १२; त्ता मुद्र १, २; गुल ३; मुद्र १,  
 १, १७; त्ता: वृजा ४, १६; मुद्र १,  
 १, ११; त्तानि मै ३, ३; मैत्रि ३, ३.  
 ईर्म- मौ वृ १, २, ३.  
 ✓ ईर्ण्य  
 ईर्ण्या- ण्या मै ३, ५; मैत्रि ३, ५.  
 ✓ ईश्, ईशते श्वे १, १०; ३, १<sup>०</sup>; २, ५,  
 १; अशि ४, २०; ५, ३; नाप ९,  
 ९; शां ३, १; सर ३, १६; वड  
 ३१६: १२; ३१७: २.  
 ईशे श्वे ४, १३९<sup>०</sup>; ६, १७; मना  
 १, २९<sup>०</sup>; बा १२; रशिसं ३३९<sup>०</sup>;  
 ईष्टे छां १, ६, ८; ७, ६; ९; शां ३,  
 १; ईशते वृ १, ४, १०; त्रिता ५,  
 १; व्र २; ईशिषे सूता २, ७९<sup>०</sup>;  
 ईशीमहि आर्षे ७: ८.  
 ईशिष्यसि क १, १, २७.  
 ईश- ईशा ई १.  
 ईशा  
 ईशा-वास्य-  
 ईशावास्य-बृहदारण्य-  
 जाबाल-हंस-परमहंस-सुबाल-म-  
 न्त्रिका-निरालम्ब-त्रिशिखीब्रा-  
 ह्मण-मण्डलब्राह्मणा(ण-अ)द्वय-  
 तारक-पैङ्गल-भिष्णु-तुरीयातीता-  
 (त-अ)ध्यात्म-तारसार-याज्ञव-  
 ल्क्य-शाव्यायनी-मुक्तिका-  
 कानाम् सु १, २, २.  
 ईश- श: श्वे १, ८; ५, ३; त्रि १४; कै  
 २, १; मना २, ७१९<sup>०</sup>; अ३; नाप  
 ९, ७; द ८; श २९; पै २, १, ४;  
 ३, १; शां ३, १; योशि ५, ५८<sup>०</sup>; कुं  
 १७; कर ३९; जाबा २, ९; १३;

पा १, ४; ५; बि १५; शि १, १०;  
 भव २, ५; वड ३, २६; ४, २७;  
 ४३; शम् सुं ३, १, २; ३; श्वे ३,  
 ७; २०९<sup>०</sup>; ४, ७; मैत्रि ६, १८; त्रि  
 ९; मना २, १२, १९<sup>०</sup>; वृजा ४,  
 १९; शु ३, १९; नाप ९, १३९<sup>०</sup>;  
 श १८९<sup>०</sup>; नाउ १, ८९<sup>०</sup>; पा ९,  
 ३९<sup>०</sup>; १०, ८; हे ११; पित्र ६, १६;  
 गी ११, १५; ४४; श-शाम्  
 वृजा ४, ३०; श्वे ते २, ४२; श्वेन  
 महा ४, ७३; वरा २, ५४.  
 ईशी- शी गु ६४.  
 ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डू-  
 क्य-तित्तिरि- -रि: सु १, १,  
 ३०.  
 ईश-ता-  
 ईशता-कृत-मति- -ति: शु  
 ३, १०.  
 ईश-स्व- स्वम् सर ३, ३३.  
 ईश-दैवत- -ते शि ६, ७५;  
 ७९.  
 ईश-पार्वती- तीम् रुह २४<sup>०</sup>.  
 ईश-भूत- तम् वड ३, ४.  
 ईश-मानिन्- -निन: गोड ५४.  
 ईश-संस्थ- -स्थ: श्वे ६, १७.  
 ईशा(श-आ)ज्ञा- -ज्ञया पै २,  
 २४; २७; २९.  
 ईशा(श-अ)घिष्ठिता(त-आ)व-  
 रण-शक्ति-  
 ईशाघिष्ठितावरणशक्ति-  
 तस्(>) पै १, ११.  
 ईशा(श-अ)नीश- शौ श्वे १,  
 ९<sup>०</sup>; नाप ९, ८; भव २, ३.  
 ईशा(श-अ)सुरा(र-अ)न्त-  
 न्तम् पी ४२२: ७.

- a) ऋ १०, ८३, २। b) ऋ ३, २९, २। c) ऋ ८, ११, १०। d) ऋ १०, ८४, ४। e) व्यु. वैप१ यद्र.।  
 f) ऋ १, ११६, १२। g) ऋ १०, ७१, ६। h) ऋ ६, १७, २। i) इर<sup>०</sup> इति निसा. अज्या. चमुपा. यनि. सुशोध: (तु-  
 आन.)। j) वैतु. नादी. 'ईरिता' इति क्रिप.। k) 'उदाहृतम्' इति अज्या.। l) ऋ १०, १२१, ३। m) तैआ १०,  
 १, २। n) तैआ ३, ७, ६, २२। o) तैआ १०, ३८, १। p) तैआ १०, १०, १। q) 'ती' इति अज्या.। r) 'ईश-  
 नीशौ' इति आन., JC.।



ईशत्- -शतः सिधिशि ३८१:८.

ईशान- -नाय श्वे ६, १७.

ईशान- -

ईशानी- -नीमिः श्वे ३, १३:२;

अशि ४, २०१:५, ३; वटु ३१६:

१२१:३१७:२.

ईशान, ना- -०न व ४४२:२; -नः

क २, १, १२; १३; वृ १, ४, ११;

४, ४, २२; ५, ६, १; ६, ३, ५३; श्वे

३, १२; १५९:१०; मना

२, २, १९:०; अशि ३, १३९:४;

१९; २२; मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; ७,

१; ७; वृ ९, १०; सुबा ६९:

९: वृजा ३, १; ४, १; वृपू १, १२;

ब्रवि ९३; महा १, १३; ६, ६१;

प्रा १, ५; पं १३; आर्षे ९, १३;

च २०:२; २१:६; नापू १,

११; वटु ३१५:१३; १४; ३१६:

१२९:१४; सिधिशि ३८२:१४;

व ४४२:१; २; ४४७:७; -नम्

क २, १, ५; वृ ४, १५; श्वे ३,

१७; ४, ११; मना २, ४९९:०; अशि

४, २१९:५, ५; अ३; कौ २, ८१;

रुह ९; जाद ९, ३; पं १४; २२;

९: वटु ३१६:१३; १४; गार

४०७:५; ९: व ४४२:७; ४४७:

१४; ४५१:२३; ४५५:५;

९: ना ह १७; व ४४३:२३; -नात्

वृजा १, १; जाबा ५; -नाभ्याम्

वृजा ४, ३०; -नाय शु २, ५;

त्रिवि ७, ४७; प्रा १, ५; गोउ ६६;

-ने वृजा ४, २.

ईशानी- -०नि व ४३१:

१६; ४५१:२०; -नी गु ४९;

-न्याम् ९१: व ४३०:१८; ४४२:

१; ४४७:७; ४५१:२०.

ऐशान- -नम् अशि ५, १२;

२प्र ३४:२३.

ऐशानी- -न्याम् राधा १,

२०; शि २, १८; ६, ८५.

ईशान-कैवल्य- -ल्यम् त्रिवि

५, १२.

ईशान-दल- -लम्, -ले ध्या

९३, ९.

ईशान-दिश- -दिशम् व ४२८:

२२.

ईशानदि(श>)ग्-भाग-

-ने शि ३, २.

ईशान-देवता-

ईशानदेव(ल>)त्या- -त्या

अशि ५, १२.

ईशान-दैव(ल>)त्या- -त्या २प्र

३४:२२९.

ईशान-द्वार- -रम् व ४२८:१.

ईशान-मण्डल- -लम् व ४४२:

२; ३.

ईशान-मन्त्र- -न्त्रेण रुजा १, २१

ईशाना(न-आ)द्य- -द्यैः वृजा

४, १९.

ईशान्य- -न्ये नाप ६, १०; हं

८०; सूता ४, ५.

ईशित- -तम् श्वे ६, २.

ईशित- -ता श्वे ६, ९; गु ६८; भव

२, ४४.

ईशित्-

ईशित्-स्व-

ईशित्-सिद्धि- -द्धिः आथ

३९३:५; ३९६:२३.

ईशित्- -षाणाम् पा ५, ३.

ईशित्- -शिवम् पा ५, ३; -शिषे

पा १, ३; ५, ४.

ईश्वर- -०र योशि १, ७; त्रिवि

७, ३२:१; -रः वृ १, ४, ८; मना

२, २१९:५; वृ २; वृपू १, १२; ४,

१५, ५; वृ १, ८; २, ७; ८; ५,

१; ९, ७:३; नि ४; १४; १६; शु

१, ४; ३, १२; १६; ते ५, ४३;

ब्रवि ६, ९२; नाप ८, १३; त्रिवि

४, १२; राउ ३, ३; योशि १,

१७७; अन्न ३, २०; २४; अन्ति

२५; पाशु २, १३; त्रिता १, १७;

क १५; यो ३, २२; ता १, २;

या २, ४; वरा १, १४; सर ३,

१७; १प्र ३१:१०; स्व ६०:५;

६१:२१; लां २१३:२; रशिसं

२२; शि ७, ३९; स ३७९:७;

कालि ४०२:६; व ४२६:१;

२; १कौल ३:१; भव २, ४१;

वउ ५, ५०; योसू १, २४; गौ ४, ६;

१५, ८; १७; १६, १४; १८, ६१;

-रम् गौ १, २८; वृजा ६, ८; ध्या

१९; १योत २३:९६; नाप ५, ३८;

त्रिवि ५, १४; रार २, १३; जाद

४, ६२; ८, ६; गोपू ८; शि १, १;

६, ४२; ७, ४२; ७४; भव १, ५६;

गौ १३, २८; -रस्य वृजा ७, ५;

६; त्रिवि ४, १२; सर ३, १५;

राधा २, ६; ७; शि ४, ५४; राणाम्

श्वे ६, ७; गु ६६; -राय पा १, १०;

१०, ६; शि ६, ५; ४६; -रेण रापू

४, ६७; क १९; -नौ वृ ६, ४,

१४-१८.

a) भावे कृत् । b) कर्तरि कृत् । c) 'ईशानीमिः' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । d) ऋ १०, ९०, २ । e) तैआ १०, ४७, १ । f) 'ईशान' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. ऋ १०, ९०, २) । g) तैआ ३, १५, १ । h) ऋ ७, ३२, २२ । i) '-०ने' इति आन. । j) ऋ १, ८९, ५ । k) 'विह्वलः' इति मंत्रा १, ७, १५ । l) 'देव' इति गोत्रा १, १, २५ । m) 'ईशाद्यैः' इति अज्या. । n) ऐशानी- > न्याम् इति अज्या. । o) '०ने' इति निसा., आन. । p) इषः प्र. उसं. (पाउ १, ४५) । q) हसिः प्र. उसं. (पाउ २, १०८) । r) -रोम् > -रः ओम् इतीव वा विच्छेदः स्यात् । 'अतरोम्' इति अज्या. तु यनि. सु-शोधः (तु. संदि.) । s) तैआ १०, ४७, १ ।

ईश्वरी- -रि वध ३२:१६;  
री सर २,४; सौ १,३; नापू ५,  
२; रीम् मना १,१०९<sup>b</sup>; त्रिता  
२,३२; रशिसं ३६९<sup>b</sup>; वध ६२:  
१३९<sup>b</sup>.

ऐश्वर- -रम् गी ९,५; ११,  
३; रे चू २.

ऐश्वरी- -रीम्शि ६,१६०

ऐश्वर्य- -र्यम् रापू १,५; ४,  
१६<sup>c</sup>; महा १,१; राउ ५,११; २८;  
योशि २,७; २०; कालि ४०२:  
१; रा ४२४: ४; भव २,३३;  
सांका २३; -र्यात् सांका ४५; -र्ये  
कौ २,१५.

ऐश्वर्य-कामना- -नया  
नि ४५.

ऐश्वर्य-कारण- -णात्  
वृजा १,१.

ऐश्वर्य-युक्त- -क्तः पी  
४२२: १६.

ऐश्वर्य-वत्- -वान् ह १.

ऐश्वर्य-स्थान- -नम् भ  
२,१८.

ईश्वर-कृपा- -पया सि १,४.

ईश्वर-कृष्ण- -ग्नेन सांका ७१.

ईश्वर-प्रास- -सः नृउ १,१२;  
२, ८.

ईश्वर-चैतन्य- -न्यम् कर ३७;  
पै १,७.

ईश्वर-जीव- -वः ससा १,४<sup>d</sup>.

ईश्वर-स्व- -स्वम् ब्रवि २५; वरा  
२, ५२.

ईश्वर-निभ- -भम् शि ६, ४०.

ईश्वर-पुत्र- -०त्र लां २१४: ८.

ईश्वर-यजन- -नम् शां १,२;  
जाद २,१; ८; वरा ५,१३.

ईश्वर-प्रणिधान- -नात् योसू १,  
२३; २, ४५.

ईश्वर-प्रतिमा- -माम् शि ६,  
११६; १३९.

ईश्वर-प्रिय- -या- -या: योशि  
१,१५४.

ईश्वर-भक्त- -क्तेभ्यः शि ६, ४३.

ईश्वर-भाव- -वः गी १८, ४३.

ईश्वर-भ्रान्ति- -न्तिम् वरा २,  
५५; महा ४, ७४.

ईश्वर-वत् नृउ ९, ७.

ईश्वर-संज्ञ- -ज्ञः ता २, २.

ईश्वर-साक्षात्कार- -रः त्रिवि  
५, ११.

ईश्वरा(र-अ)चार्य- -र्यः म  
४९: १०.

ईश्वरा(र-अ)धिष्ठित- -तम् शि  
७, ११३; -ते सांसू ५, २.

ईश्वरा(र-अ)धीन, ना- -नम्  
अक्षि २२; -ना सांसू ६, ६४.

ईश्वरा(र-अ)लुगुही(त>)ता-  
-तया महा ४, १.

ईश्वरा(र-अ)वतार- -०र लां  
२१६: १५.

ईश्वरा(र-अ)विष्ट-चित्त- -त्ता:  
सार २५६: २०.

ईश्वरा(र-अ)सिद्धि- -द्धे:  
सांसू १, ९२.

ईश्वरो(र-ई)श्वर- -रम् जाद ९, २

ईश्वरो(र-उ)कृष्ट-बुद्धि- -द्धि:  
सिशि ३८०: ११.

ईषत्-<sup>a</sup> ते ४, २०; २१; अक्षि १३; पा  
९, ४.

ईषत्-कुम्भक-

ईषत्कुम्भक-ता- -ताम् योशि १,  
१२१.

ईष(त-छि)च्छिद्र-पिधा(न>)ना-  
-नया शि ४, ७.

ईष(त>)न-मात्र- -त्रम् ते ४,  
५५; ५, १५.

ईषन्मात्र-वि-शून्य- -न्यः ते  
५, ७०.

✓ईह, ईहते गौ ४, ८५; महा ३, २३;  
भव १, ४२; गी ७, २२; ईहन्ते  
महा ४, १८; गी १६, १२.

ईहा- -हा महा ३, १६.

ईहा(हा-अ)नीहा-

ईहानीहा-मय- -यै: १संन्या  
२, २९.

ईहित- -तम् महा २, ५२.

ईहिता(त-अ)नीहित- -तै: महा  
६, ६४; १संन्या २, ५१.

## उ

१उ<sup>b</sup> नृउ ४, ४; ५, १; २प्र ३४: १९.

उ-कार- -रः मां ८; १०; गौ १,

२३; ना४; नृपू २, २; नृउ २, ६<sup>c</sup>;

५, २<sup>d</sup>; काला १४; नाद १; ध्या

१३; ब्रवि ५; ७; आबो १; नाप

८, १<sup>e</sup>; योचू ७४<sup>f</sup>; राउ १, २; वा

१७; अक्षि ४४; त्रिता ४, २६;

ता २, १; जाबा २३; तु १; १प्र

३१: ८; १२; २प्र ३४: १८९<sup>g</sup>;

नापू १, १०; स ३७९: ५; सिशि

३८२: ११; गु ८२; विद्या १;

-रम् नृउ ३, ९; शां १, ६; -रस्य

रार १, ७; -रे ध्या ११; ब्रवि ६९;

७१; योचू ७७; पप ४१९: २८;

-रेण नृउ ७, २<sup>h</sup>; ८; १४; १योत

१३८; २योत २, १.

उकार-तुरीया(य-अंश>)-

शा- -शा वरा ४, १<sup>k</sup>.

a) कीप् प्र. वा. (तु. वैप २, २४७ -रा-) उसं. (पा ४, १, ३०)। b) खि ५, ८७, ९। c) 'ईश्वर्या' इति अख्या। d) कस.। आत्मेयेतद्युक्तं विप.। e) आन. 'ईश्वरः' इति पूष. एव श्राव्यते। f) व्यु.। ✓ईष उच्छे (तु. पाधा.) + अतिः प्र. उसं. (पाउ २, ८४) इत्येवं सतः क्रिवि. इति कृत्वा न. द्वि १ प्रयोगात् अव्य. इति प्रसिद्धिः स्यात्। g) =वर्णः। 'ओकारः' इति निसा.। i) 'ओकारः' इति गोब्रा १, १, २५। j) 'ओकारेण' इति निसा.। k) 'शाः' इति अख्या।

उकार-पूर्वा(र्व-अ)र्ध- -धस्  
नृउ ७,२<sup>a</sup>.  
उकार-मूर्ति- -र्तिः शां १,६;  
-तिस् जाद ६,४; ८.  
उकार-रूप- -पैः नृउ २,६.  
उकार-वाच्य- -व्यः ता ३,  
२; ८.  
उकार-स्थूलां(ल-अं)श-  
-शो वरा ४,१.  
उकारां(र-अं)श- -शम् पप  
४२०: २.  
उकारा(र-अ)क्षर-संभव-  
-वः गोउ ४२.  
उकारा(र-अ)क्षर-संभूत,  
ता- -तः राउ २,१; ता २,१;  
-ता विद्या १.  
उकारोम्<sup>b</sup> ह ९०.  
उ-स्व-  
उत्त्व-विज्ञान- -ने गौ १,२०.  
उं आथ ३९८: ५; व ४३५: ६;  
४३६: ४; ४३७: २१.  
उं-कार- -०र अक्ष ५.  
उउ<sup>c</sup> ई<sup>d</sup> ५<sup>e</sup>; ९; १२; के १,१; क १,१, १४;  
प्र १,११<sup>o</sup>; मुं २,२, २; तै २,६,  
१; वृ १,३, ६; मना १,१९<sup>f</sup>; कौ  
४,१८; बा १३; सुता १,१९<sup>g</sup>.  
उक्त-, उक्त्वा, उक्थ- /वच् द.  
✓उक्ष्  
उक्षत्- -क्षन्तम् मना २, ५२;  
२शिसं २८.  
उक्षन्-  
औक्ष- -क्षेण वृ ६,४, १८<sup>i</sup>.

§<sup>h</sup>उक्षित- -तम् मना २, ५२;  
२शिसं २८.  
उग्र, ग्रा<sup>j</sup>- -०ग्र अक्ष ५; मना २, ५१९<sup>k</sup>;  
लां २१४: ६; -ग्रः मन्त्रि १२;  
नृउ ४,४; ५, १; २; अव्य २; बा  
९; नी १, २; -ग्रम् वृ २, ५, १६९<sup>l</sup>;  
मना २, १९<sup>m</sup>; अशि १, ९<sup>n</sup>; नृपू १,  
९; २, ६; ८<sup>o</sup>; नृउ ५, ३; ६, १;  
त्रिब्रा २, १५५; त्रिवि ७, ४०;  
अव्य २; ६; चा १७; वपं ३१२:  
१०; व ४५७: १२; ४६०: १८९<sup>o</sup>;  
४६१: १४९<sup>m</sup>; गी ११, २०; -ग्रा  
कालि ४०१: ९; व ४४३: २०;  
श्या १२; -ग्रा: वृ ४, ३, ३७; ३८;  
गी ११, ३०; -ग्रात् मना १,  
१३९<sup>p</sup>; -ग्राम् षो २२<sup>q</sup>; -ग्राय म  
१, ६; -ग्रैः सुबा ९; गी ११, ४८.  
उग्र-कर्मन्- -मणिः गी १६, ९.  
उग्र-तेजस्- -जसे त्रिता ३, ३०; व  
४३०: १०.  
उग्र-स्व- -स्वात् नृउ ७, ९<sup>r</sup>.  
उग्र-पुत्र- -ग्रः वृ ३, ८, २.  
उग्र-प्रतिग्रह- -हात् मुद्र ४.  
उग्र-प्र(भ>)भा- -भा कालि ४०१:  
९; श्या १२.  
उग्र-भयंकर-काला(ल-अ)नल-  
रूप- -पाय गरु ३; ६.  
उग्र-रूप- -पः अव्य ६; गी ११, ३१.  
उग्र-सेन<sup>s</sup>-  
उग्रसेन-वसुदेवा(व-आ)द्य-  
-द्यात् सार २४२: २.  
उग्रा(ग्र-आ)पद्- -पदाम् महा ३, ७.

✓उच्  
उचित<sup>t</sup>- -तम् नाप २; त्रिवि २,  
१<sup>u</sup>; -तानि अक्षि ७.  
उच्चथ-, उच्चथ्य- /वच् द.  
उच्च<sup>v</sup>- -च्चम् पा १०, ७; -च्चात् भव १,  
१४; -च्चैः<sup>w</sup> छां १, ११, ७; यो १,  
६८; -जाद २, १४-१६; महा ५,  
१२१; अक्ष ४, ७७; शां १, २;  
पा १०, ७; शि ६, ९; गी १, १२.  
उच्च-कै<sup>x</sup>- -कैः<sup>y</sup> अक्ष ४, ८९; महा  
५, १४२.  
उच्च-भाष्य-  
उच्चभाष्य-विजृम्भण- -णम्  
शि ७, १३.  
उच्चा(च्च-अ)वच्- -च्चम् वृ २, १,  
१८; ४, ३, १३; बा १८; -च्चानि  
शि ६, ८०; -च्चैः यो ३, २१.  
उच्चैः<sup>z</sup>  
उच्चैः-पद- -दाय महा ५, १७५.  
उच्चैः-श्रवस्- -वसम् गी  
१०, २७.  
उच्चैर(स्>र-उ)पांशु-भेद-  
-देन शां १, २.  
उ(द्>)च्/चद्>चाटि, उच्चाटय-  
उच्चाटय दत्ता २; लां २१६: ४; व  
४५६: ११; उच्चाटयेत् वपू २, ५.  
१उच्-चाटन<sup>aa</sup>-  
उच्चाटन-कर- -०र अक्ष ५.  
उच्चाटनो(न-उ)त्पादक- -कम्  
व ४५६: १७.  
२उच्-चाट(न<sup>ab</sup>>)नी- -०नि अक्ष  
१५; -०नि-०नि व ४४९: ६.

a) °कारं पूर्वा° इति निसा. । b) टेरोमादेशः (पा ८, २, ८९) । c) 'अकारोम्' इति निसा. । d) अव्य.  
द्र. । e) वैतु. JC. 'उपरे' इति । f) तैआ १०, १, १ । g) मा ३२, ४ । h) ऋ १, ११४, ७ । i) तु. पा ६, ४, १७३;  
वैतु. शब्रा १४, ९, ४, १७ 'औक्षेण' इति । j) व्यु. वैप १ यद्र. । k) तैआ ३, १५, १ । l) ऋ १, ११६, १२ ।  
m) 'उच्चैः' इति शौ ७, ६५, १ । n) 'अग्रम्' इति आन., अज्या. । o) ऋ १०, ८४, ३ । p) तैआ १०, १, १३ ।  
q) 'उग्रायाम्' इति सुपा. यनि. सु-शोधः । r) तु. पामाधा.; वैतु. शक. <✓वच् इति ? । s) वैतु. पा. (१, १, ३७)  
स्वतःसिद्धम् अव्य. इति, पाउ. (५, १२) कृदिति च (तु. एउटि.) । t) स्वाधिकः कः प्र. उसं. (पा ५, ३, ५८) ।  
u) वैतु. पा. (५, ३, ७१), यदनु स्वतःसिद्धात् अव्य. सत उच्चैः इत्यतः यनि. ह. अव्य. इति कृत्वेव अकचि निष्पत्तिस्तं  
भवति । v) अस्य तृ३ सतः नाउउ. विभक्त्यलुग्विधया स. द्र. (तु. वैप १, ४१h) । w) भावे कृत द्र. । x) कर्तरि कृत द्र. ।



उ(द>)च्/चर्, > चरि, उच्चरति वृ  
 ४, २, ३; ३, ५<sup>१</sup>; उच्चरन्ति मैत्रि ६,  
 ३२; उच्चरेत् वृ २, १, २०; रार  
 २, २९; गोपू १३; पा १, १; तारा  
 ८३: २; ३; कालि ४०१: ४; श्या ५.  
 उच्चारयति अता १९; उ-  
 च्चारयन्ति २ प्र ३४: ९; शि १,  
 ९; उच्चारयेत् जाद ८, ३; योशि  
 ६, १९; शि ७, ३७.  
 उच्चार्यते योशि २, १३; २ प्र  
 ३४: १९<sup>१</sup>.  
 उच्-चरत्- -रन् ब्रवि ७९; मं ३, २,  
 २; त्रिवि ५, १२; -रन्तम् भ १, १.  
 उच्-चार-  
 उच्चार-रहित- -तः अद्वैभा ६.  
 उच्चार(र-आ)दि-क्रिया-  
 -यासु शि ५, १७.  
 उच्-चारण- -णम् शां १, २.  
 उच्चारण-रहित- -तम् त्रिता  
 १, ३३.  
 उच्-चारित- -तम् शि १, १८.  
 उच्चारित-मात्र- -त्रः मैत्रि ७,  
 ११; अ १.  
 उच्-चार्य वृजा ३, २४; ब्रवि ५६;  
 नाप ४, ३८; द १; ४; ६<sup>३</sup>; ११;  
 १२; रार १, ७; २, ५८; ६५; ७५;  
 ग ७; शि ६, १६०; ७, ३७; कालि  
 ४०१: ४; पी ४२१: ८; ४२२:  
 १; श्या ४.  
 उच्-चार्यमाण- -णः अशि ४, १;  
 २; ४; ६; ८; ९; ११; १२; तु ४<sup>१०</sup>;  
 वटु ३१५: १६; १७; १९; २२;  
 २३; ३१६: २; ४; ५.  
 उ(द>)च्/चल्, उच्चलति ध्या  
 ५९; योशि ६, ५२.  
 उच्-चलित- -ते सौ २, १८.

उच्-चिकमिषत्- उत् / क्रम् द.  
 उच्छ्र(द-शा)स्त्र- -स्त्रम् सु २, २,  
 १<sup>१०</sup>; भव १, ४८<sup>२</sup>.  
 उ(द>)च्/छिद्  
 उच्-छिन्न-  
 उच्छिन्न-सर्व-संकल्प- -ल्पः  
 वरा २, ८१.  
 उच्-छेद- -दः गौ ४, ५७; -दम्  
 महा ५, ८६.  
 उच्-छेदिन्- -दी गौ ४, ५९.  
 उच्छि(द/शि)ष्  
 उच्-छिष्ट- -ष्टः मन्त्रि ११; नाप ३,  
 ८०; -ष्टम् छां १, १०, ३; ५, २४,  
 ४; मना २, ३०९<sup>१</sup>; पत्र ३, ४;  
 प्रा १, ६९<sup>१</sup>; इ १४: १; १५: १८;  
 सार २४०: १५; शि ६, २२१;  
 सिशि ३८१: १२; भव ४, १३;  
 गी १७, १०; -ष्टा: छां १, १०, ४.  
 उच्छिष्ट-चाण्डाली- -लि व  
 ४३५: १.  
 उच्छिष्ट-जल- -लेन सार  
 ३४३: १.  
 उच्छिष्ट-पद- -दम् सुसु ३.  
 उच्छिष्ट-पात्र- -त्रम् नाप ७;  
 १ संन्या २, ७९.  
 उच्छिष्ट-भोजन- -नम् इ  
 १३: १४.  
 उच्छिष्टो(ष्ट-उ)च्छिष्टो(ष्ट-उ)प-  
 हत- -तम् मैत्रि ६, ९.  
 उच्छिष्टो(ष्ट-उ)पहत- -तम्  
 मैत्रि ६, ९.  
 उच्छ्रु(द/शु)ष्, उच्छ्रुण्यन्ति छां ४,  
 ३, २.  
 उच्-छोषण- -णम् गौ २, ८.  
 उच्छि(द/शि)  
 उच्-छित, ता- -तम् शि ४, ३; -ता

शि २, १३; ४, १५; -तान् ऊं  
 ८; -ताम् शि ३, ६.  
 उच्छ्रव(द/श्व)स्, > श्वासि, उच्छ्रव-  
 सति मैत्रि ७, ११; उच्छ्रवसीत  
 श्वे २, ९; भव ३, २६; उच्छ्रवसेत्  
 अना १४.  
 उच्-छ्रवसत्- -सन् २ योत २, ४.  
 उच्-छ्रवास-  
 उच्छ्रवास-निश्वास- -सौ प्र  
 ४, ४.  
 उच्छ्रवास-निश्वास-व्यप-  
 देश- -शेन नाप ६, १.  
 उच्छ्रवासा(स-अ)विष्टमभन<sup>१</sup>-  
 -नेन मैत्रि २, २.  
 उच्-छ्रवासित- -ते अशि ६, १३;  
 वटु ३१७: २०.  
 उच्छ्रव(द/शि), उच्छ्रवयति वृ ३,  
 २, ११.  
 उ(द>)ज्-जट<sup>१</sup>- -टे तारा ८३: १२.  
 \*उज्जायिका- नाउ. टि. द.  
 उज्जायी<sup>११</sup>- -यी यो १, २१; -यीम्  
 योशि १, ८८.  
 उज्जाय्या(यी-आ)ख्य- -ख्यम् योशि  
 १, ९५; यो १, २९.  
 \*उज्जार्य-, \*उज्जार्य-क-, \*उज्जार्यिका-  
 एपू. टि. द.  
 उ(द>)ज्/जीव् > जीवि  
 उज्-जीवयत्- -यन् द १८.  
 उ(द>)ज्/जृम्भ्, उज्जृम्भते त्रिता  
 १, १७; ४३.  
 उ(द>)ज्/जू > जीर, उज्जीर्यते  
 त्रिभा २, ८५.  
 उ(द>)ज्-ज्य- -ज्यम् वृ ३, ८, २.  
 उ(द>)ज्/ज्वल्, उज्ज्वलति मैत्रि  
 ६, १२; २६<sup>३</sup>; उज्ज्वलन्ति वृ  
 ३, १, ८.

a) 'उच्चारयति' इति निसा. । b) 'उच्यते' इति गोत्रा १, १, २३ । c) 'उच्चार्य' इति मुपा. यनि. सु-शोधः  
 (तु. सस्थ. टि. ? अभिमानोत्पत्तिप्रणव-) । d) एकतरत्र 'तच्छास्त्रम्' इति निसा. । e) तैश्चा १०, २३, १ । f) पूर्वेषां  
 संधिरार्षः । g) बस. उप. जटा- यद्र. । h) व्यु. ? उद्भूतं जार्यम् (भावे < / ज् ) अनेनेति कृत्वा बस. सतः \*उज्जा(द्-जा)र्य->  
 (स्वार्ये के) \*उज्जा(र्य-क-)र्यिका-> \*उज्जायिका-> यनि. इत्येवं नैप्र. विपरिणामः स्यात् । i) 'अभिज्वलति' इति आन. ।

उज्-ज्वल्- -ल अक्षि ५; -लः  
राउ ३, १; -लम् त्रिवा २, ५७;  
सि ५, १९.  
उज्-ज्वल्- -लत् भा ३०.  
उज्ज्वल्(त्)>इ-रूप- -पम्  
त्रिता १, २९.  
✓उज्ज्व  
उज्ज्वत्- -ज्जता १संन्या २, ४१.  
उज्जित- -तम् अज ४, ६८.  
उडु-  
उडु-लोमन्'-  
औडुलोमि'- -मिः ब्रसू १, ४,  
२१; ३, ४, ४५; ४, ४, ६.  
उ(द्)>ड्/डी, उडुयते १योत  
११९; योशि १, १०६; योशि १, ४७.  
\*उड्-डि'-  
उडु-या(न)>ण<sup>१०</sup>- -णः वरा  
५, ७; ध्या ७७; -णम् वरा ५,  
७; ध्या ७६; योशि १, १०७.  
उडुयाण-क- -कः यो १,  
४७; शां १, ७, ११; योशि १, १०६.  
उडुय(न)>ण<sup>१०</sup>-  
उडुयणा(ण-आ)ख्य-  
-ख्यः यो १, ४८; योशि १, १०७.  
उडुया(न)>ण<sup>१०</sup>- -णम्  
ध्या ७५; वरा ५, ६.  
उडुयाण-पीठ<sup>११</sup>- -ठम्  
सौ ३, १; -ठे योशि ५, ४३.  
उडुयानपीठ-क<sup>१२</sup>-  
-कम् योशि ५, ३८.  
उडुयाणा(ण-आ)ख्य-  
-ख्यः १योत १२०; -ख्यम् योशि  
१, १७५; ५, १२; ३८.  
ओडुयाण<sup>१०</sup>- -णम् योचू ४८

ओडुयाण<sup>१०</sup>- -णम् योचू  
४५; ४८; ४९.  
उड्-डीय योशि ५, ३८; १संन्या  
२, ३८.  
१उत्- ✓वे द.  
२उत्<sup>१</sup> क १, २, १; छां २, १, २; वृ २,  
१, १८<sup>३</sup>; ६, २, २९<sup>४</sup>; खे २, ४९<sup>५</sup>;  
३, ३<sup>६</sup>; गौ ४, ९७; मना २, ७९<sup>७</sup>;  
दे १९<sup>८</sup>; २९<sup>९</sup>; या १, १; शा १९.  
उतो<sup>१</sup> नौ १, ४; सर २, ९९<sup>१०</sup>.  
उ(द्)>त्-कट<sup>११</sup>- -टम् गौ १, १९;  
२१; अज ३, ६.  
उ(द्)>त्-कण्ठ-  
उत्कण्ठ-मनस्- -नाः सार  
२८५; २२.  
✓उत्कण्ठ  
उत्कण्ठमान- -नाः सार २५१; ६  
उत्कण्ठा-  
उत्कण्ठा-व(त्)>ती<sup>१</sup>- -ती  
सार २३४; ४.  
उत्कण्ठ(त्)>ता- -ताः सार  
२४१; १०.  
उ(द्)>त्/कृप्(सामर्थ्ये)>कल्प्>  
कल्पि, उदकल्पयन् शौ ५१; ४.  
उ(द्)>त्/कृष्, >कार्षे, उत्कर्षति  
मां १०; नृउ २, ६.  
उत्कर्षयेत् ध्या ३८; यो २, ३२.  
उत्-कर्ष- -र्षः गौ १, २०; -र्षात्  
मां १०; नृउ २, ६; सांसू १, ५;  
ब्रसू ४, १, ५.  
उत्-कृष्ट- -ष्टः नृउ ५, २<sup>१२</sup>; ब्रवि  
९३; -ष्टम् नृउ ५, २.  
उत्कृष्ट-तम- -मः, -मम् नृउ ५, ३  
उत्कृष्टतमा(म-अर्थ)- -र्थः

नृउ ५, २.  
उत्-कृष्य ध्या ७५; पप ४१८; २३.  
उ(द्)>त्/क्रम, >क्राम, क्रामि,  
चिक्रमिष्, उत्क्रमते प्र २, ४; ३,  
१; उत्क्रामति छां १, २, ९; ८,  
६, ५; वृ १, ३, १९; मै २, ७; मैत्रि  
२, ६; कौ २, १४; ३, ४; गी १५,  
८; उत्क्रामतः कौ ३, ३; ४;  
उत्क्रामन्ते प्र २, ४<sup>३</sup>; व १;  
उत्क्रामन्ति वृ ३, ९, ४; ४, ४, ६;  
नृउ ५, १-३; सुवा ३; उद्<sup>३</sup>  
क्रामन्ति वृ ३, २, ११; उद्-  
क्रामत् वृ १, २, ६; उत्क्रमेत् मैत्रि  
६, २१; क्लु २२<sup>०</sup>.  
उच्चक्राम छां ५, १, ८-११; वृ  
६, १, ८-१२; उच्चक्रमुः कौ २,  
१४<sup>१०</sup>; उदक्रमीत् कौ ३, ३;  
उत्क्रमीः प्र २, १२; छां ५, १;  
१२; वृ ६, १, १३; उदक्रमिष्यत्  
छां ५, १४, २.  
उत्क्रामयति अशि ४, १; वडु  
३१५; १६.  
उच्-चिक्रमिषत्- -षन् छां ५, १, १२  
उत्-क्रम- -मेण मैत्रि ६, १४.  
उत्-क्रमण- -णम् भव १, ५; -गे क  
२, ३, १६; छां ८, ६, ६<sup>२</sup>; योशि ६, ४  
उत्क्रमण-काल-संन्यास- -सः  
नाप ५, १.  
उत्क्रमणा(ण-आ)सन्न-काल-  
-लः नाप ३, ४.  
उत्-क्रममाण- -णेषु जा १; राउ १,  
१; ता १, १.  
उत्-क्रमिष्यत्- -ष्यतः ब्रसू १, ४,  
२१; -ष्यन् वृ ५, ५, २; ९, १;

a) भावे डिः प्र. उसं. (पाउ ४, १३४)। b) कास. उप. ✓या+अकर्तरि च कारके संज्ञायां ल्युट् प्र. उसं. (पा ३, ३, ११३)। योरणादेशः उसं. (पा ७, १, १)। वस्तुतस्तु ✓\*यण्(गतौ) + घञ् प्र. >इत्येवं सु-कल्पम्। मौस्थितु \*यैर्ध->\*यण-नैप्र.>यनि.द्र.। c) 'उडु-या(न)>ण-' इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः द्र. d) पूर्वेषां संधिरार्षः। e) अव्य.। व्यु. वैप १ यद्र.। f) ऋ १०, ८८, १५। g) मा ११, ४। h) ऋ १०, ८१, ३। i) तैआ १०, ५, १। j) ऋ १०, १२५, १। k) ऋ १०, १२५, २। l) उत्त+उ इति समुदितं निपातद्वयम्। m) ऋ १०, ७१, ४। n) १उद्+स्वार्थे कटच् प्र. (तु. पा ५, २, २९; वैतु. वैप १ वि-कट- इति)। o) 'उत्पतेत्' इति अज्या। p) एकतरत्र 'उच्चक्रषुः' इति अज्या।

६, १, १३; मै २, ८; मैत्रि २, ६.  
 उत्-क्रम्य ऐ ४, ६; ५, ४; वृ ३, २,  
 १३; मैत्रि ७, ११; आबो १.  
 उत्-क्रान्त-न्तः प्र ६, ३; मै २, २;  
 मैत्रि २, २; ६, २२; -न्ते प्र ६,  
 ३; छां ५, १, ७; वृ ६, १, ७;  
 -न्तेषु वृ १, २, ६.  
 उत्क्रान्त-प्राण- -णान् छां ७,  
 १५, ३.  
 उत्-क्रान्ति- -न्तिः १योत १०८;  
 शा ८: योसू ३, ४०.  
 उत्क्रान्ति-गत्या(ति-व्या)गति-  
 -तीनाम् ब्रसू २, ३, १९.  
 उत्-क्रामत्- -मति प्र २, ४; -मन्  
 वृ ४, ३, ८; सुबा ११; १५;  
 -मन्तम् प्र २, ४; वृ ४, ४, २;  
 ब्र १<sup>६</sup>; गी १५, १०.  
 उ(द>)त्/क्षिप्, >क्षेपि, उत्क्षिप-  
 न्ति सार २५९: १५.  
 उत्क्षेपेयत् अता ११.  
 उत्-क्षिप्त- -सम् शि ४, २०.  
 उत्-क्षिप्त्वा<sup>१</sup> मैत्रि ६, ३३.  
 उत्-क्षिप्य मैत्रि ६, ३३; अना १२.  
 ?उ(द-त)त्तट-स्थ<sup>१</sup>- -स्थः नाप ६, १.  
 उ(द>)त्/तन्  
 उत्-तान<sup>१</sup>- -नः त्रिब्रा २, ४२. -  
 उत्तान-कूर्म<sup>१</sup>-  
 उत्तानकूर्म-क- -कम् त्रिब्रा  
 २, ४२.  
 उत्तान-पत्र-पूजा- -जाम्बि १८  
 उत्तान-बिल्व-पत्र- -त्रम् बि  
 १३; -त्रेण बि १६.  
 उत्तान-भाग-पर्ण- -र्णेन बि ३०  
 उत्तान-शायि(न>)नी- -नीम्  
 रा ४२५: १.  
 उ(द>)त्/तप्, उत्तपते पा २, ९<sup>३</sup>.

उ(द>)त्-तम, मा<sup>१</sup>- -०म अन्न ५,  
 ३४; -मः त्रिब्रा २, १०५; महा  
 २, ३९; ४, ८५; अन्न ५, १५; २७;  
 १आ २०; सूता ३, ७; नाउ ३,  
 २२; भव २, ४१; गी १५, १७;  
 १८; -सम् क २, ३, ७<sup>१</sup>; छां ३,  
 १७, ७<sup>१</sup>; मैत्रि ६, १९; मु २,  
 २, २१; वृजा ४, १५; ६, ५; नाप  
 ३, ८०; २अव ३३७: ५; त्रिब्रा  
 २, २९; महा ५, १५८; ६, १६;  
 योशि १, १७५; ५, ११; अन्न ५,  
 ५३; रुजा १, १२; १५; २०; २,  
 ६; ८; जाद ६, १४; ब्र २; ३, २<sup>१</sup>;  
 इ १४: ४; शि ४, ५४; ६, ३९;  
 ७३; १०६; ७, ६४; ११८; भव  
 १, ४४; ५, १४; गी ४, ३; ६, २७;  
 ९, २; १४, १; १८, ६; -मया  
 महा ५, १०९; -मा मैत्रे २, २१;  
 तृपू १, २; अन्न ५, ८९; इ १५:  
 ५; शि ६, १५८; १६९; १७१;  
 १७४; वपू १, ४; -मा: स्व ६१:  
 २३; -मान् छाग २४: १; -माम्  
 योशि १, ६९; व ४३२: २१;  
 -मे मना २, ३६९<sup>६</sup>; योचू १०४;  
 १०५; त्रिब्रा २, १०६; शां १,  
 ७, ३; जाद ६, १५; -मेषु छां ३,  
 १३, ७; -मै: बि ७.  
 उत्तम-दक्षिणा- -णाम् शि २, २७.  
 उत्तम-पुरुष- -षः छां ८, १२, ३<sup>६</sup>;  
 गोउ ६४.  
 उत्तम-पुरुष- -षः ब्रवि २३.  
 उत्तम-वासन- -नम् अन्न ४, १७.  
 उत्तम-विद्- -विदाम् गी १४, १४.  
 उत्तम-विन्यास- -सात् महा ५, ८०.  
 उत्तम-स्व(सु-अ)ल्प- -ल्पस्य  
 अद्वै १४.

उत्तमा(म-अ)ङ्ग- -ङ्गे वृजा ४, १३;  
 -ङ्गे: गी ११, २७.  
 उत्तमा(म-अ)धम-भाव- -वः वरा  
 २, ५८.  
 उत्तमा(म-अ)धम-मध्यम- -मा:  
 भव ५, १; -मान् गौ ४, ७६.  
 उत्तमा(म-अ)शाय- -यः सु २,  
 २, १९.  
 उत्तमो(म-उ)त्तम, मा- -मः राउ ५,  
 ६; -मा जाद ४, ९.  
 उत्तमौ(म-ओ)जस्- -जा: गी १, ६.  
 उत्त(द्/स्त)म्भ  
 उत्तब्ध- -ब्धम् वृ १, ३, २३.  
 उ(द>)त्-तर, रा<sup>१</sup>- -रः तै २, १, १;  
 ३-५, १; मैत्रि ६, १०; कौ २,  
 १३; नाद १; १अव ३; पा ३, ५;  
 स ३७८: १०; -रम् प्र १, ९; छां  
 ३, १५, १; १७, ७<sup>१</sup>; मैत्रि २, ६;  
 ४, ५; वृजा ३, ३६; मं १, ३,  
 १; ४; अता ८; ११; अन्न ४, ७३;  
 पाशु २, ३०; नापू ४, ५९<sup>१</sup>; शि  
 २, १८; व ४६१: १९<sup>१</sup>; सांसू ६,  
 ४८; -रया वृ २, २, २; -रयो:  
 ब्रसू २, ३, २०; -रस्मिन् राधा  
 १, २०; ३, ३; -रा तै १, ३, ४;  
 नाद ७; सार २६७: ७; गार  
 ४०६: ७; -रात् अव्य ७<sup>१</sup>; गोपू  
 २५; ब्रसू १, ३, १९; ३, ३, १६;  
 ४, २, ३; -रान् त्रिब्रा २, ३; राउ  
 ५, ४; ता ३, ९; पै ४, २३; -राम्  
 सूता २, ८९<sup>१</sup>; -रायाम् भ २, १८;  
 -रे मैत्रि ७, ११; नाप ६, १; वरा  
 ५, २६; २प्र ३४: ९; शि ६, ७९;  
 ८४; ७, १३३; व ४३०: १८;  
 ४५९: १४; ४६५: ८; तारा  
 ८३: २३; -रेण प्र १, १०;

- a) व्यवभावः उरसं. (पा ७, १, ३७)। b) यनि. प्रास.। निसा. 'उत्' इति पृथक् पदम्। c) व्यु. वैपश् यद्र.।  
 d) 'उत्तस्ते' इति मुपा. यनि. सु-शोधः। e) ऋ १, ५०, १०। f) 'उच्यते' इति निसा.। g) तैव्या १०, ३०, १।  
 h) °मः पु° इति व्यस्तः निसा. पा.। i) ऋ १, १५४, १। j) ऋ १०, ८४, ६। k) 'रान्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः।  
 l) ऋ १, ५०, ११।



सु२, २, ११; अशि५, १५; -रैभ्यः  
 ब्रसू १, ३, १४; -रेषाम् सांसू ६,  
 २३; योसू २, ४; -रौ २ प्र ३६: २.  
 उत्तर-कटाक्ष- -धात् सार २०: ३.  
 उत्तर-क्षण-बाधित- -तः योशि  
 ४, १०.  
 उत्तर-तर- -रम् श्वे ३, १०.  
 उत्तर-तस्(>) छां ३, ७-१०, ४, ७,  
 २५, १३; २; मैत्रि ७, ४; अशि  
 ३, ९; १०; वृजा ६, १२; वृपू ५,  
 ८; नाप ४, ३८; शां ३, १; ब्रवि  
 ९३<sup>a</sup>; सार २७२: ११; वटु  
 ३१५: १०<sup>३</sup>; शि ३, २.  
 उत्तर-त्र ब्रसू १, ३, ३५.  
 उत्तर-दक्षिण- -णे शि ४, १.  
 उत्तर-दल- -लम्, -ले ध्या ९३, ८.  
 उत्तर-पूर्वा(र्व-अ)घ- -घयोः ब्रसू  
 ४, १, १३.  
 उत्तर-प्रोष्ठ-पद<sup>१</sup>- -दाय व  
 ४३८: ९.  
 उत्तर-फल्गुनी<sup>१</sup>- -न्यै व ४३८: ४.  
 उत्तर-रूप- -यम् तै १, ३, १, २; ३<sup>२</sup>;  
 ४; ग ८.  
 उत्तर-वेदि<sup>२</sup>- -दिः<sup>b</sup> प्रा३, १; ४, १.  
 उत्तरात्  
 उत्तरात्तात् सू २३९<sup>०</sup>; ग ४.  
 उत्तरा(र-अ)भि-मुख- -खः त्रिब्रा  
 २, १८; महा १, १; अना १९.  
 उत्तरा-मुख- -खः च २०: ६.  
 उत्तरा(र-अ)न्नाय- -यः म४८: १७.  
 उत्तरा(र-अ)यण- -णम् मैत्रि ६,  
 ३०; जाद ४, ४१; गी ८, २४.  
 उत्तरा(र-अ)योग- -गात् सांसू  
 १, ३९.  
 उत्तरा(र-अ)रणि- -णिम् श्वे १, १४;  
 कै १, ११; ब्र ३, ९; ध्या २२;  
 स ३७९: १७.

उत्तरा(र-अ)र्ध- -धम् अता ८; -धे  
 २ प्र ३३: २३; -धेन वृउ ७, २.  
 उत्तरा(र-अ)षाढा<sup>१</sup>- -ढायै व  
 ४३८: ७.  
 उत्तरा(र-अ)सङ्ग- -ङ्गम् कुं १०; क  
 २; कश्रु ३, २.  
 उत्तरो(र-उ)त्तर- -रम् शि ६, २७९;  
 -रात् २ प्र ३६: १३.  
 उत्तरोत्तर-योनि-योग- -गात्  
 सांसू ३, ५२.  
 उत्तरोत्तरा(र-अ)भाव- -वे  
 अध्या २९.  
 उत्तरो(र-उ)त्पाद- -दे ब्रसू २,  
 २, २०.  
 उत्तरो(र-उ)पनिषद्- -षदम् २ प्र  
 ३५: ५.  
 उत्तान- उत्/तन् द्र.  
 उत्था(उद्/स्था), > तिष्ठ, स्थापि,  
 उत्तिष्ठते मना २, ८०९<sup>a</sup>; जाद ६,  
 १८; उत्तिष्ठति छां २, २४, ६;  
 १०; १५; वृउ ७, ११; शां १, ७, ३;  
 महा ५, १०२; उत्... तिष्ठति वृ  
 ५, १३, १; उत्तिष्ठन्ति छां ३, १९,  
 ३१<sup>b</sup>; वृ १, ६, १-३; उत्तिष्ठ वृ  
 ६, ४, १९; मना २, ६५९<sup>c</sup>; त्रिवि  
 ७, ३१; वपं ३१२: १५; १६; गी २,  
 ३; ३७; ४, ४२; ११, ३३; उत्तिष्ठ-  
 उत्तिष्ठ मैत्रि १, २; मैत्रे १, १; वरा  
 १, १; उत्तिष्ठत क १, ३, १४; अरु  
 १५९<sup>d</sup>; उदतिष्ठत् वृजा ६, २;  
 वरा १, १; उदतिष्ठत् छां ३, १९,  
 ३१<sup>b</sup>; उत्तिष्ठेत् योशि ६, ७६; यो  
 ३, १४; शि ७, १७.  
 उत्तस्थौ वृ २, १, १५<sup>३</sup>.  
 उत्थापयति वृ ५, १३, १; कौ ३,  
 ३; उत्थापयेत् शि ७, ३१.  
 उत्-तिष्ठत्- -ष्ट्व छां ७, ८, १.

उत्-थात्- -ता छां ७, ८, १.  
 उत्-थान- -नम् त्रिब्रा २, १०५; जाद  
 ६, १४; ४४; -नात् सांसू ३, ५४.  
 उत्थान-संभव- -वः जाद ६, १५  
 उत्-थाप्य हं ६; वृजा ३, ६; १ योत  
 १२१; शां १, ७, १३; अक्ष १५;  
 जाद ६, ३३  
 उत्-थाय वृजा ३, ५; शु३, १९; वरा  
 २, ६४; १ कौल ८: १; २ कौल  
 १३; आश्र ३; अक्ष १, १.  
 उत्-थित, ता- -तः ते ४, ३४; -तम्  
 अक्ष २, २४; महा ५, ५४; जाद १०,  
 ६; व ४२९: १४; -ता १ योत  
 १०; त्रिब्रा २, ७१; योशि १, ८; गी  
 ११, १२; -ताः महा ५, ३८; -तान्-  
 -ताम् महा ६, २१; -ते शा २०.  
 उ(द्)>त्-तुङ्ग-  
 उत्तुङ्ग-पीन-कुच-कुम्भ-म(नस्)>-  
 नो-हरा(र-अङ्ग)>ङ्गी- -ङ्गीम्  
 सर १, ४.  
 उ(द्)>त्/तुद्, उत्तुद् ९<sup>१</sup> व ४६४:  
 १५; १६.  
 उ(द्)>त्/चु>तारि, तितीर्ष, तीर्, -  
 उत्तारयति शा ३०; ३१; उ-  
 त्तारय महा ४, १०७.  
 उत्-तारित- -तम् कृ २५.  
 उत्-तार्य शि ४, २५.  
 उत्-तितीर्षु- -र्षवः वृउ ६, ३.  
 उत्-तीर्य त्रिवि ६, १०.  
 उ(द्)>त्/पद्>पाटि, उत्पाटयेत्  
 शि ७, ५३.  
 उत्-पट- -टः वृ ३, ९, २८, २.  
 उत्-पा(टक)>टिका- -का वृ ३,  
 ९, २८, १.  
 उत्-पाप्य नाप ४, ३८; १ संन्या २, ६.  
 उ(द्)>त्/पत्, उत्पत्तन्ति महा ५,  
 १४२.

a) 'उत्तरतरः' इति अज्या. । b) 'अन्तर्वेदिः' इति अज्या. । c) अ १०, ३६, १४ । d) तैआ १०,  
 ६४, १ । e) तु. टि. ?अनूत्था>अनूत्तिष्ठन्ति । f) तैआ १०, ६०, १ । g) तैआ १, २७, २ । h) 'उदतिष्ठन्त' इति  
 निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. सस्थ. टि. अबु) । i) तैआ ४, ३९, १ ।

उदपतिष्यन्त शौ ५३ : १.  
 उत्-पतत्- -तन् महा ६, ३४.  
 उत्-पतित- -तम् छां ६, ८, ३; ५.  
 उत्-पतितुम् १ संन्या २, २९?<sup>a</sup>.  
 उ(द्>)त्/पद्, >पादि, उत्पद्यते  
 १योत् ५८; नाप ५, १६; योचू  
 ११५; यो १, ५७; ३, ६; वरा ५,  
 ५१; ५३; जाद ६, ३६; योशि १,  
 १७०; १७१; ३, ३; ५, ६; ७;  
 ६, ७३; अना २९; सार २३१ :  
 ७; सांका ६४; उत्पद्यन्ते कुं १४;  
 सार २२१ : ३; ४; २३१ : २;  
 २८५ : १४; गु २७.  
 उत्पत्स्यन्ते महा ५, १३७.  
 उत्पादयते प्र १, ४; उत्पादयति  
 सार २३८ : ३; उत्पादयन्ते प्र १,  
 १५; उत्पादयेत् पित्र ६, १५;  
 उत्पादयेत् योशि ५, २४.  
 उत्पादयिष्यति गौ ४, १७.  
 उत्पाद्यते इ १२ : २१; २२; १७ :  
 १९.  
 उत्-पत्ति- -त्तिः गौ २, ३२; मैत्रि  
 ६, ३७; १ अव ८; त्रिता ५, १०;  
 १आ ३१; ब्रवि १०; शां १, ४;  
 अबि १०; सार २९० : ४; -त्तिम्  
 प्र ३, १२; २ प्र ३५ : २९<sup>b</sup>; सार  
 २९० : १५; गार ४०५ : २; -त्तेः  
 गौ ३, १; १४; -त्तौ भव १, २८.  
 उत्पत्ति-पर(म>)मा- -माम् सु  
 २, २, २४?<sup>c</sup>.  
 उत्पत्ति-ग्रणव- -वः तु ४?<sup>d</sup>; ५.  
 उत्पत्ति-मात्र-निमित्त-  
 उत्पत्तिमात्रनिमित्त-त्व-  
 -त्वात् ब्रसू २, २, १९.  
 उत्पत्ति-वत् सांसू १, १२३.

उत्पत्ति-विनाश-रहित- -तम्  
 ससा १, ३२.  
 उत्पत्ति-सांकर्य- -यम् वृजा  
 ५, ११.  
 उत्पत्ति-स्थिति- -तिम् महा  
 २, ४.  
 उत्पत्तिस्थिति-कारण- -णम्  
 योशि ६, ७३; यो ३, ५.  
 उत्पत्ति-स्थिति-लय- -यान्  
 सार २४५ : २०; २५८ : १३;  
 २९० : १६; २९१ : ५.  
 उत्पत्तिस्थितिलय-कर्तृ-  
 -तरिः योचू ७२.  
 उत्पत्ति-स्थिति-संहार-कारि-  
 (न>)णी- -णी सी ७; विद्या १;  
 राउ २, ३.  
 उत्पत्ति-स्थिति-संहार-स्फूर्ति-  
 ज्ञान-विवर्जित- -तम् योशि  
 १, २१; १योत् १८.  
 उत्पत्त्य(ति-अ-)संभव- -वात्  
 ब्रसू २, २, ४२.  
 उत्-पद्यमान, ना- -नः गौ ४, १७;  
 सार २७८ : १६; २९१ : १; -ना  
 सार २४५ : १८; २७९ : २१;  
 २८६ : ३; -नाः सार २२० : १८;  
 २२१ : ५; -नानाम् क २, ३,  
 ६; -नानि सार २८५ : १५.  
 उत्-पद्म, ज्ञा- -ज्ञः यो १, ५८; अव्य  
 १; ३; राप् ४, ६; -ज्ञम् अव्य  
 ५; वा ३; ते ५, ३१; राधा ३,  
 १७; सार २९१ : १५; व ४५६ :  
 १७; अद्वै २३; -ज्ञा महा २, ३८;  
 ४, ११४; अज्ञ १, १२; योसू १,  
 ३५; -ज्ञाः वृजा ७, ८; शारी १;  
 रुजा ३, १; सार २२० : ४; ७;

२२१ : ४; २३९ : ८; ९; २४३ :  
 २; २४५ : १९; २४९ : १४;  
 -ज्ञाम् व ४५६ : १; -ज्ञे नाद २२;  
 -ज्ञैः सार २२५ : २.  
 उत्पन्न-वैराग्य-बल- -लेन भव  
 ३, ३२.  
 उत्पन्न-शक्ति-बोध- -धस्य  
 महा ४, ७८?<sup>e</sup>; वरा २, ७७.  
 उत्-पाद- -दस्य गौ ४, ३८.  
 उत्-पादित- -ताः सार २५९ : १३;  
 २९२ : ७.  
 उत्-पाद्य अक्ष १४; नृउ ९, ५; कश्रु  
 २, ३; कर् १.  
 उत्-पाद्यमान- -नाः वरा ३, २४.  
 उत्पल- -लम् सुबा १३.  
 उत्पल-ताडन-  
 उत्पलताडन-वत् महा ४, २६.  
 उत्पल-नाल- -लेन ध्या ३८; अना  
 १३.  
 उ(द्>)त्/प्लु, उत्प्लवति ज्ञाग २४;  
 २३; उत्प्लवन्ति आपौ ८ : १०<sup>f</sup>;  
 उत्प्लवेत् ज्ञाग २४ : २२.  
 उत्-प्लुत्य-उत्प्लुत्य १योत् ५३.  
 उ(द्>)त्/कुल्ल  
 उत्-कुल्लित- -तानि सार २६६ : ३.  
 उत्-त्व- १उ द्र.  
 उत्स- /उद् द्र.  
 उ(द्>)त्/सद्>सीद्, सादि, उत्-  
 सीदेयुः गौ ३, २४.  
 उत्साद्यन्ते गौ १, ४३.  
 उत्-सङ्ग-  
 उत्सङ्ग-कुल-धर्म- -माणां गौ  
 १, ४४.  
 उत्सङ्गा(न-अ)ग्नि- -ग्निः या १,  
 १; पप ४१८ : ५; नाप ३, ७७.

a) °पादितुम् इति मुपा. यनि. सु-शोधः । b) 'उत्पत्तिः' इति गोत्रा १, १, २५ । c) ) बस. पूष. पूर्वैषाऽर्थाऽन्वयः द्र. (तु. उत्र.) । °त्युप° इति अच्चा. मुपा. यनि. सु-शोधः । °त्युपरमा इति निसा., °त्युपरमम् इति निसा. संदि. । d) तु. टि. ?अभिमानोत्पत्तिग्रणव- । e) °ज्ञम् इति आन. । f) °शक्तिः बोध° इति व्यस्तः निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ.) । g) व्यु. ? <उ(द्>)त्/पल् गताविति अभा., स्फुटन इति BW. । h) 'उत्प्लवन्ति' इति वे. ।

उत्सन्ना(न-अ)मिक- -कः जा  
४<sup>०</sup>.

उत्-सादन-

उत्सादना(न-अ)र्थ- -र्थम् गी  
१७, १९.

उ(द्)>त्/सद्

उत्-साह- -हः अत्र ४, १३; -हम्  
सार २६८: २०; -हे वि १०.  
उत्साह-बल-वर्ध(न>)नी-  
-नीम् व ४३३: २.  
उत्साह-व(त्)>ती- -ती सार  
२३४: ४.

उ(द्)>त्/सिच्

उत्-सेक- -कः गौ ३, ४१.

उ(द्)>त्/सिघ

उत्-सेध, घा- -धम् त्रिभा २, ५८;  
वरा ५, २१; -धाम् शि ३, ९;  
-धे त्रिभा २, ९१.  
उत्सेधा(ध-आ)यत- -तम् शां  
१, ४.

उ(द्)>त्/सू (प्रेरणे)

उत्-सव- -वः सार २५१: २; -वे  
शि ४, ३२.

उत्सव-दर्शन- -नम् नाप ५, १.

उ(द्)>त्/सु>सारि

उत्-साये अत्र ५, ३५.

उ(द्)>त्/सुज्, उत्सृजति मैत्रि ६,

११; उत्सृजामि गी ९, १९;

उत्सृज वरा २, ४५; उत्सृजेत्

१योत १०७; अना १; इ १३:

७; १९: १४.

उत्-सर्ग- -र्गः गौ ३, ३८; नाप ६,

१; -र्गे गर्भ १<sup>०</sup>.

उत्सर्ग-परिधान- -नम् शि

७, १९.

उत्-सर्जत्- -जैत्, -जैन् वृ ४,  
३, ३५.

उत्-सृजत्- -जन् सिशि ३८१: १२;  
-जन्तः आश्र ३.

उत्-सृज्य मैत्रे २, ११; जाद ४, ५८;

६, ४८; अना ३; महा ४, ३;

१संन्या २, ४८; पप ४१९: १४;

अत्र १, ४१; ५, ७; अध्या ९;

१योत ५५; ७९; नाप ३, ८६;

५, ३९; ६, २८; ७; त्रिवि ५, १३;

६, २१; सुवा ११; ते ६, १०६;

नाद ३७<sup>०</sup>; सु२, २, ४६; इ १४:

२१; तुल ७१: १५; शि ७, ११६;

गी १६, २३; १७, १.

उत्-सृष्ट-

उत्सृष्ट-बाण-

उत्सृष्टबाण-वत् अध्या ५३.

उत्-सृष्टि-

उत्सृष्टि-दण्ड- -ण्डम् निर्वा

२९८: ११.

उत्-सृष्टुम् १योत १०७.

उत्-सृष्ट- -ष्टा मैत्रि ६, ७.

१उद्<sup>०</sup> उत्कट- टि. द्र.

२उद्<sup>०</sup> छां १, ३, ६९<sup>१</sup>; ७<sup>१</sup> ९<sup>१</sup>; ६, ७; २,

८, २; वृ १, ३, २३<sup>१</sup>.

√उद्

उत्स<sup>०</sup>- -त्सम् व ४६०: २२९<sup>०</sup>.

√\*उत्स् (लालसायाम्)

उत्सुक<sup>१</sup>-

औत्सुक्य-

औत्सुक्य-निवृत्त्य-

(ति-अ)र्थ- -र्थम् सांका ५८.

उद्<sup>०</sup>-

उद्-कुम्भ- -म्भम् कौ २, १५.

उद्कुम्भ-शत- -तेन भव

३, १९.

उद्-धि- -धेः गौ ३, ४१.

उद्धि-लङ्घन- -लं लां

२१४: ७.

उद्-पात्र- -त्रम् वृ ६, ४, १९;

कौ २, ७; -त्रे कश्चु १, १.

उद्-पान- -ने गी २, ४६.

उद्-शराव- -वे छां ८, ८, १९; २१.

९<sup>०</sup> उद्-हा(र>)री- -र्थः नी २,

२; सूता १, १३.

उद्दौ(द-आ)दन- -नम् वृ ६,

४, १६.

उद्दक- -कम्क १, १, ७; २, १, १४;

१५; छां ३, १९, २; ४, १५, १;

वृ २, ४, १२; ६, २, ४; वृजा १,

१; ८, २; वृषू ५, १४; नाप ३,

७७; सूता १, २३; शि ५, ३६; गु

४३; वउ ५, ६; -कस्य १संन्या २,

५९; -के छां १, ४, ३; ६, १३, १<sup>१</sup>;

वृ २, ४, १२; ६, ४, ६; पै ४, ११.

उद्दक-क्रिया- -या पै ४, ६.

उद्दक-पान- -नम् छां १, १०, ४<sup>१</sup>.

उद्दक-रक्षा- -क्षा व ४३४: १६<sup>१</sup>.

उद्दक-स्थल- -कमण्डलु- -लुः

पप ४१९: १५.

उद्दक-स्पर्शन- -पूर्वक- -कम्

नाप २.

उद्दका(क-अ)ञ्जलि- -लिना नाप

४, ३८; -लिम् इ १०: ९.

उद्दका(क-आ)त्मक- -कम् पा

१०, ७.

उद्दक्या<sup>१</sup>- -क्याम् नाप ३, ६९.

उद्दन्<sup>१</sup>-

√उद्दन्

उद्दन्त्या- -न्त्या छां ६, ८, ५.

a) °मिः इति आन., 'उत्पन्नामिः' इति अञ्ज्या. । b) °र्गः इति अञ्ज्या. । c) व्यु. वैप१ यद्र. ।

d) 'उद्गीथ-' इत्यस्य पूर्वाऽवयवस्य शब्दानुवादः । e) अ १०, ८४, ५ । f) उकञ् प्र. उसं. (पा ३, २, १५४; वैतु.

अभा. <उ(द्)>त्/सु अभिषवे वा प्रसवैश्वर्ययोर्वा √सु प्रेरण इति वेति, MW. <उद्+सु(अव्य.)+कः प्र. इति) ।

g) व्यु. वैप१ यद्र. (वैतु. पा ६, ३, ५७ <उद्दक- इति) । h) मा १६, ७ । i) 'उद्दपानम्' इति निसा. । j) वृ.

सस्य. टि. 'आत्मरक्षा-' । k) व्यु. वैप१ यद्र. (वैतु. पा ६, १, ६३ <उद्दक- इति) ।



उद्य-

(र-आ)

उद्य-

(त-आ)

उद्य-

(म-आ)

४२७:

उद्य-

प्रचल-

२१४:

१ उदित-

२ उदित-

उदी(द/इ)

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

१,१२:

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

उदी-

त्रिबा २, १४३.

, उदयते ई शां?

१; जा हं पदं सुबा

ग मं अता पै मि

ग या शा मु शां?

वृ ४, १, ३.

-दक् छां ३, १३,

५, १०, १; ६, १४,

५; -दक् छां ३,

४; अशि १, ४;

१६: ९.

-ची छां ३, १५,

१, २, ३; ४, २, ४;

वीम नाप ४, ३८;

पप ४१८: २८;

३३: १; बि ९;

य: छां ३, ४, १;

२, ३; म २, २७.

&gt;: सूता ४, ३.

-ण: छां ४,

१२: १; वृ ६, ३,

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

१५: ३.

उदजताम्, उदज वृ ३, १, २.

उद(द/अ)न(प्राणने)

उद-अन- -न: प्र ३, ७: ९; ४, ४;

तै १, ७, १; छां ३, १३, ५; ५,

२३, १; वृ १, ५, ३; ३, ९, २६;

अना ३५: ३८; मै २, ६; ७; मैत्रि

२, ६; ६, ३३; ७, ५; ध्या ५६;

त्रिबा २, ७७; ८१; योचू २४; शां १,

४; सू १६; जाद ४, २३; ३२;

प्रा ४, १; -नम् मना २, ७०; ५६;

सुबा ९; १५; ध्या ९६; वरा ५,

४४; -नस्य मैत्रि २, ६; -नाय

छां ५, २३, १५; मैत्रि ६, ९; मना

२, ६९; ५६; प्रा १, ६; -ने छां ५,

२३, २; वृ ३, ९, २६; मना २,

६९; ५६; ७०; ५६; प्रा १, ६; -नेन

वृ ३, ४, १; त्रिबा २, ८५.

उदान-कर्मन्- -मै शां १, ४.

उदान-जय- -यात् योसू ३, ४०.

उदान-योग- -नेन त्रिबा १, ९.

उदान-व्यान- -नौ ब्रवि ६६.

उदान-संज्ञ- -ज्ञ: जाद ४, २९.

उदाना(न-आ)स्मन्- -स्मने गोउ

६४.

उदन्या- / उद द.

उदय-, उदयत्- उदि द.

उदर- -रम् वृ १, १, १; २, ३; यो १,

३६; ते ६, ७; १योत ३८; पा

७, ६; गार ४०८: ८; -रात् जाद

६, १३; योचू ४९; -रे गौ ३,

१२; मैत्रि ६, २६; कर १६; यो

१, ४९; रुजा १, २२; जाद ४,

२७; ५, ७; ६, ३; १२; शां १, ५;

७, ४३; योशि १, ९२; ९३; गर्भ

५; ध्या ७६; योचू ४९; इ १४;

४; शि ७, १०६; १०७; -रेण मना

वैप १, २९४e । b) तैआ १०, ६४, १ । c) पूर्वैण संधिरार्षः । d) तैआ १०, ३६, १ । e) तैआ १०, ६९ । g) व्यु. वैप१ यद्र. । h) उदर इति अख्या. । i) तैआ १०, २४, १ । j) तैआ १०, २४, १ । k) तैआ १०, २४, १ । l) तैआ १०, २४, १ । m) तैआ १०, २४, १ । n) तैआ १०, २४, १ ।

पसं प्रति.

i) तैआ १०

२, ३ १५; ३२५; जाद ६, २२.

औदर- -रे जाद ८, २.

उदर-धर्म-

उदरधर्मिन्- -र्मिणम् महा ५,

१५६.

१ उदर-पात्र- -त्रम् आरु ५; -त्रेण

१ संन्या १, १; जा ६; या २, १.

२ उदर-पात्र- -त्र: कश्चु ३, १.

उदर-मात्र-संग्रह- -ह: या २, १.

उदर-शाण्डिल्य- -स्याय छां १,

९, ३.

उदर-स्थ- -स्थ: मैत्रि ६, १७.

उदर-स्थित- -तम् ध्या २०.

उदरा(र-अ)भि- -मौ आरु २.

उदरो(र-उ)परि त्रिबा २, ११५.

उद(द/अ)स् (क्षेपणे)

उदस्यमान- -न: बा ३.

उदा(द/अ)/क, उदाचकार वृ ३, १, २

उदा(द/अ)/दा(दाने)

उदा-त्त- -त्तम् २ प्र ३५: ८१५.

उदात्त-स्वर- -र: सूता १, २९.

उदात्ता(त-आ)दि-स्वरा-

(र-आत्मक) रिमिका- -का

गार ४०६: १४.

उदात्ता(त-अ)नुदात्त-इस्व-

दीर्घ-प्लुत-स्वलित-गञ्जित-

स्फुटित-मुदित-नृत्य-गीत-वा-

दित्र-प्रलय-विजृम्भिता(त-आ)-

दि- -दिभि: १ आ ११; २ आ २.

उदा(द/अ)/अन् (प्राणने), उदानिति

वृ ३, ४, १.

उदा(द/अ)युध- -धम् त्रिबा २, १५५

उदार, रा- -र: महा ६, ७०; -रा

महा ३, ८; -रा: गौ ७, १८.

उदार-चरित- -तानाम् महा ६, ७१.

उदार-चेतस्- -तसे सार २५२: १.

उदार-ता- -ता १संन्या २,५७.

उदार-रु(प>)पा- -यासु अक्षि४.

उदारा(र-अ)ऊ- -ऊम् शां ३,२.

उदाव- -वः पा १०,७.

उदा(द/अ)स्

उद्-आसीन- -नः नाद ४०; सांका  
२०; गी १२, १६; -नम् अध्या  
५१; कुं २३; मन्त्रि ८; चू ८;  
-नानाम् वसू २,२,२७.

औदासीन्य- -न्यम् सांसू १,  
१६३; ३,६५.

औदासीन्य- -नित्या-  
(त्य-आ)त्म-विलापन- -नम्  
भा ४०.

उदासीन-कौपीन- -नम् निर्वा  
२९७:७.

उदासीन-ता- -तया अध्या १८.

उदासीन-भाव- -वः त्रिन्ना २,  
२९७; २अव ३३७:५.

उदासीन-वत् गी ९,९; १४,२३.

उदा(द-आ)/ह, उदाहरति अक्षि ५;

उदाहरन्ति मैत्रि ६, ३०<sup>२</sup>; ३१;

३५-३७; ३८<sup>२</sup>; ७, ११; सी ६.

उदाजहार वृ ६, २, ३; मवा ९९<sup>०</sup>;

उदाहरिष्यति छां ६, ४, ५.

उदा-हृत, ता- -तः त्रिन्ना २, ८७;

१०५; महा ४, ५६; योशि ६,

७०; गोउ २९; भव २, ४१; ४२;

गी १५, १७; -तम् गौ ४, ३८;

महा ६, १६; योशि १, ९२; १संन्या

२, ८०; अन्न ४, ५१; यो १, २६;

रुजा १, ६; जाद ३, ६; पं ३;

त्रिन्ना २, १३८; गी १३, ६; १७,

१९; २२; १८, २२; २४; ३९; -ता

महा ५, ३०; कृ ५; सी ३३;

योचू १५; वरा ४, ६; -ताः ध्या  
५१<sup>१</sup>; रुजा १, ९.

उदा-हृत्य गी १७, २४.

उदि(द/इ), उदयते प्र १, ७; उदयति

प्र १, ८; ३, ८; मै ५, ८; मैत्रि ६,

८; ७, ११; अक्षि १; चा १८;

उदयन्ति आर्षे ७:१७; शौ ५२:

१३; उदयाति व ४६४:१७९<sup>०</sup>.

उदेति क २, १, ९; तै २, ८,

१; छां १, ६, ७; ३, ६-११, ३;

वृ १, ५, २३<sup>३</sup>; मैत्रे २, १४; ते १,

४९; नृपू २, १४; द १६; अव्य

२; अक्षि २७; ३४; अन्न ४, ४८;

५, ४५; त्रिवि ५, ९; ८, १२; वरा

४, २२; महा २, ५७; ४, ३८; ४२;

१०८; ५, १६; १०२; १संन्या २,

४२; सूता १, ९; मु २, २, २९;

आर्षे ८:१९; वउ ४, ४; उद्...

एति छां ३, १६, २; ४; ६; उद्यन्ति

छां ३, ६-१०, २; मैत्रि ७, १-६;

नृपू १, २; वपू १, ४; उदैत् त्रिवि

४, ९९<sup>१</sup>.

उदियाय छां ३, ११, २.

उद्-अय- -यः नाद १७; द १५;

त्रिवि ४, १२; ५, १; २; अन्न ४,

२२; -यम् छां ३, १९, ३; मु २,

२, ८<sup>१</sup>; -यात् छां २, ९, २; भ १,

३; २, २.

उदय-भास्कर-बिम्बा(म्ब-अ)-

नल-ग्रासक- -क लां २१४:८

उदय-स्थिति-लय- -याः त्रिवि

३, ४.

उदयस्थितिलया(य-आ)दि-

उदयस्थितिलयाद्य-

(दि-अ)-खिल-कार्य-कारण-

जाल-परम-कारण-भूत<sup>१</sup>-

-तः त्रिवि २, १५<sup>१</sup>.

उदया(य-अ)दि-

उदयादि-समारूढ- -ठम्

सूता १, २६.

उदया(य-अ)स्तमय- -ययोः

मं २, २, ३; -यौ क २, ३, ६.

उदयास्तमया(य-अ-)

भाव- -वात् मं २, २, ३.

उद्-अयत्- -यतः प्र ४, २; -यन्

प्र १, ६; -यन्तम् सूता १, २६.

१ उद्-हृत, ता- -तः छां १, ६, ७; २;

१४, १; मै २, ९; मैत्रि २, ६;

अन्न ३, ११<sup>३</sup>; पाशु १, ३२; सी

३३; -तम् वृजा २, १५; -ता

१संन्या २, ५७; यो ३, १९;

-ताः सूता १, ८; -तानाम् पा

९, ८.

उदिता(त-आ)नन्द- -न्दः अन्न

२, ३१.

उदिता(त-अ)नुदिता(त-आ)-

का(र>)रा- -रा सी ३४.

उदितौ(त-अ)दार्थ-सौन्दर्य-

वैराग्य-रस-गर्भ-

उदितौदार्थसौन्दर्यवैराग्य-

रसगर्भि(न>)णी- -णी महा

४, ६१.

उद्-इत्वा<sup>१</sup> मै ६, ३५<sup>१</sup>.

उद्-एत्- -ता छां ३, ६, ४; ७-१०,

४<sup>२</sup>; ११, १.

उद्-यत्- -यन् छां १, ३, १<sup>३</sup>; २,

१४, १; वृ १, १, १; सूता २,

६९<sup>१</sup>; ८९<sup>३</sup>; ११; ३, १०९<sup>३</sup>;

-यन्तम् कौ २, ७; भ २, २;

आर्षे ८:१९.

a) पा.१ यस्य । उत् । आपः । अयनम् (अयनुयम् इति वा) इत्येवं शोधः स्यात् (वैतु. पाटी. नैप्र.  
<प्रास. सति उद्वा(द्-दा)व- इति । b) °वम् इति निसा. । c) तैआ ३, १२, ७ । d) °ता इति अज्या. सुपा.  
यनि. सु-शोधः (तु. निसा.) । e) तैआ ४, ३९, १ । f) ऋ १०, ९०, ४ । g) °यः इति अज्या. संटि. । h) कस.  
गर्भितः वस. । i) °मकारणकारणभूतः इति निसा. । j) ह्यनभावः उसं. (पा ७, १, ३७) । k) 'उदुत्वा' इति सुपा.  
यनि. सु-शोधः (तु. पक्षे राती.) । l) खि १, ५०, २ । m) ऋ १, १०, ११ । n) तैआ ३, ७, ६, २१ ।

उद्यत्-कोटि-दिवा-करा-  
(र-आ)भ- -भम् त्रिवि ६, ३.  
उद्यद्-दिवा-करो(र-उ)घो-  
(त>)ता- -ताम् पी ४२१:५.  
उद्यद्-भास्वत्-समा-  
(म-आभ>)भा- -भाम् व  
४२७: १.  
उद्य(त्>)ल्-लाङ्गूल-घर्ष-  
प्रचल-जल-निधि- -धिमू लां  
२१४: १.  
१उदित- उदि द्र.  
२उदित- /वद् द्र.  
उदी(द/इ)क्ष्  
उद्-ईक्षमाण- -णः मैत्रि १, २.  
उद्-ईक्ष्य वृ ६, २, १.  
उदीची- उदच् द्र.  
उदी(द/इ)र, >ईरि, उदीरते कौ  
२, १२; १३.  
उदीर्यते त्रिन्ना २, ९५.  
उदीरयन्ति सार २६८: १५;  
उदीरयेत् रुह २५.  
उद्-ईरित, ता- -तः ध्या १२; -तम्  
शु ३, १; वरा ५, ५३; त्रिन्ना २,  
३५; ३७; ४६; ५०; शां १, ३, ४;  
९; -ता योचू ११५.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>/क  
उदुत्-कर्त्<sup>०</sup>-  
उदुत्कर्त्-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>/कृष्  
उदुत्-कृष्ट<sup>०</sup>-  
उदुत्कृष्ट-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>/तृ>तीर  
उदुत्-तीर्ण<sup>०</sup>-  
उदुत्तीर्ण-विकृति-  
उदुत्तीर्णविकृति-त्व- -त्वात्  
नृउ ७, २.  
उदुत्पा<sup>०</sup>(उद्-उद्/स्था)>त्थापि

उदुत्-थापयितृ<sup>०</sup>-  
उदुत्थापयितृ-त्व- -त्वात् नृउ  
७, २.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>-पथ<sup>०</sup>-  
उदुत्पथ-वारक<sup>०</sup>-  
उदुत्पथवारक-त्व- -त्वात् नृउ  
७, २.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>/पद्  
उदुत्-पादक<sup>०</sup>-  
उदुत्पादक-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
उदु(द-उद्)>त्<sup>०</sup>-प्र/विश  
उदुत्प्र-वेष्टृ<sup>०</sup>-  
उदुत्प्रवेष्टृ-त्व- -त्वात् नृउ  
७, २.  
उदु(द-उ)द्<sup>०</sup>/अस्  
उदुद्-आस<sup>०</sup>-  
उदुद्आस-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
उदु(द-उ)द्<sup>०</sup>/दृश्  
उदुद्-दृष्टृ<sup>०</sup>-  
उदुद्दृष्टृ-त्व- -त्वात् नृउ ७, २.  
उदु(द-उ)द्<sup>०</sup>/अम्  
उदुद्-आन्त<sup>०</sup>-  
उदुद्आन्त-त्व- -त्वात् नृउ  
७, २.  
उदुम्बर<sup>०</sup>- -रम् वृ ४, ३, ३६.  
औदुम्बर- -रः वृ ६, ३, १३<sup>५</sup>; -रम्  
आरु ५; -राः आश्र ३<sup>२</sup>; -रे वृ  
६, ३, १.  
औदुम्बरी- -याः वृ ६, ३, १३.  
उदूढ- उद्/वह (प्रापणे) द्र.  
उह(द/अ), उदारत् मना २, १२, २९<sup>१</sup>.  
उदे(द-आ/इ), उदैति १शिसं १९<sup>६</sup>;  
२शिसं ८९<sup>६</sup>; उदेहि इ १८: ११.  
उदेयाय छां ५, ३, ६.  
उदे(दा-इ)त्य छां ३, ११, १.  
उदैतु- उदि द्र.  
उदैदन- /उद् द्र.

उद्/गम्, उद्...अगन्म छां ३,  
१७, ७९<sup>१</sup>.  
उद्-गत- -तः सु २, २, ५२; -तम्  
पित्र १, ४; २, ९.  
उद्-गन्तु- -न्ता मैत्रि ६, ३१<sup>२</sup>.  
उद्/गृह्, ग्रह, उद्गृह्णाति छां २,  
३, २; १५, १; नृपू २, ८.  
उद्गृह्णाते नृपू २, ८.  
उद्-ग्रहण- -णाय वृ २, ४, १२.  
उद्/गृ(निगरणो)>गिद्, उद्गिरति  
मै २, ७; मैत्रि २, ६.  
उद्-गार- -राः पित्र १, १२; -रे  
योचू २५.  
उद्गारा(र-आ)दि- -दिशां १, ४.  
उद्गारादि-क्रिय- -यः त्रिन्ना  
२, ८६.  
उद्गारादि-गुण- -णः जाद  
४, ३३.  
उद्/गै, >गा, उद्गायति छां १, १,  
१; ९; ३, १; ४; ४, १; उद्गाय वृ  
१, ३, २-७; उद्गायत् वृ १, ३,  
२-७; २४<sup>२</sup>.  
उद्गास्यसि छां १, १०, १०; ११,  
६; उद्गास्यः छां १, ११, ७.  
उद्-गातृ<sup>२</sup>- -तः छां १, १०, १०;  
११, ६; -ता छां १, २, १३, ६, ८;  
७, ८; ११, ६; ४, १६, २; वृ १, ३,  
२८; ३, १, ५<sup>२</sup>; १०; मना २,  
८०९<sup>१</sup>; कौ २, ६; प्रा ३, १; ४,  
१; -तारम् छां १, १०, १०;  
-तृन् छां १, १०, ८; -त्रा वृ १,  
३, २-७; ३, १, ५.  
उद्-गीत, ता- -तम् श्वे १, ७; भव  
२, ६; -ता वरा २, ५२.  
उद्-गीथ<sup>२</sup>- -थ ह ५; -यः छां  
१, १, २-५; ३, ४; ६; ७; ५, १<sup>३</sup>;  
५<sup>३</sup>; ६, ८; ९, ३; १२, १; २, २, १;

a) 'इदम् भवेत्' इति अज्या. । b) वीप्सायामुदो द्विवचनम् उस्. (पा ८, १, ६) । c) निसा. अद्विरुहो-  
पसृष्टं प्राति. द्र. । d) प्राप्त. । e) व्यु. वैप१ यद्र. । f) ऋ ४, ५८, १ । g) मा ३४, १ । h) ऋ १, ५०, १० ।  
i) तैआ १०, ६४, १ ।



२;३-७,१; ८,२; ९,५; १०,३;  
११-२२,१; वृ १,३,२३<sup>१</sup>; मै ५,  
४<sup>२</sup>; मैत्रि ६, ४<sup>२</sup>; कौ १, ५; शौ  
५२:११; ५३:८; २१; -थम् छां  
१,१,१; ७; ८; २,१-७; १०-१२;  
१४; ३,१; २; ५; ४,१; ५,३; ९,  
२; ३; १०,१०; ११,६; ७; वृ ६,  
३,४; मैत्रि ६, ४; ३७; नाप ९,  
६<sup>३</sup>; शौ ५३:१९; ५४: २; -थे  
छां १, ८, १<sup>३</sup>; -थेन वृ १, ३, १;  
शौ ५३: ६.  
उद्गीथ-दोष- -वान् २ प्र ३५:२०  
उद्गीथ-भाजिन्- -जिन: छां २,  
९, ५.  
उद्गीथा(थ-अ)क्षर- -राणि छां १,  
३, ६; ७.  
उद्-गीयमान- -नम् वृ ६, ३, ४.  
उद्/ग्रन्थ  
उद्-ग्रथित-  
उद्ग्रथित-जटा-कलाप- -प:  
अव्य ६.  
उद्/घट>घाटि, उद्घाटयेत् ध्या ६७;  
योचू ३९.  
उद्-घाटन- -नम् ध्या ३५<sup>३</sup>.  
उद्घाटन-मात्र- -त्रेण योशि  
६, ३१.  
उद्-घाट्य शां १, ७, ३७.  
उद्-दाम-  
✓उद्दामि, उद्दामयेत् शि ७, ९३.  
उद्दालक<sup>१०</sup>- -क: छां ५, ११, २; ६, ८,  
१; वृ ३, ७, १; २३; ६, ३, ७, ४,  
४; ५, ३; -कम् छां ५, १७, १;  
-कात् वृ ६, ५, ३; -काय छां ३,  
११, ४.  
उद्दालकायन<sup>१</sup>- -न:, -नात् वृ ४,  
६, २.  
औद्दालक- -कम् गार ४०७:१४.

औद्दालकि<sup>१</sup>- -कि: क १, १, ११.  
उद्/दिश, उद्दिशन्ति मैत्रि ७, ९;  
उद्दिशेत् शि ६, २८१.  
उद्-दिश्य त्रिवि ६, २५; पाशु २,  
१०; अध्या ५३; शि ६, ४२; गी  
१७, २१.  
उद्-दिष्ट, द्या- -ष्टम् सूता २, २०;  
-द्या सांका ४९.  
उद्-देश-  
उद्देश-तस्(>:) राप् ४, ४०;  
गी १०, ४०.  
उद्/दीप्, उद्दीप्यस्व मना १, ४९<sup>११</sup>.  
उद्(द्/ह)न्  
उद्-धत्-  
उद्दत्-स्व- -स्वम् मै ३, ५; मैत्रि  
३, ५.  
उद्/धू  
उद्-धूत-  
उद्दूतो(त-उ)द- -दम् शि ७, ८८  
उद्-धूलि-  
✓उद्धूलि, उद्दूलयेत् वृजा ४, १<sup>३</sup>;  
११; वपं ३१२:२२.  
उद्दूलन- -नम् भ १, ५; वृजा  
४, ८; वा ३७; -ने वृजा ४, २८.  
उद्दूलन-त्रि-पुण्ड- -ण्डा-  
भ्याम् भ २, १६.  
उद्दूलित-  
उद्दूलिता(त-अ)ङ्ग- -ङ्गम् भ  
२, २.  
उद्दूल्य वृजा ४, १; ४, ५.  
१उद्/धृ>दिधीर्ष, उद्दिधीर्षति  
सं १६.  
२उद्(द्/वृ<>ह), उद्दरते १संन्या  
२, ७; उद्दर गोप् ४३:४४; तुल  
७०: १४; ७१: १०; उद्दरेत्  
नाप ५, २८; द १; ११; १२; यो  
२, १८; सूता ६, २; अबि २१;

का ५; नार ३; गी ६, ५.  
उज्जहार सार २४०:१४.  
उद्-धरण- -णम् मैत्रि ६, ३०.  
उद्-धर्तुम् मै १, ७; मैत्रि १, ४; मैत्रे  
१, २.  
उद्-धार- -राय गु ५.  
उद्-धृत, ता- -त: १संन्या २, ३१;  
-ता मना १, ८९<sup>१२</sup>; य ५९<sup>१३</sup>; का  
४९<sup>१४</sup>; नार ३; सु २९३:५.  
उद्भूत-परिपू(त>)ता- -ताभि:  
आश्र २.  
उद्-धृत्य वृ ६, ४, १९; मैत्रि ६, २६<sup>१५</sup>;  
नाप ३, ७७; द ४; जा ४; पप  
४१८: १५; वा ६; भ १, १; इ  
१७:१; बि २१; ऊ ६३:६; गोच  
६६:३; शि २, ३०; ५, ४९; ६,  
१७८; २८१.  
उद्/बुध्, उद्बुध्यध्वम् व ४३७:  
११९<sup>१६</sup>.  
उद्-बुध्-  
✓उद्बुध्यन्, उद्बुध्यन्ति मैत्रि  
७, ११.  
उद्/भा, उद्बभौ वृ ४, ६.  
उद्/भिद्  
उद्-भिद्-  
उद्भि(द्>)ज्-ज<sup>१७</sup>- -जम् छां  
६, ३, १; व ५; -ज्जा: नाप ५,  
२३; -ज्जानि ऐ ५, ३.  
उद्/भू, उद्भवति निरु १, १; उद्भवेत्  
१योत ५५.  
उद्-भव, वा- -व: श्वे ३, ४९<sup>१८</sup>; ४,  
१२; सुवा ६; १आ २६; गी  
१०, ३४; -वम् ते ६, ८१; -वा  
गु ५६; सी ६<sup>१९</sup>; -वे श्वे ३, १.  
उद्-भूत- -त: मै ४, ५; मैत्रि ५,  
२; -तम् मै ३, ४; मैत्रि ३, ४;  
मैत्रे १, ३; गोप् ३०; शां १, ७, ३४.

a) 'तम्' इति अज्या. । b) 'उत्थापनम्' इति आन. । c) व्यु. ? <उद्(द्/ह)न्> दालि+ण्वुल् इतीव  
MW. । मौस्थि. तु उदार- इत्यनेन साजातयं स्यात् । d) तैआ १०, १, ४ । e) तैआ १०, १, ८ । f) ऋ १०, १०, ११ ।  
g) 'पुरस्तात्' इति तैआ १०, १०, ३ । h) 'उद्भव' इति निसा. ।

उद्भूतस्त्व- त्वात् मै ४, ५;  
मैत्रि ५, २.  
उद्भूत-प्रध्वंसित्- -सिनः मै  
१, ४; मैत्रि १, ४<sup>b</sup>.  
उद्/यच्छ, यस्, उद्यच्छति वृ ६,  
३, ५.  
उद्-यत्- -तः महा ३, ३८; -तम्  
क २, ३, २; अज १, ३०; -ताः  
गी १, ४५.  
उद्-यम- -मेन भव १, ४३.  
उद्-यस्य गी १, २०.  
उद्-यत्- उदि द्र.  
उद्/या  
उद्-यास्यत्- -स्यन् वृ २, ४, १.  
उद्/युज्  
उद्-युक्त- -क्ताः सु २, २, ४७; वउ  
३, २८; -क्तैः वउ ३, ५७.  
उद्-योग- -गः पा ५, ५.  
उद्योग-वत्- -वान् महा ५,  
१८६.  
उद्योग-विध्वंसन- -नम् व  
४५७; १८.  
उद्/रिच्  
उद्-रेक- -कम् पा ४, ९.  
उद्/री  
उद्-रीयाण-  
उद्गीयाण-पीठ- -ठेषु योरा ८.  
उद्/रुघ्, उद्गौलीत् वृ ४, ३, ३३.  
उद्-चर्त्मन्- -र्त्मेना मैत्रि ६, ३०.  
उद्/वस् (निवासे) > वासि  
उद्-वात्स्य नाप ४, ३८.  
उद्/वह् (प्रापणे), उद्ग्रहते इ १३;  
१७; उद्ग्रहन्ति इ ११; ७.

उद्-उठ- -ठम् कौ ३, ५<sup>१०</sup>.  
उद्-वह- -हाय पा १, ५.  
उद्/विज्, उद्विजेते वरा ४, २६<sup>१</sup>; गी  
१२, १५<sup>१</sup>; उद्विजेत नाप ३, ४०;  
उद्विजेत् शा २१<sup>१०</sup>; गी ५, २०.  
उद्-विभ्र- -भ्रः पै १, ३३; २, ३४;  
पहं ४<sup>d</sup>; तुअ १७.  
उद्-वेग- -गम् नाद २१.  
उद्देगा(ग-आ)नन्द-रहित- -तः  
महा २, ५७.  
उद्/वृज्, उद्बृज्गि कौ २, ७.  
उद्-वर्ग- -र्गः कौ २, ७.  
उद्/वृत्, उद्वर्तते वृ २, १, ५.  
उद्/वै, उद्वायति<sup>१</sup> छां ४, ३, १.  
उद्/व्रज्, उद्व्राज छां १, १२, १.  
उद्/नम्, > नमि, उच्चमयति  
अ १<sup>१६</sup>.  
उन्-नत- -तम् श्वे २, ८; लु ४;  
भव ३, २५.  
उच्चत-प्र-पदा(द-अ)ङ्गु-ष्ठ-  
-ष्ठम् वपू २, २.  
उन्-नति- -तिः सौ १, ३.  
उन्-नमयत्- -यन् शां १, ७, १७<sup>b</sup>.  
उद्/न-निद्रा<sup>१</sup>-  
उच्चिद्रित<sup>१</sup>- -तः यो १, ८५.  
उद्/नी, > निनीष्, उच्चयते  
वा १८<sup>१६</sup>; उच्चयति क २, २, ३;  
उच्चयेत् महा ६, ७४.  
उच्चयते प्र ५, ४, ५.  
उच्चिनीषते कौ ३, ९<sup>१९</sup>.  
उन्-नयन-  
उच्चयना(न-आ)दिक- -कम् शां  
१, ४.

उद्/मज्ज्  
उन्-मज्ज्य त्रिवि ५, १३.  
उद्/मद्, उद्...मदन्तु व  
४४९; ११९<sup>m</sup>.  
उन्-मत्त, त्ता- -०त्त दत्ता १, ७<sup>३</sup>; -त्तः  
महा ३, ९; -त्तम् सु २, २, ४७;  
-त्ताः वृउ ६, ४; -त्ताम् वृजा ३, १.  
उन्मत्त-क- -कः व४४७; ८९<sup>१</sup>;  
-कम् महा ३, ३५; -काः आश्र ३.  
उन्मत्त-बाल-  
उन्मत्तबाल-वत् नाप ५, २३.  
उन्मत्त-वत् नाप ५, २६; या  
२, १; जा ६; आश्र ४; पप ४१९;  
१७; भव २, ३३.  
उन्-मद, दा- -दाः सार २२२;  
२०; २३३; १६; -दाभिः महा  
२, २५.  
उन्मद-कोकिल-भ्रमर-सूक्ष्म-  
स्वर-संगीयमान- -नानि सार  
२२८; १५.  
उन्मद-भ्रमर-पिक-शुक- -काः  
सार २२९; ५.  
उन्-मादि(न>)नी-  
उन्मादिनी-मुद्रा<sup>१</sup>- -द्रा आथ  
३९४; १५; ३९७; १४.  
१उद्/न-मनस्<sup>१</sup>-  
\*उन्म(नक>)निका<sup>m</sup>-  
१उन्मनी<sup>०</sup>- -नी नाप ८, १; निर्वा  
२९८; ४<sup>३</sup>; शां १, ७, १७<sup>p</sup>; -न्या  
मं २, २, ४; नाद ५३; -न्याम्  
पप ४१९; ३१.  
उन्मन्य(नी-अ)न्त- -न्तम्  
योशि ६, ६३.

a) कस. । b) पूर्वेषां संधिरार्षः । c) एकतरत्र 'उद्वेजयेत्' इति अज्या. । d) 'उद्देगः' इति अज्या. ।  
e) वैतु. । c. उद्/वा इति । f) 'उद्वासयति' इत्यपि मूको. (तु. शं. रामा. यद्वाप्यसंस्कारजोऽसौ पा. स्यात्) ।  
g) निसा. मुपा. अ<sup>०</sup>>उ<sup>०</sup> इत्येवं सु-शोधः । 'उच्चमयति' इति आन. 'उच्चमयति' इति च अज्या. । h) 'उच्चमय'  
इति अज्या. । i) प्रास. । j) तारकादित्वम् असं. (पा ५, २, ३६) । k) उच्चम<sup>०</sup> इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु.  
अज्या.) । l) 'अन्वानुनेषति' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या., शांआ ५, ८) । m) 'उद्...मदन्तु' इति  
अज्या. ८, ६४, ११ । n) तदस्मिन्नस्तीत्यर्थे दशाविशेषनाम्नि वुन् प्र. टिलोपश्च असं. (पा ४, २, ८०) । o) नैप्र. निका>नी द. ।  
p) योगनिद्रादिदशान्तरसाहचर्यात् यनि. एव स्यादिति कृत्वा 'भवति' इति नाउ. पृथक् किप. द्र. न तु च्यन्ताऽनुप्रयोगः ।

उन्मन्य(नी-अ)वस्था-वश-  
-नोन मं २,२,४.  
२उ(इ>)न्-मनस्<sup>a</sup>- -ना: महा २,  
२३; हं १४<sup>b</sup>.  
२उन्मनी<sup>c</sup>-  
उन्मनी/कृ  
उन्मनी-कारक<sup>d</sup>- -क: शां  
१,७,१७; -कम् नाद ४०.  
उन्मनी/भू, उन्मनीभूयात्  
योशि ६,६१.  
उन्मनी-भाव<sup>e</sup>- -व: मं २,  
२,५; पै ४,२१; -वम् ब्रवि ४;  
-वे पै ४,२०.  
उ(इ>)न्/मिष  
उन्-मिषत्- -षन् १संन्या २,४७;  
सिशि ३८१: ११; गी ५,९.  
उन्-मेष- -ष: त्रिवि २, १४; ४,  
१२<sup>f</sup>, १५.  
उन्मेष-काल- -ल: त्रिवि ४,  
१२; -ले त्रिवि ४, १२; ५, २.  
उन्मेष-निमेष- -वाभ्याम् त्रिवि  
२, १४; -वौ त्रिवि ४, ११.  
उन्मेष-रहित- -तम् अञ् ५, ४१  
उ(इ>)न्/मी, उद्...मीयते छां  
८, ६, ५.  
उ(इ>)न्/मील्, उन्मीलते त्रिता  
१, १४.  
उन्-मीलन- -ने योचू २५.  
उन्-मीलित- -तम् रुजा १, २.  
उन्मीलित-निमीलित-मध्य-  
स्थ-जीव-परमात्मन्-  
-त्मनो: शारी ५.  
उन्-मील्य वड ३, ३१.  
उ(इ>)न्-मुख- -ख: योशि ५, ३३;  
-खम् वरा ५, ३३.  
१उप<sup>g</sup> छां २, ८, २.

२उप<sup>h</sup> कौ १, २; वरा २, ३९.  
उप-कक्ष- -क्षम् सु २९३: १३.  
उप/कृ, उपकुर्वन्ति वरा ३, २९; अञ्  
४, ६.  
उप-करण- -णम् शिदि, २५४; -णानि  
सार २२२: ४; २४६: १; २५४:  
१६; २७०: ६.  
उपकरण-काम-कला- -लया  
सार २२९: ९.  
उपकरण-वत्- -वताम् वृ २,  
४, २; ४, ५, ३.  
उप-कार- -र: शि ७, ११२; -रम्  
शि ६, २८०.  
उपकारा(र-अ)र्थ- -र्थाय पंहं १६.  
उप-कारि(न्)>णी- -णी सांका ६०.  
उप-कार्य-  
उपकार्यो(र्थ-उ)पकारक-भाव-  
-व: सांसू १, ३१.  
उप-कोसल<sup>i</sup>- -ल: छां ४, १४, १३;  
-ल: छां ४, १०, १.  
उप/कम्, >काम्, उपाक्रामत्  
अव्य ६; उपक्रमेत् नाप ६, २.  
उपचक्रमे नाप ८, १.  
उप-क्रम- -म: अना २२<sup>j</sup>; -मम्  
वड ६, ६.  
उप-क्रम्य वड ६, ३.  
उप/कृत्प<sup>k</sup> (<कृप>)कल्प, कल्पि,  
उपकल्पते गु ८४.  
उपाकल्पयन् शौ ५२: १५<sup>l</sup>; ५३:  
२; उपकल्पयेत् शि २, २८; ६, १;  
७, ७७.  
उप-कल्प<sup>m</sup>- -ल्पम् वृजा ३, ३४.  
उप/गच्छ, गम्, उपगच्छति वृ २,  
१, ८; मैत्रि ६, २४; तुल ७१:  
१४; भव १, २९; उपगच्छन्ति व्रसू  
४, १, ३.

उपजगाम कौ ३, १; उपजग्मु:  
छाग २४: ४.  
उप-गत्य पंहं १.  
उप-गम्य नि ५२; पप ४१८: ३३;  
नाप ७.  
उप/गा, उपागात् छां २, १, २<sup>n</sup>;  
उपागा: कौ १, १<sup>o</sup>.  
उप/\*गृह्, ग्रह  
उप-गृह- -ह्य: मैत्रि ६, ३१.  
१उप-ग्रह- -हा: छाग २५: ११.  
उप/गै>गा, उपगीयते कृ ६.  
२उप-ग्रह<sup>pm</sup>- -हा: वड ३१४: २.  
उप-घात- उप/हन् द.  
उप/घ्रा, उपाघ्रासीत् छाग २३: ८<sup>n</sup>;  
उपाघ्रासिषु: छाग २३: ६.  
उप-चण्डाल<sup>m</sup>- -ल: रु २.  
उप/चर्  
उप-चार- -र: गौ ३, ३६; भा २८;  
-रान् वृजा ३, २५; सूता ५, १४;  
-रेण भव २, ५२; गोपू १८; -रै:  
त्रिवि ५, १२<sup>q</sup>; ७, १.  
उपचार-तस् (>) भव २, ५२.  
उप/चि(चयने)  
उप-चय- -य: महा ४, २६.  
उपचया(य-अ)पचय- -यौ व्रसू  
३, ३, १२.  
उप/च्छन्द् >च्छन्दि, उपाच्छन्धन्त  
सार २४८: १३.  
उप/जन्, >जा, उपजायते महा ४,  
७८; ५, १६९; त्रिमा २, १६०;  
सांसू ५, ५०; गी २, ६२; ६५;  
१४, ११; उपजायन्ते गी १४, २.  
उप-जन- -नम् छां ८, १२, ३.  
उप-जायमान- -न: कौ १, २.  
\*उप-जन्धन<sup>o</sup>-  
औपजन्धनि<sup>o</sup>- -नि: -ने: वृ२, ६, ३;

a) बस. । b) °ननम् इति निसा. । c) च्वौ प्र. अन्तलोप: (पा ५, ४, ५१) । d) यद्वा १उन्मनी- इति  
पू. सति षस. । e) घन्यनुवाद: । f) कप्र. वा स्वाअ. वा । g) 'उपचाराय' इति अख्या. । h) व्यधि. प्रास. ।  
i) 'नतिक्रम:' इति आन. । j) तु. पा. (८, २, १८) । k) 'पक' इति बे. । l) 'उपागात्' इति अख्या. । m) प्रास. ।  
n) पा.? (तु. सस्थ. दि. उप/हु > उहाव) । o) वैतु. MW. उप-जन्धनि- इति ।



४, ६, ३.  
 उप/जीव्, उपजीवति वृ१, ५, १, २;  
 मना २, १३, १९<sup>a</sup>; महा १, १९<sup>b</sup>;  
 ३, १३; च २०: ११९<sup>a</sup>; उप-  
 जीवन्ति छां ३, ६-१०, १; ८, १,  
 ५; वृ १, ४, १६; ५, २; ४, ३, ३२;  
 ५, ८, १; मैत्रि ७, १०<sup>c</sup>; मना २,  
 ७९<sup>b</sup>; सार २७५: १५; उप-  
 जीवेत् नाप ५, २१.  
 उप-जीवत् -वन् इ १६: २३.  
 उप/तप्, >तापि, उपतपसि छां ३,  
 १६, ७; उपतपेत् छां ३, १६, २;  
 ४; ६.  
 उपतापयेत् कश्च ४; कुं ११; कश्च  
 ३, ४.  
 उप-तपत् -पता वृ ४, ३, ३६<sup>d</sup>.  
 उप-ताप-  
 उपताप-सुख- -खम् सार  
 २२९: ९.  
 उपतापिन् -पिनम् छां ६, १५,  
 १; -पी छां ८, ४, २.  
 उप/दिश्, उपदिशति त्रिवि ३, ४;  
 वृ ३, १८; उपदिशन्ति नृपू २,  
 ५; ५, १; उपदिशामि भ२, २८;  
 रा ४२३: ७; उपदिश नृउ९, १;  
 सार २४४: ३; उपादिशत् मुद्र  
 २<sup>e</sup>; उपदिशेत् मुद्र ४<sup>f</sup>; महा५,  
 १०६; छु १, १४<sup>g</sup>; ३, १५.  
 उपदेक्षन्ति गी ४, ३४; उप-  
 देक्षसि राउ ३, ८.  
 उपदिश्यते सु २, २, ५०; ६६;  
 भ २, ४; भव ५, ७.  
 उप-दिश्य मुद्र २.  
 उप-दिष्ट, छा- -ष्टः शु ३, १९; अञ  
 १, ८; जाद २, ११; -ष्टम् शु १,  
 १०; ३, १७; नाप २; सु १, १,  
 ४५; -ष्टा गी ३, १६; यु ७८;

-ष्टाम् सार २३२: ६; -ष्टे शु १,  
 ४; ५; सांस् १, ९.  
 उप-देश- -शः तै १, ११, ४; भ २,  
 १५; सार २४४: ३; रा ४२६: २;  
 ब्रस् १, १, ३०; -शम् वृजा १, १;  
 त्रिवि ८, १६; -शात् गी १, १८;  
 सांस् ६, ५७; ब्रस् १, ३, ८; २, ४,  
 २०; ३, ४, ४९; -शनं ३, १, ६.  
 उपदेश-तस् (>) करु ३५.  
 उपदेश-धीज-प्ररोह- -हः सांस्  
 ४, २९.  
 उपदेश-भेद- -दात् ब्रस् १, १,  
 २७.  
 उपदेश-श्रवण- -णे सांस् ४, १७.  
 उपदेशा(श-अ)धिकार- -रः  
 नाप ७<sup>d</sup>.  
 उपदेशा(श-अ)न्तर-  
 उपदेशान्तर-वत् ब्रस् ३, ३,  
 ३६.  
 उप-देश्य-  
 उपदेशयो(श्य-उ)पदेष्टृ-  
 उपदेशयोपदेष्टृ-त्व- -त्वात्  
 सांस् ३, ७९.  
 उप-देष्ट(व्य>)व्या- -व्या मवा २.  
 उप-देष्टुम् शु १, ७.  
 उप-देष्टृ- -ष्टा रुजा ३, १; वृजा ६,  
 १२; नृपू ५, १०.  
 उप-दिश- -दिशः मै५, २; मैत्रि ६, २.  
 उप/दृश्, >दर्शि  
 उप-दर्शयत् -यत् छाग २३: ७.  
 उप-द्रष्टृ- -ष्टा नृउ९, २; ब्रवि ९३;  
 गी १३, २२; -ष्टारम् नृउ९, २०.  
 उप/द्रु, उपद्रवन्ति छां २, ९, ७.  
 उप-द्रव- -वः छां २, ८, २; ९, ७;  
 १०, ३.  
 उपद्रव-भाजिन् -जिनः छां  
 २, ९, ७.

उप/धा, >हि, उपादधात् पा ६, ६.  
 उप-हित- -तम् मवा ६.  
 उपहित-जीव- -वः ससा १,  
 २१<sup>f</sup>.  
 उप/धाव् (गतौ), उपधावन्ति छाग  
 २५: १४; उपधावाम २ प्र ३६:  
 ८; उपाधावत् अव्य ६; उपा-  
 धावन् नृपू २, १; उपधावेत् छां  
 १, ३, ८; ९; १०<sup>g</sup>; ११.  
 उप-धावत् -वन्तः आपे ७: १९.  
 उप/धृ >धारि, उपधारय गी ७, ६;  
 ९, ६.  
 उप-नन्द- -न्दस्य सार २६२: ९.  
 उपनन्दा(न्द-आ)द्या(दि-आ)धि-  
 दान- -नम् सार २६०: ७.  
 उप/नम्, उपनमति वृजा १, १; नृपू  
 १, १; उप...नमेद्युः छां २, १, ४.  
 उप-नमस् -मः मना २, ७७<sup>h</sup>.  
 उप/नह  
 उप-नाह- -हः छाग २५: १२<sup>i</sup>.  
 उ(प>)पा-नह- -नहौ कुं ९; करु  
 १; कश्च ३, १.  
 उपान(ह>)च्-छत्र-वस्त्र-  
 -स्त्राणि शि ७, ८०.  
 उपान(ह>)च्-छत्र-शयन-  
 -नम् शि ७, १२.  
 उप-नि/धा, >हि  
 उपनि-धाय कौ २, १५.  
 उपनि-हित- -ताः छां १, १०, २.  
 उप-नि/पत्  
 उपनि-पत्य छां ४, ७, २; ८, २.  
 उप-नि/भ्रेड्, उप...निभ्रेडेरन् छां  
 ३, १९, ४.  
 उप-नि/श्रि, उपनिश्रयति वृ १,  
 ४, ११.  
 उप-नि/ष(<स)द्  
 उपनि-षद् -षत् के ४, ७; तै २,

a) तैत्र्या १०, ११, १। b) तैत्र्या १०, ६३, १। c) °पन्ता इति निसा। d) 'अन्योप' इति अत्र्या।  
 e) प्रास। f) °हितत्वात् जीवः इति आन। g) व्यधि। प्रास। h) तैत्र्या ३, ७, ६, २० (वैतु. भा. उप इति किउ.  
 इति कृत्वा भिन्नमेव वा. इच्छुः)। i) 'उपानहः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. वे.)।

१, १; ३, १०, ६; छां ८, ८, ५; वृ  
२, १, २०; ५, ५, ३; ४; श्वे १,  
१६; मैत्रिह, ३२; मिह, ३६; तुअ  
२४; पप ४२०: १८; अक्ष १६;  
ए १४; सू३३; अक्षि ५०; अध्या  
७०; कुं २९; सावि १०; पाशु  
२, ४७; मना २, ८९; १५९<sup>५</sup>;  
७८९<sup>५</sup>; ७९९<sup>५</sup>; अना ३९; अ३;  
कौ २, १; २; वृजा ३, २; ८, ६;  
काला २२; लु २५; शु ३, २३;  
वसू ३०; ते ४, ८१; ५, १०५; ६,  
१११; नाद ५६; ह२०; दत्ता १,  
७; २; ३; गरु २५; कलि ३; सौ  
३, १; ब २४; मु१, १, १४; २, २,  
७८; ब्रवि १११; योचू १२१; ध्या  
१०७; १योत १४३; आबो ३१;  
नाप १; २; ३, ८६; ४, ३८; ५, ३९;  
६, ३८; ७, ८, २०; ९, १९; सी  
३७; निर्वा २९८: १८; मं २,  
५, ४; ५, १, ९; त्रिवि २, १७; ३,  
७; ४, १४; ५, १४; ६, २५;  
७, ५०; ८, १३; २४; अता १९;  
सु २९३: ११; २९५: ६; राउ  
३, १; वा ४३; मुद्र ४; १अव  
३३; २अव ३३८: १०; त्रिता  
४, ३८; दे २२; भा ४४; रुह  
५३; भ२, ३०; ग१९; मवा १२;  
वरा ५, ७६; सूता २, १२; गोच  
६९: १४; य११; लि ३११: १०;  
स ३८०: २; सिशि ३८३: १५;  
रा ४२६: ३; अरु ३५; पित्र ६,  
२; वउ १, २३; २, ३८; ३, ६४;  
४, ४९; ५, ९; ५३; -षत्सु के छां  
आरु मै मैत्रे योचू वा महा १संन्या  
अव्य कुं सावि रुजा ज द जाबा  
आं; -षट्: वृ २, ४, १०; ४, १,  
२; ५, ११; मैत्रि ६, ३२; शु १,

१५; कृ १३; २प्र ३३: ५; सु  
१, १, १०; ११; सं १६; गोच  
६९: १३; -षट्सु के ४, ७;  
तै १, ३, १; छां १, १३, ४<sup>३</sup>; ८,  
८, ४; आरु २<sup>३</sup>; ५<sup>३</sup>; म १, ११;  
रुजा ३, १; नाप ३, ७२; वरा ५,  
७६; रार ५, १७; -षटा छां १,  
१, १०; -षटाम् शु १, १५; सु  
१, २, १-५; सं २२; -षट्ति: वृ  
४, २, १.  
औपनिषद- दम् मुं २, २, ३;  
वृ ३, ९, २६; वउ ९, १८.

उप-नि(स्)>षू/कम्>काम्, उप-  
निष्कामति कौ २, १५<sup>०</sup>.

उपनि-हित- उप-नि/धा द्र.

उप/नी.>नायि, उपनयन्ते प्र ५,  
३; उप...नयस्व छाग २३;  
१४; उपनयीत कौ ४, १८९<sup>१</sup>.

उप...नेष्ये छां ४, ५; उपानेष्ट  
छाग २३: ८; उपानेष्ट छाग २३:  
६; उपानेष्टा: छाग २४: २१<sup>६</sup>.

उप-नयत्- -नय् शां १, ७, १६.

उप-नयन<sup>१०</sup>- -नम् २प्र ३५: ३;  
-नात् आश्र १.

उपनयन-काल- -ले लि ३१०: ५

उपनयन-पूर्वक- -कम् नाप १.

उप-नायन<sup>१०</sup>-

उपनायन-कर्मन्- -मणि शु १, ५

उप-नीत- -त: अशि ७, २; महा ६,  
८३; इ १०: ७; च २१: ८; ऊ

६४: १३; वट्ट ३१८: ४; -ते  
या २, १६; -तेन वृपू ५, १९;

वृजा ८, ६.

उपनीत-शत- -तम् वृजा ८, ६.

उपनीतै(त-ए)का(क-अ)धिक-

शत- -तम् वउ ५, २२.

उप-नीय छां ४, ५; २प्र ३६: १०.

उप-नेतृ- -ता छाग २४: १.

उप/नू>बु, उपन्वन्ति शौ ५३:  
१८; उपन्वीत शौ ५३: १३.

उप-न्य(नि/अ)स् (क्षेपणे)

उपन्या(नि-आ)स<sup>११</sup>- -स: ब्रसू १,  
४, ६; -सात् ब्रसू ४, ४, ७.

उपन्यासा(स-आ)दि- -दिभ्य:  
ब्रसू ४, ४, ५.

उप/पद्, उपपद्यते गौ ४, ५३; अध्या  
११; ब्रसू २, १, ३६; ३, १४; गी  
२, ३; ६, ३९; १३, १८; १८, ७.

उप-पत्ति- -त्ति: गौ ३, १०; -त्ते: ब्रसू  
१, २, १३; ३, १, ५; २२; २, ३५;  
३८; ४, १, ६; २, ११; ४, १३.

उप-पन्न- -न्न: ब्रसू ३, ३, ३०; -न्नम्  
१संन्या २, ६५; ७०; त्रिवि ८, २;  
गी २, ३२.

उप/पा (पाने)

उप-पीयमान- -नम् सार २८१: ९.

उप-पातक- -केभ्य: मृ ७.

उपपातक-ज- -जानि राउ ५, ९.

उपपातक-महापातक- -केभ्य: नाउ  
३, ९.

उप/पीड्

उप-पीडन- -नम् भव १, ४.

उप-पूर्व- -र्वम् ब्रसू ३, ४, ४२.

उप-प्राण- -णा: पै २, १०.

उप-प्रे(प्र/इ), उपप्रेयाय के ३, ६; १०.

उप/वृद्ध्

उप-वर्हण<sup>१३</sup>- -णम् कौ १, ५.

उप/भुज्, उपभुजते सार २७३:

४; उप...भुजाम: छां ४,  
११-१३, २.

उप-भुक्त- -क्त: महा ५, ७१.

उप-भोक्तृ- -क्ता श्वे ५, ७; भव २, २३.

उप-भोग- -ग: सांसू ३, ७७; -नात्

सांसू ३, ५; -गेन नाप ३, ३७.

a) तैआ १०, ६, १। b) तैआ १०, १४, १। c) तैआ १०, ६२, १। d) तैआ १०, ६३, १। e) 'परिक्रामति'  
इति अज्या.। f) 'उपनयेत्' इति आन. अज्या., 'उपनयेत्' इति शांआ ६, १९। g) 'उपनया:' इति मुपा. यनि.  
सु-श्रोष: (वैतु. बे.)।

## उप-म-

उपम-श्रवस्<sup>b</sup>-

१० उपमश्रवस्-तम- -मस् त्रिता  
३, २७; व ४२९: ९.

## उप/मन्थ

उप-मन्थ छां ५, २, ४.

उप-मन्थ(न>)नी<sup>c</sup>- न्यौ वृ ६,  
३, १३.

उप-मन्थु<sup>d</sup>-

औपमन्थव<sup>e</sup>- -व छां ५, १२, १;  
-व: छां ५, ११, १; -वस् गार  
४०७: ११.

उप/मन्त्रि(<मन्त्र-), उपमन्त्रयते  
छां २, १३, १; ५, ८, १; उपमन्त्र-  
यन्ते कौ२, १<sup>१</sup>; २<sup>२</sup>; उपमन्त्रयेत्  
वृ ६, ४, ६.

उप-मन्त्रण- -णानि छाग २३: १२;  
२४: १५.

## \*उप-मन्त्रया-

\*उपमन्त्रयां/कृ, उपमन्त्रयां-  
चक्रे वृ ६, २, ३.

## उप/मा (माने)

उप-मा- -मा मैत्रि ६, २२; १अव  
३०; ब्रसू ३, २, १८; गी ६, १९;  
-मा: मना १, १०; २संन्या १६:  
७; २शिसं ३२.

## उप-मान-

उपमान-बाह- -बा: सार २६५:  
१४.

## उप/मृद्

उप-मर्द- -र्दम् ब्रसू ३, ४, १६;  
-र्देन ब्रसू ४, २, १०.

उप/\*यच्छ्, यस्(दाने), उपयच्छेत्  
व ४५८: २३.

उपयेसे वृ १, ५, २१.

## १उप-याम-

उपयाम-गृहीत- -त: मना २,

७९९<sup>f</sup>.

उप/या, उपयाति अक्षि ४; ब्र १;  
पत्र १<sup>६</sup>; उपयान्ति गी १०, १०;  
उपयाहि मना २, ७९९<sup>f</sup>.

उप-यात- -तम् औषे ८: ९.

उप-यातु- -ता १संन्या २, २८.

२उप-याम<sup>१३</sup>-

औपयाम- -मानि छाग २३: १२;  
२४: १५.

उप/युज्, उपयुज्जति नाप ५, २२.

उप-युज्जान- -ना: आश्र २<sup>२</sup>.

## उप/रञ्ज्

उप-रज्य-

उपरज्यो(ज्य-उ)परञ्जक-भा-  
व- -व: सांसू १, २८.

उप-राग<sup>११</sup>- -ग: सांसू ६, २७; २८;  
-गात् सांसू १, १६४.

उपराग-निरोध- -धात् सांसू  
६, २६.

उप/रम्, उपरमते पदं ४; योशि ३,  
१४; गी ६, २०; उपरमति सांका  
६६; उपरमेत् ध्या ९३, १४;  
गी ६, २५.

उपरराम वृ ३, १, १०; २, १३;  
३, २, ४, २; ५, १; ६, १; ७, २३;  
८, १२; पित्र १, १६; २-५, १०.

उप-रत- -त: वृ ४, ४, २३; शा ५;  
सुबा ९; -तम् गी २, ३५; -ता:  
वृ ६, ४.

उप-रति- -ति: अध्या २८; -ते:  
अध्या २८; ४२.

उपरि<sup>१२</sup>- मना २, १३, २९<sup>b</sup>; वृजा ४, ३०;  
तु १२; त्रिवि ४, ६; ध्या २<sup>१</sup>;  
ब्रवि ९<sup>२</sup>; त्रिवा २, ३९; अतार;  
त्रिता २, २७; यो १, ५; उपरि-  
उपरि छां ८, ३, २; वृ ५, १४, ३;  
मैत्रि ४, ६; त्रिवि ५, १२; ध्या ३४;

रापू ५, ४; शि ६, १४७; गा ९.

## उपरि-तन-

उपरितन-पाद-त्रय- -यस् त्रिवि  
१, ११.

उपरि-तस्(>:) सार २५३: ९.

उपरि-स्थ- -स्थ: मैत्रि २, ४; मैत्रि २, ४.

उपरिष्ठात्<sup>१४</sup> छां ५, २, २; मैत्रि ६, ९;  
शां ३, १; योशि १, १७५; ५, १२;  
ना ३; कौ २, १५; सुबा १;  
पा १०, ३.

उप/रुष्, उपरोत्सी<sup>१५</sup>? क १, १, २१.

उप-रुष् छां ४, ६-८, १.

उप/लक्ष्>लक्षि, उपलक्ष्यते त्रिवि  
७, ७; १३; महा ५, ९९; अत्र  
१, ५२.

उपलक्ष्येत् २प्र ३५: २१; योशि  
१, ७३.

उप-लक्षण<sup>१६</sup>-

उपलक्षणा(ण-अर्थ>)थी- -थी  
ब्रसू ३, १, ९.

उप-लक्षित- -त: त्रिवि ५, १३; सि  
१, ९; -तम् त्रिवि ६, ५.

उप/लम्, >म्, उपलभते मै ५,  
८; ससा १, ७; ९; १०; उपलभन्ते  
सुबा ९<sup>१</sup>; पित्र ५, ३<sup>२</sup>; उपलभेत  
मैत्रि ६, ८.

उपलेभिरे पित्र १, २; ३.

उपलभ्यते क २, ३, १२; गौ ३,  
३१; मैत्रि ४, ४; अक्षि ४, ७;

१९; दे १७<sup>३</sup>; पै ४, २०; १आ  
१; २आ ३; वृ ३१५: २२;

३१६: ११; ब्रसू २, १, ३६; गी  
१५, ३; उपलभ्येत सुबा १३.

उप-लब्ध- -ब्ध: वृ ९, २; -ब्धस्य  
क २, ३, १३.

उप-लब्धव्य- -व्य: क २, ३, १३.

उप-लब्ध- -ब्ध: मैत्रि ६, १०;

a) व्यु. वैपश् यद्र. । b) वस. । c) ऋ २, २३, १ । d) बाहूचे विप. एव सतोऽपि व्यु. इहाप्यर्थवती  
स्यात् (तु. यस्या. वैपश्) । e) मा १३, ३ । f) तैआ १०, ६३, १ । g) 'अभियाति' इति निसा. । h) तैआ १०,  
११, २ । i) 'परे' इति आन. । j) 'शै' इति शोष: द. (तु. JC. ) ।



१४; ङ्घे: गौ ४, २४; ब्रस् १,  
३, १६; २, १, १५; २, २८; ३, १,  
१८; ३, ५१; ४, २, ९.  
उपलब्धि-वत् ब्रस् २, ३, ३७;  
३, ३, ५४.

उप-लभ्य पप ४१९: १.

उप-लभ्यमान- -न: ससा १, २६.

उप-लभ- -भम: गौ ४, ९०;

-भमात् गौ ४, ४२; ४३; ४४<sup>१</sup>.

उप-लभन- -नम् अन्न ५, ६४.

उप/लिप्, उपलिप्यते गौ १३, ३२<sup>२</sup>.

उप/वद्

उप-वादिन्- -दिन: छां ७, ६, १.

उप/वन्, उपवन्वीमहि आर्षे ८: १.

उप/वर्ण, उपवर्ण्यते गौ ४, १४;

सार २२९: १५.

उप/वस् (अशने)<sup>३</sup>, उपवसन्ति सुं  
१, २, ११.

\*उप-वसन- उपोषण- टि. द.

उप-वास<sup>४</sup>- -स: १संन्या २, ६२;

वरा २, ३९; सार १संन्या २, ६२.

उपवास-पर- -र: नाप ३, ७३;

शि ६, १८१.

उपवास-मय- -यानि सार  
२८७: १६.

उपो(प-उ)षण<sup>५</sup>- -णेन म १, ९.

उपो(प-उ)ष्य म १, ९; २, २१; वृजा  
३, ४.

उप-वि/ग्रह

उपवि-ग्रह- -हे शि ७, ११.

उप/विश, >वेशि, उपविशति मना

२, ८०<sup>६</sup>; उपविशन्ति त्रिता २,

३६; उपाविशत् गौ १, ४७;

उपविशेत् कौ २, १; २.

उप-विशत्- -शन् कुं २८.

उप-विश्य छां २, २४, ३; ७, ११;

त्रिवा २, ९१; नाप २; ४, ३८<sup>७</sup>;

त्रिवि ८, ५; १योत ३५; त्रिता

२, ३६; २प्र ३३: १६; सूता १,

२४; सार २७२: १५; गौ ६, १२;

उपविश्य-उपविश्य मु२, २, ४३.

उप-विष्ट- -ष्टा: नाप १; सार २५१: ८

उप-वेशयित्वा<sup>८</sup> नाप १.

उपवेशि<sup>९</sup>- -शि: -शे: वृ ६, ५, ३.

उप-व्या(वि-आ)/ख्या, उपव्याख्ये  
आर्षे ७: ११<sup>१०</sup>.

उपव्या-ख्यान- -नम् मां १<sup>१</sup>; छां १,

१, १; १०; ४, १; ३, १९, १; मै ३,

२; मैत्रि ३, २; वृपू ४, ३; वृउ

१, २; राउ ३, १; ता २, ५; आर्षे

७: ४; १७; ८: ८; वउ १, १;

-नानि सुवा २.

उप/व्ये>वी

उप-वीत- -तम् आह २; पदं २; ब्र

३, ५; नाप ३, ८५; पत्र २; ३,

११; रुजा १, १७; शा ७; १७;

सिशि ३८२: ४.

उपवीत-लक्षण-सूत्र-ब्रह्मन्-

उपवीतलक्षणसूत्रब्रह्मन्-

-गा: पाशु १, १६<sup>११</sup>.

उपवीतिन्- -ती पत्र ३, १३;

शा १८; शि ५, ४९; ५१.

उप/शम्, >शाम्, उपशाम्यते मैत्रि

६, ३४<sup>१२</sup>; उपशाम्यति छां २,

१२, १; मै ४, ४, १<sup>१३</sup>; मैत्रे १, ४, ३<sup>१४</sup>.

उप-शम- -म: गौ १, २९.

उप-शमित, ता- -ता १संन्या २,

५७<sup>१५</sup>; -ते अन्न १, ५५.

उप-शान्त- -न्त: शा २१; -न्तम्

शां १, ७, २५; -न्तस्य मै ४, ४,

२; मैत्रि ६, ३४; मैत्रे १, ४, ४.

उपशान्त-तेजस्- -जा: प्र ३, ९.

उपशान्त-मनन- -न: १संन्या

२, ५२.

उपशान्तो(न्त-उ)पराग- -ग:

सांसू २, ३४.

उप-शान्ति- -न्तिम् अन्न ४, ७२.

उप/शुभ्>शोभि

उप-शोभा- -भया शि ६, १७७;

-भाम् शि ६, १८३<sup>१६</sup>.

उप-शोभित- -तम् सि ३, ३.

उप/शुष्, उपशुष्यते<sup>१७</sup> छाग २५:

२; ३.

उप-श्रद्धा<sup>१८</sup>-

उपश्रद्धिन्- -दिन: छाग २४: १०.

उप/श्रि, उपश्रयते छां ६, ८, २<sup>१९</sup>.

उप-श्री- -श्री: कौ १, ५<sup>२०</sup>.

उप/श्रु, >श्रु, उपश्रुणोति छां ३,

१३, ७; उप...श्रुणवत् मना २,

१२, २९<sup>२१</sup>.

उपश्रुआव छां ४, १, ५.

उपश्रूयते पित्र १, २.

उप/श्रिष्, उपश्रिष्यन्ति आर्षे  
८: १०.

उप/ष्ट(<स्त)म्भ<sup>२२</sup>

उप-ष्टम्भक- -कम् सांका १३.

उप-सं/श्रिष्

उपसं-श्रिष्ट-

उपसंश्रिष्ट-त्व- -त्वात् मै ३, ३;

मैत्रि ३, ३.

उप-सं/ह, उपसंहरति वृ ४, ४, ३<sup>२३</sup>;

उपसंहरेत् वृजा ३, २५.

a) हीनार्थेन धात्वर्थे विज्ञेयुकोऽत्रायं ग. । b) तु. पात्र १, ४, ४८; वैतु. पाधामा. भ्वा. √वस् इत्यत्र निवृत्त्यर्थमात्रेणैकः सन् गप्. उपाऽर्थमनुपयुज्जानः । c) पाप्र. प्रधा. क्युः प्र. उत्सं. (पाउ २, ८१) । नैप्र. तु <\*उप-वसन- इत्यस्य विपरिणामः । d) तैआ १०, ६४, १ । e) उपा<sup>२४</sup> इति अब्या. । f) ल्यबभावः उत्सं. (पा ७, १, ३७) । g) व्यु? । h) 'उपधारये' इति बे. । i) 'ल्यबभावः' इति नि. ११.१? । j) 'गणब्रह्मसूत्रगाः' इति संति. । k) 'मता' इति मुपा. यनि. सु-शोचः (तु. अब्या.) । l) 'मा' इति मुपा. यनि. सु-शोचः । m) पा? उपशु(शु)ष्यते इति बे. । n) प्रास. । o) 'अपरश्रयः' इति बे. । p) श्रु ४, ५८, २ । q) षत्वम् उत्सं. (पा ८, ३, ६८) ।

उपसंहृत- अशिशि ३, ८; वद  
३१५:७.  
उपसंहार- रः मुद्र १, ९; ब्रसू ३,  
३, ५; ४, ४८.  
उपसंहार-दर्शन- नात् ब्रसू  
२, १, २४.  
उपसंहृत- तम् वृ२२, ७; वप२२, ३.  
उपसंहृत्य द १; मवा ३; तुअ १०;  
१७; शौ ५२:८; ५३:१२; वउ  
६, २५.  
उप-सं/कृ(विज्ञेपे)>क्रि  
उपसं-कीर्ण- -णम् नाप १.  
उप-सं/क्रम, >क्राम्, उपसंक्रामति  
तै २, ८, ५.  
उपसं-क्रम्य तै ३, ७, ५.  
उप-सं/गम्  
उपसं-गम्य त्रिवि १, ४; ८, १७; मु  
१, २, ६; गी १, २.  
उप/सद्, >सीद्, उपसीद् छां ७, १,  
१; उपसीदथा: छां ६, १३, १; २.  
उपससाद् छां १, ११, ४; ६; ८;  
६, ७, २; ४; ७, १, १; ९<sup>०</sup> उपसेदु:  
मना २, ७३; चा २०; उपासदत्  
छाग २४ : ६; उपासदन् छाग  
२४ : ५.  
उप-सत्त- -त्ता छां ७, ८, १.  
उप-सद्<sup>१</sup>- -सदः मना २, ८०<sup>९</sup>.  
औपसद्-  
औपसद्-वत् ब्रसू ३, ३,  
३३.  
उपसद्-वत्त-  
उपसद्-वत्तिन्- -त्ती वृ ६,  
३, १.  
उप-सद्<sup>१</sup>- -दै: छां ३, १७, २.  
उप-सद्- -ञः मुं १, १, ३; शां २,  
१; -ञा: प १, १; छाग २४:१०;  
-ञाय मुं १, २, १३; मुद्र ४; छा

३४; मु १, १, ५२<sup>९</sup>.  
उप-सीदत्- -दत्तः छाग २४ : ५;  
-दन् छां ७, ८, १.  
उपसन्दी<sup>१</sup>- -न्धाम् वृ ६, ४, २४<sup>०</sup>.  
उप-सं/नुद्, उपसंनुद् व ४६४:  
१६९<sup>१</sup>.  
उप-समा(म्-आ)/धा>हि  
उपसमा-धाय छां ४, ६-८, १; वृ ६,  
३, १; ४, १२; २४; कौ २, ३; ४;  
१५; २संन्या १५ : ४.  
उपसमा-हि(त>)ता- -ता छां ६,  
७, ६.  
उप-समि(म्/इ), उपसमीयु: आषे  
९ : २०.  
उप-समी(म्/ई<sup>१</sup>), उपसमीयात् छां  
१, १२, ३<sup>१</sup>.  
उप-समे(म्-आ/इ)  
उपसमे(मा-इ)त्य छां १, १२, २; कै  
१, १<sup>१</sup>; पै १, १; पप ४१७ : १;  
जा ४; द १; राउ ५, १; वृजा ७,  
१; या १, १; ह १; छाग २३ :  
१४; २४ : ३; ४.  
उप-सं/पद्, >पादि, उपसंपद्यते आषे  
८:२१; उपसंपद्यन्ते सार २३९:  
९; उपसंपद्येत छां ६, १४, २.  
उपसं-पद्य छां ८, ३, ४; १२, २; ३;  
मै २, २; मैत्रि २, २.  
\*उपसं-पादया-  
\*उपसंपादयाम(म्/अ)स्  
(भुवि), उपसंपादयामासु: छाग  
२५ : ६.  
उप/सिच्, ङ्च्, उपसिञ्चति वृ ६,  
३, १३.  
उप-सेचन<sup>१</sup>- -नम् क १, २, २५;  
पाशु २, ४०.  
उप/सु, उपससार तै ३, १-५, १;  
मना २, ७९<sup>९</sup>; सुता १, २.

उप-सरण- -णानि छां १, ३, ८.  
उप-सुख छां १, ३, १२.  
उप-सुत्वर- -रः छाग २४:२१.  
उप/सृज्, उपासृजन् वृ १, ३, ६.  
उप-सर्ग- -र्गः २प्र ३४ : ६; -र्गा:  
योसू ३, ३८.  
उप/सृप्, उपसर्पन्ति मना २, ७९<sup>९</sup>.  
उप-सर्पण- -णम् सांसू ३, ७०.  
उप/सेव्, उपसेवते अक्षि ८; सार  
२२९ : ३<sup>१</sup>; २६४ : ९; २८० :  
१८; गी १५, ९; उपसेवेत छां  
२, २२, १.  
उप-सेवमान, ना- -नः सार २२८:  
२३; २२९ : १; ४; २६३ : २०;  
२७२:११; १३; १५; २९१ : ४;  
-ना सार २२९ : २; २८५:१७;  
२८६:५; -ना: सार २५५:२२;  
२७२ : १; १०; १४; १७; २७९:  
१; २८० : २०; २१; -नौ सार  
२८९ : ६.  
उप-सेवित- -तम् रार २, ४६.  
उप-सेव्यमान, ना- -नः सार २२९:  
५; -नम् त्रिवि ७, ५०; सार  
२७३ : १९; -ना: सार २७५:  
४; -०ने अक्ष १५<sup>६</sup>.  
उप/स्कन्द  
उप-स्कन्द- -न्दम् छाग २५:२३.  
उप-स्कन्दत्- -न्दन् छाग २४:२२.  
उप/स्तु  
उप-स्तरण- -णम् कौ १, ५.  
उप/स्था, >तिष्ठ, स्थापि, उप-  
तिष्ठते वृ ५, १४, ७; ६, ३, ६; मैत्रि  
६, ३७; अक्ष ५, १११; चू २०;  
इ १६:४; गा २४; २संन्या  
१५:१; १७:३; उपतिष्ठन्ते  
वृ २, २, २; उपतिष्ठेत कौ २, ७;  
८; ९; उपतिष्ठेरन् इ १०:१०.

a) ऋ १०, ७३, ११। b) तैआ १०, ६४, १। c) विध २९, १०। d) तु.टि. आसन्दी-। e) 'उपसद्याम्' इति मूको., JC.। f) तैआ ४, ३९, १। g) अदा. परस्मै. उस्.। h) वैतु. शं. धा. दीर्घादित्वं प्रामादिकं वा छान्दसं वेति। i) 'परिसमेत्य' इति अच्चा.। j) तैआ १०, ६३, १। k) 'उपजीव्यमाने' इति निसा.। l) 'उपतिष्ठेत्' इति अच्चा.।

उपतस्थिरे सार २३०:१२;  
 उपतस्थुः दे १; उपास्थिषत  
 छाग २५:१६.  
 उप-स्था<sup>१</sup>—स्थः प्र ४,८; छां ५,  
 ८,१; वृ २,४,११; ४, ५, १२;  
 ६,२,१३; ४,३; गर्भे १; कौ ३,  
 ५,७; सुबा ५,६; -स्थम् वृ ६,  
 ४,९; कौ ३,६; सुबा ९<sup>२</sup>; भव  
 २,१८; -स्थस्य नाप ६,१; -स्थे  
 तै ३,१०,३; सुबा ५; -स्थेन कौ  
 १,७; ३,६.  
 उपस्थ-गुद-योनि—नि निरु २,३  
 उपस्था(स्थ-अ)धिष्ठित—तः  
 त्रिब्रा १,९.  
 उप-स्थान—नम् वृ ५, १४, ७;  
 शा १२; गा २२<sup>३</sup>; -नेन १संन्या  
 २,६९.  
 उपस्थाना(न-अ)न्त—न्तम् भ  
 १,११.  
 उप-स्थाप्य नाप ४,३८.  
 उप-स्थाय शि ५,५२.  
 उप-स्थित—तः मै ५,६; मृ ११;  
 -तम् राउ ५,१४; योशि २,१३;  
 -ते नाप ३,५०; ब्रम् ३,३,४१.  
 उपस्थित-पराग—गः सार  
 २२२:१५  
 उप/स्पृश, उपस्पृशेत् प्रा १,६<sup>४</sup>.  
 उप-स्पर्शन—नम् कश्रु १, १<sup>५</sup>;  
 १संन्या १,१<sup>६</sup>.  
 उप-स्पृश्य भ २, २८; प्रा १, ६<sup>०</sup>;  
 सूता १,२३.  
 उप-स्पृष्ट—ष्टः वृ १,५,३.  
 उप/स्मृ, उपस्मरति के ४,५.  
 उप-स्वस्ति<sup>d</sup>—  
 औपस्वस्ति>स्ती<sup>d</sup>—  
 औपस्वस्ती-पुत्र<sup>१</sup>—त्रः, -त्रात्

वृ ६,५,१.  
 उप/हन्, उपहन्यात् वृ ६,४,१३;  
 उपहन्याम् गी ३,२४.  
 उपहन्येत शि ५,९.  
 उप-घातम् वृ ६,४,१९; २४.  
 उप-हत्तु<sup>१</sup>—स्तुम् वृ २,८९<sup>१</sup>.  
 उप-हत्य वृ ६,४,७.  
 उप/हस्  
 उप-हास—सम् वृ ६,४,१२.  
 उप-हित—उप/धा द्र.  
 उप/हु, उपजुहति गी ४,२५.  
 उप...जुहाव<sup>२</sup> छाग २३:८;  
 उप...जुहुवुः छाग २३:६.  
 उप/हृ  
 उप-हार<sup>१</sup>—रम् भ २, २४; -रैः  
 वृ ३, १०.  
 उपहार-पाणि—णयः मु १,२,६.  
 उप-हृत्य अ १४.  
 उप/ह्वे, <sup>१</sup>उपह्वये मना १,१०; व  
 ४६२:१३; २शिसं ३६; उप-  
 ह्वयाम आर्षे ९:१७.  
 उपां(प-अं)शु<sup>१</sup>—शु शां १,२; -शुः मै  
 २,८; मैत्रि २,६; जाद २,१४<sup>१</sup>;  
 १५; -शुना मना २, १२, २९<sup>१</sup>;  
 -शुमै २,८; मैत्रि २,६; -शोः  
 जाद २,१५.  
 उपा(प-आ)/कृ  
 उपा-करण—णात् छां २, २४, ३;  
 ७; ११.  
 उपा-करिष्यत्—ष्यत् वृ ४,५,१.  
 उपा-कृत—ते छां ४,१६,२; ४.  
 उपा(प-आ)/ख्या  
 उपा-ख्यान—नम् क १, ३, १६;  
 मैत्रि १,१; ६,१०.  
 उपा(प-आ)/गम्  
 उपा-गत,ता—तः मैत्रि ६, ३०;

महा ३,२; ४, ४३; १संन्या २,  
 १३; अज ५, ३२; यो ३,२८;  
 नाप ५,१; -ताम् अज ३,१५;  
 -ते शां १,७,३३; महा ४,५४;  
 योशि ५,१८; २२.

उपा(प-अ)ङ्ग—ङ्गम् सी २८; २९<sup>१</sup> k.

उपा(प-अ)ञ्ज

उपा(प-अ)ञ्जन—नम् भव ३,२१.

उपा(प-आ)/दा (दाने)

उपा-दान<sup>१</sup>—नम् नाद २५; योशि

४,३; स्व ६०:३; भव ५,५;

सांस् १, ११२; -नात् ब्रम् २,

३,३५; ३,४,२१.

उपादान-कारण—णम् नाप ५,१

उपादान-नियम—मात् सांस्

१,११५.

उपादाना(न-अ)योग—गात्

सांस् १,८१; ५,१०२.

उपा-दाय वृ ४,४,४; वउ ४,२०.

उपा-देय—यम् महा ५,६२; अज

५,५१; अध्या ६६; या २,२४;

स्व ६०:३.

उपादेय-पर—रः महा ६,२८.

उपादेया(य-अ)नुपतन—नम्

महा ४,२४.

उपादेयो(य-उ)पादान—नम्

सांस् ४,२३.

उपा(प-आ)/धा

उपा-धि<sup>१</sup>—धयः अध्या १९; -धिः

सांस् १,१५१; ६,४६; -धी अध्या

३२; -धीनाम् त्रिवि ४, १४;

-धौ शु ३,११.

औपाधिक—कात् ससा

१, ३७.

औपाधिक-भेद—दात्

ससा १,३७<sup>१</sup>.

a) °स्थाना इति मुपा. यनि. सु-शोधः । b) 'स्पृशेत्' इति अज्या. । c) 'उपदधामि' इति निसा. संदि. । d) व्यु? यनि. तु. PW. । e) व्यु. वैपश् यद्र. । f) ऋ २,३३,११ । g) जुहोपा<sup>१</sup> इति मुपा. जुहावोपा<sup>१</sup> इत्येवं सु-शोधः (तु. सस्थ. वि. उप/धा>°प्रासीत्) । h) खि ५,८७,९ । i) पूर्वण संधिरार्षः । j) ऋ ४,५८,१ । k) °ङ्गः इति मुपा. यनि. सु-शोधः । l) 'औपाधिकात्' इति आन. ।



उपाधि-नाश- -आत् १आ २१.  
उपाधि-नैराश्य- -इयेन गोपू १४  
उपाधि-पर्यै(रि-अ)न्त- -न्तम्  
पै ४, ८.

उपाधि-भेद- -दे सांस् १, १५०.

उपाधिभेद-संन्यासा(स-अ)-  
यै- -यैम् म ४९ : १६.

उपाधि-योग- -गात् सांस् १,

५१; ६, ५९; -गेन अध्या ५२.

उपाधि-रहित- -तम् ते १, ७.

उपाधि-विनिर्मुक्त-घटा(ट-आ)-  
काश-

उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाश-  
वत् मु १, २, ६; २, १, १.

उपाधि-विलय- -यात् त्रिवि ३,  
७; पै ३, १; -ये १आ २३.

उपा-नह- उप/नह द्र.

उपा(प-आ)/नी, उपातयेत् अञ  
४, १५.

उपा(प/आ)प्, उपाप्नोति तै १, ८, १;  
वउ ३, ३; उपाप्नुवति तै १, ८, १.

उपाय-, उपायन- उपे द्र.

उपा(प-आ)/या, उपायाति अञ ३, ६.  
उपाययौ महा २, १३; अञ ३, १८

उपायु- उपे द्र.

उपा(प/आ)र्ज

उपा(प-आ)र्जित- -तम् इ १६: २२.

उपार्जित-वस्तु-मात्र- -त्रम्  
सार २८३: ३.

उपा(प-आ)/लम्, उपालभेत छां  
२, २२, ३; ४<sup>१</sup>.

उपा(प-आ)व/नी, उपावनेभ्यन्ते शौ  
५३: ६.

उपा(प-आ)व/रुह्, उपावरोहेत्  
अव्य ७.

उपा(प-आ)व/सृप्  
उपाव-सर्पत्- -पंन् वृ ४, २, १.

उपा(प-आ)/विश्व

उपा-विष्ट- -ष्टः १योत ६३.

उपा(प-आ)/वृत्

उपा-वर्तन- -नम् मैत्रे १, २.

उपा(प-आ)/अ, उपाश्रय अञ ५,  
३२; उपाश्रयेत् यो ३, ३.

उपा-श्रित- -ता: गी ४, १०; १६,  
११; -तौ क २, २, ५.

उपा-श्रित्य गी १४, २; १८, ५७.

उपा(प/आ)स्, >आसि, उपास्ते छां

१, १, ७; ८; २, १४; ३, ७; ९, २;

४; २, १, ४; २, ३; ३-७, २; ८, ३;

९, ८; १०, ६; ३, १९, ४; ४, ५,

३; ६-८, ४; ११-१३, २; ५,

१२-१७, २; १८, १; ७, १, ५;

२, २; ३, २; ४, ३; ५, ३;

६-१४, २; वृ १, ४, ७; ८; १०;

११; १५, ५, २; १३; २, १,

२-१३; ४, १, २-७; मैत्रि ४,

४; त्रिवि २, १७; शां ३, १; म

२, २७; कौ ३, २; ४, २; १७;

आर्षे ७ : १२; १३; ८; ३; ४; ५;

१८-२१; ९ : ६; ७; ९; उपास्ते

ई ९; १२; के १, ४-८; क २,

२, ३; प्र १, ९; सुं ३, २, १; तै

२, २, १; ३, १; ५, १; छां ५, १०,

१; ३; ८, १२, ६; वृ ४, ४, १०;

१६; ५, ५, १; ६, २, १५; जा २;

राउ ३, १; मुद्र ३; अव्य ७;

म २, २७; वृप् २, १६९; वृउ

६, ५; सूता १, १९; गोच ६८:

५; ६; सार २३५: ३; २७२:

२०; २२; २७३: १४; १९;

२८०: ४; शसिं ३४९; वउ

४, ३; गी ९, १४; १५; १२, २; ६;

१३, २५; उपास्ते छां ४, २, २;

५, १२-१७, १; उपास्ते वृ २,

१, २-१३; कौ ४, २-१७;

आर्षे ८: २; १६; उपास्महे ऐ

५, १; छां ४, ३, ७; मैत्रे २,

१३; १४; रार २, ३२; ह ६;

उपास्त्व तै १, ६, २; छां ७, १,

४; २, १; ३, १; ४, २; ५, २;

६-१०, १; कौ ३, २; दत्ता १,

१; उपाश्चै छाग २४: ३; उपा-

सीत तै ३, १०, ३; ४; छां १,

१, १; ३, १; २; ५; ६; ८; ४, १, ५,

३; २, २-१०, १; २, १, ४; ३, १३,

१-५; ७; १४, १; १८, १; वृ १,

४, ७; ८; १५; ४, १, २-७; ५, ८,

१; ६, ४, २; अशि ५, १४; मै ५,

२; ४; ६; मैत्रि ६, २; ४; ६; १२;

१४; १६; २३; ३७; ७, ११; कौ

२, ६; ३, ३; वृजा ७, ८; सुबा

५<sup>१०</sup>; म२, २; ९; आर्षे ७: १४; शौ

५३: १३; ५४: २; सूता १, २२.

उपास्यति सुबा ५<sup>१</sup>.

उपास्यते राउ ५, २६; उपा-

स्यताम् पै ४, १७.

उपासय योशि ६, २; उपासयेत्

त्रिता ४, १६.

उपा(प-आ)सक- -कः द१५; २०<sup>१३</sup>;

त्रिवि ५, १०; १४; ६, १; १५;

१७; २०; २१; २३; २४; ७,

१; १५; १६; ८, ५; कामे १;

-कम् त्रिवि ६, २५; -का: सार

२४९: १९; २७९: ४; २८०:

१३; २८३: १३; २९०: १४;

-कानाम् रापू १, ७; नापू ४, १४.

उपासक-कुलो(ल-उ)स्पञ-

-ञ: सार २२६: १८.

उपा(प-आ)सत्- -सन्तः कश्रु ३, ७.

उपा(प-आ)सन- -नम् छां २, १, १;

पहं ४<sup>०</sup>; नाप ३, ८६; गोपू १७;

a) ऋ १०, १२१, २ । b) 'भेदम्' इत्यत्र 'न इदम्' इति पदच्छेदः (तु. रामा ; वैतु. शं. आ इदम् इति पक्षयन् आ 'उपास्महे' इति योग इति) । c) 'उपासितव्यम्' इति अख्या. । d) 'सोपा' इति निसा. सुपा. यनि. सु-श्रोत्रः (तु. अख्या.) । e) 'उपासितम्' इति निसा. ।

सूता ६, १४; सार २४९: १९;  
वउ ५, १; -नानि कौ २, ७.

औपासन-

औपासन-समुत्पन्न-

-अम् वृजा ५, ४.

उपासन-विधि- -धिम् नापू ४,  
१५.

उपासनीय- -यः १आ १;  
२आ ३.

उपा(प-आ)सना- -नया त्रिवि२, ६;  
अज १, २; -ना गौ ३, १६; काम  
१२; -नाम् सार २८५: १७.

उपासना-प्रकार- -रम् योशि ६,  
१; २.

उपासना-रुचि- -चिः सार २८८:  
१७.

उपासना(ना-आ)श्रित- -तः गौ  
३, १.

उपा(प-आ)समान, ना- -नः सार  
२४४: ५; २९२: १६; -ना सार  
२२०: २१; -ना: सार २३५:  
३; २४१: ४; २७९: १४; १५;  
२८०: १; ३; २८८: १५.

उपा(प-आ)सा-

\*उपासां/कृ, उपासांचक्रे छां  
१, २, १०-१२; उपासांचक्रिरे  
छां १, २, २-७.

उपासा-त्रैविध्य- -ध्यात् ब्रसू  
१, १, ३१.

उपासा-निश्चित- -तम् सुं २,  
२, ३.

उपासा-सिद्ध- -द्धस्य सांसू  
१, ९५.

उपा(प-आ)सित- -तः मै ५, ६; मैत्रि  
६, ६; ते ३, १८; सार २३४:  
२२; -तम् वपू १, ५.

उपा(प-आ)सितव्य- -व्यम् के ४,

६; तै १, ११, ४; मना २, १२,  
३९<sup>०</sup>; जा ४; नापू २, ४; नाउ  
३, ५; नाप ३, ७७; राउ १, २;  
ता १, २; २, १<sup>२</sup>; भ २, १८<sup>२</sup>; या  
१, १; दत्ता १, २; विद्या १.

उपा(प-आ)सित्वा<sup>०</sup> आबो ३१.

उपा(प-आ)सीन- -नः कुं १३<sup>०</sup>.

उपा(प-आ)स्ति- -स्तिः म ४९: १६;  
नाउ ३, ५; -स्तिम् म ४८: १०;  
१५; २०; ४९: ५; १२; २०.

उपा(प-आ)स्य श्वे ६, ५; मना २,  
१०९<sup>०</sup>; राउ ५, १६; नाप ४, ३८;  
द २०; शि ७, ९२.

उपा(प-आ)स्य- -स्यः पप ४२०:  
४; राउ ३, १<sup>२</sup>; जा २<sup>२</sup>; नि ९; ४२<sup>२</sup>;  
भव २, ६१; वउ ६, ४७; -स्यम् तै  
१, ११, ४; महा ४, ७१; नाप ९,  
१७; अता<sup>५</sup>; -स्यानि तै १, ११, २.

उपास्य-देवता-भाषिन्-  
-विणः स्व ६१: १७.

उपास्य-सिद्धि-

उपास्यसिद्धि-वत् सांसू ४,  
३२<sup>२</sup>.

उपा(प-आ)स्यमान- -नः सुबा ५<sup>२</sup>;  
सं ८.

उपा(प-आ)/हृ, उपाहर महा ५,  
१७०; उपाहरात् प्रा १, ३.

१उपे(प/इ), उपैति सुं ३, १, ३; २, ८;  
मै ३, ३<sup>२</sup>; मैत्रि ३, ३<sup>२</sup>; ४, १, ४;  
६, ९; १४; ध्या ६९; नाप ८,  
११<sup>०</sup>; योचू ४०; अव्य ३; ब्र १; स  
३७९: ४; १२; हे ११; गु ३८;  
संका ६१; गी ६, २७; ८, १०;  
२८; उपयन्ति वृ ६, २, ७; कौ  
१, ४; आर्षे ७: १०; १६; बा २०;  
उपैमि वृ ६, २, ७; उप...एतु दे  
५९<sup>१</sup>; उपायानि कौ १, १; ४, १८;

उप...अयानि वृ २, १, १४<sup>१</sup>;  
उपेयात् वृ २, १, १५; कुं ९;  
कश्रु ३, १; उपेयाम् छां ४, ४, ३.

उपा(प-आ)य- -यः गौ ३, १५; सु  
२, २, ३८; ब्रवि ३८; -यम् १योट  
१४; महा ४, ८८; योशि १, १२;  
६२; अव्य ३<sup>२</sup>; -येन गौ ३,  
४२; हं १; सु १, १, २६; सर १,  
१; शां १, ४; जाबा १४; चैः सुं  
३, २, ४; शि ६, १२७; सांका ६०.  
उपाय-तत्सू(>) शि ७, ३६; गी  
६, ३६.

उपाया(य-आ)न्तर-वर्जन- -नम्  
भव ५, १९.

उपा(प-आ)यन-

उपायन-कर- -रः नाप ६, १७.

उपायन-कीर्ति- -र्या वृ ६, २, ७.

उपायन-शब्द-शेष-

उपायनशब्दशेष-त्व- -त्वात्  
ब्रसू ३, ३, २६.

उपायना(न-आ)र्थ- -र्थम् वृजा  
६, १.

उपा(प-आ)यु<sup>०</sup>- -यवः २प्र ३६:  
१९९<sup>१</sup>.

उपे(प-इ)त- -तः मै १, १; मैत्रि १, २;  
मैत्रे १, १; अज १, १९; शि ७,  
९७; गी ६, ३७; -तम् शि ६, ६८;

भव १, १६; -ताः गी १२, २.

उपे(प-इ)त्य क १, १, २८; प्र १, ३;  
६, १; छां ६, १, २; पप ४१९:  
९; गी ८, १५; १६.

उपे(प-इ)य- -यः ब्रवि ३८.

उपे(प-ई)यिवस्- -यिवान् शु ३,  
२२; -युषः महा ५, ६२.

२उपे(प-आ/इ), उप...एतु सर २,  
८९<sup>१</sup>; उप...एहि व ४६०: ९९<sup>१</sup>.

उपे(प/ई)ञ्, उपेक्षस्व महा ५, १७०.

a) तैआ १०, १०, ३। b) ल्यबभावः उत्सं. (पा ७, १, ३७)। c) 'उपासीत' इति अख्या। d) 'उपास्व' इति तैआ १०, ८, १। e) 'उपेत्थ' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। f) ऋ ८, १००, ११। g) 'यानि इति आन. मुपा. (तु. शं., रामा.) यनि. सु-शोधः। h) व्यु. नैप १ यद्र.। i) तैसं १, १, १, १। j) ऋ १०, ८३, ६।

उपे(प-ई)क्षक- -कः सांका ६६.  
 उपे(प-ई)क्षा- -क्षा वरा १,१३; नाप  
 ४,१२.  
 उपे(प-ई)क्षि(तु>)त्री- -न्याः  
 १संन्या २,२७.<sup>३</sup>  
 उपे(प-इ)न्द्र- -न्द्रः ता २,१; -न्द्राय  
 त्रिवि ७,४१.  
 उपेन्द्र-स्वरूप- -पः ता ३,२; ८.  
 उपोत्था(उप-उद्/स्था), > तिष्ठ,  
 उपोत्तिष्ठेत् वृ ३,८,२.  
 उपोदस्थाम् वृ ३,८,२.  
 उपो(प-उ)द्/गृह्  
 उपोद्-गृह्ण- -ह्णन् छां ४,२,५.  
 उपो(प-उ)प/कल्प्(कृप्)-  
 > कल्प्  
 उपोप-कल्प्- -ल्पम् वृजा ३,  
 ३४<sup>३</sup>; ९<sup>५</sup>.  
 उपो(प-उ)प/नम्, उप... उपनमति  
 वृजा १,१.  
 उपो(प-उ)प/विद्, उपोपविवेश  
 छां १,१०,८; ४,१,८; ६-८,१.  
 उपो(प-उ)प/सद् > सीद्, उपोप-  
 सीदाम २प्र ३६: ९९<sup>७</sup>.  
 उपो(प-उ)प/दोह, उपौषत् सु  
 २९३: १२.  
 उपोषण-, उपोष्य उप/वस्(अशने) द्र.  
 उत्त- /वप् द्र.  
 उभ, भा- -भयोः क २,३, १३; गौ  
 १, १३; २, ११; मैत्रि ७, ११;  
 गर्भ ३; मना २, ५०<sup>९</sup>; ध्या  
 ८९; त्रिब्रा २, ३५; १६१; योचू  
 ६२; मं २, ३, ३; अव्य ६<sup>३</sup>; -भा  
 दे १९<sup>७</sup>; त्रि १४; -भाभ्याम् प्र  
 ३, ७; छां ४, १६, ५; अव्य ६;  
 नी २, ७९<sup>६</sup>; भव १, ३३; पित्र  
 ६, ११; सांसू ५, ६३; -भे क

१, १, १२; २, १; २५; तै २, ९, १;  
 छां ४, १६, ४; ८, १, ३; ३, ५<sup>३</sup>;  
 वृ ३, ५, १; ४, ३, ९; १८; ४,  
 २२<sup>३</sup>; गौ ४, ६७; मना १, २९<sup>७</sup>;  
 वृजा ४, २३; त्रिब्रा २, ३९; जाद  
 ३, २; यो १, ५; -भौ क १, २,  
 १९; २, १, ४; छां १, १, १०; ७,  
 ७; ७, १२, १; ८, १, ३<sup>३</sup>; ६, २<sup>३</sup>; ८,  
 ४; वृ ४, ३, ७; १८; मना २,  
 ४२<sup>९</sup>; ५०<sup>९</sup>; कौ १, १; रार ५,  
 ८; २प्र ३५: १५; वृ ४६०: १२<sup>९</sup>.  
 उभय- -यम् ई ११: १४; छां १,  
 २, २-६; ३, १८, १; २; वृ १, ४,  
 ६; १४; ४, १, १; गौ १, ५, ४,  
 ६७; श्वे १, १३; मैत्रि ७, ९;  
 ब्रवि ५६; त्रिब्रा २, ४६; पत्र २, १;  
 मं १, ३, २; -यस्मिन् ब्रसू १, १,  
 २७; -यस्य राप् १, १३<sup>१</sup>; -यान्  
 वृ ४, ३, ९; अरु २७<sup>९</sup>; -ये छां  
 १, २, १; ८, ७, २; ब्रसू १, २, २०.  
 उभय-तट-ब(द्व>)द्धा- -द्धा  
 सार २२१: १७.  
 उभय-तस्(>) वृ ५, ५, १;  
 नृपू २, ५; अव्य ५; वपू २, २.  
 उभयतः-प्रज्ञ, ज्ञा- -ज्ञः सुबा  
 ५; -ज्ञम् मां ७; राउ ३, १; नृपू  
 ४, ७; नृउ १, १२; नाप ८, १९;  
 ९, २०; विद्या १; वउ १, १३;  
 ५, ३८; -ज्ञाम् विद्या ४.  
 उभय-त्र १योत ११५; सांसू ५,  
 २३; १००.  
 उभय-त्व- -त्वम् गौ १, २०;  
 -त्वात् मां १०; नृउ २, ६.  
 उभय-था गौ ३, १८; सांसू १,  
 ४७; ९४: ५, ३९; ६, २६; ब्रसू २,  
 २, १२; १६; २३; ३, ४०; ३, ३,

२९; ४, ४३; ४, ३, १५.  
 उभय-नित्यत्व- -त्वात् ब्रसू २,  
 २, ३६.  
 उभय-पक्ष-समान-क्षेम-  
 -मात् सांसू १, ४६<sup>१</sup>.  
 उभय-पा(द>)द्- -पात् छां  
 ४, १६, ५.  
 उभय-प्राधान्य- -न्येन त्रिवि  
 २, १०.  
 उभय-भ्रष्ट- -ष्टः मैत्रे २, २०.  
 उभय-रूपक- -कम् पत्र २, १.  
 उभय-लिङ्ग- -ङ्गम् ब्रसू ३, २,  
 ११; -ङ्गात् ब्रसू ३, ४, ३४.  
 उभय-वचन-हेतु- -तू शु ३, ११  
 उभय-विध- -धम् ब्रसू ४, १२  
 उभय-विभ्रष्ट- -ष्टः गौ ६, ३८.  
 उभय-व्यपदेश- -शात् ब्रसू ३,  
 २, २७.  
 उभय-व्यभिचार- -रात् सांसू  
 १, ४०.  
 उभय-व्यामोह- -हात् ब्रसू ४,  
 ३, ५.  
 उभय-सामञ्जस्य- -स्यात् ब्रसू  
 ३, २, २०.  
 उभय-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
 १०२; १०३.  
 उभय-हेतुक- -के ब्रसू २, २, १८.  
 उभया(य-आ)त्मक- -कः नाप ८,  
 १; तु ३; -कम् पं ३२; सार २९१:  
 १९; सांसू २, २६; सांका २७.  
 उभयात्मक-त्व- -त्वात् नाप  
 ८, १; तु ५.  
 उभयात्मक-साकार- -रः  
 त्रिवि २, ६; १०.  
 उभयात्मको(क-उ)त्पत्ति-  
 प्रणव- -वः नाप ८, १<sup>m</sup>.

a) तु. टि. उदुत्/हृ। b) °सीदामि इति गोत्रा १, १, २८। c) व्यु. वैप१ यद्र.। d) तैत्रा १, २, १, १५।  
 e) ऋ १०, १२५, १। f) मा १६, १४। g) तैत्रा १०, १, २। h) तैत्रा १०, ४०, १। i) ऋ १०, ८३, ७। j) पा. ?  
 प्राकरणिक्तरत्वात् यस्मि. एव स्यात् (तु. आन. पक्षे नादी. च; वैतु. निसा., अज्या., उत्र., पक्षे नादी. च सोभयस्य  
 > सः अ° इत्येवं विच्छेदः)। k) तैत्रा १, २७, ४। l) °क्षमत्वात् इति सटि.। m) °त्मकः विराट्प्रणवः इति अज्या.



उभया(य-अ)त्मन् -त्मा मैत्रि  
६, ९.  
उभया(य-अ)न(न-अ)वधारण-  
-णम् योसू ४, १९.  
उभया(य-अ)नित्यत्व- -त्वात्  
सांसू ५, ९७.  
उभया(य-अ)न्यत्व- -त्वात्  
सांसू १, १२९.  
उभया(य-अ)ज्ञान- -नात् ब्रसू  
१, ४, २५.  
उभया(य-अ)र्थ-  
उभयार्थ-त्व- -त्वम् रार  
५, १०.  
उभया(य-अ)विरोध- -धात्  
ब्रसू ३, ३, २८.  
उभयै(य-ए)क्य-दृष्टि- -दृष्ट्या  
अता ९.  
उभयो(य-ऊ)ष्म-वर्जित- -तम्  
अना २५.  
उमा<sup>b</sup>- -मा त्रि ६; रुह ५, ९; १७;  
१८-२३; नापू २, ९; वपू २, ४;  
-माम् के ३, १२; भ २, २९; पा ५, ३  
औम<sup>१</sup>- -मम् शि ५, ४८.  
उमा-कान्त- -न्तम् स ३७८ : ७.  
उमा(मा-अ)नुरक्त- -क्ताः भ २, २७.  
उमा-पति- -तये मना २, २२९;  
-तिः वपू १, १२.  
उमा-रमण- -०ण शु १, ९.  
उमा-रुद्रा(द-आत्मक)त्मिका-

-काः रुह १०.  
उमा-रूप- -पम् रुह १०.  
?उमार्धकृतशेखर<sup>d</sup>- -रम् भ १, १.  
उमा(मा-अ)र्ध-देह- -हम् १योत  
१०१.  
उमा-शं-कर-योग- -गः रुह ११.  
उमा-सहा(ह-अ)य- -यम् मं १, ४,  
१; कै १, ७.  
उमा-सहित- -तम् बि १.  
उर-ग<sup>e</sup>- -गः सांसू ३, ६६; -गान् गी  
११, १५.  
उरग-कक्ष्य- -क्ष्यम् द ३.  
उरग-पाश- -शेन श ११.  
उरगा(ग-अ)ङ्गुलिक- -कम् वउ  
४, ३६.  
उरण<sup>f</sup>- -णः बा २१; २२; -णम् वा २.  
उरस्<sup>१</sup>- -रः छां ५, १८, २; वृ १, २,  
३; मना २, ८०९<sup>६</sup>; भव २, २८;  
-रसि मैत्रि ७, ११; जाद ७, ६.  
उर(सू>)- -स्थल- -ले स ३७९: २.  
उ(रसू>)रो-देश- -शात् जाद ७, ६  
उरो-मुख-कटि-ग्रीव- -वम् जु ४.  
उरु<sup>१</sup>- -रुषु वपू २, १३६<sup>b</sup>; नापू ४,  
११९<sup>b</sup>; -रौ जाद ७, ८.  
उर्वी- -र्वी मना २, १९<sup>१</sup>; २८९<sup>१</sup>;  
मैत्रि ६, २६; कृपु १५; व ४६१;  
११९<sup>१</sup>.  
उरु-क्रम- -क्रमः तै शां<sup>१</sup>; १, १२,  
१; विद्या शां<sup>१</sup>; -मम् दे २.

?उरु-ग<sup>१</sup>- -गाय पा १०, ७.  
उरु-गाय<sup>१</sup>- -यः नापू ४, ६९<sup>m</sup>;  
-यम् क १, २, ११.  
उरुगाय-वत्- -वतः छां ७,  
१२, २.  
९<sup>n</sup>उरु-शंस- -०स व ४४० : २३;  
४४६ : ६; ४५१ : ३; ४५४ : १०.  
उर्वै(रु-अश)शी<sup>१</sup>- -श्या सार  
२५६ : ३; -श्याम् वसू १४.  
उर्वी<sup>१</sup>-  
उर्वीरु-क- -कम् मना २, ५६९<sup>१</sup>;  
त्रिता १, ८९<sup>१</sup>; ४, १०९<sup>१</sup>; ११;  
२शिसं २४९<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>व ४३० : २;  
४३८ : १६; ४३९ : ४; १४;  
४४० : १; ११; २१; ४४१ : ९;  
१९; ४४२ : ७; १८; ४४३ : ५;  
१५; ४४४ : ८; १८; ४४५ : ६;  
१७; ४४६ : ४; १५; ४४७ : २;  
१३; ४४८ : १; १२; ४४९ : १;  
११; १८; ४५० : २; ९; १६;  
२३; ४५१ : ९; १६; २३; ४५२ :  
८; १६; २३; ४५३ : ६; १२; १८;  
४५४ : १; ७; १५; २१; ४५५ : ५.  
उलूक<sup>१</sup>- -कस्य आबो २५.  
उलूखल<sup>१</sup>- -लः कृ २१<sup>n</sup>.  
उलूलु<sup>१</sup>- -लवः छां ३, १९, ३<sup>१</sup>.  
उल्का<sup>१</sup>-  
उल्का-मु(ख)खी- -०खि व  
४३५ : २२; -खीम् व ४५६ : २.

a) °ष्ट° इति आन. । b) व्यु. ? भोः (>उ) मा इत्येतयोर्द्वयोः अव्य. सतोर्योग इति पुराकल्पः (तु. MW.) ।  
उ- (=महेश-) + मा (=लक्ष्मी-) इति षस. इति अभा. । उभयथाऽपि सासस्व. स्यात् (आद्युदात्तस्तु मूले भ्रूयते) ।  
मौस्थि. तु (✓\*भृ दीप्तौ >भाप.) \*भुर्- + (✓मा माने >भाप.) \*मा- इति कृत्वा बस. सतः \*भुर्मा- इत्यस्य नैप्र.  
विपरिणामः । ✓वै तन्तुसन्तान इत्येतज्जं सरूपं प्राति. अतो भिन्नम् (तु. WW १, १६) । c) तैआ १०, १८, १ ।  
d) पा. ? 'उमाऽर्धे धृता यस्य तच्च शरीरमस्य' इति कृत्वा उमा(मा-अ)र्ध-धृत-शरीर->-रम् इत्येवं शोधः  
स्यात् । e) पू. ? उरु- (=क्रिवि.) इति स्यात् (वैतु. पावा ३, २, ४८ उरस्- इति) । MW. मध्योदात्तनिर्देशोऽप्रामाणिकः ।  
f) व्यु. वैपश् यद्र. । g) तैआ १०, ६४, १ । h) ऋ १, १५४, २ । i) ऋ १, १८९, २ । j) तैआ १०, २१, १ ।  
k) ऋ १, ९०, ९ । l) स्वरूपतः संदेहः । उरु- (=क्रिवि.) गाय (=लोडि मपु १ < ✓मै) इत्येवमपि सम्भावनात् । यद्वा  
उदक->-काय (=तदधिष्ठात्रे) इति स्यात् । यस्थि. अपि उप. < ✓गा वा < ✓नै (तु. पाटी.) वेति संदेहः ।  
m) ऋ १, १५४, १ । n) ऋ १, २४, ११ । o) ऋ ७, ५९, १२ । p) पूर्वेण संधिरार्थः । q) तु. वैपश्  
उलूलि- इति ।

उल्का-वत् अना १.  
 उल्का-हस्त- -स्तः ब्रवि ३६.  
 उल्व<sup>a</sup>- -ल्वम् छां ३, १९, २; -ल्वेन  
 गी ३, ३८.  
 उल्बा(ल्व-आ)वृत् -तः छां ५, ९, १.  
 उल्वण<sup>a</sup>- -णम् शि ७, ५०.  
 उ(ङ्)>ल्ल/लङ्घ  
 उल्ल-लङ्घय- -त्रिवि ६, १९.  
 उ(ङ्)>ल्ल/लल्ल  
 उल्ल-लल्ल(त>)न्ती- -न्तीभिः  
 छाग २४ : २२.  
 उ(ङ्)>ल्ल/लस्, उल्लसति महा ५,  
 ५२; योशि ६, ६७.  
 उल्ल-लास-  
 उल्लास-शालिन-  
 उल्लासशालि-ता- -ता महा  
 ३, ४१.  
 उ(ङ्)>ल्ल/लिस्, उल्लिखेत् शि ७,  
 ५४.  
 उशत्- /वश् द.  
 उशनस्<sup>a</sup>- -ना गी १०, ३७.  
 उशीनर<sup>a</sup>- -रेषु कौ ४, १.  
 उशीर<sup>b</sup>- -रम् वृजा ३, २७; -रस्य  
 शि ४, ३७.  
 ✓उष्(दाहे)<sup>c</sup> सु २९३ : १३; ओषति,  
 औषत् वृ १, ४, १.  
 उष्ण, ण्णा- -ष्णः छां १, ३, २<sup>d</sup>; चा  
 ११; -ष्णम् गर्भ १; पङ् २;  
 नाप ३, ८६; १योत ४७; शारी  
 १; यो १, ७१; इ १८ : १; वउ  
 २, २१; -ष्णा व ४४३ : २०;  
 सिशि ३८३ : ४.  
 औष्ण्य- -ष्ण्यम् मै २, ८<sup>e</sup>;  
 मैत्रि २, ६<sup>f</sup>; ६, २७; ३१; ७, ११.

उष्ण-ज्वर- -रम् व ४३३ : २१.  
 उष्ण-ता- -ता महा ४, १९.  
 उष्ण-स्वरूपक- -कम् यो १, ४४.  
 उष्णिमन्- -मानम् छां ३, १३, ७  
 उष्णो(ष्ण-उ)दक- -केन सार  
 २३३ : २२; २६४ : २.  
 उषत्<sup>a</sup>- -षद्भिः व ४३७ : २०९<sup>d</sup>.  
 उषस्<sup>a</sup>- -षः व ४३७ : १५९<sup>e</sup>; -षसः  
 वृ ६, ३, ६९<sup>f</sup>; अरु १६९<sup>g</sup>; -षसम्  
 व ४३७ : १२९<sup>h</sup>; मना २, ३९९<sup>i</sup>;  
 -षाः वृ १, १, १; सूता २, १३९<sup>j</sup>.  
 उषस्त<sup>k</sup>- -स्तः वृ ३, ४, १; २<sup>l</sup>.  
 उषस्ति<sup>k</sup>- -स्तिः छां १, १०, १; ११, १.  
 उषा<sup>a</sup>- -षा राधा २, ४.  
 उषित-, उषित्वा /वस्(निवासे) द.  
 उष्ट<sup>a</sup>-  
 उष्ट-कुङ्कुम-भार-  
 उष्टकुङ्कुमभार-वत् नाप ५,  
 १; १संन्या २, ५९.  
 उष्ट-कुङ्कुम-वहन-  
 उष्टकुङ्कुमवहन-वत् सांसू ३,  
 ५८; ६, ४०.  
 उष्णिह<sup>a</sup>- -णिक् गार ४०७ : १६;  
 वपू १, ६.  
 उह्यमान- /वह द.

ऊ

ऊ<sup>a</sup>  
 ऊ-कार<sup>a</sup>- -रः छां १, १३, २.  
 ऊं त्रिवि ७, ३६; आय ३९४ : ४;  
 व ४३५ : ६.  
 ऊं-कार- -०र अक्ष ५.  
 ऊति- /अवृ द.

ऊन<sup>a</sup>- -नम् २प्र ३३ : ११.  
 ऊन-त्रिशत्- -शत् त्रि ३<sup>m</sup>.  
 ऊन-विंशत्<sup>a</sup>- -शत् त्रि ३<sup>n</sup>.  
 ऊरु<sup>a</sup>- -रुणि शां १, ३, ४; -रुभ्याम्  
 लु ७; -रुम् शां १, ३, ४; -रुवोः  
 मना २, ७२९<sup>p</sup>; -रुवृद्ध, ४, २१;  
 सार २४५ : ७; सुबा १९<sup>q</sup>; गार  
 ४०८ : ९; -रौ त्रिबा २, ३७;  
 शां १, ७, ५२; -रौः त्रिबा २,  
 ३९; १३१; लु १४; वृजा ४,  
 १४; २१; शां १, ३, ३; यो १, ५;  
 आद ३, ५; पाद, ६; वउ ३, ४८.  
 ऊरु-च्छिन्न- -च्छः कौ ३, ३.  
 ऊरु-देश- -शम् वृजा ३, ३१; ४, १.  
 ऊरु-द्वय- -ये व ४५६ : २१.  
 ऊरु(रु-उ)परि १योत ११४.

✓ऊर्ण

ऊर्ज- ऊर्जं मुद्र ३; ऊर्जम् वृ १, ५, १;  
 २; मना २, ७९<sup>r</sup>; दे ५९<sup>s</sup>; प्रा १,  
 ४९<sup>t</sup>; ह १५९<sup>u</sup>; सर २, ७; ८९<sup>v</sup>; ऊर्जं  
 मना १, ११९<sup>w</sup>; २प्र ३६ : १९९<sup>x</sup>.  
 ऊर्ज- -र्जेण अशि ५, ७<sup>x</sup>; २०<sup>y</sup>;  
 वउ ३१७ : १०.  
 ऊर्जस्-  
 ऊर्जस्-वत्- -स्वन्तम् मैत्रि  
 ६, २४.  
 ऊर्जस्वती- -ती मना २,  
 ४३९<sup>z</sup>.  
 ऊर्जित- -तः महा ५, ८२; -तम् गी  
 १०, ४१.  
 ऊर्जित-ता- -ता १संन्या २, ५६.  
 ✓ऊर्ण  
 ऊर्ण-  
 ऊर्ण-नाभि<sup>a</sup>- -भिः सुं १, १, ७;

a) व्यु. वैपश् यद. b) व्यु. ? < ✓वश् कान्ताविति पाउ. (४, ३१)। c) = ✓उष् (दाहे)। d) ऋ १, ६, ३।  
 e) ऋ १, ६९, १। f) ऋ १, ९०, ७। g) तैआ १, २७, २। h) ऋ १०, १, १। i) 'उषसः' इति ऋ १, ९०, ७। j) तैआ  
 ३, ७, ६, २३। k) व्यु. ?। l) = वर्णः। m) तु. भारा.; वैतु. निसा., उन्न. ऊन-त्रिंश-> शत् इति। n) उप. विंशति-  
 पर्यायः सत्तोऽपरं प्राति. द. (वैतु. भारा. प्राति. अमेदे सति छान्दसः विपरिणाम इति)। o) तु. एष्टि.। p) शौ १२,  
 ६०, १। q) ऋ १०, ९०, १२। r) तैआ १०, ५, १। s) ऋ ८, १००, ११। t) मा ११, ८३। u) ऋ ८, १००, १०।  
 v) ऋ १०, ९, १। w) मा १, १। x) °र्जेण इति आन.। y) °र्जम् इति अन्वा.। z) तैआ १०, ४२, १।



वृ २, १, २०; मैत्रि ६, २२; ब्र  
३, ११; गु २६.

ऊर्णनाभी- -भी लु ९.

ऊर्ध्व, धर्वा- -ध्वः प्र३, ७; ऐ४, ६; छां  
३, १०, ४<sup>b</sup>; ११, १; १३, ५; ६, ६,  
१-४; वृ ५, १०, १<sup>c</sup>; त्रिवि ४,  
९९<sup>o</sup>; अद्वैता १६; -ध्वम्<sup>d</sup> क २,  
२, ३; ३, १६; प्र १, ६; २, ४; सुं  
२, २, ११; छां २, ९, ६; ७; ७, १,  
१; ८, ६, ५; ६; वृ ३, ८, ३; ४;  
६; ७; ४, ३, १४-१६; ३३; ४, ८;  
श्वे ४, १९९<sup>o</sup>; ५, ४; मै २, २; ७;  
मैत्रि २, २; ६; ६, १७<sup>e</sup>; २१;  
२२<sup>f</sup>; ३०<sup>g</sup>; आरु २, ५; ना २;  
मना १, २९<sup>h</sup>; २, १३, २९<sup>i</sup>; अना  
२२; २३; अशि १, ५; ४, १; ७;  
६, ५; ७९<sup>j</sup>; अ १; वृजा २, ६; ७;  
३, १; सुभा ६; ते ४, १९; २ संन्या  
१६: २; नाद २२; ध्या ५०;  
ब्रवि ४०; १योट १२१; १४१;  
नाप ३, ५६; त्रिब्रा २, ६६; १०२;  
११५; १२३; १३२; योचू १४;  
२८; ३०; ३८; ४०; ४२; ४६;  
५९; अता ११; रापू ४, ४१;  
वा १८; ३२; शां १, ४<sup>k</sup>; ७, १३;  
महा ५, १५६; ६, १०; योशि १,  
१०४; १०८; ६, ४; १५; १९;  
३५; ५१; कुं २१; दे १; करु १;  
यो १, १३; ६८; ७२; २, ३५; ३,  
१२; रुजा १, १; जाद ४, २;  
१८; ६, ३३; गोच ५२<sup>l</sup>; वरा  
५, २०; ४४; ६८; सु २, २, ७४;  
अद्वै १९; इ १०: १९; १६:  
१७; गोच ६६: २१; नापू ४,

३०; ५, १६; वटु ३१५: १६;  
२२; स शां<sup>m</sup>; शि २, ५; ६, ७७;  
कालि ४०३: ३; गार ४०६:  
७; गु ७; ६२९<sup>n</sup>; ६४; आश्र १;  
कश्रु २, ३; वउ ४, २७; सांस् ३,  
४८; सांका ४४; ५४; गी १२,  
८; १४, १८; १५, २; -धर्वा वृ ४,  
२, ३; ४; -धर्वा: छां १, ४, ३;  
२, २, ३; ३, ५, १; वृ ४, २, ४;  
मैत्रि ३, १<sup>o</sup>; २<sup>o</sup>; ७, ५; वा  
१७; गोच ६६: १७; -धर्वाभि:  
छां ७, ११, १; -धर्वास् मै ३, १;  
२; २प्र ३३: ७; -धर्वाय मना २,  
१६९<sup>k</sup>; -धर्वायाम् व ४४२: १२;  
४४७: १८; ४५२: ५; -ध्वे  
त्रिब्रा २, ३; ६२; शारी ५; -ध्वेन  
मैत्रि ६, ३०; -ध्वेषु छां २, २, १.  
ऊर्ध्व-काय- -य: त्रिब्रा २, १४६.  
ऊर्ध्व-ग, गा- -ग: वृजा २, ८; योचू  
७८; ७९; अल ५, २५; यो १,  
१५; १६; ६४; -गम् यो १, ४२;  
६३; वरा ५, ३८; ४४; -गा मैत्रि  
६, २१; वृजा २, ७; शां १, ४<sup>k</sup>;  
-गे यो १, ४३; -गेन त्रिवि ५, १२.  
ऊर्ध्वग-रेखा-चतुष्टय- -यम्  
त्रिता २, ४२.  
ऊर्ध्व-गत, ता- -तम् यो १, ८४;  
-ता जाद ४, २१<sup>l</sup>.  
ऊर्ध्व-गल्य(ति-अर्थ)- -र्थम् वरा  
५, ४०.  
ऊर्ध्व-गमन- -नम् जाद ४, ३२;  
आरु २; पप ४१९: १.  
ऊर्ध्व-गामि(न>)नी- -नी ब्रवि  
७३.

ऊर्ध्व-चतुष्क-

ऊर्ध्वचतुष्क-वत्- -वान् वा ३२.  
ऊर्ध्व-जिह्व- -ह्वा: शां १, ७, ४३.  
ऊर्ध्व-ज्वल- -लम् त्रि ४<sup>m</sup>.  
ऊर्ध्व-तस्(>) त्रिब्रा २, ६२; योचू  
९८; शां १, ७, १; ४३<sup>n</sup>; योशि  
५, ४१; व ४६५: १६.  
ऊर्ध्व-दण्ड- -ण्ड: वा ३१<sup>o</sup>.  
ऊर्ध्व-द्वार- -रम् व ४२८: २.  
ऊर्ध्व-नाल- -लम् ध्या ३३; ब्रवि  
७४; १योट १२८; २योट १, ९.  
ऊर्ध्व-पवित्र- -त्र: तै १, १०, १;  
नाप ४, ३८९<sup>p</sup>.  
ऊर्ध्व-पाद- -द: १योट १२४.  
१ऊर्ध्व-पुण्ड्र- -ण्डम् वृजा ५, १;  
नाप ७<sup>q</sup>; वा १९<sup>r</sup>; ३३; का ६;  
८; गोच ६६: १८; नार ५; ७;  
य ४; कृपु २०; सु २९३: ४;  
२९५: ३; -ण्डा: ऊ ६४: ५.  
ऊर्ध्वपुण्ड्र-विधि- -धि: का १४;  
-धिम् वा १; ऊ ६३: २; गोच  
६५: २.  
२ऊर्ध्व-पुण्ड्र- -ण्ड: वा ३१<sup>o</sup>.  
ऊर्ध्व-पूर्ण- -र्णम् सु २, २, ५६.  
ऊर्ध्व-प्रवर्ति(न>)नी- -नी त्रिब्रा  
२, ६८.  
ऊर्ध्व-बाहु- -हव: अशि १, १३;  
च २१: १५; -हु: मै १, १; मैत्रि  
१, २; नाप ४, ३८; पप ४१८:  
२७; करु १; कुं ९<sup>s</sup>; कश्रु ३, १.  
ऊर्ध्व-बुध्न- -ध्न: वृ २, २, ३<sup>t</sup>.  
ऊर्ध्व-भाग- -गेषु शां १, ४.  
ऊर्ध्व-भाज- -भाक् मै ४, ३; मैत्रि  
४, ३.

- a) व्यु. वैप१ यद. । b) °ध्वम् इति निसा. । c) ऋ १०, ९०, ४ । d) कचित् वा. किवि. भवति ।  
e) मा ३२, २ । f) तैआ १०, ११, २ । g) 'ऊर्ध्वः' इति शौ १०, २, २६; आन. । h) 'ऊर्ध्वचरणः' इति आन. ।  
i) खि १०, १९१, १५ । j) तु. सस्थ. टि. √अवाच्, ञ्च्>अवाची-> -चीः । k) तैआआ १०, १६ ।  
l) °ध्वम् ग° इति अज्या. । m) °लनम् इति अज्या., °लज्ज्व° इति तान्त्रि., °लज्ज° इति निसा. च सुपा. यनि.  
सु-शोषाः । n) 'ऊर्णतः' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोषः (तु. अज्या.) । o) °ण्डी इति JC. । p) तैआ ७, १०, १ ।  
q) कस. । उप. पुं. न. च । r) वस. । s) °ण्डी इति JC. । t) °बाहुकः इति अज्या. ।



ऊर्ध्व-मन्थिन्-मन्थिनः सूता १, १९.

ऊर्ध्व-मय-यः वृजा २, ९.

ऊर्ध्व-मुख-खम् सौ ३, १.

ऊर्ध्व-मूल-लः क २, ३, १; -लम् मै ५, ४; मैत्रि ६, ४; योशि ६, १४; गी १५, १.

ऊर्ध्व-योग-

ऊर्ध्वयोग-वत्-वान् वा ३१.

ऊर्ध्व-रदा(द-आ)वली-ली गु १६

ऊर्ध्व-रन्ध्र-न्ध्रम् शां १, ७, ३०;  
-न्ध्रेण शां १, ७, ३१.

ऊर्ध्व-रेत-तम् मना २, २३९<sup>b</sup>;  
जाद २, २०; म २, ३; वृ १, १२;  
२शिसं ३०; व ४६४ : १२९<sup>b</sup>.

ऊर्ध्व-रेतस्-तः सु ब्रम् ३, ४, १७;  
-तसः मै २, ३; मैत्रि २, ३; ४;  
४, १; -ताः वा ३१<sup>d</sup>.

ऊर्ध्व-लिङ्ग-ङ्गम् मृ ४; १५; १८;  
-ङ्गाय मना २, १६९<sup>o</sup>.

ऊर्ध्व-वायु-विमोक्षण-णे २ योत  
२, ५.

ऊर्ध्व-शक्ति-क्तिः सौ ३, १<sup>g</sup>.

ऊर्ध्वशक्ति-निपात-त्तेन योरा  
२१.

ऊर्ध्वशक्ति-मय-यः वृजा २,  
५; ९<sup>b</sup>.

ऊर्ध्व-संपुट-योन्य(नि-आ)ङ्कित-  
-तम् त्रिता २, ४२.

ऊर्ध्व-स्तूपिका-कया शि ४, ७.

ऊर्ध्व-स्थित-तेजस्-जः अता ११.

ऊर्ध्वा(र्ध्व-आ)कुञ्चन-नम् योशि  
१, ८४.

ऊर्ध्वात्

ऊर्ध्वात्तात् ग ४.

ऊर्ध्वा(र्ध्व-आ)न्त-न्तम् शां १, ४.

ऊर्ध्वा(र्ध्व-आ)न्नाय-यः निर्वा  
२९७ : ४; म ४९ : ७.

ऊर्ध्वाङ्गाय-गुरू(र-उ)पदेश-  
भुवनाकार-सिंहासन-सिद्धा-  
(द्व-आ)चार-वन्दित-तम्  
म ४८ : १.

ऊर्ध्वा(र्ध्व-उ)च्छ्वासिन्-सी वृ  
४, ३, ३५; ३८.

ऊर्मि-र्मयः मै ४, २; मैत्रि ४, २;  
मुद्र ४; वरा १, ९; -र्मिः मना २,  
१२, २९<sup>l</sup>; महा ५, ११९; -र्मिम्  
सु २९४ : ६९<sup>k</sup>.

ऊर्मि-संख्या-ख्याया राप् ४, ४५.

ऊवध्य<sup>ii</sup>-ध्यम् वृ १, १, १.

✓ऊष्(कषणे)<sup>i</sup>

ऊष्<sup>m</sup>-

ऊष्-र<sup>n</sup>-रे सार २५९ : १४.

१ऊष्मन्<sup>ii</sup>-ष्मसु छां २, २२, ४;  
-ष्माणः छां २, २२, ३; ५.

✓ऊष्(दाहे)<sup>o</sup>

ऊष्ण<sup>p</sup>-ष्णम् ते ४, १८.

ऊष्णो(ष्ण-उ)दक-पुष्करिणी-

-ण्यः सार २२४ : २१.

२ऊष्मन्-ष्मा ब्रम् ४, २, ११.

ऊष्म-ज-

ऊष्मजा(ज-आ)ण्डज-जरायु-

जो(ज-उ)न्निज-संकल्पज-सांसि-

द्विक-कम् सांस् ५, १११<sup>q</sup>.

ऊष्म-प<sup>ii</sup>-पाः गी ११, २२.

✓ऊह(प्रापणे), ऊहति जाद ६, ४२.

ऊहमान, ना-नाः वपं ३१२ : २०;  
-नानाम् महा ४, १०६.

✓ऊह(वितर्के)

ऊह-हः सांका ५१.

ऊहा(ह-आ)दि-दिभिः सांस्  
३, ४४.

ऊहा(ह-अ)पोहा(ह-आ)दि-  
-दि मं २, ३, ७.

ऊहन-नम् अना १७९<sup>u</sup>.

ऊहित-तात् शां १, ७, २७<sup>v</sup>.

ऊह्य<sup>o</sup> रार १, ७.

ऊह्य-ह्यम् वृजा ५, १३.

ऋ

ऋ<sup>h</sup>

ऋं त्रिवि ७, ३६; व ४३५ : ६;  
४३६ : ४; ४३७ : २१.

ऋं-कार-०र अक्ष ५.

✓\*ऋ<sup>n</sup>, ऋच्छ<sup>v</sup>, ऋच्छति वृ १, ४, ११;  
नाप ३, ३६; आर्षे ८ : २०; इ  
१३ : ८; गी २, ७; ५, २९; ऋच्छतु  
व ४६२ : १६९<sup>w</sup>; आर्च्छन् शौ  
५१ : ५; ऋच्छेत् आर्षे ७ : १४.

\*ऋत्-

ऋतस्पति-ऋ<sup>o</sup>ते व ४४१ : ९;  
४४६ : १६; ४५१ : १०; ४५४ :  
१६.

१ऋत-तम् क १, ३, १; २, २, २९<sup>y</sup>;  
तै शां<sup>z</sup>; १, १, १; ९, १; १२, १; २,  
४, १; ऐशां<sup>z</sup>; मना १, २९<sup>z</sup>;

a) उप. रेत- इति रेतस्- इत्यतो भिन्नमदन्तं द्र. । b) तैआ १०, १२, १ । c) ०रूपम् इति अज्या. संटि. । d) पूर्वेण संधिरार्षः । e) तैआआ १०, १६ । f) तस. १मोऽवयवः क्रिवि. द्र. । g) ०क्तिताम् इति अज्या. । h) 'सोम-' इत्यस्य वि. भवत्यतः ०वम् इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोघः (तु. अज्या.). । i) व्यु. वैप १ यद्र. । j) ऋ ४, ५८, १ । k) ऋ ९, ९६, १९ । l) पावा. रुजाऽर्थ एवं विशेष्येत्यभिः संधिः । m) वैप २ व्यु. यनि. सु-शोघा (वैतु. Bw. <✓उष् ?) । n) तु. पा ५, ३, १०७ । o) =✓उष्(दाहे) । p) नक् प्र. उसं. (पाउ ३, २) । q) उष्म...सांका<sup>o</sup> इत्यपि पा. । r) 'उदित->तात्' इति अज्या. । s) असमासेऽपि ल्यप् उसं. (पा ७, १, ३७) । t) =वर्याः । u) ✓\*अर् इत्येतत्-सजातः सम् बधा. द्र. (तु. वैप १, ३९७p) । v) उभयोः धा. अन्योन्यसंबन्धाऽवच्छेदः वैप १ यद्र. । w) वृज ८, ४५ । x) ऋ ८, २६, २१ । y) ऋ ४, ४०, ५ । z) ऐआ २, ७, १ । a') तैआ १०, १, २ ।

१३९<sup>a</sup>; २, १०९<sup>b</sup>; १२, २९<sup>c</sup>;  
२, २३९<sup>d</sup>; ४०९<sup>e</sup>; वृजा ३, १५;  
कौ शां<sup>f</sup>; वृपू १, १२; ३, ६९<sup>g</sup>;  
नाद आबो शां<sup>h</sup>; नाप ५, १९<sup>i</sup>;  
निर्वा शां<sup>j</sup>; त्रिवि ४, ७; महा  
४, ४५; मुद्र शां<sup>k</sup>; अक्ष शां<sup>l</sup>;  
अक्ष ५, ७२; त्रिता ४, २८९<sup>m</sup>; २९;  
ग३; जाद २, १; सौ सर व शां<sup>n</sup>;  
बा ४; व ४६४: ११९<sup>o</sup>; सु १३;  
१४; २शिसं ३०; वपू २, ३९<sup>p</sup>;  
१कौल १: ५९<sup>q</sup>; गी १०, १४; तस्य  
तै ३, १०, ६; मना १, ४९<sup>r</sup>; वृपू २,  
१८९<sup>s</sup>; बा २२; तेन इ १२: ३.

कृत-जा- -जा: क२, २, २९<sup>t</sup>;  
मना २, १२, २९<sup>u</sup>; २, ४०९<sup>v</sup>;  
७९<sup>w</sup>; वृपू ३, ६९<sup>x</sup>; नाप ५, १९<sup>y</sup>;  
त्रिता ४, २८९<sup>z</sup>; २९; वपू २, ३९<sup>aa</sup>.  
कृत-जात- -तम् आषि ९:  
१६.

कृत-प्रजात- -०त व  
४३७: १४९<sup>ab</sup>.

कृत-भाग'-

आर्तभाग'- -०ग वृ ३,  
२, १३; -ग: वृ ३, २, १; १३.

आर्तभागी'-

आर्तभागी-पुत्र-

-व्र: -व्राव वृ ६, ५, २.

कृत-भुज्- -भुक् मैत्रि २, ७.

कृतं-भ(र>)रा<sup>ac</sup>- -रा

योसू १, ४८.

९<sup>ad</sup>कृत-सद्- -सत् क२, २,

२; मना २, १२, २; २, ४०; वृपू ३,

६; नाप ५, १; त्रिता ४, २७; वपू  
२, ३.

कृता(त-अ)नृत्- -ते पित्र  
६, ९.

✓कृताय्

कृतायत्- -९<sup>ae</sup>यते वृ ६, ३,  
६; मना २, ३९<sup>af</sup>; -यन् वृ २, ५,  
१७९<sup>ag</sup>.

२कृत<sup>ah</sup>- -ते ऐ ३, ११; छां ५, १,  
८-११; वृ ५, १२, १<sup>ai</sup>; ६, १,  
८-१३; महा ५, ४७; ससा १, २२;  
ब्रवि २६; वरा ३, १२; सु २,  
२, २१; २प्र ३६: ११; १शिसं  
३९<sup>aj</sup>; २शिसं ४९<sup>ak</sup>; भव १, ३०;  
सांसू १, १९, ५९; ३, १२; ७१;  
४, १७, ५, ६; सांका ४१; वउ ३,  
४३; गी ११, ३२.

\*कृति<sup>al</sup>-

✓\*कृतीय<sup>am</sup>

कृतीयमान- -न: बा २४.  
कृतु- -तव: छां २, ५, २; वृ १, १,  
१; ३, ८, ९; थे ४, ४; मना १,  
२९<sup>an</sup>; २, ८०९<sup>ao</sup>; कौ १, २<sup>ap</sup>; वृपू  
५, २; भा ६; सार २२४: ३;  
२३३: ६; २४६: ३; २६६: १९;  
२७२: ९; वपू ३, १; -तु: कौ  
१, २; ६; त्रिवि ३, ४; सार २६६:  
२०; -तुभि: अशि ७, ५; वृपू ५,  
२; -तुम् २प्र ३२: ११; १३;  
३३: ३; -तुषु छां २, ५, १; २;  
१६, १; २; सार २५३: २३; -तू  
२प्र ३३: ८; छां २, १६, २;

-तूनाम् मी १०, ३५; -तौ जाद  
१, १३.

आर्तव- -व: कौ १, २; ६;  
-वम् वृ ६, ४, १३.

कृतु-काल- -ले गर्भ ३.

कृतुकाला(ल-अ)भिगा-

मिन्- -मी आश्र १.

कृतु-क्षौर- -रम् नाप ७.

कृतु-गण- -णम् वपू २, ४.

कृतु-त्रय- -यम् त्रिवि ३, ४.

कृतु-द्वय-क्षौर- -रम् नाप ७.

कृतु-मत्- -मान् छां २, ५, २.

कृतुमती- -तीम् तारा  
८४: १२.

कृतु-संधि- -घय: गार ४०८:  
११; -धौ शा २०.

कृत्व(तु-अ)यना(न-आ)दिक-  
-कम् त्रिवा २, १२०<sup>at</sup>.

कृत्वि(तु-इ)ज्- -त्विक् छां ४,  
१७, १०; -त्विज: छां ४, १७, १०;  
जा ४९<sup>au</sup>; या १, १९<sup>av</sup>; १संन्या  
१, १<sup>aw</sup>; प्रा ३, १; २प्र ३६: १२;  
कथु १, १<sup>ax</sup>; -त्विजम् २प्र ३६:  
१७९<sup>ay</sup>; -त्विजा वृ ३, १, ३-६;  
-त्विजे छां ५, ११, ५.

आत्विज्य- -ज्यम् वृ १, ३,  
२५<sup>az</sup>; ब्रम् ३, ४, ४५; -ज्यै: छां  
१, १०, ६; ११, ३; ३.

कृत्विज- -९<sup>ba</sup>य: नाप , ७७;  
पप ४१८: १०.

कृत्वा छां १, २, ७<sup>bb</sup>; ८; वृ १, ३, ७;  
कौ १, ४९<sup>bc</sup>.

a) ऋ १०, १९०, १। b) तैश्चा १०, ८, १। c) ऋ ४, ४०, ५। d) तैश्चा १०, १२, १। e) ऐश्चा २,  
७, १। f) तैश्चा ७, १, १। g) मा ३२, ११। h) कौ ३, १, ९। i) तैश्चा १०, ६३, १। j) ऋ २, २३, १५। k) ऋ  
१, ९०, ६। l) वैतु. नादी. कृत- + भयत्- (<✓इ) इति। m) ऋ १, ११७, २२। n) हीनार्थवृत्तिनोऽस्य  
सुबृहत्तस्य सतः प्राति. [वैतु. पाग (१, १, ३७) अण्य. इति] व्यु. वैपश् यद्र.। o) मा ३४, ३। p) नाड. नाधा. मूलभूतं  
घृणावद्भुनिकं कर्त्रर्थकृदन्तं प्राति. वैपश् यद्र.। q) सुवि क्यङ् प्र. उसं. [पा ३, १, १२ (वैतु. पा ३, १, २९ [तत्-  
प्रत्याख्यानं च वैपश् यद्र.])]। r) तैश्चा १०, १, २। s) तैश्चा १०, ६४, १। t) मत्वा<sup>bd</sup> इति अज्या. सुपा. यनि.  
सु-शोध: (तु. निसा.)। u) 'कृत्विज:' इति शोध: द्र. (तु. ऋ ३, २९, १०; अज्या. च)। v) ऋ १, १, १। w) ऋ  
३, २९, १०। x) 'इत्वा' इति आन. शांश्चा ३, ४; वे. च।

कक्ष<sup>१०</sup>-

कक्ष-नख- -खम् वउ ४,३६.

✓कक्ष

कक्ष- कक्ष तै २,३,१; छां १, १, २; ४; ५; ३, ४; ६, १-५; ८; ७, १-५; वृ ६, ४, २०; मना २, ७९९<sup>०</sup>; अशि १, ७; मै ५, ५; मैत्रि ६, ५; कौ २, ६; सू १०; त्रि १६; २प्र ३३:९; ३४:३; १०; वपू १, ६; ७; ३, १; गी ९, १७; कर्मिभ: प्र ५, ७; वृ ३, १, ७; अ १; वृपू २, २; वृउ ३, २; सूता १, १४९<sup>०</sup>; ३१; गोच ६६: ७; क्रगभ्य: छां ४, १७, ३; सूता १, १५; कक्ष: प्र २, ६; ५, ३; सुं २, १, ६; तै १, ५, २; छां १, १, २; ४, ३; ३, १, २; ४, १७, २; ६, ७, ३; वृ १, २, ५; ५, १४, २; श्वे ४, ८९<sup>०</sup>; मना २, १४९<sup>०</sup>; कौ १, ५, २, ८; वृजा ६, १२९<sup>०</sup>; ८, ५; वृपू ४, ९९<sup>०</sup>; ५, ९९<sup>०</sup>; १८; सुबा ६; सी २२९<sup>०</sup>; रापू ५, १०; राउ ५, २९९<sup>०</sup>; अव्य ५; व २२९<sup>०</sup>; कृ ८, १३<sup>०</sup>; सौ १, १; ए ७; छाग २३: ३; २प्र ३३: १५९<sup>०</sup>; १६; १शिसं ५९<sup>०</sup>; २शिसं ६९<sup>०</sup>; गा ३; सु २९; ५३९<sup>०</sup>; वउ ५, १६; कक्षम् छां १, ३, ४; ९; ४, ४; अव्य २; ६; सु १, १, १४; कक्षा प्र १, ७; सुं ३, २, १०; छां ३, १२, ५; ५, २, ७; वृ ४, ४, २३; श्वे ४, ८९<sup>०</sup>; वृजा ६, १२<sup>०</sup>; ९८; वृपू ४, ९<sup>०</sup>; ९०; ५, ९<sup>०</sup>; २१; रापू ५, १७; राउ ५, २९<sup>०</sup>; अव्य २; ४; त्रिता २, ७१; वरा ५, ७६; शा ११; १८; २६; ३०; ३३; व २३९<sup>०</sup>;

सु १, १, ५१; २, २, ७७; २प्र ३३: १३; १४; सौ ५३: १३; २१; गु ५३९<sup>०</sup>; अद्वैभा १७<sup>०</sup>; कक्षाम् छां ४, १७, ४<sup>३</sup>; मना २, १४९<sup>०</sup>; सौ १, १; २प्र ३६: १६; कक्षि छां १, ३, ९; ४, ३; ६, १<sup>३</sup>-५<sup>३</sup>; ७, १<sup>३</sup>-४<sup>३</sup>; कक्षे मना २, ४०९<sup>०</sup>; कक्षौ छां ३, १७, ६.

कक्ष(च)कक्ष(च)छां ४, १७, ४ कक्ष-स्व-रूप(प)पा- -पाम् तुल ७०: ३.

कक्षि(न)ण<sup>०</sup>- -निमणम् आषे ९: १८.

कक्ष-यजुष- -पात छाग २३: २; -वै: छाग २३: ६; ८.

कक्ष-यजु(सु): -सामन्- -मानि २प्र ३६: ६.

कक्षयजु:साम-रूप, पा- -पा गार ४०७: १; -पाय ह ४; त्रिवि ७, ४०.

कक्षयजु:सामरूप-स्व- -स्वात् सी २१.

कक्ष-यजु(सु): -सामा(म-अ)-थर्व- -वा: वपू १, ७; -वै: २शिसं १९.

कक्षयजु:सामाथर्व-रूप- -प: वृपू १, ८; वपू २, १.

कक्ष-यजु(सु): -सामा(म-अ)-थर्वण-

कक्षयजु:सामाथर्वण-वेद-रूप- (प)पा- -पा: सार २७०: १७.

कक्ष-यजु(सु): -सामा(म-अ)-थर्वन्- -वाणि: वृपू १, ४; -वाणि २प्र ३६: ३.

कक्ष-यजु(सु): -सामा(म-अ)-थर्वकिरस्- -रस: मैत्रि ६, ३३;

महा १, १; -रसम् अशि ४, २<sup>१</sup>; वउ ३१५: १८.

कक्षयजु:सामाथर्वकिर- -र(सु): -पति- -०ते वपू १, ३.

कक्षयजु:सामाथर्वकिर- (रसु)रो-गण-सेवित- -तम् वपू १, ६.

कक्ष-विधान- -नाय मना २, ६६९<sup>०</sup>.

कक्ष-वेद<sup>१</sup>- -द: सुं १, १, ५; छां १, ३, ७; ३, १, २; ७, १, ४; वृ १, ५, ५; २, ४, १०; ४, १, २; ५, ११; मैत्रि ६, ३२; अ १; वृपू २, २; वृउ ३, २; काला १३;

सुबा २; जाबा २१; ध्या ९; ब्रवि ४; सी २४; महा १, १; खह २८; पं २; आच ६; च २०: ५; १प्र ३१: ५; नापू ५, ४०; सिशि ३८२: १०; गार ४०६: ४; -दम् छां ३, १, ३; १५, ७; ७, १, २, २; १; ७, १; अव्य ५; २प्र ३२: १०; ३६: १८; -दस्य सुं १, १, १२;

-दे २प्र ३४: १७.

कक्षवेद-ग(त)ता- -तानाम् सु १, २, १.

कक्षवेद-प्रपठन- -नम् म ४८: १४.

कक्षवेद-शिरस्- -र: ना १.

कक्षवेद-सहि(त)ता- -ता गार ४०६: १८.

कक्षवेदा(द-आ)दि- -दिभि: सूता ४, ८.

कक्षवेदादि-म(य): -या<sup>०</sup>- -या भव ३, २.

कक्षवेदादि-विभाग- -गेन सु १, १, ११; २, १.

a) व्यु. वैप१ यद. । b) तैआ १०, ६३, १ । c) तैआ ३, १२, ९, १ । d) ऋ १, १६४, ३९ । e) तैआ १०, १३, १ । f) तैआ ३, १२, ८, १ । g) उत्तरेण संधिरार्षः । h) मा ३४, ५ । i) पा. विप्रहश्च ? । j) मा १३, ३९ । k) प्र. स्वरूपे तु. टि. वैप१ यस्था. । l) °सः इति आन., अख्या. । m) तैआआ १०, ६६ । n) मयः प्र. उस्. (पा ४, ३, १४३) ।



क्रङ्-मय- -यम् कौ २, ६<sup>१९०</sup>;  
वृजा ६, १२; वृपू ५, ८.  
क्रङ्-मृति- -तिः कौ १, ७.  
!क्रच-स्थान<sup>b</sup>- -ने अद्वै २८.

✓क्रचञ् ✓\*च द्र.

✓चृज्

क्रजु- -जुः त्रिवा २, ६८.

क्रज्वी- -ज्वी यो १, ८;

-ज्वीम् योशि १, ८२.

आर्जव- -वम् छां ३, १७,  
४; त्रिवा २, ३२; नाप ३, २१;  
४, ११; शां १, १; शारी १; जाद  
१, ६; १६; वरा ५, १२; शि ७,  
१००; भव ५, २१; गी १३, ७;  
१६, १; १७, १४; १८, ४२.

आर्जव-जव<sup>c</sup>-

आर्जवजवी/भू>

भावि

आर्जवजवी-

भावना-

आर्जवजवी-

भावना(ना-अ)न्त- -न्ते निरु  
२, ७<sup>d</sup>.

क्रजु-काय- -यः जाद ३, ६; वरा  
५, १७; १योत ३६; त्रिवा २,  
५०; ९२; शां १, ३, १.

क्रजु-चेतस्- -तसे रा ३४<sup>e</sup>.

क्रजु-ता- -ताम् यो १, ४५.

क्रजु-स्व- -स्वम् ते १, २८.

क्रजु-वक्रा(क-आ)दिका-

(क-आ)भास- -सम् गौ ४, ४७

क्रज्वन्- -ज्वा बा २३.

क्रजीष<sup>f</sup>-

क्रजीषिन्- -षिन् कौ २, ११९<sup>g</sup>;

-षी मना १, ९९<sup>h</sup>; वृपू ३, ४९<sup>i</sup>;

वपू २, २९<sup>j</sup>.

चृण<sup>k</sup>-

क्रण-व्याधि-द्विष्- -द्विषाम् अज  
५, १७.

\*क्रत्-, १, २क्रत्-, ✓क्रताय्,

\*क्रति-, ✓\*क्रतीय्, क्रतु-,

क्रत्वा, क्रत्विज्-, क्रत्विज्य-

✓\*च द्र.

✓क्रध्

क्रद्ध- -द्धम् गी २, ८.

क्रद्धि- -द्धिः सौ १, ३<sup>l</sup>; -द्धिम् मना  
२, ७७<sup>m</sup>.

क्रद्धी(द्धि-ई)धर- -रः पी  
४२२: १८.

क्रद्ध्वा मना २, ५०<sup>n</sup>.

क्रभु<sup>o</sup>- -भुः ते ५, १; अज १, १८;

वरा १, १; २, १; -भुम् ते ५, १;

महा ३, २; अज १, १; १७; वरा ४,

१; ५, १; -भो वरा २, ३०; ४४.

✓क्रष्(वधा.)

क्रषभ<sup>p</sup>- -भः तै १, ४, १; छां ४, ५, १;

वृ १, ४, ४; ५, ८, १; मना २, ८९<sup>q</sup>;

नाप ४, ३८<sup>r</sup>; -भस्य वृ ४, ५.

आर्षभ- -भेण वृ ६, ४, १८.

क्रषि<sup>s</sup>- -षयः प्र १, ९; १२; मुं ३,

१, ६; २, ५; वृ २, २, ३<sup>t</sup>; श्वे ५,

६; मना २, ७३<sup>u</sup>; ७९<sup>v</sup>; ब्र.

२; अशि ५, १६; वृजा ४, २६;

वसू १५; त्रिता २, ३; ५, १; भ

१, ५; २, २८; गोड २६; ह ६;

सौ १, १; सर १, १; ३; त्रिवि २,

१६; रार १, २; ५; ७; रापू ४,

१७; आर्षे ७: १; चा २०<sup>w</sup>;

छाग २३: १; पिं १; नापू ५,

२४; २६; कृपु ७; सार २४३:

५; १२; १३; १५-१७; २४६:

१४; २४८: १७; २५७: १९; गार

४०६: ११; ४०७: १६; अद्वैभा

१४; गी ५, २५; १०, १३; -वि:

प्र १, २; मुं ३, २, ११; तै १, ७,

१; वृ १, ४, १०; २, ५, १६-१९;

हं १०; मना २, १२, १९<sup>p</sup>; २,

३५<sup>q</sup>; ४०<sup>r</sup>; ४१<sup>s</sup>; कौ १, ७;

वृपू १, ५; सुबा २; काला १;

निर्वा २९७: ३; द १; ११; रार

१, ७; २, १०; २७; ३, ४१; ५१;

६०; ८२; ९३; ९५; ९८; १०२;

१०५; पप ४२०: ८; सू १; सावि

१०; पाशु १, २३; ३२; ग ९; शु

१, १८; २, ५<sup>t</sup>; दत्ता १, २; ६; ३;

गरु २; सर १, ४; २, १; १०; चा

३; म ४२: ३; तुल ७०: १; नापू

४, १६; लां २१३: २; मृ २;

कालि ४०३: ११; गार ४०५:

२; व ४२६: १; ४४२: १९<sup>u</sup>;

४४८: २९<sup>v</sup>; ४५२: ९<sup>w</sup>; हंषो ३;

वपू १, १९<sup>x</sup>; -षिगा ऐ ४, ५; वृपू

३, ४; ६; १संन्या १, १; कश्रु १, १;

वपू २, २; -षिभिः अशि ४, १८;

इ १७: १८; वट्ट ३१६: ११;

अरु ३४९<sup>y</sup>; गी १३, ४; -विभ्यः

मना २, ८९<sup>z</sup>; वपू १, ३; -षिम्

छां १, ३, ९; श्वे ५, २; च २०:

१२; -षीणाम् प्र २, ८; वृ १, ४,

१०; १६; २प्र ३६: ५; शौ ५१:

२; तुल ७१: १२; सार २२०:

१०; -षीन् सुबा २; ४; भ १, ८;

गी ११, १५; -षे: वृ ६, २, २.

आर्ष- -र्षम् मना २, ३३;

पा ५, १.

a) एकतरत्र 'वे' इति शांआ ४, ६। b) पा. वा. च! वृपू. 'क्रक्' इति शोषो विमृश्यः (तु. सस्थ. अर्ध-स्थान-> -ने इति)। c) उस. उप. ✓जु+खच् प्र. उसं. (पा ३, २, ३८)। d) पा.° न्तम् इति मुपा. यनि. सु-शोषः। e) °मानसे इति अज्वा.। f) व्यु. वैपश् यद्र.। g) च ३, ३६, १०। h) च १०, ८९, ५। i) च ६, १७, २। j) तैत्रा ३, ७, ६, २०। k) तैत्रा १, २, १, १५। l) तैत्रा १०, ६, १। m) तैत्रा ७, ४, १। n) च १०, ७३, ११। o) तैत्रा १०, ६३, १। p) च ९, ९६, ६। q) तैत्रा १०, ३५। r) तैत्रा १०, ३९, १। s) तैत्रा १, २७, ५।

आर्ष-प्रणव- -वः नाप ८, १  
 आर्षिक- -कम् आच ३.  
 आर्षेय- -यम् छां १, ३, ९.  
 ऋषि-कन्यका- -के वृजा ४, २३.  
 ऋषि-च्छन्दा(?न्द-आ)दि- -दि  
 गुणो ४२१ : ५.  
 ऋषि-च्छन्दस् > -न्दो-दैवत-  
 -तम् कालि ४०३ : १३.  
 ऋषि-ध्यान(न-आ)दि- -दि  
 रार २, ५५.  
 ऋषि-निषेवि(त>)ता- -ताम्  
 २प्र ३५ : २१.  
 ऋषि-श्राद्ध- -द्धे नाप ४, ३८.  
 ऋषि-सङ्ग-लुष्ट- -ष्टम् श्वे ६, २१  
 ऋषि-सेवित- -तम् रापू ४, ६५.  
 ऋष्या(षि-आ)त्रेय- -यः शि १,  
 २; ७, १३१; १३२; १३५; -येण  
 शि १, ४.  
 ऋष्यात्रेय-सगोत्र- -त्रेण  
 शि ७, १४०.  
 ऋष्या(षि-आ)दि- -दयः सौ १,  
 २; रार २, ३६; १०३; -दि रार  
 २, ७; ९; ५७; वड ६, १८; -दिः  
 रार २, २७.  
 ऋष्यादि-ध्यान-  
 ऋष्यादिध्यान-तस्(> : )  
 शु १, १७०.  
 ऋष्य-  
 ऋष्य-शृङ्ग- -ङ्गः वस् १२.

ॠ

ॠ

ॠ त्रिवि ७, ३६; व ४३५ : ६.  
 ॠ-कार- -०र अक्ष ५.

लृ

लृ

लृ त्रिवि ७, ३६; आथ ३९८ : ६;  
 व ४३६ : ४; ४३७ : २१.  
 लृ-कार- -०र अक्ष ५.

लृ

लृ

लृ त्रिवि ७, ३६; आथ ३९४ : ६;  
 व ३९८ : ६; ४३६ : ४.  
 लृ-कार- -०र अक्ष ५.

ए

ए व ४२९ : ७; ११; १५; २०.  
 ए-कार- -रः छां १, १३, २; त्रिता  
 १, २२; -रेण त्रिता १, २२.  
 एकारा(र-अ)क्षर- -रम्  
 त्रिता १, २३.  
 ए त्रिवि ७, ३६; आथ ३९८ : ६.  
 ए-कार- -०र अक्ष ५.  
 ए(आ/इ), ऐति वृ ४, ३, ११०; ४, ६;  
 एतः क १, २, २; पित्र ६, १५;  
 आयन्ति छां ५, १४, ११; ऐतु वृ  
 ६, ४, ५; आयन्तु तै १, ४, ३;  
 आ...यन्तु तै १, ४, २; एहि वृ  
 २, ४, ४; ६, ४, २०; कौ १, १३;  
 ४, १८; अक्ष १, १९; बा २२; दत्ता  
 १, ५३; व ४६० : ८९०; एहि-एहि सुं  
 १, २, ६; गरुडः १०; व ४३५ : १२;  
 ४५७ : १४; २१; ४६५ : ६; १०;  
 एयाताम् वृ ५, १४, ४; गा १२.  
 एयाय छां ५, ३, १; ४; ६; ६, १,  
 २; ८, ९, २; १०, ३; ११, २.  
 आ-यत् -यन् क २, ३, १६; छां ८,  
 ६, ६; कौ २, ११; योशि ६, ४.

आयती- -ती मैत्रि ७, ११५.

ए(आ-इ)त- -तः मैत्रि ६, ३५१.

ए(आ-इ)त्य क १, १, १७; छां ४,  
 ४, ३; ५, १, ७; वृ ६, १, १५;  
 ३, ६; कौ २, १५; ४, १; महा ५,  
 १५७; नाप २३; ३, ७७; ५, १३;  
 १ संन्या २, १; १३३; अक्ष ४, ११;  
 अक्षि ३४; अध्या १६; पं २६;  
 तु १२-१४; तारा ८३ : ६.

एक, का- -कः क २, २, ९२; १०२;  
 ११-१३; सुं १, २, ५; तै २, ८,  
 १; २३; ३३; ४३; ५; ३, १०, ४; ऐ  
 १, १; छां १, ५, २; ४; ३, ६-१०,  
 ३; ४, ३, ६; १७, १०; ६, ७, ३;  
 ७, ८, १; २६, २; वृ १, २, ७; ४,  
 १७; ६, ३; ३, ९, १; ९३; ४, ३, ३२;  
 ३३; श्वे १, ३; १०; २, ४; १४;  
 ३, १३; २; ३९३; ९९१; ४, १; ५९३;  
 ५, २; ४; ५, ६, १०; १३; १५; गौ  
 १, १; मै २, ६३; अशि ५, १९०;  
 -कम् ई४; क २, १२; प्र १, ८;  
 सुं २, २, ५; छां २, १०, २; ५, ३,  
 ५३; ६, २, १३; २; ७, ५; ७, ४, १;  
 ५, १; वृ १, ४, ७; ११३; ५, १३;  
 २३; २३; ५, ३, १३; ५, १३; ३३; ४३;  
 १४, १-३; ५; ६, २, ३; श्वे ४,  
 १४; १६; ६, १२; गौ २, ५; मै  
 ४, ५; मैत्रि ५, २; -कया प्र ३,  
 ७; वृ ३, १, ९; मना २, ७९०;  
 महा ६, ३; अक्ष १, २७; त्रिता २,  
 ७१; गी ८, २६; -कस्मात् इ१४;  
 २३; सार २६४ : ५; -कस्मिन्  
 वृ १, ४, १०; गौ ३, ५; वृजा ३,  
 २२; त्रिबा १, ४; २, १; शां १,  
 ३, ४; महा ४, ३; अक्ष ५, ५२;  
 सं ८; सु २, २, २७; -कस्य मैत्रि

a) ) शोधः? कालेनाऽदन्तस्यापि छन्द- इत्यस्य प्रवृत्त्युपगमात् (तु. वारा ७, ३६, ४९) । b) °दिन्यासतः  
 इति अख्या. । c) तु. टि. वैप १, क्रूर्य- । d) =वर्णः । e) 'एति' इति मिसा., JC. । f) 'आययन्ति' इति JC. ।  
 g) ऋ १०, ८३, ५ । h) वैतु. राती. आ-य(त>)ती- इति । i) वैतु. राती. इत-> -तः इति । j) व्यु वैप १ यद्र. । k) ऋ १०,  
 ८१, ३ । l) तैआ १०, १०, ३ । m) तैआ १०, १०, ११ । n) 'एषः' इति मा ३२, ३; आन. द्र. अ. च । o) तैआ १०, ५, १ ।

६, १७; वसू ६; नाप ३, ५३;  
१संन्या २, ८०; वउ १, २८;  
सांसू १, १५०; ३, ८; ५, ६६; ब्रसू  
२, ३, ५; -कस्याम् सार २८६;  
७; ब्रसू ३, ३, २; -का क २, ३,  
१६; छां ६, ७, ३, ६; ८, ६, ६;  
वृ १, २, ७; ३, १, ९; श्वे १, ९;  
मैत्रि ७, ११; वृउ ९, ५; कु १८;  
नाप ९, ८; महा १, १; योशि  
६, ४; -काम् छां ६, ११, २;  
१२, १; श्वे ४, ५९; मना २, १२,  
१९; त्रिवि ६, २१; महा ५, ५१;  
१संन्या २, १३; शां १, ७, ४९<sup>b</sup>;  
अक्षि ९; प्रा १, ६<sup>५</sup>; सु १, १,  
१४; -के क १, १, २०<sup>३</sup>; छां ६,  
२, १; वृ १, ३, २७; ५, १२, १;  
१४, ५; श्वे ६, १; गौ २, २६; मै  
५, ५९<sup>०</sup>; मैत्रि ४, ५<sup>३</sup>; कै १, ३९<sup>१</sup>;  
अशि ४, १६<sup>३</sup>; मन्त्रि १४<sup>१०</sup>; मना  
२, १२, ३९<sup>१</sup>; कौ १, २; -केन छां  
४, १६, ३; ६, १, ४-६; श्वे ६, ३; मै  
५, ४; ब्र १; अना २०; वृजा ८, ६<sup>०</sup>;  
वृपू ५, १९<sup>८</sup>; महा ३, ५४; योशि  
१, ५३; यो ३, १४; -केषाम् ब्रसू  
१, ४, १; १३; ४, १, १७; २, १३.  
ऐक्य- -क्यम् वृउ ३, १०; मैत्रि  
२, १७; शु २, ५<sup>१</sup>; ३, ६; १०; ते  
५, ४३; ६, २९; ध्या ७३; ८८;  
९३, १५; योचू ४७; ६१; मं  
२, २, २; रापू ३, २; योशि १,  
६८; १३३; १३४; ६, ७२; अज  
५, ३०; त्रिवा १, २<sup>६</sup>; यो १,  
८१<sup>३</sup>; गोउ ३०; वरा २, ७५; सौ

२, १४; म४८: १४; १९; ४९: ४;  
-क्यात् वृउ १, ४; नाप ८, ७<sup>b</sup>.  
ऐक्य-परामर्श- -शः शु ३, ४.  
एक-कृषि- -षि: प्र २, ११; प्रा २,  
१<sup>१</sup>; -षौ प्रा १, ६<sup>१</sup>.  
एक-कार्य(र्य>)र्या- -र्याम् विद्या ४.  
एक-काल- -लम् १योत ६७<sup>६</sup>.  
एककाल-तस्(>) वरा ५, ३८.  
एककाला(ल-अ-)योग- -गात्  
सांसू १, ३१.  
एक-कौपीन- -नम् नाप ७.  
एककौपीन-धारिन्- -री नाप  
५, १; १संन्या २, १३.  
एक-गुण- -ण: भ २, ३<sup>१</sup>.  
एक-चक्र- -क्र: बा १६.  
एक-चत्वारिंशत्-  
एकचत्वारिंश- -शो अक्ष ५.  
एक-चर- -र: नाप ६, ३७; १आ  
११.  
एक-चित्त- -त्तस्य सांसू ४, १४.  
एक-च्छ(त्र>)त्रा- -त्राम् शि ६,  
२१६.  
एक-ज- -ज व ४६०: १८९<sup>m</sup>.  
एक-ज(ट>)टा- -टा तारा ८३: ८;  
१५.  
एक-जननी- -नी नापू २, ५.  
एक-जन्म-हर- -रम् महा ३, ५५.  
एक-जाति- -ति: भव २, ६३.  
एक-जीवा(व-आ)दि-निर्णय-  
-यम् ते ५, ८४.  
एक-तत्त्व-दृढा(ढ-अ)भ्यास-  
-सात् शां १, ७, २८; महा ५,  
७८; सु २, २, ४०.

एक-तत्त्वा(त्त्व-अ)भ्यास- -स:  
योसू १, ३२.  
एक-तम- -मम् शि ६, १३२; मे  
शि ५, ४३.  
एक-तर- -रम् प्र ५, २; -रस्य सांसू  
१, ८७; ३, ६५; ५, २९.  
एकतर-दृष्टि- -दृष्ट्या सांसू १,  
११२.  
एकतर-हान- -नेन सांसू १, ७५<sup>n</sup>.  
एक-ता- -तया शां १, ७, २७; -ता  
वृ १, ५, १७<sup>३</sup>; शु ३, ६; ते ५, २१;  
२कौल ५; -ताम् छां ६, ९, १;  
मैत्रि ६, ३५<sup>१०</sup>; १योत ६६<sup>n</sup>;  
१२१; पै २, ३२; महा २, ७७;  
योशि १, १०५; १आ २४.  
एक-तान-  
एकतान-त्व- -त्वम् अध्या ३४.  
एकतान-वत्-  
एकतानवत्-ता- -तया पै  
३, १<sup>१</sup>.  
एक-त्र नाप ३, ३१; ४, १७; २१; ५,  
१; ७<sup>१</sup>; महा ३, २३; १संन्या २,  
७९<sup>३</sup>; शि ६, ७७; सांसू १, ६८;  
योसू ३, ४.  
एकत्रा(त्र-अ)न्ना(न्न-अ)दन-  
पर- -र: नाप ५, १; १संन्या  
२, १३<sup>r</sup>.  
एकत्रा(त्र-आ)शिन्- -शी नाप  
७<sup>१</sup>.  
एक-त्रिंशत्- -शत् वृ ३, ९, २.  
एकत्रिंशत्-संख्या(क>)का-  
-कानाम् सु १, २, ५.  
१एकत्रिंश<sup>१</sup>- -शो अक्ष ५.

a) तैत्र्या १०, १०, १। b) नापू मकारलोपद्वन्द्वसः (तु. सस्थ. घटिका->-का(काम्)। c) मुपा. 'एषा' इत्येवं सु-शोधः (तु. मैत्रि ६, ५)। d) तैत्र्या १०, १०, ३। e) 'एते' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। f) 'ऐक्यत्वम्' इति अज्या.। g) 'एकम्' इति निसा.। h) ऐक्यत्वा<sup>०</sup> इति निसा.। i) 'एकर्षिः' इति आन.। j) 'एकक्रचा, एकक्रचौ' इति निसा. संटि., अज्या. च। k) 'याममात्रम्' इति निसा.। l) 'कः गुं' इति अज्या. संटि.। m) ऋ १०, ८४, ३। n) 'एकतरस्य हाने' इत्यपि पा.। o) 'एकधाम्' (तु. राती.) इति मुपा. यनि. सु-शोधः। p) 'एकता' इति निसा.। q) 'तानतया' इति अज्या.। r) यनि. गपू. (वैप ३, ३०) 'अन्नादन-पर-' इत्यत्र शोधः द्र.। s) 'एकत्र अन्नीयात्' इति अज्या.। t) पूरणार्थे ङद् प्र. (पा ५, २, ४८)।



२ एकत्रिंशद्-

एकत्रिंश(श-आ)स्मक- -कः

रार २, ८०.

एकत्रिंशद्- -कः गौ २, २६.

\*एक-त्रिंशन्- द्विपू. टि. द्र.

एक-त्व- -त्वम् ई ७; मैत्रि ४, ६;

६, १७; २५; ब्रवि १५; अशि

५, ७; १९; नाप ९, १२५; योचू

६३; महा४, ९७; पत्र२; त्रिता

५, १५; वरा४, ४२५; सर३, १५;

गोड ४५<sup>d</sup>; ध्या ९०; सुवा ५; अ

१५; वडू ३१७; ८; सांसू २, २४;

गीद, ३१; -त्वात् सांसू १, १५३;

-त्वेन सांसू १, १५२; गी ९, १५.

एक-त्व-ज्ञान- -नेन पंहं २.

एक-दण्ड- -ण्डम् नाप ३, १७.

एकदण्ड-धर- -राः आश्र ४.

एकदण्डिन्- -ण्डिनाम् ब्र ३,

१५; नाप ४, २४; ग्भी पंहं ३;

नाप ५, २; गोच ६७; २१.

एक-दन्त- -न्तम् ग ११; हे ११;

-न्ताय ग १०; १५.

एक-दा महार, १४; भ१, ९; २, २१;

गोड १; सार २१९; १; २३०:

८; २३२; २१; २४३; १३.

एक-दिन- -ने नाप ४, ३८.

एक-दृष्टि- -ष्टिः नाप ३, ३१; ४, १७.

एक-देश- -क्षः २५ ३६: ५.

एकदेश-लब्धो(ब्ध-उ)पराग-

-गात् सांसू १, २९.

एक-देहि-मध्य- -ध्ये अद्वै १५.

एक-धन- -नम् कौ २, ३.

एकधना(न-अ)वरोधन- -नम्

कौ २, ३,

एक-धा<sup>a</sup> छां ७, २६, २; वृ४, ४, २०;कौ ३, ३<sup>२</sup>; ४, १९; ब्रवि १२;

ब्रवि १०१; रार ५, १; वा १८;

त्रिता ४, २६; ५, १२; वा १९<sup>२</sup>;

गोच ६६: १८; अवि १२.

एकधा-भूय- -यम् वृ५, १२, १<sup>२</sup>.

एक-धी- -धीः १योत ११५.

एक-निश्चय-

एकनिश्चय-मय- -यः अज२, ४४

एक-निष्ठ-

एकनिष्ठ-ता- -तया महा४, ८३;

वरा २, ५०.

एक-नीड- -डम् मना १, ३५<sup>१</sup>.

एक-नेमि- -मिम् श्वे १, ४; नाप

९, ३१<sup>६</sup>.

एक-पद- -देन ए ३.

एक-पा(द&gt;)इ- -पात् छां ४, १६,

३; वृ४, १, २-७; मैत्रि ७, ११;

-पादम् व ४३०: १८.

एकपदी- -दी वृ ५, १४, ६०;

ह १६५<sup>h</sup>; गा २२<sup>१</sup>; चक्र २५<sup>h</sup>.

एक-पाद-स्थित- -तः पै ४, १५.

एक-पिङ्गलक<sup>१</sup>- -कः व ४४४: २३.एक-पुण्डरीक- -कम् वृ ६, ३, ६<sup>२</sup>.

एक-प्रा(ण&gt;)णा- -णाः सार२३०:

७; २५२: १६; १७.

एक-प्रेगीवक- -केन शि ४, ११.

एक-विन्दु- -न्दुना गौ ३, ४१.

एक-भक्ति- -क्तिः गी ७, १७.

एक-भायै(ग-ए)क-मात्रक- -कम्

शि ६, १००.

१ एक-भाव<sup>१</sup>- -वम् सार२२३: २०.

एकभावा(व-आ)प(ञ&gt;)ञा-

-ञाः सार २३०: ७.

एकभावा(व-अ)वगाहिन्-

-हिनि अध्या ४३.

२ एक-भाव<sup>१</sup>- -वाः सार२५२: १७;

-वे अज ५, ५३.

एक-भिक्षा- -क्षाम् पप ४१९: १.

एक-भिक्षा(न-अ)वच्छिन्न- -न्नम्

शि ४, १.

एक-भूत-

ऐकभौतिक- -कम् सांसू ३, १९.

एक-भूय- -यम् कौ ३, २<sup>२</sup>.

एक-मनस्- -नाः सूता १, ४.

एक-मात्र- -त्रः ब्रवि ३९; अना

३२; -त्रम् प्र ५, ३.

एक-मूर्धन्- -र्धा अशि ६, ११.

एक-यज्ञो(ज्ञ-उ)पवीत-

एकयज्ञोपवीतिन्- -ती पत्र

३, १३.

एक-रति- -तिः सार २४९: १०.

एक-रस- -सः वृड ८, १; ते ३,

१४; -सम् वृड ५, ३; -से सार

२४६: १७.

एक-रात्र- -त्रम् नाप ४, १४; २०;

५, १<sup>k</sup>; ७; मि ५; १संन्या १,

१; पप ४१९: १२; कथु १, १.

एकरात्र-वासिन्- -सिनः आश्र

४<sup>१</sup>.

एकरात्र-द्विरात्र-कृच्छ्र-चान्द्राय-

णा(ण-आ)दि- -दि आश्र ४.

एकरात्रा(त्र-अ)ञा(ञ-अ)द-

न-पर- -रः नाप ५, १<sup>m</sup>.

एकरात्रो(त्र-उ)षित- -तम् गर्भ

३; निरु १, ९; -तस्य शि ५, १९.

एक-रुद्रा(द्र-अ)क्ष- -क्षम् रुजा

१, १५.

१ एक-रूप<sup>n</sup>- -पेण सांका ६३.

एकरूप-विषय-ग्रहण- -णम्

भा २९.

a) = एक-त्रिंशत्- इति कृत्वा पाप. शदन्ताद् विशतेष्व स्वार्थे डः प्र. उसं. (पा ५, २, ४६)। मौस्थि. तु

\*एक-त्रिंशन्- इति पृथक् प्राति. द. (तु. २ एकत्रिंश-). b) डवुन् प्र. (पा ५, १, २४)। c) मा ४०, ७। d) 'एकतत्त्वम्' इति निसा.। e) बस.। f) मा ३२, ८। g) 'एकस्मिन्' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। h) ऋ १, १६४, ४१। i) शत्रा १४, ८, १५, १०। j) कस.। k) 'एकत्र' इति अज्या.। l) ग्रामैक<sup>१</sup> इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. संटि. ग्राम-> -मे इति)। m) अञा<sup>१</sup> इति अज्या.। n) द्विस.।

एकरूपिन्-पिणः सार २५२: १७.  
 २एकरूप, पा<sup>a</sup>-पः शां १, १; अन्न ५, ९; -पम् ते ६, ७२; अन्न ४, ६५; जाद १, १६; भव २, ५६; -पाः सार २३०: ७.  
 एकरूप-तस्(>) वरा ३, ९.  
 एकरूप-त्व-स्त्वम् शां १, १; भव १, २१; -स्वात् वसू ६-८; योशि ४, १; योसू ४, ९.  
 एकरूपक-  
 एकरूपक-ता-तया ते २, ४२.  
 १एक(क-ऋ)र्च<sup>b</sup>-र्चः सूतार, १३.  
 २एक(क-ऋ)र्च<sup>c</sup>-  
 एकर्च-सूक्त-क्तस्य त्रिता २, २.  
 एक(क-ऋ)र्षि-र्षिः वृ २, ६, ३; ४, ६, ३; अ१: वृ २, २; वृ ३, ५; -र्षिम् सुं ३, २, १०; -०र्षे ई १६; वृ ५, १५, १५<sup>d</sup>; -र्षे वृ २, ६, ३; ४, ६, ३.  
 एक-ल<sup>d</sup>-लः छां ३, ११, १; वृ ४, ४; ८, १.  
 एक-लक्ष्य-क्ष्यम् सं ३, १, २.  
 एक-लिङ्ग<sup>e</sup>-ङ्गे तारा ८३: ११.  
 एक-वक्त्र<sup>f</sup>-क्त्रम् रुजा २, १.  
 एक-वट-टः सार २२५: १०.  
 एक-वर्जित-तः ते ४, ३४.  
 एक-वर्ण-  
 एकवर्ण-ता-ता ब्रवि १९; त्रिता ५, १९; अवि १९.  
 एक-वस्तु-स्तुनि अध्या २२.  
 एक-वाक्य-  
 एकवाक्य-ता-ता महा ४, ५.  
 एकवाक्यतो(ता-उ)पबन्ध-  
 -न्धात् ब्रसू ३, ४, २४.  
 एक-वार-रम्<sup>g</sup> नाप २, ७; १योत ६८; ऊ ६३: १२.  
 एकवार-जप-पेन शु १, १७.

एक-वासस्-साः नाप ३, ३१; ४, १७.  
 एक-विंशति-तिः ध्या ६२; योचू ३२; योशि १, ११८; वरा ५, ३; -तिम् व ४६५: ११; -स्था छां २, १०, ५.  
 एकविंशति-कुल-लम् पै ४, १.  
 एकविंशति-भेद-दः सी ३१.  
 एकविंशति-योजन(>)ना-ना सार २५४: २३.  
 एकविंशति-वार-राणि व ४५९: १.  
 एकविंशति-शाखा-खा-याम् सी २४.  
 एकविंशति-संख्या-ख्यया सु १, १, १२<sup>f</sup>.  
 एकविंशति-सहस्र-स्त्राणि हं ११.  
 १एकविंश<sup>h</sup>-शः छां २, १०, ५; मैत्रि ७, ४; छाग २३: १३<sup>h</sup>; २४: १५<sup>h</sup>; -शम् २प्र ३३: ३; गार ४०७: ९, १४.  
 २एकविंश<sup>i</sup>-  
 एकविंश-कुलो(ल-उ)पंत-तः शि ५, २४.  
 एकविंश(श-अ)र्णक-कः रार २, ६७.  
 एक-विध<sup>j</sup>-धः सांका ५३.  
 एक-विभु-भुः ए २.  
 एक-वीर-रः ते ४, ३२  
 एक-वृक्ष-शुम्भि(न>)नी-न्यै व ४३१: ६.  
 एक-शत-तम् प्र ३, ६; छां ८, ११, ३<sup>i</sup>; इ १०: १८.  
 एक-शफ<sup>k</sup>-फम् वृ १, ४, ४.

एक-शरीर-रस्य नाप ५, १.  
 एक-शा(ट>)टी-  
 एकशाटिन्-टी नाप ३, ८६; ७.  
 एकशाटी-धर-रः नाप ५, १;  
 १संन्या २, १३.  
 एक-इवास-  
 एकइवास-म(य>)यी-यीः योचू १००.  
 एक-सखी-खी महा ३, ३६.  
 एक-संख्या-विहीन-नः ते ३, २९<sup>j</sup>; मैत्रे ३, ७.  
 एक-ससत्य(ति-अ)धिक-कोटि-  
 -द्व्यः सार २८१: १८.  
 एक-सभ-भम् वृ ६, ३, ४.  
 एक-समय-ये योसू ४, १९.  
 एक-समाधि-धिना अन्न ५, ४९.  
 एक-सुस-सम् अन्न ४, २४.  
 एक-स्तम्भ<sup>l</sup>-म्भे योशि १, ७२.  
 एक-स्थ-स्थम् गी ११, ७; १३; १३, ३०.  
 एक-स्थित(>)ता-ताः सार २३०: ७.  
 एक-स्वरूप-पम् ह ९.  
 एक-हंस-सः वृ ४, ३, ११; १२.  
 एकां(क-अं)श-शेन गी १०, ४२.  
 एकाकिन्<sup>m</sup>-किना योशि १, ९०;  
 -की वृ १, ४, २; ३; १७; आरु ४; गर्भ ४; सुबा १३; योचू १०६;  
 नाप ३, ५९; ६०; ७; ९, २०; महा १, १; तुअ २१; पप ४१९: १०;  
 च २०: ३; काम २०; कालि ४०३: १९; तारा ८४: १३; गी ६, १०.  
 एकाकि-ता-ता वट ३, १६.  
 १एका(क-अ)क्षर<sup>n</sup>-  
 एकाक्षर-प्रदातृ-तारम् शा ३६  
 एकाक्षर-वत्-वत् सौ १, ३.  
 २एका(क-अ)क्षर, रा<sup>o</sup>-रः रार २, १;

a) वस.। b) द्विस.। c) का ४, १०, १६। d) कास.उप. <√\*ला दीप्तौ (वैतु.शं.स्वार्थे लः प्र.इतीवाभिप्रायुकः)।  
 e) वा. क्रिवि. भवति। f) °संख्याकाः इति निसा.। g) तु. टि. १एकत्रिंश-। h) 'एकत्रिंशः' इति वे.। i) =एक-विंशति- इति कृत्वा २एकत्रिंश- इत्यनेन स-न्यायता द.। j) °विमुक्तः इति अज्या.। k) भाकिनिच् प्र. (पा ५, ३, ५२)।

२प्र ३४: १६; १७<sup>३</sup>; ३५: १३;  
 शि १, १९; -रम् गर्भ ३; ना ३;  
 मना २, ३३; अना २१; नृपू ५,  
 ८; ध्या ९; ब्रवि २; नाप ८, १;  
 त्रिवि ७, ३४; शां १, ६; ए१; सू  
 २४; त्रिता ४, १६; ५, २१; ता १,  
 २; दे१२; गोउ ४०; ह७; ८<sup>३</sup>; दत्ता  
 १, २<sup>१</sup>; १प्र ३१: १; शौ ५४: २;  
 शि १, २१; वउ १, १; ५, ३१; गी  
 ८, १३; -रा २प्र ३३: ९; ३६: १.  
 एकाक्षरी- -०रि व ४३६:  
 १९.  
 एकाक्षरा(र-आ)दि-नवा-  
 (व-अ)क्षरा(र-अ)न्त- -न्ता-  
 नाम् रार ३, १.  
 एकाक्षरो(र-उ)क्त- -क्तम् रार  
 २, ७.  
 एका(क-अ)ग्र- -ग्र: नाद ४४<sup>३</sup>; -अम्  
 गी ६, १२; -मेण मैत्रि ६, २७;  
 गी १८, ७२.  
 ऐकाग्र्य-  
 ऐकाग्र्य-भक्ति- -क्त्या  
 शा १४.  
 एकाग्र-चित्त-वशीकृत(त>)ता-  
 -०त्ते व ४३१: २३.  
 एकाग्र-ता- -तया पै २, ३; -ता  
 अस् ४, १, ११.  
 एकाग्रता-परिणाम- -म:  
 योम् ३, १२.  
 एकाग्र-मानस- -स: जाद ३,  
 १७; ६, ७.  
 एका(क-अ)ङ्गुल- -लम् का ८;  
 नार ८.  
 एकाङ्गुल-प्रमाण- -णेन शि ४,  
 ३५.  
 एका(क-आ)त्मक- -कम् महा ५,  
 ११८; -के अध्या २५.  
 एका(क-आ)त्मन्- -स्मना अध्या

१९; -स्मा ते ४, ३४.  
 एकात्म-ता- -ता योसू २, ६.  
 एकात्म-त्व-  
 एकात्मत्व-विवर्जित- -त: ते  
 ४, ६४.  
 एकात्म-प्रत्यय-सार, रा- -रम्  
 मां ७; नृपू ४, ७<sup>३</sup>; नृउ १, १२<sup>३</sup>;  
 नाप ८, २०; राउ ३, १; वउ  
 १, १४<sup>१०</sup>; ५, ४०<sup>१०</sup>; -राम् विद्या ४.  
 एकात्म-भाव- -वेन सार २२६:  
 १८.  
 ए(क>)का-दशन्- -श वृ३, ९, २;  
 दे१०; गोउ २३; रापू ४, ५१; राउ  
 ४, ३३; अव्य ५<sup>२</sup>; वरा ५, १५;  
 त्रिवि २, १६; नृपू ४, १५, १८;  
 तु १०; नापू ५, २५; सांका ४९;  
 सांसू २, १७; -शभि: अव्य ५<sup>२</sup>.  
 एकादश-क<sup>१</sup>- -कै: सांका  
 २४; २५; -कम् सांसू २, १८; १९.  
 एकादश-गुण-रुद्र- -द्र: भ  
 २, ३.  
 एकादश-द्वार- -रम् क २,  
 २, १.  
 एकादश-धा मै ४, ५; मैत्रि  
 ५, २; त्रिता ५, २१.  
 एकादश-पा(दे>)द्-  
 एकादशपदा- -दा नृपू  
 २, ७; अव्य ५.  
 एकादश-रुद्र-  
 एकादशरुद्र-त्व- -त्वम्  
 वृजा ७, ८; रुजा ३, १.  
 एकादशरुद्रा(द्र-अ)व-  
 तार- -०र लां २१६: ११.  
 एकादश-ल्ला- -तानाम्  
 लां २१६: ३.  
 एकादश-श्रेणि- -णय: सार  
 २२८: १४; -ष्याम् सार  
 २७०: १८.

एकादश-सहस्र-गो-प्रदा-  
 न-फल- -लम् वृजा ७, ८;  
 रुजा ३, १.  
 एकादशा(श-आ)त्मन्-  
 -स्मानम् नृउ ४, २.  
 एकादशा(श-अ)ह-  
 एकादशाहिक<sup>१</sup>- -कम्  
 व ४३३: १८.  
 एकादशे(श-इ)न्द्रिया-  
 (य-आ)त्मक- -कम् सार २९१:  
 १८.  
 एकादश- -श: छां ७, २६, २; वृ  
 ३, ९, ४; -शम् नृपू २, ६; महा  
 १, १; गोउ २६<sup>१०</sup>; गार ४०७:  
 ७; १२; ऊ ६४: ८; -शे अक्ष ५;  
 त्रिता १, ७३; सूता ५, १२.  
 एकादशी<sup>१</sup>- -शी नाप ८, १;  
 नाद ११; -श्याम् नाद १६; ह १९.  
 एकादश्यु(शी-उ)पवासा-  
 (स-आ)दि-व्रत- -नियम- -मै:  
 सार २३१: १४.  
 एका(क-अ)धिक-शत- -तम् वउ  
 ५, २४.  
 एका(क-अ)ध्वर-पक्ष- -क्षे नाप  
 ४, ३८.  
 एका(क-अ)न्त, न्ता- -न्तम् मैत्रे २,  
 १५; गी ६, १६; -न्ता भव १, ३१;  
 -न्तात् सांसू ५, ११५; -न्ते मैत्रे  
 २, ३; योचू ७१; स्क १२; जाद  
 १, २; -न्तेन पै ३, १.  
 ऐकान्तिक- -कम् सांका ६८;  
 -कस्य गी १४, २७.  
 एकान्त-केवल-चिदे(त-ए)कर-  
 स-स्व-भाव- -वे वरा २, ७३<sup>१</sup>.  
 एकान्त-गुहा- -हायाम् निर्वा  
 २९७: ६<sup>६</sup>.  
 एकान्त-तस्(>:) सांसू ३, ७१.  
 एकान्त-ध्यान-योग- -गात्

a) °ग्रम् इति अच्चा. । b) ऐकात्म्य° इति निसा. । c) ऐकात्म्य° इति मुपा. यनि. सु-शोध: । d) कन् प्र. (पा ५, १, ५८) । e) °शी इति निसा., आन. । f) °व: इति अच्चा. संटि. । g) एकासन° इति निसा. संटि. ।



शां १,७,२९.  
 एकान्त-वास- -सः मं १,१,४.  
 एकान्त-शील-  
 एकान्तशील-ता- -ता नाप  
 ४,२४.  
 एकान्त-शैत्य- -त्येन सार  
 २६५:१४.  
 एकान्त-संस्थित- -तः महा  
 २,१४.  
 एकान्त-स्थान- -नम् निर्वा  
 २९८:३.  
 एकान्त-हित- -तम् महा४,८९.  
 एकान्ता(न्त-अ)त्यन्त-  
 एकान्तात्यन्त-तस्(>):  
 एकान्तात्यन्ततो-  
 (तः-अ)-भाव- -वात् सांका १.  
 एकान्तिक- -कः मैत्रे २,३;  
 स्क १२.  
 एका(क-अ)न्न- -न्नम् नाप७;१संन्या  
 २,७१; ८५.  
 एकाच्चा(च-आ)शिन्- -शी नाप  
 ५,३५; १संन्या २,६०.  
 एका(क-अ)-भाव- -वे ते ५,२१.  
 एका(क-अ)यन<sup>१</sup>- -नम् छां ७,१,  
 २:४;२,१;५,२;७,१; वृ २,४,  
 ११<sup>१३</sup>;४,५,१२<sup>१३</sup>.  
 एका(क-आ)राम- -मः नाप३,५५.  
 एका(क-अ)र्ण- -र्णेन त्रिता ४,३१.  
 एका(क-अ)र्थ- -र्थम् अन्न ५,६६.  
 एकार्था(र्थ-अ)भ्यसन- -नम्  
 अन्न ५,५१.  
 एका(क-आ)वली- -ल्या सार  
 २६७:१.  
 एका(क-अ)वस्था- -स्थायाम् नाप  
 ६,१.  
 एका(क-अ)ह-  
 एकाहिक- -कम् व४३३:१७

एकाह-मात्र- -त्रम् त्रिवा २,  
 १०२.  
 एका(क-आ)हित-मात्र- -त्रेण शि  
 ४,५१.  
 एकी/कृ, एकीकरोति मैत्रि ६,१८;  
 एकीकुर्यात् गौ ३,४५; वृ २,  
 ४;४,३; ७,२; १४; राउ ३,१;  
 वउ १,२०.  
 एकी-करण- -णम् मं २,२,५;  
 भा ३७.  
 एकी-कृत्य वृ १,३<sup>२</sup>; त्रिवि ५,  
 १२<sup>२</sup>; पै ३,१; पत्र२<sup>२</sup>; गु५:७७.  
 एकी/भू, एकीभवति प्र ४,२; वृ  
 ४,४,२<sup>६</sup>; सुवा २;११; १३-२५;  
 एकीभवन्ति प्र ४,२; सुं ३,२,  
 ७; कौ ३,४<sup>७</sup>.  
 एकी-भूत- -तः मां ५; वृ १,  
 ८; नाप ८,१२; राउ ३,१; अन्न  
 ५,८०; जाद १०,११; वउ १,  
 ९;५,३६; सौ २,१०.  
 एकीभूत-प्रज्ञान-घन- -नः  
 वृ ४,६<sup>०</sup>; -ने विद्या ३.  
 एकी-भूत्वा पै ३,१<sup>६</sup>.  
 एकी-भूय नाद ३९.  
 एकै(क-ए)क,का- -कः वृ १,४,१०; पा  
 ५,१०; -कम् वृ १,४,६; ७; १७;  
 श्वे ५,३; कौ ३,२; मैत्रि ६,१४;  
 भ२,२३; योरा १९; अद्वै ३; सार  
 २३७:१३; शि ६,२६; २११;  
 -कस्मिन् शि ६, २२; २४४;  
 -कस्मै छां ५,११,५; -कस्य वृ  
 १, ११; -कस्याः वृ ३, १, १;  
 सुवा ४<sup>१०</sup>; सु १,१,१४; -कस्याम्  
 प्र ३,६; -का छां ६, ३,४; ४,७;  
 ८,६; महा ५,२०; सु १,१,१४;  
 -काम् छां ६, ३,३; ४; -केन वृ १,  
 ४,७.

एकैक-करणा(ण-अ)धीन-  
 -नानाम् नाप ६,१.  
 एकैक-स्व-  
 एकैकत्वा(त्व-अ)नुसार-  
 एकैकत्वानुसार-तस्(>):  
 नाप ८,१६<sup>१</sup>.  
 एकैक-नारायणा(ण-अ)-  
 चतार- -रः त्रिवि २,१६.  
 एकैक-मात्रा-चातुर्विध्य- -ध्यम्  
 तु १२.  
 एकैक-रोम-कृपा(प-अ)न्तर-  
 -रेषु त्रिवि २,१६; ६,९.  
 एकैक-शस्(>): सु २,२,१२.  
 एकैक-सृष्टि-कर्तृ- -र्तृभिः त्रिवि  
 ६, ७.  
 एकैक-स्थल- -ले त्रिवि ७,४१.  
 एकैक-स्थिति-संहार-कर्तृ-  
 -र्तृभिः त्रिपा ६,७.  
 एकैका(क-आ)वरण- -णम्  
 त्रिवि ६,४.  
 एको(क-उ)ग्र-ज(ट>)टा- -टा  
 तारा ८३:१५.  
 एको(क-उ)त्तर- -रम् तु १५; योशि  
 ६,५.  
 एकोत्तर-शत- -तम् मं ५,१,९;  
 पै ४,१.  
 एको(क-ऊ)त-  
 एकोन-त्रिंशत्-  
 एकोनत्रिंशद्(त्-अ)क्षर-  
 -रः रा२ २,७९.  
 एकोनत्रिंश- -शे अक्ष ५.  
 एकोन-पञ्चाशद्(त्-अ)क्ष- -क्षे  
 अक्ष ५.  
 एकोन-विंशति-  
 एकोनविंशति-मुख-  
 -खः मां ३; ४; वृ ४,४; ५; वृ  
 १,६; ७; नाप ८,८; राउ ३,१<sup>२</sup>;

a) °तम् इति अज्या. । b) 'एकं भवति' इति आन., अज्या.; 'एकं भवन्ति' इति शांआ ५,४ ।  
 c) °तः प्रज्ञा° इति निसा. । d) समासेऽपि ल्यबभावः (पा ७, १, ३८) । e) °कस्य इति निसा. सुपा. यनि.  
 सु-शोधः (तु. अज्या.) । f) °कस्यानु° इति अज्या. ।

विद्या १; २; वज १, ५; ७.

एकोनविंशति-संख्या-

(क>)का-कानाम् सु १, २, २.

एकोनविंश- -शाम् गार

४०७ : ८; १४; -ज्ञे अक्ष ५.

एकोनविंशक- -कः रार

२, ६४.

✓एज्, एजति ई ५<sup>३</sup>; क २, २, २; मना

२, ६७<sup>६</sup>; एजत् वृ ६, ४, २३;

एजत् गोपू १५<sup>७</sup>.

एजत्-जत् सुं २, २, १; वृ ६, २, २९<sup>०</sup>.

एतज्ज्ञा(ज्ञा)नम्<sup>६</sup> २कौल ९.

एतद्-

३अ-

अतस(>) प्र ६, ७; सुं २, १,

९<sup>२</sup>; तै १, ३, १; छां १, ३, ५;

वृ ३, ४, २, ५, १; श्वे १, १२; गौ

३, २; आरु २; मना १, १९<sup>१</sup>;

कौ २, १-४.

अत्र क १, १, २१; प्र ३, ६, ४, ५;

सुं २, २, १; ऐ ४, २; छां २, २, ४,

६, ४, ९, ३; वृ १, ४, ७; जा १;

गर्भ ५; मैत्रे १, ४, ११; मन्त्रि ६.

एत, ता-तम् क १, १, १४; १९;

२, १३; प्र ५, ५, ७; ६, १; तै २,

८, ५<sup>५</sup>; ९, १; ऐ ३, १२; १३; ४,

२; छां १, २, ९; ३, २; ७, ६; ३, १,

३; १४, ४; वृ १, ३, १८; २, १,

२<sup>२</sup>-१३<sup>१</sup>; कौ १, ३; वृजा १, १;

वृपू २, १<sup>१</sup>; -तया ऐ ३, १२;

छां ५, २, ७; वृ १, ५, १४; ३, ९,

१; कौ १, ६; नाप ३, ७७<sup>३</sup>; जा

४; पप ४१८ : ९; या १, १;

२प्र ३३ : १३; -तयोः छां ५,

१०, ८; मै २, ८; रापू ४, २; महा

५, २; गी ५, १; -तस्मात् प्र १,

१०; ५, ५; सुं २, १, ३; तै २,

१-५, १; छां १, ७, ६; ८; कै १,

१५; अ १; मै ५, ६; कौ ३, ३<sup>२</sup>;

शां ३, १; महा ५, ४; -तस्मिन्

प्र ३, ३; ४, १-३; ६; तै २, ७, १<sup>१</sup>;

छां १, १, ६; ३, १, ६, २; ४; ६; वृ

२, १, २-१३; ३, ३; ३, ८, ११;

मना २, १४<sup>९</sup>; कौ २, ४; सुबा

५<sup>५</sup>; ब्रवि १९; मुद्र ३; महा ४,

७९; -तस्मै वृ ४, ३, १९; कौ

२, १; -तस्य क १, १, २२; छां

१, १, ९; १०; ३, ५, ६, ८; २, ९,

२; ३, १३, १; ५, १८, २; ६, १२,

२; ७, २६, १; वृ १, २, ५; ३,

२५; २७; ३, २, १३; ८, ९<sup>५</sup>; कौ

१, ३; वृपू २, ४; सी १४; पै

४, १५; अव्य ३; त्रिता १, १२;

शौ ५२ : ९; -तस्याः वृ १, ५,

१४; त्रिता १, ५८; ६६; ७३;

तारा ८३ : ६; -तस्याम् छां १,

६, १-४; वृ १, ४, ५; २, १, १;

कौ ४, १; अक्ष १४; अक्षि ३७;

-तस्यै वृ १, ५, २३; -ताः प्र ३,

५; ६, २; सुं १, २, ५; तै १, ३,

४; ऐ २, १; छां २, १७-१८,

१; २; वृ १, ३, ६; २, २, २;

मै २, ७; कौ २, १-४; १४<sup>७</sup>; वृजा

४, २०; शारी ६; -तान् प्र ३,

४; छां ३, १३, ६<sup>१</sup>; ४, २, २, ३;

वृ १, ५, १३<sup>१</sup>; सुबा १०; महा

६, २१; २संन्या १५ : २; ह

१२; छाग २४ : ९; शौ ५१ :

४; गी १, २२; -तानि ऐ ५,

२; छां १, ३, ७; २, ७, १; वृ

१, ३, २८; ४, ७; ११; जा ३;

मना २, ५४<sup>१</sup>; नाप ३, १४;

मै २, ९; कौ ३, २; सी २७;

योक्ष २; -ताभिः वृ ४, २, १; ३;

मै ५, ३; ऊ ६३ : ९; गोच ६६;

७; नार ५; व ४३२ : २; -ता-

भ्याम् वृ १, ४, १५; -ताम् के ४,

९; क १, १, ७; २, ३; सुं ३, २,

१०; तै १, ५, १; छां १, १३, ४;

वृ १, ५, १; १४; अ ३; कौ ३,

७; वृपू १, १६; अक्ष १३<sup>१</sup>;

-तासाम् छां २, २०, २; ६, ४,

७; वृ १, २, ७; ३, १०; मना २,

१५<sup>९</sup>; मै २, ६; महा ५, २६; ४३;

सार २४२ : १७; -तासु ऐ २,

५<sup>१</sup>; सु २, २, ४६; -ते के ४, ३;

क १, २, ४; प्र १, १; सुं १, २,

७; तै २, ९, १<sup>१</sup>; ऐ ५, ३; छां १,

१०, ४; ११, ३; ५, १०, ९; वृ १,

४, ७; ५, ४; ६; १३; मना २,

३८<sup>१</sup>; -तेन क २, १, ३; प्र ५,

२; ५; ऐ ५, ४; छां १, २, ९;

४, १५, ५; ८, ८, ५; वृ १, ५, २१;

आबो १; मुद्र २; त्रिता २, ३२;

शौ ५१ : १२; गी-१०, ४२<sup>३</sup>;

-तेभ्यः वृ २, ४, १२; ४, ५, १३;

शौ ५१ : ६; स ३७८ : २; -तेषाम्

छां १, १०, ३; वृ १, ४, १७;

कौ २, ४; वृजा ४, १७; ससा

१, २२; वसू १५; १योत २१;

त्रिवि ४, १४; अक्ष ४, ७३; यो

१, ३; म २, २८; -तेषु सुं १, २,

५; वृ ३, ९, ३; कौ १, २; रार १,

४; वृष ८५ : ८; गा २; -तैः सुं

३, २, ४; छां ८, ६, ५; वृ २, १,

१५; ३, ९, २८; जा ३; सर १, ४;

मै १, ५-७; मैत्रे १, २; कौ २, १४<sup>१</sup>;

वृजा ३, १६; २प्र ३४ : १२<sup>९</sup>;

a) तैआ १०, ६७। b) 'एतत्' इति निसा.। c) ऋ १०, ८८, १५। d) मुपा. 'एतत् ज्ञानम्' इत्येवं सु-सोषः। e) तु. टि. इदम्-। f) तैआ १०, १, १। g) तैआ १०, १३, १। h) 'सर्वाः' इति आन.। i) ऋ १०, १२१, १०। j) 'एतम्' इति निसा.। k) तैआ १०, १४, १। l) तैआ १०, ४८, १। m) 'उक्तेन' इति SCHR. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। n) 'एकाक्षतैः' इति मुपा. यनि. सु-सोषः (तु. गोत्रा १, १, २४)।

-तौ क २,२,५; प्र १,४; ५,५;  
छां ४,३,४; ५,१७,२; ८,५,४;  
वृ १,१,२; २,७; मना २,८०९<sup>a</sup>;  
मै ५, १; कौ ३, ३; योचू ३०;  
पा ४,२; काम ३.  
एतद्-तत् क १, ३; ३, ३; ६<sup>३</sup>;  
७<sup>३</sup>; १०<sup>३</sup>; ११<sup>३</sup>; १२; क १, १, ८;  
१०; १३; १८; २०; २६; २, १५;  
१६<sup>३</sup>; २, ३, ९९<sup>b</sup>; प्र १, ५; ७;  
१०<sup>३</sup>; २, १; ३<sup>३</sup>; ३, ३; ६; ४, १;  
५, २; मुं १, १, ९; २, १; ७; २, १;  
१; १०; मां १; २; तै १, ७, १;  
११, ४<sup>३</sup>; ३, १, १; १०, ५; ऐ ३,  
१२; ४, १<sup>३</sup>; ५, ५, २<sup>३</sup>; छां १, १,  
१; ५; ३, १६, ७<sup>३</sup>; वृ १, २, १; ३,  
२२; मैत्रे १, १.  
एतच्-छन्दस्- -न्दः २ प्र  
३४ : १५.  
एतच्-छरीर- -रस्य निरु १, २२  
एतच्-कृबर- -रः छाग २५ : १८.  
एतच्-कोश-चतुष्टय-संसक्त-  
-क्तः ससा १, १६<sup>d</sup>.  
एतच्-कोश-त्रय-संसक्त-  
-क्तः ससा १, १५<sup>e</sup>.  
एतच्-कोश-द्वय-संसक्त-  
-क्तः ससा १, १३<sup>f</sup>.  
एतच्-तुल्य- -ल्यम् क १, १,  
२४.  
एतच्-पुटित-मातृका-पुटित-  
-तम् गुणो ४२१ : १.  
एतच्-फल- -लम् हंपो २.  
एतच्-संख्या(ख्या-अ)न्वित-  
-तम् योचू ३३.  
एतच्-संघात- -तम् पै २, ७.  
एतच्-संभोग-संभूत- -तम्

गोच ६९ : २१.  
एतच्-सर्व- -र्वः वउ २, ११.  
एतच्-स्मृति- -त्या सं १९.  
एतद्-अक्षर- -रस्य मै ५, ४;  
मैत्रि ६, ४; -रेण मैत्रि ६, २.  
एतद्-आकार- -रः वउ २, ११.  
एतद्-आत्मन्- -त्मा मै ५, ३;  
मैत्रि ६, ३.  
एतदात्म्य- -त्म्यम् छां ६, ८,  
७; ९, ४; १०-१६, ३; वृउ ८, ४.  
१ एतद्-उपनिषद्- -षदम् मुद्र  
४; पै ४, २३.  
२ एतद्-उपनिषद्- -षदः छां  
८, ८, ४.  
एतद्-बुद्धि- -द्ध्यात्रिवि ५, १०<sup>h</sup>  
! एतद्-ब्रह्मन्- -ह्या २ प्र ३४ :  
१६.  
एतद्-भाव-विनिर्मुक्त- -क्तम्  
तै १, १४.  
एतद्-यन्त्रा(न्त्र-आ)राधन-  
पूर्वक- -कम् रार ३, १.  
एतद्-योग- -गेन मुद्र ४.  
एतद्-योनि- -नीनि गी ७, ६.  
एतद्-रूप, पा- -पम् मैत्रि ६,  
२; -पाम् तारा ८३ : ८.  
एतद्-वर्ण- -र्णः २ प्र ३४ : १५  
एतद्-वायु-दशक-संसर्गो-  
(र्ग-उ)पाधि-भेद- -देन भा  
१७<sup>i</sup>.  
एतद्-विकार- -रः भव ४, ६.  
एतद्-विज्ञान-मात्र- -त्रेण  
पाशु २, ७.  
एतद्-विध- -धम् मै २, ३; ४;  
मैत्रि २, ३-५; -धे मै १, ७;  
मैत्रि १, ४; मैत्रे १, २.

एतन्-मन्त्र- -न्त्रैः वा ८<sup>k</sup>.  
एतन्-मय- -यः वृ १, ५, ३.  
एतन्-मार्ग- -र्गे सार २२० : १८.  
एतर्हि छां १, ८, ६; ८; ६, ७, ३; ६;  
वृ १, ४, १; ७; १०; १७.  
एतादृश- -शम् वृजा ६, ३; -शानि  
त्रिवि ६, ६; मैत्रे १, ३.  
एतावत्- -वत् क २, ३, १५; प्र ६,  
७; वृ १, २, १८; ४, ६; ५, १७;  
२, १, १४<sup>३</sup>; ४, ५, १५; ५, १४,  
६; कौ १, ६; ४, १८<sup>३</sup>; अक्ष २,  
३५; ५, १९; सूता ३, ७; गी १६,  
११; -वतः वृ १, २, ४; -वता वृ  
२, १, १४; अक्ष ५, ११८; -वति  
महा ५, १८४; -वद्भिः भ २,  
२५<sup>३</sup>; -वन्तम् वृ १, २, ४; -वान्  
वृ १, ४, ३; १७; मुद्र १, ३९<sup>३</sup>.  
एतावती- -ती इ १० : १९.  
एतावन्-मात्रक- -कम् महा ४,  
९५.  
एन, ना- -नम् क १, १, २१; २, ६,  
९९<sup>m</sup>; प्र २-६, १; मुं ३, २, ५; तै २,  
६, १; ऐ २, १; छां १, २, ८; २, २२,  
३; वृ १, १, २; २, ७<sup>३</sup>; ५, ८-१०; धे  
४, २०<sup>३</sup>; मना १, २९<sup>m</sup>; ३९<sup>m</sup>;  
जारः कालि ४०१ : १; -नयोः वृ  
४, २, ३<sup>३</sup>; -नाः वृ १, ३, ६; ११<sup>०</sup>;  
त्रि १; -नान् छां १, २, १; ४, १५,  
५; ५, १०, २; ७, १५, ३; वृ ६, २,  
१६; छाग २४ : १९; बा ६; सूता  
३, १०९<sup>p</sup>; -नाम् ऐ ४, २; वृ ६,  
४, २; ७<sup>३</sup>; मना २, १२, १९<sup>q</sup>;  
मन्त्रि ६; तै १, ४३; सर २, ९९<sup>r</sup>;  
३, ७; नापू ५, २१९<sup>r</sup>; सिशि  
३८३ : १२; -नेन वृ २, ५, १८<sup>३</sup>.

a) तैआ १०, ६४, १। b) 'एनम्' इति तैआ १०, १, ३। c) षस। d) °ष्टयं संसक्तम् इति निसा.  
मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ.)। e) °क्तम् इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. आन.)। f) कस। g) बस। h) 'एतद्  
बुद्ध्वा' इति निसा। i) यनि. षस. वोताहो पृथक् पदद्वयं वेति संदेहः। j) °दशसं° इति अख्या., °युसंसर्गको°  
इति तान्त्रि.। k) 'एतैः मन्त्रैः' इति अख्या.। l) अ १०, ९०, ३। m) तैआ १०, १, ३। n) मा ३२, २। o) °नाम्  
इति निसा.। p) तैआ ३, ७, ६, २१। q) तैआ १०, १०, १। r) अ १०, ७१, ४।



एनद्- नत् ई ४; के ४, २; ३;  
तै २, २, १; ऐ ३, ३-९; छां ५,  
२, ३; वृ ३, ९, २५; ४, १, २-७;  
गोपू ४८९<sup>५</sup>; आषे ७ : ९; १८.

एष, षा- ष: के ४, ४; क १, १,  
१९-२१; २, ८; प्र १, १; ७-९;  
१०<sup>३</sup>; १५; मुं १, २, १; मां ६<sup>४</sup>;  
तै १, ११, ४<sup>३</sup>; ऐ ३, १०<sup>३</sup>; ५, ३<sup>३</sup>;  
छां १, ३, २, ८; वृ १, २, ३<sup>३</sup>; ७<sup>३</sup>;  
श्वे २, १६<sup>३</sup>; ३, १२; -षा क १,  
२, ९; प्र ३, ३, ८; तै १, ११, ४;  
२, १, १; छां १, १, ८; वृ १, ३,  
९; ४, २, ३<sup>३</sup>; ब्रवि १०; मना २,  
१४<sup>३</sup>; मै ५, ५<sup>३</sup>; कौ ३, ३<sup>३</sup>;  
वृजा १, १.

एत्- √इ द्र.

√एध्, एधते वृजा २, ४; ग १६.

एधमान- न: वृ ६, ४, २४.

एधस्- √इध्, न्ध द्र.

एनस्- न: ई १८; वृ ५, १५, १९<sup>०</sup>;  
मना २, ५९<sup>३</sup>; ६०<sup>३</sup>; लिं ३१०:  
२९<sup>३</sup>; नस: मना २, ५९<sup>३</sup>;  
नसे मना २, ६९<sup>३</sup>.

ए(नस्)>नो-झ- झम् त्रिब्रा २, ३७

ए(आ/ई)र>एरि, एरयध्वम् कौ १, २  
एरण्ड<sup>३</sup>-

एरण्डतैल-फेन-

एरण्डतैलफेन-वत् नाप ५, १;

१संन्या २, ५९.

एला<sup>३</sup>- छा: शि ६, ७५.

एला-जातीफल-पूगफल-नालिकेर-

पनस-सहकार-भद्राक्षे(स-इ)-

क्षुरस-शर्करा(रा-आ)दि- दय:

सार २२५ : २३<sup>३</sup>!

एला-पत्रक<sup>३</sup>-

एलापत्रक-नागा(ग-आ)द्य- -धै:

गरु ५<sup>३</sup>म.

एव<sup>३</sup> ई शो<sup>३</sup>; ६; ७; के १, ३; ४; क १, १,  
१५; १६; प्र १, २; ५<sup>३</sup>; मुं १, १, ४;  
२, ७; मां १<sup>३</sup>; ५; तै शो<sup>३</sup>; ऐ १, १;  
३; २, ५<sup>३</sup>; वृ शो<sup>३</sup>; १, १, १; २.

एवम्<sup>३</sup> ई २; के ४, ६; ९; क १, १, १८;  
२, १, १४; १५; ३, १८; प्र २,  
४; ३, ४; मुं २, २, ६; मां ९-११;  
तै १, ३, ४; ऐ ४, ३; ५; ६<sup>३</sup>; छां १,  
१, ७; वृ १, २, १; ३; मना १,  
३९<sup>३</sup>; ध्या २२<sup>३</sup>; त्रिवि ४, ५९<sup>३</sup>.

एवं-रूप, पा- -प: गी ११, ४८; -पम्  
ते ६, ६१; राधा ३, १४; गु ७८;  
-पा पाशु २, ३२.

एवं-लक्षण-संपन्न- -अ: अता १५.

एवं-विद्- -वित् क २, ३, १८; तै  
२, ८, ५; ३, १०, ५; छां १,  
७, ८; ४, १७, ८-१०; ५, २४,  
४; ८, ३, ३; ५; वृ १, ३, २८;  
५, १५; १७; २०; ४, ४, २३; ५,  
१४, ५; ८; ६, ४, १२<sup>३</sup>; मैत्रि ६,  
९; १०; ३५; वृ ६, ३; मुद्र ४;  
गा २८; -विद: वृ ६, ४, २८;  
मं २, २, ३<sup>३</sup>; -विदम् छां ४, १७,  
९; १०; वृ १, ३, १८; ५, २०;  
४, ३, ३७; -विदा वृ १, ५, २१;  
-विदि छां १, २, ८; ४, १४, ३;  
५, २, १; -विदे वृ १, ४, १६.

एवं-विध, धा- -ध: सार २७५;  
१५; शि ७, ४५; गी ११, ५३;

५४; -धम् त्रिवि ६, २०; २१;  
७, ४९; ८, ५; १३; सार २७२: ७;  
२७७: १; २७९ : ३<sup>३</sup>; गु ७८;  
-धा त्रिता ३, ५; -धे सार २८९: ९

एवं-प्रकार- -रेण श १४.

एवं-भाव- -वात् ब्रसू १, ४, २१.

एवं-भूत- -त: सार २२७: १९; -तम्  
रापू ५, ७८; -तस्य राधा ३, १७.

एवं-महिमन्- -मा पित्र ३, १; १०.

एवमा(म्-आ)कार- -रम् त्रिवि ४,  
१; ६, २३.

एवमा(म्-आ)दि<sup>३</sup>- -दि ते ५, ८८;

कृ २२<sup>३</sup>; -दिषु शि ६, १९१;

-दीनाम् शि ६, २६५; -दीनि

त्रिब्रा २, १२८; शि ६, २१; २७६;

७, ५३.

एवमादि-सु-दृष्टा(ष्ट-अ)न्त-

-न्तै: ते ६, १०३.

एषणा- √\*इच्छ, इष् द्र.

एषितव्य- √इष् (गतौ) द्र.

एष्टव्य- √\*इच्छ, इष् द्र.

एष्यत्- √इ द्र.

ऐ

ऐ

ऐं<sup>३</sup> अन्न १, ८; त्रिता ३, १७; सर २,

६<sup>३</sup>; दत्ता १, ६; नापू ५, १०; पारा

५; आय ३९४ : ७.

ऐं-कार- -०र अक्ष ५.

ऐंकारिन्-

ऐंकारि-हींकारि-श्रींकारि-

छींकारि-ह(स्त)>स्ता- -०स्ते

व ४३१ : २१.

- a) मा ४०, ४। b) मा ३२, ४। c) तैआ १०, १३, १। d) व्यु. वैपश् यद्र.। e) ऋ १, १८९, १।  
f) तैआआ १०, ५९। g) ऋ १०, ३७, १२। h) ऋ ६, ७४, ३। i) तैआ १०, ५, १। j) व्यु. ? <नापू. धा. इति  
अमा.। k) व्यु. ? <√इष् इति अमा.। l) °रसै: श° इति मुपा. यनि. सु-शोध:। m) एलापुत्रक° इति मुपा.  
यनि. सु-शोध: [तु. ममा. (१, ३१, ६), MW., JC.। n) वैतु. JC. एवं-विद्वस्- इति। o) 'एनम्' इति तैआ  
१०, १, ३। p) 'एव' इति निसा., 'देवम्' इति अज्या. संटि.। q) 'एव' इति मा ३१, १८। r) एकतरत्र 'एवं-  
विद्वान्' इति निसा.। s) 'एवंविध:' इति निसा., °विदि इति अज्या. संटि.। t) °ध° इति मुपा. यनि. सु-शोध:।  
u) वस.। v) पा. ? 'एतदा(द्-आ)दीन्य(नि-अ)संशयम्' इत्येवं पाद: सु-शोध: स्यात्। w) =बीजमन्त्रविशेष-।

ऐकभौतिक-, ऐकप्रय-, ऐकान्तिक-,

ऐकहिक-, ऐक्य- एक- द्र.

ऐक्ष्वाक- इक्ष्वाकु- द्र.

ऐच्छिक- ✓ इच्छ, इष् द्र.

ऐतदात्म्य- एतद्- द्र.

ऐतरेय- रइतरा- द्र.

ऐधीत् ✓ इध्, न्ध द्र.

ऐन्द्रव-, ऐन्द्र- ✓ इन्द्र द्र.

ऐरंमदीय-, ऐरावत- इर- द्र.

ऐलूष- इलूष- द्र.

ऐशान-, ऐश्वर-, ऐश्वर्य- ✓ ईश द्र.

ऐहलौकिक-, ऐहिक- इहम्- द्र.

ओ

ओ

औ<sup>१</sup> गरु ६<sup>१</sup>; त्रिवि ७, ३६; अन्न १,

८; वपं ३११: ४; आथ ३९८:

६; व ४२७: १८.

२औंकार- -०र अक्ष ५.

१औंकार- ✓ अव् द्र.

ओघ<sup>२</sup>-

ओघ-त्रय-नाम-विशिष्ट- -ष्टम्  
पारा १०.

ओजस्<sup>३</sup>-ज: छां ३, १३, ५; मना २,

१५९<sup>१</sup>; ३५९<sup>२</sup>; ७२९<sup>३</sup>; आरु ३;

नाप ४, ३८; पप ४१८: ३०; पा

१०, ५; व ४५९: २१९<sup>४</sup>; ४६०:

६९<sup>५</sup>; १६९<sup>६</sup>; -जसा गो १५, १३.

ओजस्-विन्-स्वी छां ३, १३, ५.

ओजीयस्<sup>४</sup>-य: वृ ५, १४, ४<sup>५</sup>;

-यांस: शौ ५२: १७; ५३: ४.

ओडुयाण-, ओड्याण- उड्डी द्र.

ओत- आ ✓ वे द्र.

ओतु<sup>१</sup>-तु: १संन्या २, १०१.

ओदन<sup>२</sup>-न: क१, २, २५; पाशु २, ३९

✓ओम्, ओम्-, \*ओम- ✓ अव् द्र.

ओवधि, धी<sup>३</sup>-धय: सुं १, १, ७; २,

१, ५; ९; तै १, ७, १; २, १, १; छां

१, २, २; वृ १, १, १; ६, ४, १; मना

१, ११९<sup>४</sup>; २, १२, १९<sup>५</sup>; त्रिवा

२, ५; कुं १४; प्रा १, १९<sup>६</sup>; नाउ १,

१६९<sup>७</sup>; सार २२४: ९; २७६:

२१; २८३: २१; वउ २, ३४; धिम्

प्रा १, ३<sup>८</sup>; -धी: वृ ३, २, १३; ६,

३, ६९<sup>९</sup>; ४, ५९<sup>१०</sup>; मना २, ३९९<sup>११</sup>;

९<sup>१२</sup>अशिद्, १; ३; प्रा १, १<sup>१३</sup>; वा १७;

सार २५९: १२१<sup>१४</sup> गी १५, १३;

-धीनाम् छां १, १, २; वृ ६, ४, १; सी

१३; वृ ११, ८; वपू २, १; -धीभि:

मना १, १९<sup>१५</sup>; -धीभ्य: तै २, १,

१; मना २, ७६९<sup>१६</sup>; नाउ १, १६९<sup>१७</sup>;

व ४६५: ४९<sup>१८</sup>; वउ २, ३४; -धीषु

श्वे २, १७; अशिद्, ४९<sup>१९</sup>; भ २, ७९<sup>२०</sup>;

व ४३८: १७९<sup>२१</sup>; रशिसं ३५९<sup>२२</sup>;

-०घे नी ३, २; -ध्य: गु १७; २६.

औषध-धम् योशि १, ९०; गी

९, १६; -धानि भव १, १६.

औषध-भेषजा(ज-आत्मक>)

स्मिका-का सी १३.

औषध-वत्- १संन्या १, १;

आरु २; ३; कथु १, १.

औषधा(ध-आ)दि-सिद्धि-

औषधादिसिद्धि-वत्

सांस् ५, १२९.

ओषधि-वनस्पति- -तय: ऐ १, ४;

२, ४; छां ५, १०, ६; मना २,

७९९<sup>१</sup>; सुवा २; -तिभि: मना

२, ७९९<sup>२</sup>; -तिभ्य: मना २,

६७९<sup>३</sup>; -तीन् २प्र ३२: १०.

ओषधि-संभार- -रान् २संन्या

१५: ३.

ओष्ठ<sup>४</sup>- -ष्टौ २प्र ३५: १५.

ओष्ठा(ष्ठ-अ)धर- -रौ गु १३.

९<sup>५</sup>ओष्ठा(ष्ठ-अ)पिधा(न>)ना-

-ना ह १७; व ४४३: २२१<sup>६</sup>.

औ

औ

औ-हो-वि<sup>११</sup>-

औहोवि-कार<sup>१२</sup>- -र: छां १,

१३, २.

औ<sup>१३</sup> त्रिवि ७, ३६; आथ ३९४: ८;

व ४३५: ८.

औंकार- -०र अक्ष ५.

औत्त- ✓ उक्त् द्र.

औदुलोमि- उडु- द्र.

औत्सुक्य- ✓ उद् द्र.

औदर- उदर- द्र.

औदासीन्य- उदास् द्र.

औदुम्बर- उदुम्बर- द्र.

औहालक-, औहालकि-उहालक- द्र.

औपजन्धनि- \*उप-जन्धन- द्र.

औपनिषद्- उप-नि ✓ षद् द्र.

औपमन्यव- उप-मन्यु- द्र.

औपयाम- २उप-याम- द्र.

a) = बीजमन्त्रविशेष- । b) व्यु. ? < आ ✓ वह, ✓ वह, ✓ उक्त् वेति अभा. । c) व्यु. वैपश् यद्र. । d) तैआ १०,

१४, १। e) तैआआ १०, ३५। f) शौ १९, ६०, १। g) ऋ १०, ८३, १। h) ऋ १०, ८३, ४। i) ऋ १०, ८४, २।

j) ईयसुनि प्र. विन्-लुक् (पा ५, ३, ६५)। k) 'ओगीयः' इति आन., JC. । l) व्यु. ? < ✓ अव् हिंसायाम् [वैतु.

पाठ. (१, ६५) रक्षणावृत्तेरिति]। m) मा ६, २२। n) तैआ १०, १०, १। o) शौ ६, ९६, १। p) तैआ ८, १, १।

q) \*धी: इति अख्या. । r) ऋ १, ९०, ६। s) तैआ १, ३०, १। t) शौ ७, ९२, १। u) 'ओषधयः' इति अख्या. ।

v) \*धि इति मुपा. यनि. सु-शोधः। w) तैआ १०, १, १। x) ऋ २, १, १। y) तैआ २, १२, १। z) तैआ

१०, ६३, १। a') तैआआ १०, ६७। b') मंवा १, ७, १५। c') अष्टा इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू.) ।

d') = सामगाने स्तोमविशेष- ।

औप(ल>)ला<sup>१३</sup> - लाम् वृपू ३, ४.  
औपला(ल-अ)म्बिका- काम् वृपू २, २.  
औपसद- उप/सद् द.  
औपस्वस्ती- उप-स्वस्ति- द.  
औपाधिक- उपा/धा द.  
औपासन- उपास् द.  
औम- उमा- द.  
औशिज- उशिज- द.  
औषध- ओषधि- द.  
औण्य- /उष्(दाहे) द.  
औहोयि<sup>१४</sup>- औ द.

क

१क<sup>१५</sup> व४२९:७<sup>३</sup>; ११<sup>२</sup>; कात् गोपू २५०  
ककार-रः, -रम् त्रिता १, १८.  
ककारा(र-आ)दि-  
ककारादि-त्व- -त्वात्  
काम ७१<sup>६</sup>.  
१क-ल<sup>१६</sup>- -ले त्रिता २, २९.  
कल-हो<sup>१७</sup>. आय ३९८: ७.  
का(क-आ)दि-  
कादि-विद्या- -द्या ब द.  
कादि-हादि-मतो(त-उ)-  
क्त<sup>१८</sup>- -केन भा ४३<sup>१८</sup>.  
का(क-आ)णं- -णः त्रिता १, ४३.  
कं<sup>१९</sup> आय ३९५: २०; व ४२८: १;

हंषो ४.  
कं-कार- -०२ अत् ५.  
२क- किम्- द.  
३क<sup>२०</sup>- ३कम् छां ४, १०, ४; ५<sup>२</sup>; वृ१,  
२, १<sup>२</sup>.  
४क<sup>२१</sup>- ४कम् पा १, ४.  
कम्-ज<sup>२२</sup>-  
कञ-लोच(न>)ना- -नाम् रा  
४२४: २२.  
/कंस(शासने)  
१कंस<sup>२३</sup>- -सः कृ १५.  
कंस-वंश-विनाश- -शाय गोपू  
३८.  
२कंस<sup>२४</sup>- -सम् छां ५, २, ८; -से वृ६,  
३, १; ४, २४; -सेन वृ ६, ४, १३.  
कांस<sup>२५</sup>-  
कांसो(म-उ)स्मि(त>)ता<sup>२६</sup>-  
-ताम् सौ १, १<sup>२</sup> १५<sup>२६</sup>.  
कांस्य<sup>२७</sup>- -स्ये शि ७, ४९.  
कांसी- सीम् शि ६, २६७.  
कांस्य-क- -कम् सिशि ३८२ :  
१९.  
कांस्य-घण्टा-निनाद- -दः त्रिवि  
१२; १३ ३१: २१.  
कांस्य-चक्रक-भेक-विः कृन्धि-  
का- -काः मैत्रि ६, २२.  
कांस्य-पात्र- -त्रे शि ६, ११.

कः /कृ द.  
ककुद्<sup>२८</sup>- -कुत्, -कुदम् पा १, ४;  
-कुदि वृजा ४, २९; -कुझ्याम्  
जाद ४, २८.  
ककुत्-त्र<sup>२९</sup>- -त्रे पा ७, ३; ८, २.  
ककुत्-पति- -तिः व ४३७: ९५<sup>३०</sup>.  
ककुद्-मत्- -मान् पा ७, ३.  
ककुद्-वत्- -वते पा १, ९.  
ककुद्- -दाय पा ७, १०.  
ककुम्<sup>३१</sup>- -कुभः महा ५, १४२; पित्र  
१, १०<sup>३</sup>; ९<sup>३१</sup>; -कुभाम् शि ६, ७६  
कक्ष, क्षा<sup>३२</sup>- -क्षम् छां २, ९, ७; शा  
२०<sup>३२</sup>; सु २९३: १२; -क्षाम्यः  
त्रिता २, ४२; -क्षे त्रिब्रा २, १२५<sup>३३</sup>.  
कक्ष-देश- -शे सिशि ३८१: १३.  
कक्ष-सेन<sup>३४</sup>-  
काक्षसेनि<sup>३५</sup>- -निम् छां ४, ३, ५.  
कक्षो(क्ष-उ)पस्थ-लोमन्- -मानि  
कश्रु ३, १<sup>३६</sup>; कुं ९<sup>३६</sup>.  
कक्षो(क्ष-उ)पस्थ-वर्जम् नाप ४, ३८  
कक्ष्य- -क्ष्यम् वृ २, ५, १७५<sup>३७</sup>.  
कक्षी-वत्<sup>३८</sup>- -वन्तम् मना १, ११५<sup>३८</sup>.  
/कङ्क (वधा.)  
कङ्कण<sup>३९</sup>- -णम् राधा ३, ११.  
कङ्का(ल<sup>४०</sup>>)ली<sup>४१</sup>- -०लि व  
४३६: १७.  
कङ्क<sup>४२</sup>- -ङ्कम् पा ५, १०; ९, ५.

a) व्यु? मौस्थि. <\*भर्व-व(ल>)ला- (वस.) स्यात्। b) =वर्णः। c) 'आकाशात्' इति आन। d) कफा<sup>४३</sup>  
इति मुपा. यनि. सु-शोधः। e) द्रस.। f) कस. (=कल-युक्तहोकार-). g) द्रव्यगर्भितेन षस. गर्भितः सप्तस.।  
h) 'कादिमतेन' इति तान्त्रि.। i) =बीजमन्त्रविशेष-। j) व्यु? =सुख-। k) =जल- (तु. पाटी.)। व्यु? l) व्यु.  
तु. अभा.। m) मिश्रितधातुविशेषवचनस्य सतः व्यु. वैप१ यद्र.। n) =शुक्लवर्णो विमिश्रो धातुविशेषः। o) =कांस-  
शौक्यवैशिष्ट्येनोत्समयनकर्त्री-। p) 'कां सोऽस्मिताम्' इति मुपा. (खि ५, ८७, ४) यनि. सु-शोधः (तु. यस्था. टि. वैप१)।  
q) वैतु. पा. (४, ३, १६८) रकंस->कंसीय-> यनि. इति। r) व्यु. वैप१ यद्र.। s) उप. </> त्रा यद्र.। t) ऋ  
८, ४४, १६। u) 'अक्षम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। v) कुक्षि<sup>४४</sup> इति निसा.। w) °मान् इति  
मुपा. यनि. सु-शोधः। x) °मयुतः इति अख्या.। y) ऋ १, ११७, २२। z) ऋ १, १८, १। a') व्यु? धा. शब्दे  
वृत्तिः स्यात् (तु. ww १, ३५१; ४००)। कर्तरि युच् प्र. णत्वं च उसं. [पा ३, २, १४८; पावा ८, ४, १० (वैतु. अभा.  
[किम्->] रकम्+[/कण्-] कण- इति, पाठ. [४, २४] इत्युपरि टीकाविशेषाधारेण MW. </> कै शब्द इति)]।  
b') व्यु? धा. हिंसायां वृत्तिः स्यात् [वैतु. पाठना. (३, ७८), पाठभो. (२, ३, १०५) गताविति; ww (१, ४०१)  
दाह इति; अभा. (किम्->) रकम्+[/कल्-] कल्- इति]। काल-महाकाल-साहचर्यात् विप. न त्वस्थिपञ्जर-  
वाचकं प्रसिद्धं नाप.। c') स्त्री. डीप् प्र. उसं. (पा ४, १, ४१)। d') व्यु? =ब्रह्मन्- इति पाटी.।



✓कच् (बधा.)<sup>a</sup>

काच<sup>b</sup> - चम् जाद ४, ५०.

कच्छ<sup>c</sup> -

कच्छ-प<sup>d</sup> -

कच्छप-निधि- -धये त्रिवि ७,

४३.

कट<sup>e</sup> व ४६४ : १८.

✓कट (बधा.)

कट<sup>f</sup> - टम् शिद, १४५; १५२;

-टस्य शि द, १५१; -ट्टे शि द,

१४७.

२कट<sup>g</sup> -

कटा(ट-अ)क्ष<sup>h</sup> - क्षम् सार २४८:

११; -क्षात् सार २५८ : १२.

कटाक्ष-गुण-

कटाक्षगुण-व(त् >) ती<sup>i</sup> -

-ती सार २८२ : ९.

कटक<sup>j</sup> - कात् महा ४, ४६.

कटक-मुकुटा(ट-अ)ङ्गदा(द-आ)-

दि-भेद- -दः त्रिवि ८, २.

कटक-मुकुटा(ट-अ)द्यु(दि-उ)-

पाधि-रहित-सुवर्ण-घन-

कटकमुकुटाद्युपाधिरहित-

सुवर्णघन-वत् ससा १, २९<sup>k</sup>.

कटक-शब्दा(ब्द-अ)र्थ- -र्थः

महा ४, ४६.

कटका(क-आ)दि-

कटकादि-वत् नापू ५, ३१.

कटि<sup>l</sup> - टिः गार ४०८ : ८; -टौ

शां १, ७, ५२; -ट्याः गरु ५<sup>m</sup>;

-ट्याम् जाद ४, २७; राधा ३, १२.

कटी-

कटी-देश- -शे नाद ३.

कटि-द्वन्द्व- -न्द्रे जाद ७, ८.

कटि-मेखला<sup>n</sup> - -ला सार

२४५ : ४.

कटिमेखला-क्षुद्र-वण्टिका-

-काः सार २६५ : १२.

कटि-यष्टि- -ष्टेः शि द, १५०.

कटि-सूत्र- -त्रम् नाप ३, ८६<sup>o</sup>;

४, ३८<sup>p</sup>; ५, १; १ संन्या २, ६; पप

४१८ : ३२; ४१९ : ११; गरु ५.

कटिसूत्र-कौपीन-वस्त्र-

-स्त्रम् नाप ४, ३८.

कटु<sup>q</sup> -

कटु-तिक्त-कषाय-माधुर्य-रस-

-साः सार २२३ : ८.

कटु-तिक्त-मधुर-कषाय- -याः

सार २३८ : १.

कटु-तिक्त-माधुर्य-मिष्ट-रस-

संयुक्त- -क्ताः सार २८३ : २२.

कट्व(टु-अ)म्ल-लवण- -णम्

महा २, ५४.

कट्वम्ललवण-त्यागिन्-

-गी ध्या ७१; योचू ४१.

कट्व(टु-अ)म्ल-लवणा(ण-अ)-

त्युष्ण-तीक्ष्ण-रूक्ष-विदाहिन्-

-हिनः गी १७, ९.

✓कट् (बधा.)

कठ<sup>r</sup> -

कठ-भावना<sup>s</sup> - -ना मु १, १, ३७.

कठ-वल्ली-

कठवल्ली-तैत्तिरीयक-ब्रह्म-

कैवल्य-श्वेताश्वतर-गर्भ-नारा-

यणा(ण-अ)मृतबिन्दु(न्दु-अ)-

मृतनाद-कालाग्निरुद्र-क्षुरिका-

सर्वसार-शुकरहस्य-तेजोबिन्दु-

ध्यानबिन्दु-ब्रह्मविद्या-योगतरु-

दक्षिणामूर्ति-स्कन्द-शारीरक-

योगशिखै(खा-ए)काक्षरा(र-अ)-

क्षय(क्षि-अ)वधूत-कठ(रुद्र<sup>t</sup>)-

रुद्रहृदय-योगकुण्डलिनी-पञ्च-

ब्रह्म-प्राणारिणहोत्र-वराह-कलि-

सन्तारण-सरस्वती-रहस्य-

-स्यानाम् मु १, २, ३.

कठिन, ना- -नः गर्भ ३; निरु १, ११;

-नम् गर्भ १; शारी १; -ना सार

२६३ : २२; -नाः शि ७, १०७.

काठिन्य- -न्यम् योशि १,

१४९; त्रिता १, २८; वरा ५, १.

काठिन्य-दृढ-कौपीन-

-नम् निर्वा २९८ : १३.

काठिन्या(न्य-आ)ढ्य-

-ढ्यम् त्रिता १, २९<sup>m</sup>.

कठिन-ता- -ता योशि १, १५०.

✓कण् (बधा.)

कण<sup>n</sup> -

कणौ(ण-ओ)घ- -वाः महा ५,

१३७.

कण्व<sup>o</sup> -

काण्व- -ण्वम् वा १.

काण्वी-

काण्वी-पुत्र<sup>p</sup> -

-त्रात् वृ ६, ५, १.

काण्व-शाखा- -खे इ

२० : २.

कण्व-पुत्र- -त्रः सुता १, २९.

?क(ण >)णा-

?कणा-इस्ता<sup>q</sup> - -स्ताः कौ १, ४.

a) दीप्तौ वा भङ्गे वा ?। b) घञ् प्र. (पा ३, १, १९; वैतु. अभा. ण्यन्तात् अच् प्र. इति वा अजन्तात् तद्धितोऽण् इति वा)। c) व्यु. ?। d) = ध्वन्यनुवादः। e) = रथ-। f) विप. = वलित- (वैतु. अभा. कटि- वा गण्ड- वेति) g) कस. (वैतु. अभा. बस. वा उस. वेति)। h) °वर्णवत् इति आन.। i) °ज्योः इति मुपा. यनि. सु-शोधः। j) विप. = कर्त्तनकर- (तु. वैप १ यस्था.)। k) मध्यमपदलोपः कस.। l) मुपा. एकं रुद्र-पदं पूर्ति-शोधाय सुकल्पम्। m) °न्यार्थम् इति निसा संति.। n) व्यु. वैप १ यद्र.। ) पा. व्यु. च ? पूष. फण- (संति. फणा-) इति अज्या., फल- इति शांआ. (३, ४ इत्यत्रत्यः आन. मुपा. च तदुपरि तत्परः K. च)। < ✓कण् वलने तु. MW. पाभा. चुरा. निमौलन इति (= तदपि वलनस्यैव प्रकारविशेषः) इति कृत्वा यनि. पूष. मौस्थि. प्रतिसर, रा- (तु. पंजा. कडा, गाना) इति स्यात्। गपू. पाभे. च यक. < ✓फण्, ✓फल- वलने इति कृत्वा यनि. पर्यायावेव द. (तु. पंजा. मौलि)।

## ✓कण्ट (बधा.)

कण्टक<sup>a</sup>—कम् शि ६, २८१; व  
४३६: १०; कै: रुजा १, ११९.

## कण्टकमोक्ष—

कण्टकमोक्ष-वत् सांसू २, ७.

कण्टकिन्—किभि: शि ४, ४९.

## ✓कण्ट (बधा.)

कण्ट<sup>b</sup>—ण्टम् ब्र २; अना ३५;

लु ११; ब्रवि ७२; १योत ११८;

त्रिवा २, ८; योशि १, ११०; ५,

३९; गोउ ५८; शि ७, १८;

ण्टस्य भ १, ६; -ण्टात् शां १,

७, १३; यो १, २७; ३३; जाद ७,

६; वरा ५, ५३; -ण्टे ब्र ३, १३;

वृजा ४, १८; ६, १२; वृपू ५, १०;

नाद ४०; ब्रवि ४१; नाप ५, १;

शां १, ७, ५२; योशि १, ९४;

अव्य ६; भ १, ६; २, २; रुजा १,

२१६; ३, १; जाद ७, ६; ऊ ६४:

७; सार २५५: १०; २५९: ९;

२७१: ९; कृपु २१; सिशि ३८१:

१३; पित्र ६, १०.

कण्ट-कूप—पे शां १, ७, ५२;

योशि १, १७४; ५, १०; योसू ३,

३१.

कण्टकूपा(प-अ)न्त—न्तम्

यो २, ३५.

कण्टकूपो(प-उ)न्न(व>)वा—

न्वा योशि ५, २५.

कण्ट-चक्र—क्रम् सौ ३, १;

योरा १२.

कण्ट-तस्(>)हं १४; योचू ७४

कण्ट-दु:खौ(ख-ओ)व—नाश-

व—न: योचू ५०१<sup>c</sup>; ध्या ७८<sup>d</sup>.

कण्ट-देश—शे मैत्रि ७, ११.

कण्टदेश-तस्(>) रुजा १,  
१८.

कण्ट-पृष्ठ—ष्ठे ऊ ६४: ९.

कण्ट-बन्ध—न्धम् शां १, ७, ४३.

कण्ट-बिला(ल-अ)वधि—धि  
यो २, ३६<sup>e</sup>.

कण्ट-मध्य-ग—गा: योचू २४.

कण्ट-माला—प्रयुक्त—क्ता: सिशि  
३८२: १.

कण्ट-माला—सु-शोभित—तम्  
गोउ ४८<sup>f</sup>.

कण्ट-मुद्रा<sup>g</sup>—द्रया वरा ५,  
६०; १योत ११६<sup>h</sup>.

कण्ट-मूल—ले यो ३, ११; जाद  
७, १२.

कण्ट-लम्—तुलसी-नलिना-  
(न-अ)क्ष—माल—ला: सु

२९४: १७.

कण्ट-संस्थित—ते शि ५, ५१.

कण्ट-संकोच—

कण्टसंकोच-रूप—प: योशि  
१, ११०; यो १, ५१.

कण्टसंकोच-लक्षण—णे ध्या  
७८<sup>i</sup>; योचू ५१<sup>k</sup>.

कण्ट-संकोचन—नम् ध्या  
१०१<sup>l</sup>; योशि १, ९८; यो १, १६;

ने शां १, ७, १२; योशि १, १११;  
यो १, १५; ५२.

कण्ट-स्थ—स्थम् त्रिवा २, १५०.

कण्टस्थ-प्राण—

कण्टस्थप्राण-वत्—वान्  
शा ३२.

कण्टा(ण्ट-अ)न्तर—रे लु १५.

कण्टा(ण्ट-उ)त्थिता(त-अ)न-  
ल—हर—रम् यो १, ३७.

कण्टा(ण्ट-उ)परि वृजा ४, ३३.

कण्टा(ण्ट-ऊ)र्ध्व-भाग—ने शां  
१, ७, ३७.

कण्ट्य—ण्ट्य: २प्र ३५: १६.

## ✓कण्ड

क(ण्डु>)ण्डू—ण्डू: योशि १, ११४

✓कण्डूय्, कण्डूयेत् शि ७, ५४.

कण्व—✓कण् द्र.

✓\*कत् (मलपार्थक्ये<sup>1</sup>)

१कत—

कत-क<sup>m</sup>—

कातक<sup>n</sup>—कम् महा ५,

६६.

कतक-वृक्ष—क्षस्य भव १,

५१.

२कत<sup>o</sup>—

कात्थ<sup>p</sup>—

कात्यायन<sup>q</sup>—न: प्र १, १;

३; का १; नाय मना १, ७९<sup>r</sup>;

व ४६२: ५; ४६३: ८९<sup>s</sup>.

कात्यायनी<sup>t</sup>—नी वृ ४,

५, १<sup>u</sup>; न्या वृ २, ४, १; ४, ५, २.

कात्यायनी-पुत्र<sup>v</sup>—

त्र: -त्रात् वृ ६, ५, १<sup>w</sup>.

कतम-, कतर-, कति- किम्- द्र.

## ✓कथ्

कथन—नम् १योत ३०; १संन्या  
२, ८६.

✓कथ्>कथि, कथयति त्रिवि ५, ६;

कथयन्ति भव २, ५०; कथयामि

१योत १४; त्रिवि १, २; पै २,

३; महा ४, ८८; योशि १, १२;

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) वैतु. पाउ. (१, १०३) <✓कण् इति । c) 'कण्टदेशे' इति आन. । d) 'मुखम्' इति अज्या. संटि. । e) कष्ट<sup>o</sup> इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.). । f) कर्म<sup>o</sup> इति निसा. । g) °धि: इति अज्या. । h) कण्टम् माला<sup>o</sup> इति आन. । i) कर्ण<sup>o</sup> इति निसा. । j) कर्ण<sup>o</sup> इति निसा., °दु:खौघलं<sup>o</sup> इति अज्या. संटि. । k) °दु:खौघनाशने इति अज्या. । l) पाधा. उसं. । m) वैतु. शक. ४क- (=जल-)+तक-(<✓तक् प्रसादन इति) । n) तु. पा ४, १, १०५ । o) तु. पा ४, १, १०१; वैतु. PW. प्रभ. <कति<sup>1</sup>- इत्यपि पल्लुका: । p) तैआ १०, १, ७ ।

यो १,९; कथयस्व त्रिता ५,१;  
कथय रार १, ४; महा २, ३०;  
योशि १,७; अव्य ३<sup>१</sup>; जाद ५,  
१; सौ १, १; सार २२७: ७;  
तारा ८४: ८; गी १०, १८.  
कथयिष्यन्ति गी २, ३४; कथ-  
यिष्यामि मै २, ३; मैत्रि २, ३;  
गी १०, १९.  
कथ्यते १योट १२८; योचूद् ६<sup>१</sup>;  
त्रिवि १, ५; महा ४, ३२; योशि ३,  
२; अन्न १, २८; अघ्या ४४; १अव  
२; दे १८; कुरु ४०<sup>३</sup>; कथ्यन्ते त्रिवि  
४, १४; अन्न ४, ५३; नापू २, २.

कथन-

कथनीय- -यः त्रिवि ३, १; -यम्  
त्रिवि ५, ३; रार १, ८.

कथयत्- -यतः गी १८, ७५; -यन्तः  
गी १०, ९.

\*कथया-

\*कथयां/कृ, कथयाञ्चक्रे वपू १, ६

\*कथयाम(म्/अ)स(भुवि),

कथयामास महा ३, २; सार  
२४२: १९.

कथयिष्यत्- -ष्यन् सार २५८: ५.

१कथा<sup>११</sup>- -था सार २२७: ९; २३०:  
३; २४६: ११; २७६: ९; -था:  
सार २३२: १९; -थाम् छां १,  
८, १; नाप ४, ३; १संन्या २, ८४;  
सार २७९: १०; -थायाम् सार  
२५६: १०.

कथा-कीर्तना(न-आ)सक्त-

-क्ता: सार २३५: २१.

कथा(धा-आ)लाप-शयना-

(न-आ)सन-भोजन- -नै: राउ

५, १७.

कथा-श्रवण-मात्र- -त्रात् सार  
२८२: १.

कथित, ता- -तः १योट ६७; मुद्र  
२; त्रिवि ३, १; ४, ३; रार १, ७;  
महा २, ३३; अन्न २, १; सार  
२५७: ९; २९२: १५; -तम्  
हं २; त्रिवि ८, १४<sup>३</sup>; रार १, ८;  
मुद्र १, ३<sup>३</sup>; ८; योशि १, ७७;  
८४; १०७; १२९; १३९; त्रिता  
५, १; अद्वै १८; सार २४२: ११;  
२९२: १७; भव ३, ११; -ता  
योचू ७०; अन्न २, १३; यो १, ९;  
सार २३७: १; २८०: ११; -ता:  
श्वे ६, २३; सुबा १६; त्रिवा २,  
७४; रापू १, ९; महा ५, ४३;  
योशि २, २२; वरा ५, ७२; सार  
२२९: १५; २४१: १८; वपं  
३१३: २; गु १, ७६; भव २,  
१९; ५, १३; २२; -तानि वपं  
३१३: ६; भव २, २०.

कथ्य- -थ्यम् त्रि ९.

कथ्यमान- -नम् महा २, ३६.

कथम्, २कथा किम्- द.

✓कद् (वधा.)

\*कद्-

कदम्ब<sup>१०</sup>- -म्बा: सार २५३: १२

कदम्ब-कुञ्ज-श्रेणि- -णयः

सार २५८: ९.

कदम्ब-गोलका(क-आ)-

कार- -रम् त्रिवा २, १५७; योरा  
२०.

कदम्ब-जम्बीर-साल-ताल-

तमालक- -का: महा ५, १४०.

कदम्ब-मञ्जरी- -री सार

२५३: १२.

कदम्ब-लता- -ता सार

२५३: ११.

कदम्ब-वन- -ने सार

२६७: १५.

कदम्ब-घण्ड- -ण्डे सार

२८९: ८.

कदम्बा(म्ब-आ)घ- -घा:

सार २२१: १६.

१कदु<sup>१</sup>-

कदु-नील- -ला: मैत्रि ६, ३०.

कदु<sup>१</sup>- मना २, २५९<sup>१</sup>; वृजा ३, १५९<sup>१</sup>;  
२शिसं ३१९<sup>१</sup>; गी ६, ३८; १८,  
७२.

कदु-अर्थ- -र्थ: छां ५, ११, ५.

कद(ल)>ली<sup>११</sup>-

कदली-काण्ड-रुचिर- -रौ सार

२४५: ७.

कदली-गर्भ- -र्भ: मै ४, २; मैत्रि  
४, २.

कदलीगर्भ-वत् सुबा ८.

कदली-पुष्प-संकाश- -शम् ध्या  
३३.

कदली-स्तम्भ- -म्भा: सार २६५:  
१३.

कदल्य(ली-अ)र्ध-ध्वज- -जै: शि  
६, १३८.

कदा- किम्- द.

२क(दु)>दु<sup>१०</sup>-

काद्रवेय<sup>१</sup>- -य: सं ७.

✓कन् (वधा.)

कन<sup>१</sup>-

कनिष्ठ<sup>१०</sup>- -ष्ठ: नाप ५, १.

a) 'प्रोच्यते' इति अज्या. । b) व्यु. धा. गन्धे वृत्ति: उत्सं. [वैतु. ww. (१, ३८४) धूम इति] । नैप्र.  
<\*गन्धं-भ्र- इत्येवं द्र. । पाप्र. तु नापू. उपपदे सति ✓मृ+इस् प्र. उत्सं. (पा ३, २, ४६), धा. बश्च [वैतु. पाउ.  
(४, ८२)+अम्बच् प्र. इति] । c) व्यु. धा. धूलौ वृत्ति: उत्सं. [वैतु. ww. (१, ३८४) धूम इति] । d) व्यु. वैप१  
यद्र. । e) ऋ १, ४३, १ । f) व्यु. <✓कद् इति वा क-(=वायु-)+ (✓दल्)>दल्- इति वेति अभा. । g) धा.  
अल्पीभावे वृत्ति: [वैतु. gw. (mw.) दीप्तौ प्रीताविति, ww. (१, ३९७) नवाविर्भावे इति] । h) वैतु. इष्टनि प्र.  
अल्प->कन्- इति [पा ५, ३, ६४ (तु. वैप१ यस्या.)] ।



कनिष्ठिका(क-अ)ष्टिका<sup>११</sup>—  
 -काभ्याम् शु १, १८; २, ५<sup>३</sup>; गरु  
 ३; लां २१३:१०; व ४२६:७.  
 कनिष्ठिका(क-अ)ङ्गुलि-  
 -ल्या प्रा १, ६<sup>३</sup>.  
 कनिष्ठिका(का-अ)ङ्गुष्ठ-  
 कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ-  
 तस्(>:) त्रिता ३, ४.  
 कनिष्ठिका-मूल- -ले  
 आच ३.  
 कनीयस्- -य: छां ७, १०, १;  
 वृ १, २, ५; शि २, ७; -यसा  
 त्रिता ३, ७; -यसि शां १, ७, ३;  
 त्रिता ३, ११<sup>७</sup>; -यसे त्रिता ३,  
 १४; -यान् वृ ४, ४, २२; २३;  
 कौ ३, ९; इ१२:१२; पित्र ३, ७.  
 कनीयसी- -सीम् शि  
 ६, १७०.  
 कनीयसी-मध्य-ग-  
 (त>)ता- -ते त्रिता ३, ९.  
 कानीयस्- -सा: वृ१, २, १०.  
 कनक<sup>१</sup>- -के योशि ४, १४.  
 कनक-कपिश- -शाम् सार  
 २६५: १९.  
 कनक-खचित-जटि(त>)ता-  
 -ता: सार २२८: १९.  
 कनक-चम्पक-दाम-भू(ष>)-  
 षा- -षाम् सर १, ४.  
 कनक-च्छत्र-  
 कनकच्छत्रिन्- -त्री रा  
 ४२४: ८.

कनक-दर्वि-हस्त- -स्तेन व  
 ४५५: ३.  
 कनक-म(य>)यी- -यी सार  
 २७१: १२.  
 कनकमय-लसत्-कुण्डला-  
 (ल-अ)क्रान्त-गण्ड- -गण्डम्  
 लां २१३: १३.  
 कनक-मुक्ता-योजि(त>)ता-  
 -ता सार २६५: ५.  
 कनक-रुचक-दर्शन- -नेन अज  
 १, १६.  
 कनक-वज्र-वैडूर्य-मुक्ता(का-अ)-  
 लङ्कत-भूष(ण>)णा- -०णे  
 व ४५७: १४.  
 कनि<sup>१</sup>-  
 कनीन<sup>०</sup>-  
 कनी(नक>)निका- -का वृ  
 २, २, २.  
 कन्तुक<sup>१</sup>- -क: ध्या ५९<sup>६</sup>.  
 ✓\*कन्थू (आवरणे)  
 क(न्थ>)न्था<sup>१२h</sup>- -न्था नाप ३,  
 २८; निर्वा२९८:२; १२; -न्थाम्  
 नाप ३, ३०; कुं ९; कर १; कथु  
 ३, १; -न्थासु १संन्या २, ९०.  
 कन्था-कौपीन-वासस्- -सस:  
 आश्र ४.  
 कन्था(न्था-अ)जिन- -ने शा  
 १९.  
 ✓कन्द (बधा.)  
 १कन्द<sup>१</sup>-  
 कन्द-मूलक- -कै: कुं ४.

२कन्द<sup>१</sup>- -न्द: ध्या ५०; योचू १२;  
 महा ५, ९३; -न्दम् यो १, ४९; वरा  
 ५, २०; -न्दात् त्रिबा २, ७४;  
 -न्दे योचू १४<sup>६</sup>.  
 कन्द-पार्श्व- -इर्वे त्रिबा २, ६४;  
 -इर्वेषु जाद ४, १२.  
 कन्द-मध्य- -ध्ये त्रिबा २, ६८; सां  
 १, ४; जाद ४, २३.  
 कन्दमध्य-ग(ग>)गा- -गा जाद  
 ४, १७.  
 कन्दमध्य-स्थि(त>)ता- -ता  
 जाद ४, ५.  
 कन्द-संभ(व>)वा- -वा: त्रिबा  
 २, ७४.  
 कन्द-स्थान- -नम् त्रिबा २, ५८;  
 जाद ४, ३.  
 कन्दो(न्द-ऊ)र्ध्व- -ध्वे योशि ६,  
 ५५<sup>१</sup>; योचू ३६; ४४.  
 कन्दोर्ध्व-कुण्डली-शक्ति-  
 -क्ति: ध्या ७३<sup>१०</sup>.  
 कन्दर्प<sup>१</sup>- -र्प: गी १०, २८; -र्पस्य  
 १योत ६०.  
 कन्दुक<sup>०</sup>- -क: योचू २७; योशि ६,  
 ५२<sup>१</sup>; -कम् सार २६८: १२;  
 १३; -का: महा ५, १४३<sup>१</sup>.  
 कन्दुक-केलि-यष्टि- -ष्टिम् सार  
 २६८: ८.  
 कन्दुक-मर्यादा- -दाम् सार २६८:  
 १२.  
 कन्दुक-यष्टि- -ष्टिम् सार २६८: ९;  
 ११.

a) °कया अङ्गु इति आन. । b) °से इति अङ्ग्या. । c) 'कनीयसाः' इति निसा. । d) धा. वृत्तिर्दीप्तौ  
 स्यात् । e) मत्वर्थे ख>ईनः प्र. उसं. (पा ५, २, ९४) । f) =कन्दुक- । g) 'कन्दुकः' इति  
 निसा. । h) वैतु. पाउ. (२, ५) ✓कम्+थः प्र. इति । i) धा. रसधारणे वृत्तिः [वैतु. पाउ. (४, ७८) <✓कन्  
 दीप्ताविति, शक. रोदने वैकृत्ये च धा. वृत्तिरिति, ww. (१, ३९०) पिण्डीभावे वृत्तिरिति] । j) =अङ्ग- । नैप्र.  
 <स्कन्ध- इति । k) °योनिः इति अङ्ग्या. । l) कण्ठो इति निसा. संटि. । m) °ध्वे कुण्ड इति अङ्ग्या. संटि. ।  
 n) व्यु. ? नैप्र. <गन्धर्व- स्यात् [तु. वैपश् यस्थाः; वैतु. कम् (<२क- वा ३क- वा)+दर्प- (=कर्तरि <✓दर्पि  
 <✓इप्) इतिवान्ये (तु. अभा., MW.)] । o) व्यु. ? पाउ. (१, १४) <✓स्कन्द इति, अभा. कन्दु- [<✓कन्द  
 वा, ३कम् (<३क-)+दु- (<✓दा दाने)] +कः प्र. इति, ww. (१, ३९०) <✓कन्द (<✓कन् पिण्डीभावे)  
 इति । p) 'कन्तुकः' इति अङ्ग्या. । q) 'कन्तुकाः' इति अङ्ग्या. ।

कन्दुकलीला- लया सार २२८:  
३; २६८:४; लाया: सार २६९:  
३; लायाम् सार २६८: ५.  
कन्दुकलीला(ला-अ)धिधान-  
स्थान- नम् सार २६८: २.  
कन्दुकलीला-परस्पर-स्व-म-  
र्यादा- दा: सार २६८: ६.  
कन्दुकन्याज- जेन सार २६८: १४  
कन्धर<sup>११६</sup>- नम् त्रिब्रा २, ४२.  
१कन्य<sup>b</sup>-  
कन्य-कुब्ज-  
कान्यकुब्ज-  
कान्यकुब्ज-देश- ज्ञे सार  
२८९: २.  
२कन्य<sup>c</sup>-  
कन्य-क(न्)का<sup>d</sup>- काया: शि ५,  
४६.  
३क(न्य>)न्या<sup>e</sup>-  
कन्य-कुमारी<sup>b</sup>- -रि मना १, ७९<sup>f</sup>;  
व ४६२: ५; ४६३: ८९<sup>f</sup>.  
४क(न्य>)न्या<sup>g</sup>-  
कन्या-गत- ते इ १८: २३.  
५क(न्य>)न्या<sup>h</sup>- न्याते ६, २८; ९१;  
महा १, १; इ १६: १६; १८;  
१९९<sup>f</sup>; १८: १६; १७; सार  
२४३: १५; न्या: सार २२८:  
२०; २३०: ६; ९; १८; २३१: ३;  
२३२: १३; १६; २३३: ३; ५;  
१८; २३४: १४; १५; न्याम्  
इ १८: १६; १९: १७; सार  
२४३: १३.

कन्या-दान- नम् इ १६: १३.  
कन्या-दूषिन्- धी इ १७: ८.  
कपर्द<sup>i</sup>-  
कपर्देन्<sup>i</sup>- दिनेम् सार २, ३२; वपु  
२, २; दिने वपु १, ३.  
कपाट<sup>१११</sup>- टम् ध्या ६७.  
कपाल<sup>१११</sup>- लम् गर्भ<sup>१११</sup>; नाप ३, ५४;  
लि ३१०: २३; शि ७, ८१; यु८;  
-लानि शि ७, ५१; ले यो १, ३३.  
कापाल-  
कापालिन्- लिन: मैत्रि  
७, ८.  
कपाल-कन्द- न्दम् सौ ३, ११<sup>h</sup>.  
कपाल-कर्तिका-हस्त- स्तम् व  
४५९: २०.  
कपाल-कुहर- रे ध्या ७९; १०३;  
१योत ११७; योचू ५२; शां १,  
७, ४३.  
कपाल-चर्म(र्म-अ)न्त्रा(न्त्र-अ)-  
स्थि-मांस-नख- खानि पै २, ५.  
कपाल-विवर- रे योशि ५, ४०.  
कपाल-शोधन- नम् शां १, ७, १४;  
-ने यो १, २५.  
कपाल-संपुट- टम् योशि १, ७६.  
कपाल-ह(स्त>)स्ता- -स्ते व  
४३१: १३.  
कपाल(ल-अ)ष्टक- कम् ब्र १.  
कपालि(न्>)नी<sup>i</sup>- नी कालि  
४०१: ९; रया ११; सुमु ११  
कपालो(ल-उ)त्पल- वाम-कर-यु-  
(ग>)गा- गा तारा ८३: २०.

१कपि<sup>१</sup>- -०पे सु १, १, १८; २, २, ५.  
कपि-ध्वज- ज: गी १, २०.  
कपि-शार्दूल- -०ल सु २, २, ६४.  
कपि-श्रेष्ठ- -०ष्ट सु २, २, ५८.  
कपी(पि-इ)न्द्र- न्द्र: रापू ४, २२;  
-न्द्रम् लां २१४: १.  
कपी(पि-ई)श्वर- रम् रापू ४, २०.  
२कपि<sup>m</sup>-  
१कपि-ल, ला<sup>n</sup>- ल: वृ ६, ४, १५;  
गर्भ २; ला वृजा ३, १; अशि ५,  
१२; २प्र ३४: २२; ला: मैत्रि  
६, ३०.  
कपिल-वर्ण, र्णा- र्णा वृजा १, १;  
-र्णे वि ९.  
कपिला(ल-अ)क्ष- क्षम् गर ५.  
कपिला-गो- गो: वृजा ३, १०.  
कपि-(श>)शा<sup>१११</sup>- शा रु ६.  
३कपि<sup>p</sup>-  
कपिला- लाम् शि ७, ९२;  
-लाया: शि ६, ७०.  
कापिल- लेन भ २, २२<sup>३</sup>.  
कापिला(ल-अ)ज्या-  
(ज्य-अ)न्वित- गन्ध-सार-  
धूप- पै: भ २, २४<sup>f</sup>.  
कपिला-कज्जलिका-शुभ्रा-  
(श्रा-अ)शुभ्रा-भ्राजमान-  
-नानि सार २७४: १६.  
कपिला-मूत्रक- केण वृजा ३, २.  
४कपि<sup>११</sup>-  
कापेय<sup>११</sup>- -०य छां ४, ३, ६; -य:  
छां ४, ३, ७; -यम् छां ४, ३, ५.

a) व्यु. MW. कम्(=शिरस्-)+धर-(<✓घ) इति । b) अर्थ: व्यु. च? = ५क(न्य>)न्या- इति वादः (तु. शक., MW.) । c) व्यु. ? = लघु- । d) व्यु. ? = लघ्वङ्गुलि- । e) व्यु. ? = दुर्गा- । f) ०री इति तैत्ति १०, १, ७ । g) व्यु. ? = राशि-विशेष- । h) व्यु. ? = उद्वाहयोग्य-बाला- । i) व्यु. वैप१ यद्र. । j) व्यु. ? । k) ०न्दवा० इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । l) = वानर- इति कृत्वा क्वचित् प्रकरणतः = हनुमत- । व्यु. वैप१ यद्र. । m) = वर्ण-विशेष- । व्यु. वैप१ यद्र. । n) विप. । मत्वर्थे लच् प्र. [पा ५, २, ९७ (तु. ww. [१, ३७९]; वैतु. पाठ. [१, ५५] <✓कम् इति, BW. MW. <१कपि- इति च)] । o) ०गो इति अज्या. । p) मत्वर्थीयः शः प्र. (पा ५, २, १००) । q) व्यु. ? गो- इत्यस्य विप. सतः नाउ. व्यु. औप. द्र. । r) पा. ? मूको. 'कापिलेन' इत्येवं दर्शनात्तत् ऊर्ध्वम् 'आज्येनाऽन्वितेः' इत्येषा पदद्वयपि मौलिकीत्यनुमीयेत । s) व्यु. ? = ऋषिविशेष- । t) दक्ष>एयः प्र. उसं. (पा ४, १, १२३) ।

काम्य<sup>१०</sup>- -०प्य वृ ३, ७, १<sup>३</sup>; -प्यः वृ  
२, ६, ३; ३, ७, १; ४, ६, ३; -प्यम्  
वृ ३, ७, १<sup>३</sup>; -प्यस्य वृ ३, ३, १;  
७, १; -प्यात् वृ २, ६, ३; ४, ६, ३.  
कापी<sup>१</sup>-  
कापी-पुत्र- -त्रः, -त्रात् वृ ६,  
५, १.  
?कपिच्छुक<sup>१०</sup>-  
कपिच्छुक-समावृत्त- -तम् शि ४, २.  
कपित्थ<sup>१०</sup>- -त्थम् शि ६, ५.  
१कपिल- २कपि- द.  
२कपिल<sup>१०</sup>- -लः गी १०, २६; -लम्  
श्वे ५, २.  
कपिला- ३कपि- द.  
कपू(य)>या<sup>१०</sup>- -याम् छां ५, १०, ७  
कपूय-चरण- -णाः छां ५, १०, ७.  
कपोल<sup>११</sup>- -ल्योः भ १, ६; -लौ सार  
२४४: १६; गु १२.  
कपोल-क- -कम् शि ७, ५७.  
कपोल-कण्ठा(गठ-आ)दि- -दयः  
सार २४४: १९.  
कप्यास<sup>१०</sup>- -सम् छां १, ६, ७.  
कफ<sup>१२</sup>- -फस्य गर्भ ५.  
कफ-लाला-मूत्र- -त्राणि सार  
२५९: १४.  
कफा(फ-आ)दि-दोष- -घ्न- -घ्नम्  
योशि १, ९४.  
कफोशि<sup>१३</sup>- -णिः गु २१.  
१कबन्ध<sup>१४</sup>- -न्धः वृ ३, ७, १; -न्धम्

रापू ४, १९.  
२कबन्ध<sup>१५</sup>-  
कबन्धन्- -न्धी प्र १, १; ३.  
४<sup>१६</sup>१कम्<sup>१</sup> वा ८; नापू ४, ४; ऊ ६३:  
१०; गोच ६६: ६.  
२कम् किम्- द.  
३कम् ३क- द.  
४कम् ४क- द.  
✓कम्, >कामि, कामयते सुं ३, १,  
१०; २, २; मां ५; छां १, २, ८;  
८, २, १०; वृ १, ३, २८<sup>१७</sup>; ४, १५;  
१७; ३, २, ७; ९, २७<sup>३</sup>; ४, ३, १९;  
६, १, ४<sup>३</sup>; नृपू ४, ६; वृ १, ८;  
सुबा ४; नाप ८, ११; राउ ३, १;  
त्रिता १, १५; १६; २, १२; गोउ  
१५<sup>३</sup>; विद्या ३; वउ १, ८; ५, ३५;  
कामयन्ते वृ ४, ४, २२; अकाम-  
यत तै २, ६, १; वृ १, २, ४; ६; ७;  
४, १७; ना १; शां ३, १; पै १,  
१८; २९; ३, १; सं २; कामयेत  
वृ १, ३, २८; ६, ३, १; ४, ९.  
कमला<sup>१८</sup>- -ला पा ८, ८; सुमु ११.  
कमला-पति- -तये गोपू ३६.  
कमला-प्रभु- -भुः नाद २०<sup>०</sup>.  
कन्न-  
कन्ना(न्न-अ)ङ्ग-रूप- -पम् पा  
७, ८.  
कान्त, न्ता- -न्तः अक्षि १५; -न्तम्  
महा ५, १५८; पित्र १, ३; -न्ता

जाद ४, ५१; -न्ताभिः महा २,  
२५; -न्तायाः रा ४२६: १.  
कान्ति- -न्तिः वरा ५, ५; सौ १, ३;  
गार ४०७: १८; १संन्या २, ५७<sup>१९</sup>.  
काम<sup>२०</sup>- -मः ऐ ५, २; छां १, ३, १२;  
१०, ४; वृ १, ४, १७; ५, ३; ३, ९,  
११; ५, १४, ७; मनार ६, १४<sup>२०</sup>;  
८०<sup>२१</sup>; गौ ३, ४२; मैत्रि ६, ३०;  
ते ४, ८; ५, ७७; वृजा १, १<sup>२२</sup>;  
नृपू १, १<sup>२३</sup>;  
नाप ३, ३३; ३७;  
४, ५; रार २, ७५; ए ५; अन्न  
१, ५; त्रिता १, १७; १८<sup>२४</sup>; ४३<sup>२५</sup>;  
दे ९; त्रि ८; १४; प्रा ४, १;  
वि ८; पा ३, २; द १४; सार  
२२८: ९; २२९: १; २६३: १९;  
२९२: ५; काम २; भव ४, ११;  
गी २, ६२; ३, ३७; ७, ११; १६,  
२१; -मभिः<sup>२६</sup> सुं ३, २, २;  
-मम्<sup>२७</sup> मां ५; छां १, १, ६; ३, १२;  
७, ९; ४, ९, २; ६, ७, १; ८, २,  
१०; वृ १, ३, २८<sup>२८</sup>; ४, ३, १२;  
१९; ६, १, ४<sup>२९</sup>; ४, ७<sup>३</sup>; गौ ४, ७८;  
मैत्रि ६, ३८; मै ३, ५; नृपू ४,  
६; वृ १, ८; सुबा ४; ते १, १२;  
५, ९७; नाप ८, ११; राउ ३, १;  
१अव ११; त्रिता १, १६; २, १२;  
३, १८; त्रि ९; ग १८; निरु १,  
२; २प्र ३३: १५; पा ५, ८; नृष  
८४: १६; विद्या ३; वउ १, ८;

a) यज् प्र. (पा ४, १, १०७) । b) अर्थः व्यु. च ? । c) व्यु. ? नैप्र. <कपि-स्थ- इति प्रसिद्धिः [ तु. पाका. (६, ३, १०९), अभा., MW. ] । d) व्यु. ? = ऋषिविशेष- । e) व्यु. ? २क- + पूय- (= भावे/पू + क्यप्) इति कृत्वा बस. इतीव रामा. । f) व्यु. वैपश् यद्र. । g) विप. (पुण्डरीक-विषयम्) । व्यु. ? ४क- + वि-कास- (= जले विकास-वत्-) इति कृत्वा बस. सतः \*क-विकास- इत्यस्य नैप्र. विपरिणामः स्यात् [वैतु. शं. प्रमृ. <१कपि- + आस- (करणे) </आस् उपवेशने] इति कृत्वा बस. इति] । h) व्यु. ? [ तु. कपूय-; वैतु. पाउना. (५, ३४) <✓कै इति] । i) व्यु. ? नैप्र. <३क- + स्फोणि- (= <✓स्फोरि <✓स्फुर) इति वा फणि- (= <✓फण्) इति वेति अभा. । j) व्यु. ? = राजसविशेष- । k) ऋ १, १५४, १ । l) अव्य. । व्यु. वैपश् यद्र. । m) 'कामयेत' इति निसा. । n) व्यु. ? = लक्ष्मी- । o) 'केवलः प्रभुः' इति आन. । p) °न्ति° इति मुपा. यनि. सु-शोधः । शान्ति° इति अज्या. संति. । q) यनि. क-ह-ह्रीमादिबीजाक्षरविशेषेष्वपि वृत्तिः द्र. । r) तैआआ १०, ६१ । s) तैआ १०, ६४, १ । t) ऋ १०, १२९, ४ । u) \*कामन्- इतीव प्राति. इति कृत्वा तृ३ [ तु. विधु. (IHQ १७, ९०) ] इति वा, \*काम-भि- [= कामान् बिभर्ति धारयतीति उप. ✓भृ + भिः प्र. उ. सं. (पाउ ४, १३४) ] इति प्राति. इति कृत्वा प्र१ इति वा । v) द्वि१ सत् कचित् वा. क्रिवि. भवति ।



५, ३५; गी १६, १०; १८; १८,  
५३; -मम्-मम् के२, २, ८; -मस्य  
क१, २, ११; -मा: क१, १, २५; २,  
४; २, ३, १४; सुं ३, २, २; तै ३,  
१०, ४; छां ३, १९, ३<sup>१</sup>; ४, १०,  
३; ५, १, ४; ७, १४, २; ८, १, ४;  
५; ३, १; २; १२, ६; वृ ४, ४, ७;  
कौ ३, ५<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ३०; ३, ५; ३८;  
७, ९; पृहं ४<sup>०</sup>; त्रिवि ५, ८; १ अव  
७; त्रिता ३, १८; शा २५; गी २,  
७०; -मात् छु २५; त्रिता १,  
४३<sup>०</sup>; गोपू २१<sup>०</sup>; वसू १, १८; गी  
२, ६२; -मान् क१, १, २५; २, ३;  
२, १, २; २, १३; सुं ३, १, १०<sup>१</sup>;  
२, २; मां ९; तै २, १, १; ५, १;  
ऐ ४, ६; ५, ४; छां १, २, १३; ७,  
१०, २; ८, १, ६<sup>१</sup>; ७, १-३; १२,  
५; ६; वृ ३, २, ७; ६, ३, १; श्वे ६,  
१३; पृहं ३; मै १, १; कौ १, ७;  
२, १५<sup>१</sup>; ३, ६९<sup>१</sup>; मैत्रि १, २; मैत्रे  
१, १; आबो १; अता १२; अव्य  
३; १ आ ११; त्रिता १, ५५; करु  
११; भ २, २३; गोपू २०; गोड  
१५<sup>१</sup>; वरा ४, २८; २ प्र ३२; २;  
६; नाउ ३, ६; १४; हे १४; कालि  
४०२; ९; गु ७१; भव २, ४९;  
गी २, ५५; ७१; ६, २४; ७, २२;  
-मानाम् क१, १, २४; छां १, १,  
७; ८; २, १४; नाप ३, ३७; -माय  
प्र २, १०; वृ २, ४, ५<sup>१</sup>; ४, १, ३<sup>१</sup>;  
४, १२; ५, ६<sup>१४</sup>; मना २, ६७९<sup>०</sup>;  
शा २२; -मेन वृ ३, २, ७; रार  
२, ४२; योशि ६, ६८; यो ३, ३;  
गोड १५; सार २२९; ११; २३८;  
८; -मै: वृ ६, ३, १; आबो २०;  
गी ७, २०.  
काम-कर्म-तमस्-मांसि पै २,

२४.

काम-कर्मा(र्म-अ)न्वित- -तः  
पै २, ४८.

काम-कला- -ला दे ९; त्रि ८<sup>१</sup>;  
व १; -लाम् कामे १४९<sup>१</sup>; षो ८.

कामकला-काली- -लीम्  
कामे ५.

कामकला-को-वि(द>)-  
दा<sup>१</sup>- -दा सार २६३: २.

कामकला-चातुर्या(र्य-अ)-  
भिसंमित- -तम् सार २४८: ३.

कामकला(ला-अ)धिकारिन्-  
-री कामे १४.

कामकला-पुटि(त>)ता-  
-ताम् षो ८.

कामकला(ला-अ)भिध-  
-धम् त्रिता १, ६९.

कामकला-भूत- -तम् त्रिता  
१, ३६; ३, १७.

कामकला-मय- -यम् त्रिता  
१, ६२.

कामकला(ला-अ)लय-  
-यम् त्रिता १, ४९; ७३; २, १०<sup>१</sup>;  
१४.

काम-काम- -म: पाशु १, १; -मा:  
गी ९, २१; -माय मना २, ६१९<sup>१</sup>.

काम-कामिन्- -मी १ अव ७;  
गी २, ७०.

काम-कार- -रेण वसू ३, ४, १५;  
गी ५, १२.

कामकार-तस्(>) गी १६,  
२३.

काम-कार्मुक-भूलता-संमो-  
हित- -रसिका(क-अ)न(न्द>)-

न्दा- -न्दा सार २४४: १२.

काम-कूट- -टम् त्रिता १, ३६.

काम-केलि-कला- -रूप-

कामकेलिकलारूपि(त्>)-

णी- -०णि सार २४४: ६.

काम-केलि-कौतुका(क-अ)-  
-त्मन्- -त्मने सार २५१: १२;  
२७७: ५.

काम-केलि-रसा(स-अ)-  
न्तर- -रे सार २८२: १४.

काम-क्रोध- -धौ नाप ५, ३२;  
वरा १, १०; भव २, २२. \*

कामक्रोध-परा(र-अ)यण-  
-णा: गी १६, १२.

कामक्रोध-वियुक्त- -क्ता-  
नाम् गी ५, २६.

कामक्रोधा(ध-अ)दि-  
-दय: पै २, ७; ते ६, १३; सार  
२९२: २; ७: १०.

कामक्रोधादि-दोष-  
-षाणाम् योशि १, १७.

कामक्रोधा(ध-अ)दिक-  
-कम् योशि १, ३९; सार २७६:  
१०.

कामक्रोधो(ध-उ)द्भव- -वम्  
गी ५, २३.

काम-क्रोध-निद्रावास-भय-नि-  
द्रा- -द्रा: मं १, २, १.

काम-क्रोध-भय<sup>१</sup>- -यम् १ योत  
१२; योशि १, १०.

कामक्रोधभया(य-अ)दि-  
-दिभि: योशि १, १६.

काम-क्रोध-मोह-लोभ-जरा-  
मरण-सुख-दु:ख- -खानि सार  
२९१: २२.

काम-क्रोध-लोभ-मोह-दम्भ-  
दर्पा(र्प-अ)सुया-ममत्वा(त्व-अ)-  
हंकारा(र-अ)दि- -दीन् शा १८

काम-क्रोध-लोभ-मोह-भय-  
-यानि शारी १.

a) 'विज्ञातव्यकामाः' इति अज्या.। b) 'कामान्' इति अज्या.। c) 'मान्' इति अज्या.। d) 'ध्यातानि'  
इति शांथा ५, ६। e) तैश्चा १०, ६७। f) 'कमला' इति तान्त्रि.। g) 'लामयम्' इति अज्या.। h) तैश्चा १०,  
६१। i) समाहारे द्वस.।

काम-क्रोध-लोभ-मोह-भय-वि-  
षादे(द-ई)र्ष्यै(र्ष्या-इ)ष्टवियोगा-  
(ग-अ)निष्टसंप्रयोग-क्षुत्-पिपा-  
सा-जरा-मृत्यु-रोग-शोका-  
(क-आ)द्य- -द्यैः मै १, ३; मैत्रि  
१, ३.

काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मा-  
त्सर्य- -र्यम् सुद्र ४.

कामक्रोधलोभमोहमद-  
मात्सर्या(र्य-आ)दिक- -कम्  
नाप ७

काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मा-  
त्सर्य-दम्भ-दर्पा(प-अ)हंकारा-  
(र-अ)सूया-मर्षै(र्व-इ)च्छा-द्वेष-  
हर्षा(र्व-अ)मर्ष-ममत्वा(त्व-आ)-  
दि- -दीन् पप ४१९: ३.

काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-  
मात्सर्य-पुण्य-पाप-

कामक्रोधलोभमोहमदमा-  
त्सर्यपुण्यपाप-मय- -याः भा१०  
काम-क्रोध-लोभ-मोह(ह-ई)-  
र्ष्या(र्ष्या-आ)दि- -दिभिः  
सुद्र ४.

काम-क्रोध-हर्ष-रोष-लोभ-  
मोह-दम्भ-दपे(र्ष-इ)च्छा-  
(च्छा-अ)सूया-ममत्वा(त्व-अ)हं-  
कारा(र-आ)दि- -दीन् आरुष्ट.

काम-गान- -नस्य छां १, ७, ९.

काम-चर- -रम् पा १, ९.

काम-चार- -रः छां ७, २५, २;

८, १, ६; ४, ३; ५, ४; इ १०: ६.

काम-चारिन्-

कामचारि-त्व- -त्वम् सांस्  
४, २५.

काम-द, दा- -दम् पं १२; रुजा  
२, १५; गोच ६८: १६; ईदा सार  
२२३: ४; २६२: २३.

काम-दा(तु>)त्री- -०त्रि सार  
२४४: ६.

काम-दु(घ>)घा- -घया सार  
२७५: ३; -घा सार २५५: २३;

२७५: ११; १२; २७६: ६;

११; १६; २७७: २; २७८: २;

वपू २, ४; -घा: सार २२४: १७;

-घाम् सार २७७: २१; -०वे

सार २७५: १७.

काम-दुह- -धुक् वि ३०; गी  
१०, २८.

काम-दृष्टि- -ष्टि: सार २६३: २.

काम-देव- -वः त्रिता १, ४३;

रुजा २, १५; सार २२४: ५;

२४२: ७; -वाय नापू ४, २; व

४५७: १.

कामदेव-कुञ्जर- -राय सार  
२४७: ११.

कामदेव-दुन्दुभि-भूषण-  
-णानि सार २६५: १२.

काम-धेनु- -नुना सी ३७.

काम-नामन्- -म्ना महा ३, ४५;  
या २, ११.

काम-परा-मध्य- -ध्ये काम १४.

काम-पिशाच- -चेन महा ३, ३४

काम-पीठा(ठ-आ)लय(य>)या-

-याम् विद्या १.

काम-पूरण- -णम् मु १, १, ४६.

काम-पू(र>)रा- -रा सार  
२६२: २३.

काम-प्र(द>)दा- -दा सार  
२२३: ४.

काम-प्रभ- -भम् वृ ४, ३, १;

गोउ १७.

काम-प्रिय- -याय सार २७७: ५

काम-फल-प्रद- -दम् योशि १,  
१७१; ५, ८.

काम-बीज- -जम् रार ३, १.

कामबीज-वेष्टन- -नम् रार  
३, १.

कामबीजा(ज-आ)दि- -दे:

रार २, २१.

काम-भाज- -भाजम् क १, १,  
२४.

काम-भावित(त>)ता- -ता सार  
२८२: ११.

काम-भोग- -गयो: गौ ३, ४२;

-गात् गौ ३, ४३; -नेषु गी १६,  
१६.

कामभोगा(ग-अ)र्थ- -र्थम्  
गी १६, १२.

काम-मय- -यः वृ ३, ९, ११;  
४, ४, ५१.

काम-मोहित- -तः यो ३, ३;  
इ १२: २१.

काम-रत- -तम् योशि ६, ६९.

काम-रस-पोषक(य>)षिका-

-का: सार २६६: १३१<sup>०</sup>.

काम-राग-बला(ल-अ)न्वित-

-ता: गी १७, ५.

काम-राग-विवर्जित- -तम् गी  
७, ११.

काम-रागा(ग-आ)दि-दोष-

रहित- -तः वसू २६.

काम-राज- -जम् काम १; ६;  
१४.

कामराज-कूट- -टे आथ  
३९९: ६.

काम-रा(जक>)जिका- -का  
विद्या ११<sup>०</sup>.

काम-रूप, पा- -पः योशि १,

१४८; त्रि ११; -पम् ध्या ४४;

योचू ७; योरा ६; गी ३, ४३;

-पाम् त्रि ११<sup>०</sup>; -पाय रापू ४,

१२; -पेण गी ३, ३९.

कामरूप-त्व- -त्वम् १ योत  
७४; कामे १८.

कामरूप-पीठ- -ठम् सौ ३, १

कामरूपा(प-आ)ख्य- -ख्यम्  
योशि १, १७१; ५, ८.

a) समाहारे द्वय.। b) षका इति सुपा.यनि.सु-शोधः। c) °जका इति सुपा.यनि.सु-शोधः। d) काम्य° इति तान्त्रि.।

कामरूपिन्-पी तै३, १०, ५  
 कामरूपिणी-०णि व  
 ४३१:१२; -णीम् व ४५६:१.  
 काम-रेफे(फ-इ)न्दिरा-सम-  
 स्त-रूप-  
 कामरेफेन्दिरासमस्तरूपि-  
 (न>)णी-णीम्कालि४०१:२<sup>a</sup>  
 काम-लीला- -लायाः सार  
 २२९:२२.  
 काम-वन- -नम् सार२८६:५;  
 -ने सार २४७:१५; २८६:१;  
 २८९:८.  
 काम-वर्धि(न>)नी-नी सार  
 २६३:२.  
 काम-विवर्जित- -तम् ब्रवि १;  
 मै ४, ४, ६; मैत्रि ६, ३४; त्रिता  
 ५, २; अबि १.  
 काम-संवर्लित-देह-दातु- -त्रे  
 सार २७७:५.  
 १काम-संकल्प-  
 कामसंकल्प-वर्जित- -तः  
 जाद ५, २; -ताः गी ४, १९.  
 २काम-संकल्प- -ल्पम् ब्रवि१;  
 मै ४, ४, ६; त्रिता५, २; अबि १.  
 काम-संपर्क- -कात् मैत्रि६, ३४.  
 काम-सु(ख>)खा- -खा सार  
 २८४:१५.  
 काम-सुन्दर- -रः रा४२५:१८.  
 काम-हुत- -तः पा १, ४.  
 काम-हेतुक-  
 कामहेतुक- -कम् गी१६, ८  
 कामा(म-आ)कर्षि(न>)णी-  
 -णी आथ ३९५:१.  
 कामाकर्षिण्या(णी-आ)दि-  
 षोडशक- -कम् आथ३९४:२३

कामा(म-अच्)>)क्षी- -क्षी म  
 ४९:२; सार २६३:१.  
 कामा(म-आ)ख्य, ख्या- -ख्यम्  
 योचू ७; -ख्या ध्या ४५; योचू८;  
 -ख्याम् त्रिता १, ७६९.  
 कामा(म-आ)तुर, रा- -रा सार  
 २८४:१५९<sup>१</sup>; -रा: वृजा ६, ५.  
 कामा(म-आ)त्मक- -कः सार  
 २, ७६.  
 कामा(म-आ)त्मन्- -त्मने सार  
 २७७:५; -स्मानः गी २, ४३.  
 कामा(म-आ)दि- -दिमं२, ४, ४;  
 ब्रम् ३, ३, ३९; -दीन् तै ३, ६६.  
 कामादि-रहित- -तः मैत्रे  
 ३, २१.  
 कामादि-वृत्ति-दहन- -तम्  
 निर्वा २९८:१३.  
 कामादि-सहित- -तः सार  
 २, ६४.  
 कामा(म-आ)थ- -थम् त्रिता १,  
 ६७; -घाः सर ३, २६.  
 कामा(म-आ)धस्- -धः त्रिता  
 १, ६४.  
 कामा(म-आ)ध-  
 कामाधिन- -धी तै३, १०, ५  
 कामा(म-अप्)>)ब्-धि-कलो-  
 ल-रत- -तम् महा ५, १३४.  
 कामा(म-अ)मीष्ट-फल- -लम्  
 रुजा २, १<sup>d</sup>.  
 कामा(म-आ)वेश- -शः सार  
 २२९:१.  
 कामिक- -कम् शि ६, १९२;  
 -केन शि ६, ५२.  
 कामे(म-ई)प्सु- -प्सुना गी १८,  
 २४.

कामे(म-ई)श्वर- -रः पाशु १, १.  
 कामेश्वरी- -०रि त्रिता४,  
 ३३; -री त्रिता १, ६६; भा २६;  
 आथ ३९८:७; ३९९:५; -रीम्  
 विद्या १; -थै व ४६३:१५; १६.  
 कामेश्वरी-वज्रेश्वरी-  
 भागमालिनी- -न्यः भा २४.  
 कामेश्वर्या(री-आ)दि-  
 देवता-त्रय- -यम् आथ  
 ३९९:४.  
 कामो(म-उ)पभोग- -नैः मै १,  
 २; ३; ७; मैत्रि १, ३<sup>१</sup>; ४; मैत्रे १, २.  
 कामोपभोग-परम- -माः  
 गी १६, ११.  
 कामना- -नया सी ३६.  
 कामयमान- -नः वृ ४, ४, ६.  
 \*कामि-  
 कामि-(क>)का- -का रापू ४,  
 ५७; ६२<sup>१</sup>.  
 कामिका-पञ्चम- -मः रापू  
 ४, ६१<sup>h</sup>.  
 कामित- -तम् वरा १, १.  
 कामिता(त-अ)र्थ-द- -दाथ  
 त्रिवि ७, ४६.  
 कामिता(त-अ)र्थ-प्र(द>)दा-  
 -दा रा ४२३:१९; ४२५:१२.  
 कामिन्- -मिभिः वरा १, १; -मी  
 त्रिता २, १२; गोड १५.  
 कामिनी- -नीः काम १७; -न्यः  
 मैत्रि ६, १०; -न्या ध्या ८४;  
 योचू ५७.  
 कामिनी-मध्य- -ध्येकाम १७  
 २का(म>)मी- -मीम् त्रि १११<sup>१</sup>.  
 कामुक- -काः छाग २४:५.  
 काम्य, म्या- -न्यः त्रि १११<sup>k</sup>; -न्यम्

- a) 'राविन्दुमेलनरूपा समष्टि' इति तान्त्रि. । b) बस. । c) तु. शं., वैतु. PW. प्रमृ. काम-हेतुक- इति ।  
 d) 'कामं यथा स्वात्तथाऽभीष्टं फलं यस्य' इति कृत्वा बस. । e) =तकार-बीजाक्षर- । f) एकतरत्र 'कामका' इति  
 मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. ज्ञान.) । g) =नकार-बीजाक्षर- । h) 'अम्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. ज्ञान.,  
 अज्या., सस्थ. लान्त-> -न्तः) । i) विप. तादितेऽणि स्त्री. ङीप् । j) 'मी' इति मुपा. (तु. अज्या. कामिन्-> -मी)  
 यनि. सु-शोधः (तु. तान्त्रि.) । k) 'कामः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या., तान्त्रि.) ।



मना १,४५<sup>a</sup>; त्रिता १,५४; गोउ  
२१<sup>b</sup>; भव ५,७; म्या गोउ ६३;  
-म्या: वसू ३,३,६०; -म्यानाम्  
गी १८, २; -म्यानि जाद ७,५;  
-म्येषु छां ५, २, ९.  
काम्य-प्र(द)दा- -दा रा  
४२५: २२.  
काम्य-वन<sup>c</sup>- -नम् गोउ २१;  
सार २२१: १३.  
काम्या(म्य-अ)काम्य- -म्ये सांसू  
१,८५.  
कमठ<sup>१०</sup>-  
कमठा(ठ-आ)कार- -रम् अव्य ६.  
कमण्डलु<sup>१२</sup>- -लु: नाप ५, १; -लुम्  
जा ६; नाप ३,८६<sup>३</sup>; ४, ३८<sup>३</sup>;  
५, १; १संन्या २, १२; पप ४१८:  
३२; ४१९: १२; या २, १; -लौ  
शि ६, २७३.  
कमण्डलु-हस्त- -स्त: व४४२: १३  
कमण्डलु(लु-उ)दक-प- -प: या २, १  
१कमल<sup>१०</sup>- -लम् पा ७, ८; ९, ९;  
-लानि यो १, ८६; सार २२२: १४.  
कमल-कन्द-  
कमलकन्द-वत् यो १, ८२.  
कमल-धारि(न)णी- -ण्या रापू  
४, ९.  
कमल-नाभ<sup>१</sup>- -माय गोपू ३६.  
कमल-नेत्र<sup>१</sup>- -त्राय गोपू ३६.  
कमल-पत्रा(त्र-अ)क्ष<sup>१</sup>- -०क्ष गी  
११, २.  
कमल-माला-  
कमलमालिन्- -लिने गोपू ३६.  
कमल-संभव<sup>१</sup>- -०व योशि १, १९;  
१७३; ५, १०.

कमला(ल-आ)न(न)ना- -०ने  
अद्वै १.  
कमला(ल-आ)लय<sup>१</sup>- -यम् जाद  
४, ४९.  
कमला(ल-अ)ष्ट-पर्ण- -र्णेषु सूता  
६, २.  
१कमला(ल-आ)सन<sup>११</sup>- -नम्  
योचू ३.  
कमलासन-स्थ- -स्थम् गी ११,  
१५.  
२कमला(ल-आ)सन<sup>१२</sup>- -न: कृ ८;  
-नम् म्या ३१; सूता १, १.  
कमले(ल-ई)क्षण<sup>१</sup>- -णाय चा २२.  
२कमल<sup>१३</sup>-  
कामलायन<sup>१</sup>- -न: छां ४, १०, १.  
कमला<sup>१</sup>- ✓कम् द.  
कम्प, >कम्पि, कम्पते प्र ५, ६; हं  
१८; सुबा ९; योशि ६, २८; ६८;  
१आ १; २आ ३; कम्पेत सुबा  
१३<sup>३</sup>; नाप ४, १०.  
कम्पय-कम्पय व ४५७: ४.  
कम्प- -म्प: १योत ५२; योचू १०५;  
शां १, ७, ३.  
कम्पत्- -म्पन् पै २, ४५.  
कम्पन- -नम् त्रिआ २, १०५; जाद  
६, १४; ४३; -नात् वसू १, ३, ३९.  
कम्बल<sup>१३</sup>- -लम् शि ६, २५६.  
कम्बु<sup>१४</sup>-  
कम्बु-कण्ठ- -ण्ठम् वपू २, २.  
कम्बुकण्ठी- -ण्ठी सर ३, ४;  
-ण्ठीम् रा ४२४: २१.  
कम्प- ✓कम् द.  
कर- ✓कृ(करणे) द.  
करक<sup>१५</sup>- -कम् शि ७, ९०.

१करण-, २कर(ण)णी-, करत्-  
✓कृ(करणे) द.  
कर-मर्दक<sup>१६</sup>- -कम् शि ६, १९.  
करा(ल)ला<sup>१</sup>- -ला शि ६, ११९.  
कराली<sup>१७</sup>- -ली मुं १, २, ४.  
कराल-दंष्ट-वदन- -नाय त्रिवि ७,  
३३.  
कराल-वद(न)ना<sup>१</sup>- -०ने व  
४२७: १९; ४६४: २२.  
कराला(ल-आ)स्य<sup>१८</sup>- -स्या- -स्या  
तारा ८३: २०; -स्याम् व४६६: ३.  
करालिन्- -लिनम् व ४३०: १७.  
करालिका- कराली- टि. द.  
करिन्-, करिष्यत्- ✓कृ(करणे) द.  
करीष- -षम् शि ५, ६.  
१करीषि(न)णी- -णीम् मना १,  
१०; २शिसं ३६; व ४६२: १२.  
१करुण<sup>१९</sup>- -ण: वृजा ६, १<sup>१</sup>.  
करुणा<sup>२०</sup>- -णया सार २४३: २१; -णा  
नाप ४, १२; निर्वा २९७: ५;  
वरा १, १३; भव ५, २०; -णाम्  
महा ४, ७७; वरा २, ७६.  
कारुण्य- -ण्यात् १संन्या २, ८३.  
कारुण्य-लेश-  
कारुण्यलेश-तस( > )  
स्क १.  
२करुण<sup>२१</sup>- -ण: गी १२, १३.  
करुणा(णा-आ)कर- -राय चा ८.  
करुणा-कुश(ल)ला- -ला राधा  
१, २६.  
करुणा-निधि- -०धे शु १, ९.  
करुणा-व(त्)ती- -ती सार  
२४४: ४.  
कर्कटक<sup>२२</sup>- -क: ब्र १.

a) मा ३२, १३। b) °म्य: इति आन.। c) व्यु. पाउ. (१, १००) < ✓कम् (तु. MW.) इति, शक. ४क- +  
मठ- (< ✓मठ्) इति, ww. (१, ३९०) नैप्र. < ?कमर-थ- इति। d) व्यु. अभा. < क- ? + (✓मण्ड्) मण्ड- +  
(✓ला) लु- इति। e) व्यु. वैप्र १ यद्र.। f) कस.। g) बस.। h) व्यु. ? = ऋषिविशेष-। i) व्यु. पाउ. (१, ९३)  
< ✓कम्। j) व्यु. ? = जलपात्र-। k) व्यु. ? = वृक्षविशेष- (नैप्र. > नभा. करौदा-)। l) व्यु. ? कर- + अल- (< आ/ला)  
इति वा आल- (< ✓अल्) इति वेति अभा., < ✓(स्) कल् खरडन इति ww. (२, ५९१)। m) डीष् प्र. वा उसं. (पा  
४, १, ४५)। नैप्र. < करा(लक) लिक्का-। n) खि ५, ८७, ९। o) व्यु. पाउ. (३, ५३) < ✓कृ[✓कृ वा (तु. शक.,  
MW.)], ww. (१, ४८०) < ✓\*कु उपतापाऽनुकम्पयोः। p) मत्वर्थे अच् प्र. (पा ५, २, १२७)। q) व्यु. ? = कुलीर-।

कर्क(टि>)टी<sup>a</sup>-टीम् शि ६,७९.

कर्कश<sup>b</sup>-शा: शि ७,१०७.

कर्कश-त्व-स्वेन सार २६५:१३.

कर्कोट<sup>c</sup>-

कर्कोट<sup>d</sup>-ट: गरु ५.

कर्कोट-क<sup>e</sup>-क: गरु १६.

कर्कोट-दूत-त: गरु १६.

कर्कोट-पञ्चक-कौ रापू ४,५३<sup>d</sup>.

१कर्ण<sup>10</sup>-र्णम् वृ ६,४,२५; सुद्र ४;

-र्णयो: मना २,९९<sup>f</sup>; ७२९<sup>g</sup>; वृजा

४,१३; २१; ७,८; रुजा ३,१<sup>h</sup>; ह

२०; राधा ३,१०; सिसि ३८२:

३; -र्णाभ्याम् तै १,४,१; ऐ १,

४; १योत७०; नाप४,३८९<sup>b</sup>; णै

कौ २,११; वृजा ४,१८; ३३;

७,८; नाद ३१; योचू १९; राउ

३,८; शि ४,६४; व ४५७:१५;

-९<sup>h</sup>र्णेभि: प्र मुं मां अशि अ

वृजा शां<sup>i</sup>; नृपू शां<sup>i</sup>; २,१५;

नाप सी श त्रिवि रार रापू शां पप

अन्न सू १आ पाशु पत्र त्रिता दे

भात्र भ ग मवा गोपू कृ ह दत्ता

गरु अवि पहंमि शां<sup>i</sup>; मु१,२,५;

-णै<sup>i</sup> ऐ १,४; २,४; छां ३,१३,७;

वृ ५,९,१; मै २,८; मैत्रि २,६;

इ ११:२; पा ७,६; शि ७,३६;

गार ४०८: ७; गु १०.

कर्ण-कुण्डल-ज्योत्स्ना-रुचि-म-

-ण्डल-लम् सार २६५: २.

कर्ण-द्वय-यम् वृजा ४,२५.

कर्ण-धार-र: नाप ६,१;-रम् योशि

६,७९; यो ३,१७.

कर्ण-बिला(ल-अ)वधि-धि यो

२, ३३<sup>j</sup>.

कर्ण-मात्र-त्रे शि ७,४४.

कर्ण-रोग(ग-आ)दि-कृत-पात-

क-कम् वृजा ४, ३३.

कर्ण-वल्-वन्त: नापू ४,१३९<sup>k</sup>.

कर्ण-शङ्कुली-ल्या १संन्या२,१४.

कर्ण-शोधन-

कर्णशोधन-क-कम् शि ६,२३५

कर्णा(र्ण-अ)क्षि-नासापुट-द्वार-

-राणि योचू ११४<sup>l</sup>.

कर्णा(र्ण-आ)दि-करण-णानि

जाद ६,३३.

कर्णा(र्ण-अ)न्त-न्तम् जाद ४,२०

१कर्(र्णक>)र्णिका<sup>13m</sup>-

कर्णिका-हारक-के रुजा १,१८

२कर्ण<sup>n</sup>-

२कर्(र्णक>)र्णिका-कायाम् हं

८; सौ १,३; नाप ६,१.

३कर्ण<sup>o</sup>-र्ण: गी १,८; -र्णम् गी ११,

३४.

कर्त-तम् मना २,११९<sup>p</sup>; -तं मना

२,११९<sup>p</sup>.

कर्तरी-✓कृत्(छेदने) द.

कर्तव्य-कर्तुम्, कर्तृ-✓कृ(करणे) द.

कर्दम<sup>q</sup>-मात् महा ५, १३५.

कर्पास<sup>r</sup>-

कार्पास-

कार्पास-बीज-

कार्पासबीज-वत् भव १,८

कार्पासा(स-अ)स्थि-

कार्पासास्थि-तुष-

-पाणि शि ७,५१.

कार्पासा(स-अ)स्थि-प्रमा(ण>)-

णा-णाम् शि ४,३३.

कर्पूर<sup>13s</sup>-रम् शां १,७,२१; -रस्य

शि ६,५२; -रे योशि १,१४९.

कर्मन्-✓कृ(करणे) द.

कर्शयत्-✓कृश् द.

कर्षण-✓कृष् द.

कर्हि किम्-द.

✓कल्(बधा.)

२कल्<sup>u</sup>-ला: छां ५,१,८; वृ ६,१,८

३कल्<sup>u</sup>-

कल-कण्ठ-ण्डै: सार २२८:५;

२५९: २; २८२: ५.

कल-गीत-तानि सार २२८:

१७.

कल-रास-ज्ञान-विहारा-

(र-आ)त्मन्-त्मने सार

२७७: १०.

कल-शब्द-ब्दम् सार २६२:

१८; -ब्देन सार २३७:८; २८५:

२; -ब्दै: सार २३४: १०.

४कल्<sup>v</sup>-

कल-हं(स>)सी<sup>w</sup>-सी सार

२८५: १; ६; ८; १०<sup>x</sup>; १३;

२८६: १८; २८७: ४; ८; ११;

-सीम् सार २८५: ५.

कलहंसी-रूप-पम् सार

२८६:८; -पेण सार २८६:१५.

a) व्यु.१ अभा. कर-१+(✓कल्>)कटि- इति । b) व्यु.१ ww. (१,३५४)<✓\*कर काठिन्य इति ।

c) व्यु.१ =नागविशेष- । d) °क: इति मुपा यनि.सु-शोध: (तु.अब्जा.कोष्ठगत: पा.) । तक्ष° इति आन. । e) व्यु.वैप१ यद्र. ।

f) तैआ १०,७,१ । g) शौ १९,६०,१ । h) तैआ ७,४,१ । i) ऋ १,८९,८ । j) °धि: इति निसा.यनि.सु-शोध:(तु.

अब्जा.) । k) ऋ १०,७१,७ । l) °रादि इति निसा. °रान् इति अब्जा. च मुपा. यनि. सु-शोधौ । m) तु. पा ४,३,

६५ । n) व्यु.१ =तत्तत्पक्षफलमृतिप्रदेशात्मकगर्भपर्याय- । गर्भ- इत्यनेनैव साजात्यं स्यात् (तु. वैप१, CLII, \*भैर>न

इति विपरिणाम:, यस्था. टि. गर्भ- च) । o) व्यु.१ । p) 'कर्तुम्' इति क्वाचित्क: निसा.पा.सु-शोध: (तु.तैआ १०,९,१) ।

q) =पङ्क- । व्यु.१ पाउ. (४, ८४)<✓कर्द् (शब्देऽ) इति, ww. (१, ४२८)<✓कर (<✓कर्ष) काण्य इति ।

r) व्यु.१ पाउ. (५, ४५)<✓कृ(करणे) इति । s) व्यु.१ पाउ. (४, ९०)<✓कृप् सामर्थ्य इति । t) धा. वापबन्धे

वृत्ति: (वैतु. अभा.) । u) धा. रसधारणे वृत्ति: [ वैतु. ww. (१, ४४३) शब्द इति] । v) धा. कान्तौ वृत्ति: स्यात् ।

|   |   |  |
|---|---|--|
| <p>५कल<sup>a</sup>-<br/>कल-विकरण- -णाय मना २,<br/>१८९<sup>b</sup>.<br/>कलना- -नया अञ ४, ६८; -ना<br/>अञ ५, १०८; -नाम् महा ६, ४६;<br/>-नासु अञ २, ४४.<br/>कलना(ना-आ)कलनो(न-उद्)&gt;-<br/>न्मुख- -खम् महा ५, १४६.<br/>कलना-मल- -लम् १संन्या २,<br/>४५.<br/>कलना-रहित- -तः अञ ४, ९१.<br/>कलनो(ना-उ)द्युक्त- -क्तः अञि<br/>२४.<br/>कलयत्- -यताम् गी १०, ३०; -यन्<br/>अञ ४, ९१.<br/>कलयन्ती- -न्ती महा ५, १४६.<br/>कलित-<br/>कलिता(त-आ)भिध- -धे अञ<br/>५, ११३.<br/>कलयमान- -नः १संन्या २, १४१<sup>c</sup>.<br/>१कल- -१क द्र.<br/>२-५कल- ✓कल् द्र.<br/>६कल<sup>d</sup>-<br/>कल-शत्रु- -वृन् रार २, ६९.<br/>कलङ्क<sup>e</sup>- -ङ्कम् अञ १, ३९.<br/>कलङ्किन्- -ङ्की महा ५, १२५.<br/>कलत्र<sup>f</sup>- -त्रम् आरु ५; नाप ३, ७७;<br/>-त्रे जाद १, १६.<br/>कलत्र-चिन्ता(न्ता-आ)र्त- -र्तः<br/>महा ६, २३.<br/>कलत्र-पुत्र<sup>g</sup>- -त्रम् पप ४१८: ७<sup>h</sup>.<br/>कलत्र-पुत्र-मित्र- -त्राणि शि ६,<br/>१६६; -त्रैः शि ६, १११.</p> | <p>कलत्रपुत्रमित्रा(त्र-आ)द्य- -द्यैः<br/>शि २, ३१; ४, २५; ६, १२७.<br/>कलत्र-पुत्र-मित्रा(त्र-आ)र्थ-गृह-क्षेत्र-<br/>धना(न-आ)दिक- -कैः भव १,<br/>२७.<br/>कलल<sup>i</sup>- -लम् गर्भ ३<sup>j</sup>; निरु १, ९.<br/>कलला(ल-आ)द्य- -द्याः सांका ४३.<br/>कलश<sup>k</sup>- -शम् शि ६, ५६; -शान्<br/>चक्र ४; -शे वस् १४.<br/>कलशा(श-अ)न्तर-दीप-<br/>कलशान्तरदीप-वत् पै ३, १;<br/>यो ३, २५.<br/>कलह<sup>l</sup>- -हम् शि ७, १४.<br/>कलहिन्- -हिनः छां ७, ६, १.<br/>कलहो(ह-उ)त्सुक- -काः या २, २.<br/>कलहल<sup>m</sup>-<br/>कलहल-पिङ्गल-कण्ठ-<br/>कलहलपिङ्गलकण्ठ-म(य)&gt;-<br/>यी- -यीम् व ४३४: २३.<br/>कला<sup>n</sup>- -लया वृ १, ५, १४; -ला छां<br/>४, ५, २<sup>o</sup>; ६-८, ३<sup>p</sup>; ६, ७, ३; ६;<br/>वृ १, ५, १४; १५; तेद, ३५; नाप<br/>६, १; ८, १<sup>q</sup>; ता २, १; तु ९; स्व<br/>१, ५; नापू १, ११; व ४२७: ७९<sup>r</sup>;<br/>-लाः प्र ६, २; ५; ६; सुं ३, २, ७; वृ<br/>१, ५, १४; १५; मना १, २९<sup>s</sup>; मैत्रि<br/>६, १४; सुबा ६; त्रिब्रा २, १; गु २०;<br/>व ४६७: १; अद्वै ५४; -लानाम्<br/>छां ६, ७, ३; ६; पिं ७; -लाम् पै<br/>४, १५; योशि ६, ४१; ४३; ४६;<br/>त्रि ११; गुषो ४२०: ११; ४२१;<br/>३; व ४२७: १२; वउ १, २८;<br/>-लायाः ता २, ३; -लायाम् पप</p> | <p>४१९: ३०.<br/>कला-कलङ्क-रहित- -तम् अञ ५,<br/>३१.<br/>कला-कलन-मु(क्त)&gt;क्ता- -क्तया<br/>१संन्या २, २६.<br/>कला-कलन-वर्जित- -तः १संन्या<br/>२, २०.<br/>कला-काष्ठा(ष्ठा-आ)दि-काल-<br/>रूप-<br/>कलाकाष्ठादिकालरूपि(न्)&gt;-<br/>णी- -णी दे १०.<br/>कला-काष्ठा-विवर्जित- -तः ते<br/>५, ७१.<br/>कला-को-वि(द)&gt;दा<sup>t</sup>- -दा सार<br/>२८२: ११.<br/>कला(ला-अ)तीत, ता- -तः तु १;<br/>-ता नाप ८, १; ता २, १; ४; ३,<br/>७; ८; -ते पप ४१९: ३०.<br/>कला(ला-आ)त्मक- -कम् ते ५, १५.<br/>कला-पार-तत्त्व- -त्वे रापू ५, ५;<br/>कला-मध्य-गत- -तः व ४६७: २.<br/>कला-रूप- -पम् बि १४.<br/>कला-वत्- -वान् महा २, ६१; षो १४<br/>कलावती<sup>u</sup>- -ती सार २२३: २;<br/>२३४: ५; २३८: १०; २६३:<br/>१; २७२: ३; २८२: ११; २८४:<br/>१३; १८; सुमु ११; -त्याम् सार<br/>२५२: ३.<br/>कला(ला-अ)वतार- -रान् सार<br/>२५७: १९.<br/>कला-सत्ता- -त्ता अञ ४, ६६.<br/>कला-सर्ग-कर- -रम् धे ५, १४.<br/>कला-स्व-रूप- -पः ता ३, ६; ८.</p> |
|---|---|--|

a) घा. सामर्थ्ये वृत्तिः स्यात् (नैप्र.=✓क(करो))>\*भावे कर- इति। b) तेषां १०, ४४, १। c) कल्प-  
मान<sup>o</sup> इति निसा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। d) =सकल- इत्यस्योत्तराऽऽशः। e) व्यु. उ.स. क- (=प्रजापति-)+  
लङ्क- (<✓कङ्कि<✓लङ्ङ् हीनतायाम्) इति अभा., कस. कल्- (<✓कलि<✓कल्)+अङ्क- इति शक.।  
f) व्यु. ! <✓कल् इति पाठभो. (३, २, ८६), ✓कङ् इति अभा. PW. च, ✓गङ् इति पाठ. (३, १०६) पक्षे  
अभा. च, कल- +त्र- (<✓त्रै) इत्यपि अभा.। g) समाहारे द्वस.। h) °त्रम् पु° इति अख्या.। i) व्यु. ? <✓कल्  
इति पाठभो. (२, ३, ९३)। j) 'कलिलम्' इति आन., अख्या.। k) व्यु. वैपश् यद्र.। l) व्यु. ? अभा. इकल- +ह-  
(भावे <✓हन्) इति। m) अर्थः व्यु. च?। n) तेषां १०, १, २।



कलि<sup>a</sup>- -लि: कृ१५; -लिना योशि१,  
२०; गोड ३७; -लिम् कलि१;  
-लौ नृपू १,११; भव१,५६; ५७.  
कलि-कल्मष-नाशन- -नम् कलि२  
कलि-काल- -ल: कृ ९.  
कलि-जाबालि-सौभाग्य-रहस्य-  
कच-मुक्तिका<sup>b</sup>- -का मु१,१,२९  
कलि-संसार- -रम् कलि १.  
कलित- ✓कल् द्र.  
कलिन्द<sup>c</sup>-  
कालिन्दी<sup>d</sup>- -न्धा: राधा ३, २.  
कालिन्दी-कूल-लोल- -लाय  
गोपू ३९.  
कालिन्दी-जल-कलोल-सङ्गि-  
मारुत-सेवित- -तम् गोपू  
१०<sup>d</sup>.  
कलिल<sup>e</sup>- -लस्य श्वे ४,१४; ५,१३.  
कलुष<sup>f</sup>-  
कलुषी ✓कृ  
कलुषी-कृत- -त: मै ३,२; मैत्रि  
३,२; ६, ३०.  
कलेवर<sup>g</sup>- -रम् नाद १९<sup>h</sup>; महा ३,  
२८; नाप ५,१; मुद्र २१<sup>i</sup>; गी८,  
५; ६; -रे योशि१,१४७<sup>j</sup>; ६,६९.  
कल्कि<sup>k</sup>- -लिक: नापू ५, ८.  
कल्क्य(लिक-अ)वतार<sup>l</sup>- -राय नापू  
५, ११.  
१-५कल्प-, कल्पक-, कल्पन-,  
१,२कल्पना-, कल्पयत्-,  
\*कल्पया-, कल्पयित्वा,  
कल्पित- ✓कल्प् द्र.

कल्माष<sup>m</sup>-  
कल्माष-पुच्छ- -च्छम् नी ३,२.  
कल्याण- ✓कल् द्र.  
कल्याण<sup>n</sup>- -ण: नृपू २,११; १५; -णम्  
वृ १,३,२-६; ४,४,२२; त्रिता४,  
१७; चा ६.  
कल्याणी- -०णि तुल ७१:१०;  
-णी शां १,७,४६; सुमु ११९<sup>o</sup>.  
कल्याण-कृत्- -कृत् गी ६,४०.  
कल्याण-तम- -मम् ई १६; वृ ५,  
१५,१९<sup>p</sup>.  
कल्याण-तर- -रम् वृ ४,४,४<sup>q</sup>.  
कल्याण-द,दा- -०द अक्ष ५; -दाम्  
सर १,४.  
कल्याण-निधि- -धये सार२४७:४  
कल्याणा(ण-अ-)चल<sup>r</sup>- -ल:सि२,१  
कल्याणाचलो(ल-उ)परि त्रिवि  
६, २०.  
कल्लोल<sup>s</sup>-  
कल्लोल-वन-संकुल- -लेषु त्रिवि  
६, २३.  
कवच<sup>t</sup>- -च: अद्वैभा १०; -चम् रार  
२,८३<sup>u</sup>; व ४२६:७; -चाय नृपू  
२,४; शु १,१८; लां २१३:९;  
वपू २,२; -चे दत्ता १,५-७.  
कवचा(च-अ)स्त्रा(स्त्र-अ)न्त- -न्त:  
रार २, ६०.  
कवष<sup>v</sup>- -षम् छाग २३:१.  
कावषेय<sup>w</sup>- -य: -यात् वृ ६, ५,४.  
कवाट<sup>x</sup>- -टम् योचू ३९; शां १,७,  
३७; योशि ६,३१.

कवि<sup>y</sup>- -वय: क १, ३, १४; प्र ५, ७;  
मुं १,२,१; श्वेद, १; मना१,१९<sup>z</sup>;  
मैत्रि २, ७; वृजा १, १९<sup>aa</sup>; नृपू  
१, १९<sup>ab</sup>; २शिसं १६; व ४३४:  
१; पित्र ३,९; गी ४, १६; १८,  
२; -वि: ई ८; मना२,१३,२९<sup>ac</sup>;  
नाप ५,२३; ब्रवि९४; सुबा६<sup>ad</sup>;  
सर ३,१०; २प्र ३५: १९; गुषो  
४२१:४; चक्र ९; गी १०, ३७;  
-विम् मना २,१३,२९<sup>ae</sup>; नाप९,  
१७; श १२; महा ४,७१; त्रिता  
३,२७९<sup>af</sup>; त्रि९; व ४२९:१९<sup>ag</sup>;  
वपू १,५; गी८,९; -वीनाम् मना  
१,२९<sup>ah</sup>; २,१२,१९<sup>ai</sup>; २,४०९<sup>aj</sup>;  
ए २; त्रिता ३,२७९<sup>ak</sup>; पा ७,२;  
व ४२९:१९<sup>al</sup>; ४४२:१९<sup>am</sup>;  
४४८:२९<sup>an</sup>; ४५२:१९<sup>ao</sup>; वपू  
१,१९<sup>ap</sup>; ५; गी १०, ३७.  
काव्य- -व्यानि योशि ३, ७.  
कवि-त्व- -त्वम् सर ३, ७; कालि  
४०२:१५; -त्वे कालि४०३:१२.  
\*क-विकास- कप्यास- टि. द्र.  
कव्य<sup>q</sup>-  
कव्य-वाहन- -न: इ १५:१२.  
कशेरु<sup>r</sup>-  
कशेरु(क>)का- -का पित्र १,१०.  
कश्मल<sup>s</sup>- -लम् गी २,२.  
कश्मीर-  
काश्मीर<sup>t</sup>-  
काश्मीर-पुर-वासि(न>)नी-  
-०नि सर ३, २.

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) तत्तदुपनिषद्भाषां द्रस. गर्भितो मध्यमपदलोप: कस. । c) व्यु.? =पर्वतविशेष- ।  
d) °ल्लोला° इति आन. । e) व्यु.? <✓कल् इति पाउ. (१, ५४) । f) व्यु.? <✓कल् इति पाउ. (४, ७५),  
४क- + लुष- (<✓लुष्) इत्यपि अभा. (१, १०, १४) । g) व्यु.? । h) विशिष्ट: अज्या. पाभे. । i) °र: इति मुपा.  
यनि. सु-शोध: । j) 'कलेवरम्' इति अज्या. । k) व्यु.? <✓कल् इति शक. । l) का ४, १०, १६ । m) व्यु.?  
<✓कल् इति पाउना. (१, ६३), ४क- + लोल- इति वाच. । n) व्यु.? <(कु>)कव् + अच- (<✓अच्<)  
इति वा काय- >कव् + गपू उप. इति वा <✓कान्च् इति वेति या. (५, २५), क- (=वात)+वच- (<✓वच्<)  
इति अभा. (२, ८, ६४) । o) =हुं-बीजमन्त्र- । p) शुआदिषु उरं. (पा ४, १, १२३) । q) व्यु.? =कपाट- ।  
r) तैआ १०, १, १ । s) ऋ१०, १२९, ४ । t) तैआ १०, ११, २ । u) °लि: इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (वु.  
अज्या.) । v) ऋ २, २३, १ । w) तैआ १०, १, २ । x) ऋ ९, ९६, ६ । y) तु. पा. (४, २, १३३) ।

कश्यप<sup>१०</sup> -पः वृ २, २, ४; ६, ५, ३<sup>३</sup>;

कृ २१<sup>१०</sup>; सूता १, ७; -पात् वृ ६,  
५, ३<sup>३</sup>; सूता १, ८.

काश्यप<sup>११</sup> -पः इ १८: २०; -पम्  
सूता १, २८; गार ४०७: १४;  
-पाय इ १८: १९; -पेन मना १, ८.

✓कष

१कष-

कषो(ष-उ)त्क- -त्काय मना २,  
६६९<sup>०</sup>.

कषमाण- -णम् छां ४, १, ८<sup>६</sup>.

कष्ट<sup>०</sup>-

कष्ट-वेष्टा-युत- -तः अज ४, ६४

२\*कष<sup>१२</sup>-

\*काषि<sup>१</sup>- नाउ. व्यु. औप. द्र.

काषायण<sup>१३</sup>- -णः, -णात् वृ ४, ६, २

कषाय<sup>१४</sup>-

काषाय-

काषाय-वस्त्र- -स्त्रम् भव  
१, ५५.

काषाय-वासस्- -साः नाप  
५, ३४; कुं ९; कथु ३, १.

कषाय-कुण्डल-

कषायकुण्डलिन्- -लिनः मैत्रि  
७, ८.

कस्तूरी<sup>१५</sup>-

कस्तूरी-तिलका(क-अ)ङ्कित-

-ताय सार २६१: १०.

कस्तूरी-तिलको(क-उ)पेत(त>)ता-

-ताम् रा ४२४: १९.

✓\*कहू(छर्दने?), कह-कह<sup>१</sup> वपं ३१२: ५

कहोल<sup>१</sup>- -लः वृ ३, ५, १<sup>२</sup>.

कह्लार<sup>१६</sup>- -रैः रा ४२४: ७.

कह्लार-पुष्प- -प्यैः रा ४२५: ५.

१का- २कु- द्र.

२का- किम्- द्र.

३का<sup>१</sup>- काम पा ५, ३.

कांस-, कांसी-, कांस्य- २कंस- द्र.

१काक<sup>१७</sup>- -कः ते ६, ९२; -काः मैत्रे  
२, २५; छाग २५: १४.

२काक<sup>१८</sup>-

काक-मत- -तम् योशि १, १४३९<sup>१५</sup>;

-तात् योशि १, १४४.

काकिनी<sup>१९</sup>- -नी पी ४२२: ११.

काक्षसेनि- कक्ष- द्र.

✓काङ्क्ष, काङ्क्षते मं २, ४, २; काङ्क्षति

नाद ४२<sup>२०</sup>; महा २, ६०; ६, ६४;

गी ५, ३; १२, १०; १४, २२; १८,

५४; काङ्क्षन्ते १योत ६१; काङ्क्षे

गी १, ३२; काङ्क्षत नाप ५, १.

काङ्क्षत्- -ङ्क्षन्तः गी ४, १२.

काङ्क्षित- -तम् गी १, ३३.

काच- ✓कच् द्र.

काञ्चन<sup>२०</sup>- -नम् ध्या ५; १योत

१३७; २योत १, ८; १संन्या २,

८; जाद १, २२; इ १५: ५; -नात्

महा ४, ४६; -ने जाद १, ११.

काञ्चन-संस्कृत- -तम् शि ६, १२३.

काञ्चना(न-अ)दि-सम- -मम् गोच  
६९: ३.

काठिन्य- ✓कद् द्र.

काण<sup>२१</sup>- -णः ध्या ९३, १.

काण्ड<sup>२२</sup>- -ड्ण्डात्-ण्डात् मना १, ७;  
व ४६४: ५.

?काण्डान्तरादित्यः<sup>२३</sup> मवा ५.

काण्व- ✓कण् द्र.

कातक-, कात्य-, कात्यायन- ✓\*कत् द्र

कादि- १क द्र.

काद्रवेय- २कद्रू- द्र.

कानीयस- ✓कन् द्र.

कान्त- ✓कम् द्र.

कान्तर<sup>२४</sup>- -रम् पित्र १, ३; -रे पित्र  
६, १९.

कान्ति- ✓कम् द्र.

कान्यकुब्ज- १कन्य- द्र.

कापाल-, कापालिन्- कपाल- द्र.

कापिल- ३कपि- द्र.

कापी-, कापेय-, काप्य- ४कपि- द्र.

१काम-, कामना-, कामयमान-  
✓कम् द्र.

कामलायन- २कमल- द्र.

\*कामि-, कामित-, कामिन्-, २काम(>)

मी- कामुक-, काम्य- ✓कम् द्र.

काय<sup>२५</sup>- -यः गौ ४, ३६<sup>२</sup>; -यम् वरा

५, ३७; गी ११, ४४; -यस्य गौ

४, ३३; महा ३, ३१; वरा २,

३९; -यात् वरा ५, ८; -यानाम्

a) व्यु. वैपश् यद्र. । b) उत्तरेण संधिरार्षः । c) तैश्चात्रा १०, ६६ । d) °र्षं इति निसा., आन. संटि. ।

e) इडभावः (पा ७, २, २२) । f) व्यु.? =लोहितादीयत्वात् (पा ४, १, १८) कुलविशेषप्रवर्तक ऋषिविशेषः [तु. कश्च-

(मभा., वायु.), ककेजई, काळी, छाळी प्रभु. नभा. च कुलविशेषेषु] । g) <कषाय- वा काषाय- वेति PW. प्रभु. ।

h) व्यु.? । i) लोटि मपु १ द्र. । j) व्यु.? =सरस्वती- (तु. पाटी.) । k) व्यु.? <✓कै शब्द इति पाउ. (३, ४३),

शब्दानुवृत्तिमात्रमिति या. (३, १८) । l) व्यु.? =रुद्र-पर्याय- । m) =रुद्र-शक्ति- । n) 'काङ्क्षते' इति अड्या. ।

o) व्यु.? <✓कञ्च् इति दे. (१, २), ✓काञ्च् इति अभा. (२, ९, ९५) । p) मा १३, २० । q) पा. १ 'लोका-

(क-आ)ण्डा(ण्ड-अ)न्तरा(र>: आ)दित्यः' इत्याद्यात्तरच्युतिपूरकः पदद्वयमयः शोधः स्यात् (तु. मवा ३ यत्राऽविद्या

तमोदक्त्वविशिष्टलोकाण्डतया लक्षिता भवति, यस्या ग्राह्येतरत्वस्य चोपपत्तय इह तदन्तर्भेदकज्योतिर्मण्डलादित्यात्मना

निरूपिता सती ग्राह्यत्वेन विद्या प्रकृता भवति; वैतु. उन्न. विद्याऽविद्ययोर्लक्षणवाक्ययोः गपू. दिशा प्रातियोगिकत्वम-

पर्यन्ध सुपा. क- (=कुत्तित-) +आण्ड- इत्येवमादितो विगृह्यमानश्च यथाकथमपि व्याख्यानं प्रवृत्तः) । r) व्यु.? <चाय-

(<✓चि चयने) इति पा. (३, ३, ४१), <✓कै (प्रकाशे) इति शक. ।

पा२,६; ये वरा५,७४; येन जाद  
१,७; १३; १५; १७; गी ५, ११.  
काय-क्लेश-भय-यात् गी १८, ८.  
काय-क्लेश-वैषुय-यम् महा४, २८  
काय-दण्ड-ण्डे १ संन्या २, ९७.  
काय-रूप-पे शां १, ७, ५२.  
कायरूप-संयम-मात् योसू ३,  
२१.  
काय-व्यूह-ज्ञान-नम् शां १, ७,  
५२; योसू ३, ३०.  
काय-भि(रस् >)रो-ग्रीव-वम्  
गी ६, १३.  
काय-शोषण-मात्र-त्रेणवरा२, ४०  
काय-संपद्-पत् योसू ३, ४६; ४७.  
काया(य-आ)काश-शयोः योसू  
३, ४३.  
काया(य-आ)काश-संयम-मात्  
शां १, ७, ५२.  
काया(य-आ)भि-भिम् मैत्रि ७, ११  
काया(य-आ)न्तर-न्तः अज्ञ ३, १३  
कायिक-कात् का १५.  
कायिक-वाचिक-मानस-  
पातक-केभ्यः सु २९५; ५.  
कायिका(क-आ)दि-विमुक्त-  
क्तः मैत्रि ३, २२<sup>b</sup>.  
काये(य-इन्द्रिय-सिद्धि-द्धिः  
योसू २, ४३.  
कार-  
कार-वेल्<sup>d</sup>-लान् शि ६, ८०.  
कारण-, कारयत्-, कारया-, कार-  
यित्-, कारयित्वा √कृ(करणे)द्र.  
कारा-  
कारा(रा-आ)गार-विनिर्मुक्त-  
चोर-

कारागारविनिर्मुक्तचोर-वत्  
मैत्रि २, ११.  
कारा-गृह-विनिर्मुक्त-चोर-  
कारागृहविनिर्मुक्तचोर-वत् नाप  
७.  
कारुण्य-करुणा-द्र.  
कार्कोट-कर्कोट-द्र.  
कार्ण-१ क द्र.  
कार्तवीर्य-√कृ(करणे) द्र.  
कार्तिकी-कार्तिकेय-कृतिका-द्र.  
कात्स्न्य-कृत्स्न-द्र.  
कार्पण्य-√कृप् द्र.  
कार्पास-कर्पास-द्र.  
कार्य-√कृ(करणे) द्र.  
कार्शिकेयी-√कृश् द्र.  
कार्षाजिनि-कार्षायिस-१ कृष्ण-द्र  
१ काल<sup>1</sup>-ले मन्त्रि २; चू २.  
काली-  
१ कालि-(क >)का-का  
महा ४, ११७.  
१ काल-दण्ड-  
कालदण्ड-पर-रम् व ४६६: ४  
कालदण्ड-हस्त<sup>1</sup>-स्ताभ्याम्  
व ४५०: ७.  
२ काल-दण्ड, ण्डा<sup>1</sup>-ण्डः व ४३९:  
१९; -ण्डाम् व ४६६: ३.  
काला(ल-अम्भस् >)म्भो-धर-  
कान्ति-कान्त-न्तम् रार २,  
२४.  
कालिमन्-मा महा ५, १८५.  
२ काल<sup>1</sup>-लः श्वे १, २; गौ २, २४;  
मैत्रि ४, ५; ६, १४<sup>५</sup>; १५<sup>५</sup>; १६;  
कै १, ८<sup>६</sup>; ना २; अशि २, २०;  
६, १२; सुबा ६<sup>१</sup>; वृप् ४, १५,  
२२; मन्त्रि १२; ते ४, १२; ५, ६०;

९९<sup>३</sup>; ६, ३५; ६३<sup>३</sup>; नाप ३, ४;  
८, २; ९, १; द १; १५; त्रिवि २,  
१६; राप् ४, ६३<sup>३</sup>; शां १, ७, १८;  
महा ३, ३७; ३८; योशि १, १२०;  
ए ६; अज्ञ ३, २१; अक्षि २४;  
पाशु २, २; भ २, ११; इ १५;  
२३; तु १७; सार २२७: १८;  
२३१: ६; २७८: १९; वटु ३१४:  
१०; व ३१७: १८; कालि ४०३:  
८; सु २२१<sup>०</sup>; २३; भव १, १७;  
३९; चू १२; गी १०, ३०; ३३;  
१२, ३२; -लम् छां २, १३, १;  
वृ १, २, ४; श्वे ६, १; मैत्रि ६, १४; ते  
२, २९; ५, १४; ६, ११; नाद २१;  
नाप ३, ६१<sup>९</sup>; ४, २; ५, १; त्रिबा  
२, ११९; योचू १०७; मं २, ४, ४;  
श ९; १ संन्या २, ५९; अक्षि १७;  
१ आ ७; वरा २, ४६; सर ३, ३१;  
पा २, ९; ३, १; मृ ३; शि ४, ४२;  
६, ९९; १०१; गी ८, २३; -लस्य  
वृ १, २, ४; गौ २, २; ४, ३४; मैत्रि  
६, १४<sup>३</sup>; सी १४; भा २५; शि ६,  
१९५; ला: वा १६; योशि ६, ५७;  
पाशु १, २; ७; गोच ६६: १६; लान्  
वृ २, १, १०; १२; कौ ४, ६; १२;  
१३; गौ १, ८; मैत्रि ६, १४<sup>३</sup>;  
वरा २, ४२; वटु ३१७: १८;  
अशि ६, १२; -लान् त्रिवि ४,  
१४१<sup>५</sup>; -लाय मना २, १८९<sup>५</sup>;  
भ १, ६; -ले श्वे ४, १५; मैत्रि ६,  
१४; मैत्रि २, ६; ते ४, ५४; नाप ५,  
८; १८; द १; शां १, ७, ४६<sup>९</sup>;  
महा ३, ४२; १ संन्या २, ७३; या  
२, ८; वरा २, ४२; इ १२: १५; सार

a) समाहारे द्वस. । b) कायकायि<sup>०</sup> इति अज्या. । c) व्यु. ? विप. वा नाप. वा । d) कस. वा षस. वा ।  
e) व्यु. ? < √कृ विक्षेपे इति अभा., √कृ करण इति MW. । f) विप. । व्यु. ? = मलिन-वर्ण- । g) कस. । h) मध्यमपदलोपः  
कस. । i) बस. । j) नाप. । व्यु. ? = तदाख्य-दिक्प्रतियुक्तपदार्थ- बोपसंहाराधिष्ठातृदेव- वा । k) काला<sup>०</sup> इति आन. । l) 'कला'  
इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । m) 'लम्' इति अज्या. । n) = मकार-बीजाक्षर- । o) अविभक्तिकः  
सुपा. यनि. सु-शोधः । p) 'लानि' इति अज्या. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.) । q) तैश्चा १०, ४४, १ ।  
r) 'काये' इति अज्या. संटि. ।



२२७: ३; २५६: ९; २८३: ८; २९३; गु५८; भव३, ३३९; गी ८, २३; १७, २०; -ले-ले सार २२४: ३; ८; २५६: १; २८९: ६; -लेन श्वे ६, ३; ध्या ८२; त्रिवि ३, ४; महा ५, १५७; १संन्या २, १४; योसू १, २६; गी ४, २; ३८; -लेषु वृजा ५, १७; त्रिब्रा २, १०८; पप ४१९: ८; गी ८, ७; २७.  
काल-कर्मा(र्म-आ)त्मक- -कम् स्व ६१: ६.  
काल-कषि(न् >)णी- -णी पी ४२२: ९.  
काल-कलना- -नासु अन्न २, ८.  
काल-कला-निमेष- -षम् सी १४.  
काल-काङ्क्षिन्- -क्षी नाप ५, १५.  
काल-कार- -र: भव २, ४७.  
काल-काल- -ल: श्वे ६, ३; १६; स ३७९: ५.  
कालकाला(ल-आ)कृति- -तिम् शि ६, १३०.  
काल-कूट- -टम् नाप ७; १संन्या २, ७९.  
काल-खण्डि(न् >)नी- -०नि हंषो १६.  
काल-झ- -झम् शि १, १.  
काल-चक्र- -क्रम् सी १४.  
कालचक्र-प्रणेतृ- -तारम् सू ५.  
काल-चिन्तक- -का: गौ १, ८.  
काल-जित्- -जित् १योत १२६.  
काल-ज्ञान-  
कालज्ञानिन्- -नी वटु ३१८: ८.  
काल-जर-  
कालजर-वन- -ने शि ६, १९०.  
काल-तस्(>) अना २४; ते १, १५; त्रिवि १, ५; ७, १७; मुद्र १, २; श २३.

काल-त्रय- -यम् ते ३, ४९; ब्रवि २०; १संन्या २, २७; बि २३; -ये ससा १, ४१; नाद ८<sup>d</sup>; आबो २९.  
कालत्रय-विद्- -वित् पिब्रा २, १०७.  
कालत्रय-विमुक्त- -क्त: मैत्रे ३, २१.  
कालत्रय-विवर्जन- -नात् ते ५, १७.  
कालत्रय-विवर्जित- -त: ते ४, ६९.  
कालत्रय-स्वरूपा(प-आ)- -त्मन्- -स्मा ते ४, ६९.  
कालत्रया(य-अ)तीत- -त: ते ३, १८; ग ६.  
कालत्रया(य-अ)बाधित- -तम् त्रिवि १, ५.  
कालत्रयाबाधित- -निज- -स्वरूप- -प: त्रिवि १, ११.  
काल-द्वया(य-आ)स्फालन- -नम् गार ४०८: ११.  
काल-धर्म-भय- -यम् सार २७९: २१.  
काल-नाना-स्वरूप- -पम् ते ५, ९७.  
काल-नि(त्य >)त्या- -त्याम् पारा १२.  
काल-नियम- -म: सांस् ४, २०; गुषो ४२०: २.  
काल-निर्यापण- -णम् सार २८३: ३  
काल-पाश-विष- -षम् लां २१५: १०.  
काल-पुत्र-पदवी- -वी नाप ३, ४९<sup>०</sup>  
काल-भय- -यम् योचू ९१<sup>f</sup>.  
काल-भेद- -दम् ते ४, ४१; ६, ५४; त्रिब्रा २, १२०.  
काल-भो(क्त >)कत्री- -कत्री शां

१, ४.  
काल-योग-  
कालयोग-तस्(>)सांस् १, १२.  
काल-राधि, त्री- -०त्रि व ४३१: १५९; -त्रिम् दे ६.  
काल-रूप- -पस्य यो १, ७९; -पा: सी १४.  
काल-वञ्जन- -नम् वरा ५, ३५.  
काल-व(त >)ती- -ती मै ५, ५; मैत्रि ६, ५.  
काल-वर्धिन्- -र्षी शि ६, १५८.  
काल-वश- -शात् नाद २९; त्रिब्रा २, १८; सु १, १, ४३.  
काल-वाता(त-अ)भिहत- -त: भव १, २४.  
काल-विद्- -विद: गौ २, २४.  
काल-वेला-विधान- -विद्- -वित् यो २, ३२.  
काल-शब्द- -ब्देन ते १, ३४.  
काल-संकलन- -नात् गुषो ४२०: ८.  
काल-संज्ञ- -ज्ञम् मैत्रि ६, १६.  
काल-सत्ता- -त्ता अन्न ४, ६६.  
काल-सात्-  
कालसात्/कृ  
कालसात्-कृत- -ते पै ३, ३; यो ३, ३४; महा २, ६३; सु २, २, ७६.  
काल-हीन- -न: ते ५, ६०.  
कालहीन-क- -क: ते ४, ४२.  
काला(ल-आ)ख्य- -ख्य: मै ५, ५; मैत्रि ६, २; -ख्यम् व ४३०: १७.  
काला(ल-अ)ग्नि- -ग्नि: वृजा २, ७; ८; वृज २, ८; योशि ५, २९.  
कालाग्नि-रुद्र- -द्र: वृजा ३, ३४; काला ५; २१; रुजा १, १; ३, १३; मृ २; -द्रम् वृजा १-३, १; ४, १; १०; ६, १; ७, ७; ८;

a) 'सर्वे' इति तैआ १०, १०, ३। b) तु. आन. संदि., शंदि., नादी., विव. च; वैतु. आन. सुपा., शं. च °कार- इति। c) °लम् लयम् इति आन.। d) विशिष्ट: आन. पाभे.। e) °सूत्र° इति अज्या.। f) °लम् भ° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोष: (तु. अज्या.)।

काला ३; रुजा १, १; २, १; ३, १.  
 कालाभिरुद्र-मैत्रेयी- -यो  
 मु १, १, ३२.  
 कालाभिरुद्र-हनुमत्- -मते  
 लां २१३: ९; २१५: २०१.  
 कालाभिरुद्रो(द्र-उ)पनिषद्-  
 -षदः काला १.  
 कालाभि-हनुमत्- -मन् लां  
 २१५: १३.  
 काला(ल-अ)ङ्गुष्ठक- -कम् वउ ४,  
 ३९.  
 काला(ल-अ)तीत- -तः त्रिवि १, ११.  
 काला(ल-अ)त्मन्- -त्मनि योशि  
 ५, ४८; -स्मा सुबा ५; ते ४, ४२.  
 कालात्म-युक्त- -त्तानि धे १, ३;  
 नाप ९, २.  
 काला(ल-अ)दि- -दे: सांस् ३, ६०.  
 कालादि-संन्नास- -सात् षो २.  
 काला(ल-अ)नल-सदृश- -शम् मं  
 ४, १, ३.  
 काला(ल-अ)नल-संनिभ- -भानि  
 गी ११, २५.  
 काला(ल-अ)नल-सम-द्योतमा-  
 न- -नम् अता ७; मं १, २, १३.  
 काला(ल-अ)न्तरो(र-उ)पभोगा-  
 (ग-अ)र्थ- -र्थम् १ संन्या २, ८२  
 कालै(ल-ए)क-वादिन्- -दिनाम्  
 अन्न ३, २१.  
 कालो(ल-उ)पभुक्ति- -क्तिषु १आ

१९.  
 कालो(ल-उ)पासक- -का: सार  
 २७३: ११.  
 ३का(ल>)ली- -लि व ४३६: १७;  
 ४४९: ५; ६; ४६६: २; -ली  
 मुं १, २, ४४; कालि ४०१: ९;  
 गुषो ४२०: ८९; व ४२७: ७;  
 श्या १०; हंषो ३; -लीम् षो २;  
 ३; गु ५९.  
 २कालि-(क>)का- -का कृ २३;  
 कालि ४०१: ७; ४०३: ११;  
 श्या १०; -काम् कालि ४०२:  
 ६; -कायै व ४६३: १३; -०के  
 कालि ४०१: ३; श्या ४.  
 कालिका-तन्त्र- -न्त्रे कालि  
 ४०२: १७.  
 कालिका-मनु- -नो: कालि  
 ४०३: २१.  
 कालिकामनु-जापिन्- -पी  
 कालि ४०२: १०.  
 कालिका-रूप- -पम् कालि  
 ४०२: १३.  
 कालिका-विहित- -त्तानि तारा  
 ८४: ६.  
 काली-देहा(ह-अ)र्थ- -र्थे हंषो ३.  
 काली-रूप- -प: कामे २; चक्र ११;  
 षो २३; हंषो २१.  
 ४काल-  
 काल-क(ण्ट>)ण्टी- -ण्टी नृप्

४, ११.  
 ?कालकाश्यान्<sup>n</sup> कौ ३, १.  
 ?कालसंप्रीकाम्<sup>o</sup> अद्वै ७.  
 ?कालाशुता<sup>p</sup> कृपु १६.  
 १कालिका- १काल- द.  
 कालिङ्ग<sup>q</sup>- -ङ्गम् शि ६, ७८.  
 कालिन्दी- कलिन्द- द.  
 कालिमन्- १काल- द.  
 कावषेय- कवष- द.  
 काव्य- कवि- द.  
 ✓काश्, >चाकश्, काशते नृउ ७,  
 ५; ससा १, २८.  
 चाकशान- -ना: वा ६.  
 चाकश्यमान- -नम् आर्षे ८: ७.  
 १काश<sup>rs</sup>-  
 काश-कुश<sup>t</sup>- -शम् शि ६, २८३.  
 २काश<sup>u</sup>- नाउ. व्यु. औप. द.  
 काश-कृत्स्न<sup>v</sup>- -स्त्न: ब्रसु १, ४, २२.  
 का(शि>)शी<sup>w</sup>- -शी ते ६, २७;  
 -शीम् योशि १, १५७<sup>v</sup>; म २,  
 १५१<sup>v</sup>; -श्याम् वृजा ६, ३; राउ  
 ३, १; म २, १६; १८; २६; २८;  
 २९; ३०<sup>3</sup>; मु १, १६; १९; २०.  
 काशि-राज<sup>x</sup>- -ज: गी १, ५.  
 काशी-विदेह- -हेषु कौ ४, १.  
 काशी-संप्रदाय- -य: म ४९: ७.  
 काश्य<sup>y</sup>- -श्य: वृ ३, ८, २<sup>w</sup>; गी १,  
 १७; -श्यम् वृ २, १, १; कौ ४, १.  
 काश्मीर- कश्मीर- द.

a) =उपनिषद्विशेष-। मध्यमपदलोपः कस.। b) °रौद्र° इति मुपा.यनि. सु-शोधः। c) °षवृ इति अज्या.।  
 d) °समम् घो° इति निसा.। e) °पपत्तिषु इति अज्या.संदि.। f) नाप.। =उपसंहाराधिष्ठातृदेव- इति कृत्वा तत्परे २काल-  
 इत्यत्र समावेशसंभवेऽपि पृथक् निर्देशो भूयसे विवेकाय भवेत्। g) =उपसंहारात्मकोक्तगुणवदभिजिह्वाविशेष-।  
 h) उप. शास्त्रसामान्यपरं द.। i) गप्. (पृ ५२) अनु/जप् >अनुजापिन्-> -पी इत्यत्र यनि. अनु शोधः द.।  
 j) °लीरूपा° इति तान्त्रि.। k) व्यु? <३कल- रसवति वा ७कल- शब्दे वा। l) पूप.=विष्णु- इतीव उन्न.। m) °कर्णी  
 इति निसा.। n) पा.१ तु. अज्या. (°श्यां?), उन्न., आन. संदि. च; वैतु. आन. °खाज्यान् इति, J.C. K. च °काज्यान्  
 इति, P.W. M.W. च °कञ्ज्यान् इति, शांआ ५, १ °खज्यान् इति। o) मुपा? 'कालसंप्र(ती)का(श्लया)म्'  
 इत्येवं शोधः द.। p) पा.१ =काला(ल-अ)सुर्त-> -र्ताः?। q) व्यु? =कलिङ्गाख्य-फल- (नभा. =ककडी)।  
 r) 'काश्यते' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.; वैतु. आन. 'प्रकाशते' इति)। s) व्यु? =वृण-।  
 t) तु. पा. (२, ४, १२)। u) व्यु?। v) 'आकाशम्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या. शोधः)।  
 w) 'पाश्यः' इति निसा.।

काश्यप- कश्यप- द्र.

काषाय- कषाय- द्र.

काषायण- \*काषि- २ \*कष- द्र.

काष्ठ<sup>a</sup>- -ष्टम् सिशि ३८०:११; -ष्ठानि  
योशि ४, २४; भव १, १३; -ष्टे  
गरु २५<sup>b</sup>; जाद ४, ५७; -ष्टेन ते  
६, ७८; -ष्टेषु सी १५; वा २९;  
हं ५; -ष्टे: सि ४, ४९.

काष्ठ-दण्ड- -ण्ड: पहं ३; नाप ५, २.

काष्ठ-दारु-वृक्षकोटर-रत-

-तानाम् गरु २४<sup>c</sup>.

काष्ठ-पाषाण- -णयो: योशि ५, ३१.

काष्ठपाषाण-ज- -ज: योशि ५,  
३१.

काष्ठ-पाषाण-वासस्- -ससाम्  
अज २, ३८.

काष्ठ-भस्मन्- -स्मना सि ५, ६.

काष्ठ-भार- -रम् छाग २५: ८.

काष्ठ-वत् अना १५; नाद ५३.

काष्ठा(ष्ट-आ)दि-निर्मित- -तान्  
जाद ४, ५२.

काष्ठा<sup>ad</sup>- -ष्ठा क १, ३, ११; अता १८;  
योशि १, १४५; सार २५०:१<sup>e</sup>;  
२; गु ४२; -ष्ठा: मना १, २९<sup>f</sup>;  
वा १५; गु २०; -ष्ठाम् वृ ६,  
४, २८.

कास्<sup>ga</sup>- -स: योचू ११७.किंशुक<sup>ga</sup>-

किंशुक-बकुला(ल-आ)अ-वृक्ष-

-श्ला: सार २२८:१४.

किङ्किणी<sup>ga</sup>- -णी मैत्रि ६, २२; -णीम्  
राधा ३, ११.

किङ्किणी-जाल- -लै: सि ६, १५२.

किङ्किणी-वंश-वीणा-अमर-नि:-

स्वन- -न: नाद ३५.

किङ्किण्या(णी-आ)दि- -दि राधा  
२, ४.

✓कित्(ज्ञाने)

१केतु- -तुना सर २, ५९<sup>b</sup>; -तुम् व  
४३७: २०९<sup>i</sup>.

चिकित<sup>ga</sup>-चैकित्य<sup>ga</sup>-

चैकितायन<sup>ga</sup>- -न: छां १,  
८, १; -नम् छां १, ८, ३; ६.

चिकित्वा त्रि ११<sup>k</sup>.चेकितान<sup>ga</sup>- -न: गी १, ५.चैकितानेय<sup>ga</sup>- -य: वृ १, ३, २४.✓कित्(\*द्योतने)<sup>ga</sup>>चिकित्स<sup>ga</sup>,

चिकित्स्यते अज २, १.

चिकित्सन- -ने महा ५, ११६.

चिकित्सा- -त्सा नाप ४, ६.

चिकित्सा(सा-अ)र्थ- -र्थम् महा  
४, ८८.

चिकित्सित, ता- -ता: अज २, ७;  
-तानि त्रिता १, ११.

चिकित्स्य- -स्यम् महा ३, २१; योशि  
६, ५९.

कितव<sup>ga</sup>-

कैतव- -वम् ते ६, २५.

किनाट<sup>ga</sup>- -टम् वृ ३, ९, २८, ३.किम्<sup>ga</sup>-

२क, का- क: ई ७<sup>g</sup>; के १, १; ३,  
४; ८; क १, १, २२; २८; २, १८;  
२१; २५; २, ३, ९९<sup>f</sup>; प्र २, १; तै

२, ६-७, १<sup>g</sup>; ऐ ३, ११; ५, १;  
छां ४, ३, ६; ९, २; १४, २<sup>g</sup>; वृ १,  
५, ३; ३, ७, १; ८, ८; खे ३, ९९<sup>g</sup>;  
४, २०९<sup>g</sup>; २१; ६, ९<sup>g</sup>; कौ १, २<sup>g</sup>;  
२कम् मां ५<sup>g</sup>; तै ३, १०, १; छां  
१, ७, ९; ५, १२-१७, १; वृ २, ४,  
१४<sup>g</sup>; ४, ३, १९<sup>g</sup>; ५, १५<sup>g</sup>; मै ५,  
७; कौ ३, ३; वृ ४, ६<sup>g</sup>; वृ ३  
१, ८<sup>g</sup>; सुबा ४<sup>g</sup>; नाप ३, ४२;  
कथा तै ३, १०, १; अज १, २;  
सार २५०:१७<sup>g</sup>; बि १; व ४३७:  
१८-१९९<sup>g</sup>; कस्मात् वृ १, ३,  
१९; ५, १; मैत्रि ७, ११; गर्भ १<sup>g</sup>;  
अशि ४, २; वृ २, ८; शां ३,  
१; १अव १२; त्रिता ४, ४; निरु  
२, ४; कस्मिन् प्र ४, १; ६, ३<sup>g</sup>;  
मुं १, १, ३; छां ७, २४, १; वृ ३,  
६, १<sup>g</sup>; ८, ३; ६; ७; जा २; सुबा  
९; रुह २; रुजा १, १; सर ३,  
२९; सार २३८: ७; कस्मै क  
१, १, ४९<sup>g</sup>; छां ३, ११, ६; वृ २,  
२, १६९<sup>g</sup>; पा ५, १०; २शिसं  
३३३<sup>g</sup>; कस्य ई १; प्र ४, १; वृ  
२, १, १९; ४, ४, १२; ब्र १; मै  
२, ३; मैत्रि २, ३; वृजा ७, ४;  
नाप ३, ८६; श ३२; योचू ७०<sup>g</sup>;  
कस्यै ऐ २, ५; का छां १, ८, ४<sup>g</sup>;  
५<sup>g</sup>; वृ ३, २, १०; ९, १०-१७;  
४, १, २-७; गौ १, ९; कौ ३,  
७; जा २<sup>g</sup>; गर्भ १<sup>g</sup>; पहं १;  
मना २, २८९<sup>g</sup>; वृ ९, १९<sup>g</sup>;  
ससा १, १<sup>g</sup>; का: तै २, २, १;

a) व्यु.। b) °ष्ठात् इति मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. निसा.)। c) °रस्थानाम् इति निसा.। d) व्यु. वैपश्  
यद्र.। e) तैआ १०, १, २। f) व्यु.। किम्- + शुक- इति अभा.। g) व्यु.। =नुद्रघण्टिका- वा =पादभूषण- वा।  
h) अ १, ३, १२। i) अ १, ६, ३। j) तु. पा ४, १, १०५; १०१; वैतु. शं. रामा. च <चिकितायन-।  
k) 'विदित्वा' इति तान्नि.। l) वैतु. MW. <✓चित् इति। m) वैतु. शं. <चैकितान- <चिकितान- इति, PW.  
<चिकितान- इति च। n) एतदर्थे पाधा.उसं. (पावा ३, १, ५)। o) तु. पा ३, १, ५; वैतु. PW. प्रश्न. <✓चित् इति।  
p) व्यु.। =वृत्तन्तुरूपं स्नाववद् बन्धनसाधनम्। q) तु. टि. इदम्-। r) तैआ १०, १, ३। s) तैआ १०, १०, ३।  
t) अ ४, ३१, १। u) तैआ ३, ११, ८, १। v) अ १०, १२१, २। w) अ १०, १२१, ३। x) तैआ १०, २१, १।  
y) 'क' इति निसा.।



गमे १; अज ४, ६; प्रा ३, १;  
वरा ३, २९; सु १, १, १०;  
गोच ६७: ७; सार २२८: २१;  
गार ४०५: ११; पित्र १, १०;  
कानि प्र ४, १; भ १, १; नृपू  
१, ५; शां १, ४; प्रा ३, १; नृष  
८४: ६; शि ७, ८९; गार ४०६:  
२; पित्र १, १०; काम् छां २,  
१३, २; वृ ४, १, ५; कौ ३, ७;  
वृजा ६, १२; सार २२१: १;  
गी ६, २७; के ई ३; तै १, ११,  
३; वृ १, ५, १७; मै १, ५;  
काला ४; नि ६; मं १, ४, १; द  
१; महा ५, १३७; योशि १, १२;  
केन के १, १; प्र ३, १; वृ २,  
४, १४; ३, १, ३-६; ५, १; ४, ५,  
१५; श्वे १, १; आरु १; गौ १,  
१८; कौ १, ७; नृपू १, ११;  
नृउ ९, १७; सुबा १५; केषाम्  
स्व ६१: २१; सार २४०: १९;  
केषु-केषु गी १०, १७; कै: नृपू ४,  
१४; त्रिता ४, १४; स्व ६१: २१;  
गी १, २२; कौ प्रा ३, १; अज  
२, २६; पित्र २, १३.

कतम, मा- -म: छां ८, ७, ४; वृ ३, ४,  
१; ३; ५, १; ९, ६; ८; ९; ४, ३, ७;  
मना २, १५९; ७९९; मै २,  
१; ३, १; मैत्रि २, १; ३, २; ४, ५;  
६, ३१; मैत्रे १, ४, १; -म: -म:  
छां १, १, ४; -मत् राउ ३, १;  
आर्षे ७: १५; ८: ६; २२; ९:  
१०; -मत्-मत् छां १, १, ४; -मम्  
प्र ५, १; जा २; -मा छां १, ११,  
४; ६; ८; वृ ३, १, ९; मना २,  
२८९; -मा-मा छां १, १, ४;  
-मा: वृ ३, १, ७; ८; १०; -मे वृ  
३, २, १; ९, १-५; ७; ८; ६, २, ३;

-मौ वृ ३, ९, ८.

कतर, रा- -र: प्र ४, १; ऐ ५, १;  
-रत् गौ ४, १८; सुबा ११; १५;  
गी २, ६; -रे प्र २, १; -रेण ऐ  
३, ११; छां ५, १०, ८.

१कति- -ति प्र २, १; वृ ३, १, ८;  
१०; २, १; ९, १; शां १, ४; अज  
१; भ १, १; पं १; गार ४०६:  
१; -तिभि: वृ ३, १, ७; ९.

कति-पद- -द: २ प्र ३४: ८.

कति-पा(द>)दा- -दा गार  
४०६: १.

कति-भेद- -दा: नाप ५, १.

कतिभेद-मुख- -खानि रुजा  
१, १.

कति-मात्र- -त्र: २ प्र ३४: ७;  
३५: १४.

कति-वर्ण- -र्ण: २ प्र ३४: ८.

कति-विध- -धा: सु १, १, १०.

कति-संख्य- -खयानि पाशु १, २३

कति-संख्या(क>)का- -का:  
शां १, ४.

कत्य(ति-अ)क्षर, रा- -र: २ प्र  
३४: ८; -रा गार ४०६: १.

१२कति-

कति-प्रमाण- -णम् काला ४.

कथम् क २, २, १४; ३, १२; प्र ३,  
१; ६, १; ऐ ३, ११; छां ४, १, ३;  
वृ १, ४, ४; ३, १, २; ५, १४, ८;  
गौ २, ३४; कौ १, १; मै २, ४;  
मैत्रि २, ४; मैत्रे २, १३.

रकथा पाशु २, २.

कदा तै २, ४, १; छां ३, ११, २; मना  
२, ७८९; मैत्रि ६, १८; नृउ ९,  
१०; नाद ५, २; ते ४, ८; ब्रवि ४७;  
नाप ३, ६९; श १७९.

कहिं नाद २४; नाप ५, १९; योशि ४, १

किम्- किम् ई १; के ३, २; ३; ५; ७;

९; ११; १२; क १, १, ५; १२; ३,  
११; तै २, ६, १; ९, १; ऐ १, १;  
३, १३; ५, ३; छां १, १, ८; ३,  
१२, १; १५, ४; वृ १, २, १; ५; ४,  
९; ३, ८, ८; श्वे १, १; १२; ३,  
९९; गौ १, १२; कौ १, ६.

कि-रूप- -रूप सार २५७: १२.

कि-लक्ष(ण>)णा- -णा अज १.

कि-शब्द- -ब्द: स्व ६२: १.

कि-कर- -रा: मैत्रे २, २४.

कि-गोत्र, त्रा- -त्र: छां ४, ४, १;  
४; -त्रा गार ४०६: १.

कि-चित्-

किचिज्-ज्ञ- -ज्ञ: त्रिवि ५, ४.

किचित्-स्वरूप- -प: ते  
३, ४४.

किचिद्-अस्तित्व-हीन-

-न: ते ४, ७.

किचिद्-उन्मीलिता(त-अ)-

क्ष- -क्ष: अता २.

किचिन्-मात्र- -त्रम् सार  
२३१: १२.

किचिल्-लोभ-वितान-

मात्र-वि-फल- -लै: रार २, ३८

कि-ज्योतिस्- -ति: नृउ ३, २-६

कि-देवत- -त: वृ ३, ९, २०-२४.

कि-नर- -रा: गोउ २२; व ४;  
-राणाम् ह ९.

कि-नर-गन्धर्व-विद्याधर-

महोरग- -गा: महा ५, १३८.

कि-भय- -य: मैत्रि ६, २.

कि-भागधेय- -या: प्रा २, १.

किम्-अर्थ- -र्थम् वृ ४, १, १.

किम्-आचार- -र: गी १४, २१.

किम्-आत्मक- -कानि मैत्रि ६,  
३१.

a) तैआ १०, १४, १। b) तैआ १०, ६३, १। c) स्वमोद् अदहादेश: (पा ७, १, २५)। d) तैआ १०,  
२१, १। e) इति-वत् अव्य. वा सना. इति कृत्वा न. प्र १ वा द.। f) तैआ १०, ६२, १। g) तैआ ८, ४, १।  
h) तैआ १०, १०, ३। i) नाम् इति निसा. संटि.। विशिष्ट: अख्या. पाभे.।

किम्-इच्छा-च्छया १ अव ११.  
 किञ्च-यत् ते ५, ९; नाप ४, २६;  
 महा २, १५१<sup>३</sup>; पाशु १, २३;  
 काला ४; -यत्सु वउ ३, ३७.  
 कियत्-काल-लम् सार २५७:  
 १२; २८९: १०.  
 कियत्-प्रमाण-णम् सार २३८:  
 १५; २१; २५०: २१; -णा:  
 पाशु १, २; सार २१९: ७.  
 कियद्-भाग्यो(य-उ)दय-  
 येन सार २८९: ७.  
 कीदृश-इक् सार २८०: १३.  
 कीदृश-विध, धा- -ध: सार  
 २३८: १५; -धम् सार २८९:  
 १५; २९१: ५; ११; -धा सार  
 २८९: १४; -धा: सार २१९:  
 ६; २३८: १६; २१; २८९: १४;  
 -धानि सार २५२: २२<sup>३</sup>; -धौ  
 सार २८९: १६.  
 कीदृश-शा: त्रिवि ३, १; ८, ९; पप  
 ४१९: २०; अन्न २, १; नापू ३, १;  
 -शाम् त्रिवि ५, ३; योशि १, १५;  
 २४; पप ४१७: ३; नापू १, १;  
 -शा: नाप ५, १; -शेन सार २९१:  
 १३; १४; -शौ त्रिवि ४, ११.  
 कीदृशी-शी शां १, ४; पाशु  
 २, २; गोड १६.  
 कुतस(>) क १, २, १८; २, २, १५;  
 प्र १, ३; ३, १; मुं २, २, १०; तै  
 २, ९, १; छां ५, ११, ५; ६, २, २;  
 वृ २, १, १६; ५, १४, ६; श्वे १,  
 १; ६, १४; कौ ४, १८; गौ ४,  
 ३३; वृजा २, १४.  
 कुतस्-तर-  
 कुतस्तराम् सांस् १, ८०.  
 कुत्र नाद ४४; अता ६; नाप ३, ६;  
 त्रिवा २, १०; ब्रवि ६३: योशि

१, ४३; अध्या ४९; पाशु २,  
 ३४; रुह ५०; वरा १, १७; कुत्र-  
 कुत्र जावा १५; ऊ ६४: ५.  
 कुह>हा बा ५<sup>३</sup>.  
 क प्र ६, १; छां २, २४, २; ६, २, ३;  
 ४; ८, ४; ६; वृ १, २, ३; ३, ८; २,  
 १, १६; ३, २, १३; ३, १<sup>३</sup>; २; ४,  
 २, १; श्वे १, १; गौ १, २५; जा  
 १; कौ ४, १८<sup>३</sup>; वृज ९, १९;  
 वृजा ३, १; नाद २६.  
 किरण<sup>b</sup>- -णा: गु ११; -णै: वृजा ३,  
 १०; सार २७२: ११.  
 किरात<sup>b</sup>-त: ते ६, २५; -तेन महा  
 ३, ४५; पा २, ११; व ४३२:  
 २०.  
 किरात-रूप-धर- -र: व ४२६: १.  
 किरीट<sup>३</sup>- -टम् गोड ५९.  
 किरीट-क-कम् ते ६, ७.  
 किरीट-कुण्डल-धर- -रम् नापू ४,  
 २२.  
 किरीट-मुकुटो(ट-उ)ज्ज्वल- -लम्  
 गरु ५.  
 किरीटा(ट-आ)भरण-यु(त>)ता-  
 -ता सी ३७.  
 किरीटिन्- -टिनम् १ योत ८९; त्रिवा  
 २, १४२; गौ ११, १७; ४६; -टी  
 गौ ११, ३५.  
 किल<sup>d</sup> क १, १, २२; छां १, ८, ६; ८;  
 ४, १४, २; ३; ५, ३, ४; ६, ११, ३;  
 १३, २<sup>३</sup>; वृ ६, २, ३; कौ ३, १;  
 ते ५, १६; मं २, २, ३; अव्य १;  
 अन्न ५, ३६; वरा ३, २८; मु २,  
 २, ४५.  
 किलिब<sup>b</sup>-वम् मना २, ७९९<sup>०</sup>; अना  
 ८; ९; ते १, १२; राउ ५, १५;  
 योशि १, ७८; अद्वै १२; गौ ४,  
 २१; १८, ४७.

१ किशोर<sup>b</sup>-  
 किशोर-नव-नूल-नवीयस्-सदा-  
 विहारा(र-आ)नन्द-कला-  
 निधि- -धे: सार २४९: १८.

२ किशोर<sup>३</sup>-  
 कैशोरि<sup>३</sup>-  
 कैशोर्य<sup>३</sup>- -र्य:, -र्यात् वृ २, ६,  
 ३; ४, ६, ३.

३ किशोर(र>)री<sup>३</sup>- -री सुमु १२.  
 किशोरी-वल्ल(भ>)भा<sup>३</sup>- -भा  
 राधा १, २५.

१ कीकस<sup>३</sup>- -सानि पित्र १, ७.

२ कीकस<sup>३</sup>-  
 कैक(स>)सी<sup>३</sup>-  
 कैकसेय<sup>३</sup>- -०य रार १, ९<sup>३</sup>.

✓कीट  
 कीट<sup>३</sup>- -ट: छां ६, ९, ३; १०, २; कौ  
 १, २; -टा: वृ ६, २, १६; -टानाम्  
 १ संन्या २, ३०; -टै: १ संन्या २,  
 १०.

कीट-केशा(श-आ)दि-  
 दूषित- -तम् शि ५, ५.  
 कीट-पक्ष<sup>३</sup>- -क्षम् शि ६, ९०;  
 १०१.

कीट-पतङ्ग- -ङ्गेभ्य: वृ ६, १,  
 १४.

कीट-वत् नाप ४, १७; ५, ३; २०.  
 कीट-वारि-संप्रदाय<sup>३</sup>- -य: म  
 ४८: ७.

कीर्तन- , कीर्तयत्- , १, २ कीर्ति- ,  
 कीर्तित- ✓कृत द.

✓कील्>कीलि, कीलय पी ४२२: २;  
 व ४३६: १४; कीलयेत शि ६,  
 १२९; १३०; १३४; १५०.

कील- -ल: रापू ४, ४; -लम् रार  
 २, ९६.

कील-क-कम् हं १०; सु १, १८;

a) 'किं यत्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अख्या.)। b) व्यु. वैप १ यद्र.। c) व्यु. ?।  
 d) अव्य.। व्यु. वैप १ यद्र.। e) तैआ १०, ६३, १। f) व्यु. ?। g) पय: प्र. (पा ४, १, १५१)। h) =देवी-।  
 i) के<sup>०</sup> इति अख्या.। j) तु. सधु. आनन्द<sup>०</sup>, भूरि<sup>०</sup>, भोग<sup>०</sup>।

२, ५<sup>१</sup>; रार २, ५२; ६१; सू  
३; ह ६; दत्ता १, ४-६; सर १,  
४; २, १-१०; सूता १, ३०; ३१;  
तुल ७० : ३; नापू ४, १७; लां  
२१३ : ३; यु ८२; कालि ४०३ :  
१२; व ४२६ : ३; ४५९ : १८;  
तारा ८३ : १५.

कीलक-नारायण- -णम्  
त्रिवि ५, १२.

कीलि(त>)ता- -ता काम ७.

कील<sup>१</sup>- -लवः १योत ५७.

कुं<sup>b</sup> व ४३५ : १७; कुं-कुं<sup>c</sup> सार २६० :  
२२.

१कु<sup>d</sup>- कुम् पा ६, ५<sup>१</sup>.

कु-तप<sup>e</sup>- -पः इ १५ : १९; २०;  
२३५<sup>f</sup>; -वे इ १६ : १.

२कु<sup>g</sup>-

१का<sup>h</sup>-

को(का-उ)ण- -णम् भव ४, १९.

कु-चर्या- -र्याम् शि ७, ११७.

१कु-चेल<sup>i</sup>- -लानि नाप ३, ५४.

२कु-चेल<sup>j</sup>- -लः सुबा १३.

कु-तर्क-

कुतर्का(र्क-अ)पसद- -दस्य सांसू  
६, ३४.

कु-दष्टि- -ष्टयः जाद ६, ४९.

कु-देहिन्- -हिनः योशि १, ४८.

कु-द्वार- -रेण शि ७, ६०.

कु-नख-

कुनखिन्- -खी १संन्या २, ३;  
इ १७ : ५; मृ ९.

कु-निवास- -सम् शि ७, ११७.

कु-प्रावरण-भोजन<sup>k</sup>- -नम् शि ७,  
११७.

कु-मति- -तयः पित्र १, १३.

कु-सू(षक>)षिका- -कामहा ३, २२  
कुक्कुट<sup>l</sup>- -टः इ १६ : १०; -टम् वरा  
५, १५; शि ६, २०८.

कुक्कुटा(ट-अ)ण्ड- -ण्डम् योशि  
५, २१.

कुक्कुटाण्ड-समा(म-अ)कार-  
-रम् जाद ४, ४<sup>१</sup>.

कुक्कुटाण्डा(ण्ड-अ)कार- -रम्  
त्रिवि ६, ३.

१कुक्कुटा(ट-अ)सन<sup>m</sup>-

कुक्कुटासन-बन्ध-स्थ- -स्थः  
त्रिवा २, ४२.

२कुक्कुटा(ट-अ)सन<sup>n</sup>- -नः त्रिवा  
२, ४१.

कुक्षि<sup>o</sup>- -क्षयः गार ४०६ : १; ४;  
-क्षिः गार ४०६ : ६<sup>१</sup>-८<sup>२</sup>; -क्षिम्  
व ४५८ : ६; -क्षौ शां १, ७, ५२;  
वरा ५, ८; इ १५ : ३.

कुक्षि(क>)का- -काः गार ४०६ : ३

कुक्षि-पूरक- -काः पत्र ३, ९.

कुक्षि-बन्ध- -बन्धे रुजा १, १९.

कुक्षि-युगल- -लम् ध्या ९३; योचू  
६६.

कुक्षि-रोग-विनाश- -शः त्रिवा २,  
११०<sup>p</sup>.

कुक्षि-स्थान- -नानि त्रिवि ७, ४२.

कुक्षि-स्था(स्थ-अ)नेक-लोक-  
कलन- -नः आबो ५.

कुङ्कुम<sup>q</sup>- -मम् गोच ६९ : ४.

कुङ्कुम-मिलित- -तैः रा ४२५ : २.

कुङ्कुम-लिस-कुच-भा(र>)रा-  
-राम् रा ४२४ : २०.

कुङ्कुमा(म-अ)क्षत<sup>r</sup>- -तैः रा  
४२५ : १६.

कुङ्कुमा(म-अ)दि-सहित- -तम्

गोच ६९ : ४.

कुङ्कुमा(म-अ)द्य- -द्यैः शि ६, १४८

कुङ्कुमा(म-अ)रण- -णम् गर ५.

कुङ्कुमारुण-सर्वा(व-अ)ङ्ग-  
-ङ्गम् गर ५.

कुङ्कुमा(म-अ)धै- -धैन शि ४, ३७.

कुच<sup>s</sup>-

कुच-कुम्भ- -म्भौ सार २६५ : ९.

कुच-स्थान- -ने जाद ४, ४९.

कुचा(च-अ)वेष्टित- -ते व ४५६ :  
२०.

१<sup>p</sup>कुचर- -रः वृपूर, १३; नापू ४, १०.

✓कुञ्च

कुञ्चन- -नेन शां १, ७, १२; योशि  
१, १११; यो १, ५२.

कु(बक>)ञ्जिका- -कया ध्या ६७;  
योचू ३९.

कुञ्जित- -तम् गर ५.

कुञ्ज<sup>u</sup>- -जम् सार २७६ : १५; -जाः  
सार २२१ : १९; २६३ : १३;

-जे सार २७४ : २२; २७९ : ९;  
२८६ : १५.

कुञ्ज-केलि-रसिक- -काम्याम् सार  
२४७ : १५.

कुञ्ज-प्रतिकुञ्ज-सुख-दायि(न्>)-

नी- -नीषु सार २६३ : १२.

कुञ्ज-व(त्>)ती<sup>v</sup>- -ती सार २६८ :  
७.

कुञ्ज-वि-दुम-लता-प्रथित-

-तानि सार २६२ : १६.

कुञ्ज-विहारिन्- -रिणे सार २६० : २२

कुञ्ज-श्रेणि- -णिषु सार २६३ : १२

१कुञ्जा(ञ-अ)न्तर<sup>w</sup>- -रम् सार  
२६९ : १७; -रे सार २३४ : ११;  
१३; २८२ : १३.

a) =कील-पर्याय- (वैतु. उत्र. =वायुबन्ध- इति) । b) कुली- इति उत्तरस्य पदस्य परामर्शकः बीज-  
विशेषः । c) कुञ्ज<sup>u</sup> इति उत्तरस्य पदस्य परामर्शकः साम्यासः बीजविशेषः (तु. नापू.) । d) व्यु. ? =पृथिवी- (तु.  
पाटी.) । e) =मध्यन्दिन- । f) व्यु. ? =ईषत्<sup>१</sup>, =कुत्सित-पर्याय- । g) तु. पा ६, ३, १०५ । h) कस. । i) बस. । j) कस.  
उप. द्रस. । k) व्यु. वैपश् यद्र. । l) °ण्डवदा° इति अख्या. । m) मध्यमपदलोपः कस. । n) °गनाशः इति निसा. ।  
o) व्यु. ? । p) ऋ १, १०४, २ । व्यु. व्या. च वैपश् यद्र. । q) =कुञ्जाभ्यन्तर- ।



कुञ्जान्तर-विशाखा(खा-आ)-  
 ष(दि-अ)ने(न-ए)क-सखी-  
 विहारा(र-आ)त्मन्- -स्मने  
 सार २७७ : १६.  
 २कुञ्जा(ज-अ)न्तर<sup>a</sup>-  
 कुञ्जान्तर-श्रेणि- -णिषु सार  
 २२५ : १३.  
 ✓कुद(कौटिल्ये)  
 कुटिल- -लाः सूता १, ३९.  
 कुटिल-जटित-ज्योत्स्ना-  
 -स्नाभिः सार २६५ : १.  
 कुटिल-दं(ष्ट्र>)ष्टा- -ष्टा  
 कालि ४०१ : ७; श्या १०.  
 कुटिला(ला-आ)कार(>)रा- -रा  
 शां १, ७, ३७.  
 कु(टि>)टी<sup>b</sup>-  
 कुटी-चक<sup>c</sup>- -कः नाप ५, १<sup>३</sup>; तुअ  
 ६; १संन्या २, १३; पप ४१९:  
 १०; शा ११<sup>३</sup>; -कस्य नाप ५,  
 १; ७<sup>५</sup>; -काः मि २.  
 कुटीचक-बहूदक- -कयोः नाप  
 ७<sup>५</sup>.  
 कुटीचक-बहूदक-हंस- -सानाम्  
 नाप ५, १; ७.  
 कुटीचक-बहूदक-हंस-परमहंस-  
 -साः मि १.  
 कुटीचक-बहूदक-हंस-परमहंस-  
 तुरीयातीता(त-अ)वधूत- -ताः  
 १संन्या २, १३.  
 कुटीचक-वत् नाप ५, १; १संन्या  
 २, १३.  
 कुटीचका(क-आ)दि- -दीनाम्  
 नाप ५, १.  
 कुटी-चर- -रः आरु २; राः आश्रु<sup>d</sup>.  
 कुटुम्ब<sup>b</sup>- -म्बम् आरु २; नाप ३, ३२;  
 -म्बे छां ८, १५, १.  
 कुटुम्ब-क- -कम् महा ६, ७१.

कुटुम्ब-संसक्त- -क्तः शि ७, १०४.  
 कुटुम्बिन्- -म्बिनः या २, १७;  
 -म्बी शा १८.  
 कुठार<sup>b</sup>- -रेण महा ६, ३३.  
 कुठार-वत् सांसू २, ३९.  
 कुठारा(र-आ)द्य- -द्यम् शि ६, २४१.  
 कुड्य<sup>b</sup>- -ड्यः सार २५३ : ३; -ड्यम्  
 शि ४, ९; -ड्ये शि ६, १२१.  
 कुणप<sup>c</sup>- -पम् भ २, १५; पहं २; वरा  
 २, ३७.  
 कुणप-वत्  
 कुणपवच्-छरीर-वृत्तिक<sup>d</sup>- -कः  
 नाप ५, १; १संन्या २, १३.  
 कुणपा(प-आ)कार- -रम् तुअ १३.  
 १कुण्ड<sup>१b</sup>-  
 कुण्ड-गोल- -लौ इ १७ : ७.  
 कुण्डा(ण्ड-आ)शिन्- -शीइ १७ : १०  
 २कुण्ड<sup>c</sup>-  
 कुण्डी<sup>c</sup>-  
 कुण्डि(क>)का<sup>१</sup>- -काम् कुं  
 ९; करु १; कथु ३, १.  
 १कुण्डल<sup>३d</sup>- -लम् गोउ ५९; -ले  
 रुजा १, १८; गु १३.  
 कुण्डल-युगल- -लम् सार २६५ : २.  
 कण्डला(ल-आ)कृति- -तिः योचू  
 ३६; ४४; यो १, ६५.  
 कुण्डला(ल-आ)भिधा- -धा योशि  
 ४, १४.  
 कुण्डलिन्- -ली रापू ४, ७.  
 कुण्डली/कृ  
 कुण्डली-कृ(त>)ता- -ता त्रिब्रा  
 २, ६३; शां १, ४.  
 कुण्डली/भू  
 कुण्डली-भू(त>)ता- -ताम्  
 योशि १, ८२.  
 २कुण्ड(ल>)ला<sup>१h</sup>- -ला सुमु १२.  
 ३कुण्डल-

कुण्डली<sup>१i</sup>- -ली योशि ६, ५५;  
 यो १, ७; १०; ७४; जाद ४,  
 ११; वरा ५, २२; -लीम् त्रवि  
 ७४; १योत ८२; योशि १, ८२;  
 ८३; ८५; ११२; ११३; यो १,  
 ६५; जाद ६, ४२; -ल्या वरा ५,  
 ३०; -ल्याः योशि १, ९३; ६, १५;  
 जाद ४, ११; -ल्याम् जाद ७, ७.  
 कुण्डली-गा(त>)ता- -ताम्  
 यो १, १३<sup>१</sup>.  
 कुण्डली-देश-  
 कुण्डलीदेश-तस्(>):  
 जाद ७, ७.  
 कुण्डली-बोधक- -कम्  
 योशि १, ९९; यो १, ३८.  
 कुण्डली-शक्ति- -क्तिः योचू  
 ३६; ४४.  
 कुण्डली-स्थान- -नम् त्रिब्रा  
 २, ६२; जाद ४, ४६; ४७.  
 कुण्डलि(न>)नी<sup>१e</sup>- -नी मंश १, २६;  
 अता ५; शां १, ४; ७, ३७<sup>३</sup>;  
 योशि १, १६९; ५, ६; भा ७; यो  
 १, ८; १४; ४५; ८२; वरा ५, ५१;  
 व ४२७ : ७; -नीम् त्रिता २,  
 ९; सौ ३, १; कालि ४०३ : ९;  
 -न्या ध्या ६८; योचू ३५<sup>k</sup>; -न्याः  
 शां १, ४; ७, ३७; -न्याम् योचू  
 ३९<sup>१</sup>; -न्यै योशि ६, ३.  
 कुण्डलिनी-बन्ध- -न्धः निर्वा  
 २९७ : ९.  
 कुण्डलिनी-बोध- -धः शां १,  
 ७, १४.  
 कुण्डलिनी-स्थान- -नम् शां १, ४  
 ४कुण्ड(ल>)ली<sup>m</sup>- -ली सु १, १,  
 ३७; रुह १.  
 कुण्डिन<sup>b</sup>-  
 कौण्डिन्य<sup>१</sup>- -न्यः वृ २, ६, १; ४,

a) उप = अन्य- । b) व्यु. ? । c) व्यु. वैपश् यद. । d) बस. = कुणपवच् छरीर वृत्तिमत्- । e) व्यु. ? = पात्र-  
 पर्याय- । f) तु. पा ४, १, ४२ । g) व्यु. ? = आभरणविशेष- । h) व्यु. ? = काली देवी- । i) व्यु. ? = नाडी- ।  
 j) °ता इति अच्चा. । k) °न्याम् इति अच्चा. । l) °न्या इति अच्चा. । m) = उपनिषद्विशेष- ।

६, १; -न्यात् वृ २, ६, १; ४, ६,  
१; अञ्च ३, २.

कुतप- १कु- द्र.

कुतुक<sup>a</sup>-

कौतुक<sup>b</sup>-कात् शि ६, १८४; १८५.

कौतुका(क-आ)वि(ष्ट>)ष्टा-

-ष्टा: सार २२८: १८.

कुतूहल<sup>a</sup>-लम् अञ्च ४, १०.

कौतूहल<sup>b</sup>-लम् सार २२०:  
२२.

कौतूहल-समन्वित-तम् शि  
६, १५३.

कुत्र किम्- द्र.

✓कुत्स

कुत्सन-नम् १संन्या २, ८६.

कुत्सित-तम् जाद २, १०.

कुत्सिता(त-अ)नन्त-जन्मा-  
(नम-अ)भ्यस्ता(स्त-अ)स्यन्तो-  
त्कृष्ट-विधिविध-विचित्रा(त्र-अ)न-  
न्त-दुष्कर्म-वासना-जाल-  
विशेष-वै: त्रिवि ५, ४.

कुत्स<sup>a</sup>-

कौत्स-त्स; -त्सात् वृ ६, ५, ४.

कौत्साय(न>)नी-नी मै ४, ४,  
१२१<sup>०</sup>; मैत्रि ५, १.

कुन्ति<sup>a</sup>-

कुन्ती<sup>a</sup>-

कौन्तेय<sup>a</sup>-०य गी २,  
१४; ३७; ६०; ३, ९; ३९; ५, २२;  
६, ३५; ७, ८; ८, ६; १६; ९, ७;  
१०; २३; २७; ३१; १३, १; ३१;  
१४, ४; ७; १६, २०; २२; १८,  
४८; ५०; ६०; -य: गी १, २७.

कुन्ती-पुत्र-त्र: गी १, १६.

कुन्ति-भोज<sup>a</sup>-ज: गी १, ५.

कुन्द<sup>a</sup>-

कुन्द-रद(न>)ना-नाम् रा४२४:  
२१.

कुन्दे(न्द-इ)न्दु-धवला(ल-आ)-  
नन-नम् गरु ५.

✓कुप, कुप्यते सुवा ९; कुप्येत सुवा  
१३<sup>१</sup>.

कुपित-त: शि ७, १०.

कोप-प: वृजा ५, ११; या २,  
१९; २०<sup>२</sup>; -पस्य<sup>०</sup>, पाय या २,  
२१; -पे या २, २०.

\*कोप-वत्-

कोपिष्ठ-ष्ठ: सूता २, १६१<sup>१</sup>

कोपा(प-अ)जगर-चर्वित-

-तम् महा ५, १३४.

कुप्रावरणभोजन- २कु- द्र.

१कुबेर<sup>a</sup>-रम् व ४५९: ६.

२कुबेर<sup>b</sup>-०र व ४४१: १४; -र:  
व ४४१: १३; १४; ४४६: १९;  
-राय गोउ ६६.

कौबेर-रम् गार ४०७: ९.

कौबेरी<sup>a</sup>-०रि व ४३१:  
१६; ४५१: १३; -री त्रिता १,  
६४; -रीम् त्रिता १, ६१; -र्याम्  
शि ६, ७५; व ४४१: १३; ४४६:  
१९; ४५१: १३.

कुबेर-दण्ड-०ण्ड व ४३५: ११.

कुबेर-दिश-दिशम् व ४२८: २०.

कुबेर-द्वार-रम् व ४२८: १.

कुबेर-पु(र>)री<sup>a</sup>-री राधा ४, ५.

कुबेर-मण्डल-लम् व ४४१: १४;  
१५.

कुब्ज<sup>b</sup>-ब्जा: गर्भ ३.

कुब्ज-वट-टे सार २६०: १०.

कुब्ज-वत् नाप ४, २२.

१कुमार<sup>a</sup>-०र छां ५, ३, १; वृ ६,

२, १; -र: वृ २, १, १९; ६,

२, ३; खे ४, ३९<sup>k</sup>; व्र १; ९<sup>१</sup>ते

२-४, १; ए ३; ४; ११; पत्र १<sup>१</sup>;

गु ५२; -रम् क १, १, २; प्र ६,

१; ऐ ४, ३<sup>१</sup>; वृ १, ५, २; सुवा

९<sup>१</sup>९<sup>११</sup>; १५९<sup>११</sup>; सिशि ३८०:

१९<sup>१</sup>; सि१, १९<sup>१</sup>; -रस्य छां ५, ३,

६; वृ ६, २, ५; या २, १६; -रा:

सार २४७: १; -राय नी ३, ८.

कुमारी-री खे ४, ३९<sup>k</sup>; ए११;

अरु २८९<sup>n</sup>.

कुमारि(क>)का-का गु  
५२.

१कुमारीपदत्रिहारबागोप्र-

मूर्ति<sup>०</sup>-तये लां २१६: ५.

कुमारी-शङ्ख-

कुमारीशङ्ख-वत् सांस् ४, ९

१कौमार-रम् मैत्रि ६, १०;

गी २, १३.

कुमार-क-क: चू ३; -का: मन्त्रि  
६<sup>१</sup>; चू ६; -कै: मन्त्रि ३.

कुमार-ग्रह-०ह लां २१४: १६.

कुमार-ब्रह्म-चारिन्-०रिन् लां  
२१४: १६.

कुमार-हारित<sup>a</sup>-त: वृ २, ६, ३;  
४, ६, ३; ६, ४, ४; -तात् वृ २,  
६, ३; ४, ६, ३.

२कुमा(र>)रा<sup>a</sup>-राम सुवा ९<sup>१</sup>.

३कुमा(र>)री<sup>a</sup>-री गार ४०६:

१६; व ४२७: १०; सुमु १२;

-वै व ४३१: ४.

a) व्यु. ? । b) स्वार्थे तद्धितः । c) ०नि<sup>०</sup> इति समस्तः सुग. यनि. सु-शोषः । d) नैप्र. <\*कौ(न्ति)>न्ती- ।  
e) ०पिनः इति अच्चा. । f) तु. सस्थ. टि. 'अर्णकोपिष्ठ-' यद्वा वर्ण- (=ज्वलित-) इत्याद्यं विप. प्रकल्प्य वर्णकोप- इत्यतः  
बस. सतः इष्टम् प्र. इति कृत्वा गप्. टि. शोषे विशेषः द्र. । अथापि वा मौस्थि. वर्ण- (<\*भर्ण->\*हर्ण->) अर्ण-  
इत्येवं दर्शने मुपा. अन्तु अर्ण-कोप- इत्येवं प्रकृते प्रकृतीयताम् । g) व्यु. ? <✓कुप ? विप. । h) व्यु. वैप १ यद्वा । i) =देवी-,  
=विद्या-, =दिश- । j) व्यु. ? =व्यक्ति-, =नाडी-, =वयोविशेष- । k) शौ १०, ८, २७ । l) 'कुमारकः' इति निष्ठा. । m) 'कूमिरम्'  
इति अच्चा. । n) तैआ १, २७, ४ । o) पदविभागः ? । p) ०कैः इति अच्चा. । q) व्यु. ? =सुषुम्ना- । r) =शाकदेवी- ।

२कौमा(र>)री- -०रि व  
४५३:४; ४५८:११; -री कालि  
४०१:११; पी ४२२:१०; श्या  
१३; सुसु १३; आथ ३९४:४.  
कुमार्य(री-अ)चैन- -नम् त्रिता ३,  
३५.

१कुमुद<sup>a</sup>- -दः गोउ २१<sup>b</sup>; -दम्  
सुवा ४<sup>c</sup>; ११.

कुमुद-वन- -नम् गोउ २१; सार  
२२१:१२९<sup>d</sup>; -नानि सार २२१:  
१७.

२कुमु(द>)दा<sup>e</sup>- -दा सुसु १३.

कुमूषिका- २कु- द.

कुम्भ<sup>f</sup>- -म्भः योशि ४, २१; यो १,  
२१९<sup>g</sup>; -म्भम् योशि १, ६३;  
वरा ५, ६०९<sup>h</sup>; -म्भे त्रिवा २,  
१३९९<sup>i</sup>; वरा २, ६६; -म्भेन  
वरा ५, ६०९<sup>j</sup>.

कुम्भी-

कुम्भी-पाक<sup>k</sup>- -कम् नाप  
७; १संन्वा २, ७९.

कुम्भ-क<sup>l</sup>- -कः ध्या २१; ते १,  
३३०; योचू १०१; शां १, ७, १४;  
यो १, १९; ३१; ५५; जाद ६, १३;  
वरा ५, १८; -कम् १योत ३७;  
६९; १४२; २योत २, ४; योचू  
१०३; योशि १, ९१; ९५; १००;  
यो १, २९; ३७; ३९; जाद ६, १८;  
वरा ५, ५८; सु २, २, ५२; -कस्य  
अना १४; -कात् यो १, ३०; -कान्

१योत ४३; त्रिवा २, १०१; शां १,  
७, २; -कानाम् यो १, ५४; -कै १योत  
५०; योशि १, १०२; यो १, ४०;  
-केन ध्या ३१; ब्रवि २१; १योत  
११३; त्रिवा २, १४०; १४२;  
वरा ५, ५९<sup>c</sup>; -कै: योशि १, ८७.  
कुम्भका(क-अ)न्त- -न्ते योशि  
१, १०६; शां १, ७, ११; यो १, ४७.  
कुम्भका(क-अ)वस्था- -स्था सु  
२, २, ५१.  
कुम्भका(क-आ)विष्ट-मानस-  
-सः यो १, ८४.

कुम्भ-मध्य- -ध्ये वरा ५, ५७.

कुम्भा(म्भ-अ)म्बर- -रस्य वरा २,  
६६.

✓कुम्भि, कुम्भयेत् १योत ४१; त्रिवा  
२, ९७; ९८; यो १, २७; वरा ५, ६०  
कुम्भयत्- -यन् ध्या ७०.

कुम्भयित्वा शां १, ६; ७, १<sup>c</sup>; १४<sup>d</sup>

कुम्भित- -तः योशि १, १२०.

कुम्भित्वा शां १, ५.

कुम्भी/कृ

कुम्भी-करण- -णम् त्रिवा २,  
१०८.

कुरव<sup>e</sup>-

कुरव-क-

कुरवक-रसा(स-अ)ञ्जित-

पाणि-पा(द>)दा- -दाम् रा  
४२४:२३.

१कुरु<sup>f</sup>- -रुन् गी १, २५.

कुरु-क्षेत्र<sup>g</sup>- -त्रम् जा १<sup>h</sup>; राउ १,  
१<sup>i</sup>; जाद ४, ४९; ता १, १<sup>j</sup>; छाग  
२४: ४; ७; -त्रे छाग २४: ३;  
शि ६, १८९; गी १, १.

कुरुक्षेत्रा(त्र-आ)दि- -दिषु  
राउ ५, २०.

कुरु-नन्दन- -०न गी २, ४१; ६,  
४३; १४, १३.

कुरु-प्रवीर- -०र गी ११, ४८.

कुरु-वृद्ध- -द्धः गी १, १२.

कुरु-श्रेष्ठ- -०ष्ठ गी १०, १९.

कुरु-सत्तम- -०म गी ४, ३१.

२कुरु<sup>h</sup>- -रुषु छां १, १०, १.

कुरु-पञ्चाल<sup>i</sup>- -लानाम् वृ ३, १,  
१; ९, १९; -लेषु कौ ४, १.

कुरु-कुल<sup>j</sup>- -ल्ला मा ३; कालि  
४०१:९; श्या ११.

३कुरु<sup>k</sup>-

कौरव्य<sup>l</sup>-

कौरव्याय(ण<sup>1</sup>>)णी<sup>m</sup>-

कौरव्यायणी-पुत्र- -त्रः वृ  
५, १, १.

४कुरु<sup>n</sup>- -रुन् छां ४, १७, १०<sup>o</sup>.

५कुरु ✓कृ(करणे) द.

कुर्वत्, कुर्वाण- ✓कृ(करणे) द.

१कुल<sup>p</sup>-

१कुला(ल-अ)कुल<sup>q</sup>- -लः अद्वैभा  
१३<sup>r</sup>.

कुला(ल-अ)चल<sup>s</sup>- -लः अद्वैभा  
१३.

a) व्यु. वैप१ यद्र. । b) °दम् इति अज्या. संटि. । c) =शाक्तदेवी- । d) व्यु. ? =घट- वा =प्राणायाम-  
विशेष- वा । e) °कम् इति अज्या. । f) व्यु. ? =उद्भिद्विशेष- । g) =क्षत्रियकुलविशेष- । व्यु. वैप१ यद्र. । h) =कुरु-  
जनपद- (तु. पा ४, २, ८१) । i) व्यु. ? =देवीविशेष- । j) =तदाख्य-ब्राह्मणविशेष- । k) ण्यः प्र. (पा ४, १, १५१) ।  
l) ण्यः >आयनः प्र. (पा ४, १, १९) । m) त्री. डीष् प्र. (पा ४, १, ४१) । n) व्यु. ? ब्रह्मेतरहोत्रध्वर्युद्रातृप्राकरणिक्-  
वृत्तितो वाचं प्रयुज्जानेऽस्य मौलिकीवृत्तिरिति कृत्वा (✓कु शब्दे>) कवि-, (✓कृ करणे>) कारु- (वैप१ यद्र.) इत्ये-  
ताभ्यामस्य साजात्यं द. [वैतु. शं., रामा. <✓कृ करणे (=स्तुत्यादियान्निकर्मकरणे) इति] । o) पा. ? 'कुरुन्(?)ब-  
या(श्वाऽ)भिरञ्जति' (=अस्मान् सर्वास्त्रीनपि कुरुन्) इत्येवं शोधः इति कृत्वा कर्मणश्च क्रियायाश्च मध्ये 'नः, च' इति  
द्वे पदे न तु अश्वा (=एतद्विषये १११ पृ. गम्. निर्देशः शोधः) इति पदमिति मतं भवति (वैतु. शं. प्रभृ. नैवं  
पश्यन्तोऽसारामिवोपमां प्रदर्शकाः) । p) व्यु. ? विप. सत् =परिवृत्- इति कृत्वा २कुल- इत्यनेनास्य साजात्यं स्यात् ।  
q) कस. । r) °लाः इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।



२कुल<sup>a</sup>-लम् वृ १,५,२१; ते ४,२६;  
 ६, २८; नाप ४, २<sup>b</sup>; पै ४, १;  
 अव्य १; इ १५: ४; गोच ६९:  
 ७; सार २३६: १; भव २, ६६;  
 गी १, ४०; -लस्य गी १, ४२;  
 -लानाम् शा ३०; -लानि १संन्या  
 २, ७<sup>c</sup>; -ले सुं ३, २, ९; मां १०;  
 छां ३, १३, ६; ५, १२-१३, १; २;  
 १४-१७, २; वृ १, ५, २१; राप्  
 १, १; अत्ति १; शा ३०; चा १३;  
 गी ६, ४२; -लै: शि ६, १२७.  
 कौलिक<sup>d</sup>-क: काम २०; १कौल  
 शां.  
 कौलेयक<sup>e</sup>-क: महा ३, १८;  
 -केन महा ३, १९.  
 कुल-क्षय-ये गी १, ४०.  
 कुलक्षय-कृत-तम् गी १, ३८;  
 ३९.  
 कुल-गोत्र-त्रे आवो २२.  
 कुलगोत्र-क(र>)री-रीम् व  
 ४३३: १.  
 कुलगोत्रां(त्र-अं)स-सम् वउ  
 ४, ३५.  
 कुल-गोत्र-जाति-वर्णा(र्ण-आ)श्रम-  
 रूप-पाणि मुद्र ४.  
 कुल-ग्र-ग्रानाम् गी १, ४२; ४३.  
 कुल-ज-ज: महा ५, ८७.  
 कुल-त्रिशक-कम् शि २, ३०; ६,  
 १७८.  
 कुलत्रिशक-संयुक्त-क: शि ६,  
 ९२; १११.  
 कुल-धर्म-मार्: गी १, ४०; ४३.  
 कुलधर्म-करण-गम् २कौल ३

कुल-भ्रष्ट-ष्टम् २कौल १२.  
 कुल-वधू-  
 कुलवधू-वत् सांस् ३, ७०.  
 कुल-वर्ण-धर्मा(र्म-आ)दि-दि सार  
 २३१: १२.  
 कुल-विद्या-द्या इ १०: १.  
 कुल-वृद्ध-द्धा: इ १२: १६.  
 कुल-स्त्री-स्त्रिय: गी १, ४१.  
 कुला(ल-आ)धार-रम् शि ६,  
 २२२.  
 १कुलीन<sup>f</sup>-नाय सु १, १, ४९.  
 कुले(ल-ए)क-विंशत्-शत् शि ४,  
 २५.  
 कुले(ल-ए)कविंशको(क-उ)पेत-  
 त: शि ७, ९७.  
 १कुल्य<sup>g</sup>-ल्येभ्य: वप् १, ३<sup>h</sup>.  
 ३कु(ल>)ला<sup>i</sup>-  
 १कौल<sup>j</sup>-ल: व ४६३: १२.  
 कौल-देव-वाय व ४६३:  
 १२.  
 २कौल<sup>k</sup>-लम् त्रिता २, ५<sup>l</sup>;  
 २कौल ८; -ला: सार २७३: १२.  
 कौल-प्रतिष्ठा-ष्टाम् १कौल  
 ७: २; २कौल ९<sup>m</sup>.  
 कौलि(र>)नी-नी आथ  
 ३९८: १४.  
 कौलि<sup>n</sup>-लि: त्रिता ३, ३५.  
 कुल-कुमारी<sup>o</sup>-रि त्रिता ३, ३४;  
 -यै व ४६३: १२.  
 २कुला-कुल<sup>p</sup>-  
 कुलाकुला(ल-अ)श्रुत-तै: १  
 सुमु १८.  
 कुला(ल-आ)चार-रात् काम २०.

२कुल्य<sup>q</sup>-  
 कुल्य-वासिनी-न्यै व ४३१: ४  
 १कुलाकुल-१कुल-द्र.  
 कुलाय<sup>r</sup>-यम् वृ ४, ३, १२; १संन्या  
 २, ५४; -यात् वृ ४, ३, १२.  
 कुलायिन्-यी मना २, ४०<sup>s</sup>.  
 कुलाल<sup>t</sup>-  
 कुलाल-चक्र-न्याय-येन पै १, ३३.  
 कुलाला(ल-आ)लय-भस्मन्-  
 -स्मना शि ५, ७.  
 कुली<sup>u</sup>-लि व ४३५: १७.  
 २कुली(ल>)ना<sup>v</sup>-ना सुमु १२.  
 कुलुम्भा<sup>w</sup>-म्भा: आपे ८: १४<sup>x</sup>.  
 कुल्माष<sup>y</sup>-षा: छां १, १०, ७; -षात्  
 छां १, १०, २.  
 कुल्ला<sup>z</sup>-ल्ला कालि ४०१: ९; श्या ११.  
 कुवल्य<sup>aa</sup>-  
 कुवलया(य-आ)पीड<sup>ab</sup>-ड: कृ १४.  
 १कुश<sup>ac</sup>-शात् वप् १३; शेषु भ २, ३.  
 कुश-स्व-स्वम् इ ११: २२.  
 कुश-पादक-कम् शि ७, ४७.  
 कुश-म(य>)यी-यी वउ ६, ३९.  
 कुश-मूल-ले शि ४, ६४.  
 कुशा(श-अ)प्र-प्रेण गी ३, ४१.  
 कुशल<sup>ad</sup>-ल: क १, २, ७; नाप ५, २६;  
 -लम् छां ४, १०, २, ४; नाप ३,  
 ४३; पा १, ९; काम १; -ला: छां  
 १, ८, १<sup>ae</sup>; ते १, ४६; -लात् तै १,  
 ११, १; -ले गी १८, १०.  
 कौशल-लम् गी २, ५०.  
 कुशला(ल-अ)नुशिष्ट-ष्ट: क १, २, ७  
 २कु(श>)शा<sup>af</sup>-  
 कुशा-छन्दस्-स्तुत्यु(ति-उ)पगान-

a) = वंश्यनिवाससामान्यसंबद्ध- वा = जनपरिवार- वा । व्यु. वैप १ यद्र. । b) 'फलम्' इति श्रव्या. ।  
 c) = २कौल- । d) तु. पा ४, २, ९६ । e) कौश<sup>o</sup> इति श्रव्या. संति. । f) ख>ईन: प्र. (पा ४, १, १३९) । g) तु. पा  
 ४, १, १४० । h) 'कुलेभ्य:' इति मूको. । i) व्यु. ? = शक्ति- । j) = कौल-देव- । k) = कुलोपासक- । l) विप. ।  
 m) 'लं प्र' इति मुपा. यनि. सु-शोध: । n) स्वार्थे तद्धित: । o) = कुला<sup>o</sup> (पू. ह्रस्वत्वे तु. कन्यकुमारी-) ।  
 p) षम. । उप. = परिवार- इति कृत्वा = २कुल- । q) पञ्च मकारा अभिप्रेता: स्यु: । r) कुला+स्वार्थे यत् द्र. ।  
 s) व्यु. वैप १ यद्र. । t) तैसं ४, २, ९, ६ । u) व्यु. ? = शाक्तदेवी- । तु. सस्थ. टि. कुं । v) व्यु. ? = देव्या: षोडश-  
 संज्ञानामन्यतमा- । w) व्यु. ? साहचर्यात् = जातिविशेष- । x) 'कुलुम्भा:' इति वे. ? । y) व्यु. ? ।

कुशलन्दस्तुत्युपगान-वत् ब्रस  
३, ३, २६.  
१कुशिक<sup>a</sup>-  
२कुशिक<sup>b</sup>-कासः आषे ९:१६.  
कौशिक<sup>c</sup>-कः वृ २, ६, १; ४, ६, १;  
वस् १३९<sup>d</sup>; -कात् वृ २, ६,  
१<sup>e</sup>; ४, ६, १<sup>f</sup>.  
कौशिकी<sup>g</sup>-की त्रिवा २,  
७४९<sup>h</sup>.  
कौशिकी-पुत्र-त्रः,  
-त्रात् वृ ६, ५, १.  
कौशिक-गोत्र-त्रात् सार  
२८९:२.  
कौशिकायनि<sup>i</sup>-निः, -नेः वृ  
२, ६, २; ४, ६, २.  
कुश्रि<sup>j</sup>-श्रिः, -श्रेः वृ ६, ५, ३; ४.  
कुशीतक<sup>k</sup>-  
कौशीतकि<sup>l</sup>-किः छां १, ५, २; ४;  
कौ २, १; -केः कौ २, ७६.  
कौशीत(क)>की<sup>m</sup>-की मु १,  
१, ३२.  
कौशीतकेय<sup>n</sup>-यः वृ ३, ५, १<sup>o</sup>.  
कुष्ठ<sup>p</sup>-  
कुष्ठ-रोग-  
कुष्ठरोगिन्-गी इ १४:१६.  
कुष्ठिन्-ष्ठी १ संन्या २, ३; इ  
१७:५; मृ ९.  
कुष्माण्ड<sup>q</sup>-ण्डः अद्वैमा १५.  
कुसीद<sup>r</sup>-दम् मना १, ११९<sup>s</sup>.  
कुसुम<sup>t</sup>-मम् मा ३५; -मस्य शि  
४, ३६; -मानि शि ६, २४५; ७,

५०; -मेषु भव २, ६६; पित्र ६, ५;  
-मैः सार २२९:१२; शि १, २६.  
कुसुम-वत् मासू २, ३५.  
कुसुमा(म-आ)कर<sup>u</sup>-रः गी  
१०, ३५.  
कुसुमा(म-अम्भस्)>म्भो-  
वासिन्-सिनः व ४३६:९.  
✓कुसुमापि, कुसुमापय-कुसुमापय  
व ४३१:२३.  
कुसुम्भ<sup>v</sup>-  
कौसु(म्भ)>म्भा<sup>w</sup>-  
कौसुम्भा-सुरङ्गा-क्षणिका-  
प्रद्योति(ता)>ता-ताः सार  
२६९:१७  
कुसुम्भ-पुष्प-प्लैः रा ४२४:९.  
कुसुम्भ-शाक-कम् शि ६, ८५.  
कुस्तुम्बरी<sup>x</sup>-यः शि ६, ७५<sup>y</sup>.  
कुह-किम्-द्र.  
कुहक<sup>z</sup>-कम् कृ १०.  
कुहद्रक<sup>aa</sup>-कम् शि ६, ८४.  
कुहु, हू<sup>ab</sup>-हूः ध्या ५३; योचू १७; २०;  
शां १, ४<sup>c</sup>; योशि ५, २६; भा १३;  
जाद ४, ८; १४; १८<sup>d</sup>; वरा ५,  
२३:-होः जाद ४, १५; १६; ३८.  
कूचिमार<sup>e</sup>-रः रा ४२३:५; -रम्  
रा ४२३:६.  
१कूट<sup>f</sup>-टः राप ४, ५५<sup>g</sup>; यो २, २०<sup>h</sup>;  
-टम् त्रिता १, ४९.  
कूट-त्व-स्वेन त्रिता ४, ६.  
कूटा(ट-अ)क्षर-रः अद्वैमा ११.  
कूटा(ट-अ)न्त-न्ताः त्रिवि ६३.

२कूट<sup>i</sup>-  
कूट-स्थ-स्थः ससा १, ३; २७९<sup>j</sup>;  
ते ६, ६२; अन्न ५, ७५; यो ३,  
२०; जाद १०, २; नाउ ३, २१; गी  
६, ८; १५, १६; -स्थम् त्रिवि ७,  
१७; पै ३, २; योशि ३, २१; गोउ  
५९<sup>k</sup>; यो ३, २६; गी १२, ३;  
-स्थाय सार २६१:४; -स्थे पै ३, १  
कूटस्थ-चेतन-नः आबो ५.  
कूटस्थो(स्थ-उ)पहित-भेद-  
-दानाम् ससा १, २७<sup>l</sup>.  
कूप<sup>m</sup>-पः मना २, ६७९<sup>n</sup>; इ १२:२.  
कूप-चक्र-क्रे १ योत १३३९<sup>o</sup>.  
कूपचक्र-वट-टाः २ योत १, ५.  
कूबर<sup>p</sup>-  
कूबरिन्-रिणः छाग २४:२०;  
-रिणम् छाग २४:२१.  
१कूर्च<sup>q</sup>-चम् षो १२<sup>r</sup>; तारा ८३:४;  
१४; २३.  
कूर्च-बीज-जम् कालि ४०१:२.  
कूर्चबीज-द्वय-यम् श्या २.  
कूर्च-वह्नि-ललना<sup>s</sup>-नाम् गुषो  
४२०:१२.  
२कूर्च<sup>t</sup>-चोत् वृ ४, २, १.  
कूर्च<sup>u</sup>-पें मिशि ३८१:१७.  
कूर्पर<sup>v</sup>-रम् जाद ४, ५८; -रे वृजा  
४, १४; १८; -रौ त्रिवा २, ४७;  
शां १, ३, १०.  
कूर्परा(र-अ)ग्र-अे जाद ३, १०.  
कूर्परा(र-अ)धस्<sup>w</sup>-धः वृजा ४, ३०.  
कूर्परा(र-अ)-स्फुरण-णम् त्रिवा  
२, १२४<sup>x</sup>.

a) व्यु. वैप १ यद्र. । b) बहुषु गोत्रार्थस्याऽञो लुक् (पा २, ४, ६४) वर्तुक्मात्रं प्राति. पृथक् कृतं द्र. (तु. २कूर-). । c) वैतु<१कुश- (=तृण-) इत्येतदीयां व्यु. संकेतयदेतत् स्थ. । d) फिज्>आयनिः प्र. (पा ४, १, १५४) । e) व्यु. ? । f) इन् प्र. (पा ४, १, ९५) । g) °किः इति अज्वा. । h) ढक्>एयः प्र. (पा ४, १, १२४) । i) व्यु. ? =शिवगणविशेष- । j) तैसं ७, ३, ११, १ । k) व्यु. ? =धन्याक- । l) °र्वाः इति मुपा. यनि. सु-शोधः । m) व्यु. ? =माया- । n) व्यु. ? =शाकविशेष- । o) व्यु. ? =नाडीविशेष- । p) कू° इति अज्वा. । q) व्यु. ? =प्रच्छन्न- । r) इहेतत् प्राति. =कूटाक्षर- =क्षकार- (तु. उन्न., आन. कष° इति पाभे.) । s) =चं-बीजविशेष- । t) व्यु. ? =गुहा-, =गृह-, =कुट-, =कोट-, =अव्यात्म-, =वस्तुत्व- । u) °स्थस्थ इति आन. । v) °स्थानुप° इति आन. । w) तैआआ १०, ६७ । x) °क्रेण इति निसा. । y) व्यु. ? =बीजाक्षर- । z) =हुं स्वाहा । a') व्यु. ? =आसन- (तु. सं.) । b') व्यु. ? =रुफोणि- । c') 'कूर्परे स्फुरणम्' इति निसा. ।

१कर्म<sup>२३</sup> -र्मः लु ३; १योत १४०;  
नाप ३, ७४; नापू ९, ६; गी २, ५८.  
कर्म-नाडी<sup>२४</sup> -ड्याम् शां १, ७, ५२;  
योस् ३, ३२.

कर्म-रोमन् -म्णा ते ६, ८२.

कर्म-वत् त्रिवा २, ४२; २योत २, ३;  
शि ७, ६७.

कर्म(र्म-अ)रूढ -ठः व ४४२:२२.

कर्म(र्म-अ)वतार -राय नापू ५, ९.

२कर्म<sup>२५</sup> -र्मम् वरा ५, १५.

कर्म-नाग -नौ रापू ५, २.

३कर्म<sup>२६</sup> -र्मः ध्या ५७; ब्रवि ६७; योचू  
२३; २५; त्रिवा २, ७७; ८६;  
जाद ४, २४; -र्मस्य जाद ४, ३४.

कर्म-कर्मन् -र्मं शां १, ४.

कूल<sup>२७</sup> -लाभ्याम् पित्र ६, ११; -ले वृ  
४, ३, १८.

कूल-द्वय -यम् त्रिवा २, १७.

१कूश्माण्ड<sup>२८</sup> -ण्डम् शि ६, ७८.

२कूश्माण्ड<sup>२९</sup> -

कूश्माण्ड-ब्रह्म-राक्षस -साः राउ  
५, १०.

✓क(करणे), >कारि, चिकीर्षु, करत्  
व ४३७: १७५<sup>b</sup>.

कृधि मना १, ९५<sup>i</sup>; सर २, १०५<sup>j</sup>;  
सूता २, ६; ३, ११५<sup>k</sup>; व ४६३:  
२२५<sup>l</sup>.

५<sup>१</sup>कृण्वन्ति १शिसं २; २शिसं  
३; कृण्वहे व ४६०: २०५<sup>m</sup>;

५<sup>२</sup>कृणवत् अशि ३, ४; वटु ३१५:  
४; कृणवसे श्वे २, ७<sup>०</sup>; कृणोतु  
मना २, ४५५<sup>p</sup>; प्रा १, ५; कृणुष्व

मना २, २७५<sup>q</sup>; व ४४९: १२५<sup>r</sup>;  
कृणुहि मना १, १२५<sup>s</sup>; कृणुध्वम्  
२प्र३६: ११; अकृण्वन् लि ३१०:  
४५<sup>t</sup>.

कुरुते तै २, ७, १; छां ६, १६, १;

२; ७, ३, १; १४, १; वृ ४, ३,

२-६; १३; ४, ४; ५<sup>१</sup>; ५, १४, ८; श्वे

५, ३; मना २, ३४५<sup>u</sup>; वृजा ५, २;

ध्या ७५; नाप ३, २२; योचू ४८;

त्रिवा २, ८६; करोति क २, १२;

छां १, १, १०; ३, ५; ५, ८, १; ७,

२१, १; २२, १<sup>३</sup>; वृ १, ४, १५; १७;

३, २, ८; ४, ४, ६; ६, २, १३; ४,

२६; श्वे ६, १२; मैत्रि ६, ३३; जा

४; कै १, १२; गर्भ ५; मना २,

६१५<sup>v</sup>; कौ २, ७; कुरुतः छां १,

१, १०; अञ ५, ५३; सार २६०:

१३; शि ७, ११०; कुर्वते सार

२३१: ५; २५४: १०; १कौल

८: ३; कुर्वन्ति क १, १, ७; प्र

१, १२; छां ४, १, ४; ६; १५, ५;

वृ १, ५, २३; जा ४; वृजा ५, ९;

वसू १९; नाप ३, ७७; महा ५,

३७; १संन्या २, ९८; कुर्वन्ति-

तराम् सार २८१: २३; करोषि

ते ५, ५८; महा ४, ६; अञ ४,

७६; गी ९, २७; कुर्वे १अव २५;

करोमि क १, १, २४; ऐ २, ५;

मना २, ६१५<sup>v</sup>; कृ २; नि २४;

१अव १४; वरा २, ३५; व ४६५:

५५<sup>w</sup>; गी ५, ८; कर्मः वृ ३, १,

२; करोतु वृ ६, ३, ५; ४, २४;

मना १, ११५<sup>x</sup>; नाप ४, ३८५<sup>y</sup>;  
अञ २, १०<sup>३</sup>; मु २, २, १९<sup>३</sup>;  
कुरुव वृजा १, १; बि ६; गी ९,

२७; कुरु प्र २, १२; वृ १, ३,

२८<sup>३</sup>; श्वे ३, ६५<sup>३</sup>; कौ २, ९<sup>३</sup>;

१योत ११; त्रिवि ८, १५; रापू

४, १६<sup>३</sup>; शां १, ७, १९<sup>३</sup>; महा ५,

११६; नी १, ५५<sup>३</sup>; कुरु-कुरु त्रिता

३, ३२; त्रिवि ७, ३०; वा ६; ह

१०; लां २१५: ११; वपं ३११:

४; हंपो ७; व ४३०: १२; कुरुत

वृ ६, १, १३; सार २४३: १६;

करवाणि छां ६, ३, ३; वृ २, ४, १;

४, ५, २; ५<sup>३</sup> करवावहे क शां<sup>३</sup>;

तैशां<sup>३</sup>; श्वे ब्रवि कै गर्भ ना मना ब्र

अना काला लु ससा शु ते ध्या

ब्रवि १योत द स्क शारी योशि ए

अक्षि १अव करु रुह यो पं प्रा वरा

कलि हे शां<sup>३</sup>; १प्र३०: १; व ४६६:

१७; अकुरुत तै २, ७, १; वृ १, २,

१, ५, १; ३<sup>३</sup>; अकरोत् छां ६, ३, ४;

वृ १, २, ४; सुबा १; श १७; शां

१, ४<sup>३</sup>; पै २, ५; अव्य ४; वा १०;

शौ ५१: ७; सार २२०: १५;

अकुर्वत गी १, १; अकुर्वन् पा ९,

४; सार २३३: ३; अकरवम् तै

२, ९, १<sup>३</sup>; वृ ४, ४, २२<sup>३</sup>; कुर्वीत

तै ३, ९, १; छां ३, १४, १; ४,

१७, १०; वृ ४, ४, २१; ब्रवि ६५;

नाप ३, ४२; अञ ४, ३७; योशि

५, ५९; यो २, ३८; वरा ४, ३३;

शा २३; कुर्यात् छां २, २४, २<sup>३</sup>;

a) =कच्छप-। व्यु. वैप१ यद्र.। b) कस.। मध्यत आकारपदलोपः द्र. [तु. (योस् ३, ३२ भाष्यम्)]। c) व्यु. ?  
=आसनविशेष-। d) व्यु. ? =प्राणवायुविशेष-। e) व्यु. वैप१ यद्र.। f) व्यु. ? =फल-। g) व्यु. ? =राक्षस-  
विशेष-। h) ऋ ८, १८, ९। i) ऋ ८, ६१, १३। j) ऋ २, ४१, १६। k) तैत्रा ३, ७, ६, २१। l) मा ३४, २।  
m) ऋ १०, ८४, ४। n) ऋ ८, ४८, ३। o) पा. १। यनि. आत्म. लेटि मपु १ स्यात् [तु. शं प्रभृ.; वैतु. निसा.  
'कृणवत्->-ण्वते' (च १) इति पामे.]। p) तैत्रा ३, ७, १४, ४। q) तैत्रा १०, २०, १। r) ऋ ८, ६४, १। s) ऋ १,  
१८, १; ३, ४७, २। t) ऋ २, ४७, १। u) तैत्रा १०, ३४। v) तैत्रा १०, ६१। w) तैत्रा २, १२, १।  
x) तैसं १, ४, ४१, १। y) 'करोत' इति तैत्रा २, १८, १। z) मा १६, ३। a') 'कुर्वन्ति' इति आन.। b') मा  
१६, ३। 'कृणु' इति आन.। c') तैत्रा ८, १, १।



वृ १,२,२५,५,२; ५,१४,५; जा  
४<sup>३</sup>; हं १४; अना २१; वृजा ३,  
२; वृषू ५,१०<sup>३</sup>; वृज २,८; मैत्रे  
२,२६; ध्या ९९; कुर्वीय छां ७,  
३,१<sup>३</sup>; वृ १,४,१७<sup>३</sup>; कुर्याम् वृ  
२,४,३; ४,५,४; ५,१२,१<sup>३</sup>.  
चक्रे वृ २,५,१८<sup>३</sup>; अत्र ३, ३;  
ए ८; सार २८५: १७; चकार  
छां ५, ३, ६; ६, १३, १; २; वृ  
६, २, ४; पं २७; सार २४१:  
२०; चक्रिरे वृ १, ५, २३;  
वृषू २, १७९<sup>३</sup>; पै १, ३०; चक्रुः  
छां १, १२, ४; ५, ११, १;  
रापू ४, १२; सार २३३: ५;  
पित्र १, १; चक्रुममना २, ५९<sup>३</sup>; ६०९<sup>३</sup>; करिष्यति क १, १, ५;  
वृ ३, १, ७; श्वे ४, ८९<sup>३</sup>; वृजा  
६, १२९<sup>३</sup>; वृषू ४, ९९<sup>३</sup>; राउ ५,  
२९९<sup>३</sup>; अव्य २; जाद ४, ६३;  
व २३९<sup>३</sup>; गु ५३९<sup>३</sup>; करिष्यतः  
प्र १, ४; करिष्यन्ति १संन्या २,  
५४; करिष्यसि अव्य ३; गी २,  
३३; १८, ६०; करिष्ये वृ १, २,  
५; म ४८: ११; गी १८, ७३;  
करिष्यामि कृ २; करिष्यामः वृ  
४, ४, २२; शौ ५२: १६; अकरत्  
वृ ६, ४, २८; अकार्षीत् छां ६,  
१६, १; मना २, ६१९<sup>३</sup>; ६२९<sup>३</sup>;  
अकृत नापू ४, ८१<sup>३</sup>; अकृता ३  
वृ ३, ९, १८; कः<sup>३</sup> वृ ६, ४, २७९<sup>३</sup>;  
अकरम् वृ ६, ४, २४; नी २, ५९<sup>३</sup>;  
७९<sup>३</sup>; अकार्षम् गोपू २५<sup>३</sup>.  
क्रियते ते १, १८; सी ३६; त्रिवा  
२, ८५; योशि ४, २२; सु २, २,

२६; अद्वे ७१<sup>३</sup>; १शिसं ३९<sup>३</sup>;  
२शिसं ४९<sup>३</sup>; अरु २९९<sup>३</sup>; भव १,  
२७; गी १७, १८; क्रियन्ते १संन्या  
२, २६; गी १७, २५; अक्रियत  
सार २५७: ८.  
कारयति कौ ३, ९<sup>३</sup>; ससा १, ५;  
कारयन्ति सार २६४: ८; भव  
१, ५५; कारये १अव २५; अका-  
रयत् रापू ४, २८; कारयेत् वृजा  
४, १; ध्या ७६; १योत ५१;  
नाप ५, २१; १संन्या २, ४; यो  
२, २४; १अव ४; वरा ५, ६८;  
शि ४, १९; कार्यते सांका ३१;  
गी ३, ५; अचीकरत् वउ ३, २५.  
चिकीर्षति यो ३, २८.  
२कर<sup>३</sup>—रः तेष्ठ १०; नाप ३, १४;  
—रयोः त्रिवा २, १३३; रुजा १,  
२२; —राम्याम् त्रिवा २, ११६;  
शां १, ७, ४३; यो १, ४८; पी  
४२१: २; —रे १योत १२७; मं  
२, ३, ६; यो २, ११; गोउ ५५<sup>३</sup>;  
५७; राधा ३, ११; —रेण वृजा  
७, ८; योशि १, ११७; रुजा ३,  
१; शि ७, ५४; —रैः मैत्रि ६, ३३<sup>३</sup>;  
द१०; शि ५, ४२; —रौ योचू ४०;  
ध्या ६९; त्रिवा २, ४१; शारी ७.  
कर-कमल-घृते(त-इ)ष्टा(ष्ट-अ)-  
भीति-युग्मांस्तु(ज>)जा- जा  
सौ १, १<sup>३</sup>.  
कर-चरणा(ण-आ)दि-मूर्ति-  
विशिष्ट-—ष्टम् त्रिवि ८, ८.  
कर-ज-—जैः शि ७, ५५.  
कर-तल-—लाभ्याम् सार २२४:  
२२; ले त्रिवा २, १५८; त्रिवि ६, ८

करतल-करपृष्ठ-—छाभ्याम्  
शु १, १८; २, ५<sup>३</sup>; गरु ३; लां  
२१३: ११; व ४२६: ८.

करतला(ल-आ)मलक-

करतलामलक-वत् वसू

२५; पै ३, १.  
?करद्वयोः<sup>३</sup> शां १, ३, १०.

कर-निकर-—रैः व ४६६: ८.

कर-न्यास-—सम् यो २, ३८.

कर-पात्र-—त्रम् नाप ५, १<sup>३</sup>; ७;

—त्रेण नाप ३, ८६; १संन्या २,  
५९; या २, १.

करपात्र-माधूकर-—रेण पप  
४१९: ८.

करपात्रिन्-—त्री नाप ५, १;  
१संन्या २, १३.

कर-पाद-—दे सार २४५: ११.

कर-पुष्कर-मध्य-—ध्ये शि ५,  
४७.

कर-शुद्धि-—द्धिम् त्रिता २, ७;  
वउ ६, १४.

कर-स्थ, स्था-—स्थम् जाद ४,  
५०; —स्था: योरा १२.

करा(र-अ)ग्र-—ग्रे द ७; —ग्रेण  
वउ ४, १०.

करा(र-अ)ङ्गु-ष्ट-—ष्टे त्रिवा २,  
१२२.

करा(र-अ)भिमर्शन-—नेन त्रिवि  
८, १७.

करा(र-आ)मलक-

करामलक-वत् अध्या ४०.

१करण<sup>३</sup>—णम् श्वेद, ८; गुद ७; भव

२, ४५; वउ ४, ३; सांका ३१-३३;

३५; सांसू २, ३८; वसू २, ४३;

a) 'कुर्वीत' इति निसा. । b) ऋ १, ४०, ५ । c) तैआआ १०, ५९ । d) ऋ १०, ३७, १२ । e) ऋ १,  
१६४, ३९ । f) तैआआ १०, ६१ । g) तैआआ १०, ६२ । h) 'अकृत' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. ऋ १०,  
७१, २) । i) अमाङ्गयोगेऽपि अडभावः (पा ६, ४, ७५) । j) ऋ १, १६४, ४९ । k) मा १६, ८ । l) 'उतु तं'  
इति मा १६, १४ । m) 'प्रादुरकार्षम्' इत्यस्य क्तिप. उत्तराशमात्रस्याऽभ्यासः द्र. । n) 'क्रीयते' इति मुपा. यनि.  
सु-शोधः । o) मा ३४, ३ । p) तैआ १, २७, ४ । q) =इस्त- । r) परो<sup>३</sup> इति आन. । s) 'तेष्वा' इति अज्या. ।  
t) पा. 'तलाम्यां करयोर्द्वयोः' इत्येवं पादः सु-शोधः स्यात् । u) =साधन- वा =इन्द्रिय- वा ।

गी १८, १४; १८; -णात् अक्षि  
१८; -णानि जाद ६, ३४; छाग  
२५: ११; -णैः मैत्रि ३, ३; मै  
३, ३; अ ३<sup>१</sup>.

करण-त्व- -त्वम् सांसू २, २९;  
-त्वात् सांसू ५, ६९.

करण-वत् ब्रसू २, २, ४०.

करण-वैकल्य- -ल्यात् सांका  
४७.

करणा(ण-अ)धिप- -पः ब्रवि  
९४; -पाः पै २, १८.

करणाधिपा(प-अ)धिप- -पः  
श्वे ६, ९; भव २, ४४.

करणा(ण-अ)श्रयिन्- -यिणः  
सांका ४३.

करणो(ण-उ)द्भव- -वः सांसू २,  
३६.

करणो(ण-उ)परम- -मे पै २, ३९.

२कर(ण>)णी<sup>११</sup>- -णी १योत १२२  
करत्<sup>१</sup>- -रत् २प्र ३३: ५.

करिष्यत्- -व्यतः श्वे २, ३९<sup>०</sup>; -व्यन्  
वृ १, ३, २५.

कर्तव्य-व्या- -व्यः शु १, ३; मं २,  
१, ६; नाप ५, १; शां १, ७, ११<sup>३</sup>;  
योशि १, ६६; १०६; १०९;  
१संन्या २, ५९; अन्न ४, ८९;  
अध्या १४; यो १, ४६; ४७; ५१;  
५५; या २, १; भव १, ३२; -व्यम्  
क १, १, ५; वृजा ४, २; नाप ३,  
५७; ५, १; आबो २१; त्रिवा २,  
२५; मं २, २, ३; पै ४, ९; योशि  
१, ४७; १००; १अव २९<sup>४</sup>; भा  
२७; ४०; यो १, ३९; ५०; भ  
२, १; अता ४<sup>५</sup>; जाद १, २३;  
२४; सौ २, ४; स्व ६२: ४; शि  
४, ९; १२; १७; भव १, ३६; गी  
३, २२; -व्या ते १, ३०; शां १,

७, २०; ३७; वरा २, ४४; नापू  
६, १६; शि ४, १४; ६, १४४;  
-व्याः भव २, ६७; ६८; -व्यानि  
गी १८, ६; -व्ये शि ७, १२६.  
कर्तव्य-ता- -ता भा २८.

कर्तुम् वृजा ३, ३३; नाद २१; नाप  
३, २६; पै ३, १; महा ३, ३८;  
सर ३, १६<sup>३</sup>; सु २, २, ४७; शि  
७, १११; गी १, ४५.

कर्तु- -र्तरि कौ १, २; -र्ता प्र ४, ९;  
मुं १, १, १; छां ६, १६, १; ७, ८,  
१; ९, १; वृ ४, ३, १०; ४, १३; कौ  
४, १८; मै २, १०; ३, ३; ५, ७;  
मैत्रि २, ७; ३, ३; ६, ७; १०;  
मना २, ६१<sup>१</sup>; ६२<sup>२</sup>; काला  
५; सुबा ६; ससा १, २; १८; ३;  
६; ते ५, ३३; त्रिवा २, ८७; ध्या  
९३, १; महा ४, १४; ६, ६८;  
शारी ३; योशि ३, ११; अन्न १,  
५७; अक्षि २१; २५<sup>३</sup>; १आ १;  
२आ २; ग २; वरा ३, १९; इ  
१४: ८; ऊ ६३: ३; वउ ३, ३४;  
५९; सांका २०; सांसू ६, ५४;  
ब्रसू २, ३, ३३; गी ३, २४; २७;  
१८, १४; १८; १९; २६-२८;  
-र्तारम् मुं ३, १, ३; कौ ३, ८; मैत्रि  
६, १८; नापू १, १९; गी ४, १३;  
१४, १९; १८, १६; -र्तुः इ १३:  
१४; शि २, २१; व ४६२: १८;  
सांसू १, १०६; ब्रसू २, २, ४३;  
-र्तुभिः मै ३, ३; मैत्रि ३, ३;  
-र्तुणि भव ३, २१; -र्त्रा कौ १, २.

कर्तु-कर्म-कार्य-  
कर्तु-कर्म-कार्य-ज्ञातृज्ञानज्ञेय-  
भोक्तृभोगभोग्य<sup>१</sup>- -न्यम् मुद्र ४  
कर्तु-गुण- -णम् अन्न १, १४.  
कर्तु-ता- -ता अक्षि २२.

कर्तृता(ता-अ)कर्तृता- -ते  
महा ४, १५.

कर्तृत्व- -त्वम् आबो २१; महा  
४, १४; गोउ ६७; सांसू १, १६४;  
गी ५, १४.

कर्तृत्व-भोक्तृत्व-मुख-दुःखा-  
(ख-आ)दि-लक्षण- -णः सु  
२, १, १.

कर्तृत्व-भोक्तृत्वा(त्व-आ)द्य-  
(दि-अ)हंकार-

कर्तृत्वभोक्तृत्वाद्यहंकार-  
ता- -तया नि १, २५.

कर्तृत्व-भोक्तृत्वा(त्व-अ)-  
हंकारा(र-आ)दि- -दिभिः  
नाप ६, १.

कर्तृत्वा(त्व-आ)दि-दुःख-  
निवृत्ति-द्वार- -द्वारा सु २,  
१, १.

कर्तृत्वा(त्व-आ)द्य(दि-अ)-  
हंकार-भावा(व-आ)रूढ- -ढः  
नि १, ४४.

कर्तृत्वा(त्व-आ)द्य(दि-अ)-  
हंकार-संकल्प- -ल्पः नि १,  
३६.

कर्तृ-भेद- -दम् ते ६, ५३.

कर्तृ-भोक्तृ-

कर्तृभोक्तृ-ता- -ताम् पै १,  
३२<sup>१</sup>.

कर्त्रे(र्तु-अ)हंकार-चेतन- -नाः  
त्रिवा २, ७.

कर्मन्- -र्म ई २; के ४, ८; प्र ६, ४;  
मुं १, २, ७; २, १, १०; तै ३, १०,  
२; छां ४, १४, ३; ५, २, ७; वृ १,  
४, १५<sup>३</sup>; १७<sup>४</sup>; ६, १; ३, २, ८;  
१३<sup>२</sup>; ४, ३, २-६; ४, ५<sup>३</sup>; श्वे ६,  
२; ३; कौ ३, ५; ७; ८; ९<sup>३</sup>; ४, १८;  
मै ४, ४, ४; मैत्रि ६, २०; ३४;

a) = शीर्षासन- । b) = व्याहृतिविशेष- । c) मा ११, ३ । d) 'कर्तृत्वम्' इति निसा. संटि. । e) 'कर्तव्यः'  
इति निसा. । f) तैआआ १०, ६१ । g) तैआआ १०, ६२ । h) समाहारे द्वस. । i) 'कर्तृत्वभोक्तृत्वताम्' इति निसा.  
'कर्तृभोक्तृत्वताम्' इति अख्या. च मुपा. यनि. सु-शोधी (तु. अख्या. संटि.) ।

मैत्रे १, ४, ६; आरु ५; गर्म ३;  
 ४; ५; वृजा ३, ३३; ५, ९; ससा  
 ५; वसू ४; १८; २०; नि ८; २४;  
 २५<sup>१</sup>; ते ५, ५७; नाद २३; नाप  
 १; ३, ६; ७; १६; ७७; ५, १; ६, १;  
 त्रिवा २, २५; योचू ११०; मं२,  
 २, ३; त्रिवि २, १६; पै४, १; महा  
 ५, १३१; १संन्या २, ५९; ८७;  
 ९८; अक्षि २५; अध्या ५३; पप  
 ४२०: ७; १अव ६; जाद २, ८;  
 १०; ४, ३३; वरा २, १२; ५, ७२;  
 ७३; इ १४: १४; छाग २५: ११;  
 निरु १, २२; का ७; नारद; सार  
 २४९: १७<sup>१</sup>; २७२: २०; २७९:  
 २; १५; १शिसं ३५<sup>१</sup>; २शिसं  
 ४५<sup>१</sup>; शि १, ३३; ३४<sup>१</sup>; ३७; ४,  
 ६५; ६, २८२; ७, १२; २५;  
 १०९-१११; ११३; १२४; १२६;  
 गु ८२; भव १, ३२; ३७; ४६; ३,  
 २१; ५, १; ३; ६; ७; पित्र २, ५;  
 योसू ३, २३; ४, ७; ब्रसू २, १२;  
 गी २, ४९; ३, ५; ८<sup>१</sup>; ९; १५;  
 १९<sup>१</sup>; २४; ४, ९; १५<sup>१</sup>; १६<sup>१</sup>; १८;  
 २१; २३; ३३; ५, ११; ६, १; ३;  
 ७, २९; ८, १; १६, २४; १७, २७;  
 १८, ३; ५; ८-१०; १५; १८; १९;  
 २३-२५; ४४; ४७; ४८; -मैण:  
 वृ ४, ४, ६; मना २, ११५<sup>१</sup>; अक्ष  
 ४, ३२; रुह ४१; सांसू १, ८१;  
 गी ३, १; ९; ४, १७<sup>१</sup>; १४, १६;  
 १८, ७; १२; -मैणा मुं ३, १, ८;  
 तै २, ८, ३; वृ १, ५, १६<sup>१</sup>; ३, २,  
 ८; १३; ४, ३, ३३; ४, ५; ६; २२;  
 २३<sup>१</sup>; ६, ४, २४; कौ ३, १; ९<sup>१</sup>;  
 कै १, ३५<sup>१</sup>; मना १, १२५<sup>१</sup>; २, १२,  
 ३५<sup>१</sup>; वृजा १, १; वृष १, १; ध्या  
 ८१; नाप ३, २२; ६, ३०; त्रिवा

२, १५; १संन्या २, ९८; अक्ष २,  
 ६; अक्षि ८; १अव ५; कर् ९;  
 रुह ३५; या २, ३; वरा २, १६;  
 शा ३५; इ १२: १३; १४; निरु  
 २, ४; ९; नापू ४, २७; सार २८२:  
 २२; शि ७, १०८; स ३७९:  
 १०; गु ३७; सांसू १, १६; ५२;  
 ५, २; गी ३, २०; १८, ६०;  
 -मैणाम् छां ७, ४, २; वृ १, ६, ३;  
 २, ४, ११; ४, ५, १२; अक्ष ५, ४२;  
 भव १, ५२; गी ३, ४; ४, १२; ५,  
 १; १४, १२; १८, २; -मैणि ब्र ३,  
 ४; नाप ३, ८४; पै २, ७; महा ५,  
 १७३; पत्र ३, ८; ब्रसू १, ३, २७;  
 ३, २, २५; गी २, ४७; ३, १; २२;  
 २३; २५; ४, १८; २०; १४, ९;  
 १७, २६; १८, ४५; -मैणि-मैणि  
 नी ३, ६; -मैणे वृ ४, ४, ६; २प्र  
 ३६: २०; -मैभि: वृ १, ५, २; ६,  
 ३; योचू ५४; वरा २, २८; ४,  
 ३५; मु २, २, २०; गी ३, ३१<sup>१</sup>;  
 ४, १४; -मैभ्य: ऐ ४, ४; -मैसु  
 मुं १, १, ८; छां ५, २, ९; त्रिवा २,  
 २५; अक्ष २, ५; गी २, ५०; ६,  
 ४; १७, ९, ९; -मैणि ई २; मुं १,  
 २, १; २, २, ८; ३, २, ७; तै १, ११,  
 २; २, ५, १; छां १, ३, ५; ७, ३, १;  
 ४, १; २, ५, १; १४, १; २६, १; वृ  
 १, ५, २१<sup>१</sup>; ६, ३<sup>१</sup>; श्वे ६, ४; आरु  
 १; कौ १, ७; २, १५<sup>१</sup>; लु २३;  
 नि २४; ते ६, २४; १०५; नाप  
 ५, २०; महा ४, ८२; योशि ४,  
 ६; ५, ४५; ६, ६१; अक्ष ४, ३१;  
 ५, ११६; अक्षि ३; १अव १२;  
 सर ३, ३२; मु २, २, १९<sup>१</sup>; का  
 २१<sup>१</sup>; सार २७८: ६; २८१: १६;  
 २९०: १२; १शिसं २५<sup>१</sup>; २शिसं २;

३५<sup>१</sup>; शि ७, १२५; हे १०; भव १,  
 ५३; गी २, ४८; ३, २७; ३०; ४,  
 १४; ४१; ५, १०; १४; ९, ९; १२,  
 ६; १०; १३, २९; १८, ६; ११; ४१  
 कर्म-कर्तुं- -तां सू ९.

कर्मकर्तुं-विरोध- -ध: सांसू  
 ६, ४९.

कर्मकर्तुं-व्यपदेश- -शात्  
 ब्रसू १, २, ४.

कर्म-काण्ड-रत्त- -त: सार  
 २९०: ९.

कर्म-काण्डो(रुड-उ)पासक-  
 -का: सार २३५: ९; २७३: ६;  
 १०; १८.

कर्म-काल- -ले हे ९.

कर्म-कौटि- -टय: पै ३, १; अध्या  
 ३७.

कर्म-क्षय- -यात् पै ३, १; -ये  
 श्वे ६, ४.

कर्म-गति- -तिम् भव ४, ८.

कर्म-गुप्ति- -स्ये वृजा ३, १९.

कर्म-चार- -रै: नाद ६<sup>१</sup>.

कर्म-चित- -तान् मुं १, २, १२.

कर्म-चोदना- -ना गी १८, १८.

कर्म-ज, जा- -जम् गी २, ५१;

-जा गी ४, १२; -जा: भव ५, १;

-जान् गी ४, ३२.

कर्म-जड- -डा: सार २२०: ४;

८; २३१: २०; २५०: ६; १०;

२७३: ६; १०; २९०: १४;

-डानाम् सार २९१: १६.

कर्म-जित्- -जित: छां ८, १, ६<sup>१</sup>.

कर्म-ज्ञान-

कर्मज्ञान-म(य>)यी-

-यीभि: सी २०.

कर्मज्ञान-साधक- -का: सार

२७८: ९.

a) मा ३४, ३। b) तैत्र्या १०, ९, १। c) तैत्र्या १०, १०, ३। d) तैत्र्या १०, १, १२। e) तु. सस्थ. टि.  
 अपि। f) 'कार्याणि' इति निसा.। g) 'कर्मणा' इति सुपा. वनि. सु-शोध:। h) मा ३४, २। i) 'चारी' इति आन.,  
 JC.। j) 'चित्त' इति काचित्क: निसा. पा.।



कर्म-ज्ञान-वैराग्य-प्रवर्तक-

-काः नाप ५, १.

कर्म-ज्ञाना(न-अ)र्थ-रूप-

कर्मज्ञानार्थरूप-ता- -तया  
नि १२.

कर्म-ज्ञाने(न-इ)न्द्रिय-वि-

षय- -येषु त्रिधा १, ६.

कर्मण्य, ण्या<sup>०</sup>- -ण्यः अशि ७,

८; नृपू २, ९९<sup>०</sup>; नृष ८५ : १२;

१३; -<sup>०</sup>ण्यम् व ४४१ : २०;

४४७ : ४; ४५१ : १७; ४५४ :

२२; -ण्याः भव ४, ७.

कर्म-त्याग- -गात् मैत्रे २, १७;

भव १, ५४.

कर्म-त्रय- -यम् वरा १, १२.

कर्म-दण्ड- -ण्डः नाप ६, ५.

कर्म-दायाद-संबन्ध- -न्धात्  
शि ७, ११२.

कर्म-देव- -वानाम् तै २, ८, ३<sup>३</sup>;

वृ ४, ३, ३३<sup>३</sup>.

कर्म-देह-

कर्मदेहो(ह-उ)पभोगदेहो-

(ह-उ)भयदेह- -हाः सांसू ५,  
१२५.

कर्म-दोष-समुद्भ(व>)वा-

-वाः भव १, ३.

कर्म-धर्म-देव-पितृ(तृ-उ)पा-

सक- -काः सार २७३ : ११.

कर्म-नामन्- -मानि वृ १, ४, ७.

कर्म-नाश- -शे स्क ७.

१कर्म-निमित्त<sup>०</sup>-

कर्मनिमित्त-योग- -गात्

सांसू ३, ६७.

२कर्म-निमित्त<sup>०</sup>- -त्तः सांसू ६,

६७.

कर्म-निर्मूलन- -नम् निर्वा

२९८ : ११.

कर्म-प्रतिपादक- -काः सार

२९० : १३.

कर्म-फल- -लम् गी ५, १२; ६,

१; -लस्य भव ५, २०; -ले गी ४,

१४; -लेन अत्र ५, ९८; -लेषु

मना २, १९<sup>१</sup>; दे ४; व ४६१ :

८९<sup>१</sup>; ४६५ : २०; -लैः मै २,

१०; ३, १; २; मैत्रि २, ७; ३, १; २.

कर्मफल-जन्मन्- -न्म मं २,

४, ३.

कर्मफल-त्याग- -गः गी १२,

१२.

कर्मफल-त्यागिन्- -गी भव

१, ५३; गी १८, ११.

कर्मफल-प्रेप्सु- -प्सुः गी

१८, २७.

कर्मफल-संयोग- -गम् गी

५, १४.

कर्मफल-हेतु- -तुः गी २, ४७.

कर्मफला(ल-आ)सङ्ग- -ङ्गम्

गी ४, २०.

कर्म-बन्ध- -न्धम् पै ४, ११;

गी २, ३९.

१कर्म-बन्धन<sup>०</sup>- -नैः भव २,

२१; गी ९, २८.

२कर्म-बन्धन<sup>०</sup>- -नः गी ३, ९.

कर्म-भक्ति-ज्ञान-संपन्न- -न्नः

नाप ३, ७७.

कर्म-भू- -भूः पै २, २६.

कर्म-मय- -यम् कौ २, ६.

कर्ममयी- -य्यः कौ २, ५.

कर्म-मार्ग- -गैः सार २२० : ८.

कर्ममार्ग-रत- -तः सार

२९० : ८.

कर्ममार्गीय- -याः सार

२९० : १३.

कर्म-मिश्रि(त>)ता- -ता सार

२२० : १०.

कर्म-योग- -गः त्रिधा २, २३;

२६; सार २८२ : १८; अद्वैमा

७; गी ५, २<sup>३</sup>; -गम् गी ३, ७;

-गस्य शि १, ३७; -गेन गी ३,

३; १३, २४.

कर्मयोग-विधि- -धौ शि ४,

६५.

कर्मयोग-समावृत्त- -तः शि

१, २९.

कर्मयोगिन्- -गिनः शि १,

३१; ३२; -गी शि १, ३६.

कर्म-रत- -तः जाद ५, १४.

कर्म-रहित- -तम् नाप ३, ६.

कर्म-रूप- -पम् इ ११ : ५.

कर्म-लेप- -पः मं २, २, ३.

कर्म-लोप- -पः हे १३.

कर्मलोप-तस्(>) नाप ५,

११<sup>६</sup>.

कर्म-वत् सांसू ३, ६०.

कर्म-वश- -शात् वसू ६.

कर्मवशा(श-अ)तुग- -गाः

मै ४, ४, २; मैत्रि ६, ३४; मैत्रे

१, ४, ४.

कर्म-विचिकित्सा- -त्सा तै १,

११, ३.

कर्म-विभ्रान्त- -न्ताः सार

२३१ : १९.

कर्म-विवाद- -दः १संन्या २,

८७.

कर्म-विशेष- -धात् सांसू ३, १०.

कर्म-वेद-जनित- -तानि सार

२५० : ५.

कर्म-वैचित्र्य- -न्यात् सांसू ३,

५१; ६, ४१.

कर्म-शुद्धि- -द्धिः मै ४, ३.

कर्म-सङ्ग- -ङ्गेन गी १४, ७.

कर्मसङ्गिन्- -ङ्गिनाम् गी

३, २६; -ङ्गिषु गी १४, १५.

कर्म-संग्रह- -हः गी १८, १८.

a) यत् प्र. (पा ४, ४, ९८) । b) ऋ ३, ४, ९ । c) ऋ १, ९१, २० । d) कस. । e) वस. । f) खि १०, १२७, १२ । g) °लोपः इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) ।

कर्म-संज्ञा-

कर्मसंज्ञित- -तः गी ८, ३.

कर्म-संचय- -ये पै ३, १; अथ्या ३९.

कर्म-संन्यास<sup>१</sup>- -सः नाप ५, १<sup>३</sup>; -सात् गी ५, २.

कर्मसंन्यासिन्- -सी नाप ५, १<sup>३</sup>; १संन्या २, १३<sup>३</sup>.

कर्म-समुद्भव- -वः गी ३, १४.

कर्म-संभूत-वासना-जडा-  
(ड-आ)त्मन्-

कर्मसंभूतवासनाजडात्म-

क- -कम् सार २९१ : १६.

कर्म-सांख्य-योगो(ग-उ)पासना-  
(ना-आ)दि- -दिभिः सु १, २, ७.

कर्म-सिद्धि- -द्धिः मैत्रि ४, ३.

कर्मा(र्म-आ)कृष्टि- -ष्टेः सांस् ३, ६२.

कर्मा(र्म-अ)क्षय- -ये १अव १९<sup>१९</sup>.

कर्मा(र्म-आ)चार-विद्या-दूर-  
-रः १संन्या २, ५९.

कर्मा(र्म-अ)ति-दूर-लाभ-  
-भः नाप ४, ३८.

कर्मा(र्म-अ)तिरिक्त- -क्ताः सार २७८ : १५.

कर्मा(र्म-अ)तिशेष- -षेण छां ८, १५, १.

कर्मा(र्म-अ)द्वैत- -तम् स्व ६२ : ४.

कर्मा(र्म-अ)धिकारिन्-

कर्माधिकारि-त्व- -त्वम्

सांस् ५, १२४.

कर्मा(र्म-अ)ध्य(धि-अ)क्ष, क्षा-

-क्षः खे ६, ११; ब्र ३, ७; ब्रवि ९४;

गोउ ६५; राधा ४, २३; क्षा गु ६९

कर्मा(र्म-अ)नुग- -गानि खे ५,

११; भव २, २४.

कर्मा(र्म-अ)नुबन्धिन्- -न्धीनि  
गी १५, २.

कर्मा(र्म-अ)नुष्ठान- -नम् नाप ३, १०.

कर्मा(र्म-अ)नुसार- -रेण मैत्रे १, ४, १३.

कर्मा(र्म-अ)नुस्मृति-शब्द-

विधि- -धिभ्यः ब्रसू ३, २, ९.

कर्मा(र्म-अ)भिप्रेरित- -ताः वसू १९.

कर्मा(र्म-अ)जित-फल- -लम्  
पै २, ३८.

कर्मा(र्म-अ)र्ह- -र्हः सु २९५ : ४

कर्मा(र्म-अ)विभाग- -गात्  
ब्रसू २, १, ३५.

कर्मा(र्म-आ)शय- -यः योसू २, १२.

कर्मिन्- -मिणः सुं १, २, ९; पत्र २; -मिभ्यः गी ६, ४६; -मीं त्रिबा २, १५.

कर्मे(र्म-इ)न्द्रिय- -यम् पै २, ११; -याणाम् भव २, १९; -याणि

मै २, ९; मैत्रि २, ६; गर्भ ५; पै १, २२; २, ४७; ३, १; शारी १;

प्रा ४, १; वरा १, ३; सार २९१ : १९; भव २, १८; वज ४, १५;

सांका २६<sup>b</sup>; गी ३, ६; -यैः पै २, २०; अज १, ३७; गी ३, ७.

कर्मेन्द्रिय-देवता- -ताः वज ४, १७.

कर्मेन्द्रिय-पञ्चक- -कम् पै २, २३.

कर्मेन्द्रिय-बुद्धीन्द्रिय- -यैः  
सांस् २, १९.

कर्मा(र्म-उ)पजनित- -तम् सार २९१ : १५.

कर्मा(र्म-उ)पभोग- -गाय मैत्रि ६, ३०.

कर्मा(र्म-उ)पासक- -काः सार २४९ : २२.

कर्मा(र्म-उ)पासन- -नानि सार २५० : ६.

कारण- -णम् खे १, १; ६, ९; १३;

गौ ३, २५; ४, ११<sup>९</sup>; १२; मै ४, ४, ११; मैत्रि ६, ३४; ब्रवि २; अ

३<sup>३</sup>; शु ३, १३; ते १, ४८<sup>३</sup>; २, ३२; ४, १०; ५, २६<sup>३</sup>; ४३; ५१;

त्रिबा १, १; योचू ७२; नाप ४, ३३; योशि ३, १; २३; २४; ५,

५५; ६, ५९; पै ३, १; महा ३, २१; अज ४, ४५; ५, ३७; १०२;

त्रिता ५, ३; पं १२; ३१-३४; रुह १५; वरा ३, ७; शा १; सर

३, १९; सु २, २, ७५; २प्र ३५; १९; २२; सार २२६ : २३; २९० :

१२; शि ७, ३९; गु ६८; ७१; भव २, ९; ४४; ४९; ३, १४; पित्र

६, १२; अवि २; रकौल १; सांका १६; गी ६, ३<sup>३</sup>; १३, २१; -गात्

गौ ४, १२; अज १, १५; १६; -गानि खे १, ३; नाप ९, २; त्रिबा

२, ११५<sup>९</sup>; गी १८, १३; -णाय शि १, १२; -णे शु ३, ११; पै ३,

१; जाद ८, ८; स ३७९ : १६; -णेन ब्रवि १७; त्रिवि ८, १२; योशि

१, ३७; -णैः मन्त्रि १९; पै ३, १; यो ३, २३; चू १८.

कारण-कारणा(ण-अ)धि(प>)-  
पा- -पा गु ६८.

कारण-कार्य-विभाग- -गात्  
सांका १५.

कारण-गुणा(ण-आ)त्मक-  
कारणगुणात्मक-त्व- -त्वात्

सांका १४.

कारण-जलो(ल-उ)परि राधा १, ५.

a) 'मैक्ष' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अथ्या.) । b) तु. सस्त्र. टि. वाक्पाणिपादपायूपस्थ->स्थाः (स्थान्) । c) 'करणानि' इति निसा. ।

कारण-ता- -ताम् अञ ४, ८१.  
 कारण-त्रय-संभूत<sup>a</sup>- -तम् वरा  
 ५, ७२.  
 कारण-त्व- -त्वम् पै३, १; -त्वात्  
 योशि २, ९; -त्वेन राप् २, २;  
 ब्रसू १, ४, १४.  
 कारण-देह-ग- -गाः आबो२४.  
 कारण-पुरुष- -षम् ना ४;  
 आबो १.  
 कारण-बद्ध- -द्धः गौ १, ११.  
 कारण-भाव- -वात् सांसू १,  
 ११८; सांका ९.  
 कारण-भेद- -दः नाप ५, १.  
 कारण-मानस- -सम् यो ३, ६<sup>b</sup>.  
 कारण-रूप-  
 कारणरूप-त्व- -त्वम् पै३, १  
 कारण-ल्य- -यः सांसू १, १२१;  
 -यात् सांसू ३, ५४.  
 कारण-शरीर- -रम् पै २, २३.  
 कारणा(ण-आ)त्मक- -कम् त्रिवि  
 २, १६.  
 कारणा(ण-आ)दि-विहीना-  
 (न-आ)त्मन्- -त्मा ते ४, ७३.  
 कारणा(ण-अ)नुमान- -नम्  
 सांसू १, १३५.  
 कारणा(ण-अ)भिन्न-रूप-  
 -पेण पं ३१.  
 कारणा(ण-अ)व्याकृत-प्राज्ञ-  
 -ज्ञः योचू ७५.  
 कारणो(ण-उ)पाधि- -धिः शु  
 ३, १२; त्रिवि ४, १२.  
 कार्यत्- -यन् गौ ५, १३.  
 \*कारया-  
 \*कारयां/कृ, कारयांचकार छां  
 ५, ११, ५.  
 कार्यित्- -ता मना २, ६१<sup>c</sup>; ६२<sup>d</sup>; मै ३, ३; मैत्रि ३, ३;

-तारम् मै ३, २; मैत्रि ३, २.  
 कार्यित्वा शि ६, १२४.  
 कार्य, यां- -र्यः त्रिवि ८, ११; यो १,  
 ६२; शि ४, १८; -र्यम् श्वे ६, ८;  
 गौ ४, ११; १२; वृजा ४, ४; ते  
 १, ४८; ४, १४; ५, २६; ४३; ६,  
 १०५; ब्रवि ३; नाप ४, ३१; त्रिवा  
 २, ९८; त्रिवि ८, १२; योशि १,  
 ३७; ९२; ९५; १०२; १५६;  
 १संन्या १, १; अञ ५, ५३; त्रिता  
 ५, १; यो १, २६; २९; ४०; ५४;  
 २, ४०; पं३१; भ१, ७; स्मृ १५; या  
 २, ३; वरा ५, ३५; सु२, २, ७५;  
 सूता १, ३६; २, ३; ६, १४; स्व  
 ६२; ४<sup>e</sup>; ५; सार २३१ : ११;  
 २४३ : १८; ६ ११; शि २, ४;  
 १४-१६; ३, १-३; ८; ४, ५; ६;  
 १९; २१; ३२; ५, ३२; ३४; ५०;  
 ६, १३४; ७, ३४; ५६; शु ६७;  
 ८४; व ४५७ : १८; भव १,  
 ३८; २, ४५; आश्र २; अबि ३;  
 कधु १, १; वउ ४, ३; सांसू १,  
 ७१; सांका ८; ९; ३२; ब्रसू ४,  
 ३, ७; गौ ३, १७; १९; ६, १; १८,  
 ५; ९; ३१; -र्यस्य सांका १४;  
 -र्या ध्या ७२; योचू ४२; महा  
 ४, ७५; त्रिता २, ३३; वरा २,  
 ५६; ५, ९; गोच ६८ : २२; बि  
 १४; शि २, १२; ४, १७; काम  
 १९; -र्याः शि २, २५; ४, ७;  
 १कौल ३; ५<sup>f</sup>; २कौल ४; -र्याणि  
 भव १, ४३; -र्यात् गौ ४, १२;  
 सांसू १, १३५; -र्ये शु ३, ११;  
 महा २, ५१; अञ १, ४३; सांसू  
 ५, ३९; ब्रसू ४, ३, १४; गौ १८,  
 २२; -र्येण महा ५, ३७; शि ७,  
 २४; -र्येषु रार ४, १०; महा ४,

१३२; ५, ७०; सु २, २, २३;  
 सार २२३ : १७; भव १, ४०.  
 कार्य-क- -कम् पं २९.  
 कार्य-करण-कर्तृ-  
 कार्यकरणकर्तृ-त्व- -त्वे गौ  
 १३, २०.  
 कार्य-कारण-  
 कार्यकारण-कर्तृ-  
 कार्यकारणकर्तृ-त्व- -त्वे  
 भव २, ८.  
 कार्यकारण-ता- -ताम् शु ३,  
 १२.  
 कार्यकारणता(ता-अ)-  
 भाव- -वात् गौ ४, ५२.  
 कार्यकारण-निर्मुक्त- -क्तम्  
 मै ५, ७.  
 कार्यकारण-बद्ध- -द्धौ गौ १,  
 ११.  
 कार्यकारण-भाव- -वः सांसू  
 १, ३८.  
 कार्यकारण-वर्जित- -तः ते  
 ५, १.  
 कार्यकारणो(ण-उ)पाधि-  
 भेद- -दात् त्रिवि ४, १२.  
 कार्य-कारण-कर्म-निर्मुक्त-  
 -क्तम् मैत्रि ६, ७.  
 कार्य-क्षम- -मम् वरा २, ६९.  
 कार्य-तस्(>)सांसू २, ६; सांका ८  
 कार्य-ता-  
 कार्यता-प्रतीति- -तेः सांसू  
 ५, ५८.  
 कार्य-त्व- -त्वम् सांसू १, १२९;  
 -त्वात् सांसू ५, ८८.  
 कार्यत्व-श्रुति- -तेः सांसू ५,  
 ४५; ६, ३२.  
 कार्य-दर्शन- -नात् सांसू १,  
 ११०; ६, ३६.

४) करण<sup>०</sup> इति श्रद्ध्या., संटि. । ५) करण<sup>०</sup> इति निसा. संटि., 'करणम् आसनम्' इति श्रद्ध्या. संटि. ।  
 ८) तैश्चात्रा १०, ६१ । ९) तैश्चात्रा १०, ६२ । १०) द्रस. गर्भितः षस. । वस्तुतः 'करण<sup>०</sup>' > 'कारण<sup>०</sup>' इत्येवं पा. एव  
 साधीयान् स्यात् (तु. शं.) । ११) वैतु. शं. षस. त्वाऽन्तम् उप. कुर्वाणः ।



कार्य-द्वय- -यम् सांस् ६, ४२.

कार्य-भेद- -दात् नाप ५, १.

कार्य-रूप- -पान् पै ३, १.

कार्य-वत्- -वान् नाप ६, ३०.

कार्य-शत- -तानि अञ्ज ४, ५८.

कार्य-सिद्ध- -द्धेन सी २२.

कार्य-सिद्धि- -द्धिः शि ६, १५८; सांस् ६, ६४.

कार्या(र्य-अ)कार्य- -र्यम्<sup>a</sup> ते ३, ५५; -र्ये गी १८, ३०.

कार्याकार्य-विनिर्णय- -यम् अञ्जि १२.

कार्याकार्य-व्यवस्थिति- -तौ गी १६, २४.

कार्या(र्य-अ)ख्यान- -नात् ब्रस् ३, ३, १८.

कार्या(र्य-अ)स्मक- -कम् त्रिवि २, १६.

कार्या(र्य-अ)त्यय- -ये ब्रस् ४, ३, १०.

कार्या(र्य-अ)भाव- -वे ते १, ४८; ५, २६.

कार्या(र्य-अ)र्थ- -र्थम् राप् १, ७.

कार्या(र्य-अ)श्रयिन्- -यिणः सांका ४३.

कार्या(र्य-उ)पाधि- -धिः शु ३, १२; त्रिवि ४, १२.

प०क०

कुरु-द्वय- -यम् राप् ४, ४२.

कुर्वत्- -वन्तः महा ६, ४३; वरा ४, २५; वन्तु पित्र ३, ६; वन् ई२२;

शु २, ५; १योत १२८; नाप १;

२; ९, २०; त्रिवा २, ५५; शां १,

५; महा ४, ११; ६, ७६; तुअ

१४; १संन्या २, ३३; पप ४१८:

२८; ४१९: २; अञ्ज १, ३७; ५७;

२, १०; ४, ५८; ९१; अञ्जि ३७;

१आ १३; यो १, ८४; वरा ४,

१६; ५, ७३; पा २, ८; सिशि

३८०: ७; अद्वैमा १९; भव १,

३७; गी ४, २१; ५, ७; १३; १२,

१०; १८, ४७; वन्तः वृ ६, १,

१४; सार २७२: २०; २७३:

२३; २८२: ५; आश्र २.

कुर्वाण,णा- -णः ससा १, २०; त्रिवा

२, १०२; मुद्र ४; भ १, १; १आ

१३; गी १८, ५६; -णातै १, ४,

२; व ४६६: ११९<sup>०</sup>; -णाः सार

२२९: ६; २४६: १२; २५४:

१४; श्या १६.

कृण्वत्- -ण्वन् नाप ४, ३८९<sup>३</sup>; व

४३७: २०९<sup>०</sup>; -ण्वते पा १, ९.

कृत्<sup>१</sup>-

कृद(त्-अ)न्त- -न्तम् २प्र

३५: ७.

कृत,ता- -तः वृ ६, ४, २३; सुबा

१९<sup>०</sup>; ए ४; अञ्ज ४, ९२; कृ११;

१७; सार २२७: ३; २४०: १७;

२४१: ५; -तम् ई१७<sup>३</sup>; प्र१, ९;

छां ४, ३, ८<sup>३</sup>; वृ १, ५, १७; ५,

१५, १९<sup>०</sup>; आरु ३; गर्भ ४; मना

१, ८९<sup>३</sup>; १२९<sup>३</sup>; अशि ३, ३; वृजा

४, ३३; ३४; नि २५; ते ५, ५७;

रार ५, ५; राउ ५, ७; महा ४,

६४; १अव ९; २२; रुजा १३;

इ १०: ११; च २१: १८; गोच

६८: १३; पा १, ८; सार २३०:

५; २३५: ५; ६; ८; २४८: २३;

२७६: १५; नी २, २१९<sup>३</sup>; लि

३१०: २९<sup>३</sup>; वद्ध ३१५: ३; शि

७, ११०; १२६; सिशि ३८३:

१३<sup>३</sup>; भव १, ३८<sup>३</sup>; ४६; सांका

७०; गी ४, १५<sup>३</sup>; १७, २८; १८,

२३; -तस्य श्वे ५, ७; मै ३, २;

मैत्रि ३, २; भव २, २३; -ता वृ

३, ९, २८; मैत्रि ६, १०; ब्रवि ६९;

रुह १५<sup>३</sup>; -ताः सार २२३: ८;

१४; -तानि श १; -ताय पा १,

३; ३, ६; -ते वृजा ७, ८; ध्या ७८;

त्रिवा २, ९९; योचू ५१; शां १,

७, १२; योशि १, १११; १संन्या

२, ९७; अञ्ज ५, १११; यो १,

१५; ५२; रुजा ३, १; शि ७, ७९;

वउ ४, २०; -तेन मुं १, २, १२;

महा ४, ४१; योशि १, ४७; १०१;

गी ३, १८.

कृत-क- -कम् नाप ५, १; ६, १;

-केन गौ ३, २२; ४, ८.

१कृत-कर्मन्<sup>०</sup>-

कृतकर्म-नाश- -शः श्वे ४.

२कृत-कर्मन्<sup>१</sup>- -मौ वपू २, ५<sup>३</sup>.

कृत-कारिता(त-अ)नुमोदित-

-ताः योसू २, ३४.

कृत-कार्य<sup>१</sup>- -०र्यं पित्र ६, १२;

-र्यः पित्र १, १; ६, १.

१कृत-कृत्य<sup>०</sup>-

कृतकृत्य-वत्- -वन्तः सार

२८८: १३; -वान् पै ३, ३; अञ्ज

५, ५७; यो ३, ३३.

२कृत-कृत्य<sup>१</sup>- -त्यः ऐ ४, ४; पहं

४<sup>३</sup>; मै२, १; मैत्रि २, १; ६, २०;

मैत्रे १, ४, १; शु १, ८; नाप ३,

८६; ६, १; मं २, ४, ६; ३, २, १;

योशि २, २१; पप ४२०: १७;

तुअ २४; सावि १०; अध्या १०;

अञ्ज ४, २८; १अव २३१<sup>३</sup>; ३३;

सौ २, ११; सांस् ३, ८४; ४, १७;

गी १५, २०; -त्यस्य जाद १, २३;

a) समाहारे द्वस. । b) कुरु (लोडि मपु१) इत्यस्य पदस्यानुवादमात्रम् । c) तैत्र्या ७, ४, २ । d) तैत्र्या २, ५, ८, ८ । e) ऋ १, ६, ३ । f) =प्रत्ययाख्या- । g) ऋ १०, ९०, १२ । h) का ४, १०, १७ । i) तैत्र्या १०, १, ८ । j) तैत्र्या १०, १, १२ । k) मा १३, ८ । l) ऋ ६, ७४, ३ । m) पूर्वेण 'अङ्गि' इति पदेनाऽस्य संबन्धः । n) 'स्थिता' इति निसा. संटि. । o) कस. । p) बस. । q) ०त्ये इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) ।

-स्याः कृ ३<sup>०</sup>.कृतकृत्य-ता- -तया १अव  
२६; -ता सांसू ३, ५४; ४, ३२;  
६, ५.कृतकृत्य-स्व- -स्वम् १अव  
१०.कृत-घ्न- -घ्नः शा २६; गोचदः  
१; -घ्नय ते ६, १०८; श ३२;  
त्रिवि ८, २०; सु १, १, ४७.कृत-त्रैलोक्य-रक्षण- -णम् रार  
२, ८५.

कृत-दृष्टि- -ष्टिम् व ४३३: ११.

कृत-द्वार- -रम् रुजा १, १२१<sup>b</sup>.

कृत-ध्यान- -नः अन्न ४, ७७.

कृत-निश्चय- -यः गी २, ३७.

कृत-पिण्ड- -ण्डेन पिं १२.

कृत-पुरश्-चरण- -णः नृपू १,  
१६; रार ५, १७.कृत-प्रयत्ना(न-अ)पेक्ष- -क्षः  
ब्रसू २, ३, ४२.

कृत-बुद्धि- -द्धिः सांसू ५, ५०.

कृत-भाव-भूत- -तः अन्न ४,  
३०; रुह ४०.

कृत-लक्षण- -णैः सु२९४: १५.

कृत-वसति- -तिः सौ १, २.

कृत-विचार- -रस्य महा५, ६१.

कृत-विद्य- -द्यः शां १, ५.

कृत-वीर्य<sup>१</sup>-कार्तवीर्य<sup>१</sup>-

-नाय व ४३४: १८.

कृत-व्यजन- -नम् रार २, १३.

कृत-संस्कार(र>)रा- -राः सार  
२३२: ५.

कृत-स्नान, ना- -नः वृजा ३, ५;

-नाम् रा ४२४: १९१<sup>०</sup>.

कृत-स्फार-विचार- -रस्य अन्न

२, ४३.

कृत-स्वा(सु-आ)गत- -तः महा  
२, २९<sup>d</sup>.कृता(त-अ)कृत- -तात् क १,  
२, १४; -ते वृ ४, ४, २२.कृता(त-अ)अलि- -लयः भ २,  
२७; -लिः शु १, १; भ २, २७;

शि ७, ६३; गी ११, १४; ३५.

कृता(त-अ)अलि-पुट, टा- -टः  
भ १, १; -टाः सार २३०: १२.कृता(त-आ)त्मन्- -त्मनः मुं ३,  
२, २; -त्मा छां ८, १३, १; -त्मानः  
मुं ३, २, ५.कृता(त-अ)त्यय- -ये ब्रसू ३,  
१, ८.कृता(त-आ)दि<sup>१</sup>- -दिभिः सूता  
४, ८.

कृता(त-अ)न्त- -न्ते गी १८, १३

कृता(त-अ)य<sup>१</sup>-कृताय-विजित- -ताय छां  
४, १, ४; ६.कृता(त-अ)र्थ- -र्थः श्वे २, १४;  
नाप ४, ३८; मं ३, १, २; ६; अन्न१, ३; १०; १आ २०; -र्थम् योसू  
२, २२; -र्थाः मुं १, २, ९; सार

२५६: १६; -र्थानाम् योसू ४, ३१.

कृतार्थ-ता- -तया वसू २६;

-ता सार २७९: २१; -ताम्

सार २५५: १२; २५९: १०.

कृता(त-आस्थ&gt;)स्था-

-स्थायाम् शां १, ७, २७.

कृतिन्- -त्ती अध्या ६; शि २,

२२.

कृतवत्- -वान् अन्न १, ८.

कृतवती- -त्यः सार २७५: ७;

२८२: १५.

कृति- -तिः छां ७, २१, १; -तिम्

छां ७, २१, १.

कृत्य- -त्यम् अव्य १<sup>३</sup>; ३; १अव  
२२; सार २७८: ९.कृत्या(त्य-अ)कृत्य- -स्यात् कै  
२, ५; १अव ३३.कृत्या- -स्याम् व ४६२: १५९<sup>०</sup>;  
-०त्ये व ४६२: १८.कृत्या(त्या-आ)दि-नाश- -कर-  
-०र अक्ष ५.कृत्रिम- -माः सार २२२: १८;  
-माणाम् गर २४.कृत्रिम-संरम्भ- -रम्भः महा ६,  
६८<sup>f</sup>.कृत्वा छां ७, २१, १; वृ ३, ८, २<sup>३</sup>;  
६, २, २; श्वे १, १४; ६, ३; कौ २,७९<sup>०</sup>; मै २, ६; मैत्रि १, २; कै १,  
११; हं १३; महा ३, ४०; योशि

१, ११.

क्रियमाण- -णम् सार २८७: ७;  
-णानि गी ३, २७; १३, २९; -णेते १, ४०; नि २४<sup>h</sup>.क्रिया- -यया महा५, १८५; -या ते  
२, २; ५, १९; ३३; नाप ६, ३४;योचू ८६; पै ४, ७; महा५, १३०;  
१संन्या २, ८७; रुह १५; पं२; कृ२५; वरा५, ३६; व४२७: ७; सुसु  
१२९<sup>१</sup>; ब्रसू ३, ३, ४५; -याः वसू१९; ध्या १५; एदि; अन्न १, ३७; ५,  
३९; १योत १२९<sup>१</sup>; वरा २, ७४;सार २३५: १९; भव २, ६७;  
-याभिः १संन्या १, १; आश्र २<sup>४</sup>;कश्चु १, १; गी ११, ४८; -याम् महा  
६, ४३; अन्न ४, ९१; सार २६३:१७; -यायाः सांसू ५, १०१;  
-यायाम् ब्रसू २, ३, ३६; -यासु

प्र ५, ६; अक्षि ४; सांका ५८.

क्रिया-कर्मन्<sup>१</sup>- -र्मं योचू ११३.

a) उत्तरेण संधिरार्थः । b) °तं द्वा° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) । c) °ताम् इति सुपा. यनि. सु-शोधः । d) °तम् इति अख्या. संटि. । e) वृश्च ८, ४५ । f) °संभारः इति निसा. संटि. । g) 'हृत्वा' इति शांआ ४, ७ । h) °णे° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः । i) °या इति निसा. । j) समाहारे द्वस. ।

क्रिया-कर्म(मे-इ)ज्य<sup>a</sup>-  
क्रियाकर्मज्य-कर्तृ<sup>b</sup>-  
-तृणाम् राप् १, १२.  
क्रिया-काण्ड- -ण्डम् त्रिता ५, १.  
क्रिया-गुण- -णैः श्वे ५, १२.  
क्रिया(या-अ)ङ्ग- -ङ्गम् ब्र ३, ४;  
नाप ३, ८४; पत्र ३, ८.  
क्रिया-ज्ञाना(न-आ)त्मन्- -त्मा  
नृउ ९, ७.  
क्रिया(या-आ)दिक- -कम् ते ५,  
८८.  
क्रिया-नाश- -शात् अध्या १२.  
क्रिया-निर्वर्तक- -कः सांसू ५,  
१२०.  
क्रिया-निर्वृत्ति- -त्तिः कर् ६;  
कथु ३, ६.  
क्रिया-पूर्व- -र्वः अध्या ४९.  
क्रिया-फला(ल-आ)श्रय-  
क्रियाफलाश्रय-त्व- -त्वम्  
योसू २, ३६.  
क्रिया-भेद- -दम् ते ६, ५३.  
क्रिया-योग- -गः अद्वैभा ४;  
योसू २, १; -गम् त्रिवा २, २४.  
क्रिया-रूप(प>)पा- -पाम् विद्या  
२.  
क्रिया-वत्- -वताम् १संन्या २,  
६१; -वन्तः सुं ३, २, १०; शा  
११; -वान् सुं ३, १, ४; भव ३, ३२.  
क्रिया-विशेष- -वात् सांसू २,  
४५.  
क्रियाविशेष-बहु(ल>)ला-  
-लाम् गी २, ४३.  
क्रिया-शक्ति- -क्तिः काला १३;  
सी ११; ३३; मा ७; जाबा २१;  
वठ ४, १२.

क्रियाशक्ति-बलो(ल-उ)-  
घत- -ताः ब्रवि ६७.  
क्रियाशक्ति-स्वरूप- -पम्  
सी २०.  
चक्रवस्- -कुषः कौ ३, १.  
चिकीर्षु- -र्षुः गी ३, २५.  
कृकर<sup>१३</sup>- -रः ब्रवि ६७; योचू २३;  
२५; त्रिवा २, ७७; ८७; जाद ४,  
२४; -रस्य जाद ४, ३४.  
कृकर-क- -कः ध्या ५७.  
कृकर-कर्मन्- -र्मं शां १, ४.  
कृकलास<sup>१०</sup>- -सस्य वृ १, ५, १४.  
कृच्छू- -च्छैः राउ ५, २१.  
कृच्छ-गत- -तः नाप ५, २८.  
कृच्छ-चान्द्रायणा(ण-आ)दि-  
-दिभिः जाद २, ३.  
कृच्छ-प्रायश्चित्त-पूर्वक- -कम् नाप  
४, ३८.  
कृच्छ-मात्र- -त्रम् १संन्या २, १.  
कृच्छिन्- -च्छी छां ५, ३, ६.  
√कृत्, न्त (छेदने), > कृन्ति, कृन्तति  
महा ३, २२; ३७.  
कृन्तयेत् लु १२<sup>१</sup>.  
कर्तृ<sup>१४</sup>-  
कर्तृ-(रि>)री<sup>१५</sup>- -रीम् शि  
६, २३१.  
कृन्तन- -नेन पं ३०.  
कृत्-, कृत- √कृ (करणे) द.  
कृत्ति<sup>१६</sup>-  
कृत्ति-वासस्- -साः द ८.  
कृत्तिका<sup>१७</sup>- -कायै व ४३८: १.  
का(र्त्तिक>)र्त्तिकी<sup>१८</sup>- -क्याम् सार  
२८६: ७; आश्र ३.  
कार्तिकेय<sup>१९</sup>-  
कार्तिकेया(य-अ)धिदैवत- -तम्

रुजा २, ६.  
कृत्स्न, त्सना<sup>२०</sup>- -त्स्नः वृ ४, ५, १३<sup>२</sup>;  
-त्स्नम् क २, ३, १८; अशि २,  
३०; अ ३; वृजा ४, ३२; १अव  
६; जाद १०, १२; सांका ३६;  
गी १, ४०; ७, २९; ९, ८; १०,  
४२; ११, ७; १३; १३, ३३<sup>३</sup>;  
-त्स्नस्य सांका ७२; गी ७, ६;  
-त्स्नाम् गौ ४, ८५; मु२, २, ५०;  
शि ६, २१६; ७, २९.  
कात्स्न्य<sup>२१</sup>- -त्स्न्येन वसू ३, २, ३.  
कृत्स्न-कर्म-कृत्- -कृत् गी ४, १८.  
कृत्स्न-क्षय- -यः मैत्रि ६, १७; -ये  
मैत्रि ४, ६<sup>४</sup>.  
कृत्स्न-जगत्- -गताम् पाशु १, ३.  
कृत्स्न-ता- -ता वृ १, ४, १७.  
कृत्स्न-प्रसक्ति- -क्तिः वसू २, १, २६.  
कृत्स्न-भाव- -वात् वसू ३, ४, ४८.  
कृत्स्न-वत् गी १८, २२.  
कृत्स्न-विद्- -वित् गी ३, २९.  
कृत्स्न-शस् (>) शु १, १४; योशि  
३, ७.  
√कृप् (बधा.)  
१कृप्<sup>२२</sup>- -पः वृजा ४, १६.  
२कृप्<sup>२३</sup>- -पः गी १, ८.  
कृपण<sup>२४</sup>- -णः वृ ३, ८, १०; गौ ३, १;  
-णम् अन्न १, ४३; शि ६, ११३;  
-णाः गौ ४, ९४; गी २, ४९.  
कार्पण्य- -ण्यम् मै ३, ५; मैत्रि  
३, ५; १योत १२; योशि १, १०;  
अन्न ४, १३.  
कार्पण्य-दोषो(ष-उ)पहत-  
स्व-भाव- -वः गी २, ७.  
१कृपा<sup>२५</sup>- -पया शु १, ११; श ६;  
योशि १, १; ५०; जाबा ७; मु १,

a) समाहारे द्वस. न. ह्रस्वश्च (पा २, ४, १७; १, २, ४७) । b) षत । च. अर्थे ष. द. (वैतु. उन्न. °ज्या° इति दीर्घान्तमध्यः पा. च द्वस. चेति, अन्. °मेविक° इति पा. च) । c) बस. । d) व्युः? = वायुविशेष- । e) व्यु. वैपश् यद. । f) 'चिन्तयेत्' इति अज्या. । g) भावे कृत् । h) उप. कर्तरि <√रा । i) = नञ्प्रविशेष- । व्यु. वैपश् यद. । j) °त्स्नः क्ष° इति सात. । k) धा. अर्थः? = वसुविशेष- । l) धा. अर्थः? = योद्धृविशेष- । m) दौर्बल्ये धा. वृत्तिः (तु. वैपश् अपि) । n) दयायां धा. वृत्तिः ।



१,६; १०; सार २३६: २०; गी  
१, २८; २, १; -पा सार २३०:  
२१; २३४: १९; २५८: ४; -पाम्  
पं २७; सार २२६: १४; २३०:  
१६; २३६: १९; २५७: ५.  
कृपा-दृष्टि- -ष्ट्या सार २७४:  
१८; २८५: २३.  
कृपा-भाव- -व: सार २५७: १३  
कृपा(पा-अ)र्थ- -र्थे कृ १९.  
कृपा(पा-आ)लय- -लयं त्रिवि ८,  
१७.  
कृपा-वश- -शेन सार २४१: २२  
कृपा(पा-आ)वि(ष्ट)ष्टा- -ष्टा  
सार २४३: १९.  
कृपा-समभ्यसन- -नात् सार  
२३२: ८.  
२कृपा<sup>१</sup>- -पा गार ४०७: २०;  
सुमु १२.  
?कृमात्मानम्<sup>२</sup> वि १६.  
कृमि<sup>३</sup>- -मय: स्व ६१: २२; भव २,  
६६; -मि: स्व ६१: २३; -मिभ्य:  
वृ ६, १, १४; -मीणाम् नाप ४, २६  
कृमि-कीट-पतङ्ग- -ङ्गान् नाप ६, ३५  
कृमि-कीटा(ट-आ)दि- -दय: राउ  
३, ४; नापू ५, २२.  
कृमि-दृष्ट- -ष्टम् रुजा १, ११.  
कृमि-दोष- -षम् योशि १, ९२;  
यो १, २५.  
✓कृश, > कर्श  
कशैयत्- -यन्त: गी १७, ६.  
कृश, श्रा<sup>४</sup>- -श: ध्या ९३, १; नाप  
७; महा ४, १२५; १संन्या १,  
१९; -शम् ते ४, २२; ६, ११;  
-शानाम् छां ४, ४, ५.

कृश-स्व- -स्वम् १योत ४६.  
कृश-रोगार्त-वृद्ध- -द्धानाम् शि  
७, ९५.  
कृश-वपुस्- -पु: शां १, ७, १४.  
कृशा(श-अङ्ग)ङ्गा- -ङ्गाम् वृजा  
३, १.  
कृशी✓भू  
कृशी-भूत्वा कशु १, १; पप  
४१९: ९; १संन्या २, ५९.  
कृशक<sup>५</sup>-  
कार्शके(य>)यी<sup>६</sup>-  
कार्शकेयी-पुत्र- -त्र: -त्रात्  
वृ ६, ५, २४.  
✓कृष्, > कर्षि, कर्षति ध्या ६०<sup>७</sup>; योचू  
२९; ३०<sup>८</sup>; योशि ६, ५३<sup>९</sup>; गी  
१५, ७.  
कृष्णन्ति आपे ७: ७.  
कर्षयेत् ध्या ३९.  
कर्षण<sup>१०</sup>- -णम् शि ७, ११३.  
कृषि-  
कृषि-कर्मन्- -र्मणि शि ७, ११९  
कृषि-गौरक्ष-वाणिज्य<sup>११</sup>- -ज्यम्  
आश्र २.  
कृषि-गौरक्ष्य-वाणिज्य<sup>१२</sup>- -ज्यम्  
गी १८, ४४<sup>१३</sup>.  
?कृषि-श्रवणा(ण-आ)श्र(दि-अ)-  
खिल-क्रिया-कर्तृ- -र्ता पै २,  
३७<sup>१४</sup>.  
कृष्या(षि-आ)दि-कर्मन्- -र्मसु  
जाबा १२.  
१कृष्ण, ण्णा<sup>१५</sup>- -ण: गर्भ २; योचू  
७६; गी ८, २५; -णम् छां १,  
६, ५; ६; ७, ४<sup>१६</sup>; ३, ३, ३; ४, ३; ६,  
४, १-४; ६; वृ २, २, २; अशि २,

२९; सुबा १५; १योत ९५; वउ  
२, २३<sup>१७</sup>; ३, ९; -णस्य कौ ४,  
१९; -णा अशि ५, १०; अ १;  
२प्र ३४: २१; गार ४०६: १३;  
-णा: मना २, ६४<sup>१८</sup>; लु ८<sup>१९</sup>;  
रुजा १, ९; -णान् रुजा १, १०;  
-णानाम् शि ४, ४५; -णाम्  
शि ६, २०२; -णो वृजा ३, ४;  
-णोन व ४३७: ६५<sup>२०</sup>.  
कृष्ण-गन्ध-माख्या(त्य-अ)नुलेप-  
(न>)ना- -ना गार ४०६:  
२२.  
कृष्ण-जीरक<sup>२१</sup>- -कम् शि ६, ७४.  
कृष्ण-तामस<sup>२२</sup>- -स: ध्या १३.  
कृष्ण-पक्ष<sup>२३</sup>- -क्ष: प्र १, १२.  
कृष्णपक्ष-क्षयो(य-उ)त्सव-  
-वा: इ १५: १७.  
कृष्णपक्ष-रिक्त-संध्या- -ध्याम्  
व ४३३: १०.  
कृष्ण-पिङ्गल<sup>२४</sup>- -ल: शां ३, १; -लम्  
वृपू १, १२; भ २, ३; मना २,  
२३<sup>२५</sup>; मृ १४; १७; व ४६४:  
११५<sup>२६</sup>; २शिसं ३०.  
कृष्ण-यजुर्-वेद-ग(त>)ता-  
-तानाम् सु १, २, ३.  
कृष्ण-वर्ण, र्णा<sup>२७</sup>- -र्ण: वसू १०; -र्णम्  
ध्या ९३, ४; -र्णा वृजा १, १;  
-र्णे वि ५.  
कृष्ण-वर्त्मन्<sup>२८</sup>- -र्त्मन: मैत्रि ६, ३५;  
-र्त्मा नाप ३, ३७.  
कृष्ण-वासस्<sup>२९</sup>- -ससे व ४६४: २२.  
कृष्ण-वासि(न्>)नी- -नी गार  
४०६: २२.  
कृष्णा(ष्ण-अङ्ग)ङ्गी- -ङ्गी शां

a) =शक्तिविशेष- । धा. हिंसायां वृत्तिः । b) 'कृपाऽऽत्मनो ध्यानम्' इति शोधः द्र. । c) व्यु. वैप१ यद्र. ।  
d) कः प्र. (पा ३, १, १३५; पाम ८, २, ५५) । e) 'कृशीभूत्वा' इति अज्या. । f) 'कृशः भूत्वा' इति अज्या. ।  
g) 'र्ष' इति आन. संदि. । h) =कृषि- । i) समाहारे द्वस. । मध्ये 'रक्ष' इति माप. द्र. । j) समाहारे द्वस. ।  
k) 'गौरक्ष्य' इति JC. । l) पा. १ दृष्टि इत्याद्यपदपरः शोधः द्र. । m) वर्णे मुख्या वृत्तिर्गौणी च तदाश्रिताऽर्थ-  
न्तरेष्वपि । व्यु. वैप१ यद्र. । n) तैआआ १०, ६४ । o) 'ण्णा' इति अज्या. । p) ऋ १, ३५, २ । q) कस. ।  
r) तैआ १०, १२, १ । s) वस. ।

१,६; गार ४०६ : २२.  
 १कृष्णा(ष्ण-अ)जिन<sup>a</sup> - नेशिदि, ७०  
 कृष्णाजिनो(न-उ)परि नाप ४,  
 ३८.  
 २कृष्णा(ष्ण-अ)जिन<sup>b</sup> -  
 काष्णाजिनि - नि: वसु ३, १, ९.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)यस<sup>c</sup> - समुच्छादि, १, ६  
 काष्णायस - समु छां ६, १, ६;  
 पं ३१.  
 २कृष्णा<sup>d</sup> - ०ष्ण त्रिवि ७, ४०; गोउ  
 २; दत्ता १, ७. कलि २५; नाउ  
 ३, ११; गी १, २८; ३२; ४१;  
 ५, १; ६, ३४; ३७; ३९; ११, ४१;  
 १७, १; -ष्ण: त्रिवि ७, ४१; गोपू  
 ३; ४; १६; १९; २२; ४९; गोउ  
 १; ५; १२; १३; १६; २८; ४३;  
 कृ १२; नापू ५, ७; राधा १, २;  
 ३, ७; ४, २; वटु ३१४: २०;  
 गी १८, ७८; -ष्णम् सुबा ९;  
 गोपू १०; १५; गोउ १; ३४; सु  
 १, १, ३८; गोच ६९: १७; १९;  
 गी ११, ३५; -ष्णस्य गोउ २५;  
 राधा १, १२; -ष्णात् गोपू २५;  
 गी १८, ७५; -ष्णाय छां ३, १७,  
 ६; त्रिवि ७, ३०; ३२; ३४; ३५;  
 ३७; ४६; गोपू १३; १८; ३५;  
 नापू ५, ११; सार २७५: १९;  
 -ष्णेन मना १, ८९; य ५९; सु  
 २९३: ५.  
 कृष्ण-गोपी - पीनाम् गोच ६९: ४.  
 कृष्णगोपी-जल-क्रीडा-  
 कुङ्कुम-सम् गोच ६९: ६.  
 कृष्णगोपी-रतो(त-उ)हूत-  
 -तम् गोच ६९: १.  
 कृष्ण-चन्द्र - च्द्रम् राधा ३, १४.

कृष्ण-ध्यान-परा(र-अ)यण- -ण:  
 राधा १, ७.  
 कृष्ण-प्रि(य>)या<sup>e</sup> - या राधा १, २३  
 कृष्ण-मूर्ति - ति: गोउ २५.  
 कृष्ण-राम - मयो: कृ ६.  
 कृष्ण-रूप-  
 कृष्णरूपिन् - पी गोउ ३३.  
 कृष्ण-वन<sup>f</sup> - नम् गोउ २४.  
 कृष्ण-सेवा - वाम् राधा १, २६.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)ङ्ग्रि-पञ्च-सुति-  
 -तिभि: वपं ३१२: १९.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)त्मक- -क: गोउ ३०.  
 कृष्णात्मिका - का गोउ ४४.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)दि-नामन् - मभि:  
 वा १०; १४.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)दि-पञ्च-नामन्-  
 -मभि: गोच ६६: १३.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)वतार - -रे कृ १.  
 कृष्णा(ष्ण-अ)वभासक - -कम् गोपू  
 २९.  
 ३कृष्ण<sup>g</sup> -  
 कृष्ण-द्वैपायन<sup>h</sup> - न: शु ३, २०;  
 -नम् महा २, १४.  
 कृष्णद्वैपायना(न-अ)द्य - द्यै:  
 योरा ४.  
 ✓कृत्(संशब्दने)>कीर्त्त, कीर्त्ति, कीर्त्त-  
 येत् मैत्रिदि, २९; शिउ, १५; २२.  
 कीर्त्यते रार ५, ६; ११; सी ४.  
 कीर्त्तन - नम् कृ ५; कश्चु ३, ५;  
 भव ५, १९; -नात् राउ ५, १३;  
 रुह १७; -नेन राधा १, २८;  
 ३, १८; ४, २५.  
 कीर्त्तयत् - यन्त: गी ९, १४.  
 १कीर्त्ति - ति: तै १, १०, १; छां ३,  
 १३, ४; कौ २, १५; नाप ४, ३८९;

भव ४, १०; गी १०, ३४; -तिम्  
 वृ १, ४, ७; मना २, ६३९<sup>i</sup>; ६४९<sup>j</sup>;  
 अरु २३९<sup>k</sup>; गी २, ३३; -र्या तै  
 ३, ६-९, १; छां २, ११-२०, २;  
 ३, १८, ३-६.  
 कीर्त्ति-मत् - मान् छां ३, १३, ४  
 २कीर्त्ति<sup>l</sup> - ति: सौ १, ३; तारा  
 ८३: २४.  
 कीर्त्ति-देवी - व्या सार २५२:  
 ११.  
 कीर्त्तित, ता - तम् गौ ४, ७२; ९६;  
 नाद २३; वरा ५, १६; शि ४,  
 ३७; ५, ३५; यु ७८; -ता शिदि,  
 ८६; -ता: वरा १, १५; नापू १,  
 ८; -तानि नाउ ३, १८.  
 केकय<sup>m</sup> -  
 कैकेय<sup>n</sup> - य: छां ५, ११, ४.  
 कैकेयी -  
 कैकेयी-तनय - यम् रार २,  
 १०३.  
 केका<sup>o</sup> -  
 केका(का-अ)भि(ज्ञ>)ज्ञा<sup>p</sup> - ज्ञा  
 सार २६३: ५.  
 केत(क>)की<sup>q</sup> - क्य: सार २६७: १३  
 १केतु - / कित् (ज्ञाने) द.  
 २केतु<sup>r</sup> - तवे व ४३७: २१; -तु:  
 गार ४०८: ११.  
 ३केतु<sup>s</sup> - तुम् वपू १, ५.  
 केदार<sup>t</sup> - रम् जाद ४, ४८; -रे शि  
 ६, १८९.  
 केदारो(र-उ)दक-पान - नेन योशि  
 ६, ४२.  
 केन<sup>u</sup> -  
 केन-छान्दोग्या(ग्य-अ)रुणि-मैत्राय-  
 णी<sup>v</sup> - मैत्रेयी<sup>w</sup> - वज्रसूचिका-योग-

a) कस. । b) वस. । c) कस. उप. समासान्तप् टच् प्र. (पा ५, ४, ९४) । d) व्यु. ? = वासुदेव- ।  
 e) तैआ १०, १, ८ । f) व्यु. ? = वेदव्यास-मुनि- । g) तैआ ७, १०, १ । h) तैआआ १०, ६३ । i) तैआआ १०,  
 ६४ । j) तैआ १, २७, ३ । k) घा. अर्थ: ? = देवी- । l) तु. पा ४, १, १६६; ७, ३, २ । m) व्यु. ? । n) व्यु. ?  
 = ग्रहविशेष- । o) व्यु. ? = विप. (तु. नादी- = अष्ट-) । p) व्यु. ? = तीर्थविशेष- । q) = तदारूपोपनिषद्- । r) तु. MW.;  
 वैतु. निषा., अ. व्या. °णि° इति । s) वैतु. MW. °वि इति ।

चूडामणि-वासुदेव-महत्-संन्या-  
सा(स-अ)व्यक्त-कुण्डिका-सावि-  
त्री-रुद्रा(द-अ)क्ष-जाबालदर्शन-  
जाबालि<sup>a</sup>-लीनाम् सु १,२,४.  
केयूर<sup>१३b</sup>-रम् राधा ३,११.  
केयूर-कटक-कानि सार २२४:  
२०; के रुजा १,१९.  
केयूर(र-अ)ङ्गद-कङ्कण-णैः सार  
२,३७.  
केलि<sup>१०</sup>-लिः करु ५; कश्रु ३, ५;  
निर्वा २९७: ५.  
केलि-कुङ्कुम-संभव-वम् गोच  
६८: २३.  
केलि-कौतुका(क-आ)त्मन्-त्मने  
सार २५१: १२.  
केलि-(द>)दा<sup>१</sup>-दा सार २२३: ४.  
केलि-संपत्ति-समवेत-तम् सार  
२६०: १८.  
केलि-सुख-खम् सार २८४: २१.  
केवर्त<sup>b</sup>-  
केवर्त<sup>१</sup>-  
केवर्त-कन्यका-कायाम् वसू  
१४.  
१केवल, ला<sup>d</sup>-लः श्वे १,११; ४,१८;  
६,११; मैत्रे २,१; ३,२२; ते ३,  
४; ४,४५<sup>३</sup>; ब्र ३,७; ब्रवि ९४;  
१योत १३; नाप ९, १०; योचू  
८४; स्क ६; १०; सार २,६; योशि  
६,६०; १संन्या २,३६; ५५; अन्न  
५,८०; ९५; अध्या ९; १६; ६९;  
१आ १; २आ ३; जाद १०, ५;  
११; गोच ६५; राधा ४, २४;  
९<sup>११</sup>व ४३९: ५; ४४४: १०;  
४४९: १९; ४५३: ७; लम्<sup>१</sup>  
मैत्रे २, २९; शु १, १८; ३, १५;  
ते ३, १<sup>३</sup>; २<sup>४</sup>; ३; ४; ५<sup>३</sup>; २१; २६;  
३५; ५, १७; ३१; ६, ४; ४८; ५५;

६५; ७२; १०२; १०५; १०६;  
आबो १२; नाप ४, २५; सार  
१, ७; ८; २, ५; ४, ११; ५, १४;  
शां २, १; महा २, १३; २७; ४,  
२८; १२१; ६, ३८; योशि १, १२;  
३२; १२८; ४, १८; अव्य १<sup>६</sup>;  
अन्न १, २६; ५१; २, ९; ४, ३३;  
६७; अक्षि ३८; १आ १; ३; पाशु  
२, १९; रुह ४२; ४७; ग २<sup>४</sup>;  
जाद १०, १२; गोपू ४७; वरा  
२, ४२; ६५; ७२; ७३; ३, १५<sup>४</sup>;  
१९; ४, १७; २०; इ १४: १७;  
सार २३६: १७; २४९: १७;  
२७४: १२; लिं ३१०: १५;  
शि ६, ९७; ७, २२; ८०; १११;  
हे १; यो १५; भव १, ७; सांका  
६४; गी ४, २१; १८, १६; -ला  
योशि ४, २; अन्न ५, ८५; गुह २;  
-ला: महा ३, ५; -ले ते ६, ९८;  
१संन्या २, १८; -लै: गी ५, ११.  
कैवल्य<sup>११</sup>-ल्यम् अना ३०; सुबा  
१३; नि ३; शु ३, २३<sup>३</sup>; ध्या १०६;  
१योत ६; १७; नाप ४, ३७; ५,  
१; ९, २०; त्रिब्रा २, १६६; द २१;  
त्रिवि ४, ४; ७, १७; राउ ५, ११;  
शां १, ७, २३; पै ४, ५<sup>३</sup>; योशि  
१, ३; १५; १संन्या २, ५९; अध्या  
१६; २अव ३३८: ९; १०; मु १,  
२, ७; अद्वै २१; नृष ८५: ९; लिं  
३१०: १५; पित्र ६, २०<sup>३</sup>; सांका  
१९; ६८; योसू २, २५; ३, ५१;  
५६; ४, ३३; -ल्यस्य गोपू २९;  
-ल्याय गु ८४; -ल्ये शु १, ४.  
कैवल्य-धर्म-रत्त-ता: सार  
२३५: ५.  
कैवल्य-पद-दम् अन्न ५,  
१५.

कैवल्य-प्राग्-भार-रम्  
योसू ४, २५.  
कैवल्य-प्राप्ति-सये त्रिब्रा  
२, १२२.  
कैवल्य-प्राप्त्यु(सि-उ)-  
पाय-यम् नाप ७.  
कैवल्य-मुक्ति-क्ति: मु १,  
१, १८; २६; २, ६; ७.  
कैवल्य-साधन-नम् जाद  
६, ४७.  
कैवल्य-सिद्धि-द-दम्  
योचू १; त्रिब्रा २, १४८.  
कैवल्य-स्व-रूप-पम् लिं  
३१०: २०.  
कैवल्य(ल्य-आ)त्मन्-स्मा  
अद्वै ३.  
कैवल्य(ल्य-आ)नन्द-रूप-  
पम् सि ६, ३.  
कैवल्य(ल्य-अ)र्थ-र्थम्  
सांस् १, १४४; सांका १७; २१.  
कैवल्य(ल्य-आ)श्रम-मे  
नाप ३, २१; २५-२७.  
केवल-जीव-युक्त-क्तम् शारी ५<sup>१</sup>.  
केवल-ता-ता महा ४, ५४.  
केवल-त्व-त्वम् मैत्रि ६, २१.  
केवल-निरा(र-आ)कार-रस्य  
त्रिवि २, १३.  
केवल-निराकार-त्व-त्वम् त्रिवि  
२, १३.  
केवल-परमा(म-आ)त्म-संबन्धि-  
(न>)नी-नी ध्या ९३, १४.  
केवल-परमे(म-ई)श्वर-संबन्धि-  
(न>)नी-नी ध्या ९३, १३.  
केवल-प्राप्ति-कारक-क: योशि १,  
८९.  
केवल-मन्त्र-  
केवलमन्त्र-मय-

a) = उपनिषद् विशेष-। b) व्यु. १। c) व्यु. १। < / किं इति अभा., MW.; / केल् इत्यपि अभा.। d) व्यु.  
वैपश्च यद्र.। e) ऋ १, ७, १०। f) वा. कचित् क्वि. द्र.। g) °ल° इति अख्या.। h) 'कल्पितम्' इति अख्या. संदि.।  
i) °वसं° इति अख्या.।



केवलमन्त्रमय-दिव्यतेजो-  
मय-निरतिशयानन्दमय-महा-  
विष्णु-सारूप्य-विग्रह-हम्  
त्रिवि ५, १३.  
केवल-मोक्षा(ज्ञ-अ)पेक्षा-संक-  
ल्प-ल्पः नि ४०.  
केवल-रस-निधि-धिः सार  
२५२:२०.  
केवल-रूप-  
केवलरूप-तस्(>) सु२, २, ६४  
केवल-सत्ता-मात्र-स्व-भाव-  
-वम् ससा १, ३८.  
केवल-सन्-मात्र-सार-भूत-तः  
आबो ६.  
केवला(ल-आ)कार-रूप-पःते ३, ५  
केवला(ल-अ)खण्ड-बोध-धः  
कुं २६.  
केवला(ल-आ)त्मन्-स्मना महा ४,  
८५; १आ१९; स्मा ते ३, २१.  
केवला(ल-आ)भास-सम् महा ४,  
१२१.  
केवला(ल-अ)मल-रूप-  
केवला(ल-अ)मलरूप-वत्-वान् महा  
६, ७९.  
केवला(ल-अ)स्पन्द-शुद्धा(द-आ)-  
त्मन्-स्मनि १संन्या २, ३७.  
केवली/भू  
केवली-भाव-वम् अज्ञ १, २९;  
महा ४, ७; ६३.  
केवले(ल-इ)न्द्रिय-यः सार २६१:  
१६.  
२केवल<sup>१०</sup>-लः यो १, २०; १योत  
५०; शां १, ७, १४.  
केवल-कुम्भक-कः १योत ५०;  
-कम् १योत ६८; काव, के शां  
१, ७, १४.  
केवल-सिद्धि-द्धिः यो १, २०.

केवलसिद्धि-पर्यै(रि-अ)न्त-  
न्तम् शां १, ७, १४.  
केश<sup>१</sup>-शः वृ ४, २, ३; ३, २०; कौ  
४, १९; सुबा ४; -शाः वृ ३, २,  
१३; गर्भे ५; प्रा ४, १; वरा ५,  
४; -शान् नापू ४, ३८<sup>३</sup>; १संन्या  
१, १; कः १<sup>१</sup>; म २, २१; लिं  
३१०: २३; कश्चु १, १; २, २; ३.  
केश-कज्जल-धारि(न्>)णी-पयः  
महा ३, ४३; या २, ९.  
केश-कीटा(ट-आ)दि-दिभिः भव  
४, १२.  
केश-केशा(श-अ)पनुत्ति-त्तये  
शि ६, २३१.  
केश-चेला(ल-अ)स्थि-भक्षि(न्>)-  
णी-णीम् वृजा ३, १.  
केश-च्छटा-  
केशच्छटा-चिकण-सुगन्ध-  
रस-प्लावित-सीमन्त-सिन्दूर-  
सेचित-मणि-घटित-सुवर्ण-  
भूषण-जैः सार २४४: ९.  
केश-धारिन्-रिणः व ३, ३; नाप  
३, ८३; पत्र ३, ७.  
केश-बन्धन-वस्त्र-स्त्राणि सार  
२२८: १६.  
केश-लोमन्-मानि मुं १, १, ७; गु  
२७.  
केश-श्मश्रु-नख-खानि नाप४, ३८  
केश-श्मश्रु-रोम-नख-खानि कश्चु  
२, ३.  
केश-श्मश्रु-लोम-नख-खानि कः  
१.  
केश-समूह-शिखा-  
केशसमूहशिखा-प्रत्यक्ष<sup>१</sup>-  
केशसमूहशिखाप्रत्यक्ष-का-  
पांसतन्तुकृतोपवीत<sup>१</sup>-  
केशसमूहशिखाप्रत्यक्ष-

कार्पासतन्तुकृतोपवीतिन्-  
केशसमूहशिखाप्रत्य-  
क्षकार्पासतन्तुकृतोपवीति-स्व-  
त्वम् पत्र २.  
केशा(श-अ)न्त-न्तः तै १, ६, १;  
-न्तम् यो २, ३५.  
केशा(श-अ)स्थि-स्थीनि शि ७,  
५१.  
केशव<sup>१२</sup>-व गोपू ४५; नापू ३,  
१६; गी १, ३१; २, ५४; ३, १;  
१०, १४; -वम् रुह ७; -वस्य  
शि ७, १३०; गी ११, ३५; -वाय  
त्रिवि ७, ४१.  
केशवा(व-आ)दि-दीनाम् का ६;  
नार ६.  
केशवादि-चतुर्-विंशति-तिः  
त्रिवि ७, २०.  
केशवादचतुर्विंशत्य(ति-अ)-  
नुक्रम-मम् नापू ६, १२.  
केशवादि-चतुर्विंशति-मन्त्र-  
न्त्राः त्रिवि ७, ४१.  
केशवादि-द्वा-दश-नामन्-  
-मभिः ऊ६४: ११; गोच६६: १२  
केशवादि-नामन्-मभिः वा  
८; १३.  
केशवा(व-अ)र्जुन-नयोः गी १८,  
७६.  
केशिन्<sup>१३</sup>-  
केशि-चाणूर-घातिन्<sup>१</sup>-तिने गोपू  
३८.  
केशि-निषूदन<sup>१</sup>-न गी १८, १.  
केसर<sup>१४</sup>-रे रापू ४, ४५; हं ८; -रेषु  
नाप ६, १; रापू ४, ४८.  
केसर-कर्पूर-मृगमद-रस<sup>१</sup>-सैः  
सार २३३: २०.  
केसर-कर्पूर-मृगमदा(द-अ)गुरु-  
रस<sup>१</sup>-सान् सार २२८: १८.

a) विशिष्टः आन. पाभे, °लं सत्ता° इति अच्चा. । b) °लानन्द° इति अच्चा. । c) विशेवि. । प्रकरण-  
सामर्थ्यात् =कुम्भक- । d) व्यु. वैपश् यद्. । e) षस. गर्भितो मध्यमपदलोपः कस. । f) उप. =साक्षात्कार- ।  
g) दस. । h) व्यु. ? =रक्षण- । i) व्यु. ? <केश- इति MW. । =राक्षसविशेष- ।

केसर-मृगमद-कपूर-चन्दन-नाना-

रेखा-संयोजि-लला(ट&gt;)-

टा-या सार २४४:११.

कैकस-कैकसेय-२कीकस-द्र.

कैकेय-कैकेयी-कैकेय-द्र.

कैतव-कितव-द्र.

कैवर्त-केवर्त-द्र.

कैवल्य-१केवल-द्र.

कैलास<sup>१०</sup>-सः ते ६,१८; सि १,३;

-सम् मैत्रे २,१.

कैलास-क्षेत्र-त्रम् म ४९:९.

कैलास-मूल-लम् गार ४०८:९.

कैलास-शिखर-रे २शिसं २५.

कैलासशिखरा(र-आ)वास-

-सम् म १,१.

कैलासशिखरा(र-आ)सीन-

-नम् शि १,१.

कैलास-सिद्धि-द्वि: लिं ३१०:१९

कैलास-स्वरूप-पम् लिं ३१०:  
१९.

कैशोरि-, कैशोर्य-२कैशोर-द्र.

को<sup>१०</sup>-को-विद्<sup>१०</sup>-दा: सार २७५:१५.कोकिल<sup>१०</sup>-ला: सार २३३:१६.कोकिल-पिक-शुक-का: सार  
२५३:१४.१कोटि<sup>१०</sup>-उय: गर्भ ५; निरु २,२;

वरा ३,२२; सार २५१:५; २५९:

१३; -टि: रुजा १,४; -टिभि:

सिशि ३८०:६; -टिम् शि ६,

१७६; -टिम्-टिम् शि ६,२०५;

-व्या शि ६,२१२.

कोटि-कोटि-

कोटिकोटि-गणा(ण-अ)ध्य-

(धि-अ)क्ष-क्षम् पं ११.

कोटिकोटि-गुणा(ण-अ)धिक-

-क: राउ ५,५.

कोटिकोटि-शस्(&gt;): गु २८.

कोटिकोटि-सहस्र-स्वाणि राउ  
५,९.

कोटि-गुण-णम् गोच ६८:१२;

शां १,२.

कोटि-गो-प्रदान-फल-लम्

वृजा ७,८; रुजा ३,१.

कोटि-चन्द्र-प्रम-भम् सार

२४५:१७.

कोटि-चन्द्रा(न्द्र-आ)ह्लाद-दम्

सार २४८:११.

कोटि-जन्मा(न्म-अ)जित-तै: वरा

४,४५.

कोटि-जप-पात् काम ७.

कोटि-दिवा-कर-सम-प्र(भ&gt;)-

भा-०मे व ४३१:१२.

कोटि-दोष-पम् ते ३,६८.

कोटि-ब्रह्मा(ह्म-अ)ण्ड-रेणु-

-णव: महा २,४.

कोटि-यति-ज्ञ-ज्ञ: रार १,९.

कोटि-वैकुण्ठ-व्यापि-रत्न-कुड्य-

-ड्यै: सार २६२:१.

कोटि-शत-तम् रुजा १,५.

कोटि-शस्(&gt;): १योत २३; महा

५,१३६; सार २२१:३; ५,१९;

२२२:१६; २२३:२; ५,१३;

२४५:२२; २५८:१४; २६६:

३; २७४:२३; २८१:२०;

२८५:२१.

कोटि-सूर्य-प्रकाश-वैभव-संका-

श-शम् अता ७.

कोटि-सूर्य-प्रकाश-संकाश-

-शम् मं १,२,१३.

कोटि-सूर्य-प्रतीकाश-शम् वउ

३,२९; सार २३०:२३; २४५:

१७; २४८:११.

कोटि-सूर्य-प्रभा-भासु(र&gt;)रा-

-०रे व ४५८:१.

कोट्या(टि-आ)नन्द-रू(प&gt;)पा-

-पा सार २५२:२१.

२को(टि>)टी<sup>१</sup>-अय: गौ ४,८४.कोण<sup>१</sup>-णेन रार २,१३.

कोण-त्रय-यम् रापू ४,१०.

कोण-पाश्वर्-इवे रापू ४,४३.

कोणा(ण-अ)प्र-प्रे रार ३,१.

कोणाप्रा(प्र-अ)न्तर-रेषु रापू

४,४४.

कोदण्ड<sup>१०</sup>-

कोदण्ड-द्वय-मध्य-ध्ये ध्या १०४

कोप-कोपिष्ठ-कुप द.

१कोम(ल>)ला<sup>१०</sup>-ला सार २६३:  
२१.

कोमल-कल-लम् सार २५३:१४.

कोमला(ल-अ)ङ्कुरा(र-आ)वेश-

-शेन सार २२९:४.

२कोम(ल>)ला<sup>११</sup>-ला सुसु १२.कोल<sup>११</sup>-ले छां ७,३,१.कोश<sup>११</sup>-श: तै १,४,१; छां ३,१५,

१; सुबा ११; ससा १,१२;

१३; १५-१७; नाप ४,३८९<sup>११</sup>;

त्रिब्रा २,१२; मैत्रे ३,४; मैत्रि ३,४;

अरु २०९<sup>११</sup>; -शम् छां ३,१५,३;मैत्रि ६,२७; पा १,९; सुबा ११<sup>१</sup>;

महा ५,१६६; -शस्य भव ५,

१३; शा: गौ ३,११; ते ५,१०३;

त्रिब्रा २,१२; १३; सुद्र ४<sup>१</sup>; पे

२,१९; -शान् नृउ ९,८; वरा

१,९; -शानाम् ससा १,१२; -शे

मुं २,२,९; सुबा ४<sup>१</sup>; त्रिब्रा २,१२.

कोश-कार-

कोशकार-क्रिमि-मि: महा

a) व्यु?। b) व्यु? = विद्या-पर्याय-। c) उत. उप. √विद्(ज्ञाने)+क: (पा ३,१,१३५)। d) व्यु?

=संख्याविशेष-। e) °प्रकाशम् इति निसा.। f) व्यु? = वादे कल्पपर्याय-। g) व्यु? अभा. &lt;√कुण्। h) व्यु?

=विप.। i) व्यु? = शक्ति-विशेष-। j) व्यु? = बदरी-फल-। k) व्यु. वैपश् यद्र.। l) 'काश:' इति अज्या.,

'आकाश:' इति अज्या. संटि.। m) तैआ ७,४,१। n) तैआ १०,२,३१।

५, १२८.  
 कोशकार-वत् सांस् ३, ७३.  
 कोश-त्रय- -यम् पै २, २२.  
 कोश-भूत- -तम् मुद्र २; ध्या ३९.  
 कोश-संनिभ- -भम् हं ३.  
 कोशा(श-आ)दि- -दि ते २, ३७.  
 कोष्ठ<sup>b</sup>-  
 कोष्ठ-मध्य-गत- -तम् शां १, ४.  
 कोष्ठा(ष्ठ-आ)गार- -रम् शि २, १८.  
 कोष्ठा(ष्ठ-अ)ग्नि<sup>१</sup>- -ग्निः गर्भं ५<sup>२</sup>;  
 §<sup>१५</sup>; प्रा २, १<sup>१</sup>.  
 कोष्ण- -२कु- द्र.  
 १कोसल<sup>१०</sup>-  
 कौसल्य<sup>१०</sup>- -ल्यः प्र १, १<sup>०</sup>; ३,  
 १; ६, १.  
 २कोसल<sup>१</sup>-  
 कोसल-(ज>)जा-  
 कोसलजा(जा-आ)त्म-ज-  
 -जः राप् ४, ९.  
 कौण्डिन्य- कुण्डिन- द्र.  
 कौतुक- कुतुक- द्र.  
 कौतूहल- कुतूहल- द्र.  
 \*कौ(न्ति>)न्ती- कुन्ती- टि. द्र.  
 कौत्स- , कौत्सायनि- , °नी- कुत्स- द्र.  
 कौन्तेय- कुन्ति- द्र.  
 कौपीन<sup>१६</sup>- -नम् आरु १; ३; नाप ३,  
 ८६<sup>१</sup>; ४, ३८; ५, १<sup>२</sup>; पप ४१८;  
 ३२; ४१९; ११; पंहं १.  
 कौपीन-कन्या-धर- -रः नाप ५, १.  
 कौपीन-खण्ड-तुण्ड-धारिन्- -री  
 नाप ५, १; १संन्या २, १३.  
 कौपीन-युगल- -लम् नाप ३, २८.  
 कौपीन-वासस्- -साः नाप ४, ३२.

कौपीन-वेष्टन- -नम् शा ७.  
 कौपीन-शाटी-कन्या-धर- -रः  
 १संन्या २, १३.  
 कौपीन-शोध(न>)नी- -नीम् शि  
 ६, २३६.  
 कौपीना(न-आ)च्छादन<sup>b</sup>- -नम् करु  
 १; कश्चु ३, १; कुं ९.  
 कौपीना(न-आ)धार- -रम् नाप ४,  
 ३८.  
 कौबेर- , °री- २कुबेर- द्र.  
 १कौमार- १कुमार- द्र.  
 २कौमा(र>)री- ३कुमा(र>)री- द्र.  
 कौरव्य- , कौरव्यायणी- ३कुरु- द्र.  
 १-३कौल- ३कुल- द्र.  
 कौलिक- , कौलेयक- २कुल- द्र.  
 कौशल- कुशल- द्र.  
 कौशिक- , कौशिकायनि- , कौशिकी-  
 १कुशिक- द्र.  
 कौषीतिक- , °की- , कौषीतकेय-  
 कुषीतिक- द्र.  
 कौसुम्भा- कुसुम्भ- द्र.  
 कौस्तुभ<sup>१३</sup>- -भाय त्रिवि ७, ४२.  
 कौस्तुभ-प्रभा- -भया गोउ ४७<sup>१</sup>.  
 कौस्तुभ-वनमाला-श्रीवत्स-सुद-  
 शान-गरुड-पद्म-ध्वजा(ज-अ)-  
 नन्त-शार्ङ्ग-गदा-शङ्ख-नन्दक-  
 मन्त्र- -न्त्राः त्रिवि ७, ४२.  
 कौस्तुभा(भ-आ)ख्य- -ख्यम् गोउ  
 ५४<sup>६</sup>.  
 कौस्तुभो(भ-उ)द्वासितो(त-उ)-  
 रस्- -रस्म नापू ४, २२.  
 कयंशअ<sup>१</sup> व ४२७ : १७.  
 क्रतु<sup>१३</sup>- -तवः सुं २, १, ६; श्वे ४, ९;

गु २०; ५४; न्तुः ऐ ५, २; गी  
 ९, १६; न्तुभिः अशि ७, ५; नृपू  
 ५, १७<sup>२</sup>; अव्य ७; ए १०; च  
 २१: १०; वउ ५, १५; न्तुम् मैत्रि  
 २, ३; गार ४०७: १३; -०तो ई  
 १७<sup>२</sup>; वृ५, १५, १<sup>२</sup>§<sup>१०</sup>; -तोः क१,  
 २, ११; -स्वा व ४३७: १६§<sup>१०</sup>;  
 ४६०: ७§<sup>१०</sup>; ४६१: २§<sup>१०</sup>.  
 क्रतु-मत्- -मत् व ४३७: १३§<sup>१०</sup>.  
 क्रतु-मथ- -यः छां ३, १४, १.  
 क्रतु-वत् ब्रस् ३, २, ५७.  
 क्रतु-शत- -तस्य अ ३.  
 क्रतुशत-फल- -लम् सू ३२.  
 क्रतु-सहस्र- -सम् गार ४०८: १३.  
 ✓क्रम> चङ्क्रम, क्रमते गौ४, ९६;  
 ९९; अक्षि४; क्रमति यो२, ३५.  
 चङ्क्रमते शि५, २७; चङ्क्रमसि  
 वा २.  
 क्रम- -मः गौ ४, १६; रापू ४, ५;  
 महा५, १६७; ए ६<sup>१</sup>; योसू४, ३२;  
 ब्रस् २, ३, १४; -मम् नाप ३, ३;  
 १संन्या २, ६; वरा १, २<sup>१</sup>; सु १,  
 १, २९; २कौल १०; -माणाम्  
 ए ९; -मात् गर्भं २; अना २९;  
 वृजा ४, १; ते १, १६; ५, ८१;  
 नाप १; ८, ६; योचू २१; त्रिब्रा  
 २, १; १८; मं १, २, ८; २, १,  
 १०; अता ६; रार २, २२; ६१;  
 ९०; १०५; रापू ५, ४<sup>२</sup>; वा २४;  
 शां १, ८<sup>२</sup>; महा ५, १२७; योशि  
 १, १२९; पप ४१८: २१; अन्न  
 ४, ५; अक्षि ३७; अघ्या ३५;  
 पाशु २, ३७; त्रिता ५, ८; यो ३,

a) कोशी° इति निसा., कूप° इति आन. । b) व्यु. ? = गृहस्य वा देहस्य वाऽऽभ्यन्तरप्रदेश- ।  
 c) = जनपदविशेष- । d) व्यङ् प्र. (पा ४, १, १७१) । e) °श° इति निसा., आन. संटि. । f) तु. २कुह- । g) व्यु. ?  
 <✓गुप्° प्रच्छादने (तु. गोप्य-, पंजा. खोप्या = प्रच्छादक-) इति स्यात् [ वैतु. पाम. (५, २, २०) प्रभृ. <कूप-  
 इति] । h) कस. । i) व्यु. ? = विष्णोर्मणोरनाम । j) °भं प्र° इति निसा., आन. । k) °ख्य° इति निसा., °भम°  
 इति आन. । l) = अशक्य-> -क्यम् इत्यस्य गुह्यजपार्थो विपर्यासः । m) व्यु. वैपश् यद्र. । n) का ४०, १, १७ ।  
 o) ऋ १, ६९, १ । p) ऋ १०, ८३, ५ । q) ऋ १०, ८४, ६ । r) ऋ २, २३, १५ । s) 'क्रतुः' इति निसा. संटि. ।  
 t) °मात् इति अघ्या. संटि. ।



२२; जाद २, २; ८, ३; ९, ६;  
 वरा १, ३; ५, ४; १०; २४; शि२,  
 ५; २६; ६, १६०; ७, ३५; सिशि  
 ३८१:१८; भव १, ४२; -मे नाप  
 ३, ६; ४, ३८; -मेण गौ ४, ८९;  
 मैत्रि ६, १४; मना २, १९<sup>६</sup>; १योत  
 २२; ५२; नाप ५, १<sup>२</sup>; त्रिब्रा २,  
 ६१; ११९; त्रिवि ५, ९; ६, २३;  
 ७, १६; ४२; ४७; ४८<sup>३</sup>; ८, १३;  
 रार ३, १<sup>२</sup>; पै ३, १; शारी १<sup>५</sup>;  
 योशि १, ४०; १३९; तुअ ६;  
 १संन्या १, १; २, १३; पप ४१९:  
 २८; अन्न ३, १०; अलिष्ठ ४; कर  
 ११; यो १, ५३; २, ३१; ३, ३२;  
 सु २, २, ४; काम ७; चक्र ७;  
 ८; कधु १, १; बसू २, ३, १५;  
 -मै: शां १, ७, ३६; -मौ शां १,  
 ७, २४.  
 क्रम-कोप- -प: गौ ४, १९.  
 क्रम-क्रम- -मात् नाप ८, ६१<sup>७</sup>.  
 क्रम-चारिन्-  
 क्रमचारिन्ता- -ता यो २,  
 ३४<sup>८</sup>.  
 क्रम-प्रा(स>)सा- -सा वरा ४,  
 १६.  
 क्रम-मुक्त- -क्ता: वरा ४, ३५.  
 क्रम-मुक्ति-प्रद- -द: वरा ४, ४२.  
 क्रम-योग- -गेन अलि २५.  
 क्रमयोग-तस्(>:)वृजा ४, ५  
 क्रम-लीला(ला-आ)स्मन्-  
 -स्मने सार २७७:१३.  
 क्रम-शस्(>:) सौ १, १; शि १,  
 ३६; सांस् २, ३२; सांका ३०.  
 क्रम-संन्यास- -स: नाप ५, १<sup>२</sup>;  
 १संन्या २, ५९.  
 क्रमा(म-अ)नुग(त>)ता- -ता:  
 पी ४२२. ७.  
 क्रमा(म-अ)न्यत्व- -त्वस् योस्

३, १५.

क्रमत्- -मन्तस् श १३.

चङ्क्रमत्- -मताम् ज्ञाग २४:२३;  
 -मन्तस् शि ७, ६.क्रव्य<sup>१</sup>-

क्रव्या(व्य-अ)द्- -व्यादि सुबा १२.

क्रव्या(व्य-अ)द्- -दा: इ १५:१६.

क्रां<sup>१</sup> लां २१५: १७.

क्रियमाण- -क्रिया- ✓क(करणे) द्र.

क्रिं<sup>१</sup> लां २१५: १७; पारा ६<sup>३</sup>; कालि  
 ४०३:१२; गुषोष्ठ २०:४; श्या १.

✓क्री

क्रय-

क्रय-विक्रय- -यम् १संन्या २, ८६

क्रयविक्रय-पर- -र: नाप ५, १

✓क्रीड&gt;क्रीडि, क्रीडते योशि १, ४३;

१४९; ६, ६७; कृ १८; सार

२४६:९; २५७:२०; २५८:६;

शिष्ठ २७; ६, ६; १३; ५२; १७६;

१८०; २०३; २३७; २४०;

क्रीडति कै १, १४; त्रिवि ४, १४;

शां ३, १<sup>१</sup>; १आ १०; राधा ३,

७; सार २४०: १८; २४३:८;

२६८:१०; गु ३३; भव १, १७;

क्रीडत: सार २६२:२२; क्रीडन्ति

सार २६४:१०; २६८:९; शि

६, १८७; क्रीडेत् नाप ५, २६.

क्रीडयिष्यति सार २३८:१९.

क्रीड- -डम् पा ६, २.

क्रीडत्- -डते सार २४७: ७; -डन्

ज्वां ८, १२, ३; कृ ७.

क्रीडन्ती- -न्त्य: सार २३९:१६

क्रीडन- -नम् सार २७७: २.

क्रीडमान, ना- -न: सार २५८:१९;

-नम् सार २३८:२२; -ना सार

२३८: १९; २४३:२२; २८५:

२; -ना: सार २३०: ६; २७४:

२२; -नानि सार २३३: ११.

क्रीडयत्- -यन् पा ६, २.

क्रीडयित्वा सार २७४:४.

क्रीडा- -डा हं ८; १संन्या २, ८६;

सार २२८:१२; -डा: सार २५७:

१६; -डाम् सार २३४:२; ११;

२५२: २१; २५३: १; २५५:

१९; २६२:५; २६६:२२; २६७:

६; २६८:१४; २७५:२; -डायाम्

सार २६०:१.

क्रीडा-कला- -लाम् सार २३८:

९.

क्रीडा(डा-आ)स्मक- -कम् पा

६, १.

क्रीडा(डा-अ)धिष्ठान- -नम्

सार २६०: ४.

क्रीडा(डा-अ)न(न्-अ)न्त-

पर्वत- -तै: त्रिवि ६, २१.

क्रीडा(डा-अ)नन्त-मण्डप-

विशेष- -वै: सि ५, १२; ६,

१३; त्रिवि ६, २३.

क्रीडा(डा-आ)नन्द-पर्वत- -तै:

त्रिवि ६, २३; सि २, २; ६, ३६.

क्रीडा(डा-अ)न्त- -न्ते सार

२४२: १.

क्रीडा(डा-अ)न्तर- -रम् पा ६, २

क्रीडा-पर, रा- -र: सार २२७:

२३; -रा सार २८६: १४; -रा:

सार २८१: ३; १०; १३; २८२:

८; १३; -राणाम् सार २८१:

१२; -राणि सार २२१:१८; -रौ

सार २८९:१२; १३.

क्रीडा-भोग- -गै: गोच ६९:

१६१<sup>६</sup>.

क्रीडा-मण्डल- -ले सार २६६:

१७.

क्रीडा-रति- -ति: नाप ६, १.

क्रीडा(डा-अ)र्थ- -र्थम् गौ १, ९;

सार २७४:१२.

a) तैत्र्या १०, १, १६। b) °म: क° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अख्या.)। c) °ताम् इति अख्या.  
 संटि.। d) व्यु. वैप१ यद्र.। e) =बीजमन्त्रविशेष-। f) विशिष्ट: अख्या. पांमे.। g) °गा° इति सुपा. यनि. सु-शोध:।

क्रीडा-वन-विहारिन्- -रिणे

सार २६०:२३.

क्रीडा-विनोद-

क्रीडाविनोद-मति- -ति:

ध्या ९३, ६<sup>०</sup>.

क्रीडाविनोदिन्- -दिने सार

२५१:१६.

क्रीडा-विहार- -रे सार २८९:

१०.

क्रीडाविहार-संयुक्त- -कम्

सार २६३:१८.

क्रीडाविहार-स्थल- -लानि

सार २५८:२०; २६७:२.

क्रीडा-शरीर-रूप-

क्रीडाशरीररूपि(न्&gt;)णी-

-णी त्रिवि ४, १३.

क्रीडा-शृङ्गार-योग्य- -न्यानि

सार २४६:१.

क्रीडा(डा-आ)सक्त-जालक-

कर-तला(ल-आ)मलक-वृन्द-

क्रीडासक्तजालककरतला-

मलकवृन्द-वत् त्रिवि ६, ८<sup>१</sup>.

क्रीडा-सखी- -खी सार २८५:

१२.

क्रीडा-समेत- -तम् सार २६०:

१८.

क्रीडा-संपादिन्- -दिने सार

२५१:१३.

क्रीडा-स्थल- -लम् सार २८२:

३; -लानि सार २५९:१२<sup>०</sup>.

क्रीडा-स्थान- -नम् सार २३२:

७; २५६:८; २५८:७; २६१:

२१; २८४:९; -नानि सार २७६:

२०; २८१:४; ११; -ने सार

२६८:१६.

क्रीडो(डा-उ)पकरण- -णानि

सार २६२:९.

क्रीडो(डा-उ)पयुक्त- -क्तानि

सार २५८:१९.

क्रीडित,ता- -ता: सार २४०:१;

२५७:१६; -तानि सार २८५:

१९.

क्रीडिष्यमा(ण&gt;)णा- -णा: सार

२३८:२०.

✓कुध्, कुध्यति नाप ५, १७.

चुकुधु: वृ ३, १, २.

कुद्ध- -द्ध: इ ११:१४.

कुद्धा(द्ध-आस्य&gt;)स्या- -स्ये

व ४५८:२०.

कुद्धो(द्ध-उ)ल्क- -ल्काय त्रिवि

७, ४२.

कुध्यत्- -ध्यन्तम् नाप ३, ४३.

क्रीडव्य- -व्ये इ ११:१४<sup>१</sup>.

क्रोध- -ध: मै ३, ५; मैत्रि ३, ५;

वृजा ५, १४; ते ४, ८; नाप ३,

३३; ४, ५; वि ४, ८; राधा ३,

९; सार २९२:५; भव ४, ११;

गी २, ६२; ३, ३७; १६, ४; २१;

-धम् मैत्रि ६, ३८<sup>०</sup>; अना २८;अशि ५, १८<sup>१</sup>; ते १, १२; ५, १७;रार ३, १<sup>०</sup>; रापू ४, ४४<sup>०</sup>; वटु

३१७:५; गी १६, १८; १८,

५३; -धात् गी २, ६३.

क्रोध-ज- -ज: सुबा २.

क्रोध-ज्य<sup>०</sup>- -ज्यम् मैत्रि ६, २८.

क्रोध-दैवत- -तम् तृष ८४:१६

क्रोध-मय- -य: वृ ४, ४, ५.

क्रोध-मुनि- -निना त्रिता १, ५९

क्रोध-रूप-

क्रोधरूपिन्- -पी रापू ४, २७

क्रोध-लोभ- -भौ ते ५, ७७.

क्रोध-शक्ति- -क्तिम् ते ३, ६६<sup>१</sup>.क्रोधि(न्>)नी<sup>१</sup>- -नी रापू ४, ५९

क्रोधे(ध-ई)व्या(व्या-अ)सूया-

(या-अ)हंकारा(र-अ)भिमानी-

(न-आ)त्मक-सर्व-संसार-

-रम् नाप ५, १.

क्रूर, रा<sup>१</sup>- -०र अक्ष ५; -रम् मना १,१३९<sup>१</sup>; -रा: वड ३, २७; -राणि

व ४६४:१९; -रान् गी १६,

१९; -राम् व ४६२:१५९<sup>१</sup>;

-रेण महा ३, १९; -रै: शि ७, ८५.

क्रौर्य- -र्ये हं ८<sup>१</sup>.

क्रौर्य-बुद्धि- -द्धि: नाप ६, १.

क्रौ<sup>०</sup> त्रिवि ७, ४२; दत्ता १, ५; आथ

३९४:१५; व ४२८:१०; ११.

१क्रोड<sup>०</sup>-

क्रोड-रूप- -पम् वरा २, १.

क्रोडा(ड-अ)स्त्र<sup>०</sup>- -स्त्रम् रार २, २६.२क्रोड<sup>०</sup>-

क्रोडी✓कृ

क्रोडी-कृत्य यो १, ७४<sup>१</sup>.क्रौ<sup>०</sup> व ४३२:५; ४५६:४.१क्रौञ्च<sup>१०</sup>- -ञ्चम् छां २, २२, १.२क्रौञ्च<sup>१०</sup>-क्रौञ्चि(क>)की<sup>१</sup>-

क्रौञ्चिकी-पुत्र- -त्राभ्याम्, -त्रौ

वृ ६, ५, २.

✓कृन्द, कृन्दते अशि ४, १०; वटु

३१६:४.

✓कृम्&gt;कृमि, कृमयति अशि ४,

१०<sup>१</sup>; वटु ३१६:४.

a) °दे म° इति निसा., अख्या. संदि. । b) °वृन्द° इति मुपा. यनि. सु-शोधः । c) तु. सस्थ. टि. ओषधि-> -धीः । d) 'क्रौडव्येन' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । e) तु. सात.; वैतु. मैत्रि., राती. °धान् इति । f) °धः इति अख्या. । g) =हुं-बीजविशेष- । h) बस. उप. ज्या- यद्र. । i) °वृत्तिम् इति अख्या. । j) =रेफ-बीजाक्षर- । k) व्यु. वैप१ यद्र. । l) तैआ १०, १, १३ । m) वृअ ८, ४५ । n) 'कूरे' इति निसा. । o) =बीजमन्त्र-विशेष- । p) व्यु. ? =वराह- । q) =हुं फट् । r) व्यु. ? =अङ्क- । s) व्यु. ? =पक्षिविशेष- । t) व्यु. ? =ऋषिविशेष- । u) °ते इति आन., अख्या., 'कृमयते' इति अख्या. संदि. ।

कृां दत्ता १,६; लां २१५: १६.

✓कृिद्, > कृिदि, कृिद्यते १आ १.

कृिदयन्ति भव २,३९; सार २९१:

७; गी २,२३; कृिदय वपं ३११: ४.

कृिन्न, कृिन्ना- -कृिन् अन्न ५,३; -०न्ने

वपं ३११: ३९.

कृिन्न-नाडी-व्रण- -णस्य नाप

४,२९.

कृिद- -दम् ते ६,११.

कृिदि(न >) नी- -०नि वपं ३११:

४.

✓कृिश्, > कृिशि, कृिश्यते १०२, २५;

कृिशयेत् या २,१५.

कृिष्ट(>)ष्टा- -ष्टा सांसू २,३३.

कृिष्ट-स्व- -स्वात् महा ५,७३.

कृिष्टा(ष्टा-अ)कृिष्टा- -ष्टा: योसू १,५.

कृेश- -श: भव ३, २०; शि ७,

११९; सांसू ६,६; गी १२,५; श्वा:

योसू २,३; -शानाम् भव ३,११;

-शै: श्वे १,११; नाप ९,१०.

कृेश-कर्म-निवृत्ति- -त्ति: योसू

४,२९.

कृेश-कर्म-विपाका(क-आ)शय-

-यै: योसू १,२४.

कृेश-तनू-करणा(ण-अ)र्थ-

-र्थ: योसू २,२.

कृेश-तस्(>:) १संन्या १, १०.

कृेश-मूल- -ल: योसू २,१२.

कृेश-रूप-

कृेशरूप-स्व- -स्वात् सु २,

१, १.

कृेश-वत् योसू ४,२७.

कृेश-वत्-

कृेशवत्तर- -र: योशि १,६२.

कृेश-सह- -ह: कथु १,१.

कृेश-हरण- -०ण गोपू ४५.

कृेशा(श-आ)दि- -दिभि: मुद्गर.

कृेशन- -नम् त्रिवा २,१५.

कृीं<sup>१</sup> अन्न १, ८; त्रिवि ७, ३०<sup>३</sup>; रार

२,५२; त्रिता ३,१७; गोपू १३;

दत्ता १,३; शु २,५; सर २,७<sup>३</sup>;

सावि १०<sup>३०</sup>.

कृीं-कार- -रात् गोपू २५.

✓कृीव्

कृीव<sup>१</sup>- -व: इ ७: ८; -वा: वृ ६,

१,१२; वृ ६,४.

कृीव्य- -व्यम् गी २,३.

कृीं<sup>२</sup> दत्ता १,६<sup>३०</sup>.

✓कृल्प (<कृप) > कल्प, कल्पि,

कल्पते क १,३, १७<sup>३</sup>; २,३, ४; श्वे

५,९; गौ ४,९२; वृजा २,१२; १६;

ब्रवि १३; नाप ३,४५; ४,३२; ५,

११; १५; १८<sup>३</sup>; १संन्या २,७८;

२संन्या १६: १; कर ४२; ग १६;

१प्र ३२: २<sup>३</sup>; बि २५; सिशि

३८३: ७; भव २, ३६; ५, ९;

गी २, १५; १४, २६; १८, ५३;

कल्पन्ते छां २, २, ३; ५, २; वृ ५,

१३, ३; मैत्रि ६, १७; कल्पन्ताम्

वृ ६, ४, ५; मना १, २९<sup>३</sup>.

चकल्पे अशि ६, २९<sup>३</sup>; ४९<sup>३</sup>.

कल्प्यते ते ५, ४५; ४८.

कल्पयते गौ २, १३; १६; कल्प-

यति सार २३८: १; ४; ६; गौ २,

१२; कल्पयन्ति पत्र २; व ४६२:

१५९<sup>३</sup>; कल्पयतु वृ ६, ४, २१;

कल्पयन्तु १अव १४; अरु १३९<sup>३</sup>;

कल्पय-कल्पय चादौ; कल्पयानि

वृ ६, ४, २; अकल्पयत् अव्य<sup>५</sup>;

मना १, १४९<sup>३</sup>; वपू १, १;

अकल्पयन् अरु १२९<sup>३</sup>; व ३,

५१; शौ ५३: ७; कल्पयेत्

भ २, ३; शि २, ९; २९; ४, १०;

११; २०; ५८; ६२; ६, १३१;

२२९; ७, ३; १०; १संन्या २,

७१; गौ २, ३०.

कल्पयिष्यन्ति शौ ५३: ६.

१कल्प<sup>१</sup>- -ल्पानि तारा ८४: ६.

कल्प-स्तवना(न-आ)दि-

कल्पस्तवनादि-पुरुषसूक्त-

रुद्राध्याय-घोष-शान्त्या-

(न्ति-आ)दि- -दिना व ६, २३.

२कल्प<sup>२</sup>- -ल्प: सुं १, १, ५; सुबा २;

सी २७; वृ २९; २प्र ३४:

१०; गार ४०६: ९; -ल्पान् वृजा

८, ५; वृपू ५, १८; व ५, १९.

कल्प-सूत्र- -त्रे जाद २, १२.

कल्प-ह(स्त >) स्ता- -स्ताम्

तुल ७०: ४.

कल्पो(ल्प-उ)क्त-विधि- -धिना

वृजा ३, ३४.

३कल्प<sup>३</sup>- -ल्पम् महा ४, ६८; शि ५,

३०; ६, २११; २७३; -ल्पा: सुबा

६; -ल्पात् अव्य<sup>७</sup>; -ल्पान् व ३

५, १९; शि ६, २१९; -ल्पानाम्

शि ६, १७६; १८७; २०५; -ल्पै:

सिशि ३८०: ६.

कल्प-कोटि- -टिभि: त्रिवि ५,

७; ८, १२; -टिम् शि ६, २; ३२;

३५; ९८; १००; १८०; २०३;

-ट्या शा २७.

कल्पकोटि-शत- -तम् शि

६, ६७; ६९; २१४; -तानि शि

६, ६३.

a) = बीजमन्त्रविशेष- । b) °सहः इति अख्या. । c) एकतरत्र 'कृलां' इति अख्या. । d) व्यु. वैपश् अग्रि यद्र. । e) एकतरत्र 'कृं' इति अख्या. संति. । f) तु. पा ८, २, १८ । g) 'कल्प्यते' इति निशा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) । h) तैआ १०, १, २; वैतु. नादी. कल्प-ता- > -ताम् इति । i) 'चाकल्पे' इति शौ ७, ८७, १ । j) माश्रौ ६, २, ४ । k) वृश् ८, ४५ । l) तैआ १, २७, २ । m) ऋ १०, १९०, १ । n) धा. अर्थः? = कर्मन्- । o) धा. अर्थः? = कर्मविषयकवेदाङ्गविशेष- । p) धा. अर्थः? = कालमानविशेष- । q) °न् इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।



कल्पकोटिशता(त-अ)-

जित- -तम् अध्या ५०.

कल्पकोटि-सहस्र- -स्त्राणि  
शि ६, ६३.

कल्पकोटय(टि-अ)युत-

-तम् शि ६, १०३; २०७; २६२.

कल्प-क्षय- -वे गी ९, ७.

कल्प-ता- -ताम् महा ४, ६८.

कल्प-वि-दूर-ग- -गः कुं १६.

कल्प-शत- -तम् शि ४, ५०.

कल्पा(ल्प-अ)भि- -भिना शि ४,  
२८.

कल्पा(ल्प-अ)दि- -दौ गी ९, ७.

कल्पा(ल्प-अ)न्त- -न्ते अन्न ५,  
३६; गु ५९; महा ४, ४४.

कल्पान्त-निचय- -येन<sup>a</sup>  
अन्न १, ३९<sup>b</sup>.

कल्पान्त-पवन- -नाः महा  
४, ९७.

कल्पा(ल्प-अ)युत- -तम् शि  
६, २१८.

कल्पा(ल्प-अ)रम्भ-समय- -ये  
वउ ४, २१.

कल्पा(ल्प-अ)र्णव- -वे अध्या  
२३.

कल्पा(ल्प-अ)र्ध-संमित- -तम्  
शि ४, ४२.

कल्पा(ल्प-अ)शीति- -तिम् शि  
६, १८२.

४कल्प<sup>c</sup>-

कल्प-क-

कल्पक-वृक्ष- -श्राय त्रिवि  
७, ४८.

कल्पको(क-उ)द्यान- -तम्  
भा ५, ६.

कल्प-तरु- -रवः भा ५; -रोः  
राधा २, ४; १०; रार २, १२;  
-रौ रापू ४, १२.

कल्पतरु-मूल- -ले सी ३७.

कल्प-द्रुम- -माः सार २७४; ११

कल्पद्रुम-वृक्ष- -क्षाः सार  
२६२; १३.

कल्पद्रुमा(म-अ)ध(स्>):-

स्थित- -तम् वपू २, २.

कल्पद्रुमा(म-अ)श्रित-

-तम् गोपू ७.

कल्प-पाद-प- -पः राधा ४, २.

कल्प-भू-रुह- -हः रार २, ५९.

कल्प-लता- -न्ते व ४६२; ६.

कल्प-वृक्ष-

कल्पवृक्ष-कामधेनु-चिन्ता-  
मणि-

कल्पवृक्षकामधेनुचिन्ता-

मणि-शङ्खपद्मनिध्यादिनव-

निधि-समाश्रित(त>)ता- -ता  
सी ३६.

कल्पवृक्ष-पुष्प-फल-लता-

गुल्मा(लम-आत्मक>)लि-

का- -का सी १३.

५कल्प-

कल्पा<sup>d</sup>- -ल्पा सुमु १२.

कल्पक<sup>e</sup>- -कम् त्रि ९.

कल्पन- -नम् ते ६, ९६.

१कल्प(न>)जा<sup>d</sup>- -ना पी ४२२; ९

२कल्पना- -ना १आ ३०; ते १,  
२४; महा ४, ११९; -नायाम्  
वि १४.

कल्पना-रहि(त>)ता- -ताः

योशि १, १५४.

कल्पना-विरोध- -धः सांस् २,  
२५.

कल्पना-हीन-स्वरूप-ग्रह-  
ण- -णम् भव ३, ३०.

कल्पनो(ना-उ)पदेश- -शात्  
ब्रसू १, ४, १०.

कल्पयत्- -यन् महा ५, १२४.

\*कल्पया-

\*कल्पयाम(म्/अ)स् (भुवि),  
कल्पयामास महा ५, १६२.

कल्पयित्वा तुअ १६; भ २, २४; शि  
६, १९५; सार २३८; ८.

कल्पित, ता- -तः अन्न ४, ३३;

रुह ४२; गौ १, १८; २, ३३;

-तम् गौ २, ९; १०; वृजा ३,

३४; ते ६, ८९; निर्वा २९७;

१२; महा ५, १३१; सर ३, ३३;

वरा ३, १५; शि ६, २७४; -तस्य

श्वे ५, ९; भव २, ३६; रापू १,

१०; -ता अन्न ४, १०; पाशु

२, ४५; महा ४, ७३; १२८; वरा

२, ५४; -ताः गौ २, १४; १५;

आबो १४; महा ४, ४५; ५७; ६,

१३; योशि १, १५२; सार २३७;

१९; २३; -तानाम् पाशु २, १३;

-ते त्रिवा २, ९०; -तौ रुह ४३.

कल्पित-जीव-लोक- -के कै  
१, १३<sup>f</sup>.

कल्पित-स्व- -स्वात् महा ५,  
१६४.

कल्पित-मान-भूमि- -मिः श  
२०<sup>g</sup>.

कल्पित-संवृति- -स्या गौ ४,  
७३; ७४.

कल्पिता(ता-अ)कल्पिता- -ताः  
योशि १, १५१.

कल्पिता(त-अ)कार- -राः महा  
५, १३६.

कल्पिता(त-अ)श्चर्य-जाल-  
-लेषु अन्न ४, १०.

कृष- -सम् वृजा २, ४; -सान् छां  
७, ४, ३; -सौ १आ २९.

क्लेद-, क्लेदिनी- ✓क्लिद् द.

क्लेश-, क्लेशन- ✓क्लिश् द.

क्लैव्य- ✓क्लीव् द.

a) अपवर्गे तु. (पा २, ३, ६) । b) °चयेऽथ इति अज्या. संति. । c) धा. अर्थः? = वृत्तिविशेष- । d) धा. अर्थः? = शाक्त-देवी- । e) ण्वुल् प्र. (पा ३, १, १३३) । f) °विद् इति आन. संति., अज्या. । g) °भूयः इति अज्या. ।

होमन्<sup>१०</sup> - मानः वृ १, १, १.  
क किम्- द्र.

✓कण्, > कणि, कणति सौ २, १०.

कण- -णः सौ २, १०.

काणन- -नम् छाग २५ : १२.

\*कधस्<sup>b</sup>-

कध(स्)>:-स्थ- -स्थः क १, १,  
२८०.

क्ष<sup>d</sup> आध ३९६:४; यो ३, १; व ४३१:  
८<sup>१</sup>; वपं ३१२:८; हंषो १५.

क्ष-कार- -०२ अक्ष ५.

क्ष<sup>d</sup> व ४३२:१०.

✓क्षण्

क्षण- -णम् अ ३; अक्ष ४, ७५;

५, ३१; १योत १२४; पित्र ५, ३;

महा ३, २४<sup>१</sup>; ५३<sup>१</sup>; ४, ६८; ५,

१२०; गी ३, ५; -णात् वृजा ६,

९; कृ १२; ते ३, ६६; १योत

७३; ११०<sup>१</sup>; १२४; १२५; रापू

४, ६६; शां १, ७, १७; महा ५,

१४६; १५०; १५१; योशि ५,

२४; -णे अक्ष ४, ७५; -णेन अक्ष

३, २४; यो ३, ३१; योशि ४, २.

क्षण-तत्-क्रम- -मयोः योसू ३,

५३.

क्षण-प्रतियोगिन्- -गी योसू ४,

३२.

क्षण-मात्र- -त्रम् अध्या १५.

क्षण-विनाशिन्- -शिनोः १संन्या

२, १७.

क्षणविनाशिनी- -न्या

१संन्या २, १५.

क्षण-वेष- -वम् मै ४, २; मैत्रि

४, २.

क्षण-शून्या(न्य-अ)ना(न्-आ)-  
दि-मूला(ल-अ)-विद्या-  
विलास-

क्षणशून्यानादिमूलाविद्या-  
विलास-त्व- -त्वात् त्रिवि ३, २.

क्षण-(स्थ)>स्था- -स्थया  
१संन्या २, १४.

क्षणा(ण-अ)र्ध- -र्धम् योशि ६,  
३८.

क्षणिक- -कम् ते ६, २१; ८७.

क्षणिक-त्व- -त्वम् सांसू १,  
३४; -त्वात् ब्रसू २, २, ३१.

क्षणिकत्वा(त्व-आ)दि-  
दोष- -यात् सांसू ५, ७७.

क्षणी/कृ, क्षणीकरोति महा ४,  
६८.

क्षणै(ण-ए)क- -कम् योशि ६,  
३८.

क्षणितोस्<sup>b</sup>(>) वृ ५, १३, ४.

क्षत- -तम् १संन्या २, ४६; -ते महा  
५, ७.

क्षति- -तिः १अव २३; महा ४, ९७.

✓क्षद्

क्षत्- -त्ता छां ४, १, ७; ८; -त्तारम्  
छां ४, १, ५.

क्ष(त्र)>त्र- -त्रम् १, २, २५; प्र २,  
६; वृ १, ४, ११; १४; १५; २, ४,

५<sup>१</sup>; ६<sup>१</sup>; ४, ५, ६<sup>१</sup>; ७<sup>१</sup>; ५, १३, ४<sup>१</sup>;

वउ ३, ४८; -त्रस्य छां ५, ३, ७;

वृ १, ४, ११; १४; २, ४, ५; ४,

५, ६; ५, १३, ४; -त्राणि, -त्रात्

वृ १, ४, ११; -त्राय वृ ६, ३, ३;

-त्रे वृ १, ४, ११; -त्रेण २संन्या

१७ : ५९<sup>१</sup>.

क्षत्र-कर्मन्- -मे गी १८, ४३.

क्षत्र-विद्या- -द्या छां ७, १, ४;

-द्याम् छां ७, १, २; २, १; ७, १.

क्षत्रिय- -यः वृ १, ४, १५;

कौ ४, १८; वृजा ४, ११; ७, ४;

भव २, ६३; वसू ९; सार २५६:

१८; -यम् वृ १, ४, ११; २,

१, १५; राउ ५, १५; -यस्य गी

२, ३१; -याः वृजा ५, २; भव

२, ६५; रुजा १, ८; ९; सिशि

३८१:७; गी २, ३२; -येण वृ १,

४, १५; -यैः सु २९४ : १५.

क्षत्रिय-त्व-

क्षत्रियत्व-गति- -तेः

ब्रसू १, ३, ३५.

क्षत्रिय-योनि- -निम् छां

५, १०, ७.

क्षत्रिया(य-आ)दि- -दयः

वसू १७; २०.

✓क्षप्<sup>k</sup>, > क्षपि, क्षपय व ४५९:१८.

क्षपण-

क्षपण-का<sup>०</sup> -कः रा ४२६:१;

-कानाम् रा ४२६:२.

क्षपयित्वा ब्रसू ४, १, १९.

✓क्षम्, > क्षामि, क्षमेत् शि ५, ३९.

क्षम्यताम् सार २९२:२१.

क्षामये गी ११, ४२.

क्षम- -मः अक्ष २, ४२; १योत

१५; ५९; योशि १, १३.

१क्षमा- -मा जाद १, ६; १७; त्रिवा

२, ३३; नाप ३, २४; भव ५, १२;

वरा ५, १३; शां १, १; गी १०, ४;

३४; १६, ३; -माम् अशि ५, ६;

१८; वटु ३१७:५.

a) व्यु. वैपश् यद्र. । b) व्यु. १ कु- + अधस्<sup>k</sup> > कस. इतीव शं. । c) तु. JC.; वैतु. °वस्थः,  
°वस्तः इति आन. संटि. । d) =बीजमन्त्रविशेष- । e) कचित् वा. किवि. द्र. । f) ईक्ष<sup>०</sup> इति निसा. । g) उप.  
अवधारणे =एव । तस्य चाऽवधारणे सता पू. अस्वपदविग्रहः स. उस्. [पा २, १, ७२: (=क्षमेव [तु. चिन्मात्रम्])] ।  
h) वैतु. क्षणि- इत्यतः कृतः सतः कृतं ब्रुवाणः रामा. चिन्त्यः । i) विशेषः वैपश् यद्र. । j) शौ ७, ८७, २ ।  
k) =चुरा. अदन्तः धा. [तु. पाधामा.]; वैतु. पासिकौ. ✓क्षपि इति पाभे. (यस्मिन् पक्षे प्रधा. <✓क्षपि<✓क्षे  
इति वादः प्रमाणं [तु. पाधामा.]) ।

✓क्षमापि

\*क्षमापया-

\*क्षमापयाम(म्/अ)स्

क्षमापयामासुः श १४.

क्षमा-वत्- -वत्ताम् शि ५,४०.

क्षमिन्- -मी शि ६, १८१; गी १२, १३.

२क्षमा- -मा कृपु १५; ते २, १७.

क्षान्त- -न्तःनाप ५, ३७; मैत्रि ७, ६.

क्षान्ति- -न्ति नाप ४, ११; प्रा ४, १;

भव ५, २१; गौ ४, ९२; गी १३,

७; १८, ४२; -न्त्या शि ५, ३८.

क्षान्ति-वारि- -रिणा शि ५, ३७.

२क्षय- ✓क्षि(निवासे) द.

✓क्षर(वधा.)> क्षारि, क्षरते अना २५;

शि ६, १६४<sup>३</sup>; क्षरति ते ५, ८७;

ध्या ८४; क्षरन्ति वृ ६, ३, ६९<sup>७</sup>;

अशि ६, १७; गु २७; मना २,

३७९<sup>७</sup>; ३९९<sup>७</sup>; व ४६१: २१९<sup>७</sup>.

क्षर- -रः योशि ३, १६; गी ८, ४;

१५, १६<sup>३</sup>; -रम् श्वे १, ८; ५, १;

अशि १, ८; नाप ९, ७; भव

२, ५; गी १५, १८.

क्षरा(र-अ)क्षर- -रम् गर्भ ३<sup>६</sup>;

ते ५, ११; -राभ्याम् सार २२०:

१; २२१: २; ६.

क्षराक्षर-विहीन- -नः ते ५, ६

क्षराक्षरा(र-अ)तीत- -तम्

योशि ३, १५.

क्षरा(र-अ)त्मन्- -त्मानौ श्वे

१, १०; नाप ९, ९.

क्षर(त>)न्ती- -न्तीम् शि ६, १३१

१क्षार<sup>७</sup>- -रम् वृजा १, १<sup>३</sup>; ९<sup>१५</sup>.

२क्षार<sup>१</sup>- -रम् नाप ७; १संन्या २,

७९.

क्षार-वास्तुक<sup>६</sup>- -कम् शि ६,

८३.

क्षारा(र-अ)द्य- -द्यैः शि ६,

२५५.

क्षारो(र-उ)द-धि-

क्षारोदधि-क्षीर-घृते(त-इ)-

क्षु-जल-राशि- -शयः महा ५,

१४१.

क्षारक- -कः भा १८.

क्षारण- -णात् वृजा १, १.

✓क्षाल> क्षालि, क्षालयन्ति रु २७;

क्षालयेत् जाद ५, १४.

क्षालयते महा ५, ११०.

क्षालन- -नात् मैत्रे २, ९<sup>६</sup>.

क्षवथु- ✓क्षु (\*निरसने) द.

क्षां<sup>१</sup> व ४३२: ९; वपं ३१२: १२.

क्षा<sup>१</sup>- क्षा कृपु १४.

क्षि<sup>१</sup> व ४३२: ९.

✓क्षि(क्षये)> क्षी, क्षीयते छां ८, १, ६;

वृ १, ४, १५<sup>३</sup>; २, १, ३; २, २; अज

५, १४; महा २, ३४; ५, १८३;

योचू ५७; वरा २, ७१; योस्

२, ५२; क्षीयन्ते सुं २, २, ८; छां

४, ११-१३, २; वृ १, ५, १; २;

अज ४, ३१; सर ३, ३२; महा

४, ८२; ५, ७८; सु २, २, ४१;

योशि ५, ४५; ६, ४०; अक्षीयन्त

शौ ५२: १६; क्षीयेत वृ १, ५, २.

१क्षय- -यः अज ५, १९; ते ४,

२३<sup>६</sup>; -यम् अक्षि ३०; अना ९;

अज २, ३२; ४, १५; ५, ११७;

ब्रवि ५; मै ४, ४, ८; मैत्रि ६,

३४<sup>१</sup>; नाद २९; त्रिब्रा २, १२१;

योचू ६९; महा ६, ३; त्रिता ५,

५; यो १, ३१; वरा १, ८; सु १,

१, ४३; भव १, ४४; अवि ५;

गी १८, २५; -यात् ध्या ७३;

योचू ४७; वरा ५, ६; -याय

मैत्रि ७, ९; गी १६, ९.

क्षय-कर- -रम् भव ३, ११.

क्षय-कारि(न्>)णी- -णी महा

४, ११४.

क्षय-कुष्ठ-गुदावर्त-गुल्मा(त्म-अ)-

जीर्ण-पु(रस्>)रो-गम<sup>१०</sup>-

-मा: योचू ६९.

क्षय-गुल्म-गुदावर्त(र्त-अ)जीर्ण-

त्वग्दोष- -षा: शां १, ७, ४३<sup>११</sup>.

क्षया(य-अ)तिशय-निमुक्त-

-क्तम् अज ५, ४५.

क्षयिन्- -यि १संन्या २, १७.

क्षयिणी- -ण्या १संन्या २,

१८.

क्षयो(य-उ)दय- -यौ योस् ३,

११.

क्षयिष्णु- -ष्णु मै १, ४; मैत्रि १, ४;

-ष्णो: भव १, ७.

क्षय्य-

क्षय्य-लोक- -का: छां ७,

२५, २.

क्षीण,णा- -णम् महा ३, २१; योशि

१, ७८<sup>०</sup>; ६, ५९; शा १९;

१संन्या २, १८; -णा अज ४, ७९;

-णायाम् महा ५, ११५; -णे श्वे

२, ९; ब्रवि १६; गौ १, १५;

४, ५५; ५६; ध्या २; नाद ४९;

महा ३, २१; १संन्या २, ४२;

योशि ६, ५९; कुं १<sup>१०</sup>; १अव १९;

त्रिता ५, १६; जाद ६, ५०; वरा

५, ४; सु २, २, २७; अवि १६;

भव ३, २६; गी ९, २१; -णै: श्वे

१, ११; नाप ९, १०.

क्षीण-कल्मष- -षा: गी ५, २५.

क्षीण-चित्त- -त्तः अज ५, ११४.

a) =भूमि- । b) ऋ १, ९०, ६ । c) तैत्र्या १०, १५, १ । d) विशिष्टाविह आन. अज्या. च पाभे. ।

e) =भस्मन्- । f) वा. अर्थः =रसविशेष- । g) उप. =शाकविशेष- । h) °नम् इति अज्या. । i) =बीजमन्त्रविशेष- ।

j) =भूमि- । व्यु. वैपश् यद्र. । k) °यम् इति अज्या. । l) गत° इति आन. । m) द्रस. गर्भितः बस. । n) °जीर्ण-

त्वगादि° इति मुपा. यनि. सु-श्लोघः । o) 'न अभ्नाति' इति आन. । p) 'क्षिद्यः' इति अज्या. ।



क्षीण-चेतस्- -तसाम् अञ्च २, १२.

क्षीण-ता- -ताम् योशि १, १२२.

क्षीण-दोष- -षाः अञ्च ४, ३६;

पाशु २, ३३; मुं३, १, ५; रुह ४९.

क्षीण-पु(ण्य)→ण्य- -ण्या इ १२: १८.

क्षीण-मनन- -नः वरा ४, १७; -नम् अञ्चि ३८.

क्षीण-लोक- -काः मुं १, २, ९.

क्षीण-वृत्ति- -त्ते: योस् १, ४१.

क्षीणा(ण-अ-)-विद्य- -द्यः महा ४, १२७.

क्षीणे(ण-इ)न्द्रिय-म(नस्)→- नो-वृत्ति- -त्ति: नाप ३, ७५.

✓क्षि(निवासे)

रक्षय- -याणाम् पा ९, १०; -याय मना १, १२९<sup>b</sup>.

क्षिति- -ति: कृपु १५; -ते: शि ६, ९४; -तौ शि ५, २७.

क्षेत्र- -त्रम् ते २, १७; वृपू ५, ३९; म ४८: १३; शि ७, ९३; योस् २, ४; गी १३, १; ३; ६; १८; ३३; -त्रा: योशि ६, ११; -त्राणि छां ७, २४, २; वृउ ९, ५; -त्रे शे ५, ३; नाप ७; पप ४१९: १३; मि ६; राउ ३, ३-६; व ४३०: २०; ४५८: ८; सार २५४: १९.

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ- -ज्ञयो: गी १३, २; ३४.

क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-संयोग- -गात् गी १३, २६.

क्षेत्र-ज्ञ- -ज्ञः महा ५, १२४; मै २, ५; ४, ५; मैत्रि २, ५, ५,

२; योशि १, १३४; वरा १, १४; शारी ५; ससा १, ३; २४; सुबा ५; गी १३, १; -ज्ञम् व १; सुबा ९; गी १३, २; -ज्ञा: योशि ६, १२१<sup>a</sup>; -ज्ञे सुबा ५.

क्षेत्रज्ञा(ज्ञ-अ)धिष्ठित- -तम् चू १८; मन्त्रि १९.

क्षेत्र-पात्र-पटुता- -ता निर्वा २९८: ६<sup>f</sup>.

क्षेत्र-पाल- -लम् रापू ५, ३;

-लाय व ४६३: १०; सूता ४, १.

क्षेत्र-पालक- -कम् रार १, ७.

क्षेत्रपालिका- -कं व ४५८: १२.

क्षेत्र-पालि(न)→नी- -नि व ४५४: ५.

क्षेत्र-भाग- -गम् छां ८, १, ५.

क्षेत्रा(त्र-अ)धी(धि-ई)श- -शम् पी ४२२: ६.

क्षेत्रा(त्र-अ)ध्य(धि-अ)क्ष- -क्षम् त्रिता ३, ३४.

क्षेत्रा(त्र-अ)भिमान- -नः नाप ६, १.

क्षेत्रिक- -क्षेत्रिक-वत् योस् ४, ३.

क्षेत्रिन्- -त्री गी १३, ३३.

✓क्षिप्, >क्षेपि, क्षिपामि गी १६, १९; क्षिप गरु ८; त्रिवि ७, ३७; ४३; अक्षिपत् शे २, ७; वृजा ६, १; क्षिपेत् छां ८, ६, ५<sup>g</sup>; जाद ३, ७; वृजा ३, ९; १८; २८; ४, ३२; यो १, ६; योशि १, ९३; शां १, ३, ८; शि ७, ६९; ७०.

अक्षिपत् रापू ४, २१.

क्षिप्त- -सः नाप ५, २७; -सम् १आ

२३: नाद ३७; पै ४, १०; भव १, २४.

क्षिप्र- -प्रम्<sup>h</sup> अञ्च ४, ५४; त्रिवि ८, १३<sup>i</sup>; मु २, २, २७; व ४६२: १८; वरा ५, ६४; शि १, २०; शु १, ६; गी ४, १२; ९, ३१.

क्षिप्र-प्रसाद-गण-पति- -त्तये व ४२९: ८; १२: १६; २१; ४३०: ४.

क्षिप व ४३२: ९; ४६५: ३.

क्षीण- ✓क्षि(क्षये) द.

✓क्षीब् (मदे)

क्षीब्- -ब्: १संन्या २, ३<sup>k</sup>.

क्षीर- -रम् १आ २३; इ ११: ७; १७: २१; ते ६, ८१; त्रिता १, ४४; पै ४, १०; यो ३, ६; योशि ६, ७३; शि ४, ६१; १संन्या २, ७६; -रस्य अबि १९; इ १८: ९; त्रिता ५, १९; ब्रवि १९; सांका ५७; -रात् ब्रवि १७; -रे शे १, १६; १आ २३; पै ४, १०; ब्र ३, १७; वा २९; -रेण त्रिता २, ६९.

क्षीर-खण्ड- -खण्डात् ऊ ६३: ४.

क्षीर-तुम्बी- -म्बीम् शि ६, ७८.

क्षीर-तैल- -लेन शि ४, ५८.

क्षीर-दण्ड- -ण्डेन ब्रवि १८.

क्षीर-नीर-

क्षीरनीर-वत् योशि ६, ३९.

क्षीर-पान-रत- -तः ध्या ७१.

क्षीर-भोजन- -नम् योच् ४१.

क्षीर-मय- -यम् गोउ ३.

क्षीर-वत् अबि १९; त्रिता ५, १९; ब्रवि १९; ब्रस् २, १, २४; सांसू ३, ५९.

a) कर्मणि ष. (=वियति क्षयाज्जयन्त इति); वैतु. पाटी. अन्यथेव वा. कल्पुकः। b) ऋ १०, ९, ३।

c) =पृथिवी-। d) निवासभुवि मुख्यो देहे गौणश्च प्रयोगः द.। e) °ज्ञः इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)।

f) °पाल(न)पटुता इति अज्या. संटि.। g) 'क्षिप्येत्' इति निसा.। h) वा. क्रिवि. भवति। i) =बीजमन्त्रविशेष-।

j) पचाद्यजन्तः कृत [तु. टि. ✓कृश् > कृश-; वैतु. पा. (८, २, ५५)]। k) 'क्षयी' इति निसा. संटि., अज्या.।

l) व्यु. वैपश् यद.। m) समाहारे द्रस.।

## क्षीर-वृक्ष-

क्षीरवृक्ष-(ज>)जा- -जा: शि  
४, ४३.

क्षीरवृक्ष-समुद्र<sup>a</sup>- -देशि ४, ४७

क्षीर-समुद्र<sup>b</sup>- -द्राय त्रिवि ७, ४८.

क्षीर-समुद्र-राज-तन(य>)या-

-याम् व ४५५: १७.

क्षीर-सागर-कन्यका- -०के तुल  
७०: १४.

क्षीर-स्वरूप- -पम् ते ६, ८०.

क्षीरा(र-आ)ज्य-भोजन- -नम्

१योत ४८; शां १, ७, ५.

क्षीरा(र-आ)दि- दिभि: भ २, २३.

क्षीरा(र-आ)व-धि-

क्षीरावधि-तस्(>) ऊ ६३: ३.

क्षीरि(क>)का<sup>b</sup>- -काया: शि ६,  
१८.

क्षीरो(र-उ)त्तर- -नम् गोउ ५९०.

क्षीरो(र-उ)दा(द-अ)र्णव-शा-

यिन्- -यिनम् वृपू १, १०; वपू  
२, २.

क्षीरो(र-ओ)दन- -नम् वृद, ४, १४

क्षु<sup>d</sup> व ४३२: ९.

क्षु(शब्दे<sup>e</sup>)

क्षु<sup>f</sup>-

क्षु-सत्- -मन्तम् वपू १, ४९६.

क्षु(\*निरसने<sup>h</sup>)

क्षवथु<sup>i</sup>- -थो: त्रिवा २, ८७१<sup>j</sup>.

क्षुत्<sup>k</sup>- क्षुतम् योशि ५, २४.

क्षुत्-कर- -र: योचू २५.

क्षुत्-करण- -णम् शां १, ४.

क्षुद्-धा- -द्धा जाद ४, ३४१<sup>l</sup>.

## क्षुद्

क्षुद्- -द्रम् गी २, ३; -द्वा: वृ २, १,

२०; -द्वाणि छां ५, १०, ८; जाद

६, ४५; -द्वा: शि ७, ८५.

क्षुद्-घण्टिका-राजमा(न>)-

ना- -ना सार २४५: ४.

क्षुद्-घण्टिका-शब्द-सूक्ष्म-

तर-संभावित(>)ता- -ता

सार २६४: २१.

क्षुद्-मिश्र- -आणि ऐ ५, ३.

क्षुद्-रत्न- -त्तानि शि ६, १०३;

-त्तै: शि ६, ९१.

## क्षुध्

क्षुध्- क्षुत् मै ३, ५; मैत्रि ३, ५.

क्षुत्-तृषा-विष-शान्ति-

-न्तये योशि ५, ४९<sup>m</sup>.

क्षुत्-तृष्णा(ष्णा-आत्मिक>)-

स्मिका- -का सी १५.

क्षुत्-तृष्णा(ष्णा-आ)लस्य-

निद्रा- -द्वा: शां १, ७, १४.

क्षुत्-तृष्णा(ष्णा-आ)लस्य-मोह-

मैथुन- -नानि शारी १.

क्षुत्-तृष्णो(ष्णा-उ)ष्ण-मोह-

मैथुना(न-आ)द्य- -द्या: पै २, ६.

क्षुत्-पिपा(सा>)स<sup>n</sup>- -साय

मना २, ६६९<sup>o</sup>.

क्षुत्-पिपासा- -से ससा ६;

ते १, १३<sup>p</sup>.

क्षुत्पिपासा(सा-आ)तुर-

-रम् शि ६, १९६; ७, ३२;

-राणाम् शि ७, ९५.

क्षुत्पिपासा(सा-आ)द्य- -द्या:

योशि १, १२८.

क्षुत्पिपासा-निवृत्ति- -त्ति:

शां १, ७, ५२; योसू ३, ३१.

क्षुत्पिपासा-म(ल>)ला-

-लाम् मना २, ६६९<sup>q</sup>.

क्षुत्-पिपासा(सा-आ)न्ध्य-बा-

धिर्य-काम-क्रोधा(ध-आ)दि-

-दय: आबो २३.

क्षुध्- क्षुत् जाद ४, ३८; क्षुधे

मना २, ६६९<sup>r</sup>.

क्षुधा<sup>s</sup>- -धा ते ४, १८; ध्या ८०;

योचू ५३; १योत १२; योशि

१, १०; ५, ४२; वरा ५, ५;

-धाम् १आ १०; योशि १, ९६.

क्षुधा(धा-आ)दि-निरसन- -ने

सावि १०.

क्षुधा(धा-आ)र्त- -र्त: पै ४, २२.

क्षुधा<sup>t</sup>- -धा रापू ४, ५९.

क्षुधित- -तस्य ते ६, ८९; -ता: छां

५, २४, ५; -त्तेन वरा ५, ९.

क्षुभ्, क्षोभते छां ३, ५, ३.

क्षुब्ध, ब्धा- -ब्धम् योशि १, ३०;

-ब्धा यो १, ७२<sup>u</sup>.

क्षुभित-

क्षुभित-रू(प>)पा- -पा महा

५, ११८.

क्षोभ- -भम् योशि १, ३०.

क्षोभ-शत- -तै: अन्न ५, ३९.

क्षोभक- -क: भा १८.

क्षुमा<sup>v</sup>-

क्षौम<sup>w</sup>- -मम् शा १९.

क्षौम-सूत्र- -त्रेण रुजा १, १३.

a) °समि(ध्-ज)ज- इत्येतत्परः शोधः स्यात्। b) =फलविशेष-। मत्वर्थे ठन् > इकः प्र. (पा ५, २, ११५)।

c) 'अक्षरोत्तमम्' इति आन.। d) =बीजमन्त्रविशेष-। e) तु.सा.(ऋ ८, ८१, १)। f) प्रकरणास्य कर्त्रर्थप्राधान्याद् भावे

विच् प्र. उस्. (पा ३, २, ७५)। g) ऋ ८, ८१, १। h) शब्दसाहचर्यमतन्त्रम् (वैतु. पाधा. शब्द इति)। i) अथुच्

प्र. (पा ३, ३, ८९)। j) 'क्षपयोः' (तु. उव्र.) इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा. संटि.; वैतु. निसा. 'क्षुत्तयोः' इति

पाभे.)। k) कर्मणि क्तिप् प्र. उस्. (पाउ २, ५७)। l) °धा इति निसा. अज्या. च यनि. सु-शोधौ। m) °तृष्णा°

इति अज्या. संटि.। n) समाहारे द्वस. न. एकवच (पा २, २, २९; ४, १७)। o) तैआआ १०, ६६। p) °सम् इति

आन., J.C.। q) °लम् इति तैआआ १०, ६६। r) देवतात्वेन श्रुतेः पृथङ् निर्देशः। s) वैपश् अपि यद्र.। t) =यकार-

(तु. आन. यस्थ. नादी.)। u) °ब्धम् इति अज्या. संटि.। v) व्यु. ?। w) तु. अभा., MW.।

✓धुर

धुर-रः वृ१,४,७; -रम् लु११<sup>a</sup>;

-रस्य क १,३,१४; वृ ३,३,२;

-रेण लु १८; त्रिवा २,२२.

क्षौर-रम् नाप ७<sup>१</sup>.

क्षौर-कर्म-परित्यक्त-

-क्तः पप ४१९:१६.

क्षौर-पूर्वक-कम् नाप ४,३८.

क्षौरा(र-अ)भ्यङ्ग-स्नानो-  
(न-ऊ)र्ध्वपुण्ड्रा(ण्ड-आ)दिक-  
-कम् तुअ १०.

क्षौरा(र-अ)भ्यङ्गन-  
भोजन<sup>b</sup>-नम् इ १४:९.

क्षुर-धान-ने वृ १,४,७; कौ ४,१९<sup>c</sup>.

क्षुर(क>)रिका-काम् लु १.

क्षु<sup>d</sup> व ४३२:१०; ११; १२<sup>e</sup>.

क्षौ<sup>d</sup> व ४३२:१०.

क्षेत्र-✓क्षि(निवासि) द.

क्षेम<sup>o</sup>-मः तै३,१०,२; -मम् गरु ५;  
शि ६,१५८; मे अद्वै २५१<sup>f</sup>.

क्षेम-कर-रम् हे १४.

क्षेम-तर-रम् गी १,४६.

क्षौ<sup>d</sup> व ४३२:१०.

क्षौ<sup>d</sup> व ४३२:१०.

क्षोणि<sup>g</sup>-णिः कृपु १५.

क्षोभ-क्षोभक-✓क्षुम् द.

क्षौ<sup>d</sup> व ४३२:१०.

क्षौम-क्षुमा-द.

क्षमा<sup>h</sup>-क्षमा कृपु १४; क्षमाम् पा ६,४.

क्षमा-भृत-भृताम् व ३,३१.

क्षमी<sup>d</sup> व ४५७:९.

क्षमी<sup>d</sup> लां २१५:१६.

क्षम्यौ<sup>d</sup> त्रिवि ७,३४.

क्षमी<sup>d</sup> व ४५७:७; ४६४:२३.

क्षम्यौ<sup>d</sup> व ४५७:७.

क्षम्यौ<sup>d</sup> व ४६४:२३; वपं ३१२:९.

क्षम्यौ<sup>d</sup> त्रिवि ७,३०<sup>b</sup>.

क्षौ<sup>d</sup> वपं ३१२:१२.

क्षमी<sup>d</sup> आथ ३२८:१४.

✓क्ष्वेल

क्ष्वेल<sup>l</sup>-लः राप् ४,६०.

ख

ख<sup>d</sup> ख-ख दत्ता २<sup>१</sup>; लां २१५:१७.

ख<sup>d</sup> आथ ३२५:२०; व ४२७:

२२; हंषो ४.

ख-कार--०र अक्ष ५.

ख<sup>d</sup> हंषो १७.

ख-ग-✓खन् द.

✓खच्

खचित-

खचित-ज्योत्स्ना--स्नाभिः

सार २६५:२३.

ख-चर-, ख-ज-✓खन् द.

✓खञ्ज(वधा.)

खञ्ज<sup>rk</sup>-अः ध्या ९३,१; -आः

गर्भ ३.

खञ्जन<sup>21</sup>-

खञ्जन-मीन-चाञ्चल्य-वशी-

कृत--तः सार २४४:१५.

खट्<sup>m</sup> व ४६४:१८; खट्-खट् लां

२१६:१७.

✓खड्

खड्ग<sup>n</sup>-

खड्ग-कर्तुं--दक्षिण-कर-यु-

(ग>)गा--गा तारा ८३:२०.

खड्ग-ख-खेन योशि ४,२४.

खड्ग-रूप--पः कृ २०.

१खड्ग-हस्त<sup>o</sup>--स्ताभ्याम् व ४५०:१४.

२खड्ग-हस्त<sup>p</sup>--स्तः व

४४०:६.

✓खण्ड, >खण्डि, खण्डय-खण्डय

हंषो १६; खण्डयेत् पै ४,२२;

शि ७,२८.

खण्ड--ण्डम् नाप ७; विद्या १<sup>५</sup>;

-ण्डस्य शि ६,३०; -ण्डात् शि

६,३१; -ण्डानि पित्र १,१०<sup>३</sup>;

-ण्डे सौ २,११; -ण्डौ मुद्र २.

खण्ड-ज्ञान--नेन योशि १,६२.

खण्ड-द्वय--याभ्याम् मुद्र २.

खण्ड-परशु--शुम् सुबा १.

खण्डन--नम् महा ३,११.

खण्डि(न्>)नी<sup>१</sup>--०नि हंषो १६.

✓खण्फण्प्रसि<sup>d</sup> व ४६४:१३.

खदिर<sup>o</sup>--रः गोड २१.

खदिर-वन<sup>१</sup>--नम् गोड २१.

ख-द्योत-नाड. द.

✓खन्

२ख<sup>१</sup>-खम् प्र ६,४; मुं २,१,३;

आं ४,१०,४; ५<sup>३</sup>; वृ ५,१,१<sup>३</sup>;

१०,१<sup>३</sup>; अशि ५,१३; मैत्रि ६,

३६; कै १,१५; लु २२; ते ५,

३६; ७६; ६,२; ना १; ब्र १;

मना १,१९<sup>३</sup>; महा ५,५३; शां

१,७,१९; २प्र ३५:१; वपू १,

२; गौ ३,११; गी ७,४; खात्

अक्ष ५,६५; गोपू २५; खानि

क २,१,१; मैत्रि २,६; पाशु

a) 'परम्' इति अज्या. । b) समाहारे द्रस. । °भ्यङ्गन° इति मुपा. यनि. सु-शोधः । c) °ध्याने इति आन., °धावे इति अज्या. । d) =बीजमन्त्रविशेष- । e) व्यु. वैप१ यद्र. । f) क्षेम° इति मुपा. यनि. सु-शोधः । g) =पृथिवी । व्यु. वैप१ यद्र. । h) क्षमी(क्षौ) इति निसा.; क्षौ, क्षमी, क्षम्यौ इति अज्या. संटि. । i) =मकार- । j) 'खेखे' इति संटि. । k) धा. गतिवैकल्ये वृत्तिः (तु<sup>१</sup>पाधा.) । l) धा. अर्थः? =पक्षिविशेष- । m) =तदात्मकध्वनि- । n) =शस्त्रविशेष- (तु. पाउ १,१२४) । o) मध्यमपदलोपः कस. । p) वस. । q) आदौ खण् फण् इति बीजमन्त्रद्वयं चाऽग्रे त्रियसे इत्यस्य विकारभूतं पृथक् पदं चेति विमृश्यम् । r) =छिद्राऽऽकारोन्द्रियादिवृत्तिक- (तु. वैप१ विशेषः) । s) तैआ १०,१,१ ।



२, ९; १४; पित्र ६, ४; शि ४,  
३१; खे ध्या ८२; ८९; भव १,  
३३; महा ४, १७; मैत्रि ७, ११;  
योचू ५५<sup>१</sup>; १योत ७५; वरा ५,  
७४; शां १, ७, ४३; गौ ४, २८;  
गी ७, ८.  
ख-ग<sup>१</sup>- -गः अज ३, १५; कृ १४;  
त्र १; -गाय सूता ४, ४.  
खग-जाल- -ले महा ५, ६५.  
खग-रज्जु-  
खगरज्जु-वत् ध्या ६१.  
खगा(ग-अ)ण्ड-  
खगाण्ड-वत् ध्या ५०;  
योचू १४.  
ख-चर- -रः मैत्रि ३, २; ६, ३०.  
ख-ज<sup>१</sup>-  
खजा(ज-अ)ग्नि-योग-  
-गात् मैत्रि ७, ११<sup>०</sup>.  
ख-द्योत<sup>२</sup>-  
खद्योत-मात्र- -त्रः छां ६, ७,  
३; -त्रम् छां ६, ७, ५.  
खद्योत-वत् त्रिवा २, १२६.  
खद्योत-विद्युत्-स्फटिक-वा-  
शिन्- -शिनाम् श्वे २, ११<sup>०</sup>.  
ख-मध्य- -ध्ये वां १, ७, १९.  
ख-मय- -यम् वां १, ७, १९.  
ख-वत् अज ५, ३९.  
ख-स्थ- -स्थम् वृजा ३, १<sup>१</sup>.  
खा(ख-अ)निला(ल-अ)ग्नि-जल-  
-लानि शारी ६.  
खे-ग(त>)ता<sup>१</sup>- -ता ध्या ८२.  
१खे-चर<sup>२</sup>- -रः योशि १, १४८;  
षो १३; -राः वरा ४, ४४; -राय  
अक्षि १; चा १०; -रेषु यो २, १७.

खेचर-ता- -ताम् वरा २, ७९.  
खेचर-स्व- -स्वम् १योत  
१०२.  
खेचरा(र-अ)धि-पति- -तिः  
यो २, १७.  
खेचरा(र-अ)वसथ<sup>१</sup>- -थम्  
यो २, १७.  
२खे-च(र>)री<sup>२</sup>- -री आथ  
३९८; १८; त्रिता ३, १०; ध्या  
८०९<sup>१</sup>; ८२; ८३; यो २, ४; योचू  
५२; ५५; ८२; १योत २६;  
११८; १२७; योशि ५, ४०;  
१६; शां १, ७, १५; ३९-४३;  
-रीम् ध्या ८१; मं २, १, ८; यो  
२, २; ३; १५; १६; योचू ५३;  
५४; योशि ५, ४२; -र्या ध्या  
८३; यो २, १६; योचू ५७; योशि  
५, ४१.  
खेचरी-पथ- -थे यो २, २५.  
खेचरी-बीज- -जम् यो २,  
१८.  
खेचरीबीज-पू(र>)रा-  
-रया यो २, १६.  
खेचरी-मन्त्र-सिद्ध-  
-द्धस्य यो २, ४३.  
खेचरी-मुद्रा- -द्रया त्रिता  
२, ६२; -द्रा आथ ३९४; १७;  
निर्वा २९७; १०; -द्राम् योशि  
५, ३९; शां १, ७, १८.  
खेचरि-सं(ज्ञक>)ज्ञिका<sup>३</sup>-  
-काम् यो २, १.  
खेचरी-समता- -ताम् योशि  
२, १.  
खेचरी-सिद्धि-भाज्- -भाक्

यो २, १६.  
खनन- -नम् पै ४, ५.  
खनि(तु>)त्री<sup>१</sup>- -०त्रि हंषो १७.  
खात्वा शि ३, २.  
✓खर्<sup>१</sup> (भेदने)  
खर्<sup>२</sup>- -रैः श ६.  
✓खर्ज  
खर्ज<sup>३</sup>-  
खर्जर-ताल-पत्र- -त्रैः शि ६,  
२१२.  
खर्जर-फल- -लेषु शि ६, १२.  
✓खर्व  
ख(र्व>)र्वा<sup>१</sup>- -र्वा तारा ८३; १९.  
✓खल् (बधा.<sup>२</sup>)  
खल्<sup>३</sup>-  
खल्वि(न>)नी<sup>२</sup>- -०नि व  
४३१ : ४.  
खलकुल<sup>३</sup>- -लाः वृ ६, ३, १३.  
खलु<sup>४</sup> छां १, १, १०; ३, ३; ६; ५, १; वृ  
१, ३, ६; २७; २८; मै ३, २<sup>३</sup>;  
मैत्रि १, १; मैत्रे १, ४, १; गौ २,  
७; ४, ३२.  
खल्व<sup>५</sup>- -ल्वाः वृ ६, ३, १३.  
खान<sup>६</sup> हंषो १६.  
✓खाद्>खादि, खादय-खादय लां  
२१४ : १४; १७; २१५ : ३.  
खादत्- -दन्तम् छां १, १०, २.  
खादित्वा छां १, १०, ५, ७.  
खाद्य-  
खाद्य-पेय-लेह्य-चोष्य-रस-  
साः सार २२५ : १९.  
खाद्यपेयचोष्यलेह्यरसा-  
(स-आ)स्वाद-(ज्ञ>)ज्ञा<sup>१</sup>-  
-ज्ञा सार २६३ : ७.

a) =सूर्यपक्ष्यादिवृत्तिक-। b) =वायु- (वैतु. राती. =निर्मन्थनकाष्ठ-). c) ०संयो<sup>०</sup> इति सात.। d) =क्षुद्र-  
जन्तुविशेष-। e) ०काशनीनाम् इति निसा. यनि. सु-शोधः (तु. आन., शं., शंदी., विवि.)। f) खसं<sup>०</sup> इति  
अख्या.। g) सप्त. सप्त. अलुक् (पा ६, ३, १४)। h) विप.। i) पूष. =हकार-, उप. =ईकार-। j) =योगमुद्रा-  
विशेष-। k) पूष. छन्दःप्रयोजितं ह्रस्वत्वं द्र.। l) पाद्या. उस्सं.। m) विप. [वैतु. अभा. <२ख- + र-(<✓रा)  
इति]। n) वा. अर्थः? (तु. वैप१)। o) =शक्तदेवी-। p) तु. पाद्यामा.। q) भाष.। धा. हिंसायां वृत्तिः। r) मत्वर्थे  
त्रिनिः प्र. उस्सं. (पा ५, २, १२१)। s) व्यु. =धान्यविशेष-। t) अव्य.। व्यु. वैप१ यद्र.। u) =बीजमन्त्रविशेष-।

खाद्य-पेय-चोष्य-लेह्य-विविध-  
पक्क-रसा(स-अ)नेक-संवल्लि-  
त- -तानि सार २८१: ५.

✓खिद्, खिद्यामि अज ५, ५९.

खेद- -दम् महा ६, २८.

खेद-ता- -ताम् महा ३, २६.

खेदा(द-आ)ह्लाद- -दौ अज ५, ९९.

खेदो(द-उ)ह्लास-विलास- -सेषु  
महा ६, ३.

✓\*खिल् (निगतौ)

खिल्<sup>b</sup>-

खिली✓कृ

खिली-कृत- -तम् महा ४, १३३.

खीं हंषो १६.

खुं<sup>a</sup> व ४३५: १७.

✓खुर (\*गतौ)

खुर- -राणाम् पा ६, १०.

खुर-पुटो(ट-उ)त्खात-पवनो-  
(न-उ)द्धूत- -रेणु- -णुना शि ५, ३४.

खुर-विषाण- -णाभ्याम् इ १९: १५.

खुली- -लि व ४३५: १७.

खूं हंषो १६.

खे खे-खे लां २१५: १८.

खें व ४२८: २; खें-खें व ४५६: ११.

खे-गत- , १, २ खे-चर- ✓खन् द्र.

खैं हंषो १६.

खौं हंषो १६.

खौं हंषो १६.

✓ख्या, > ख्यापि, ख्यायन्ते वृजा ७,

८; रुजा ३, १.

ख्यापयन्ति गौ ४, ४; ख्यापयेत्  
नाप ४, २.

ख्या- -ख्या अरु १४४<sup>f</sup>.

ख्यात- -तः अना ३३; कृ २१; राप्  
४, १८; -तम् राप् १, ३; महा  
५, १३२; १संन्या २, ६९; -तान्  
अक्षि ११.

ख्यान- -नम् सांस् ५, ५२.

ख्याप्यमा(न>)ना- -नाम् गौ ४, ५.

## ग

१ग<sup>a</sup> ग-ग-ग व ४२९: ६; ११; १५;  
२०; ४३०: ३; ८.

ग-कार- -रः ग ८.

गं आष ३९५: २०; त्रिता ३, २९;  
व ४२९: ६; ७; हंषो ४.

गं-कार- -र अक्ष ५.

२ग<sup>b</sup>- गः मैत्रि ६, ७९<sup>f</sup>.

गगन<sup>c</sup>- -नः पाशु १, ९; -नम् गौ ३,  
८; मना २, १२, ३९<sup>f</sup>; योचू ११५;  
-नस्य त्रिवि २, १३; -ने ते ६, ७६;  
महा ५, ५४; योचू १००; -नेषु  
गोउ २२<sup>k</sup>.

गगन-सदृश- -शम् शु १, १८.

गगन-सिद्धा(द्ध-अ)न्त- -न्तः निर्वा  
२९७: २.

गगन-स्वरूप- -पः पाशु १, २.

गगना(न-आ)कार- -रम् योशि ६,  
६०.

गगना(न-अ)न्तर- -रे योशि ६, २७.

गगनो(न-उ)पम- -मम् योशि १,

२०; सु २, २, ७३; -मान् गौ ४, १.

गङ्गा<sup>d</sup>- -ङ्ग्या गोच ६८: २०; -ङ्गा ते  
५, ३५; सिशि ३८१: १०; -ङ्गा-  
याम् राउ ३, ३; योशि ६, ४१;  
-ङ्गं मना १, १३; वा ७; ऊ  
६३: ९<sup>a</sup>; गोच ६६: ६.

गङ्गा-गोमती-तीर्थ- -र्थम् मधु ८: ९

गङ्गा(ङ्गा-आ)दि-तीर्थ-क्षेत्र-

-त्राणाम् श्या २०.

गङ्गा-धर<sup>e</sup>- -रः अद्विभा २.

गङ्गा-प्रवाह- -हः व ४५६: २३.

गङ्गा-प्रीति-कर- -रम् रुजा २, १०.

✓\*गच्छ, गम्, > गमि, जङ्गम्, जिग-

मिषु, गच्छते अना २६<sup>g</sup>; शाध;

गच्छति के १, २<sup>h</sup>; क १, १, ३, तै २,

६, १<sup>h</sup>; ऐ ४, २; छां २, १३, १<sup>h</sup>; वृ

१, ४, ११; गौ ३, २२; कै १, ७;

कौ २, १२<sup>h</sup>; महा ५, १२६<sup>h</sup>;

मैत्रि ६, २४; ३८; गच्छतः वृ

५, १२, १; यो १, २९; गच्छन्ति

छौ ८, ६, २; वृ ३, ३, २<sup>h</sup>; कौ १,

२; पाशु २, १५; मै ५, ७<sup>h</sup>; मैत्रि

६, ७; सुबा ९; योशि ३, १२;

स्व ६१: २२; भव १, १५; गी

२, ५१; गच्छामि मना १, ९९<sup>h</sup>;

वरा २, ३५; गच्छताम् वृ ४, २,

४; गच्छतु वृ ४, २, ४; ६, २, ४;

गच्छ जा ४९<sup>h</sup>; मना २, ३६९<sup>h</sup>;

नाप ३, ७७<sup>h</sup>; पप ४१८: १२<sup>h</sup>;

२संन्या १६: ११<sup>h</sup>९<sup>h</sup>; १२९<sup>h</sup>;

अव्य ६; गोउ ६८<sup>h</sup>; या १, १<sup>h</sup>९<sup>h</sup>;

गरु ११९<sup>h</sup>; व ४४३: २१; गच्छत

राप् ४, २५; अगच्छत् अव्य ६;

a) द्रस. गर्भितेन कस. गर्भितः बस. । उप. भावे क्तः प्र. । b) विप. । c) = बीजमन्त्रविशेष- ।

d) तु. टि. कुं । e) = देवीविशेष- (तु. कुली- ) । f) तैआ १, २७, २ । g) = वर्ण- वा, = बीजमन्त्रविशेष- वा । h) भर्ग-

इत्यस्योत्तरैकदेशः । i) व्यु. वैप १ यद्र. । अर्थर्चादिषु उत्सं. (पा २, ४, ३१) । j) तैआ १०, १०, ३ । k) 'गहनेषु' इति

आन. । l) व्यु. वैप १ यद्र. । m) ऋ १०, ७५, ५ । n) उत्तरेण संधिरार्थः । o) 'पश्यते' इति आन., अज्या. ।

p) प्लुतो भवति । q) 'गच्छन्ती' इति अज्या. संटि. । r) 'गच्छति' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ.) ।

s) तैआ १०, १, ९ । t) 'यच्छ' इति ऐआ २, २१ । u) तैआ १०, ३०, १ । v) शौ ७, १०२, ५ । w) 'गच्छध्वम्'

इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. आन., अज्या. संटि.) । x) मा १२, ४ ।

शौ ५३:९; १०; अगच्छन् वृ ३, ३, २; मना २, ७९<sup>९</sup>; गच्छेत् मना १, १३<sup>९</sup>; अशि ५, १०-१२; ते ६, ९२; नाप ४, ३८; योशि १, ७७; १संन्या २, ११; पप ४१८: २९; कठ १; रुह ३५; ता १, १; गच्छेयुः नाप ५, ३०; गच्छेयम् २संन्या १५: २. जगाम छां ८, ८, ४; वृ ४, ३, १; मैत्रे २, १; आरु १; वृजा ७, ५; त्रिब्रा १, १; त्रिवि ८, २४; रापू ४, २३; ह १५<sup>९</sup>; सर २, ७९<sup>९</sup>; जग्मुः वृ ६, १, ७; वज ४, २८; गन्तासि<sup>९</sup> गी २, ५२; गमि-  
व्यति मैत्रि ६, ३०; ना ४, आबो १; शां २, १; गमिष्यन्ति रशिसं ३७; गमिष्यसि वृ ४, २, १<sup>३</sup>; गमिष्यामि वृ ४, २, १; सार २५६: ८; गमिष्यावः कौ १, १; अगमत् वृजा १, १; ६, १<sup>३</sup>; पै १, ३१; ३२: २, २; २५; २८; ३०; पं२७; गोपू ३१; गमः गी २, ३; ९<sup>९</sup> अगन्म अशि ३, ४; च २१: १९; वटु ३१५: ३; गमाम मना १, १२<sup>९</sup>.  
गम्यते कौ ४, १५<sup>९</sup>; गी ५, ५. गमयति प्र ४, ४; छां ४, १५, ५; ५, १०, २; वृ ६, २, १५; मैत्रि ६, ३७<sup>३</sup>; गमयन्ति छां ६, ९, १; सार २२६: १२; गमयतु छां ५, २, ६; गमय वृ १, ३, २८<sup>६</sup>; अक्षि १<sup>३</sup> ९<sup>९</sup>; चा ११<sup>३</sup> ९<sup>९</sup>; अगमयत् वृ ३, ३, २. जिगमिषेत् छां ५, २, ४; कौ २, ४. गच्छत्-च्छतः प्र ४, २; योशि १, ९५; अञ ५, १. च्छते सि ६,

२१६; च्छत्सु पित्र ३, २; च्छन्निः योशि १, १५७; च्छन् १योत २३; शां १, ७, १४; महा ६, ३४; १संन्या २, ३३; अञ ४, ६३; कुं २८; सि ६, १८१; काम १; सिशि ३८१: ११; गी ५, ८; च्छन्तम् सि ६, २१५; ७, ८४.

गच्छन्ती- न्यः छां ८, ३, २. गत, ता- तः तै २, ७, १; मैत्रि ६, ३०; वृजा ६, १०; शु ३, ९, १९; ते ६, ९३; ब्रवि १९; योचू २९; ५९; त्रिब्रा २, १५; त्रिवि ७, ४०; पै २, ३६; ४, १३; महा ४, ३६; ६, ४६; योशि १, १२१; अञ २, १४; १५; ३, १२; अक्षि ३३; ३५; त्रिता २, ७०; वरा ५, ४१; पिं ४; सार २२६: १९; २५७: २२; सि ६, १८२; व ४६६: २२; गी ११, ५१; -तम् ऐ ४, २; छां ७, १, ५; २-३, २; ४-५, ३; ६-१४, २; गौ ३, २; ३८; मै ४, ४, ८; मैत्रि ६, ३४; ब्रवि ५; ध्या १०५; १योत ९; नाप ६, १<sup>१</sup>; महा ५, १२८<sup>६</sup>; योशि १, ६; २०; अञ १, ४२; ४, ५६; अज्या ६५; त्रिता ५, ५; अवि ५<sup>१</sup>; सार २७६: १०; -तया इ १६: ११<sup>३</sup>; सार २८४: २२; -तस्य मैत्रि ६, १०; -ता १संन्या २, ३८; अञ १, ५१; वरा २, ८२; सार ४४२: ११; -ता: सुं ३, २, ७; गर्म ४; मना २, ७९<sup>९</sup>; ते १, २६; त्रिवि १, २; २, ६; ८, ६<sup>९</sup>; महा ४, ३; १संन्या २, ३०; अञ ४, २३; अक्षि ३०; ३१; भ२, २६; वरा ३, २२; इ १७:

४; १९: ८; व ४६५: १९; मव १, २३; ४४; गी ८, १५; १४, १; १५, ४; -तायाम् महा ५, ११५; -तै नाद २८: २९; नाप ३, २७; शां १, ७, ३०; पै ४, ९; महा ५, ४९; योशि ५, १८; २१; १संन्या २, ३६; अञ १, ९; अक्षि ३१; जाद ६, ३६; वरा ४, १२; ५, ४८; मु १, १, ४३; पिं ३; इ १४: १३<sup>२</sup>; -तै: महा ५, १६९; -तौ योशि ६, ३६. गत-कौतुक-विभ्रम- -मम् महा ५, ६८.

गत-क्लम- -मः त्रिब्रा २, ११०; शां १, ७, ४४.

गत-त्र(प>)पा<sup>२</sup>- -पा सार २२३: ५; २३४: ६; २६९: २.

गत-पञ्चे(ब-इ)न्द्रिय-भ्रम- -मः १संन्या २, १९.

गत-मत्सर- -रः महा ३, ५७.

गत-मोह- -हम् गोपू २६.

गत-रस- -सम् भव ४, १४; गी १७, १०.

गत-व्यग्र<sup>०</sup>- -ग्रः महा ६, ८; मु २, २, १८.

गत-व्यथ- -थः सार २६१: १६; गी १२, १६.

गत-सङ्ग- -ङ्गस्य गी ४, २३.

गत-संदेह- -हः गी १८, ७३.

गत-स्नेह- -हः अञ २, २७; महा २, ४७.

गता(त-आ)गत- -तम् गी ९, २१.

गतागत-रूप- -येण भा ३८.

गता(त-अ)सु- -सून् गी २, ११.

गतो(त-उ)द्वेग- -गः महा २, ५०.

a) तैआ १०, ६३, १। b) तैआ १०, १, १३। c) ऋ ८, १००, १०। d) ऋ ८, १००, ८। e) मौस्थि. कृते तु. वैप १, २५३a। f) ऋ ८, ४८, ३। g) ऋ १०, ९, ३। h) 'गम्यते' इति आन., अज्या., शांआ ६, १५। i) माश्रा १४, ४, १, ३०। j) 'गतम्' इति अज्या.। k) 'तः' इति अज्या. संटि.। l) 'गतक्षयम्' इति आन. संटि., अज्या.। m) पादगतः पा. १। n) ✓\*अघ्>अघ्वन्->-घ्वानम् इत्यत्र सस्थ. टि. द्र.। o) वस.। उप. रम्यग्र- यद्र.।



गतवत्-चात् सार २५७: १४;  
२५८: ३.

गति-तयः भव ५, १; -तिः क १,  
२, ८; ३, ११; तै ३, १०, २; छां  
१, ८, ४, ५, ७; ९, १; वृ ४,  
३, ३२; गौ १, २३; मै १, ७;  
५, १; ७; मैत्रि १, ४; ४, १;  
६, १; ७; २२; २४; ३०; मैत्रे  
१, २; ३; पदं ४; सुबा ६; ते ३,  
२२; ५, १९; ३८; ६, २१;  
४६; ६७; १योत ७५; निर्वा  
२९८: ४; योचू १००<sup>३</sup>; अता  
१७; महा ४, ९०; ५, १९; ३४;  
७६; योशि ६, ४५; अन्न १, ५३;  
यो १, ६३; ३, २९; भ २, ८; गोपू  
१३; वरा ४, १०; शा २७;  
२८; ३६; छाग २४: २; द १२;  
कृपु २२; सार २६५: १६;  
२७९: ६; शि ५, १९; ४०;  
कालि ४०१: ५; ४०३: १५;  
गु ४२; श्या १७; भव १, ३३;  
गी ४, १७; ९, १८; १२, ५; -तिम्  
क २, ३, १०; छां ४, १४, १;  
मै ३, १; २; मैत्रि ६, ३; मना  
१, ९५<sup>३</sup>; १योत ११६; नाप ४,  
१; ए १४; योशि ६, ३४; ४०;  
कुं २२; १अव ५; त्रिता ३, २१;  
२५; वरा ५, ६१; व ४३६: ११;  
भव १, ३७; २, ५०; गी ६, ३७;  
४५; ७, १८; ८, १३; २१; ९, ३२;  
१३, २८; १६, २०; २२; २३; -ती  
गी ८, २६; -ती: मैत्रि ३, ११<sup>०</sup>;  
२१<sup>०</sup>; भव १, ३; -तीनाम् सुबा  
१३; -ते: ब्रसू २, ४, ५; ३, ३,  
२९; -तौ गौ ४, ३४; -स्या मै  
५, १; मैत्रि ६, १.

गति-मति-वाग्-जिह्वा-स्त-  
म्भन-नम् व ४५७: १७.

गति-योग-गे सांस् ६, ३७.

गति-रति-भाव-वः सार  
३२०: ४.

गति-रति-विलासि(न्>)नी<sup>१</sup>-  
नी सार २२३: ३.

गति-विच्छेद-दः योसू २, ४९.

गति-विशेष-पात् सांस् १, ४८.

गति-शब्द-ब्दाभ्याम् ब्रसू १,  
३, १५.

गति-श्रुति-ति: सांस् १, ५१;

-ते: सांस् ५, ७०; ६, ५९.

गति-सामान्य-न्यात् ब्रसू १,  
१, १०.

गत्य(ति-अ-)भाव-चात् महा  
२, ८.

गत्या(ति-अ-)गमन-नयो: गौ  
३, ९.

गत्या(ति-अ-)दि-विवर्जित-

-त: ते ५, ६४.

गत्यु(ति-उ)पपत्ति-ते: ब्रसू ४,  
३, ७.

गत्वा छां ८, ३, २; वृ २, १, १९;

४, ४, ३; गौ २, २; मै ५, ८;

मैत्रि ६, ८; मैत्रे २, १; मना २,

८०<sup>३</sup><sup>३</sup>; हं ६; आरु १; वृजा ६,

४; गत्वा-गत्वा त्रिविद्, २१; २३.

गन्तव्य-व्यम् प्र ४, ८; अना ३;

सुबा ५, ६; ९; ध्या ६५; ते ४,

२०<sup>०</sup>; योचू ३७; श २६; शां

१, ७, ३७; शि ६, १६५; गी ४,

२४; -न्ये सुबा ५.

गन्तव्य-देश-हीन-न: मैत्रे

३, २३.

गन्तु-न्ता मै ५, ७; मैत्रि ६, ७.

गम-

गमा(म-आ)गम-चेष्टा-ष्टा ते  
६, १०; -ष्टासु अन्न २, ८.

गमा(म-आ)गम-वश-शात्  
तारा ८३: २५.

गमा(म-आ)गम-स्थ-स्थम्  
ध्या २४; योशि ६, २०.

गमध्वे औषे ९: १६१<sup>१</sup>.

गमन-नम् ते २, ४०; पाशु २,

३४; रुह ५०; सांका ४४<sup>३</sup>; -नात्

योशि २, ९.

गमन-चालन-वैराग्य-मति<sup>१</sup>-

-ति: ध्या ९३, ७.

गमन-बुद्धि-द्धि: नाप ६, ११<sup>३</sup>.

गमन-विरोध-धम् नाप ९, २०

गमना(न-आ)गम-मौ वरा

३, ५.

गमना(न-आ)गमना(न-आ)-

त्मक-कम् ते ५, ७९.

गमना(न-आ)दि-दौ हं ८.

गमनादि-विवर्जित-त:

मैत्रे ३, २३.

गमनादि-शून्य-न्यम् ध्या

२४; योशि ६, २०.

\*गमया-

\*गमयां/कृ, गमयांचकार वृ १,

३, १०.

गमयित्वा वृ ४, ३, ४; त्रिता १, ७९

गम्य-स्यम् ते १, २०; महा ५, ४३.

गम्या(म्य-अ)गमन-मानस-

-स: ते १, ४<sup>१</sup>.

जङ्गम<sup>१</sup>-म: पा १, २; -मम् ऐ ५, ३;

१संन्या २, ११; २शिसं १६;

-मानाम् पा १, २; ८, ९; वउ ३,

३१; -मानि पै ४, २; गु ३२.

जङ्गम-पूज्य-ज्यानाम् रु १७.

a) 'स्थितिः' इति अज्या.। b) तैआ १०, १, ९। c) तु. सस्थ.टि. अवाच्, न्च्->अवाची->-१ची: (तु. सात.  
गति->-तिम्)। d) तैआ १०, ६४, १। e) 'मन्तव्यम्' इति अज्या.। f) 'गमध्ययी' इति मुपा. यनि. सु-शोधः।  
g) 'चलन' इति निसा., अज्या. संटि.। h) 'ने बु' इति मुपा. यनि. सु-शोधः। i) गुरुमानार्थ इति आन., 'सा: इति  
अज्या.। गपू. (पृ ९) अगम्यागम-कर्तु->-तारः इत्यत्र -तां इत्येकत्वपरः शोधः द्र. (तु. टि.)। j) बन्ध. प्राति. द्र.।

जङ्गम-रूप- -पः रु १५; १६.  
जङ्गम-स्थावर- -रेषु वा २८.  
जङ्गम-स्वरूप-  
जङ्गमस्वरूप-वत्- -वान्  
वउ २, १५.

## ✓गज् (मदे)

गज<sup>१</sup>-जः १योत ५९; ११०; योचू  
११८; शां १, ७, ६; -जस् नाप  
६, १; -जे ते ६, ८२; -जैः सी ३७.  
गज-गति- -तिस् ते ६, ९३.  
गज-पटोल<sup>a</sup>- -लान् शि ६, ७९.  
गज-रूप-धर- -रस् वपू १, २; ५.  
गज-वक्त्र- -क्त्रम् हे ११; वउ  
३, १२; ३०; ४, ३०; -क्त्रैः वउ  
३, ५७.  
गजा(ज-आ)कार- -रः वउ ४,  
७; -रम् वउ ३, १२.  
गजा(ज-आ)दि-वश्य-कर-  
-०र अत् ५.  
गजा(ज-आ)ननो(न-उ)त्तरी-  
(य>)या<sup>b</sup>- -०ये वउ ३१; १३.  
गजा(ज-आ)इव-रथ-संयुक्त-  
-कैः शि ६, २०३.  
गजे(ज-इ)न्द्र- -न्द्राणाम् गी  
१०, २७.

✓गण्, >गणि, गणयेत् १कौल ६: १.  
गण्यते त्रिता १, ५४; गण्यन्ते  
कृ १.

गण<sup>c</sup>-णः वृ २, १, ११; सार २४१:  
९; सांस् १, ६१; सांकार २२; २४;  
-णाः भ २, २७; सार २२८: ६;  
२५०: १८; २७४: १९; २३;  
२७५: ६; २८१: ३; १२; २८२:  
१५; १६; शि ५, २२; सिशि  
३८१: ८; -णानाम् त्रिता ३,  
२७५<sup>d</sup>; ४, ३१५<sup>d</sup>; वउ २९: ९५<sup>d</sup>;

वपू १, ५५<sup>d</sup>; वउ २, ६; -णैः गोउ  
३८; सिशि ३८२: २२.  
गण-नाथ- -यस् वपू १, ५५<sup>o</sup>.  
गणनाथ-तत्त्व- -त्त्वम् हे  
१३; १४.

गण-पर<sup>e</sup>- -पः पी ४२२: १९.  
गण-पति<sup>f</sup>- -तये ग १; ९; १५;  
व ४५६: १४; १९; -तिः वउ २,  
७; -तिम् त्रिता ३, २७५<sup>d</sup>; ग  
१८; वउ २९: ९५<sup>d</sup>; -तेः वउ ५, ५  
गणपत्य- -त्येषु राउ  
५, ४.

गणपत्या(त्य-आ)-  
दि-मन्त्र- -न्त्रेषु राउ ५, ५.  
गणपति-दुर्गा- -र्गायाः सार  
२३५: ७.

गण-वंश-जात- -ताः सिशि  
३८१: ९.  
गण-शस्(>) वृ १, ४, १२.  
गण-संयुत, ता- -तम् शि ६,  
१३९; -ताम् शि ६, १२२.  
गणा(ण-आ)दि- -दिम् ग ७.  
गणा(ण-आ)धि-प<sup>f</sup>- -पम् त्रिता  
४, ३१.

गणा(ण-आ)धिपत्य- -त्यम्  
अशि ७, ९.  
गणे(ण-ई)श<sup>g</sup>- -शः हे ५; १०;  
वउ १, ४; १५; २, १०<sup>h</sup>; १७;  
२५<sup>h</sup>; २६; २७; २९; ३७; ३, १;  
१५; १९; ४२; ४४; ६२; ६३; ४,  
१; ९; ४७; ४८; -शम् त्रिता ३,  
३०; हे ८; पी ४२२: ६; वउ  
२, ५; ६<sup>i</sup>; २४; ३, ४०; -शाय  
त्रिता ३, २९; सूता ४, २.  
गणेश- -शम् वउ ५,  
२०; -शान् त्रिता ४, १५.

गणेशी- -शी ग ८<sup>h</sup>.

गणेश-कुमार-नन्दि-भृङ्गि-  
चण्डिरिटि-कीर्तिमुख-वीरभद्र-  
भैरव-महाकाल-शोभनन्दि-  
सुनन्द-नन्दिसेन-बाण-रावणा-  
(ण-आ)द्य(दि-अ)न(न्-अ)न्त-  
नाना-गणप-रूप- -पम् सि  
६, ३१.

गणेश-तापनीयो(य-उ)प-  
निषद्- -षदम् वउ ५, ४७.  
गणेशतापनीयोपनिषद्-  
(द्-अ)ध्यापक-सम- -मम्  
वउ ५, २६१<sup>h</sup>.

गणेश-त्व- -त्वम् त्रिता ४,  
३२.

गणेश-यु(र>)री<sup>i</sup>- -री  
राधा ४, ६.

गणेश-वटुक-क्षेत्रपाल-यो-  
गिनी- -न्यः तारा ८४: २.

गणेश-सायुज्य- -ज्यम् हे  
१४.

गणे(ण-ई)श्वर<sup>j</sup>- -रः गोउ २३;  
-रम् वउ ३, ३०; -राः शि ६, १८७

गणेश्वरी<sup>k</sup>- -०रि वउ ५३: २२  
गणक<sup>l</sup>- -कः ग ९; वउ ५, २.

गणना- -ना महा ६, २५; ७१<sup>i</sup>.  
गणना(ना-आ)कार- -रः वउ  
२, १०.

## ✓गण्ड (बधा.)

१गण्ड<sup>1</sup>- -ण्डौ गु १२.

गण्ड-देश- -शे सिशि ३८१: १८

२गण्ड<sup>2</sup>-

गण्ड-पित्त-तालुक-विस्फोटका-  
(क-आ)दि-स्वग्-रोगा(ग-आ)-  
दि-सर्व-रोग- -गान् व  
४३३: २१.

a) मध्यमपदलोपः कस. । =शाकविशेष- । b) पा. १ पृ. गजाऽजिन- वा, गजाऽदन- (=गजभक्ष्या-)  
वेत्येतत्परः शोधः द. । c) वअ. प्राति. द. । d) ऋ २, २३, १ । e) 'गणपतिम्' इति ऋ २, २३, १ । f) उस. उप.  
<✓पा रचये । g) 'गणेशविद्या' इति निसा. । h) गणेश<sup>o</sup> इति मुपा. यनि. सु-शोधः । i) 'कलना' इति अज्या. ।  
j) धा. अर्थः? =कपोल- । वदनैकदेशे पठितः पाधा. तु वस्तुत एतज्जः नाधा. द. । k) धा. अर्थः? =गडु- ।

गत-, गतवत्-, गति-, गत्वा

✓\*गच्छ्, गम् द्र.

✓गद्, जगद् मै १, १; मैत्रि १, २;  
मैत्रे १, १.

गदित-तस्मै ५, ५६; ताः शि १, ५

गद्य-

गद्य-पद्या(द्य-आ)त्मक- कैः

सर ३, ९.

गदा<sup>a</sup>- -दा कृ २३; कृपु २१; गोड  
५७; -दायै त्रिवि ७, ४२.

गदा(दा-अ)ङ्कुश-हस्त<sup>b</sup>- -स्ता-  
भ्याम् व ४५१ : १४.

गदा(दा-अ)ङ्कुश-हस्त<sup>c</sup>- -स्तः  
व ४४१ : १४.

गदा(दा-अ)ब्ज- -ब्जे रापू ५, ९.

गदा(दा-अ)द्या(दि-आ)युध-

शस्त्रा(त्र-अ)जन्य-मण्डल<sup>d</sup>-

-लात् सं १४१<sup>e</sup>.

गदा(दा-अ)रि-शङ्खा(ङ्ख-अ)ब्ज/-

धर- -रम् रापू ५, ८.

गदिन्- -दिनम् गी ११, १७; ४६.

गदिनी- -०नि व ४३५ : १३;

-नी व ४२६ : ८.

गन्तव्य-, गन्त- ✓\*गच्छ्, गम् द्र.

✓गन्ध् (\*शिङ्घने<sup>f</sup>)

गन्ध- -न्धः श्वे २, १३; मना २,

११<sup>g</sup>; कौ ३, ५; ध्या ५<sup>h</sup>; ७;

त्रवि ३५; ३७; १योत १३६;

२योत १, ८; मं२, २, ५; वा २९;

शारी ८; १संन्या २, १९; भा ३४;

रूढ २२; भव २, १७; पित्र ६, ५;

वउ ६, २९; गी ७, ९; -न्धम् क

२, १, ३; पदं २; कौ ३, ७<sup>i</sup>; ८;

ते ३, ५८; ५, १०३; महा ५,

१७५; -न्धाः मना २, ६३<sup>j</sup>;

कुं १९<sup>k</sup>; -न्धान् ऐ ५, १; वृ

३, २, २; कौ १, ७; ३, ४<sup>l</sup>; ६;

नाद ४२; गी १५, ८; -न्धानाम्

वृ २, ४, ११; ४, ५, १२; सुवा

१३; -न्धाय छां ८, १२, ४; -न्धेन

सार २८७; ३; -न्धैः अक्ष ४.

गन्ध-गुण- -णः त्रिवा १, ९.

गन्ध-ग्रहण- -णम् नाप ६, १.

गन्ध-घ्राण- -णम् २ प्र ३२ : १४.

गन्ध-ज(ङ>)डा- -डया

१संन्या २, १८.

गन्ध-तन्-मात्र- -त्रम् महा ५,

१५१.

गन्ध-द्रव्य- -व्येण रा ४२५ : १.

गन्ध-द्वा(र>)रा- -राम् मना

१, १०; वृजा ३, ७<sup>m</sup>; ऊद ३:

९<sup>n</sup>; नार ४; रशिसं ३६; व

४६२ : १२.

गन्ध-द्वि-प- -पः वरा २, ६५.

गन्ध-पवित्रक- -कम् शि ७, ९.

गन्ध-पुष्प-विभूषण- -णम्

१संन्या २, ८५<sup>o</sup>.

गन्ध-पुष्पा(ष्प-आ)दि- -दि

ते ६, २२.

गन्ध-भूमि- -मिभ्याम् गोड १०

गन्ध-माल्य- -ल्यानि शि ७,

५०; -ल्ये छां ८, २, ६.

गन्धमाल्य-लोक<sup>p</sup>- -केन छां

८, २, ६.

गन्धमाल्यलोक-काम-

-मः छां ८, २, ६.

गन्ध-रसा(स-आ)दि- -ज्ञा-

(न>)ना- -ना गर्भ ३<sup>q</sup>.

गन्ध-लिप्त- सः रा ४२५ : १५

गन्ध-लेपन- -नम् नाप ७;

१संन्या २, ७९.

गन्ध-वत् ब्रसू २, ३, २६.

गन्ध-व(त्>)ती- -ती गोड

१०; गोच ६७ : १५.

गन्ध-वाहन- -नः गोपू ३०.

गन्ध-वृक्ष<sup>r</sup>-

गन्धवृक्षा(क्ष-आ)दि- -दिः

सार २४५ : २३.

गन्ध-शृङ्गार- -रात् सार २८६ :

२३.

गन्ध-सलिल<sup>s</sup>- -लैः वृजा ३, २७.

गन्धा(न्ध-आ)कर्षि(न्>)णी<sup>t</sup>-

-णी आय ३९५ : ७.

गन्धा(न्ध-आ)क्षत-पुष्प-धूप-

दीप- -पान् सुसु ८.

गन्धा(न्ध-आ)ख्य- -ख्यम् अक्ष

५, ७३; जाद ९, ४.

गन्धा(न्ध-आ)दि- -दिना वउ

६, ७.

गन्धो(न्ध-उ)दक<sup>u</sup>- -केन अक्ष ४

गन्धर्व<sup>v</sup>- -र्वः मना १, ३९<sup>v</sup>; मुद्र ३<sup>w</sup>;

-र्वाः छां २, २१, १; मना २,

२८९<sup>x</sup>; मुद्र ३; गोड २२; २६;

६२; -र्वाणाम् योशि ४, १६; गी

१०, २६; -र्वान् वृ १, १, २; -र्वयि

व ४३५ : २०; -र्वेषु मना २,

४२९<sup>y</sup>; गोड ६३.

गान्धर्व- -र्वः नाद १३; सी

३०९<sup>z</sup>; -र्वम् वृ ४, ४, ४९<sup>aa</sup>;

नापू ५, ३८९<sup>ab</sup>.

गान्धर्वी- -०र्वि गोड

८६<sup>c</sup>; -र्वी गोड ५; १६<sup>d</sup>; ६३.

a) व्यु. ? = अक्षविशेष-। b) मध्यमपदलोपः कस.। c) बस.। d) विशेषि. बस. (= शक्रवत्-जनाऽहितकर-मण्डलवत्-।) e) °शास्त्रा° इति मुपा. यनि. सु-शोधः। f) पूष. द्रस. २योऽवयवः = १अरिन्-। g) पाधा. उरसं.। h) तैआ १०, ९, १। i) °न्धम् इति आन.। j) 'गन्धार' इति निसा. मुपा. (तु. तैआआ १०, ६३) यनि. सु-शोधः। k) °न्धान् इति अज्या.। l) खि ५, ८७, ९। m) °रा इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू.)। n) समाहारे द्रस.। o) 'सम्यग् ज्ञानात्' इति अज्या. पामे.। p) व्यु. वैप १ यद्र.। q) मा ३२, ९। r) 'गन्धः' इति अज्या.। s) तैआ १०, २१, १। t) तैआ १०, ४१, १। u) = तदाख्योपवेद-। v) °र्वी इति अज्या. सटि.।



गन्धर्व-नगरो(र-उ)पम-  
मे सुबा ८.  
गन्धर्व-वेद- -दः सार  
२८२: ७.  
गन्धर्व-कन्या- -न्याभिः रा ४२३:  
१५.  
गन्धर्व-गृही(त>)ता- -ता वृ ३,  
३,१; ७,१.  
गन्धर्व-नगर- -रम् अक्ष १, २०;  
महा ५, १६२; गौ २, ३१; -रस्य  
महा ५, १६७; -रे ते ६, ७५;  
-रेषु महा ३, ३२.  
गन्धर्व-नगरो(र-उ)पम- -मम्  
सार २९१: २३.  
गन्धर्व-यक्षा(क्ष-अ)सुर-सिद्ध-  
संघ- -घाः गी ११, २२.  
गन्धर्व-लोक- -काः वृ ३, ६, १;  
-के क २, ३, ५; वृ ४, ३, ३३;  
-केषु वृ ३, ६, १.  
गन्धर्व-विद्याधर-स्तु(त>)ता-  
-०ते व ४३१: २१.  
गन्धर्व-सिद्ध-साध्य- -ध्यानाम् गु  
१४.  
गन्धर्वा(र्व-अ)प्सरस्- -रसः व ३.  
गन्धर्वा(र्व-अ)सुर-यक्ष-राक्षस-भूत-  
गण-पिशाचो(च-उ)रग-ग्रहा-  
(ह-आ)दि- -दीनाम् मै १, ६;  
मैत्रि १, ४.  
गन्धार<sup>१६</sup>- -राः, -रान् छां ६, १४, २;  
-रेभ्यः छां ६, १४, १.  
गभीर<sup>१७</sup>- -रः मैत्रि ७, १.  
गम-, गमध्वै, गमन-, \*गमया-, गम-  
यित्वा ✓\*गच्छ, गम् द्र.

गम्भीर<sup>१८</sup>-  
गम्भीर-ग्रह- -हे अद्वै २५.  
गम्भीर-नाभि-कमल- -लः राधा  
३, १२.  
गम्भीर-नाभि-हृद-संनिधान-  
-ने सार २४५: ३.  
गम्य- ✓\*गच्छ, गम् द्र.  
१गय<sup>१९</sup>- -याः वृ ५, १४, ४; ग १५१;  
-यान् वृ ५, १४, ४; ग १४१;  
१५१.  
२ग(य>)या<sup>२०</sup>- -या ते ५, ३५; -याम्  
इ १९: १३.  
गय-पञ्चक- -के इ १९: १.  
गया-तुल्य- -ल्यम् इ १९: १.  
गया-श्राद्ध- -द्धम् इ १०: ११.  
गरीयस्- -गुरु द्र.  
गरुड<sup>२१</sup>- -डः कृ २४; मना १, ६९<sup>२२</sup>;  
२, १९<sup>२३</sup>; व ४६३: २९<sup>२४</sup>; हे ४;  
-डम् गरु ५<sup>२५</sup>; -डाय त्रिवि ७, ४२.  
गरुड- -डम् सु १, १, ३९.  
गरुडी-  
गरुड-ब्रह्म-विद्या-  
-द्याम् गरु १.  
गरुड-निधि- -धये त्रिवि ७, ४३.  
गरुड-पञ्चा(ध-अ)क्षर-मन्त्र-  
-न्त्रः त्रिवि ७, ३७.  
गरुड-माला-मन्त्र- -न्त्रः त्रिवि ७,  
३७.  
गरुड-वाह<sup>२६</sup>-  
गरुडवाहि(न>)नी- -नी गार  
४०६: १६.  
गरुड-वाहन<sup>२७</sup>- -नाय नाड २, ७.  
गरुडा(ड-आ)त्मक- -०क अक्ष ५.

गरुडा(ड-आ)रुड, डा- -डः व ४४३:  
१०; -डा गार ४०६: २३.  
गरुत्<sup>२८</sup>-  
गरुत्-मत्- -स्मन्तम् गरु ५; -स्मान्  
गरु १११<sup>२९</sup>.  
गर्ग<sup>३०</sup>-  
गार्ग्य<sup>३१</sup>- -०र्ग्य प्र ४, २; -र्ग्यः प्र  
१, १; ४, १; वृ २, १, १-१४;  
१६; ४, ६, २<sup>३२</sup>; कौ ४, १; -र्ग्यम्  
गार ४०७: ११; -र्ग्यात् वृ ४,  
६, २<sup>३३</sup>.  
गार्गी<sup>३४</sup>- -०र्गी वृ ३, ६, १<sup>३५</sup>;  
८, १-५; ७; ८; ९<sup>३६</sup>; १०<sup>३७</sup>; ११<sup>३८</sup>;  
-र्गी वृ ३, ६, १<sup>३९</sup>.  
गार्ग्यायण<sup>४०</sup>- -णः वृ ४, ६, २.  
गार्ग्यायणि<sup>४१</sup>- -णिः, -णिम्  
कौ १, १९<sup>४२</sup>.  
✓गर्ज, गर्जति सुबा ६; गर्जन्ति सिशि  
३८२: ९; अगर्जत् रापू ४, २३.  
गर्जत्-  
गर्जत्-पर्जन्य-संनिभ- -भः  
योशि ३, ४.  
१गर्त<sup>४३</sup>- -र्तम् वृ ४, ३, २०.  
२गर्त<sup>४४</sup>-  
गर्त-सद्- -सदम् नृपू २, ८९<sup>४५</sup>.  
गर्दभ<sup>४६</sup>- -भः वृ १, ४, ४; सुबा २;  
-भाः स्व ६१: २२; -भौ नी ३, ९.  
गर्दभी- -भी वृ १, ४, ४; सुबा २.  
गर्दभी-विपीत<sup>४७</sup>- -तः वृ ४, १, ५.  
गर्म<sup>४८</sup>- -र्मः क २, १, ८९<sup>४९</sup>; ऐ ४, १;  
छां ५, ८, २; ९, १; वृ ६, ४, २२;  
२३; गर्म २; सु १, १, ३१९<sup>५०</sup>;  
शि २, १; गी ३, ३८; -र्मम्

४) गन्ध<sup>१</sup> इति अख्या. । b) व्यु? =देशविशेष- । c) व्यु. वैप१ यद्र. । d) व्यु? । e) 'गायाः' इति  
मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू.) । f) 'गायन्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू.) । g) =पक्षिविशेष- । व्यु.  
वैप१ यद्र. । h) तैआ १०, १, ६ । i) तैआ १०, १, १६ । j) °क्षरी इति निसा. । k) कस. । l) बस. । m) मा  
१२, ४ । n) =अपि विशेष- । व्यु? <✓गृ स्तुताविति शक. । o) तु. पा ४, १, १०५ । p) स्त्री. डीप् प्र. (पा ४,  
१, १६) । q) फक् > भायनः प्र. (पा ४, १, १०१) । r) फिक् > भायनिः प्र. (पा ४, १, १५७) । s) 'गाङ्गायानिः' इति  
शांआ ३, १; वे. । t) व्यु? =अवट- । u) =रय- । व्यु. वैप१ यद्र. । v) ऋ २, ३३, ११ । w) ऋ ३, २९, २ ।  
x) =तदाख्योपनिषद्- ।

ऐ४,३; वृ ६,४,१०; २१<sup>४</sup>; २२<sup>३</sup>;  
गी १४, ३; -भैस्य शि २, ८<sup>३</sup>;  
-भा: छां २, ९, ६; २प्र ३३:  
१२; स्व ६१:४; -भात् शि २,  
१; १०; ११<sup>३</sup>; -भै प्र २, ७; ऐ  
४, ५<sup>३</sup>; ६<sup>३</sup>; श्व २, १६९<sup>३</sup>; अशि  
५, १९<sup>३</sup>; बा १७; भव १, ५; मना  
१, १९<sup>३</sup>; २९<sup>३</sup>; वृ ३२६: २१९<sup>३</sup>;  
शि ७, १०८; सूता १, ११९<sup>३</sup>;  
-भैण वृ ६, ४, २३; य २; सु  
२९३: २.

गर्भ-जन्म-जरा-मरण-तापत्रया-  
(य-आ)स्मक-दु:ख-स्वम्  
गोउ २६<sup>६</sup>.

गर्भ-जन्म-जरा-मरण-संसार-  
महद्-भय-यात् अता ३;  
राउ १, २.

गर्भ-जन्म-मरण-संसार-महद्-  
भय-यात् विद्या १.

गर्भ-जन्म-व्याधि-जरा-मरण-  
संसार-महा-भय-यात् अशि  
४, ८; वृ ३१५: २३.

गर्भ-दास-  
गर्भदास-वत् सांसू ३, ५१.

गर्भ-पात-तेन या २, १५.

गर्भ-मध्य-ध्ये अद्वै ५; शि ३, ५.

गर्भ-वास-सात् अ ३; श ३६.

गर्भ-वास-भय-यात् कुं ८.

गर्भ-स्थ-स्थ: शि ७, १०६.

गर्भा(र्भ-आ)दि-तारण-णम् दत्ता  
१, २.

गर्भा(र्भ-आ)धाना(न-आ)दि-  
कर्मन्-मेणा सांसू १, ३३.

गर्भा(र्भ-आ)धाना(न-आ)दि-

संस्कार-र: वृजा ५, १२.

गर्भा(र्भ-आ)सि-

गर्भासि-तस्(>) ते ६, ९१<sup>१</sup>.

गर्भिणी-णी वृ ६, ४, ११; २२;

-णीभि: क २, १, ८९<sup>६</sup>.

✓गर्भ

गर्भ-व: कृ १४; -वम् वउ ३, ५६.

✓गर्ह

गर्हित-त: इ १७: २.

✓गल्(बधा.)

गल्<sup>११</sup>-ल: गु १७; -ले जाद ४,

२८; वृजा ४, १३; २८; २९; यो

१, ४९; रुजा १, १६; २१.

गल्-कूर्पर-रम् त्रिवा २, १३१.

गल्-वदन-नाभि-हृदय-भू-

मध्य-ध्यम् पै २, १५.

गल्-श्लेष्म-हर-रम् यो १, २८.

गला(ल-अ)न्त-न्तम् शारी १.

गलित, ता<sup>१</sup>-त: ध्या ८<sup>५</sup>; नाप ६,

१२; तस् म४८: ३; त्ता: महा ५,

५३; -ते त्रि१५; महा ४, ५३; ५,

५३; १संन्या २, ३६; सर ३, ३१.

गलित-चित्त-लव-वा: अन्न

४, २४.

गलित-द्वैत-निर्भास-स:

अक्षि ३५.

गलित-संवित्ति-तौ शां १, ७,

३१.

गलिता(त-आ)नन्द-नन्द: अन्न

४, ५७; ६३.

गवय<sup>१</sup>-य: १योत ५९.

गवाक्ष-, गवादि-, गविष्ठ-, गव्य-

गो-द्र.

गहन, ना<sup>१</sup>-न: मैत्रि ७, १; नम्

वृजा २, १५; -ना गी ४, १७;

-ने वृ ४, ४, १३.

गह्वर<sup>१</sup>-रम् त्रिता १, १३; -राणि सार

२५५: १७; २५८: ९; २७६: १९

गह्वर-ष्ठ-ष्ठम् क १, २, १२.

✓गा, जिगातु स शां<sup>१</sup>.

अगात् वृ १, ५, १५; छाग २३:

१३; २४: १६; अगा: छां ४, ५.

गाढ-✓गाद् द.

गाणपत्य-, गाणेश-, °शी-✓गण् द.

गाण्डीव<sup>१</sup>-वम् गी १, ३०.

गातु<sup>१</sup>-तुम् स शां<sup>१</sup>.

गातुम्, गातु-✓गै द.

गात्र<sup>१</sup>-त्रम् ते २, १४; ५, ४७; यो;

३८; -त्रस्य शां १, ७, ४; -त्राणि

अना १४; सु २९३: १७९<sup>३</sup>; भव

३, १८; गी १, २९; -त्रे शां १, ४.

गात्र-कम्प-स्प: योशि १, ७०.

गात्र-भञ्जन-नम् हं १८.

गात्र-मर्दन-नम् शां १, ७, ४.

गात्र-संवाहन-नम् शि ७, ३३.

गाथा-, ✓गै द.

✓गाध

गा(ध>)धा<sup>१</sup>-धा गोउ २.

गान-✓गै द.

गान्धर्व-, °वी-गन्धर्व-द्र.

गान्धार-

गान्धारा<sup>१</sup>-रा जाद ४, ८; १४;

२२; -राया: जाद ४, १७.

गान्धारी<sup>१</sup>-री जाद ४, ३८; त्रिवा

२, ७१; ध्या ५३; भा १४; योचू

१७; १९; योशि ५, २१; वरा

५, २६; शां १, ४<sup>३</sup>.

गान्धारी-सरस्वती-मध्य-

-ध्ये शां १, ४.

a) ऋ ४, २७, १। b) मा ३२, ४। c) मा ३१, १९। d) °कं दु:खम् इति आन। e) पूष. सतः  
महत्-इत्यस्याऽऽकाराऽभावः उस्. (पा ६, ३, ४६)। f) °सतस्सौ इति निसा. अज्या. च सुपा. यनि. सु-सोचौ  
(तु. अज्या. संति.)। g) 'गर्भिणीषु' इति ऋ ३, २९, २। h) =कण्ठ-। धा. शब्दे वृत्तिः उस्. [वैतु. अभा. <प्रधा.  
अदने (=पाधा. भ्वा.) इति वा, <✓गृ निगरण इति वा]। i) धा. क्षरणे वृत्तिः उस्.। j) =गवाकृति-पशुविशेष-।  
व्यु. वैप१ यद्र.। k) व्यु. वैप१ यद्र.। l) खि १०, १९१, १५। m) व्यु.। n) ऋ ९, ८३, १। o) धा. अर्थः।  
p) व्यु. =नाडीविशेष-।

गायत्- १-३ गायत्र-गायत्री-गाय-  
मान-√गै द्र.  
गारुड- गरुड- द्र.  
?गारूपनाशक- -कः षो २०.  
गार्गी-गार्ग्य-गार्ग्यायण-गार्ग्या-  
यणि-गर्ग-द्र.  
गार्हपत्य-गार्हस्थ्य-√गृह द्र.  
गालव<sup>१०</sup>-वः वृ २, ६, ३; ४, ६, ३;  
-वस्य पं २७; -वात् वृ २, ६, ३;  
४, ६, ३.  
√गाह, गाहते गौ ४, ९५.  
गाढ-ढम्<sup>०</sup> ध्या ६९; योचू ४०;  
योशि १, २८; ८२; ८७.  
गाढ-तमस्-मः मं २, १, ७.  
गाढ-तामिस्र-संशान्ति-न्त्यै  
द १७.  
गाढ-प्रेम-रूप-पम् सार  
२४६: १८.  
गाढ-सुप्स्या(ति-आख्य>)-  
ख्या-ख्या वरा ४, १६<sup>d</sup>.  
गिर-√गृ(शब्दे) द्र.  
गिरि<sup>१०</sup>-रयः मुं २, १, ९९<sup>f</sup>; मना २,  
१२, १९<sup>f</sup>; गु ३१; -रिः अज ३,  
१७; सार २२१: १९; २०<sup>१</sup>; २१;  
२५८: ८; १८; -री सार २४५: २;  
-रीन् महा ६, २१; व ४६४:  
१६९<sup>१०</sup>; -रेः तै १, १०, १; नाप  
४, ३८९<sup>१०</sup>; -रौ गु ४३; योरा १९.  
गैरिक<sup>१३</sup>-कम् शि ६, ६६.  
गिरि-कन्दर-रेषु नाप ४, ३८; ७.  
गिरि-गङ्गा-रम् पिब १, ३.  
गिरि-त्र-०त्र श्वे ३, ६; नी १, ५.  
गिरि-पर्वत-सागर-पद-दानि म

४८: १७.

गिरि-प्रस्रवण-णम् जाद ६, ३७;

-णेषु शि ५, १४.

गिरि-श<sup>१</sup>-०श नी १, ६९<sup>k</sup>.गिरि-शान्त<sup>१</sup>-०न्त श्वे ३, ५९<sup>१</sup>;

६; नी १, ५; ८.

गिरि-घा-घाः नापू ४, १०;

वृपू २, १३.

गिरि(रि-ई)श-शः श २०.

गी<sup>१०</sup>-गीः छां १, ३, ६९<sup>१५</sup>; ७९<sup>१५</sup>.

गीत-गीति-गी(थ&gt;)था-गीय-

मान-√गै द्र.

गुं<sup>०</sup> हंषो १०.गु<sup>१०</sup>-

गु-शब्द-ब्दः अता १६; द्र १०.

गुगुल<sup>१०</sup>-

गुगुला(ल-आ)दि-दिभिः १योत

३४.

गुग्गुल<sup>१०</sup>-लुः शि १, २७.

गुग्गुल(लु-आ)दि-द्वेः शि ६, ८७.

गु(ज>)जा<sup>१०</sup>-

गुजा-पुजा(ज-आ)दि-दि १अव

१५.

गुजा-हार-विभूषित-हृद(य&gt;)-

या-याम् सुमु २.

गुड<sup>१०</sup>-डस्य शि ६, २९; -डात् शि

६, ३०.

गुड-मिश्रित-तैः शि ६, ८७.

गुड-गुण्डी<sup>१०</sup>-ण्ठीम् शि ६, ७४.गुडा(ड-आ)द्रक<sup>१०</sup>-कम् शि ६, ८८.गुडा(क>)का<sup>१०</sup>-गुडाके(का-ई)श<sup>१०</sup>-०श गी १०, २०;

११, ७; -शः गी २, ९; -शेन गी

१, २४.

गुण<sup>१०</sup>-णः ते ६, ३६; मैत्रि ६, ३०;

शि १, ११; ७, १२३; सिशि

३८२: १२; -णम् ते ३, ५९; ५,

१२; ७७; ध्या ६७; भव ४, ८;

वउ २, २४; -णाः अज ४, २१;

४८; इ १७: १४; गौ २, २०;

नाद २<sup>१</sup>; नाप ४, २७; ब्रवि ५८;

२योत १, ६; योचू ७४; शारी

१<sup>१</sup>; २, ४; योशि ६, १२; प्रा ४,

१; सु २, २, १३; सार २७२: ९;

२९१: १२; २०; २९२: १; ७;

१०; शि २, ६; ५, ११; ६, १५९;

वउ ४, ४५; सांका १२; गी ३,

२८; १४, ५; २३; -णात् ब्रस् २,

३, २५; -णात् श्वे ५, ५; अना ८;

भव २, ९; वउ ३, १७; सार

२३८: १२; २७३: ३; २९२: ८;

गी १३, १९; २१; १४, २०; २१<sup>१</sup>;

२६; -णानाम् योसू ४, ३१; ३३;

सांसू १, १२७; १२८; -णानि

मै ३, ३; मैत्रि ३, ३; -णेन श्वे ५, ८;

-णैभ्यः गी १४, १९<sup>१</sup>; -णेषु मैत्रि

२, ४; गी ३, २८; -णैः मै ३, २;

३; मैत्रि ३, २; ३; वउ ३, १०;

महा ५, १०४; अज ४, १७; सर

३, १७; सु २, २, ३४; सार २२४:

१९; भव ३, २४; ४, ८; गी ३,

५; २७; १३, २३; १४, २३; १८,

४०; ४१; -णौ १आ २९.

गौण-णः ब्रसू १, १, ६; सांसू

५, ६७; -णम् ते ४, २६; ५, ४४;

गौ ३, १४.

a) स्वरूपतोऽर्थतश्च संदेहः । =कालोपनाशक- इति वा =कारूपनाशक- इति वा ? १मे कल्पे २काल-  
(=मृत्यु-) । २ये च १का- (=कुत्सित-) । उभयथापि वर्णविकारः स्यात् । b) व्यु. ? =ऋषिविशेष- । c) वा. किवि. द्र. ।  
d) गूढ- इति अख्या. । e) व्यु. वैपश् यद्र. । f) तैआ १०, १०, १ । g) तैआ ४, २९, १ । h) तैआ ७, १०, १ ।  
i) सा १६, ३ । j) उप. व्यु. कृते वैपश् यद्र. । k) सा १६, ४ । l) सा १६, २ । m) ऋ १, १५४, २ । n) उद्धीय-  
इत्यस्य द्वितीयान्तरस्यानुवादः । o) =श्रीमन्त्रविशेष- । p) गुरु- इत्यस्याऽऽदिमोऽवयवः । q) व्यु. ?  
=रक्ता- । r) व्यु. ? । s) मध्यमपदलोपः कस. । t) व्यु. ? =पादनिद्रा- । u) बध्य. सत् बव्यु. प्राप्ति. द्र. । v) 'तमः'  
इति आन. पाभे. ।



गौणी- गी ब्रसू २, ३, ३;  
४, २.  
गुण-कर्तृत्व- -त्वे सांका २०.  
गुण-कर्मन्- -मसु गी ३, २९.  
गुणकर्म-विभाग- -गयोः गी ३,  
२८.  
गुणकर्मविभाग-शस्(>):  
गी ४, १३.  
गुण-केलि-सुरतानन्द-सुख-भो-  
कृ- -क्ते सार २७७: ११.  
गुण-गण- -णाः सार २८१: २;  
-णान् सार २२८: ६.  
गुण-गणन- -नाय सार २८१: २.  
गुण-गणना- -नाम् सार २७०:  
१८; २७३: १५.  
गुणगणना-युत- -ताः सार  
२६८: १.  
गुण-गन्धान्ध- -ध्या- -ध्यानि  
सार २७१: ५.  
गुण-गङ्गा- -रे चू २; मन्त्रि २.  
गुण-ज्ञ- -ज्ञा- -ज्ञा सार २२३:  
३९; २३४: ८९; २८२: ११९;  
२८५: ७.  
गुण-तद्-भागिन्- -गिनः सार  
२७९: १८.  
गुण-तस्(>): गी १८, २९.  
गुण-त्रय- -यम् ते ३, ४९; वृजा  
३, २; योशि १, ११६; वरा १,  
११; सिसि ३८१: १९; -येण  
पिन् ६, १४.  
गुणत्रय-युक्त- -क्तम् योचू ७२.  
गुणत्रय-विनिर्मित- -तम् योशि  
४, १२.  
गुणत्रय-समुद्भूत-ग्रन्थि-त्रय-  
विभेदक- -क्तम् यो १, ३९.  
गुणत्रया(य-अ)तीत- -तः ग ६.  
गुणत्रया(य-अ)ध्र(य>)या-  
-या वृजा ३, १.  
गुण-दोष-विजृम्भण- -णम् ते ५,  
५३.

गुण-पञ्चक-संयुत- -तम् शि ५, १०.  
गुण-परिणाम-भेद- -दात् सांसू  
२, २७.  
गुण-परिणाम-विशेष- -धात् सांका  
२७.  
गुण-पर्वन्- -र्वाणि योसू २, १९.  
गुण-प्रधान-भाव- -वः सांसू २, ४५.  
गुण-प्रवृद्ध- -द्धा- -द्धाः गी १५, २.  
गुण-बद्ध- -द्धः योचू २९.  
गुण-भि(ब>)बा- -बा वृज ९, ६.  
गुण-भुज- -भुक् मैत्रि ७, १.  
गुण-भेद- -दम् ते ६, ५३.  
गुणभेद-तस्(>): गी १८, १९.  
गुण-भोक्तृ- -क्तृ गी १३, १४.  
गुण-मय- -येन मै २, ११; मैत्रि २,  
७; -यैः गी ७, १३.  
गुणमयी- -यी गी ७, १४.  
गुण-योग- -गात् सांसू ४, २६.  
गुण-युक्त- -क्ताः योचू ७२.  
गुण-रति-दायिन्- -यिने सार  
२७७: २०.  
गुण-रहिता(त-आ)काश- -शम्  
अता ७; मं १, २, १३.  
गुण-लोक-त्रय- -याणाम् वृजा ४,  
३६.  
गुण-वत्- -वन्तम् नाप २.  
१गुणवती- -ती सांका ६०.  
२गुणवती- -ती सार २२९:  
१६; २१; २३४: ४; २३८:  
१०; २४२: २१; २६८: ७;  
२७२: ४.  
गुण-विद्- -विदः गौ २, २०.  
गुण-विवर्जित- -तः महा ३, २७.  
गुण-विशेष- -षाः सांका ३६.  
गुण-वृत्ति-विरोध- -धात् योसू २,  
१५.  
गुण-वैतृष्य- -ष्यम् योसू १, १६.  
गुण-वैषम्य-विमर्द- -र्दात् सांका  
४६.  
गुण-श्री- -श्रियम् महा ३, २२.

गुण-संख्यान- -ने गी १८, १९.  
गुण-सङ्ग- -ङ्गः भव २, ९; गी १३,  
२१.  
गुण-समाहार- -रम् अत्र १, २८.  
गुण-संमूढ- -ढाः गी ३, २९.  
गुण-साधारण्य-श्रुति- -तेः ब्रसू  
३, ३, ६४.  
गुण-सामान्या(न्य-आ)दि- -देः  
सांसू १, १२५.  
गुण-सा(म्य>)म्या- -म्या पै १, ५.  
गुणा(ण-अ)गुण-विहीना(न-आ)-  
त्मन्- -त्मा ते ४, ५०.  
गुणा(ण-आ)व्य-व्या- -व्या सार  
२७२: ४९; -व्याः सार २७९:  
१७; -व्येषु महा ४, ३४.  
गुणा(ण-अ)तीत- -तः ते ४, ४१;  
६, ४४; त्रिवि १, ११; बोशि ४,  
१२; गी १४, २५; तम् नाद १८;  
-ताः सार २७३: १८.  
गुणातीत-शुद्ध-सत्त्वमय- -यः  
त्रिवि २, १५.  
गुणा(ण-आ)त्मक- -क्तम् १योत  
१०; योशि १, ८; -क्ते सार २४६:  
१७.  
गुणा(ण-आ)त्मन्- -त्मानः योसू  
४, १३.  
गुणा(ण-आ)दि- -दिभिः भव २,  
५३; -दीनाम् सांसू ५, २६.  
गुणा(ण-अ)न्वय- -यः श्वे ५, ७;  
भव २, २३.  
गुणा(ण-अ)न्वित- -तम् इ १७:  
१५; शि ६, २२२; गी १५, १०;  
-तानि श्वे ६, ४.  
गुणा(ण-अ)र्थ- -र्थान् वृज ४, ५.  
गुणिन्- -णी श्वे ६, २; १६; भव २,  
४७.  
गुणे(ण-ई)श- -शाः श्वे ६, १६; भव  
२, ४७; -शम् वृज ४, ४५.  
गुणौ(ण-ओ)ध- -धैः मै ३, २; मैत्रि  
३, २; ६, ३०.

गुद<sup>११</sup> - दम् त्रिबा २, ३८; ध्या ७४;  
 यो १, ८३; ३, १०; योशि १,  
 १०४; ५, ३७; हं ६; दस्थयोशि  
 ६, ८; शां १, ४; दात् जाद ४, २;  
 शां १, ४; दे अना ३५; लु ७.  
 गुद-कृत - तम् वृजा ४, ३४.  
 गुद-प्रदेश - शे सिशि ३८१: १८.  
 गुद-मण्डल - ले योचू २३.  
 गुद-मेढ्रा (दू-अ) न्तरा (दू-आ) ल -  
 स्थ - स्थम् योशि १, १६८; ५,  
 ५; वरा ५, ५०.  
 गुद-मेढ्रो (दू-ऊ) रु-जानु - लुषु जाद  
 ४, २७१<sup>१</sup>; त्रिबा २, ८०.  
 गुद-मेढ्रो (दू-ऊ) रु-जानू (लु-उ) दर -  
 वृषण-कटि-जङ्गा-नाभि-गुदा-  
 (दा-अ) न्यगार - रेषु शां १, ४.  
 गुद-योनि-समायुक्त - कम् वरा  
 ५, ३८१<sup>१</sup>.  
 गुद-स्थान - ने ध्या ४४; योचू ७.  
 गुदा (द-अ) धिष्ठित - तः त्रिबा १, ९.  
 गुदा - दा; वृ १, १, १.  
 ✓ गुप<sup>१</sup>, > गोपाय, गोपि, जुगुप्स्<sup>१</sup>,  
 गोपायति वृ ३, १, ९; गोपू २२;  
 गोपाय तै १, ४, १; आरु ३९<sup>१</sup>;  
 नाप ४, ३८<sup>१</sup>; पप ४ १८: ३०९<sup>१</sup>;  
 मु १, १, ५१९<sup>१</sup>; शा ३३९<sup>१</sup>;  
 १ संन्या २, ९९<sup>१</sup>.  
 अजुगुपत् शौ ५३: १२.  
 जुगुप्सेत् छां ५, १०, ८; नाप ५,  
 ७; जुगुप्सेत् मना २, ११९<sup>१</sup>.  
 गुप्त, सा - सः मैत्रि ७, १; रा ४२६:  
 १; सम् पाद, २; योशि १, १५६:

१ संन्या १, १<sup>१</sup>; सा: अशि ६, ९;  
 से नाप ३, ३९.  
 गुप्त-क्रीडा-स्थल - लम् सार  
 २७१: ११.  
 गुप्ति - सयः पा ४, ८; सये १ योत  
 ७७; सि: पा ४, ८; प्यै पा ८, ३.  
 गोपन -  
 गोपनीय, या - यम् यो २, १४;  
 योशि २, २, २१; या योचू ७०.  
 गोपय (त >) न्ती - न्ती सार  
 २२४: २.  
 गोपयित्वा तुअ १५; पप ४ १९: ३.  
 गोपित, ता - तः द ७; ता शां १,  
 ७, १४.  
 गोप्त् - सा मुं १, १, १; श्वे ४, १५;  
 ६, १७; अशि ५, ४; ए १; ९;  
 ब्रवि ९४; मना १, १४९<sup>१</sup>; वद  
 ३१७: ४; हे २; सारम् १९;  
 प्त् कौ २, १९९<sup>१</sup>; प्त् पा ९, १.  
 गोप्त्री - प्त्री गु ५८.  
 गोप्त्-मत् - मान् कौ २, १.  
 १ गोप्य, प्या<sup>१</sup> - प्यम् कलि १; ते २,  
 १६; ब्रवि ४६; श ३५; सूता १,  
 ४०; -प्या मं १, ३, ५<sup>१</sup>; -प्या:  
 योशि १, १५६; -प्यात् गु ७७;  
 पं १.  
 गोप्य-तर, रा - रम् पं १; -रा  
 गु ७७.  
 २ गोप्य - प्याय शौ ५१: ७१<sup>१</sup>.  
 ✓ गुम्भ<sup>१</sup> (ग्रन्थने)  
 गुम्भित - तः सार २४४: १७.  
 गुम्भित-केश-पाश - शः सार

२६४: २०.  
 गुरु<sup>१</sup> - रवः यो २, १०; शि ७, ३०;  
 सार २४२: ३; -रवे करु १; कथु  
 २, ३९<sup>१</sup>; गोपू १; नि १; मना २,  
 ६०९<sup>१</sup>; शि ६, ८; १९; २६; २८;  
 ४६; ४८; ६३; ६७; ८१; ८८;  
 २०२; २०४; २४५; २६८; -रु  
 सांका १३; वरा २, ६५<sup>१</sup>; -रु:  
 अता १५; १६९<sup>१</sup>; १७<sup>१</sup>; १८<sup>१</sup>;  
 अद्वैभा ८; १ अव ३२<sup>१</sup>; कालि  
 ४०३: १७; १ कौल ४: १; २ कौल  
 ५; वृजा ६, १२; वृपू ५, १०; नि  
 ४२; शु १, १४; ते २, ६; ४३; ४,  
 १६; ५, १; ३६; ५८; ६, ३७; ४४;  
 ५१; ६२; ब्रवि ३१; नाप २; त्रिवि  
 १, १; ५; २, १२; ३, २; ४,  
 १२; ५, २; ४; ८, १५<sup>१</sup>; सुद ४;  
 महा ५, १०६; योशि १, १२४;  
 ५, ५६<sup>१</sup>; ५८<sup>१</sup>; ६, २६; आबो  
 १९; रुह ३६; यो २, १४; रुजा  
 ३, १; वरा ४, ३२; शा ३६<sup>१</sup>;  
 द्र ७; ११; १२<sup>१</sup>-१४<sup>१</sup>; १५;  
 रु २०; २२; २३<sup>१</sup>; २४<sup>१</sup>; शि  
 ७, १८; २०; २१; २३; ३०;  
 ३८<sup>१</sup>; ३९; ४३; ४५<sup>१</sup>; ४७; ६३;  
 तारा ८४: १३; पित्र १, २;  
 योसू १, २६; गी ११, ४३; -रुणा  
 कुं १; जाद २, ११; ते ५, ८५;  
 वृपू ५, १०; वृजा ६, १२; ब्रवि  
 २७; योशि १, १०७; १४२;  
 ३, १३; ५, ५९; रु २२;  
 रुजा ३, १; शि ७, १५-१७;

a) व्यु. वैपश् यद्र. । b) °मध्यो° इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा. च अज्या. च संदि.) ।  
 c) °युक्ते इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । d) सकर्मकः धा. । e) आत्मरक्षेच्छायामकर्मकः धा. द्र. ।  
 सा चेच्छा निन्दितात् सत एव पदार्थात् स्यादिति कृतैवाऽयं धा. निन्दायामित्याचार्याः (तु. पा ३, १, ५) । f) बौध  
 ३, २, ६ । g) तैआ ७, ४, १; बौध ३, २, ६ । h) संबा ३ । i) तैआ १०, ९, १ । j) 'सुगुप्तम्' इति अज्या. । k) तैआ  
 १०, १, १४ । l) एकरत्र 'गात्रम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. शांआ ४, १) । m) विप. । कर्मणि कृत्यः ।  
 n) °प्यम्° इति निसा. । o) भाप. । भावे कृत्यः । p) 'गोपाय्याते' इति बे. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) ।  
 q) पाषा. उंसं. । r) = आचार्य- वा भारवत्- वा । व्यु. वैपश् यद्र. । s) ऋ १०, ३७, १२ । t) क्रिवि. (तु. सस्थ.  
 टि. षट्क-गण- > -पात्; वैतु. गुरु° इतीव निसा., अज्या., उज्र. यनि. सु-शोधाः) ।

स ३७९:२; गी ६, २२; -रुभिः  
कर १; कष्ट २, ३; -रुभ्यः त्रिवि  
८, १३; -रुम् सु १, २, १२; कालि  
४०३: १७; जाद १, २; त्रिवि  
१, ४; २, १; ५, १; ८, ७; नाप  
६, १७; पा ७, ९; पै ४, ८; मं  
२, ४, ४; यो २, ४; ३, १७; योचू  
१०६; योशि १, ८०; ६, ७९;  
र २९; शा ३५९<sup>०</sup>; ३६; शि १,  
३५; ७, २; ४-७; १७; २४; ३१;  
३२; रा ४२३: ५; पित्र १, ३;  
४; -रुणाम् नाप ६, २६; र २०;  
२२; -रुन् तारा ८४: १; नाप  
६, २९; सार २४२: २; गी  
२, ५<sup>१</sup>; -०रो त्रिवि १, ४; महा २,  
३०; ३, २८; ५६; रा ४२३: ५;  
-रो: छां ५, १०, ९; ८, १५, १;  
आश्र १; ते ३, ५२; ६, ४४;  
नाप ४, ३८; महा ४, ५; सु ३  
४; मैत्रे २, १५; १योत ७९; रा  
४२३: १०; ४२४: १८; र २६;  
लिं ३११: १; शा १४; ३५९<sup>१०</sup>;  
शि २, २७; ६, ३; ४३; २०६;  
७, ८; १४; १५; १९; २२; २३;  
२५; २७; २८; ३५<sup>१</sup>; ३६; ३७;  
६४; शु ३, ९; १३; सिशि ३८१:  
१४; -रौ श्वे ६, २३; गु ७६; योशि  
२, २२; शा ३७; शि ६, ५२; ७,  
३; ७३; सुबा १६; स्व ६२: ५.  
गुर्वी- -र्वीम् काम २.  
गरीयस्- -यः गी २, ६; -यसे  
गी ११, ३७; -यान् गी ११, ४३.  
गुरु-कर्म-तीर्थ-निष्ठ- -ष्टा: स्व  
६१: १५.  
गुरु-कुल-वास- -सम् नाप २.  
गुरु-कुल-वासिन्- -सी आश्र १.

गुरु-कृपा- -यया सार २५०: १३.  
गुरु-तर- -रः अता १८; द्व १५.  
गुरु-तल्प-ग- -गः गोच ६८: १;  
मना १, १५९<sup>०</sup>; २, ६४९<sup>०</sup>; शा २६.  
गुरु-तल्प-गमन- -नात् नाउ ३,  
८; श ३६.  
गुरु-तल्प-गामिन्- -मी शा २६.  
गुरु-तस्(>) महा २, ७०; ३, ३३.  
गुरु-तोषण- -णात् वरा २, २.  
गुरु-द(त)>त्ता- -त्तया अन्न ४, ८७  
गुरु-दर्शित- -तम् योशि २, ४.  
गुरु-दार-गमन- -नात् भ २, २२.  
गुरु-दारा(र-अ)भिगामिन्- -मी  
सृ ६.  
गुरु-देव- -वाय ब्रवि ४७.  
गुरु-देवता- -तयो: वज ६, ३.  
गुरु-नमस्कार-पूर्वक- -कम् त्रिवि  
५, १२.  
गुरु-निकट- -टम् नाप ४, ३८.  
गुरु-पङ्क्ति- -ङ्क्तिम् पी ४२२: ७.  
गुरु-पाद- -दम् योशि ६, २३.  
गुरु-पाप- -पानि स्व ६१: १०.  
गुरुपाप-निष्ठ- -ष्टै: स्व ६१: ८.  
गुरु-पूजा- -जाम् त्रिवि ८, १३.  
गुरुपूजा-विधि- -धौ र २६.  
गुरु-भक्त- -क्तः कालि ४०२: २<sup>१</sup>;  
त्रिवि १, ४; पित्र ६, १८; -काय  
श ३४; सूता ६, ६; हं ४.  
गुरु-भक्ति- -क्तिः मं १, १, ४; -क्तिम्  
ब्रवि ३०; -क्त्या शि ७, ७४.  
गुरुभक्ति-मत्- -मान् रार ४, ३.  
गुरुभक्ति-विशुद्धा(द्व-अ)न्तः-  
करण- -णाय ते ६, १०९.  
गुरुभक्ति-विहीन- -नाय त्रिवि  
८, २०; सु १, १, ४८.  
गुरुभक्ति-समायुक्त- -क्तः अता

१५; द्व ६.  
गुरु-भार्या- -र्यायाम् पै ४, ८.  
गुरु-भैषज्य-सिद्धय(दि-अ)र्थ-  
-र्थम् शि ७, २९.  
गुरु-मत- -तात् योशि ३, २०.  
गुरु-मुख- -खात् काम ११; पप  
४१८: ३३.  
गुरु-मूर्ति- -र्तिः शि ७, २.  
गुरुमूर्ति-स्थ- -स्थम् शि ७, ४२;  
७४.  
गुरु-वक्त्र- -क्त्रात् ब्रवि ३४.  
गुरुवक्त्र-तस्(>) यो २, ८.  
गुरुवक्त्र-प्रसाद- -देन योशि  
१, ८०<sup>१६</sup>.  
गुरु-वत् पै ४, ८.  
गुरु-वध- -धात् भ १, ११.  
गुरु-वधू-गामिन्- -मी वि ३३.  
गुरु-वाक्य- -क्यात् योशि १, १३१;  
-क्ये शि ७, ४०.  
गुरुवाक्य-विलङ्घन- -नम्  
१संन्या २, ८७.  
गुरुवाक्य-समाभिन्न- -न्ने यो ३,  
१७; योशि ६, ७८<sup>१०</sup>.  
गुरुवाक्य-समुद्भूत-स्वा-  
(स्व-अ)नुभूति<sup>१</sup>- -स्या महा ४,  
२६.  
गुरु-विभाण्डक-मुनि- -पुत्री- -त्री  
सार २४३: २३.  
गुरु-शास्त्र-प्रमाण- -णै: सु २, २, ३०  
गुरु-शास्त्रा(ब्र-अ)र्थ-संगम<sup>१</sup>-  
-मै: अन्न ५, ४२.  
गुरु-शास्त्रो(ब्र-उ)क्त-भाव- -वेन  
मैत्रे २, १०.  
गुरु-शास्त्रो(ब्र-उ)क्त-मार्ग- -र्गेण  
महा ४, २५.  
गुरु-शिष्य- -ष्यम् ते ३, ५२.

a) वाध २, ११। b) °रुः इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. वाध २, ११; या २, ४)। c) ईयसुनि  
प्र. गद इत्यादेशः (पा ५, ३, ५७; ६, ४, १५७)। d) तैश्चा १०, १, १५। e) तैश्चा १०, ६४। f) 'भक्तः' इति तान्त्रि.।  
g) °वस्त्र° इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। h) °समाभावे इति निसा. संटि., °समं भि° इति अज्या.,  
°समाभासे इति अज्या. संटि.। i) °त्यादि° इति निसा.। j) पंस.।



गुरुशिष्य-संचाद- -दः त्रिवि  
१, २.  
गुरुशिष्या(ष्य-आ)दि- -दि ते  
२, ३१; ५, २१.  
गुरुशिष्यादि-भेद- -दम् ते  
५, १३; -देन १आ ३.  
गुरुशिष्या(ष्य-आ)दिक- -कम्  
ते ५, १०५.  
गुरु-शिष्य-शास्त्रा(स्त्र-आ)दि-  
विनिर्मुक्त- -क्तः नाप ९, २०.  
गुरु-शिष्यो(ष्य-उ)पदेशा(श-आ)-  
दि- -दिः ते ५, ७८.  
गुरु-शुश्रूषण- -णे कुं १.  
गुरु-शुश्रूषा- -षया ब्रवि २८; -षा  
नाप ४, ११; शारी १; शि ७, १००.  
गुरुशुश्रूषा-निरत- -तः शां १, ५.  
गुरु-सक्त- -कम् शि ७, १२.  
गुरु-संनिधि- -धौ शि ७, १३.  
गुरु-संभवा(व-आ)त्मक- -कम् लिं  
३११: १.  
गुरु-सहाय- -येन सार २९१: २.  
गुरु-सेवा- -वा भव ५, ८.  
गुरु-स्थान- -नम् वृजा ४, २५; -नेषु  
शि ७, ७५.  
गुरु-हनन- -नः रार १, ९.  
गुरु(रु-उ)पदिष्ट-मार्ग- -र्गेण मु  
१, १, २४; रार ४, ४.  
गुरु(रु-उ)पदेश- -शम् त्रिवि ८,  
१३; -शेन त्रिवि ५, ७.  
गुरुपदेश-मार्ग- -र्गेण योशि २,  
१४.  
गुरुपदेश-लभ्य- -भ्यम् यो २,

२१.  
गुर्व(रु-अ)नुग्रह- -हात् अन्न ५,  
१२०; शु ३, २३; -हेण सार  
२२७: ८.  
गुर्वनुग्रह-तस् (>) नि ५६.  
गुर्वनुग्रह-भागिन्- -गी वट्ट  
३१८: ८.  
गुर्व(रु-अ)नुज्ञा- -ज्ञया त्रिवि ५,  
१२; ८, १३; नाप २; रा ४२६: १.  
गुर्व(रु-अ)र्थ- -र्थम् पप ४१९: ९;  
शि ७, २६.  
गुर्वा(रु-आ)गम- -मेन मैत्रि ६, २८.  
गुर्वा(रु-आ)ज्ञा- -ज्ञया शि ७, २५.  
गुलिक<sup>१०</sup>- -कः गरु ५, २०; रापू ४, ५४.  
गुलिक-दूत- -तः गरु २०; जाद ३, ९  
गुल्फ<sup>११</sup>- -ल्फम् जाद ३, ९; त्रिब्रा २,  
१३०; -ल्फयोः जाद ४, २८; सिसि  
३८१: १८; -ल्फानि गार ४०८:  
१०; -ल्फाभ्याम् त्रिब्रा २, ३८;  
४६; -ल्फे लुद; त्रिब्रा २, १२३;  
वरा ५, १७; -ल्फेन जाद ३, ८; ६,  
३९; शां १, ३, ९; -ल्फौ जाद  
३, ७; त्रिब्रा २, ४५; शां १, ३, ८.  
गुल्फ-जठर-कटि-प्रदेश- -शाः गर्भ  
३<sup>१</sup>.  
गुल्फ-देश- -शेभ्यः त्रिब्रा २, ४४<sup>०</sup>.  
गुल्फ-देश-समीप- -पे यो १, ४९.  
गुल्फ-स्कन्ध-गल- -लेषु त्रिब्रा २, ८२  
गुल्फा(ल्फ-अ)न्तर- -रम् जाद ३, ९  
गुल्म<sup>१२</sup>- -ल्मम् यो १, १८.  
गुल्म-स्त्रीह-ज्वर-पित्त-क्षुधा-  
(धा-आ)दि- -दीनि शां १, ७,

१४<sup>१</sup>.  
गुल्म-स्त्रीहा(ह-आ)दिक- -कान् यो  
१, ३१<sup>१</sup>.  
✓गुह->गृहि, अगृहयत् शौ ५२: २१.  
गुह- -ऽहः अन्न २; १६; -हम्  
अन्न १९<sup>१</sup>; -हेन पा ८, ५.  
गुहत्- -हत् २प्र ३३: ६९<sup>१</sup>.  
१गुहा- -हया ए ५१<sup>१</sup>; -हा इ १२:  
३<sup>१</sup>-६<sup>१</sup>; नापू ५, ३३९<sup>१</sup>; वा १८;  
सर २, ६९<sup>१</sup>; -हाम् क १, ३, १;  
२, १, ६; ७; ब्रसू १, २, ११;  
-हायाम् क १, १, १४; २, २०९<sup>१</sup>;  
मुं २, १, १०; ३, १, ७; तै २, १,  
१; श्वे ३, २०९<sup>१</sup>; अध्या १; कै  
१, ३९<sup>१</sup>; गु ३६; नाउ १, ७९<sup>१</sup>;  
१४९<sup>१</sup>; नाप ९, १३९<sup>१</sup>; पा ९,  
३९<sup>१</sup>; प्रा १, ६९<sup>०</sup>; मना २, १२,  
१९<sup>१</sup>; ३९<sup>१</sup>; २, ६८९<sup>०</sup>; मै २, ९;  
५, ४; मैत्रि २, ६; ६, ४; रुह ३६;  
वपू २, ३; श १८९<sup>१</sup>; शा २१;  
सुबा ७; ८<sup>१</sup>; स्व ६१: १२; हासु  
नाप ६, २; ९<sup>१</sup>मना १, ३; ४.  
गुहा-प्रस्थि- -स्थिभ्यः मुं ३, २, ९  
गुहा-चर- -रम् मुं २, २, १.  
गुहा-निवाता(त-आ)श्रयण-  
-णे श्वे २, १०; भव ३, २३.  
गुहा-वाच्य- -च्ये करु १०.  
गुहा-विहरण- -णम् मं ३, १, ३.  
गुहा-शय- -यः ब्रवि ९४; -यम्  
ए १३; कै २, ४; -१<sup>१</sup>याः मुं  
२, १, ८; -यात् मना २, १२, १९<sup>१</sup>.  
गुहा-सदन- -नानि त्रि ११.

a) उप. ✓हन+कर्तरि युच् प्र. । b) व्यु. ? = नागविशेष- । c) = शरीराङ्गविशेष- । व्यु. वैप १ यद. ।  
d) 'अङ्गुल्य...देशः' इति आन., 'जठरकटिप्रदेशः' इति अज्या. । e) 'शाम्याम्' इति निसा., अज्या. सटि. ।  
f) व्यु. ? = रोगविशेष- । g) 'दि' इति अज्या. । h) 'काः' इति अज्या. । i) 'व्याहृतिविशेष- । 'रुहत्' इति मुपा.  
यनि. सु-शोधः (तु. गोब्रा १, १, २१) । j) पा. ? सप्त. अर्थे तु. वा गुहया<sup>०</sup> (=गुहा<sup>०</sup>) इति कृत्वा पृथक् प्राति. वा (वैतु.  
गुहयो<sup>०</sup> इति निसा. सटि.) । k) ऋ १, १६४, ४५ । l) तैआ १०, १०, १ । m) तैआ १०, १०, ३ । n) तैआ ८,  
१, १ । o) तैआ १०, ३१, १ । p) 'गुहा' इति मा ३२, ९ । q) पा. ? तु. शं. प्रभृ.; वैतु. सश्रु. तैआ. (१०, १०, १)  
तदुपरि सा. च (पक्षे -यम् इति पाठुकः मा. च), नाउ. सश्रु. च (यतः पं. एव न तु प्र. स्वारस्यमध्यवसीयेत तदनु  
शोधश्चेह स्यात्) ।

गुहा-हित- -तम् क १, २, १२.  
 १गुहा, ह्या- -ह्यः अशि १, ८; मैत्रि  
 ६, २८; -ह्यम् क १, ३, १७; २,  
 २, ६; वृ ६, ४, २६; श्वे ६, २२;  
 अच ५, ११९; अव्य ३; इ १२:  
 ७; कुं ९; गु ७५; ते २, १२;  
 ४, २६; पं १; वृजा २, १५; ३,  
 ३१; ब्रवि ४५; मना २, १२,  
 २९<sup>१</sup>; २, ७९<sup>२</sup>; सु १, १, ४५; मै  
 ४, ४, ३; मैत्रि ६, १९; ३४; मैत्रे  
 १, ४, ५; योशि १, ८४; ५, १;  
 वउ ६, ४१; शा ३; रशिसं ७;  
 सि १, २; ४; सिशि ३८० : २;  
 ३८१ : ६; ३८३ : १०; सूता ३,  
 ७; हं ३; सांका ६९; गी ११,  
 १; १८, ६८; ७५; -ह्याः छां ३,  
 ५, १; २; -ह्यात् ब्रवि ४६; मवा  
 २; मुद्र ४; सूता २, २०; गी  
 १८, ६३; -ह्यानाम् गी १०,  
 ३८; -ह्यानि राधा ३, ३; -ह्ये वपं  
 ३१२ : ३.  
 गुह्य-क- -कम् वृजा ४, १<sup>१</sup>.  
 गुह्य-तम- -तम् ते १, ५<sup>१</sup>; ब्रवि  
 ४६; मैत्रि ६, २९; सूता २, २०;  
 गी ९, १; १५, २०; -माय मै ४,  
 ४, १५; मैत्रि ५, १.  
 गुह्य-तर- -रम् मवा २<sup>१</sup>; मुद्र ४;  
 गी १८, ६३.  
 गुह्य-देश- -ये वृजा ४, ३.  
 गुह्य-द्वय- -ये वृजा ४, १४.  
 गुह्य-भाषण- -णम् करु ५; कश्रु  
 ३, ५.

गुह्या(ह्य-आ)च्छादक- -कम्  
 नाप ४, ३८.  
 गुह्यो(ह्य-उ)पनिषद्<sup>११६</sup>- -षत्  
 गु ७४; ७७; -षदः गु २; ४.  
 गुह्यमान- -नम् मना २, १२, ३९<sup>१</sup>.  
 गूढ, ढा- -ढः क १, ३, १२<sup>१</sup>; श्वे ४,  
 १५; ६, ११; गोउ ६५; नाप ३,  
 ३२; ब्र ३, ७; -डम्<sup>१</sup> क १, १,  
 २९; २, १२; श्वे ३, ७; ४, १६; ५,  
 ६; द १७; योचू १; -ढा गु ५६;  
 ५८; ६९; -ढाः गु ४; -ढाम् गु  
 ५९; -ढे श्वे ५, १.  
 गूढ-केलि-कल- -लाय सार  
 २४७ : ९.  
 गूढ-गुल्फ- -ल्फम् वपू २, २.  
 गूढ-जानु- -नुम् वपू २, २.  
 गूढ-धर्मो(र्म-आ)श्रित- -तः  
 नाप ४, ३५.  
 गूढ-विज्ञान- -नम् हं १९.  
 गुह- , १गुहा- √गृह द्र.  
 रगु(ह>)हा<sup>१</sup>- -हा त्रि ८; दे ९.  
 रगु(ह>)ह्या<sup>१</sup>- -ह्या गु ४४; ६१;  
 ७२; -ह्याम् गु ५७; ५९; ७३;  
 गुषो ४२० : १<sup>१</sup>.  
 गुह्य-काली- -ली गु ६४; ८१;  
 -लीम् गु ६६.  
 गुह्यकाल्य(ली-आ)धिष्ठित- -तः  
 कामे ७; १५.  
 गृणान- √गृ(शब्दे) द्र.  
 गृत्स<sup>m</sup>-  
 गृत्स-मद<sup>१</sup>- -दः सर २, १०.  
 √गृध्, गृधः ई १.

गृध्र<sup>m</sup>- -ध्रः इ १४; १४; -ध्रम् वृजा  
 ४, ६; -ध्राः छाग २५; १४;  
 -९<sup>१</sup>घ्राणाम् मना २, १२, १; २,  
 ४०; व ४४२; १९; ४४८ : ३;  
 ४५२ : १०.  
 √\*गृह<sup>p</sup> (>म<sup>१</sup>), ग्रह(>म<sup>१</sup>),  
 >ग्राहि, जिघृक्ष, गृह्यते<sup>१</sup> मुं १, १,  
 ७; गृह्याति वृ २, १, १७; कौ २,  
 ११<sup>१</sup>; गोउ ११; जाद १, २२;  
 नाद २६; पाशु २, २७; मव २,  
 ३८; मृ १०; गी २, २२; गृह्यन्ति  
 पिं २; सार २७३; १६; गृह्यामि  
 वरा २, ३५; रसंन्या १७; ५९<sup>१</sup>;  
 कृ १<sup>१</sup>; गृहाण क १, १, १६;  
 इ १८ : १५<sup>१</sup>; १७; नाप ४, ३८;  
 महा ५, १७२; मु २, २, ६९; वउ  
 ३, ४६; ५३; गृह्य-गृह्य<sup>१</sup> व ४४९;  
 ८; १७; ४५० : १; ८; १५; २२;  
 ४५१ : ८; १५; २२; ४५२ : ७;  
 १५; २२; गृह्यीयात् आर्षे ८;  
 १०; इ १० : ७; कालि ४०३;  
 १७; जाद ३, ४; नाप ४, ८;  
 वृजा ३, ८; २६; शि ७, २१;  
 ६८; १संन्या २, ११; ९२; गृह्यीयुः  
 का ७; नार ६.  
 जगृहुः सार २३२ : १३; अग्र-  
 ह्यैष्यत् ऐ ३, ३-९.  
 गृह्यते मुं ३, १, ८; ऐ २, ५; वृ  
 ३, ९, २६; ४, २, ४, ४, २२; ५,  
 १५; श्वे १, १५; गु ३७; त्रिता  
 १, १८; २२; २३; २७; ब्र ३, १०<sup>१</sup>;  
 भव ३, ३१; मै ४, ४, ९; मैत्रि

- a) 'गुह्याम्' इति अज्या. । b) ऋ ४, ५८, १ । c) तैआ १०, ६३, १ । d) 'गुह्याम्' इति अज्या. ।  
 e) 'गुह्याम्, इदम्' इति आन. । f) 'परम्' इति निसा., 'तरा' इति अज्या. संटि. । g) =तदाख्योपनिषद्विशेष- ।  
 h) ऋ ४, ५८, ४ । i) तु. सस्थ. टि. त्मन्->त्मा । j) वा. कचित् क्वि. भवति । k) व्यु. ?= देवीविशेष- ।  
 l) =कौ-बीजमन्त्र- । m) व्यु. वैप १ यद्र. । n) =ऋषिविशेष- । o) ऋ ९, ९६, ६ । p) रूपप्राप्त्यर्थात् कृतसंप्रसारणस्य  
 निर्देशस्य प्राधान्यं द्र. । q) तु. पावा ३, १, ८४ । r) प्रधा. आ शश्व उंसं. (पा ३, १, ८१) । तेन विकरणादयश्रितमपि  
 कार्यं द्र. । यद्वा प्रधा. शः प्र. उंसं. (पा ३, १, १३७) इति कृत्वा \*गृह्->√\*गृह्ण (=<नाधा.) इत्येतद्वृत्तमित्येवं  
 सुवचतरमिव द्र. [वैतु. विधु. (IHQ १७, ८९) नैप्र. अमीष्ट साधुकः] । s) एकतरत्र 'दधाति' इति शांआ ४, ११ ।  
 t) शौ ७, ८७, २ । u) 'गृह्यामः' इति अज्या. । v) 'जायते' इति निसा. ।

६,३४; गौ४, २१; ६७; गौ६, ३५.  
 ग्राहयन्ति ब्रह्म ४, १, ३; अग्रा-  
 हयत् शौ ५२: ८; ग्राहयेत् इ  
 १०: ३; १९: १९.  
 अजग्रभीत् वा २०.  
 ग्राह्यते शु ३, ६.  
 अजिघृक्षत् ऐ ३, ३-१०.  
 गृह-हम् अक्षि १२; ते २, १६;  
 भा ७; महा ३, २; योचू ३९;  
 वि १८; शि ४, २३; ६, १७१;  
 ७, ६१; १संन्या २, ६०; ६३;  
 सार २५३: १; १८: २६२: ७;  
 स्व ६२: ३; ह १२; -हम्-हम्  
 सार २३९: ११; २३; २६७:  
 ५; -हस्य शि ३, २; ४, २३; -हा:  
 सार २५४: १५; -हाणाम् मना  
 २, ७९९; -हाणि महा ३, ७;  
 सार २५२: २२; २५५: ३;  
 २६६: १५; २७०: २१; २७४:  
 ७; ९; -हात् जाद ४; नाप ३,  
 ७७; पप ४१८: ४; भव १,  
 २; या १, १<sup>७</sup>; राप् ४, २३;  
 शि ७, ६१; सार २५३: ८; २६२:  
 १०; २६३: १७; २६४: ५; १७;  
 -हान् क १, १, ७; वृ ३, ३, १;  
 नाप ५, ८; व ४६२: १८; १संन्या  
 २, ६३; ६६; -हे क १, १, ८; ९;  
 वृ ६, ४, २४; अन्न ५, १०१; इ  
 १८: २३; नाप ३, १३; ६, ६;  
 ८; पा ८, ८; शि ३, ९; ६, १७४;  
 १संन्या २, ६४; सार २३०: ६;  
 ८; १९; २३२: १४; २४३: २२;  
 २५१: १; २७५: ५; ६; -हे-हे  
 सार २७४: १०; ११; -हेषु वृ  
 १, ४, १६; ३, ७, १; शि ५, ३;  
 सार २६७: ६.  
 गृह-क-केषु शि ६, १४०.  
 गृह-गिरि-गह्वर-काला(ल-अ)-

नल-वलमीको(क-उ)भूत-ता-  
 नाम् गर २४.  
 गृह-गोधिका-कानाम् गर २४  
 गृह-गौलि(क>)का-कानाम्  
 गर २४.  
 गृह-त्रय-ये नाप ५, १; १संन्या  
 २, १३.  
 गृह-त्व-स्वेन योशि ४, २४.  
 गृह-द्वार-रम् शि ६, १७२.  
 गृह-धर्म-मां: कुं २३.  
 गृहधर्मा(म-आ)दिक-कम्  
 १संन्या २, ८९.  
 गृह-पति-ति: अक्षि १२;  
 भव २, ३४; ह १२.  
 गार्हपत्य<sup>१३</sup>-त्य: प्र ४, ३;  
 छां ४, ११, १; ५, १८, २; अ १;  
 अशि १, ६; काला १२; गर्भ ५०;  
 जाबा २१; नृउ ३, २; नृपूर, २; प्रा  
 २, १; मै ५, ५; मैत्रि ६, ५; ३४;  
 -त्यम् कश्चु २, ३; गार ४०७:  
 ६; पं २; १प्र ३१: ५; ब्रवि ४<sup>d</sup>;  
 मना २, ७९९; -त्यस्य छां २,  
 २४, ३; -त्यात् प्र ४, ३; -त्ये छां  
 ४, १७, ४; कश्चु १, १; प्रा १, ६;  
 १संन्या १, १.  
 गार्हपत्य-कुण्ड-ण्डे  
 सार २४३: १०.  
 गार्हपत्य-दक्षिणाग्न्या-  
 (भि-आ)हवनीय-येषु कर १.  
 गृह-वन-विहारे(र-इ)च्छा-  
 -च्छा सार २७१: ७.  
 गृह-स्थ-स्थ: आरु २; ऊ६४:  
 ११; गोच ६६: ११; नाप ६,  
 १; ३०; ब्रवि ४९; वा १२; १३;  
 शि ५, २०; ६, २२३; -स्थस्य  
 पत्र २; महा ४, ४०; -स्था:  
 आश्र २; शि ७, १२२; -स्थानाम्  
 वृजा ५, ३; ४; रार १, ७; रु ७;

-स्थेन नृपू ५, १९; वृजा ८, ६;  
 शि ५, १९.

गार्हस्थ्य-स्थम् नाप  
 १<sup>१०</sup>.

गार्हस्थ्यो(स्थ-उ)-  
 चित-पञ्च-विंशति-वत्सर-  
 -रम् नाप २.

गृहस्थ-प्रार्थना-पूर्वक-  
 -कम् पप ४१८: ३०.

गृहस्थ-शत-तम् नृपू ५,  
 १९; वृजा ८, ६.

गृहस्थै(स्थ-ए)का(क-अ)-  
 धिक-शत-तम् वउ ५, २३.

गृहस्थो(स्थ-उ)चित-  
 कर्मन्-र्म नाप २.

गृहा(ह-आ)दि-दौ सार २८४:  
 २३.

गृहादि-धर्म-मान् सार  
 २३६: २.

गृहा(ह-अ)न्तर-रात् सार  
 २६४: १७<sup>f</sup>.

गृहा(ह-अ)भिमान-नेन नाप  
 ६, १.

गृहा(ह-अ)चन-विधान-ने सु  
 २९५: २.

गृहा(ह-अ)श्रम-म: सार  
 २७४: १२.

गृहा(ह-आ)सञ्ज-कम् शि ७,  
 २०.

गृहिन्-हिणा ब्रह्म ३, ४, ४८;  
 -ही काला १७; जाद ४<sup>३</sup>; जाबा

२६; नाउ ३, १२; नाप ३, ७७<sup>३</sup>;  
 ५, १; पप ४१८: ३; ६; वृजा ३, ८;

भव २, २६; या १, १; शि ६, २११;  
 स ३७९: २१; १संन्या २, १३.

गृहो(ह-उ)त्सव-वे सार  
 २८३: ३.

गृहो(ह-उ)पकरण-णानि शि

a) तैआ १०, ६३, १। b) एकतरत्र 'गृही भूत्वा' इति अज्या.। c) 'त्यम्' इति आन., अज्या.।  
 d) 'त्य: इति आन.। e) 'पत्यम्' इति अज्या.। f) 'हन्त' इति मुपा. यनि. सु-शोध:।



६,२१०; सु २९४:९; -जै: शि  
६,२११.

गृ(व) > छा<sup>१</sup> - छाभ्यः मना  
२, ६७५<sup>b</sup>.

गृहीत,ता- -तः वृ २, १, १७;  
४, ७-९; ३, २, २-९; ४, ५,  
८-१०; मै ४, २; मैत्रि ४, २;  
-तम् वृ २, १, १७<sup>३</sup>; त्रिब्रा २,  
४९; शि ५, २७; गौ ४, ३५;  
-तस्य १संन्या २, ८१; -ता वृ २,  
१, १७; शि ६, १७१; -तायाम्  
वउ ३, ४७.

गृहीतवृणाशबरीवासना-

जाल- -लम् महा ६, ३१<sup>०</sup>.

गृहीत्वा सुं २, २, ३; वृ २, १, १८<sup>३</sup>;  
इ १०:७; त्रिब्रा २, ४३; प्रा १,  
६; वृजा ६, १; सु १, १, ४२;  
मैत्रि ६, २८<sup>३</sup>; शा २९; शां १,  
७, १४<sup>३</sup>.

गृह्ण- -ह्ण १संन्या २, ४७; गौ  
५, ९.

गृह्ण<sup>१</sup> लु ११<sup>०</sup>; शि ५, ३६; ६, १६१.

गृह्णमाण- -णे योशि ४, १९.

ग्रह<sup>१</sup> - -हः गौ ३, ३८; -हेण गौ  
४, ८२; -हैः गौ ४, ८४.

ग्रह<sup>२</sup> - -हः ऐ ३, १०; वृ ३,  
२, २-९; -हाः वृ ३, २, १<sup>३</sup>; ९;

अद्वैभा १६; अशि २, ९; वृपू  
४, १५, २०; राउ ४, ३०; वडु  
३१४:१; सार २७२:१३;

-हाणाम् गु १४; -हात् यो १,  
७०<sup>१</sup><sup>b</sup>; -हान् दत्ता २; वृपू ५,  
१४; १५; वृजा ८, २; वउ ५, १०.

ग्रह-नक्षत्र-ज्योतिस्- -तीषि दे  
१०.

ग्रह-नक्षत्र-तारा-ज्योतिश्शास्त्र-  
निश्चय- -येन सार २३१:१६.

ग्रह-मण्डल-

ग्रहमण्डल-भूतमण्डल-प्रेत-  
पिशाचमण्डल-सर्वो(व-उ)-

छाटन- -नाय लां २१४:२२.

ग्रह-मारण-कर्मन्- -र्मणि रापू  
४, ५६.

ग्रह-रत्न-समाकुल- -लः गु ९.

ग्रह-रोगा(ग-आ)दि- -दि या  
२, १६.

ग्रह-शान्ति- -न्तौ शि ७, ११.

ग्रहो(ह-उ)डु-दशन- -नम् वउ  
४, ३४.

ग्रहण- -णम् अशि ५, १५<sup>१</sup>; दे १७;  
व्रवि ५७; -णात् गौ ४, ३७;

-णाय वृ २, ४, ७-९; ४, ५,  
८-१०; -णे जाद ४, ५५; भ २,  
२४; रुजा २, १८; -णेन वृ २, ४,  
७-९; ४, ५, ८-१०.

ग्रहणी<sup>१</sup>-  
ग्रहणी-गत<sup>१</sup>- -तः योशि  
५, ३१.

ग्रहण-ग्राहका(क-आ)भास-  
-सम् गौ ४, ४७.

ग्रहण-समर्पण-निवेदन- -नानि  
वउ ६, ६.

ग्रहण-स्वरूपा(प-अ)स्मिता-  
(ता-अ)न्वया(य-अ)र्थवत्त्व-सं-

यम- -मात् योसू ३, ४८.

ग्रहणा(ण-अ)न्त- -न्तम् आश्र १

ग्रहणीय- -यम् व्रवि ४६.

ग्रहीतव्य- -व्यः अना १३.

ग्रहीतुम् ऐ ३, ३-९.

ग्रहीतु- -ता श्वे ३, १९; नाप ९,  
१४; भव २, ४६.

ग्रहीत्री- -त्री गु ५१.

ग्रहीतु-ग्रहण-ग्राह- -हेषु योसू  
१, ४१.

ग्राभ- -भम् वपू १, ४५<sup>k</sup>.

ग्राह- -हम्, -हेण च २१:२०.

ग्राहक-

ग्राहका(क-आ)त्मन्- -त्मा अज  
५, १०४; मैत्रे २, २८; वरा ४, १९.

\*ग्राह्या-

\*ग्राह्यां/कृ, ग्राह्यांचकार इ  
१०:५.

ग्राहयित्वा अचि १; ग १८; गरु  
२५<sup>३</sup>; गार ४०८:२०; चा १४;  
सृ ८; व ४५८:२२.

ग्राह्य- -ह्यः जाद १, ८; -ह्यम् अशि  
३, ६; ते २, २१; ४, २७; ५, ८०;

६, ११; नि ११; ४९; ५०; पदं  
४<sup>३</sup>; वृजा ३, १; मवा ५; वडु  
३१५:६; सार २२७:१७;

२३१:१०.

ग्राह्य-ग्राहक-

ग्राह्यग्राहक-रूप-स्फुरण-

-णम् पै २, ४०.

ग्राह्यग्राहक-वत् गौ ४, ७२.

ग्राह्यग्राहक-संगम- -मे अज  
५, १०३.

ग्राह्यग्राहक-संबन्ध- -न्धे  
१संन्या २, ४२.

a) विशेषि. =गृहदेवता- । b) तैआआ १०, ६७ । c) पा.१ गृहीत्वा तृ° इत्येवं शोधः स्यात् (वैतु. उन्न.

यनि. एवाऽऽदाय गृहीत- इत्येतद् भिन्नकममितीव कृत्वा =वृणाशबरीगृहीत-वा° इत्येवमिव पाठुको भाषुकश्च) ।

d) असमासेऽपि ल्यप् द. (पा ७, १, ३८) । e) 'गृह्यम्' इति अज्या. । f) भावे अप् प्र. (पा ३, ३, ५८) । g) प्रधा.

सामान्येन ग्रहणार्थं सत्यामपि प्रवृत्तौ यनि. प्राति. नञ्चाद्यर्थान्तरवाचकस्य सतः समुपगमनार्थं तत्तद्दीप्त्याद्यर्थान्तर-  
कल्पनाऽपि सुवचा (तु. वैप१) । h) पा.१ रवि° इति निसा. च अज्या. च संटि. पाभे. [तु. सस्थ. टि. रवि-> -विः;  
वैतु. उन्न. यनि. पठन्नपि रु. इदं तैळं (\*=लेटि प्र१) न सौपमिति] । i) 'ग्राह्यम्' इति अज्या. । j) 'ग्रहणं गतः'  
इति संटि. । k) ऋ ८, ८१, ११ ।

ग्राह्य-भावा(व-आ)त्मन्- -त्मा  
अञ ५, १०४; मैत्रे २, २८; वरा  
४, १९.  
ग्राह्या(द्य-अ)भाव- -वे २ अव  
३३८:५; त्रिवा २, १६४; गौ ३, ३२  
✓\*गृह्ण- , \*गृह्ण- ✓\*गृह्ण- गृह्णते  
टि. द्र.  
✓गृ(शब्दे), > गिर, गृणन्ति सार  
२७३:३; गौ ११, २१; गृणी-  
मसि व ४६०, २२९.  
गिर- गिर: छां १, ३, ६; गिरम्  
रापू ४, ४४; गिरा जाद १, १५;  
नाप ५, १; १७; भव ३, ३१; मै  
४, ४, ९; मैत्रि ६, ३४; गिराम् अञ  
३, १९; ते १, २२<sup>७</sup>; ३९; गौ १०,  
२५; गीर्भि: त्रि १६; मना २, ७९.  
गीर्ण- -र्णम् षो १०.  
गृणान- -न: २प्र ३६:२१९<sup>d</sup>; मना  
२, १९<sup>७</sup>; व ४६१:१३९<sup>७</sup>; सिशि  
३८१: ५.  
✓गृ ( निगरणे ), > गिल् ( < र ),  
गिलति, गिलन्ति गु २६.  
जगार छां ४, ३, ६.  
गेय- , गेष्ण- ✓गै द्र.  
गेह<sup>६</sup>- -हम् नाप ५, १२<sup>२</sup>; -हे नाप ५,  
१२; गौ ६, ४१.  
✓गै, > गा, गायति छां १, ३, ४; ७,  
७<sup>३</sup>; ९<sup>३</sup>; ३, १२, १; घ्या ९३, ११;  
सुबा ६; गायन्ति तै १, ८, १;  
छां १, ७, ६<sup>३</sup>; ११, ७; गोड २२;  
सार २२२:१६; १७; २१; २२४:  
१७; २३७:१०; २५४:३;  
२५५:१३; २६६:४; २७३:१;  
३; २७४:१४; २७८:१२;  
अगायत् अव्य २; सार २८६:१९.

जगु: पै २, ३२; मन्त्रि ८; योरा  
६:१४; अगासी: वृ १, ३, १८.  
गीयते छां १, ६, १-५; ७, १-४;  
वृ १, ३, २७; गोड १५; १प्र  
३२: १; ब्रवि १३:२१; मन्त्रि  
९; रापू ४, १<sup>३७</sup>; शु ३, ७; सर २,  
२; सार २२०:१६; २२१:११;  
सी ३४; ब्रसू १, १, १५; ४, २७.  
गातुस् अव्य<sup>६</sup> द.  
गातृ- -त्ता छां १, ६, ८.  
गाथा- -थया राड ४, १; -था छां  
४, १७, ९; -था: गोपू ३०; योशि  
३, ८; वड ५, १९; -थाम् वृपू  
५, १८; मै १, १; मैत्रि १, २;  
मैत्रे १, १.  
गान- -नम् नाप ६, ३२; सार २२८:  
२१; २७०: १५.  
गान-प्रिय- -याय सार २६१:२.  
गान-व(त>)ती<sup>१</sup>- -ती सार  
२२९: १६; २२; २३४: ५;  
२४२: २२; २६८: ७; ११;  
२६९: ३; २८४: १३; -त्या  
सार २३७: २१.  
गानवत्या(ती-आ)दि- -दय:  
सार २७०: १५.  
गान-वछ(भ>)भा- -मा सार  
२८७: ५.  
गायत्- -यन् तै ३, १०, ५; अव्य  
२; -यन्त: सार २७३:१५.  
गायन्ती- -न्त्य: सार २२८:२१.  
गायत्र<sup>१</sup>- -त्रम् छां २, ११, १; २;  
गरु ११९<sup>१</sup>.  
२गायत्र<sup>१</sup><sup>k</sup>- -त्र: आश्र १<sup>२</sup>; ९<sup>१५</sup>.  
३गायत्र<sup>१</sup>- -त्रम् छां ३, १६, १; च  
२०:५; त्रिता ४, १; २प्र ३२:१०;

३५:४; २३; ३६:१६; मना २,  
३३९<sup>m</sup>; महा १, १; मैत्रि ७, १;  
रार २, २<sup>३</sup>; २८<sup>२</sup>; ३१<sup>२</sup>; ६३<sup>२</sup>;  
९८; शौ ५२: ४<sup>२</sup>; ६.  
गायत्री<sup>१</sup><sup>n</sup>- -०त्रि<sup>०</sup> व  
४३१:१०; ४३२:१६; ४३६:७;  
-त्री छां ३, १२, १<sup>२</sup>; २; ५; १६,  
१; वृ ५, १४, ४<sup>३</sup>; ७<sup>३</sup>; अ १; अक्ष  
३; अद्वैभा ११; अव्य ५; अशि  
१, ५; ६, १६; का १४; गरु २;  
गा १०; १४; १५; २२; गार  
४०५: ८; ११<sup>२</sup>; ४०६: १; २;  
१२; १३; १६; ४०७: १६;  
गोच ६९: ११; चा ३; ते ६,  
२४; त्रिता ४, ३२; ३४; द १;  
दत्ता १, २; ६; ध्या ६३; नापू  
३, ३; ४, १६; निर्वा २९८: १;  
वृड ३, २; वृपू २, २; ४, १२;  
५, ३; २प्र ३५: २३; मना २,  
२८९<sup>१</sup>; ३४९<sup>२</sup>; ३५९<sup>३</sup>; योचू ३३;  
३५; रार २, ७०<sup>७</sup>; ८७; ९५; व  
४२६:२; वडू ३१७:२२; वपू १,  
६; ३; १; शा १३; शां १, ६; ३, १;  
२शिर्ष १९; शु २, ५<sup>३</sup>; शौ ५२:  
४; ५; ११; सर २, १; ३-५; सावि  
१०; सु १; गौ १०, ३५; -त्रीम् वृ ५,  
१४, ५; अना ११; आरु २; आश्र  
१; गा १७; २५; गार ४०८:  
१२; नापू ४, १; म १, ८; ९;  
मना २, ३५९<sup>३</sup>; शौ ५१: ६;  
५२: ६; सार २३५: ३; -न्या  
गोच ६४: ११; त्रिता १, ५१;  
वृपू ४, ८; ५, ३; वृजा ३, ६; ६,  
७; म १, ४; मना २, ३५९<sup>३</sup>;  
वपं ३११:२; -न्या: वृ ५, १४,

- a) ऋ १०, ८४, ५। b) 'गिरा' इति अच्चा। c) तैआ १०, ५, १। d) ऋ ६, १६, १०। e) ऋ ५, ४, ९।  
f) तु. पा ८, २, २१। g) व्यु. वैप १ यद्र.। h) एकतरत्र 'कथ्यते' इति आन.। i) =सामविशेष-। j) मा १२, ४।  
k) =ब्रह्मचारिभेदविशेष-। l) =छन्दोविशेष-। m) तैआआ १०, ३३। n) =देवी- वा छन्दोविशेष- वा।  
o) देव्यात्मतयोपचारसामान्ये सत्यपि दुर्गात्मतयोपचार: द्र.। p) वैतु. शं. प्रमृ. सं १ इति। q) तैआ १०, २१, १।  
r) तैआ १०, २६, १। s) तैआआ १०, ३५। t) ऋम् इति अच्चा।

५; अशि ६, १६; ७, ५; गा १८;  
गार ४०५: २; ८; ४०८: १६;  
च २१: ११; ता ३, ९; दत्ता ३<sup>६</sup>;  
महा ६, ८३; मृ ७; राउ ५, ४; वट्ट  
३१७: २२; ज्यै वृ ५, १४, १-३;  
गा २; ४; ६; व ४६२: २१.

गायत्री-त्रिष्टुप्-छन्दस्-  
न्दसी का १२; नार ११<sup>१</sup>०.

गायत्री-त्रिष्टुब्(भ-अ)-  
जुष्टुप्-छन्दस्-न्दसि ह ६.

गायत्री-त्रिष्टुब्-जगती-  
रू(प>)पा-पा गार ४०७: ३.

गायत्री-रहस्य<sup>०</sup>-स्यम्  
गार ४०८: १३; १४; १६.

गायत्री-विद्-वित् वृ  
५, १४, ८.

गायत्र्यु(त्री-उ)द्वासन-  
नम् नाप ४, ३८.

गायत्र-संज्ञ-ज्ञम् रार २, २१.

गायमान, ना-ना सार २८५: ३;  
-ना: सार २३३: १६; २५१:

१०; २५३: १४; १५; २५४: ६;  
८; २५५: ११; २५९: ३; २६२:

१८; २६८: २३; २७५: २.

गीत, ता-तम् शि ७, १३; गी १३,  
४; -ता नाप ५, ३; -तानि सार

२६६: ४; -ताम् रार १, ९.

गीत-गान-नम् सार २२९: ६;  
-नै: सार २४३: २२.

गीतगान-गुण-गेन सार  
२२९: २२.

गीत-(ज्ञ>)ज्ञा'-ज्ञा सार  
२६३: ९.

गीत-रस-भेद-(ज्ञ>)ज्ञा'-  
-ज्ञा सार २६३: ९.

गीत-वादित-ते छां ८, २, ८.

गीतवादित-लोक'-केन  
छां ८, २, ८.

गीतवादितलोक-काम-  
-म: छां ८, २, ८<sup>१</sup>.

गीति-तये चू ९.

गी(थ>)था<sup>०</sup>-था वृ १, ३, २३<sup>२</sup>.

गीयमान, ना-न: सार २८२: ७;  
-ना सी ३७.

गेय-  
गेय-मङ्गल-पाठक-कै: शि ६,  
१४२.

गेष्ण-ष्णौ छां १, ६, ८; ७, ५<sup>२</sup>.

गैरिक-गिरि-द्र.

गो'-गवाम् छां ४, २, १-४; वृ ३, १,  
१; अवि १९<sup>२</sup>; त्रिता ५, १९<sup>३</sup>;

ब्रवि १९<sup>२</sup>; कौ२, ११९<sup>१</sup>६; शि ५,  
३४; ६, २२४; ७, १२; ९३; ९५;

सार २५०: १८; २६०: ४; २७४:  
१५; १९<sup>३</sup>; २३; २७५: ६; ८;

२२; २८१: ३; गवि मना २, १२,  
३९<sup>१</sup>; गी ५, १८; गा: छां ४, ४,

५; ६, १<sup>२</sup>; ७, १; ८, १; वृ ३, १, २;  
१संन्या १, १<sup>१</sup>; सार २७४: १८;

गाम् ऐ २, २; अशि १, ११; इ  
१८: १८; कालि १<sup>१</sup>; वृपू ३, ४;

५, १०; पा ६, ७<sup>१</sup>; वृजा ३, १;  
५; ६; ६, १२; मना १, ५९<sup>१</sup>; यो

२, ११<sup>१</sup>; रुजा ३, १; वपू २, २;  
गी १५, १३<sup>१</sup>; गाव: तै १, ४, २;

ऐ ५, ३; छां २, ६, १; १८, १; वृ

१, ४, ४; ६, ३, ६९<sup>१</sup>; इ ११: ४;

कृ८; वृजा ३, ३९<sup>१</sup>; ४<sup>२</sup>९<sup>१</sup>; मना २,  
३९<sup>१</sup>; ६३९<sup>१</sup>; व ४६६: १२९<sup>१</sup>;

शि ६, १५९; सार २७४: २१;  
२२<sup>२</sup>; २७५: ९; २२; २७६: २;

४; २७८: ११; गौ: शि ६, १५६;

गोभि: छां ४, २, ३; अशि १, ११;  
वा १५; २०; मना २, २९<sup>१</sup>; व

४६१: १८९<sup>१</sup>; रशिसं २३; गोषु  
श्वे ४, २२९<sup>१</sup>; गोउ १५; मना २,

५३९<sup>१</sup>; रशिसं २९९<sup>१</sup>; गौ: वृ  
१, ४, ४; ३, ४, २; अशि १, ७; इ

१२: १८; १५: ५; १८: ११; कृपु  
१४<sup>१</sup>; गोउ ६३; चू ५<sup>१</sup>; पा ५,

५; १०, १; वृजा ३, १; मन्त्रि ५<sup>१</sup>;  
सुवा २; स्व ६१: ९.

गवा(व<sup>१</sup>-अ)क्ष-क्षाणि गु ३२.

गवाक्ष-क-  
गवाक्षक-द्वय-यम् शि  
४, ६.

गवा(व<sup>१</sup>-आ)दि-दय: जावा १३.

गवा(व<sup>१</sup>-आ)दिक-कम् शि ६,  
२७९.

गवि-ष्ठ<sup>१</sup>-ष्ठ: पा २, १.

गव्य-व्यम् पित्र ६, ५; व्यानाम्  
भ२, २१; -व्ये पित्र ६, ५; -व्येन

वृजा ३, १; -व्यै: अक्ष ४<sup>१</sup>.

गो-अश्व<sup>१</sup>-श्वम् छां ७, २४, २;  
-श्वानाम् वृ ६, २, ७.

गो-कर्ण<sup>१</sup>-र्णं शि ६, १९०.

गोकर्णा(र्ण-आ)कृति-  
गोकर्णाकृति-वत् आच ५.

गो-काम-सा: वृ ३, १, २.

a) °व्या इति निसा.। b) °दुन्दै° इति मुपा. यनि. सु-शोध: द्र.। c) =तदाख्योपनिषद्विशेष-। d) °वादित्र°  
इति आन. संदि.। e) =वागिति कृत्वा उद्धीथ- इत्यत्र उप. (तु. सस्थ. व्यु. च व्या. च)। f) बन्ध. सत्. बव्यु. प्राति.।  
व्यु. वैप१ यद्र.। g) 'गवा' इति च्युतमकार: निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. शांत्रा ४, ११; आन.)। h) अ ४,  
५८, ४। i) 'अक्षान्' इति अख्या.। j) =पृथिवी-। k) तैआ १०, १, ५। l) अ १, ९०, ८। m) अ ६, २८, १।  
n) अ ६, २८, ५। o) तैआआ १०, ६३। p) तैआ ७, ४, २। q) तैआ १०, १, १६। r) अ १, ११४, ८। s) 'गौरवा'  
इति अख्या. (तु. उब्र.)। t) तु. पा ६, १, १२३। u) सप्त. सप्त. अलुक् (पा ६, ३, १४)। v) सङ्घट 'गन्धै:' इति  
निसा.। w) तु. पा ६, १, १२२। x) =तीर्थविशेष-।



गो-कुल<sup>१</sup>- -लः सार २३९:१२;  
-लम् कृ९; राधा४,४; -ले गोच  
६९:१९; सार २६०:४.

गोकुला(ल-आ)ह्य- -ह्यम् राधा  
१, १२; -ह्ये राधा १, १५.

गो-क्षीर-धवल-प्रभ- -भः अना  
३८<sup>b</sup>.

गो-क्षीर-धवलो(ल-उ)पम-  
-मम् योच ९६.

गो-गण- -णे सार २६०:१०.

गो-घृत- -तेन रार ४,८.

गो-घ्न- -घ्नः गोच ६८:१; -घ्नैः स्व  
६१:८.

गो-चर- -रः अना ३३; ते ६,३३;  
-रम् महा ५,३९; -रान् क १,३,  
४; पै ४,२; भव २,११.

गो-चर्या- -र्याम् नाप ५, २६.

गो-जा- -जाः क २,२,२९<sup>०</sup>; त्रिता  
४,२७९<sup>०</sup>; २९; नाप ५,१९<sup>०</sup>; नृपू  
३, ६९<sup>०</sup>; मना २, १२, २९<sup>०</sup>;  
२, ४०९<sup>०</sup>; वपू २, ३९<sup>०</sup>.

गो-तम<sup>a</sup>- -मः वृ २,२,४.

गौतमी<sup>१</sup>- -म क २,१,१५;  
२,६; छां ५,३,६; ७; ४-८,१; १७,  
१; वृ ३,७,१; २<sup>१</sup>; ६,२,६-१३;  
कौ १, १; पं २९; ऋवि ५३; यो  
१,३; सूता ३, ८; हं २; -मः क  
१,१,१०; छां ५,३,६; वृ २,६,  
१; २<sup>३</sup>; ३<sup>३</sup>; ४,६,१; २; ३<sup>३</sup>; ६,२,  
४; आर्षे ८:१३; वसू १४; सूता  
३,५,७; हं १; -मम् छां ४,४,३;  
-मस्य कौ १, १; -मात् वृ २,  
६,१; २<sup>३</sup>; ३<sup>३</sup>; ४,६,१; २; ३<sup>३</sup>;  
-माय वृ ६,२,४.

गौतमी<sup>१</sup>-

गौतमी-पुत्र<sup>१</sup>-

-त्रः, -त्रात् वृ ६, ५, १; २.

गौतम-भरद्वाज-याज्ञ-

वल्क्य-वसिष्ठ-प्रभृति<sup>०</sup>- -तयः  
भि २.

गौतम-भरद्वाज- -जौ वृ २,२,४

गो-त्र<sup>१</sup>- -त्रः<sup>१</sup> २ प्र ३५:३; -त्रम्  
ते २,१६; ४,१७; ६,२८.

गोत्र-कलत्र<sup>b</sup>- -त्राणाम् शि ६,  
१७३.

गोत्र-भृत्- -भृत् काम ४.

गोत्र-भृत्य-संयुक्त- -क्तः शि  
६, ६४.

गोत्रा(त्र-आ)दि-चरण- -णम्  
१ संन्या २, ८९.

गो-त्रा<sup>१</sup>- -त्रा त्रिता २, १३; -त्रायाम्  
त्रिता २, १४.

गोत्रा(त्रा-आ)रूढ- -ढम् त्रिता  
२, १३.

गो-त्व- -त्वम् इ ११:२२.

गो-दातृ- -तारः स्व ६१:७.

गो-दान-सम- -मम् शि ६, २८०.

गो-दोह-मात्र- -त्रम् १ संन्या २, ६१

गो-धूम<sup>१</sup>- -माः वृ ६, ३, १३.

गोधूम-चणका(क-आ)ह्य-

-ह्यानि शि ६, २३.

गोधूम-मात्र-

गोधूममात्र-क- -कम् शि  
६, ९७.

गोधूम-मुद्ग-शाल्यह्य- -ह्यम्  
१ योत ४९.

गो-नाय- -यः छां ६, ८, ३; ५.

गो-य<sup>k</sup>- -पाः कृ १; नी २, २९<sup>१</sup>; सार  
२३९:१९; २४९:४; ६; २५०:  
२२<sup>३</sup>; २५२:१६; १७; २५४:९;

१३; २१; २७४:१३; २८०:७;

सूता १, १३९<sup>m</sup>; -पान् गोच १५;

३०; -पानाम् सार २४९:३;

२७४:९; १०; -पैः सार २७४:१९

गोपी<sup>n</sup>- -पी गोच ६७:१;

११<sup>२</sup>; सार २४०:१३; १४;

-पीनाम् गोच ६८:२३; सार

२३९:१०; १९; २८१:१२;

-पीभिः गोच ६६:१; वा ४; -प्यः

कृ ८; गोच ६७:६; ७; राधा १, २६;

२, २; सार २८८:१८; २१; २३८:

२०; २३९:२२; २४०:३; २०;

२१; २४१:६; २२; २४२:८;

२४३:३; २५२:१६; १८;

२५४:४<sup>३</sup>; ५-८; १३; १४; २१;

२६७:६; २७५:१; २७६:४.

गोपि-(क>)का- -काः

कृ १; गोच ६९:२०; -कासु सार

२३८:१९.

गोपी-चन्दन<sup>१</sup>- -न

गोच ६६:४; वा ६; -नम् गोच

६६:१; ३; ६७:१२; ६८:१५;

६९:१; ५; २१; वा ४; ६; ३१;

३७; सार २४०:१५; -नात्

गोच ६८:२०.

गोपीचन्दन-खण्ड-

-ण्डम् गोच ६९:८.

गोपीचन्दन-दान-

-नस्य गोच ६८:१९.

गोपीचन्दन-धारण-

-णात् गोच ६८:२; १८; वा ३३.

गोपीचन्दन-पङ्क-

-क्केन गोच ६७:२०.

गोपीचन्दन-मण्डन-

-नम् गोच ६८:२१.

a) =देशविशेष- । b) °स्फटिकप्रभः इति आन. । c) ऋ ४, ४०, ५ । d) =ऋषिविशेष- । व्यु. विशेषः  
वैपश् यद्. । e) °भार° इति अख्या. । f) =वंश- । व्यु. विशेषः वैपश् यद्. । g) पुं. वृत्ते तु. वैपश् यस्था. ।  
h) मध्यमपदलोपः कस. । i) =पृथिवीति कृत्वा लकारत्रयस्य गुह्यः संकेतः (तु. उत्र.). । j) =धान्यविशेष- । व्यु.  
विशेषः वैपश् यद्. । k) उप. √पा(रक्षणे)+कः प्र. (पा ३, २, ३) । l) मा १६, ७; वैतु. JC. °पः इति ।  
m) मा १६, ७ । n) स्त्री. ङीष् प्र. (पा ४, १, ४८) ।

गोपीचन्दन-मृत्ति-  
का-का गोच ६७ : ११.<sup>a</sup>  
गोपीचन्दन-मृ-  
त्तिका-निरुक्ति- -त्त्या गोच  
६७ : ३.  
गोपीचन्दन-लिप्ता-  
(म-अ)ङ्ग- -ङ्गः गोच ६७ : २२;  
६८ : ३; ७; १०; ११; -ङ्गम् गोच  
६८ : ५; -ङ्गः गोच ६८ : १३.  
गोपीचन्दन-वारि-  
-रिभ्याम् वा ३४.  
गोपीचन्दन-संस्क-  
मानुष- -षाणाम् गोच ६७ : ९.  
गोपीचन्दना(न-अ-)  
भाव- -वे वा ३५.  
गोपी-जन- -नं गोपू ११  
गोपीजन-म(नस् >)-  
नो-हर- -०२ गोपू ४४.  
गोपीजन-वल्लभ-  
-भः गोपू ४; १५<sup>d</sup>; -भ्याय गोपू  
१३; ६४; त्रिवि ७, ३३; ३७; व  
४५७ : ८.  
गोपीजनवल्लभ-  
ज्ञान- -नेन गोपू ३.  
गोपीजना(न-अ)-  
विद्या-कला(ला-अ)पत्रेरक-  
-कः गोपू ५१<sup>e</sup>.  
गोपी-नाथ- -थाय गोपू  
३५.  
गोपी-पुष्करिणी- -णी  
सार २४३ : २.

गोपी-भाव- -वम् सार  
२४० : १२.  
गोप-गोपिका(का-आ)दि-  
-दीनाम् सार २५४ : १७.  
गोप-गोपी- -पीभिः सार  
२८१ : ३.  
गोपगोपी-गण- -णाः सार  
२८१ : १०.  
गोप-गोपी-गवा(व'-आ)वीत-  
-तम् गोपू ९<sup>f</sup>.  
गोप-गोपी-सुर- -रैः कृ ७.  
गोप-भार्या- -र्याः सार २३९ :  
१९.  
गोप-रूप- -पः कृ १०; गोपू २१.  
गोप-वेष- -षः गोपू २५<sup>g</sup>; -  
-षम् गोपू ७.  
गो-पति- -तिः ए १२; -० ते वपू १, ३.  
गौपत्य- -त्यम् गोच ६७ : १८;  
त्रिता ४, २५; ना ३; म १, ११.  
गो-पयस्- -यः भव ४, १२.  
गो-पा- -पाः छां ४, ३, ६; श्वे ३,  
२; वपू २, १२; मना २, ४७<sup>h</sup>; -  
-पौ लि ३१० : ३५<sup>k</sup>.  
गो-पाल- -लः गोउ १६<sup>i</sup>; ३०<sup>j</sup>;  
३५; ४५; ६४<sup>l</sup>; -लम् गोउ १;  
३४; -लस्य गोउ १६; -लाय  
गोपू ३९.  
गोपाल-चूडा-मणि- -णये  
त्रिवि ७, ३५.  
गोपाल-तपन<sup>m</sup>- -नम् मु १, १,  
३८.

गोपाल-पुर(र>)री<sup>n</sup>- -री गोउ  
१९; २०.  
गोपाल-सद्वत्ता- -वाम् १ अव ४<sup>o</sup>  
गोपाले(ल-ई)द्वर- -रः गोउ २३  
गो-पुर- -रात् शि २, १४.  
गोपुर-प्राकारा(र-आ)दि-  
-दिभिः सी ३६.  
गो-प्रदान- -नस्य शि ६, ७१.  
गो-ब्राह्मण-परित्राण- -णम् शि ७,  
९९.  
गो-भस्मन्- -स्म वृजा ३, १<sup>p</sup>.  
गो-भूमि-वेद-वेदित-वेदितृ- -ता  
गोपू ५१<sup>q</sup>.  
गो-मति<sup>r</sup>- -तौ<sup>s</sup> अ-या ५४.  
गो-मय- -यम् वृजा ३, १-३; ७-९;  
२२; म १, ३; शि १, २५; ६,  
२८३; -यानाम् शि ४, ६३; -ये  
वृजा ३, ९; -येन वृजा १, १;  
१यौत ३३; -येषु शि ५, ७.  
गोमय-कृत- -तम् शि ५, ६.  
गोमय-ग्रहण- -णम् वृजा ३, १.  
गोमय-द्रव्य- -व्यम् म १, ३.  
गोमय-पिण्डक- -कान् वृजा ३,  
११.  
गोमया(य-अ)जन-कर्पट- -टान्  
शि ६, ५८.  
गोमया(य-आ)दि-लिप्त- -सम्  
शां १, ५.  
गो-मांस- -सम् नाप ७; १ संन्या  
२, ७६; ७९.  
१ गो-मुख<sup>t</sup>- -खः नाप ५, १; -खम्

a) 'गोपी का' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । b) तृप्त. गर्भितः बस. । c) वल्लभ-> -भाय इत्यस्य पूष. ।  
d) छन्दस्तः °जन° इत्यक्षरद्वयमधिकमपि सत् प्रकृतमन्त्रपदानुवादकमात्रत्वेन घृतं द्र. । e) °नविद्याकलापी° इति  
अख्या. मुपा. यनि. सु-शोधः । °नविद्या° इति निसा., °नविद्याकलापि° °नविद्याकलाभि° इति च अख्या. संटि.,  
°लाप्रे° इति आन. । f) तु. पा ६, १, १२३ । g) 'गोपीगोपगवा वीतम्' इति आन. । h) 'कोपदेष्टा' इति अख्या.  
न तात्त्विकः पाभे. यनि. एव विकृतस्य सतः संस्करणाभासमात्रत्वात् (वैतु. उत्र. उभावपि पा. युगपदेव तात्त्विकाविती-  
वाभिमानुकः) । i) उप. √पा(रक्षणे)+विच् प्र. । j) तैशा ३, ७, ७, २ । k) ऋ २, ४०, १ । l) =तदाख्योपनिष-  
द्विशेष- । m) °वाल° इति अख्या. । n) 'लब्धगोभस्मना' इति अख्या. । o) °द्विदितः इति अख्या., °द्वेदितः  
इति निसा., °द्विदितः वेदितृ-> -ता इति आन. च मुपा. यनि. सु-शोधः । p) षस. । q) गोर्मतिरिव (=या  
मृदुर्मतिः) तस्यां सत्यामिति भावलक्षणे सप्त. । r) =भिन्नावृत्तिविशेष- ।

नाप ५, १; ७.  
 गोमुख-वृत्ति- -त्या १संन्या २,  
 १३.  
 रगो-मुख- -खम् जाद ३, १; ४९<sup>१५</sup>;  
 त्रिवा २, ३६; शां १, ३, २; वरा  
 ५, १६.  
 गो-मूत्र- -त्रम् वृजा ३, ७; ९; -त्रैः  
 वृजा ३, ३४.  
 गोमूत्र-गोमया(य-आ)हारिन्-  
 -रिणः भि ६.  
 गो-रस-  
 गोरस-दधिरस-दुग्धरस-नव-  
 नीतरस-घृतरस-फा(१गट<sup>७</sup>)-  
 ण्डरस- -सैः सार २७८: ३.  
 गोरस-विक्री(ड>)डा- -डाः  
 सार २४०: ३.  
 गो-रोचना-तिलक- -कः राधा ३, १०  
 गो-लोक<sup>३</sup>- -कात् सार २७६: ६.  
 गो-वत् नाप ५, ११; १संन्या २, ७८.  
 गो-वध- -धात् भ १, ११.  
 गो-वर्धन<sup>१</sup>- -नः सार २२१: १९;  
 २५५: १५; २५७: ७; २५८: ८;  
 १८; -ने सार २३३: ४; २५५:  
 १८; २५७: ७.  
 गोवर्धन-गिरि- -रौ सार २६०:  
 ११.  
 गोवर्धन-धर- -राय गोपू ४१.  
 गोवर्धन-मठ- -ठः म ४८: १२.  
 गोवर्धना(न-अ)द्वि- -द्विः सार  
 २६०: ९; -द्वौ सार २४३: ११;  
 १३; २५५: २३; २५६: ४;  
 २५७: १२; २६०: १३; २६१:  
 २३; २७६: ६; १८.  
 गोवर्धनादि-पृष्ठ- -ष्ठे सार

२६०: ७.  
 गोवर्धनादि-शिरस्- -रसि  
 सार २३३: १; २४६: १४;  
 २७६: १२.  
 गोवर्धनाद्वि(दि-अ)धस्\*  
 -धः सार २६०: ८.  
 गो-विन्द<sup>१</sup>- -०न्द गोच ६६: १०;  
 गोपू ४५; त्रिवि ७, ४०; वा ११;  
 गी १, ३२; -न्दः गोपू ४; राधा  
 १, १६; -न्दम् गोपू १५; ३३;  
 रुह ६; गी २, ९; -न्दस्य गोपू  
 १७; २३; २४; -न्दात् गोपू ३;  
 -न्दाय गोड ६४; गोपू ११; १३;  
 ३४; ३५; ३७; त्रिवि ७, ३२;  
 ३४; ३७; ४१; नापू ३, १५; ४, १.  
 गोविन्द-कुण्ड<sup>१</sup>- -ण्डम् सार  
 २७६: १५.  
 गोविन्द-मुष्करिणी<sup>१</sup>- -णी सार  
 २५५: २३; -ण्याम् सार २७६:  
 १२.  
 गो-विन्दु- -न्दुः सु २९४: ५९<sup>१०</sup>.  
 गो-वृत्ति- -त्या तुअ १४; पप ४१९:  
 १४.  
 गो-व्रज- -जान् वज ३, २४.  
 गो-शृङ्ग- -ङ्गे वृजा ३, ७.  
 गो-श्रुति<sup>१</sup>- -तये छां ५, २, ३.  
 गो-(स्थ>)ष्ठ- -ष्ठम् सार २२१:  
 १३; -ष्ठानि सार २७६: ४.  
 गोष्ठी- -ष्ठीम् योशि ६, ४४;  
 -ब्ध्या सार २७६: २.  
 गोष्प(स्-प)द- -दे अञ १, ४३;  
 -देष्टु अञ १, ४२.  
 गोष्पद-तोय- -ये अञ १, ४३.  
 गोष्पदा(द-आ)कृति- -तिः महा

६, ९.  
 √गोष्पदाय्, गोष्पदायते  
 १अव ३.  
 गो-स्तन- -नात् ते ६, ८१.  
 गो-स्तेय- -यम् मना २, ६४९<sup>१०</sup>.  
 गो-हत्या(त्या-आ)दि-पातक-  
 -कैः दत्ता ३.  
 गोतम-, गोत्र-, गोत्रा-, गोधूम-,  
 गोप- गो- द्र.  
 गोपनीय-, गोपयित्वा- √गुप् द्र.  
 गोपवन<sup>१</sup><sup>१</sup><sup>d</sup>-  
 गोपवन<sup>१</sup><sup>d</sup>- -नः, -नात् वृ२, ६, १<sup>१</sup>;  
 ४, ६, १<sup>१</sup>.  
 गोपा-, गोपिका-, गोपी- गो- द्र.  
 गोप्त-, १, २गोप्य- √गुप् द्र.  
 गोल्-  
 गोल्-क- -कः ब्रवि १८.  
 ?गोलाख<sup>१</sup>- -खम् ब्रवि ७३.  
 गौण- गुण- द्र.  
 गौतम-, गौमी-, गौपत्य- गो- द्र.  
 गौर<sup>१</sup>- -रः मना २, १२, २९<sup>१</sup>.  
 १गौरी<sup>१</sup>- -रि व ४३१: २;  
 ४५८: १०; हे २; -री अद्वैभा  
 १५; अशि १, ७; इ १६: १७<sup>३</sup>;  
 नृपू ४, १५, ८; पं ३; राउ ४,  
 २४; वउद्, १; हे १; १४; -रीम्  
 इ १९: १७.  
 गौरी-नन्दन- -नाथ व  
 ४५६: ८.  
 गौर-वर्णे(र्ण-ई)शान-दल- -ले वि  
 १५.  
 १गौरी- गौर- द्र.  
 ९'२गौरी<sup>१</sup><sup>m</sup>- -रीः चक्र २; ह १६.  
 ग्मा<sup>m</sup>- ग्मा कृपु १४.

a) =आसनविशेष-। b) मुपा. यनि. शोधः द्र.। c) °विन्द° इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. ऋ ९, ९६, १९)। विशेषः वैप१ यद्र.। d) व्यु. ? =ऋषिविशेष-। e) तैआआ १०, ६४। f) व्यु. ?। g) अनवगमात् व्यु. पा. च ? इति कृत्वा गो-लोक- इत्येतत्परतया वा गो-रक्ष- इत्येतत्परतया वा शोधः स्यात्। विवृ. उन्न. गो- + (ल>)ला- (<√ल)+ख- इति कृत्वा बस. इति। h) बअ. सत् बव्यु. प्राति. द्र.। विशेषः वैप१ यद्र.। i) ऋ ४, ५८, २। j) =उमा-। ली. डीप् प्र. (पा ४, १, ४१)। k) उपचाराद्वा व्यु. भेदात् वा ? =दशानन्द-बाला-। l) ऋ १, १६४, ४१। m) व्यु. वैप१ यद्र.।



√ग्रथ, न्य->ग्रथि, ग्रन्थन्ति सार  
२७४: २.

ग्रथयति सार २७१: ८.

ग्रथन- नम् महा ३, ११.

ग्रथित, ता- ता: सार २२५: ७;

१२; २३३: १०; २३७: ६; १३;

२४२: ६; २६७: १४; १६; २६९:

१८; -तानि नाप ३, ३०; सार

२२२: ९; २३७: ५; -ताम् सार

२७१: ९.

ग्रथित-निकुञ्ज-

ग्रथितनिकुञ्ज-ता- -ताम्

सार २२६: ६.

ग्रथित्वा रुजा १, २३.

ग्रन्थ- न्थ: सर ३, १०; -न्थम्

अवि १८<sup>१</sup>; त्रिता ५, १८<sup>२</sup>; ब्रवि

१८<sup>३</sup>; -न्थान् नाप ५, २२.

ग्रन्थ-कोटि- -दिभि: शि १, ५.

ग्रन्थ-तस्(>:) यो २, ३; ९.

ग्रन्थ-विस्तर- -र: ब्रवि ५; त्रिता

५, ५; -रा: मै४, ४, ८; मैत्रि६, ३४

ग्रन्थि- न्थय: क २, ३, १५; पाशु

२, ३७; योशि १, ११३; -न्थि:

अक्ष ३; ब्रवि ७८; मना २, ७४९<sup>४</sup>;

योशि ६, ४०.

ग्रन्थि-कलेवर- -रम् मुद्र २<sup>५</sup>.

ग्रन्थि-त्रय-विभेदक- -कम्

योशि १, १००.

ग्रन्थि-त्रय-विभेदन- -नात्

योशि १, ११६.

ग्रन्थि-भेद- -द: योशि १, ११४.

ग्रन्थि-विच्छेद- -द: महा ५, ४.

√ग्रस्, ग्रसति अशि ३, ७; इ १३:

४; च २१: २१; पाशु २, ३९;

यो १, ७१; वटु ३१५: ७; असाम:

वृट ६, १; अस-ग्रस व ४४९:

७; १७; ४५०: १; ८; १५; २२;

४५१: ८; १५; २२; ४५२: ७;

१५; २२; अग्रसत् वृट ४, ६;

असेत् वृट ३, १; ६; १०; योशि

१, ११८; शां १, ७, ४१.

अस्यते योशि १, १३४<sup>६</sup>.

असमान- -न: गी ११, ३०.

असित- -ता: गोड ३७.

असितुम् वपं ३१२: १८.

असिष्णु- -ष्णु: गी १३, १६.

अस्त- -स्त: १आ १६; -स्तम् सार

२२१: २३.

अस्त-चित्त- -त्तम् महा ४, ९२.

अस्त-वत् १आ १५.

आस- -सान् मि २; ४: ८.

आस-मात्र- -त्रेण महा ५, ७४.

आसा(स-अ)म्बु<sup>७</sup>- -म्बु श्वे ५,

११; भव २, २४.

१, २ ग्रह- , ग्रहण- , ग्रहणीय- , ग्रही-

तुम्, ग्रहीतृ- , आभ- ✓\*गृह् ,

ग्रह् द.

ग्राम<sup>८</sup>- -म: छां ४, २, ४; अज १,

३३; नाप ३, ५६; ५७; -मम् छां

६, १४, २; अज १, ३४; आरु<sup>५</sup>;

कौ २, १; २; नाप ३, ५५; ७<sup>१</sup>;

पप ४१९: ९; वृजा ५, १६; शि

७, ६०; -मात् छां ६, १४, २;

जा ४; पप ४१८: १३; या १,

१; -मान् प्र ३, ४<sup>२</sup>; -मे छां ५,

१०, ३; कथु १, १<sup>३</sup>; नाप ४, १४;

१५; २०; ७<sup>४</sup>; पप ४१९: १२;

मि<sup>५</sup>१<sup>५</sup>; आश्र<sup>४</sup>१<sup>५</sup>; महा ३, १८;

व ४३०: २०; ४५८: ८; शां १,

५; शि ७, १२९; १संन्या १, १<sup>१</sup>;

-मौ छां ८, ६, २.

ग्राम्य, म्या- -म्याणि वृ ६, ३,

१३; -म्यान् सुवा २; -म्यासु

अक्षि ५.

ग्राम्य-काम- -मान् कुं ३.

ग्राम्या(म्य-आ)रण्य-

पशु- -न्न-

ग्राम्यारण्यपशुन्न-त्व-

-त्वम् राउ ५, १२.

ग्राम-बहिष्-कृ(त>)ता- -ताभि:

आश्र ३.

ग्राम-यात्रा- -त्रा महा ५, ७२.

ग्राम-वासिन्- -सिने लां २१६: ६.

ग्राम-सुकर-संगम- -मात् इ १४:

१४.

ग्राम-स्वामि-प्रसाद- -देन शि ७,

११३.

ग्रामा(म-अ)न्त- -न्ते नाप ४, १६;

५, ३४.

ग्रामा(म-अ)न्तर- -रम् शि ७, ८.

ग्रावन्<sup>९</sup>- -वाणम् वृ ६, ४, २.

ग्राह- , ग्राहक- , \*ग्राह्या- , ग्राहयित्वा,

ग्राह्य- ✓\*गृह् , ग्रह् द.

ग्रीवा<sup>१०</sup>- -वा प्रा ४, १.

ग्रैवेय<sup>११</sup>-

ग्रैवेया(य-अ)ङ्गद-हार-कुण्ड-

ल-ध(र>)रा- -राम् व ४२७:

१३.

ग्रीवा-व्यादेश- -श: निरु १, १२.

ग्रीष्म<sup>१२</sup>- -ष्म: छां २, ५, १; १६, १;

मैत्रि ६, ३३; ७, २; सार २६६:

२०; -ष्मम् २प्र ३२: १३; मुद्र

२; -ष्मे शि ६, २१६.

ग्रीष्म-काल- -ले रा ४२५: १२.

ग्रीष्म(ष्म-ऋ)र्तु- -र्तु: सार २६९: ४.

ग्रीष्मर्तु-सेवित-रूप- -पाम्याम्

सार २४८: १.

ग्रीष्म-लीला- -लाम् सार २६९: १२

a) तैआ १०, ३७, १। b) 'कलेवरम्' इति अख्या। c) 'गृह्यते' इति अख्या। d) तु. सस्थ. टि. आत्म-विवृद्धि-। e) व्यु. वैपश् यद्। f) एकतरत्र 'ग्रामः' अन्यतरत्र च 'नगरम्' इति अख्या। g) ग्रामैक<sup>१०</sup> इति अख्या। h) ग्रामैक<sup>१०</sup> इत्येकपद्यात्मकः सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या. संटि.)। i) ग्रामैक<sup>१०</sup> इत्येकपद्यात्मकः सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. सस्थ. टि. एक-रात्रवासिन्-> -खिनः)।

ग्रीष्मा(ष्म-आ)दि- -दिषु सार  
२५३:२३; -दौ सार २७१:  
१९.  
ग्रीचेय- ग्रीवा- द्र.  
ग्लां लां २१५:१२.  
ग्लाव<sup>१०</sup> -व: छां १,१२,१; ३.  
ग्लौं लां २१५:१२.  
ग्लुं लां २१५:१२.  
✓ग्लै, > ग्ला, ग्लायति नाप ३,३८;  
महा २,४३; ४,३२; ६,४९.  
ग्लानि- -नि: ते ४,२७; गौ ४,७;  
-निम् अञ ५,७; महा ४,१८.  
ग्लौं दत्ता १, ३; नापू ५, १०; व  
४२७:२३; रार २,३०.

## घ

घं\* आथ ३९५:२०; व ४३६:५;  
हंषो ४.  
घंकार- -०र अञ ५.  
✓घट(बधा.), घटते<sup>१</sup> १योत ६६.  
घटिष्यति<sup>१</sup> ते ५,२२.  
१घट<sup>१०</sup> -ट: योत२०; वरा ५,७१.  
घटा(ट-आख्य)>ख्या<sup>११</sup> -ख्या  
वरा ५, ७४.  
घटा(ट-अ)वस्था<sup>१२</sup> -स्था  
१योत ६५; ६६<sup>१</sup>; ८०.  
२घट<sup>१३</sup> -ट: अबि १३; १आ ५;  
त्रिता ५,१३; ब्रवि १३; योशि  
४,१४; -टम् अञ ३,६; यो ३,  
१६; योशि ६,७८; -टस्य सांसू  
५,५९; -टा: १योत १३३; अञ  
३,६; -टानाम् स्व ६०:२; -टे

अबि १३; १आ २२; त्रिता ५,  
१३; वृजा ३,६; ब्रवि १३; यो  
३,१६; योशि ४,१९; ६,७७.  
घट-घट-मध्य- -ध्ये अद्वै १६;  
१८.  
घट-त्व- -त्वेन योशि ४,२३.  
घट-धर्म- -मै: कुं २४.  
घट-नामन्- -आ योशि ४,१७.  
घट-नाश- -शे आबो १८.  
घट-पटा(ट-आ)दि- -दय:  
१संन्या २,२२.  
घटपटादि-पदा(द-अ)र्थ-  
-र्थ: नि २८<sup>१४</sup>.  
घटपटादि-वत् अध्या १८.  
घट-आन्ति- -न्ति: योशि ४,  
१३.  
घट-मठा(ठ-आ)काश-दर्शन-  
-नेन अञ १,१६.  
घट-मध्य- -ध्ये १योत १४२;  
२योत २,४; योशि ६,७७.  
घटमध्य-गत- -त:यो३,१५.  
घट-योग- -गेन अध्या ५२.  
घट-वत् अबि १४; त्रिता ५,१४;  
ब्रवि १४; वरा २,२४.  
घट-श्रोत्र<sup>१५</sup>-  
घटश्रोत्र-सहस्राक्षजित्-  
-जिज्ञयाम् रापू ४,२८.  
घट-संवृत- -तम् अबि १३;  
त्रिता ५,१३; ब्रवि १३<sup>१६</sup>.  
घट-स्थ-दीप-  
घटस्थदीप-वत् यो ३,३२.  
घटा(ट-आ)काश- -श: अञ ५,  
७७; जाद १०, ३; गौ ३, ७;

-शम् अध्या ७; पै ४,१४; -शो  
गौ ३,५; -शै: गौ ३,३.  
घटाकाश-मठाकाश- -शौ  
रुह ४३; वरा २,५०.  
घटाकाश-महाकाश-  
घटाकाशमहाकाश-वत्  
नाप ६,१.  
घटाकाशा(श-आ)दि- -दय:  
गौ ३,४.  
घटा(ट-आ)दि- -दिभि: सांसू १,  
१५०; -दिषु गौ ३,४.  
घटादि-वत् गौ ३, ३; सांसू  
१,५०; १२९; ५,७१<sup>१७</sup>.  
घटा(ट-अ)वभासक- -क: आबो  
१८.  
घटो(ट-ऊधस्)>न>क्षी- -क्षी:  
सार २७७: १७.  
घटो(ट-उ)पम- -म: ब्रवि १३<sup>१</sup>.  
घटन- -नम् ध्या ९१.  
घटना- -ना त्रिता १,१२.  
घटना-प्रकार- -र: अञ १.  
घटित-  
घटित-कोमल-मुक्ता(क्ता-आ)-  
वलीक- -कौ सार २६५: ९.  
१घ(टि)>टी<sup>१८</sup> -टीम् शि६, १३१.  
घटी-संस्थ- -स्थम् शि६, १६४.  
२घ(टि)>टी<sup>१९</sup>-  
घटि-(क)>का- -का: त्रिवा  
२,१३६; १३९<sup>१०</sup>; १योत ८७;  
९०; ९४; ९७; -काम् शां १,७,  
४९<sup>११</sup>.  
घटिका-पारा(र-अ)यण-  
-णम् पारा ११.

a) =बीजमन्त्रविशेष-। b) व्यु.। c) अप्रतिहतगत्यात्मके चेष्टार्थे (तु. पाधा. भ्वा.) अकर्मकं वृत्तं द्र. (तु. पा  
५,२,३५)। d) पाधा. पर. उसं. (पा १,३,१२)। e) =अप्रतिहतगति-। भाप. सत् =योगावस्थाविशेष- इति कृत्वा  
तात्पर्यतः नाप. द्र.। f) 'हठावस्था' इति निसा.। g) नाप. =कुम्भ-। धारणे धा. वृत्तिरधिकरणे च कृत्। h) '०र्थम्  
इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोष: (तु. अख्या.)। i) =कुम्भकर्ण-। j) '०संभृ' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोष: (तु.  
आन.)। k) 'घटवत्' इत्यपि पासे.। l) 'नमोपस:' इति आन.। m) नाप. =कुम्भी- यद्वा घट- इत्यस्य गौरादित्वम्  
उसं. [पा ४,१,४१ (तु. वाच., MW.)]। n) नाप. =कालपरिचापुकपदार्थ-। o) 'का' इति सुपा. यनि. सु-शोष:।  
'नादिका:' इति निसा., 'नादिका' इति अख्या.। p) तु. सस्थ. टि. एक,का->काम्।

घटिका-विंशति- -तिः  
त्रिंश २, २४१.  
घटिका-षष्टि- -ष्टिम्  
१योत १०४.  
घटिका(का-अ)ष्टयाम-  
दिवस-रात्रि-भेद- -देन सी  
१४१<sup>b</sup>.  
घटी-यन्त्र-  
घटीयन्त्र-वत् पै १, ३३; २,  
३४.  
१घ(ण्ट)ण्टा<sup>a</sup>-  
व(ण्टक)ण्टिका<sup>1</sup>- -काम् शां  
१, ७, ३०.  
घण्टिका-लिङ्ग- -ङ्गम् सौ ३,  
११<sup>d</sup>.  
घण्टिका-स्थान- -नम् योरा १३.  
२घ(ण्ट)ण्टा<sup>a</sup>-  
घण्टा-काहल-ज- -जः नाद ३४.  
घण्टा-चामर-भूषित- -तम् शि ६,  
१३७; -तैः शि ६, १५२.  
घण्टा(ण्टा-आ)दि- -दीनाम् योचू  
११५.  
घण्टा-नाद- -दः हं १६.  
घण्टा-रव- -वम् सु २९५: २.  
३घन<sup>f</sup>- -नः निरु १, १०; मैत्रि ७, १;  
-नम् त्रिंश २, ८; नाद ३७; -ने  
नाद ३७.  
घन-चित्-प्रकाश- -शः वरा ३, ३.  
घन-तर-  
घनतर-भव-कारण- -णम् वरा  
३, ११.  
घन-ता- -ताम् महा ५, १४७;  
१७९

घन-प्रज्ञ- -ज्ञः गौ १, १.  
घन-वासन- -नम् अञ्ज १, ३१.  
घन-विकल्प- -ल्पम् महा ५, १२६.  
घन-संमोह-  
घनसंमोह-मय- -ये महा ५, ६४.  
घन-स्तनी- -नी कालि ४०१: ७.  
घन-स्पन्द-क्रम- -मात् महा ५,  
१४७.  
घना(न-अ)हंकार-  
घनाहंकार-ता- -ताम् महा ५,  
१२८.  
घनाहंकार-शालि(न)नी-  
-नी सु २, २, ६२.  
२घन<sup>g</sup>-  
घन-विद्युद्-उपम-रूप-नवी-  
(न)ना- -नया सार २६०:  
१७.  
३घ(न)ना<sup>h</sup>- -ना कालि ४०१:  
१०; रया १२.  
\*घर्घ- ३आ(र)रा- टि. द.  
✓घस्<sup>i</sup>>जिघत्स्, अक्षन् वा २१.  
जिघत्सन् छाग २५: १५.  
जग्ध<sup>j</sup>- -जग्धम् वृ ६, १, १४.  
जग्ध-तृ(ण)णा- -णाः क १,  
१, ३; -णाम् वृजा ३, १.  
✓घृट्<sup>k</sup>(\*प्रगतौ<sup>l</sup>)  
घोटक<sup>m</sup>- -कानाम् गरु २३.  
✓घृष्  
घोष<sup>n</sup>- -षः वृ ५, ९, १; मै २, ८;  
मैत्रि २, ६; योशि ३, ४; गौ १,  
१९; -षम् वृ ५, ९, १; मै २, ८;  
मैत्रि २, ६; व ४६०: २०५<sup>m</sup>;  
-षाः छां ३, १९, ३<sup>3</sup>: ४

घोष-वत्- -वन्तः छां २, २२, ५.  
घोषि(न)णी- -णी नाद १९.  
✓घूर्ण, घूर्ण-वृणं लां २१५: १८.  
✓घृ(वधा.)  
घर्म<sup>p</sup>- -र्मम् व ४५५: २१५<sup>o</sup>.  
घृत<sup>q</sup>- -तम् वृ १, ५, २; ६, ४, २५;  
अवि २०१<sup>r</sup>; ध्या ५; पै ४, १०;  
ब्रवि २०: मना २, १२, २१९;  
३१३; मैत्रि २, ७५; १योत १३६;  
१संन्या २, ७५; -तस्य वृ ६, ३,  
१; मना २, १२, २१९; २, ४०५<sup>s</sup>;  
मैत्रि ७, ११; -तात् श्वे ४, १६;  
गु ५९; -ते वृ ६, ३, १३; पै ४,  
१०; मना २, १२, २१९; -तेन  
मना २, १२, २१९.  
घृत-कौशिक<sup>t</sup>- -कः, -कात् वृ  
२, ६, ३; ४, ६, ३.  
घृत-तैल-नदी-युक्त- -क्तम्  
शि ६, ६८.  
घृत-धेनु- -नुम् शि ६, ७१.  
घृत-पक- -कानि सार २२३: ७.  
घृत-मय- -यम् गोड ३.  
घृत-रस- -साः सार २७५: ४.  
घृत-सुपा(प-आ)दि-संयुक्त-  
-क्तम् १संन्या २, ७६.  
घृता(त-अन्व)ची- -ची सर  
२, २१९.  
घृता(त-आ)त्मक- -क्तम् यो ३,  
६; योशि ६, ७३.  
घृता(त-आ)दि- -दीन् १संन्या  
२, ७६.  
घृता(त-अ)भाव- -वे शि ४,  
५८.

a) द्रस. गर्भितः षस. । b) °सवाररा° इति अज्या. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. संदि.) । c) व्युः = कण्ठ- ।  
d) घण्टका° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । e) व्युः = वादित्रविशेष- । f) व्युः विप. ।  
= दृढ- , अविरल- प्रश्न. । g) व्युः नाप. । = मेघ- । h) व्युः = देवीविशेष- । i) तु. पा २, ४, ३७ । j) तु. पा २,  
४, ३६; वैतु. MW. < ✓जक्ष् इति । k) पाधा. उसं. । l) = शब्द- वा ऊष्माक्षर- वा । m) ऋ १०, ८४, ४ ।  
n) धा. दीप्तौ वृत्तिः द्र. । o) तैआ ३, ११, १ । p) धा. अर्थः । q) 'घटम्' इति सुपा. (तु. शंदी.) यनि.  
सु-शोधः (तु. अज्या.) । r) ऋ २, ३, ११ । s) ऋ ४, ५८, ४ । t) 'घृतम्' इति सात. । u) तैसं ४, २, ९, ६ ।  
v) = ऋषिविशेष- । w) ऋ ५, ४३, ११ ।



√घृण् (दीप्तौ)

१घृणा<sup>१</sup> - -णाम् नाप ६, १६.

२घृणा -

घृणिन् - -णिनम् अक्षि १<sup>०</sup>; चा १५.

घृणि<sup>१</sup> - -णि: त्रिवि ७, ४४; नाउ २, १०; वृषू ४, ८; मना २, ३७९<sup>०</sup>; व ४६१: २१९<sup>०</sup>; ४६४: २३; सू २४; सूता ३, १.

घृत - √घृ द्र.

√घृष् > घर्षि, घर्षयेत् का ५.

घे<sup>१</sup> व ४२८: ७; वे-वे लां २१४: १९.

घोटक - √घुट् द्र.

१घोर<sup>१</sup> - -रम् योचू ६८; व४५९: ७; वउ ५, ४७; श ४, ९; गी ११, ४९; १७, ५; -रा वृजा २, १; -रा: व४४३: २१९<sup>०</sup>; सांका ३८; -रात् शि १, ३; -रात् नाप ५, २; पहं ३; रे ३१९: १२; भव १, ५४; गी ३, १; -रेण त्रिता १, ४; व ४६४: १४९<sup>०</sup>; -रेभ्य: मना २, १९९<sup>०</sup>; व ४६२: २२९<sup>०</sup>; -रै: शि ७, ९९; सिशि ३८१: ५.

घोर-घोरा(र-आ)न(न>)ना - -०ने व ४३१: ११.

घोर-दु:ख - -खात् सिशि ३८१: ४.

घोरा(र-आ)दि-यातना - -नाम् भ २, ३०.

२घोर<sup>२</sup> - -र: सिशि ३८२: १२.

३घोर<sup>३</sup> -

घोर-संन्यास -

घोरसंन्यासिक - -का: <sup>१०</sup> आश्र

२<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>.

४घोर<sup>४</sup> - -र: छां ३, १७, ६.

घोरा(र-आ)ङ्गिरस् - -रसे अध्या ७०;

सुबा ७; -रा: सुबा ७.

घोष - , घोषिणी - √घुष् द्र.

घत् - √हन् द्र.

घ्यं<sup>१</sup> व ४२७: २२.

घणासा<sup>१</sup> - -सानाम् गरु २४.

घां<sup>१</sup> लां २१६: ७.

√घ्रा, > जिघ्र, जिघ्रति प्र ४, २; छां १, २, २; वृ १, ३, ३<sup>१</sup>; २, ४, १४; ३, २, २; ४, ३, २४<sup>१</sup>; ४, २, ५, १५; गु ३३; मै ५, ७; मैत्रि ६, ७; शु ३, १; जिघ्राणि छां ८, १२, ४; अजिघ्रत् वृजा ६, १; जिघ्रेत् वृ २, ४, १४; ४, ३, २४; ३१; ५, १५.

घ्राण<sup>१</sup> - -णम् प्र ४, ८; छां ८, १२, ४; कौ ३, ५९<sup>०</sup>; ते ६, ६; पित्र ३, ८; भव २, १६; व ४३६: ११; शारी १; ७; सुबा ६; गी १५, ९; -णस्य जा २; जाद ४, ४८; त्रिब्रा २, १३२; नाप ६, १; राउ ३, १; -णात् त्रिब्रा २, १४१; -णे गर्भ १; योशि ५, २४; -णेन कौ १, ७<sup>०</sup>; यो १, ३२.

घ्राण-तर्पण - -णात् तुल ७०: ८.

घ्राण-द्वार - -द्वारा त्रिब्रा १, ९.

घ्राण-पीडन - -नम् ते १, ३३.

घ्राण-रन्ध्र - -न्ध्राभ्याम् यो १, ३०; -न्ध्रे यो ३, ८; योशि ६, १७; -न्ध्रेण योशि १, ९५.

घ्रात - -तम् जाद १, ९.

घ्रातव्य - -व्यम् प्र ४, ८; सुबा ५; ६; ९<sup>१</sup>; -व्ये सुबा ५.

घ्राति - -ते: वृ ४, ३, २४.

घ्रातृ - -ता प्र ४, ९; १आ १; २आ २; मै ५, ७; मैत्रि ६, ७; ११; -तारम् कौ ३, ८; -तु: वृ ४, ३, २४.

घ्रात्वा नाप ३, ३८.

जिघ्रत् - -घ्रन् वृ ४, ३, २४; अक्ष ४, ६३; गी ५, ८.

घ्रीं<sup>१</sup> लां २१६: १७.

घ्रीं<sup>१</sup> व ४२८: २.

घ्रीं<sup>१</sup> लां २१६: ७.

ङ

ङं<sup>१</sup> आथ ३९५: २०; व ४३६: ५; हंषो ४.

ङं-कार - -०र अक्ष ५.

ङे<sup>१</sup>

ङे(ङे-अ)न्त - -न्त: रार २, २५;

-न्तम् रार २, ४०; ४८; ६२;

९१; ९२; -न्ता: सूता ५, ५१<sup>०</sup>;

६, ३; -१न्तै: सूता ४, ७; ८; ११.

ङे-युत् - -तौ रार २, ५४.

च

१च<sup>१</sup>

चं<sup>१</sup> आथ ३९५: २१; व ४३६: ४; हंषो ६.

चं-कार - -०र अक्ष ५.

२च<sup>२</sup> ई १; के शां<sup>१</sup>; क १, १, ८<sup>१</sup>; प्र १,

१<sup>०</sup>; सुं १, १, ४<sup>१</sup>; मां १; तै १, ४, २<sup>१</sup>;

ऐ ३, १<sup>१</sup>; छां शां<sup>१</sup>; वृ १, १, १<sup>१</sup>.

a) भिदादौ उसं. (पा ३, ३, १०४)। b) =मोह- वा कृपा- वा। c) वैतु. उन्न. 'दयावन्तम्' इति भाषुकः। d) वैतु. अभा. धा. सेचने वृत्तिरिति। e) तैत्र्या १०, १५, १। f) =बीजमन्त्रविशेष-। g) विप.। =भीम-। व्यु. वैपश् यद्र.। h) तैत्र्या ४, २२, १। i) तैत्र्या ४, ३८, १। j) मैसं २, ९, १०। k) व्यु. ? =रुद्र-। l) अर्थः व्यु. चङ् [तु. अज्या. संदि. (पृ ४२०) यदनु =चक-?]। m) °न्यासकाः, °न्यासिनः इति संदि.। n) व्यु. ? =ऋषिविशेष-। o) व्यु. ? =सर्पवर्गीय-हिंस्रविशेष-। p) 'घ्राणः' इति घ्राण., 'घ्राणः' इति शांआ. ५, ५। q) 'घ्राणेन' इति घ्राण.। r) 'आघ्राता' इति सात.। s) पाप्र. =च१ सौपः प्र.। t) डि° इति मुपा. यनि. सु-शोषः। u) =वर्णविशेष-। v) अव्य.। व्यु. वैपश् यद्र.।

चक्रवस्- ✓कृ(करणे) द्र.

१चक्र<sup>१</sup>- -कः त्रिवि ७, ३९; -कम् कृ

१९; २१; गोड ५६; त्रिता २,

४०; ४३; ४५<sup>२</sup>-४७<sup>२</sup>; ४८; ५१;

५३; ५५; ५७; ५९; ६१; ६३;

६५; ६७; ३, १७; २०; २१;

त्रिवा २, ६०; व्याध ३; ४८; ४९;

५४; नाप ६, ११<sup>b</sup>; नृपू ५, १-६;

नृष ८५: १५; मै २, ९; ३, ३;

मैत्रि २, ६; ३, ३; य ८; यो

१, ६९; ३, १३; योचू ६; १३;

योरा ७; १०; योशि १, १७२<sup>२</sup>;

१७४; १७५; ५, ८-११; ६, ७५;

व ४६६: २१; वरा ५, १५; श

१०; शां १, ४; सु २९३: ९;

२९४: १; ३; गी ३, १६; -कस्य

वरा ५, २७; -का छाग २५: २०;

-काणि काम १७; त्रि २; नृष

८४: २; ५; ८५: ८; यो ३, ९; १२;

योशि ६, ३३; ७४; -क्राम्याम् छां

४, १६, ५; -क्राय वपू १, ३; -के

त्रि २<sup>१</sup>; -केण छां ४, १६, ३;

गोड २०; -केषु योरा ५.

चक्र-कोण-चतुष्टय-महा-वज्र-

विमूषित- -तम् त्रिवि ७, ४८<sup>d</sup>.

चक्र-तीर्था(र्थ-अ)न्तः-स्थित-

-तम् वा ५; गोच ६६: २.

चक्र-तुण्ड<sup>१</sup>- -ण्डाय मना १, ५९<sup>०</sup>.

चक्र-धर- -राय वपू १, ३.

चक्र-नायक- -कम् त्रिता २, ६४.

चक्र-पारा(र-अ)यण-

चक्रपारायणिन्- -णी पारा  
१४.

चक्र-भ्रमण-

चक्रभ्रमण-वत् सांस् ३, ८२.

चक्र-भ्रमि-

चक्रभ्रमि-वत् सांका ६७.

चक्र-मध्य-गत- -तम् त्रिवि ५, १२

चक्र-राज- -राट् ता २, २.

चक्र-वत् सी १४.

चक्र-वरा(र-अ)भय- -यानि व

४२७: १२.

चक्र-वर्तिन्- -तिनः मै १, ५; मैत्रि १, ४

चक्र-समायुक्त- -कम् गोच ६६: २;

वा ५.

चक्र-हस्त, स्ता- -स्तम् गी ११, ४६;

-स्ता शां १, ६.

चक्रा(क-आ)कार- -रम् गोच ६९: ८

चक्रा(क-अ)ङ्कित, ता- -०त गोच

६६: ५; वा ७; -०ते ऊ ६३: १४.

चक्रा(क-आ)दि- -दि वरा ५, १५<sup>f</sup>.

चक्रा(क-अ)न्तर(&gt;) त्रिवि ७, ४५.

चक्रा(क-अ)र- -राणि त्रिता २,

६७<sup>१६</sup>.

चक्रा(क-आ)सन- -नम् वरा ५, १७.

चक्रासन-ग(त&gt;)ता- -ताम्

त्रिता २, २१.

चक्रिन्- -क्रिणम् गी ११, १७;

-क्रिणा मै ३, ३; -क्री नाप ३, १;

३; १संन्या २, ३.

चक्रिणी- -णी व ४२६: ६.

२चक्र<sup>१b</sup>-चाक्रायण<sup>१</sup>- -णः छां १, १०, १;११, १; वृ ३, ४, १; २<sup>१</sup>.

✓चक्षु(बधा.), चक्षव वा २३.

चक्षिरे सु १, १, १५.

चक्षस्<sup>१</sup>- -क्षसे मना १, १२९<sup>१</sup>.चक्षु<sup>१</sup>- -क्षोः सुवा १९<sup>m</sup>.चक्षु-पीडन- -ने क्षे २, १०; भव  
३, २३.चक्षुस्<sup>१</sup>- -क्षुः के शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; १, २; ३;

क २, २, ११; प्र २, २; ४; ४, ८;

तै १, ७, १; ३, १, १; ऐ १, ४; २,

४; छां शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; १, २, ४; ७, २<sup>१</sup>;

२, ७, २; ११, १; ३, १३, १; १८,

२; ५; ४, ३, ३; ८, ३; ५, १, ३; ९<sup>१</sup>;

१३; ७, १; १३, २; १८-१९, २;

८, १२, ४<sup>१</sup>; वृ १, १, १; ३, ४<sup>१</sup>;१४; ४, ७; १७; ५, २१<sup>१</sup>; ६, २, २,१, १७; ३, ४; ४, ११; ३, १, ४<sup>१</sup>;२, ५; १३; ७, १८<sup>१</sup>; ९, १२, १५;२०; ४, १, ४<sup>१</sup>; ४, १८; ५, १२; ५,१४, ४<sup>१</sup>; ६, १, ३; ९<sup>१</sup>; १४; २,१२; अव्य शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; आबो २६;आरु शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; ५९<sup>०</sup>; कुं शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>;कौ २, १<sup>१</sup>; २<sup>१</sup>; ३; ४; १३; १४;१५<sup>१</sup>; ३, २; ३<sup>१</sup>; ४-७; ४, १९;गरु ११९<sup>n</sup>; गा ११; गोपू २७९<sup>०</sup>;चा ४<sup>१</sup>; २१९<sup>०</sup>; जाद जावा शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>;ता ३, ९९<sup>०</sup>; ते ४, ९; त्रिता ४,१९९<sup>०</sup>; दत्ता १, ६; नाद २; नाप३, ६६; नृपू ५, २१९<sup>०</sup>; पाशु २,

९; १४; पित्र ३, ८; ६, ४; पै ४,

२३९<sup>०</sup>; वृजा ८, ६९<sup>०</sup>; ब्रवि ४४;९४; भव २, १६; मना २, १५९<sup>१</sup>;७२९<sup>०</sup>; ७३९<sup>०</sup>; ८०९<sup>१</sup>; महाशां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; सु २, २, ७७९<sup>०</sup>; मैशां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; ५, ६<sup>१</sup>; मैत्रि शां<sup>१</sup> ९<sup>n</sup>; ६,६<sup>१</sup>; ३१; राउ ५, २९९<sup>०</sup>; रुजा

a) व्यु. वैप१ यद्र. । इह रथाङ्गे च तदाकारत्वात् सुदर्शनचक्र- , चक्रासन- , तान्त्रिकचक्र- इत्यादिषु च तत्र तत्र श्रुतयः द्र. । b) 'वक्त्रम्' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः । c) 'क्राः' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. तान्त्रि.; वैतु. उत्र. चक्रा° इति) । d) 'ष्टयं महा°' इति च 'ष्टयमष्ट°' इति च अख्या. संटि. । e) तैआ १०, १, ५ । f) 'चक्राद्याः' इति अख्या. । g) चक्रा° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) । h) =ऋषिविशेष- । i) तु. पा ४, १, ११० । j) व्यक्तायां वाचि च दर्शने च तत्र तत्रोपलब्धेः । k) घा. दर्शने वृत्तिः द्र. । व्यु. विशेषः वैप१ यद्र. । l) ऋ १०, ९, १ । m) ऋ १०, ९०, १३ । n) पाण्ड ३, १५, २३ । o) ऋ १, २२, २० । p) मा १२, ४ । q) ऋ १०, ७३, ११ । r) 'क्षुःक्षो°' इति निसा. सुपा. [तु. सा. (तैआ १०, १४, १)] यनि. सु-शोधः (तु. तैआ. यण्. ) । s) शौ १९, ६०, १ । t) तैआ १०, ६४, १ ।

क्षां<sup>१५</sup>: १, २; योचू<sup>१६</sup>: वरा  
५, ७६<sup>१७</sup>; वा क्षां<sup>१८</sup>: शारी १;  
सं क्षां<sup>१९</sup>: १ संन्या क्षां<sup>२०</sup>: सार  
२६१: २२; सावि क्षां<sup>२१</sup>: सुबा  
५, ६<sup>२२</sup>; २<sup>२३</sup>: स२१<sup>२४</sup>: स्क्र१४<sup>२५</sup>;  
हं २०; सांस् ५, १०५; गी ५,  
२७; ११, ८; १५, ९: -क्षुभ्याम्  
१योत् ६९; -क्षुष: के १, २; ऐ  
१, ४; वृ ३, ७, १८; ४, १८;  
अशि ७, ७; ऊ६४: १३; च२१:  
१२; नाप ६, १; नृत् २, २; ३;  
ब्रवि ९४; महा ६, ८३; वज ३,  
४९; -क्षुषा के १, ६; क २, ३,  
९५<sup>२६</sup>; १२; सुं ३, १, ८; ऐ ३, ५<sup>२७</sup>;  
११; छां ५, १, ८; ८, १२, ५; वृ  
१, ४, १७; ३, १, ४; २, ५; ९, २०;  
४, १, ४; ६, १, ३; ८-१२; खे ४,  
२०५<sup>२८</sup>; अता १०; इ ११: १;  
१६: ११; कौ १, ७; २, १३; १४<sup>२९</sup>;  
३, २; ४; ६; गह २५; गु ३७;  
६३५<sup>३०</sup>; गोच ६७: २२; त्रिवि  
६, १४५<sup>३१</sup>; मना १, ३५<sup>३२</sup>; मै ५, ६;  
मैत्रि ६, ६; व ४६४: १४५<sup>३३</sup>;  
सार २६१: २३; -क्षुषि प्र २,  
१२; छां ५, १९, २; वृ १, ३, ४;  
३, ७, १८; ९, २०; दत्ता १, ५-७;  
मैत्रि ७, ११; शां १, ७, ५२; सुबा ५;  
-क्षुषी सुं २, १, ४; आच ८; गर्भ  
१; गार ४०८: ६; गु ११; जाद  
६, ३४; पित्र १, १३; २२ ३३:  
१; प्रा ४, १; मवा ३; यो २, ४६;  
व ४३६: १०; शारी ७; २शिसं  
११; -क्षुषे वृ ६, ३, २; -क्षुषो:  
काला १२; जाबा २०; -क्षुषि  
के १, ६; छां ५, १, १५; अशि ५,  
२१; वदु ३१७: १२.

चाक्षुष- -ष: छां ८, १२, ४;  
वृ २, ५, ५; ४, ४, १; मैत्रि ७,  
११<sup>३</sup>; -षम् प्र ३, ८; -षै: क २,  
२, ११.

चाक्षुषी- -षी कौ १, ३;  
चा २; -षीम् चा १.

चाक्षुषी-विद्या-  
-द्याया: चा २.

चक्षु: -प्रकाशा(श-अ)-संयोग-  
-ने योस् ३, २१<sup>४</sup>.

चक्षु: -प्रतिरोधक-दुष्-कृत-  
-तानि चा ७.

चक्षु: -प्राण-म(नस्)> नो-बुद्धि-  
पञ्चेन्द्रिय<sup>५</sup> -याणि अद्वै १६.

चक्षु: -श्रोत्र<sup>६</sup> -त्रम् के १, १;  
-त्रे प्र ३, ५.

चक्षु: -श्रोत्र-प्राण-रसन-स्वग्-  
-आख्य- -ख्यानि सांका २६.

चक्षु: -स्थान- -नम् पित्र ६, १०.

चक्षुर्-अपेत- -त: कौ ३, ३.

चक्षुर्-आदि- -दय: अन्न ३, ९;

-दि सु २, २, २२; -दीनाम् नाप

६, १; योचू १२०; -दीनि अन्न ३, ७

चक्षुरादि-करण- -णानि नाप  
४, ३८.

चक्षुरादि-बाह्य-प्रपञ्चो-  
(अ-उ) परत- -त: मं २, ४, ६.

चक्षुरादि-वत् ब्रस् २, ४,  
१०; सांस् ५, ६९.

चक्षुरादी(दि-इ)न्द्रिय- -दै:  
जाद १, ९.

चक्षुर्-आय(त)> ता<sup>१</sup> - ता  
मैत्रि ६, ६.

चक्षुर्-दिष्ट- -ष्ट: इ १०: २१.

चक्षुर्-द्वार- -द्वारा त्रिवा १, ९.

चक्षुर्-मध्य-नील-ज्योतिस्<sup>१</sup>-

-ति: मं १, २, ७.

चक्षुर्-मध्य-गत-नील-ज्यो-  
ति: -स्थल- -लम् अता ५.

चक्षुर्-मय- -य: वृ ४, ४, ५.

चक्षुर्-योग- -ग: भव ३, ७.

चक्षुर्-लिङ्ग-समायुत- -तम्  
शि ६, १०७.

चक्षुष्-टस्(>) वृ ४, ४, २<sup>६</sup>.

चक्षुष्-पति- -ति: तै १, ६, २.

चक्षुष्-मत्- -ष्मताम् सांस् १,  
१५६; -ष्मते मना २, ४६५<sup>१</sup>.

चक्षुष्मती-

चक्षुष्मती-विद्या- -द्याम्  
चा १२.

चाक्षुष्म(त)> ती-

चाक्षुष्मती-विद्या-

-द्याया अक्षि १<sup>२</sup>; -द्याम् अक्षि १.

चक्षुष्य- -ष्य: छां ३, १३, ७.

चक्षुस्-तेजो-दातृ- -त्रे चा ८.

चक्षू-रोग- -गा: चा २; -गान्  
चा ५.

चक्षूरोग-निवृत्ति- -त्तये  
चा ३.

चक्षूरोग-ह(र)> रा- -राम्  
चा १.

✓चङ्कम्, चङ्कमत्- ✓कम् द.

✓चञ्च्(भैक्षणे<sup>m</sup>)

चञ्चु-

चञ्चु-पक्ष- -क्षै: सार २६२:  
१७.

✓चञ्च्(गतौ), चञ्च- चञ्चल- टि. द.

चञ्चल- ✓चल् द.

✓चट्(भेदने), चट-चट वपं ३१२: ५.

✓चण्(भैक्षणे<sup>n</sup>)

चण<sup>o</sup>-

चण-मात्र- -त्रम् रुजा १, ७.

a) पाण्ड ३, १५, २३ । b) ऋ १, २२, २० । c) ऋ १०, १५८, ३ । d) तैश्वा १०, १, ३ । e) तैश्वा ४,  
३८, १ । f) °संप्र° इत्यपि पाठे । g) द्रस । h) समाहारे द्रस । i) °क्षुषाऽऽयत्ताः इति सात । j) °ध्वं नी० इति  
अख्या. संटि. । k) °क्षुषः इति आन. संटि., JC. । l) ऋ १०, १८, १ । m) पाधा. उरसं. । =यङ्लुगन्तः ✓च  
इति कृत्वा यथा गतौ तथा भक्ष्य इत्यभिसंधेः । n) पाधा. उरसं. । o) =धान्यविशेष- ।



## ✓चण्ड

चण्ड-

चण्डा<sup>१०</sup> - ण्डा व २०.चण्ड-दुर्गा<sup>१०</sup> - -०गें व  
४३७ : १.चण्डे(एडा-ई)श<sup>१०</sup> - -शम्  
शि २, १८.चण्डी<sup>१०</sup> -चण्डि-(क>)का<sup>१०</sup> --कायै व ४३६ : १; -०के व  
४३१ : १; १८; ४३५ : १५.

चण्ड-कपाल-

चण्डकपालि(न>)नी<sup>१०</sup> -  
-०नि व ४३७ : २.चण्ड-प्रताप-हनुमत्-मते लां  
२१३ : ६; २१४ : २१.चण्ड-मुण्डा(एड-अ)दि(न>)-  
नी<sup>१०</sup> - -०नि व ४६५ : २३.चण्डाल<sup>१०</sup> - -लः रु २; १७; -लाय  
छां ५, २४, ४.चण्डाल-लः वृ ४, ३, २२;  
ते ६, २५; वृ २<sup>३</sup>; रु ३; ५.

चण्डाल-तस्(&gt;) वृजा ५, १३.

चण्डाल-देह-हे वरा ३, १६.

चण्डाल-योनि-निम्छां ५, १०, ७<sup>०</sup>

चण्डाल-वत् अध्या ६.

चण्डाल-वाटिका-काम् नाप ७;  
१संन्या २, ७९१<sup>१</sup>.चण्डालि(न>)नी<sup>१०</sup> - -नीम् सुमु ३.✓चत्(परिभाषण<sup>१०</sup>)चातक<sup>१०</sup> - -कः महा २, १३.चतुर<sup>१०</sup> -चतस्र<sup>१०</sup> - -तस्रभिः मना २, ७९<sup>१</sup>;-तस्रः तै १, ५, २<sup>३</sup>; नाप ६, १; वृपू  
४, १५, १२; मवा २९<sup>१</sup>; मै ५,२<sup>३</sup>; मैत्रि ६, २<sup>३</sup>; राउ ४, ४०; सर  
२, ७९<sup>१</sup>; ह १५९<sup>१</sup>; गौ ४, ८४.चतुर-तुरः छां ४, ३, ६; कश्चु १,  
१; नाप ४, १५; पा ३, ९; सु २,  
२, ६५; शा २०; २शिमं २७;  
१संन्या १, १; २प्र ३६ : ३;  
-तुर्णाम् यो १, ४०; योशि १,  
१०२; शि ६, १-८; शु १, १५;  
-तुर्भिः अता ६; अना ३०; गोउ  
३९; त्रिवा २, ९५; नाप ६, १;  
७; श२५<sup>१</sup>; २संन्या १७ : ४; सी  
३७; सूता ४, ८<sup>१</sup>; -तुर्भिः-तुर्भिः  
अव्य ५; -तुर्भ्यः गु ७७; -तुर्भु  
कश्चु १, १; शां २, १; सर २, २.  
१चतुःपीठ<sup>१०</sup> -चतुःपीठ-समाकीर्ण- -णंम्  
योशि १, १६७.२चतुःपीठ<sup>१०</sup> - -ठम् मं २, १, २.

चतुः-प्रेगीवको(क-उ)पेत-

-तम् शि ४, ११; ६, १०७<sup>१</sup>.चतुः-श(त>)ता- -ताः छां ४,  
४, ५.

चतुः-शब्द- -ब्दः गोउ २९.

चतुः-शीर्षक-संयु(त&gt;)ता-

-तम् शि ३, ५.

चतुः-शृङ्ग- -ङ्गः मना २, १२,  
२९<sup>१</sup>.चतुः-श्रेणि- -णीनि सार २२३ :  
१५.

चतुः-षड्-अष्ट-दश-द्वादशा-

(श-अ)कुली- -लीभिः मं १,  
२, ८.चतुः-षष्टि- -षष्ट्या जाद ६, ५, ८;  
त्रिवा २, ९७; १योत ४१.चतुःषष्टि-मात्र- -त्रः नाप  
८, ११<sup>१</sup>.चतुःषष्टि-मात्रा- -त्राः तु  
१३; -त्राभिः शां १, ६.

चतुः-सप्तति- -स्या अ ३.

चतुः-सप्ता(स-आ)स्मन्- -स्मा-  
नम् वृउ ३, ९<sup>१</sup>.चतुः-समुद्र-पर्य(रि-अ)न्त-  
भू-दान-फल- -लम् नाउ ३,  
११.

चतुः-सर- -रम् सार २६४ : ४.

१चतुर-अक्षर<sup>१०</sup> - -राणि काम ५.२चतुर-अक्षर<sup>१०</sup> - -रः अ १; रार  
२, ९; -रम् छां २, १०, २; ३.१चतुर-अङ्गुल<sup>१०</sup> - -लम् जाद  
४, ४; त्रिवा २, ५८<sup>१</sup>; वरा ५,  
२१<sup>१</sup>; शां १, ४; शि ४, १५.चतुरङ्गुल-विस्तृत- -तम्  
योशि १, ८१.२चतुर-अङ्गुल<sup>१०</sup> - -लम् यो १,  
११; सौ ३, १.

चतुरङ्गुल-वेष्टन- -नम् पत्र २

चतुर-अण्डक-संयुत- -तम्  
शि ४, १२.चतुर-अर<sup>१०</sup> - -रम् वृष ८४ : ३<sup>१</sup>.चतुर-अवस्था<sup>१०</sup> - -स्था(स्थाः<sup>१</sup>)  
पत्र २.

चतुर-अदीप्ति-

चतुरशीति-धा मैत्रि ३, ३.

चतुरशीति-लक्ष-योनि-

परिणत- -तम् मै ३, ३.

१चतुर-अश्र<sup>१०</sup> -चतुरश्र-देवता- -ताः नापू  
६, १५.

a) =देवीविशेष-। b) अर्थः? =चण्डा ईशाऽस्य इति बस. इति कृत्वा ष. अर्थे उप. भूयते ?। c) तु. पा ७, ४, १३। d) विप. विशेषि. च। व्यु. वैपश् यद्र.। e) चा<sup>१०</sup> इति निसा.। f) °कात् इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। g) =याचन-पर्यवसाने। h) व्यु. वैपश् यद्र.। i) तु. पा ७, २, १९। j) तैआ १०, ५, १। k) तैआ ३, १२, ७। l) अष्ट ८, १००, १०। m) द्विस.। n) बस.। o) °प्रग्नी<sup>१०</sup> इति मुपा. यनि. सु-शोधः। p) अष्ट ४, ५८, २। q) °त्रा इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। r) वा.क्रिवि.द्र.। s) द्वि३ विभज्य इति क्रिप. संबन्ध इति कृत्वा यनि. शोधः द्र. [वैतु. अख्या. संटि. (पृ ४७४) समाहारे स. सत्यपि न. अभावश्छान्दस इति]।

२चतुर-अश्रु- -श्रु १योत  
८५<sup>b</sup>; शि२, ४; ६, १४५; ७, ६४;  
सुसु ७; -आन् सुसु १०.

चतुरश्र-वेदिका-श्री-  
-मत् शि ४, ८१<sup>o</sup>.

चतुर-अक्ष, स्त्रा- -स्त्रम् त्रिवा २,  
५६; ध्या ४७; योशि १, १७६<sup>d</sup>;  
शां १, ४; सौ १, ३; -स्त्रा त्रिवा  
२, १३५.

चतुरस्त्र-धरणी- -णी योशि  
५, १३<sup>o</sup>.

चतुरस्त्रा(सि-अ)ष्टदल-त्रिकोण-  
रूप- -पम् तारा ८३: २४.

चतुर-आकृति- -ति: प्रा २, १.

चतुर-आत्मन्- -त्मा वृ १,  
६-८; ११; २, ५-८; ३, २-५; ८;  
नाप ८, ८; १०; १३; १६; -स्मानम्  
वृ ३, १; ९<sup>o</sup>.

चतुर-आनन- -न १योत  
२९; ३०.

चतुर-आन्नाय-दीपक- -कम्  
योशि १, १६७; ५, ३.

चतुर-आन्ना- -शासु सूता ६, ४.

चतुर-औदुम्बर- -र: वृ ६, ३,  
१३<sup>b</sup>.

१चतुर-गुण- -णै: म २, २५.

चतुर्गुणी/कृ

चतुर्गुणी-कृत्य पत्र २.

२चतुर-गुण- -णाय पा २, ४.

चतुर-जाल- -लम् म २, २५;

२९; मैत्रि ३, ३; ६, २८; ३८.

चतुर्थ- -र्थ: मां १२; छां ३, १८,

३-६; ७, १, ४; अ१; गार ४०६:

५; ९; तु ८; नाप ८, १६; नापू

१, ५; ५, ६; वृ ३, ५; वृ २,

२; पा ३, ९; भव २, ६३; महा

४, २; ६, ८; वपू १, ७<sup>o</sup>; हं १६;

योस् २, ५१; -र्थम् मां ७; छां ३,

९, १; ७, १, २; २, १; ७, १; वृ ५,

१४, ३; ऊ ६४: ७; गा ८; गार

४०७: ५; ११; दत्ता १, ३; ५;

६; नाप ६, १; ८, २०; नापू ६, ३;

वृ १, १२; वपू १, ३; ८; २, ४;

६; ४, ७; वृष ८४: ३; ७; ८५: ७;

वृजा ३, ३४; भ१, १; यो १, ५९;

योरा १०; राउ ३, १; वउ १,

१५; वपू २, १; २; विद्या १;

१संन्या २, ५९; सार २२५: १८;

-र्थस्य वृपू १, ९; ११; वृष ८४:

१६; २०; ८५: ३; -थात् अव्यय;

गोपू ३०; -र्थे अक्ष ५; गर्भ ३;

त्रिता १, ६२; वृजा ३, २३; म

४९: १; राधा २, ४; सार २४०:

२; सूता ५, ७; हं १८; -र्थेन वृपू

२, ४; पिं १०; मुद्र २; वपू २, २.

चतुर्थी- -र्थी अ १<sup>o</sup>; ३;

वृपू २, २; वृउ ३, १; ५; नाद

९; महा ५, २५; रार ३, १;

५, १४; रापू ४, १; अक्ष ५,

८२; ८७; अक्षि ३२; नाप ८,

१; वरा ४, १; २; सौ १, ३; २प्र

३५: १५९<sup>d</sup>; सार २७१: १८;

गार ४०६: ७; गु३; गुषो ४२०:

११; -र्थीम् तै १, ५, १; छां ५,

२२, १; गोउ २६; अक्षि ३०;

३१; -र्थीषु वपू २, ५; -र्थ्या  
रार २, ९०; -र्थ्याम् ग १८; रा  
४२४: १३; वउ ६, ४३; -र्थ्यो:  
वउ ६, १०.

चतुर्थि-(क>)का-  
-का यो १, २१; नाद १३.

चतुर्थी-कला-रूप-  
-प: गुषो ४२०: १०.

चतुर्थी-रूप- -प: षो  
१४.

चतुर्थ्य(र्थी-अ)न्त,  
न्ता- -न्त: रार २, २६<sup>1</sup>; १०५<sup>1m</sup>;  
-न्तम् रा २, ९६; द २; दत्ता १,  
६<sup>2</sup>; -न्ता रार २, ९४<sup>2</sup>; -न्ता:  
त्रिवि ७, ४१; ४२; ४७; ४८<sup>2</sup>;  
रार ३, १; सौ १, ३; -न्तै: वृजा  
३, १५; सौ १, १; ३; -न्तौ रार  
२, ९२.

चातुर्थिक- -कम् व  
४३३: १७; ४५९: १५.

चतुर्थ-क- -क: अक्ष १, १५;  
-के सृ १६; सूता २, १७<sup>2</sup>.

चतुर्थ-काल- -लम् नाप २.  
चतुर्थ-कूटा(ट-अ)क्षर- -र:

विद्या १.

चतुर्थ-खण्डा(ण्ड-आत्मक>)-  
लिमका- -काम् विद्या ४.

चतुर्थ-त्व- -त्वम् हंषो ११.

चतुर्थ-पद- -दात् गोपू २९<sup>p</sup>.

चतुर्थ-पाद- -देन वृउ ३, १.

चतुर्थ-मात्र- -त्र: अ १<sup>1</sup>.

चतुर्थ-याम- -मे रा ४२५:  
१०.

- a) वस. । b) °श्रु इति निसा. । c) °का श्री° इति मुपा. यनि. सु-शोध: । d) °श्रु इति अज्या. ।  
e) °श्रा ध° इति अज्या. । f) सकृत् 'ओंकारं तुरीयम्' इति निसा. पाभे. । g) मध्यमपदलोप: द्विस. । h) गपू. (पृ १८२)  
उदुम्बर->औदुम्बर-> -र: इत्यत्र सस्थ. सकृत् प्रनि. अनु शोध: द्र. । i) द्विस. (तु. पावा ५, २, ३७) ।  
j) तु. पा ५, २, ५१ । k) °र्थीम् इति गोत्रा १, १, २७ । l) °न्तम् इति अज्या. । m) °न्तम् इति मुपा. यनि.  
सु-शोध: (तु. अज्या.) । n) °न्ताम् इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.) । o) 'तुरीयक:' इति मुपा. यनि.  
सु-शोध: । p) 'चतुर्थीत्' इति आन. । q) पा. ? यनि. निसा. च 'चतुश्चतुर्धा मात्रा' इति अज्या. च मुपा. =चतुर्धा-  
मात्र- (वस.) इत्येवं सु-शोधौ द्र. ।

चतुर्थयामा(म-अ)न्त-  
-न्ते नाप ४, ३८.  
चतुर्थ-वक्त्र- -क्त्रेण वृजा  
४, ३.  
चतुर्थ-श्रेणि- -श्रेणाम् सार  
२७०: ८.  
चतुर्थार्थ(अ-अं)श- -शम्  
१योत ६७.  
चतुर्थश-विवर्जित- -तः  
योचू ४३<sup>a</sup>; यो १, ३<sup>b</sup>.  
चतुर्थाशा(श-अ)वशे-  
षक- -कम् जाद १, १९.  
चतुर्थाशावशेषक-सु-  
स्निग्ध-मधुरा(र-आ)हार- -रः  
शां १, १.  
चतुर्थार्थ(अ-अ)क्षर- -रः राउ  
१, २.  
चतुर्थार्थ(अ-अ)न्त्य- -न्त्यम्  
नृपू १, १५.  
चतुर्थार्थ(अ-अ)न्ता(न्त-अ)-  
ध- -धस्य नृपू १, १३.  
चतुर्थार्थ(अ-अ)वरण- -णम्  
सार २८३: १४.  
चतुर्थार्थ(अ-अ)श्रम- -मः लिं  
३१०: ५.  
चतुर-दल- -लम् ध्या ४४; योचू  
४; ७; स ३७८: ६.  
चतुर-दशन्- -श वृजा ३,  
१०; भा १४; जाद ४, ६; ८; शां  
१, ४<sup>c</sup>; महा १, १; तु १०; गोच  
६९: १२; नापू ५, ३७; शि ६,  
५५; गु २९; पित्र १, ९; वउष्ठ,  
२३; -शसु शां १, ४; -शानाम्  
सौ १, १.  
चतुर्दश-करण- -णानाम्  
नाप ५, ११<sup>d</sup>; ६, १; ७; -णानि  
नाप ६, १; -णैः संसा १, ८.

चतुर्दशकरण-युक्त-  
-क्तम् शारी ५.  
चतुर्दशकरणो(ण-उ)-  
परम- -मात् ससा १, ९.  
चतुर्दश-दल-पञ्च-  
-ञम् त्रिवि ७, ३५.  
चतुर्दश-भुवन- -नानि  
अद्वैभा १७.  
चतुर्दश-मुख- -खम्  
रुजा २, १६.  
चतुर्दश(श-अ)र्च-  
-र्चस्य व ४५९: १६.  
चतुर्दश-वर्णक- -कः रार  
२, ५८.  
चतुर्दश-विध- -धम्  
मैत्रि ३, ३; -धस्य मैत्रि ६, १०.  
चतुर्दशा(श-अ)र- -रम्  
त्रिता २, ४५.  
चतुर्दश- -शः महा १, १;  
-शम् दत्ता १, ६; गार ४०७: ७;  
१३; -शे अत्त ५.  
चतुर्दशी- -शी नाप ८,  
१; -श्याम् वृजा ३, ४.  
चतुर्दश(शी-अ)ष्ट-  
मी- -मीषु शि ५, २३.  
चतुर-दिश- -दिक्षु रार ३, १;  
त्रिवि ७, ४५; शि ६, १०८.  
चतुर-दिश<sup>d</sup>- -शम् अद्वै १९.  
चतुर-द्वार<sup>d</sup>-  
चतुर्द्वार-युत- -तम् त्रिवि ७,  
४८.  
चतुर-द्वार<sup>e</sup>- -रम् त्रिता २, ४६;  
राधा २, २; -रस्य ध्या १०३.  
चतुर-धा तै १, ५, ३; अ १<sup>f</sup>; वउष्ठ,  
१०<sup>g</sup>; सीर २; मुद्र २; रार ५, १;  
गोउ ३३; पै १, १९; २१; २३;  
योशि १, १३०; मु १, १, १७;

सार २५७: २०; २६५: २१;  
२८५: २१.  
चतुर-बाहु<sup>h</sup>- -हुः शां ३, १; -हुम्  
१योत ८९; त्रिवा २, १४२; शां  
३, २.  
चतुर-भुज<sup>i</sup>, जा- -जः जाद १, १;  
गोउ ५५<sup>j</sup>; हे ६; -जम् ध्या ३०;  
गोउ ४७; सूष्ठ; ह ६; वपू १, २;  
२, २; -जा सी ३७; -जाम् सौ १,  
१; पीष्ठ २१: २; -जेन गी ११, ४६.  
चतुर्भुजा(ज-आ)कार- -रम्  
१योत ८६<sup>k</sup>.  
चतुर-भूत<sup>l</sup>-  
चातुर्भौतिक- -कम् सांस् ३,  
१८.  
चतुर-मात्र- -त्रः अना ३१; -त्रम्  
२प्र ३२: ५.  
चतुर-मात्रा-  
चतुर्मात्रा(त्रा-आ)त्मको-  
(क<sup>l</sup>-ओ)ङ्कार- -रः पाशु १, ४.  
चतुर-मास<sup>m</sup>-  
चातुर्मास्य- -स्यानि मना  
२, ८०<sup>n</sup>.  
चतुर-मुख<sup>o</sup>- -०ख योशि ५,  
११९<sup>p</sup>; -खः महा १, १; च २०: ४;  
-खम् त्रिवि ८, १४९<sup>q</sup>; रुजा २, ४;  
शि ६, १२३९<sup>r</sup>; सूता १, १; -खे  
योशि ५, ५२९<sup>s</sup>.  
चतुर्मुख-पञ्चमुख-षण्मुख-  
सप्तमुख(ख-अ)ष्टमुख(ख-आ)-  
दि-संख्या-क्रम- -मेण त्रिवि  
६, ७.  
चतुर्मुख-मुखा(ख-अ)म्भो-  
ज-वन-हंस-वधू- -धूः सर  
३, १.  
चतुर्मुखा(ख-आ)दि- -दी-  
नाम् त्रिवि ८, १२.

a) °शावशेषितः इति अञ्ज्या.। b) °शावशेषकः इति अञ्ज्या.। c) °का° इति निसा.मुपा.यनि.सु.शोधः (तु. अञ्ज्या.).। d) द्विस.। e) वस.। f) °थार्थ° इति निसा.मुपा.यनि.सु.शोधः (तु. अञ्ज्या.).। g) °विधः इति आन.। h) °मुंखा° इति अञ्ज्या.संदि.। i) तु.पा ६, १, ९५.। j) तैआ १०, ६४, १। k) °खैक° इति मुपा. छान्दसो मकारतोपश्चोत्तरेण संधिश्च ।



चतुर्मुखे(ख-इ)न्द्र-देव-  
-वेष्टु शु ३, २.

चतुर्-मूर्ति-धर- -राः भ २,  
२७.

चतुर्-युग- -गम् शि ६,  
२७८.

चतुर्युग-सहस्र- -सम् शि  
६, २७२; -स्त्राणि त्रिवि ३, ४.

चतुर्युगा(ग-अ)धिष्ठा(तु>)-  
त्री- -त्रीम् षो ३.

चतुर्-यु(ग>)गा<sup>१</sup>- -गाम्  
नाप ३, ६६.

चतुर्-योजन-

चतुर्योजना(न-आ)य(त>)-  
ता- -ता सार २८७ : १०.

✓चतुर्योजनाय्

चतुर्योजनायित- -तम्  
सार २५३ : ८.

चतुर्-वक्त्र<sup>१</sup>- -क्त्रः पै २, १७९<sup>१</sup>;  
रुजा २, ४९<sup>१</sup>; वरा १, १४९<sup>१</sup>; -क्त्रम्  
ध्या ३१; १योत ८६९<sup>१</sup>.

चतुर्वक्त्र-स्वरूपक- -कम्  
रुजा २, ४.

चतुर्-वर्ग-फल- -लम् नाउ ३,  
११.

चतुर्वर्गफल-प्रद- -दः रार  
२, १६.

चतुर्-वर्ण<sup>१</sup>- -र्णानाम् लि  
३०९ : ३; -र्णैः रार २, ८९.

चातुर्वर्ण्य- -र्ण्यम् गी ४,  
१३.

चातुर्वर्ण्य-धर्म- -र्मान्  
सं १२.

चतुर्-वर्ण<sup>१</sup>- -र्णैः रार २, १८.

चतुर्-वार- -रम्<sup>१</sup> १योत ४३;  
त्रिवा २, १०१; शां १, ७, २.

चतुर्-विंशत्- -शत् शि १, ११.

चतुर्-विंशति- -तिः शारी ९;  
गोउ २३; नापू ६, ३; -तिभिः  
भव २, २१.

चतुर्विंशति-तत्त्व- -त्वम्  
ते ५, ८१; -त्वानि वरा १, १; ४.

चतुर्विंशतितत्त्वा-  
(त्व-आ)त्मक- -कः नापू ९, १४.

चतुर्विंशतितत्त्वा-  
(त्व-आ)पादन-तन्तु-कृत्य-  
-त्यम्<sup>१</sup> पत्र २<sup>१</sup>.

चतुर्विंशति-दल<sup>१</sup>- -लाः  
नापू ६, १२.

चतुर्विंशतिल-पद्म-  
-द्मम् त्रिवि ७, ३९.

चतुर्विंशति-वन- -नानि  
राधा ३, ६.

चतुर्विंशति-वर्णक- -कः  
रार २, ७४.

चतुर्विंशति-वर्ष<sup>१</sup>-  
-र्षाणि छां ३, १६, १; आश्र १.

चतुर्विंशति-वर्ष<sup>१</sup>- -र्षः  
छां ६, १, २.

चतुर्विंशति-शक्ति-  
-क्तयः गार ४०७ : २०.

चतुर्विंशति-संख्याक-  
-कम् चू १४.

चतुर्विंशति-संख्यात-  
-तम् मन्त्रि १५.

चतुर्विंशत्य(ति-अ)क्ष-  
(र>)रा- -रा छां ३, १६, १;

मना २, ३५९<sup>१</sup>; तृपू १, ६; ४, ११;  
गार ४०६ : २.

चतुर्विंश- -शम् गार  
४०७ : १०; १५; -शाः सिशि

३८२ : ५; -शे अक्ष ५.

चतुर्विंश<sup>१</sup>-  
चतुर्विंशा(श-अ)क्षर-

-रः द २.

चतुर्-विध, धा- -धः नाप ८,  
७; महा ६, ५४; योरा २; -धम्

वृजा ३, ३४<sup>१</sup>; नाप १, ७; भा २०;  
योशि ५, २३; भव ५, ४; गी

१५, १४; -धा मु १, १, २५;  
-धाः त्रिवा २, ५; शारी ५; वरा

४, १; शा ११; नापू ५, ३४;  
आश्र १-४; गी ७, १६; -धाम्

शु १, ६.

चातुर्विध्य- -ध्यम् नाप  
५, १; १संन्या २, १३; पप ४१९;  
२४-२७.

चातुर्विध-पुरुषा(ष-अ)र्थ-  
सिद्धि-प्र(द>)दा- -०दे  
सावि १०.

चातुर्विध-पुरुषा(ष-अ)र्थ-  
सिद्धय(द्धि-अ)र्थ- -र्थे सू ३.

चातुर्विध-ब्रह्म-चर्य- -र्यम्  
नाप १.

चातुर्विध-भूत-ग्राम- -ग्राम्  
नाप ४, ३८.

चातुर्विध-सृष्ट्यु(ष्टि-उ)पल-  
क्षित- -तम् त्रिवि ६, ३.

चातुर्विधा(ध-आ)हार-  
चातुर्विधाहार-मय- -यम्

गर्भ १.

चतुर्-वेद- -देषु रार १, ४.

चतुर्वेद-ज्ञ- -ज्ञः रु ३.

चतुर्-व्यूह- -हः मुद्र १, ४.

चतुर्-हस्त- -स्तम् ग ११; शि  
३, ७.

चतुर्-होतृ-  
चातुर्होत्र-  
चातुर्होत्र-प्रधान-  
चातुर्होत्रप्रधान-त्व-

-त्वात् सी २३.

g) समाहारे द्विस. (तु. पावा २, ४, १७)। b) बस.। c) द्विस.। d) वा. क्रिवि. भवति। e) बस. गमितः बस. सन् ब्रह्म इत्येतद्युक्तं विप. [वैतु. अज्या. संति. (पृ ४७७) क्रिवि इति]। f) °कृत्त्वम् इति निसा.। h) तैआआ १०, ३५। h) तु. टि. २एकत्रिंश-।

चतुश्-चत्वारिंशत्-शत छां  
३, १६, ३.

चतुश्चत्वारिंशत्-संस्कार-  
संपन्न- -ज्ञः नाप १<sup>०</sup>.

चतुश्चत्वारिंशद्-अक्ष-  
(र>)रा-रा छां ३, १६, ३.

चतुश्चत्वारिंश-क्षे अक्ष ५.  
चतुष्-शिरस्- -रः अ १.

चतुष्-क- -ष्कम् यो १, २५;  
शि ६, १४१.

चतुष्-कपाल- -लम् गर्भ ५.

चतुष्-कल- -लः छां ४, ५, २;  
६-८, ३; -लम् छां ४, ५, ३;  
६-८, ४<sup>३</sup>.

चतुष्-कला-समायुक्त- -क्तः  
ब्रवि १८.

चतुष्-कूट(ट>)टा- -टा विद्या  
४<sup>३</sup>; -टाम् विद्या ४.

चतुष्कूटा(ट-आत्मक>)-  
त्मिका- -का विद्या १.

चतुष्-कोण- -णेषु सार २२२:  
१८; २३३:१९; शि ३, ४; रया  
१४.

चतुष्-टय- -यम् ते ५, ८१;  
ध्या ४३; १योत २९; नाप ४, ४;  
यो १, ५४; गोउ ४१; वरा १, ४;  
१३; योरा ३; -यस्य सांका ३०.

चतुष्टय-कुम्भक- -कः योशि  
१, ८८.

चतुष्-पथ- -थः वरा ५, ४३;  
-थम् १अव ५; -थे तारा ८३:१२.

चतुष्पथ-समायुक्त-महा-  
द्वार-गा-वायु- -युना ध्या ९४.

चतुष्-पद- -दम् सूता १, २५.

चतुष्-पा(द>)द्- -पदः वृ २,  
५, १८; श्वे ४, १३९<sup>०</sup>; २शिसं  
३३९<sup>०</sup>; -पदाम् त्रिबा २, ५६;

५९; ६६; शां १, ४<sup>३</sup>; इ १५:५:  
-पदे प्रा १, ४९<sup>०</sup>; सशां ९<sup>०</sup>; -प्यात्

मां २; छां ३, १८, २; अ १; राउ  
३, १; नृपू ४, ३; नृउ १, ५; नाप

८, ७; विद्या १; वउ १, ४; ५,  
३४; -प्यादम् ध्या १३; नृउ २,

४; व २; वउ ५, ४०.

चतुष्पदा<sup>०</sup>- -दा छां ३, १२,  
५; अव्य ५; शा १३.

चतुष्पदी<sup>०</sup>- -दी वृ ५, १४,  
७; ह १६९<sup>०</sup>; २२९<sup>०</sup>; चक्र २९<sup>०</sup>.

चतुष्पाद(द्-अ)न्तर-  
वर्तिन्- -तिनः पत्र २.

चतुष्-पाद, दा- -दः अ १<sup>१</sup>; -दा  
गार ४०६: ३.

चतुष्-पीठ- -ठम् वरा ५, ६२.  
चतुष्पीठ-समाकीर्ण- -र्णम्

योशि ५, ३.  
चतुष्पकारव्ययुत<sup>१</sup>- -ते त्रिबा

२, ६७.  
चतुष्-षष्टि- -मेद- -दम् तु १३.

चतुस्(>)<sup>१</sup> लु १४; चतुश्-  
चतुः त्रिबा २, २.

चतुस्-त्रिंशत्-  
चतुस्त्रिंश- -क्षे अक्ष ५.

चतु-रूप- -पः नृउ २, ५<sup>३</sup>-७<sup>३</sup>;  
९<sup>३</sup>; त्रिबा २, ११.

चत्वार- -स्वारः<sup>१</sup> छां ५, १०, ९;  
वृ ५, ८, १; मैत्रि ७, ११; अ १;

नृपू १, ४<sup>३</sup>; वसू २; नाप ८, १;  
योचू ७२; रापू १, ९१<sup>०</sup>; प्रा २, १;

-स्वारि<sup>१</sup> मना २, १२, २९<sup>०</sup>; व २;  
नृपू २, ४; शु २, १; रा २, ८९<sup>३</sup>;

पत्र २; त्रिता १, १०; सर २, ६९<sup>०</sup>;  
शौ ५३:१४९<sup>०</sup>; नापू ५, ३२९<sup>०</sup>.

चत्वारिन्<sup>०</sup>-  
चत्वारिंशत्<sup>०</sup>- -शत् वृजा ७, ८;

त्रि ३१<sup>०</sup>; भ २, २.

चत्वारिंशत्-संस्कार-  
संपन्न- -ज्ञः नाप २: १संन्या २, १.

चत्वारिंशद्-दल-पञ्च-  
-ग्रम् त्रिवि ७, ४४.

चत्वारिंश- -क्षे अक्ष ५.  
तुरीय, या<sup>०</sup>- -यः नृउ १, ११; २,

८; ४, ४; नाप ४, १४; ८, २०;  
त्रिवि १, ९; २, १५; ह ७; त्रिबा

२, १५२<sup>०</sup>; -यम् वृ ५, १४, ३<sup>३</sup>;  
६; गौ १, १५; हं ८; व २<sup>३</sup>; ३,

१३; अ ३<sup>३</sup>; नृउ २, ११; ३, १;  
सुबा ९<sup>३</sup>; १५; ससा १, ११; ते

४, ११; नाप ५, १<sup>३</sup>; ६, १; योचू  
७२; त्रिवि १, ५; ११; २, १<sup>३</sup>;

निर्वा २९८: १०; त्रिबा २, १०;  
शारी ५; पत्र २; त्रिता १, २५<sup>३</sup>;

२, १६; ५४; ५, २१<sup>३</sup>; पं १३;  
गोपू ११; सर २, ६९<sup>०</sup>; नापू ५,

३३९<sup>०</sup>; राधा ४, १; सु २९४:  
६९<sup>३</sup>; गा ७; ८; पिब्र ६, १२; १३;

-यया त्रिता ५, १; सौ २, १;  
-यस्य त्रिवि २, १; पप ४१९:

२७; -या अन्न २, १३; त्रिता  
३, ७; वरा ४, १; वउ ३, १०;

-याम् त्रिता ५, २१<sup>३</sup>; -याय वृ  
५, १४, ७; गा २३; वपू १, ३;

-ये वृ ५, १४, ४; नृउ २, १;

a) °ञ् इति अज्या. । b) ऋ १०, १२१, ३ । c) मा ११, ८३ । d) खि १०, १९१, १५ । e) तु. पा ४, १, ९ । f) तु. पा ४, १, ८ । g) ऋ १, १६४, ४१ । h) माशत्रा १४, ८, १५, १० । i) चतुश् इति अज्या. । j) पा. वा. च १ । k) तु. पा ५, ४, १८ । l) तु. पा ७, १, ९८ । m) तु. सस्थ. टि. इति । n) ऋ ४, ५८, ३ । o) ऋ १, १६४, ४५ । p) व्या. वैप १ यद. । q) °शात् इति निसा. अज्या. च मुपा. यनि. सु-शोषौ (तु. उत्र., तान्त्रि.) । r) तु. पावा ५, २, ५१ । विशेषः वैप १ यद. । =चतुर्थ-, तुरीयाऽवस्था-, चतुर्थाश्रमिन्- प्रसू. । s) °यस्य इति निसा. । t) ऋ ९, ९६, १९ ।

ध्या ३, १४; नाप ६, १; सं १५;  
गा १०; षेण नृउ ३, १; ८, १.  
तुरीय-क- -कम् जाद ५, ६; वरा  
५, ३२.  
तुरीय-(ग>)गा- -गा वरा ४, १  
तुरीय-तुरीय- -यः त्रिवि १, १;  
पप ४१९: २८; ४२०: १; वरा ४,  
१; -यम् नृउ ६, १-३<sup>०</sup>; त्रिवि १, ७.  
तुरीय-तैजस- -सः पप ४१९:  
२७; ४२०: १.  
तुरीय-स्व- -स्वात् नृउ २, ९.  
तुरीय-पाद- -दः त्रिवि १, ७<sup>३</sup>; ९.  
तुरीय-प्राज्ञ- -ज्ञः पप ४१९:  
२७; ४२०: १.  
तुरीय-भूमि- -भ्याम् वरा ४, १.  
तुरीय-मात्रा-चतुष्टय- -यम्  
पप ४२०: ३.  
तुरीय-रूप->पा- -पाम् त्रिता  
१, ७६; सौ १, १.  
तुरीय-विद्व- -द्वः पप ४१९:  
२७; ३१; वरा ४, १.  
तुरीय-संज्ञ- -ज्ञा(ज्ञः<sup>b</sup>) त्रिवि  
१, ११.  
तुरीय-संख्या- -ध्यायाम् दे २२.  
तुरीय-स्वर- -रम् त्रिता १, ६५.  
तुरीय-स्वरूप- -पम् त्रिवि ७,  
५०; पाशु १, २१.  
तुरीया(य-अ)क्षर- -रः ता २, १;  
-रम् त्रिता १, २६.  
तुरीया(य-अ)तीत, ता- -तः नाप  
५, १<sup>३</sup>; त्रिवि १, १; ११; १ संन्या  
२, १३; -तम् हं ८<sup>०</sup>; नाप ६, १;  
त्रिवि १, ७; ७, ५०<sup>३</sup>; -तस्य नाप  
५, १; ६, १; ७<sup>३</sup>; -ताम् त्रिता १,  
७६; सौ १, १.  
तुरीयातीत-स्व- -स्वम् नाप  
६, १.

तुरीयातीत-रूप- -पः ते ३,  
४१.

तुरीयातीतरूपा(प-आ)-  
त्मन्- -त्मा ते ४, ४९.

तुरीयातीत-संन्यास-परि-  
ब्राजा(ज-अ)क्षमालिका<sup>d</sup>- -का  
मु १, १, ३६.

तुरीयातीता(त-अ)वधूत-  
-तयोः नाप ५, १<sup>३</sup>; ७<sup>६</sup>; १ संन्या  
२, ५९; -तानाम् तुअ १.

तुरीयातीतावधूत-वेष-  
-षेण तुअ २२.

तुरीयातीता(त-अ)वस्था-  
-स्था ध्या २३, १५.

तुरीया(य-अ)त्मन्- -त्मा त्रिवि  
१, ११.

तुरीया(य-अ)न्त- -न्तम् त्रिता  
२, ५७.

तुरीया(य-अ)दि-चतस्र- -सः  
नाप ६, १.

तुरीया(य-अ)दि-विवर्जित-  
-तः ते ४, ७३.

तुरीया(य-अ)वसित-

तुरीयावसित-स्व- -स्वात्  
नृउ १, ११; नाप ८, १६.

तुरीया(य-अ)वस्था- -स्था ध्या  
९३, १४; -स्थाम् नाप ६, १;  
-स्थायाम् पप ४१९: २७; अन्न  
२, १४.

तुरीया(य-अ)श्रम-स्वीकारा-  
(र-अ)र्थ- -र्थम् नाप ४, ३८.

तुरीया(य-अ)कारा(र-अ)श्र-  
विद्योत- -तम् नृउ ४, १-३.

तुरीया<sup>१</sup>र्था<sup>२</sup>- -र्थः गौ १, १०; -र्थम्  
गौ १, १२; मैत्रि ७, ११; त्रिवि  
७, ५०; त्रिब्रा २, १५०; अन्न ३,  
१३; ५, १६; १०७; ११०; पिब्र

६, १४; वपू १, ६; -र्या अन्न १,  
५१; ५, १०८; गुषो ४२१: १;  
-र्यात् गुषो ४२०: १०; -र्याय  
वपू १, ३; -र्ये गो १, ११; १३;  
१४; पिब्र ६, १०.

तुर्य-(ग>)गा- -गा महा ५, २५;  
३४; वरा ४, २; १०.

तुर्य-तुरीय- -यः नृउ १, १२<sup>१</sup>.  
तुर्य-तुर्य- -र्यः ते ४, ४८; ब्रवि  
९६.

तुर्य-स्व- -स्वम् अन्न २, १९.

तुर्य-पद- -दम् नाद ३२.

तुर्यपदा(द-अ)भि(ध>)-  
धा- -धा अन्न ५, ८८.

तुर्य-भाग- -गेन पै १, २२.

तुर्य-भूमि-सु-योग-

तुर्यभूमिसुयोग-तस्(>)-  
वरा ४, १२.

तुर्य-रूप- -पः ते ३, ४; -पम्  
अन्न ३, १८.

तुर्यरूप-पद- -दे अन्न ३, १०.

तुर्य-विश्रान्ति-युक्त- -क्तस्य  
महा ४, ४०.

तुर्या(र्य-अ)ख्य- -ख्ये मैत्रि  
६, १९<sup>६</sup>.

तुर्या(र्य-अ)तीत, ता- -तः ते ३,  
४; ६, ९; त्रिब्रा २, १५१;  
१५७; महा ५, ३५; अन्न ५,  
४६; -ता अन्न ५, ८६.

तुर्यातीत-पद- -दम् अन्न  
२, १५.

तुर्यातीतपदा(द-अ)भि-  
(ध>)धा- -धा अन्न १, २५.

तुर्यातीतपदा(द-अ)-

वस्था- -स्था अन्न ५, ८९.

तुर्या(र्य-अ)तुर्य-प्रकाश- -शः  
ते ६, ६९.

a) 'यातु' इति JC. । b) मुपा. यनि. शोधः द. । c) तुर्या<sup>१</sup> इति निसा. । d) =तत्तदुपनिषद्भाषां द्वस.  
गमितः मध्यमपदलोपः कस. । e) =तुरीय- (तु. गपू. टि.) । f) 'तुरीयस्तुरीयः' इति निसा. । g) तुरीया<sup>०</sup>  
इति निसा. ।



तुर्या(र्य-अ)तुर्या(र्य-आ)दि—

वर्जित- -तः ते ६,६९.

तुर्या(र्य-आ)र्य-ब्रह्मन्- -ह्या  
विद्या १.

तुर्या(र्य-अ)न्त- -न्ते त्रिवा २,  
१५२.

तुर्या(र्य-अ)भि(ध>)धा- -धाम्  
अक्षि ३७.

तुर्या-रूप- -पः गुणो ४२०:७.

तुर्या(र्य-अ)वस्था- -स्था महा

५,३५:८५; अन्न ५,१११; भा

३९; -स्थायाम् अन्न ५,४६.

तुर्या-षोढा(ढा-अ)धिकारिन्-

-री कामे १३.

२तुर्य<sup>a</sup>- -र्यम् ते ६,२७.

१चतुर<sup>b</sup>- -रः पा ३,९.

चातुर्य- -येण सार २२६:७.

चातुर्य-गुण-युत- -युताः सार  
२२२:५.

२चतुर(र>)रा<sup>c</sup>- -रा सुसु १५; गुणो

४२०:९; -रायै व ४३५:१७.

चत्वर<sup>d</sup>- -रे सार २७२:५.

चत्वार- , चत्वारिन्- चतुर- द्र.

चन<sup>e</sup> क १,१,१२; मां ५<sup>f</sup>; तै ४,४,१;

ऐ १,१; छां ५,२,१; वृ १,२,

१; गौ १,१२; मना १, २४<sup>g</sup>;

कौ ३,२; वृत् १,८<sup>h</sup>.

✓चन्द्र(वधा.)

चन्द्रन<sup>i</sup>- -नम् वृजा ३,२७; गोच

६५:४; ६७:२; ६:११; १२;

६८:२३; ६९:२१; शि १,२६;

७,८२; -नस्य गोच ६७:१६;

शि ४,३७; -नेन वृजा ४, ९<sup>j</sup>;

-नैः गोच ६९:६.

चन्द्रन-चर्चा- -चौ महा ४,२६.

चन्द्रन-तिलक- -कम् कृपु २०.

चन्द्रन-वत् ब्रम् २,३,२३.

चन्द्रन-वृक्ष<sup>k</sup>- -क्षाणाम् सार

२२२:६.

चन्द्रना(न-आ)द्य- -द्यैः रापू ५,७

चन्द्रना(न-आ)लेप- -पः वड ६,  
३९.

चन्द्रना(न-आ)हुति- -तिम् शि  
४, ३५.

चन्द्र, न्द्रा<sup>l</sup>- -न्द्रः छां ४,३,१; ७,

३; ८,१३,१; वृ १, ३,१६; ५,

१३<sup>m</sup>; २,५,७; ३,१,६; सुबा ५; नि

६; २१; रापू ४,६; म २,१९;

शां १, ४<sup>n</sup>; योशि १, १४६; ५,

३३; ६,७०; ए १२; सावि ७<sup>o</sup>;

वरा १,१४; अद्वै १७; १८; सार

२४१:१७; २७२:११; २८०:

१८; हे ७; काम ५; पित्र २,६;

-न्द्रम् वृ ३,२,१३; ६,२,१६<sup>p</sup>;

सुबा ९<sup>q</sup>; रार १, ७<sup>r</sup>; पं ३; षो

१२<sup>s</sup>; -न्द्रस्य वृ २,५,७; -न्द्रा

सौ १,१; ३<sup>t</sup>; राधा १, २५४<sup>u</sup>;

सुसु १४४<sup>v</sup>; -न्द्रात् छां ६, ४,

३; -न्द्राय राउ १, २; -न्द्रे वृ

२,१,३; ५, ७; सुबा ५; शां १,

७, ५२; योसू ३, २८; -न्द्रेण वृ

३, १, ६; ध्या ९०; योचू ६४;

९५; शां १, ७, १<sup>w</sup>; योशि १, ९८.

चा(न्द्र>)न्द्नी<sup>x</sup>- -न्द्नी त्रिता

१,६३; ६४; -न्द्नीम् त्रिता १, ६१.

चन्द्र-ऋक्ष-ग्रह-संवत्सरा-

(र-आ)दि- -दयः मैत्रि ६, १६.

चन्द्र-कला- -ला सार २४२:

२०४<sup>y</sup>; २६२:२३४<sup>z</sup>; -लाम्

त्रिता १,८२.

चन्द्रकला-कलाप- -पः हे ६.

चन्द्रकला-मोहि(न्>)नी<sup>aa</sup>-

-नी सार २२३:३.

चन्द्र-कान्त-मणि<sup>ab</sup>- -णिना

सार २२२:१२; २३७:२; -णे:

सार २२५:१.

चन्द्र-कान्त-रचि(त>)ता-

-ता सार २७१:१७.

चन्द्र-किरण- -णाः सार २६४:

१४.

चन्द्र-किरीट- -टम् म २, २९.

चन्द्र-कुङ्कुम-काश्मीर- -रम्

वृजा ३, २७<sup>ac</sup>.

चन्द्र-कोटि-सम-प्रभ- -भम्

ध्या २९; म २, २९.

चन्द्र<sup>ad</sup>-क्रोधो(ध-उ)न्मत्त-

कपालि-भीषण-संहार- -रा:

सूता ५, ११.

चन्द्र-खण्ड-प्रतिघटित-जटा-

क्षीर-गौर- -रः द ५.

चन्द्र-घण्टा<sup>ae</sup>-

चन्द्रघण्टा-विरूपा-

(प-अक्ष>)क्षी<sup>af</sup>- -क्षि व

४६५:१७.

चन्द्र-चूड- -डम् द ३.

चन्द्र-ज(ट>)टा- -टे व

४५८:१.

चन्द्र-ज्योत्स्ना- -स्ना सार

२६४:२२.

चन्द्र-तारक<sup>ag</sup>- -कम् क २, १५;

a) अवयवार्थे यत् प्र. उसं. (पावा ५, २, ५१) । b) व्यु. विप. । c) व्यु. = देवीविशेष- ।

d) व्यु. = अङ्गन-? । e) अव्य. । व्यु. वैपश् यद्र. । f) तैआ १०, १, २ । g) धा. शैत्यपारिणामिक आह्लादने वृत्तिः

द्र. । h) = इन्दु- , स. रामचन्द्र- इत्यस्य वैसं. सतः उप. , देवताविशेष- , प्राणायामे सूर्यस्वरेतर-स्वर- इति कृत्वा धा.

दीप्त्याद्यर्थान्तरवैविध्यं प्रकल्प्यम् (तु. वैपश् अपि व्यु. विशेषः) । i) = राममन्त्राङ्गदेवता- । j) ०न्द्र० इति निसा. सुपा.

यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.) । k) = शाकविद्याविशेष- । l) समाहारे द्रस्य. । m) = चण्ड- इति कृत्वा १भोऽवयवः

विप. द्र. । प्रधा. चाऽत उग्रदीप्तौ वृत्तिः द्र. । n) = चण्ड-घन्त्रा- इति कृत्वा कस. उप. भाप. सद् हिंसापर्यायः द्र. ।

o) तृस. गर्भितः बस. ।

सुं २, २, १०; वृ ३, ७, ११;  
 श्वे ६, १४; गु ४५; कात् वृ ३,  
 ७, ११; के वृ ३, ७, ११.  
 चन्द्र-तुण्ड-गुण्डे योशि १, ८६.  
 चन्द्र-त्व-स्वम् छां ६, ४, ३.  
 चन्द्र-दर्शन-यु(क्त)का-  
 कायाम् रा ४२५: १९.  
 चन्द्र-देवता-ता जाद ४, ३८.  
 चन्द्र-ध्वज-ज: गोप २६: ३१.  
 चन्द्र-नक्षत्र-ग्रह-तेजस्-  
 -जांसि पाशु १, ८.  
 चन्द्र-नाडी-डी सौ ३, १.  
 चन्द्र-भद्रा(द्र-अन्त-न्त:  
 रार २, ९; २५.  
 चन्द्र-मण्डल-लम् योशि १,  
 १२७; सार २६५: ८; लात्  
 योशि ६, ३.  
 चन्द्रमण्डल-मध्य-ग-  
 -गम् योशि ५, ४४.  
 चन्द्रमण्डल-मध्य-वर्ति-  
 (न)नी-नीम् त्रिता १, ८१.  
 चन्द्रमण्डल-संकाश-०श  
 गरु ७.  
 चन्द्र-मध्य-ग-ग: १प्र ३१:  
 ११.  
 चन्द्र-मस्<sup>b</sup>-मस: छां ४, १५,  
 ५, ५, १०, २; ६, ४, ३; वृ १, ५,  
 २०; मना २, ७९९<sup>c</sup>; ८०९<sup>d</sup>; म  
 २, ५; वड ३, २४; -मसम् छां  
 ४, १५, ५; ५, १०, २; ४; वृ ५,  
 १०, १; कौ १, २; २, ८; ९; १२;  
 २प्र ३३: २; -मसा तै १, ५, २;  
 वृ ४, ३, ३; -मसि छां ४, १२,

१; ५, २०, २; वृ ४, ३, ४-६; कौ  
 २, ८; ४, ३; गी १५, १२; -मसे  
 मना २, ३९<sup>e</sup>; ४९<sup>f</sup>; ५९<sup>g</sup>; ६७९<sup>h</sup>;  
 -सा: प्र १, ५; तै १, ५, २; ७, १;  
 ऐ १, ४; २, ४; छां १, ६, ४<sup>i</sup>; १३,  
 १; २, २०, १; ३, १३, २; ४, १२,  
 १; ५, ४, १; २०, २<sup>j</sup>; वृ १, ३,  
 १६; ५, २२; ३, ९, ३; ४, ३, ३; ६,  
 २, ११; श्वे ४, २९<sup>k</sup>; कै १, ८; मना  
 १, २९<sup>l</sup>; कौ १, २; २, १२; मै  
 ५, ५; मैत्रि ६, ५; ३५; ७, ५; वृजा  
 ८, ६; वृष ५, २०; सुवा १९<sup>m</sup>;  
 ६; ते ४, १६; रुह ५; गद: जाद  
 ४, ३८; ३९; शां १, ४; महा १,  
 १; अव्य २; अज ५, २९; सावि  
 ७; १०<sup>n</sup>; २प्र ३६: २३; नापू  
 १, ६; ७; गु ५२; कालि ४०३:  
 ८; वड ३, ४९.

चान्द्रमस-सम् प्र १,  
 ९; योचू ९६<sup>o</sup>; गी ८, २५.

चन्द्रमादित्य-त्यौ  
 आच २.

चन्द्र-सु(ख)ली-स्त्री सार  
 २६८: ८.

चन्द्र-रूप<sup>m</sup>-पम् यो १, ७२.

चन्द्ररूप-क<sup>n</sup>-कम् यो २,  
 १९.

२चन्द्र-रूप<sup>o</sup>-०प अत्त ५.

चन्द्र-लेखा<sup>p</sup>-खा सार २६८:  
 ८; १०.

चन्द्र-लोक<sup>q</sup>-कम् म २, २५;

-का:-केषु वृ ३, ६, १.

चन्द्रलोक-काम-म: म २,

२५.

चन्द्र-वत् पै ४, ४; अध्या ११.  
 चन्द्र-शाला<sup>r</sup>-लाम् शि ६,  
 ११५.

चन्द्र-संकाश-श: त्रवि ७;  
 १प्र ३१: १२.

चन्द्र-सूर्य-र्ययो: ध्या २१;  
 योचू ६५; -र्यौ सुं २, १, ४; योशि  
 १, ११६; ६, ३२; ३६; गु ११.

चन्द्रसूर्य-स्विष्-स्विष:  
 गोड ५२<sup>s</sup>.

चन्द्रसूर्य-निबन्धन-नात्  
 योशि १, १२०.

चन्द्रसूर्य-प्रतिफलन-नम्  
 अता २.

चन्द्रसूर्या(र्य-आ)दिक-कौ  
 ते ६, ९४.

चन्द्रसूर्य(र्य-ए)कता-ता  
 योशि १, ५६.

चन्द्र-सूर्या(र्य-अ)ग्नि-देवत-  
 -ता: योशि ६, ५६.

चन्द्र-सूर्या(र्य-अ)नङ्ग-धूर्जटि-  
 महिमा(म-आ)लय-यम्  
 त्रिता १, ७०<sup>t</sup>.

चन्द्रा(न्द्र-अ)श-शेन योचू ६७.  
 चन्द्रा(न्द्र-आ)त्रेय-य: शि ७,  
 १३५.

चन्द्रा(न्द्र-आ)दित्य-त्यौ गार  
 ४०८: ६.

चन्द्रा(न्द्र-आ)दि-लोक<sup>u</sup>-के  
 सांसू ६, ५६.

चन्द्रा(न्द्र-आ)न(न)ना<sup>v</sup>-ना  
 सार २४२: २०; सुमु १४.

a) चन्द्रस्व<sup>a</sup> इति निसा. संदि., चन्द्रस्व<sup>a</sup> इति अख्या. । b) बस. पूप.=शीतल-इति कृत्वा विप., उप. च  
 =दीप्ति-इति कृत्वा माप. (तु. वैप१ विशेष:). । c) तैआ १०, ६३, १ । d) तैआ १०, १४, १ । e) तैआ १०, ३, १ ।  
 f) तैआ १०, २, १ । g) तैआ १०, ४, १ । h) तैआ १०, ६७ । i) मा ३२, १ । j) ऋ १०, ९०, १३ । k) 'चन्द्र-  
 मसम्' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (वैतु. चन्द्रमसम् इति अख्या. संदि.) । l) पूप.१ 'मसम्(>म)भा' <'मा'  
 इत्येवं विसंधि-शोध: द्र. । यदा चन्द्रम-इति वा 'मा-इति वा प्राति. स्यात् । m) षस. । n) =सं-बीजमन्त्र-  
 विशेष- । o) बस. । p) 'चन्द्रसूर्याम्बरीचित्या' इति आन. । q) 'महिमायम्' इति अख्या. । =बीजमन्त्र-  
 विशेष- (तु. उत्र.) ।

चन्द्रा(न्द्र-अ)यण-

चान्द्रायण-

चान्द्रायण-परा(र-अ)-

यण- -णः मि ७.

चन्द्रा(न्द्र-अ)र्क- -कौं शां १,  
७, १६९<sup>११</sup>.

चन्द्रार्क-मध्य(म&gt;)मा-

-मा यो ३, ७.

चन्द्रार्क-वपुस्- -पुः रुह  
४०; अञ ४, ३०.च(न्द्र>)न्द्रा-वती<sup>१२</sup>- -ती  
राधा १, २१.चन्द्रा(न्द्र-अ)वली<sup>१३</sup>- -ली राधा  
४, २; सार २४२ : २०.

चन्द्रावली-चन्द्रभागा-सु-

श्रोणी-सुभगा(गा-आ)द्या-

-द्याः सार २३९ : १८.

चन्द्रावली-प्रभृति- -तयः  
सार २४० : ३.चन्द्रो(न्द्र-उ)दय-निभ- -भम्  
म ४८ : ४.चन्द्रो(न्द्र-उ)द्वव- -वैः सार  
२२४ : २३.चन्द्रि<sup>१४</sup>-चन्द्रि-(क>)का<sup>१५</sup>- -कया रापू  
४, ६; -काम् त्रिता १, ४०.चपल, ला<sup>१६</sup>- -ला पित्र २, ६.

चापल- -लानि शि ७, ५८.

चपल-मर्क(ट>)टी- -टी महा ३,  
२३.

✓चम् ("चाकचक्ये")

चमत्<sup>१७</sup>-

चमत्✓कृ

चमत्कार- -रः महा ४, १५.

?चमरः<sup>१</sup> कृ २०.चमस<sup>१८</sup>- -सः वृ२, २, ३<sup>१</sup>; ६, ३, १३;

-सम् छां ५, २, ७; करु १; कुं९;

कश्रु ३, १; -से वृ ६, ३, १; -सेन

कौ २, ३.

चमस-वत् ब्रसू १, ४, ८.

१चमू<sup>१९</sup>- -मूमी गी १, ३.

२चमू-

चमू-षद्- -षत् सु २९४ : ५९<sup>१</sup>.चम्पक<sup>२०</sup>- -काः सार २५४ : १.

चम्पक-कुसुम- -मः रा ४२३ : २०.

चम्पक-तैला(ल-आ)द्या- -द्यैः रा  
४२४ : १८.

चम्पक-पुष्प- -ष्यैः रा ४२५ : १०.

चम्पका(क-अ)तसी-कुङ्कुम-पिङ्गले-

(ल-इ)न्द्रनीला(ल-आ)मिप्रभो-

(भा-उ)घत्सूर्य-विद्युत्-तारक-

सरोज-गौर-मरकत-शुक्ल-कुन्दे-

(न्द-इ)न्दु-शङ्ख-पाण्डु-नेत्र-नी-

लोत्पल-चन्दना(न-अ)गुरु-क-

स्तूरी-गोरोचन-घनसार-सं-

निभ- -भम् गार ४०७ : २३.

चय-, चयन- ✓चि ३.

✓चर्, चरते सुं १, २, ५; २, २, ६;

ध्या ३५<sup>१</sup>; पै ४, ४; इ १४ : १८;

चरति प्र ३, ६; छां ३, १७, ३;

८, १०, १; वृ २, १, १८<sup>२२</sup>; ६, ४,३<sup>२</sup>; मना १, १९<sup>२३</sup>; २, ६८<sup>२४</sup>; पदं

२; मै २, १०; ४, ५; ५, ६; मैत्रि

२, ७; ४, ६; ५, २; ६, ६<sup>२५</sup>; १४; ७,

११; अशि ४, १७; नि ५५;

ध्या ८२; नाप ३, ४१; ५, १६; ६,

३७; ९, २०; त्रिवा २, ६२; ८०;

११८; ११९; १६५; योचू ५५<sup>२६</sup>;जाद ४, ३९; शां १, ४<sup>२७</sup>; ७, ४०;

४३; महा २, ४६; ६, ४८; अञ

३, ६; पाशु १, १३; २५; २अव

३३८ : ८; गरु ९<sup>२८</sup>; १२<sup>२९</sup>-२३<sup>३०</sup>;

इ ११ : १०; १२ : १८; पा २, २;

वटु ३१६ : १०; सांवादि०; गी२,

७१; ३, ३६; चरन्ति क १, २,

१५; प्र १, १५; सुं २, १, ८; छां ७,

११, १; वृ ३, ५, १; ४, ४, २२; ६,

४, ४; मना २, १२, १९<sup>३१</sup>; त्रिवा २,

७८; ९९; शां १, ४; जाद ४, २४;

वरा ५, ३१<sup>३२</sup>; पाशु १, १९<sup>३३</sup>; २७;

३०; इ ११ : ९; गु३९; गी८, ११;

चरसि प्र २, ७; ९; प्रा १, ६९<sup>३४</sup>;चरामि दे १९<sup>३५</sup>; वा १८; चर तै

१, ११, १; तै ४, ८१; अचरत् वृ

१, २, १; २प्र ३२ : ४; चरेत् नाप

५, ३०; शा १८<sup>३६</sup>; चरेत् छां ५,११, ६; वृ १, ५, २३<sup>३७</sup>; मैत्रि ७,

११; आरु ४; ब्रवि २१; नाप

३, ३१; ३२; ५३; ८६; ४, १८;

२२; ३५; ३६; ५, १; २५; २६<sup>३८</sup>;३५; ६, ४; ६; २९; ७<sup>३९</sup>; रार ४,

९; करु १; शां १, ३, १२; पै

४, ५; १संन्या १, १; २, ७१;

७४; ९४; पप ४१८ : २९; ४१९;

१०<sup>४०</sup>; १२; कुं ९; इ १९ : १७;

पारा १२; १७; लि ३१० : १०;

११; कामे १६; १८; गुषो ४२० :

२; चक्र ५<sup>४१</sup>; ६; १०; १कौल ७,

१; २कौल ९; कश्रु १, १; ३, १;

आश्र १.

चचार त्रिवि १, १; वरा १, १;

वट ३, ३७; अचारीः वृ ४, १, १.

- a) तु. पा ६, ३, १२० । b) भाष. । c) =सकार-बीजाक्षर- । d) व्यु. ? =चञ्चल-, विद्युत्- ।  
e) पाधा. उरसं. । f) मुपा. 'च अमरः' इत्येवं शोधः । g) व्यु. वैपश् यद्र. । h) =सेना- । व्यु. वैपश् यद्र. ।  
i) =पात्रविशेष- । व्यु. वैपश् यद्र. । j) ऋ ९, ९६, १९ । k) व्यु. ? । l) 'संचरते' इति आन. । m) 'आचरति' इति  
निसा. । n) शौ १०, ८, १३ । o) तैआ १०, ३१, १ । p) तैआ १०, १०, १ । q) 'चरन्ति' इति निसा. मुपा. यनि.  
सु-शोधः (तु. अख्या.) । r) 'हरन्ति' इति निसा. । s) 'चरति' इति तैआ १०, ३१, १ । t) ऋ १०, १२५, १ ।  
u) 'चरेत्' इति अख्या. । v) एकतरत्र 'आचरेत्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः ।



चर- -रम् गी १३, १५; -रस्य श्वे  
३, १८; गु ५०; राय पा १, ६; ९.  
चरा(र-अ)चर- -रम् वरा २,  
२५; ५, ५५; वृजा २, ३; रार ५,  
१०; रापू २, ३; महा ३, १७;  
म ४८: ५; वड ३, ४३; ४, ४२;  
४४; गी १०, ३९; -रस्य गी ११,  
४३; -रा: शि ४, ५६; ६, १९१;  
-राणि मना १, १९<sup>६</sup>.  
चराचर-गति- -ति: पारा  
१५.  
चराचर-ग्रहण- -णात् ब्रसू  
१, २, ९.  
चराचर-व्यपाश्रय- -य: ब्रसू  
२, ३, १६.  
चराचरा(र-आ)त्मक- -कम्  
अव्य ३.  
चराचरा(र-आ)त्मन्- -स्मा  
अन्न १, ५५.  
चरक<sup>b</sup>- -का: वृ ३, ३, १.  
१ चरण<sup>c</sup>- -णम् मना १, ११९<sup>d</sup>; त्रिवि  
७, ४९<sup>d</sup>; ५९<sup>d</sup>; नाप ४, २१<sup>e</sup>; इ  
११: १७; ९<sup>d</sup> गु २९३: १३; १६;  
-णात् ब्रसू ३, १, ९.  
चरण-दीक्षा-रूप-  
चरणदीक्षारूपि(न>)-  
णी- -णीम् कामे ५.  
चरण-रूप-  
चरणरूपि(न>)णी- -णीम्  
कामे १४.  
चरणा(ण-अ)विकारिन्- -री  
कामे १५.  
२ चरण<sup>f</sup>- -णम् त्रिबा २, ३७;

गोड ५२<sup>g</sup>; -जौ मै १, १; मैत्रि  
१, २; मैत्रे १, १; हं १४; व  
४५७: १०.  
चरण-कमल- -लौ सार २६५:  
१४.  
चरणकमल-मञ्जरी-शोभा-  
-मा सार २४५: ८.  
चरण-द्वय- -यम् गोड ४६.  
चरणद्वया(य-आ)कृति- -ति  
का ८; नार ७.  
चरण-स्मरण- -णात्, -णेन वरा  
३, १२.  
चरणा(ण-अ)भिधान- -नात्  
ब्रसू १, १, २४.  
चरत्- -रत: महा ६, ९; गोपू २५;  
-रता त्रिबा २, ११९; -रताम्  
योचू १२०; गी २, ६७; -रन्  
गौ ४, ६५; मैत्रि ७, ११; नाप  
५, ९<sup>३</sup>; १५; ७<sup>h</sup>; त्रिबा २, १९;  
रार ४, २; पै २, ४१; १ संन्या  
२, ७७; वरा ४, २४; ४०; गी २,  
६४; -रन्त: सुं १, २, ११; मि  
२, ९; आश्र ४<sup>i</sup>; -रन्तम् पा ६,  
२; व ४५५: २२९<sup>i</sup>; -रन्तौ  
पा ४, २.  
चरन्ती- -न्ती छां ४, ४, २; ४.  
चरित- -त: पै ४, २३; -तम् प्र २,  
८; ध्या ९३, १.  
चरित-ब्रह्म-चर्य- -र्य: कश्रु २, ३  
चरिता(त-अ)र्थ-  
चरितार्थ-त्व- -त्वात् सांका  
६८.  
चारितार्थ- -र्थ्यात् सांसू

३, ६९.  
चरित्र- -त्रेण रापू १, ४.  
चरित्वा वृ ४, ३, १२; १५-१७: ३४.  
चार<sup>j</sup>- -रा: सार २३३: १३.  
चरम्<sup>k</sup>- -म: सांसू १, ७२; -मम् शा ६.  
चरम-पद- -दात् गोपू २९<sup>l</sup>.  
चरु<sup>m</sup>- -रुम् कर १; कश्रु २, ३; नाप  
४, ३८.  
चर्मन्<sup>n</sup>- -र्मै तै १, ७, १; वृ ६, ४, ३;  
महा ५, १८५; -र्मण: नि २३;  
-र्मणा छां ४, १७, ७९<sup>m</sup>; मै ३, ४;  
मैत्रि ३, ४; मैत्रे १, ३; शि ६,  
१४६; २१२; -र्मणि छां ५, २, ८.  
चर्म-कार-  
चर्मकार-वत् नाप ५, १.  
चर्म-कील- -ल: छाग २५: २११<sup>n</sup>.  
चर्म-खण्ड- -ण्डम् नाप ४, ३०.  
चर्म-वत् श्वे ६, २०.  
चर्मा(र्म-अ)म्बर- -र: श ६.  
चर्मा(र्म-अ)वनद्ध- -द्धम् नाप ३,  
४६०.  
✓चल्> चञ्चल्, चालि, चलति गौ  
४, ६१<sup>३</sup>; यो १, १०; १ संन्या २,  
६; गी ६, २१<sup>३</sup>; चलन्ते वरा ५,  
६४; चलन्ति महा ५, ३; चलसि  
ते ५, ७४; चलन्तु आबो २०.  
चालयेत् गौ ३, ४४; अना १४;  
नाद ३७; यो १, १२; १३; ३५;  
योशि १, ८३.  
चालयते यो १, ३४; मु २, २, ४९.  
चञ्चल, ला<sup>o</sup>- -ल अत्त ५; -ल: मै  
३, २; मैत्रि ३, २; ६, ३०; ते ५,  
६८; -लम् ते ६, १८; पै ४, १७;

a) तैत्र्या १०, १, १। b) तु. पाउ २, ३२। c) भाप.। d) तैत्र्या ३, १२, ३, ४। e) 'वरणम्' इति निसा.  
मुपा. यनि. सुशोध: (तु. अज्या.)। f) =पाद-। g) 'ऊर्ध्वचरण:' इति आन., 'चार्णवम्' इति अज्या. संटि.।  
h) 'चेत्' इति अज्या.। i) तैत्र्या ३, ११, १। j) भाप. = १ चरण-। k) व्यु. वैप १ यद्र.। l) 'चरमात्' इति  
आन.। m) 'च चर्म च श्लेष्मणा' (तु. जैउ ३, ४, ३, ३) इत्येवं मूलतः सतः पा. यनि. सुशोध: विकारः। n) °ल इत्यतोऽप्रे  
पा. खण्डितत्वात् 'श्' इति पादपूरकमत्तरं सुकल्पम्। o) 'वनद्धम्' इति अज्या.। p) 'च्यवति' इति SCHR. पामे.  
[वैतु. वे. (NIA. २, २३१)]। q) ✓चञ्च् (गतौ) > (भाप.) चञ्च + (मत्वर्थे) लः प्र. इत्यपि वा पाप्र. एव दिगन्तरं द्र.  
[तु. गपू. टि. ✓चञ्च् (भक्षणे)]।

अत्र ३, ५; गी ६, २६: ३४; -ला  
महा ४, १००; -ले सुवा ८.  
चञ्चल-ता- -ता महा ४, १०२.  
चञ्चलता-हीन- -नम् महा  
४, ९९; १०१.  
चञ्चल-त्व- -त्वम् मै ३, ५; महा  
४, ९९; वरा २, ७८; ३, २०;  
-त्वात् ध्या ५९; योचू २८; योशि  
६, ५१; गी ६, ३३; -त्वेन योशि  
५, ६२.  
चञ्चला(ल-अ)क्ष- -क्षाय सूता  
१, ३८.  
१चल- -लः योचू ८९; -लम् महा  
५, ९८; सांका १३; गी ६, ३५;  
१७, १८; -ले योचू ८९.  
चल-त्व- -त्वम् मैत्रि ३, ५.  
चल-दृष्टि- -दृष्ट्या अता ६; मं १,  
२, ९<sup>b</sup>.  
चल-वत् ते ६, ८६.  
चल-स्थिरो(र-उ)भया-  
(य-अ-)भाव- -वैः गौ ४, ८३.  
चला(ल-अ)चल-निकेत- -तः  
गौ २, ३७; नाप ६, ३८.  
चला(ल-आ)भास- -सम् गौ ४,  
४५.  
चलत्- -लति योशि ६, ५८.  
चलन- -नात् वरा ३, २०°.  
चलन-समर्थ- -र्थः निरु १, १३.  
चलित, ता- -ता यो १, ६३; -ते  
ते ६, ९८; यो १, ७०.  
चलित-मानस- -सः गी ६, ३७.  
चालन- -नम् योचू ६५; यो १, ८;  
९; २३; ५३; -ने यो १, १६;  
-नेन यो १, १५.  
चालयत्- -यन् ब्रवि ७४.

चालयित्वा योशि १, ११२.

चालित, ता- -तः ते ६, ८२; -तम्  
योचू १०७; सु २, २, ७; -ता  
यो १, ६६; शां १, ७, ३७; -ते  
वरा ५, ८<sup>d</sup>.

चाल्यमान- -नः १आ १८.

२च(ल>)ला<sup>१०</sup>- -ला गी ४८२: ८.

चाकशान- -कश्यमान- ✓काश् द.

चाक्रायण- -चक्र- द.

चाक्षुष- -चाक्षुष्मती- ✓चक्षु द.

चाट<sup>१</sup>-

चाट-जट-नट-भट-प्रव्रजित-रङ्गाव-  
तारिन्- -रिणः मैत्रि ७, ८.

चाणूर<sup>१४</sup>-

चाणूर-मल्ल- -लः कृ १४.

चाण्डाल- -चण्डाल- द.

चातक- ✓चत् द.

चातुर्थिक- -<sup>०</sup>भौतिक- -<sup>०</sup>मास्य-  
चतुर्- द.

चातुर्य- -चतुर- द.

चातुर्वर्ण्य- -<sup>०</sup>विध्य- -<sup>०</sup>होत्र-  
चतुर्- द.

चान्द्रमस- -<sup>०</sup>न्द्रायण- -<sup>०</sup>न्दी-  
✓चन्द्र द.

चाप<sup>१४</sup>- -पम् गी १, ४७.

चाप-बाण-धर- -रम् रार २, ४९;  
८४.

चापल- -चपल- द.

चामर<sup>१४</sup>- -राभ्याम् गरु ५, ४; -रेण  
सी ३७.

चामीकर<sup>१४</sup>-

चामीकर-खचित(त>)ता- -ताः  
सार २८४: ५.

चामीकर-प्र(भ>)भा<sup>१</sup>- -भा सुमु  
१५.

चामु(रुड>)ण्डा<sup>१०</sup>- -ण्डा व २०;  
आथ ३९४: ८; पी ४२२: ११;  
व ४५८: ६; द्या १३; सुमु १४;  
-०ण्डे व ४३१: ९; ४५८:  
११.

चाय- काय- टि. द.

चार-, चारितार्थ- ✓चर् द.

चारु<sup>१</sup>- -रु महा ३, ४४; पा २, १०;  
ह १७५<sup>i</sup>; लि ३०९: ७; रशिसं  
२; व ४४३: २३५<sup>i</sup>.

चारु-तर-

चारुतरा(र-अ)भिधान- -नम्  
महा ५, ५२.

चारु-मु(ख>)ली<sup>१</sup>- -ली सुमु  
१४.

✓चि<sup>(१)</sup>बधा.), चितुते<sup>i</sup> क १, १, १८;  
चिनोति<sup>k</sup> सार २७१: ८.

१वीयेते<sup>i</sup> मुं १, १, ८.

चयन<sup>i</sup>- -नम् मैत्रि १, १.

चित, ता<sup>k</sup>- -तः क १, २, १०; -तम्  
मै ३, ४; मैत्रि ३, ४; मैत्रे १, ३;  
-ताः सार २३३: १७.

चित्वा<sup>k</sup>- -त्याम् शि ६, २२३<sup>१३</sup>.

१चैत्य<sup>n</sup>-

चैत्य-हट- -हे तारा ८३;  
१३.

चीयमान<sup>०</sup>- -नः शां ३, १.

चेतव्य<sup>k</sup>- -व्यः मैत्रि ६, ३४<sup>i</sup>.

चेतु<sup>p</sup>- -ता श्वे ६, ११; मै ५, ७;  
मैत्रि ६, ७; १०; ब्र ३, ७; ब्रवि  
९५; गोउ ६५; राधा ४, २४.

चिकित- -चिकित्वा ✓कित(ज्ञाने) द.

✓चिकित्स, <sup>०</sup>त्सन- -<sup>०</sup>त्सा-  
<sup>०</sup>त्सित- -<sup>०</sup>त्स्य- ✓कित  
(<sup>०</sup>द्योतने) द.

a) विप. । b) <sup>०</sup>लनट<sup>०</sup> इति निसा. । c) 'चञ्चलात्' इति अञ्ज्या. । d) 'चलिते' इति अञ्ज्या. । e) व्यु. ?  
=देवीविशेष- । f) व्यु. ? =पिशुन- (तु. राती.) । g) व्यु. ? । h) व्यु. वैपश् यद्र. । i) सामन्त्रा १, ७, १५ । j) धा.  
\*प्रदीपने वृत्तिः द. । k) धा. चयने (=प्रप्रहणे) वृत्तिः द. । l) यनि. वा आ<sup>०</sup> इति वा ? उभयथापि धा. वृत्तिः ? (तु.  
सस्थ. टि. ब्रह्मन्->-ल्ल) । m) 'च याम्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । n) अण् प्र. (पा ४, ३, १२०) । विप. पंजा.  
=मढी, नभा, =चौतरा । o) =दीप्यमान- (वैतु. उत्र. =वर्धमान- इति) । p) धा. संज्ञाने वृत्तिः द. ।

चिकीर्षु- ✓क(करो) द्र.

चिञ्चिणी-

चिञ्चिणी-गात्र- -त्रम् हं १८.

चिणि<sup>१</sup>- -णि<sup>२</sup>, -णि-णि<sup>३</sup> हं १६.✓चित्<sup>१</sup>, >चेति, चेतति महा ५,  
१५०.चेतयते छां ७, ५, १; चेतयति  
नाप ६, १.चित्<sup>१</sup>- चित् अञ १, २४; ५,  
११; ते २, २९; ३, ३३; ४,  
३०<sup>३</sup>; ३६; ५, ३९; ६, ६२; नृउ  
७, ५; ८, ३; ४; पित्र ४, ८; महा  
४, १२३<sup>६</sup>; ५, १००; १०२;  
१०३; ६, ७९<sup>५</sup>; या२, २३<sup>५</sup>; योशि  
३, १; ४, १८; रुह ४४<sup>३</sup>; ४५<sup>३</sup>;  
वरा२, ४७<sup>५</sup>; ५३; १संन्या २, २९<sup>३</sup>;  
सार २८९: १८; चित्-चित् अञ  
४, ३३; चित्: अञ ३, १६<sup>१</sup>; महा  
४, ९२; ५, १०; १२४; १७८; रुह  
४५; १संन्या २, २७; चितम्  
पित्र ४, ४; ९; चिता १संन्या २,  
२६; चिति अञ २, ९; महा ४,  
१३; ५, १०७.२चैत्य<sup>१</sup>- -त्यम् अञ ५, ३६;  
१०; महा ४, १२३; ५, १८०;  
१संन्या २, २७<sup>१</sup>.चैत्य-दशा- -शाम् अञ  
३, १६.चैत्यदशा-हीन- -ने  
अञ २, १२.चैत्य-निर्मुक्त-चिद्-  
रूप- -पम् महा ६, ८१.चैत्य-बन्धन- -नैः  
१संन्या २, २७<sup>१</sup>.

चैत्य-मुक्त-चिद्-आ-

त्मन्- -त्मने १संन्या २, २५<sup>१</sup>.चैत्य-रहित- -तम् महा  
२, ६८.चैत्य-वर्जित-चिन्-  
मात्र- -त्रम् वरा ४, २९<sup>६</sup>;  
१संन्या २, २०<sup>१</sup>.चैत्यां(त्य-अं)श- -शाम्  
अञ २, ११.चैत्यांश-रहि(त>)-  
ता- -ता अञ १, २४.चैत्या(त्य-अ)नुपात-  
रहित- -तम् महा ४, ११८;  
१२१.चैत्या(त्य-अ)र्थ- -र्थं  
महा ५, ४.चैत्या(त्य-अ)वलम्बिन्-  
-न्वि अञ २, ९.चैत्यो(त्य-उ)न्मुख-  
चैत्योन्मुख-त्व--त्वम् महा ५, १७८<sup>१</sup>.चिच्-चक्र-धारा- -रया महा  
४, ९३.चिच्-चन्द्रमयी(यी-इ)ति-  
सर्वा(र्व-अ)ङ्ग-स्त्रवण- -णम्  
भा ३१<sup>३</sup>.चिच्-चैत्य-कलित- -तः महा  
६, ७७.चिच्-छक्ति- -क्तिः महा ५,  
११८; योशि ६, ४७; -क्त्या रापू  
२, २.

चिच्-छाया- -या सर ३, १२.

चिज्-जगद्-गत- -तम् महा  
४, १०.

चिज्-जड- -डानाम् स्क ४.

चित्-कला- -लाम् त्रिता १, ८६.

चित्-तत्त्व- -त्वम् अञ ५, ३१;  
३२; ६४; महा ४, ११८; ५,  
१७९.चित्त्व-संस्थि(त>)ता-  
-ता महा ४, १००.

चित्-त्व-

चित्त्व-हानि-

चित्त्वहानि-तस्(&gt;:)

अञ ४, ३३; रुह ४४.

चित्-प(र>)रा<sup>१२</sup>- -रा षो ५.

चित्परा-रूप- -पः कामे ९.

चित्-परात्-प(र>)रा<sup>१२</sup>- -रा  
षो ५.चित्परात्परा-रूप- -पः कामे  
९.चित्-परात्-परा(र-अ)ती-  
(त>)ता<sup>१२</sup>- -ता षो ५.चित्परात्परातीता-रूप- -पः  
कामे ९<sup>१०</sup>.चित्-परा(र-अ)नन्द- -न्दम्  
ते ३, ८.चित्-प्रकाशां(श-अं)श-कल्पि-  
(त>)ता- -ता अञ १, ५१.चित्-प्रति-बिम्ब- -म्बेन सर  
३, १३.चित्-प्रसादो(द-उ)पलब्धा-  
(ब्ध-आ)त्मन्- -त्मा १संन्या  
२, १६.चित्-सद्-आनन्द-ब्रह्मन्- -ह्य  
वरा ३, १९.चित्-सद्-आनन्द-रूप- -पाय  
वसू १.

a) व्यु. १. b) व्यु. १. = च्चनिविशेष- । c) 'चिण्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु निसा., JC.) । d) 'चिञ्चिणि' इति निसा. । e) <✓चि ('संज्ञाने) इति कृत्वाऽन्यथासिद्धावपि सत्यां पाप्र. प्रसिद्धेः पृथक् निर्देशः द्र. । f) भावकर्म-कर्त्रादिभेदतो विभिन्नार्थकः सन् वैश. सुकरार्थविवेकः कृत द्र. । g) वैतु. उन्न. चिच्चैत्य- > -त्यम् इति । h) 'चित्तम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । i) भाप. । j) चे° इति अज्या. । k) द्वैत° इति अज्या. संटि. । l) चे° इति निसा. च अज्या. च मुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. अज्या. संटि.) । m) °यीस° इति अज्या., °यं स° इति अज्या. संटि. । n) = देवीकलाविशेष- । o) °तीत° इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।



चित्-सोनिध्य- -ध्यात् सांस् १,  
१६४<sup>२</sup>.

चित्-सामान्य- -न्यम् अत्र ३,  
१७.

चित्-सामान्य-स्व-रूप-  
-पस्य अत्र १, २३.

चित्-सारा(र-आ)विभूता-  
(त-आ)नन्द-विग्रह- -हम्  
त्रिवि ७, ५०.

चित्-सूत्र-

चित्सूत्रा(त्र-आ)घ्राण-  
-णयोः पाशु १, २४<sup>३</sup>.

चित्-सूत्र-त्रय- -विन्मय-  
लक्षण- -णम् पाशु १, १४.

चित्-स्व-रूप<sup>b</sup>-

चित्स्वरूप-वत् पाशु १,  
२१.

चित्-स्व-रूप, पा<sup>c</sup>- -पः अता  
२; -पम् गोड ४१<sup>d</sup>; त्रिवि ७,  
२९; वड ४, ५; -पा ता ३, ७; ८.

चित्-अंश- -शः सार २८९:  
२२<sup>e</sup>.

चित्-अक्षर- -रः ते ६, ६९.

चित्-अग्नि-स्व-रूप- -पम् मं  
२, २, ५.

चिदग्निस्वरूप-परमानन्द-  
शक्ति-स्फुरण- -णम् भा ३२<sup>f</sup>.

चित्-अचैत्या(त्य-अ)खिला-  
(ल-आ)त्मन्<sup>g</sup>- -त्मा महा ६,  
७७<sup>h</sup>.

चित्-अणु- -णोः महा २, ४.

चित्-अन्वय- -यात् महा ४,  
७६; वरा २, ६३.

चित्-अम्बर<sup>h</sup>- -रम् जाद ४,  
४९.

चित्-अर्णव- -वः महा ५, ११७.

चिद्-अवसान, ना- -नः सांस्  
१, १०४; -ना सांस् ६, ५५.

चिद्-अहं-भाषण- -णम् ते ५,  
३९.

चिद्-आकार- -रम् ते ६, ६२;  
-रात् रूढ ४<sup>i</sup>.

चिदाकार-तस्(>)रूढ ४४.

चिदाकार-स्व-रूप- -पः ते  
३, ४३; ५, ६५.

चिद्-आकाश- -शम् अत्र १,  
२२; ५, ९२; ते ६, ४९; ६२; ७०;  
महा ४, ५८<sup>j</sup>; ५९; ५, ५६; -शे  
अत्र ५, ११३; ११७; नाद ३९;  
वरा २, ५१.

चिदाकाश-मय- -यः ते ३, ३

चिद्-आत्मक- -कः ते ४, ५;  
७८; महा ६, ८०; योशि ४, १२;

राड ३, १; वड १, १९; -कम्  
ता १, २; ते ६, १०७; महा ४,  
६३; मु २, २, ५५; योशि २, ६<sup>k</sup>.

चिद्-आत्मन्- -त्मनि अक्षि ४५;  
अध्या ९, २३; अत्र २, २७; ते ३,  
४६; महा ४, १२२; ५, ५५; योशि  
४, १५; रापू १, ६; -त्मने योशि ६,  
३; वरा २, ३४; १ संन्या २, ३२;

-त्मा अत्र ३, ८; ५, १३; ते ३,  
१४; ४, १; -त्मानम् अक्षि ४६;  
अत्र ५, २३; ३०.

चिद्-आदित्य- -त्यः मैत्रे २,  
१४.

चिदादित्य-प्रकाशन- -नात्  
महा ४, ११७<sup>l</sup>.

चिदादित्य-स्व-रूप- -पम्  
मं २, २, ५.

चिदादित्यस्वरूप-वत्-  
-वान् ते ३, २८.

चिद्-आद्या(द्य-अ)द्वितीय-  
ब्रह्म-संवित्ति- -त्तिः व १०.

चित्-आनन्द<sup>k</sup>- -न्दौ नृउ  
७, ७.

चिदानन्द-तरङ्गा(ङ-आ)-  
कार- -रम् सि ५, ५.

चिदानन्द-तरङ्गि(र>)गी-  
-ण्याः सि ५, १६.

चिदानन्द-मय- -यः ते ३,  
४; -यैः त्रिवि ७, ५०.

चिदानन्दमय-वेदिका-  
-का त्रिवि ७, २४.

चिदानन्दमया(य-अ)-  
नन्त-दिव्या(व्य-आ)राम- -मैः  
त्रिवि ७, १९.

चिदानन्दमया(य-अ)-  
नन्त-पुष्प-माल्य- -ल्यैः त्रिवि  
७, ५०.

चिदानन्दमया(य-अ)-  
नन्त-प्राकार-विशेष- -वैः सि  
५, २.

चिदानन्दमया(य-अ)-  
नेक-प्राकार-विशेष- -वैः त्रिवि  
६, २२.

चिदानन्द-रस- -सम् सार  
२१९: ४.

चिदानन्दरस-निर्झर-  
-रैः त्रिवि ७, २१<sup>l</sup>.

चिदानन्दा(न्द-अ)-चल-  
-लः त्रिवि ६, १८; सि ३, १.

चिदानन्दा(न्द-आ)त्मन्-  
-त्मने दत्ता २; व ४५६: ८.

चिदानन्दै(न्द-ए)करस-  
-सम् शां २, १; ३, १.

चित्-आनन्द<sup>o</sup>- -न्दः ब्रवि  
९५; -न्दम् कै १, ७; मु २, २,  
५०; -न्देन सार २१९: ३.

a) °ब्रह्मा° इति निसा. । °आघ्रा° = °घ्रा° इति उत्र. ? । b) षस. । c) बस. । d) विश्वरू° इति आन. ।

e) 'सदानन्दस्व...शक्तिस्मरणम्' इति निसा. संटि. । f) द्रस. गर्भितेन कस. गर्भितः बस. । g) °ल्या कि° इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । h) = तीर्थविशेष- । i) 'मदात्मकम्' इति अज्या. । j) °ल्याव° इति अज्या. । k) द्रम. । l) °निर्झरैः इति अज्या. संटि. ।

चिदानन्दा(न्द-अ)नन्त-  
चित्-सागर- -रैः सि ६, ७.  
चिद्-भासि- -सिः आपू ४<sup>१०</sup>;  
मं २, २, ५.  
चिद्-भासा- -सः पै २, २, ५;  
यो ३, ३०.  
चिद्-भासास्य- -स्यः महा ५,  
९९.  
चिद्-आश्रय, या- -यः पित्र ४,  
७; -यम् पित्र ४, ७; ८<sup>१</sup>; ९; -या  
पित्र ४, ७.  
चिद्-एकत्व-परिज्ञान- -ने  
अज्ञ ४, ३४; रुह ४६.  
चिद्-एकत्व-व्यवस्थिति- -तेः  
अज्ञ ४, ३४; रुह ४६.  
चिद्-एक-रस- -सः नृउ १,  
१०; ११.  
चिद्-ग्रन्थि- -न्यौ पत्र २.  
चिद्ग्रन्थि-बन्धन- -नम्  
पाशु १, १४.  
चिद्-वन- -नः ते ३, १३; ५,  
६०; नृउ ८, १; ४; ब्रवि ९५; १०९;  
-नम् अघ्या ६१; त्रिवि ७, २०;  
-ने पाशु २, १७; महा ४, २५.  
चिद्धना(न-आ)नन्द-रूप-  
-पः ते ५, ६६.  
चिद्धना(न-आ)नन्द-वि-  
ग्रह- -हः ते ६, ५९.  
चिद्धनै(न-ए)क-रस- -सः  
ते ६, ६५.  
चिद्-दर्पण- -णे अज्ञ ४, ७१.  
चिद्-धर्मन्- -र्मा सांस् १, १४६.  
चिद्-ब्रह्मन्- -ह्य अज्ञ ५, २१;  
२२.  
चिद्-भाव- -वः महा ५, ९९.  
चिद्-रवि- -विम् वा ३०.  
चिद्-रस-पूर्ण>र्णा- -र्ण्या

ते १, ५१.  
चिद्-रूप, पा- -पः नृउ २, ८;  
९; ९, २; सार २९०: ५; सांस्  
६, ५०; -पम् त्रिता ५, १; पाशु  
२, २५; वरा ३, ४; -पया सार  
२९०: १०; -पे सार २९२:  
८; -पैः त्रिवि ६, २२; २३; ७,  
२; सि १, ६.  
चिद्रूप-त्व- -त्वात् नृउ २, ९.  
चिद्रूप-दीप- -पम् योशि ६,  
२०.  
चिद्रूप-देहक- -कम् महा  
४, ४२.  
चिद्रूप-परा(र-अ)नन्त-  
नित्य-मुक्त- -क्तैः सि ४, ११.  
चिद्रूप-मात्र- -त्रम् ते ३, २६  
चिद्रूप-विलास-निभ-  
चिन्मया(य-आ)सन- -नम् सि  
४, ९.  
चिद्रूपा(प-आ)दित्य-मण्ड-  
ल- -लम् त्रिवि ७, २०.  
चिद्-वपुस्- -पुषः वरा २, ६६.  
चिद्-वह्नि- -ह्नौ अज्ञ ५, १२.  
चिद्-व्योमन्- -म अज्ञ ५, ३६.  
चिद्बोम-तालुक- -कम् वउ  
४, ३२.  
चिद्-विवर्त-जगत्- -गतः वरा  
३, ७.  
चिन्-निष्पन्दा(न्द-अं)श-  
मात्र- -त्रम् अज्ञ १, ४७; महा  
४, १०.  
चिन्-मथना(न-आ)विर्भूत-  
चित्-सार- -रम् त्रिवि ७, १९<sup>१</sup>.  
चिन्-मनः-कलना(ना-आ)-  
कार- -रम् महा ६, ६.  
चिन्-मय- -यः ग ५; ते ३, २;  
नृउ ८, २-५; ब्रवि ९५; योशि

४, २१; रापू ४, ३१; -यम् ते  
२, २५<sup>१</sup>; २६; २९; ३०; ३१;  
३३; त्रिवा २, १५७; नाप ५,  
३९; निर्वा २९८: ११; नृउ  
८, २; पत्र २; म ४८: ३; या २,  
२३; वरा २, ४७; ३, ५; -यस्य  
रापू १, ७; -यानि त्रिवि ७, १३;  
२७; -ये रापू १, १; -यैः त्रिवि  
६, २१; ७, ५०.  
चिन्मयी- -यी १ संन्या  
२, २४.  
चिन्मय-वेदिका- -का त्रिवि  
५, १४; सि १, १२.  
चिन्मया(य-आ)ती(त>)-  
ता- -ता दे १७.  
चिन्मया(य-आ)त्मक- -कम्  
यो १, ७८.  
चिन्मया(य-आ)त्मन्-  
-त्मानम् ते १, ९०.  
चिन्मया(य-आ)नन्द-  
दिव्य-विमान-च्छत्र-ध्वज-  
राजि- -जिभिः त्रिवि ७, ५०.  
चिन्मया(य-आ)नन्द-रूप-  
चिन्मयानन्दरूप-वत्-  
-वान् ते ६, ६१.  
चिन्मयानन्दरूपिन्-  
-पिणे त्रिवि ७, ४१; ह ३.  
चिन्मयानन्द-वेदित-  
-तम् पाशु २, ४.  
चिन्मयानन्दा(न्द-आ)सन-  
-नम् सि ५, १८.  
चिन्मया(य-आ)र्णव- -वे  
महा ५, १८८<sup>१</sup>.  
चिन्मया(य-आ)सन- -नम्  
त्रिवि ६, १९; २४; ७, २६.  
चिन्-मात्र, त्रा- -त्रः २ अव  
३३८: १; कै १, १८; ते ४, ४४;

a) °दादी° इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नाउ) । b) °तं चि° इति निसा., °भूतसत् सागरम् इति  
अध्या. संति. । c) द्वस. गर्भितेन षस. गर्भितः षस. । d) 'चिन्मात्रम्' इति अध्या. । e) 'अचित्तचित्तमात्मानम्'  
इति आन. । f) °महा° इति अध्या. ।

५, ६५; ससा २; -त्रम् अत्र ५,  
८; ६५; ६६; ते २, २४<sup>३</sup>; २५<sup>३</sup>;  
२६<sup>३</sup>; २७; २८<sup>३</sup>; २९; ३०<sup>३</sup>;  
३१<sup>३</sup>-३३<sup>३</sup>; ३८-४१; ५, ३१; ६,  
३९; ४२; त्रिमा २, ३१; वृत्  
५, ३; व १२; महा २, ३; ६८;  
४, २३; ८४; १२१; ५, ५३; सु  
२, २, ५०; या २, २३; वत् ५,  
३०; वरा २, २१; २४; ४७; ७२;  
-त्रा अध्या ४४; -त्रात् ते २, ३२;  
३४<sup>४</sup>-३७<sup>४</sup>; ३८; ४०<sup>४</sup>; ४१<sup>४</sup>; महा  
५, ५९; -त्रे महा ४, १२२;  
-त्रेण ते ४, ४; ३७.

चिन्मात्र-ज्योतिस्- -ति:  
मैत्रे ३, २१.

चिन्मात्र-परम- -म: शां १,  
७, २०.

चिन्मात्र-रूप- -प: ते २, २९

चिन्मात्र-वासन- -न: सु २,  
२, ७०.

चिन्मात्र-विग्रह- -ह: ते २,  
३३; ३, ७; -हे सु २, २, १८.

चिन्मात्रै(त्र-ए)क-स्व-  
रूप-

चिन्मात्रैकस्वरूप-वत्-  
-वान् ते ४, ४.

चिन्मात्रै(त्र-ए)का(क-आ)-  
त्म-रूप-

चिन्मात्रैकात्मरूपिन्-  
-पिणि महा ५, १५९.

चिन्-लिङ्ग- -ङ्गम् त्रिता १, ३४.

चित्<sup>०</sup>- -चिता रापू ४, ९<sup>b</sup>.

चिति- -ति: महा ५, १८०; मैत्रि ६,  
३३; योशि ४, २; -ते: योसू ४, २१.

चिति-तन्-मात्र- -त्रेण ब्रसू ४,  
४, ६.

चिति-मज्जन- -नम् महा ५, ४.

चिति-शक्ति- -क्ति: योसू ४, ३३.

चित्<sup>०</sup>- -त्तम् प्र ४, ८; सुं ३, १,

९; छां ७, ५, १; २<sup>१</sup>; ३<sup>१</sup>; २६, १;

क्रौ ३, ३; गौ २, २५; ३, ४४-४६;

४, २६-२८; ५४; ६१<sup>१</sup>; ६२; ६६;

७२; ७६; मना २, ७९<sup>१</sup>; मैत्रि ४,

१; ३; ५; १०; मैत्रि ६, १९; २७;

३४<sup>१</sup>; मैत्रे १, ४, ३; ५; ७; पदं १;

ते २, ७; ४, ७; ५, ३२; ४४; १००;

नाद ४१-४३; ५४; ५६; सुबा

५, ६; ७<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; ध्या ८२; १योत

८३<sup>१</sup>; योचू ५५; नाप ४, ४; ५,

१; त्रिमा १, ९; मं ५, १, २; यो १,

६२; ७३; ३, १३; जाद ४, ५४;

६, १६; प्रा ४, १; पै ३, १; महा

३, २१; ४, ६६; ९१; ९३; १०४;

५, ५१; १३०; ६, ४; शारी १;

योशि १, २९; ३०; ५९; ६४;

१२४; १२६; १३५; ३, १४;

२५; ५, ४९-५१; ६२; ६, ५८;

५९; ६९<sup>१</sup>; ७२<sup>१</sup>; ७५; १संन्या २,

४१; अत्र १, २३; ५६; ३, ६;

१६<sup>१</sup>; ४, १२; १५; ४०<sup>१</sup>; ४२;

४७; ४९; ५०; ७९; ८६; ५, १०;

४३; ४५; ४६<sup>१</sup>; ११७; अक्षि ३३;

अध्या १<sup>१</sup>; २६; ३५; वरा १, ४;

२, ६५; ३, १८; शा २; ३; दत्ता

२; सौ २, १०; सु २, २, २५;

२८; ५४; १शिसं ५९<sup>१</sup>; २शिसं

६९<sup>१</sup>; भव ३, १५; २०; २८; योसू

१, ३७; ४, ५; २२; २५; गौ ६,

१८; २०; १२, ९; -त्तस्य छां ७,

५, ३; गौ ४, ७७; मै ४, ४, ४;

मैत्रि ६, २०; ३४; मैत्रे १, ४, ६;

त्रिमा २, २४; २६; ३०; ३१; यो

१, १; शां १, ७, ५२<sup>१</sup>; शारी १;

१संन्या २, ४१; २अव ३३७;

७; ८; अक्षि ३४; पाशु २, ३६;

सु २, २, २४; योसू ३, १; ११;

१२; ३९; ४, १६; -त्तात् छां ७,

५, ३<sup>१</sup>; ६, १; -त्ते छां ७, ५, २;

गौ २, १३; मना २, ६३<sup>१</sup>; सुबा

५; ते ३, १९; ५, ४६; द १५;

२०; करु २५; जाद ६, १६;

पाशु २, ३७<sup>१</sup>; महा ५, ५<sup>१</sup>; ३०;

४९; ५३; योशि १, ३१; ६, ५८;

अत्र २, १२; ५, ६३; १११; वरा

४, ६; ३०; सार २५१; ७; २८३;

१०; -त्तेन मना २, ७९<sup>१</sup>; ते

५, ४१; ८५; नाप ६, १; जाद ६,

१७; -त्तै: अत्र २, ४१.

चित्-कर्दम-चारिन्- -रिणाम्

महा ३, ४६; या २, १२.

चित्-काल- -ला: गौ २, १४.

चित्-क्षय- -यम् अक्षि ३.

चित्-खञ्जन-मीन-चातुर्य-

-यम् सार २६५; ४१<sup>१</sup>.

चित्-ना- -गा: सर ३, २६.

चित्-नात- -तान् वरा ४, २८.

चित्-गो-चर- -रम् मं ५, १, २.

चित्-ज- -जा: गौ ४, ५४.

चित्-जय- -ये सु २, २, ४५.

चित्-तोषणा(ण-अ)न(त्-अ)-

न्तर- -रम् तारा ८३; २२.

चित्-त्याग- -गा: अत्र ५, ११७.

चित्-दर्पण- -णम् जाद ६, ४६.

चित्-दृश्य- -दृश्यम् गौ ४, २८;

३६; ७७.

चित्-धर्म- -र्म: सुं २, १, १.

चित्-नन्दि(न्>)नी- -नीम्

व ४३२; २०.

a) विप. । b) °तयाऽऽचिता इत्येवं कृत्वा °ताऽऽचितया इति आन. नादी. पक्षे. प्रौढवादमात्रम् ।  
c) नाप. । =अन्तः-करण- । d) तैआ १०, ६३, १ । e) 'चित्:' इति अख्या. । f) 'दुःखम्' इति अख्या. संदि. ।  
g) मा ३४, ५ । h) तैआआ १०, ६३ । i) 'चित्तशुद्धौ' इति निसा., अख्या. संदि. । j) °तै: इति अख्या. संदि. ।  
k) चित्° इति सुपा. यनि. सु-शोधः ।



चित्त-नाश- -शः अञ ४, १४;  
 १५; मु २, २, ३२; -शस्य शां  
 १, ७, २४; -शे अञ ४, २१.  
 चित्तनाशा(श-अ)भिधान-  
 -नम् अञ ४, १६; मु २, २, ३३.  
 चित्त-निग्रह- -हः महा ३, २०.  
 चित्त-प्रसाद- -दात् सां ६, ३१.  
 चित्त-प्रसादन- -नम् यो २, १,  
 ३३.  
 चित्त-बन्ध- -न्धम् ते ३, ६४.  
 चित्त-बन्धन- -नम् ते १, २७.  
 चित्त-बालक- -कम् मु २, २, ७.  
 चित्त-बीज- -जस्य मु २, २, २६.  
 चित्त-भृत्य-जना(न-आ)-  
 कीर्ण- -र्णम् महा ३, २९.  
 चित्त-भेद- -दात् यो २, १५.  
 चित्त-मध्य-स्थ- -स्थम् मैत्रि  
 ६, १९.  
 चित्त-महत्ता- -तायाम् वरा ३,  
 २१.  
 चित्त-मालिन्य-संजात- -तम्  
 महा ४, १.  
 चित्त-मूल- -लः अध्या २६;  
 वरा ३, २११.  
 चित्त-रञ्जक- -कम् ते १, ३४.  
 चित्त-रिक्त- -क्तम् १ संन्या २, ४५  
 चित्त-लय- -यः १ योत २३; सौ  
 ३, १.  
 चित्त-वत्- -वान् छां ७, ५, २.  
 चित्त-विक्षेप- -पाः यो २, ३०.  
 चित्त-विद्- -विदः गौ २, २५.  
 चित्त-विभ्रम- -मम् वरा २, ६४.  
 चित्त-वृक्ष- -क्षस्य अञ ४, ४१;  
 मु २, २, २७; ४८.  
 चित्त-वृत्ति- -त्तयः यो २, १७;  
 -त्तम् ते ३, ६७; सार २, ५०;  
 ७; -त्ते ते ४, ५३.

चित्तवृत्ति-निरोध- -धः  
 यो २, २.  
 चित्तवृत्ति-विनिर्मुक्त- -क्तम्  
 ते १, ८१.  
 चित्तवृत्ति-विहीन- -नः ते  
 ३, १४.  
 चित्तवृत्त्य(ति-अ)वभासक-  
 -कः ते ४, ५३.  
 चित्त-शम- -मः अञ ४, ७९.  
 चित्त-शान्त्य(न्ति-अ)र्थ- -र्थम्  
 अञ ४, ४४.  
 चित्त-शुद्धि- -द्धिः नाप ५, ३५;  
 -द्धिम् १ संन्या २, १; नाप १, २.  
 चित्तशुद्धि-कर- -रम् मैत्रे  
 २, ९.  
 चित्त-संयम- -मात् शां १, ७,  
 ५२.  
 चित्त-संविद्- -वित् यो २, ३५  
 चित्त-सत्ता- -त्ता अञ ४, १५;  
 ५, ११७; -त्ताम् अञ ४, १५.  
 चित्त-सामर्थ्य- -र्थम् योत ७३.  
 चित्त-स्थिति- -तेः सां १, ५८.  
 चित्त-स्पन्द- -न्दः अञ ४, ८९.  
 चित्त-स्पन्दित- -तम् गौ ४, ७२  
 \* चित्त-स्वरूपा(प-अ)नुकार-  
 -रः यो २, ५४.  
 चित्ता(त-आ)कर्षि(न>)णी-  
 -णी आथ ३९५; ८.  
 चित्ता(त-आ)काश- -शम् महा  
 ४, ५८.  
 चित्ता(त-आ)ख्य- -ख्यम् अञ  
 ५, ४६.  
 चित्ता(त-आ)त्मन्- -त्मानि छां  
 ७, ५, २.  
 चित्ता(त-आ)दर्श-कलङ्कित-  
 -तम् अञ ५, ३४.  
 चित्ता(त-आ)दि- -दि ते ५, ३२.

चित्तादि-विभ्रम- -मः अञ  
 ५, ११; -माः अञ ५, १२.  
 चित्तादि-सर्व-भाव- -वेष्टु  
 ते १, ३१.  
 चित्तादि-सर्व-हीन- -नः  
 मैत्रे ३, १०.  
 चित्ता(त-आ)नन्द- -न्दम् सौ  
 २, ९.  
 चित्ता(त-अ)नुकारिन्- -रीणि  
 भव ३, २७.  
 चित्ता(त-अ)न्तर-दृश्य- -दृश्ये  
 यो २, २०.  
 चित्ता(त-अ)भाव- -वात् ते  
 ५, १९; -वे अध्या २६.  
 चित्ता(त-अ)हंकार- -रौ त्रिब्रा  
 १, ६.  
 चित्ताहंकार-यन्तु- -न्तारम्  
 शु २, ५.  
 चित्तै(त-ए)क-कर(ण>)णा-  
 -णा पै २, ४२; शारी ५.  
 चित्तै(त-ऐ)काश्य- -श्यात् मु २,  
 २, ४९.  
 चित्तै(त-ए)का(क-अ)यन-  
 -नानि छां ७, ५, २.  
 चित्तो(त-उ)न्मेष-निमेष-  
 -षाभ्याम् अञ ५, ४०.  
 चेतन- -नः क २, २, १३; श्वे ६,  
 १३; ब्र २; नाप ३, ८०; यो २,  
 ७५; महा २, ६; अञ २, २०;  
 गोपू २०; भव २, ४९; पिब्र ४,  
 ४; सांका ५५; -नम् ते ६, ६६;  
 महा ५, १०; १ संन्या २, ४५; सर  
 ३, २६; पिब्र ४, ५, ६३; -नानाम्  
 क २, १३; श्वे ६, १३; गोपू २०;  
 शु ७१; भव २, ४९; -नेन मै २,  
 ५; मैत्रि २, ५; १ संन्या २, २२.  
 १ चैतन्य- -न्यः मैत्रे ३, ३;

a) °लम् इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.). b) 'चिन्त्यमेवं विनिर्मुक्तम्' इति निसा. अख्या. च मुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. आन., JC.). c) चित्रं इति अख्या. संटि. d) चित्तस्य स्व° इति संटि. e) विप. । स्वार्थे यञ् प्र. उंसं. (पावा ५, १, १२४) ।

भव २, ३०.

२चेतन्य<sup>०</sup>— न्यम् मैत्रि ६,  
१०; ३८; ससा १, ११<sup>३०</sup>; २४;  
३३; ३४; नि१४; २८; शु ३, २;  
ते ३, १६; ४, ४६<sup>३</sup>; योचू ११०;  
अञ ५, ७८; त्रिता १, ३४; ४८;  
करु ४०; ४१; जाद १०, ९; वि  
२०; भव २, ३१; सांसू २, २०;  
न्यस्य योशि ४, १; न्ये व्र २;  
मं १, १, ८; पत्र २.

चेतन्यघन<sup>०</sup>—

चेतन्यघन-वत्—

-वात् ते ५, ६०.

चेतन्य-चित्— -चित्

अहै २.

चेतन्य-ज्योतिस्— -ति:

त्रिभा २, १५६.

चेतन्य-दी(त&gt;)सा—

-सा वृउ ९, ६.

चेतन्य-प्रवेश— -शात्

वउ ४, २२.

चेतन्य-ब्रह्म-चारिन्—

-री म ४९: ३.

चेतन्य-भाव— -वम्

त्रिता १, १५.

चेतन्य-मात्र— -त्र: ते ४,

४; -त्रम् ते ६, ४३.

चेतन्यमात्र-स्व—

-स्वात् ते ६, ३०<sup>१५</sup>.

चेतन्यमात्र-संसिद्ध—

-द्ध: ते ४, ४७<sup>०</sup>.

चेतन्य-रूप— -प: ते ३, ४

चेतन्यरूपि(न&gt;)-

णी— -णीम् त्रिता १, ८४.

चेतन्य-शक्त्य(क्ति-अ<sup>१</sup>)-

लङ्कृत-स्वात्मचेतन्य-कैला-

से(स-ई)इवर-लिङ्गा(ङ्ग-आ)-

कार— -रम् सि ६, २८.

चेतन्य-स्व-रूप— -प:

ते ३, ३३.

चेतन्यै(न्य-ए)क-तान—

चेतन्यैकतान-ता—

-ता मं १, १, ९.

चेतन-मात्र<sup>०</sup>— -त्र: मै २, ५; ४, ५;मैत्रि २, ५१<sup>३</sup>; ५, २१<sup>३</sup>; ६, १७<sup>३</sup>.चेतन-वत् मै २, ३; ४<sup>३</sup>; ५; ९;मैत्रि २, ३; ४<sup>३</sup>; ५; ६; पै १, ३०.

चेतन-व(त&gt;)ती— -ती मै ५,

५; मैत्रि ६, ५.

चेतन-समन्वि(त&gt;)ता— -ता

त्रिभा २, ४.

चेतना(न-अ)चेतना(न-आ)-

त्मक— -कम् वरा २, ५३; महा

४, ७३.

चेतनाचेतनात्मिका— -का

सी १०.

चेतनी/कृ

चेतनी-कर्तुम् पै १, २८.

चेतनै(न-ए)क-तान— -ने शां

१, ७, ३३<sup>१</sup>.

चेतनो(न-उ)देश— -शात् सांसू

२, ७.

चेतना— -ना गु ७१; गी १०, २२;

१३, ६.

चेतना-वत्— -वत् सांका २०.

चेत(त>)न्ती— -न्ती सर २, ४९<sup>१</sup>.

चेतयितव्य— -व्यम् प्र ४, ८; सुबा

५; ६; ९<sup>१</sup>; -न्ये सुबा ५.चेतस्<sup>१</sup>— -त: गी १, २५; ससा ६;

महा २, १३; ५, ६८; १२८; अञ

१, ४२; ४, २५; ७२; ५, १; सु २,

२, १७; १शिसं३९<sup>३</sup>; २शिसं४९<sup>३</sup>;

वपू १, १; -तस: मै ४, ४, ९;

मैत्रि ६, ३४; महा ४, ७; ५, ४९;

योशि ५, ६२; अञ ४, ९२;

अध्या ३४; सु २, २, ४६; ४७;

भव ३, ३१; -तसा सुं २, २, ३;

३, १, ९; गौ २, ९<sup>१</sup>; १०<sup>१</sup>; गर्भ

३; महा २, ९; ३५; ३, ६; १९;

४, ८; १०४; योशि ३, २३; अञ

१, ३२; त्रिता १, ३३; वरा २,

८३; गोपू १०; सार २५६: १३;

गी ८, ८; १८, ५७; ७२; -तसि

ध्या ६९; महा ३, ५५; योशि १,

६५; अञ १, १५; ५५.

चेत:—कर्तृत्व—भावन— -नम्

अञ १, ३१.

चेत:—क्षय— -य: अञ २, २३.

चेत:—परिक्षय— -य: अञ ५,

५१.

चेत:—स्थापन— -नम् शां १, १;

पै ३, १.

चेतश्-चाञ्चल्य—शान्ति— -न्तये

महा ५, ५६.

चेतो(तस्-अं)शु— -शून् गौ १, ६.

चेतो-मुख— -ख: मां ५; वृपू ४,

६; वृउ १, ८; नाप ८, १३; राउ

३, १; वउ १, १०; ५, ३६.

चेतो(तस्-अ)र्पण—निगद—

-दात् वसू १, १, २५.

चेतो-वृत्ति— -त्तिम् महा ५,

१७५.

a) तु. पा ५, १, १२४। b) सकृत् 'ऐक्यम्' इति आन.। c) षस.। उप. भाप. =राशि-।  
d) सर्वैचै<sup>०</sup> इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अञ्ज्या.)। e) °द्वस्वा° इति अञ्ज्या.। f) °क्त्या°  
इति मुपा. यनि. सु-शोध:। g) अवधारणे मात्रच् प्र. उसं. (पा ५, २, ३७), मयूरव्यंसकादित्वं वा उसं. (पासिकौ २,  
१, ७२)। h) चेता° (=चेतना° इति राती.) इति मुपा. यनि. सु-शोध:। i) °तने° इति निसा. अञ्ज्या. च मुपा. यनि.  
सु-शोधौ (तु. उन्न.)। 'संकल्पे मानसे' इति निसा. संटि.। j) ऋ १, ३, ११। k) मा ३४, ३। l) गपू. (पृ ६३)  
अन्तश्-चेतस्-> -तसा इत्यत्र 'अन्तः, चेतसा' इति पदद्वयेन शोध: द्र.।

चित्र,त्रा<sup>१</sup>-त्रः व ४३७: १८९<sup>१</sup>;  
 -त्रम् मना २, २४९<sup>०</sup>; ४१९<sup>१</sup>;  
 महा ४, १३२; १३३; ५, ५४;  
 १अव६; भ२, ६९<sup>०</sup>; लि३०९: ७;  
 व ४३७: १४९<sup>०</sup>; वपू १, ४९<sup>१</sup>;  
 वोस् ४, २३; -त्रा वृ३ ९, ६;  
 -त्रा: महा ५, १६२.  
 चित्र-क(र)>रा<sup>१</sup>-रा राधा १, २२.  
 चित्र-कू(ट)>टा<sup>१</sup>-००टे व ४३१: ६  
 चित्र-तम-  
 चित्रतम-प्रतिष्ठा- -ष्टा बा ५.  
 चित्र-तर- -रम् मैत्रि ६, १७.  
 चित्र-पुष्प- -ष्पै: शि ६, १४८.  
 चित्र-रथ<sup>१</sup>- -थ: गी १०, २६.  
 चैत्ररथ- -थम् २२ ३३: ७; -थेन  
 वस् १, ३, ३५९<sup>१</sup>.  
 चित्र-रेखा<sup>१</sup>- -खा राधा १, २२.  
 १चित्र-वर्ण<sup>१</sup>-  
 चित्रवर्ण-परिच्छन्न- -न्नम् शि  
 ६, १३६.  
 २चित्र-व(र्ण)>र्णा<sup>१</sup>- -र्णा वृजा  
 १, १.  
 चित्र-वस्त्र- -स्त्राणि शि ६, २५९.  
 २चित्र<sup>१</sup>-  
 चित्र-गु- -गुम् द १६<sup>१</sup>.  
 ३चित्र<sup>१</sup>- -त्रम् सांका ४१.  
 चित्र-दीप- -प: अस्ति ३९.  
 चित्र-मिति- -त्ति: मै४, २; मैत्रि ४, २  
 चित्रमिति-प्रतीकाश- -शे सुबा  
 ८.  
 चित्र-वत् सांसू ३, १२.  
 चित्र-स्थ-दीप- -पै: ते ६, ७९.  
 ४चित्र<sup>१</sup>- -त्र: -त्रम् कौ १, १.  
 ५चित्र(त्र)>त्रा<sup>१</sup>- -त्रायै व

४३८: ५.  
 ६चित्र(त्र)>त्रा<sup>१</sup>-  
 चित्रा(त्रा-आख्य)>ख्या- -ख्या  
 योशि ५, २७.  
 चिद्<sup>०</sup> क १, १, २२; २, १८<sup>१</sup>; तै २, ६,  
 १; छां ५, २, १; गौ १, १८; मै  
 ५, १; मैत्रि १, ४; मना २, १२,  
 ३९<sup>०</sup>; ए१०; २संन्या १७: १९<sup>०</sup>;  
 अन्न ५, २०<sup>३</sup>; गु ६३९<sup>१</sup>.  
 ✓चिन्त>चिन्ति, चिन्तयति मैत्रि  
 ४, ४; गर्भ ३; शि ७, १०५;  
 चिन्तयन्ति भ २, २६; चिन्तये  
 ते ३, २५; चिन्तयामि मैत्रि ६,  
 ७; अन्न ५, ५७; चिन्तयस्व  
 पित्र ४, ४; चिन्तय शां १, ७, १९;  
 अध्या ५; भव २, २९; चिन्तयेत्  
 गौ १, २४; योशि १, ७१; ५,  
 ४९; अना ५; ९; ३२; ते १,  
 ५०; ध्या ३१; ३४; ९३, १४;  
 नाप ३, ६०; ७०; त्रिब्रा २, १४८;  
 वरा २, ३२; योरा ९; राधा ३,  
 १४; गौ ६, २५.  
 चिन्त्यते ते ४, ३६; ५, ४५;  
 चिन्त्यन्ते सांका ६९.  
 चिन्तक- -केन मु २, २, ४३<sup>१</sup>.  
 चिन्तन- -नम् त्रिब्रा २, ३१; १४७;  
 २अव ३३८: १.  
 चिन्तनीय- -यम् ते ५, १९.  
 चिन्तयत्- -यन् वृ३ ३, ६; १०;  
 रार २, ६; मं २, ४, ६; शां १, ६;  
 १संन्या २, ५८; अव्य ६; गोपू  
 १०<sup>१</sup>; भव ५, १४; -यन्त: पा९,  
 ७; गौ ९, २२.  
 चिन्तयमान- -न: सार २२७: १६;

२३६: ८.  
 चिन्तयित्वा पै ४, ९; त्रिता १, ३३;  
 सुसु ३.  
 चिन्ता- -न्तया मैत्रि ४, ४; -न्ता  
 गौ ३, ३८; अन्न २, २४;  
 -न्ताम् महा ५, १५९; २प्र ३२:  
 २; ३६: ६; गी १६, ११; -न्तासु  
 अन्न २, ८.  
 चिन्ता-तन्तु- -न्तुभि: महा ६,  
 ३१.  
 चिन्ता-त्याग- -ग: महा ३, २६.  
 चिन्ता-दु:ख- -खम् ते ३, ६३.  
 चिन्ता(न्ता-अ)नल- -शिखा-  
 दग्ध- -ग्धम् महा ५, १३४.  
 चिन्ता-नाश- -श: अध्या १२.  
 चिन्ता-निचय- -चक्र- -क्राणि  
 महा ३, ७.  
 चिन्ता-पर- -र: यो ३, २९.  
 चिन्ता-मणि<sup>१</sup>- -णि: गुणो  
 ४२०: ४.  
 चिन्तामणि-काली- -लीम्  
 कामे ३.  
 चिन्तामणि-विद्या(द्या-अ)-  
 धिकारिन्- -री कामे १२.  
 चिन्तामणि-हनुमत्- -मते  
 लां २१३: ७; २१५: ५.  
 चिन्ता-हीन- -न: ते ३, १४.  
 चिन्तो(न्ता-उ)च्चाटन- -नम् वि  
 १२.  
 चिन्तित, ता- -तम् वरा ५, ३५;  
 -ताम् व ४३२: २०.  
 चिन्तित-कार्य- -र्याणि भा ४२.  
 चिन्तित-मात्र- -त्रात् अव्य ७.  
 चिन्तितवत्- -वान् महा ५, १६०.

a) विप. । <✓चि दीप्तौ । व्यु. विशेषः वैपश् यद्र. । b) ऋ ४, ३१, १ । c) तैआ १०, १६, १ ।  
 d) तैआ १०, ३९, १ । e) ऋ २, २३, १५ । f) ऋ ८, ८१, १ । g) कस. । h) बस. । i) =अग्नि- । <✓चि दीप्तौ ।  
 j) 'चित्तुम्' इति अज्या. संटि. । k) =आलेख्य- । <✓चि दीप्तौ । l) व्यु. ? =व्यक्तिविशेष- ।  
 m) =नक्षत्रविशेष- । <✓चि दीप्तौ । n) =वादीविशेष- । <✓चि दीप्तौ । o) अव्य. । व्यु. वैपश् यद्र. ।  
 p) तैआ १०, १०, ३ । q) ऋ १०, १०, १ । r) 'चन' इति तैआ १०, १, ३ । s) 'चित्तकेन' इति अज्या. संटि. ।  
 t) 'चिन्तयेत्' इति अज्या. संटि. ।



चिन्त्य- -न्यः मैत्रि ६, २०; गी  
१०, १७; -न्यम् श्वे १, २; ६, २;  
ब्रवि ६<sup>२</sup>; ते ३, ५३; ६, ४१; नाप  
९, १; त्रिता ५, ६<sup>३</sup>; अबि ६<sup>३</sup>.  
चिन्त्यमान- -नः क १, २, ८; ब्रवि  
१०<sup>१</sup>.

चिबुक<sup>१६</sup>- -कम् गु १६.

चिर<sup>०</sup>- -रम् छां ५, ३, ७; ६, १४, २;  
मैत्रि ७, १०; द १; शां १, ७,  
२७; महा २, २; ३, २३; ५,  
१७<sup>१</sup>; योशि १, ५४; अज १, १०;  
मवा ६; या २, १५; वरा २, ६६.

चिर-काल- -लम् नाप ६, १८; शां  
१, ७, ३५; -लात् योशि १, १५५.

चिरकाल-परिक्षीण- -मनना-  
(न-आ)दि-परिभ्रम- -मः अज  
१, २७.

चिरकाल-सेवा- -वया पै २, ५१  
चिरकाला(ल-अ)नुवृत्ति- -त्तिः  
महा ५, १७.

चिर-क्षिप्र- -व्यपदेश(श>)शा- -शा  
सी १४<sup>०</sup>.

चिर-जीविका- -काम् क १, १,  
२४.

चिरं-जीविन्- -विनम् द १; -विने  
दत्ता २; व ४५६; ९.

चिरं-तन- -नः त्रिवि १, ११; अध्या  
६८.

चिरंतना(न-अ)तिसूक्ष्म-वास-  
ना-बल- -लात् त्रिवि ४, १२.

चिर-लोक-लोक- -कानाम् तै २,  
८, २<sup>१</sup>.

चिर-वास- -सः मं १, १, ५<sup>१</sup>.

चिर-शून्य-निर्-जन- -ने तारा  
८३; ११.

चिर-समाधि-जनित-ब्रह्मा(द्वा-अ)-  
मृत-पान-परा(र-अ)यण-  
-णः मं ५, १, ९.

चिरा(र-अ)भ्यस्त- -स्ताः अज ४,  
८३; मु २, २, १०; -स्तैः मु २,  
२, १३.

चिराभ्यस्त-वासना-

चिराभ्यस्तवासना-तस्(>):  
१अव १८.

चिरा(र-अ)भ्यास-योग- -गेन मु  
२, २, १४.

चिरा(र-अ)युध्य- -व्यम् स्क १३.

✓चिल

चेल- -लानि नाप ३, ३०.

चैल-

चैला(ल-अ)जिन-कुशो-  
(श-उ)त्तर- -रम् गी ६, ११.

चैला(ल-अ)जिन-कुशो(श-उ)-  
त्तर- -रम् १योत ३५<sup>६</sup>.

चिह्न<sup>१७</sup>- -हम् जाद ५, १२; ६, ४४;  
-हानि १योत ४४; -हैः सार  
२७८; २२.

चिह्नित- -तम् गोउ ४६.

चीयमान- ✓चि द.

चीर<sup>१</sup>-

चीर-चर्म-वलकल-परिवृत- -ताः  
आश्र ३.

चीरा(र-अ)जिन-वासस्- -सः  
निर्वा २९८; १४.

✓चुद>चोदि

चोदक- -कः ब्रवि ५१; ५२.

चोदना-

चोदना(ना-आ)द्य(दि-अ)-वि-

शेष- -षात् ब्रस् ३, ३, १.

चोदयि(त्)>त्री- -त्री सर २, ४<sup>१</sup>५.

चोदित, ता- -तः महा ६, ६५; -ताः  
सार २३०; १८.

चोद्य- -द्यम् वस् ३.

चुबुक<sup>१६</sup>- -कम् ध्या ६९; १योत  
११३; योचू ४०; शां १, ७, ४३;  
यो २, ३४.

✓चुर

चोर- -रः महा ५, ७१; ६, २७;  
-रस्य मना २, ६४<sup>१</sup>; -रान् व  
४२८; ९; ११; १२; १४; १६;  
१८; २२; ४२९; १; ३; ५; ४३४;  
१७; २०; -रेभ्यः इ १०; १४.  
चौर्य- -र्यम् शारी ४.

चोर-ता- -ताम् महा ५, ७१.

चोर-समूह- -हान् व ४३४;  
१९.

चू(ङ)>डा<sup>१८</sup>- -डा मु १, १, ३४.

✓चूर्ण<sup>१९</sup>(विभेदने), >चूर्णि

चूर्ण- -णम् वृजा ३, २८; ४, ९.

चूर्ण-मान- -नेन शि ६, ४९.

चूर्ण-ह(स्त)>स्ता- -स्ताः कौ  
१, ४.

चूर्णा(र्ण-आ)धार-सत्-पात्र-

-त्रम् शि ६, ५४.

चूर्णी/कृ

चूर्णी-कृत्य वृजा ३, ३४.

चूर्णयित्वा वृजा ३, २८.

चूर्णित, वा- -ताभ्याम् यो २, ३०;  
-तैः गी ११, ७.

चूल<sup>१०</sup>- -लः वृ ६, ३, १०; -लाय वृ  
६, ३, ९<sup>१</sup>.

चूलि<sup>१०</sup>-

चूलि-तल- -लम् यो २, ३६<sup>१</sup>.

✓चू(\*समाप्तौ)

चूर्ण- -णम् मुं ३, २, १०.

a) व्यु? = हलु- । b) व्यु. वैप२ यद. । c) वा. क्रिवि. द. । d) चिरसंद<sup>०</sup> इति अख्या. । e) °शेन  
इति निसा. । f) 'चीरवासाः' इति निसा. । g) चै<sup>०</sup> इति निसा. । h) व्यु? = लक्षण- । i) व्यु? = वल- । j) ऋ १,  
३, ११ । k) व्यु? = चिबुक- । l) तैश्चाया १०, ६४ । m) व्यु? = शिरस्- इति कृत्वेह = योग<sup>०</sup> इत्याख्योपनिषद्-विशेष- ।  
n) = नाधा. । o) व्यु? = ऋषिविशेष- । p) च<sup>०</sup> इति निसा. । q) अर्थः व्यु. च<sup>१</sup> । r) 'चूलीतरुम्'  
इति निसा. संटि. ।

चेकितान- ✓कित(ज्ञाने) द्र.  
चेतन- °ना-, °न्ती-, °यितव्य-  
✓चित् द्र.

चेतव्य- ✓चि द्र.

चेतस्- ✓चित् द्र.

चेत- ✓चि द्र.

चेद् के २, ५<sup>२</sup>; क १, १, २७; तै २, ६,  
१<sup>२</sup>; छां १, १०, ९; १०; वृ १, ५,  
१५; पंह १; मैत्रे २, २३; वसू  
५; ते १, २८; नाप २.

चेल- ✓चिल् द्र.

✓चेष्ट- चेष्टते पाशु २, ८; वरा ३, १४<sup>२</sup>;  
राधा १, १८; गी ३, ३३; चेष्टति  
मना २, ६७<sup>२</sup>.

चेष्टा- द्या निर्वा २९८: ४; -ष्टा:  
त्रिवा २, ८८; अन्न २, ७; -ष्टासु  
अन्न २, ८.

चेष्टित- तम् सांस् ३, ५९; ६१.

चेष्टितुम् पै १, २८.

चेष्टित्वा वृ ६, ४, १९.

चैकितानेय- चैकितायन- चैकित्य-  
✓कित(ज्ञाने) द्र.

चैतन्य- ✓चित् द्र.

१चैत्य- ✓चि द्र.

२चैत्य- ✓चित् द्र.

चैत्ररथ- १चित्र- द्र.

चैल- ✓चिल् द्र.

चोदक- चोदना-, चोदयित्री-,  
चोदित-, चोद्य- ✓चुद् द्र.

चोर-, चौर्य- ✓चुर द्र.

च्छ- च्छम् द २.

✓च्यु, च्यवते नाप ३, ५७; इ १२:  
१०; २प्र ३५: १२; च्यवन्ते मुं  
१, २, ९; गौ ४, १०; मना २,

७८<sup>२</sup>; च्यवन्ति गी २, २४;  
च्योद्वम् मना २, ९९<sup>२</sup>; ह  
२०.

च्रीं व ४२८: ९.

छ

छं आय ३९५: २१; हंषो ६; व  
४३६: ५.

छंकार- -०र अक्ष ५.

छाल<sup>१६</sup>-

छालेय<sup>१७</sup>- -य: छाग २५:  
१७.

✓छद्, न्द> छन्दि, छादि, छादयामि  
वृजा ३, २०; अच्छादयन् छां  
१, ४, २<sup>२</sup>; छादयेत् वृजा ३, २०.

छत्र<sup>१८</sup>- -त्रम् शि ६, २१६; ७, ४६;  
-त्रेण सी ३७.

छन्दयित्वा सार २३३: ३; २६१:  
२०.

छन्दित- -त: सार २६१: १८.

छन्न- -न्न: -न्नम् वृ १, ६, ३.

छादन- -नम् वृजा ३, २१.

छादित- -ता: सार २३३: १७.

१छन्द<sup>१</sup>-

छन्द-तस्(>:) क १, १, २५; ब्रसू  
३, ३, २८.

२छन्द<sup>१</sup>- -न्दम् मना २, ३३<sup>१६</sup>.

छन्द-मय- -य: ए ९.

१छन्दस्<sup>१</sup>- -न्द: छां १, ३, १०; हं १०;

मना २, ८९<sup>२</sup>; ३५<sup>२</sup>; काला १;

वृपू १, ५; शु १, १८; २, ५<sup>३</sup>; द १;

११; रार १, ७; २, २; १०; २१;

२२; २८; ३१; ४२; ४९; ५२;

५५; ६०; ६३; ७०; ८२; ९५;  
९८; महा १, १<sup>२</sup>; सू २; सावि  
१०; ग ९; दत्ता १, २-५; ७<sup>३</sup>;

गरु २; सौ १, १<sup>३</sup>; सर १, ४;

२, १-१०; च २०: ५-८; चा

३; २प्र ३२: ११; १३; १५;

३३: ३; ७; ३४: ९; ३५: ४;

२३<sup>२</sup>; ३६: १६; १८; २१; सूता

१, २९; का १४; तुल ७०: २;

नापू ४, १६; हंषो ३; लां २१३:

२; मृ २; कालि ४०३: ११;

व ४२६: २; तारा ८३: १४; वपू

२, ३; -न्दसा छां १, ३, १०;

-न्दसाम् तै १, ४, १; छां १, ४,

२; मना २, ८९<sup>२</sup>; ३४<sup>२</sup>; वृपू १,

२; नाप ४, ३८<sup>२</sup>; बा १४; वपू

१, ४; गी १०, ३५; -न्दांसि वृ

१, २, ५; श्वे ४, ९; ना १; मना

२, ८९<sup>२</sup>; २९<sup>२</sup>; वृपू ५, ७; त्रिवि

२, १६; वा १६; महा १, १;

अव्य ५<sup>३</sup>; सावि ४<sup>३</sup>; त्रिता २,

६७; ४, ३६; गरु ११९<sup>२</sup>; २प्र

३६: २३; गोच ६६: १५; सार

२७८: ८; गार ४०६: ११;

४०७: १७; गु ५४; ८०; गी

१५, १; -न्दोभि: छां १, ४, २;

मना १, १०<sup>२</sup>; गी १३, ४;

-न्दोभ्य: तै १, ४, १; मना २,

८९<sup>२</sup>; नाप ४, ३८<sup>२</sup>.

छन्द-ऋषि- -षीन् मना २, ३५<sup>२</sup>

छन्दस्-त्व- -स्त्वम् छां १, ४, २.

छन्दो-गा- -गा: मुद्र ३.

छान्दोग्य<sup>११७</sup>- -ग्यम् सु १,

१, ३०.

a) अव्य. । व्यु. वैपश् यद्र. । b) तैआआ १०, ६७ । c) =प्रयच्छ इत्यस्य क्रिप. अन्त्याऽक्षर- ।

d) तैआ १०, ६२, १ । e) तैआ १०, ७, १ । f) =बीजमन्त्रविशेष- । g) व्यु. ? =ऋषिविशेष- । h) शुभ्रादित्वम्

उसं. (पा ४, १, १२३) । i) व्यु. ? =इच्छा- । j) व्यु. ? =१छन्दस्- (=नाउ. ) । k) तैआआ १०, ३३ ।

l) व्यु. ? < ✓छद् इति प्राघ: (तु. छां १, ४, २; या ७, १२) । =गायत्र्यादिवाच्य-वाचक- । m) तैआ १०, ६, १ ।

n) तैआआ १०, ३५ । o) तैआ १०, २६, १ । p) तैआ ७, ४, १ । q) तैआ १०, २२, १ । r) मा १२, ४ ।

s) तैआ १०, १, १० । t) 'छन्दर्षीन्' इति तैआआ १०, ३५ । u) =उपनिषद्विशेष- ।

छन्दोदैवत- तम् वपु २, ३.  
छन्दो(न्दस्-अ)भिधान- नात्  
वपु १, १, २५.

२ छन्दस्<sup>१०</sup>- न्दः मुं १, १, ५; अशि  
१, ६; सुबा २; सी २७; सू ११;  
रुह २९; कृपु ४.

छन्दो-वचन- नम् २ प्र ३६: २.  
छन्दयित्वा, छन्दित- छञ- / छद् ३.  
/ छलु > छलि

छलयत्- ताम् गी १०, ३६.

छा<sup>१०</sup> व ४३५: १६.

छाग<sup>१०</sup>- नम् शि ६, २०८; गस्य शि  
४, ६४.

छागलेय- छगल- द.

छात्र<sup>१०</sup>- त्रः त्रिवि २, १; ३, १; ४, २.

छादन- छादित- / छद् ३.

छान्दोग्य- १ छन्दस्- द.

१ छाया<sup>१०</sup>- या प्र ३, ३; वपु २, १६९;  
ध्या ८; ब्रवि ३७; वरा ५, ४१;  
२ शिसं ३४९; सांका ४१;  
-यायाम् कौ ४, १३<sup>१</sup>.

छाया(या-आ)तप- पयोः क २, ३,  
५; -यौ क १, ३, १.

छाया-मय- यः वृ २, १, १२; ३,  
९, १४.

छाया-वत् सांसू ३, १२.

२ छाया<sup>१०</sup>- या रुह १९.

३ छाया<sup>१०</sup>- यायै व ४३५: १६९<sup>१</sup>.

✓ छिद्, > छेदि, छिनत्ति खे ४, १५; दत्ता  
१, ६; गुप् ८; छिन्दन्ति इ १३: ५;  
सार २९१: ६; भव २, ३९; गी  
२, २३; छिन्धि महा ६, ३२;  
छिन्धि-छिन्धि त्रिता ३, ३३;  
दत्ता २; गरु १०; लां २१४: १४;

व ४२८: ६; ४३०: १३; ४३३:  
१०; ११; १४; ४३४: १४;  
छिन्धी व ४६४: १८; छिन्धात्  
तुल ७०: ८; शि ७, ५२; कभृ २, २.  
छैत्सीत् वृ ४, ४, २४; छिदः मना  
२, ५१९<sup>१</sup>.

छिद्यते वृ २, १, ११; सुबा ९; लु  
१८<sup>१</sup>; ते ६, १०१<sup>५</sup>; १आ १<sup>१</sup>;  
छिद्यन्ते मुं २, २, ८; महा ४, ८२;  
योशि ५, ४५; ६, ४०; अज ४,  
३१; सर ३, ३२; छित्थाः कौ  
२, १११<sup>१३</sup>.

छेदय-छेदय लां २१४: १६;  
२१५: १३; १४; व ४५६: १२;  
हंशो १३.

छित्वा मैत्रि ६, ३८; लु २२; नाप  
४, ३८; त्रिवि २, १७; महा ४,  
१०७; १ संन्या २, ६; पप ४१८:  
२३; अज १, ५३; रुह ३७; या  
१, १.

छिद्यमान, ना- नः सुबा १३<sup>३</sup>; शा  
१८; नया पा ७, ४.

छिद्र- द्राणि सुबा ४.

छिद्र-मय- यम् शि ६, १५०.

छिद्र-समन्वित- तम् शि ६,  
१४९.

छिन्द<sup>१०</sup>-

✓ छिन्द<sup>१०</sup>, छिन्देत् लु १४: १९.

छिन्न- ब्रम् महा ४, ९१; २ योत  
२, ५; शि ७, ८०; ८३: -ञे  
१ संन्या २, ३६.

छिन्न-क(ल्प) > ल्पा- ल्पाम् षो  
२२<sup>१०</sup>.

छिन्न-द्वैध- धाः गी ५, २५.

छिन्न-पाश- शः लु २२.

छिन्न-संशय- यः ध्या ३; नाप  
५, १७; महा २, ७४; गी १८, १०.

छिन्न-हस्त-

छिन्नहस्त-वत् सांसू ४, ७.

छिन्ना(न-अ)भ- अभम् गी ६,  
३८.

छिन्नाभ-मण्डल- लम् महा  
४, ९६.

छेत्तुम् शां ३, १; गी ६, ३९.

छेत्- त्ता गी ६, ३९.

छेद-

छेद-खाता(त-आ)दिक- काः  
योशि १, ५७<sup>१</sup>.

छेदन- नम् १ संन्या २, १०३; शि  
६, २४०.

छेदन-चालन-दाह- हैः शां १,  
७, ४३<sup>१</sup>.

✓ छृद्

छर्दि-

छर्दि-विधारण- णाम्याम् सांसू  
३, ३४.

## ज

१ जं<sup>१०</sup> व ४३५: १८.

२ जं<sup>१०</sup> आथ ३९५: २१; व ४३६: ५;

जं-जं व ४३७: १.

जं-कार- -०र अक्ष ५.

✓ जक्ष, जक्षति छां ३, १७, ३.

जक्षत्- -क्षत् छां ८, १२, ३; वृ ४,  
३, १३.

जगत<sup>१०</sup>- गत् ई १; क २, ३, २; खे ३,  
६९<sup>१</sup>; ४, १०; मैत्रि ६, १०; मना

a) = वेदाङ्गविशेष- । b) तु. टि. कुं । c) व्यु. वैप १ यद्र. । d) व्यु. ? < छत्र- इति पा ४, ४, ६२ ।  
e) ऋ १०, १२१, २ । f) °यापु इति आन. । g) व्यु. ? = सूर्यपत्नी- । h) व्यु. ? = देवीविशेष- । i) तैआ ३, १५, १ ।  
j) सकृत् 'छिद्यन्ते' इति आन. । k) 'छेदने' इति अज्या. । l) 'स्विद्यते' इति निसा. संटि., अज्या., 'स्थीयते' इति  
अज्या. संटि. । m) 'छेत्ताः' इति निसा. अज्या. च सुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. आन.; वैतु. आन. संटि. 'छेत्ताः' इति,  
शांआ ४, ११ 'मेत्ताः' इति) । n) शः प्र. उसं. (पा ३, १, १३८) । o) = क्तिबन्तः नाधा. । p) °बाक इति सुपा.  
यनि. सु-शोधः । q) °का इति अज्या. । r) °दो इति अज्या. । s) = बीजमन्त्रविशेष- । t) मा १६, ३ ।



१, ५९<sup>a</sup>; २, १३, १९<sup>b</sup>; ७९<sup>c</sup>;  
अशि ६, ५; वृजा २, ४; ५; १०; वृज  
९, ३; मन्त्रि ४; नि ४७; ते १,  
२९; २, १; ४, ९; ५, १६; ३०;  
१०५; ६, ३८; ४०; ४३;  
४५-४७; ४९; ५८; ६३<sup>d</sup>; ७१<sup>e</sup>;  
७४<sup>f</sup>; ७५-७८; ७९<sup>g</sup>-८३<sup>h</sup>;  
८४; ८५<sup>i</sup>; ८६; ८७<sup>j</sup>; ८८; ८९;  
९२<sup>k</sup>-९४<sup>l</sup>; ९५; ९७; ९८<sup>m</sup>; ९९<sup>n</sup>;  
नाद २७; आबो ३९; निर्वा  
२९७; ११; त्रिभा १, ३; २, ८;  
३०; मं २, १, ४; ४, ६; ५, १, ९;  
श ८; २२; रार ५, १०; रापू २,  
३; ४, ६; मुद्र २<sup>o</sup>; पै १, ९; महा  
२, ३५; ३, २१; ४८<sup>p</sup>; ४, २७;  
४४; ४८; ५४; ६५; ८७; ५, १९;  
५२; ५८; १०७; १०८; १८४;  
६, १०; ५८; योशि ५, ५३; ६,  
५९; १संन्या २, १३; अव्य ३;  
५; अन्न १, ३५<sup>q</sup>; २, ३५; ५, ८७;  
११०; अघ्या ६५; १आ ४; ८;  
पाशु २, २४; ४०-४२; ४६;  
२अव ३३७; ६; दे १<sup>r</sup>; करु  
३६; रुह ९; १६; ग ६<sup>s</sup>; जाद  
६, ४९; १०, ७; १२; गोपू १५;  
गोउ ५०; ५१; कृ १०; ११; या  
२, १४<sup>t</sup>; वरा २, २२; २५; २७;  
४५; ७१; ७२; ३, १४; १५; १७;  
१८; ४, ११; ३०; ५, ५५; दत्ता  
१, ३; सर ३, १६; योरा ८; ९;  
११; इ ११; १; शौ ५२; १२;  
स्व ६०; ४; सार २१९; ४;  
नी १, ५९<sup>u</sup>; ६९<sup>v</sup>; रु २१; रशिसं  
९; गु ५५; श्या २०; भव १,  
१९; ५५; २, ४२; ४, ६; ५, १६;

पिन्न ४, ८; वउ २, ३५; ३, १२;  
३५; ५२; ५४; ४, ४६; गी ७,  
५; १३; ९, ४; १०; १०, ४२; ११,  
७; १३; ३०; ३६; १५, १२; १६,  
८; -गतः क १, २, ११; श्वे ६,  
१७; मना १, १९<sup>w</sup>; २, ७१९<sup>x</sup>;  
७९९<sup>y</sup>; अशि ४, २१९<sup>z</sup>; शु ३,  
८; रापू ४, १२; त्रि १५; करु  
८; रुह ४८; महा ६, २५; ३६;  
अन्न ४, २६; ३५; सू ७९<sup>aa</sup>;  
वरा २, ६५; ७३; वडु ३१६;  
१४९<sup>ab</sup>; रशिसं १०; ३३९<sup>ac</sup>; शि  
६, १६०; ९<sup>ad</sup> व ४४२; ८; ४४७;  
१४; ४५२; १; ४५५; ६;  
विद्या १; वउ ३, ३३; सांसू ५,  
१८; गी ७, ६; ८, २६; ९, १७;  
१६, ९; -गताम् सर ३, १६;  
पाशु १, २; तुल ७०:२०; -गति  
मना २, ६७९<sup>ae</sup>; वृज ३, ४; शु  
३, ११; ५, ५५<sup>af</sup>; ७५; महा ३,  
१४; ४, ४७; ४९; ६, १; अन्न ४,  
४९; वरा २, ३७; गु २७; -गत्सु  
राउ ५, २७; -गन्ति महा ५,  
५५; वरा ३, २२; त्रिवि ५, १०.  
१जगती<sup>ag</sup> - ती मना २, २८९<sup>ah</sup>;  
४३९<sup>ai</sup>.  
२जगती<sup>aj</sup> - ती शि २, १३; ४,  
१३; १४; -स्या शि २, १३;  
-स्याम् ई १; प्र ५, ३.  
जगती-तल - ले गुषो  
४२१: ६.  
जगती-स्तम्भ-पट्टा-  
(ट्ट-आ)घ - घम् शि ४, १०.  
३जगती<sup>ak</sup> - ती छां ३, ११, ५;  
मैत्रि ७ ३; अशि १, ६; अ १;

वृपू २, २; ५, ४; रार २, ५२; ५५;  
अव्य ५; दत्ता १, ५; गार ४०७;  
१६; -तीम् शौ ५३: ३; -त्या  
वृपू ५, ४.  
१जागत - तम् छां ३, १६,  
५; महा १, १; च २०: ७; २प्र  
३२: १५; ३६: २१; शौ ५३: ७.  
जगच्-चक्र - क्रम् सी १४.  
जगच्-छब्दा(ब्द-अ)र्थ -  
जगच्छब्दार्थ-ता - ता महा ४,  
४६.  
जगज्-जाल-पदा(द-अ)र्था-  
(र्थ-आ)त्मन् - स्मा महा ६,  
५७.  
जगज्-जीवन - नम् नाप ४, ३८;  
१संन्या २, १२.  
जगज्-जीव-परमात्मन् - स्मनः पै  
२, ५३.  
जगज्-जीवे(व-ई)श्वरा(र-आ)दि-  
-दयः वरा २, ११.  
जगत्-क(र्तु>)त्री - त्रीं गोउ ४४.  
जगत्-कारण - णम् ग १३.  
जगत्-कारण-भू(त>)ता - ताम्  
भव ४, ५.  
जगत्-कारण-रूप - पस्य अन्न १,  
१५.  
जगत्-क्रिया - याम् महा ४, ११.  
जगत्-तन्मयता - ताम् शु ३, १९.  
जगत्-त्रय - यम् ते ४, १४; ५,  
८७; ९८; ६, ४२; आबो १३;  
शां १, ३, १२; महा ३, २१; ३८;  
४, ८४; १३४; योशि ६, ५९;  
अन्न ५, ३३; जाद ३, १३; वरा  
२, ७२<sup>al</sup>; त्रिभा २, ५२; अद्वै ४;  
नाउ १, ९; सिशि ३८१: १९;

- a) तैआ १०, १, ५। b) तैआ १०, ११, १। c) तैआ १०, ६३, १। d) 'मम' इति मा १६, ३; आन.।  
e) मा १६, ४। f) तैआ १०, १, १। g) तैआ १०, ३८, १। h) अ ७, ३२, २२। i) अ १, ११५, १। j) अ १०,  
१२१, ३। k) अ १, ८९, ५। l) तैआआ १०, ६७। m) विप.। वज्र. प्राति. द.। n) तैआ १०, २१, १ (=अदिति-)।  
o) तैआ १०, ४२, १ (=मेधा-)। p) व्यु. १ =पृथिवी-। q) व्यु. १ =छन्दोविशेष-। r) समाहारे द्वस.। s) 'जगद्रूपम्'  
इति अघ्या. संटि.।

यस्य पाशु १, ५; -ये महा ४, १२०; यो २, १२.  
 जगत्त्रय-वशीकरण- -णाय व ४५६: ६.  
 जगत्-स्वम्-अहम्-इत्या(ति-आ)-  
 दि-सर्गा(र्ग-आ)त्मन्- -त्मा महा ४, ४८.  
 जगत्-पति- -तिस् भव १, ५६;  
 -०ते त्रिवि ७, ४०; गी १०, १५.  
 जगत्-प्रलय-सृष्टि- -ष्टयः महा २, १०.  
 जगत्-प्राण- -णाय राप् ३, २.  
 जगत्-सत्यत्व- -स्वम् सांस् ६, ५२.  
 जगत्-सर्जन-कर्मन्- -मैणि वउ ३, ४६.  
 जगत्-सर्व-द्रष्टृ- -ष्टा मैत्रे ३, १४.  
 जगत्-सृष्टि- -ष्टिः मुद्र १, ८.  
 जगत्सृष्टि-कर- -रः योशि ५, ५२.  
 जगत्-सृष्टि-स्थित्य(ति-अ)न्त-  
 कारि(न्>)णी- -ण्यः गोच ६७: ७.  
 जगत्-स्थावर-जङ्गम- -माः शु ३, २१.  
 जगत्-स्थिति- -तिः ते ६, ९२;  
 योशि ४, १६; १९; -तेः महा ५, १६४; -तौ महा ४, ८३; १संन्या २, ५०; वरा २, ४९.  
 जगद्-अङ्कुर-रूप- -पः पै १, ८.  
 जगद्-अण्ड- -ण्डम् व १.  
 जगद्-अम्बा- -म्बाम् गु ३८.  
 जगद्-आकर्षण-सिद्धि-द- -दम् सौ ३, १.  
 जगद्-आङ्गवरा(र-आत्मक>)-  
 तिमका- -काम् महा ४, १००.  
 जगद्-आदित्य- -त्यः पाशु १, २८.  
 जगद्-आधार-कारि(न्>)णी-  
 -णी राउ २, ३<sup>a</sup>; सी ७<sup>b</sup>.  
 जगद्-आधार-भूत- -तम् राप् ५, ८.

जगद्-आनन्द-दायि(न्>)नी-  
 -नी विद्या १.  
 जगद्-आभास- -सः अध्या १०.  
 जगद्-आवलि- -लिः रुह ३३.  
 जगद्-आविर्भाव-तिरोभाव-  
 हेतु- -तुः सं १८.  
 जगद्-इन्द्र-जाल- -लम् मैत्रे १, ४, १२.  
 जगद्-ईश्वर-  
 जगदीश्वरी- -रीम् वउ ३३:  
 ६; ८; ४६५: १७.  
 जगदीश्वरा(र-आ)कार- -राः  
 त्रिवि ५, ११.  
 जगद्-उत्पत्त्य(ति-अ)पायो(य-उ)-  
 न्मेष-निमेष<sup>c</sup>- -षम् वउ ४, ३३.  
 जगद्-उद्भव- -वः ते ६, ७८.  
 जगदुद्भव-गर्भ- -भैः ए १२.  
 जगद्-उन्मेष-चित्र-कृत्- -कृत् महा २, ६.  
 जगद्-उपादान-कारण- -णम् सांस् ५, ६५.  
 जगद्-गण- -णः महा ४, १३<sup>d</sup>.  
 जगद्-गत- -तम् महा ५, १७७;  
 अन्न १, ४७.  
 जगद्-गुरु- -रुः पप ४२०: ९; -रुम् पं १८; -०रो शु १, ३; गोप् ४४;  
 नाउ ३, १९.  
 जगद्-धरण- -णत् वउ ३, ५५.  
 जगद्-धा(त्>)त्री- -त्रीम् शि ६, १४४.  
 जगद्-धित- -तम् तृप् २, १३;  
 वउ ३१५: ५; शि १, ८; ७, ७६.  
 जगद्धिता(त-अ)र्थ- -र्थम् गोप् १६.  
 जगद्-बीज- -जम् कृ २४; वउ ४, ८.  
 जगद्-भय- -यम् ते ४, ४५.  
 जगद्-भव- -वः ते ६, ८८.  
 जगद्-भान- -नम् १आ ४.  
 जगद्-भाव- -वम् सौ २, १३; -वाः

वरा ३, २८.  
 जगद्-भासक- -कम् अन्न ४, २६;  
 कल ७.  
 जगद्-भेद- -दः महा २, ७.  
 जगद्-योनि- -निः पै १, १७; ३,  
 १; अध्या ३०; -निम् पी ४२१:  
 ८; -न्या राप् ४, ८.  
 जगद्-रूप- -पम् सर ३, २४; -पेण  
 त्रिवा २, ९.  
 जगद्रूप-ता- -तया १आ २.  
 जगद्-वाचिन्-  
 जगद्वाचि-स्व- -त्वात् व्रस् १,  
 ४, १६.  
 जगद्-विकल्प- -ल्पः अक्षि ३४.  
 जगद्-विलास- -सः वरा २, ४५.  
 जगद्-वैचित्र्य- -त्र्यम् पै २, ४१.  
 जगद्वैचित्र्य-दर्शन- -नात् अन्न  
 १, १२.  
 जगद्-व्यापार-वर्ग- -र्गम् व्रस् ४,  
 ४, १७.  
 जगन्-नाथ- -०थ नाप् ३, १७;  
 -थः म ४८: १३; राधा ४, ३;  
 -थम् १योत ३.  
 जगन्-नामन्- -न्ना योशि ४, १८.  
 जगन्-निर्माण-लीला- -ल्या महा  
 ६, ६२.  
 जगन्-निवास- -०स गी ११, २५;  
 ३७; ४५.  
 जगन्-मातृ- -ता नाप् २, १४.  
 जगन्-मोहक- -कः रा ४२५: १५.  
 जगन्-मोहन-चक्र<sup>१</sup>- -क्रम् रा  
 ४२५: १; -क्रे रा ४२३: १८;  
 ४२४: १२; ४२५: ५; १०; ११;  
 १४; १६.  
 जगन्-मोहन-बीज-युक्त- -क्तम्  
 त्रिवि ७, ३५.  
 जगार ✓गृ (निगारणे) द.  
 जगुः ✓गे द.  
 जग्ध- ✓घस् द.

a) °दानन्ददायिनी इति आन. । b) °दानन्दका° इति निसा. संटि. । c) षस. । उप. द्वस. गर्भितः मध्यमपदलोपः कस. । d) °द्गुणः इति अज्या. संटि. ।

जघन<sup>११३</sup>— नम् गार ४०८:९; -नेन  
छां२, २४, ३; ७; ११; वृद्धि, ३, ६.  
जघना(न-अ)र्धे— -र्धे: वृ १, १, १.  
जघन्य— न्या: स्व ६१:२३.  
जघन्य-गुण-वृत्त—स्थ—स्था:  
गी १४, १८.

जङ्गम— ✓\*गच्छ, गम् द.

जङ्गन्यमान— ✓हृत् द.

जङ्गा<sup>११४</sup>— -ङ्गा शि २, ९; -ङ्गाभि: शि  
२, १२; -ङ्गे लु ६; शां १, ७,  
५२; जाद ४, २७; ७, ८; आच  
१; गार ४०८:९.

जङ्गा-द्वय— -ये वृजा ४, १५.

जङ्गा-मध्य— -ध्यम् त्रिवा २, १३०.

जङ्गान—, जङ्गिबस्— ✓जन् द.

✓जद्

जटा<sup>११५</sup>—

जटा-कुसुम-भूषि(त>)ता—

-ताम् शि ६, ११७.

जटा-जूट-धर— -रम् शां ३, २.

जटा-धर— -र: राप् ४, ७; -रा:  
आश्र ३.

जटा-धारिन्— -री नाप ५, १;  
१संन्या २, १३.

जटा-भस्म-धार— -र: रु १४.

जटा-भार-लसच्— -ल्लिर्षं—

-र्षम् रार २, १४.

जटा(टा-अ)भि-रूप— -पा: मैत्रि  
६, ३५.

जटा-मुकुट-मण्डित— -तम् सार  
२३०: १०.

जटिन्— -टी वरा १, १७.

जटित— -तम् सार २३९: १३;  
२६५: ३; -ता: सार २२२: ११.

जठर<sup>११६</sup>— -रे त्रिवा २, १२६°.

जाठर— -र: मैत्रि ६, ३४; रार

२, ६°.

जाठर-वर्तिन्— -तिन: जाद

५, ११.

जाठरा(र-अ)भि— भि: १योत  
४५.

जाठराभि-विवर्धन—

-नम् १योत ४५.

जाठराभि-विवर्धि(न>)-

नी— नी १योत १२३.

जठरा(र-अ)भि-वर्धन— -नम् शां  
१, ७, १४.

जठरा(र-अ)न्त:—स्थित—यक्ष-

गन्धर्व-रक्ष-किन्नर-मानुष-

-षम् वउ ४, ३८.

जड, डा<sup>११७</sup>— -ड: ते ६, ३४; रुह ४५;

महा ४, १३१; योशि १, २७;

४२; अञ्ज २, २०; -डम् ते ५,

१०४; ६, ४; ९३; वृउ ९, ४;

त्रिवा २, ८; स्क ३; १संन्या २,

१३; सांसू ६, ५०; -डया १संन्या

२, १४; -डा ते ६, २०; महा ५,

१८; -डात् आबो २७; योशि

१, ४२<sup>१</sup>; -डात् अध्या ५९; -डानि

पै १, ३०.

जाड्य— -ड्यम् आबो ३०; योशि

१, १३४; १४६; १४८; हंपो १३;

-ड्याय महा ५, १७९<sup>२</sup>.

जाड्य-भाव-विनिर्मुक्त—

-कम् यो १, ७८.

जाड्य-विनिर्मुक्त— -कम्

अञ्ज ४, ६१.

जाड्य-विमोक— -क: सांसू

१, ८४.

जड-वेष्टा— -ष्टासु अलि ५.

जड-ता— -ताम् महा ३, १९; ५,

५१; सार २७३: १३; २८९:

२३; २९२: ८.

जडता-स्थिति— -ते: अञ्ज ५,  
१०९.

जड-त्व— -त्वम् त्रिवि २, १३; त्रिता  
१, २८.

जडत्व-धारण— -णम् त्रिता १,  
४७.

जडत्व-प्रिय-मोदत्व-धर्म—

-र्मा: आबो २४.

जड-दोष— -षान् आबो २८<sup>१</sup>h.

जड-प्रकाशा(श-अ)योग— -गात्  
सांसू १, १४५.

जड-रूप—

जडरूप-तस्(>:) रुह ४५.

जड-वत् गौ २, ३६; नाप ४, ३६;  
५, २४; २६; १संन्या २, १०२.

जड-वृत्ति— -त्या मं ५, १, ७.

जड-व्यावृत्ति— -त्तौ सांसू ६, ५०.

जड-हीना(न-अ)त्मन्— -त्मा ते  
४, ४४.

जडा(ड-अ)जड— -डम् ते ५, ८२.

जडाजड-दृग्— -दृशो: अञ्ज २,  
१७.

जडा(ड-अ)त्मक— -क: कुं २४.

ज(तु<sup>१</sup>>)तू<sup>१</sup>—

जत्-कण<sup>१</sup>—

जातूकर्ण<sup>१</sup>— -र्ण्य: , -र्ण्यात् वृ  
२, ६, ३; ४, ६, ३.

✓जन्, >जा, जनि, जायते क १, २,

१८; ३, ८; प्र ३, १; ३; सुं १,

१, ९; २, १, ३; ३, २, २; ऐ ४, ४;

छां २, ३, १; १२, १; १५, १; ३,

१३, ६; ५, ९, १; ६, २, ४; ७, १२,

१; वृ १, ५, १४; २, १, ८; ३, ९,

२८, ७; ४, १, ६; ६, ४, २८; मैत्रि

६, ३७; मैत्रे २, ७; वृप् २, ९४<sup>१</sup>;

a) व्यु. वैप१ यद्. । b) मिदादित्वम् उत्सं. [पा ३, ३, १०४ (वैतु. पाउ. [५, ३०] <✓जन् इति)] ।

c) जठरद्वा<sup>१</sup> इति निसा. । d) =मकार-बीजाक्षर- । e) व्यु. ? । f) 'जडाजड:' इति अज्या. । g) =चित्पक्षे

मोहाय मेघपक्षे च जलपूराय वा शैत्याय केत्यर्थक्ये: द. (वैतु. उत्र. जाड्याय<sup>१</sup>— इति?) । h) °षा<sup>१</sup> इति निसा. सुपा.

यनि. सु-शोष: (तु. अज्या.) । i) तु. पावा ४, १, ७१ । j) =श्रुषिविशेष- । k) तु. पा ४, १, १०५ । l) श्र ३, ४, ९ ।



सुबा १९<sup>०</sup>; जायते कृपु ६; जायन्ते  
तै २, २, १; ३, १-६, १; छां ५,  
१०, ६; ६, २, ३; वृ ६, २, १६;  
गौ ४, ५८<sup>३</sup>; मैत्रि ६, १२; गर्भ  
२; वृपू १, २; मन्त्रि १८; १योन  
४<sup>५</sup>; शां १, ७, १४<sup>१०</sup>; शि ४,  
५७<sup>१०</sup>; जायसे वृ ६, ४, ९९<sup>६</sup>; मना  
२, ७६९<sup>०</sup>; कौ २, ११९<sup>६</sup>; जायताम्  
शि ६, १५८; जायस्व छां ५,  
१०, ८; अजायत क २, १, ६; तै  
२, ७, १; ऐ ३, २<sup>३</sup>; छां ३, १, ३;  
२-५, २; १९, ३; वृ १, ४, ४, ५,  
१२; मना १, १३<sup>९</sup>; सुबा १<sup>३</sup>;  
महा १, १; १आ १; च २०:४;  
जायत<sup>०</sup> छां ६, २, १; अजायन्त  
वृ १, २, १; ४, ३; ४; शां ३, १;  
सं ५; वड ४, १४<sup>३</sup>; जायत छां  
६, २, २; वृ १, २, ४; ६, ४,  
१४-१८; १योन ४६; जायरन्  
छां ५, २, ३; वृ ६, ३, ७-१२.  
जज्ञे वृजा ६, १; वड ३, ४८;  
जजान मना २, १२, ३९<sup>०</sup>; जजिरे  
मना १, २९<sup>१</sup>; पित्र २, ८; अजनि  
वड ४, ६; अजनिष्ट दे ८<sup>१</sup>.  
जन्यते महा ५, १४९; कृपु २२;  
सार २२९: १.  
जनयते वृ १, ५, २<sup>३</sup>; जनयति  
ऐ ४, १; गौ १, ६; मैत्रि ७, ११;  
सार २२९: २२; जनयथ मना  
१, १२९<sup>६</sup>; अजनयत् वृ १, ५, १;  
२<sup>३</sup>; मुद्र २; अव्य ५<sup>३</sup>; अजन-  
यन्त दे ५९<sup>१</sup>; सर २, ८९<sup>१</sup>;

जनयेत् वृ ३, ९, २८, ७; गौ ३,  
२५; गौ ३, २६.  
अजीजनत् वृ ६, ४, २८; व २;  
३<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; ५; ६; अजीजनत् व  
३; ४.  
जज्ञान- नम् मना १, १०;  
२संन्या १६: ५; रशिसं ३२.  
जज्ञिस्- वान् मुद्र २.  
१जन- न: गौ १, २९; ते १, २३;  
५, ४३; नाप ४, २९; महा ४,  
३१; योशि २, ६; कर् २५; इ  
१६: ८; गौ ३, २१; नम् वृ १,  
३, १०; नाद १६<sup>०</sup>; शि ७, ४१;  
नस्य शि ६, १५६; भव १, १८;  
ना: ई ३; वृ २, १, १; ४, ४,  
११९<sup>०</sup>; कौ ४, १; वृजा ४, २७;  
वस् १९; नाप ५, ३०; ६, ४; महा  
५, १७७; कुं २२; कृ २२; या  
२, २२; सूता १, ३९; वृष ८<sup>५</sup>:  
१०; शि ६, १२९; भव १, ५६;  
गौ ७, १६; ८, १७; २४; ९, २२;  
१६, ७; १७, ४; ५; नान् श्वे २,  
१६९<sup>०</sup>; ३, २९<sup>१</sup>; अशि ५, २९<sup>१</sup>; ५;  
वड ३१६: २३९<sup>०</sup>; ३१७: ३९<sup>१</sup>;  
नास: क १, १, १९; नास:  
नी १, २; नानाम् क २, ३, १७;  
वृ ६, १, ५<sup>३</sup>; श्वे ३, १३; ४, १७;  
ए ९; आर्षे ९: १८; बा १२; गु  
६०; गौ ७, २८; ने तै १, ४, ३;  
रापू ४, ६७; जाद २, ७; नेन नाप  
५, २९; नेभ्य: ९<sup>१</sup> व ४३९: ५;  
४४४: ९; ४४९: १९; ४५३: ७;

नेषु शां १, १; व ४३७: १३९<sup>०</sup>;  
नै: ते ६, ५२; १आ १५.  
जन-तस्(>:) महा ३, ३३.  
जन-ता-  
जनता-वृन्द- न्दे अन्न ५,  
९९.  
जन-पद- नम् छां ८, १, ५;  
अन्न १, ३४; -दे छां ५, ११, ५;  
वृ २, १, १८; नाप ६, ३७.  
जानपद- दान् वृ २, १,  
१८.  
जन-योग- गम् वरा २, ३७.  
जन-वदय-कर- राय रार २,  
७६.  
जन-श्रुत-  
जानश्रुति- -ति: छां ४, १,  
१; ५, २, १, ३; -ते: छां ४, १, २.  
जन-संसद्- सदि गौ १३, १०.  
जना(न-अ)धिप- प: गौ २,  
१२.  
जना(न-अ)भाव- वान् ते ५,  
२०.  
जना(न-अ)र्दन- -०न गोपू ४५;  
गौ १, ३६; ३९; ४४; ३, १; १०,  
१८; ११, ५१; न: ध्या १०;  
रुह ८; वरा ३, १९; नापू ५, ८;  
भव २, ५५; नम् नाप ५, ३६;  
रुह ७; नाय त्रिवि ७, ४१.  
२जन- न: छां ५, ११, १; नम्  
छां ५, १५, १.  
१जनक- क: नाप २; कम् वृजा  
४, २९; श ३; पं १३.

a) 'अजायत' इति मा ३१, १२। b) 'जायते' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.)।  
c) 'जायते' इति मुपा. यनि. सु-शोध:। d) मन्त्रा १, ५, १६। e) ऋ २, १, १। f) ऋ १, १९०, १; २। g) अडभावे  
लङि प्रपु १ द्र.। h) ऋ ४, ५८, ४। i) मा ३२, २। j) 'जनिष्ट' इति अज्या.। k) ऋ १०, ९, १। l) ऋ ८,  
१००, ११। m) मा १३, ३। n) =लोकविशेष-। 'ध्रुवम्' इति आन.। o) मा ४०, ३। p) मा ३२, ४  
यत्र 'जुना:' इति पा. च पपा. च यनि. सु-शोधौ (तु. शं., वैपश् यस्था. टि.)। निसा. मुपा. अप्येवं सु-शोध:।  
q) तैज्जा १०, १, ३ यत्र 'सुखा:' इति मुपा. यनि. सु-शोध: [तु. स्क., दु., या. (१, १५), प्रस्थ. शं.; वैतु. सा.  
अपपाठमेव साधुक: (प्रस्थ. 'जना:' इति निसा. मुपा. अपि यनि. एव सु-शोध:)]। r) ऋ १, ७, १०। s) ऋ २, २३,  
१५। t) व्यु. आर्थिको विशेष:। u) =व्यक्तिविशेष-। v) =पितृ-।

२जनक<sup>a</sup>—कः वृ ३, १, १; ४, १,  
१-७; २, १; ४; ३, १; ४, ७; ५,  
१४, ८; जा ४; वृजा ७, १-५;  
रार २, ९५; महा २, १९;  
२२-२५; २८; या १, १; गा २५;  
-कः-कः वृ २, १, १; कौ ४, १;  
-कम् वृ ४, ३, १; -कस्य वृ ३,  
१, १; २; -काय महा २, २१;  
-केन महा २, २०; ३१.

जानकि, की—कये वृ ६, ३,  
१०<sup>b</sup>; -किः वृ ६, ३, ११; -की  
राउ ४, २५; -क्या रार २, १३.

जानकी-देह-भूष-—षाय  
रापू ४, १४.

जानकी-वल्लभ-—भम्  
रार २, ४०; -भाय त्रिवि ७,  
३३.

जनक-याज्ञवल्क्या(ल्क्य-आ)-  
दि-शुक-वामदेव—जीवन्-  
मुक्त-—क्ताः म ४९:७.

जनका(क-आ)त्म-(ज>)जा-  
—जाम् रापू ४, २९.

जनका(क-आ)दि—दयः गी ३,  
२०.

जनत्<sup>c</sup>—नत् च २०:७; २प्र३३:३.

१जनन<sup>d</sup>—नम् दे १७; लि ३०९:५;  
१कौल ३:३; -नाय महा ३, ४; भव  
१, २५.

जननी(य>)या—या तारा ८३:  
१७.

२जनन<sup>e</sup>—ना ९<sup>f</sup>लि ३१०:२; ३<sup>g</sup>.

जननी—नी २योट १, ४; गु ५१;

-नीभिः अशि ४, २०; वटु ३१६:

१२; -न्या स्व ६१:१४.

जनयत्—९<sup>h</sup>यन् श्वे ३, ३; मना १,

३; त्रिवि ६, १३; रु १३; २शिसं  
२६.

जनयन्ती—न्ती सी १३;

-९<sup>b</sup>न्तीम् मना २, १२, १; नापू  
५, २०.

\*जनया—

\*जनयाम(म्/अ)स् (भुवि),

जनयामास श्वे ३, ४९<sup>i</sup>; गु ५६.

जनयितवै वृ ६, ४, १४-१८.

जनयित्वा वृ १, ४, ४.

जनस्—नः मना २, ३५९<sup>k</sup>; त्रिवि

७, ४४९<sup>l</sup>; नाउ १, १२; राधा

१, ३; लां २१३:९; गार ४०५:

१२; १६.

जनो-लोक<sup>m</sup>—कः नाद ४<sup>m</sup>;

गार ४०५: १६; -कम् वृजा

८, ४; वृपू ५, १६; वड ५, १२;

-काः, -केषु सुवा १०.

जनोलोक-ज्ञान—नम् शां

१, ७, ५२.

जनोलोक-महलोक—कौ

गु १२.

जनि—निः अध्या ५८; वरा ३,

५; वा २३.

जनित—तम् निर्वा २९७: ११.

जनितृ—ता ज्ञां ४, ३, ७; श्वे ६, ९;

मना १, ४९<sup>n</sup>; भ २, ५<sup>o</sup>; ६; पा

२, ४; गु ६८; भव २, ४४; -त्रे

पा ९, ५.

जनित्री—त्री मन्त्रि ५; पा ७,

७; चू ५.

जनित्वा वरा ४, ३५.

जनिमन्—मा लि ३०९:७; -मानि

ऐ ४, ५९<sup>o</sup>.

जनिष्यमाण—९<sup>p</sup>णः श्वे २, १६;

मना १, ३; अशि ५, २; सूता १,  
११; वटु ३१६:२२; -णम् बार ३.

जनुस्—जुषा वा ११.

जन्तु—न्तवः नाप ५, १; महा ३,

१४; १मन्या २, ३०; इ ११:

१९; गी ५, १५; -न्तुः क २, ३,

८; वृजा ६, २; नाद १९; योचू

८३; महा ४, ७२; ५, ८७; ९३;

९४; योशि १, ७६; १संन्या २,

९८; प्रा ४, १; कर २४; वरा

२, ४४; ३, १२; निरु १, १९; शि

७, ११४; हे १; ८; -न्तुभिः शि

७, ७०; -न्तुम् वृजा ६, ४; -न्तुषु

नाप ६, २५; योशि २, १०;

-न्तुनाम् योशि १, १३७; अन्न

५, ५२; -न्तोः क १, २, २०९<sup>q</sup>;

श्वे ३, २०९<sup>q</sup>; मै ४, ४, ५; मैत्रि

६, ३४; मैत्रे १, ४, ७; जा १; मना

२, १२, १९<sup>q</sup>; नाप ९, १३९<sup>q</sup>;

श १८९<sup>q</sup>; राउ १, १; ३, ३; महा

५, ६१; अन्न २, ३३; अक्षि १८;

ता १, १; शा २; सु १, १, २१;

२, २, २; नाउ १, ७९<sup>q</sup>; पा ९,

३९<sup>q</sup>; हे ११; भव १, १४; ३,

१५; ४, १४; -न्तौ अन्न २, २९.

जन्तु-वर्जित—तम् शि ५, ८.

जन्तु-विवर्जित—ते शि ५, १८.

जन्तु-शैवाल-निर्मुक्त—क्तम्

शि ५, १३.

जन्तु-संरक्षणा(ण-अ)र्थ—र्थम्

कुं ९; कर १; कथु ३, १.

जन्मन्—न्म ऐ ४, १; ३; ४; श्वे ५,

११<sup>r</sup>; गौ ३, २७; २८; ४, १५<sup>r</sup>;

५८; गर्भ ४; कै २, ३; वृजा ५,

१३; १६; ते ४, १३; ५, २४; ७७;

a) व्यु. विशेषः १ = नृपविशेष- । b) 'जनकाय' इति काचित्कः निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः । c) = जनस्-  
(व्याहृति- ) । d) माप. । e) कर्तरि कृत् । f) ऋ २, ४०, १ । g) ऋ १०, ८१, ३ । h) तैआ १०, १०, १ ।  
i) 'जायमानम्' इति तैआ १०, १०, ३ । j) = व्याहृतिविशेष- । k) तैआ १०, २८, १ । l) तैआ १०, २७, १ ।  
m) 'जनलोकः' इति आन. । n) मा ३२, १० । o) ऋ ४, २७, १ । p) मा ३२, ४ । q) तैआ १०, १०, १ ।  
r) वृ. सस्थ. टि. आत्मविवृद्धि- ।

६, १६; नाद २५; १योत १२;  
महा ३, ५३; ६, १३; १५; योशि  
१, १०; ३२; पत्र ३, ९; भ २,  
२८; इ ११: १८; राधा ३, १६;  
भव २, २४<sup>१</sup>; अवि ११; गी २,  
२७; ४, ४<sup>१</sup>; ९; ६, ४२; -न्मनः  
ऐ ४, ३<sup>१</sup>; अन्न ४, ९२; शि ४,  
३१; -न्मना योशि १, ५३; ६५;  
प्रा ४, १; -न्मनाम् सी २५; पै  
२, ५०; यो २, ६; गी ७, १९;  
-न्मनि लु १९; मुद्र ४<sup>१</sup>; -न्मनि-  
न्मनि पत्र ३, ९; गी १६, २०;  
-न्मानि २योत १, ५; शि ४, ३०;  
सिंशि ३८१: ३; गी ४, ५.  
जन्म-कथंता-संबोध- -धः  
योसू २, ३९.  
जन्म-कर्म-गुण- -णाः भव २, ६४  
जन्म-कर्म-फल-प्र(द>)दा-  
-दाम् गी २, ४३.  
जन्म-कारण- -णम् योशि १,  
३१.  
जन्म-कृत- -तम् गार ४०८: १५  
जन्म-कोटि- -टिभिः वृजा ५, ९.  
जन्मकोट्य(टि-अ)र्जित-  
-तानि वरा ५, ४९.  
जन्म-कोटि-शत- -तानि शि  
६, ९५.  
जन्मकोटिशत-प्रद- -दम्  
ते ३, ७३.  
जन्म-कोटि-सहस्र- -खाणि  
शि ६, ९५.  
जन्म-जन्मा(न्म-अ)न्त- -न्ते  
मैत्रे २, १६.  
जन्म-जन्मा(न्म-अ)न्तर- -रे  
यो २, ६.  
जन्म-जरा- -राभ्याम् गोउ १५.  
जन्म-जरा-मरण-कारण- -णम्  
सु २, २, २५.

जन्म-दुःख- -खेषु महा ५, ११७  
जन्म-द्वार- -रेण वउ ३, २१.  
जन्म-निरोध- -धम् श्वे ३, २१.  
जन्म-पल्लव- -मत्स्य-  
-स्यानाम् महा ३, ४६; या २, १२  
जन्म-पाप- -पम् ते ३, ६१.  
जन्म-बन्ध- -न्धात् योशि ३, १.  
जन्मबन्ध-विनिर्मुक्त- -क्ताः  
गी २, ५१.  
जन्म-भाजू- -भाक् महा ६, ४.  
जन्म-मरण- -णम्<sup>१</sup> निरु १, २१;  
-गानि गर्भ ४<sup>१</sup>; -णेभ्यः श ३६.  
जन्म-मरण-करण- -णानाम्  
सांका १८.  
जन्म-मात्र- -त्रेण भव २, ६४.  
जन्म-मालिन्य- -न्यम् रु २७.  
जन्म-मृत्यु- -त्यू क १, १, १७;  
ससा ६; योशि १, ५५.  
जन्ममृत्यु-प्रहाणि- -णिः श्वे  
१, ११; नाप ९, १०.  
जन्म-मृत्यु-जरा-दुःख- -खैः  
गी १४, २०.  
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-दुःख-  
दोषा(ष-अ)नुदर्शन- -नम् गी  
१३, ८.  
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-नाश-  
न- -नम् १योत ५; योशि १, २.  
जन्म-मृत्यु-सुख-दुःख-वर्जित-  
-तम् वरा ३, ७.  
जन्म-विनाशि(व>)नी- -नी  
सु २, २, ६१.  
जन्म-शता(त-अ)धिक- -काः  
महा ५, १३७.  
जन्म-शता(त-अ)र्जित- -तम्  
शां १, ७, ५२.  
जन्म-श्रुति- -तेः सांसू ४, २२.  
जन्म-संसार-बन्धन- -नात् ना  
४; त्रिता ४, २; आबो १.

जन्म-सहस्र- -खाणि महा ५,  
१४३.  
जन्म-स्थिति-विनाश- -शेषु  
महा २, ५९.  
जन्म-हेतु- -तुः सु २, २, ६१.  
जन्मा(न्म-अ)दि- -दि ब्रसू १,  
१, २.  
जन्मादि-कारण- -णम् नि  
२५.  
जन्मादि-व्यवस्था-  
जन्मादिव्यवस्था-  
तम्(>) सांसू १, १४९.  
जन्मा(न्म-अ)न(न्-अ)र्थ-  
भागिन्- -गिनः महा २, ४०.  
जन्मा(न्म-अ)न्त-दीक्षा- -क्षा  
सिंशि ३८१: ९.  
जन्मा(न्म-अ)न्तर- -रे यो २, ७;  
-रैः योशि १, ५२.  
जन्मान्तर-कर्म-योग-  
-गात् कै १, १४.  
जन्मान्तर-कृत- -तान् राउ  
३, १४.  
जन्मान्तर-घ्न- -घ्नाः महा  
३, ७५.  
जन्मान्तर-शत- -तैः योशि  
१, ५५.  
जन्मान्तरशता(त-अ)-  
भ्य(स्त>)स्ता- -स्ता सु २,  
२, १४.  
जन्मान्तर-सहस्र- -खेषु  
योशि १, ७८.  
जन्मान्तरा(र-अ)भाव-  
-वात् नाद २४.  
जन्मान्तरा(र-अ)र्जित-  
-तम् वृजा ४, ३२.  
जन्मान्तरीय- -यम् नाद २३  
जन्मान्तरो(र-उ)दित- -तः  
महा ५, १३.

- a) तु. सस्थ. टि. आत्मविवृद्धि- । b) समाहारे द्वस. । c) °णम् इति आन., °णादि इति अज्या. ।  
d) °न्तरितान् इति JC. ।



जन्मा(न्म-अ-)-भाव- -वे ते  
५,२४; नाद २५.  
जन्मौ(न्म-ओ)षधि-मन्त्र-तप:-  
समाधि-(ज>)जा- -जा:  
योसू ४, १.

जन्य- -न्ये-न्ये गोपू १६.

जात,ता- -तः ऐ३, १३; ङौ ५, ९, २;  
वृ ३, ९, २८, ७; श्वे २, १६<sup>१</sup>; ४,  
३९<sup>२</sup>; ९<sup>३</sup>अशि ५, १; २<sup>४</sup>; गर्भ ४<sup>५</sup>;  
मना १, ३९<sup>६</sup>; जा ४९<sup>७</sup>; वृपू २;  
१०९<sup>८</sup>; मैत्रि २, १३; सुबा १९<sup>९</sup>;  
नि ३<sup>१०</sup>; वसू १५; १योत १३२;  
२योत १, ३; नाप ३, ७७९<sup>११</sup>; पै  
१, ३३; २, ३४; ५५४१८: ११९<sup>१२</sup>;  
त्रिता २, ११<sup>१३</sup>; १६; गोउ १६<sup>१४</sup>;  
१७; या १, १९<sup>१५</sup>; निरु १, १५<sup>१६</sup>;  
२१; सूता १, १९<sup>१७</sup>; सं२: ९<sup>१८</sup>वट  
३१६: २१; २२; व ४६६:  
१४९<sup>१९</sup>; -तम् क २, १, ६; वृ १,  
२, ४; ५, २<sup>२०</sup>; ३, ९, २२; गौ ३,  
२७; मैत्रि २, ४; १९; कै १,  
१९; मना १, २९<sup>२१</sup>; २, २४९<sup>२२</sup>;  
वृजा १, १<sup>२३</sup>; ते ६, २९; योशि  
१, १२३; म २, ६९<sup>२४</sup>; बा २३;  
सार २२७: ६; भव ५, १५;  
-तस्य या २, १६; इ १८: २१<sup>२५</sup>;  
गी २, २७; -ता वृजा १, १<sup>२६</sup>;  
योचू ७२; महा २, ७१; ५, ११४;  
अन्न २, २४; सार २२७. १२;  
-ता: श्वे १, १; मैत्रि ६, १५; वृजा  
६, ५; ७, ८; महा ३, १४; ४, १७;

५, १३६; रुजा १, १; ३; ८; ३, १;  
सु१, १, ९; १३; सार २४२: १७;  
२६२: २; सिशि ३८१: २३; गी  
१०, ६; -तात् गौ ४, १३; -तानि  
तै २, २, १; ३, १-६, १; श्वे ४, ४;  
मैत्रि ६, १२; मना २, ५४९<sup>१</sup>;  
वृपू १, २; ३, ५; रापू ३, १; त्रिता  
५, २१; म २, ९९<sup>२</sup>; पा ६, ८९<sup>३</sup>;  
वपू १, ४; २, ३; -ताम् सूता १,  
१६; -ते वृ ६, ४, २४; गौ ३, १;  
मना २, ३६९<sup>४</sup>; ते ६, ९८; रापू  
१, १; शां १, ७, २९<sup>५</sup>; सावि  
१०; त्रिता २, ८; -तै: सूता ४,  
६; -तौ लिं ३१०: ३९<sup>६</sup>.

जात-पुत्र- -त्रस्य कौ २, ८.

जात-मात्र- -त्र: गर्भ ४; -त्रेण  
महा २, १; त्रिता २, १२.

१जात-रूप<sup>१</sup>-

जातरूप-धर- -र: नाप ३,  
८६; ४, ३८; ५, १<sup>२</sup>; १संन्या २,  
१३; ५५४१८: २४; २९; ४१९:  
१२; -रा: मि १२.

जातरूपधर-त्व- -त्वम्  
नाप ५, १; ७.

२जात-रूप<sup>२</sup>- -पम् अशि ५,  
१६<sup>३</sup>; चा ५; वट ३१३: १.

३जात-रूप<sup>३</sup>- -पेण वृ ६, ४, २५;  
ते ६, ७७.

जात-विचक- -क: मं २, ४,  
४१<sup>४</sup>.

जात-वेदस्- -०द: के ३, ३; वृ

६, ३, १; मना १, ४९<sup>५</sup>; ५९<sup>६</sup>; २,  
१९<sup>७</sup>; नाप ४, ३८९<sup>८</sup>; ए २; व  
४६१: १२९<sup>९</sup>; -दसम् प्र १, ८;  
मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; वृजा ३,  
२०; अक्षि १; चा १५; स ३७८:  
११; -९<sup>१०</sup>दसे मना २, १; त्रिता  
१, ६; २, १-३; ७; ८; १६; १८;  
२२; २५; २८; ३०; वपं ३११:  
२; व ४३०: ६; ४६१: ६;  
-दा: के ३, ४; क २, १, ८९<sup>११</sup>;  
मना २, ६४९<sup>१२</sup>; त्रिता २,  
२३९<sup>१३</sup>; बा १५; कृपु १८; रशिसे  
१०; व ४६०: १९<sup>१४</sup>.

जातवेदस्<sup>१</sup>-

जातवेदसी<sup>१</sup>- -०सि

वपं ३१२: १.

जातवेदस्-मण्डल-

-लम् त्रिता १, २१.

जातवेदस्-सूक्त- -केन

त्रिता ४, २.

१जाति<sup>१</sup>- -ति: गौ ४, ४२; -तिम्  
गौ ३, २०; ४, ३; ६; २८; -तौ गौ  
३, ३.

जाति-दोष- -घा: गौ ४, ४३.

जात्य(ति-अ)न्ध- -न्धस्य त्रिवि  
५, ७; -न्धै: ते ६, ८९.

जात्या(ति-अ)भास- -सम् गौ  
४, ५.

२जाति<sup>२</sup>- -ति: नि ८; २२; २३<sup>३</sup>;  
वसू ४; ११; १६; ते ५, ३८; पित्र  
६, १२; -स्या वसू १५.

a) मा ३२, ४। b) शौ १०, ८, २७। c) 'विजायमानः' इति अज्या। d) 'जातस्य' इति आन., अज्या। e) ऋ ३, २९, १०। f) मा ८, ३६। g) ऋ १०, ९०, १३। h) ऋ ९, ९४, ४। i) तैआ १०, १, २। j) तैआ १०, १६, १। k) 'जातस्म' इति खण्डितः सुपा. यनि. सु-शोधः। l) ऋ १०, १२१, १०। m) तैआ ९, १, १। n) तैआ १०, ३०, १। o) ज्ञा<sup>०</sup> इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। p) ऋ २, ४०, १। q) तस.। r) वस.। s) 'जातवेदस्' इति अज्या। t) व्यु. विशेषः? = सुवर्ण-। u) 'तिवि<sup>०</sup>' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.; वैतु. उब्र.)। v) तैआ १०, १, ४। w) तैआ १०, १, ५। x) ऋ ५, ४, ९। y) तैआ २, ५, ८, ८। z) ऋ १, ९९, १। a') ऋ ३, २९, २। b') 'जातवेदः' इति निसा. सुपा. (तु. तैआ १०, ६४) यनि. सु-शोधः। c') ऋ १०, ८३, २। d') अण् प्र. (पा ४, ३, १२०)। e') विशेषि.। = देवीविशेष-। डीप् प्र. (४, १, १५)। f') भाप.। = जन्मन्-। g') = मनुष्यपरवादि-।

जाति-कारु-वाक्-काय-  
स्थान-दुष्ट- -ष्टम् शि ५, ११.  
जाति-कुल-धर्म- -मान् सार  
२३६: ३.

जाति-गुण-क्रिया-हीन- -नम्  
वस् २२.

जाति-देश-काल-व्यवहि-  
(त>)ता- -तानाम् योसू ४, ९.

जाति-देश-काल-समया(य-अ)-  
न(न्-अ)वच्छिन्न- -ञ्चा: योसू २,  
३१.

जाति-धर्म- -मां: गी १, ४३.

जाति-नीति-कुल-गोत्र-दूर-  
ग- गम् वरा ३, ७.

जाति-लक्षण-देश- -शै: योसू  
३, ५४.

जाति-विषय- -यान् लिं ३१०:  
१७.

जात्य(ति-अ)न्तर-ज- -जा:  
सार २५६: १८.

जात्य(ति-अ)न्तर-जन्तु- -न्तुषु  
वस् १२.

जात्य(ति-अ)न्तर-परिणाम-  
-म: योसू ४, २.

जात्य(ति-अ)न्तर-भेद- -दा:  
सार २५६: १८.

जात्या(ति-आ)युर-भोग- -गा:  
योसू २, १३.

३ जाति<sup>१</sup>-

जाति-पर-

जातिपर-स्व- -स्वात् सांसू  
१, १५४.

जायमान- -न: सुं २, २, ६; वृ ४,  
३, ८; कौ १, २<sup>१</sup>; सं ६: ११<sup>२</sup>; १५;  
शि ४, ४८; -नम् छां ३, १९, ३;

थे ४, १२<sup>३</sup>; ५, २; मना १, २९<sup>०</sup>;  
२, १२, ३९<sup>०</sup>; २, २४<sup>३</sup>; गौ ३, २;  
४, ११; मैत्रि ६, ९; भ २, ६९<sup>३</sup>; प्रा  
२, १; वउ ३, २; -नस्य गौ ४, १३;  
योशि ४, ७<sup>३</sup>; -नात् गौ ४, १२;  
२१; -नात् भ २, ७; -ने गौ ४, ९७

जाया- -यया छां १, १०, १; सार  
२६०: १८; -या छां १, १०, ७;  
४, २, ४; १०, २; वृ १, ४, १७<sup>३</sup>;  
२, ४, ५<sup>३</sup>; ४, ५, ६<sup>३</sup>; मैत्रि ७, ११;  
रार २, ४०<sup>०</sup>; सार २, ९९<sup>३</sup>; -याम्  
वृ ६, ४, १३; १९; कुं ९९<sup>३</sup>; कः  
१९<sup>३</sup>; कश्चु ३, २९<sup>३</sup>; -ययै छां  
१, १०, ५; वृ २, ४, ५; ४, ५, ६;  
६, ४, १२; कौ २, १०.

जायाभवविनिर्मुक्ति- -क्ति:  
यो १, ७९.

जाया-भ्रातृ-सुता(त-आ)दि-  
-दीनाम् नाप ४, ९.

✓जप्>जापि, जपते १ संन्या २,  
१०४; जपति छां ५, २, ६; वृ ६, ३,  
६; कौ २, ११; नृपू १, १६; ध्या  
६२: ६३; ब्रवि १६; योचू ३१;  
३२; रार १, ७, ९; योशि ६, ५४;  
सू २६; ३३; ग १८; ह १५;  
कलि ३; इ १९: १७; वपू १,  
५; वउ ५, ६; ६, ३४; ३५; ३८;  
३९; जपन्ति शु २, ५; गोपू २३;  
वउ ६, १९; जपसि सार २२०:  
२२; जपतु १ अव २४; जपध्वम्  
वपू १, ५; जपेत् वृ १, ३, २८;  
६, ४, ९; कै २, ५; वृजा ४, १९;  
ब्रवि २३; १ योत २१; ६३; योचू  
७१; ८७<sup>३</sup>; ८८; रार १, ७, २, ६;  
१५; ४७; ७२; ८५; ९४; ३, १<sup>३</sup>;

४, ७<sup>३</sup>; कु २<sup>३</sup>; १३; यो २, २२;  
२६; भ १, ८; २, २१; पं २५;  
प्रा १, ६; पारा १२; १३; शि १,  
२८; ५, ३३; कामे ४; ५; १३;  
१४<sup>३</sup>; षो २३; तारा ८४: १२<sup>३</sup>;  
अद्वैभा १९; कश्चु ३, १; २ कौल १३.  
जजाप राउ ३, १; हे १४; सार  
२७६: १२; जेषु: सार २४६: १७.  
जप्यते योशि १, १३१.

जप<sup>२</sup>- -प: ते २, २०; २३<sup>१</sup>; ५, ५२;  
६, २१; ध्या ६४; नाप ६, ३३;  
त्रिब्रा २, ३४; योचू ३४; द१; शां  
१, २; पै ४, १८; योशि १, १३१;  
६, ४५; जाद २, १; ११-१३;  
१६; वरा ५, १४; तुल ७१:  
१९; गुषो ४२०: २; भव १, १६;  
वउ ५, ३२; ६, १५<sup>३</sup>; ४७; -पम्  
यो २, ४४; तुल ७१: १७; काम  
१७; -पात् नृपू १, ११<sup>३</sup>; जाद  
२, १५; काम ९; -पे शु २, ५<sup>३</sup>;  
जाद ४, ५७; गरु २; चा ४; लां  
२१३: ४; कालि ४०३: १३; व  
४२६: ४; ४५९: १८; -पेन राधा  
१, २८; ४, २५.

जप-कोटि- -व्या हं १६.

जप-तत्-पर- -र: जाद ६, ५.

जप-तर्पण-तत्-पर- -र: रार  
२, ३४.

जप-दाना(न-आ)दिक- -कम्  
गोच ६८: १३.

जप-ध्यान-परा(र-अ)यण-  
-ण: त्रिब्रा २, १२८.

जप-पूजा(जा-आ)दि-नियम-  
जपपूजादिनियम-वल्-

-वान् कालि ४०२: १२<sup>३</sup>.

a) 'जाये' इति आन. । b) तैआ १०, १०, ३ । c) तैआ १०, १, ३ । d) तैआ १०, १६, १ । e) =वहि-  
जाया- (=स्वाहा) । f) ऋ १०, ७१, ४ । g) °यम् इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. शौ ११, ८, १) । h) शौ  
११, ८, १ । i) पा. १ जन्म्या (=जन्म) च अभाव: (=मृत्यु:) चेति कृत्वा जन्म्याऽभाव°- इति द्वस. गर्भित: पंस. इतिपर:  
शोध: स्यात् (वैतु. निसा. संटि. जयाभाव°, उत्र. जाया-भाव°- इति) । j) सकृत् 'जपन्' इति अज्या. ।  
k) 'जपन्' इति अज्या. । l) °य: इति अज्या. । m) 'जपान्ते' इति अज्या. संटि. । n) °यम: इति तान्त्रि. ।

जप-मात्र- -त्रेण नापू ४, २८.  
जप-माला- -लया वउ ६, ४२.  
जप-यज्ञ- -ज्ञः शा १३; गी १०, २५.  
जप-यम-  
जपयम-वत्- -वन्तः शा ११.  
जप-होमा(म-आ)दि- -दिना त्रिवि ७, ४९.  
जप-होमा(म-आ)चैना(न-आ)-दि- -दिभिः राउ ३, १.  
जपा(प-अङ्ग>)ङ्गा- -ङ्गा वउ ६, १५.  
जपा(प-आ)दि- -दीन् रापू ५, ७  
जपा(प-अ)र्थ- -र्थम् सिशि ३८२: ५.  
जपत्- -पताम् रार २, ५९; -पन् गोपू १२; गु७४; ८३; रा४२४: १४; श्या ५; -पन्तः भ २, २८; गोपू ४६; पा १, १०.  
जपन-  
जपनीय- -यः भ २, ३; ४.  
जपित्वा कौ २, ८; सार २४४: ८; कालि ४०३: १९.  
जप्त- -प्तः अक्ष १६; दत्ता ३<sup>४</sup>; -सम् अशि ७, ६; पै ४, २३; महा ६, ८३; ता ३, ९<sup>३</sup>; च २१: १२; -सनि अशि ७, ५; ६; राउ ५, ४<sup>३</sup>; पै ४, २३; महा ६, ८३<sup>३</sup>; ता ३, ९; च २१: ११; १२; गार ४०८: १६; -सेन मृ ७; १२.  
जप्तव्य- -व्यः रापू १, ११.  
जप्त्वा अना १८; अशि ७, ८<sup>३</sup>; ९; नाप ४, ३८; रार १, ७; सू २७; ३२; दे २२<sup>४</sup>; भ १, ९<sup>३</sup>; ग १८; सर १, २; सूता २, ७; २१; सार

२७६: ७; कालि ४०२: ५;  
रा ४२३: ११; वउ ५, ३२.  
जप्य- -प्यः पित्र २, ३; -प्येन जा ३; महा ६, ८३<sup>४</sup>; कृ ५; -प्यैः शु १, १६.  
जाप- -पे अद्वैता २०.  
जापिन्- -पी शि ५, २९.  
जाप्य- -प्यम् योरा ३; -प्येन च २१: १३.  
जपा<sup>८</sup>-  
जपा-कुसुम-सान्निध्य- -ध्यात् त्रिवि ३, ७.  
जपा-बन्धूक-संनिभ- -भम् योशि १, १३६.  
जपा-स्फटिक- -कयोः सांसू ६, २८.  
जबा(ल>)ला<sup>८</sup>- -ला छां ४, ४, २; ४; -लाम् छां ४, ४, १.  
जाबाल<sup>१</sup>- -लः छां ४, ४, १; २; ४; ५, २, ३; वृ ४, १, ६<sup>३</sup>; ६, ३, १२; भ १, १; २, १; -लाय वृ ६, ३, ११; -ले छां ४, १०, १.  
जाबालि<sup>१</sup>- -लिम् जाबा १.  
जाबालायन<sup>१</sup>- -नः, -नात् वृ ४, ६, २.  
जमद्-अग्नि<sup>१०</sup>- -ग्निः वृ २, २, ४; आर्षे ७: ९; नापू ५, ७.  
जमदग्नि-द(त>)त्ता- -त्ता ह १८९<sup>१</sup>.  
जम्बीर<sup>८</sup>-  
जम्बीर-फल- -लम् वृजा ६, १.  
१ज(म्बु>)म्बू<sup>८</sup>-  
जम्बू-द्वीप<sup>३</sup>- -पः म ४९: १८; -पम् शि ६, १०५.  
जम्बूद्वीप-स्थित- -तः गोउ ३२<sup>१</sup>.

२ज(म्बु>)म्बू<sup>१</sup>-  
जम्बू-फल- -लानि शि ६, १६; -लेषु शि ६, १४.  
ज(म्बु>)म्बूक<sup>२४</sup>- -कात् वसू १३.  
✓जम्भू, >जम्भि, जम्भय नी ३, २.  
जम्भि(न>)नी<sup>१</sup>- -०नि व ४२७: २०.  
१-५जय-, जयद्रथ-, १-५जयन्त-, जयय- ✓जि द्र.  
जरठ-, जरत्-, °कारु-, जरा- ✓जू द्र.  
जरायु<sup>११०</sup>- -यु छां ३, १९, २; -युणा वृ ६, ४, २३.  
जरायु-ज<sup>११</sup>- -जम् व ५; -जाः नापू ५, २३.  
जरायुजा(ज-अ)ण्डजा(ज-आ)-दि- -दीनाम् नाप ५, ३१.  
जरायुजा(ज-अ)ण्डजो(ज-उ)-  
झिज-स्वेदज- -जानाम् गरु २४.  
१जरित्<sup>११</sup>- -त्ता बा २०; २५; -तारः शौ ५२: १४; -तृभ्यः व ४६६: १४९<sup>१०</sup>; -तृणाम् बा ८; -त्रे तृपू २, ८९<sup>०</sup>.  
२जरित्- ✓जू द्र.  
✓जल्(\*दीप्तौ)<sup>१</sup>  
१जल<sup>१</sup>-  
जल-ज्योतिस्- -तिः मं १, ४, १<sup>१</sup>.  
जलज्योतिः-स्वरूप- -पम् मं १, ३, ६<sup>१</sup>.  
२जल<sup>१</sup>- -लम् अशि ५, २०; वृजा ३, ४; काला ७; ते २, २; २७; ५, ३६; नाप ४, ३८<sup>३</sup>; त्रिवा २, ८३<sup>३</sup>; वा ७; शां १, ४<sup>३</sup>; पै ३, १; ४, १०; महा ४, ८४; योशि १, १७६; ४, १७; १८; ५, १३;

a) °सम् इति निसा., अख्या. संटि. । b) जा° इति अख्या. । c) व्यु. ? =पुष्पविशेष- । d) व्यु. ? =अश्विविशेषजननी- । e) व्यु. वैपश् यद्र. । f) ऋ ३, ५३, १५ । g) =वृक्षविशेष- । व्यु. ? < ✓जम् इति अभा. । h) व्यु. ? =द्वीपविशेष- । i) °पे स्थि° इति निसा., °म्बु° इति आन. । j) व्यु. ? =वृक्षविशेष- । k) व्यु. ? =शृगाल- । l) =देवीविशेष- । m) =स्तोतृ- । व्यु. वैपश् यद्र. । n) ऋ ९, ९४, ४ । o) ऋ २, ३३, ११ । p) पाधा. उरसं. । q) विप. । r) ज्व° इति अख्या. संटि. । s) नाप. =वारि- । व्यु. वैपश् यद्र. । t) तुन्दस्थज° इति निसा. ।



१आ२३; म १,५; जाद ४,५६;  
गोपू २९; गोड २; वरा २,७२;  
ऊ ६३:९; गोच ६६:६; सार  
२३५:६; ७; रु ११; वप ३१२:  
२३; वट ३१७:११; शि ५,४४;  
सिशि ३८३:६; षो ९; भव  
१,१४; ५,१०; पित्र ४,८; वड  
३,८; -लस्य वरा ३,२०; -लात्  
१योत ९१; अन्न २,४४; -लानाम्  
योशि १,१६३; -ले १योत ९१;  
नाप ३,१०; २अव ३३८:६; पै  
३,१; ४,१०; कुं२४; १आ२३;  
म २,२१; वरा ५,३६; गरु २५;  
सार २७९:१३; -लेन वृजा ३,  
१७; ७,१; काला ८; शां १,७,  
४; जावा १६; का ११; सार  
२२२:१३; २६७:१९; -लै:  
वृजा ४,९; म २,२१; जाद ४,  
५४; सार २२४:२१; २३; २२५:  
२; २३७:४; २६९:१५; सिशि  
३८३:४; काम २४.

१जल-कलोल-

जलकलोल-व(त्>)ती- ती  
सार २६७:२१.

२जल-कलो(ल>)ला<sup>b</sup>- ला सार  
२६९:८.

जल-केलि-कलोल-कर्म-करण-  
-णात् सार २६४:१०.

जल-केलि-रसिक-काभ्याम् सार  
२४७:२३.

जल-क्रीडा-डाम् सार २६९:७;  
१०; -डासु गोच ६९:४.

जलक्रीडा(डा-अ)न्त- -न्ते सार  
२६९:११.

जलक्रीडा-व्याज- -जेन सार  
२६९:१०.

जल-गत-सैन्धव-खण्ड-

जलगतसैन्धवखण्ड-वत् अन्न  
२,१६.

जल-चन्द्र-

जलचन्द्र-वत् त्रिवि १२; त्रिता  
५,१२; अवि १२.

जल-तीर- -रे १संन्या १,१; कश्रु  
१,१.

जल-त्व- -त्वेन योशि ४,२३.

जल-त्रि-वेदी<sup>१०</sup>- -०दि व४३७:१

जल-दुर्गा<sup>१०</sup>- -०गें व ४३७:१.

जल-धारा- -रा सार २२२:१३.

जल-धि-

जलधि-जीमूत-मेरी-निर्झर-सं-  
भव- -व: नाद ३४.

जल-पङ्क-कण्टका(क-आ)दि-  
-दिषु योसू ३,४०.

जल-पवित्र- -त्रम् जा ६; या २,१.

जल-पुष्करिणी<sup>१०</sup>- -ण्य: सार २६७:  
१६.

जल-प्रवाह- -ह: सार २६७:१७.

जल-बिन्दु- -न्दव: रुजा १,१; २;  
सिशि ३८१:२३.

जल-बुद्बुद्-

जलबुद्बुद्-वत् सुवा ८.

जल<sup>a</sup>-भूमी(मि<sup>१०</sup>-इ)न्दु<sup>१</sup>-संपात-  
कासा(म-आ)दि<sup>६</sup>-कृष्ण-  
-प्याय गोपू ११<sup>h</sup>.

जल-मणि- -णय: सार २२२:१३.

जल-मध्य- -ध्ये रूढ २५; म १,९.

जल-मय- -य: पारा १४.

जल-यन्त्र-

जलयन्त्र-मुखा(ख-आ)वि-  
भूत- त: सार २६७:१७.

जलयन्त्र-शीकर- -रै: सार  
२६७:१८.

जलयन्त्रशीकर-कणिका-

जलयन्त्रशीकरकणिका-  
मय- -यै: सार २७१:१८.

जलयन्त्र-स्थ-घट-मालिका-  
जाल-

जलयन्त्रस्थघटमालिका-

जाल-वत् त्रिवि ६,९.

जल-रहित- -ते अद्वै २६.

जल-रौप्य-पुरुष-रेखा(खा-आ)दि-

जलरौप्यपुरुषरेखादि-वत् पै १,४

जल-वासि(न्>)नी<sup>१०</sup>- -न्यै वपं  
३१२:२.

जल-शीकर-संयोग-

जलशीकरसंयोगि(न्>)नी-  
नी सार २७१:१८.

जल-शुद्धि-क्षालना(न-आ)चमन-

जलशुद्धिक्षालनाचमन-करा-

क्षतप्रक्षेप-त्रिविधविश्रोत्सारण-

भूम्यभिमन्त्रण-जलाभ्युक्षण-

कुसुमशुद्धि-यन्त्रनिर्माण-रूप<sup>१</sup>-  
-पात् तारा ८३:१०<sup>१</sup>.

जल-संविद्- -वित् महा ५,१५०.

जल-संपत्ति- -स्यै सार २६४:९.

जल-सेचन- -नम् सार २२४:५.

जल-स्थल-कमण्डलु- -लु: तुअ  
२०; या २,१.

जल-स्पर्श- -शात् सार २६७:२२.

जला(ल-आ)कारा(र-आत्मक>)-

त्मिका- -का सी १९.

जला(ल-अ)ग्नि-शस्त्र-खाता(त-आ)-

दि-बाधा- -धा योशि १,३५.

जला(ल-आ)दि-

जलादि-वत् सांसू ६,६१.

जला(ल-अ)न्ना(न-आ)दि- -दि

त्रिवा २,६३<sup>k</sup>; -दीनि शां १,४;

जाद ४,१२.

a) तस. । b) बस. । =सखीविशेष- । c) =देवीविशेष- । d) =क-कार- । e) =ली-कार- । f) =अनु-  
स्वार- । g) एतदन्तेन बस. गर्भितः कस. । h) °मि तु संपाताः का° इति निसा., °तः का° इति निसा. संदि.,  
रसनभजनभूमीन्दुसंपातः का° इति आन. । i) द्रस. गर्भितः बस. । j) °न्त्रणं जला° इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।  
k) 'ज्वलनादि' इति निसा., तच्च 'जलनादि' इति च अख्या. संदि. ।

जला(ल-अ)भि(ज्ञ>)ज्ञा- -ज्ञा  
सार २६९ : ९.  
जला(ल-अ)भिषेक-  
जलाभिषेक-वत् सांस् १,८४.  
जला(ल-अ)वतरण- -णम् पप  
४१९ : १.  
जला(ल-अ)शय- -याः सार २७५ :  
२३.  
जला(ल-अ)स-भेषजी- -जीः  
नी १, ३.  
जलो(ल-उ)दर<sup>१</sup>- -रः यो १, १८<sup>b</sup>.  
जलो(ल-उ)परि शां १, ४<sup>c</sup>.  
जलो(ल-अ)का- -का व्र १.  
जलौका-वत् व्र १.  
जलौ(ल-अ)षधि-वीरुध्- -रुधाम्  
वटु ३१६ : १८<sup>d</sup>.  
३जल<sup>e</sup>-  
जलं-धर<sup>१</sup>- -रम् योचू ४५.  
जली<sup>f</sup>- -लि व ४३५ : १८.  
जलूका<sup>g</sup>- -का योशि १, १२५<sup>h</sup>.  
✓जल्प  
जल्प- -लैः योशि १, ६१.  
जल्पे(ल्प-ई)श्वर- -रे शि ६,  
१८९.  
जव-जवन- ✓जु द.  
जवन्ती<sup>i</sup>-  
जवन्ती-कुसुम- -मैः रा ४२४ : ८.  
जवस्-जवित्-जविष्ट-जवीयस्-  
✓जु द.  
जहत्- ✓हा(त्यागे) द.  
जहु<sup>j</sup>-  
जाह्व(व>)वी<sup>k</sup>- -वी गी १०, ३१.  
१जागत- जगत्-> ३जगती- द.

२जाग(गृ<sup>१</sup>)त- -तम् वरा ५, ३६.  
✓जागृ, जागर्ति क २, २, ८; मैत्रि ६,  
१७; अ ३; त्रिवि १, २; वरा ४,  
२३; श्या १९; गी २, ६९; जाग्रति  
प्र ४, १; ३; गी २, ६९; जाग्रत  
क १, ३, १४.  
जागर- -रः वरा २, ६०<sup>२</sup>; -रात् यो  
१, ५६; -रे ते ६, ८८; योशि  
४, ११.  
जागरण- -णम् ससा १, ७; नाप ४,  
३८.  
जागरित, ता- -तः नाप ८, ७<sup>१</sup>; -तम्  
गौ ४, ३७; व्र २; अ ३; सुवा १५;  
नाप ५, १; योशि ४, ११; पित्र  
६, १०; -ता सार २८५ : ७; -ते  
गौ २, ४; ४, ३९; ६५; व्र २; नाप  
५, १; पत्र २.  
जागरित-देश- -शः वृ ४, ३, १४.  
जागरित-वत् गौ ४, ३७.  
जागरित-स्थान- -तः मां ३; ९;  
वृ ४, ४; वृ १, ६; २, ५; राउ  
३, १; वउ १, ४.  
जागरिता(त-अ)दि- -दिषु पित्र  
५, १०.  
जागरिता(त-अ)न्त- -न्तम् क  
२, १, ४.  
जागरूक- -कः रा ४, १३; -कस्य  
महा ५, ६३.  
जागृवस्- -वद्भिः क २, १, ८९<sup>m</sup>;  
-ऽ<sup>n</sup>वांसः आरु ५; वृजा ८, ६;  
वृ ५, २१; सुवा ६; स्क १५;  
राउ ५, २९; पै ४, २३; ता ३,  
९; वरा ५, ७७; सु २, २, ७७.

जाग्र<sup>१</sup>- -ग्राय सुवा ४.  
१जाग्रत्- -ग्रत् गौ ४, ६५; कौ २,  
५; महा ६, ३४; सिशि ३८१ :  
११<sup>p</sup>; -ग्रतः वृ ६, ४, ४; गौ ४,  
६६; मना २, ५९<sup>q</sup>; महा २, १०;  
५, १४; अज ५, १; २७; १शिसं  
१९<sup>r</sup>; २शिसं ८९<sup>r</sup>; गी ६, १६<sup>s</sup>.  
२जाग्रत्<sup>t</sup>- -ग्रत् वृ ४, ३, १४; २०;  
गौ ३, २९; ३०; ४, ४१; ६१;  
६२; व्र १; २; कै १, १२;  
ते ४, १०; नाप ६, १<sup>३</sup>; त्रिवा २,  
१०; महा ५, ८; ११; १२९<sup>३</sup>;  
१५; १७; शारी ५; अज ५, ८७;  
१०९; अजि ३२; वरा ४, २३;  
वउ ३, ९; पित्र ६, ८; -ग्रतम्  
व्र ३, १३<sup>३</sup>; -ग्रति व्र १; वृउ २,  
१; त्रिवा २, १०; योचू ७४; मं  
२, ४, २; नाप ५, ५; पै २, २६;  
महा ५, १८; अज २, १२; ५,  
११६; वरा ४, ११.  
जाग्रच्-चित्ते(त-ई)क्षणीय-  
-याः गौ ४, ६६.  
जाग्रत्-काल- -ले नाप ५, १.  
जाग्रत्-तुरीय- यः पप ४१९ :  
२९; -ययोः पाशु १, २.  
जाग्रत्-तैजस- -सः पप ४१९ :  
२८.  
जाग्रत्-प्राज्ञ- -ज्ञः पप ४१९ :  
२९.  
जाग्रत्-संस्कारो(र-उ)स्थ-  
प्रबोध-  
जाग्रत्संस्कारोत्थप्रबोध-वत्  
पै २, ३९.

a) 'जलाषभेषजाः' इति JC. । b) 'जलोदरस्त्रीहः' इति अज्या. ? । c) 'रुधाम्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः ।  
d) अर्थः व्यु. च ? (=२जल-) । e) =मुद्राविशेष- । f) तु. टि. कुली- । g) व्यु. ? =जलौका- । h) 'जम्बुकः' इति  
अज्या. । i) व्यु. ? । j) =राजर्षिविशेष- वा हिमगिरिगुहाविशेष- वा ? (तु. MW.) । k) पा. ? प्राति. यनि.  
सु-शोधमिति कृत्वा अधन्यम् इति किवि. द. । l) 'तस्थः' इति अज्या. । m) ऋ ३, २९, २ । n) ऋ १, २२, २१ ।  
o) =जागर- । वज्रैः कः प्र. (पावा ३, ३, ५८) । p) 'जाग्रत्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । q) तैआ १०,  
५९ । r) मा ३४, १ । s) 'अतिजाग्रतः' इति SCHR. पाभे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)] । t) विशेषि. । =जाग-  
रिताऽवस्था- । u) 'जागरितम्' इति निप्ता. ।

जाग्रत्-संस्थिति- -तिम् महा  
५, ११.

१जाग्रत्-स्वप्न<sup>a</sup>- -मः महा ५,  
८; १४१<sup>१</sup>.

२जाग्रत्-स्वप्न<sup>b</sup>- -मे व्र ३, ११;  
यो ३, २९.

जाग्रत्स्वप्न-प्रपञ्च- -ञ्चे पै २,  
४३.

जाग्रत्स्वप्न-रूप- -पः ते ३,  
४५.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति- -सयः ते  
६, ८.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति- -सेषु पित्र  
६, ७.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-रूप(प>)-  
पा- -पा गार ४०७ : ३.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति- -सयः वरा  
१, ६; -सिषु व्रवि ११; कुं १५;  
नाप ५, १; ६, १; त्रिता ५, ११;  
नाड १, २५१<sup>१</sup>; अवि ११.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-तत्(>>)-  
यो ३, २७.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-स्थिति-  
वस्था- -स्थाः पै २, ३३.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-स्थिति-  
दि- -दि ते ५, १०३.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-स्थिति-  
प्रपञ्च- -ञ्चम् कै १, १७.

१जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-तुरीय<sup>b</sup>-  
-यम् ससा १, १<sup>a</sup>; शारी ५.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-तुरीय-  
तुरीयाती(त>)ता- -ताः मं  
२, ४, १.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-तुरीय-  
तुरीयातीत- -तः गोड ६४<sup>१</sup>.

२जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-तुरी-  
(य>)या<sup>c</sup>- -याः नाप ६, १<sup>d</sup>;  
योचू ७२; वरा ४, १.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-तुरीया-  
(य-अ)वस्था- -स्थाः नाप ५, १;  
पत्र २.

जाग्रत्स्वप्नसुप्ति-तुरी-  
यावस्था-भेद- -दैः तु १२.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-मूर्च्छा-  
मरण-धर्म-युक्त- -क्तः पै १,  
३२.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-मूर्च्छा-  
मरणा(ण-आ)द्य(दि-अ)व-  
स्था- -स्थाः पै २, ३४.

जाग्रत्-स्वप्न-सुप्ति-मूर्च्छा-  
(च्य-अ)वस्था- -स्थानाम् पै  
२, ४६.

जाग्रत्-अवस्था- -स्था हं ८; पै  
२, ३६; -स्थायाम् नाप ६, १;  
पप ४१९ : २१; २३.

जाग्रत्-आदि-चतसृ- -स्रः  
नाप ६, १; पप ४१९ : २२.

जाग्रत्-आदि-विमोक्षा(त्-अ)-  
न्त- -न्तः महा ४, ७३; वरा २, ५४

जाग्रत्-दृक्षा(शा-अ)धिष्ठायि-  
(न्>)नी- -नीम् विद्या १.

जाग्रत्-वत् वसू ४, ४, १४.

जाग्रत्-विश्व- -श्वः पप ४१९ :  
२८; वरा ४, १.

जाग्रत्-वृत्ति- -त्तिम् त्रिवा २,  
१५०; १५१; -त्तौ गौ २, १०.

जाग्रत्-व्यवहार-लोप- -पात्  
पै २, ४०.

जाग्रत्-निद्रा(दा-अ)न्त-परि-  
ज्ञान- -नेन मं २, ३, २<sup>h</sup>.

जाग्रत्-निद्रा-विनिमुक्त, क्ता-  
-क्तः नाद ५५; -क्ता मैत्रे २, ३०;

महा ५, ६.

जाग्रत्-नेत्र-द्वय<sup>i</sup>- -योः (१यः<sup>j</sup>)  
योचू ८२.

जाग्रत्-मात्रा-चतुष्टय- -यम्  
पप ४२० : १.

जाजी<sup>k</sup>-

जाजी-कुसुम- -मैः रा ४२४ : ४.

जाज्वल्यमान- √ज्वल् द.

जाठर- जठर- द.

जाड्य- जड- द.

जात-, १-३जाति- √जन् द.

४जाति<sup>k</sup>-

जाति-यूथिका-मल्लिका-सुवर्णयूथि-  
का-प्रकर-सु-गन्ध-संवलित-  
-ते सार २५९ : १.

जाती<sup>k</sup>-

जाती-पुष्प-समायोग- -जैः लु १९<sup>l</sup>.

जाती-फल<sup>m</sup>- -लम् शि ६, ५०.

जातु<sup>n</sup> वृ ३, ८, १; १२; नाप ३, ३७;  
शा २०; गी २, १२.

जातृकर्ण- जतू- द.

जानकि-, °की- √जन् द.

जानत्- √ज्ञा द.

जानपद-, जानश्रुति- √जन् द.

जानु<sup>o</sup>- -नु कौ २, ३; १योत ४०;  
-नुनि नाद ३<sup>p</sup>; रार २, २४; -नुनी  
लु ७; त्रिवा २, ३५; १३२; गार  
४०८ : ९; -नोः १योत ८८; -नौ  
शां १, ७, ५२; -न्वोः त्रिवा २,  
४८; शां १, ३, ५; जाद ६, ३९.

जानु-तत्(>>)गरु ५; त्रिवा २, ४४<sup>q</sup>

जानु-द्वय- -ये वृजा ४, २२; जाद  
७, ८.

a) तस. । b) समाहारे द्वस. । c) °स्त्रीषु इति मुपा. यनि. सु-शोधः । d) °सं तु<sup>o</sup> इति आन. । e) °सिम्  
अतीत्य तुर्यातीतः इति आन. । f) द्वस. । g) °याव<sup>o</sup> इति अज्या. । h) °अग्निन्दान्तः परि<sup>o</sup> इति निसा. । i) वस. ।  
j) मुपा. (तु. उन्न.) यनि. सु-शोधः । k) व्यु. ? = कुमुममृद-उद्भिदविशेष- । l) °समं योगी इति अज्या. °तिपुष्पमयं  
योगी इति अज्या. संटि. । m) व्यु. ? नभा. = जाह्नफल । n) अव्य. । व्यु. वैप १ यद्र. । o) व्यु. वैप १ यद्र. । p) °नुनोः  
इति आन. । q) °नुनोः इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या. संटि.) ।



|   |   |   |
|---|---|---|
| जानु(नु-उ)परि त्रिवा २,५१.  | १जाल <sup>h</sup> -लम् श्वे ५,३; ब्र १; महा ६,३२; सिसि ३८२:२२; लेन मै ३,२; मैत्रि ३,२; ६,३०.  | ८, १८; १९; योशि १, १०९; १संन्या २, २४; अव्य ६; सावि १० <sup>३</sup> ; त्रिता १, ५६; सूता २, ७; गा २; ४; ६; षो ७; ११; १५; १७; वपू २, २; वउ ५, ११ <sup>३</sup> ; १३; जयन्ति वृ ६, २, १६; वपं ३१२:२१; जयामि १संन्या २, ५५; जय-जय त्रिवि ७, ३१; लां २१५:१७; २१; व ४३०: १२; ४३१:९; ४५७:८; अजयन् वृपू २, १; जयेत् महा ५, ७५; मु २, २, ४२; जयेयुः गी २, ६; जयेयम् अव्य ६; जयेम २प्र ३३:२०; गी २, ६. जेतासि <sup>५</sup> गी ११, ३४. जीयते वृ १, ५, १५. १जिगीष्यति कौ १, ३९ <sup>r</sup> . |
| जानु(नु-अ)न्त-न्तम् जाद ८, ४ <sup>०</sup> .                                 | जालक-कम् वृ ४, २, ३ <sup>१</sup> .  | १जय <sup>३</sup> -यः कृ १४.   |
| जान्वा(नु-आ)दि-नाभ्य(भि-अ)-न्त-न्तम् वपं ३१२:७.                             | जालकित-जालकित-क्लि <sup>१</sup> -न्नम् सुवा १२१ <sup>k</sup> .  | २जय-यः छां २, १०, ६; ते ४, १९; गी १०, ३६; यम् छां २, १०, ६; योशि १, १०१; यो १, २; मु २, ४७; गु ८; ये १योत ५९.   |
| जान्वा(नु-आ)दि-पाद-पर्यन्त-न्तम् वपं ३१२:४.                                 | जाल-गवाक्षक-का: शि ४, ७.  | जय-जीवित-ताय लां २१४:४  |
| जान्वा(नु-आ)सक्त-कम् द ५.   | जाल-वत्-वान् श्वे ३, १.   | जय-लक्ष्मी-क्ष्मी: व ४२७:५.   |
| जाप-जापिन्-जाप्य-✓जप द.   | २जाल <sup>१</sup> -जालं-धर <sup>१०</sup> -र: ध्या ७८; १योत २६ <sup>n</sup> ; योचू ५०; योशि १, १०३; ५, ३९; यो १, ४१; -रम् योशि १, १७४; ५, ११; योरा १७; -रे ध्या ७८; योचू ५१.   | जय-श्री-श्रिये लां २१४:४ <sup>१</sup> .   |
| जाबाल-°लायन-°लि-जबाल-द्र.   | जालं-धर-पीठ-ठम् सौ ३, १.  | जया(य-अ)जय-यम् <sup>१</sup> ते ३, ५६; ६, ५४; -यौ गी २, ३८.  |
| १ <sup>b</sup> जामातृ <sup>०</sup> -०न्त: व ४४१:९; ४४६: १६; ४५१:१०; ४५४:१६. | जालं-धरपीठा(ठ-आ)ल-(य>)या-याम् विद्या २.   | जया(य-अ)र्थ-जयार्थिन्-र्थी रार २, १५.   |
| जाम्बवत् <sup>१</sup> -वन्तम् रार १, ७; रापू ४, ३६; -वान् ता २, १; ३, १.    | जालं-धरा(र-आ)ख्य-ख्य: १योत ११९; योशि १, १११.  | जयि(न्>)नी <sup>v</sup> -नी आय ३९८:१२.  |
| जाम्बवती <sup>१</sup> -ती राधा ४, २.  | जालं-धरा(र-अ)भिध-ध: शां १, ७, ११; योशि १, १०९; यो १, ५१.  | जयो(य-उ)पाय-य: योशि १, ६०.  |
| जाम्बूक <sup>१d</sup> -क: वमू १३९ <sup>५</sup> .                            | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जाम्बूनद <sup>०</sup> -जाम्बूनद-मणि-णिना सार २३९: १२.                       | ✓जि,>जिगीष, जयते मुं ३, १, ६ <sup>०</sup> ; १०; जयति प्र ५, १; छां १, ९, २; २, ७, २; १०, ५; ४, ५, ३; ६-८, ४; वृ १, ३, २२; ५, १३ <sup>३</sup> ; २३; ३, १, ७; ८ <sup>५</sup> ; ९; १० <sup>३</sup> ; २, १२; ५, ४, १; ११, १; १३, १-४; १४, १-३; अ ३; कौ १, ७; वृजा ८, ४ <sup>१</sup> ; वृपू १, ६; २, १ <sup>p</sup> ; ५, १३; १६ <sup>३</sup> ; त्रिवि २, १५. |   |
| जाम्बूनद-सुवर्ण-खचित-सु-को-मल-लम् सार २६२: १२.                              | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जाम्बूनद-सुवर्ण-भूमि-मणि-गण-चित्रित-मध्य-स्थल-लम् सार २६३: १८.              | ✓जि,>जिगीष, जयते मुं ३, १, ६ <sup>०</sup> ; १०; जयति प्र ५, १; छां १, ९, २; २, ७, २; १०, ५; ४, ५, ३; ६-८, ४; वृ १, ३, २२; ५, १३ <sup>३</sup> ; २३; ३, १, ७; ८ <sup>५</sup> ; ९; १० <sup>३</sup> ; २, १२; ५, ४, १; ११, १; १३, १-४; १४, १-३; अ ३; कौ १, ७; वृजा ८, ४ <sup>१</sup> ; वृपू १, ६; २, १ <sup>p</sup> ; ५, १३; १६ <sup>३</sup> ; त्रिवि २, १५. |   |
| जाम्बूनद-सुवर्ण-भूषित(ता>)ता-ता सार २७१: १६.                                | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जायमान-जाया-✓जन् द.   | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जार <sup>०</sup> -रा वृ ६, ४, १२; व ४३७: १५९ <sup>१</sup> .                 | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जारत्कारव-✓वृ द.  | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |
| जारु <sup>०</sup> -जारु-ज-जानि ऐ ५, ३.                                      | जाह्नवी-जहु-द्र.  |   |

a) ०न्तः इति अच्चा. संटि. । b) ऋ ८, २६, २१ । c) व्यु. वैप१ यद्र. । d) =अष्टविशेष- । व्यु. ? <जम्बूक- इति प्रस्थ. । e) व्यु. ? विप. । =प्रदीप्त- । f) ऋ १, ६९, १ । g) व्यु. ? =जरायु- । h) =आनाय- । व्यु. वैप१ यद्र. । i) 'चालकम्' इति निसा. । j) कप्त. । k) ०क्लि<sup>०</sup> इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (वैतु. उव्र. अच्चा. च पू. स्थाने जाठोण इत्येतत् पदमिति १, ०क्लि<sup>०</sup> इति अच्चा. संटि.) । l) अर्थः व्यु. च ? (=३जल-) । m) =मुद्राविशेष- । n) उत्तरेण संधिरार्थः । o) 'जयति' इति आन., 'जयेत्' इति आन. संटि. । p) 'तरति' इति अच्चा. संटि. । q) तु. टि. गन्तासि । r) 'जरयिष्यति' इति शांआ ३, ३; आन., वे. । s) =दानविशेष- (तु. सस्थ. मुष्टिक-) । t) ०श्रियः इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. एप.) । u) समाहारे द्वस. । v) =देवीविशेष- ।

३जय<sup>a</sup>

जय-द्वय- -यम् रार २, ५६.

जय-शब्द- -ब्दम् सार २६८:

१५.

४ज(य>)या<sup>b</sup>- -या व ४२७:८.५ज(य>)या<sup>c</sup>-

जया(य-आ)घ(दि-अ)प्सर:-

स्त्री- -स्त्रीभिः सी ३७.

जयत्- -यन्तः पा ९, १०; -यन्तम्

सुबा ४.

जयद्-रथ<sup>d</sup>- -थम् गी ११, ३४.१जयन्त<sup>e</sup>-जाय(न्ति>)न्ती<sup>f</sup>-

जायन्ती-पुत्र- -त्रः, -त्रात्

वृ ६, ५, २.

२जयन्त<sup>g</sup>-

जयन्त-क- -कः रापू ४, ३६.

३जयन्त<sup>h</sup>-

जयन्त-कुमुद-जय-विजय-

-याः सार २४९:२१.

जयन्त-कुमुद-जय-विजय-गरु-

डा(ड-आ)घ- -घाः सार २८५:

२०.

४जयन्त<sup>i</sup>-जयन्त-पुर-वाहि(न्>)नी<sup>j</sup>-

-०नि व ४३१: ५.

५जय(न्ति>)न्ती<sup>k</sup>-

जयन्ती-संभव- -वः कृ २०.

जय्य- -य्यः वृ १, ५, १६.

जिगीषत्- -षताम् गी १०, ३८.

जिगीषा- -षा मैत्रि ३, ५.

जिगीषु<sup>l</sup>-जैगीषव्य<sup>m</sup>- -व्यः स ३७८:१.

जित, ता- -तः वृ ५, ४, १; ते ६,

९५; जाद ६, २३; ४३; सूता ३,

९; गी ५, १९; ६, ६; -तम्

त्रित्रा २, ५२; योशि १, ३८; ३९;

जाद ३, १३; -ता सुबा ६; अन्न

५, ११८; -ताः योशि १, ३८;

-ताम् सुबा २; -ते जाद ६, ४४.

जित-काम, मा- -मः पित्र ६, १८;

-मा सार २६३: १५<sup>n</sup>.

जित-क्रोध- -धः ते १, ३; नाप ६,

१; २९; शां १, ५; पित्र ६, १७.

जित-देह- -हः पित्र ६, १७.

जित-द्वन्द्व- -न्द्वः पित्र ६, १७.

जित-विन्दु- -न्दुः शां १, ७, १४.

जित-लोक- -काः सूता ३, ९;

-कानाम् वृ ४, ३, ३३<sup>r</sup>.

जित-वाङ्-मानस- -सः पित्र

६, १७.

जित-वास-वि-चेतस्- -तसाम्

योशि ५, ४६.

जित-सङ्ग- -ङ्गः ते १, ३; पित्र

६, १७.

जित-सङ्ग-दोष- -षाः गी १५, ५.

जिता(त-अ)जित- -तानि पित्र

१, १४.

जिता(त-अ)स्मन्- -०स्मन् पा

१, १; -स्मनः गी ६, ७; -स्मा

गी १८, ४९.

जिता(त-अ)सन<sup>o</sup>- -नः पित्र ६,

१८.

जिता(त-अ)सन-गत- -तः शां

१, ५.

जिता(त-अ)हार- -रः पित्र ६,

१७.

जिते(त-इ)न्द्रिय- -यः ते १, ३;

नाप ३, ३८; ५, १४; १५; ६, १;

२३; २९; योशि ५, ५५; यप

४१९:६; या २, १८; वरा २, ४;

गोच ६८:९; गी ५, ७; -याणाम्

योशि ५, ४६; -याय अता १;

सूता १, ३७; -यैः सूता १, ३६.

जितव(त्&gt;)ती- -ती सार २६५:५

जिति- -तिः, -तिम् कौ १, ७१५<sup>m</sup>.

जित्वन्- -त्वा वृ ४, १, २.

जित्वा नाद ३२; योशि १, १४८;

अव्य ३; ४; गी २, ३७; ११, ३३.

जिष्णु- -ष्णुः वृ २, १, ६; कौ ४, ७.

जैतव्य- -व्यः सु २, २, ५.

जैतुम् सु २, २, ४३; अन्न ४, ९०.

जैतु- -ता वृ ३, ८, १; १२; रापू ४, ८.

जैत्र- -त्रम् शौ ५१: १५.

जैष्यत्- -ष्यन्तः छां ८, ८, ५.

जिघ्रत्- ✓घ्रा द.

\*जिज्ञासया-, जिज्ञासा-, जिज्ञासि-

तव्य-, जिज्ञासु- ✓ज्ञा द.

जिन<sup>n</sup>-

जैन- -नाः सार २७३: १२.

जैन-बौद्ध-चार्वाक-मीमांसक-

वेदान्त-न्याय-पातञ्जल-मता-

(त-अ)न्तर- -राणि सार २३२:

१०.

✓जिन्व्, जिन्वति व ४३७:१०९<sup>o</sup>;जिन्वथ मना १, १२९<sup>p</sup>.

जिहीर्षा- ✓हृ द.

जिह्वा<sup>q</sup>- -ह्यम् प्र १, १६.जि(ह>)ह्वा<sup>r</sup>- -ह्यवा वृ ३, २, ४; कौ१, ७; ३, ६; मना २, ६०९<sup>r</sup>; शां

१, ७, १४; ३०; ४७; ५०; १संन्या

२, १६; यो १, ३०; जाद ६, २५;

a) 'जय' (लोडि मपु १) इत्यस्य पदस्यानुवादमात्रम् । b) =देवीविशेष- । c) =अप्सरोविशेष- । जयजय<sup>o</sup> इति उग्र. । d) =क्षत्रियविशेष- । e) =ऋषिविशेष- । f) तु. पा ४, १, ६५ । g) =दाशरथिमन्त्रिविशेष- । h) व्यु. ? =वैष्णव-पार्श्ववर्ति-विशेष- । i) =इन्द्रसूनु- । j) =आविर्भावाऽवसर- (तु. उग्र.) । k) =मुनिविशेष- । l) बस. । m) चि<sup>o</sup> इति निसा. च 'चित्चित्तम्' इति अग्न्या. (तु. उग्र.) च मुपा. यनि. सु-शोषौ (तु. शांआ ३, ७; आन., JC., वे.) । n) व्यु. ? =तीर्थङ्कर- । o) ऋ ८, ४४, १६ । p) ऋ १०, ९, ३ । q) व्यु. वैपश् यद्र. । r) ऋ १०, ३७, १२ ।

२६; २९; त्रिब्रा २, १११; १योत  
७१; वउ ३, २७; -ह्वा तै १,  
३, ४; ४, १; छां ५, ७, १; वृ २,  
४, ११; ३, २, ४; ४, ५, १२; कौ  
३, ५; ७; गर्भ १; ५; मना २,  
१२, २९<sup>०</sup>; सुबा ५; ६; ते ४,  
१०; ६, ६; ध्या ७९; ८२; नाप  
४, ३८९<sup>०</sup>; योचू ५२; ५५; शां  
१, ७, ४३<sup>०</sup>; शारो १; ७; योशि  
५, ४०; यो २, ४०; जाद ४,  
२१; प्रा ४, १; इ १०: २०; निरु  
२, ३; वपं ३१२: १८; भव २,  
१८; -ह्वा: सुं १, २, ४; मना २,  
१२, १९<sup>०</sup>; -ह्वा: कौ ३, ६; सुबा  
९<sup>०</sup>; कुं १८; १योत ११७; त्रिब्रा  
२, १४६; शां १, ७, ४३; २प्र ३२:  
११; पी ४२२: १; व ४३६:  
११; १४; षो २३; -ह्वा: नाप  
६, १; शां १, ४; -ह्वा: सुबा ५.  
जिह्वा(ह्वा-अ)प्र-प्रम् इ १३: ५;  
-मे सर ३, ४; हंषो ५.  
जिह्वा(प्र-अ)दर्शन- -ने  
त्रिब्रा २, १२७.  
जिह्वा(ह्वा-अ)प्र-देश- -शे मैत्रि ७,  
११.  
जिह्वा-त्रय- -यम् गु २२.  
जिह्वा-द्वार- -द्वारा त्रिब्रा १, ९.  
जिह्वा(ह्वा-अ)न्त- -न्तम् योशि ५,  
२३.  
जिह्वा(मर्कटिका(का-आ)क्रान्त-  
वदन-द्वार-भीषण- -णम्  
महा ३, ३०.  
जिह्वा-मात्र- -त्रम् यो २, ४१.  
जिह्वा-मूल- -ले जाद ६, २६; शां  
१, ७, ४७.  
जिह्वा-वत्- -वतः, -वान् वृ ६, ५, ३.

जिह्वा(ह्वा-उ)पस्थो(स्थ-उ)दर<sup>d</sup>-

-रम् नाप ३, १४.

जीरक- -कम् शि ६, ७३.

जीर्ण-जीर्यत्- ✓/जू द्र.

✓जीव> जीवि, जिजीविष, जीवति

क २, २, ५; छां २, ११-२०, २; ४,

११-१३, २; ५, ९, २; वृ १, ५, १५;

६, २, १३<sup>०</sup>; कौ ३, ३<sup>०</sup>; नाप ५,

१; महा २, ४७; ३, १३; १संन्या

२, ५९; अज २, २७; क २४;

वरा २, ८१; ५, ५; इ ११: २०;

भव १, ८; वउ २, ३७; गी ३,

१६; जीवन्ते पत्र ३, ९; जीवन्ति

क २, २, ५; तै २, २, १; ३, १-६,

१; छां १, ११, ९; मैत्रि ६, ११;

वृ १, २, ३, ५; ते १, ४३; महा

३, १३<sup>०</sup>; योशि १, ४६; त्रिता

५, २१; म २, ९९<sup>०</sup>; वपू १, ४;

२, ३; वउ २, ३६<sup>०</sup>; ३७; भव

१, ५४; जीवसि द १; जीवामि

अज ५, ६०; ९१; जीव क १,

१, २३; कौ २, ११; जीवाम शे

१, १; कृपु १६; अजीवत् छां

३, १६, ७; जीवत् छां ७, ९, १;

त्रिब्रा २, ११०; जाद ६, २३; इ

१०: ८; १९: १९.

जीविष्यन्ति शि ७, १०५; जीवि-

ष्याम: क १, १, २७; १'जीव्या-

सम् कृपु १६; १७; अजीविष्यम्

छां १, १०, ४.

जीवयति वरा २, ७९; जीवयामि

बुजा ६, १; ४.

जिजीविषाम: गी २, ६; जिजी-

विषेत् ई २.

जीव- -व भव २, ३३<sup>०</sup>; -व: छां

६, ११, २; ३; शे ५, ९; गौ

१, १६; ३, ७; ११; ४८; ४,  
६८-७१; मैत्रि ६, १९; मैत्रे २,  
१; ब्रवि १३; कै १, १३; १४<sup>०</sup>;  
मना २, १५९<sup>०</sup>; ब्र २; ३, ११;  
वृ ४, १५, ३१; वउ ९, ७; कु  
२२; ससा १, ३; नि ४; १६;  
१७; शु २, ५; ३, १२; वसू ४;  
५; ७; ते २, ४; ३३; ४, १४; ५,  
१०; ६, ३३; ३८; ध्या ५०; ५८;  
६०; ६२; ६३; ९९<sup>०</sup>; ब्रवि १४;  
१६; १९; १योत १३; नाप ६,  
१<sup>०</sup>; त्रिब्रा २, १२<sup>०</sup>; १३; १६;  
६१; ६२; १६४; योचू २७-३२;  
८४<sup>०</sup>; ९०; ९१; योशि ६, १६<sup>०</sup>;  
मं १, ४, ३; २, ४, २; स्क ६<sup>०</sup>;  
७<sup>०</sup>; १०; त्रिवि ४, १२; ५, ४;  
मुद्र ४; शां १, ४; पै २, ३६; ४३;  
४८; महा ५, ९३<sup>०</sup>; १२७; योशि  
१, ११; १६; ३१; ६, ५१; ५२;  
५४; ७८; अज १, ५७; २, १०;  
११; ४, ३२; पाशु १, १२; २, २२;  
त्रिता ५, १३; क ३९; रुह ४१;  
४४; वरा ५, ५४; जावा २, ८;  
सर ३, २०; नाउ १, २१; पा २,  
४; सार २८९: २२; २९०: २;  
५; ८; २३; २९१: ६; ८; २०; व  
४६७: २; ३<sup>०</sup>; भव २, ३६; अवि  
१३; -वम् क २, १, ५; गौ २,  
१६; सार २९२: ६; -वस्य ब्र ३,  
१६; वसू ६<sup>०</sup>; महा ५, १८; १८६;  
योशि १, ३२; पत्र १; वरा ५,  
५४; कलि २; सार २८९: १५;  
२९०: १६; २३; २९१: ५; भव  
२, ५८; -वा: छां ८, ३, २; गौ  
३, ४<sup>०</sup>; ५; ४, ६८; ७०; मना २,  
४७९<sup>०</sup>; वउ ९, ७; १योत ४;

a) श्रु ४, ५८, १। b) तैआ ७, ४, १। c) तैआ १०, १०, १। d) समहारे द्रस.। e) तैआ ९, १, १।

f) 'जीव्यायम्', 'जीव्यासम्' इति मुग. यनि. सु-शोधौ। g) तैआ १०, १४, १। h) 'जीवस्थः' इति  
अज्या. संटि.। i) 'वोर्ध्व' इति निसा. मुग. यनि. सु-शोधः। j) 'वर्ज्यः' इति अज्या.। k) 'जीवः' इति संटि.।

l) तैआ ३, ७, ७, ३।



श २७; त्रिवि ३,४;७;४,१४;  
योशि १,१; जाबा १०;११; कृपु  
१६<sup>१५</sup>; सार २१९ : ६;२२०:  
३; ७;११; २५० : १०; २८९:  
१५; २९० : ५; २९१ : २१;  
२९२ : ८;९; शि ४,५६;५७;  
६, १८८; १९१; -वान् गौ ४,  
६३;६५; मना १,१९<sup>१५</sup>; नाप ६,  
३६<sup>१५</sup>; गोड ३०; -वानाम् त्रिवि  
५,३;४; सांसू १,९७; -वेन छां  
६, ३, २; ३; ११, १; गर्भ ३<sup>६</sup>;  
-वेभ्यः भ २,४; -वेपु गौ ३, ६;  
-वैः गौ ३, ३; योशि १, २९;  
१३१; सर २,६.

जैव-

जैव-तन्-मात्र-विष-  
(य>)या-याः त्रिवा १, ७.  
जीव-क-कः अत्र ५, १०;  
कामे १६; ते ५,३२;१००.  
जीव-कला-लया या २, ४.  
जीव-कल्पित-तः महा४,७३;  
वरा २, ५४.  
जीव-घन-नात् प्र ५,५.  
जीव-चैतन्य-न्यम् करु ३७.  
जीव-ज,जा-जम् छां ६, ३,  
१; -जा त्रिता १, ४२.  
जीव-जन्तु-न्तवः योचू २६.  
जीव-जाति-तयः ध्या ४२.  
जीव-त्रय-त्रम् वरा १,११.  
जीवत्रय-गुणा(ण-अ)-भाव-  
-वात् ते ५,१८.  
जीव-त्व-त्वम् नाप ६,१<sup>२</sup>; पै  
१,३१;२,२;योशि४,१;१३; शु  
२, ५; सर ३, २०; २३; सार  
२५० : १३; सांसू ६,६३; -त्वेन

रापू २,१.

जीव-पर्याय-वासना(ना-आ)-  
वेश-

जीवपर्यायवासनावेश-  
तस्(>) महा ५,१४<sup>५</sup>.  
जीव<sup>०</sup>-प्राण<sup>०</sup>-शक्ति<sup>०</sup>-वश्य<sup>०</sup>-  
बीज-जानि रार ३,१.  
जीव-बीज-जम् ध्या ९६.  
जीव-बुद्बुद-दैः स्व ६१:२.  
जीव-ब्रह्म-चारिन्-री म४९:  
१६.  
जीव-ब्रह्मन्-ह्यणः पत्र २.  
जीव-ब्रह्म(ह्य-ऐ)क्या-  
(क्य-अ)र्थ-र्थे शु २,५.  
जीव-भाव-वः वरा २,७०.

जीवभाव-जगद्भाव-बाध-  
-धे पै २,५४.

जीवभावा(व-आ)दि-दिः  
पित्र ५,७.

जीव-भावना-नया १योत  
११; योशि १,९.

जीव-भूत,ता-तः गी १५, ७;  
-ताम् गी ७,५.

जीव-मध्य-ना(त>)ता-ता  
व ४६७ : २.

जीव-मुख्य-प्राण-लिङ्ग-  
-ज्ञात् ब्रस् १,१,३१;४,१७.

जीव-रूप-पस्य योशि १,  
१६९; ५, ५; -पेण १योत ८;  
योशि १, ६.

जीवरूपिन्-पिणः ध्या ५,८  
जीवरूपिणी-णीम्

योरा ७.

१जीव-ल<sup>१</sup>-

जैवल<sup>१</sup>-लिः छां १,८,१;

२;८;५,३,१; -लिम् वृ ६,२,१;  
-लेः वृ ६,२,४.

२जीव-ल<sup>१</sup>-

जीवला-ला प्रा १,३९<sup>६</sup>.

जीव-लक्षण-णम् भव २,३१.

जीव-लोक<sup>१</sup>-कै गी १५, ७.

जीव-वर्जित-तः वरा २,६७.

जीव-वाचिन्-ची रापू ४,१<sup>१</sup>.

जीव-विभ्रान्ति-न्तिम् महा  
४,७४<sup>१५</sup>; वरा २, ५५<sup>१५</sup>.

जीव-शक्ति-क्तिः योशि १,  
८५<sup>०</sup>.

जीव-शब्द-ब्दः योशि ४,  
१४<sup>१५</sup>.

जीव-शिव-रूप-पेण रुह  
४३.

जीव-सङ्ग-ङ्गः सार २८९ :  
२०<sup>१</sup>; २९० : १; २; ९; १०;  
२९१ : १०; २९२ : ११.

जीव-संज्ञक-कः ब्रवि १४.

जीवा(व-अ)क्षर-रम् त्रिता १,  
५३.

जीवा(व-आ)ह्य-ह्यम् शु २,  
५.

१जीवा(व-आ)त्मन्-त्मनः  
त्रिवा २,१६१; -स्मा योशि ६,  
४९; शारी ५; लि ३११ : ७;  
भव २,२१; ३, १८; -स्मानम्  
करु २५; त्रिवा २,७९.

जीवात्म-परमात्मन्-  
-त्मनोः भव ३,१३; पै ४,१०;  
१योत ६५; १०७; योशि १,६८;  
४,८; वरा २,३९; सौ २,१६.

जीवात्मपरमात्म-समु-  
द्भव-वः त्रिता १,५२.

a) सकृत् 'जीवः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । b) तैश्च १०,१,१ । c) 'जीवन्' इति निसा. मुपा. यनि.  
सु-शोधः (तु. अज्या.) । d) 'वसं' इति अज्या. । e) =इंस- । f) =सोऽहम् । g) =हीं । h) =ह्रीं । i) व्यु?  
=ऋषिविशेष- । j) व्यु. विशेषः वैपश् यद्र. । k) 'जीवला' इति शौ ८,२,६ । l) 'चि' इति आन. । m) 'विश्रा'  
इति अज्या. । n) 'विश्रा' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू., अज्या.) । o) 'वाः श' इति अज्या. ।  
p) 'वदार्थता' इति अज्या. । q) कस. ।

जीवात्मपरमात्मै(म-इ)-  
ति-चिन्ता-सर्वस्व-वर्जित-  
तः ते ४, ६५.

जीवात्मपरमात्मै(त्म-ऐ)-  
क्या(क्य-अ)वस्था- -स्था शां  
१, ११.

जीवात्म-रूप- -पम् ध्या  
९३, १.

जीवा(व-आ)त्मन्<sup>a</sup>- -त्मनोः  
गौ ३, १३; १४; मैत्रे २, १७;  
सुत्र २.

जीवा(व-अ)न्तर-आत्मन्-  
-त्मा राउ ४, ७.

जीवा(व-आ)दि-रूप- -पेण  
पाशु २, २४.

जीवा(व-अ)पेत- -तम् छां ६,  
११, ३.

जीवा(व-अ)भिधा- -धा १योत  
११; योशि १, ९.

जीवा(व-अ)भिमान- -नेन नाप  
६, १.

जीवा(व-आ)श्रित- -ताः महा  
५, १३५<sup>b</sup>.

जीवे(व-इ)तर- -रः नाप ६, १.

जीवे(व-ई)श- -शौ नृउ ९, ५;  
वरा २, ५१.

जीवेश-देशिक-विकल्प-  
कथा(था-अ)ति-दूर- -रे वरा  
२, ७३<sup>c</sup>.

जीवेश-वाद- -दयोः महा  
४, ७५; वरा २, ५६.

जीवेशा(श-आ)ख्य- -ख्यौ  
अत्र ४, ३२; रुह ४१.

जीवे(व-ई)श्वर- -रौ अता ३;  
अत्र १, १३.

जीवेश्वर-मेद- -दः त्रिवि  
४, १२.

जीवेश्वर-स्व-रूप- -पम् पै  
२, ३.

जीवेश्वरा(र-आ)त्मन्-  
-त्मना अत्र ५, ७७; जाद १०, ४.

जीवेश्वरा(र-आ)दि-रूप-  
-पेण महा ४, ७३; वरा २, ५३.

जीवेश्वरे(र-इ)ति-वाच्<sup>d</sup>-  
-वाक् ते ४, ४६.

जीवे(व-ई)श्वर-प्रकृति- -तयः  
भव २, १.

जीवो(व-उ)त्तम- -मस्य कृपु  
२२.

जीवत्- -वतः वृ ३, ९, २८, ५;  
अध्या १६; महा ४, ४०; ५, ६३;

-वता अन्न ५, ३८; वरा २, ५२;  
-वताम् अत्र ५, ८६; १योत ९;

योशि १, ६; -वन् छां ६, ११, १३;  
१आ २०; पित्र ६, १६; -वन्तः

राउ ३, ७.

जीवत्-काम- -मेभ्यः गरु १.

जीवत्-पितृक- -कः नाप ४, ३८.

जीवद्-विमुक्त- -क्तानाम्  
१संन्या २, ४३.

जीवन्-मुक्त- -क्तः अक्षि १;  
३९; अध्या ४४-४७; अन्न १,

४; २, २७; ३, २; ४, ९; ५, ५,  
४; ६८; ८३; अव्य ७; कालि ४०२:

३; ८; जाद १, ३; ५, १; तारा  
८३: ६; ते ४, १-३; ७; ११;

३०-३२; दत्ता ३; त्रिवि ५, १०;  
नाप ५, १; ६, १; ७; नापू १, ३;

४, १५; निर्वा २९७: ९; पी  
४२२: १९; पै ३, १; ३; भा ४१;

४३; मं १, ४, ३; २, ३, ७; ५, २;  
महा २, ४२-६२; ६, ४५; ४८;

यो ३, ३३; १योत १०६; योशि  
१, ४७; १५१; १६१; २, ६; रार

४, ९; ५, १६; वरा २, ४२; ४,  
२१-३०; ५, ७६; शु ३, १७;

१संन्या २, ७९; स्व ६२: ६३; ह  
१९; सांस् ३, ७८; -क्तम् योशि

१, १५९; -क्तस्य अन्न ४, १;  
१७; १८; महा ५, ९१; सु २,

२, ३४; ३५; -क्ताः अन्न ४, ५२;  
महा २, ४०; ५, ३७; ६, ३९; सु

१, १, ४२; वरा १, १६; ४, १;  
-क्तेषु महा ५, ३५.

जीवन्मुक्त-तनु-स्थित(त>)-  
ता- -ताम् अन्न २, ३.

जीवन्मुक्त-ता- -तया महा  
६, ६६; -ता महा ४, ३८; -ताम्

अन्न ५, १२०.

जीवन्मुक्त-त्व- -त्वम् महा  
२, ३७; १संन्या २, ९६.

जीवन्मुक्त-पद- -दम् पै  
३, ३; महा २, ६३; सु २, २,

७६; यो ३, ३४.

जीवन्मुक्त-विदेहमुक्त-  
-क्तयोः ते ४, १.

जीवन्मुक्त-व्यवस्थिति-  
-तिः अन्न ५, १०८.

जीवन्मुक्त-शरीर- -राणाम्  
अन्न ५, ६.

जीवन्-मुक्ति- -क्तिः अध्या १२;  
सु २, १, ११; -क्तिम् नाप ७;

-क्तौ सु २, २, ३२<sup>e</sup>.

जीवन्मुक्ति-दशा- -शाम्  
अन्न ३, ३; -शायाम् मं १, ४, ४.

जीवन्मुक्ति-दशा-गत-  
-तः वरा ५, ७५<sup>f</sup>.

जीवन्मुक्ति-लक्षण- -णम्  
वरा ४, १.

जीवन्मुक्ति-विदेहमुक्ति-  
-क्तयोः सु २, १, १.

a) द्वस. । b) 'जीवाः चितः' इति श्रद्धा. । c) गपू. (पृ २२) अति-दूर-> -रे इत्यत्र यनि. अतु  
शोधः द. । d) =जीवः) ईश्वरः) इति वाच्->वाक् इति कृत्वा छान्दसौ विसर्गलोप-संधी । e) °क्तः इति निसा. ।  
f) °भां ग° इति श्रद्धा. ।

जीवन्मुक्त्या(कि-आ)दि-  
 लाभ-भः सु २,१,१.  
 जीवन्-सुसुष्ठु- -धुभिः स्व  
 ६२:३.  
 जीवन-नम् छां १,९,३;४; नाप  
 ६,१;मना १,५९<sup>a</sup>; योशि ६,६७;  
 गी ७,९; -नानाम् इ १४:१९;  
 -ने वरा ५, ३७.  
 जीवना(न-आ)धार-सूत- -तम्  
 नाप ४, ३८; १संन्या २,  
 १२.  
 जीवमान- -नः पा ३,२.  
 \*जीवया-  
 \*जीवयाम(म्/अ)म् (भुवि),  
 जीवयामास वृजा ६,३.  
 जीवसे नी १,७९<sup>b</sup>.  
 जी(वक>)विका<sup>c</sup>- -काम् नाप  
 ५, २१.  
 जीवित<sup>d</sup>- -तम् क १,१,२६; वृ २,  
 ४,२<sup>e</sup>; ४,५,३<sup>f</sup>; अन्न ५, २४;  
 त्रिवा २,१२५; १२६<sup>g</sup>; नाप ३,  
 ६०; ६१; ५, १; पै ४,१७; भव  
 १,४१; महा ३,१२; ६,४१; वरा  
 ५,६; १संन्या २,३९-४१; -तस्य  
 त्रिवा २, १२१; १२४; -त्ते क  
 १,१,२८; योशि १,६४; शि ७,  
 ५९; -त्तेन गी १,३२.  
 जीवितव्य-  
 जीवितव्य-क्षय- -यः त्रिवा २,  
 १२३<sup>h</sup>.  
 जीवितुम् छां ५,१, ८-११; वृ ६,  
 १,८-१३.  
 जीवितु-काम- -मेभ्यः व  
 ४६५:३.  
 जीविन्- -वी नाप ५,१.

✓जु  
 जव- -वेन पित्र १,४.  
 जवन- -नः श्वे ३, १९; नाप ९,  
 १४; भव २, ४६.  
 जवस्- -वसा ऐ ४,५९<sup>o</sup>.  
 जवित्-  
 ९<sup>i</sup>जविष्ठ- -ष्टम् १शिसं ६;  
 २शिसं ५.  
 जवीयस्- -यः ई ४; गोपू  
 ४८९<sup>k</sup>.  
 जूति- -तिः ऐ ५,२.  
 जुगुप्सा- ✓गुप् द.  
 ✓जुप्, >जोषि, जुषन्ति पा १,१०;  
 जुषताम् कौ २, १५; मना २,  
 ४२९<sup>l</sup>; जुषन्ताम् मना २, ४३९<sup>i</sup>;  
 जुषस्व मना २, ३४९<sup>j</sup>; ४१९<sup>k</sup>;  
 जुषेत श्वे २,७.  
 जोषयेत् गी ३,२६.  
 जुषा(ण>)णा- -णा सर २,२९<sup>l</sup>.  
 जुषमाण,णा- -णः श्वे ४, ५९<sup>m</sup>;  
 मना २, १२, १९<sup>m</sup>; नापू ५,  
 २१९<sup>m</sup>; पा ४,६; -णा मना २,  
 ४१९<sup>k</sup>.  
 जुषाण- -णः पा १,७; -णम् आषे  
 ९:१५.  
 जुष्ट,ष्टा- -ष्टः श्वे १, ६; अव्य २;  
 नाप ९,५; मना २, ४१९<sup>k</sup>; भव  
 २, ४; वपू १, ४; -ष्टम् सुं ३,  
 १,२; श्वे ४,७; त्रिता २, ५०;  
 ५२; ५४; ५६; ५८; ६०; ६६;  
 निर्वा २९८:१४; मना २, २९<sup>n</sup>;  
 व ६४१:१८९<sup>n</sup>; वपू १, ५;  
 २शिसं २३; -ष्टा: मना २, ४१९<sup>k</sup>;  
 -९<sup>o</sup>ष्टाम् दे ४; मना २, १; व  
 ४६१:८; ४६५:२०.

जुहुराण- ✓वृ द.  
 जुह- , जुह्व- , जुह्वान- ✓वृ द.  
 जु<sup>p</sup> व ४५९:९; १०.  
 ✓जृम्भ, जृम्भसि ते ५,७४.  
 जृम्भक- -कः मा १९.  
 जृम्भ(व>)णी<sup>q</sup>- -णी पी ४२२:  
 ८; -णीम् व ४३३:२.  
 ✓जू<sup>r</sup>>जर, जरि, जीर, जरति षो  
 १७.  
 जीर्यते योचू ६८; वरा ५,  
 ४७; शां १, ७, ४३; इ १५:३;  
 जीर्यति छां ३, १५, १; ८, १, ५;  
 शि ७, १०७; जीर्यन्ते भव १,  
 १३; महा ३, ५०; ५०; शां १,  
 ३, १२; शि ७, १०७.  
 जरयति अक्षि १६; अक्ष ५, ३;  
 जरयन्ति क १, १, २६.  
 जरठ<sup>s</sup>-  
 जरठ-गर्दभ- -भा: महा ३, १४.  
 जरत्-  
 जरत्-कारु<sup>t</sup>-  
 जारत्कारव<sup>u</sup>- -वः वृ ३, २,  
 १; १३.  
 जरा- -रया क १, १, १२; छां ८, १,  
 ५; वृ ४, ३, ३६; पा ६, १०;  
 सार २९१:२३; भव १, ४;  
 १६; -रा छां ८, १, ४<sup>v</sup>; ४, १; श्वे  
 २, १२; इ ११:१८; ते ४, २९;  
 ५, १९; नापू ५, २; भव १, २१;  
 महा २, ५५; ६, १३; मै ३, ५;  
 मैत्रि ३, ५; ६, १०; राधा ३, ८;  
 वरा १, ९; गी २, १३; -राम् वृ  
 ३, ५, १; मना २, ४७९<sup>v</sup>.  
 जरा(रा-आ)दिक- -कम् ते ५,  
 ९९.

a) तैआ १०, १, ५। b) 'मृडय' इति तैसं ४, ५, १, १। c) आप.। d) °वितस्य क्ष<sup>o</sup> इति निसा.।  
 e) ऋ ४, २७, १। f) मा ३४, ६। g) मा ४०, ४। h) तैआ १०, ४१, १। i) 'जुषताम्' इति तैआ १०, ४२, १।  
 j) तैआ १०, २६, १। k) तैआ १०, ३९, १। l) ऋ ५, ४३, ११। m) तैआ १०, १०, १। n) तैआ १०, १, १६।  
 o) खि १०, १२७, १२। p) =बीजमन्त्रविशेष-। q) =देवीविशेष-। r) सकर्मकः द. (उ. पाधा. चुरा.)। s) अठः  
 प्र. (पाठभो २, २, ११४)। t) =गोत्रप्रवर्तक-ऋषिविशेष-। u) °राम् इति निसा.। v) तैआ ३, ७, ७, २।



जरा-प्रणुदन्- -दा प्रा २, १.  
जरा-मरण- -णम् गौ ४, १०.  
जरामरण-कृत- -तम् सांका  
५५.  
जरामरण-निर्मुक्त- -क्ताः गौ  
४, १०.  
जरामरण-मोक्ष- -क्षाय गौ  
७, २९.  
जरामरण-वर्जित- -तम्  
महा ६, ७२; अन्न ५, ६२.  
जरामरण-विभ्रम- -मैः अन्न  
२, ४०.  
जरामरणा(ण-आ)दि-ज-  
-जम् सांसू ३, ५३.  
जरा-मरण-क्षुत्-पिपासा-शोक-  
क्रोध-द्रोह-लोभ-मोह-मद-  
भय-मत्सर-हर्ष-विषादे(द-ई)-  
व्या(व्या-अ)सूया(या-आ)स्म-  
क- -कैः निह २, ६.  
जरा-मरण-नार्भोत्पत्ति-विनाश-  
-ज्ञाः सार २८१: ८.  
जरा-मरण-धर्मा(र्म-अ)धर्मा-  
(र्म-आ)दि-साम्य-दर्शन-  
-नात् वसू ८.  
जरा-मरण-रोगा(ग-आ)दि-  
-दि ब्रवि २४.  
जरा-मर्य- -र्यम् मना २, ८०५.  
जरा-मृत्यु- -मृत्युम् सुं १, २, ७.  
जरा-मृत्यु-गद-ग- -गः यो २,  
३०.  
जरा(रा-अ)वस्था- -स्थायाम्  
अद्वै ७१.  
जरा-विनिर्मुक्त- -क्तः शां १, ७,  
१३.  
जरा-शोक-समाविष्ट- -ष्टम्

नाप ३, ४७.  
जरितृ<sup>d</sup>- -त्रे पा ८, ६,  
जीर्ण- -र्णः श्वे ४, ३५०; -र्णम्  
१संन्या २, ९०; -र्णानि भव २,  
३८; गौ २, २२.  
जीर्ण-कट-  
जीर्णकट-वत् शि ७, १२४.  
जीर्ण-काम- -मः सुबा १३.  
जीर्ण-कौपीन-वासस्- -साः  
नाप ६, २४.  
जीर्ण-वलकला(ल-अ)जिन-  
-नम् पप ४१९: १.  
जीर्यत्- -र्यन् क १, १, २८.  
जू(र्ण>)र्णा-  
जूर्णा(र्ण-अ)व(स्थ>)स्था-  
-स्था अद्वै ६१.  
जेतव्य- , जेतुम्, जेतृ- √जि द्र.  
जेनातिस्<sup>b</sup>- -तिः पा ४, १०; ५, ८;  
१०, ५; -तिषाम् पा ३, ५;  
१०, ५.  
जेनातिद्-ज्योतिस्- -तिषे पा ३, ५.  
जेयत्- , जैगीषव्य- , जैत्र- √जि द्र.  
जैन- जिन- द्र.  
जैमिनि<sup>c</sup>- -निः ब्रसू १, २, २८; ३१;  
४, १८; ३, २, ४०; ४, २; १८; ४,  
३, १२; ४, ५; ११; -नेः ब्रसू ३,  
४, ४०.  
जैव- , जैवलि- √जीव् द्र.  
ज्ञ- √ज्ञा द्र.  
√ज्ञप्<sup>f</sup>, > जपि, जपयते छां २, १३, १.  
ज्ञपयिष्यामि कौ १, १.  
ज्ञसि- -सिः महा ५, ४०; -सिम्  
मं ३, २, २; -सेः महा ५, ११.  
ज्ञसि-दीप- -पम् द १५.  
ज्ञसि-रू(प>)पा- -पा सर २, ६.

√ज्ञा, > जा, जिज्ञास्, जिज्ञासि,  
जानीते त्रिता २, २१; वृषू १,  
३; मै ५, ७<sup>k</sup>; मैत्रि ६, ७<sup>k</sup>; वपू  
२, १; वउ ५, ४; श ३६; जानाति  
छां ६, १५, १; २; ८, ६, ४; ११,  
१; २; वृ ३, ९, २०; २१; २३;  
अक्षि १२; अन्न ५, ९९; अवि  
१४<sup>g</sup>; इ १६: १२; कालि ४०२:  
४; ते २, ४२; त्रिता ५, १४<sup>g</sup>;  
ध्या १४; जानते नापू ४, ९५<sup>h</sup>;  
पिब्र ६, १३; जानन्ति त्रिवि ६,  
१<sup>i</sup>; दे १७; पं १९; पाशु १,  
२६; योशि १, ३२; रुह ७; वरा  
२, १०; श १; सार २३१: २०;  
सि १, ४<sup>i</sup>; जानासि छां ६, १५,  
१<sup>i</sup>; ८, ६, ४<sup>i</sup>; ते ५, ६७; सर १,  
१; जाने व ४५८: २२; १संन्या  
२, ३८; गौ ११, २५; जानामि  
क १, २, १०; अन्न ५, ६१; आबो  
११; महा २, १८; जानीमहे  
सार २७८: २२; २८३: १<sup>i</sup>;  
जानीमः वृजा ६, ७; अजानात्  
अव्य ४<sup>m</sup>; जानीयात् छां ५, २,  
९; त्रिता २, २१; त्रिबा २, १२१;  
ध्या ४०; वृउ ५, २; वृपू १, ३<sup>g</sup>;  
पं २३; भव २, १६; वपू १, ६<sup>g</sup>;  
वरा ५, ६३; जानीथाः वृ ६,  
२, ४; रार १, ७.  
ज्ञास्यसि अव्य ३; महा ५, १०९;  
गौ ७, १; ज्ञास्यथ कश्चु २, १;  
अज्ञासिषम् महा २, १७.  
ज्ञायते ते ५, ४१; नाद ५३; भव  
२, ५६; अज्ञायि अव्य ३<sup>n</sup>.  
जिज्ञाससि अव्य १; जिज्ञासे  
पिब्र २, १.

a) तैत्र्या १०, ६४, १। b) °गदा° इति अख्या. संहिता। c) °स्था इति मुपा. यनि. सु-शोधः। d) =जार-  
यितृ- (तु. पाधा. डुरा.; वैतु. पाटी. स्वार्थे सत्युपचार इति)। e) शौ १०, ८, २७। f) °वस्त्रवलकलम् इति  
अख्या। g) यूना° इति मुपा. यनि. सु-शोधः। h) व्यु. १ विप. (=दीप्तिमत्-; वैतु. पाटी.)। i) =सूत्रकृद्विशेष-।  
j) तु. पाधामा। k) °ते ह° > °ते° इति पूर्वपदैकादेश आर्षः। l) ऋ १०, ७१, २। m) 'अजानत्' इति अख्या।  
n) 'आज्ञापय' इति निपा. संहिता।

जान<sup>१</sup>—

√जान्, जानथ<sup>१</sup> मुं २, २, १; ५;  
म ४८: १४; १९; ४९: ४.

जानत्—नन् १अव १६; जा ४९°;  
नाप ३, ७७; नृउ ९, ३; पप  
४१८: ११९°; या १, १९°;  
१संन्या २, १०२; गी ८, २७;  
-नन्तः नृउ ६, ४; सार २७३: २३.

\*जिज्ञासया—

\*जिज्ञासयाम् (म्/अ)स् (भुवि),  
जिज्ञासयामास अव्य २.

जिज्ञा(म<sup>१</sup>)सा—सा सांका १.

जिज्ञास-क्लृप्त—सः मना २,  
७९९°.

जिज्ञासा(सा-अ)र्थ—र्थम् महा  
२, २२.

जिज्ञासितव्य—व्यः मैत्रि ६, ८.

जिज्ञासु—सवः पित्र १, ६; -सु:  
त्रिवि १, १; गी ६, ४४; ७, १६.

ज्ञ—ज्ञः प्र ५, ६; श्वे ६, २; १६;  
१७; ते ५, ६७; नृउ ३, ७; महा  
४, १३०; भव २, ४७; ब्रसू २,  
३, १८; ज्ञस्य अन्न १, २६; ३३;  
५, ४६१; महा ५, १७३; ६, ९९;  
वरा २, २२; ज्ञे महा ६, ३०; ज्ञेषु  
महा ५, १०१; ज्ञैः महा ५, ७२.  
ज्ञ-ता—ता महा ६, २९; १संन्या  
२, ५६.

ज्ञ-भू—भूः महा ५, १.

ज्ञ-मनस्—नः महा ५, ९८;  
मु २, २, ३९.

ज्ञ-शक्ति-वियोग—गात् ब्रसू  
२, २, ९.

ज्ञा(ज्ञ-अ)ज्ञ—ज्ञौ श्वे १, ९; नाप  
९, ८; भव २, ३.

ज्ञे(ज्ञ-ई)श्चर—रे वउ ५, ४६.

ज्ञात, ता—तः अशि ७, ४; ऊ ६४:

१२; काला १९; गोउ १६; च

२१: ९; ता ३, ९; नृउ ९, १६;

१९; महा ६, ८३; राउ ५, ४;

सार २३२: २३; २९२: १५; १६;

हे १४; -तम् करु ४१; जावा

४-६; ते ६, ९६; पं २८; ३१;

पाशु १, २७; मं २, १, १; महा

२, ७०; ७१; ५, ५८; १योत १७;

योशि १, १५; २४; -तया महा

५, २१; -ता क १, २, ४; ते ६,

९१; मैत्रि ७, ९; -ताः योसू ४,

१७; -ते नाद २८; योशि ४, ४;

गौ १, १८; -तेन गी १०, ४२<sup>b</sup>.

ज्ञात-चर-देश—शम् नाप ७<sup>१</sup>;

१संन्या २, ७९.

ज्ञात-ज्ञेय—याः महा २, ४०.

ज्ञाता(त-अ)ज्ञात<sup>१</sup>—तम् योसू

४, १६.

ज्ञातवत्—वतः व ४६५: १०.

ज्ञातव्य, व्या—व्यः सौ २, १; -व्यम्

काम ११; महा ५, ५८; योचू

१८; वरा ५, २; गी ७, २; -व्या

वरा ५, ४१; -व्यौ योचू १०२;

राउ ४, २.

ज्ञाति—तयः छां ६, १५, १; कौ १,

४; वृजा ६, १; -तिः वृजा ६, २;

सार २३१: १२; -तिभिः छां ८,

१२, ३.

ज्ञातुम् क १, २, २१; वृ १, ५, २१;

नाप २; नृउ ६, १; पै ४, १६;

मु १, १, ५; गी ११, ५४.

ज्ञातृ—ता क १, २, ७; छां ८, ५,

१; ते २, १२; २९; ४, २८; त्रिब्रा

१, ८; भा ८; वपू १, ४.

ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेय—यानाम् भा ८;

ससा १, २४.

ज्ञातृ-त्व—त्वम् त्रिब्रा १, ९.

ज्ञात्वा क १, २, १६; १७; २, ३, ८;

श्वे १, ८; ११; अध्या २; अवि

८; कै १, ९; गर्भ ३; गु ४०;

त्रिता ५, ८; त्रिब्रा २, ८८;

कालि ४०३: १३.

ज्ञान—नम् क १, ३, १३; तै २,

१, १; अद्वै २३; अना २९; अन्न

५, ६२; अवि ५; १९; १अव

३२<sup>१</sup>; कृ १२<sup>१</sup>; कै २, ५; १कौल

२: ३; ३: १; २; ४; २कौल १<sup>१</sup>;

३; चक्र ११; जा २; जाद १,

२०; २, ९; ६, ४७; ९, ३; ते २,

२; २९; ४, १३; २८; ५, ९३<sup>१</sup>;

९४; ९५; त्रिता ५, ५; त्रिब्रा २,

१९; त्रिवि ३, २; ५, ९; द ७;

१६; नाउ १, १४९<sup>१</sup>; नाप ३,

१६<sup>१</sup>; ८२<sup>१</sup>; ४, ३३; ६, १<sup>१</sup>; ९,

२०; नापू १, १३; नि ८; २६;

२९; ३१; निरु १, २; पत्र ३, ६<sup>१</sup>;

पाशु २, ३७; पै ४, १६; २प्र

३३: ४; वृजा ६, १०; ब्र ३, २<sup>१</sup>;

ब्रवि ५; १९; ब्रवि ३६; ५९; भव

१, ३४; २, ५६; ३, १३; २१; ४,

१०; ५, ८; भा ८; महा ३, १५;

४, ६३; ५, २३; १३०; सु १, १,

२७<sup>१</sup>; २, २, २; मै ४, ४, ८; मैत्रि

६, ३४; मैत्रे २, २; योचू ३४;

८६; १योत १४; १६; १८; २२;

योशि १, १२-१४; १७; २४;

३२; ५१; ५३; ५४; ६५; राउ ३,

१; राधा २, ८; लिं ३०९; १; ३;

a) शः प्र. उसं. (पा ३, १, १३८)। b) √ज्ञा इत्यतः ज्ञाशातुभौ स्त इत्येवमपि पाप्र. वर्णनविकल्पः

द्र. [तु. पा ३, १, ८५; वैतु. विधु. (IHQ १७, ८९) प्राकृतप्रकारपक्ष्यः संस्तल्लक्षणं प्रति पर्यनुयोज्यः] c) श्रु ३, २९,

१०। d) अस्त्री. अपि अः प्र. उसं. [पा ३, ३, १०२ (तु. नाउ.)]। e) तैब्रा १०, ६३, १। f) 'यस्य' इति

काचित्कः निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः। g) 'अज्ञस्य' इति अज्या.। h) 'ज्ञानेन' इति SCHR. पाभे. [वैतु. वे.

(NIA २, २३१)]। i) कस.। j) तैब्रा ८, १, १।

३१०: १२; वज १, २६; वरा  
२, १५; ३, २; वस् ४; १६;  
१७; वा ३३; ४१; वि २०; शा  
३६; शां १, ७, २२; २४<sup>३</sup>; ३४;  
शि १, १७; ४, ५४; ५, ४४; ७,  
४; ७४; शु १, १८<sup>३</sup>; २, ५<sup>३</sup>;  
१संन्या २, ६<sup>३</sup>; ससा १, २९;  
३१-३३; सार २३६: १; २४९:  
१७; २९१: १३; सूता १, २९;  
स्क ११; गौ ३, ३३; ३८; ४,  
८८; ९६<sup>३</sup>; ९९<sup>३</sup>; योसू ३, ५३;  
५५; सांका २३; ६४; गी ३,  
३९; ४०; ४, ३४; ३९<sup>३</sup>; ५, १५;  
१६; ७, २; ९, १; १०, ४; ३८;  
१२, १२; १३, २; ११; १७; १८;  
१४, १; २; ९; ११; १७; १५,  
१५; १८, १८-२०; २१<sup>३</sup>; ४२;  
६३; नस्य योसू ४, ३०; गी  
१८, ५०; नात् अच्या ५३; इ  
१६: ३; कर् ३६; जाद १, २५<sup>३</sup>;  
५, १४; ६, १२; १८; ते १, १७;  
त्रिवा २, १९; पाशु २, ३९; ब्रवि  
५०; ५७; ५९; १योत १६; योशि  
६, १६<sup>३</sup>; लि ३०९: १; ३१०:  
१२; शि ४, ३१; ७, ७४; ११७;  
ससा १, २२; सांसू ३, २३; गी  
१२, १२; नानाम् दे १७; गी  
१४, १; नानि क २, ३, १०;  
मैत्रि ६, ३०; नाय कालि ४०२:  
१६; नाउ २, २; ने क १, ३,  
१३; २कौ ३; ते २, ४३; यो  
३, ३१; गौ ४, ८९; गी ४, ३३;  
नेन अच्या ५९; अशि ४, २२;  
त्रिवि १, २; पै ४, ९; ११; ब्रवि  
३६; भव ३, १८; योशि १, १६;  
५१<sup>३</sup>; रूह ३५<sup>३</sup>; वड ३१६: १५;  
शां २, १; गौ ४, १; सांका ४४; गी  
४, ३८; ५, १६; नै: श्वे ५, २.

ज्ञान-कर्मन्- -र्मभ्याम् भव १,  
३३.

ज्ञान-कर्म(र्म-इ)न्द्रिय- -यै:  
योचू ७२<sup>३</sup>.

ज्ञान-गम्य- -म्यम् शां २, १;  
गी १३, १७; -म्यात् शु २, ५.

ज्ञान-गुह्य- -ह्यस्य सिशि  
३८१: ६.

ज्ञान-चक्षुस्<sup>०</sup>- -क्षुषा योरा  
२०; गी १३, ३४.

ज्ञान-चक्षुस्<sup>१</sup>- -क्षु: महा ४,  
८०; वरा २, १८; शि ६, २३४;

-क्षुष: चू १६; मन्त्रि १६; गी  
१५, १०; -क्षुषाम् वसू २.

ज्ञान-जनक- -क: शां १, ७, ३९.  
ज्ञान-ज्ञेय- -यौ मं २, ३, ७.

ज्ञान-तत्-पर- -र: पत्र ३, ४.  
ज्ञान-तपस्- -पसा गी ४, १०.

ज्ञान-तस्(>) सु १, १, ४६.  
ज्ञान-तृप्त- -सा: सुं ३, २, ५.

ज्ञान-तोय-  
ज्ञानतोय-तस्(>) जाद  
५, १४.

ज्ञान-द, दा- -दम् वृजा ४, ९;  
५, ६; -दा नापू २, १५.

ज्ञान-दण्ड- -ण्ड: नाप ५, २;  
पहं ३; -ण्डा: शा १६.

ज्ञान-दशा- -शाम् महा ५, ३९.  
ज्ञान-दीप- -प: योशि ६, ७६;

यो ३, १५; -पम् ब्रवि ७६;  
-पेन गी १०, ११.

ज्ञान-दीपित- -ते गी ४, २७.  
ज्ञान-दीप्ति- -प्ति: योसू २, २८.

ज्ञान-दृष्टि- -ष्टौ महा ५, १०८.  
ज्ञान-ध्यान-समाकुल- -ला:

शि ४, ६७.  
ज्ञान-नन्दन- -नम् मैत्रे २, २३.

ज्ञान-नाल- -लम् पाशु २, ३६.

ज्ञान-निधि- -०धे शु १, १२.

ज्ञान-निर्धूत-कल्मष- -षा:  
गी ५, १७.

ज्ञान-निर्मथना(न-अ)भ्यास-  
-सात् कै १, ११.

ज्ञान-निर्वाण-दातृ- -त्रे सार  
२७७: ९.

ज्ञान-निष्ठ- -ष्ठ: योशि १, २४;  
-ष्टा: नाप ३, ८२; ब्र ३, २; पत्र ३, ६.

ज्ञान-नेत्र- -त्रम् अवि २१;  
त्रिता ५, २०; ब्रवि २१; सौ ३, १.

ज्ञान-पर- -र: नाप ४, ३२<sup>३</sup>.

ज्ञान-पार-ग- -गम् शि १, १;  
-गा: अज ४, ५३; -गान् शि  
४, २९.

ज्ञान-पूत- -तम् पत्र २.  
ज्ञान-पूर्व- -र्वम् भव ५, ७.

ज्ञान-प्रतिपादित- -त्ता: वसू १५.  
ज्ञान-प्रद- -दम् वृजा ६, ७.

ज्ञान-प्रबोध- -ध: अद्वै ८.  
ज्ञान-प्रसाद- -देन सुं ३, १, ८;  
गु ३७.

ज्ञान-प्लव- -वेन गी ४, ३६.  
ज्ञानप्लवा(व-अ)धिरूढ-

-देन मं २, १, ३.

ज्ञान-फल- -लम् योशि ५, ५७.

ज्ञान-बल- -लात् जाद ४, ६३.

ज्ञान-बल-क्रिया- -या श्वे ६,  
८; गु ६७; भव २, ४५.

ज्ञान-बलै(ल-ऐ)स्वर्य-शक्ति-  
तेज: -स्वरूप- -प: त्रिवि २,  
१५.

ज्ञान-भूमि- -मि: महा ५, २४;  
वरा ४, १; -मिम् महा ५, २१.

ज्ञान-मय- -य: कर २१; ग ५;  
ससा ४; सू १८; -यम् सुं १,  
१, ९; रूह ३३; २संन्या १५: ६;  
-येन कर २०; शां ३, १.

a) 'ज्ञानवैराग्यम्' इति अर्थः । b) ज्ञाना<sup>०</sup> इति अर्थः । c) तु. सस्थ. टि. जीव-> -व: ।  
d) 'ज्ञानात्' इति अर्थः । e) कस. । f) वस. । g) 'नं ना<sup>०</sup> इति अर्थः । h) ध्या<sup>०</sup> इति अर्थः ।



ज्ञानमयी-यौ त्रिवा २,  
२३१<sup>a</sup>; नाप ३, ८३; ८५; पत्र ३,  
७; ११; व्र ३, ३; ५; शा १७;  
-यौम् अक्ष ६-८; ते १, २९;  
रापू ४, ३१; रार २, २४.

ज्ञान-मात्र- -त्रात् सिधि ३८०:  
४; -त्रेण तारा ८३: ६; तु १,  
२, ७<sup>b</sup>.

ज्ञान-मार्ग- -र्गम् रापू १, ४.

ज्ञान-सुक्त- -क्तम् सु २, २, ४९.

ज्ञान-मुद्रा- -द्राम् द३; त्रिवि ६४

ज्ञानमुद्रा(द्रा-अ)क्षमाला-

वीणा-पुस्त- -स्तैः द ८.

ज्ञानमुद्रा(द्रा-आ)व्य- -व्यम्  
गोपू ८.

ज्ञानमुद्रा(द्रा-आ)स्म-रूप-

क- -कम् त्रिवि ६६.

ज्ञानमुद्रो(द्रा-उ)पशोभित-

-तम् रार २, ४.

ज्ञान-मूर्ति- -र्तिम् शु १, १८.

१ ज्ञान-यज्ञ<sup>c</sup>- -ज्ञः शा १६;

गी ४, ३३; -ज्ञेन गी ९, १५;

१८, ७०.

२ ज्ञान-यज्ञ<sup>d</sup>- -ज्ञः नाप ५, १५.

ज्ञान-यज्ञो(ज्ञ-उ)पवीत-

ज्ञानयज्ञोपवीतिन्- -तिनः

नाप ३, ८२; पत्र ३, ६; व्र ३, २;

शा १६; -तिनाम् नाप ३, ८१;

पत्र ३, ५; व्र ३, १.

ज्ञान-योग- -गः त्रिवा २, २३;

२७; सार २८२: १८; -गम्

नाप ६, २७; २८; शि १, ३; ५,

२६; ६, १८०; -गेन शि १, ३१;

गी ३, ३.

ज्ञानयोग-विनिर्मुक्त- -क्तः

शि १, २९.

ज्ञान-योग-निधि- -धिम् शां

३, ३.

ज्ञान-योग-पर- -राणाम् जाद  
४, ५६.

ज्ञान-योग-व्यवस्थिति- -तिः  
गी १६, १.

ज्ञान-रूप, पा- -पः ते ३, १; ५;

-पम् अव्य १; त्रिवि ७७; १योत  
९; योशि १, ७; -पा शां १, ४<sup>e</sup>.

ज्ञानरूपि(न्>)णी- -णी  
दे १७.

ज्ञान-वत्- -वतः छां ७, ७, २;

-वताम् महा ४, १; गी १०, ३८;

-वान् अत्र ५, ४७; नाउ ३, १२;

टपू ३, ३; वपू २, २; वउ ६,

५२; गी ३, ३३; ७, १९.

ज्ञान-वर्जित- -तः नाप ५, २;

पहं ३.

ज्ञान-विग्रह- -हः ते ४, ४५;

स्क ४.

ज्ञान-विज्ञान- -ने नाप ४, १२.

ज्ञानविज्ञान-तत्त्व-

ज्ञानविज्ञानतत्त्व-तस्-

(>) त्रिवि १८.

ज्ञानविज्ञान-तत्-पर- -रः

अवि १८; त्रिता ५, १८.

ज्ञानविज्ञान-तृसा(त-आ)-

त्मन्- -त्मा गी ६, ८.

ज्ञानविज्ञान-नाशन- -नम्

गी ३, ४१.

ज्ञानविज्ञान-रूपक- -कम् ते

५, ८३.

ज्ञान-विद्- -विदः शि १, ३२.

ज्ञान-विषय- -यैः योचू ७२<sup>f</sup>.

ज्ञान-विस्तार- -रम् महा २, ३६

ज्ञान-वृद्ध- -द्धस्य मैत्रे २, २४.

ज्ञान-वैराग्य- -न्यम्<sup>g</sup> नाप ४,

३८; -न्याभ्याम् नाप ५, १; ६,

१; १संन्या २, १३.

ज्ञानवैराग्य-द- -दम् सु १,

१, ४०.

ज्ञानवैराग्य-मृत्-तोय-

-यैः मैत्रे २, ९.

ज्ञानवैराग्य-युक्त- -क्तः कालि

४०२: ११; पप ४१९: ५; -क्ता:

सार २३५: १५.

ज्ञानवैराग्य-रहित- -ता:

सार २४८: १९.

ज्ञानवैराग्य-संन्यास- -सः

नाप ५, १.

ज्ञानवैराग्यसंन्यासिन्-

-सी नाप ५, १; १संन्या २, १३<sup>h</sup>.

ज्ञानवैराग्य-संपन्न- -न्नस्य

नाप ५, १; -न्नाः नाप १.

ज्ञानवैराग्य-सहित- -ता:

सार २३५: २२.

ज्ञान-शक्ति- -क्तिः काला १६;

जावा २५; भा ७; वउ ४, १२.

ज्ञानशक्ति-बलो(ल-उ)द्यत-

-ताः त्रिवि ६८.

ज्ञान-शक्ति-बलै(ल-ऐ)श्वर्य-

वीर्य-तेजस्- -जांसि भव २, ५३.

ज्ञान-शिख<sup>i</sup>- -खाः शा १६.

ज्ञान-शिखा-

ज्ञानशिखिन्- -खिनः व्र ३,

२; नाप ३, ८२; पत्र ३, ६.

ज्ञान-शौच- -चम् जाद १, २२.

ज्ञान-संहार-संयुक्त- -क्तम् पं७

ज्ञान-संकल्प-निश्चया(य-अ)नु-

संधाना(न-अ)भिमान- -नाः

त्रिवा १, ६.

ज्ञान-सङ्ग- -ङ्गेन गी १४, ६.

ज्ञान-सङ्घ- -ङ्घेन शि ६, ११८.

ज्ञान-संछिन्न-संशय- -यम् गी

४, ४१.

ज्ञान-संतति- -तिम् मां १०;

वृउ २, ६.

ज्ञान-संन्यास<sup>h</sup>- -सः नाप ५, १.

a) प्राण<sup>o</sup> (तु. उन्न.) इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.) । b) °मार्गेण इति अज्या. संटि. ।

c) कस. । d) बस. । e) °पम् इति निसा. संटि. । f) समाहारे दस. । g) बस. उप. शिखा- यद्र. ।

ज्ञानसंन्यास-ग्रहण- -णम्

म ४९ : १७.

ज्ञानसंन्यासिन्- -सी नाप  
५, १<sup>१</sup>; १संन्या २, १३<sup>१</sup>.

ज्ञान-संपत्ति- -त्ति: रुजा २, ९.

ज्ञानसंपत्ति-समय- -ये अञ्ज  
५, १०१.

ज्ञान-सरस्- -र: शि ७, १३७.

ज्ञान-सहित-यमाद्य(दि-अ)-  
ष्टा(ष्ट-अ)ङ्ग-योग- -ग: मं १,  
१, २<sup>६</sup>.

ज्ञान-सागर- -र दत्ता १, ७;  
-रे पाशु २, ६.

ज्ञानसागर-पार-ग- -ग:

पाशु २, ७.

ज्ञान-साधन- -नम् द १५.

ज्ञान-स्थान- -नम् भ २, १८.

ज्ञान-ज्ञान- -नम् शि ५, ३१.

ज्ञान-स्वरूप- -पम् १योत  
१६; योशि १, १४; जाद ६, ४९;

लि ३११ : ३; -पा: लि ३०९:  
४; १कौल २: ५; ३: ३; २कौल २.

ज्ञान-हीन- -न: १योत १५;  
योशि १, १३; -नानाम् वसू १.

ज्ञाना(न-अ)कार- -र: तुअ ४;  
-रम् ते ६, ६०.

ज्ञाना(न-अ)ग्नि- -ग्नि: गर्भ  
५<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; गी ४, ३७; -ग्निना पै  
३, १; यो ३, २३; -मौ १संन्या  
२, १००.

ज्ञानाग्नि-दग्ध-कर्मन्-

-मार्णम् गी ४, १९.

ज्ञानाग्नि-दग्ध-देह- -हस्य  
पै ४, ७.

ज्ञाना(न-अ)ज्ञान- -नम्<sup>१</sup> तुअ  
११.

ज्ञानाज्ञान-कृत- -तानि राउ  
५, ८; -तेभ्य: त्रिवि ८, १९.

ज्ञानाज्ञानो(न-उ)भया-

(य-अ)तीत- -त: नाप ९, २०.

ज्ञाना(न-अ)तिरिक्त- -क्त: सार  
२८० : ९.

ज्ञाना(न-अ)त्मन्- -स्मने सार  
२७७ : ३; -स्मा त्रिवि १, ११;

-स्मानम् रापू ५, ५.

१ज्ञाना(न-अ)नन्द<sup>१</sup>- -नन्दम् ते  
३, ७३.

ज्ञानानन्द-धन- -धन: ते  
३, ३१.

२ज्ञाना(न-अ)नन्द<sup>२</sup>- -नन्द: ते  
६, ६०.

ज्ञाना(न-अ)भ्यास-

ज्ञानाभ्यास-वत्- -वताम्  
१संन्या २, १०१.

ज्ञाना(न-अ)मला(ल-अ)-  
म्भस्- -म्भसा शि ५, ४१.

ज्ञाना(न-अ)मृत- -तेन जाद १,  
२३.

ज्ञानामृत-तृप्त-योगिन्-  
-गिन: पै ४, ९.

ज्ञानामृत-रस- -रस: जाद  
६, ४८.

ज्ञाना(न-अ)म्बु-राशि- -शय:  
दे १२.

ज्ञाना(न-अ)लोक- -कम् गौ ३,  
३५; पै ४, १४.

ज्ञाना(न-अ)वस्थित-चेतस्-  
-तस: गी ४, २३.

ज्ञाना(न-अ)सि- -सिना गी ४,  
४२.

ज्ञानिन्- -निन: ते ६, ९६; पै  
४, १; योशि १, ४८; ४, २१; तुअ

५; स्व ६१ : २०; सार २३१ :  
२; २५६ : २२; २७८ : २१; शि

१, १३; गी ३, ३९; ४, ३४; ७,  
१७; -निनाम् योचू ७८; ७९;

नापू २, १५; -निभि: योशि १,  
४९; जाद ५, ३; -निभ्य: गी ६,

४६; -नी ब्रवि ४९; नाप ६, २५;  
पै ४, १३; योशि १, २३; ४९;

अञ्ज ५, ३; पाशु २, २७; त्रिता  
५, १९<sup>६</sup>; सार २९०: ५; शि ५,

४२; गी ७, १६-१८.

ज्ञानि-मनस्<sup>१</sup>- -न: महा ५,  
९८.

ज्ञाने(न-इ)न्द्रिय- -यम् पै २,  
१५; -याणाम् १योत ७२; -याणि

पै १, २४; २, ४७; ३, १; शारी १;  
वरा १, २; सार २९१: १८; -यै:

पै २, २१<sup>१</sup>.

ज्ञानेन्द्रिय-कर्मेन्द्रिय-  
-याणि नापू ५, १३.

ज्ञानेन्द्रिय-कर्मेन्द्रिया-  
(य-अ)न्त:करणचतुष्टय<sup>१</sup>- -यम्  
शारी ५.

ज्ञानेन्द्रिय-देवता- -ता:  
वउ ४, १६.

ज्ञानेन्द्रिय-पञ्चक- -कम् पै  
२, २३.

ज्ञानै(न-ए)क-साधन- -नम्  
योशि १, १४.

ज्ञानो(न-उ)दय- -यात् अध्या  
५३.

ज्ञानो(न-उ)पदेशा(श-अ)र्थ-  
-र्थम् शि ७, ४५.

ज्ञानो(न-उ)पसर्ग- -गार्: मैत्रि  
७, ८.

ज्ञानो(न-उ)ल्का- -ल्कया पै ४,  
१२.

ज्ञाय<sup>१</sup>-

ज्ञायिक- -का: इ १५ : २१<sup>६</sup>.

ज्ञेय, या- -य: ब्रवि ३३; ५२; योचू  
२५; योशि १, २७; ता २, ३;

बि २: शि १, २५; गु २४;

a) 'युक्त' इति निसा. । b) समाहारे द्वस. । c) वस. । d) 'ज्ञानम्' इति अज्या. । e) वस. ।  
f) भावेऽपि णः प्र. उसं. (पा ३, १, १४१) । g) 'के' इति सुपा. यनि. सु-शोधः ।

गौ ५,३;८,२; -यम् श्वे १,१२;  
गौ ४,८८; मै ५, ४; मैत्रि ६,  
४; गु २,५; ते २,२९;४,२८;  
ब्रवि ३६; २योत २,५; नाप ९,  
११; मं २, १,३; रार २, ९;  
५१; राउ १,२; भा ८; शां १,  
७, २२; पै ४, १६; महा २,  
७१;४,१; ६३; ५, २३; योशि  
१,१४; १३८;४,१; अन्न ५,६२;  
पाशु २,६; योरा १७; २प्र ३३;  
४; वि ८; २शिसं १२; १७; शि  
१, २४; ३, १२; ४, ५; ६, ९६;  
१०४; २२१; ७, ११८; गा १४;  
गु ६; १६; भव १, ४९; २, ५७;  
पिंन २, ४; योसू ४, ३०; गी १,  
३९; १३, १२; १६-१८; १८,  
१८; -या ब्रवि ९; ४०; त्रिवा २,  
३; सी ८; राउ २, ४; महा ५,  
३४; यो १, ८७; वरा ४, १०;  
योरा १२; १प्र ३१; १६; गु ४;  
विद्या १; भव ३, २८; -या: गौ ४,  
९१; ब्रवि ८; शारी २; रुजा १, ९;  
१प्र ३१; १४; शि ४, ४६; -ये गौ  
४, ८९; पै ४, ९; -येन गौ ३, ४७.  
जेय-त्याग- -गम् महा ६, ४६; १<sup>b</sup>  
जेय-स्व-  
जेयस्वा(त्व-अ-)वचन-  
-नात् ब्रसू १, ४, ४.  
जेय-वस्तु-परित्याग- -गात् शां  
१, ७, २३०.

जेय-सम- -मः अन्न ५, २<sup>d</sup>.  
जेया(य-आ)त्मक- -कम् शां १,  
७, ३४.  
जेया(य-अ-)भिन्न- -न्नम् गौ ३,  
३३; -न्नेन गौ ४, १.  
जेये(य-ए)क-साधन- -नम्  
१योत १६.  
ज्मा- -ज्मा कृपु १४.  
ज्मिं- व ४३३: १०; ११.  
√ज्या,>जि, जिनन्ति वृ ४, ३, २०.  
ज्येय- -ये के ४, ९.  
ज्या- -ज्याम् नी २, ४९<sup>b</sup>.  
ज्यायस्- -यः छां २, २१, ३; श्वे ३,  
९९<sup>j</sup>; मना २, १२, ३९<sup>j</sup>; गु ४६;  
ब्रसू ३, ४, ३९; गी ३, ८; -यान्  
छां १, ९, १; ३, १२, ६९<sup>k</sup>; १४,  
३<sup>k</sup>; कौ ४, ७१<sup>l</sup>; ब्रवि २५; मुद्र  
२<sup>l</sup>; गोउ १६१<sup>m</sup>.  
ज्यायसी- -सी गी ३, १.  
ज्यायस- -सा: वृ १, ३, १.  
ज्यायस्-स्व- -स्वम् ब्रसू ३, ५७.  
१ज्येष्ठ, छा- -ष्ठः छां ५, १, १<sup>n</sup>; २, ६;  
वृ ६, १, १<sup>n</sup>; मना २, ८९<sup>n</sup>; अशि  
१, ७; नाप ५, १<sup>n</sup>; त्रिवा २,  
७९; शि २, ७; -ष्ठम् तै २, २,  
१<sup>n</sup>; ५, १; छां ५, १, १; वृ ६, १,  
१; मै १, १; मैत्रि ६, १३; २प्र  
३३: १९; १कौल ८: ४; वउ  
४, ३; -ष्ठाम् मना २, ६६९<sup>o</sup>;  
-ष्ठाय छां ३, ११, ४; ५, ५, २, ४;

वृ ६, ३, २; मना २, १८९<sup>p</sup>; वपू १, १.  
ज्यैष्ठ्य- -ष्ठयम् छां ५, २, ६.  
ज्येष्ठ-पुत्र- -त्राय मुं १, १, १.  
ज्येष्ठ-बाल- -लात् महा ३, ३३.  
ज्येष्ठ-भार्या-पुत्र- -त्रः वृजा ६, १<sup>q</sup>.  
ज्येष्ठ-राज- -ऽजम् त्रिता ३, २७;  
व ४२९: १०; वपू १, ५.  
ज्येष्ठा(ष्ठ-अ-)ज्येष्ठ-  
ज्येष्ठाज्येष्ठ-त्व-  
ज्येष्ठाज्येष्ठत्वा(त्व-अ-)प-  
लापक- -कः तुअ १५१<sup>r</sup>.  
ज्येष्ठाज्येष्ठ-व्यवधान-रहित-  
-तः पप ४२०: १३.  
२ज्येष्ठ(ष्ठ-अ-)छा- -छा सुमु १५; -०ष्ठ  
व ४३१: १७.  
३ज्येष्ठ(ष्ठ-अ-)छा- -छायै व ४३८: ६.  
ज्योक्- छां २, ११-२०, २; ४, ११-१३,  
२; मना २, ४७९<sup>w</sup>.  
ज्योतिस- -ति: क२, १, १३; प्र १, ८;  
६, ४; मुं २, १, ३; २, ९; तै ३, ८,  
१<sup>x</sup>; १०, ३; छां ३, १३, ७<sup>x</sup>; १७,  
७<sup>x</sup>; ९<sup>x</sup>; ४, १, २; ८, ३, ४; १२, २;  
३; वृ १, ३, २८<sup>y</sup>; ३, ९, १०-१७;  
४, ३, ३-६; ४, १६; ६, ३, ४; श्वे  
२, १९<sup>y</sup>; ३९<sup>y</sup>; ३, १२; मै २, २;  
५, ३<sup>y</sup>; ८; मैत्रि २, २; ६, ३<sup>y</sup>; ८;  
१७; २७; ३५९<sup>z</sup>; कै १, १५; ना १;  
मना १, १५९<sup>z</sup>; २, १३, १९<sup>z</sup>;  
२, ३५९<sup>z</sup>; ३७९<sup>z</sup>; ६५९<sup>z</sup>;  
६६९<sup>z</sup>; ६८९<sup>z</sup>; ७९<sup>z</sup>; ब्र १<sup>z</sup>; २;

a) बस.। b) ०यं त्या० इति निसा.मुपा.यनि. सु-शोधः (वैतु. 'नेयत्यागम्' इति अज्या.)। c) ०त्यागे इति अज्या.। d) ०यः स० इति अज्या.। e) =भूमि-। व्यु. वैप१ यद्र.। f) =बीजमन्त्रविशेष-। g) =धनुर्गुण-। व्यु. वैप१ यद्र.। h) मा १६, ९। i) व्यु. वैप१ यद्र.। j) तैआ १०, १०, ३। k) ऋ १०, ९०, ३। l) पा.१ 'अन्यतः, स्यः (<त्यद्-)' इति द्वे पूर्वे पदे द्र. [वैतु. निसा.मुपा. अन्यतर-> -रस्य इति; आन., अज्या. (तु.उत्र.), शांआ ६, ७ च 'अन्यतस्त्यजायी' इति च यथायोगं यनि. सु-शोधौ]। m) जाया० इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. आन.)। n) तैआ १०, ६, १। o) तैआआ १०, ६६। p) तैआ १०, ४४, १। q) ०र्यायाः पुं इति अज्या। r) ऋ २, २३, १। s) ०त्वानप० इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। t) =देवीविशेष-। u) =नक्षत्रविशेष-। v) अव्य.। व्यु. वैप१ यद्र.। w) तैआ ३, ७, ७, ३। x) ऋ १, ५०, १०। y) मा ११, १। z) मा ११, ३। a') तैआ १०, २७, १। b') तैआ १०, १, १५। c') तैआ १०, ११, १। d') तैआ १०, ५१-५४, १; ६०, १। e') तैआ १०, ५५-५७, १; तैआआ १०, ६६<sup>1</sup>। f') तैआ १०, ६३, १।



अशि १,९; ३,४९<sup>a</sup>; ६,१७९<sup>b</sup>;  
 वृजा ७, ८९<sup>c</sup>; नृज ६,३<sup>d</sup>; सुबा  
 १४<sup>e</sup>; ते २,२२; ४,५९; ६,६७;  
 ब्रवि ९,५; आबो १९<sup>f</sup>; नाप ८,  
 १; त्रिबा २, १२६; योचू १०;  
 ८५-८७; ११३; मं १,३,४; ५,१,  
 ४<sup>g</sup>; स्कप; त्रिवि १,११; २,१६;  
 ४,४; ६<sup>h</sup>; ७,४३; ४४९<sup>b</sup>; रार ५,  
 ७; रापू ४, ६०<sup>i</sup>; राउ ३, १;  
 ५,१; शां १, ६; योशि ३,२२;  
 ६,२१; ५७; सू १३; अक्षि १९<sup>j</sup>;  
 कुं १४; पाशु २, १६; त्रिता १,  
 ३४; २, १६; म २, २९<sup>k</sup>; त्रि४<sup>l</sup>;  
 मवा ११; शा २१; प्रा १, ६९<sup>m</sup>;  
 सु २, २, ६३; योरा १३; १५;  
 आर्षे ७: १९; ८: २०; च २१:  
 १९९<sup>n</sup>; चा ११९<sup>f</sup>; तु १५; २प्र  
 ३३: १; ७; ३६: १६; १८: २१;  
 २३; बा २३; शौ ५२: ९; १०;  
 पा १,३; २,३; ३, ८; ५, २; लि  
 ३१०: ९९<sup>b</sup>; वटु ३१५: ३९<sup>a</sup>;  
 ३१८: १९<sup>e</sup>; १शिंस १९<sup>i</sup>; ३९<sup>j</sup>;  
 २शिंस ४९<sup>i</sup>; ८९<sup>i</sup>; १०; व४३७:  
 १५९<sup>k</sup>; ४६१: २२९<sup>b</sup>; ४६२: १;  
 विद्या ४; पित्र १, ४; वपू १, २;  
 वज १, १९; ब्रसू १, १, २४; ३,  
 ४०; गी ८, २४; २५; १३, १७;  
 -तिष: कौ ४, १६<sup>l</sup>; कुं १४;  
 योशि ६, २१<sup>m</sup>; -तिषा छां ३, १८,  
 ३-६; वृ ४, ३, २-६; ९; अरु  
 २१९<sup>n</sup>; ब्रसू १, ४, १३; -तिषाम्

प्र २, ९; मुं २, २, ९; वृ ४, ४,  
 १६; नाद १७; योशि ३, २२;  
 ब्रवि ९, ५; स्क ५; त्रिवि ४, ६;  
 १शिंस १९<sup>i</sup>; २शिंस ८९<sup>i</sup>; गी  
 १०, २१; १३, १७; -तिषि तै ३,  
 ८, १; मना २, ३१९<sup>o</sup>; ३२९<sup>p</sup>; शां  
 १, ७, १७; ब्रसू १, ३, ३२; -तिषे  
 पा ५, २; -ती: तै ३, १०, ६<sup>q</sup>;  
 -तीषि तै १, ५, २; ऐ ५, ३; मना १,  
 १९<sup>r</sup>; २, २९९<sup>s</sup>; वृपू २, १०९<sup>t</sup>;  
 त्रिता १, १२; २प्र ३२: ९.  
 ज्योतिर्-अन्तर्गत- -तम् मं ५,  
 १, ४.  
 ज्योतिर्-आत्मन्- -त्मा नृष ८५: ३.  
 ज्योतिर्-आ(त्मक) > )त्मिका- -का  
 योचू ७२.  
 ज्योतिर्-आदि-  
 ज्योतिरादि-वत् ब्रसू २, ३, ४८.  
 ज्योतिराद्य(दि-अ)धिष्ठान-  
 -नम् ब्रसू २, ४, १४.  
 ज्योतिर्-उपक्र(म) > )मा- -मा  
 ब्रसू १, ४, ९.  
 ज्योतिर्-मठ- -ठ: म ४८: १७.  
 ज्योतिर्-मण्डल- -लम् मवा ५.  
 ज्योतिर्-मय- -य: मुं ३, १, ५;  
 नाद ३०; ब्रवि ९, ५; रापू २, १;  
 -यम् योचू ८१; अव्य २; -ये  
 रार ५, ५; -येन शां ३, १.  
 ज्योतिर्मयी- -यीम् गु ३५.  
 ज्योतिर्मय-लिङ्गा(ङ्ग-अ)कार-  
 -रम् सौ ३, १.

ज्योतिर्मया(य-आ)त्मक- -क:  
 नाद ४६.  
 ज्योतिर्-मयूख- -ख: अता ११;  
 -खा: अता ६; मं १, २, ९.  
 ज्योतिर्-मौलि- -लिम् व४२७: २.  
 ज्योतिर्-लिङ्ग- -ङ्गम् त्रिता १, ३२;  
 ब्रवि ८०; म ४८: ३.  
 ज्योतिर्-वर्जित- -तम् ब्र २.  
 ज्योतिष<sup>१५</sup>- -षम् मुं १, १, ५; सी  
 २७; रह ३०; २प्र ३४: ११.  
 ज्योतिषा(ष-आ)गम-कर्म-  
 साधक- -का: सार २७८: १०.  
 ज्योतिषाम्-अयन<sup>१६</sup>- -नम्<sup>१७</sup> सुबा २;  
 गार ४०६: ९.  
 ज्योतिष-काम- -म: ब्र १.  
 ज्योति-ष्टोम<sup>१८</sup>- -मेन मु २, १, १.  
 ज्योति-(ष्ट) > )ष्टा- -ष्टाम् योरा ७.  
 ज्योतिष-मत्- -ष्ट<sup>१९</sup>मत् त्रिवि ७,  
 ५; सु २९३: १५; -ष्मत्: छां  
 ४, ७, ४; -ष्मन्त: वा १६; गोच  
 ६६: १६; -ष्मान् छां ४, ७, ३; ४<sup>२</sup>.  
 ज्योतिष्मती- -ती योसू १, ३६.  
 ज्योति: -स्वरूप- -प: पाशु १,  
 २१; -पम् म २, १८; गोउ ३२;  
 रह ४९.  
 ज्योती-रूप- -०प अक्ष ५; -पम्  
 वृ १, ५, ११-१३; ध्या ९३,  
 १; शां १, ७, १६; अव्य १; अक्षि  
 १; योरा ११; चा १६९<sup>२०</sup>.  
 ज्योत्स्ना<sup>२१</sup>- -त्स्नायाम् सार  
 २२५: ३.

a) ऋ ८, ४८, ३। b) तैआ १०, १५, १। c) मा ३, ९। d) ऋ ९, ११३, ७। e) =रेफ-बीजाक्षर-।  
 f) माशत्रा १४, ४, १, ३०। g) तैआ १०, २७, १। h) तैआ १०, ५१, १। i) मा ३४, १। j) मा ३४, ३। k) ऋ  
 १, ६९, १। l) °ति: इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अख्या. प्रभृ.)। m) °ति: इति अख्या.। n) शौ १०,  
 २, ३१। o) तैआ १०, २४, १। p) तैआ १०, २५, १। q) पुं. =दीप्त-। योऽहमन्नाद इत्युपक्रान्त: स एवोपसंहारे  
 परामृष्ट: द्र.। स्वर न (=इव) इत्युपमा (वैतु. शं °ति: इति न. रू. इति कृत्वा भाह्न: वा. इतीव, शंदी. नापू. सुवर न  
 इति पदद्वयम् =सुवर्ण- > -र्ण: इतीव?, निसा. JC. च सुवर्ण° इति स. इतीव?)। r) तैआ १०, १, १। s) तैआ १०,  
 २२, १। t) मा ८, ३६। u) ) व्यु: =वेदाङ्गविशेष-। v) षस. ष. अल्लुक्। =ज्योति: शास्त्र-। w) गपू. (पृ ९२)  
 ✓अय-अयन- > -नम् इत्यत्र यनि. शोध: द्र.। x) वैतु. MW. पू. ✓ज्युव > ज्योति- इति। y) तैआ ३,  
 १२, ३, ४। z) °तिरू° इति सुपा. यनि. सु-शोध:। a') व्यु: [तु. पा. (५, २, ११४) < ज्योतिस्- इति]।

ज्योत्स्ना(त्स्ना-अ)ति-तेजो-रूप-  
संवर्धित-परस्पर-वस्तु-प्रति-  
विम्बित- -ताः सार२५८:१०.  
ज्योत्स्ना-राजमाना(न-आ)न-  
(न>)ना- -ना सार२४४:१९.  
ज्योत्स्निन्- -स्तिन ध्या १०५.  
जं<sup>१</sup> रूप ४,५०; रार ३,१.

✓ज्वर

ज्वर- -रः व ४३४:५; ६:४५९:  
१३<sup>b</sup>; भव १, १४; -रम् यो १,  
३१; व ४५९:७; १५; -राः शां  
१,७,५१; -रात् व ४३४:२.  
ज्वर-दाह-शान्ति- -न्तिम् व  
४५९:९.

✓ज्वल्, >ज्वलि, ज्वालि, जाज्वल्य,  
ज्वलति छां २, १२, १; मना १,  
१५<sup>१</sup>; कौ२, १२<sup>२</sup>; नृपू२, ११;  
त्रिवि १, ११<sup>३</sup>; ५, १४<sup>३</sup>; ६, १९;  
७, १७; २५; शां १, ४; त्रिता २,  
३१; सि १, १०; १४; ३, ५; ४,  
३; ५, १; ज्वलन्ति त्रिवि ६, ६;  
७, १३; २७; ज्वल-ज्वल व ४३४:  
१४; ४५७:५; ४६४:२३.  
ज्वलिष्यामि वृ १, ५, २२.  
ज्वलयन्ति आपे ७:४; ज्वाल-  
यते, ज्वालयति नृपू २, ११;  
ज्वालय-ज्वालय लां २१४:१८.  
ज्वालयते नृपू २, ११.  
जाज्वल्यमान- -नम् आपे ८:८.  
ज्वल- -लाय मना २, १६<sup>४</sup>.  
ज्वल-लिङ्ग- -ङ्गाय मना २,  
१६<sup>४</sup>.  
ज्वलत्- -लत् वृ ६, ३, ४; नृउ ५,  
३; -लतः छां ३, १३, ७; कौ ३,  
३<sup>३</sup>; ४, १९; गु२८; -लताम् महा

३, ४४; -लङ्गिः गी ११, ३०;  
-लत् नृपू २, ११<sup>५</sup>; नृउ ४, ४;  
५, १; २; यो १, ८४; अव्य २;  
-लन्तम् त्रिवि २३; त्रिवि ७, ४०;  
५०<sup>३</sup>; नृपू २, ६; ११<sup>३</sup>; ११<sup>४</sup>; नृउ  
६, १; अव्य २; इ१४:२१; वपं  
३१२:१०; शि ७, ७१; व  
४५७:१२.

ज्वलन्ती- -न्ति-न्ति वपं  
३१२:१; -न्ती वरा ५, २९;  
-न्तीम् मना २, १; दे ४; व  
४६१:८; ४६५:२०.  
ज्वलच्-छिखर- -रैः त्रिवि ५,  
१३; सि १, ९.

ज्वलज्-ज्वलन-कुण्ड- -ण्डेषु  
भ २, ३०<sup>६</sup>.  
ज्वलत्-स्व- -स्वात् नृउ ७, ९<sup>३</sup>.  
ज्वलद्-उलक- -लकाय नापू ४,  
१९.

ज्वलन्-मणि- -णिः अन्न २, ११.  
१ज्वलन, ना<sup>१</sup>- -नः शां १, ४; यो १,  
४४; -नम् त्रिवा २, १३८; शां  
१, ४; त्रिवा<sup>१</sup>; गी ११, २९; -नाः  
या २, १०<sup>१</sup>; -ने जाद ८, २.  
ज्वलन-स्थिति- -स्थै वृजा ३,  
२१.

ज्वलना(न-आ)घात-  
ज्वलनाघात-पवनाघात-  
-तैः यो १, ८५<sup>६</sup>.  
ज्वलना(न-आ)भास- -सः कृ  
२०.

२ज्वलन<sup>१</sup>- -नम् ते ६, ८३.  
ज्वलित- -तः योचू ५९; योशि  
१, ८५.  
ज्वलित्- -ता नृपू २, ११<sup>५</sup>.

ज्वा(ल>)ला- -लाभिः शां १, ४;  
-लायाः त्रिवा २, १२७.

ज्वाल-माला(ला-आ)कुल-  
-लम् मना २, १३, २९<sup>३</sup>.

ज्वाला(ल-आ)ग्नि<sup>२</sup>- -ग्नी ते ६,  
७७.

ज्वालाग्नि-मण्डल- -ले ते  
६, ८४.

ज्वाला-चक्र- -क्राय त्रिवि ७,  
४२.

ज्वाला-जाल-परिस्पन्द- -न्दः  
अन्न ३, ११.

ज्वाला-माला-

ज्वालामाला-शिरो-रुह-  
-हम् व ४५९:१९.

ज्वालामालिन्- -लिने वपं  
३१२:१३.

ज्वालामालिनी<sup>१०</sup>-  
-०नि वपं ३११:५; ३१२:१;  
व ४३६:२.

ज्वाला(ला-आ)वली-युत-  
-तम् शां १, ५; जाद ५, ७.

ज्वाला(ला-आ)वली-वृत-  
-तम् ध्या २०.

ज्वाला-वह्नि<sup>११</sup>- -ह्निः ते ६, ८४.  
१ज्वाला-हस्त<sup>१२</sup>- -स्ताभ्याम् व  
४४९:२३.

२ज्वाला-हस्त<sup>१३</sup>- -स्तः व  
४३९:९.

ज्वालि(व>)नी- -नी रूप ४,  
५९<sup>९</sup>.

भ

१भं व ४३५:१८.

a) =बीजमन्त्रविशेष- । 'जं' इति निसा. संटि. । b) देवतोपचारः द्र. । c) तैआ १०, १, १५<sup>३</sup>. d) तैआआ १०, १६. e) तैवा ३, १०, १, २. f) खि १०, १२७, १२. g) 'नकूटे' इति अख्या. संटि. । h) कर्तरि कृत् । i) तु. सस्थ. टि. 'ऊर्ध्वज्वल->-लम्' । j) 'ज्वलिताः' इति अख्या. । k) 'तोः' इति अख्या. । l) भावे कृत् । m) तैआ १०, ११, २. 'हृदयं तद्विजानीयात्' इति JC. । n) मध्यमपदलोपः कस. । o) =देवीविशेष- । p) बस. । q) =वकार-बीजाक्षर- । r) तु. टि. कुं ।

२३<sup>अ</sup> आथ ३९५: २१; हंषो ६.

अं-कार- -०र अक्ष ५.

भट्टि<sup>१०</sup> वरा ३, ११.

भट्टी<sup>१०</sup> - -०टि व ४४९: १०; १७;

४५०: १८; १५: २२; ४५१:

८; १५: २२; ४५२: ७; १५: २३;

४५३: ५; ११: १७; २३; ४५४:

६; १४: २०; ४५५: ४; १६.

भल्ली<sup>१०</sup> - -०लि व ४३५: १८.

भष<sup>१०</sup> - -षम् त्रि १२१<sup>०</sup>; -षाणाम् गी  
१०, ३१.

अ

अं<sup>१</sup> आथ ३९५: २१; व ४३६: ५;  
हंषो ६.

अं-कार- -०र अक्ष ५.

ट

टं<sup>१</sup> आथ ३९५: २२; व ४३६: ५;

हंषो ८; टं-टं-टं लां २१६: १०.

टं-कार- -०र अक्ष ५.

√टङ्क<sup>१</sup>, टङ्क-टङ्क लां २१४: १७.

ठ

१ठ<sup>१</sup>

ठा(ठ-अ)न्त-त्रय- -यम् सुमु ५.

२ठ<sup>१</sup> ठ-ठ दत्ता २.

ठं<sup>१</sup> त्रिवि ७, ४८; आथ ३९५: २२;

व ४३६: ५; हंषो ८.

ठं-कार- -०र अक्ष ५.

ठः<sup>१</sup> त्रिवि ७, ३८; ठः-ठः-ठः व

४३४: २०; ४४९: १०.

ड

डं<sup>१</sup> आथ ३९५: २२; व ४३६: ५;

हंषो ८.

डां<sup>१</sup> हंषो ८.

डाक-

डाकि(न्)>नी<sup>१</sup> - -०नि हंषो ८;

नी पी ४२२: ११.

डाकिनी-विध्वंसन- -०न लां

२१४: १५.

डो<sup>१</sup> हंषो ८.

ढ

ढं<sup>१</sup> ढ-ढ-ढ व ४२७: २१.

ढं<sup>१</sup> आथ ३९५: २२; व ४२७:

२१; हंषो ८.

ढं-कार- -०र अक्ष ५.

ण

ण<sup>१</sup>

ण-कार- -र: ता १, २.

णं<sup>१</sup> आथ ३९५: २२; व ४३६: ५;

हंषो ८.

णं-कार- -०र अक्ष ५.

ण्य<sup>१</sup> - ण्य: छां ८, ५, ३; ण्यम् छां

८, ५, ४.

त

१त<sup>१</sup>

त-कार- -र: सी ४.

ता(त-अ)न्ता(न्त-अ)न्त<sup>१</sup>

-न्त: रापू ४, ६१.

तं<sup>१</sup> आथ ३९५: २३; व ४३६: ५;

हंषो ९.

तं-कार- -०र अक्ष ५.

२त- तद्- द.

तंस<sup>१</sup> वपू १, ११.

तंस्थिपमुस<sup>१</sup> व ४२७: १८.

तक्र<sup>१</sup> - क्रम् ते ६, ८०; इ १७: २१.

√तक्ष, ऽ<sup>१</sup>तक्षति चक्र २; ह १६.

तक्षणुवन्ति ओषे ७: ७.

तक्ष<sup>१</sup> - -क्ष: रापू ४, ५३.

तक्ष-क<sup>१</sup> - -क: गरु ५०; १५.

तक्षक-दूत- -त: गरु १५.

तक्षन्- -क्षा छाग२५: ७; १०; ब्रसू

२, ३, ४०; -क्ष्णा छाग २५:

१८.

√तद्, तट-तट वप ३१२: ५.

तट- -टे राउ३, ३; सार२२१: १८.

तट-दुम- -मा: अक्ष ४, ७१.

तट-भूमि-रत्न-कुटी-चन्द्र-

कान्त-मणि-जल-यन्त्र<sup>१</sup> -

-न्त्राणि सार २६६: २०.

√तड्, >ताडि, ताडय-ताडय लां  
२१४: १७.

तडित्<sup>१</sup> - -डित: ब्रसू ४, ३, ३;

-डित्सु महा ३, ३२.

तडित्-कूटा(ट-आ)भ- -भम्

मं २, १, २१<sup>१</sup>.

तडित्-कोटि-स(म)>मा-

-मा मं १, २, ६१<sup>१</sup>.

तडित्-कोटि-समान-कान्ति-

-न्या अता ५१<sup>१</sup>.

तडित्-प्र(म)>भा- -भाम् सौ

३, १<sup>१</sup>.

a) =बीजमन्त्रविशेष-। b) व्यु? =अव्य.। c) तु. टि. कुली-। d) व्यु? =मत्स्य-। e) पा? 'साध->धम्' इति विप. इतिपरः शोधः द. (तु. सस्थ. टि. फल->लम्)। f) पाधा. भ्वा. हिंसायाम् उसं.। g) =वर्णविशेष-। h) 'अरण्य-' इत्यस्यैकदेशः। i) =दकार-बीजाक्षर- [तु. नादी. (आन.)]। j) =नृसिंहमन्त्रीयपदवर्णेषु तद्युग्मविशेष-। k) समुपस्थित->तम् इत्यस्य गुह्यजपार्थो विपर्यासः। l) व्यु? =उदक्षित-। m) ऋ १, १६४, ४१। n) घा. अर्थः? =नागविशेष-। o) 'तक्षकाः' इति निसा.। p) सप्तस. गर्भितः सप्तस.। q) घा. अर्थः?। r) °टि° इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.)। s) °टित्सनि° इति अज्या.।



तडिद्-आभ-मात्र-त्रम् आवो  
१<sup>१</sup>; ना ४<sup>१</sup>.  
तडिद्-गर्भ-भैः श्वे ४, ४.  
तडिल्-लेखा-खा ध्या ४६;  
योचू ९.  
ताडन-नम् वृजा ५, १३.  
ताडन-पूजन-नेषु शां १, १.  
ताडित-तः नाप ५, २७; शि ५, ३९.  
ताडित-वत् पै २, ४५.  
ताड्यमान-नः नाप ३, १९; व्र १.  
तण्डुल<sup>८</sup>-लः नाउ १, २२; स्क ६;  
-लस्य महा ५, १८५; १८६; -लैः  
भ २, २५; शि ४, ६१.  
१तत<sup>९</sup>-०त क १, १, ४.  
२तत-√तन् द्र.  
ततस(>) तद्-द्र.  
तत्त्व<sup>१०</sup>-त्त्वम् अद्वै ११; अध्या ५८;  
अन्न २, १७; ३, २; २३<sup>१</sup>; ग २;  
जावा २, ८; त्रिवि ३, १; ध्या  
५०; नाद २<sup>१</sup>; नाप ३, १७; पाशु  
२, १९; पै ४, १८; ब १५; ब्रवि  
५३; मं ४, १, ३; मना २, १३,  
१५<sup>१</sup>; योचू १४; योशि ३, २३;  
रार १, ३; ४; ६<sup>१</sup>; वरा २, ३०;  
शां १, ७, १५; १६; शु ३, ८; सर १,  
१; सिशि ३८२: १५; सूता १, ३०;  
सौ २, १; १२; हं २; गौ १, १५;  
२, ३८<sup>१</sup>; सांसू १, ४४; ५८; गी  
१८, १; -त्त्वस्य श्वे ६, ३; -त्वात्  
गौ २, ३८; -त्त्वानि अद्वैभा १२;  
२अव ३३८: ३; गार ४०६:  
११; ४०७: २२; त्रिवा २, १६३;  
योशि १, ४०; वरा १, ७; शारी ८;  
गौ २, २०; -त्वाय श्वे २, १५<sup>१</sup>; -त्वे  
अध्या २४; २५; अन्न ४, १०;  
२अव ३३७: ४; १आ ३०;

त्रिवा २, २९; महा ४, १३; ५,  
६३; मैत्रि ६, २४; योशि ४, ४;  
रुजा २, १; वरा २, ७०; ४, ४३;  
शां १, ७, २१; -त्वेन श्वे ६, ३;  
कर ४२; ब्रवि १११; शु १, ११;  
गौ २, ३०; ३, २८; गी ९, २४;  
११, ५४; -त्त्वैः भव २, २१; वरा  
१, ५.  
तत्त्व-कुण्डलिनी<sup>११</sup>-नी योरा ६.  
तत्त्व-क्रोविद्-दैः अन्न २, १३.  
तत्त्व-चिन्तक-कैः जाद ४, ४५.  
तत्त्व-चिन्ता-न्ता मैत्रे २, २१.  
तत्त्व-जात-तानाम् वरा १, ७;  
१५; -तैः वरा १, ७.  
तत्त्व-जिज्ञासु-सवः द १.  
तत्त्व-ज्ञ-०ज्ञ अन्न ४, ७५; महा  
५, १७०.  
तत्त्व-ज्ञान-नम् अक्षि १; अद्वै ७;  
अन्न १, १६; १८; ४, ८१; त्रिवि  
५, ७<sup>१</sup>; ८, ११; स्व ६१: १२;  
-नेन महा ३, ५६.  
तत्त्वज्ञाना(न-अ)र्थे-दर्शन-  
-नम् गौ १३, ११.  
तत्त्वज्ञानिन्-निनःस्व ६१: २०  
तत्त्वज्ञानो(न-उ)दय-यात्  
नाद २२.  
तत्त्व-तन्तु-समन्वित-तम् पत्र  
३, १०.  
तत्त्व-तस्(>) मुं १, १, १३; श्वे  
६, ४; ते १, ४८; त्रिवि २, १५;  
नाप ५, १<sup>१</sup>; पै ४, १४; महा २,  
१८; सु १, १, ५; ७; १०; यो ३,  
१; १योत ४; राउ ३, १; रापू  
१, ५; रार ५, २; १७; रुह ४४;  
वउ १, २१; गौ ३, १९; २७<sup>१</sup>;  
२८; ४, ५८; गी ४, ९.

तत्त्व-त्रय-यस्य भव ५, १८.  
१तत्त्व-दर्शन<sup>१२</sup>-नः नाप ३, ७९.  
२तत्त्व-दर्शन<sup>१३</sup>-नम् महा ४, ७७;  
वरा २, ७६; ३, २३; -ने १आ ३.  
तत्त्व-दर्शिन्-शिंनः गी ४, ३४;  
-शिंभिः भव २, १९; योरा २;  
गी २, १६; -शीं शा ४.  
तत्त्व-दर्शिवस्<sup>१४</sup>-वान् व्र २<sup>१</sup>.  
तत्त्व-दृष्टि-दृष्ट्या पाशु २, १९.  
तत्त्व-निष्ठ-ष्ठः अक्षि ४७.  
तत्त्व-प्रकाश-शः मं २, १, २<sup>१३</sup>.  
तत्त्व-प्रदीप-प्रकाश-शम् वा २०.  
तत्त्व-बोध-धेन तारा ८३: १७.  
तत्त्व-भाव-वः क २, ३, १३;  
-वात् श्वे १, १०; नाप ९, ९;  
-वेन क २, ३, १३.  
तत्त्व-मन्त्र-वर्ण-देवता-छन्दो-ऋक्-  
कला-शक्ति-सृष्ट्या(ष्टि-आ)-  
त्मक-कम् ता २, ५.  
तत्त्व-मार्ग-र्गं १योत २, १३१;  
२योत १, २.  
तत्त्व-विज्ञान-नम् अन्न ४, ७९.  
तत्त्व-विद्-वित् जाद १, २३; पै  
४, ९; मै १, १; मैत्रि १, २;  
गी ३, २८; ५, ८; -विदः अन्न  
४, ८५; रार ५, १३; गौ २, ३४;  
-विदाम् जाद ४, ४६.  
तत्त्व-विवित्सा-स्सया सार  
२१९: १.  
तत्त्व-वेदन-नम् अन्न ४, ८०.  
तत्त्व-संज्ञ-ज्ञानि नाउ ३, २१.  
तत्त्व-संश्लि-श्लिः अन्न ४, ८०.  
तत्त्वा(त्त्व-आ)काश-शम् अता ७;  
मं १, २, १३.  
तत्त्वा(त्त्व-आ)ख्यान-ने सांसू १,  
१०७.

a) णि<sup>१५</sup> इति अख्या. । b) व्यु. वैपश् यद्र. । c) व्यु. ? =तात- । d) बन्ध. सत् बन्धु. प्राति. द्र. (वैतु. अन्ये  
संबन्धाऽभावेऽपि <तद्- इति) । e) 'सत्त्वम्' इति आन. । f) तैआ १०, ११, ११ । g) मा ११, ११ । h) मध्यमपदलोपः  
कस. । i) उस. उप. कर्तरि कृत्, यद्वा माप. इति कृत्वा वस. द्र. । j) षस. उप. भाप. । k) उस. उप. √दृश् + वसुः प्र. उ. सं.  
इडागमश्च (पा ३, २, ९४; पावा ७, २, ६८) । l) °दर्शनात्, °दर्शनः इति अख्या. संटि. । m) तत्त्व<sup>१६</sup> इति अख्या. संटि. ।

तत्त्वा(त्व-आ)गम- -मः अक्ष ४, ८०  
तत्त्वा(त्व-अ)तीत- -तम् योशि १, ७  
तत्त्वा(त्व-अ)न्तर- -रम् सांसू ५,  
३०; ९४; १०७.

तत्त्वा(त्व-अ)भ्यास- -सात् सांका  
६४; सांसू ३, ७५.

तत्त्वा(त्व-अ)वबोध- -धः महा ४,  
१२.

तत्त्वा(त्व-अ)विचार- -पाश-  
-शेन द १८.

तत्त्वी/भू

तत्त्वीभूत- -तः गौ २, ३८.

तत्त्वो(त्व-उ)पदेश- -शात् सांसू  
४, १.

तत्र, तथा नाज. द.

तद्-

रत, ता- तम् के ३, ४; क १, १, २;  
४९<sup>b</sup>; २, २०९<sup>o</sup>; प्र ५, ३; सुं १,  
२, ५; तै १, ४, ३; ऐ १, ४; छां  
१, २, २; वृ १, २, ४; द, ४, २०९<sup>d</sup>;  
श्वे १, ४; ३, ७; कै १, ७<sup>o</sup>; कौ २,  
६९<sup>f</sup>; छु २४<sup>g</sup>; २५<sup>g</sup>; गोपू १६<sup>b</sup>;  
२प्र ३५; ५<sup>1</sup>; तम्-तम् गोच  
६७: २३; नाप ५, १; तथा क  
२, ३, १६; छां १, २, ३; वृ १,  
२, ५; श्वे ३, ५९<sup>1</sup>; ते १, ४२;  
नाप ४, ९<sup>1</sup>; ३८; वृपू ४, ८; पै  
१, ३१; महा ४, १३३; शां १,  
७, १; तयोः क १, २, १; सुं ३,  
१, १९<sup>1</sup>; छां ४, १६, २; वृ ४,

२, ३; श्वे ४, ६९<sup>1</sup>; कौ ३, ५<sup>1</sup>; लु  
१७; पहं २; योचू ६१; भव २,  
२९<sup>1</sup>; त्रि १४<sup>m</sup>; तस्मात् के ३,  
११; क १, १, ९; प्र १, ५; सुं  
१, १, ९; तै २, १, १; ऐ २, ५;  
छां १, २, २; वृ १, २, ७; श्वे ३,  
११; कै २, ५<sup>1</sup>; तस्मिन् ई ४;  
के ३, ५; क २, २, ८; प्र २, ४<sup>1</sup>;  
सुं २, २, ८; तै १, ४, ३; छां २,  
९, २; वृ १, ५, १; श्वे १, ७; गोउ  
१०<sup>n</sup>; तस्मै के ३, ६; क १, १,  
१५; प्र १, ४; सुं १, १, ४; तै  
३, १, १; छां १, १२, २; वृ ४,  
३, १; श्वे २, १७; द, १८; कै १,  
२; अशि २, २; तस्य के २, ३;  
क १, १, १; प्र १, ९; सुं २, २,  
१०; मां १; तै २, १, १; ऐ ३,  
१२; छां १, १, १; वृ १, १, २<sup>2</sup>;  
श्वे २, १२; कौ २, १२९<sup>o</sup>; ध्या  
२<sup>p</sup>; तस्याः छां १, २, ११; वृ  
१, ३, २०; अक्ष ५, १९; अव्य  
५; त्रि २, ७०; वृजा १, १<sup>q</sup>;  
मना १, ८९<sup>q</sup>; महा १, १; योशि  
५, १८; तस्याम् वृ १, २, २; अक्ष  
२, १९; गु २७; वृजा ७, ४;  
महा ५, १९; सार २४४: १;  
रा ४२५: ६; गौ २, ६९; तस्यै  
के ४, ८; वृ १, ५, ११<sup>1</sup>; कौ २,  
३<sup>1</sup>; त्रिता ४, ३७; वृजा ६, १;  
रुह १७; ताः क १, १, ३; प्र ४,

२; तै १, ३, १; ऐ २, १; छां ३,  
१, २<sup>1</sup>; वृ १, ३, १५; कौ २, ५;  
मना १, ११९<sup>o</sup>; मै २, ६; वपू १,  
२; ताः-ताः पा ८, ८; तान् ई  
३; क १, १, ३; प्र १, २; सुं ३,  
१, १०; छां १, ४, ३; वृ २, १, ९;  
४, ४, ११९<sup>o</sup>; श्वे २, ३९<sup>1</sup>; मना  
२, ३८९<sup>o</sup>; मै २, ३; राउ ५, १<sup>w</sup>;  
शा ३५९<sup>1</sup>; तानि सुं १, २, १<sup>1</sup>;  
छां १, ३, ५१<sup>1</sup>; २, ९, ४; वृ १, ४,  
७; श्वे १, ३; अना १; नाप ३,  
३६; मना २, १४९<sup>1</sup>; महा १,  
१; मै ३, ३; गोउ ११<sup>1</sup>; तानि:  
वृ २, १, १९; मना २, ७९<sup>1</sup>;  
सु २, २, ७०; व ४४३: २१;  
शि ४, २७; शौ ५२: १५; सार  
२३०: ५; ताम्यः ऐ २, २<sup>1</sup>;  
अक्ष १३; आथ ३९९: १५;  
ब्रसू २, ३, १७; ताम्याम् वृ १,  
६, ३; द, २, २९<sup>1</sup>; अध्या ३४;  
अव्य ५; पित्र ६, ११; वृजा २,  
५; वरा ४, ३४; सार २३८:  
१३; ताम् के ३, १२; क २, ३,  
१०; प्र २, १२; सुं १, १, २; छां  
१, २, ३; वृ १, ४, ३; श्वे ३, ६९<sup>d</sup>;  
अशि ५, ९; कौ १, ४; मना १,  
१०९<sup>o</sup>; वृउ ४, ६<sup>1</sup>; ताम्-ताम्  
पा ८, १०; महा ३, २२; शि ७,  
१२३; सार २७५: २; तासाम्  
क २, ३, १६; प्र ३, ६; तै १, ५, १;

- a) सना. । व्यु. वैप १ यद्र. । b) तैत्रा ३, ११, ८, १ । c) तैत्रा १०, १०, १ । d) ऋ १, १६४, ४९ ।  
e) 'तद्' इति अज्या., 'तथा' इति आन. । f) 'तद्' इति शांआ ४, ६ । g) 'तन्तुम्' इति आन., अज्या. । h) 'सन्तम्'  
इति आन. । i) एतदनु गपू. (पृ १७७) उत्तरोपनिषद्- > -षदम् इत्यत्र उत्तरोपनिषत् यनि. च इति शोधः ।  
j) मा १६, २ । k) 'तथा' इति अज्या. । l) ऋ १, १६४, २० । m) पा. १ [तु. निसा., अज्या.; वैतु. तान्नि. समोत-  
> -तयोः इति (तु. सस्थ. टि. [समोज- > -जौ]) । n) 'तस्याम्' इति निसा., आन. । o) 'तस्याः' इति शांआ ४,  
१२ । p) 'विन्दोः' इति आन. । q) मा १३, २१ । r) ष. अर्थे च. द्र. । 'तस्यैव' इति निसा. मुपा. यनि सु-शोधः (तु.  
माशत्रा १४, ३, ३, १८) । s) ऋ १०, ९, १ । t) मा ४०, ३ । u) मा ११, ३ । v) तैत्रा १०, ४८, १ । w) 'एतान्'  
इति आन. । x) 'चाक्षम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. वाध २, ११; या २, ४) । y) तां नि° इति निसा.  
मुपा. यनि. सु-शोधः । z) तैत्रा १०, १३, १<sup>1</sup> । a') 'तान्' इति निसा., आन. । b') तैत्रा १०, ६३, १ । c') ऋ १०,  
८८, १५ । d') मा १६, ३ । e') शि ५, ८७, ९ । f') 'तान्' इति निसा. ।

छां ३, १५, २; कुं २<sup>a</sup>; लु १५;  
नाप ४, ३; योचू ७२; योशि  
६, ४; शां १, ४; तासु कौ ४,  
१९; गु २; त्रिब्रा २, ११८; नाप  
५, १; सं २, १, ६; सु १, १, १०;  
योचू १६; शां १, ४<sup>a</sup>; शि ४,  
१६; सार २२२: ८; १ते ई ३<sup>a</sup>;  
९; १२; के शां<sup>a</sup>; ३, १; क १,  
१, ३; प्र १, १<sup>a</sup>; सुं १, २, ७; तै  
२, २, १; ऐ २, ५; छां शां<sup>a</sup>; १,  
२, २; वृ १, ३, १<sup>a</sup>; ४, ४, ११९<sup>b</sup>;  
५, १५, ११९<sup>c</sup>; खे ३, १; १३९<sup>d</sup>; ४,  
१७९<sup>e</sup>; शा ३५१<sup>f</sup>; गी ३, ३१<sup>g</sup>;  
तेन ई १; क १, २, २३; प्र १,  
६<sup>a</sup>; सुं १, २, ९; तै २, २, १; छां  
१, १, ९; वृ १, २, ५; खे १, ६;  
३, ९९<sup>h</sup>; वपू १, ४; वउ ६, २२;  
तेन-तेन खे ५, १०; गु ६५; भव  
२, २५; तेभिः नाप ३, ८४;  
तेभ्यः के ३, २; छां २, २१, ३;  
वृ १, ३, २; अच ६; के १, १८;  
त्रिब्रा २, ३; नाप ४, ३०; वपू  
२, १; वउ ६, १; मना २, ६७९<sup>b</sup>;  
तेषाम् क २, २, १२; प्र १, १५;  
सुं ३, २, १०; तै १, ११, ३; छां  
१, ६, ८; वृ १, ४, १६; खे ५,  
१२; २कौल २१<sup>i</sup>; तेषु क १, ३,  
४; तै १, ११, ४<sup>a</sup>; वृ १, ३, २८<sup>a</sup>;  
अध्या १८; अज ४, ४; जाद ४,  
२५; योचू १५; १योट ७६;

शां १, ८; सार २२२: २२;  
तेषु-तेषु सार २३९: १६; तै:  
छां ५, १०, ९; गोच ६९: १२;  
नाप २<sup>a</sup>; वृ ३, ४; महा ४, ६६;  
१योट ७; रु २८; शौ ५३: २;  
सार २२७: १७; स्व ६१: ९;  
तै: तै: योशि १, २९; लौ क १,  
२, २; छां १, १, ६; वृ १, २, ७;  
अव्य १; कौ १, ५; मै ५, १;  
लां २१६: २१; शां १, ४; सावि  
१०; गी २, १९.

ततस्(>) ई ६; ९; १२; के ३,  
६; १०; क १, २, १०; २, १, ५;  
प्र १, १४; सुं १, १, ८; ३, १, ८;  
तै १, ४, २; ६, २; छां २, १०, २;  
३, ११, १; वृ १, २, ४; ७; खे १,  
६; ३, ७; मना १, १३१<sup>g</sup>; नाद  
१७<sup>k</sup>; तै १, ४९<sup>l</sup>; द १३३<sup>m</sup>; सार  
३, १<sup>n</sup>; रापू ४, ३२<sup>o</sup>; ६३<sup>p</sup>.

तत्र- ई ७; के १, ३; क १, १,  
१२; २, २, १५; प्र ५, ३; सुं १,  
१, ५; २, १, १; छां १, ४, ३; १०,  
८; वृ ४, १, ३; ३, ५; खे २, ७<sup>q</sup>;  
योचू ५६<sup>r</sup>; लु ९<sup>s</sup>; वृ २<sup>t</sup>;  
तत्र-तत्र सुं ३, २, २; पै ४, १३;  
२१; २२; सौ २, १९<sup>u</sup>; सर ३,  
३१; सार २७४: २१; २८३: १.

तत्र-त्य- -त्यान् त्रिवि ५,  
१३; -त्यै: त्रिवि ५, १२; ६, २३<sup>v</sup>;  
२४.

तत्र-स्थ- -स्थः त्रिवि ४३;  
-स्थाः वृजा ६, १; -स्थान् शि  
४, २९.

तथा- के ३, ३; ७; क १, १, ६;  
३, १५; सुं १, १, ७; २, १, १; तै  
१, ११, ४<sup>a</sup>; ऐ ४, २; छां १, ८, २;  
९, ४; वृ १, ३, २-७; कौ ४,  
१९९<sup>b</sup>; त्रिवि ३, ४<sup>c</sup>; रापू १, ५<sup>d</sup>;  
योशि १, ५७<sup>e</sup>; ६, ४६<sup>f</sup>; १योट  
२७<sup>g</sup>; जा ४<sup>h</sup>; २प्र ३३: ११९<sup>b</sup>;  
१आ १९; त्रिवि ३५<sup>i</sup>; योसू  
२, ९१<sup>j</sup>; तथा-तथा सार २३९:  
१५; शि ३, १४; ६, १०४; २७९.

तथा-त्व- -त्वम् ब्रसू २, १,  
४; ३, २, १९; -त्वेन ब्रसू ३, ३, ३.

तथा-दृष्ट्यु(ष्टि-उ)पदेश-

-शात् ब्रसू १, २, २६.

तथा-भूत- -तम् सार २३०:

१३; -तान् वृजा ६, ३.

तथा-विध, धा- -धम् गौ १,

२०; ते ३, ५२; ५३; -धस्य

त्रिवि २, १४; -धात् वृजा ४, ७;

-धाम् वउ ३, २०.

तथा-स्मृति- -तिः गौ २,  
१६.

तथो<sup>o</sup> कौ २, १, २; ६; १४.

तथो(था-उ)क्त- -क्तस्य छां

१, ११, ५; ७; ९<sup>r</sup>.

तदा- क २, ३, ११; प्र ४, ६; सुं

१, २, २; ३, १, ३; छां ६, ८, १;

a) 'तस्याः' इति अज्या. । b) मा ४०, ३ । c) का ४०, १, १६<sup>a</sup> । d) तैआ १०, १, ३ । e) 'तेन' इति  
निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. बाध २, ११) । f) तु. सस्थ. टि. अपि । g) तैआ १०, १०, ३ । h) तैआआ १०,  
६७ । i) पा. १ 'ते' इत्येतत्परः शोधः द्र. । j) ऋ १०, १९०, १<sup>a</sup> । k) 'अतः' इति आन. । l) 'अतः' इति अज्या. ।  
m) सकृत् 'पदम्' इति अज्या. । n) 'तम्' इति अज्या. । o) 'धृतः' इति आन. । p) 'जन्ततः' इति आन. ।  
q) 'त्रयः' इति आन. (वैतु. शंदी., विवि.) । r) 'यन्न' इति अज्या. । s) 'ततः' इति आन. । t) 'यन्न' इति निसा. ।  
u) 'तत्' इति शांआ ६, २० । v) 'तदा' इति निसा. । w) 'यथा' इति आन. । x) 'कथा' इति अज्या. । y) 'च'  
इति अज्या. । z) 'परम्' इति निसा. । a') 'एतया' इति आन., अज्या. । b') 'तद्' इति गोब्रा १, १, २२ ।  
c') 'स्थितः' इति अज्या. । d') पा. १ 'ही तन्वनुबन्धोऽभि' इत्येतावन्मात्रतया शोधः द्र. (अंशतः तु. सुयोसू.) ।  
'तन्वनुबन्धः' इत्यस्यानुवाचभूतस्य पातश्च 'विदुषोपि तथा रूढः' इत्यस्य व्याख्येयस्येव सतोऽस्य समावेशश्च  
व्याभा. अपि प्रतरामभूतामिति मतं द्र. । e') तु. वैप१, ९७C. ।



कौ२, ५<sup>३</sup>; गौ१, १६; ३, ३२; मैत्रि  
६, २०; अवि ६<sup>३</sup>; ध्या ९३, १२;  
तदा-तदा जाद ४, ४७.

तदा-प्रभृति वृजा ६, ९; अन्न  
१, १६.

तदानीम् पै ३, १; अध्या ३६.  
तर्हि प्र ४, २; छां १, ११, ३;  
२, २४, २; वृ १, ४, ७; ४, ५, १;  
५; कौ ३, १; वसू ७; शौ ५३:  
७; सार २३०: २२.

तद्- तद् ई ४; ५<sup>३</sup>; के१, ३<sup>३</sup>; क १,  
१, १४; प्र १, १; ७; सुं १, १, ५;  
मां १; तै १, १२, १<sup>३</sup>; ऐ ३, २; छां  
१, ३, ८; ३, १४, १<sup>३</sup>; वृ १, १,  
१<sup>३</sup>; श्वे ३, १०; पाशु १, ३१<sup>३</sup>;  
तत्-तत् वृ १, ४, १५; त्रिवा  
२, ११३; नाप ५, १; पाशु २,  
१४; महा३, १७; योशि १, ३१;  
१ संन्या २, ५९.

तच्-चक्र-मध्य- -ध्ये शां १, ४.  
तच्-चित्त- -त्तम् तुअ ५; पप  
४२०: ११.

तच्-चित्र-शाला- -लायाम्  
सार २५४: ७.

तच्-चिन्ता- -न्तया सार २३२:  
१८.

तच्-चिह्न- -हानि मं २, १, १०;  
१ योत ६६.

तच्-चेष्टित- -त्तम् योचू ४०<sup>d</sup>.

तच्-छन्द- -न्दः स्व ६२: १.

तच्छन्द-गो-चर- -रः वृजा  
७, ७.

तच्छन्द-वर्ज्य- -ज्यैः ते ५, ६

तच्-छान्ति- -न्तिम् शि ६,  
१५५.

तच्-छिद्र- -द्रेषु योसू ४, २६.

तच्-छीर्ष- -षाणि शि ३, ६.

तच्-छेष- -षम् शि ६, १४३.

तच्छेष-गत्य(ति-अ)नुस्मृ-  
ति-योग- -गात् ब्रसू ४, २,  
१७.

तच्-छुति- -ते: ब्रसू २, ३, ४१;  
३, ४, ४; ४, २, ५; ३, ६; ४, ८.

तज्-ज- -जः योसू १, ५०;  
-जस्य सांसू ४, ३१.

तज्-जनन-काल- -ले लिं  
३०९: ५.

तज्-जप- -पः योसू १, २८;  
-पात् रुजा १, ६.

तज्-जय- -यात् योसू ३, ५.

तज्-जल- -ल्लेन का ११; नार  
१०.

तज्-जाति-  
तज्जातीय- -या: रुजा १, ८.

तज्-जापक- -कानाम् ह९; १०.  
तज्-जापिन्- -पी दत्ता १, ६.

तज्-ज- -जः अन्न ५, ९८; मं  
५, १, ७.

तज्-ज्ञान- -नम् जावा १४;  
सर १, १; -नेन मं १, ३, ५; शां  
२, १.

तज्ज्ञान-निष्पत्ति- -त्ति:  
जाद ६, ३८.

तज्ज्ञान-साधन- -नम् द१.

तज्ज्ञानिन्- -नी पाशु २, ४०

तत्-कथा- -थायाम् सार  
२७९: १४.

तत्कथा-द्वार- -रेण सार  
२२७: १०.

तत्-कपोल- -लेषु रार ३, १.  
तत्-कर-पृष्ठ- -ष्ठे भ १, ६<sup>३</sup>.

तत्-कर्णिका- -कायाम् त्रिवि

७, १३; ३०.

तत्-कर्तृ- -र्ता शि ३, १४; -र्तुः  
सांसू ५, ४६.

तत्-कर्मन्- -र्मं, -र्माणि शां  
१, ४.

तत्कर्मा(र्म-अ)र्जित-

तत्कर्मार्जित-स्व- -स्वात्

सांसू २, ४६; ६, ५५.

तत्-कारिन्- -री गर ९;  
१२-२३.

तत्-कार्य- -र्यम् सांसू २, १४;  
१७; -र्याय ब्रसू ४, १, १६.

तत्कार्य-तस्(>) सांसू १,  
१३७.

तत्कार्य-स्व- -स्वम् सांसू १,  
७३; ३, ८.

तत्कार्य-स्व-श्रुति- -ते:

सांसू ५, ८७.

तत्-कार्य-कारण-मेद- -रूप-  
-पेण त्रिवा १, ४<sup>३</sup>.

तत्-काल- -लम् सार २६४:  
२०.

तात्कालिक- -कम् १ संन्या  
२, ६५; ६९.

तत्-कीर्तन- -नात् शि १, २२.

तत्-कुल- -लम् मं ५, १, ९.

तत्-कृत- -तः सांका २१; -ते  
सांसू ३, ४७.

तत्-केसर- -रे रापृष्ठ, ४६; ४८.

तत्-क्रतु- -तुः वृ ४, ४, ५; ब्रसू  
४, ३, १५.

तत्-क्रम- -मम् नाप २.

तत्-क्रीडा-पर- -रा: सार  
२८१: १४.

तत्-क्षण- -णात् अता १९;  
वृजा ६, ६; योशि १, ५४; वपू २, ५.

a) 'ध्रुवम्' इति अब्या. संटि. । b) वा. ? वाक्यपार्थक्ये सति यनि. = ब्रह्म, ज-ला(ल-अ)न् (=कस.)  
> -लान् (वैतु. सं. प्रसू. वाक्यामेदे सति तत्° इति स. इति) । c) पा. ? तद् राज्ञा (?राजानः) इति शोषतो विधेय-  
वाक्यतोषा । (यद्) ब्र° इत्येतदुद्देश्यवाक्यं च द्र. (वैतु. उन्न. तद्वाजन्- इत्यस्याऽटजन्तस्य सतः वृ१ इति) । d) वा. ? ।  
e) तु. गपू. पृ १२५८ । f) तत्त्वं इति निसा. । g) वा. क्वि. द्र. ।

तत्-क्षय-ये ध्या ४<sup>a</sup>.

तत्-तद्-

तत्तज्-जन्तु-ध्वनि- -नौ  
शां १, ७, ५२.

तत्तज्-जीव-वानाम् सी  
१३.

तत्तत्-कर्म-कर-व्यग्र-  
-ग्रः १योत ७८.

तत्तत्-कर्म-फल-वासना-  
जाल-वासिता(त-अ)न्तःक-  
रण- -णानाम् त्रिवि ५, ४.

तत्तत्-कर्म-फल-विषय-  
प्रवृत्ति- -त्तिः त्रिवि ५, ४.

तत्तत्-कर्मा(र्म-अ)नुसार-  
तत्तत्कर्मानुसार-तत्-

(>) कर १६.

तत्तत्-पद-विरक्त- -क्तस्य  
कर ३०.

तत्तत्-प्राधान्य- -न्येन  
त्रिवि १, ११.

तत्तत्-फल-भुज्- -भुक् पै  
२, ३७.

तत्तत्-सवितृ- -त्रे पा ९,  
१०.

तत्तत्-सिद्धि- -द्धयः शां  
१, ७, ५२.

तत्तत्-स्थान- -ने शां १, ७,  
५२.

तत्तद्-अण्डो(ण्ड-उ)चित-  
चतुर्दश-भुवन- -नानि पै १,  
२०.

तत्तद्-आद्य(दि-अ)र्ण-  
मध्य- -ध्ये सूता ६, ४.

तत्तद्-देवता(ता-अ)नुग्र-  
हा(ह-अ)न्वित- -तैः पै २,  
३५<sup>b</sup>.

तत्तद्-देह-विहित-विवि-  
ध-विचित्रा(त्र-अ)नेक-शुभा-  
(भ-अ)शुभ-प्रारब्ध-कर्मन्-  
-माणि त्रिवि ५, ४.

तत्तद्-ब्रह्म-मार्ग<sup>c</sup>- -गं जा  
६१<sup>d</sup>; नाप ३, ८६<sup>e</sup>.

तत्तद्-भाव- -वेन सार  
२९२: १३.

तत्तद्-भुवनो(न-उ)चित-  
गोलक-स्थूल-शरीर- -राणि  
पै १, २१.

तत्तद्-रूप- -पः मं ४, १,  
४१<sup>f</sup>; -पम् पाशु २, १४.

तत्तद्-विषय- -यान् पै २,  
४८.

तत्तद्-वृत्ति-व्यापार-  
भेद- -देन नाप ५, १.

तत्तद्-व्यपदेश- -शः त्रिवि  
१, ११.

तत्तन्-मन्त्र-पुरः-सर-  
-रम्<sup>g</sup> नाप ३, ५.

तत्तन्-मन्त्र-पूर्वक- -कम्<sup>h</sup>  
पप ४१९: ११.

तत्तन्-मन्त्रो(न्त्र-उ)पदेश-  
-शेन राउ ५, २४.

तत्तल्-लक्ष्य-दर्शन- -नात्  
मं ४, १, ४१<sup>b</sup>.

तत्तल्-लिङ्ग- -ङ्गम् सार  
२९२: १३.

तत्तल्-लोक-प्राप्ति- -प्तिः  
नाप ५, १.

तत्तल्-लोके(क-इ)च्छा-  
-च्छया सार २५६: ३.

तत्-तद्वत्- -द्वतोःसांसू ५, १०१

तत्-तुरीय- -यः वरा ४, १<sup>i</sup>.

तत्-तुल्य- -ल्यम् गोचद ८: २२

तत्-तैजस- -सः वरा ४, १<sup>j</sup>.

तत्-त्याग- -गः महा ५, ९७;  
-गात् त्रिवा २, १५.

तत्-त्वं-लय- -ये शु २, ५<sup>k</sup>.

तत्-त्वम्-अस्या(सि-आ)दि-  
तत्त्वमस्यादि-लक्ष्य- -क्ष्यम्  
शु १, १८.

तत्त्वमस्यादिलक्ष्य-त्व-  
-त्वात् १अव १.

तत्त्वमस्यादि-वाक्य-  
-क्यम् रार ५, १४; -क्यानाम्  
शु १, १०; -क्यानि पै २, ३१.

तत्त्वमस्यादिवाक्या-  
(क्य-अ)र्थ-स्व-रूपा(प-अ)-  
नुसंधान- -नम् पप ४१८: २८.

तत्त्वमस्यादि-हीना(न-आ)-  
त्मन्- -त्मा ते ४, ७७.

तत्-त्वं-पद-लक्ष्य- -क्ष्यम् पै  
३, १.

तत्-त्वं-पदै(द-ऐ)क्य- -क्यम्  
पै ३, १.

तत्-पट- -टे शि ६, १५१.

तत्-पति- -तिः जावा ११; इ  
१६: १९.

तत्पति-त्व- -त्वात् जावा  
१०.

तत्-पत्र-पुष्प- -ष्पाणाम् शि  
६, ४४.

तत्-पद- -दम् गोपू ४७; योचू  
८३; योशि १, ७६; रार ५, १३;  
-दे शु ३, १०<sup>l</sup>.

तत्-पद-महा-मन्त्र- -न्त्रस्य  
शु २, ५.

तत्-पद-वाक्य- -क्यः पै ३, १.

तत्-पदा(द-अ)भिध- -धः  
अध्या ३०.

a) 'तज् ज्ञेयम्' इति आन. । b) 'ताग्र' इति निसा.मुपा.यनि.सु-शोधः । c) उप.कस. । d) तत्त्वब्र° इति आन. च तत्र ब्र° इति अज्या. च मुपा.यनि. सु-शोधौ (तु.निसा.) । e) तत्त्वब्र° इति निसा. च अज्या. च मुपा. यनि. सु-शोधौ । f) 'तद्रूपः' इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.) । g) वा. किवि. द्र. । h) अन्तर्ल° इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.) । i) 'तल्लये' इति अज्या. । j) 'दम्' इति निसा.मुपा.यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) ।

तत्-पदा(द-अ)र्थ- -र्थः त्रिता  
१, १९; रार ५, १२; ससा १,  
३७; -थात् ससा १, ३७.

तत्पदार्थार्थ(अ)वभासक-  
-कम् सर १, १.

तत्-पद्म-कर्णिका- -कायाम्  
त्रिवि ५, १४; ६, १९; २०.

तत्-पद्म-दल- -लेषु त्रिवि ७,  
३०.

१ तत्-पर<sup>a</sup>- -रात् रशिसं १८<sup>c</sup>;  
स ३७८: ९; १०.

२ तत्-पर, रा<sup>b</sup>- -रः ता२, १; ४;  
३, ८; गी ४, ३९; -रम् गोउ ३४;  
-राः श्वे १, ७; भव १, ४४; २, ६;

विद्या ४.

तात्पर्य- -यम् नापू ५, ४१.  
१ तत्-परम- -मम् यो २, २०<sup>c</sup>.

तत्-परागू-अ-व्यावृत्ति- -त्तिम्  
त्रिता १, ३९.

तत्-परा(र-अ)यण- -णाः नाप  
९, ६; गी ५, १७.

तत्-परिभाषा- -षया त्रिता १,  
१७.

तत्<sup>d</sup>-पर्यङ्क-समासी(न>)ना-  
-नाम् षो २.

तत्-पर्वत- -ते सी २०.

तत्-पल-संख्यान- -नम् शि  
६, २४२; २५२; २६८.

तत्-पादुका-निमज्जन- -नम्  
भा ४०.

तत्-पादर्व- -द्वे राधा १, २२<sup>३</sup>;  
२३<sup>४</sup>; २४<sup>३</sup>; २५<sup>४</sup>; रापू ४, ४२;  
शां १, ७, ५२.

तत्-पीठ- -ठम् सौ १, ३.

तत्पीठ-कर्णिका- -कायाम्  
सौ १, २<sup>०</sup>.

तत्-पुच्छ- -च्छे अच २.

तत्-पुत्र- -त्रेषु पै ४, ८.

तत्-पुरतस्(>) रार ३, १.

तत्-पुरुष- -षः नापू १, ११;  
पं १; सिशि ३८२: १३; -षम्

पं १०; -षात् वृजा १, १; सिशि  
३८१: ८; -षाय त्रिवि ७, ४३९<sup>f</sup>;

मना १, ५९<sup>६</sup>; ६९<sup>७</sup>; २, २०<sup>६</sup>;  
व ४६२: २३९<sup>f</sup>; ४६३: १९<sup>f</sup>;

२९<sup>f</sup>; वउ२, ८९<sup>f</sup>; शु २, ५; -षेण  
वृजा ३, ३१; ४, १; रुजा १, २१.

तत्पुरुषे(ष-ई)शाना(न-अ)-  
घोर-सद्योजात-वामदेव-

-वेभ्यः शु २, ५.

तत्-यूजन- -नम् मं १, ३, ५.  
तत्-पूर्वक-

तत्पूर्विका- -का सांका  
३०.

तत्पूर्वक-त्व- -त्वात् ब्रसू २,  
४, ४.

तत्-प्रकार- -रः जावा १४.  
तत्-प्रकाशित-द्वार- -रः ब्रसू

४, २, १७.  
तत्-प्रचोदित- -तौ शि ७,  
११०.

तत्-प्रतिबिम्बित- -तम् पै १,  
५; ७; १२; १४.

तत्-प्रतिषेधा(ध-अ)र्थ- -र्थम्  
योसू १, ३२.

तत्-प्रतीकार-चेष्टन- -नात्  
सांसू १, ३.

तत्-प्रत्यक्ष-बाध- -धात् सांसू  
१, १४७.

तत्-प्रत्यय-लक्ष्य- -क्ष्याणि मं  
३, १, ३.

तत्-प्रथमा(म-आ)वरण- -णे  
राधा २, ३.

तत्-प्रथिति- -तेः ब्रसू ४, ३, १.  
तत्-प्रदान- -नात् गोच ६९: २.

तत्प्रदान-फल- -लम् शि ६,

२५५.

तत्-प्रधान-

तत्प्रधान-त्व- -त्वात् ब्रसू  
३, २, १४.

तत्-प्रभु- -भोः योसू ४, १७.

तत्-प्रमाणक- -के वृजा ५, १४.

तत्-प्रमार्जन-मात्र- -त्रम् अज  
४, ५६.

तत्-प्रयोग-कल्प- -ल्पः मैत्रि  
६, १८.

तत्-प्रविभाग-संयम- -मात्  
योसू ३, १७.

तत्-प्रश्न- -श्नेन सार २४३: ८.

तत्-प्रसक्त- -क्तम् नाप ५, १.

तत्-प्रसाद- -दात् गी १८, ६२.

तत्प्रसाद-तस्(>) पित्र २, ४  
तत्-प्रसूति-कुल- -लेषु शि ६,  
२०१.

तत्-प्राक्-श्रुति- -तेः ब्रसू २, ४, ३

तत्-प्राज्ञ- -ज्ञः वरा ४, १<sup>४</sup>.

तत्-प्राण-योजन- -नम् रार  
५, ५.

तत्-प्राप्ति- -सये भव १, ३२;  
-सिः त्रिवा२, १४५; -सौ शां १, १.

तत्प्राप्ति-कारण- -णम् भव  
३, ६.

तत्प्राप्ति-हेतु-ज्ञान- -नम्  
भव १, ३२.

तत्-प्रीति- -लै रार २, ३६.

तत्प्रीत्य(ति-अ)र्थ- -र्थं सर  
१, ४.

तत्-फणा-मण्डलो(ल-उ)द-  
चिंद-मणि-द्योतित-विग्रह-  
-हम् त्रिवि ७, ५०.

तत्-फल- -लम् अज १, ४०;  
शि ६, १७७; २६८.

तत्फल-विलक्षण-पात्र- -शः  
मैत्रि ६, ३०.

a) तस. । b) वस. । c) मुपा. ? 'तत्-परं पं' इति श्लोचः द्र. । d) पूप. = तत्र । e) °ठं कर्णि° इति  
अज्या. । f) तैआ १०, ४६, १ । g) तैआ १०, १, ५<sup>१</sup> । h) तैआ १०, १, ६<sup>१</sup> । i) तैआ १०, १, ५ । j) तैआ १०, १, ६ ।



तत्फल-श्रुति- -तिः वृजा  
१, १.  
तत्फल-संख्यान- -नम् शि  
६, ११; ८२.  
तत्-संयम- -मात् योसू ३, २३.  
तत्-संयोग- -गात् चक्र १२;  
सांका २०.  
तत्-सकाश- -शात् सार २७१;  
१७.  
तत्-संकल्पा(ल्प-अ)नुसारि-  
(न>)णी- -णी त्रिवि ४, १३.  
तत्-सदृश- -शम् शि ६, २८२.  
तत्-संधि- -धिषु रापू ४, ४९.  
तत्-संधि-स्थान- -नेषु त्रिवि  
७, ४३.  
तत्-संनिधान- -नात् सांसू १,  
९६.  
तत्-संनिधि- -धौ सि ६, २९;  
योसू २, ३५.  
तत्-सम, मा- -मः श्वे ६, ८;  
भव २, ४५; वउ ४, ४; गौ ३,  
३४; -मम् वृपू ५, १९६; वृजा  
८, ६९; -मा गुद ७; -माः वि ३१.  
तत्-सम(म-अ)न्त- -न्तात् शि  
२, १४.  
तत्-समाप्ति- -सौ शि ७, ७;  
१०; २५.  
तत्-समीप-  
तत्समीप-तत्(>) शि ६,  
१५४.  
तत्-संपात- -तात् गोपू २५.  
तत्-संभूत- -तम् वृजा ३, ३.  
तत्-संमुख- -खम् शि ७, ६७.  
तत्-सह-भावा(व-अ)श्रुति-  
-तेः ब्रसू ३, ३, ६५.  
तत्-सह-शिष्ट्या(ष्टि-आ)-  
दि- -दिभ्यः ब्रसू २, ४, १०.  
तत्-सहित- -तः राधा २, ४.

तत्-साक्षिन्-  
तत्साक्षि-त्व- -त्वेन सर ३,  
२६.  
तत्-साधकतम- -मम् सांसू १,  
८७.  
तत्-साधन- -नम् सु २, २, ५०;  
-ने यो १, ८.  
तत्-साम्य- -न्यम् गौ ४, ८०.  
तत्-सायुज्य- -ज्यम् शि ६,  
२०९.  
तत्-साहित्य- -स्यात् सांसू १,  
१३५.  
तत्-सिद्धि- -द्धिः सु २, १, १;  
सांसू १, २; ८०२; ८२; ९३; १२५;  
१५३; २, ३; ६; ८; ३, ३१; ३२;  
७९; ८३; ५, ६; १०; २१; ४४;  
६, ११; ५७; ६०; -द्धिम् यो २, ८;  
-द्धेः सांसू १, १०६; १३७; २,  
२; ५, २; १०५; ११३; ६, ५१;  
ब्रसू ४, ३, ५; -द्धौ सांसू १, ८८;  
५, १४; ६, ४६; ४९; ५८; -द्धयै  
अता ४.  
तत्सिद्धि-सूचक- -कम्  
जाद ५, १२.  
तत्-सु-गन्धा(न्ध-आ)वेशि-  
(त>)ता- -ताः सार २३९; ६.  
तत्-सूक्ष्म-रेखा- -खाम् का  
११; नार १०.  
तत्-सूक्ष्म-वस्त्र- -स्त्राणाम् शि  
६, २५९.  
तत्-सृष्टि- -ष्टेः सार २७८; १६.  
तत्सृष्टि-वेष्टित- -ते सार  
२६३; १४.  
तत्सृष्ट्यु(ष्टि-उ)त्पन्न- -न्नाः  
सार २५५; १४.  
तत्-सेवा-तद्-भाव- -वेन सार  
२३५; २१.  
तत्-सेवा-पर- -रः मं ५, १, ९.

तत्-स्त्री<sup>b</sup>- -स्त्र्यम् गरु १३.  
तत्-स्थ- -स्थः मैत्रि ६, १०;  
१६; अद्वैता १७.  
तत्स्थ-तद्-अक्षनता- -ता  
योसू १, ४१.  
तत्-स्थान- -नम् सार २८०;  
१२; २८२; २२; -नस्य सार  
२८०; १३; -ने सार २८६; ३.  
तत्स्थानो(न-उ)द्भव-  
-वानाम् सार २५५; १०.  
तत्-स्पर्श- -शात् षो २२.  
तत्-स्मरण-मात्र- -त्रेण त्रिवि  
८, १४.  
तत्-स्व-भाव- -वाः हे ६.  
तत्-स्व-रूप- -पः पाशु १, १६;  
-पम् अन्न ४, १६; त्रिवि १, ३;  
६, १; ७, ३०; नाप २; निर्वा  
२९८; १; मैत्रि ७, ११९; रुजा २,  
१; -पात् सार २२०; १६.  
तत्स्वरूप-ज्ञ- -ज्ञानाम् ह९.  
तत्स्वरूप-ज्ञान- -नेन त्रिवि  
१, २.  
तत्स्वरूपज्ञाना(न-अ)-  
भाव- -वात् त्रिवि ५, ४.  
तत्स्वरूप-ध्यान-पर- -राः  
अव्य ७.  
तत्-स्वामिन्- -मिनः जाबा  
१३.  
तद्-अग्नि- -ग्नौ नाप ४, ३८.  
तद्-अग्र- -ग्रम् योचू ८०; ८१;  
-ग्रे त्रिवि ८, ५; रापू ४, ४३; सार  
३, १९.  
तद्-अङ्ग- -ङ्गानि त्रिवा २, ३४;  
-ङ्गेषु रा २७.  
तद्-कान्ति-निर्झर- -रैः  
त्रिवि ७, ५०.  
तद्-क-ता- -तया ब्रसू ३, ४,  
२७.

a) बस. गर्भितः तस. । b) पा. वा. च ? यनि. षस. [वैतु. उत्र. स्त्र्यं (=विषहरबीजम्) इति पृथक्-  
पदेनेव भाषुकः] ।

तद्-अङ्ग-रागो(ग-उ)द्धूत—  
 तद्-आविर्भाव—वेन सार  
 २४०: १६.  
 तद्-अङ्गीकार—रम् सार २७८:  
 १७.  
 तद्-अतीत,ता°—तम् अत्र २,  
 २२; -ता वरा ४, १.  
 तद्-अधस्\*—ध: राप् ४, ३४;  
 ४१; शां १, ७, ५२.  
 तद्-अधिकारिन्—री पप ४१८:  
 २९.  
 तद्-अधिगम—मे ब्रसू ४, १, १३  
 १ तद्-अधिष्ठान<sup>b</sup>—  
 तदधिष्ठाना(न-आ)श्रय—  
 -ये सांसू ३, ११.  
 २ तद्-अधिष्ठान°—न: षो १;  
 -नम् वृत् ३, १०.  
 तद्-अधीन,ना—नम् त्रिता १,  
 ५२; राधा ३, १६; -ना नाप ६,  
 १; -ना: नाप ५, १.  
 तद्-धीन-त्व—त्वात् ब्रसू १,  
 ४, ३.  
 तद्-अधीश—शेन राप् ४, २८.  
 तद्-अधो-भाग—गे रार ३, १.  
 तद्-अध्य(धि-अ)क्ष—क्षेण  
 ब्रसू ४, ३, १०.  
 तद्-अन्-अन्तर—रम् गौ १,  
 २७; नाप ५, १; मं ३, १, ३; शु  
 ३, १३; गी १८, ५५; -रयो:  
 वरा ५, २६.  
 तद्-अन्-अन्यत्व—त्वम् ब्रसू  
 २, १, १४.  
 तद्-अन्-आदर—श्रवण—  
 -गात् ब्रसू १, ३, ३४.  
 तद्-अनु<sup>d</sup> अत्र १, ५४<sup>३</sup>; काम ३;  
 ४; १३; कालि ४०१: २; ४;  
 ४०२: ९; पारा १२; मं ३, १, ३;

६; यो १, ७५; वपू २, ४; श्या २; ३.  
 तद्-अनुकूला(ल-आ)चार—  
 -रा: नाप ५, १.  
 तद्-अनुग्रह—  
 तदनुग्रह-तस्(>:) सार  
 २५५: ७.  
 तद्-अनुज्ञा—ज्ञया नाप २.  
 तद्-अनुज्ञात—त: त्रिवि ५,  
 १४; ६, १५; १९; २०; २१<sup>०</sup>; २३;  
 ७, १५.  
 तद्-अन्-उपपत्ति—त्ति: ब्रसू  
 २, १, २३.  
 तद्-अन्-उपलब्धि—ब्धि:  
 सांका ८.  
 तद्-अनुभाव—वेन सार  
 २३६: ९.  
 तद्-अनु-रूप—प: नाप ५, १;  
 -येण सार २४७: १०.  
 तद्-अनुष्ठान—नेन त्रिवि ८,  
 १४.  
 तदनुष्ठान-भेद—द्वा: नाप  
 ५, १.  
 तद्-अन्त—न्तम् ब्रवि ४३;  
 -न्ते शि ६, ४; ६५; ९३; २०५;  
 २०९; २११; २१८; ७, ९८; सुसु  
 ४; १५.  
 तदन्त-सू(ल>)ला—  
 -लायाम् पी ४२२: १५.  
 तदन्तान्त-अ)स्त्र-वह्नि-  
 जाया<sup>f</sup>—या तारा ८३: २३.  
 तद्-अन्तर(>:) अत्र २.  
 तदन्तर-गत-जीव—  
 राशि—शय: वउ ४, २४.  
 तदन्तर-गत-दिव्य-तेजो—  
 विशेष—षम् सि ४, १०.  
 तदन्तर-गत-दिव्य-विमा-  
 नो(न-उ)परि—स्थित(>)ता—

-ताम् त्रिवि ६, २३.  
 तदन्तर-गत-व्योम—रूप—  
 तदन्तर्गतव्योमरूपि-  
 (न्>)णी—णीम् त्रिता २, ६८.  
 तदन्तर-मध्य-वर्ति—मान-  
 यष्टि-रेखा—खाम् त्रिता २,  
 ३८<sup>१६</sup>.  
 तदन्तः-स्थ—स्थ: वरा ५,  
 ६०.  
 तद्-अन्तर-प्रतिपत्ति—त्तौ  
 ब्रसू ३, १, १.  
 तद्-अन्तरा<sup>d</sup> शि ७, ६८.  
 तद्-अन्तराय—य: सार  
 २८३: २.  
 तद्-अन्तरा(र-अ)र—रयो:  
 वरा ५, २५.  
 तद्-अन्तर-आल—ले त्रिवि  
 ५, १४; ७, ९; २३; सि १, १२;  
 -लेषु त्रिवि ७, ४२; शां १, ५.  
 १ तदन्तरालाद्यर्णाखिलबीज<sup>h</sup>—  
 -जम् गोपू १८<sup>i</sup>.  
 तद्-अन्तरालिका(क-अ)नला-  
 (ल-अ)स्त्र-युग—गम् गोपू १८<sup>i</sup>.  
 तद्-अन्त्य—न्त्यम् त्रिता २, ४.  
 तद्-अन्त्य-बिन्दु—पूर्ण—र्णम्  
 त्रिता ३, २९.  
 तद्-अन्त्यमयत्व-श्रुति—ते:  
 सांसू ३, १५.  
 तद्-अ(न्य>)न्या—न्ययो: सौ  
 १, १; -न्या वृजा ३, १.  
 तदन्य-क—के अघ्या ४५.  
 तद्-अपघातक—के सांका १.  
 तद्-अपलाप—प: सांसू ५, ९२.  
 तद्-अपेक्ष—  
 तदपेक्ष-त्व—त्वात् ब्रसू ३,  
 १, १०.  
 तद्-अपेक्षा—क्षया मं २, ५, ४.

a) द्विस. । b) कस. । c) बस. । d) वा. अन्य. द्र. । e) °जुगतः इति निसा. । f) उप. = फट्-स्वाहा-  
 बीजविशेष— । g) °ध्यवृत्त° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः । h) पा. १. । i) °राद्यार्ण वि° इति आन. ।  
 j) °राधि° इति निसा., °नलकास्त्र° इति अख्या. संटि. ।

तद्-अप्रतिषेध- -धः ब्रसू २,  
२, ४४.

तद्-अप्राप्ति- -सिः ब्रसू २, २,  
१८.

तद्-अभाव- -वः त्रिवि ५, ४;  
सार २४८ : १७; योसू ४, ११;  
ब्रसू २, २, १२; ३, २, ७; -वात् ते  
५, २५; सांसू १, ४३; ८०; ५, ५४;  
योसू २, २५; -वे त्रिवि २, १२;  
३, ७; पप ४१८: ७; १९<sup>१</sup>; काम  
२४<sup>३</sup>; सांसू १, ४३.

तद्भाव-तस्(>)शि ४, ६४

तद्भाव-निर्धारण- -णे ब्रसू  
१, ३, ३७.

तद्भावा(व-अ)भिलाप-  
-पात् ब्रसू १, ३, ३६.

तद्-अभावन-मात्र- -त्रेण  
महा ४, ९५.

तद्-अभिधान- -नात् ब्रसू २,  
३, १३.

तद्-अभिन्न- -न्नम् पं ३१.

तद्-अभिमान- -नम् ससा १, ५.

तद्भिमानिन्- -नी पै १,  
१४.

तद्-अभिव्यक्ति-चिह्न- -ह्वानि  
योशि २, १८.

तद्-अभेद- -देन द १५.

तद्-अभ्य(भि-अ)न्तर- -रे  
त्रिवि ५, १४; ६, १९; २०; २४;

७, १०; १३; सि १, १३; २, ११;  
५, १८.

तद्भ्यन्तर-संस्थान- -ने  
त्रिवि ५, १४; ६, १९; ७, ८; १२;

१४; १९; २२; २६; सि १, ११;  
३, ७; ६, ४.

तद्भ्यन्तर-समासीत- -नम्  
त्रिवि ६, २५; -नाः सि ५, १९.

तद्भ्यन्तर-स्थिता(त-अ)-  
त्यन्तो(त-उ)न्नत-बोधा(व-आ)-

नन्द-प्रासादा(द-अ)ग्र-स्थि-  
त-प्रणव-विमानो(न-उ)-  
परि-स्थित(>)ता- -ताम्  
त्रिवि ६, २१.

तद्-अभ्यास- -सः नाप ६, १;  
यो २, ४; -सम् अन्न ५, १०२;  
-सात् सं २, १, ७; ९; -सेन कुं  
१८; २०.

तद्भ्यास-प्रदातृ- -तारम्  
यो २, १३.

तद्भ्यास-वश- -शात् नाप  
६, १.

तद्-अभ्यास-प्रयोग-  
तद्भ्यासप्रयोग-तस्(>)  
यो २, ३.

तद्-अमार्जन-मात्र- -न्नम्  
अन्न ४, ५६.

तद्-अमृत- -तः छां १, ४, ५;  
कौ २, १४.

तद्-अयोग- -गात् सांसू १,  
४०; ब्रसू ३, ४, ४१.

तद्-अर्थ- -र्थः शु ३, १०; योसू  
२, २१; -र्थम् गौ ३, १६; भव  
१, ४२; सांसू २, ४६; गी ३, ९;

-र्थस्य सांसू ५, ४१; -र्थं सार  
२५४: १६; २८३: ३; २९२: २.

तद्-अर्थ-भावन- -नम् योसू  
१, २८.

तद्-अर्थ- -यम् गी १७, २७.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अर्थ- -कम् शि ४, ३७;  
६, २६४; -के मृ १८.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अर्थ- -कम् शि ४, ३७;  
६, २६४; -के मृ १८.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अर्थ- -कम् शि ४, ३७;  
६, २६४; -के मृ १८.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अर्थ- -कम् शि ४, ३७;  
६, २६४; -के मृ १८.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अर्थ- -कम् शि ४, ३७;  
६, २६४; -के मृ १८.

तद्-अर्थ- -धम् त्रिवा २, १२५<sup>१</sup>;  
१२६; कालि ४०३: १९; शि ५,  
२३; ६, १४; धेन शि ४, ३; ६,  
२६४.

तद्-अवगति- -तो अन्न ४, ७२.

तद्-अवधि- -धेः ब्रसू ४, १, १५.

तद्-अवसान- -ने त्रिता १, ३४;  
वरा १, १.

तद्-अवस्था- -स्थाः वरा ४, १.

तद्-अवस्था(स्था-अ)वधति-  
-तेः ब्रसू ३, ४, ५२<sup>१</sup>.

तद्-अ-संभव- -वात् सांसू १,  
४९; ६, ६१; ६२.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.

तद्-अ-सिद्धि- -द्धिः सांसू १,  
१११.



तदात्मिका-का राप्  
 ४, १; -का: सार २३२: १७.  
 तदात्मक-स्व-स्वात् रह  
 २७; ब्रसू ४, ४, ६.  
 तद्-आत्मन्-स्मना अध्या  
 ५५; -स्मा वा १७; -स्मान: गी  
 ५, १७.  
 १तद्-आदि<sup>a</sup>-दि: (१दिम्<sup>b</sup>)  
 यो २, २०.  
 २तद्-आदि<sup>c</sup>-दि<sup>d</sup> अक्ष १, ८.  
 तद्-आद्रवण-णात् ब्रसू १,  
 ३, ३४.  
 तद्-आप्त्यु(प्ति-उ)पाय-यम्  
 मं १, २, ५०.  
 तद्-आमनन-नात् ब्रसू २, ४,  
 १४.  
 तद्-आयुध-धै: राप् ४, ३९;  
 सौ १, २.  
 तद्-आराम-म: गौ २, ३८.  
 तद्-आलम्बन-शून्य-  
 तदालम्बनशून्य-ता-तया  
 त्रिवि ८, ८.  
 तद्-आला(प>)पा-पा: सार  
 २३२: १७.  
 तद्-आवेश-योग्यता-ताम्  
 सार २४४: १३.  
 तद्-आश्रय, या-य: (१यम्<sup>f</sup>)  
 योचू ११; -यम् ध्या ४७; पित्र  
 १, ६; -या वृजा ३, १.  
 तद्-आहृतो(त-उ)दुम्बर-बदर-  
 नीवार-श्यामाक-कै:  
 आश्र ३.<sup>g</sup>  
 तद्-इच्छा-च्छया सार  
 २२४: ७.  
 तद्-ईक्षण-णाय भव ३, ७.  
 तदीय<sup>h</sup>-  
 तदीय-मान-नेन त्रिवि

३, ५-७.  
 तदीया(य-आ)राधन-नम्  
 सु २९४: ८.  
 तदीयो(य-उ)पासना-नया  
 त्रिवि १, १२.  
 तद्-उक्त-कर्मन्-र्म भव १,  
 ३५.  
 तद्-उक्त-प्रकार-रेण नाप ४,  
 ३८.  
 तद्-उचित-तम् नाप १.  
 तद्-उच्छित्ति-त्ति: सांसू १,  
 ५६; ६, ७०<sup>i</sup>; -त्ते: सांसू ५, ८२.  
 तद्-उच्छिष्ट-ष्टम् सार २७३:  
 ४; -ष्टे सार २७९: १३.<sup>j</sup>  
 तद्-उज्ज्वलित-  
 तदुज्ज्वलित-स्व-स्वात्  
 सांसू १, ९९.  
 तद्-उत्तर-रात् गोपू २५.  
 तद्-उत्पत्ति-त्ति: सांसू २, २२.  
 तदुत्पत्ति-श्रुति-त्ते: सांसू  
 १, ७७.  
 तद्-उत्प(ञ>)ञा-ञे का ९;  
 नार ८.  
 तद्-उज्ज्व-व: सांसू ३, २२;  
 -वम् यो १, ६८.<sup>k</sup>  
 तद्-उपकरण-रस-सम् सार  
 २६७: ९.  
 तद्-उपगमा(म-आ)दि-  
 -दिभ्य: ब्रसू ४, २, ४.  
 तद्-उपदेश-श: सांसू १, १०२.  
 तद्-उपदेष्टृ-ष्टा अता १८;  
 द्व १५.  
 तद्-उपरागा(ग-अ)पेक्षिन्-  
 तदुपरागापेक्षि-स्व-स्वात्  
 योसू ४, १६.  
 तद्-उपरि त्रिवि ५, १४<sup>l</sup>; ६, १९;  
 २५; ७, २५; मं २, १, ५; मि ६;

यो १, ६; राधा १, ९-१२; सार  
 २७१: १२; १३; १५; १७; २२<sup>m</sup>;  
 २७२: ५; शि २, ८; सि १, १०;  
 २, १२; ३, १; ४, १; ५, १; १९;  
 ६, २८; पी ४२१: ६; सुसु ६;  
 ब्रसू १, ३, २६.  
 तद्-उपलब्धि-ब्धि: सांसू १,  
 ११०; ५, ९५; सांका ८.  
 तद्-उपाधि-  
 तदुपाधि-ता-तया सार  
 २९०: १४.  
 तद्-उपासन-नात् जाबा ६;  
 काम १.  
 तद्-उभय-निवृत्ति-स्या मं  
 २, ४, ४.  
 तद्-उभय-विलक्षण-ण:  
 त्रिवि २, १६.  
 तद्-ऊन-न: शि २, ८.  
 तद्-ऊरु-वो: सार २६५: १४.  
 तद्-ऊरु-कटि-बन्धन-ना:  
 गु २१.  
 तद्-ऊर्ध्व-ध्वम् तुअ ९.<sup>n</sup>  
 त्रिता १, ६१.  
 तद्-ऊर्ध्व-स्थ-सत्त्व-दर्शन-  
 -नात् अता १०.<sup>o</sup>  
 तद्-ऊर्ध्व-स्कन्ध-न्धे ऊ  
 ६४: ७; ८.  
 तद्-एकतानता-ता द १५.  
 तद्-एकरूप-पाभ्याम् सार  
 २४८: ९.  
 तद्-ऐक्य-क्ये योशि १, १३५.  
 तद्-ओको(कस्-अ)ग्र-ज्वलन-  
 -नम् ब्रसू ४, २, १७.  
 तद्-ओ(आ-उ)दि(त>)ता-  
 -ताम् यो २, २७.  
 तद्-गत-विशेष-ज्ञ-ज्ञ:  
 ससा १, १५.<sup>p</sup>

a) तस. । b) मुपा. यनि. शोध: द्र. । c) बस. । d) वा. किवि. द्र. । e) °दुपायम् इति निसा., अज्या. संटि. ।  
 f) मुपा. यनि. शोध: (तु. अज्या.) । g) पाभे. कृते तु. संटि. । h) छ>ईय: प्र. (पा १, १, ७४; ४, २, ११४) ।  
 i) °वाम् इति अज्या. संटि. । j) सवृध्वं इति निसा. । k) °वावि° इति आन. ।

तद्-गति-ज्ञान- -नम् योसू ३,  
२९.

तद्-गति-दर्शन- -नम् शां १,  
७, ५२; -नात् ब्रसू ३, १, १३.

तद्-गन्ध-लोलुप-भ्रमर-  
-राः सार २५३: १३.

तद्-गुण-

तद्गुण-ता- -ताम् सार  
२९२: १९.

तद्-गुण-कर्म-विभाग-भेद-  
-दात् सी १०.

तद्-गुण-सार-

तद्गुणसार-स्व- -स्वात्  
ब्रसू २, ३, २९.

तद्-गुरु- -रुः शि ७, २३.

तद्-गोमय- -येन वृजा १, १५.

तद्-ग्रह- -हः गौ २, २९.

तद्-ग्राह्य-शक्ति-स्तम्भ-  
-म्भे योसू ३, २१.

तद्-दक्ष-पार्श्व- -श्वे अत्त २  
तद्-दण्डको(क-उ)पशोभ<sup>a</sup>-  
-भम् शि ६, ११४.

तद्-दर्शन- -नम् अता ९<sup>b</sup>;  
१३; -नात् मं १, २, ६; ३, ४;

षो २१; ब्रसू १, २, ११; २, १,  
३०; ३, ३०; ३, ४, ८; २८; ५१;

४, १, १६; -ने मं २, १, ६; -नेन  
अता ६; मं ५, १, ९; सार २४३:

९; २४६: २२; षो १९.

तद्दर्शन-प्राप्ति- -प्त्या सार  
२४८: १०.

तद्दर्शन-महो(हा-उ)स्सवा-  
(व-आ)कु(ल>)ला- -लाम्

सार २७७: २१.

तद्-दर्शिन- -र्शी अता ७.

तद्-दल- -लैः वि ३२.

तद्दल-कपोल- -लेषु त्रिवि  
७, ३०; ३२; ३४; ३७-४१; सार

३, १<sup>c</sup>.

तद्दल-संधि- -धिषु त्रिवि  
७, ३१; ३३; ३५; ३६; ४४; ४६.

तद्-दशां(श-अं)श- -शेन रार  
४, ८.

तद्दशांश-तस्(>) रार ४,  
८<sup>c</sup>.

तद्-दशा(श-अं)रां(र-अं)श-  
तद्दशांश-तस्(>) त्रिता

२, ४४.

तद्-दात्- -ता शि ६, १९८.

तद्-दान- -नात् शि ६, २७९.

तद्-दिश- -दिक्षु व ४४४: ३;  
१३; २३; ४४५: ११; २१;  
४४६: १०; २०; ४४७: ८; १९;

४४८: ७; १८.

तद्-दीप- -पानाम् शि ६, ८२.

तद्दीप-संख्यान- -नम् शि  
६, ७७.

तद्-द्वय- -द्वयम् गौ ४, ६४;  
६६.

तद्-दृष्टि- -ष्टिः अता ६<sup>c</sup>; मं १,  
२, ९; -ष्टेः ब्रसू ३, ४२; ४, ३६;

-ष्ट्या नाप ५, २३; अता १२<sup>d</sup>.

तद्दृष्टि-गो-चर- -राः वरा  
४, ४३.

तद्-देह- -हम् लि ३१०: २२.

तद्-दोष- -षम् वृजा ६, ५;  
-षात् सांसू ३, ६४; -षैः शि ५,  
४२.

तद्-द्रष्टृ- -ष्ट्रे सार २७७: १०.

तद्-द्वय- -यम् कालि ४०१: ३.

तद्-द्वाद- -द्वारा अता ११;  
सांसू १, ७४.

तद्-द्वार- -रम् ध्या ६६; -रैः  
योशि १, १२१.

तद्-द्वार-भित्ति-संबद्ध- -द्धम्  
शि ४, २.

तद्-धति- -तिः सांसू ५, ११७.

तद्-धर्म- -र्माः कुं १५; -र्मैः  
आवो २०; अध्या ५२<sup>e</sup>; कुं २४.

तद्दर्म-गति-हीन- -नाः  
गोउ ३७.

तद्दर्म-दृढ-कारिन्- -रिणः  
सार २५०: ८.

तद्दर्म-व्यपदेश- -शात् ब्रसू  
१, २, १८.

तद्दर्मा(र्म-अ)न्-अभिधात-  
-तः योसू ३, ४६.

तद्दर्मा(र्म-आ)लापन- -नम्  
सार २३१: २१.

तद्दर्मा(र्म-उ)पदेश- -शात्  
ब्रसू १, १, २०.

तद्-धान- -ने सांसू १, ५७; १३३

तद्-धानि- -निः सार २८३: १.

तद्-धारण- -णात् रुजा १, १;  
४; २, १; ३; ४; ६; १०; स  
३७९: ८.

तद्-धेतु- -तुः गौ ४, ३७.

तद्धेतु-स्व- -स्वात् गौ ४, ३७.

तद्-धोम-मन्त्र- -न्त्रः भर् ३.

तद्-ध्यान- -नम् सूता १, ३६;  
सार २४६: १७; -नेन सार २६०:  
१६.

तद्धान-पर- -राः सार  
२८१: १४.

तद्धाना(न-आ)पन्न- -न्नः  
सार २८२: २३.

तद्-बहिस्(>) त्रिवि ७,  
३१-४१; ४२<sup>c</sup>; ४३-४७; ४८<sup>c</sup>;

रार ३, १<sup>c</sup>; रापू ४, ४७; ४८; ५२;  
सौ १, २; शि ६, ८५.

तद्-बाण-मूर्च्छि(त>)ता- -ता  
सार २४४: १३.

तद्-बाल-लीला- -लाम् सार  
२५४: ८.

a) षस. गर्भितः तृस. । उप. भाप. पुं. द्र. । b) °नमात्राणि इति निसा. । c) बस. (वैतु. उन्न. षस. इतीवः) । d) 'तद् दृष्ट्वा' इति निसा. । e) °र्मैः इति निसा. मुपा. यनि. शोधः (तु. अख्या.) ।

तद्-बाह्य- -ह्ये वपू २, ४.  
 तद्-बिन्दु- -न्दुः रुजा २, १९.  
 तद्-बीज- -जात् सांसू ३, ३.  
 तद्बीज-संख्यान- -नम् शि  
 ६, ९; २४.  
 तद्बीजा(ज-अ)न्तर-  
 आल- -ले रार ३, १.  
 तद्-बुद्धि- -द्धयः सार २३२:  
 १७; गी ५, १७.  
 तद्-बृ(<वृ)न्दा-वनो(न-उ)-  
 ज्ज(व>)वा- -वाम् सार  
 २५५: ९.  
 तद्-बोध- -धात् सांसू ५, ८५.  
 तद्-ब्रह्मो(ह्य-उ)पनिषत्-  
 पर<sup>१</sup>- -रम् श्वे १, १६<sup>१</sup>; ब्र १,  
 १७<sup>१</sup>.  
 तद्-भक्त- -क्ताः रापू ५, १०;  
 सार २३६: १<sup>१</sup>; -क्तानाम् सार  
 २३६: ५; शि ६, १५६; -क्ते:  
 सार २२७: १७; २३२: २०;  
 २८३: २.  
 तद्भक्त-सङ्ग- -ङ्गात् सिशि  
 ३८१: ४.  
 तद्-भक्ति- -क्त्या शि १, ९;  
 ६, २६; २५९.  
 तद्-भजन- -नम् गोपू ६; सार  
 २३५: २३; २३६: १.  
 तद्-भस्म-धारण- -णम् वृजा  
 ४, ३५; -णात् वृजा ७, २<sup>१</sup>; ४.  
 तद्-भान- -नम् महा २, ७.  
 तद्-भा-मात्र- -त्रम् महा २, ७.  
 तद्-भाव<sup>१</sup>- -वः सार २५६:  
 ११; -वम् मैत्रि ६, २७; -वे सार  
 २३८: २०; सांसू १, ४०; -वेन  
 सार २२२: ४; २३६: १३;  
 २३९: २२; २४३: ३; २४६:  
 १४; १५; २५६: २०; २७६:  
 ७; २९२: १७.

तद्भाव-गत- -तेन मुं२, २, ३.  
 तद्भाव-भावित- -तः सार  
 २६१: १६; शि १, २३; गौ८, ६.  
 तद्भाव-भावित्-  
 तद्भावभावि-त्व-  
 -त्वात् ब्रसू २, ३, १६; ३, ५४.  
 तद्भाव-साधित- -तम् यो  
 २, ७.  
 तद्भावा(व-आ)पन्न- -न्नः  
 सार २२७: १६.  
 तद्-भा(व>)वा<sup>१</sup>- -वा सार  
 २४६: २१.  
 तद्-भावित- -तः लु २०.  
 तद्-भुक्ति- -क्तेः शि ४, २१.  
 तद्-भू- -भूः पा ५, ६<sup>१</sup>.  
 तद्-भूत- -तस्य ब्रसू ३, ४, ४०.  
 तद्-भूयो-दर्शन- -नेन अता७.  
 तद्-भेद- -दः गौ ३, १८; -दम्  
 योशि ६, १६; यो ३, ७; -दे त्रिता  
 ५, १४.  
 तद्भेद-प्रतीति- -तेः सांसू ५,  
 ६१.  
 तद्-भोग- -गम् रा ४२३: १८.  
 तद्भोगा(ग-आ)विर्भावा-  
 (व-अ)न्तर्यामिन्- -मिणे सार  
 २५२: ६.  
 तद्-अंश- -शः महा ५, २.  
 तद्-युक्त- -क्तः नाद १९<sup>१</sup>;  
 -क्तस्य त्रिवा २, १३४.  
 तद्युक्त-हृदया(य-आ)द्य-  
 (दि-अ)स्त्रा(व-अ)न्त- -न्तम्  
 रार ३, १.  
 तद्-योग- -गः सांसू १, १९;  
 ३, ५५; -गम् ब्रसू १, १, १९;  
 -गात् सांसू १, १९; ५, ७१; ९०;  
 १०८; ब्रसू १, १, ३१; -गो सांसू  
 १, ५५<sup>१</sup>; ५, ७; १४; ४९; -गोन  
 सांसू १, ८०.

तद्योग-तस्(>) त्रिवा २, ६.  
 तद्योगा(ग-अ)भाव- -वे  
 अता ९.  
 तद्-रजः-पुञ्ज-व(र्ण>)-  
 र्णा- -र्णा सौ १, १<sup>१</sup>.  
 तद्-रज्जु-संख्यान- -नम् शि  
 ६, २७७.  
 तद्-रथ- -थम् शि ६, १४३;  
 १५४.  
 तद्-रहित- -तम् का ७; लिं  
 ३१०: १८.  
 तद्-रूप<sup>१</sup>- -पम् गोपू ६; सार  
 २२०: १२; २३०: १०; सांसू  
 १, १५५; -पे सार २४६: १७;  
 -पेण पं ३२.  
 तद्रूप-ता- -तया गोपू १२;  
 -ता सांसू ४, ३१; -ताम् त्रिवा  
 २, १२९.  
 तद्रूप-त्व- -त्वात् सांसू ६,  
 ३९; -त्वे सांसू ५, १९.  
 तद्रूप-दर्शन- -नेन सार  
 २६०: १९.  
 तद्रूप-प्रत्यय- -ये भव ३,  
 २९.  
 तद्रूप-वश-(ग>)गा- -गाः  
 १योट ६१.  
 तद्रूपिन्- -पिणम् सार  
 २४६: १२.  
 तद्-रूप<sup>१</sup>- -पः सुद्र ३; अता  
 २; महा ४, ४३; -पाः सार  
 २८१: १४.  
 तद्-रोम-संख्यान- -नम् शि  
 ६, २०१.  
 तद्-वक्त्र- -क्त्रम् शि ७, २०.  
 तद्-वचन- -नात् सार २४०:  
 ४; ब्रसू ३, ३, ४१.  
 तद्-वत् गौ २, १७; १८; ३,  
 ४-६; ४१; ४, ५९; मैत्रि ६, १०;

a) कस. गर्मितेन पस. गर्मितः सप्तस. (वैतु. शं. तद्, ब्रह्म, उप<sup>१</sup> इति त्रिपदीति)। b) तस.। c) बस.।  
 d) 'तद्भक्तः' इति आन.। e) 'गः' इत्यपि पाठे.। f) 'जः पूर्णव' इति अल्पा. संटि.।



१८; कै २, १; ब्रवि १३; नाद २७; ब्रवि ३८; योचू ८०; त्रिवि १, ११; २, १२; ४, १४; ५, २; मं २, १, २; रार २, ९१; पै ४, १०; महा ४, ४६; ५, ७०; योशि १, ५९; १२१; १५०; ४, २; १६; १आ ८; १६; पाशु २, ३५; १अव ७; यो १, ३४; जाद ४, ७; ३८; ४०; ७, ११; ८, २; १०, ७; वरा ५, ४; १८; मु २, २, २३; छाग २५: १९; शि ६, ४२; १६४; ७, ३; भव १, २२; सांसू ४, १९; २४; ५, ७५; ८३; सांका ४१; ५८; गी २, ७०.

तद्वत्-प्रसङ्ग<sup>a</sup>- -ज्ञात् ब्रसू २, १, ८.

तद्-वत्- -वतः ब्रसू ३, ४, ६; ४७; -वान् मं २, ४, ६; अज्ञ ३, १; सांसू १, १५१.

तद्-वश- -शात् सर ३, २२.

तद्-वस्तु-दातृ- -तुः शि ६, २५४.

तद्-वस्त्व(स्तु-अ)नुभव- -वेन मं १, १, ४.

तद्-वस्त्व-पूत-तन्तु- -न्तूनाम् शि ६, २७४.

तद्-वाक्य- -क्यम् योशि ६, ७९; गोउ ३; शि ७, ३७; -क्येन गोउ ३.

तद्-वाद- -दः सांसू ३, ११; ब्रसू २, ४, २२<sup>c</sup>; -दात् सांसू ३, ११.

तद्-वाम- -मे अक्ष २; राधा १, २१.

तद्-वासना-सहित- -तैः ससा १, ८<sup>b</sup>.

तद्-वासिन्- -सिनः सार २८६: ७.

तद्-विकल्प-परिक्षय- -यात् महा २, ३४.

तद्-विकार- -रात् नाप ४, ४.

तद्-विचेष्ट->ष्टा- -ष्टाः सार २३२: १७.

तद्-विद्- -वित् वउ ४, १;

-विद्: वृ ३, ९, २८, ७; गौ २, २७; २८; भव २, ७; ब्रसू ३, २, ४; गी १३, १.

तद्-विधि- -धे: ब्रसू ३, ४, २७.

ताद्विध्य- -ध्यम् ब्रसू ३, ३, ५२.

तद्-विपरीत- -तः मैत्रि ६, ३०<sup>c</sup>; सांका २; ११.

तद्-विपर्यया(य-अ)-भाव-

-वात् सांका १४.

तद्-विपर्यास- -सः सांका ४५.

तद्-विपाक- -कः योसू २, १३.

तद्विपाका(क-अ)नु-गु(ण->)-  
णा- -णानाम् योसू ४, ८.

तद्-वियुक्त- -क्तम् मं २, ४, ५.

तद्-विलक्षण-तद्-अभिन्न-

व्यापका(क-अ)परिच्छिन्न-

निजमूल्य(लि-आ)कार-

देवता- -ताः त्रिवि २, १२<sup>c</sup>.

तद्-विवर- -रे अक्ष २.

तद्-विवर्जित- -तः शां १, ७, १४.

तद्-विवर्त-पद- -दैः योशि ३, ९<sup>d</sup>.

तद्-विषय- -याः पै २, १२; १४; १६.

तद्-विस्मरण- -णे सांसू ४, १६.

तद्-विहीना(न-अ)न्तरिक्ष-

तद्विहीनान्तरिक्ष-वत् अता ७; मं १, २, ११.

तद्-वृत्ति- -त्तयः पै २, १२; १४; १६; योसू २, ११; -न्या

अध्या २.

तद्वृत्ति-नैश्चल्य- -त्यम् ते १, ३३.

तद्वृत्ति-रोध- -धः शां १, ७, २४<sup>e</sup>.

तद्वृत्ति-संबन्ध- -न्धात् कर ४०.

तद्-वेत्तु- -त्ता मं २, १, ४.

तद्-वैकुण्ठ-वासिन्- -सिभिः त्रिवि ६, २५.

तद्-वैराग्य- -ग्यात् योसू ३, ५१

तद्-व्यपदेश- -शः सांसू ५, ११०; ११२; ब्रसू २, ३, १६; २९;

४, ३, ९; -शात् ब्रसू १, २, ७; २, ४, १७; ४, १, १३.

तद्-व्याज- -जेन रापू ४, १८.

तद्-व्यापार- -रात् ब्रसू ३, १, १६.

तन्-नयन- -नात् वृजा ७, ८; रुजा ३, १.

तन्-नाडी- -डीम् यो १, ११.

तन्-नाद- -दात् सी २०.

तन्-नामन्- -म सं २०.

तन्नामा(म-अ)ङ्कित-वर्ष्म-  
न्- -र्ष्माणः सार २७९: ८.

तन्-नाश- -शः महा ४, ११६; -शे महा ५, १६४.

तन्-नियम- -मः ब्रसू ३, ३, ३.

तन्-निरास- -सः मं १, २, २.

तन्-निरोध- -धः सांसू ६, २९; योसू १, १२.

तन्-निरोधक- -कः अता १६; द्व १०.

तन्-निरोधन- -नम् मु २, १, १.

तन्-निर्धारणा(ण-अ)-नियम-  
-मः ब्रसू ३, ३, ४२.

तन्-निर्भागत्व<sup>f</sup>- -स्वम् सांसू ५, ८८.

a) पूष. =°झाव- इति कृत्वा षस. । b) °नारहितः इति आन. । c) °आ निज° इति निसा. ।

d) °द्वित्रिवर्णप° इति अज्या. । e) तु वृत्ति° इति अज्या. । f) संटि. पूष. रहितमपि प्राति. द्व. ।

तन्-निवृत्ति- -त्तिः ससा १,५;  
 त्रिवि ५,३; -तौ सांसू २, ३४.  
 तन्निवृत्त्यु(ति-उ)पाय- -यः  
 त्रिवि ५,४.  
 तन्-निष्ठ- -ष्ठः मै ५, १; मैत्रि  
 ६,१; -ष्ठस्य ब्रसू १,१,७; -ष्ठाः  
 स्व ६१:१०; गी ५,१७.  
 तन्-मजन- -ने सार २६४:८.  
 तन्-मण्डल- -ले सार २७४:२.  
 तन्मण्डल-लोका(क-आ)-  
 नन्द-मग्न- -ग्नाः सार २७२:  
 १८.  
 तन्मण्डलो(ल-उ)म्व-  
 -वाः सार २७९:६.  
 तन्मण्डलो(ल-उ)पासक-  
 -कः सार २७३:७; २८०:८;  
 -काः सार २७२:१८; २७३:४.  
 तन्-मत- -तेन गौ ४,६७.  
 तन्-मध्य- -ध्यम् त्रिब्रा २,  
 ५९; -ध्ये घ्या ९३,१; योचू ८;  
 मं १,२,६; २,१,२,४; ५<sup>१</sup>; त्रिवि  
 ५,१३; ६,१८; २०; २३; ७,३;  
 ७; ११; २४; ३०; ४२; म १,६<sup>२</sup>;  
 २, १८; अता ५; रार ३, १<sup>३</sup>;  
 रापू ४,४१; शां १,४<sup>२</sup>; जाद ४,  
 ५; पं ३५; महा ६,२६; वरा ५,  
 १९; सौ ३, १<sup>४</sup>; योरा ९; ११;  
 १८; ऊ ६३: १०; सार २२१:  
 ११; शि ६, १०६; १४७; सि  
 २-४, १; ५,६; व ४६६: २२.  
 तन्मध्य-कर्णिका-त्रि-कूटा-  
 (ट-आ)कार- -रम् सौ ३, १.  
 तन्मध्य-ग- -गम् योरा ७.  
 तन्-मनस्- -नः(इनाः<sup>१</sup>) योचू  
 ११४.  
 तन्-मनीषा- -षया गौ ४,१०.  
 तन्-मन्त्र- -न्त्रात् ६ २१;  
 -न्त्रेण वृजा ४, २.

तन्मन्त्र-ध्यान- -तम् सार  
 २७६: १३.  
 तन्मन्त्र-स्मरण- -णेन राउ  
 ५, २३.  
 तन्मन्त्रो(न्त्र-उ)पासन-  
 -नेन सार २४६:१४.  
 तन्-मय- -यः सुं २, २, ४; श्वे  
 ६,१७; मै ४,४,३; मैत्रि ६,३४;  
 मैत्रे १,४,५; २, २८; गौ ४,३९;  
 ५९; नाद १९<sup>५</sup>; ध्या १५; मं १,  
 २,१४; महा २,७; ५,४९-५१;  
 अन्न १, २१; ४६; २, ४०;  
 ५,१०४; रुह ३८; जाद ६, २;  
 वरा ४,१९; शा ३; दत्ता १,५;  
 -यम् महा ६,११; ब्र ३,५; पाशु  
 १,१२<sup>६</sup>; वृउ १,३; नाप ३,८५;  
 शा १७; पाशु १, २१; सार  
 २७५:२१; २८३:१२; २९०:  
 २१; -यस्य हे १३; -याः श्वे ५,६;  
 सार २८३:१०; -यौ रापू ३, १.  
 तन्मयी- -यी महा ५,  
 ११९; निर्वा २९८:१०; -यीम्  
 अक्ष १४.  
 तन्मय-ता- -तया सार  
 २९१:३; २९२:१२; -ताम् ब्रवि  
 ५९; सार २५४: १३; २८७:  
 १९; २९२: १; ९; १२; १६.  
 तन्मय-स्व- -स्वम् नाप ८,  
 ५; -स्वात् अन्न ४,६२.  
 तन्मय-विकार- -रः पाशु  
 १, १२.  
 तन्मया(य-आ)त्मक- -कम्  
 महा ५, १४.  
 तन्-मातृ-पितृ-जाया(या-अ)-  
 पत्य-वर्ग- -र्गम् मं ५, १, ९.  
 तन्-मात्र<sup>१</sup>- -त्रम् ब्रसू ३, २,  
 १६.  
 तन्मात्र-क- -कम् शि ७,

११८.

तन्मात्र-प्राप्त-मार्ग- -र्गः  
 सार २७९: १८.  
 तन्-मात्र<sup>१०</sup>- -त्रः सांका २४;  
 २५; -त्राणि सुबा २; प्रा ४, १;  
 नापू ५, १३; शि १, ११; सांका  
 ३८; -त्रेषु सुबा २.  
 तन्मात्र-पञ्चक- -कः सांका  
 २४.  
 तन्-माया- -या गोपू ५.  
 तन्माया-संवलित- -तः  
 सार २९०: ९.  
 तन्-मार्ग-  
 तन्मार्गीय- -यः सार  
 २८३:८; -याः सार २८३:१३.  
 तन्-मास- -सम् इ १३: १२;  
 १८; २०.  
 तन्-मुक्ति- -क्तौ महा ६, ७७;  
 अन्न २, १८.  
 तन्-मुख- -खम् रुजा २, १९;  
 -खे अक्ष २.  
 तन्-मुख्य- -ख्यः अव्य १५.  
 तन्-मुद्रा(द्रा-आ)रूढ-ज्ञानि-  
 निवास- -सात् अता १२.  
 तन्-मूर्ति-मन्त्र- -न्त्रैः शि २,  
 २५.  
 तन्-मूल<sup>१</sup>- -लेन कालि ४०१:  
 १२.  
 तन्मूल-नाल- -लानाम् शि  
 ६, ८६.  
 तन्-मूल(ल>)ला<sup>१</sup>- -लाः त्रिब्रा  
 २, ७५.  
 तल्-लक्षण- -णम् मं ३, १, १;  
 शि २, २२.  
 तल्लक्षणा(ण-अ)र्थो(र्थ-उ)-  
 पलब्धि- -ब्धेः ब्रसू ३, ३, ३०.  
 तल्-लक्ष्य- -क्ष्यम् सुं २, २, ४;  
 मं २, १, ७; रुह ३८.

a) मुपा. यनि. शोधः द्र. (तु. अ. व्या.) । b) 'तन्मनासक्तः' इति आन. । c) 'ययज्ञः' इति निसा. ।  
 d) तस. । e) वस. ।

तल्लक्ष्यमध्यसंभूत<sup>a</sup> - तम्

शि ४, ४२.

तल्लय- -यम् मं ५, १, ३;

-यात् मं ५, १, ६.

तल्लाम- -भः सु २, १, १.

तल्लिङ्ग- -ङ्गात् वसू १, १,  
२२; २, ३, १३; १५; ४, ३, ४.

तल्लिङ्ग-लिस- -सम् वृजा  
५, ७.

तल्लीला- -लाः सार २७४:

१; -लाम् सार २५६: १०;

-लायाः सार २५७: ४.

तल्लीला-कथा- -था सार  
२५०: १.

तल्लीला-दर्शन-योग्य-

-ग्याः सार २५६: २३.

तल्लीला-दर्शन-योग्यता-

-ताम् सार २५६: ६.

तल्लीला-दर्शना(न-अ)र्थ-

-र्थम् सार २५७: १४.

तल्लीला(ला-अ)नुभव- -वः  
सार २५६: २१; -वेन सार २४६:  
१३.

तल्लीला-पाठ- -ठः सार  
२४९: १७.

तल्लीला-यो(ग्य>)ग्या-

-ग्याः सार २४९: १२.

तल्लीला-योग्यता- -तया  
सार २४९: १९.

तल्लीलो(ला-उ)पयोग्य-

-ग्याः सार २५९: ८; २८६: ४.

तल्लीलो(ला-उ)पासक-

-काः सार २३५: २०; -कानाम्  
सार २३५: २१; २५०: ३.

तल्लेप-वर्जित- -तः अज ४,  
६३.

तल्लोक- -कम् सार २५८:

६; २८०: २२; २८३: ४; ८;

-के सार २५१: ५.

तल्लोक-दर्शना(न-अ)काङ्क्ष-

-ङ्क्षः सार २७२: १६.

तल्लोक-दर्शना(न-अ)र्थ-

-र्थम् सार २६०: १६.

तल्लोक-प्राप्ति- -प्तिः सार  
२५०: १७; -सिम् सार २८७:  
२१.

तल्लोक-विस्तार- -रम् सार  
२३०: २२.

तल्लोक-सेवन- -नात् सार  
२४६: २०.

तल्लोक-स्थिति- -तिम् सार  
२५८: ५.

ता<sup>b</sup>-

ता-दृश- -दृक् क २, १, १५; छां  
५, २४, १; महा ४, ६५; नाप ५, १.

तादृक्-त्व- -त्वम् शु ३, ५.

तादृक्-पदा(द-अ)र्था-

(र्थ-अ)प्रतीति- -तेः सांसू १,  
२४.

तादृग्-गुण-गत- -तम् महा  
५, १५०; १५१.

तादृग्-रूप- -पः सु २, २, ५९

तादृग्-व्योम-समान- -नः  
अता ७.

ता-दृश- -शः पाशु २, ४०; सार  
२३८: १४; -शम् सी ३३; भ २,

१५; सार २३८: १४; भव ४,  
८; -शाः महा ६, २५; -शानाम्  
स्व ६१: ३.

तादृशी- -शी महा ४,  
५४.

तादृश-परम-योगि-पूजा-

-जा अता १२.

तादृश-लीला-दृष्टि- -ष्टिम्

सार २४६: ४<sup>c</sup>.

ता-वत्- -वत्<sup>d</sup> छां १, ९, ३;  
११, ३; वृ १, ४, १७; कौ २, ५<sup>e</sup>;

३, २; गौ ४, ५५; ५६; मैत्रि ६,  
३४; ७, ११; मैत्रे २, १२; अना

३; ते १, ३८; नाद ४७; नाप ५,  
३५; योचू १४; २१; त्रिवि ३, ५;

६; ४, १२; शां १, ७, ५; महा ५,  
१६४; शि २, २; १३; ६, ४७<sup>f</sup>; व

४६४: १७९<sup>g</sup>; ४६५: ११; वपू  
२, ५; वउ ३, २६; ४०; ५६;

-वत्-वत् अज १, ४४; -वतः इ  
१३: ४; -वता वृ ४, ३, २०;

त्रिवा २, ६६; त्रिवि ३, ४; -वत्सु  
मैत्रि ६, १३; -वन्तम् त्रिवा २,

११९; -वन्ति वृजा ७, ४; ध्या  
४२; नाउ ३, १८; शि २, २१;

६, ४८; २४२; -वात् छां ३, १२,  
६९<sup>h</sup>; ८, १, ३; वृ १, ५, ११-१३;

३, ३, २; ६, ४, ३; गौ २, ४६.

तावती- -ती वृ १, ५,  
११; १२; -तीषु मैत्रि ६, १४;

-त्यः वृ १, ५, १३.

तावत्-कल्प- -कल्पान् शि ३,  
१४; ४, ४१.

तावत्-काल- -लः(ःलम्<sup>b</sup>)  
त्रिवि ३, ४.

तावत्-कोटि- -व्यः शि ४,  
३४.

तावद्-अष्टा(ष्ट-अ)-युत-

-तानि शि ६, ९.

तावद्-द्वयस- -सम् त्रिवा  
२, ९१.

तावद्-युग-सहस्र- -स्राणि  
शि ४, ३६; ६, ११; २६९.

तावद्-वर्ष-शत- -तात् शि  
६, ७७.

a) पा. १। b) तु. पा ६, ३, ९१। c) मुपा. नाउ. पदं शोध-सहकृतं सत् <आ/पद् यद्र.। d) कचित्  
वा. किवि. भवति। e) सामर्थ्यात् संख्यानम् इत्यस्य वि. द्र.। f) तैआ ४, ३९, १। g) 'एतावान्' इति श्रु १०,  
१०, ३। h) पा. १ यनि. शोधः।



तावद्-वर्ष-सहस्र-स्त्राणि  
शि ५, २४; ६, ४५; ५०; ८२; ७,  
९४.

तावन्-मात्र-त्रयं शि ५, ५.  
१स, सा- सः ई ८; के १, २; २, २;  
क १, १, २; प्र १, २; सुं १, १, १;  
मां २; तै २, १, १; ऐ १, १; छां  
१, १, ३; वृ १, २, १; श्वे १, १, ३;  
४, १२९; मैत्रि १, १; कै १,  
१३; राउ ३, ११; सा के ४, १;  
क १, २, ११; प्र ३, ८; तै २, ८,  
१; ऐ ३, १२; छां १, ३, ३; वृ १,  
२, २; कौ १, ५; मैत्रे २, ३०;  
मना २, १४९; त्रि १०.

सो(सः-अ)हम्-हम् द १५.

सोहं-भाव- -वः मं २, २,  
५; आपू ५; -वेन मैत्रे २, १;  
स्क १०.

सोहं-भावना- -ना नाप ७.

तदसंप्रदा<sup>१</sup> अद्वैता १७.

तदा<sup>२</sup> तद्-द्र.

तद्दिननित्याहंसः<sup>३</sup> पारा १२.

✓तन्, तनुते तै २, ५, १; वृ ४, ४,

४; रु २१; तनोति योशि ६, ६७;

अतनुताम् सार २६५; १९;

अतन्वन् सार २४६; ४.

ततान ह १८९.

तन्यते मन्त्रि ४; महा ४, ५०; चू ४.

९<sup>४</sup>तायते १शिसं ४; २शिसं १;

अतायत सार २५०; ४.

२तत- -तम् ते ६, १; ९; त्रिवि ६,  
१८; २०; २३; ७, ५०; महा २,  
६५; ६, ११; अन्न ५, ६५; ६६;  
यो ३, २४; बा १९; सि २, २;  
१०; ५, ११; १४; ६, १६; गी २,  
१७; ८, २२; ९, ४; ११, ३८; १८,  
४६; -ते महा ४, १२२; ६, १३;  
३२; अन्न २, २५.

१तत-म<sup>१</sup>- -मम् ऐ ३, १३.

१तनु<sup>२</sup>- -नुः महा ५, ९०; ६, ५६;  
-नोः वरा ५, ८.

तन्वी- -न्वी मना २, १३,

२९; लु ९; वा २३; शां १, ४;

नाउ १, १९; कालि ४०३; ५;

-न्वीम् लु ९.

तनु-ता- -ताम् महा ४, ११७; ५,

२९; १५२; अन्न १, ३१; वरा ४, ५.

तनु-वासन- -नम् अन्न १, ३०.

तनु-मान(स>)सी<sup>१०</sup>- -सी महा

५, २४; २९९; वरा ४, १३; ५.

तनु<sup>११</sup>- -न्तवः योशि ४, १७;

पित्र ६, ६; -न्तुः ससा १, ३४;

इ १२; ११; -न्तुना वृ २, १, २०;

मैत्रि ६, २२; व १; लु ९; ध्या

४८; योचू १२; यो २, ४५;

-न्तुभिः श्वे ६, १०; महा ४, १३३;

भव २, ४८; -न्तुम् मना १, ४९;

२, ७९९; लु २४१; -न्तुं व

३, ११; -न्तुनाम् इ ११; ६; -न्तौ

स्व ६०; ३.

तन्तु-कारण-पक्षी(क्षम-ओ)-  
घ- -घैः भव १, ८.

तन्तु-नाभ<sup>१</sup>- -भः भव २, ४८.

तन्तु-निर्मित- -तम् पत्र ३, ८.

तन्तु-पञ्जर-मध्य- (स्थ>)-

स्था- -स्था त्रिवा २, ६१.

तन्तुपञ्जरमध्यस्थ-लुति-

का- -का शां १, ४.

तन्तु-वत् पत्र २.

तन्तु-वादिन्या(नी-आ)दि-

-दयः सार २७०; १५.

तन्तु-विकार- -रेषु ससा १, ३४.

तन्तु-संख्या- -ख्या शि ६, २५९.

तन्तु(न्तु-उ)पाद्य-राग-भेद-

(श>)ज्ञा<sup>१</sup>- -ज्ञा सार २६३; ९.

त(न्त्र>)न्त्री- -न्त्रीम् महा ३, २२.

तन्त्री-नाद- -दः हं १६.

तन्वत्- -न्वताम् शां १, ७, १.

तन्वान- -नः मना २, ७९९.

तान<sup>११</sup>- -नम् त्रिवा २, ५१; ध्या

७६; योचू ४९; यो १, १५;

४९; योशि १, १०८.

तनय<sup>१२</sup>- -यः शां ३, १; या २, १५;

-यम् त्रिवि ७, ४०; -९<sup>१३</sup>याय मना

२, १; व ४६१; ११; -९<sup>१४</sup>ये श्वे ४,

२२; मना २, ५३; २शिसं २९.

२तनु, नू<sup>१५</sup>- -न्तवः मै ४, ५; मैत्रि ४, ६;

५, २; -नुः अन्न १, ५३; -नुभिः

अक्ष ४; -नुम् श्वे ५, १४; वृजा

२, १६; ४, १; पै ४, ५;

a) तैआ १०, १०, ३। b) 'संपूर्णः' इति सात.। c) 'तु' इति अख्या.। d) 'रसः' इति निसा. अख्या. च मुपा. यनि. सु-शोघौ (तु. आन.)। e) तैआ १०, १३, १। f) सषो<sup>१०</sup> इति निसा. अख्या. च मुपा. यनि. सु-शोघौ (तु. तान्त्रि.)। g) =अभेदभावनाप्रतिपादकशब्द-। h) पा. १। i) पा. १ 'तद् दिनं नित्यम् अंहसः' (पूतो भवेत्) इत्येवं शोचः द्र.। j) ऋ ३, ५३, १५। 'तनान' इति निसा. १। k) मा ३४, ४। l) स्वरूपतः संदेहः। यनि. भाष. सतः प्रप्रा. मत्वर्थे मः प्र. उलं. (पा ५, २, १०८)। मतान्तरद्वयं वैप २, ४४३ टि. द्र.। m) विप. =कृश-। n) तैआ १०, ११, २। o) 'न्वी' इति अख्या.। p) वस.। =भूमिकाविशेष-। q) सकृत् 'सा' इति निसा. मुपा. १। r) वैप १ यद्र.। s) मा ३२, १२। t) तैआ १०, ६३, १। u) 'तं तु' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोघः (तु. आन., अख्या.)। v) 'न्तुकार्येषु' इति आन.। w) 'ताणम्' इति मुपा. यनि. सु-शोघः। x) 'त्राणम्' इति निसा. संदि.। y) ऋ १, १८९, २। z) ऋ १, १४४, ८। a') नाप.। =देह-। वैप १ यद्र.।

अञ ५, १०१; शि ७, ४४; ५४; गु २३; गी ७, २१; ९, ११; -नुवः मना २, ५२९<sup>a</sup>; २शिसं २८९<sup>a</sup>; व४४३: २१९<sup>b</sup>; -९<sup>c</sup>नुवम् मना २, १; व ४६१: १७; -नुवा श्वे ३, ५९<sup>d</sup>; मना २, ७२९<sup>e</sup>; -नू: प्र २, १२; श्वे ३, ५९<sup>f</sup>; मना २, ७२९<sup>g</sup>; मै ५, ५; ६<sup>h</sup>; मैत्रि ६, ५; ६<sup>i</sup>; १३; वृजा २, १<sup>j</sup>; नाप ४, ३८; शां ३, १; गरु ११९<sup>k</sup>; नी १, ८९<sup>l</sup>; लिं ३०९: ७९<sup>m</sup>; व ४६०: ८९<sup>n</sup>; -नूनाम् मना २, १९<sup>o</sup>; व ४६१: १३९<sup>p</sup>; अरु ६९<sup>q</sup>; -९<sup>r</sup>नूभिः प्र मुं मां शां<sup>s</sup>; वृपू शां<sup>t</sup>; २, १५; अ अशि वृजा नाप सी श त्रिवि रार रापू शां पप अञ सू १आ पाशु पत्र त्रिता दे भ भा ग मवा गोपू कृ ह दत्ता गरु अबि पहें सि पित्र शां<sup>u</sup>; -नूम् क १, २, २३; मुं ३, २, ३; -नूषु लिं ३०९: ८९<sup>m</sup>; ३१०: १; २९<sup>v</sup>; -नौ वरा ५, ४७; ४९; अञ ४, ११; -नूवम् सर २, ९९<sup>w</sup>; बा १६; अरु ३९<sup>x</sup>; -नूवा नी १, ८९<sup>y</sup>.  
तन्व(नु-अ)-भाव- -वे ब्रसू ४, ४, १३.

तन्तु- ✓तन् द्र.

तन्त्र<sup>१०</sup>- -न्त्रः व ४६३: १९<sup>z</sup>; -न्त्रम् ते ५, ५३; वपू ३, १; सांका ७०.  
तन्त्र-राज- -जाय व ४६३: १९.

तन्त्री- ✓तन् द्र.

तन्द्रा<sup>११</sup>- -न्द्रा १योत १२; शां १, ४<sup>aa</sup>; योशि १, १०.

त(न्दि>)न्द्री<sup>१२</sup>- -न्द्री मै ३, ५; मैत्रि ३, ५.

तन्त्री-कर्मन्- -मै जाद ४, ३४.

तन्त्री(न्द्री-इं)रा(र-अ)घ-वेत्र<sup>१३</sup>-

तन्त्रीराघवेत्रिन्- -त्री मैत्रि ६, २८.

तन्त्यतु<sup>१४</sup>- -तु: वृ २, ५, १६९<sup>v</sup>.

तन्वत्-तन्वान- ✓तन् द्र.

✓तप्(बधा.), >तापि, तपते २प्र ३३:

१४९<sup>ww</sup>; तपति क २, ३, ३<sup>xx</sup>; प्र

२, ५; तै २, ९, १; छां १, ३, १;

३, १८, ३<sup>yy</sup>-६<sup>zz</sup>; वृ १, २, ७; ३,

१४; २, ३, २; ४, ४, २३<sup>aa</sup>; ५, १४,

३<sup>bb</sup>; ६; मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; १२;

१७; मना १, १९<sup>cc</sup>; २, १४<sup>dd</sup>; ७९<sup>ee</sup>;

७९<sup>ff</sup>; वृजा ८, ६; वृपू ५, २०; सू

१४; कुरु ३५<sup>gg</sup>; गा ८; ९<sup>hh</sup>; तपतः

वृ४, ४, २२; वउ ५, २७; तपन्ति

मैत्रि ७, १-६; तपसि महा २,

७२<sup>ii</sup>; तपामि गो ९, १९; तपतु

व४३७: १७९<sup>jj</sup>; तपन्तु महा ४,

९७<sup>kk</sup>; तपस्व-तपस्व वउ ३, ३६;

तप-तप व ४५७: ६; तपत छां

६, १६, १; तपत् पै ४, १५.

तप्यते वृ ३, ८, १०; ५, ११, १;

यो १, ७२; शि ७, १२०; कश्चु

१, १; तप्यन्ते गी १७, ५;

अतप्यत प्र १, ४; तै २, ६, १;

३, १-५, १; वृ १, २, ६; वृजा १,

१; वृपू १, २; गोच ६९: ११;

सार २५७: १२; वपू १, २;

तप्यथा: वा २२.

तेपे वपू १, ४; तपस्यामि वृ १,

५, २२.

तप्यते १संन्या १, १.

तपत्- -पता सार २५७: १; -पन्

वृपू २, ११९<sup>ll</sup>; सूता १, ९; -पन्तम्

प्र १, ८; छां २, १४, २; मै ५, ८;

मैत्रि ६, ८; अक्षि १; चा १६;

गी ११, १९.

१तपन्<sup>१५</sup>-

तपनीय<sup>१६</sup>-

तपनीय-मय- -यम् त्रिवि

६, ३.

२तपन्<sup>१७</sup>-

तपन-प्रार्थना-युक्त- -क्ता: पाशु

१, २८.

३तपन्<sup>१८</sup>-

तपन-पुत्र- -भ्र: व ४५९:

१६९<sup>mm</sup>.

तापन्<sup>१९</sup>-

तापनी(य>)या<sup>२०</sup>-

तापनीयो(य-उ)पनिषद्-

अध्यापक- -केन वृपू ५, १९.

तापनीयोपनिषदध्या-

पक-शत- -तम् वृपू ५, १९.

तपस्<sup>२१</sup>- -प: के ४, ८; प्र १, ४<sup>nn</sup>;

a) 'तन्वः' इति ऋ १, ११४, ७। b) तैआ ४, २२, १। c) 'तन्वम्' इति ऋ ८, ११, १०। d) 'तन्वा' इति मा १६, २। e) 'तन्वा' इति शौ १२, ६१, १। f) मा १६, २। g) शौ १२, ६१, १। h) मा १२, ४। i) ऋ १०, ८३, ५। j) ऋ ५, ४, ९। k) ऋ १०, १५७, ३। l) ऋ १, ८९, ८। m) ऋ १०, ५७, ६। n) ऋ ६, ७४, ३। o) ऋ १०, ७१, ४। p) ऋ १०, १५७, २। q) वैपश् यद्र.। r) तु. टि. ज्वर-> -र:। s) 'तन्वी' इति अञ्वा.। t) द्रस. गर्भितः बस.। u) =पर्जन्य-। वैपश् यद्र.। v) ऋ १, ११६, १२। w) 'तायते' इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु. गोत्रा १, १, २२)। x) तैआ १०, १, १। y) तैआ १०, १३, १<sup>oo</sup>। z) तैआ १०, ६३, १। a') 'पतति' इति निसा.। b') 'पतसि' इति अञ्वा. (तु. उग्र.)। c') ऋ ८, १८, ९। d') 'पतन्तु' इति निसा. संटि.। e') तैआ ३, १०, १, २। f') भावे कृत्। g') =सुवर्ण-। मतौ छः प्र. उसं. (पा ५, २, ५९उ.)। h') कर्तरि कृत्। =सूर्य-। i') =ऋषिविशेष-जनक- (वैतु. वैप४, यस्था. तपस्- इति पाभे.)। j') पा. १. 'ओ मन्युर्कविर्म' इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु. ऋ २, १०, ८३; ८४)। k') =तापिनी-। l') =तपस्या-, व्याहृतिविशेष-, माघमास-।

१५,६,४; सुं १, १, १, २, १, ७;  
१०; तै १, १, १, २, ६, १, ३;  
१, १, २, ५, १, १; छां २, २, ३, १;  
३, १, ७, ४, ५, १, ०, १; वृ १, २, ६;  
३, ८, १, ०, ५, १, १, १; मै १, १;  
५, ६; मैत्रि १, २, ६, ६, ३, ५; मैत्रे  
१, १; मना २, १, ०, १, ३, ५, ७;  
७, ८, १, ०, ५, १, १, १; अशि  
६, १, ६; १, ७; वृजा १, १, १; वृपू  
१, २, ३; नि १, ०; ४, ६, ४, ८; ते ५,  
५, २; ६, २, ७; नाद ४; नाप ५,  
३, ३; त्रिआ २, ३, ३; त्रिवि १, १;  
७, ४, ४, ७; रार १, ६; शां १, २;  
३, १; महा १, १; ४, १, ०, १;  
१, संन्या १, १; २, संन्या १, ५, ६;  
कुं २, १; रुक् ३, ३; भ २, १, ६;  
जाद २, १, ३, ४; गोड १, ७; वरा  
१, १; ५, १, ३; नाड १, १, २; का  
२; इ १, १, १, ६; गोच ६, ९, १, १;  
राधा १, ३; लां २, १, ३, १, ०; सार  
२, ४, ३; १, २; २, ५, ५; २, ०; २, ३;  
२, ५, ६; ३, ४, ९; २, ५, ७; ७, ८;  
१, २; २, ६, ०; १, ४, १, ६; २, ७, ५, ३;  
१, १; २, ७, ६; १, २; १, ६; १, ७; वटु  
३, १, ८; १; शि ५, १; गार ४, ०, ५;  
१, २; १, ६; गु ३, ०; चक १, २; भव  
३, २, १; ५, ८; २, १; पित्र ४, ९;  
कथु १, १; वपू १, २, ३, ४; वड १,  
२, ५; ३, ३, ७; गी ७, ९; १, ०, ५;  
१, ६, १; १, ७, ५; ७; १, ४-१, ९;  
२, ८; १, ८, ५; ४, २; पसः क २,  
१, ६; सुं ३, २, ४; मना १, १, ३, ५;  
२, ७, ९, ५; २, ३, ३, ३, ९; नार ९, ५, ७;  
योसू २, ४, ३; पसा प्र १, २; १, ०;  
५, ३; सुं १, १, ८; ३, १, ५, ८; तै

३, २, ५, १; वृ १, ५, १, २, ३; ४,  
४, २, २; ६, २, १, ६; श्वे १, १, ५;  
कौ १, २, ३; मै ४, ३; मैत्रि ४, ३;  
४, ३; मैत्रे १, ४, २; मना २, १, ५, १;  
२, ७, ९, ५, ७; ब्र ३, १, ०; अशि ५,  
२, ०; सुबा ३; शां ३, १; अव्य  
१; पाशु २, ३, २; दे ४, ५, १; वरा  
२, २; २, ३, ३, ३, १, ०; बा ४; सार  
२, २, ७; ४; २, ५, ५; २, ०; २, ५, ६;  
१, १; वटु ३, १, ७; १, ०; व ४, ६, ०;  
२, ५, ७; ३, ५, ७; ४, ६, १; ८, ५, १; ४, ६, ५;  
२, ०, ५, १; गी १, १, ५, ३; पसाम्  
मना २, ७, ९, ५, ७; पा ७, १; पसि  
मना २, ७, ८, ५, ७; ७, ९, ५, ७; महा २,  
७, २; वड ३, ३, ८; गी १, ७, २, ७;  
पसु गी ८, २, ८; पसि क १,  
२, १, ५; शि ७, ४, ०; गु ३, ९;  
पोभिः सुबा ९; शि ५, ३, ८;  
गी १, १, ४, ८.  
तपः-क्षीण-दोष- -वाः गु ३, ५.  
तपः-प्रभाव- -वात् श्वे ६, २, १.  
तपः-प्रभृति- -तिना महा २, ४, २  
तपः-श्रद्धा- -द्धे सुं १, २, १, १.  
तपस्य, तपस्यसि गी २, २, ७.  
तपस्यत्- -स्यन्तम् वपू १, ४.  
तपस्-विन्- -विनः सार  
२, ७, ८; २, १; विनाम् इ १, २, २;  
रु ७; शि ५, ४, ०; विभिः रु  
८; विभ्यः गी ६, ४, ६; विषु  
महा ४, ३, ४; गी ७, ९; वी मै  
४, ३; मैत्रि ४, ३; पप ४, २, ०, ८.  
तपः-संतोषा(ष-आ)स्तिक्य-  
दाने(न-ई)श्वरपूजन-सिद्धान्त-  
श्रवण-ही-मति-जप-व्रत-  
तानि शां १, २, १, ५.

तपः-स्वाध्याये(य-ई)श्वरप्रणि-  
धान- -नानि योसू २, १.  
तपो-दम- -मैः महा ४, ४.  
तपो-धन- -०न जाद १, ७.  
तपो(पस्-अ)धिक- -कः शि १,  
३, ६.  
तपो-नित्य- -त्यः तै १, १, १.  
तपो-निधि- -धिम् पा ७, १.  
तपो-निष्ठ- -ष्ठः त्रिवि १, ४.  
तपो-निष्ठा-  
तपोनिष्ठा-पर- -राः नाप १.  
तपो-बल- -लेन हे ३.  
तपो-यज्ञ- -ज्ञाः गी ४, २, ८.  
तपो-लोक- -कः नाप ५, १;  
१, संन्या २, ५, ९; गार ४, ०, ५, १, ६;  
कम् वृजा ८, ४; वृपू ५, १, ६;  
नाद १, ६; वड ५, १, २; काः,  
केषु सुबा १, ०.  
तपोलोक-ज्ञान- -नम् शां  
१, ७, ५, २.  
तपोलोक-सत्यलोक- -कौ  
गु १, २.  
तपो-वन- -नम् शां १, ५.  
तपो-विजित-चित्त- -त्तः लु  
२, १, २.  
तपो-विहीन- -नाय त्रिवि ८, २, ०  
१ तापस- -सः वृ ४, ३, २, २, २; ब्र  
२; त्रिता ५, १; -साः कृ ९-सैः  
जाद ४, ४, ४, ५.  
तापसा(स-आ)श्रम-विश्रा-  
न्त- -न्तैः अक्षि १, ६.  
तापसो(स-उ)त्तम- -०म  
जाद ४, ४, ४.  
२ ताप(सं>)सी- -स्याम् वड  
६, ४, ३.

अ) तैआ १०, ८, १. b) तैआ १०, २, ७, १. c) तैआ १०, ६, २, १. d) तैआ १०, ६, ३, १. e) तैआ १०, ६, ४, १. f) अ १०, १, १, १. g) 'तमसा' इति तैआ १०, ६, ३, १. h) खि ५, ८, ७, ६. i) ०सः इति वे. j) तैआ १०, २, १. k) तैआ १०, ६, ३, १. l) खि १०, १, २, ७, १, २. m) अ १०, ८, ३, २. n) अ १०, ८, ३, ३. o) तैआ १०, ६, ३, १. p) तैआ १०, ६, २, १. q) ०षः ब्र इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोषः (तु. अज्या.)। r) ततः विदितचि इति आन.। s) तु. पा ५, २, १, ०. t) भवार्थेऽण् प्र. (पा ४, ३, ५, ३)।



तस,सा- -सः छां ४, १०, २, ४;  
महा ३, ६; -सम् छां ६, १६, १;  
२; यो ३, २३; गी १७, १७, २८;  
-सस्य वृ १, २, २, ६; -सा मैत्रि  
६, २६<sup>१</sup>।  
तस-काञ्चन-संकाश-ज्यो-  
तिर-मयूख- -खाः(खल्)  
अता ६.  
तस-कार्तस्वर-कुण्डल-द्वय-  
विराजित-मुखा(ख-अ)भो-  
(ज>)जा- -जाम् पी ४२१:४.  
तस-कार्तस्वरा(र-आभ>)-  
भा- -भा सौ १, २.  
तस-चामीकरा(र-आ)कार-  
-रम् ध्या ४६.  
तस-चामीकरा(र-आ)भास-  
-सम् योचू ९.  
तस-जाम्बूनद-प्रभ- -भम्  
त्रिभा २, ५६; त्रिवि ६, ३; शां  
१, ४; जाद ४, १.  
तस-तनू- -नू: सु २९४:२.  
तस-पराका(क-आ)घ- -घै:  
राउ ५, २१.  
तस-लोह-शलाका- -कया  
योशि १, ११३.  
तस-सुवर्ण-परिधि- -धीनि  
सार २४०:१०.  
तस-हाटका(क-आ)भर(ण>)-  
णा- -णा सार २४४:९.  
तसा(स-अ)यः-पिण्ड-  
तसायःपिण्ड-वत् त्रिभा १, २.  
तप्त्वा प्र १, ४; तै २, ६, १; ३, १-५,  
१; मै ५, ६; मैत्रि ६, ६; वृजा

१, १; वृपू १, २; गोउ १७.  
तप्य- -प्यः पित्र २, ३.  
तप्यमान,ना- -नात् शां ३, १;  
-नानाम् छां ४, १७, १, २; -नाय  
शां ३, १; -नाया: छां ४, १७, ३.  
ताप- -प: ते ४, २६.  
ताप-त्रय- -यम् सुद्र ४; ते ५,  
९७.  
तापत्रय-प्रपीडा- -डाम् शि  
१, ६.  
तापत्रय-रूप- -प: ते ३, ४६.  
तापत्रय-विवर्जन- -नात् ते  
५, १८.  
तापत्रय-समुद्भूत-जन्म-  
मृत्यु-जरा(रा-आ)दि- -दिभि:  
श १४.  
तापत्रया(य-अ)तीत- -तम्  
सुद्र ४.  
तापा(प-अ)पहारि(न>)णी-  
-णीम् दे १०.  
तापित- -त: यो ३, ३०.  
तापि(न>)नी- -नी रापू ४, ६२०.  
ताप्य-  
ताप्य-तापक-रूप- -पेण कर  
३६.  
तम्  
तमन- -न: बा २४; -नम् बा १.  
तमस्- -म: ई २<sup>१</sup>; १२<sup>२</sup>; छां १,  
३, १; वृ १, ३, २८; ३, ७, १३<sup>३</sup>;  
९, १४; ४, ४, १०<sup>४</sup>; मै २, २; ४,  
५<sup>५</sup>; मैत्रि २, २; ५, २; ६, २४;  
मैत्रे १, ४, १०; जा ४; वृउ २,  
८; काला १६; सुबा १; २; ते १,

४१; अशि ६, १३; नाप ३, ७७;  
आबो २६<sup>६</sup>; २८<sup>७</sup>; रापू ५, ४;  
महा २, ६५; ४, २९; पप ४१८:  
१०; अव्य ५; ए ८; अल ४,  
२२; अध्या २४; दे४९<sup>८</sup>; त्रि४;  
यो ३, २४; मवा ३१<sup>९</sup>; ४; गोउ  
५५; या १, १; वरा ३, ११<sup>१</sup>;  
जाबा २४; सु २, २, ४६; आपे  
७: १९; पा १०, ४; ६; वड  
३१७:२०; गु६१; भव ३, १०;  
वउ ३, १८; ४, ७; सांका १३;  
गी १०, ११; १४, ५; ८-१०;  
१७, १; -मस: छां १, ३, १; ३,  
१७, ७९<sup>१</sup>; ७, २६, २; वृ १, ३,  
२८<sup>२</sup>; ३, ७, १३; धे ३, ८९<sup>३</sup>; मै  
४, ५<sup>४</sup>; मैत्रि ६, २४; ३०; कै १,  
७; मना १, १९<sup>५</sup>; अशि ६, १३;  
वृउ २, २; ३, ११; सुबा १; ते  
६, ७९; ब्रवि ९६<sup>६</sup>; त्रिवि ४, ४;  
५९<sup>७</sup>; ६<sup>८</sup>; ७९<sup>९</sup>; योशि ६, २४;  
अव्य ७; अक्षि १९<sup>१</sup>; मवाट ९<sup>२</sup>;  
वरा २, १६; चा ११; पा ७, ५९<sup>३</sup>;  
१०, ६; वड ३१७:२०; रशिसं  
१०; १५९<sup>४</sup>; सांका ४८; गी ८,  
९; १३, १७; १४, १६; १७;  
-मसा ई ३; वृ ४, ४, ११<sup>५</sup>; वरा  
२, ६२; १आ १५; अक्षि १५<sup>६</sup>;  
गी १८, ३२; -मसि वृ ३, ७, १३;  
अशि ४, १३; ब्रवि १५; सुबा २;  
मन्त्रि २; मं २, ३, ३; महा ५,  
१९; त्रिता ५, १५; वड ३१६:  
५; चू २; अक्षि १५; गी १४, १३;  
१५; -मसे अक्षि १; चा १०.

a) विच्छेदः ? तसो(स-उ)र्वि,र्वी- इत्यस्य कस. अपि सुवचत्वात् । तत्र च उप. नाप. सत् गपू.  
उरु->उर्वी- इत्यतः सुवेचमिति कृत्वा गपू. सस्थ. निर्देशे यनि. अतु शोधः सुवचः द्र. । एवं °र्वि (°र्विः) इत्येवमपि  
शोधः स्यात् (वैतु. राती. °उर्वी- इत्येवं बस. उप. इति कृत्वा °र्वि-सर्पिस्- इति बस. गर्भितः कस. इति) ।  
b) पा. ? यनि. शोधः द्र. । c) =बकार-बीजाक्षर- । 'तापनी' इति निसा., 'तपिनी' इति अख्या. । d) कर्तरि कृत् ।  
e) 'तथा' इति अख्या. । f) सकृत् 'तथा' इति अख्या. । g) 'नुमः' इति खि १०, १२७, १२ । h) तु. सस्थ. टि.  
अ-विद्या->या । i) ऋ १, ५०, १० । j) मा ३१, १८ । k) तैआ १०, १, १ । l) माशत्रा १४, ४, १, ३२ ।  
m) तैआ ३, १२, ७ । n) मा ४०, ३ । o) सः इति अख्या. संटि. ।

तामस-०स वउ ४, ४६;  
-सः मै ४, ५; मैत्रि ५, २; योचु  
७२; ७६; शारी ५; वउ ४, १२;  
२६; सांका २५; गी १८, ७; २८;  
-सम् शारी ५; सांका २३; गी  
१७, १३; १९; २२; १८, २२;  
२५; ३९; -सस्य शारी ४; -साः  
गी ७, १२; १४, १८; १७, ४;  
-तानि मैत्रि ३, ५.

तामसी- सी गीउ  
६३; ६५; वउ ४, १३; गी १७, २;  
१८, ३२; ३५; -स्याः वउ ४, १३.  
तामस-प्रिय- -यम् गी  
१७, १०.

तामस-राजसा(स-आ)-  
तिम(१२<sup>५</sup>)क- -काः पाशु १,  
१०<sup>५</sup>.

तामसा(स-अ)न्वित-  
-तः मै ३, ५.  
तमः-पार- -रे योशि ३, २२.  
तमः-पिण्ड- -ण्डम् त्रिवा २, ८.  
तमश्-शब्द- -ऋदेन त्रिवि ४, ८.  
तमिस्-  
तामिस्<sup>१</sup>- -स्त्रः भव ३, १०;  
सांका ४८.

तमो-गुण- -णम् पै १, १७.  
तमो-दश्- -दक् मवा ३.  
तमो(मस्-उ)दि(क>)का<sup>१</sup>-  
-का पै १, १३.  
तमो-द्वार- -रैः गी १६, २२.  
तमो-धर्म-रत- -ताः सार  
२३५ : ६.  
तमो-निवृत्ति- -त्तिः मं १, २, ६.  
तमो(मस्-अ)पहारि(न्>)णी<sup>१</sup>-  
-णी गार ४०७ : १९.

तमो(मस्-अ)भिभूत- -तः क  
१, १३.

तमो-माया(या-आ)त्मक- -कः  
पाशु १, १०.

तमो-मिश्र- -श्रम् पं ८.

तमो-रूप, पा- -पः शां १, ४;  
-पा वउ ९, ४.

तमो-लक्षण- -णम् मैत्रि ६, २४.

तमो-विशाल, ला- -लः सांका  
५४; -ला सांसू ३, ४९.

तर-

तर-तम<sup>१</sup>-

तारतम्य- -म्येन वरा ३, १६.

तारतम्य-क्रम- -मेण कर  
२९.

तरङ्ग- -ङ्गः आवो १५; -ङ्गाणाम् महा  
३, ११.

तरङ्ग-कलोल- -लैः योशि ४, १७.

तरङ्ग-माला- -लया ते ६, ८३.

तरङ्ग-स्थ- -स्थम् आवो १५.

तरङ्गि(न्>)णी- -णी सार २६९ : ८.

तरणि<sup>१</sup>-

तरणि-वत् सांसू ३, १३.

तरस्<sup>१</sup>- -रसा पारा १३.

१९<sup>१</sup>तरसे मना २, १; व ४६१ : ९;  
४६५ : २१.

तरु<sup>१</sup>- -रवः महा ३, १३; -रुम् भव १,  
२२; -रुणाम् मै १, ७; मैत्रे १, २<sup>१</sup>.

तरु-गुरुम-लता(ता-आ, दि- -दयः  
नापू ५, २३.

तरु-पुष्प- -ष्पाणि सार २७१ : १.

तरु-मूल- -ले शा २१.

तरुण<sup>१</sup>- -णः योशि १, १०८.

तरुण-दिवा-करा(र-आ)भ-  
-भम् काम ६.

तरुणा(ण-आ)दित्य-संनिभ- -भम्  
१ योत ९३.

तरुणा(ण-अ)र्क-वर्ण- -र्णम् ए ४.

तरुत्र<sup>१</sup>- -त्रः वृषू ३, ४९<sup>३</sup>.

१<sup>१</sup>तरुद्रः<sup>१</sup> वपू २, २९<sup>०</sup>.

✓तर्क(बधा.<sup>१</sup>)

तर्क<sup>१</sup>- -र्कः मैत्रि ६, १८; अना ६;

१७; -र्कम् नाप ५, १; -र्कान्

नाप ५, २१; -र्केण क १, २, ९;

मैत्रि ६, २०; -र्कैः योशि १, ६१.

तर्क-तस्(>) अत्र ४, ३४;

रुह ४६.

तर्क-प्रमाण- -णाभ्याम् पाशु

२, १६; १७.

तर्का(र्क-अ)प्रतिष्ठान- -नात्

ब्रसू २, १, ११.

तर्का(र्क-आ)गम-पुराण-काव्या-

(व्य-आ)दि-वाग्-ईश्वर-

-रः तारा ८३ : ५.

✓तर्ज

तर्ज(न>)नी- नीभ्याम् शु १,

१८; २, ५<sup>१</sup>; यो १, ३६; जाद ६,

३४; गरु ३; लां २१३ : ६; व

४२६ : ६; -न्या वा १४; गोच

६६ : १४; -न्योः त्रिता ३, ५;

-न्यौ त्रिता ३, ८; ११.

तर्जनी-मध्यमा(मा-अ)नामि-

का- -काभिः भ १, ६

तर्जन्य(नी-अ)ग्रो(ग्र-उ)न्मी-

लित- -कर्ण-रन्ध्र-द्वय- -ये मं

१, २, ७; अता ५.

तर्जन्या(नी-आ)क्रा(न्त>)न्ता-

-न्ते त्रिता ३, १०.

तर्तव्य- , तर्तुम् ✓तृ द्र.

तर्पण- , तर्पणीय- , तर्पयत्- ✓तृ द्र.

a) पा. १ यनि. शोधः । b) °जससावि° इति अख्या. संटि. । c) पा ५, २, ११४ । d) संधिरार्षः द. ।  
e) अनुकृत आतिशायनिकः प्र. । f) अनुकृतयोद् आतिशायनिकयोः प्र. द्वस. । g) व्यु. ? = ऊर्मि- । h) = सूर्य- ।  
वैप १ यद. । i) वैप १ यद. । j) ✓तृ>तर, मे इति द्विपदः शोधः (तु. वैप १ यस्था.) । खि १०, १२७, १२ ।  
k) व्यु. ? । l) 'वातरञ्जनाम्' इति अख्या. । m) श्रु ६, १७, २ । n) पा. ? नापू. वर्णविकारमात्रविशिष्टः (तु. संटि.,  
पक्षे नादी.) । o) 'तुरुत्रः' इति श्रु ६, १७, २ । p) तु. पामाधा. ।

१तर्य-

तर्यार्थ-अभिधातिन्- -तिनः मैत्रि  
७, १०.

तर्हि तद्- द्र.

तल

तल- -लम् राधा १, ३; गु १९;  
-लभ्याम् त्रिधा २, ४७; शां १,  
३, १०.

तला(ल-अ-तल- -लम् राधा  
१, ४; गु १९.

तलातल-लोक-ज्ञान- -नम्  
शां १, ७, ५२.

तल्प- -लम् छां ५, १०, ९; -ल्ये व  
४६४: १६९<sup>d</sup>.

तलो-(ज>)जा- -जे व ४६४:  
१६९<sup>d</sup>.

तव- युष्मद्- द्र.

तवस्-, तविष-, तवीयस्-, तव्यस्-  
तु द्र.

तस्कर- -रा: मैत्रि ७, ८.

ता- तद्- द्र.

ताडन-, °डित-, °ड्यमान- / तड् द्र.

तात- -०त छां ४, ४, २; वृ ६, २, ४;  
महा ६, ३२; सार २५८: ५; गी  
६, ४०; -त: महा ५, १.

तात्कालिक-, °त्पर्य-, °दृश्-,  
°दृश-, °द्विष्य- तद्- द्र.

तान- / तन् द्र.

तान्तान्त- १त द्र.

ताप-, °पन-, °पनीय-, १, २°पस-,  
°पित-, °पिनी-, °प्य- / तप् द्र.

तामस-, °मिह- / तम् द्र.

ताम्बूल- -लम् भा ३७.

ताम्बूल-पूरित-सु(ख>)स्त्री-

-लीम् रा ४२४: २०.

ताम्बूल-योग-सिद्धय(दि-अ)र्थ-  
-र्थम् शि ६, ४९.

ताम्बूला(ल-आ)दि- -दय: सार  
२२५: २३.

ताम्बूला(ल-आ)घ- -घा: सार २८२:  
१४.

ताम्बूला(ल-अ)न्त- -न्ते वउ ६, २५

ताम्बूला(ल-अ)भ्यञ्जन- -ने १संन्या  
२, ८६.

ताम्र, त्रा- -त्र: नी १, ९९<sup>h</sup>; -त्रम् अक्ष  
२<sup>१</sup>; शि ६, १२३; सिशि ३८२:

२१; -त्रस्य महा ५, १८५; -त्रा

लु ८; -त्राम् शि ६, २६७; -त्रे

वृजा ३, ६; भ १, ४.

ताम्र-क्रांस्य-पात्र- -त्राणि शि ६,  
२६६.

ताम्र-कुम्भ-कटाहा(ह-आ)घ-  
-घम् शि ६, २५०.

ताम्र-मृच्-छेल-दारु-(ज>)जा-  
-जाम् शि ६, १२०.

ताम्रो(प्र-उ)पकरण- -णे शि ६,  
२५२.

तय

तायिन्- -यिन: गौ ४, ९९<sup>i</sup>.

१तार- / तृ द्र.

२तार, रा- -रा: ते २, १७; -रे शां  
१, ७, ५२.

२तार-क, का- -का: महा ३, ४९;  
सार २७२: १३; -के मै ५, ७<sup>k</sup>.

तारक-वत् मं २, १, १०.

तारका-जाल-लाङ्गुल- -लम्  
वउ ४, ३९.

तारा-कान्ति- -न्ति सार २४४: २१.

तारा(रा-आ)का(र>)रा- -रा सार  
२४४: १८.

तारा(रा-अ)धि-पति- -ति: वृपृ १, ८

तारा-पति- -ति: वपृ २, १.

तारा-व्यूह-ज्ञान- -नम् शां १, ७,  
५२; योसू ३, २८.

३तार- -रम् शां १, ७, १७.

३तार-क- -क: मैत्रि ६, ७;

-काम्याम् अता ९<sup>३</sup>; १०.

तार-संयम- -मात् शां १, ७, ५२.

४तार-

तारा<sup>m</sup>- -रया सूता ६, ३.

तारा-द्वय-पुटिता- -ताम् गुणो  
४२०: ५.

५तार-

तारा<sup>la</sup>- -रा तारा ८३: १<sup>३</sup>; ९<sup>१</sup>;  
६; ८४: ११<sup>१</sup>.

तारा-मनु- -नो: कालि ४०३:  
२१; रया १८.

६तार-

तारा<sup>i</sup>- -रा रुह १९.

७तार- -रम् वरा ३, १५; -रेण शि  
६, १२०.

१तारक- / तृ द्र.

२, ३तारक- ३, ४तार- द्र.

४तारक- -क: अता ९; -कम् मं १,  
२, ३; ४; ३, १<sup>३</sup>; अता ३९<sup>१</sup>;  
८<sup>३</sup>; -के अता ७; १०; ११.

तारक-प्रकाश- -शाय मं १, ३, २;  
अता १०<sup>३</sup>.

तारक-योग-मार्ग- -गेंग मं ३, १, ६.

तारक-योग-विस्फुरण- -णेन  
अता ५.

तारक-लक्ष्य- -क्ष्यम् अता ७.

तारका(क-आ)लोक-शान्ति- -न्तो  
शां १, ७ ३३.

a) पूष. १ / तृ>तरि->यनि. इति कृत्वा =(तारकतया)वेदशास्त्र- इति राती. । स्तर्य-(</तृ)

=आडम्बरमन्त्र- इति वा स्यात् १। b) व्या. तु. पामाधा. । =लोक- च करतल- च। c) वैप १ यद्र. ।

d) तैआ ४, ३९, १। e) एतदादीनां पात्र. युष्मद: रु. सतां यथायथमज्ञात्मकानामवान्तराणां प्राप्ति. च निर्देश: यद्र. ।

f) व्यु. १। g) =त्रातु- वा तद्वर्ण- वा। वैप १ यद्र. । h) तैसं ४, ५, १, २। i) °पिन: इति पाभे. । j) व्यु. १

=नक्षत्र- । k) वैतु. राती. ३तारक->-क: इति पा. १। l) व्यु. १ =कनीनिका- । m) =त्रौ-बीजमन्त्रविशेष- ।

n) व्यु. १ =देवीविशेष- वा तन्नामात्मक-मन्त्र- वा। o) व्यु. १ =सोमस्त्री- । p) व्यु. १ =रजत- । q) व्यु. १ =योगविशेष- ।

r) पूर्वाञ्चता° इति निसा. । s) तस. [वैतु. निसा. °(अ>)शा->-शा इति बस. इति]।



तारण- ✓तृ द्र.  
 १तारदीर्घानुलम्बिपूर्वक- -कम्  
 विद्या १.  
 तारिणी- ✓तृ द्र.  
 १तारि(१डि<sup>b</sup>)त- -तः शि ७, ३७.  
 २तारित- ✓तृ द्र.  
 १तार्थ्य- -ऽ<sup>a</sup>क्ष्यः प्र मुं मां शां<sup>१</sup>; मना  
 १, ९; अशि अ नृपू वृजा नाप  
 त्रिवि शां पाशु दे भ ग गर गोपू  
 सी श रार रापू पप अन्न सू १आ  
 पत्र त्रिता भा मवा ह दत्ता अवि  
 पहं कृ पित्र शां<sup>१</sup>; रा ४२३: २.  
 तार्थ्य-बाह-  
 तार्थ्यवाहि(न>)नी- -नी शां  
 १, ६.  
 तार्ण-तार्णबैन्दवी- ✓तृण द्र.  
 १ताल<sup>६०</sup>- -लः गोउ २१.  
 ताल-खर्जूर-पात्र- -त्राणाम् शि  
 ६, २६४.  
 ताल-वन- -नम् गोउ २१; सार  
 २२१: १२; ने सार २६०: ७.  
 ताल-वृन्त-कर- -रौ रापू ४, ३४.  
 २ताल<sup>११</sup>- -लैः सार २७०: १५.  
 ताल-त्रय-समन्वित- -तम् शि  
 ६, १५५.  
 ताला(ल-अ)भि(ज्ञ>)ज्ञा<sup>१</sup>- -ज्ञा  
 सार २६३: ९.  
 ३ताल<sup>१</sup>-  
 ताल-नाद- -दः हं १६.  
 तालिकी<sup>१</sup>- -कौम् शि ६, ८४.  
 तालु<sup>१०</sup>- -लु हं १९१<sup>१</sup>; मैत्रि ६, २१;  
 प्रा ४, १<sup>१</sup>; पिं १२; -लुनि त्रिवा  
 २, ९३; १४६; -लुनी ते ६, ६.  
 तालु-क- -के तै १, ६, १; जाड ७, १२.

तालुका-  
 तालुका-चक्र- -कम् योरा  
 १३.  
 १तालु-कण्ठो(एठ-ओ)ष्ठ<sup>k</sup>- -ष्ठम्  
 अना २५.  
 तालु-कर्ण- -र्णेषु रार २, ४३<sup>१</sup>.  
 तालु-चक्र- -कम् सौ ३, १.  
 तालु-मध्य- -ध्ये त्रिवि ४१.  
 तालुमध्य-स्थ- -स्थम् त्रिवा  
 २, १५०.  
 तालु-मूल- -लम् त्रिवा २, १३२;  
 यो २, २८; -ले मं २, १, ७; योशि  
 ५, ३३.  
 तालुमूल-ग(त>)ता- -ताम्  
 शां १, ७, ३०.  
 तालुमूलो(ल-ऊ)र्ध्व-भाग- -गे  
 मं १, ३, ४; अता ११.  
 तालु-रसना(ना-अ)ग्र-निपीडन-  
 -नात् मैत्रि ६, २०.  
 ताल्व(लु-अ)न्तर-विच्छि(ज्ञ>)-  
 ज्ञा- -ज्ञा मैत्रि ६, २१.  
 ताल्वा(लु-आ)दि-स्थान-घटन-  
 -नात् योशि ३, ५.  
 तावत्- ✓तद् द्र.  
 १तास<sup>m</sup> सार २३०: १.  
 ति<sup>n</sup> छां ८, ३, ५; वृ ५, ५, १.  
 ✓तिज्(बधा.), >तितिक्ष<sup>०</sup>, तितिक्ष-  
 स्व गी २, १४; तितिक्षेत नाप  
 ३, ४२.  
 तिक्त- -कम् महा २, ५४.  
 तिग्म-  
 तिग्म-तेजस्- -जसः मै २, ३;  
 मैत्रि २, ३.

तिग्मे(म-इ)षु- -षवः व ४६०:  
 १४९<sup>p</sup>.  
 तितिक्षा- -क्षा नाप ४, १२; २४;  
 भव ५, २०.  
 तितिक्षा-ज्ञान-बैराग्य-शमा-  
 (म-आ)दि-गुण-वर्जित- -तः  
 नाप ५, १.  
 तितिक्षु- -क्षवः तृउ ६, ४; -क्षुः वृ  
 ४, ४, २३; सुबा ९; शा ५.  
 तीक्ष्ण, क्षणा<sup>१</sup>- -क्ष्णया महा ६, ३२;  
 -क्ष्णा रापू ४, ६०<sup>२</sup>; -क्ष्णेन लु  
 १२.  
 तीक्ष्ण्य- -क्ष्ण्यम् १संन्या २,  
 ८८<sup>१</sup>.  
 तीक्ष्ण-क- -कम् १योत ४७.  
 तीक्ष्ण-दंष्ट्र- -ष्ट्राय मना  
 १, ६९<sup>१</sup>; त्रिवि ७, ३९; वृ ४३४:  
 ६; ४५९: १२; ४६३: ५९<sup>१</sup>; १०.  
 तीक्ष्णदंष्ट्रा(ष्ट्र-अ)ग्नि-नेत्र-  
 -त्राय वपं ३१२: १३.  
 तीक्ष्ण-शृङ्खला- -लाम् महा ६,  
 ५१<sup>१</sup>.  
 तेजस्- -जः ई १६; क १, १, २६;  
 प्र ३, ९; ४, ८<sup>१</sup>; ऐ ४, १; छां ३,  
 १, ३; २-५, २, १३, १; ६, ३, ३<sup>१</sup>;  
 ५, ३; ८, ४; ५<sup>१</sup>; ६<sup>१</sup>; १५, १; ७,  
 २, १; ४, २; ५, १; ११, १<sup>१</sup>; २<sup>१</sup>;  
 वृ ३, ७, १४<sup>१</sup>; ४, ४, ७; ५, १५,  
 १९<sup>१</sup>; ६, ४, ५; ६; कौ २, ६; ११९<sup>१</sup>;  
 १२<sup>१</sup>; १३<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ४; २७<sup>१</sup>;  
 ३७; ७, ११<sup>१</sup>; मैत्रे १, ४, १०;  
 गर्भ १<sup>१</sup>; मना २, १५९<sup>१</sup>; ४४९<sup>१</sup>;  
 व २९<sup>१</sup>; अशि १, ८; २, १९;

a) पा. वा. च! b) पा. यनि. शोधः द्र.। c) वैप१ यद्र.। d) ऋ १, ८९, ६। e) व्यु. १=वृक्षविशेष-। f) व्यु. १=संगीते काल-मान-। g) व्यु. १=वाद्यविशेष-। h) व्यु. १=भूम्यामलकी-। i) °लु इति अच्चा. सुपा. यनि. सु-शोधः। j) °लुः इति अच्चा., निसा. १। k) म° इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु. आन., अच्चा.)। l) °लुकण्ठेषु इति निसा. संटि.। m) पा. १ तद्->तासाम् इत्येतत्परः शोधः द्र.। n) =सत्य- इत्येतदीयतकारानुवादः स्वरभक्त्या युक्तः। o) तु. पा ३, १, ५। p) ऋ १०, ८४, १। q) तु. पाउ ३, १८। r) =पकार-बीजाक्षर-। s) ईक्षादितै° इति अच्चा.। t) तैआ १०, १, १। u) तैआ १०, १, ६। v) °क्ष्णां ऋ° इति अच्चा.। w) का ४०, १, १६। x) 'वेदः' इति शांआ ४, ११। y) तैआ १०, १४, १। z) तैसं ३, ३, १, २। a') पापृ २, २, १०।

वृजा २,३; वृउ ३,१०; सुबा २;  
७<sup>३</sup>; ११<sup>३</sup>; १३; ते १, ४१; ५,  
७६; १०२; नाप ४, ३८९<sup>३</sup>; अता  
५; महा १, १<sup>३</sup>; २, ६५; ५, १५५;  
शारी १; अव्य १; अन्न ४, २२;  
अध्या १<sup>३</sup>; १आ १; पाशु १, ८;  
भा ५; यो ३, २४; भ २, ११;  
गोपू २९; ३०; गोउ ८; वरा १,  
५; ९, २; चा ४; ५; २प्र ३२:९;  
नापू १, ५; ७; पा २, ९; ४, ४<sup>३</sup>;  
लिं ३१०: ७; वट ३१४: ९;  
सिधि ३८२: १३; गार ४०५:  
१७; भव २, १५; पित्र ४, ८;  
वउ ३, ७; ब्रसू २, ३, १०; गी ७,  
९; १०; १०, ३६; १५, १२<sup>३</sup>; १६,  
३; १८, ४३; -जस: छां ६, २, ३;  
४, १-४; ६; ६, ४; ७, ११, २<sup>३</sup>;  
१२, १; वृ ३, ७, १४; मैत्रि ६,  
३५<sup>३</sup>; वृजा २, २; मं १, ३,  
३; अद्वै २१<sup>३</sup>; विद्या ११<sup>३</sup>; -जसा  
प्र २, ९; ३, १०; ४, ६; छां  
५, १९-२३, २; ६, ८, ४; ८, ६,  
३; मै १, १; मैत्रि १, २; ६, ३५;  
मैत्रे १, १; मना १, १९<sup>०</sup>; अशि १,  
१२; ३, ७; मन्त्रि १<sup>३</sup>; वृउ ३, १०;  
रापू ४, ५; योशि ५, ५४; १संन्या  
२, २३; १आ ८; भ १, ३;  
२प्र ३३: ११; सार २२५: ८;  
९; २४४: १६; १८; २५३:  
१०; २६२: २१; वट ३१५:  
७; व ४३०: १२; ४३४: २०;  
चू १; वउ ४, ३१; -जसाम् अन्न  
३, २२; पा ४, ४<sup>३</sup>; कालि ४०३:  
२; -जसि प्र ५, ५; छां ६, ८,  
६; १५, १; २; वृ ३, ७, १४; सुबा

२; अध्या २४; -जसे नि २;  
पा ४, ४; १०, ५; -जांसि सार  
२८०: १७; -जोभि: सार २५८:  
२२; गी ११, ३०.

तैजस-स: मां ४; १०; वृ  
२, ५, ८; ४, ४, ९; गौ १, १-३;  
वृपू ४, ५; वृउ १, ७; २, ६; ते  
६, १०; नाप ५, १; ८, १०; योचू  
७२: ७५; मं २, ४, ४; राउ ३,  
१; पै २, २८; अक्षि ४४; यो  
३, २१; वरा १, ११; वउ १, ७;  
५, ३४; ५१; -सम् गौ १, ४;  
२३; १संन्या २, ८८; ९१; निरु  
२, ८; सांसू ५, १०५; -सस्य  
गौ १, २०; पै २, २८; पप ४१९:  
२५; -सात् सांका २५; -सानि  
करु १; कश्रु २, ३.

तैजसी-सी वृजा  
२, १.

तैजस-तुरीय-य: पप  
४१९: २५.

तैजस-तैजस-स: पप  
४१९: २५.

तैजस-स्व-स्वम् पै २,  
२८; ४१.

तैजस-प्राज्ञ-ज्ञ: पप  
४१९: २५.

तैजस-विश्व-श्व: पप  
४१९: २५.

तैजसा(स-आ)त्मक-  
क: राउ २, १; गोउ ४२.

तैजसात्मिका-काम्  
विद्या २.

तैज:क्षय-ये वरा ५, ५.  
तैज:पीठ-ठम् त्रिता ५, २१.

तैज:प्रकाशि(न्)नी-नीम्  
रापू ४, ३१<sup>०</sup>.

तैज:प्रवाह-तरङ्ग-तत्-वरं-  
परा-राभि: त्रिवि ७, ५०.

तैज:प्लुष्ट-विद्-भाव<sup>१</sup>-वम्  
भ २, २९.

तैजस्-काम-म: अन्ना १<sup>३</sup>१<sup>३</sup>.

तैजस्-काय<sup>१</sup>-यम् सुबा ४; ८.

तैजस्-तैजस्-ज: पा ४, ४.

तैजस्-त्रय-यम् वि २३.

तैजस्-स्व-स्वात् ब्रसू ३, २, २८.

तैजस्-वत्-वत्: छां ७, ११, २.

तैजस्-विन्-वि क शां<sup>३</sup>१<sup>३</sup>;  
तै शां<sup>३</sup>; ब्रवि कै गर्भे ना मना

ब्र अना काला शु ससा शु ते ध्या  
ब्रवि यथोत द स्क शारी योशि

ए अक्षि १ अव करु रह यो पं प्रा  
वरा कलि हे शां<sup>३</sup>१<sup>३</sup>; १प्र ३०:

२९<sup>३</sup>; व ४६६: १७९<sup>३</sup>; -विनाम्  
गी ७, १०; १०, ३६; -वी छां

२, १४, २; ३, १३, १; ७, ११, २;  
वृ २, १, ४<sup>३</sup>; कौ ४, ४<sup>३</sup>१<sup>३</sup>; त्रिवा

२, १०३; सौ २, ५; सु २९५: ४.

तैजस्विनी-नी वृ २,  
१, ४.

तैजस्वि-तम-म:, -मम् कौ  
२, ६.

तैजो(जस्-अं)श-संभव-वम्  
गी १०, ४१.

तैजो-दा-दा: मना २, ७९९<sup>३</sup>.

तैजो-द्वा(द्वि-अ)णुक-काय शु  
२, ५.

तैजो-नाद-ध्यान-विद्या-योगत-  
स्वा(त्त्व-आ)त्मबोधक<sup>१</sup>-कम्  
सु १, १, ३३.

a) पाण्ड २, २, १० । b) 'तैजसः' इति शोधः द्र. । c) तैआ १०, १, १ । d) °सः इति मुपा. यनि.  
सु-शोधः (तु. चू १) । e) °काशनम् इति आन. । f) तृस. गर्भितः बस. । उप. त्रिवि(द्वि)द्° इति शोधः द्र. (वैतु.  
उत्र. =विराद्° इति) । g) सकृत् 'तैजः कामः' इति मुपा. यनि. सु-शोधः । h) पा ८, ३, ४८ । i) तैआ ८, १, १ ।  
j) सकृत् 'तैजसी' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः [तु. एकतरत्र अध्या. संदि., वृ. (२, १, ४); वैतु. अध्या.] ।  
k) तैआ १०, ६३, १ । l) =तत्तदुपनिषद्ग्रन्थां समाहारे द्वय. ।

तेजो(जस्-अ)पसर्पण- -णात्  
सांसु ५, १०५.  
तेजो-बिन्दु- -न्दुः ते १, १<sup>०</sup>.  
तेजोबिन्दू(न्दु-उ)पनिषद्-  
-षदम् ते ६, ११०.  
तेजो-भूत- -तस्य कौ १, ६.  
तेजो-भूमि- -मयः सार २३७:  
११.  
तेजो-मण्डल- -ले प्र ४, २.  
तेजो-मध्य- -ध्ये मैत्रि ६, ३८.  
तेजो-मय- -यः वृ २, ५, १<sup>१</sup>;  
१२<sup>१</sup>; १३; १४<sup>३</sup>; ४, ४, ५; सार  
२४५: ११; -यम् श्वे २, १४;  
सार २२२: १०; २२३: १८;  
२३१: १; २३७: ११; २३८:  
८; २४५: १७; २८३: २०;  
२८४: ३; २८९: १८; गार  
४०५: १७; गी ११, ४७; -या:  
सार २२२: १२; २३७: ११;  
-यानि सार २२१: ३; २३७:  
६; २४४: २१; २८४: ४; -याय  
सार २५८: १; -ये वउ ५, ४४;  
-यैः सार २२२: २०; -यौ सार  
२४४: १६.  
तेजोमयी- -यी छां ६, ५, ४;  
६, ५; ७, ६.  
तेजो-मात्रा- -त्रा प्र ४, ८; -त्रा:  
वृ ४, ४, १.  
तेजो-रस- -सः वृ १, २, २.  
तेजो-रस-विभेद- -दैः वृजा  
२, ३.  
तेजो-राशि- -शिमू सि ४, १०;  
गी ११, १७.  
तेजो-रूप- -पम् वउ २, २९.

तेजो-विद्या-कला<sup>१</sup>- -ला वृजा  
२, १.  
तेजो-वृष- -षः मैत्रि ६, ३४.  
तितउ<sup>०</sup>- -उना नापू ४, ८९<sup>३</sup>.  
तितित्ता-, °छु- ✓तिज् द्र.  
✓तितीर्ष, °षैत्- ✓तृ द्र.  
तित्तिरि<sup>१०</sup>-  
तैत्तिरीय<sup>१</sup>-  
तैत्तिरीयक<sup>१</sup>- -के गौ ३, ११.  
तिथि<sup>०</sup>- -थिः(१थीः<sup>१</sup>) त्रि १०.  
तिन्तिडीक<sup>१</sup>-  
तिन्तिडीक-फल- -लानि शि ६,  
२०.  
तिन्दुक<sup>१</sup>- -केपु शि ६, १४.  
तिमिर<sup>१</sup>-  
तिमिरा(र-अ)न्ध- -न्धम् शारी ५.  
तिमिरान्ध-नाश- -शम् योशि  
६, २०<sup>६</sup>.  
तिमिरा(र-आ)लय- -ये तारा ८४:  
१३.  
तिरस्(>):<sup>०</sup>\* सु २, ७४.  
तिरस्✓कृ, तिरस्कुर्वन्ति सार  
२४४: १९.  
तिरस्-करि(न्>)णी<sup>१</sup>- -णी  
ब २०.  
तिरस्-कृत, ता- -तः कृ ९; शि  
५, ३९; -त्ता वरा २, ५१.  
तिरो(रस्✓अ)ञ्च्  
तिरश्च्- -श्चाम् त्रिबा २, ५९.  
तिरश्ची- -श्री वृ ६, ३, १;  
कौ १, ५; -श्रीभिः छां ७, ११, १.  
तिरश्चीन- -नम् त्रि४; -नानि  
कौ १, ५.  
तिरश्चीन-वंश- -शः छां

३, १, १.  
तिर्य(रि<sup>१</sup>-अ)च्, ञ्च्- -र्यक् श्वे  
५, ४; मैत्रि ६, १७; अशि ४, ७;  
काला ९; त्रिबा २, ६२; दै १;  
योशि ५, २०; यो २, ३३; ३५;  
३६; प्रा २, १; छाग २४: २२;  
शां १, ४; वटु ३१५: २२; गु  
६२९<sup>१</sup>; ६४; -र्यञ्चः वृ ६, ३, १;  
योशि ६, १५; -९<sup>०</sup>र्यञ्चम् श्वे ४,  
१९; मना १, २.  
तिर्यक्-त्रि-पुण्ड्र-रेखा-  
विराजमान-फाल-प्रदेश-  
-शम् भ १, १<sup>१</sup>.  
तिर्यक्-त्रि-पुण्ड्रा(ण्ड्र-अ)-  
ङ्क-धारण- -णात् वृजा ५, ८.  
तिर्यग्-ऊर्ध्वम्-अधस्<sup>१\*</sup>-  
?तिर्यगूर्ध्वमधः-शा-  
यिन्- -यी मना २, १३, २९<sup>१</sup>.  
तिर्यगूर्ध्वमधो-दष्टि-  
-ष्टिम् अना २३१<sup>१</sup>.  
तिर्यगूर्ध्वमधो-मु(ख>)-  
खा- -खाः योशि ५, २०.  
तिर्यग्-योनि- -निषु नाप  
३, २९.  
तैर्यग्योन- -नः सांका  
५३.  
तिर्यङ्-मनुज-देव- -वानाम्  
शि ७, १३४.  
तिरो✓धा, तिरोदधे के३, ११; पाशु  
१, ३२; त्रिवि ६, २५; ८, २४.  
तिरो-धान-क(र>)री- -री  
नापू २, ९.  
तिरो-हित- -सम् वृ १, ३, २८;  
पित्र १, ७; ११; वसू ३, २, ५.

a) °न्दुपरस् इति अञ्ज्या. । b) बस. । c) वैप१ यद्र. । d) ऋ १०, ७१, २ । e) व्यु. ? = आचार्यविशेष- ।  
f) पा ४, ३, १०२ । g) पा ४, ३, १२६ । h) निसा. अञ्ज्या. पा. ? यनि. शोधः (तु. तान्त्रि.) । i) व्यु. ? = वृक्षविशेष- ।  
j) व्यु. ? । k) °न्धकारम् इति अञ्ज्या. । l) = देवीविशेष- । m) पा ६, ३, ९४ । n) 'तिर्यञ्चम्' इति मा ३२, २ ।  
o) मा ३२, २ । p) °भाल° इति निसा. । q) त्रयाणामप्यवयवानां मौस्थि. क्रिवि. सतां समाहारे द्वस. द्र. । पाप्र. तु  
पूर्वयोरवयवयोः स्वरादित्वम् उस्सं. (पा १, १, ३७) । r) गपू. (पृ ३६, १९७) यक. अधःशायिन्-> -यी, ऊर्ध्व->  
-ध्वम् इत्यत्र यनि. शोधः द्र. । s) तैत्र्या १०, ११, २ । t) गपू. (पृ १९७) ऊर्ध्व-> -ध्वम् इत्यत्र यनि. शोधः द्र. ।



तिरो✓भू>भावि, तिरोभावयति  
पै १, १०.

तिरो(रस्✓अ)न्(भुवि), तिरोऽसानि  
वृ १, ४, ४.

✓तिल

तिल<sup>६</sup>- -लाः मना २, ६४<sup>५</sup>९<sup>१</sup>; इ  
१५:१९; -लान् मना २, ६३९<sup>०</sup>;  
शि ४, ४४; -लानाम् ध्या ७;  
-लेभ्यः शि ४, ४५; -लेषु श्वे १,  
१५; हं ५; ब्रवि ३५; वा २९;  
ब्र ३, १०; सु १, १, ९; इ १५:६;  
पिब्र ६, ५; -लैः म २, २४; २५.  
तैल<sup>६</sup>- -लम् श्वे १, १५; हं ५;  
ब्र ३, १०; ध्या ५; ७; ब्रवि ३५;  
१योत १३७; २योत १, ८; वा  
२९; १संन्या २, ७५; १आ २३;  
इ १५:६; १७:२१; शि ४, ६०;  
पिब्र ६, ५; -ले १आ २३.

तैल-धारा- -राम् ध्या  
१८<sup>०</sup>; ३७; योचू ८०; वरा ५, ६९.  
तैल-बिन्दु- -न्दुः शि १,  
१७.

तैल-मध्य- -ध्ये वृजा  
६, १; अद्वै १५.

तैल-रस- -सान् सार  
२२५:२१.

तैल-वत् सु १, १, ९.  
तिल-ज्योतिर्-घृत-प्रिय- -याः  
इ १५:१६.

तिल-तुल्य<sup>१</sup>- -ल्यम् शि ४, ४५.

तिल-तैल- -लम् शि ४, ५८.

तिल-धेनु- -नुम् शि ६, ७०.

तिल-मध्य- -ध्ये ध्या ५; १योत  
१३७; २योत १, ८.

तिल-मात्र- -त्रम् गोच ६९:७.

तिलमात्र-प्रदान- -नेन गोच

६९:३.

तिल-माष<sup>६</sup>- -षाः छां ५, १०,  
६; वृ ६, ३, १३.

तिल-लड्डुक- -कैः वउ ६, ४३.

तिल-वारि- -रिणा शि ५, ५०.

तिल-त्रीहि<sup>६</sup>- -हिभिः म १, ३.

तिल-संख्य- -ख्यान् शि ४, ४४.

तिला(ल-आ)ज्य- -ज्यैः रार २,  
३४.

तिला(ल-अ)जलि- -लिम् सार  
२७३:१७.

तिला(ल-अ)न्न- -न्नानि शि ४,  
३९.

तिला(ल-अ)र्थ- -र्थम् शि ४, ६१

तिलौ(ल-ओ)दन- -नम् वृ ६,  
४, १७.

तिलक<sup>१५</sup>- -कम् सार २४४:२१;  
गु ११.

तिलक-पुण्ड्र- -ण्डम् नाप ७.

तिलक-हाटक-हीरक-मणि-ज्यो-

त्स्ना- -स्नाभिः सार २६५:३.

तिलय- १इला->इलय- टि. द्र.

तिवगम<sup>१५</sup> व ४२७:१७.

✓तिष्ठ, तिष्ठत्-, तिष्ठमान-,  
✓तिष्ठाम् ✓स्था द्र.

तिस्र- त्रि- द्र.

तीक्ष्ण- ✓तिज् द्र.

तीर<sup>१</sup>- -रे वृ २, २, ३<sup>६</sup>; मना २, ४०९<sup>१</sup>;  
त्रिवि ६, २३; सार २२५:१०;  
व ४५९:१४; ४६५:९.

तीरिषत्, तीर्ण-, तीर्त्वा ✓तृ द्र.

तीर्थ<sup>१</sup>- -र्थम् मना १, १२९<sup>१</sup>; अशि  
४, १६; ते ४, १३; योशि ६,  
४५; जाद ४, ५१; ५३<sup>९</sup>; ५६;  
आच ३; ४; म ४९:९; १५;  
गोच ६८:२०; तुल ७१:१७;

वटु ३१६:९; १०; शि ५,  
४५-४८; ६, १९२; ७, ८८; -थोः  
वृजा ४, २४; -थानि योशि १,  
१५७; जाद ४, ५२; आच ३;  
शि ५, ३७; -थे नाप ७; पै ४,  
५; पप ४१९:१२; अन्न ५,  
१०१; जाद ४, ५७; -थेन वृ ६,  
२, ७; सार २८२:२१; शि ५,  
४९; -थेभ्यः छां ८, १५, १;  
-थेषु अशि ७, ४; वृजा ७, ७;  
काला १८; वा ३९; पै ४, २३;  
महा ६, ८३; जाबा २७; चर १:  
१०; ऊ ६४:१२; वृष ८५:१६;  
वटु ३१८:७; गार ४०८:१७;  
श्या ७; आश्र ४; -थैः शु १,  
१६; शि ५, ३८.

तीर्थ-दान-तपो-योग-स्वाध्याय-  
-याः वि ३१.

तीर्थ-निर्धूत-कलमष- -षाः शि ६,  
१९८.

तीर्थ-बुद्धि- -द्धिः सार २७९:१३.

तीर्थ-आन्ति- -न्ति<sup>१५</sup> मैत्रे २, २१.

तीर्थ-यात्रा- -त्रा नाप ६, ३४.

तीर्थयात्रा(त्रा-आ)गत- -तम्  
शि ६, १९६.

तीर्थयात्रा(त्रा-अ)भिगमन-  
-नम् पै ४, १८.

तीर्थयात्रा(त्रा-अ)र्थ- -र्थम् महा  
३, १.

तीर्थयात्रा-वृत्ति- -त्तिः नाप  
५, १.

तीर्थ-रूप- -पम् सार २५९:९.

तीर्थ-वत्- -वन्तः सार २८८:१३.

तीर्थ-व्रत-यज्ञ-धर्म- -र्माः सार  
२७९:१६.

तीर्थ-सेविन्- -वी नाप ३, ७३.

a) वैपश् यद्र. । b) तैश्चात्रा १०, ६४<sup>५</sup>. c) तैश्चात्रा १०, ६३ । d) वैतु. पावा. (५, २, २९) =प्र. एवेति ।  
e) ०रम् इति आन. । f) तु. सस्थ. टि. अज्ञ-> -ज्ञः । g) व्यु. ? =मस्तकचिह्न- । h) =भगवती-> -०ति इत्यस्य  
मुख्यपार्थो विपर्यासः । i) =कूल- । वैपश् यद्र. । j) तैसं ४, २, ९, ६ । k) बन्न. प्राति. द्र. । वैपश् यद्र. । l) तैश्चा  
१०, १, १२ । m) प्र१ छान्दसो विसर्गलोपः द्र. (वैतु. अख्या. 'तीर्थचिन्ता' इति) ।

तीर्थ-स्थान- -नेहूँ शि ६, १९५.  
 तीर्थ-स्नान- -नैः जाद ४, ५४.  
 तीर्था(र्थ-आ)यतना(न-आ)श्रय-  
 -यः महा ४, २८.  
 तीर्था(र्थ-आ)श्रम-पद- -दम् म  
 ४८ : ८.  
 तीर्था/कृ  
 तीर्था-कुर्वत्- -र्वन् नाप १.  
 तीव्र<sup>a</sup>-  
 तीव्र-वेग- -गेन ते १, ५०<sup>b</sup>.  
 तीव्र-संवेग<sup>c</sup>- -गात् महा ५,  
 १५४; मु२, २, ५८; भव १, ४६.  
 रतीव-संवेग<sup>d</sup>- -गानाम् योसू १,  
 २१.  
 तु<sup>e</sup> ई ६; क १, १, २७; ३, ३; प्र २, ७;  
 ३, ५; सुं ३, १, ८; २, २; छां १,  
 १, १०; ८, ६; वृ ५, १२, १; ब्रवि  
 ६०; रार २, ३६; यो२, २; गी १, २.  
 ✓तु  
 तवस्<sup>f</sup>- -वसः वा ४; व ४६० :  
 ३९<sup>g</sup>; नापू ४, ७९<sup>h</sup>; -वसा आर्षे  
 ९ : १९; वा ९.  
 तविष<sup>i</sup>- -षस्य व ४६० : ७९<sup>h</sup>.  
 तवीयस्<sup>j</sup>- -यान् नापू ४, ७९<sup>h</sup>; व  
 ४६० : ३९<sup>g</sup>.  
 तव्यस्<sup>k</sup>- -ऽव्यसे मना २, २५;  
 रशिसं ३१.  
 तु(क>)का<sup>l</sup>- -काः वा १३.  
 तुङ्ग<sup>m</sup>-  
 तुङ्ग-भद्रा<sup>n</sup>-  
 तुङ्गभद्रा-तीर्थ- -र्थम् म४९ : ३.  
 तुच्छ, च्छा<sup>o</sup>- -च्छः महा ५, ९२;  
 १संन्या २, १६; -च्छम् १आ ९;  
 -च्छा ससा १, ४१.  
 तुच्छ-स्व- -स्वम् सांसू १, १३४.

✓तुद्  
 तुदत्- -दन् पा ८, ५.  
 तुन्द<sup>p</sup>- -न्दस्य शां १, ७, ४९; -न्दे  
 यो १, १५.  
 तुन्द-दोष- -षम् यो १, ५०.  
 तुन्द-मध्य- -ध्यम् त्रिआ २, ५९;  
 ६७<sup>q</sup>; शां १, ४.  
 तुन्दमध्य-ग- -गाः यो १, १८.  
 तुन्दमध्य-गत- -तः त्रिआ २,  
 ८३; शां १, ४.  
 तुन्द-मध्यम- -मे शां १, ७, ५०.  
 तुन्द-संधि- -धिम् यो १, ५०.  
 तुन्द-स्थ- -स्थम् त्रिआ २, ८३<sup>n</sup>;  
 शां १, ४.  
 तुभ्यम्<sup>o</sup> युभद्- -द्र.  
 तुमुल<sup>k</sup>- -लः गी १, १३; १९.  
 तुम्बी<sup>rk</sup>- -म्बीम् भव १, ५५.  
 तुम्बुरु<sup>lo</sup>-  
 तुम्बुरु-नारदा(द-आ)दि- -दिभिः  
 सी ३७.  
 तुर<sup>a</sup>- -तुर्म् छां ५, २, ७९<sup>p</sup>.  
 श्तिर<sup>a</sup>-  
 तु(र>)रा-षाद्- -पाद् वा ४.  
 २तुर<sup>a</sup>- -रः, -रात् वृ ६, ५, ४.  
 ✓तुल्  
 तु(ल>)ला<sup>a</sup>-  
 तुला-कोटि-नि(भ>)भा-  
 -०मे तुल ७० : १८.  
 तुला-पुरुष-दाना(न-आ)दि-  
 -दिभिः सार २३१ : १५.  
 तुला-पुरुषा(प-आ)दि-दान-  
 -नैः दत्ता ३.  
 तुल्य, ल्या<sup>a</sup>- -ल्यः क १, १,  
 २२; श २९; या २, १; गी १४,  
 २५<sup>q</sup>; -ल्यम् गौ १, १३; २२;

वपं ३१२ : १८; ब्रसू ३, ४, ९;  
 -ल्ययोः योसू ३, ५४; -ल्या योचू  
 ६७; -ल्याः योशि १, ४८; -ल्ये  
 शि ७, ११९; १२६.  
 तुल्य-निन्दा(न्दा-आ)त्म-  
 संस्तुति- -तिः गी १४, २४.  
 तुल्य-निन्दा-स्तुति- -तिः  
 गी १२, १९.  
 तुल्य-प्रत्यय- -यौ योसू ३,  
 १२.  
 तुल्य-प्रिया(य-आ)प्रिय-  
 -यः गी १४, २४.  
 तुल्य-वन-दुर्गा- -गांभिः  
 वपं ३१२ : २२.  
 तुल्य-स्थान-पदा(द-आ)-  
 न्तर<sup>l</sup>- -रम् शि ४, १०.  
 तुल्या(ल्य-आ)तुल्य-वि-  
 हीन- -नः मैत्रे ३, ६.  
 तुलसी<sup>ck</sup>- -०सि तुल ७० : १८; ७१ :  
 ६; -सी तुल ७० : २; कृपु २१;  
 -सीम् त्रिवि ६, २३; तुल ७१ :  
 ५; १८; तारा ८४ : १२.  
 तुलसी-काष्ठा(ष्ट-आ)ङ्कित-देह-  
 -हाः सार २७९ : ८.  
 तुलसी-काष्ठा(ष्ट-आ)ङ्कित-  
 माला- -लाः सार २५९ : ९.  
 तुलसी-दारु-मणि- -णिभिः तुल  
 ७१ : १९.  
 तुलसी-पत्र- -त्रम् तुल ७१ : १५.  
 तुलसी-पारिजात-श्रीवृक्ष-मूला-  
 (ल-आ)दिक-स्थल- -ले रार  
 ४, ६.  
 तुलसी-मूल-मृत्तिका- -काम् वा  
 ३५.  
 तुलसी-वैकुण्ठ- -ण्डम् त्रिवि ६, २३.

a) वैपश् यद्र. । b) °त्रयो° इति अख्या. । c) कस. । d) वस. । e) अव्य. । वैपश् यद्र. । f) ऋ १०,  
 ८३, ३. । g) ऋ ७, १००, ३. । h) ऋ १०, ८३, ५. । i) ऋ १, ४३, १. । j) व्यु. ? = बिन्दु-? (तु. बाटी. ) ।  
 k) व्यु. ? । l) = नदीविशेष- । m) °ध्ये इति निसा. । n) °स्थजलम् इति निसा. । o) तु. टि. तव । p) व्यु. ?  
 = देवविशेष- वा गन्धर्वविशेष- वा । q) ऋ ५, ८२, १. । r) व्यु. ? = गोत्रप्रवर्तक-ऋषिविशेष- । s) पा ४, ४, ९१ ।  
 tt) वस. । उप. षस. > षस. ।

तुलस्यु(सी-उ)रनिषद्<sup>११</sup>— -षदम्  
तुल ७० : १.

✓तृप्, >तोषि, तुष्यति महा ५, ७४;  
योशि ३, १४; रुजा २, ३; गी ६,  
२०; तुष्यन्ति गी १०, ९;  
तुष्यसि सार २६१:२०; तुष्यामि  
अन्न ५, ५९; तुष्येत कुं १२;  
करु ४; कश्रु ३, ४.  
तुतोष द २०.  
तोषय-तोषय दत्ता २.

तुष्ट, टा— -ष्टः क १, १, १५; योशि  
६, २६; १आ १२२; गोउ ३;  
वरा ४, २८; विशि ३८३:५;  
वपू १, ५; गी २, ५५; -ष्टा सर १,  
३; -ष्टा: गोउ १८; -ष्टेन शां ३, १.  
तुष्ट-ता— -ता महा ५, १६८.  
तुष्टा(ष्ट-आ)त्मन्— -त्मा महा ६,  
६३.

तुष्टि— -ष्टयः सांका ५०९<sup>११</sup>; -ष्टये महा  
५, ७१; बि १३; -ष्टि: सं १, १,  
४; अन्न ५, ३७<sup>३</sup>; त्रि ६<sup>३</sup>; तारा  
८३: २४<sup>३</sup>; सांसू ३, ३९; ४३;  
सांका ४७; गी १०, ५.  
तुष्टि-करण— -णम् गोच ६७:२<sup>३</sup>.  
तुष्टि-काम— -मः सूता १, २१.  
तुष्टि-सिद्धि— -द्धीनाम् सांका  
४९.

तोषयित्वा नाप ४, ३८.

तुष<sup>११</sup>— -षम् ते ६, ४७; पै ४, २२;  
-षेण स्क ६; नाउ १, २२.

तुषा(ष-अ)भि— -भि: १संन्या २, ८.  
तुषा(ष-अ)भाव— -वेन स्क ६;  
नाउ १, २२.

तुषार<sup>११</sup>—

तुषार-कर<sup>११</sup>—

तुषारकर-विम्बा(म्ब-अ)च्छ—  
-च्छम् महा ४, ३३.

तुष्टुवस्— ✓स्तु द्र.

तुस्तूर्पमाण— ✓स्तृ द्र.

तुहिन<sup>११</sup>—

तुहिन-प्रभ— -भम् गरु ५.

तूर्ण— ✓त्वर द्र.

तूल<sup>११</sup>— -ले पित्र ६, ६.

तूल-पिण्ड— -ण्डम् यो ३, ३०.

तूल-राशि— -शिमू राउ ५, ७<sup>३</sup>;  
गरु ५.

तूष्णीम्<sup>११</sup>— प्र ६, १; छां १, १०, ११;

वृ २, १, १३; कौ ४, १८<sup>३</sup>; ते ४,

४०<sup>३</sup>; महा २, २२; ७४; ४, १२;

अव्य ५; अध्या ७; प्रा १, ६;

वपू १, २; ४; ५; गी २, ९.

तूष्णीम्—आत्म-स्वभाव—

तूष्णीमात्मस्वभाव-वत्— -वान्  
ते ४, ३५.

तृच— त्रि— द्र.

✓तृष्

तृण<sup>११</sup>— -णम् के ३, ६; १०; ते ६,

४६; ५०; महा ३, ३८; शा १९;

शि ७, ५२; -णस्य वृ ४, ४, ३;

-णानि इ ११:२२; -णे जाद १,

११; गरु २५; -णेन सी १३;

गरु २५; -णै: छां ६, ७, ५; कौ

२, १५; शि ४, ६१.

तार्ण— -णैम् १संन्या २, ५४<sup>१</sup>;

-र्णानाम् गरु २४.

तृण-काष्ठ—संस्पर्श— -शेन मैत्रि

६, २६.

तृण-काष्ठा(ष्ठ-आ)दि—गहन—

-ने शि ७, ७०.

तृण-ग(र्भ>)र्भा— -र्भायाम् शि

७, ४९.

तृण-गोमय— -यै: शि ४, ६२.

तृण-च्छन्न— -न्नम् शि ४, २०.

तृण-जलालुका<sup>११</sup>— -का वृ ४, ४, ३.

तृण-जलौ(ल-ओ)षधि— -धयः

सार २७६: १.

तृण-जलौ(ल-ओ)षधी-लता-

फल-पुष्प-पत्र-कोमल— -लानि

सार २८१: ४.

तृण-तोय— -यानि शि ७, ९६.

तृण-विन्दु<sup>११</sup>—

तार्णवन्द(व>)वी<sup>११</sup>— -वी  
गु ३.

तृण-मात्र— -त्रम् महा ४, १३३.

तृण-वत् मै १, ४; महा ३, ४३;

या २, ९.

तृण-वनस्पति<sup>११</sup>— -तयः छां ७, ८,

१; १०, १; मैत्रि १, ४<sup>३</sup>; -तीन्

छां ७, २, १; ७, १.

तृण-संचलित— -ता: सार २७५:  
२३.

तृणा(ण-अ)प्र— -प्रेषु अन्न ५, ९४

तृणा(ण-आ)दि— -दे: अन्न ५,  
१०६.

तृणादि-वत् ब्रसू २, २, ५.

तृणा(ण-अ)नल— -ल: ते ६, ८७.

तृणा(ण-आ)वर्त<sup>११</sup>—

तृणावर्ता(र्त-अ)सु-हारिन्—  
-रिणे गोपू ४१.

तृणा(ण-आ)शिन्— -शिनः जावा  
११.

तृणो(ण-उ)दक— -कम् छां २,

२२, २; वृ १, ४, १६.

तृणौ(ण-ओ)षधी-वृक्ष-फल-

मूल-पतङ्गक— -का: महा ५,  
१४०.

तृतीय— त्रि— द्र.

✓तृप्, >तर्पि, तृप्यति छां ३, ६-१०,

३; ५, १९, १; २<sup>३</sup>; २०-२१, १;

२<sup>३</sup>; २२-२३, १; २<sup>३</sup>; १अव १०;

पित्र ३, ३; तृप्यन्ति छां ३,

a) =आवरणदेवताविशेष— । b) वैपरी यद्र. । c) व्युः! विप. (=शीतल—) । d) =चन्द्र— । e) व्युः!  
=हिम— । f) व्युः! =कार्पास— । g) °लाचलम् इति निसा. संदि., अज्या. । h) व्युः! =अव्य. । i) 'तर्णम्' इति निसा.  
संदि. । j) =आचार्यविशेष— । k) उत्तरेण संधिरार्षः द्र. । l) =दैत्यविशेष— ।



६-१०, १; ५, २०, २; वृ १, ३,  
१८; पित्र १, ११; तृप्यामः सार  
२३६: २३.  
अत्रप्यत् ए ३, ३-१०.  
तर्पयते गौ १, ४; तर्पयामि अशि  
१, १२; तर्पयन्तु वृ ६, ३, १;  
तर्पयेत् रार ४, ८; भ १, ८; शि  
५, ४९; ६, १७३; कालि ४०२: ९.  
तर्पण- -णम् वृजा ३, ४<sup>०</sup>; शा  
१२; सौ १, ३; तुल ७१: १८;  
शि ५, ५०; ५२; कालि ४०२:  
१३; श्या १५.  
तर्पणा(ण-अ)र्थ- -र्थम् शि ७,  
४७.  
तर्पणीय- -यः क १, १, २७.  
तर्पयत्- -यन्तः त्रि ७.  
तृप्त, सा- -सः ते ३, २८; ४, ५८;  
८१; ६, ७४; १अव २६; सु २,  
२, ७५; -सम् मैत्रि ६, २३; ७,  
३; -सस्य जाद १, २३; पै ४, ९;  
-सा महा ३, २३; -सा: वृ ६, ३,  
१; -सासः अरु १६९<sup>d</sup>; -सै: इ  
१८: ४.  
तृप्ति- -सि: तै ३, १०, २; अध्या  
२९; इ १०: १२; रु २८; गु २३;  
गी १०, १८; -सिम् छां ५,  
१९-२३, २; गौ १, ४; सी १३;  
महा ४, ३५; सार २५६: ११;  
-सै: योशि २, २१; १अव ३०.  
तृप्ति-मत्- -मान् छां ७, १०, २.  
१तृप्ति-रूप- -पाणि इ १५: १३  
२तृप्ति-रूप- -पः ते ३, ३९.  
तृप्यत्- -प्यति छां ५, १९-२०,  
२<sup>३</sup>; २१, २<sup>३</sup>; २२-२३, २<sup>३</sup>; -प्यत्सु  
पित्र ३, ३; -प्यन् १अव २६.

तृप्यन्ती- -न्तीषु छां ५, २०,  
२; -न्त्याम् छां ५, १९, २; २१,  
२<sup>३</sup>; २२-२३, २.  
तृप्यमान- -नः मै ३, २.  
तृपल-  
तृपल-प्रभर्मन्- -र्मा मना १, ९९<sup>h</sup>.  
√तृष्  
तृष्- तृष्म् योशि १, ९६.  
तृषा- -षा ध्या ८०; १योत १२;  
योचू ५३; योशि १, १०; ५, ४२;  
-षाम् यो १, ३१.  
तृष्णा- -ष्णया महा ५, ८७; ६, ५९;  
शि ७, १०४; ९व ४४०: १२;  
४४५: १८; ४५०: १७; ४५४:  
२; -ष्णा मै ३, ५; ते ४, १८;  
१योत १३; नाप ४, ५; महा ३,  
२२-२५; ४, २९; ६, ५०<sup>३</sup>; योशि  
१, ११; -ष्णाम् अशि ५, १८<sup>१</sup>;  
महा ६, ३९; वटु ३१७: ५.  
तृष्णा-ग्राह-गृहीत- -तानाम्  
महा ४, १०६.  
तृष्णा-दोषा(ष-आ)नय- -यः  
ते ५, ९६.  
तृष्णा-बद्ध- -द्धा: महा ६, ३९.  
तृष्णा-भार्या(र्या-अ)नुगामिन्-  
-मिना महा ३, १९.  
तृष्णा-रज्जु-नाण- -णम् १संन्या  
२, ३८.  
तृष्णा-लत- -तम् १संन्या २, ५४  
तृष्णा(ष्णा-आ)वर्त- -र्तम् मं १,  
२, ३.  
तृष्णा-विष-विषूचिका- -का  
अक्ष ५, १४.  
तृष्णा-विषूचिका-मन्त्र- -न्त्रः  
महा ३, २६.

तृष्णा-सङ्ग-समुद्भव<sup>k</sup>- -वम् गी  
१४, ७.  
तृष्णे(ष्णा-ई)ष्या-कुण्डल-  
तृष्णेष्याकुण्डलिन्- -ली  
मैत्रि ६, २८.  
√तृह्, अतृहम्<sup>l</sup> कौ ३, १.  
√तृ, > तर, तिर, तारि, तितीर्ष, तरते  
लु २२; तरति क १, १, १७;  
मुं ३, २, ९<sup>२</sup>; छां ७, १, ३; वृ ४,  
४, २२; २३<sup>३</sup>; मना १, ११९<sup>m</sup>;  
वृजा ८, ३<sup>३</sup>; तृपू २, १<sup>३</sup>; ३, २<sup>३</sup>;  
५, १३<sup>३</sup>; राउ १, २<sup>३</sup>; त्रिवि ७,  
४९<sup>m</sup>; शां १, ७, ५२; सू ३३<sup>३</sup>;  
त्रिता ४, २४; दे १०; २१; २२;  
भ २, ८; कलि ३<sup>३</sup>; सु २९३:  
१४; कालि ४०२: १४; १८<sup>३</sup>;  
१९; विद्या १; षो ९; १८; तारा  
८४: १४; वपू २, २<sup>३</sup>; वज ५, ५;  
४७<sup>३</sup>; ४८<sup>३</sup>; तरतः छां ८, ४, १;  
वृ ४, ४, २२; तरन्ति त्रिवि ४,  
१३<sup>३</sup>; योशि ६, ७९; यो ३, १७;  
१८; गोउ २६<sup>३</sup>; गी ७, १४;  
अतरन् तृपू २, १<sup>३</sup>; तरेत् अक्ष  
४, ६४; भव १, ५०; ९<sup>m</sup>तरेम  
मना १, ११; त्रिवि ७, ४; सु  
२९३: १५.  
ततार रापू ४, २५; तरिष्यसि  
कलि १; गी १८, ५८; तरिष्यथ  
गोपू ४६; तारिषः प्रा १, ४९<sup>n</sup>;  
तीरिषत्<sup>o</sup> अरु १४९<sup>d</sup>.  
तारयते इ १५: ४; तारयति  
अशि ४, ९; मं ५, १, ९; राउ १,  
२१<sup>n</sup>; पै ४, १; त्रिता ४, ९; म  
२, ४; ता १, २; वटु ३१६: १;  
विद्या १; तारा ८३: १; तारयसि

a) घा. अमागमः (पा ६, १, ५९) । b) 'तृणम्' इति अज्या. । c) 'तृप्तः' 'तृष्णा' चेति अज्या. संटि. ।  
d) तैत्र्या १, २७, २ । e) पस. । f) बस. । g) वैष १ यद्र. । h) ऋ १०, ८९, ५ । i) ऋ १, ३८, ६ । j) ण्णा  
इति आन. । k) द्रस. > बस. (वैतु. शं. पस. इति च °आसङ्ग- इति पूष. इति च) । l) तु. क. (शांआ ५, १); वैतु.  
निसा., आन., अज्या., JC. 'अतृणम् अहम्' इति, शांआ ५, १ 'अतृणम् अहम्' इति । m) तैत्र्या ३, १२, ३, ४ ।  
n) मा ११, ८३ । o) =तारिषत् । p) 'तरति' इत्येतत्तरः शोधः द्र. (तु. आन.) ।

प्र ६, ८; तारयतु छां ७, १, ३;  
तारय रार २, ७३.  
तार्यते महा ४, १०७.  
तर्तव्य-  
तर्तव्या(व्य-अ)-भाव- -वात्  
ब्रसू ३, ३, २७.  
तर्तुम् मं १, २, ३; योशि १, ६३.  
१तार- -रः अ २९<sup>१</sup>; रार २,  
७५; रापू ४, ५७; अन्न १, ५;  
-रम् अशि ३, ११<sup>२</sup>; ४, ८;  
९९<sup>३</sup>; ते २, २०; द ४; ६; ९;  
११; रार २, २६; २८; २९; ५३;  
६२; ६४; ६६; ६७; ६९; ७३;  
७८; ९०; १संन्या २, १०३; १अव  
२४; रुह ३८; वड ३१५; १२<sup>४</sup>;  
२३; ३१६; १९<sup>५</sup>; -रेण रार  
२, ७७; ७९; ग ७.  
तार-द्वय- -यम् रापू ४, ४०.  
तार-पञ्चा(ह-अ)ण-यु(क)-  
क्ता- -क्त्या रार २, ३२.  
तार-मायौ-रमौ(मा-अ)नङ्ग-  
वाक्-स्व-बीज<sup>६</sup>- -जैः रार २,  
८; ५०.  
तार-मायौ-रमौ-मार्-विश्वेश-  
धरणी<sup>७</sup>-क्रम- -मात् वपू  
३, १.  
तार-रहि(त>)ता- -ता तारा  
८३: ८.  
तार-लक्ष्मी- -क्ष्म्या सी ४.  
तार-संयुक्त- -क्तः रार २,  
७७.  
तार-संयुत- -तः रार २,  
३९.

तार-सार<sup>d</sup>-  
तारसार-महावाक्य-पञ्च-  
ब्रह्मा(ह-अ)गिनहोत्रक- -कम्  
मु १, १, ३८.  
तारा(र-आ)दि- -दिः रार २,  
१७; ८७.  
तारादि-सहित- -तः रार  
२, २६; ५८; ६२.  
तारा(र-आ)दि(क>)का- -का  
तारा ८३: ६.  
तारो(र-उ)पदेश-  
तारोपदेश-तस्(>) मु १,  
१, १६.  
१तारक<sup>a</sup>- -कः पाशु १, ३२; राउ  
१, २९<sup>१</sup>; भ २, ४<sup>२</sup>; ता २,  
१९<sup>३</sup>; विद्या १९<sup>४</sup>; -कम् जा  
१; वपू १, १५<sup>५</sup>; ५, ८; नाप ४,  
३८; ७; रार १, ६<sup>६</sup>; राउ १,  
१; २<sup>७</sup>; ९<sup>८</sup>; ४, ४; भ २, २८<sup>९</sup>;  
दत्ता १, १; २; ता १, २<sup>१०</sup>; २, १;  
नापू २, ३; विद्या १<sup>११</sup>; योसू ३,  
५५.  
तारक-स्व- -त्वात् राउ १, २;  
ता २, १; विद्या १.  
तारक-ब्रह्मन्- -हणः रार २, १;  
-हणो रार २, ७३.  
तारकब्रह्म-वाचक- -कः राउ  
५, २.  
तारको(क-उ)पदेश- -शः निर्वा  
२९८: ६.  
तारण- -णात् अ २, ४.  
तारि(न्>)णी- -णी तारा ८३:  
१५; २२: -गीम् तारा ८३: १.

२तारित- -ताः शा ३२.  
तितीर्षत्- -र्षताम् क १, ३, २.  
तीर्ण- -र्णः वृ ४, ३, २२; महा  
५, ८४; -र्णाः महा ५, ४१;  
१७६.  
तीर्त्वा ई ११; १४; क १, १, १२;  
छां ८, ४, २<sup>१</sup>; मैत्रि ६, २१; २८;  
७, ९; नाप २; त्रिवि २, १७;  
गोउ २-४<sup>२</sup>.  
१ते तद्- द.  
२ते<sup>३</sup> युष्मद्- द.  
तेजस्- √तिज् द.  
तैक्ष्ण्य- , तैजस- √तिज् द.  
तैतिल<sup>b</sup>- -लम् लु १७<sup>४</sup>; १९<sup>५</sup>.  
तैत्तिरीय- , तैत्तिरीयक- तित्तिरि- द.  
तैर्यग्योन- तिरोच्च् द.  
तैल- √तिल् द.  
तौक<sup>c</sup>- -कम्-कम् २प्र ३६: १३१<sup>१</sup>;  
-९<sup>२</sup>काय मना २, १; व४६१: ११;  
-९<sup>३</sup>के श्वे ४, २२; मना २, ५३;  
वृजा ५, ११<sup>४</sup>; ७, १; काला ७; जाबा  
१६; भ १, ५; वपं ३११: २१<sup>५</sup>;  
२शिसं २९.  
तोय<sup>d</sup>- -यम् अना १३; वृजा ३, १८;  
४, ९; ते ४, १७; ध्या ३८; ब्रवि  
५७; पै ४, ११; जाद ८, २;  
शि ५, १४; ६, १६४; गी ९,  
२६; -ये ब्रवि ५७; -येन मना  
१, १९<sup>६</sup>; भव ३, २०; -येषु पिं ५.  
तोय-क- -कम् ते ५, १०१.  
तोय-पूर्ण- -र्णानि जाद ४, ५२.  
तोयां(य-अं)श-  
तोयांश-क- -के जाद ८, २; ५.

a) =ओम्- वा तारक- वा । b) १=ओ, २=ही, ३=श्री, ४=क्ली, ५=ऐ, ६=रां (=बीजमन्त्रविशेष-) ।  
c) १=ओ, २=ही, ३=श्री, ४=क्ली, ५=व-कार-, ६=अ-कार- (=बीजमन्त्रविशेष-) । e) =तदाख्योप-  
निषद्विशेष- । d) वैतु. उन्न. ब्रह्मता<sup>१</sup> इति । f) अ<sup>२</sup> इति आन. । g) तु. टि. तव । h) व्यु. अर्थश्च ? विप. (वैतु.  
=गमन- इति उन्न. =गण्डुक- इति नादी., =उपवर्ह- इति MW.) । i) पा. ? प्रति नाडीः सुतै<sup>३</sup> (प्रास.) इत्येवं  
पद-विभागः स्यात् । j) विशेषि. (वैतु. =स्थैर्य- इति उन्न.) । k) वैप १ यद्र. । l) लोकं तो<sup>४</sup> इति मुपा. यनि.  
सु-शोधः (तु. गोत्रा १, १, २८) । m) ऋ १, १८९, २ । n) ऋ १, ११४, ८ । o) यक्र. °केन, °कः इति मुपा. यनि.  
शोधः द. । p) व्यु. ? । q) तैआ १०, १, १ ।

तोया(य-आ)धार-पिधान- नानि  
शि ६, ५७.  
तोरण<sup>२</sup>-  
तोरणा(ण-अ)ञ्चित- ते रार २,  
४४.  
तोषयित्वा /तुष्ट<sup>३</sup>.  
त्मन्<sup>४</sup> - त्मना पा ७, ४९<sup>०</sup>; त्मा क १,  
३, १२<sup>०</sup>; त्मानम् मैत्रि २, ६<sup>०</sup>.  
/त्यज्, त्यजति ब्र १; आबो १७;  
नाप ५, १; अक्षि १३; कुं ८;  
गी ८, ६; त्यजन्ति महा ५, १७७;  
भव २, ६५; त्यजसि महा ६, ६;  
१संन्या २, १२; त्यजामि आबो  
१७; अन्न २, ३; वरा २, ३५;  
त्यजतु अन्न ५, १०१; त्यज ते  
६, १०७; महा ४, १०९; ५,  
१६६; १संन्या २, १२<sup>३</sup>; अन्न ५,  
४; सु २, २, ६८; त्यजत अन्न  
३, ८; त्यजेत् ब्र २<sup>३</sup>; मैत्रे २, १;  
ब्रवि १८; आरु ३; ब्रवि ३०;  
१योत ३१; नाप ३, १७; योचू  
९८; स्क १०; शां १, ७, १<sup>३</sup>.  
त्यज्यते सार २५० : ६; त्यज्य-  
ताम् अध्या ८१<sup>३</sup>; ५६.  
त्यक्त, क्ता- क्तम् महा ३, ४८;  
१संन्या २, ८९; या २, १४; सु  
२, २, १६; क्ता सार २५०:३;  
-क्तानाम् शि ७, ९५; -क्ते अन्न  
५, ६३; -क्तेन ई १.  
त्यक्त-कल्मष- -षः कालि  
४०२ : ७.  
त्यक्त-कुणप- -पान् भ २, २८.  
त्यक्त-गृह-याग- -नाः भ २,  
३०.  
त्यक्त-जीवित- -ताः गी १, ९.  
त्यक्त-देहा(ह-अ)भिमान-  
त्यक्तदेहाभिमानिन्- -निनः

मैत्रे २, १८.  
त्यक्त-निःशेष-कर्मन्- -र्मणः  
महा ४, ७८; वरा २, ७७.  
त्यक्त-पञ्चा(घ-अ)क्षर-जप-  
-पाः भ २, ३०.  
त्यक्त-पूर्वा(र्व-अ)पर-विचा-  
रण- -णम् अन्न ४, ४६; सु २,  
२, ५७.  
त्यक्त-बन्ध- -न्धाः भ २, २९.  
त्यक्त-भस्म-धारण- -णाः भ  
२, ३०.  
त्यक्त-भैरवा(व-अ)र्चन- -नाः  
भ २, ३०.  
त्यक्त-रुद्रा(द्र-अ)क्ष-धारण-  
-णाः भ २, ३०.  
त्यक्त-वर्णा(र्ण-आ)श्रमा-  
(म-आ)चार- -रः वृजा ५, ९;  
तुअ १९.  
त्यक्त-विश्वे(श्व-ई)श्वरा-  
(र-अ)र्चन- -नाः भ २, ३०.  
त्यक्त-संवेदन- -नः अन्न ४,  
५७ : ६३.  
त्यक्त-सङ्ग- -ङ्गः नाप ६, १; २९.  
त्यक्त-सर्व-परिग्रह- -हः गी ४,  
२१.  
त्यक्त-सर्व-प्रिया(य-अ)प्रिय-  
-यः नाप ५, १३.  
त्यक्त-सोम-वार-व्रत- -ताः  
भ २, ३०.  
त्यक्त-हस्त-स्थ-कौस्तुभ-  
-भाः महा ६, २०.  
त्यक्ता(क्त-अ)विद्य- -द्यः वरा  
३, २८; अन्न ४, ४.  
त्यक्ता(क्त-अ)शेष-परिग्रह-  
-हः शु ३, १९.  
त्यक्ता(क्त-अ)सु- -सवः भ २,  
१५.

त्यक्ता(क्त-अ)हंकार- -रः भ २,  
४, ६.  
त्यक्ता(क्त-अ)हंकृति- -तिः महा  
६, ६९.  
त्यक्तै(क्त-ए)षण- -णः शा ६.  
त्यक्तुम् भव १, ५३; गी १८, ११.  
त्यक्तु-काम- -मः वरा २, ३७.  
त्यक्त्वा मै १, ५; मैत्रि १, ४; मैत्रे  
२, २८; आरु ५; वृजा ५, १०;  
अना ४; काला २०; ते ३, ३;  
भं २, ४, ४; नाप ३, ३२.  
त्यजत्- -जतः महा ५, ६२; -जन्  
महा ४, ८८; शा २६; गी ८, १३.  
त्यजन-  
त्यजनीय- -यम् शि ७, १२१.  
त्यज्य<sup>५</sup> ते ४, ३९; ६, ११०.  
त्याग- -गः पदं ४<sup>६</sup>; ते १, १५;  
१९; निर्वा २९८:८; प्रा ४, १;  
भव ५, २०; गी १६, २; १८, ४;  
९; -गम् नाप ४, २५; महा ६,  
४६<sup>३</sup>; गी १८, २; ८; -गस्य गी  
१८, १; -गात् सांसू ३, ७५; गी  
१२, १२; -गे गी १८, ४; -गेन  
कै १, ३९<sup>३</sup>; मना २, १२, ३९<sup>३</sup>;  
१अव ५; स ३७९ : १०.  
त्याग-फल- -लम् गी १८, ८.  
त्याग-वियोग- -गाभ्याम् सांसू  
४, ५.  
त्यागा(ग-आ)दान-परित्या-  
गिन्- -गी महा ६, १५.  
त्यागिन्- -गिनः आश्र ४; -गी  
भव १, ५३; गी १८, १०; ११.  
त्याज्य, ज्या- -ज्यः सु २, २, ३१;  
सार २३५:१४; १कौल ४ : २;  
-ज्यम् ते १, ४१; ४, २७; ५, ८०;  
६, ११; भ १, ६<sup>३</sup>; २, १७<sup>३</sup>; गी  
१८, ३<sup>३</sup>; ५; -ज्या नाप ३, ५०;

a) व्यु. ? = बहिर्द्वार- । b) वैपश् यद. । c) ऋ २, ३२, ४ । d) वैतु. शं. प्रभृ. = आत्मन्->आ<sup>०</sup> इति पदमिति । e) 'आत्मानम्' इति सात. । f) 'त्यजताम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । g) पा ७, १, ३८ । h) 'त्यागी' इति अज्या. । i) नेयत्या<sup>०</sup> इति अज्या. । j) तैआ १०, १०, ३ ।



महा ५, ९५; ज्याः सार २३५;  
७; शि ७, १०५.

त्यद्-

त्य- त्यम् वृ २, ३, ३, ५; त्यस्य<sup>b</sup> वृ  
१, ३, २४; २, ३, ३, ५<sup>c</sup>.

त्यद्- त्यत् तै २, ६, १; वृ २, ३, १०;  
३, ९, ९<sup>d</sup>.

त्य- त्यः कौ ४, ७<sup>e</sup>.

त्रपु<sup>f</sup>- पु, पुणा छां ४, १७, ७९<sup>g</sup>.

√त्रस्, > त्रासि, त्रासय-त्रासय लां  
२१५: २२.

त्रसत्- सताम् गौ ४, ४२; ४३.

त्याग-त्यागिन्-त्याज्य- √त्यज् द्र.

त्रय-त्रयस्-त्रयी-त्रि-द्र.

त्राण-त्रागन-, √त्राणि √त्रै द्र.

त्रि'-

तिसृ<sup>h</sup>-सृभिः वृ ३, १, ७; वृजा

४, १०; जाबा १७; प्रा १, १;

-सृष्टु मैत्रि ६, १०; जाद ४, ९;

-स्रः क १, १, ९; प्र ५, ६; तै १,

५, १; छां ४, १७, २; ६, ३, २-४;

४, ७; ८, ६; वृ ३, १, ७; ८<sup>i</sup>; १०<sup>j</sup>;

कौ २, ८; त्रि १, ५.

त्रि-त्रयः ऐ ३, १२<sup>k</sup>; छां १, ८, १;

२, २१, १; २३, १; वृ १, ५, ४, ५;

१६; ३, ९, १<sup>l</sup>; ८<sup>m</sup>; अना १०;

मना २, १२, २९<sup>n</sup>; मं २, १, ६<sup>o</sup>;

शां १, १<sup>p</sup>; सु २, २, ११; वपू

३, १<sup>q</sup>; त्रयः-त्रयः क्षु ६; ७;

त्रयाणाम् क १, १, १०; वृजा

४, २९; योत १३५; योत १,

७; त्रिता ४, ५; सार २८२: १९;

सांसू २, ३०; वसू १, ४, ६; त्रिभिः

क १, १, १७; वृ १, ३, २२; श्वे ६,

३; अना २९; महा ५, १४९;

योशि ६, ७२; अन्न ४, ८४; नाप

७; सु २, २, १३; २प्र ३६: ६;

त्रिभिः-त्रिभिः छां २, १०, ३;

त्रिष्टु वृ ५, १४, १; गौ १, ५; मैत्रि

७, ११; वृ २, १३<sup>r</sup>; कै १,

१८; शां १, ७, १४; योशि १,

४३; पप ४१९: ७<sup>m</sup>; १संन्या १,

१<sup>n</sup>; त्री वृ ३, ९, १<sup>o</sup>; त्रीणि छां

६, ३, १; ८, ३, ५; वृ १, ५, १; २;

गर्भ ५<sup>p</sup>; मना १, ४९<sup>q</sup>; कौ २,

७; तै १, ४; वृ २, १०९<sup>r</sup>; त्रिन्ना

२, १२७; वोचू ७२; ७४<sup>s</sup>; वा

३७; त्रीणि-त्रीणि छां २, २१, ३;

त्रीन् क १, १, ९; वृ ५, १४, ६;

६, ४, १६; वृ १, ६; वृ ३, १०;

श २४; १संन्या २, २; अव्य ५;

गा १९; शौ ५३: २०; गौ १४,

२०; २१<sup>t</sup>.

तृ(त्रि-तृ)च<sup>u</sup>-चः सूता २, ११;

-चैन सूता १, ३; ४, ११; ६, १०.

तृच-न्यास-सः सूता ३, १२

तृ-तीय, या<sup>v</sup>-यः क १, १, २०;

मां ५; छां २, २३, १; हं १६;

वृ २, २; ४, ६; वृ १, ८; ३, ४;

नाप ८, १३; त्रिवि १, ९; राउ

३, १; महा ५, ९२; ६, ५७; योशि

१, १०३; सावि १०; यो १,

४१; सर ३, ३०; तु ८; सूता

२, १७; ३, १२; नापू १, ५, ५,

६; गार ४०६: ५; ९; वपू १,

७<sup>w</sup>; वउ १, १०; -यम् क १, १,

४९<sup>x</sup>; १९; ऐ ४, ४; छां ३, ८,

१; ५, १०, ८; वृ १, २, ३<sup>y</sup>; ४, ३,

९; ५, १४, ६; श्वे १, ११; अशि

७, ९; वृजा ३, ३४; वृ १, ३;

८; २, ४; ६; नाप ६, १; ९, १०<sup>z</sup>;

रापू ४, ३५; १संन्या २, ५९;

त्रिता १, ४५; ५०; ६३; ६६;

७१; २, ६; १७; ४०; ५२; यो १,

५९; गोपू ११; आच ७; दत्ता

१, ३; ५; ६; सौ ३, १; योरा ९;

सूता १, ३०; ऊ ६४: ६; नापू

६, २; वृष ८४: ३; ७; ११; ८५:

६; सार २२५: ५; २६४: १६;

२८१: १८; गार ४०७: ५;

११; गु ८०; विद्या १; काम ६;

पित्र ६, ८; वपू १, ६; २, १; २;

वसू ३, ४, ४७; -यया मना २,

७९<sup>aa</sup>; मुह १, ३; २प्र ३२: १४;

-यस्य वृ १, ९; ११; वृ ३,

१; शौ ५३: १; वृष ८४: १५;

१९; ८५: ३; -यस्याम् छां ८,

५, ३; -या मां ११; वृ ३, १, ७;

१०; मैत्रि ६, ३३; अशि ५,

११; अ १<sup>ab</sup>; ३; वृजा ७, ७; सौ

६; वृ २, २; वृ ३, १; ४; काला

१५; त्रिता ३, ६; नाद ९; महा

५, २४; ९५; अशि २९; अन्न

५, ८२; वरा ४, १<sup>ac</sup>; जाबा २४;

सौ १, २; ३; २प्र ३४: २२; गार

४०६: ७; गु ३; पित्र ६, १२;

-यात् अव्य ५; यो २, ३४; गोपू

३०; -यानि त्रिता १, ११; -याम्

छां ५, २१, १; ६, ११, २; अशि

१५; १९; २८; गोउ २६; सौ

२, ८; -यायाम् नाद १३; -ये

हं १८; मना १, ४९<sup>ad</sup>; वृजा ३,

२३; ध्या १२; अक्ष ५; त्रिता

१, ६०; यो १, ५५; म ४८:

१७; सूता ५, ६; राधा २, ४;

a) सना. । वैप१ यद्र. । b) 'तस्य' इति निसा. । c) 'त्यम्' इति आन. (वैतु. शं. प्रभु.) । d) 'तत्'

इति निसा. । e) तु. सस्थ. टि. ज्यायस-> -यान्. । f) वैप१ यद्र. । g) जैउ ३, ४, ३, ३ । h) पा ७, २, ९९ ।

i) ऋ ४, ५८, ३ । j) 'तिष्ठः' इति निसा. । k) 'त्रिः' इति अज्या. । l) ऋ १, १५४, २ । m) 'चतुर्षु' इति अज्या. ।

n) मा ३२, ९ । o) मा ८, ३६ । p) 'त्रयः' इति अज्या. । q) पावा ६, १, ३७ । r) पा ५, २, ५५ । s) तैत्रा ३, ११,

८, १ । t) 'तृतयम्' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. श्वे १, ११; अज्या.) । u) तैत्रा १०, ५, १ । v) मा ३२, १० ।

सार २३९ : २३; मृ १७; १९;  
ब्रसू ३, १, १८; -येन वृषू २, ४;  
पि ९; सूता २, १७; वपू २, २.

तार्त्ती(य>)या- -या  
विद्या १.

तृतीय-क, का- -कः अञ्ज १,  
१४; यो १, २; -कम् महा ४,  
५८; यो ३, ९; -का ध्या ५२;  
विद्या १.

तृतीय-कला-रूप- -पः  
गुणो ४२० : ८.

तृतीय-काण्ड- -ण्डे सु२९३:  
१२.

तृतीय-काल- -ले योचू १२१  
तृतीय-कूट(ट>)टा- -टाम्  
विद्या ३.

तृतीयकूटा(ट-अ)क्षर-  
-रः विद्या १.

तृतीय-(ग>)गा- -गा योचू  
१६.

तृतीय-चक्र(क-ई)इत्र(र>)-  
सी- -री आध ३९६ : ५.

तृतीयनामादिक- -कम्  
सूता ६, ४.

तृतीय-पद- -दात् गोपू२९.  
तृतीय-ग्रन्थ- -श्ले सु २९३:  
१२.

तृतीय-भाग- -गे शि २, ३.  
तृतीय-याम- -मे रा ४२५:  
८.

तृतीय-रेखा- -खा ध्या ९३,  
१४.

तृतीयरेखा-वलय- -यम्  
ध्या ९३, १४.

तृतीय-शब्दा(ब्द-अ)वरो-  
ध- -धः ब्रसू ३, १, २१.

तृतीय-श्रेणी- -ण्याम् सार  
२७० : ७.

तृतीय-सवन- -नम् छां २,  
२४, १; १६<sup>b</sup>; ३, १६, ४; ५<sup>c</sup>;  
६; काला १६; जाबा २५; शौ  
५३:७; -नस्य छां २, २४, ११.

तृतीया(य-अ)क्षर- -रः ता  
२, १; राउ १, २.

तृतीया(य-अ)ङ्ग-स्थित-  
-तः योचू १२१.

तृतीया(य-अ)न्ता(न्त-अ)-  
र्ध- -धंस्य वृषू १, १३.

तृतीया(य-अ)न्त्य- -न्त्यम्  
वृषू १, १५.

तृतीया-रूप- -पः हंपो ९.  
तृतीया(य-अ)वरण- -णम्  
रार ३, १.

त्रय- -यम् क १, १, १८; छां  
३, १७, ६; वृ १, ६, १; ३<sup>c</sup>; ५,  
२, ३; श्वे १, ७; ९; वृजा ७, ८;  
वृउ १, १०; ११; सुवा ३; ते ६,  
२७; नाप ३, ५७; ८, १५; ९, ६;  
८; योशि ४, १२; अञ्ज ४, ८२;  
त्रि ५<sup>d</sup>; म २, २; सु २, २, ११;  
१५; कालि ४०३ : १४; वउ ४,  
२६; भव २, ६; पित्र ६, १०;  
योसू ३, ४; ७; गी १६, २१;  
-यस्य सांसू ५, ११८; सांका  
२९; ३०; ३३; -याः वृ५, २, १.

त्रयी<sup>e</sup>- -यी छां १, १,  
९; २, २१, १; २३, २; वृ ५, १४,  
२; ६; ते २, ३; सी २१; २३;  
जा ४<sup>f</sup>; मना २, १४<sup>g</sup>; ७९<sup>h</sup>;  
या १, १; नार ५<sup>i</sup>; पा ५, ८<sup>j</sup>;  
गा ४; २०; -यीम् छां १, ४, २;  
४, १७, ३; -य्याः छां ४, १७, ८.

त्रयी-धर्म- -र्मम्  
गी ९, २१.

त्रयी-मय- -यम् सी  
२१; पा ५, ८; बि २२.

त्रयीमयी- -यी  
त्रिता १, ९.

त्रयी-रूप- -पेण सी  
३२.

त्रयी-विद्या- -द्यायै  
कौ २, ६९<sup>i</sup>.

त्रय्य(यी-अ)गिन-  
-नीनाम् वृजा ४, ३६.

त्रया(य-अ)क्षर- -रम् ध्या  
३६<sup>j</sup>; -रे १योत १३५<sup>k</sup>; २योत  
१, ६.

त्रयस्<sup>l</sup>-  
त्रयस्-त्रिशत्- -शत् वृ ३,  
९, १; २<sup>m</sup>.

त्रयस्त्रिंश<sup>n</sup>- -शौ वृ ३,  
९, २.

त्रयो-दशन्- -श अना ३४;  
तु १०.

त्रयोदश-क- -कः  
महा १, १.

त्रयोदश-मुख-  
-खम् रुजा २, १५.

त्रयोदश-विध- -धम्  
सांसू २, ३८; सांका ३२.

त्रयोदश-सोम-  
मुख- -०ख लां २१६ : १२.

त्रयोदशा(श-अ)र्ण-  
-र्णः रार २, ५७; -र्णम् रार २,  
५८.

त्रयोदश- -शः छां १,  
१३, ३<sup>n</sup>; -शम् गार ४०७ : ७;  
१३; -शो अक्ष ५.

a) वा. १। b) ०यं स० इति निसा.। c) पा ५, २, ४२; ४३। d) 'पुरम्' इति तान्त्रि.। e) 'त्रय्या' इति मुपा. यनि. सु-शोधः। f) तैआ १०, १३, १। g) तैआ १०, ६३, १। h) पा. ? 'तया' इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु.का ६)। i) 'त्रय्ये विद्यायै' इति शांआ ४, ६। j) 'त्रिरक्षरम्' इति आन.। k) 'त्रियक्षरे' इति अज्या. संटि.। l) पा ६, ३, ४८। m) पा ५, २, ४८; ६, ४, १४३। n) ०शस्तोमः इति निसा.।

त्रयोदशी-शी  
नाप८, १; श्याम् रा४२५: १७.  
त्रयोदशा(श-अ)ह-  
त्रयोदशाहिक<sup>a</sup>-  
-कम् व ४३३: १९.  
त्रयो-विंशत्- -शत् वृजा  
३, १४.  
त्रयो-विंशति- -ति: शारी८.  
१त्रयोविंश<sup>b</sup>- -शम् गार  
४०७: ९; १५; -शे अक्ष ५.  
२त्रयोविंश<sup>c</sup>-  
त्रयोविंशा(श-अ)-  
क्षर- -र: रार २, ७०.  
त्रि-ऋच्- -ऋचाम् वि २२.  
१त्रि-क<sup>d</sup>- -केण मैत्रि ४, ४.  
त्रि-कपाल<sup>e</sup>- -लम् क६ १; कशु  
२, ३.  
त्रि-कर्म-कृत्- -कृत् क१, १, १७  
त्रि-कलश- -शै: अव्य ६.  
१त्रि-काल<sup>f</sup>- -लम्<sup>g</sup> योशि १,  
७७; सू ३२; भ १, ११; शि  
५, १६; -लात् श्वे ६, ५; -ले  
वरा ३, ९; -लेषु भ १, ७.  
त्रिकाल-ज्ञान-कारण- -णम्  
योशि ५, ४८.  
त्रिकाल-स्नान- -नम् पप  
४१९: २.  
त्रिकाला(ल-अ)तीत- -तम्  
मां १; वृपू ४, ३; वृउ १, २;  
राउ ३, १; विद्या १; वउ १, ३.  
त्रिकाला(ल-अ)मल-  
दर्शन- -न: महा ५, १५९.  
त्रिकालो(ल-उ)दित- -तम्  
नाप ८, ३.  
२त्रि-काल, ला<sup>h</sup>- -लम् सांका  
३३; -ला: पाशु १, २०.<sup>i</sup>  
त्रि-कु(टि>)टी-टीम४९: १५

त्रि-कूट, टा- -टम् ब्रवि ७३;  
-टा विद्या १; -टाम् त्रिता १, ७९.  
त्रिकूट-त्रया(य-आत्मक>)-  
त्मिका- -का विद्या १.  
त्रिकूटा(ट-आख्य>)ख्या-  
-ख्याम् त्रिता १, ८४.  
त्रिकूटा(ट-आ)दि-चारि-  
(न>)णी- -णीम् त्रिता २, २४.  
त्रिकूटा(ट-अ)वसान- -ने  
त्रिता १, ३.  
त्रि-कोटि-योजन-विस्तीर्ण-  
-र्णम् राधा १, १२.  
१त्रि-कोण<sup>f</sup>- -णेषु तारा ८४:  
३; ४.  
२त्रि-कोण<sup>h</sup>- -णम् १योत ९२;  
त्रिब्रा २, ५६; योचू १०; शां १,  
४; त्रिता २, ३७; ३९; जाद ४,  
२; सूता ५, ३; नापू ६, २; कालि  
४०१: ७; ४०३: २; श्या ८<sup>i</sup>;  
वपू २, ४; -णे त्रिता ३, २५.  
त्रिकोण-ग- -गम् रापू ४,  
३२.  
त्रिकोण-दैवत- -तस्य गुषो  
४२०: १२.  
त्रिकोण-मण्डल- -लम्  
योशि १, १७७; ५, १४.  
त्रिकोण-रूप- -पम् रापू  
४, ११.  
त्रिकोणरूपि(न>)णी-  
-णीम् त्रिता २, ९.  
त्रिकोण-शक्ति- -क्ति: त्रिता  
१, २१.  
त्रिकोण-षट्कोण-वसुपन्न-  
वृत्ता(त-अ)न्तर(>) पी  
४२१: ६.  
त्रि-कोणक- -कम् योशि १,  
१६८; ५, ५; वरा ५, ५०.

त्रि-खण्ड(>)ण्डा<sup>iii</sup>- -ण्डा  
त्रिता ३, १५.  
त्रिखण्ड-मुद्रा- -द्रा आध  
३९४: १९; ३९९: १६.  
त्रि-गर्भ- -र्भम् शि ४, १८.  
१त्रि-गुण<sup>f</sup>- -णम् मैत्रि ६, १०<sup>२</sup>;  
पा१, ७; -णा: १योत १३५; त्रि५.  
त्रैगुण्य- -ण्यात् सांका  
१४.  
त्रैगुण्य-विपर्यय-  
-यात् सांका १८.  
त्रैगुण्य-विषय- -या:  
गी २, ४५.  
२त्रिगुण, णा<sup>i</sup>- -ण: शि २,  
१; -णम् मै ३, ३; शि ४, २३;  
श्या २; -णा योचू १०४.  
त्रिगुण-विस्तर- -रम् शि  
२, ४.  
त्रिगुण-तस्(>) सांका १६.  
त्रिगुण-भेद-परिणाम-  
त्रिगुणभेदपरिणाम-स्व-  
-स्वात् मैत्रि ६, १०.  
त्रिगुण-रहित- -त: कृपु २६;  
-तम् शु १, १८.  
त्रिगुण-स्व-रूप- -पम् पत्र२  
त्रिगुणा(ण-अ)चेतन-  
त्रिगुणाचेतन-स्व-  
त्रिगुणाचेतनत्वा-  
(त्व-आ)दि- -दि सांसू १, १२६.  
त्रिगुणा(ण-अ)तीत- -त:  
नाप ७.  
त्रिगुणा(ण-आ)त्मक- -क:  
भव४, ६; -कम् पा५, ८; वपू १, ५.  
त्रिगुणात्मिका- -का भव  
४, ५.  
त्रिगुणा(ण-आ)दि-विपर्यय-  
-यात् सांसू १, १४१; सांका १७.

a) ठ>इक: प्र. उसं. (पा ४, ३, ११)। b) तु. टि. त्रयस्त्रिंश-। c) =त्रयो-विंशति- इति कृत्वा  
२एकत्रिंश- इत्यनेन स-न्यायता द्र.। d) पा ५, १, ५८। e) पा ४, १, ८८। f) द्विस.। g) वा. क्रिवि. द्र.।  
h) बस.। i) =मुद्राविशेष-। j) पावा ५, २, ३७।



त्रिगुणा(ण-आ)धार- -रम्  
वृजा ४, २९.

त्रिगुणित, ता- -तानि कालि  
४०१:२<sup>a</sup>; -ताम् कालि ४०१:१<sup>b</sup>

त्रिगुणी/कृ

त्रिगुणी-कृत-

त्रिगुणीकृत-प्रेषो-

(ष-उ)च्चारण- -णम् पप ४१८:  
२६<sup>o</sup>.

त्रिगुणी-कृत्य पत्र २<sup>३</sup>.

त्रिगुणो(ण-उ)पेत- -तम्  
पत्र २.

३त्रि-गुण, णा<sup>d</sup> - -णः श्वे ५, ७;  
पा २, ३; भव २, २३; -णम् ते  
१, ६<sup>o</sup>; ५, ८<sup>२</sup>; सूता १, २५; वि  
१४; २२; भव २, १३; सांका  
११; -णात् सांसू १, १३६; -णानि  
पै १, १७; -णाय पा ५, ८.

त्रि-चतुर-

त्रिचतुर-वार<sup>१</sup> - -रम् जाद  
५, १०.

त्रिचतुर-वासर<sup>१</sup> - -रम् जाद  
५, १०.

त्रिचतुस्-त्रिचतुः-सप्त-त्रि-  
चतुर-मास-पर्य(रि-अ)न्त<sup>१</sup>-  
-न्तम् शां १, ५.

त्रि-चत्वारिंशत्-

त्रिचत्वारिंश- -शे अक्ष ५.

१त्रि-जगत्<sup>१</sup>-

त्रिजगत्-तृण- -णम् अन्न  
५, १२.

त्रिजगत्-सृष्टि-स्थिति-

प्रलय-कर्म-कृत्- -कृत् ध्या  
२५<sup>h</sup>.

त्रिजगत्-सृष्टि-स्थिति-

व्यसन-कर्म-कृत्- -कृत् मं  
५, १, ५

२त्रि-जगत्<sup>d</sup> - -गत् वि २२.

त्रि-उद्योतिसू- -तिषम् त्रिता  
२, ३१.

त्रि-गय(न>)ना- -ना व ४२७:

९; -नाम् व ४२७: ११.

त्रि-ण(<न)व<sup>१</sup>-

त्रिणव-त्रयस्त्रिंश- -शौ मैत्रि  
७, ५<sup>i</sup>.

त्रिणवत्रयस्त्रिंश-स्तोम-

-मौ २प्र ३३: ७९<sup>k</sup>.

त्रि-णा(<न)चिके<sup>१</sup>-

त्रिणाचिका(क-आ)दि-यो-  
गा(ग-अ)न्त<sup>m</sup> - -न्ता: महा ४,  
७४; वरा २, ५५.

त्रि-णा(<न)चिकेत<sup>१n</sup> - -तः  
क १, १, १७; १८; -ता: क १,  
३, १.

त्रि-णे(<ने)त्र, त्रा<sup>d</sup> - -त्रम् हं १४<sup>o</sup>

-त्राम् व ४२६: १२; ४२७: २.

१त्रि-दण्ड- -ण्डम् जा ६; नाप  
३, ८६; या २, १; शा ७; १०;  
भव १, ३६.

२त्रिदण्ड<sup>p</sup> - -ण्डः नाप ५,  
१; १संन्या २, १३.

त्रिदण्ड-कमण्डलु-शिक्य-  
पक्ष-जल-पवित्र-पात्र-पादुका-  
(का-आ)सन-शिखा-यज्ञोप-

वीत- -तानाम् आश्र ४.

त्रिदण्ड-कमण्डलु-शिक्य-  
पक्ष-जल-पवित्र-पादुका(का-आ)-  
सन-शिखा-यज्ञोपवीत-कौपीन-  
काषायवेष-धारिन्- -रिणः  
आश्र ४.

त्रिदण्ड-कमण्डलु-शिखा-  
यज्ञोपवीत-काषायवस्त्र-धा-  
रिन्- -रिणः भि ३.

त्रिदण्डिन्- -ण्डी नाप ३,  
५५; ६, ५; गोच ६७: २१.

त्रि-दल<sup>d</sup> - -ले वि २७.

त्रि-दश<sup>d</sup> - -शः यो २, ४१;  
-शान् गु ६४.

त्रिदश-मुकुट-कोटि-रत्न-  
संघटित-चरणा(ण-अ)रवि-  
(न्द>)न्दा- -न्दे व  
४३१: ९.

त्रिदश-स्थान-भेद-

त्रिदशस्थानभेद-तत्स-

(>) वृजा ४, ३.

त्रिदशा(श-आ)हार- -रम्  
शां १, ७, ४८; ५०.

त्रि-दिन- -नम् वृजा ३, २१.

त्रि-दिव- -वे प्र २, १३.

त्रि-दश- -द्वक् वि २२.

त्रि-दैवत्य<sup>d</sup> - -त्यम् शि ७, १३४.

त्रि-धा छां ७, २६, २; गौ १,  
१-४; मै ४, ५; मैत्रि ५, २; ६,  
३८<sup>q</sup>; मना २, १२, २९<sup>r</sup>;

३९<sup>s</sup>; अशि ६, ५; योचू ८६; शौ  
५३: १६९<sup>r</sup>; २०९<sup>q</sup>; पा १, ७;

a) °तम् इति तान्त्रि. । b) °णाम् इति तान्त्रि. । c) °तप्रै° इति अज्या. । d) बस. । e) °णस्थानम्  
इति अज्या. संदि. । f) द्विस. । g) =२८मासावधि- । h) °तिव्यसनकर्म° इति निसा. । i) =स्तोमविशेष- ।  
j) °वस्त्र° इति सात. । k) तृणवत्° इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. गोत्रा १, १, २१) । l) बस. समासान्तः कप् प्र.  
[पा ५, ४, १५४ (वैतु. उन्न. इदं प्राति. एउ. संभेदुकः)] । उप. =अग्नि- (तु. नभा. आंच, पार. नार) ।  
m) बस. + बस. > दस. । n) बस. (तु. मनुकु ३, १८५) । उप. =नाचि- (तु. एपू. टि.) + केत- (=दीप्ति- वा चय- वा)  
> पक्ष. [वैतु. क १, १, १६; १९ यत्र यनि. <नचिकेतस्- (यद्र.) इतीव कृत्वा श्राव्येत (तु. शं. प्रसृ. अनु वैप२ अपि)] ।  
o) 'तु नेत्रम्' इति निसा., 'त्रिनेत्रमुखः' इति आन. । p) अर्द्धाद्यच् प्र. (पा ५, २, १२७) । q) तु. सस्थ. टि.  
दि->द्विस् । r) ऋ ४, ५८, ३ । s) ऋ ४, ५८, ४ ।

त्रिधा-त्रिधा पा १, ७.

१त्रि-धातु<sup>a</sup>-

त्रैधातवीय, या<sup>b</sup>- -याम् जा  
४; नाप ३, ७७; पप ४१८: ९;

या १, १; -यै: नाप ३, ७७°.

२त्रि-धातु<sup>d</sup>- -तुम् ते १, ६°.

१त्रि-धामन्<sup>e</sup>-

त्रिधाम-साक्षिन्- -क्षिणम्  
वरा २, १७.

२त्रि-धामन्<sup>d</sup>- -मा ते १, ४.

\*त्रिन्-

त्रि-शत्- -शत् शा ३१<sup>३</sup>.

त्रिंशत्-सार्धा-

(र्ध-अ)ङ्गुल- -लः अना ३३<sup>१</sup>.

त्रिंशद्-अक्षर-

-राणि अव्य ५.

त्रिंशद्-वर्णा-

(र्ण-आ)त्मक- -कः रार २, ८०.

त्रिंश- -शे अक्ष ५.

त्रि-नेत्र, त्रि<sup>d</sup>- -त्रः द ५; -त्रम्

वृजा ४, २९; द ३; रार २, ३२;

-त्राम् दे १५; त्रिता १, ८३<sup>६</sup>.

त्रि-प(थ<sup>u</sup>>)था- -था: त्रि १.

त्रि-पद- -दम् मैत्रि ६, ४.

त्रि-परिच्छेद-वर्जित- -तम्  
कर २७.

त्रि-पाद(>)द्- -पात् छां ३,

१२, ६९<sup>१</sup>; मैत्रि ६, ४; ७, ११;

मुद्र १, ४९<sup>१</sup>; बि २३; त्रिवि ४,

९<sup>१</sup>९<sup>१</sup>; व ४३४: ४.

त्रिप(>)दा<sup>k</sup>- -दा मना

२, ३५९<sup>१</sup>; शां ३, १; लि ३११: ८.

त्रिप(>)दी<sup>m</sup>- -दी वृ

५, १४, ७; गा २२.

त्रिपाद्-विभूति-नारायण-

-णस्य त्रिवि ३, ७.

त्रिपाद्-विभूति-वैकुण्ठ-

स्थान- -नम् त्रिवि ७, २०.

त्रि-पाद- -दम् सुवा १; -देन  
मुद्र २.

त्रिपादा- -दा गार ४०६: २.

त्रिपादी<sup>d</sup>- -द्या: शि ६,  
२६८; -द्यो: वउ ६, ७.

त्रिपादि-क, का- -कम्

शि ६, २६९; -काम् शि ६, २६७.

त्रि-पीठ-मध्य-वर्ति(न्>)-

नी- -नीम् त्रिता १, ८५.

त्रि-पु(ट>)टी- -ट्याम् मं २,  
३, १.

त्रिपुटी-रहि(त>)ता- -ता

शां १, ११.

त्रि-पुण्ड्र<sup>o</sup>- -ण्डम् वृजा ४,

१०; १७; २९; ५, ७; १५; नाप

७<sup>३</sup>; म २, २; जाबा २५; सिसि

३८१: १६; २०; -ण्डस्य वृजा

७, ५<sup>३</sup>; ६; ७<sup>३</sup>; सिसि ३८०: १३;

३८१: १७; -ण्डान् वृजा ४, १७°.

त्रिपुण्ड्र-क- -कम् वृजा ४,

११; २९; ३४; ३५; -कस्य वृजा

७, ६<sup>३</sup>; -कै: शि ५, २०१<sup>१</sup>.

त्रिपुण्ड्र-धारण- -णम् वपं

३१२: २३; -णस्य काला ११;

जाबा १९.

त्रिपुण्ड्र-धारिन्- -री नाप

५, १; १संन्या २, १३.

त्रिपुण्ड्र-घृत- -तः रु ४.

त्रिपुण्ड्र-विधि- -धिम वृजा

७, १; काला ३; १७; म १, १.

त्रिपुण्ड्रा(रुद्र-आ)दि-

-दीनि वृजा ४, २८.

त्रिपुण्ड्रा(ण्ड-उ)द्भूलन- -ने  
सिसि ३८१: १.

त्रिपुण्ड्रोद्भूलन-द्वेष-

-ष: वृजा ५, १०<sup>१</sup>.

त्रिपुण्ड्रो(रुद्र-ऊ)र्ध्वपुण्ड्र-

धारिन्- -री नाप ५, १; १संन्या  
२, १३.

१त्रि-पुर<sup>a</sup>- -राणि त्रिता १, ३.

त्रिपुर-जननी- -नी आथ  
३९९: १; १४.

त्रिपुर-वासि(न्>)नी- -नी

आथ ३९६: २२; ३९९: १४;

-नीम् त्रिता २, २१; -न्या त्रिता

२, ५६.

२त्रि-पुर<sup>d</sup>- -रम् श १२; हे ३.

त्रिपुर-वधा(ध-अ)र्थ-

-र्थम् रुजा १, १.

त्रिपुर-हर-ब्रह्मचारि(न्>)-

णी- -ण्यै व ४३१: ७.

त्रिपुर-हर-ब्रह्मण्ड-ना-

(यक>)यिका- -कायै व  
४३१: ७.

त्रिपुरा(र-अ)न्तक- -कम् व

४३०: १५.

३त्रि-पुर(>)रा<sup>a</sup>- -रया त्रिता

२, ५०; -रा त्रिता १, ४; ९; २०<sup>३</sup>;

मु १, १, ३७; आथ ३९४: २१;

३९८: १६; व ४२७: १०;

-राम् त्रिता १, ७९; २, २५; २८;

२९; ३०<sup>३</sup>; ३२.

त्रैपुर- -रम् त्रिता १,

५५; ४, १; ५, २; त्रि ७.

a) द्विस. । b) पा ४, २, १३८; वैतु. भा. प्रमृ. अन्यथा प्रकल्पकाः । c) 'त्रय्येवम्' इति अज्या. ।

d) वस. । e) °तु इति आन. । f) उप. सार्धा° = सार्धभूता° = सहभूता° (वैतु. उत्र. अर्थ- = अवयव- इति) ।

°पर्वाङ्गुलप्राणः इति निसा. आन. (तु. नादी.) च मुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. अज्या.) । g) °गे इति अज्या. । h) पा ५, ४,

७४ । यद्वा उप.पथ- इति । i) ऋ १०, ९०, ३ । j) ऋ १०, ९०, ३; ४ । k) पा ४, १, ९; ६, ४, १३० (वैतु. PW. <°द- इति) ।

l) तैआया १०, ३५ । m) पा ४, १, ८ । n) नमा. = त्रिपाई । o) °ण्डम् इति अज्या. । p) °ण्डस्य इति अज्या. ।

q) °ण्डकैः इति मुपा. यनि. सु-शोधः । r) °ने द्वे° इति अज्या. । s) = देवी- वा तदाख्योपनिषद्विशेष- वा ।

त्रिपुरी-री त्रिता  
२, १; -र्याः त्रि १६<sup>०</sup>.

त्रिपुरा(र-अ)ष्टक-

-कम् त्रिता ४, २.

त्रिपुर-भैरवी- -वी आथ  
३९९: १५.

त्रिपुर-मालिनी- -नी आथ  
३९९: १४; -न्या त्रिता २, ६०.

त्रिपुर-सिद्धि- -द्धि त्रिता  
२, ६२.

त्रिपुर-सुन्दरी- -री आथ  
३९६: ५; ३९९: १३; -र्या त्रिता  
२, ५४.

त्रिपुरा-तपन<sup>b</sup>- -नम् सु १,  
१, ३७.

त्रिपुरा-देवी- -व्यै व ४६३:  
१६.

त्रिपुरा(र-अ)भि(ध>)धा-  
-धा त्रिता १, २.

त्रिपुरा-मनु- -नो: कालि  
४०३: २१.

त्रिपुरा-महा-लक्ष्मी-  
-क्ष्म्या त्रिता २, ५८.

त्रिपुरा-मालिनी- -नी आथ  
३९८: २.

त्रिपुरा(र-अ)म्बा- -म्बया  
त्रिता २, ६४.

त्रिपुरा-विद्या- -द्याम् त्रिता  
२, ७.

त्रिपुरा-श्री- -श्री: आथ  
३९७: १२; ३९९: १४.

त्रिपुरा-सिद्धि- -द्धि: आथ  
३९९: १४.

त्रिपुरे(र-ईश>)शी- -शीम्  
त्रिता २, १५.

त्रिपुरे(र-ई)श(र>)री- -री

आथ ३९५: १७; -रीम् त्रिता  
२, ८; -र्या त्रिता २, ५२.

त्रिपुरेश्वरी-विद्या- -द्याम्

त्रिता २, २२.

त्रि-पुरुष- -पम् इ १६: १२; १४.

त्रि-प्रका(श>)शा- -शा: त्रि  
५१<sup>०</sup>.

त्रि-ब्रह्मन्- -ह्य ध्या ३६.

त्रि-भाग- -गेन शि २, ११.

त्रि-भुवन-धरा- -ध(र>)रा-

-०रे व ४३१: १७.

त्रि-भौम<sup>d</sup>- -मम् शि २, १६;  
६, १३५.

त्रि-मल<sup>d</sup>- -लम् गर्भ १.

त्रि-मात्र<sup>d</sup>- -त्र: हं ६; अना  
३१<sup>०</sup>; ब्रवि ३९; -त्रम् ध्या ३६;

-त्रेण प्र ५, ५.

त्रि-मार्ग<sup>d</sup>- -र्गम् ध्या ३६<sup>१</sup>.

त्रि-मार्ग-भेद- -दम् श्वे १, ४;  
नाप ९, ३.

त्रि-माला- -ला रुजा १, २३.

त्रि-मास<sup>e</sup>- -सम् वपू २, ५;

-सात् शां १, ७, ४६.

त्रैमासि(क>)की- -की  
त्रिता २, १२४.

त्रिमासिक- -कम् व ४३३:  
१९.

त्रि-मुख<sup>d</sup>- -खम् रुजा २, ३;

त्रि १०१<sup>h</sup>.

१ त्रि-मूर्ति<sup>g</sup>-

त्रिमूर्ति-रूप- -पम् वि १५.

त्रिमूर्ति-लक्षण-लक्षित-

-तम् पत्र २.

त्रिमूर्त्या(ति-आ)त्मन्- -त्मा

सूता १, १८.

२ त्रि-मूर्ति<sup>d</sup>- -ति: पा १, ७; वि

१४१<sup>१</sup>; -तिम् सूता १, २५.

त्रिमूर्ति-त्व- -त्वम् पत्र २.  
त्रिय(त्रि-अ)क्ष<sup>i</sup>- -क्षम् १ योत  
९३.

त्रिय(त्रि-अ)म्बक<sup>i</sup>- -कम् जाद  
६, ३९; २ शिसं २४५<sup>k</sup>; लिं

३०९: ८५<sup>k</sup>; वपं ३११: २५<sup>k</sup>;

५<sup>k</sup> व ४३०: १; ४३८: १६;

४३९: ३; १३; २३; ४४०: १०;

२०; ४४१: ८; १८; ४४२: ६;

१७; ४४३: ४; १४; ४४४: ८;

१८; ४४५: ५; १६; ४४६: ३;

१५; ४४७: २; १३; ४४८: १;

१२; २३; ४४९: १०; १७;

४५०: १; ८; १५; २२; ४५१:

८; १५; २२; ४५२: ८; १५;

२३; ४५३: ५; ११; १७; २३;

४५४: ६; १४; २०; ४५५: ४;

-कै: जाबा १७.

त्रिया(त्रि-आ)युष<sup>i</sup>- -षम् वृजा  
५, १; ७, १५<sup>m</sup>; काला ८५<sup>m</sup>;

-षाणि वृजा ५, २; -वै: काला ९.

त्रि-रात्र<sup>e</sup>- -त्रम् पप ४१९: १२.  
आश्र १.

त्रिरात्रा(त्र-अ)न्त- -न्ते वृ  
६, ४, १३.

त्रिरात्रो(त्र-उ)पोषित- -त:  
२ प्र ३३: १६.

त्रि-रूप- -प: वृउ ९, ७; -पम्  
पा १, ७.

त्रि-रेख- -खम् वपू ३, १.

त्रि-रेखा-पुट- -टम् रापू ४, ४०.

त्रि-लक्ष्य- -क्ष्यम् योचू ३; मं

४, १, ५.

त्रि-लोक(क>)की<sup>n</sup>- -कीम् वपं

३१२: १८.

a) 'त्रिपुरायाः' इति तान्त्रि. । b) = तदाख्योपनिषद्-विशेष- । c) °काराः इति निसा. अख्या. मुपा. यनि. सु-शोघौ (तु. तान्त्रि.) । d) बस. । e) °आणि इति आन. । f) 'त्रिमात्रम्' इति निसा. । g) द्विस. । h) 'हन्त्रीमुखम्' इति निसा. अख्या. न मुपा. यनि. सु-शोघौ (तु. तान्त्रि.) । i) पा. ? °ति इत्येतत्परः शोधः द. । j) इयङ्ङादेशः (पावा ६, ४, ७७) । k) 'व्यम्बकम्' इति ऋ ७, ५९, १२ । l) पा ५, ४, ७७; पावा ६, ४, ७७; वैतु. उन्न. । m) मा ३, ६२ । n) पा ४, १, २१ ।



त्रैलोक्य- -क्यम् ते ६, २०;  
८७; ध्या १६; राउ ४, २६;  
योशि ६, २४; सर २, ५; काम ९.

त्रैलोक्य-कुटुम्ब-

त्रैलोक्यकुटुम्ब-

(न>)नी- -नीम् व ४५५:२०.

त्रैलोक्य-चित्त-भ्रम-

(र>)री- -० रि व ४३२:९.

त्रैलोक्य-परिपूजित-

-ताय गरु ३; ६; १०.

त्रैलोक्य-मोहन- -नम्

त्रिता २, ४८.

त्रैलोक्य-मोहि(न>)-

नी- -नी योशि १, ८५.

त्रैलोक्य-राज्य- -ज्यस्य

गी १, ३५.

त्रैलोक्य-वलित- -तम्

महा ५, ५७.

त्रैलोक्य-वशंकरी-त्री-

जा(ज-अ)क्षर- -राणि व

४३१:८.

त्रैलोक्य-वृक्ष- -क्षस्य

रुह १४.

त्रैलोक्य-संभव- -वान्

अन्न ३, १४.

त्रैलोक्य-स्तम्भि(न>)-

नी- -न्या: पी ४२२:६.

त्रैलोक्या(क्य-अ)न्तर-

भ्रम(र>)री- -० रि व ४३२:

११.

त्रैलोक्या(क्य-अ)न्तर-

वर्ति(न>)नी- -० नि व ४३१:

२३.

त्रि-लोचन, ना- -नम् कै १, ७;

ध्या ३२; १ योत १००; -नाम् रार

२, ३३; -नाय भ १, ६.

त्रि-लोह- -हम् सिशि ३८२:२२

त्रिलोही- -हीम् शिदि, २६७

त्रि-वक्त्र- -क्त्रम् ते १, ६<sup>a</sup>.

त्रि-व(न>)ण<sup>b</sup>-

त्रैवणि- -णि:, -णे: वृ २,

६, ३; ४, ६, ३.

१ त्रि-वर्ण<sup>c</sup>- -र्णा: पाशु १, २०;

-र्णै: रार २, ८३.

त्रिवर्ण-सहि(त>)ता- -ता

पाशु १, ४.

त्रिवर्णा(र्ण-आ)त्मन्- -त्मा

सी ३.

२ त्रि-वर्ण<sup>d</sup>-

त्रैवर्णिक- -कानाम् वृजा

५, ३.

त्रि-वर्त्मन्- -र्त्मां श्वे ५, ७; भव

२, २३; -र्त्मानम् मैत्रि ६, ३५१<sup>e</sup>;

मन्त्रि १; चू ११<sup>f</sup>.

त्रि-वार- -रम् नाप ४, ३८<sup>g</sup>;

वा १०; भ २, २१; १ संन्या २,

६; पप ४१८: २६; पा १, १;

ऊ ६३: ११; गोच ६६: ८.

त्रि-विक्रम- -माय त्रिवि ७, ४१.

त्रि-विद्या-

त्रैविद्य<sup>h</sup>- -द्या: गी ९, २०.

त्रि-विध, धा- -ध: ब्रवि १४;

५२; नाप ८, १; त्रिवि २, ६;

शां १, ६; २ आ १; सार २८९:

२०; २९०: २<sup>i</sup>; वउ ४, ११;

सांका ५१; गी १७, ७; २३;

१८, ४; १८; -धम् श्वे १, १२;

नाप ९, ११; सी १६; मुद्र ४;

योशि २, १४; ५, २८; पत्र २;

रुह १२; सार २९०: ९; भव

२, ५७; ५, ३; ५; सांस् १, ८८;

सांका ४; ५; ३३; ३५; योस् ४,

७; गी १६, २१; १७, १७; १८,

१२; २९; ३६; -धस्य भव ५, २;

-धा ब्रवि ७३<sup>j</sup>; सी ११; १२;

३५; शां १, ९<sup>k</sup>; कृ ४; सर ३,

१३; सार २२०: ९; २९०: १;

२९२: ६; गी १७, २; १८, १८;

-धा: गौ ३, १६; सार २४०:

२१; -धे गौ ४, ८९.

त्रैविध्य- -ध्यम् वृउ ९,

६; नाप ५, १.

त्रिविध-दु:खा(ख-अ)त्य-

न्त-निवृत्ति- -त्ति: सांस् १, १.

त्रिविध-विरोधा(ध-आ)-

पत्ति- -त्ते: सांस् १, ११३.

त्रिविध-साकार- -र: त्रिवि

२, ६.

त्रिविधा(ध-आ)त्मक- -कम्

सार २३६: ६; २८९: १७.

त्रिविधो(ध-उ)च्चारण- -णेन

वरा ५, ६९.

त्रि-विष्टप<sup>l</sup>- -पम् कुं ९<sup>k</sup>; त्रि

१०<sup>l</sup>; करु १; -पा: त्रि ५.

त्रि-विष्टब्ध- -ब्धम् कथु ३, १<sup>m</sup>.

त्रि-विष्टम्भ- -म्भम् शिदि, २७०.

१ त्रि-वृत्<sup>n</sup>- -वृत् पं १; -वृत्-

-वृत् छां ६, ३, ४; ४, ७; ८, ६;

-वृत्तम् श्वे १, ४<sup>o</sup>; नाप ९, ३<sup>o</sup>;

-वृत्तम्-वृत्तम् छां ६, ३, ३; ४.

त्रिवृत्-कुर्वत्- -वत्त: ब्रस्

२, ४, २०.

a) 'ज्यम्बकम्' इति आन. । b) = गोत्रप्रवर्तक-ऋषिविशेष- । c) द्विस. । उप. = अक्षर- । d) द्विस. । उप. = ब्राह्मणादि- । e) 'द्विधर्मोऽन्धम्' इति सुपा. यनि. शोध: द्र. (तु. नाउ.) । f) 'द्विवर्तमानम्' इति सुपा. यनि. शोध: द्र. (तु. नापू.) । g) वा. क्रिवि. द्र. । h) पावा ४, २, ६० । i) 'त्रिविधम्' इति अख्या. । j) 'पञ्च-विध:' इति अख्या. । k) 'त्रिविष्टब्धम्' इति अख्या. । l) 'पुरम्' इति निसा., अख्या. सुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. तान्त्रि.) । m) °ष्टपम् इति संदि. । n) विप. । बस. । उप. व्यु. ? भाप. < / वृत् \*वलने (पाषा. उसं.) । o) वैतु. शं. प्रम्. त्रि-वृत्- इति प्राति. इति कृत्वा उप. कान्तं सद् आच्छादनायर्धमिति ? ।

त्रिवृत्-सूत्र-त्रम् आह ३<sup>a</sup>;  
 व २; पत्र २.  
 त्रिवृद्-आत्मन्<sup>b</sup>-स्मनि  
 मवा ६.  
 २त्रिवृत्<sup>c</sup>-वृत् मैत्रि ७, १;  
 गर ११<sup>d</sup>; छाग २३:१२;  
 २४:१५; -वृत्तम् २प्र ३२:११.  
 त्रि-वेणी<sup>e</sup>-  
 त्रिवेणी-संगम-मः योशि  
 ६, ३०.  
 त्रि-वेद<sup>f</sup>-  
 त्रिवेद-मथ-यम् सूता १,  
 २५.  
 त्रिवेदा(द-आ)त्मन्-स्मा  
 सूता १, १८.  
 त्रि-शक्ति-क्तिभिः काला ९.  
 त्रिशक्ति-माया-स्वरूप-  
 -पः पाशु १, ९.  
 त्रि-शङ्कु<sup>g</sup>-ङ्कोः तै १, १०, १;  
 नाप ४, ३८.  
 त्रि-शङ्कु<sup>h</sup>-ङ्कुम् त्रिवि ७४<sup>i</sup>.  
 त्रि-शत<sup>j</sup>-तम् रुजा १, १५;  
 २०; शा ३०; २शिसं ७<sup>k</sup>; रा  
 ४२३:१२; तेन रा ४२३:११.  
 त्रिशता(त-अ)र-चक्र-क्रम  
 त्रिवि ७, ९.  
 त्रि-शरीर-रम् वृत् १, ३; ४<sup>l</sup>;  
 नाप ८, ५<sup>m</sup>.  
 त्रि-शाख-खः म २, ३; २०;  
 -खम् शि ४, ३.  
 त्रि-शिखा-  
 त्रिशिखिन्<sup>n</sup>-खी त्रिवा १,  
 १; सु १, १, ३४<sup>o</sup>.  
 त्रि-शिरस्-राः व ४३४:४.

त्रि-शिरस्क-स्कम् सुवा १.  
 त्रि-शीर्षन्-षाणम् कौ ३, १.  
 त्रि-शूल<sup>p</sup>-लेन व ४५८:२०.  
 त्रिशूल-क्षत-महिष-जुष-  
 -जुषः वपं ३१२:२१.  
 त्रिशूल-(ग>)गा<sup>q</sup>-गाम्  
 म २, १५<sup>r</sup>.  
 त्रिशूल-डमरु-ह(स्त>)-  
 स्ता-स्ता गार ४०६:२०.  
 त्रिशूल-धारि(त्)>णी<sup>s</sup>-  
 -णी शां १, ६; व ४२६:७;  
 ४३५:१३.  
 त्रिशूल-सव्य-ह(स्त>)-  
 स्ता-स्ताम् शि ६, ११७.  
 १त्रिशूल-हस्त<sup>t</sup>-स्ता-  
 भ्याम् व ४५१:२१.  
 २त्रिशूलहस्त<sup>u</sup>-स्तः व  
 ४४२:२.  
 त्रि-शूलक<sup>v</sup>-कः व ४४४:३.  
 त्रि-षवण-णम् नाप २.  
 त्रिषवण-स्नान-नम् नाप ७  
 त्रिषवण-स्नायिन्-यी रा  
 ४, १.  
 त्रि-ष्टुभ<sup>w</sup>-ष्टुम् छां ३, १६,  
 ३; मैत्रि ७, २; अशि १, ६; अ १;  
 नृपूर २; वृत् ३, ३; अव्य ५; सौ  
 १, १; सर २, २; ६-९; गार ४०७:  
 १६; -ष्टुभम् शौ ५२:१६.  
 त्रैष्टुभ-भम् छां ३, १६,  
 ३; महा १, १; च २०:६; २प्र  
 ३२:१३; ३६:१८; शौ ५२:  
 २२; -भेन त्रिता ४, ३१.  
 त्रिस्(>) वृ ६, ४, १९; २१;  
 २५; हं ६; आरु ३; कौ २, ७;

११<sup>x</sup>; अ १; अना ११; पत्र २<sup>y</sup>;  
 नाप ४, ३८; शां १, १<sup>z</sup>; म २,  
 २०; आच ६; नापू ४, ६९<sup>aa</sup>;  
 शि ६, २२८; वउ ६, २४.  
 त्रि-आवृत्त-तम् सौ ३,  
 १; योरा ५.  
 त्रि-आवृत्त-तेन गार  
 ४०७:१७.  
 त्रि-उन्नत-तम् श्वे २, ८;  
 भव ३, १५.  
 त्रि-संधि-धिषु शां १, ५;  
 जाद ५, १०.  
 त्रि-संध्य, ध्या-ध्यम् शां १, ७,  
 ५०; म २, ३; शा १२; १३; मृ ५;  
 लां २१६:२१; शि ३, १०; ५, २९;  
 ७, ५; व ४६५:१८; -ध्यायाम्  
 जाद ६, २९; -ध्यासु गर ५.  
 त्रिसंध्या(ध्य-आ)दि-दौ  
 आरु २.  
 त्रि-सर<sup>ab</sup>-रम् रुजा १, १७.  
 त्रि-सु-पर्ण-र्णम् मना २,  
 ३८<sup>ac</sup>; ३९<sup>ad</sup>; ४०<sup>ae</sup>; वि  
 २२<sup>af</sup>; २४.  
 त्रिसुपर्ण-श्रुति-ति:वि २७.  
 त्रिसुपर्णो(र्ण-उ)पनिषद्-  
 -षदः वि २६.  
 त्रि-सूत्र-त्रम् मैत्रि ६, ३५;  
 मन्त्रि १; चू १.  
 त्रि-स्थान-नम् ध्या १३; ३६.  
 त्रि-स्थूण-णे योशि १, ७२.  
 त्रि-स्वर<sup>ag</sup>-  
 त्रैस्वर्य-  
 त्रैस्वर्यो(र्य-उ)दात्त<sup>ah</sup>-  
 -त्तः २प्र ३४:१७.

a) 'बहिःसूत्रम्' इति अख्या.। b) बस.। c) नाप. =स्तोमविशेष-। उप. व्यु. ? < √ वृत् भाषायाम् (तु. चुरा.)। d) मा १२, ४। e) द्विस.। f) व्यु. अर्थश्च? त्रिस्-(=त्रय-?) + ख-( < √ खाद? ) > इति उज्ज.। g) त्रिशङ्कुव<sup>o</sup> इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अख्या.)। h) पा. ?। i) 'अशरीरम्' इति अख्या.। j) =तदाख्योपनिषद्विशेष-। k) उस.। पू. तद्वति (त्रिवे) तात्पर्यम्। उप. < √ गम्। तद्वत्त्वम् =तदधीनत्वम्। l) त्रिशूल(ल)>ला->-लायाम् (=चरमस्वासवेलायाम्) इति उज्ज. (अख्या.)। m) मलो. कस.। n) =दैत्यविशेष-। o) =छन्दोविशेष-। p) 'त्रयः' इति निसा. संति.। q) अ ७, १००, ३। r) तैआ १०, ४८, १<sup>2</sup>। s) तैआ १०, ४९, १<sup>2</sup>। t) तैआ १०, ५०, १<sup>2</sup>।

१ त्रि-हस्त<sup>a</sup>-२ त्रिह(स्त>)स्ता<sup>b</sup>- -स्ता  
शि ४, १३.त्रैहस्त- -स्तम् शि  
२, ७.त्रिहस्ता(स्त-आ)ग्राम-  
विस्ता(र>)रा- -राम् शि ३, ६.त्रेता<sup>c</sup>- -तायाम् सुं १, २, १.त्रेता(ता-अ)भि- -भये पा ५, ८  
त्रेताग्न्य(ग्नि-अ)नुसंधा-  
न- -नः पाशु १, २०.त्रेताग्न्या(ग्नि-आ)त्मन्-  
त्रेताग्न्यात्मा(त्म-आ)-  
कृति-वर्णो(र्ण-ओ)ङ्कार-हंसा-(स-अ)नुसंधान- -नः पाशु  
१, २०.त्रेता(ता-आ)त्मक- -कम् पा  
५, ८.त्रेधा<sup>d</sup>- छां ६, ५, १-३; वृ १,  
२, ३<sup>e</sup>; मै ५, ३; मैत्रि ६, ३; ३७;  
७, ११; रार ५, १; कृ ५; नापू ३,  
३९<sup>f</sup>; ४, ६९<sup>g</sup>; ९<sup>h</sup>व ४४३: १६;  
४४९: १; ४५३: १; वपू १, २.त्रेधा/भू  
त्रेधा-भूय पित्र ६, ७.त्र्यं(त्रि-अ)शक- -कम् यो २,  
१९<sup>i</sup>.

त्र्य(त्रि-अ)क्ष- -क्षः महा १, १.

त्र्यक्षा(क्ष-अ)धोक्षज-पद्म-  
ज- -जा: महा ५, १३९.त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;त्र्य(त्रि-अ)क्षर- -रः रार २, ८;  
अद्वैता १२; -रम् छां २, १०,  
१<sup>j</sup>; ३<sup>k</sup>; ४; वृ ५, ३, १; ५, १;  
मैत्रि ६, ४; सुबा १<sup>l</sup>; आबो १;गोच ६७: १२; शि ७, ११५<sup>m</sup>;-रस्य ब्रवि ३<sup>n</sup>.त्र्य(त्रि-अ)णुक- -कम् मैत्रि ७,  
११.त्र्य(त्रि-अ)धिष्ठान- -नस्य भव  
५, २.त्र्य(त्रि-अ)म्बक, का- -कः अव्य  
६; -कम् मना २, ५६<sup>o</sup>; वृजा  
७, १९<sup>p</sup>; त्रिता १, ८९<sup>q</sup>; ४, ४;  
५९<sup>r</sup>; भ १, ३<sup>s</sup>; ५; ६; -०के  
व ४३१: २; ४५८: १०; -केन  
त्रिता ४, ४; १६; -कै: काला ९.त्र्य(त्रि-अ)स्त्र- -स्त्रम् त्रिता २,  
३७<sup>t</sup>; रापू ४, ३४<sup>u</sup>.त्र्य(त्रि-अ)ह- -हम् वृ ६, ४,  
१३; पिं ५<sup>v</sup>; ६.

त्र्याहिक- -कम् व ४३३: १७

त्र्या(त्रि-आ)त्मक-  
त्र्यात्मक-त्व- -त्वात् ब्रसू  
३, १, २.त्र्या(त्रि-आ)युष<sup>w</sup>- -यम् भ १,  
६९<sup>x</sup>; जाबा १७९<sup>y</sup>; -षै: जाबा  
१७.त्र्यायुषो(ष-ओ)ङ्कार- -रै:  
शि ५, २०.

१ त्रिक- त्रि- द्र.

२ त्रिक<sup>z</sup>- -के व ६, २८.

\*त्रिन्- त्रि- द्र.

?त्रियङ्गानि<sup>aa</sup> पाशु २, ५.√बुद्, > त्रोटि, वुव्यन्ते पाशु २,  
३७<sup>ab</sup>; वुव्यन्ति अक्ष ४, ८४; मु  
२, २, १३.बुटि<sup>ac</sup>-  
बुटि-मात्र-प्रमाण- -णेन शि

६, ५२.

त्रोटित- -ते महा ५, ६५.

√त्रै, > त्रा, त्रायते छां ३, १२, १; वृ ५,  
१३, ४; १४, ४; अशि ४, ९; वटु  
३१६: १; गा १६; भव १, १६;  
गी २, ४०; त्रायताम् मना २,  
४७९<sup>ad</sup>.

त्रासि ए १२; त्राहि व ४५५: १४.

तत्रे वृ ५, १४, ४<sup>ae</sup>; गा १४१<sup>af</sup>;  
१५१<sup>ag</sup>.

त्राण- -णम् छां ८, ५, २.

√त्राणि  
त्राणन- -नात् रापू १, १२.त्रैगुण<sup>ah</sup>, त्रैधातवीय<sup>ai</sup>, त्रैपद<sup>aj</sup>, त्रैपुर<sup>ak</sup>,  
त्रैमासिकी<sup>al</sup>, त्रैलोक्य<sup>am</sup>, त्रैवर्णि<sup>an</sup>,  
त्रैवर्णिक<sup>ao</sup>, त्रैविध्य<sup>ap</sup>, त्रैपुद्भ<sup>aq</sup>,  
त्रैस्वर्य<sup>ar</sup>, त्रैहस्त- त्रि- द्र.त्रोटक<sup>as</sup>-  
त्रोटका(क-आ)चार्य- -र्यः म ४८:  
१८.१ त्व<sup>at</sup>- त्वः सर २, ९<sup>au</sup>; त्वस्मै सर  
२, ९९<sup>av</sup>.२ त्व<sup>aw</sup>- युष्मद्- द्र.√त्वच्  
१ त्वच्<sup>ax</sup>- त्वक् छां २, १९, १; वृ ३,  
९, २८, १; वरा १, १०; छग २५:  
१२; गी १, ३०; त्वचः वृ ३, ९,  
२८, २<sup>ay</sup>; त्वचम् अक्षि १३; त्वचा  
प्र ५, ५; त्वचि सार २६५: १३.  
त्वक्<sup>az</sup>-चर्म-मांस-रुधिर-मेदो-  
मज्जा-स्नायु- -यवः मना २,  
६५९<sup>ba</sup>.त्वक्<sup>bb</sup>-चर्म-मांस-रोमा(म-अ)ङ्कु-  
छा(छ-अ)ङ्कुल्यः(ङ्कुली<sup>bc</sup>)-पृष्ठवंश-

a) द्विस. । b) तु. टि. २ त्रिगुण, णा- । c) वैपश् यद्र. । d) पा ५, ३, ४६ । e) ऋ १, २२, १७ ।

f) ऋ १, १५४, १ । g) 'त्र्यम्बकम्' इति अज्या.संति. । h) पा. १ 'त्र्यक्षम्' इत्येवं शोधः द्र. (तु. अज्या.). । i) 'अक्षरस्य'

इति आन. । j) ऋ ७, ५९, १२ । k) 'अम्' इति अज्या. । l) पा ५, ४, ७७ । m) मा ३, ६२ । n) व्यु. १ । o) पा. १

'त्रीयय(शि-अ)ङ्गानि' इति द्विपदः शोधः, त्रि-अ>त्रिय<sup>o</sup> इतीयङ् वा ? । p) 'वुव्यन्ति' इति निशा. । q) तैत्रा ३,

७, ७, २ । r) 'तते' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. नापू.). । s) ऋ १०, ७१, ४ । t) तु. टि. तव । u) =चर्मन्- ।

v) =बाह्य-चर्मन्- । w) तैत्रा १०, ५४, १ । °धिरस्तायु<sup>o</sup> इति नादी. । x) पा. १ यनि. शोधः द्र. ।



नख-गुल्फो(लफ-उ)दर-नाभि-  
मेढ-कटयू(टि-ऊ)रु-कपोल-  
श्रोत्र-भ्रूललाट-बाहु-पादर्व-  
शिरो(रस्-अ)क्षि- -क्षीणि १आ  
१; २आ ११<sup>१</sup>.

त्वग्-अस्थ्या(स्थि-आ)दि-  
-दिषु त्रिप्रा२, ८२; जाद४, ३०.

त्वगस्थ्यादि-संभव- -वाः  
शां १, ४.

त्वग्-आदि- -दिभिः जाद४, ४.

त्वगादि-युक्त- -क्तम् पै२, ८.

त्वगादि-सप्त-धातु- -तुभिः

भा ४<sup>१</sup>.

त्वग्-द्वार- -द्वारा त्रिप्रा १, ९.

त्वग्-धातु-सप्तक<sup>०</sup>- -कम् ते  
४, २५.

त्वग्-व्यादेश- -शः निरु१, १२.

त्वङ्-मांस-रक्त-वाष्पाश्लु<sup>१</sup>- -श्लु  
महा ३, ४०; पा २, ६.

त्वङ्-मांस-रुधिर-स्नायु-मज्जा-  
मेदो(दस्-अ)स्थि-संहति- -तौ  
नाप ४, २६.

त्वङ्-मांस-शोणिता(त-अ)स्थि-  
स्नायु-मज्जा- -जाः मुद्र ४.

२त्वच्<sup>०</sup>- -त्वक् प्र ४, ८; तै १, ७,

१; ऐ १, ४; छां ५, २३, २; वृ२,

४, ११; ३, २, ९; ७, २१<sup>१</sup>; ४, ५,

१२; गर्मे १; सुबा ५, ६; शारी

१; ७; पित्र ३, ८; त्वचः ऐ १, ४;

वृ ३, ७, २१; नाप ६, १; त्वचम्

ऐ २, ४; वृ ३, ७, २१; सुबा ९<sup>१</sup>;

त्वचा ऐ ३, ७<sup>१</sup>; ११; वृ ३, २, ९;

१योत ७१; १संन्या २, १५;

त्वचि छां ५, २३, २; वृ ३, ७,

२१; सुबा ५.

त्वक्-श्रोत्र-नेत्र-जिह्वा-घ्राण-

पञ्च- -स्वरूप- -पम् लिं

३१० : ८.

त्वक्-पति-

त्वक्पति-स्व- -स्वेन त्रिवि

२, १२.

३त्वच्<sup>१</sup>- -त्वक् शि ६, ७५.

४त्वच्<sup>२</sup>- -त्वक् रापू ४, ६०.

१त्वत्- -त्वत्-त्वत् बा २१.

२त्वत्<sup>१</sup>, त्वया<sup>१</sup>, त्वयि<sup>१</sup> युष्मद्- द्र.

√त्वर्

तूर्ण- -र्णम् प्र ५, ३.

त्वर- -रम् शि ७, १७.

त्वरमाण- -णाः गी ११, २७.

त्वरा-

त्वरा(रा-अ)न्वित- -तम् शि

६, १९६.

त्वरित- -तम् योशि १, १४२; चा ५.

त्वष्टृ<sup>१</sup>- -ष्टा वृ ६, ४, २१९<sup>१</sup>; ऐ १२; कर्

१; कथु २, २<sup>१</sup>; -ष्टारम् दे १९<sup>१</sup>;

-ष्टुः ९<sup>१</sup>व ४४१ : ९; ४४६ :

१६; ४५१ : १०; ४५४ : १६.

त्वाष्ट्र- -ष्ट्रः वृ २, ६, ३९<sup>१</sup>; ४,

६, ३<sup>१</sup>; -ष्ट्रम् वृ २, ५, १७९<sup>१</sup>;

कौ ३, १; गार ४०७ : ७; -ष्ट्रात्

वृ २, ६, ३९<sup>१</sup>; ४, ६, ३९<sup>१</sup>.

त्वा<sup>१</sup> युष्मद्- द्र.

१त्वातु<sup>१</sup> १प्र ३१ : १९.

त्वाम्<sup>१</sup> युष्मद्- द्र.

√त्विष्

त्विषि- -षिः इ १८ : १२.

त्विषित<sup>१</sup>- -तः व ४६० : १५९<sup>०</sup>.

त्वेष- -षम् नापू ४, ७९<sup>०</sup>.

थ

थं<sup>१</sup> आथ ३९५ : २३; व ४३६ : ५;  
हंषो ९.

थं-कार- -०र अच् ५.

थम्<sup>१</sup> छां १, ३, ६९<sup>१</sup>; ७९<sup>१</sup>.

द

१द<sup>१</sup>

दं<sup>१</sup> दत्ता १, २; आथ ३९५ : २३;

व ४३६ : ५; हंषो ९.

दं-कार- -०र अच् ५.

२द<sup>१</sup> वृ ५, २, १-३; ३, १; द-द-द वृ

५, २, ३.

√दंश्> दंश्, दन्दश्

दंश<sup>१</sup>- -शः छां ६, ९, ३; १०, ९;

-शो सुबा १३.

दंश-मशका(क-आ)दि- -दयः

मै १, ४; मैत्रि १, ४.

दंश-मशका(क-आ)वृत्त- -ते

शि ७, ८६.

दंष्ट्र> दंष्ट्रा<sup>१</sup>-

दंष्ट्रा-कराल- -लानि गी ११,

२५; २७.

दंष्ट्राकराल-वदन- -नम्

गरु ५; व ४५९ : १९.

दंष्ट्रा-व्यासा(स-आ)काश-

-शाः वउ ३, २८.

दन्दशूक<sup>१</sup>- -कम् वृ ६, २, १६;

-कानाम् गरु ६.

दशन<sup>१</sup>-

दशन-नखा(ख-अ)ग्र- -ग्रैः व

४५४ : १४.

a) °मैनखमांस...पृष्ठी° इति आन. मुपा. यनि. सु-शोधः । b) °तुरोम° इति निसा. संदि., °तुरोमसक्तः  
इति तान्त्रि. । c) षस. पूष. =मलो. कस. । d) समाहारे द्रस. । e) व्यु. ? =इन्द्रियविशेष- । f) =ओषधिविशेष- ।  
नभा. =दालचीनी । g) व्यु. ? =यकार-बीजाक्षर- । h) तु. टि. तव । i) वैपश् यद्र. । j) ऋ १०, १८४, १ ।  
k) ऋ १०, १२५, २ । l) ऋ ८, २६, २१ । m) ऋ १, ११७, २२ । n) पा. ? तु ओत-> -तः ? इति द्विपदः शोधः द्र. ।  
o) ऋ १०, ८४, २ । p) ऋ ७, १००, ३ । q) =बीजमन्त्रविशेष- । r) तु. सस्थ. टि. २उद् । s) =वर्णविशेष- ।  
t) =वृन्निविशेषानुवाद- । u) =दन्त- ।

दक्षना(न-अ)न्तर-रघु गी ११,  
२७.

दष्ट-ष्टः ते ६, ७७; योशि १, ३३;  
-ष्टम् गोपू ४३.

✓दंस्(वधा.)

दंसम्-सः वृ २, ५, १६९<sup>b</sup>.

✓दक्ष(वधा.)

१दक्ष-क्षः गी १२, १६.

दाक्ष्य-क्ष्यम् गी १८, ४३.

२दक्ष<sup>d</sup>-क्षाम्याम् पी ४२१: २.

दक्ष-नाडी<sup>1</sup>-ज्या शां १, ७,  
१४; यो १, २४.

दक्ष-नासा-पुटा(ट-अ)वधि-  
-धिः त्रिवा २, ७१<sup>o</sup>.

दक्ष-पार्श्व-र्ध्वे अक्ष ३.

दक्ष-वाम-मयोः रापू ४, ४.

दक्षा(क्ष-अ)ङ्ग-ङ्गेन १योत  
११४.

दक्षा(क्ष-अ)ङ्घ्रि-ङ्घ्रिम्  
त्रिवा २, ४८.

३दक्ष<sup>1</sup>-क्ष दे ८.

दाक्ष<sup>1</sup>-क्षम् गार ४०७:  
१३.

दाक्षि-

दाक्षाय(ण>)णी<sup>2</sup>-

-ण्याम् पा ८, ७.

दक्ष-दुःस्ति-तरम् दे ६.

दक्ष-यज्ञ-ज्ञे श ११.

१दक्षिण,णा<sup>h</sup>-णम् वृ ६, ४, २५;  
कौ २, ३; ८; ९; नाद २<sup>i</sup>; ध्या  
९३; १योत ११२; त्रिवा २,  
४९; योचू ६६; शां १, ३, ५, ७;  
वरा ५, १७; गरु ५; शि ५, ४९;  
७, ६६; णे वृ २, ३, ५, ४, २, २;  
५, ५, २; ४; मैत्रि ७, ११; कौ  
२, ११; ४, १६; नाद ३१; ध्या

५५; योचू १८; १९<sup>2</sup>; त्रिवा २,  
३६; रापू ४, १०; राउ ३, ८; शां १,  
३, २; म १, ६; रूह ४; जाद ३,  
४; ४, १३; वरा ५, १७; सौ ३, १;  
योरा १२; आच २; शि ४, ६४<sup>2</sup>;  
-णेन वृ १६; त्रिवा २, ९५; शां  
१, ३, ५; योशि ६, ६; यो १, १२;  
वपू १, ४९<sup>1</sup>.

दक्षिण-कटाक्ष-क्षात् सार  
२२०: ४.

दक्षिण-कर-रे वउ ६, २८.

दक्षिण-कर्ण-र्णे मुद्र ४;

गरु ५; सु १, १, २१.

दक्षिण-कूल-

दक्षिणकूल-तस्(>:)

सार २५५: १.

दक्षिण-गुल्फ-ल्फम् त्रिवा  
२, ३६; शां १, ३, २; जाद ३, ३;  
-ल्फेन शां १, ३, ९.

दक्षिण-चरण-णम् शां  
१, ७, ४३.

दक्षिणतस्<sup>k</sup>(>:) अव्य ६.

दक्षिण-पाद-दम् शां १,  
७, ४३.

दक्षिण-पार्श्व-

दक्षिणपार्श्व-तस्(>:)

योशि ५, १९.

दक्षिण-बाहु-हौ ऊ ६४:

७; वपं ३१२: १२.

दक्षिण-भाग-गे शां १, ४.

दक्षिण-भुज-मूल-ले म  
१, ६.

दक्षिण-वक्ष-स्थल-ले

सी ३५.

दक्षिण-शय<sup>1</sup>-ये त्रिता

३, ९.

दक्षिण-हस्त-स्तः प्रा ४,  
१; -स्तस्य १योत ३६.

दक्षिणा(ण-अ)क्षि-मुख-  
-खे गौ १, २.

दक्षिणा(ण-अ)र-रे वरा  
५, २४.

दक्षिणे(ण-इ)तर-रे वरा  
५, १७.

दक्षिणेत-गुल्फ-ल्फेन  
जाद ६, ३८<sup>m</sup>.

दक्षिणेत-गुल्फ-तस्-  
(>:) जाद ३, ८.

दक्षिणेत-पाद-दम्  
जाद ३, ६.

दक्षिणो(ण-ऊ)रु-रुणि  
जाद ३, ६.

२दक्षिण,णा<sup>n</sup>-णः तै २, १-५,  
१; छां ३, १३, २; नाद १; -णम्  
प्र १, ९<sup>2</sup>; श्वे ४, २१; -णस्याम्  
म २, २७; -णा छां ४, ५, २; वृ  
४, २, ४; -णा: छां ३, २, १<sup>2</sup>; -णाम्  
२प्र ३३: ३; -णायाम् वृ ३, ९,  
२१; म २, २८; -णे वृ ४, २, ४;  
मना २, ८०९<sup>o</sup>; त्रिवा २, १५; पाशु  
२, ३०; सूता ४, ३; सु २९४:  
१३; शि २, १५; ६, ७४; ७८; व  
४३०: १६; वसू ४, २, २०.

दक्षिणतस्<sup>k</sup>(>:) सुं २, २,  
११; छां ३, ७-१०, ४; ७, २५,  
१<sup>2</sup>; २; मैत्रि ६, १७; ७, २; अशि  
३, १०; वृजा ६, १२; वृपू ५, ८;  
शां ३, १; सूता ४, २; सार २६७:  
१; वडु ३१५: १०.

दक्षिण-दल-लम् ध्या  
९३, ४; वि ५.

दक्षिण-पक्षक-कः १अव ३.

अ) धा. अर्थः १। तु. वैपश् यस्या. । b) ऋ १, ११६, १२ । c) विप. (=चम-) । d) विप. (=वामेतर-) ।  
e) °वधि इति निसा. । f) वैसं. । g) वैतु. शक. ३दक्ष+फिञ्>भायनिः प्र. >दाक्षाय(णि>)णी- इति । h) विप.  
(=२दक्ष-) । वैपश् यद्. । i) °णः इति अज्या. । j) ऋ ८, ८१, १ । k) पा ५, ३, २८ । l) उप. =हस्त- ।  
m) °णोत्तर° इति निसा. अज्या. च मुपा. यनि. सु-शोचौ(तु. अज्या. संदि.). n) विप. (=उत्तरेतर-) । o) तैआ १०, ६४, ११ ।

दक्षिणा<sup>a</sup>\* छां ५, १०, ३; वृ  
६, २, १६.

दक्षिणा(णा-अ)ञ्च्-  
-णाञ्चः अशि १, ४.

दक्षिणा-मुख- -खः च  
२० : ७; -खम् ब्रवि ६४.

दक्षिणा(णा-आ)वृत्-  
-वृत् कौ २, १५<sup>b</sup>.

दक्षिणा(णा-अ)क्षि<sup>c</sup>- -क्षिः  
मै ५, ५; मैत्रि ६, ५; ३४; गर्भ  
५; अशि १, ६; अ १; वृपू २,  
२; वृज ३, ३; काला १४; ब्रवि  
५; प्रा २, १; पं ३; जाबा २३;  
१प्र ३१ : ७; -भिम् कश्चु २, ३;  
-मौ छां ४, १७, ५; प्रा १, ६.

दक्षिणात्<sup>d</sup>-

दक्षिणात्-तात् ग ४.

दक्षिणा(णा-अ)भिमुख-  
-खः महा १, १.

दक्षिणा(णा-आ)झाय- -यः  
म ४९ : १.

दक्षिणा(णा-अ)यन- -नम्  
जाद ४, ४२; गी ८, २५.

दक्षिणो(ण-उ)त्तर-कुड्य-  
-ड्ययोः शि ४, ६.

दक्षिणो(ण-उ)त्तर-दिग्-  
भाग- -गेन शि ३, ३.

दक्षिणो(ण-उ)पक्रम- -मेण  
वउ ६, ८.

३दक्षिण,णा<sup>e</sup>- -णः कौ २, १३;

-णा छां ३, १५, २; वृ १, २, ३;

गार४०६:६; -णाः अशि४, १६;

बटु ३१६:९; -णाम् प्र १, ६;

-णायाम् नाप ६, १; म २, १८.

दक्षिणतस्<sup>f</sup>(>) वृ ३, १,  
९; व ४६० : ११४<sup>g</sup>.

४दक्षि(ण>)णा<sup>h</sup>- -णा वृ ३, ९,  
२१<sup>i</sup>; मना २, ७९४<sup>j</sup>; ८०४<sup>k</sup>; वृजा

६, १२; वृपू ५, १०; नाप १; रुजा

३, १; प्रा ३, १; ४, १; -णाः सुं २, १,  
६; छां ३, १७, ४; -णाम् वृ ३, ९,  
२१; वृजा ३, १९; -णायाम् वृ

३, ९, २१; -णाम् क १, १, २.

दक्षिणा-ताम्बूल- -लैः नाप ४,  
३८.

दक्षिणा(णा-अ)र्थ- -र्थम् वृपू  
५, १०; वृजा ६, १२; रुजा ३, १.

दक्षिणा-वत्- -वत् तारा ८३:९.

५दक्षि(ण>)णा<sup>l</sup>- -णा कालि  
४०२ : ८<sup>m</sup>; गुषो ४२० : ९;

-०णे कालि ४०१ : ३; श्या ४.

दक्षिण-कालिका- -०के पारा ७.

६दक्षि ण>)णा<sup>n</sup>- -णा द १; १९.

दक्षिणा-पद- -दम् द ६.

दक्षिणा(णा-अ)भिमुख-  
-खः द १९.

दक्षिणा-मुख- -खः द १.

दक्षिणा-मूर्ति- -र्तिः द ८;

त्रिवि ७, ३२; रार २, २०;

-र्तिम् द ३.

दक्षिणामूर्ति-नवा-  
(व-अ)क्षर-मन्त्र- -न्त्रः त्रिवि  
७, ३२.

दक्षिणा(णा-आ)स्य- -स्यः  
द १०; ११; -स्यम् वपू १, ४.

दक्षिणा<sup>o</sup>- -णा सु १, १, ३४.

दग्ध्य-दग्धुम्, दग्ध्वा ✓दह द.

दण्ड<sup>p</sup>- -ण्डः नाप ३, २८; ५, १;  
सी ३१; भव ५, १३; गी १०,  
३८; -ण्डम् आरु १; ३; ५;

पहं १; २; नाप ३, ८६<sup>q</sup>; ४,  
३८<sup>r</sup>; ५, १<sup>s</sup>; १संन्या २, ९<sup>t</sup>; १३;

पप ४१८:३२; ४१९ : ११; शि  
७, ४६; -ण्डाः नाप ६, ५; -ण्डान्

आरु २; -ण्डे १संन्या २, ९७;

-ण्डेन श्वे ४, ३४<sup>u</sup>; १संन्या २,  
११.

दण्ड-क- -कानि रार १, ९.

दण्ड-कटिसूत्र-कौपीन- -नम् नाप  
४, ३८<sup>v</sup>.

दण्ड-कमण्डलु-कटिसूत्र-कौपीना-  
(न-आ)च्छादन- -नम् तुअ ८.

दण्ड-कमण्डलु-धर- -रः नाप ५,  
१; १संन्या २, १३.

दण्ड-द्वय- -यम् योरा २०.

दण्ड-धारण- -णेन नाप ५, २.

दण्ड-भिक्षा- -क्षाम् नाप ६, ७.

दण्ड-वत् त्रिवि १, ४; रार १, ७;

शां १, ३, ११; अज १, १; १०;

त्रिता ३, ५; जाद ३, ११; या २, ४.

दण्ड-ह(स्त>)स्ता- -स्ता शां १, ६.

दण्डा(ण्ड-आ)स्मन्- -स्मनोः  
१संन्या २, ११.

दण्डा(ण्ड-आ)दि- -दिः १संन्या २,  
८१.

दण्डा(ण्ड-आ)हत-मुज(ङ्ग>)ङ्गी-  
-ङ्गी यो १, ४५.

दण्डिन्- -ण्डी शा १८.

दण्डिनी- -न्यौ त्रिता ३, ८.

दण्डे(ण्ड-ई)श-

दण्डेश-पिङ्गाक्ष-प्रचण्ड-क्षेत्र-  
पाल-गणपति-दुर्गा-लक्ष्मी-

-क्षम्यः सूता ६. २<sup>w</sup>.

१-३दत्त-, दत्तवत्-, दत्त्वा, ददत्-,  
ददत्- ✓दा(दाने) द.

°ददश्चे अधि✓°दश् परि. द.

ददापयित्- ✓दा (दाने) द.

ददशिवस्- ✓दश् द.

a) पा ५, ३, ३६ । b) °णाप्राक् इति अच्चा. । c) पा ५, ३, ३४ । d) विशेषि. । e) पा ५, ३, २८ ।  
f) ऋ १०, ८०, ७ । g) =दान- । h) तैआ १०, ६३, १ । i) तैआ १०, ६४, १ । j) धा. अर्थः? =देवीविशेष- ।  
k) घोरद° इति तान्त्रि. । l) धा. अर्थः? =शेमुषी- (तु. सस्थ.) । m) =तदाख्योपनिषद्विशेष- । n) वैप १ यद्र. ।  
o) शौ १०, ८, २७ । p) °ण्डं क° इति अच्चा. । q) दण्ड एवः पि° इति मुपा. यनि. शोधः ।



✓दध्, दधतु २संख्या १६: ४९<sup>a</sup>.

दधग्वस्- ✓दह् द्र.

दधत्-, दधान-, १-२दधि-,  
दधि-क्रा-, दधीचि-, दध्यञ्च्-  
✓धा द्र.

\*दध्यञ्चि- दधीचि- टि. द्र.

दनु<sup>b</sup>-

दानव- वा: कः १६; गी १०, १४;  
-वानाम् नापू २, १५.

दानवा(व-आ)दि- दय: महा  
३, ५०.

दन्त<sup>c</sup>- न्तम् पा ७, ६; -न्तान् त्रिवा  
२, ९२; १४६; महा ५, ७५; सु  
२, २, ४२; -न्तै: त्रिवा २, ९२;  
१४६; महा ५, ७५; ह १७९<sup>d</sup>;  
मु २, २, ४२; व ४४३: २२९<sup>d</sup>.

दन्त-खादन- नम् शि ७, ५३.

दन्त-धावन- नम् शि ७, ९१.

दन्तधावन-ताम्बूल- लम् इ  
१४: ७; ९.

दन्तधावना(न-अ)भ्यङ्ग- ङ्गम्  
शि ७, १९.

दन्त-मूल- लात् जाद ७, ६.

दन्ति<sup>e</sup>- न्ति: व ४६२: २३९<sup>f</sup>;  
ग १०; वउ २, ९९<sup>f</sup>.

दन्ति(>)न्ती-मुख- ख: हे १०.

दन्तिन्- न्ती मना १, ५९<sup>h</sup>.

दन्तो(न्त-ओ)ष्ठ<sup>i</sup>- ठौ ते ६, ६; प्रा  
४, १; गार ४०८: ७.

दन्दशूक- ✓दंश् द्र.

दन्दम्यमाण- ✓द्रम् द्र.

✓दभ्, भ्म्, देभु: मना १, ९९<sup>j</sup>.

दभ्भ- भ्भ: ते ६, २६<sup>k</sup>; वटु ३१४:

१६; गी १६, ४; -भ्भेन गी १६,  
१७; १७, १८.

दाम्भिक- -क: ते ६, २६<sup>l</sup>;  
नाप ५, १; -काय श ३३; त्रिवि  
८, २०.

दभ्भ-मान-मदा(द-अ)न्वित-  
-ता: गी १६, १०.

दभ्भा(भ्भ-आ)चार- -रेण नाप  
५, २.

दभ्भा(भ्भ-अ)र्थ- -र्थम् गी  
१७, १२.

दभ्भा(भ्भ-अ)हंकार- निमुक्त-  
-क्त: नाप ३, ३५.

दभ्भा(भ्भ-अ)हंकार- संयुक्त-  
-क्ता: गी १७, ५.

दभ्भा(भ्भ-अ)हंकारा(र-आ)-  
दि- दिभि: वसू २७.

✓दम्, > दमि, दम-दम लां २१५: १८  
दाम्यत<sup>m</sup> वृ ५, २, १; ३.

दम<sup>n</sup>- -म: के ४, ८; तै १, ९, १;  
गौ ४, ८६; मना २, १०९<sup>n</sup>; ७८९<sup>o</sup>;  
७९१९<sup>p</sup>; ८०९<sup>q</sup>; ते ६, ३६; नाप  
३, २४; ४, ११; कृ १६; इ ११:  
१७; भव ५, १२; २१; गी १०,  
४; १६, १; १८, ४२; -मम् वृ ५,  
२, ३; सुबा ३; -मे मना २, ७८९<sup>o</sup>;  
७९९<sup>r</sup>; -मेन मना २, ७९९<sup>r</sup>;  
इ १२: ५.

✓दमाय्, दमायन्तु तै १, ४, २.

दमन- -नेन इ १२: ५; वउ ६, ४२.

दमयत्- -यताम् गी १०, ३८.

दान्त<sup>s</sup>- -न्त: वृ ४, २३; सुबा ९;  
नाप १<sup>t</sup>; ५, १४; ६, २३; त्रिवि

१, ४; शा ५; -न्तस्य शि ६,  
२०६; -न्ता: मना २, ७९९<sup>f</sup>;  
वउ ६, ४; -न्ताय हं ४; श ३४;  
योशि २, ३; -न्तौ महा ६, ४७.

दम्पति<sup>u</sup>- -ती सार २८९: ४; ५;  
१०; १३.

दम्भोलि<sup>v</sup>-

दम्भोलि-स्तम्भसार-प्रहरण-

त्रिवशीभूत-रक्षो(स्-अ)धि-

नाथ- -थम् लां २१३: १४.

✓दय्, दयध्वम् वृ ५, २, ३<sup>t</sup>.

दया- -या त्रिवा २, ३२; शां १,

१; जाद १, ६; १५; प्रा ४, १;

कृ १५; वरा ५, १२; शि ५,

४४; भव ५, २१; गी १६, २;

-याम् वृ ५, २, ३; सुबा ३.

दया-निधि- -०धे वि ४.

दया-वत्- -वान् वउ ६, ५२.

दया-समुद्र- -द्रम् मु १, २, ६.

दरद<sup>w</sup>- -दा: आषे ८: १५.

दरिद्र- -द्र: ते ६, ९५<sup>v</sup>; -द्राणाम्  
भव १, १२; १३.

दारिद्र्य- -द्रयम् महा २, ५५; या

२, १७; दत्ता २, २; इ १४: १५;

हंपो १०.

दारिद्र्य-नाशि(त्>)नी-

-नीम् तुल ७०: ७.

दारिद्र्या(द्रय-आ)शा- -शा

आवो १६.

दारिद्र्यो(द्रय-उ)पहत- -त: शि  
४, ४८.

दर्दुर<sup>x</sup>- -र: १योत ५३<sup>x</sup>.

दार्दुर(>)री- -री १योत ५३<sup>y</sup>.

a) 'दधातु' इति तैत्रा ३, १, २, ५। b) =दक्ष-कन्या-। वैपश् यद्र.। c) वैपश् यद्र.। d) 'दन्त-परिमितः' इति मंत्रा १, ७, १५। e) मत्वर्थे इ: प्र. उसं. (पा ५, २, ११५)। f) तैत्रा १०, १, ५। g) पा ५, २, ११५। h) 'दन्ति:' इति तैत्रा १०, १, ५। i) पावा ६, १, ९४। j) ऋ १०, ८९, ५। k) 'दभ्भ:' इति अख्या.। l) 'दाम्भिक:' इति अख्या.। m) पा ७, ३, ७४। n) तैत्रा १०, ८, १। o) तैत्रा १०, ६२, १। p) पा.१ (तु. तैत्रा १०, ६३, १) द्वितीये श्रवणे 'मम् (द्वि१) इति शोषः द्र.। q) तैत्रा १०, ६४, १। r) तैत्रा १०, ६३, १। s) पा ७, २, २७। t) व्यु: =वञ्-। u) व्यु: साहचर्यात् =जातिविशेष-। v) 'द्रै: इति अख्या. संटि.। w) व्यु: =पण्डक-। x) 'दर्दुर:' इति अख्या.। y) 'दार्दुरी' इति अख्या.।

दर्प-दर्पण- ✓दृप् द्र.

दर्भ<sup>१०</sup>- -भम् सार २७३:१६; -र्भा:  
गर्भ ५; प्रा ३,१; ४,१; -र्भान्  
सूता १,२४.

दर्भ-कुश-कृष्णाजिना(न-आ)दि-  
-दिभिः त्रिवा २,९०.

दर्भा(र्भ-अ)र्थ- -र्थम् शि ४,६१.

दर्भा(र्भ-आ)सन- -ने अना १८<sup>b</sup>.

द(वि>)र्वी<sup>११</sup>- -र्वी सु २,२, ६५<sup>१</sup>;  
-र्वीम् वृ ३, ८, ९.

दर्श<sup>१२</sup>- -र्शम् कश्चु २,३; -र्शे करु १;  
कश्चु २,३; -र्शेषु रुजा २,१८.

दर्श-पूर्णमास- -सौ वृ १, ५, २;  
मना २, ८०९<sup>०</sup>.

१दर्शपूर्णमासिक- -के का १३<sup>१</sup>.

दर्शपूर्णमासे(स-इ)ष्ट(ष्टि<sup>१३</sup>)क<sup>१४</sup>-  
-के नार ११.

१दर्शन<sup>१५</sup>- -नम् करु १.

२दर्शन- दर्शनीय-, दर्शयत्-,  
दर्शया-, दर्शयित्वा-, दर्शित-  
✓दृश् द्र.

✓दल्<sup>१६</sup>

दल्<sup>१६</sup>- -लेषु त्रिवि ७, ३१-४१;  
४४; ४६; रार ३, १<sup>१</sup>; रापू ४,  
४०; -लैः यो १, ६९.

दल्-सं(स्थ>)स्था- -स्था:  
मैत्रि ६, २.

दल्भ<sup>१७</sup>-

दाल्भ्य<sup>१</sup>- -ल्भ्य छां १, ८, ६;  
-ल्भ्यः छां १, २, १३; ८, १; १२,  
१; ३; -ल्भ्यम् छा १, ८, ३; ६.

दवीयस्- दूर- द्र.

दशन<sup>१८</sup>- -श छां ४, ३, ८<sup>१</sup>; ५, ९, १;  
७, ९, १; २६, २; वृ २, ५, १९<sup>१</sup>;  
३, ९, ४; ६, ३, १३; कौ ३, ८<sup>२</sup>;

सुबा ४<sup>२</sup>; ससा १, ४३; त्रिवा २,  
३३; ध्या ५२; योशि ६, ६४; योचू  
१६; रापू १, ८; त्रि २०; नापू ५, ३;  
-श-श वृ ३, १, १; सार २२२:१८;  
अता ६; रापू ४, ३८; योशि १,  
१६६; अव्य ५<sup>३</sup>; शि ६, १२७<sup>३</sup>;  
२७०; शा १३; -शसु गौ ४,  
६३; ६५; -शानाम पा ८, १०.

दश-क- -कम् नाप ३, २४; भव  
५, १२.

दश-कला(ला-आ)त्मक- -कः नापू  
५, १.

दश-कोटि-योजन-विस्तीर्ण-  
-र्णः राधा १, १०.

दश-गो-प्रदान- -नेन वृजा ७, ८;  
रुजा ३, १.

दशगोप्रदान-फल- -लम् रुजा  
१, १.

दश-ग्रीव-कृतान्त- -न्त लां  
२१४: ८.

दश-तुल्य- -ल्यम् इ १९: २.

दश-दल- -लम् योचू ५

दशदल-पद्म- -द्मम् त्रिवि ७, ३३  
दश-दिश- -दिक्षु व ४३४: १९;  
वउ ४, २८; -दिशः अद्वैभा १६.

दश-द्वार-पुर- -रम् योशि १, १६५;  
५, २.

दश-धा<sup>१९</sup>- वरा ५, १४; बा १९; व  
४५५: २२९<sup>१</sup>; सांका ३२; ३३.

दश-धा-रूप- -रम् अद्वै १५.

दश-धेनु-प्रदान- -नस्य शि ६,  
२२०.

दश-नाडिका- -का(१का:१०) त्रिवा  
२, १३७.

दश-नाडी- -डीषु त्रिवा २, ७८.

दशनाडी-महा-पथ- -थम्  
योशि १, १६५; ५, २.

दश-पूर्व- -र्वम् इ १५: ३१<sup>१</sup>.

दश-प्रकार-भू(त>)ता- -ता:  
त्रिवा २, ७४.

दश-बाहु- -हुम् १यौत १००.

दश-म- -मः हं १६; नापू ५, ८;  
-मम् हं १७; २०१<sup>१</sup>; वृपू २, ६;  
यो १, ६१; ऊ ६४: ८; गार  
४०७: ७; १२; -मे वृ ६, ४,  
२२९<sup>१</sup>; अक्ष ५; त्रिता १, ७१;  
निर्ह १, २१; सूता ५, १२; -मेन  
पिं १६.

दशमी- -मी नाद ११; ध्या  
५३; नाप ८, १; योचू १७;  
शारी ७; त्रिता ३, १६; गोउ  
२६; तु ९; सार २६८: २;  
-म्याम् नाद १६.  
दशम-द्वार-मार्ग- -र्गम् सौ ३,  
११<sup>१</sup>; योरा १४.

दश-योजन- -नम् सार २७८: ११.

दश-योन्य(नि-अ)ङ्कित- -तम्  
त्रिता २, ४३.

दश-रथ<sup>२०</sup>- -थे रापू १, १.

दशरथ<sup>२०</sup>- -थाय त्रिवि ७, ४१;  
रार २, ६७; ८६.

दश-लक्ष- -क्षम् रार २, ८५.

दश-लक्षणक- -कः भव ५, ११;  
-कम् नाप ३, २३.

दश-लक्षण-युक्त- -क्तस्य भव ५, २  
१दशलाक्षणिक- -कः शि ७, १०२.

दश-वक्त्र- -क्त्रम् रुजा २, १२;  
गु ७०.

a) वैपश् यद्र. । b) 'समे' इति आन. । c) 'दर्पापहतचेतनः' इति निसा.संदि. । d) =अमावास्या- वा याग-  
वा । वैपश् यद्र. । e) तैत्र्या १०, ६४, १ । f) पा. ? =नाउ. इति कृत्वा तत्तया सु-शोधः । g) पा. ? यनि.शोधः द्र. । h) बस.  
समासान्तः कप् प्र. (पा ५, ४, १५४) । i) अर्थः ? । j) =पर्य- । k) व्यु. ? =गोत्रप्रवर्तक-अपि विशेष- । l) तैत्र्या ३,  
११, १ । m) पा. ? यनि. शोधः द्र. (तु. निसा.; वैतु. °काम् इति अज्या. संदि.) । उप. =घटिका- । n) °पूर्वाम्  
इति मुपा. यनि. सु-शोधः । o) °मे इत्येवं शोधः द्र. (तु. निसा.) । p) अ १०, १८४, ३ । q) 'दशद्वादशारम्' इति  
निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (वैतु. 'दशमद्वारम्' इति अज्या.) ।

दश-वर्ष-सहस्र- -स्त्राणि शि ६,  
१७; २०.  
दश-व(र्ष>)र्षा- -र्षा इ १६; १७.  
दश-वार- -रम्<sup>a</sup> दे २१.  
दश-विध- -धः हं १६; सांका ४८;  
-धाः गर्भ १<sup>b</sup>.  
दश-विष्णु-रूप- -०प लां २१६;  
११.  
दश-श्लोक>)की- -क्या सर  
३, ७.  
दश-संख्याक, का- -कम् यो १, ५४;  
-कानाम् सु १, २, १.  
दश-समा-युक्त- -क्तम् शि २, १७.  
दश-सहस्र- -स्त्राणाम् सार २५३;  
१८.  
दशसहस्र-वर्ष- -र्षम् सार  
२६० : १६.  
दशसाहस्रिक<sup>d</sup>- -काः शि ४, ४६.  
दश-हस्त-प्रमा(ण>)णा- -णाः  
शि ४, १५.  
दशा(श-अं)श- -शम् सौ १, ३<sup>e</sup>;  
कालि ४०२ : ९.  
दशा(श-अ)क्षर- -रः रार २, ४१;  
४८; नापू ५, ५; -रम् रार २,  
९४; द्व २; -रस्य रार २, ४१.  
दशाक्षरा(र-आ)दि-  
दशाक्षरादि- -द्वात्रिंशद्-  
अक्षरा(र-अ)न्त- -न्तानाम्  
रार ३, १.  
दशाक्षरादि-मन्त्र- -न्त्रम्  
रार ३, १<sup>e</sup>.  
दशा(श-अ)ङ्गुल- -लम् श्वे ३, १४९<sup>f</sup>.  
दशाङ्गुल-वचस्- -चः मुद्र  
१, १.  
दशा(श-आ)त्मन्- -स्मा पा ३, ५.  
दशा(श-अ)धिक- -कम् शि ४, ३८.

दशा(श-अ)पर- -रम् इ १५; ४<sup>g</sup>.  
दशा(श-अ)र- -रम् योशि १, १७२.  
दशार-चक्र<sup>h</sup>- -कम् त्रिता २,  
४३.  
दशा(श-अ)र्ण- -र्णः रार २, ५०.  
दशार्ण-वत् रार २, ५७.  
दशार्णा(र्ण-आ)द्य- -द्याः गोपू २४  
दशा(श-अ)वतार- -राय नाउ २, ७.  
दशा(श-आ)वरणा(ण-आ)त्मक-  
-कम् रार ३, १.  
दशा(श-आ)स्य-मथन- -नम् रार  
२, १५.  
दशा(श-आ)स्या(स्य-अ)न्तक<sup>i</sup>-  
-०क त्रिवि ७, ४०; रापू ४, १५;  
रार २, ८१.  
दशास्यान्तक-रूप-  
दशास्यान्तकरूपिन्- -पिणे  
रापू ४, १४.  
दशा(श-अ)स्त्र- -स्त्रम् योशि ५, ९.  
दशा(श-अ)ह-  
दशाहिक- -कम् व ४३३; १८.  
दशे(श-इ)न्द्रिय-परिच्छद- -दम्  
योशि १, १६६; ५, २.  
दशो(श-उ)पनिषद्- -षदम् सु १,  
१, २७.  
दशान- ✓दंश द्र.  
दशा<sup>n</sup>- -शा सार २७९ : ६.  
दशा-चतुष्टया(य-अ)भ्यास- -सात्  
महा ५, ३१; वरा ४, ७.  
दष्ट- ✓दंश द्र.  
✓दस्(वधा.)  
दस्यु<sup>1</sup>- -स्युन् व ४६० : १०९<sup>j</sup>.  
दस्यु-हन्- -हा व ४६० : ४९<sup>k</sup>.  
१दस्<sup>1</sup>- -०स्त्रौ वृ २, ५, १७९<sup>m</sup>.  
२दस्<sup>1</sup>-  
दस्त्र-क<sup>n</sup>- -कः वृजा ४, २०.

दस्त्र-जालुक- -कम् वउ ४, ३७.  
✓दह> दाहि, दहति कै १, ११;  
वृजा ८, ६; वृपू ३, ३; ५, २०;  
सुवा १५<sup>1</sup>; ध्या १७; राउ ५,  
७; अव्य २; यो ३, ३१; वरा  
५, ६८; सार २९१ : ७; सु  
२९३ : १२; १३; स ३७९ :  
१८; भव २, ३९; वउ ५, २८;  
गी २, २३; दहन्ति महा ३, ४३;  
या २, ९; दह के ३, ६; दह-दह  
त्रिता ३, ३१; गरु ६; वपं ३१२ :  
१४; वउ ३० : ११; दहेत् छां ६, ७,  
३; ५; अना ८; योशि १, ८५; सिसि  
३८० : १२<sup>3</sup>; दहेयम् के ३, ५.  
ददाह श १२.  
दह्यते छां ६, १६, १; २; सुवा ९;  
१योत ९४<sup>3</sup>; योशि ५, ५०;  
दह्यति(ति<sup>०</sup>) १आ १; २आ ३;  
दह्यन्ते अना ७<sup>3</sup>; वृजा ५, १८;  
वरा ३, २५; ५, ४९; दह्ये गर्भ ४<sup>n</sup>;  
दह्येत १अव १५; स ३७९ : ९.  
दाहयेत् स ३७९ : १३; १४.  
दग्ध- -ग्धः योशि १, ४०; -ग्धम्  
वृजा २, १०; पै ३, १; यो ३, ३०;  
हे ३; -ग्धस्य पै ४, ७; -ग्धाः  
सिसि ३८१ : २२; -ग्धे हं २१;  
अन्न ५, ७०.  
दग्ध-कर्पूर-  
दग्धकर्पूर-वत् योशि १, ५८.  
दग्ध-कामा(म-अ)ङ्ग-विभू-  
ति- -त्रैपुण्ड्रित- -तानि वपं  
३१३ : ६.  
दग्ध-पाप- -पः वृजा २, ११<sup>9</sup>.  
दग्ध-संसार- -रः महा २, ३४.  
दग्धा(ग्ध-अ)न्न- -न्नम् भव ४,  
१३.

a) वा. क्रिवि. द्र. । b) सप्तवि<sup>०</sup> इति अख्या. । c) पा ४, १, २१ । d) पा ७, ३, १५ । e) °दिमनु<sup>०</sup> इति  
निसा. संटि., °दिमनून् इति अख्या. । f) ऋ १०, ९०, १ । g) °पराम् इति मुपा. यनि. सु-शोधः । h) व्युः ?  
=अवस्था- । i) वैप१ यद्र. । j) ऋ १०, ८३, ६ । k) ऋ १०, ८३, ३ । l) विप. । वैप१ यद्र. । m) ऋ १, ११७,  
२२ । n) =अश्विनोरन्यतर- । o) पा. ? यनि. शोधः द्र. । p) 'दह्यामि' इति आन., अख्या. । q) °पाशः इति अख्या. ।



दग्धे(ग्ध-इ)न्धन-नः अन्न ३,  
११; नम् खे ६, १९.  
दग्धुम् के ३, ६.  
दग्ध्वा वृजा २, १६; वृज २, ८; लु  
२३<sup>३</sup>; नाप २; रापू ४, २६; तुअ  
१३; १संन्या २, १; यो ३, ३२.  
?दग्धवस्<sup>३</sup>-वान् वा ८<sup>०</sup>.  
दहत-हन्तम् श ९  
दहन-नम् पै ४, ७.  
दहन-कर्मन्-र्मणा १संन्या २,  
७२.  
दह्यमान-नम् शि ४, २८.  
दाह-हः महा ४, २६.  
दाह-कर-०र अत्त ५.  
दाह-काष्ठा(ष्ठ-आ)दि-दि शि  
७, ८२.  
दाह-प्रदायि(न्>)नी-नी  
महा ३, ३६.  
दाहन-  
दाहन-जन्य-न्यम् म १, १०.  
दाह्य-हम् वृज २, ८.  
दहर<sup>०</sup>-रः छां ८, १, १; २; पं ३५;  
ब्रसू १, ३, १४; रम् के २, १<sup>०</sup>;  
छां ८, १, १; २; सुबा ४<sup>३</sup>; ११;  
लु १०; पं ३४; रे स ३७८;  
४; ७.  
दहर-स्थ-स्थः यो ३, ३१.  
दहरा(र-आ)काश-शे शां १, ९.  
दहरा(र-आ)दिक-कम् अता १०.  
दह<sup>०</sup>-हम् मना २, १२, ३<sup>३</sup>९<sup>१</sup>.  
दा<sup>०</sup> दत्ता १, २<sup>३</sup>.  
✓दा(दाने), >दापि, ददापि, ददाति  
तै ३, १०, ६; छां ७, १५,  
१<sup>३</sup>; वृ १, ४, १६; ३, ९, २१;

मना २, ७९९<sup>१</sup>; वृजा ३, ३४;  
वृपू १, १५; २, १५; १८९<sup>१</sup>;  
वृज २, ८; ७, १२; ब्रवि २६;  
राज ५, २८; पाशु २, ११; १२;  
१४; इ १४: १८; सार २३०:  
२०; २३८: ५; २८४: १९; २०<sup>३</sup>;  
२१; २२; २८५: ५; २८८: ४; मृ  
९; शि ७, ७३; ९<sup>१</sup> व ४४१: २०;  
४४७: ४; ४५१: १७; ४५४:  
२२; पिब्र ३, ७; ददति वृ ५, ३,  
१; कौ १, १९<sup>१</sup>; सार २२२: १५;  
२२४: ४; २२५: १३; २५०: ९;  
२७३: १७; २८०: १७; ददासि  
गी ९, २७; ददामि क १, १, ४९<sup>१</sup>;  
१६; वृ ४, १, २-७; ३, १४-१६;  
३३; ४, ७; २३; अन्न ५, ६१;  
गोउ ६०; इ १८: १८; गी १०,  
१०; ११, ८; दद्याः वृ २, १, १;  
६, २, ४; कौ ४, १९<sup>१</sup>; ददातु पा  
७, ४; दत्ताम् ९<sup>१</sup> व ४६१: ३;  
४६४: २०; देहि छां १, १०, ३;  
मना १, ८९<sup>०</sup>; १२९<sup>१</sup>; आबो ११<sup>१</sup>;  
त्रिवि ७, ४०<sup>३</sup>; ४१; द ७; रार  
२, ६५; ८१; रापू ४, १५; अन्न  
१, ६; ८; सर ३, २; सूता २, ७९<sup>१</sup>;  
ऊ ६४: ९; सु २९३: ७; वपं  
३१२: १५; व४३५: १५; ४६२:  
६; देहि-देहि मना २, ६५९<sup>१</sup>;  
दत्त छां ४, ३, ७; वृ ५, २, ३; ३;  
ददानि छां २, २२, ५; कौ ३, १९<sup>१</sup>;  
ददाम कौ २, १<sup>३</sup>; २<sup>३</sup>; दद्यात् छां  
३, ११, ६; वृ ६, ४, ७<sup>३</sup>; ८; मैत्रि  
६, २९; मना २, ३८९<sup>१</sup>; ३९९<sup>१</sup>;  
४०९<sup>१</sup>; वृजा ६, १२; वृपू ५,

१०; नाप ३, ५९; द ५; १संन्या  
१, १; २, ९३; कर १; रुह ३६;  
म २, २४; रुजा ३, १; शा ३४;  
सु १, १, ५२; इ १०: ९; १०;  
१४: २; १५: १३; १५; सूता ५,  
१४; गोच ६७: १७; वि २५;  
पारा ११; शि २, २४; २७<sup>३</sup>; २९;  
४, ३९; ६, ३; ८; ५९-६२; ७३;  
७४; ९१; ९७; १०३; १७३;  
१९९; २००; २१०; २२८;  
२३१; २३२; २३६; २३८-२४०;  
२५३; २५८; २६७; २८४; ७, ९;  
कालि ४०३: १९; व ४३४: ५;  
४५९: २; कशु १, १; २, ३; ३;  
१; दद्याः छां १, ११, ३<sup>३</sup>; दद्याम्  
इ १०: ४.  
ददौ क १, १, १; वृ ४, ३, १<sup>३</sup>;  
सुबा ७<sup>३</sup>; श १०; अध्या ७०<sup>३</sup>;  
गोउ १७<sup>३</sup>; सार २५२: ९; ददतु:  
छां ४, ३, ५; ददु: छां ४, ३, ८;  
अरु २३९<sup>१</sup>; दास्यति वृपू १, ९;  
ग १७; गोउ २; ४; वपू २, १;  
दास्यन्ते गी ३, १२; दास्यसि  
क १, १, ४९<sup>१</sup>; दास्यामि छां ५,  
११, ५<sup>३</sup>; राज ३, २; गी १६,  
१५; अदात् गोउ ३; अरु  
३४९<sup>१</sup>.  
दीयते पि २: शि ४, ५१; ६, ४०;  
१६५; गी १७, २०-२२.  
दापयति त्रिवि ८, १२; दापय  
रार २, ८१; ८४; रापू ४, १६;  
वपं ३१२: १५.  
ददत् रापू ४, २५.  
१दत्त, त्ता- -त्तः शां ३, १;

a) तु. बाटी. । b) 'द(इज)ग्धवान्' इति बे. । c) वैप१ यद्र. । d) 'दअम्' इति निसा. । e) व्यु. ?  
=अवस्था- । f) 'दहरम्, दहे' इति तैआ १०, १०, ३। g) =बीजमन्त्रविशेष- । h) तैआ १०, ६३, १। i) कौ ३, १, ९।  
j) ऋ १, ९१, २०। k) 'सदसि' इति शांआ ३, १। l) तैआ ३, ११, ८, १। m) 'दधि' इति शांआ ६, १। n) ऋ  
१०, ८४, ७। o) तैआ १०, १, ८। p) तैआ १०, १, १२। q) पा. ? 'धेहि' इत्येवं शोधः द्र. (तु. ऋ ९, ११३, ७; वैतु.  
'देही' इति अज्या.)। r) 'धेहि' इति खि १, ५०, २। s) तैआ १०, ६०, १। t) 'वृणीष्व' इति शांआ ५, १। u) तैआ  
१०, ४८, १। v) तैआ १०, ५०, १। w) तैआ १, २७, ३। x) तैआ १, २७, ५। y) श्लुश्च शश्चेति विकरणद्वयमत्र द्र. ।

सार२३२:२३;२६१:२२; -त्तम्  
छां ४, ३, ६; ५, १०, ३; कौ २,  
१; २; मैत्रि६, ९<sup>१</sup>; अशि३, ३; वृजा  
६, ५; तेषु ५, ७; इ१५:२३; १७:  
१७; च२१: १७; सार२२६:  
३; २२७: २१; २२; रु २२;  
वट्ट ३१५: २; स ३७९: २;  
गी १७, २८; -त्तस्य शि ६,  
२०२; -त्तात् गी ३, १२; -त्ताम्  
सार २३२: १३.

२दत्त<sup>b</sup> - -त्त: त्रिन्ना २, ८७.

३दत्त<sup>c</sup> - -त्त<sup>d</sup> दत्ता १, ५; -त्त:  
दत्ता १, १.

दत्त-बीज-स्थ- -स्थम् दत्ता  
१, २.

दत्ता(त्-आ)त्रेय<sup>१</sup> - -०य दत्ता  
१, ५; ७<sup>३</sup>; -य: शां ३, १<sup>२</sup>; १अव  
१, जाद १, १; १०, १३; दत्ता १,  
२; ५; ६; ३; -यम् शां ३, १;  
१अव १; दत्ता १, १; मु १, १,  
३९<sup>०</sup>; -याय दत्ता १, ४<sup>३</sup>; ६; २;  
व ४६५: १०.

दत्तत्रेय-रूप(प>)पा-  
-पा शां ३, १.

दत्तवत् - -वान् वृजा ६, ५; इ ११:  
३; सार २४९: ७; २५२: १६.

दत्तवती - -ती सार २६१: २२;  
२७६: ८.

दत्त्वा मै ५, ८; मैत्रि ६, ८; मना २,  
३६९<sup>१</sup>; वृजा ३, १९; नाप ४,  
३८; अध्या ५; त्रिता २, ७;  
गोपू २५; गोउ ३; इ १३: ११.

ददत् - -दत् क १, १, ३; -दत: वृ  
३, ८, ९; आश्र २<sup>३</sup>; -दत्सु पित्र

३, ७; -दन्<sup>१</sup> मना २, ७९९<sup>१</sup>.

ददापयितृ - -त्ता मना २, ६५९<sup>१</sup>.

दातव्य, व्या- -व्यम् श्वे ६, २२; ते  
६, १०९; श ३४; ३५<sup>३</sup>; अज  
५, ११९; गोउ १; मु १, १,  
४८; ५०; गु ७५; गी १७, २०;  
-व्या सुबा १६<sup>३</sup>.

दातुम् वृपू १, ९; वपू २, १.

दातृ - -त्ता व्रवि ४८; इ १६: २१;

वपू १, ६; ७; -त्तार: प्र २, ११;

-त्तारम् मना २, ७९९<sup>१</sup>; ग४; पा८,

६; -त्तारौ त्रि१४; -तु: वृ ३, ९,

२८, ७; महा २, ९; शि६, २८२.

दातृ-हस्त - -स्तम् इ १३: ५.

१दान - -नम् छां २, २३, १; ३,

१७, ४; वृ ५, २, ३; मना २, १०९<sup>१</sup>;

७८९<sup>१</sup>; ७९९<sup>१</sup>; सुबा ३; त्रिन्ना

२, ३३; शां १, २; जाद २, १;

७; वरा ५, १३; इ १४: ६;

१५; तुल ७१: १७; शि ५,

४४; ७, २; गी १०, ५; १६, १;

१७, ७; २०<sup>२</sup>; २१; २२; १८, ५<sup>२</sup>;

४३; -नात् मना २, ७८९<sup>१</sup>; -ने

मना २, ७८९<sup>१</sup>; ७९९<sup>१</sup>; जाद ४,

५७; गी १७, २७; -नेन वृ ४, ४,

२२; ६, २, १६; मना २, ७९९<sup>१</sup>;

सुबा ३; गी ११, ५३; -नेषु गी

८, २८; -नै: गी ११, ४८.

दान-क्रिया - -या: गी १७, २५.

दान-धर्म-दातृ - -त्रे सार २७७:

१७.

दान-लीला - -लायाम् सार

२४०: ३.

दानलीला-सुख-दायिन्-

-यिने सार २४७: १२.

दान-शील - -लाय सार २४७: ९

दान-श्रेणि-दान-लीला-

(ला-या)धिष्ठान - -नम् सार

२६०: ८.

दानान-आ)दि-कृपा-मति-

-ति: ध्या ९३: ९.

दायिन् - -यिने द १२.

दावन् - -वा वा ८.

दीयमान - -नम् मृ १०.

देय, या- -य: दत्ता १, ६; नापू ३,

१०; सार २६१: २१; २७८:

२; २८६: १२; शि १, २७;

-यम् तै १, ११, ३<sup>३</sup>; ते ६, १०८;

निर्वा २९८: १८; श ३२; रापू

४, ६७; ग १७; दत्ता १, ६<sup>३</sup>;

मु १, १, ४६<sup>३</sup>; ४७; सूता १, ३७;

३८; ४०; स्व ६२: ४; नापू ३,

९; १०; सार २२७: १७; २३१:

१०; शि ४, ४३; ६, ३९; -या योचू

७०; नापू ३, १०; शि ६, १६९.

दाक्ष, दाक्षायण, दाक्षि, दाक्ष-

√दक्ष द्र.

दाडिम<sup>१</sup> - -मम् शि ६, ८.

दात्र - √दो>दा (अवखण्डने) द्र.

१दान - √दा(दाने)

२दान - √दै>दा (शोधने) द्र.

दानव - दनु - द्र.

दान्त - √दम् द्र.

दामन्<sup>१</sup> - -म वृ २, २, १९<sup>१</sup>.

दामनी<sup>१</sup> - -नी(नीम्<sup>१</sup>) शि ६,

२७६.

दामो(म-उ)दर<sup>१</sup> - -राय त्रिवि ७,

३१; ३८; ४१<sup>२</sup>.

a) °त्तम् इति सात. । b) =देवदत्त- (=वायुविशेष-) । पूष. लोप: (पावा ५, ३, ८३) । c) =दत्तात्रेय- । उप. लोप: (पावा ५, ३, ८३) । d) अविभक्तिको निर्देश: । e) =तदाख्योपनिषद्विशेष- । f) शौ १९, ७१, १ । g) उम: प्रतिप्रसव: उंसं. (पा ७, १, ७८) । h) तैआ १०, ६३, १ । i) तैआ १०, ६०, १ । j) तैआ १०, ८, १ । k) तैआ १०, ६२, १ । l) व्यु. १ =करक- । m) वैप१ यद्र. । n) श्री. डीप् प्र. चोपधालोपाभावश्च यक्र. उंसं. (पा ४, १, ११; ६, ४, १७४) । यद्वा <√दामि (नाधा.)+करणे ल्युट् प्र. [=खट्वानियन्त्रणकरी-रज्जू- (तु. पंजा. दौण, दौणी)] । o) पा. १ यनि. शोध: द्र. । p) =कृष्ण- ।

दाम्भिक- √दम्, म् द्र.  
 दाय<sup>a</sup> रार २, ६८.  
 दायक- दायिन्- √दा (दाने) द्र.  
 दार<sup>b</sup>- -रम्<sup>c</sup> कुं २; -रान् कर १;  
 कथु २, ३; -रेण<sup>d</sup> वृ ६, ४, १२.  
 दार-पङ्क- -ङ्कम् मं १, २, ३.  
 दारा(र-अ)पत्य-क्षेत्र-वित्ता(त-आ)  
 दि-दूर- -रः भव २, २७.  
 दारे[१<sup>d</sup>(र-ए)]षणा- -णायाः नाप  
 ४, ३८,  
 दारे(१<sup>d</sup>)षणा-धने(१<sup>d</sup>)षणा-  
 लोके(१<sup>d</sup>)षणा(णा-आ)स्म-  
 क-देह-वासना- -नाम् नाप  
 ५, १.  
 ?दारक<sup>e</sup>- -कः भा १८.  
 दारिद्र्य- दरिद्र- द्र.  
 दारु<sup>f</sup>- -रु छां ४, १७, ७<sup>g</sup>; १आ  
 १८; -रुणि वृ ३, ९, २८, ३.  
 दारु-कूट- -टम् सिशि ३८२: २०.  
 दारु-ज- -जम् शि ६, २७१.  
 दारु-पात्र- -त्रम् आरु ४; -त्राणि  
 कर १; कथु २, ३.  
 दारु-भूत<sup>h</sup>- -तम् कौ २, १४.  
 दारु-मध्य-स्थ- -स्थः यो ३, १४;  
 योशि ६, ७६.  
 दारु-मय- -ये त्रिवा २, ९०.  
 दारु(र-उ)द्धव- -वम् सिशि  
 ३८३: १.  
 दारुण- √दृ द्र.  
 दारुण- √दृ द्र.  
 दारुणान्तिक- √दृ द्र.  
 दारुण- दलभ- द्र.  
 दाव- √दु द्र.  
 दावन्- √दा(दाने) द्र.

√दाश् (\*वधा.), ददाश्च १<sup>h</sup>व ४४१:  
 २१; ४४७: ४; ४५१: १८;  
 ४५४: २३.  
 दाश<sup>i</sup>-  
 दाश-कितवा(व-आ)दि-  
 दाशकितवादि-स्व- -स्वम्  
 ब्रम् २, ३, ४३.  
 दाश्वस्- -शुषः बा ११; १७; -श्वान्  
 बा २०.  
 दाशुषी- -ष्यः सार २७६: ३.  
 दाशरथ- दशन- द्र.  
 √दास्  
 दास<sup>k</sup>- -सम् व ४५९: २२९<sup>l</sup>;  
 -सा: महा ३, ३५.  
 दासी- -सी इ १८: १७;  
 १८; -सीनाम् वृ ६, २, ७; -सीम्  
 इ १८: १६; -स्याः छाग २३: १.  
 दास-भार्य- -र्यम् छां ७,  
 २४, २.  
 ?दासी-निष्क<sup>m</sup>- -ष्कः  
 छां ५, १३, २.  
 दासी-भूत-समस्त-  
 देव-वनि(त>)ता- -ताम् व  
 ४५५: १८.  
 दास-ता- -ताम् कालि ४०२: ५.  
 दास-स्व- -स्वम् शि ७, ११०.  
 दास-दासा(स-अ)नुदास- -सः  
 भव २, ३५.  
 दास-भाव- -वम् रा ४२५: १७.  
 दास-भूत<sup>n</sup>- -तम् भव २, ४२.  
 दास्य- -स्यम् ब्रवि २७; भव  
 २, ५८<sup>o</sup>; -स्याय वृ ४, ४, २३.  
 दास्य-प(र>)रा- -रा भव  
 २, ५९; -राम् भव २, ६०.

दाह-, दाहन-, दाह्य- √दह द्र.  
 दिग्ध- √दिह द्र.  
 दिति- √दो द्र.  
 दिद्युतान- √द्युत द्र.  
 दिन<sup>p</sup>- -नम् त्रिवि ३, ४-७; वृजा ४,  
 ११; पिं ६; सार २४३: १२;  
 २८६: १४; २८९: १३; -नानि  
 त्रिवा २, १२६; १२७; महा २,  
 २२; २४; -ने १योत १२४; त्रिवि  
 ३, ४; राउ ५, ७; सार २८६:  
 ९; -नेने ब्रवि २४; १योत ३४;  
 १२५; १२८; यो १, ५५; योरा  
 १९; इ १९: १; शि ३, १०; ५,  
 २८; ६, ३६; १३०: ७, १३९.  
 दिन-कर-किरण- -णैः वरा ३, ११.  
 दिन-त्रय- -यम् नाप ४, २०; शि  
 ६, १४१; -येण वृजा ३, २२.  
 दिन-द्वय- -यम् नाप ४, २१.  
 दिन-द्वादशक- -केन १योत १०६.  
 दिन-पक्ष-मास-संवत्सरा(र-आ)-  
 दि-भेद- -दात् त्रिवि ३,  
 ५-७.  
 ?दिनाक्षरयुगाक्षरे<sup>q</sup> पारा १२.  
 दिय<sup>r</sup> व ४२७: १७.  
 √दिव्, १<sup>p</sup>दिव्यन्ते २कौल १४.  
 दिव्- दिवः प्र १, ११; छां ३, १३,  
 ७; १४, ३; ४, १७, १; वृ १, ५,  
 १९; ३, ७, ८; ८, ३; ४; ६; ७;  
 अशि ६, ९; सर २, २९<sup>q</sup>; लि  
 ३१०: ३९<sup>r</sup>; नी १, २; ९<sup>v</sup>  
 ४३७: ९९<sup>s</sup>; १५९<sup>t</sup>; ४३८:  
 १९; ४३९: ६; १६; ४४०:  
 ३; १३; ४४१: १; २१; ४४२:  
 ९; २०; ४४३: ७; १७;

a) 'सर्वाभीष्टदाय' इत्यस्यान्तिमोऽवयवः । b) व्यु. ? पुं. नाप. । =कलत्र- । c) १रु. इति विशेषः ।  
 d) पा. ? यनि. शोधः द्र. (तु. अज्या.) । e) प्राति. ? 'उद्धारक-' इति सु-शोधम् (तु. तान्त्रि.) । f) व्यु. ? । g) जैउ  
 ३, ५, ३, ३<sup>h</sup> । h) बस. । उप. भाप. । i) अ १, ९१, २० । j) घा. अर्थः ? । k) वैप १ यद्र. । l) अ १०, ८३, १ ।  
 m) स्वरूपं चार्थश्च ? विप. रथपरं स्यात् ? [वैतु. शं. रामा. मलो. कस. (=नाप.) इति] । n) पा. ? दिनाऽक्षरैः (=सप्ता<sup>o</sup>?),  
 युगाऽक्षरैः (=चतुर<sup>o</sup> ?) इति द्विपदतया शोधो विमृश्यः । o) 'यदि' इत्यस्य गुह्यजपार्थो विपर्यासः । p) 'दीव्यन्ति'  
 इत्येतत्परः शोधः द्र. । q) अ ५, ४३, ११<sup>r</sup> । r) अ २, ४०, १ । s) खि ५, ८४, १ । t) अ ८, ४४, १६ । u) अ १, ६९, १ ।



४४४ : १०; २०; ४४५ : ८;  
१८; ४४६ : ७; १७; ४४७ : ५;  
१६; ४४८ : ४; १४; ४४९ : २;  
१३; २०; ४५० : ४; ११; १८;  
४५१ : ३; ११; १८; ४५२ : २;  
११; १८; ४५३ : २; ७; १४;  
२०; ४५४ : २; १०; १७; ४५५ :  
१; ७; दिवम् ऐ १, २; छां ३,  
१५, ५; ५, १२, १; ७, २, १; ७,  
१; वृ ३, ७, ८; खे २, ३९<sup>०</sup>; मैत्रि  
६, ३३; मना १, १९<sup>०</sup>; १४९<sup>०</sup>; २,  
७९९<sup>०</sup>; वृषू १, ३; २संन्या १६:  
३; गरु ११९<sup>०</sup>; २प्र ३२ : १५;  
सूता २, ८९<sup>०</sup>; वपू १, ६; वड ३,  
१२; २३; दिवि छां ३, १२, ६९<sup>०</sup>;  
५, १९, २; ८, ५, ३; वृ ३, ७, ८;  
खे ३, ९९<sup>०</sup>; कौ ३, १; मै ४, ४,  
३; ५, २; मैत्रि ६, २; मना २,  
१२, ३९<sup>०</sup>; २, ७९९<sup>०</sup>; आरु ५९<sup>०</sup>;  
वृजा ८, ६९<sup>०</sup>; वृषू ५, २१९<sup>०</sup>;  
सुबा ६९<sup>०</sup>; त्रिवि ४, ९९<sup>०</sup>; स्क  
१४९<sup>०</sup>; राउ ५, २९९<sup>०</sup>; पै ४,  
२३९<sup>०</sup>; त्रिता ४, १८९<sup>०</sup>; ता  
३, ९९<sup>०</sup>; गोपू २७९<sup>०</sup>; वरा ५,  
७६९<sup>०</sup>; सु २, २, ७७९<sup>०</sup>; सूता  
१, १४९<sup>०</sup>; संशां ९<sup>०</sup>; नी २,  
१९९<sup>०</sup>; २०९<sup>०</sup>; शि ६, १०२;  
२११; गु ४६; ९<sup>०</sup>व ४४३ : ६;  
४४८ : १४; ४५२ : १७; गी ९,  
२०; ११, १२; १८, ४०; दिवे  
मना २, ३९<sup>०</sup>; ४९<sup>०</sup>; ५९<sup>०</sup>;  
६७९<sup>०</sup>.

दिवस्<sup>१</sup>(>:)\*

दिवस्-पृथिवी- -व्यो:  
आषे ७ : १०.

दिवो-दास<sup>१</sup>-

दैवोदासि<sup>१</sup>- -सि: कौ

३, १.

दिवि

दिवि-क्षित<sup>१</sup>- -क्षिते मैत्रि

६, ३५.

दिवि-षट्<sup>१</sup>- -षट्: अक्ष ८

दिव्य, व्या<sup>१</sup>- -व्य: सुं २, १, २;

सुबा १: ४; ६<sup>१</sup>; ७; त्रिवि ९६;

अध्या १; -व्यम् सुं ३, १, ७;

२, ८; हं २०; सुबा ८; सूता १,

३; ऊ ६४ : १; सार २६१ :

२२; शि ५, १; ६, ३६; १०६;

२३१; ७, १३१; स ३७९ : १२;

कालि ४०३ : २; गु ३६; योसू

३, ४२; गी ४, ९; ८, ८; १०;

१०, १२; ११, ८; -व्या २संन्या

१६ : १; -व्या: गोउ ५२; वा

१३; २शिसं ११; गी १०, १६;

१९; -व्यान् शि ४, ५०; ६, ५६;

२३०; गी ९, २०; ११, १५;

-व्यानाम् पं १; गरु २४; गी

१०, ४०; -व्यानि खे २, ५९<sup>०</sup>;

सुबा ६; शि ६, ३४; गी ११, ५;

-व्याय मना २, १६९<sup>०</sup>; वा ८;

-व्ये सुं २, २, ७; व १<sup>३</sup>; -व्यै:

गोउ ५७; वि ७; शि ४, ३५;

६, १००; १७६; १७९; १८७;

-व्यौ गी १, १४.

१दिव्य-गन्ध<sup>१</sup>-

दिव्यगन्ध-स्व-भाव-

-वै: त्रिवि ६, २१.

दिव्यगन्धा(न्ध-आ)-

नन्द-पुष्प-वृष्टि- -ष्टिभि:

त्रिवि ६, २३.

दिव्यगन्धा(न्ध-आ)नुले-

पन- -नम् सूता १, २७; गी ११,  
११<sup>३</sup>.

२दिव्य-गन्ध<sup>१</sup>- -न्ध: सौ २,

५; -न्धै: सि २, ३; ४, ३.

दिव्य-ज्ञान- -नम् त्रिवि ८,

१७.

दिव्यज्ञानो(न-उ)पदेष्ट-

-ष्टारम् योशि ५, ५७.

दिव्य-तेजस्-

दिव्यतेजो-मय-

दिव्यतेजोमय-छत्र-

चामर-ध्वज-पताका-वितान-

तोरणा(ण-आ)दि- -दिभि:

सि ६, १५.

१दिव्य-देह<sup>१</sup>- -ह: सार

२५९ : १५.

२दिव्य-देह<sup>१</sup>- -ह: सौ २, ५.

दिव्य-ध्वजा(ज-आ)तपत्र-

-त्रै: गोउ ४६.

दिव्य-नाना-मङ्गल-वाद्य-

-द्यै: सि ६, ३७.

दिव्य-मङ्गल-महावाद्य-

पुर:सर- -रम् त्रिवि ६, २५

दिव्य-मङ्गल-विग्रह- -हम्

त्रिवि ७, ५०.

दिव्य-मङ्गला(ल-आ)लय-

-येषु त्रिवि ६, २३.

दिव्य-मङ्गला(ल-आ)सन-

-नम् त्रिवि ६, २०.

दिव्य-मन्त्र- -न्त्रेण अना २१

दिव्य-माख्या(ल्य-आ)म्बर-

धर- -रम् गी ११, ११.

दिव्य-यान-गत- -तै: रार

२, ४५.

a) ) मा ११, ३। b) तैआ १०, १, १। c) तैआ १०, १, १४। d) तैआ १०, ६३, १। e) मा १२, ४।  
f) ऋ १, ५०, ११। g) ऋ १०, ९०, ३। h) तैआ १०, १०, ३। i) ऋ १, २२, २०। j) तैआ ३, १२, ९, १।  
k) मा १८, ६। l) 'दिवः' इति मा १३, ८। m) खि ७, ५५, १०। n) तैआ १०, ३, १। o) तैआ १०, २, १।  
p) तैआ १०, ४, १। q) तैआआ १०, ६७। r) पा ६, ३, ३०। s) वैप१ यद्र.। t) पावा ६, ३, ९। u) ऋ १०,  
१३, १। v) तैआआ १०, १६। w) कस.। x) वैतु. शं. उप. °गन्धानुलेपन- इति। y) बस.।

व्य-योग-प्रदायक- -कः

, १४.

व्य-रूप, पा- -पम् ब्रवि

-पाम् व ४२६:१३; -पेण

३८.

व्य-लिङ्ग- -ज्ञाय मना २,

.

व्य-वपु- -पुः योचूद३;

, ०<sup>b</sup>.

व्य-वर्ष-सहस्र- -स्त्राणि

१, २.

व्य-श्राद्ध- -द्धे नाप ४,

.

व्य-सिंहा(ह-आ)सन-

३७.

व्य-स्त्री-परिवारित- -तः

१७९.

व्य-स्त्री-भोग-संपन्न-

३६, २७१.

व्य(व्य-अ)ङ्ग-राग- -गैः

८.

या(व्य-अ)नन्त-प्राका-

: सि ४, २.

या(व्य-अ)नेको(क-उ)-

-आ)युध- -धम् गी

०.

या(व्य-अ)म्बर-धर-

ता १, २७.

या(व्य-अ)लङ्करणो-

पेत- -तम् गोपू ९.

या(व्य-अ)श्व-युक्त-

६, २०५.

या(व्य-अ)सन- -ने शु

१, ७.

दिव्यो(व्य-उ)पचार- -रैः

शि १, २८.

द्यावा<sup>०</sup>-

द्यावा-पृथिवी- -वी छां ७,

४, २; ८, १, ३; वृद्ध, ४, २१; मना

१, ३९<sup>d</sup>; ४९<sup>०</sup>; त्रिवि ६, १३९<sup>d</sup>;

महा १, १; आप्ते ७: २; च२०:

२; बा १२; ६ १३९<sup>d</sup>; २शिसं२६९<sup>d</sup>; -व्यो: मना १, १४९<sup>d</sup>;

आपते ७: १६; गी ११, २०;

-व्यौ वृ ३, ८, ९.

द्यावा-भूमि- -मी श्वे ३,

३९<sup>a</sup>; गोपू १२१<sup>h</sup>.द्यु<sup>१</sup>- द्युभि: मना २, ७६९<sup>j</sup>.

द्यु-म्बा(भू-आ)द्या-

(दि-आ)यतन- -नम् वसू १,

३, १.

द्यु-मत्- -मत् व ४३७:

१३९<sup>k</sup>; -मन्तम् व४६०:२०९<sup>l</sup>.

द्युमत्-किरीट- -टम् गोउ

४८.

द्यु-लोक<sup>३</sup>- -कम् वृ ३, १,

१०.

द्यो- द्या: वा १; द्यौ: <sup>m</sup> मुं

२, २, ५; तै १, ३, १; ७,

१; ऐ १, २; छां १, ३, ७; ६,

३<sup>३</sup>; २, २, १; २; १७, १;

३, १, १; १५, १; १९, २; ४, ६, ३;

१३, १, ५, १९, २; ७, ६, १; ८, १;

१०, १; वृ १, १, १; २, ३, ५,

१२<sup>३</sup>; २, २, ३; ३, ७, ८<sup>३</sup>; ९, ३, ७;५, १४, १; ६, ३, ६९<sup>n</sup>; ४, २०;

२२; मैत्रि ६, ३३; ३४; मना २,

३९९<sup>n</sup>; ७९९<sup>०</sup>; अशि २, १५; अ

१; जा २; जावा २४; वृपू २,

२; वृउ ३, ४; ध्या ११; ब्रवि

६; अव्य १; सावि ६<sup>३</sup>; १प्र

३१: ९; २प्र ३६: २१; पा ७,

६: ८, ८; वृउ ३१४: ७; २शिसं

९; १६; गार ४०६: १४; गा

१; पित्र ४, ७; वउ ३, ५०.

द्यौर(>:)<sup>३</sup>-

द्यौर-लोक- -कः काला

१६; गु १६; -कस्य राउ

३, १.

१दिव<sup>३p</sup>-

दिवौ(व-ओ)कस्- -कसः नाप

४, ३७; गु ७८.

१देव- -०व ई १८; तै १, ४, १; वृ

५, १५, १९<sup>a</sup>; मना २, ३९९<sup>२</sup>;नाप ४, ३८९<sup>३</sup>; योशि १, १; त्रिता

४, १; गी ११, १५; ४४; ४५;

-वः के १, १; प्र २, २; ५; ४, १;

५; ६; छां १, १२, ५; ४, ३, ६; वृ

३, ९, ९; ४, १, २-७; ३, २०; श्वे

१, १०; २, १६९<sup>४</sup>; १७; ३, ३९<sup>६</sup>;४, १; १७<sup>५</sup>; ५, ३; ४; ६, १०;

११; गौ १, १०; २, १२; मैत्रि

२, ६<sup>५</sup>; ६, ७; २३; ३८; मना १,३९<sup>७</sup>; २, १९<sup>८</sup>; २, १२, २९<sup>७</sup>;३९<sup>२</sup>; व३, ७; अशि ५, १९<sup>६</sup>; वृपू

१, १५; ४, १५, १-३२; वृउ ५,

१-३; सुबार; ६<sup>३</sup>; ७; मन्त्रि ६; ससा१, ४२९<sup>a</sup>; तै ५, ६१; ब्रवि ५;

६; ९६; १योत १०९; नाप ६, १;

- १) तैआआ १०, १६। २) ०व्यं व० इति निसा.। ३) पा ६, ३, २९। ४) 'द्यावाभूमौ' इति ऋ १०, सा ३२, १२। ५) तैआ १०, १, १४। ६) ऋ १०, ८१, ३। ७) ०भूमिसूर्या० इति अज्या. मुपा. यनि. निसा., आन.)। ८) पा ६, १, १३१। =लोकविशेष-, कान्ति-। ९) ऋ २, १, १। १०) ऋ २, २३, १५। ११) पा ७, १, ८४। १२) ऋ १, १०, ७। १३) तैआ १०, ६३, १। १४) =स्वर्ग-। १५) ऋ १, १८९, १। १६) तैआ १०, ४९, १। १७) तैआ ७, ४, १। १८) मा ३२, ४। १९) 'वेदः' इति निसा. मुपा. यनि. २०) उत्तरेण संधिरार्षः। 'वा' इति सात.। २१) ऋ १०, ८१, ३; मा ३२, ४। २२) ऋ १, ९९, १। २३) तैआ १०, १०, ३। २४) पा. १: 'देहः' इत्येवं शोधः द. (तु. अज्या.)।

९, ९; द १<sup>१</sup>; त्रिवि १, ११; २,  
१६; द, १३<sup>९</sup>; राष्ट्र १, ११;  
राज ५, १; सुद्र ३५<sup>९</sup>; शां २, १;  
३, १<sup>१</sup>; महा ४, ५६; योशि २,  
२०; ५, ५६; पप ४२०: ८; अव्य  
६; ए ८; अज ४, ३०; सूर १९<sup>९</sup>;  
अध्या १; पाशु १, २; त्रिता १,  
१४; १५: २५; ४४; ४६; २, १६;  
रुह २; ४०; यो ३, २०; जाद  
४, ३५; गोपू २: ४९; गोड १९;  
३९: ६३; ६५; वरा ४, ३२;  
जाबा २२; २४; १प्र ३१: ८;  
१०; २प्र ३६: १९<sup>९</sup>; बा ४;  
म ४८: ८; शौ ५३: १७<sup>९</sup>;  
सूता १, १०<sup>९</sup>; १४<sup>९</sup>; नापू ४,  
६९<sup>९</sup>; ५, २९; पा ३, ३; ७; राधा  
१, १; ४, २१; सार २२०: २३;  
रु १३<sup>९</sup>; २३; वटु ३१६: २०<sup>९</sup>;  
रशिसं २६<sup>९</sup>; हे १०; गार  
४०५: १९; गुषो ४२१: ५;  
व ४३७: ७<sup>९</sup>; ४६०: १९<sup>९</sup>;  
४६१: १५<sup>९</sup>; भव २, ४८; पित्र  
२, २; ३, ९; ६, १४; १५<sup>९</sup>; चूद;  
वपू १, ४; -वस् क १, १, १७;  
२, १२; २१; छां ३, १७, ७<sup>९</sup>;  
वृ १, ४, ६; ४, ४, १५; श्वे १,  
११; १४; २, १५; ४, ११; १६;  
५, १३; १४; ६, ५; ७; १३; १८;  
२०; मना २, १३, १<sup>९</sup>; वृषू ४,  
१५, ३३; मन्त्रि १९<sup>९</sup>; व ३,  
९; अशि ५, ५; १६; वृषू ४.

१६<sup>३</sup>; सुबा ८; ध्या २८; ब्रवि  
६४<sup>०</sup>; ७७; १योत ८९; नाप  
९, ७; १०; त्रिवा २, १५५; श  
३; रार २, १०१<sup>०</sup>; रापू ५, ६;  
राउ ५, १<sup>३</sup>; शां ३, १; महा १,  
१<sup>३</sup>; ९<sup>०</sup>; ६, २०; पाशु २, २; त्रिता  
१, ४१; ४२; ग १३; जाद ६,  
३९; ४७; गोपू २२; च २० :  
९९<sup>०</sup>; १२; २प्र ३६ : १७९<sup>०</sup>;  
नृष ८४ : १६; सूता ६, ८; नापू  
१, १६; वड ३१३ : १; रशिसं  
२०; गु ७२; भव २, ५; ४९;  
पित्र ६, ४; १२-१४; १९; चू  
१९; वपू १, २; ४; २, ४; गौ  
११, ११; १४; -वस्य छां ५, २,  
७९<sup>०</sup>; वृ ६, ३, ६९<sup>०</sup>; धे २, २९<sup>०</sup>;  
४९<sup>०</sup>; ६, १; गौ १, ९; २, १९; मै  
५, ७९<sup>०</sup>; मैत्रि ६, ७९<sup>०</sup>; मना २,  
३५९<sup>०</sup>; ब्र १; सी ३७; ९<sup>०</sup>त्रिवि  
७, ३९; ४४; त्रिवा २, १५९;  
रापू १, १३; शां ३, १; योशि  
५, ३४; ५९; सू६९<sup>०</sup>; सावि १०९<sup>०</sup>;  
९<sup>०</sup>त्रिता १, ५; २४; २७; ५३;  
पा ४, १; ६, १; ९<sup>०</sup>पारा २; ५;  
हे ४; गार ४०५ : १३; १८;  
९<sup>०</sup>व ४२९ : १८; ४५७ : १०;  
वड ६, २०; -वा: ई ४; कै ३, १;  
४, २; क २, १, ९; प्र २, १; सुं  
२, १, ७; ३, २, ७; तै १, ५, ३;  
२, ३, १; ५, १; ऐ ३, १४<sup>३</sup>; ५, ३;  
छां १, २, १; ४, २; ४; ५, २, ९, ५;

३, ६-१०, १; ५, ४-८, २; १०,  
४; ८, ८, ४; १२, ६; वृ १, ३, १<sup>३</sup>;  
७; १८; ४, ६; १०; ५, ६<sup>३</sup>; १७;  
२३; २, १, २०; ४, ५<sup>३</sup>; ६<sup>३</sup>; ५,  
१५; ३, ८, ९, ९, १<sup>३</sup>; २; ८<sup>३</sup>; २६;  
४, २, २; ३, २, २; ४, १६; ५, ६<sup>३</sup>;  
७<sup>३</sup>; ५, २, १<sup>३</sup>; ५, १; ८, १; ६, २,  
९-१४; १६; ३, १; श्वे०, ८९<sup>W</sup>; ५,  
६<sup>X</sup>; गौ२, २, १; कौ१, ६; २, १४<sup>3y</sup>;  
३, ३<sup>३</sup>; ४, १९; मैत्रि ६, ३२;  
मना १, १९<sup>W</sup>; ४९<sup>Z</sup>; १०९<sup>A'</sup>;  
२, २८९<sup>B'</sup>; ४९९<sup>O'</sup>; ६०९<sup>D'</sup>;  
७८९<sup>O'</sup>; ७९९<sup>O'</sup>; ऋ१; २; अशि१,  
१; १२<sup>३</sup>; १३<sup>३</sup>; ५, १५; अ२<sup>३</sup>; वृजा  
६, ५; १२९<sup>W</sup>; वृपू१, ८; २, १; ८;  
१४; १६९<sup>B'</sup>; १७<sup>३</sup>; ९<sup>B'</sup>; ३, १; ४,  
१; ९९<sup>W</sup>; १४; ५, १; ९९<sup>W</sup>; ११;  
वृ३ १, १; ६, १; ४; ५; ७, १; ९,  
१५; सुबा ४; ते १, १२; ५,  
३६; ध्या १६; ब्रवि ३; त्रिब्रा  
२, ७; सी १; श १२; २८; त्रिवि  
२, १६; ८, १८; रापू ४, ११;  
रा३ ५, ३; २९९<sup>W</sup>; वा ८; सुद्र३;  
शां ३, १<sup>३</sup>; योशि ६, ५७; अक्ष  
६-८; अव्य ६<sup>३</sup>; सू १३; पाञ्च  
१, १९; त्रिता २, ३४; ३, १;  
४, १; १३; ५, १<sup>३</sup>; दे१; ३; ५९<sup>I'</sup>;  
८; क२१; १६; रु२२; ४; भ १,  
५; २, २७<sup>३</sup>; मवा १०<sup>३</sup>; गोपू  
४८९<sup>I'</sup>; गो३ २२; २४; ६२;  
वरा ५, ६४; सौ १, १<sup>३</sup>; २, १;

a) ऋ १०, ८१, ३ । b) तैऋ ३, १४, १ । c) ऋ १०, १५८, ३ । d) मा १, १ । e) ऋ ४, ५८, ३ । f) मा ३२, ४ । g) तैऋ ३, १२, ९, १ । h) ऋ ७, १००, ३ । i) ऋ १, ३५, २ । j) ऋ १०, ८३, २ । k) शौ ७, ६५, १ । l) ऋ १, ५०, १० । m) सकृत् 'देव' इति तैऋ १०, ११, १ (वैतु. सा. 'देवम्' इति) । n) पा. ? 'देवः' इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु. अज्या.) । o) 'देवमध्ये' इति अज्या. । p) 'वन्दे' इति अज्या. । q) 'देव' इति तैऋ १०, ११, १ (वैतु. सा. 'देवम्' इति) । r) ऋ १, १, १ । s) ऋ ५, ८२, १ । t) ऋ ३, ६२, १० । u) मा ११, २ । v) मा ११, ४ । w) ऋ १, १६४, ३९ । x) शं. 'पूर्वदेवाः' इति स. यनि. द्विपदतया सु-शोधः । y) सकृत् 'देवताः' इति शांऋ ४, १४<sup>३</sup> । z) मा ३२, १० । a') तैऋ १०, १, १० । b') तैऋ १०, २१, १ । c') तैऋ ३, १५, १ । d') ऋ १०, ३७, १२ । e') तैऋ १०, ६२, १ । f') तैऋ १०, ६३, १ । g') ऋ १०, १२१, २ । h') ऋ १, ४०, ५ । i') ऋ ८, १००, ११ । j') 'वेदाः' इति निसा. । k') ऋ १, १६४, ५०<sup>३</sup> । l') मा ४०, ४ ।



३, १; सर २, ८९<sup>a</sup>; व २३९<sup>b</sup>;  
इ १३: २; १६: ९; १७: १८;  
च २१: १५<sup>c</sup>; १९९<sup>d</sup>; १प्र ३१:  
३; २प्र ३३: १८; २३: ३४: १;  
सूता १, ५; स्व ६१: १७; ऊ  
६३: ११; गोच ६६: ७९<sup>e</sup>;  
६८: ६; नापू ३, ४९<sup>f</sup>; ५, २६;  
वृष ८४: १; पा १, १०; २,  
१०<sup>g</sup>; १०, २; राधा २, ५; कृपु  
९; सार २२१: ४; १५; २२४:  
१५; २५७: १९; २५८: १३;  
२७३: १७; १८; २७८: १२;  
१९; २८०: १५; २०; लि ३१०:  
३९<sup>h</sup>; रशिसं १०; ११; ३४९<sup>i</sup>;  
शि ७, १३५; सिसि ३८२: १७;  
गु ३०; ५३९<sup>j</sup>; ५८; अरु २९<sup>k</sup>;  
पिंन ३, ८; ५, १; २; कश्रु २, १;  
२; वज २, ३६<sup>l</sup>; ४, ३; ५, १;  
६, ४; गी ३, ११; १२; १०, १४;  
११, ५२; -०वा: प्रसुं मां शां<sup>m</sup>;  
छां ३, ११, २; अशि अ वृजा नाप  
नृपू शां<sup>n</sup>; २, १५९<sup>o</sup>; सी घा त्रिवि  
रापू रार शां पप अज सू पाशु  
पत्र त्रिता दे १आ भग मवा गोपू  
कृह दत्ता गरु अवि पहे सि शां<sup>p</sup>;  
पिंन शां<sup>q</sup>; -वान् के ४, २; ३; तै  
२, ८, ३; छां ७, २, १; ७, १; ८,  
९-११, १; वृ १, १, २; ४, ६;  
१०; ५, १<sup>r</sup>; २<sup>s</sup>; २०; २, ४, ६; ४,  
१, २-७; ५, ७; ५, ५, १; श्वे २,  
३९<sup>t</sup>; अना ३०; अशि १, १०;

३, ४९<sup>k</sup>; ४, २०<sup>l</sup>; वृजा ६, ३;  
८, २; वृपू २, ८-१२; ५, १४;  
१५; वृज ९, १९; काला १९;  
सुबा २; ४<sup>m</sup>; नाप ४, ३८; श  
३८; अव्य ५; जाद ४, ५२;  
भ १, ८; जाबा २७; इ ११:  
१२; १२: १७; २प्र ३२: ३; ७;  
शौ ५१: ३; ५३: ३; पा २, २;  
सार २३५: २; वट्ट ३१५: ४९<sup>k</sup>;  
३१६: १२; शि ५, ४९; सुसु  
१०; पिंन ३, ८; वज ५, ७; १०;  
-वानाम् प्र २, ८; सुं १, १, १;  
२, ५; ऐ ४, ५९<sup>m</sup>; तै २, ८, २;  
३<sup>n</sup>; छां २, २४, १; ४, ३, ७; ५,  
१०, ४; ८, ७, २; वृ १, ४, १०<sup>o</sup>;  
१६; २, ४, ५; ४, ५, ६; ६, २, २९<sup>p</sup>;  
श्वे ३, ४९<sup>o</sup>; ४, १२९<sup>o</sup>; १३; मैत्रि  
६, १०; जा १<sup>q</sup>; मना २, १२,  
१९<sup>p</sup>; २९<sup>q</sup>; ३९<sup>o</sup>; २, ३५९<sup>r</sup>;  
४०९<sup>p</sup>; ४८९<sup>s</sup>; ७९९<sup>t</sup>; ८०९<sup>u</sup>; व्र  
१<sup>v</sup>; वृजा ३, १९; वृपू ४, १३; वृज  
६, ४; १योट ८४; योचू ७२;  
सी १३<sup>r</sup>; १५; राउ १, १<sup>s</sup>; अव्य  
३; ५; ६<sup>t</sup>; त्रिता ४, ३; भ २, ५;  
ता १, १<sup>u</sup>; गोउ २०; ह १५९<sup>v</sup>;  
सर २, ४; ७; बा ८; २प्र ३६:  
१; तुल ७१: १२; सूता ३, ७;  
नापू २, ५; नाउ ३, ३; पा ३, ५;  
सार २२०: १०; २२३: २३;  
सु २९४: ३; कामे १; गु ५६;  
व ४३७: १६९<sup>w</sup>; ४४२: १८९<sup>v</sup>;

४४८: २९<sup>p</sup>; ४५२: ९९<sup>p</sup>; अरु  
१९९<sup>x</sup>; कश्रु २, १; वपू १, १<sup>y</sup>; ९<sup>p</sup>;  
२, ३; गी १०, २; २२; -वाय  
वृ ६, ४, १९; श्वे २, १७; ४,  
१३९<sup>y</sup>; वृपू २, १६९<sup>z</sup>; पा ६,  
३; ५; रशिसं ३३९<sup>y</sup>; ३४९<sup>z</sup>;  
-वास: मना २, १२, ३९<sup>z</sup>; त्रिता  
४, २१; -वे प्र ४, २; श्वे ६, २३<sup>z</sup>;  
वृज ५, १-३; सुबा २; ११;  
१३-१५; १६<sup>z</sup>; योशि २, २२<sup>z</sup>;  
शा ३७<sup>z</sup>; इ १३: ७१<sup>aa</sup>; -वेमि:  
भ २, ९; -वेभ्य: के ३, १; तै ३,  
१०, ६; छां २, २२, २; २४, १४;  
वृ १, ३, २-६; ५; २<sup>z</sup>; कौ १, ६;  
३, ३<sup>z</sup>; ४, १९; मैत्रि ४, ४; मना  
२, ३९<sup>bb</sup>; ४९<sup>cc</sup>; ५९<sup>dd</sup>; ८९<sup>ee</sup>;  
६७<sup>ff</sup>; वृपू २, १८९<sup>ff</sup>; गोउ  
६६; वपू १, ३; वेषु के २, १; छां ४,  
३, ४; वृ १, ४, १५<sup>z</sup>; गोउ १५;  
६३<sup>hh</sup>; ह १८९<sup>ii</sup>; इ १२: ११;  
बि २४; काला १०१<sup>ii</sup>; पिंन ३,  
७; गी १८, ४०; -वै: क १, १,  
२१; २२; प्र ४, ११; सुं ३, १,  
८; अशि ७, ३; वृपू १, ३; राउ  
५, ४; बा ४०; रार २, ४५; महा  
६, ८३<sup>z</sup>; ता ३, ९; योशि १, ४१;  
गोउ १५; ३९; च २१: ९; ऊ  
६४: १२; सार २८१: ९; बि  
१६; वपं ३१२: २१; वट्ट ३१८:  
६; हे ५; १४; वपू १, ६; -वौ  
वृ ३, ९, ८; ६, ४, २९९<sup>kk</sup>;

- a) ऋ ८, १००, ११। b) ऋ १, १६४, ३९। c) 'देवान्' इति ऋ ८, ४८, ३। d) ऋ १, २२, १६।  
e) ऋ १, १२, १६। f) ऋ २, ४०, १। g) ऋ १०, १२१, २। h) ऋ १०, १५७, १। i) ऋ १, ८९, ८।  
j) मा ११, ३। k) ऋ ८, ४८, ३। l) 'लोकान्' इति अथ्या। m) ऋ ४, २७, १। n) ऋ १०, ८८, १५।  
o) तैश्चा १०, १०, ३। p) ऋ ९, ९६, ६। q) ऋ ४, ५८, १। r) तैश्चा १०, ३५। s) तैसं ४, १, ७, ४। t) तैश्चा  
१०, ६३, १। u) तैश्चा १०, ६४, १। v) ऋ ८, १००, १०। w) ऋ १, ६९, १। x) शौ १०, २, ३१। y) ऋ १०,  
१२१, ३। z) ऋ ४, ५८, ४। a') पा. ? दैव- > -वे इतिपरः शोधः स्यात्। b') तैश्चा १०, ३, १। c') तैश्चा  
१०, २, १। d') तैश्चा १०, ४, १। e') तैश्चा १०, ६, १। f') तैश्चा १०, ६७। g') कौ ३, १, ९।  
h') सकृत् 'वेदेषु' इति अथ्या. संदि.। i') ऋ ३, ५३, १५। j') पा. ? 'वेदेषु' इतिपरः शोधः द्र. (तु. अथ्या.)।  
k') ऋ १०, १८४, २।

देवी<sup>०</sup> - ००वि मना १, ८९<sup>b</sup>;  
२, ३६९<sup>c</sup>; ४१९<sup>d</sup>; त्रिता २, ७०<sup>e</sup>;  
सर ३, २; ऊ ६३: ८; १३; वि  
६; व ४६४: ८९<sup>b</sup>; ००वि-००वि  
व ४५८: २१; -वी मुं १, २, ४;  
मना १, ७९<sup>f</sup>; २, ३४९<sup>g</sup>; ४१९<sup>d</sup>;  
४२९<sup>h</sup>; सी ११; ३७; रार २,  
२२; योशि ३, ८; ६, ४७; त्रिता  
१, २१; ३०; २, ७२; दे ७; १७;  
१८; रुह ५; सर १, ४; २, १९;  
२९<sup>i</sup>; ३, ४; व १; सु १, १, २७;  
म ४८: ८; १३; १८; ४९: ३;  
९; १५; शि २, ५; आथ ३९४:  
२१; ३९६; ६; २१; २२; ३९९;  
१२; १९; गु ४२; ५०; ५४; ६०;  
६९; व ४२७: ८; ४६४: ३९<sup>j</sup>;  
-वी: २प्र ३७: १९<sup>k</sup>; -वीम्  
मना २, १९<sup>k</sup>; रापू ४, १९; त्रिता  
१, ८३; ८६; ४, ३७; दे १; ४९<sup>l</sup>;  
५९<sup>m</sup>; १०; १६; १९<sup>n</sup>; सर १, ४;  
२, ८९<sup>m</sup>; इ १८: ५; ऊ ६३:  
५; सार २२९: २; वि ११;  
कालि ४०१: ८; गु ७१-७३;  
पी ४२१: ७; व ४२६: १३;  
४२७: १६; ४३३: २; ९;  
४३७: १२९<sup>n</sup>; ४६१: ९९<sup>o</sup>;  
४६५: २१९<sup>o</sup>; स्या ९; १५;  
सुमु ४; ५; ८; १८; -व्या सार  
२२७: २१; २३९: १०; २४३:  
२०; २४४: १; २४८: १७;  
२४९: १; २५९: १२; २७५:  
१४; २८४: २२; -व्या: दे ११;

सार २५०: १८; वपं ३१२:  
२१; शि १, ५; गु १३<sup>p</sup>; व ४६६:  
२१; -व्याम् गु ७६<sup>q</sup>; -व्यै दे ३.  
दे(वी>)वि-त(म>)-  
मा<sup>०</sup> - ००मे सर २, १०९<sup>p</sup>.  
देवी-तत्त्व - त्वम् योशि  
१, १३७.  
देवी-पद - दम् दे ३.  
देव - व: छां ७, १, ४; वृ  
१, ५, २०<sup>r</sup>; २, ६, ३; ४, ६, ३;  
कौ २, १२; सांका ५३; गी १६,  
६<sup>s</sup>; -वम् छां ७, १, २; २, १; ७,  
१; ८, १२, ५; वृ १, ४, १७; ५,  
१९<sup>t</sup>; ४, ४, ४; ते ४, १२; इ  
१६: ६; ७; ९; रु २१<sup>u</sup>; १शिसं  
१९<sup>v</sup>; २शिसं ८९<sup>v</sup>; शि ५, ४६;  
भव १, ४४; ४५; गी ४, २५;  
१८, १४; -वा: छां ५, १, ४; -वात्  
वृ २, ६, ३; ४, ६, ३; सिशि  
३८०: २०; -वेन छां ८, १२,  
५; १आ १९; शि ५, ४९; -वेषु  
वृ ६, २, ६.  
दैवी - वी वृ १, ५,  
१८<sup>r</sup>; ५, २, ३; मना २, ४२९<sup>f</sup>;  
महा ५, १२०<sup>g</sup>; गोउ ६३; स  
शां९<sup>h</sup>; गी ७, १४; १६, ५; -वी:  
तै ३, १०, २; -वीम् कौ २, ८९<sup>h</sup>;  
९; गी ९, १३; १६, ३; ५.  
दैव-मुख्य - ख्यम् पा  
९, ७.  
दैव-मोहित - ता: शि  
७, १२९.

दैव-योग - गात् हे ३.  
दैव-लिखित - तानि वपं  
३१३: ७.  
दैव-शब्द - व्देन भव  
१, ४६.  
दैव-स्मर - र: कौ २, ४९<sup>h</sup>  
दैवा(व-आ)दि-प्रभे-  
(द>)दा<sup>i</sup> - दा सांसू ३, ४६.  
दैवा(व-आ)धीन - नम्  
रु २१.  
दैविक<sup>x</sup> - क: सी ३०<sup>y</sup>.  
रदैविक - कम् पा ५, १.  
देव-कन्या - न्या राधा २, ३.  
देव-काम - म: नृपू २, ९९<sup>z</sup>;  
-मात् छां १, ७, ७<sup>a</sup>; -मानाम्  
छां १, ६, ८.  
देव-(क>)की<sup>b</sup> - की कृ ६;  
-क्याम् गोउ १६<sup>o</sup>.  
देवकी-नन्दन - नाय गोउ  
६४.  
देवकी-पुत्र - त्र: ना ४;  
आबो १; -त्रम् य ८; सु २९३:  
८; -त्राय छां ३, १७, ६; त्रिवि  
७, ४६.  
देवकी-सुत - ००त त्रिवि ७,  
४०.  
देव-कृत - तस्य मना २,  
५९९<sup>d</sup>.  
देव-कोश - श: अशि ६, ८९<sup>o</sup>.  
देव-नान्धर्व - वाणाम् तै २, ८,  
२<sup>z</sup>.  
देव-गुह्य - ह्यम् सुद्र ४.

a) तु. वैप १, ५८८b। b) मा १३, २१। c) तैआ १०, ३०, १। d) तैआ १०, ३९, १। e) तैआ १०, १, ७। f) तैआ १०, २६, १। g) तैआ १०, ४०, १। h) ऋ ५, ४३, ११। i) =तदाख्योपनिषद्विशेष-। j) ऋ १०, ९, ४। k) तैआ १०, २, १। l) खि १०, १२७, १२। m) ऋ ८, १००, ११। n) ऋ १०, १०१, १। o) वैप १ यद्र.। p) ऋ २, ४१, १६। ०वी<sup>०</sup> इति अख्या. संटि.। q) मा ३४, १। r) तैआ १०, ४१, १। s) 'देवी' इति अख्या.। t) खि १०, १९१, १५। u) 'पेन्द्रीम्' इति शांआ ४, ८। v) 'दैवः स्मरः' इति आन., 'दैवं स्म' इति अख्या. 'दैवस्मवः' इति अख्या. संटि. च मुपा. यनि. सु-शोषा: (तु. शांआ ४, ४)। w) ०भेदा: इत्यपि पाभे.। x) =उपवेदविशेष-। y) 'तथा मुने' इति व्याख्यात्मक: निसा. मुपा. द्र.। z) ऋ ३, ४, ९। a') ०मास्तान् इति निसा.। b') =कृष्णमातृ-। यनि. गौरादिषु उंसं. (पा ४, १, ४१) स्त्री. स्त्रीषु प्र.। c') ०क्या: इति निसा.। d') मा ८, १३। e') शौ १०, २, २७।

देवगुह्या(द्य-आ)दि—धन-  
-नम् तुअ १७<sup>a</sup>.  
देव-गृह—हम् शि ७,४८.  
देव-जन—-नः सुन्न ३; -नेन  
अशि ६,१९.

देवजन-विद्—-विदः सुन्न ३.  
देव-जात—-तानि वृ १,४,१२.  
देव-ज्ञान-प्रकाशक—-कानाम्  
तारा ८४ : ६१<sup>b</sup>.  
देव-ता—-ता प्र ३, ८; छां १,  
१०,९-११; ११, ४<sup>c</sup>; ५, ६<sup>d</sup>; ७;  
८<sup>e</sup>; ९; ६, ३, २, ३; वृ १, २, ७;  
३, ९-११; १६, ५, २०; २२; ३,  
२, १०; ९, १०-१७; मना २,  
३३; ३५<sup>f</sup>; कौ २, ३<sup>g</sup>; हं १०;  
काला २, १४; १७; शु १, १८;  
२, ५<sup>h</sup>; ते २, ३४; निर्वा २९७;  
३; २९८ : ७; द १; ११; रार  
१, ७; २, २; १०; २१; २२; २८;  
३१; ४२; ४९; ५२; ६०; ६३;  
७१; ८२; ९५; ९९; रापू १, १३;  
महा १, १; योशि १, १७८; सू  
२; सावि १०; पाञ्च १, २; ४;  
११; २९<sup>i</sup>; भा २४; २७; ग  
९; जाद ४, ३५; ३६; ३८; दत्ता  
१, २; ६; सर १, ४<sup>j</sup>; २, १-१०;  
वरा ५, ४२; ह ६; गरु २; जाबा  
२२; २४; २५; सौ १, १; चा ३;  
२प्र ३५; ४; म ४८; १८; ४९;  
२; ९; १५; सूता ५, २; तुल ७०;  
२; नापू ४, १६; लां २१३ : २;  
सु २; आथ ३९८ : ६; कालि  
४०३ : ११; १२; गार ४०५;  
१७; गु ७४; ८१; व ४२६;  
२; ४३८ : २१; ४४० : ५; १५;  
४४१ : ३; १३; ४४२ : १; १२;  
२२; ४४३ : ९; ४४४ : २; १२;

२३; ४४५ : ११; २१; ४४६ :  
९; १९; ४४७ : ७; १८; ४४८ :  
६; १८; ४५९ : १७; हंषो ३;  
तारा ८४ : ११; वपू २, ३<sup>k</sup>;  
ब्रसू १, २, २७; -ताः तै १, ५,  
१; ऐ २, १; छां ४, १७, २; ६,  
३, २-४; ४, ७; ८, ६; वृ १, ३,  
६; ५, २२<sup>l</sup>; श्वे ४, १५; मना २,  
२९<sup>m</sup>; कौ २, १; २; १२-१४;  
जा ४९<sup>n</sup>; या १, १; ब्र २; अशि  
३, ८; वृजा ४, २०; २६; वृउ ९,  
८; ध्या २१; नाप ३, ७७; पप  
४१८ : १४; अन्न ४, ३०; भा  
१५; २१; रुह ४०; यो २, २३;  
प्रा ४, १; पिं १; सूता ५, ४; ५;  
तुल ७१ : ३; राधा ४, ६; कृपु  
८; वटु ३१५ : ८; रशिसं २५;  
गु ६; गी ४, १२; -तानाम् छां  
२, २०, २; ४, १७, ८; ६, ४, ७;  
वृ १, २, ७; ३, १०; ११; ५, २२;  
श्वे ६, ७; मना २, १५<sup>o</sup>; श २;  
रापू १, ८; त्रि १; गु ६६; तारा  
८४ : ११; -ताभिः वृ ३, १, ९;  
-ताभ्यः वृ १, २, ७; जा ४; मना  
२, ४०<sup>p</sup>; नाप ३, ७७; पप  
४१८ : १५; या १, १; -ताम् छां  
१, ३, ९<sup>q</sup>; ४, २, २<sup>r</sup>; वृ १, ४,  
१०; ५, २०; ३, ६, १; मना २,  
७९<sup>s</sup>; १योत १०५; त्रिता १,  
७७; रा ४२४ : १३; ४२५ :  
६; १६; षो १६; -तायाः वृ १,  
५, १४; -तायाम् छां ६, ८, ६;  
१५, १, २; -तायै ऐ २, ५; वृ १,  
५, २३; त्रि १२; सुमु ९; -तासु  
ऐ २, ५; छां २, २०, १, २; सूता ५,  
१; -०ते वृ ५, १२, १; वरा २, ३४.  
दैवत—-तम् श्वे ६, ७;

वृपू १, ५; काला ४; त्रिता १,  
३४; रुजा २, १३; गोपू ३;  
२प्र ३३ : ७; ३४ : ११; ३६;  
१६<sup>t</sup>; १८; २१; २३; सूता १,  
२९; सार २३१ : १२; २५८ :  
११; शि ७, ८८; तारा ८४ :  
८; -तानि वृपू १, ५.

दैवत-देव-सूनु-  
-नुः वपू १, ५.  
देवता(ता-आ)त्मै(त्म-ऐ)-  
क्य—सिद्धि—-द्धिः भा ४२<sup>u</sup>.  
देवता-त्व—-त्वम् रा ४२४ :  
१२.

देवता-दर्शन—-नम् वृपू १,  
११.

देवता(ता-आ)दि—-दि रा  
२, ९३.

देवता-धार्य—-र्यम् रु ९.

देवता-प्रत्यधिदेवता-स-  
हित—-तम् व ४३८ : १२; २२;  
४३९ : ९; १९; ४४० : ७; १७;  
४४१ : ४; १५; ४४२ : ३; १३;  
२३; ४४३ : ११.

देवता-प्रसाद-ग्रहण—-णम्  
१संन्या २, ५९.

देवता-प्रीति-कर—-रम् रा  
४२५ : २३.

देवता(ता-आ)भिध्यान—  
-नम् मैत्रि ६, ३४.

देवता-म(य>)यी—-यी क  
२, १, ७.

देवता-रूप—-पम् रा  
४२३ : १६.

देवता(ता-आ)चन—-नम्  
१संन्या २, ७९; तुल ७१ : १७.

देवता-लय-श्रुति—-तेः  
सांसू २, २१<sup>k</sup>.

a) °दीन् घ° इति निसा. संटि., °दिज° इति अच्चा. संटि. । b) वा. । c) तैआ १०, ३५ । d) तैआ १०,  
२२, १ । e) ऐआ २, १६ । f) तैआ १०, १४, १ । g) तैसं ४, २, ९, ६ । h) तैआ १०, ६३, १ । i) तु. वैप२ यस्याः  
वैतु. 'देवतम्' इति गोत्रा १, १, २९ । j) °क्यं सिध्यति इति निसा. संटि. । k) °तिः इत्यपि पाभे. ।



देवता-शरीर-  
देवताशरीरिन्-री रा  
४२३: १३; १७.  
देवता-संतुष्टि-ष्टि: रा  
४२४: १५.  
देवता-संनिधि-धये सूता  
६, १.  
देवता-सांनिध्य-ध्यम् दे  
२२; रा ४२४: १६.  
देवता-सामीप्य-प्यम् रा  
४२५: ८.  
देवता-सायुज्य-ज्यम् रा  
४२५: १०.  
देवता-सारूप्य-प्यम् रा  
४२५: ९.  
देवता-सालोक्य-क्यम्  
रा ४२५: ६.  
देव-तिर्यङ्-नर-स्थावर-रा:  
योचू ७२.  
देव-तिर्यङ्-नर-स्थावर-स्त्री-  
पुरुष-वर्णा(र्ण-आ)श्रम-बन्ध-  
मोक्षो(त्त-उ)पाधि-नाना-  
(ना-आ)त्म-भेद-कल्पित-  
-तम् नि ३०.  
देव-तिर्यङ्-थम् आच ३.  
देव-त्रा छां ३, १७, ७९<sup>a</sup>; वृ १,  
४, ११.  
देव-स्व-स्वम् वृ ४, ३, ३३;  
नाद १४; षो १९.  
देव(इहि<sup>b</sup>)स्व-सोक्ष-क्षाय  
शि ७, ११४.  
१देव-दत्त<sup>c</sup>- -त्त लां २१६:  
१०; -त्त: ब्र १<sup>d</sup>; शु ३, ११;  
१आ ७; -त्तम् लां २१४: १८<sup>d</sup>;  
-त्तस्य गर्भ २.  
२देव-दत्त<sup>e</sup>- -त्तम् गी १, १५.  
३देव-दत्त<sup>f</sup>- -त्त: ध्या ५७;

ब्रवि ६७; त्रित्रा २, ७७; योचू  
२३; २५; जाद ४, २४; -त्तस्य  
जाद ४, ३४.  
देवदत्त-कर्मन्-र्म शां १, ४.  
देव-दर्शिन्-  
देवदर्शी(र्शि-इ)स्या(ति-आ)-  
ख्या(ख्य-आ)धर्वण-शाखा-  
-खायाम् त्रिवि १, २.  
देव-दातव-ऋषि-मुनि-वन्द्य-  
-वन्द्य लां २१४: ९.  
देव-देव- -व शु १, २; गी  
१०, १५; -व: अन्न १, ५५; -वम्  
शां ३, ४; पित्र ३, ८; ६, १५;  
-वस्य गी ११, १३.  
देवदेवी- -विवपं ३११: ५  
देव-दैतेय-या: पित्र २, ८.  
देव-द्रव्य-व्यम् शि ६, २४९.  
देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजन-  
-नम् गी १७, १४.  
देव-निकाय-यानाम् मैत्रि ६,  
३०.  
देव-निर्मि(त>)ता- -ते वरा  
४, ३६.  
देव-पथ-थ: छां ४, १५, ५.  
देव-पितृ-कर्मन्-र्माणि काद; ६;  
नार ५.  
देव-पितृ-कार्य-र्थाभ्याम् तै  
१, ११, २.  
देव-पुत्र-  
देवपुत्र-क-क: शि ६,  
१६२.  
देव-पूजक-कम् १संन्या २,  
७४.  
देव-पूजन-नम् ते ५, ५२.  
देवपूजनो(न-उ)स्सव-दर्श-  
न-नम् १संन्या २, ५९<sup>g</sup>.  
देव-पूजा-जा नाप ५, १.

देव-पूत-त: वृषू ५, १२.  
देव-प्र-वर-रा: सार २५१: ५.  
देव-प्रसाद-दात् श्वे ६, २१.  
देव-ब्राह्मण-घातिन्-ती इ  
१७: १३.  
देव-भक्त-क्त: कालि ४०२: २<sup>b</sup>.  
देव-भोग-गम् रा ४२५: ३;  
-गान् गी ९, २०.  
देव-मधु<sup>h</sup>-धु छां ३, १, १.  
देव-मध्य-ध्ये अद्वै १३.  
देव-मनुष्य-प्या: छां ७, ६,  
१; ८, १; १०, १.  
देवमनुष्या(व्य-आ)सु-  
(दि-उ)पासना-काम-संक-  
ल्प-ल्प: नि ३७.  
देव-मान-नेन त्रिवि १, १;  
वरा १, १.  
देव-यक्ष-क्षौ भव २, २६.  
देव-यज्-यज: गी ७, २३.  
देव-यजन-नम् जा १<sup>i</sup>; राउ  
१, १<sup>i</sup>; ता १, १<sup>i</sup>; -नस्य २प्र  
३३: २३.  
देव-यात्रो(त्रा-उ)स्सव-वेष्टु  
नाप ६, ३.  
देव-यान<sup>j</sup>-न: मुं ३, १, ६;  
छां ५, १०, २; मना २, ७९<sup>g</sup>;  
-नम् वृ ६, २, २; कौ १, ३<sup>i</sup>;  
-नस्य छां ५, ३, २; वृ ६, २, २;  
-नात् मना २, ४६<sup>g</sup>; -नेन इ  
१२: ९.  
देव-योगिन्-गिनाम् पं १<sup>i</sup>.  
देव-योनि-नि: ब्र १.  
देव-रथा(थ-अ)ह्वय-ह्वयानि  
वृ ३, ३, २.  
देव-राज-जम् काम १५.  
देव-रूप-पम् सार २६२: ५;  
-पाणि कृ २२; -पेभ्य: कृ २२.

a) ऋ १, ५०, १० । b) पा. १ यनि. शोष: द्र. । c) समाहारे द्रस. । d) =शत्रुसंकेत- । e) =शङ्खविशेष- ।  
f) =वायुविशेष- । g) °पूजा उत्स° इति अज्या. । h) वेद° इति तान्त्रि. । i) तैआ १०, ६३, १ । j) °यजनम्  
इति अज्या. । k) ऋ १०, १८, १ । l) °योनि° इति अज्या. ।

देवरूपिन्-पिणम् वउ ६,  
१७.

देव(व-ऋ)र्षि- -र्वयः शु १,१;  
-र्षिः गी १०,१३; -र्षिणाम् पत्र  
२; गी १०,२६.

देवर्षि-क्षत्रियर्षि-मनुष्यर्षि-  
-र्षिन् नाप ४,३८.

देव(व-ऋ)र्षि-दिग्य-मनुष्य-  
भूत-पितृ-मात्रा(तृ-ऋ)स्मे-  
(म-इ)त्य(ति-ऋ)ष्ट-श्राद्ध<sup>१६</sup>-  
-द्धानि नाप ४,३८.

देव(व-ऋ)र्षि-मनुष्य-गन्धर्व-  
रूप(प>)पा-पा सी १०.

देव-ल<sup>१</sup>-लः गी १०,१३.

देव-लक्ष्मी- -क्ष्मीः नापू २,५.

देव-लोक<sup>३</sup>- -कः वृ १,५,१६<sup>३</sup>;  
३,१,८; गु ९; -कम् वृ ३, १,  
८; ६,२, १५; सार २३५: २;

-काः वृ ३, ६, १; सुबा ४; ते  
५, १३; -कात् वृ ६, २, १५;

-कान् सुबा ४<sup>३</sup>; -केषु वृ ३, ६, १.

दैवलौकिक<sup>७</sup>- -कः लि  
३११: ६.

देव-वर- -०र गी ११,३१.

देव-वाणी- -ण्या सार २२२:  
१६; १७; २२६: ६; २३७: १०;  
२६६: २२.

देव-विद्- -वित् वृ ३, ७, १.

देव-विद्या- -द्या छां ७, १, ४;

-द्याम् छां ७, १, २; २, १, ७, १.

देव-विशेष- -षाणाम् त्रिवि  
२, १२<sup>१</sup>.

देव-व्रत- -त्ताः गी ९, २५.

देव-श्राद्ध<sup>१२</sup>- -द्धे नाप ४, ३८.

देव-सदन- -ने भ २, १६.

देव-संक्षिप्ता(त-ऋ)क्षय-  
-याः या २, २<sup>१</sup>.

देव-समीप- -पे वृजा ६, १.

देव-सुषि- -षयः छां ३, १३, १.

देव-स्त्री-भोग- -गम् रा ४२३:  
१५.

देव-हित- -तम् प्र सुं मां अशि

अ वृजा शां<sup>३</sup>; वृषू शां<sup>३</sup>; २, १५;

नाप सी श त्रिवि रार रापू शां पप

अन्न सू १आ पाशु पत्र त्रिता दे

भा ब्र भ ग मवा गोपू कृ ह दत्ता

गरु अवि पदं सि शां<sup>३</sup>; पित्र शां.

देव-हीना(न-ऋ)त्मन्- -स्मा

ते ४, ४३.

देव-हेडन- -नम् मना २, ६०९<sup>१</sup>.

देवा(व-ऋ)गार- -रेषु कुं ११;

कर ३; कथु ३, ३.

देवा(व-ऋ)ग्नि-गुरु-गोष्ठी-

-ष्ठीषु शि ७, ६६.

देवा(व-ऋ)ग्नि-गुरु-विप्र- -प्रा-

णाम् शि ७, ६८.

देवा(व-ऋ)ग्नि-गुरु-वृद्ध- -द्धा-

नाम् वृजा ४, ७.

देवा(व-ऋ)ग्न्य(ग्नि-ऋ)गार-

-रे शा २१<sup>६</sup>.

देवा(व-ऋ)ङ्गना- -नाभिः सार

२७२: १४.

देवा(व-ऋ)त्मन्- -स्मा ते ४,

४३.

देवात्म-शक्ति- -क्तिम् श्वे

१, ३; नाप ९, २.

देवा(व-ऋ)दि- -दयः गुषो

४२१: ८; -दिना सार २९२:

१५; -दीनाम् सार २५७: २१;

२८७: १४.

देवादि-वत् वसू २, १, २५.

देवा(व-ऋ)दि-देव- -०व शु

१, ९.

देवा(व-ऋ)द्य- -द्या: रापू ४, १६.

देवा(व-ऋ)धिपत्य- -स्यम् वपू  
१, ६<sup>२</sup>.

देवा(व-ऋ)नुग्रह-

देवानुग्रह-वत्- -वन्तः स्व

६१: १७.

देवा(व-ऋ)न्तर-ध्यान- -शून्य-

-न्यः पप ४२०: १५.

देवा(व-ऋ)न्तर-भजन- -नम्

सार २३५: १८.

देवा(व-ऋ)यतन- -ने शां १, ५.

देवा(व-ऋ)र्चन- -नम् नाप ७.

देवार्चन-स्नान-शौच-भिक्षा-

(त्ता-ऋ)दि- -दौ १अव २४.

देवा(व-ऋ)लय- -यः मैत्रे २,

१; स्क १०; -ये नाप ५, ३४;

तारा ८३: १२.

देवालय-स्थ- -स्थम् वृजा

५, ७.

देवा(व-ऋ)सुर- -राः छां १, २,

१; ८, ७, २; मैत्रि ७, १०; शौ

५१: १; -रान् अरु २७९<sup>५</sup>.

देवा(व-ऋ)सुर-मनुष्या(व्य-ऋ)-

दि-भाव- -वाः राउ ४, ९.

देवा(व-ऋ)सुर-मुनि-मनुष्य-

-व्याणाम् अद्वे १९.

देवे(व-ऋ)न्द्र- -न्द्रः ते ६, १९;

सार २५५: ४.

देवेन्द्र-पद- -दम् गोच

६८: ४.

देवेन्द्र-भोग-प्र(द>)दा-

-दा रा ४२५: २२.

देवेन्द्रै(न्द्र-ऐ)इवर्य- -र्यम्

रा ४२४: १०.

देवे(व-ई)श्वा- -०श स्क १३;

राउ ३, ४; नाउ ३, २०; गी

११, २५; ३७; ४५; -शम् रार

१, ३७; -शस्य सी १०.

a) गपू. (पृ. ११५) अष्ट-श्राद्ध-> -द्धानि इत्यत्रैकतरत्र यनि. शोधः द्र. । b) पावा ४, ३, ६०; पा ७, ३, २०। c) °वशे° इति अज्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा., अज्या. संटि.) । d) वेदसं° इति निसा. संटि., अज्या. । e) ऋ १, ८९, ८ । f) ऋ १०, ३७, १२ । g) °वाद्यगा° इति निसा. संटि. । h) तैआ १, २७, ४ ।

देवो(व-ई)श्वर- -रः कालि

४०१: ६; श्या ५.

देवो(व-उ)स्सव-दर्शन- -नम्  
नाप ७.

रदेव(विश्व-)- -वाः(श्वे) क२, २, ३;

छां १, १३, २; २, २४, १; १४;

१६; वृ १, ४, १२; ३, १, ९; २,

१२; मैत्रि ७, ४; वृजा ६, १२;

नृपू ५, ८; अव्य २; दे १०;

-वैः(श्वे>?श्वैः<sup>a</sup>) सिशि ३८२:

१९; -वौ (श्वे>?श्वौ<sup>a</sup>) गार

४०८: ९.

धूत<sup>११</sup>- -तम् नाप ३, ६९; गी १०,  
३६.

धूत-चक्र<sup>११</sup>- -क्रम नृष ८४: ८.

दिव्-, १दिव्-, ✓दिव् द्र.

२दिव्<sup>b</sup>- -वा प्र १, १३; छां ३, ११, ३;

४, १, २; श्वे ४, १८; मनार, ५९९<sup>c</sup>;

१योत ६७; नाप ६, १<sup>d</sup>; सी १४;

त्रिवि ३, ४; शां १, ७, ३८;

१संन्या १, १<sup>e</sup>; २, ८३; अव्य ५;

रुह २०; यो १, ५६; सं २०;

सूता ३, १०९<sup>f</sup>; सार २२४: ७;

२३६: ७; २५४: ८; २६२: २१;

२७३: २०; २७४: १; २७९:

१९; २८३: ८; २८७: ८; शि ७,

६०; गु ६१; गुषो ४२०: २; पी

४२२: ५; रा ४२४: १८; कथु १,

१<sup>g</sup>; -वे-वे क २, १, ८९<sup>h</sup>; बा १६.

दिवा

दिवा-कर- -रः ध्या १०४; रम्

व ४६२: ३.

दिवाकर-निशाकर- -रौ

योचू १०२.

दिवाकर-हर- -रौ काम ४.

दिवाकरे(र-इ)न्द्र- -न्द्रौ

काम १३.

दिवा-नक्त- -क्तम् मना २,

६७९<sup>i</sup>; ते ६, १७.

दिवानक्त-समत्व- -स्वेन

तुअ २०<sup>j</sup>; पप ४१९: १८<sup>k</sup>.

दिवा-निश्व- -निश्वौ पित्र १,

१३९<sup>l</sup>.

दिवा-प्रव(र्तक>)र्तिका- -०के

अक्ष १५.

दिवा-रात्र<sup>१</sup>- -त्रम् शां १, ७, ३८;

ध्या ६२; वरा ५, ४६.

दिवा-रात्रि- -त्रौ योचू ३२.

दिवारात्रि-कृत- -तम् रुजा

१, ४.

दिवारात्रि-व्यापिन्- -पीषो

११.

दिवारात्र्य(त्रि-अ)तीत- -तः

मं २, २, ४.

दिवा-स्वाप- -पः १संन्या २,

७९; ८४; ८८<sup>k</sup>; नाप ३, ७१.

दिवस्- ✓दिव् द्र.

दिवस्<sup>b</sup>- -सम् शि ४, २४; -सस्य

इ १५: २२; -सा: सुबा ६;

-से वृजा ३, २२; यो १, ५४;

-से-से महा ६, ७७; भव १, ९;

-सेषु रुजा २, १८.

दिवस-कृत- -तम् ना ५; अक्ष १६;

दे २२; रुजा ३, १<sup>l</sup>; ग १६;

मवा १२; इ १०: १६; सं २१;

गार ४०८: १४.

!दिवितस्(>) नी १, १.

!दिव्यमयीरितैः<sup>m</sup> गोउ ५७.

✓दिश्व<sup>(बधा.)</sup>>देशि, दिश मना

१, ५९<sup>n</sup>; दिशेत् शि ६, २७९.

दिश्व- दिक् छां ३, १५, २; ४, ५,

२<sup>o</sup>; वृ १, २, ३<sup>o</sup>; ४, २, ६; महा

४, २७; वरा ३, १७; पा ७, ६;

गार ४०६: ६; १०; दिक्षु छां ४,

३, ८; ५, २०, २; वृ २, १, ११;

५, ६; ३, ७, १०; गौ ४, ६३; ६५;

वृजा ३, १८; सुबा ५; रार ३,

१; रापू ४, ५४; ५, ३; ५; महा

६, १०; नी १, ९९<sup>o</sup>; शि ६,

१४०; श्या १४; दिग्भिः छां ३,

१८, ६; दिग्भ्यः वृ ३, ७, १०;

मना २, ३९<sup>p</sup>; ४९<sup>q</sup>; ५९<sup>r</sup>; दिशः

प्र १, ६; सुं २, १, ४; तै १, ७, १;

ऐ १, ४; २, ४; छां २, १७, १;

२१, ४; ३, १५, १; १८, २; ४,

१२, १; ५, ६, १; २०, १<sup>s</sup>; वृ १,

१, १; ३, १५<sup>t</sup>; २, ५, ६; ३, २,

१३; ७, १०<sup>u</sup>; ९, १३; १९<sup>v</sup>; ४, १,

५<sup>o</sup>; २, ४; ६, २, ९; श्वे ५, ४; गौ

२, २४; मै ५, २; मैत्रि ६, २;

ना २; मना १, ४९<sup>w</sup>; ५९<sup>x</sup>; २,

७९<sup>y</sup>; अशि १, ३; ५; सुबा ५;

६; ते ४, १९; त्रिवि २, १६;

महा ३, ४९; ६, ९; योशि ६, ११;

सू १३; म२, ११; बा १७; नापू

५, १६; रशिसं ९; शि ७, ५७;

गु ६४; वउ ३, २४; ५०; ४, १६;

गी ६, १३; ११, २०; २५; ३६;

दिशम् प्र १, ६; छां १, ३, ११<sup>z</sup>;

६, १४, २<sup>o</sup>; वृ ३, ८, ९; ४, १, ३;

५; वृजा ३, १८; सुबा ९<sup>o</sup>; १संन्या

१, १; पप ४१८: २८; २प्र ३२:

११; १३; ३३: १; ३; ८; बि ९;

शि ५, ३५; आश्र ३; कथु १,

१; वउ ३, १३; दिशम्-दिशम्

a) पा.१ पदक्रमो व्यत्यस्तः सन् यनि. सु-श्रोत्रः (तु. सस्थ. टि. शैष्य->-प्यम्) । b) वैप१ यद्र. ।

c) तैआआ १०, ५९ । d) 'दिवस्' इति अज्या. । e) तैआ ३, ७, ६, २१ । f) ऋ ३, २९, २ । g) तैआआ १०, ६७ ।

h) '०क्तं स' इति अज्या. । i) दिवा नक्तमपि स' इति निसा. संटि. । j) पा ५, ४, ८७; २, ४, २९ । k) 'स्ववः' इति

अज्या. । l) 'तपापम्' इति अज्या. । m) 'येरि' इति निसा. अज्या. च संटि., 'यैरि' इति पक्षे अज्या. संटि., 'नित्यम्

अवारितैः' इति आन. । n) तैआ १०, १, ५ । 'दिशः' इति JC. । o) तैसं ४, ५, १, २ । p) तैआ १०, ३, ११

q) तैआ १०, २, १ । r) तैआ १०, ४, १ । s) मा ३२, ११; १२ । t) तैआ १०, ६३, ११



छां ६, ८, २; अ २; दिशाम्  
 छां ३, १५; २; वृ १, ३, १०;  
 २, ५, ६; ६, ३, ६; ४, २२; वृजा  
 ३, १८; दिशि वृ ३, ९,  
 २०-२४; नाप ४, ३८; भ २,  
 २७; २८; व ४३८: २१; ४३९:  
 ८; १८; ४४०: ५; १५; ४४१:  
 ३; १३; ४४२: १; १२; २२;  
 ४४३: ९; ४४४: २; १२; २२;  
 ४४५: १०; २०; ४४६: ९; १९;  
 ४४७: ७; १८; ४४८: ६; १७;  
 ४४९: १५; २२; ४५०: ६; १३;  
 २०; ४५१: ६; १३; २०; ४५२:  
 ५; १३; २०; तारा ८४: ३.  
 दिक्-काल- -लौ सांसू २, १२.  
 दिक्काल-कलित- -तम् महा  
 ५, १४५.  
 दिक्काला(ल-आ)द्य(दि-अ)-  
 न-अवच्छिन्न- -अम् महा ५,  
 १४४; अन्न ५, ८; ६६.  
 दिक्-कुञ्ज- -जे महा ३, २४.  
 दिक्-पति- -तीनाम् शि ४,  
 १६; गु १४.  
 दिक्-पाल- -ला: ते २, ३५; ५,  
 ३६; १०४; सार २२१: ५; २७२:  
 १७; २८०: १५; श्या १५; वपू  
 २, ४; -लान् वृजा ४, १५;  
 -लानाम् ह ९.  
 दिक्-श्रवण- -णम् वज ४, ३२.  
 दिग्-अन्त- -न्तेषु महा ३, ४२;  
 या २, ८.  
 दिग्-अम्बर- -०२ दत्ता १, ७;  
 लां २१४: १६; २१६: १०; -र:  
 तुज ९; नाप ४, ३८; ५, १; १ संन्या  
 २, १३; -रम् शां ३, १; नाप ५,  
 १; ७; -रा: १ अव ६<sup>b</sup>; भि १०.  
 दिगम्बर-मुख- -ख: मैत्रे  
 ३, १९.  
 दिग्-ईश्वर- -रा: महा ३, ५१.

दिग्-गज- -जा: अद्वैता १६.  
 दिग्-बन्ध- -न्ध: शु १, १८;  
 २, ५<sup>a</sup>; गरु ४; लां २१३: १२;  
 व ४२६: ९; ४५५: २३.  
 दिग्-बन्धत- -नम् वृजा ४, १.  
 दिग्-बलि- -लिम् पै ४, ५.  
 दिग्-भवा(व-आ)दि-  
 दिग्भवाद्यु(दि-उ)ग्रभैरवा-  
 दि-भूत-प्रेत-पिशाच-चित्त-  
 अम(र>)री- -०रि व ४३२:  
 १०.  
 दिग्-वाता(त-अ)र्क-प्रचेतो-  
 (तस्-अ)शिव-वह्नी(हि-इ)न्द्रो-  
 (न्द्र-उ)पेन्द्र-मृत्युक- -का: पै  
 २, १७; वरा १, १४.  
 दिग्-वासस्- -सा: नाप ५, ४.  
 दिङ्-मूढ-  
 दिङ्मूढ-वत् सांसू १, ५९.  
 दिष्ट- -ष्टम् छां ५, ९, २.  
 दिष्टि- -ष्ट्या अन्न ३, ९; सार २५४:  
 १५.  
 देश- -श: ते १, १५; २३; ४, १२;  
 महा ३, ४९; सार २३१: ५;  
 -शम् लु २; २१; नाप ४, २;  
 महा ५, ४९; १ आ ७; इ १६:  
 १२; -शात् गौ २, २; महा ४,  
 ५९; ५, ४९; -शे छां ८, १५, १;  
 गौ २, २; ४, ३४; मैत्रि ६, ३०;  
 नाप ४, १६; १८; मुद्र ४; महा  
 २, ७६; योशि ६, ६९; कुं ३;  
 यो १, २२; जाद ५, ४; सूता १,  
 २४; शि ७, ८६; तारा ८३: १२;  
 गी ६, ११; १७, २०; -शेषु राज  
 ५, २६; वृष ८५: ८; सूता १, ९.  
 देश-काल- -लौ शु ३, ११;  
 सूता १, २५.  
 देशकाल-विमुक्त- -क्त: मैत्रे  
 ३, १९.  
 देशकाला(ल-आ)दि-वर्जि-

त- -त: ते ४, ५०.  
 देशकाला(ल-आ)द्य(दि-अ)-  
 पेशा- -क्षया वृजा ४, २७.  
 देशकालो(ल-उ)पपन्न-  
 -न्नानि अक्षि ७.  
 देश-काल-कर्म-स्वभाव-संसि-  
 ङ्ग- -ङ्गान् सार २३६: ४.  
 देश-काल-क्रिया-शक्ति- -क्ति:  
 महा ५, १२१.  
 देश-काल-क्रिया(या-आ)स्पद-  
 -दम् महा ५, १२३.  
 देश-काल-पात्र-मन्त्रा(न्त्र-अ)-  
 ष्टशौचे(च-ई)प्स- -प्सा: इ  
 १५: १७.  
 देश-काल-वस्तु-निमित्त- -त्तेषु  
 ससा १, ३१; ३६.  
 देश-काल-वस्तु-परिच्छेद-  
 राहित्य- -चिन्-मात्र-स्वरूप-  
 -पम् नि ५०.  
 देश-काल-वस्त्वन्तर-सङ्ग-  
 -ङ्गात् व ८.  
 देश-काल-संख्या- -ख्याभि:  
 योसू २, ५०.  
 देश-तस्(>) त्रिवि १, ५; ७,  
 १७; मुद्र १, २.  
 देश-दिग्-अन्तर- -रै: प्र ४, ५.  
 देश-बन्ध- -न्ध: योसू ३, १.  
 देश-भाषण- -णम् ते ६, ११.  
 देश-भेद- -दम् ते ४, ४१; ६,  
 ५४; -दात् सांसू १, २८; -दे  
 सांसू ५, १०९.  
 देश-योग-  
 देशयोग-तस्(>) सांसू १,  
 १३.  
 देशा(श-आ)दि-लाभ- -भ:  
 सांसू ५, ८०.  
 देशा(श-अ)न्तर-  
 देशान्तर-गत- -त: नाप  
 ३, ९.

a) °शम् इति अख्या. । b) °र: इति अख्या. ।

देशान्तर-प्राप्ति-सौ महा  
४,५९.

देशा(श-अ)न्त-र(य)या-  
अञ्ज १५९.

देशिक- -०क त्रिवि ३,१; -कः  
शु ३,१५; त्रिवि २,२<sup>b</sup>; १०;  
३,४; ४,३; ५,६; ७,३०; १कौल  
८: १; २कौल १३; -कम् राप्  
५,२; योशि ५, ५.

देशिको(क-उ)क्त- -केन  
सूता ६,१०.

देशिकोक्त-विधान-  
-नेन सूता ६,८.

देशिको(क-उ)क्ति- -क्तया  
सूता ६,५.

देशित,ता- -तः गौ ४,२; -ता गौ  
४, ४२.

✓दिह्  
दिग्ध-

दिग्ध-वि(द्व)द्धा- -द्धाम् वृ  
६,४,९.

देह<sup>१</sup>- -हः मैत्रे २,१; ससा ६; ते  
२,७; ४,८; ५,८९; ९०<sup>३</sup>-९६<sup>३</sup>;  
६,१६; ३३; १००; १०५; नाद  
५३; नाप ३, २७; स्क १०;  
त्रिवा १,१; महा ४,१२६; १३१;  
योशि १, २६; ३५; ४०; ४२;  
१४१; ४,२१; १संन्या २, १४;  
अध्या ५९; १आ १९; मा २;  
४; यो १, ७७; जाद १, २१;  
६,१८; १०,४; वरा ३,१८; ५,  
१; सु २,२,६७; छाग २५:१९;  
वि १८; लिं ३०९: २; भव २,  
२७; सांसू ३,१७; -हम् हं २०;  
मैत्रे २,४; ७; ८; मना २, १३,  
२५<sup>०</sup>; अना १५; काला २०; ते  
६,६; २,३२<sup>d</sup>; ब्रवि ७८; १योत

१२४; नाप ३, ४२; ४, ३८;  
त्रिवा २, ९८; महा ५, १२६;  
६,४४; योशि १, ५६; १६५;  
१६८; ५,२; ४; अञ्ज ५, २९;  
दत्ता २; पिं ४; स ३८०: २;  
सिंशि ३८१: १५; ३८२: ८;  
काम १८; अरु १३५<sup>०</sup>; भव ३,  
३२; गौ ४,९; ८,१३; १५,१४;  
-हस्य वसू ८; नाद २८; त्रिवा  
२,१४२; १योत ५२; मं १,२,  
१; शां १, ४; अध्या ५७; शि  
७,१२३; भव ४, ४; -हा: गौ  
२,१८; -हाव क २,२,४; महा  
४,१२७; कुं २१; सार २७२:  
३; भव १, ५; -हे श्वे १, १३;  
गौ १, २; शु ३, ३; ध्या ८४;  
ब्रवि १८; ५३; ५४; १योत ४५;  
नाप ३,४८; ४९; ४,२८; ६,१०;  
त्रिवा २,१३३; योचू ५८; ९०;  
९१; शां १,४<sup>३</sup>; पै ४,९; ११;  
महा ६,१०; २६; योशि १,३३;  
३७; ९७; १५०; १६३; ५, १२;  
अञ्ज ५,११; २५; २६; यो १,  
३५; ३,२७; जाद ४,४३; ५७;  
७,१३; वरा ५,४०; सौ २,१८;  
पिं ३; लिं ३१०: १९; २०<sup>३</sup>;  
२१<sup>३</sup>; २२; भव १,२१; ५५; सांसू  
३,११; गौ २,१३; ३०; ८,२;  
४; ११,७; १५; १३,२२; ३२;  
१४, ५; ११; -हेन योशि १,  
२५<sup>f</sup>; ४८; कुं १५; शि ५, २७;  
७,१२०; -हेषु हं ५; पिं ६,५.  
देह-क- -कः नाद २४; महा ४,  
६७.  
देह-कण्डूयन- -नम् शि ७,५६.  
देह-कर्तन-पूजन- -नैः अञ्ज  
५,९९<sup>f</sup>.

देह-ग- -गः यो १, १९; भा  
१९<sup>h</sup>; -गम् योशि १,९७.  
देह-गृह- -हम् महा ३, २९;  
३०.

देह-ज,जा- -जः यो १, ४४;  
-जा यो २,२१.

देह-जनित-काम-क्रोध-लोभ-  
मोह-भय-सुख-दुःख-लज्जा-  
(जा-अ)लज्जा(जा-अ)ज्ञान-मोह-  
मत्सरा(र-आ)दि- -दीन् सार  
२९०: १८.

देह-जात्या(ति-आ)दि- -संब-  
न्ध- -न्धान् ब्रवि २९.

देह-ता- -ताम् महा ४,६७.

देह-त्याग- -गः भव १, ११;  
-गम् जा ६; भि १६; तुअ २३;  
पप ४१९: १९; नाप १; ३,  
८६; या २,१.

देहत्यागे(ग-इ)च्छा- -च्छा  
त्रिवि ५,१२.

देह-त्रय- -यम् ते ३,४९; वरा  
१,६६.

देहत्रय-भङ्ग- -ङ्गम् सु १,  
२, ६.

देहत्रय-विहीन-

देहत्रयविहीन-त्व-

-स्वात् ते ५,१७.

देहत्रया(य-अ)तिरिक्त- -क्तः  
ते ४,२.

देहत्रया(य-अ)तीत- -तः  
ग ६.

देह-त्व- -त्वम् योशि १,१६५;  
४,२४; -त्वेन योशि ४,२३.

देह-देहि-विभागै(ग-ए)क-

परित्याग- -गेन अञ्ज २,२.

देह-दोष- -घम् ३,६१.

देह-धर्म- -मैः महा ४,६७.

a) ०रं यासि इति निसा. । b) ०कम् इति निसा. । c) तैश्चा १०, ११, २ । d) ०हः इति अज्या. ।

e) तैश्चा १, २७, २ । f) ०हे अपि इति अज्या. । g) देवकीर्तं इति निसा. मुपा. यनि. सु-श्लोघः (तु. अज्या.) ।

h) 'दाहकः' इति निसा., 'देहकः' इति अज्या., 'हदेगाः, देहगाः' इति तान्त्रि. च मुपा. यनि. सु-श्लोघाः ।

देहधर्म-स्व- स्वात् सांस् १, १४.  
 देह-धारणा- -णा ध्या २, १५.  
 देह-नाश- -शो आबो १९.  
 देह-पतन-पर्यं(रि-अ)न्त-  
 -न्तम् नाप ७.  
 देह-पर्यं(रि-अ)न्त- -न्तम्  
 योशि ६, ८; -न्तात् अञ् ५, १०६.  
 देह-पात- -तात् शि १, ३१.  
 देह-प्रसाधन- -नम् शि ७, ९२.  
 देह-बन्ध- -न्धात् कृ २६; सं २४.  
 देह-भाव-विहीन- -नः ते ३, १४.  
 देह-भृत्- -भृत् योशि ६, ८;  
 गी १४, १४; -भृता भव १,  
 ५३; गी १८, ११; -भृताम् जाद  
 ४, ४३; गी ८, ४.  
 देह-भेद- -दे श्वे १, ११; नाप  
 ९, १०.  
 देह-मध्य- -ध्यम् त्रिब्रा २, ५८;  
 ६६; १३१; शां १, ४<sup>१</sup>; जाद ४,  
 ३; -ध्ये ब्रवि ६०; त्रिब्रा २,  
 ५६; ६७; अता ५; शां १, ४<sup>२</sup>;  
 जाद ४, १.  
 देहमध्य-गत- -तः व४६६:  
 १९; -तम् शां १, ४; -ते जाद ८, १.  
 देहमध्य-स्थ- -स्थम् जाद  
 ५, ७; ध्या २०.  
 देह-मय- -ये महा ६, २२.  
 देह-मात्र- -त्रे अञ् २, २.  
 देहमात्र-तस्(>) सांस् ५,  
 १२४.  
 देहमात्रा(त्र-अ)वशिष्ट-  
 -ष्टः नाप ५, १<sup>३</sup>; तुअ २०;  
 १संन्या २, १३<sup>४</sup>.  
 देह-मान- -नम् त्रिब्रा २, ५४.  
 देह-मुक्ति-ग- -गः अञ् ४,

१४; मु २, २, ३२.  
 देह-योग- -गात् ब्रस् ३, २, ६.  
 देह-रक्षण- -णे मैत्रे २, ३; स्क १२  
 देह-रु(ठ>)ठा- -ठाम् अध्या  
 ९.  
 देह-लाघव- -वः(१वम्<sup>b</sup>) त्रिब्रा  
 २, १११.  
 देह-वत्- -वद्भिः गी १२, ५.  
 देह-वर्जित- -तः ब्रवि ३३.  
 देह-वासना- -नया महा ४,  
 ६७; मु २, २, २; -नाम् १संन्या  
 २, १३.  
 देह-विषय- -यम् सार २३२:  
 १८.  
 देह-व्यथा- -थाम् १आ १०.  
 देह-शुद्धि- -द्धिः कामे १२.  
 देह-शून्य-प्रमातृता- -निमज्ज-  
 न- -नम् भा ३९.  
 देह-शोषण-योग- -गेन सार  
 २८२: २१.  
 देह-सम- -मः महा ३, २७.  
 देह-समुद्भव- -वान् गी १४,  
 २०.  
 देह-समुद्भूत- -तेन त्रिब्रा २,  
 ५५.  
 देह-संबन्ध- -न्धात् ब्रस् २,  
 ३, ४८.  
 देह-संभव- -वाः १संन्या २, ८.  
 देह-साम्य- -स्यम् ते १, १५.  
 देह-स्थ- -स्थः ब्रवि ३३; -स्थम्  
 त्रिब्रा २, ५५.  
 देह-स्थित- -तः योचू १००.  
 देह-स्मरण-वर्जित- -तः ते  
 ४, ५४.  
 देह-हानि- -निः वरा २, ७१.  
 देहा(ह-अ)क्षा(क्ष-आ)दि-  
 -दौ अध्या १.  
 देहा(ह-अ)तीत- -तम् ब्रवि ४३.

१देहा(ह-आ)त्मन्<sup>c</sup>- -त्मना  
 अध्या ५६.  
 देहात्म-ज्ञान-बाधक- -कम्  
 वरा २, १५.  
 देहात्म-त्व-विपर्यास-  
 -सम् १अव १७.  
 देहात्म-भाव- -वः अध्या  
 ५६.  
 २देहा(ह-आ)त्मन्<sup>d</sup>-  
 देहात्म-ज्ञान-  
 देहात्मज्ञान-वत्- -वत्  
 वरा २, १५.  
 देहात्म-विवेक- -कः त्रिवि  
 ५, ४.  
 देहा(ह-आ)दि- -दीनाम् ससा  
 १, ४१<sup>e</sup>; नाद २३; -देः नि२०.  
 देहादि-त्रय- -यः ते ३, ४५.  
 देहादि-धी- -धिया अञ्  
 ५, ६९.  
 देहादि-बन्ध- -न्धेभ्यः  
 १आ १६.  
 देहादि-रहित- -तः मैत्रे ३, ८.  
 देहादि-व्यतिरिक्त- -क्तः  
 सांस् ६, २.  
 देहादि-संघात- -तः वरा  
 २, २५; -तम् निर्वा २९७: ११.  
 देहादि-सत्यत्व-बोधन-  
 -नाय अध्या ६०.  
 देहादि-सुख- -स्वम् सार  
 २२७: १७.  
 देहा(ह-आ)दिक- -कम् ते ४,  
 ३; नाप ५, १.  
 देहा(ह-आ)द्य- -द्याः ससा ३.  
 देहा(ह-अ)नल-विवर्धन- -नम्  
 यो १, २८.  
 देहा(ह-अ)नुवर्तन- -नम् अञ्  
 ४२; अध्या ३.  
 देहा(ह-अ)न्त- -न्ते तृपू १, १५;  
 योशि १, ३२; ३३; ४९; अव्य ७;

a) °हा° इति अख्या. संटि. । b) पा. १ यनि. शोधः (तु. निसा.) । c) कस. । d) दस. । e) पा. १ °दीन्  
 इत्येवं शोधः द. (तु. अख्या.) ।



अञ ४, ५३; ह १२; तुल ७२;  
२; शि १, २३; रा ४२५: २०.  
देहा(ह-अ)न्तर- -रम् पै २, ४८;  
-रे त्रवि ५०; रा ४२४: २.

देहान्तर-दर्शन- -नम् नाप  
७१<sup>०</sup>.

देहान्तर-प्राप्ति- -सि: गी २,  
१३; -से: योशि ३, २४<sup>०</sup>.

देहा(ह-अ)भाव- -वात् ते ५,  
१९.

देहा(ह-अ)भिमान- -ने सर ३,  
३१; -नेन नाप ६, १.

देहा(ह-अ)रम्भक- -कस्य सांम्  
५, ११३.

देहारम्भक-भेद-वश-  
-शात् नि १८.

देहा(ह-अ)वभासक- -क: आबो  
१९.

देहा(ह-अ)वसान-समय- -ये  
योशि १, ३१.

देहिन्- -हिन: क २, २, ४; ७;  
मैत्रि ६, २८<sup>०</sup>; गर्भ ३<sup>०</sup>; १योत  
५२; नाप ५, १; योशि १, २५;  
२६; पाशु २, ३७; शि ७, १२५;  
सिधि ३८२: ८; भव २, २२;  
५, २; गी २, १३; ५९; -हिनम्  
महा ४, ११३; गी ३, ४०; १४,  
५; ७; -हिनाम् रार ५, १५; कर  
१७; अञ २, १; वरा ५, ४; भव  
३, २१; ४, १६; गी १७, २; -ही श्वे  
२, १४; ३, १८; ५, ११; १२;  
आबो २७; सी ३२; राउ ३, ३१<sup>०</sup>;  
पै ४, ४; योशि १, ५७; ५८<sup>०</sup>;

कर २३; जाद १, २१; ह १२;  
सौ २, १८; मु २, २, ६७; शि ६,  
२७८; सिधि ३८०: ८; भव २,  
२४; ३८; गी २, २२; ३०; ५,  
१३; १४, २०.

देहि-वत् १आ १७.

देहे(ह-इ)न्द्रिय- -येषु त्रिन्ना २,  
२८; अध्या ४५; २अव ३३७: ३.

देहेन्द्रिय-निग्रह-

देहेन्द्रियनिग्रह-सद्गुरु-  
पासन-श्रवण-मनन-निदिध्या-  
सन- -नै: नि २७.

देहेन्द्रिया(य-अ)तीत- -तम्  
शु ३, ६.

देहेन्द्रिया(य-अ)दि-

-दिभ्य: भव २, ३०.

देहे(ह-इ)न्द्रिय-बुद्धि- -द्धि:  
(१द्धि<sup>०</sup>) कै २, ३.

देहे(ह-ए)क-रक्षण- -णम् नाप  
४, ३८.

देहो(ह-उ)च्छिष्ट- -ष्टानि सार  
२५९: १३.

देहो(ह-उ)द्भव- -वानि सार  
२५९: १४.

देहो(ह-उ)पाधि- -धिम् सार  
२५९: ५.

देहोपाधि-कर्म-क्षुत्-तृद्-  
पिपासा-मोह-भय-दु:ख<sup>०</sup>-  
-खम् सार २८७: १३.

✓दी(दीप्तौ), दीदयत् व ४३७: १४९<sup>१</sup>.

✓दी(क्षये)

दीन<sup>१</sup>-

दैन्य- -न्यम् पित्र ५, ७;

-न्यात् अञ २, ३१.

दैन्य-दोष-

दैन्यदोष-म(य>)-

यी- -यी महा ३, ३६.

दैन्य-भाव- -वात्

१संन्या २, ९४.

दीन-ता- -ताम् अञ ५, २.

दीन-वत्सल- -ला: सार २४३:  
१९.

दीना(न-अ)न्ध-कृपण- -गेभ्य:  
शि २, २८.

✓दीक्ष्, > दीक्षि, दीक्षध्वै छाग  
२३: ५१<sup>०</sup>.

दीक्षयति इ ११: १४; दीक्षयेत  
कामे ३; ४.

दीक्षा<sup>१</sup>- -क्षा मुं २, १, ६; वृ ३,  
९, २३<sup>०</sup>; गर्भ ५; मना २, ८०९<sup>१</sup>;

कामे ११; -क्षा: छां ३, १७, १;  
मु २९; -क्षाम् कुं ९; कश्रु ३,  
१; -क्षाया: छाग २३: २१<sup>०</sup>;

-क्षायाम् वृ ३, ९, २३; शि ७, ११.

दीक्षा-संतोष-पान- -नम् निर्वा  
२९७: ५<sup>०</sup>.

दीक्षित- -त: रार ४, १२; -तम्  
वृ ३, ९, २३; -ता: वृ २५.

दीक्षितो(त-उ)दधि-संगम-  
-मम् शि ७, ८८.

दीक्षित्वा छां ५, २, ४.

✓दीधी, दीधिरे त्रि २१<sup>०</sup>.

✓दीप्, > दीपि, देदीप्य, दीप्यते  
छां ३, १३, ७; वृ १, ३, १२; ३,  
१, ८; कौ २, १२<sup>०</sup>; १३<sup>०</sup>; मना  
२, १४९<sup>०</sup>; आर्षे ८: ७; पित्र ३,

a) पा.१ नापू. 'न' इत्यतः प्राक् 'पश्यतः' इति मौलिकस्य सतः पदस्य च्युतिः संभाव्येत यनि. वाक्यं च परिसमाप्येत (वैतु. अज्या. यत्र नापू. 'न' इति पदं नोपलभ्यते, °न- > °ना- > -नाम् इति च कृत्वा तस्य नाउ. पदेन साधिकरण्यमिवेप्यते) । b) °सिक्कारणम् इति अज्या. । c) 'देहिनाम्' इति आन. । d) पा.१ 'देहि' इति श्लोचः द. (तु. अज्या.) । e) 'देहिवत्' इति अज्या. । f) समाहारे द्वस. । g) पा.१ यनि. श्लोचः द., °द्धि अस्ति इत्येवं विसंधाय सुपठश्च । h) कस. । उप. समाहारे द्वस. । i) ऋ २, २३, १५ । j) वैपश् यद. । k) 'ईक्षध्वै' इति मुपा. यनि. सु-श्लोचः (तु. बे.) । l) तैआ १०, ६४, १ । m) °क्षायै इति बे. पा. यनि. सु-श्लोचः । पं. आकाङ्क्षितत्वात् तदर्थं च. चाप्रसिद्धेः । n) °पावनम् इति अज्या. । o) 'दधिरे' इति निसा. मुपा. यनि. सु-श्लोचः (तु. अज्या., तान्त्रि.) । p) तैआ १०, १३, ११ ।

५; ४, ८; ६, ७; दीप्यति मैत्रि  
६, ३५.

दीपयते पित्र ६, ८; दीपयेत् शि  
४, ६२; ७, ७०.

दीप-पः लु २३; १योत २; १३१;  
१४२; २योत १, २; मं २, २,  
५; योशि ६, ७७; भा ३६; यो  
३, १५; १६; आपू ४; वड ६,  
३०; गी ६, १९; -पम् २योत  
२, ४; म २, २४; मु २, २, ४६;  
वड ६, २४; -पस्य मैत्रि ६,  
३६; -पाम्याम् सी ३७<sup>१</sup>; -पे  
महा ५, १०७; -पेन १संन्या २,  
२२; सांसू ५, ५९.

दीप-कणिका-का आबो २८.

दीप-ज्वाला-ला योशि ६,  
७७; यो ३, १६.

दीपज्वाले(ला-इ)न्दु-खद्यो-  
त-विद्युन्-नक्षत्र-भास्वर-राः  
योशि २, १९.

दीप-दपेण-चामर-रैः शि ६,  
१८३.

दीप-प्रकाश-शम् गोच ६६;  
१९.

दीप-वत् मैत्रि ६, ३०; त्रिब्रा २,  
५७; मु २, २, १७.

दीपवत्-प्रकाश<sup>१</sup>-शम्  
आबो १.

दीप-वर्ति-

दीपवर्ति-वत् योशि १, ७४.

दीप-शिखा-खा योशि १,  
७४<sup>०</sup>.

दीपशिखा(खा-आ)कार-

-रम् सौ ३, १.

दीप-संका(श>)शा-शा ब्रवि

९; १प्र ३१: १५.

दीपा(प-आ)कार-रम्ब्रवि २३.

दीपो(प-उ)पम-मेन श्वे २, १५.

दीपक-कम् अन्न ३, २२.

दीपन-नम् वरा ५, २.

दीपन-मन्त्र-त्रम् षो १२.

दीपयत्-यन् वृपू २, ११९<sup>१</sup>;

-यन्तः सार २२४: १३.

दीपित-ते पै ४, ११.

१दीप्त, सा-सः वृपू २, ११९<sup>१</sup>; जाद

६, ४२; -सम् शि ७, ७०; गी

११, २४; -सैः म २, २०.

दीप्त-रूप-पाय त्रिवि ७, ३६.

दीप्त-विशाल-नेत्र-त्रम् गी

११, २४.

दीप्त-हुताश-वक्त्र-वक्त्रम् गी

११, १९.

दीप्ता(प्त-अ)नला(ल-अ)र्क-

द्युति-तिम् गी ११, १७.

२दी(प्त>)सा<sup>१०</sup>-सा कालि ४०१:

९; श्या १२.

दीप्ति-सिः १योत ४५; जाद ५,

११; चा २; व ४६६: २०.

दीप्ति-मध्य-गत-तः व ४६६:

२०.

दीप्य-प्यम् पित्र ६, ७.

दीप्यत्-प्यन्तम् ब्रवि १५.

दीप्यमान, ना-नः वृपू २, ११९<sup>१</sup>;

आर्षे ८: १७; -नम् सार २२५: ८;

९; -नाः सार २३३: ८; -नानि

सार २३७: ४; -नेषु पित्र ३, ५.

देदीप्यमान-नम् शां १, ७, १६;

आर्षे ८: ८.

दीप्यमान-✓दा(दाने) द्र.

दीर्घ, घा- -वं: ध्या १७; वरा ५,

६८; -वंम् ते ४, २३; त्रिब्रा २,

१०४; १११; सू २४९<sup>१</sup>; त्रिता

२, ४; वरा २, ६४<sup>३</sup>; दत्ता १, २;

इ ११: ११; पिं १३; शि ३,

३; ४, ४; -र्वया रार २, ३२;

-र्वा वृपू ३, ३; रापू ४, ५८<sup>१</sup>;

५९<sup>१</sup>; महा ३, ३६; यो १, ४३;

नापू ५, ३<sup>१</sup>; वपू २, २<sup>१</sup>.

दैर्घ्य-दैर्घ्यम् योशि १, ८१; वरा

५, ७०; शि २, २; -र्घ्यात् शि २, ४.

दीर्घ-काल-

दीर्घकाल-नैरन्तर्य-सत्कार-

सेवित-तः योसू १, १४<sup>१</sup>.

दीर्घ-घण्टा-निनाद-

दीर्घघण्टानिनाद-वत् ध्या १८;

३७<sup>१</sup>; योचू ८०; वरा ५, ६९.

दीर्घ-तपस्-पसा अन्न १, ५६.

दीर्घ-दुःख-(द>)दा-दा महा ३,

२५.

दीर्घ-प्रणव-संधान-नम् १योत

२७.

दीर्घ-प्लुत-विराज्-राट् तु ५.

दीर्घ-प्लुतो(त-उ)दात्त-तः २प्र

३४: १७.

दीर्घ-बाहु-हुम् गरु ५.

दीर्घ-भाज्-भाजा रार २, १००;

-भाजि रार ३, १<sup>१</sup>.

दीर्घ-भाजिन्-जि रापू ४, ४३<sup>३</sup>.

दीर्घ-यु(क्त>)क्ता-क्ता रापू ४,

६२<sup>१</sup>.

दीर्घ-युत-तः रापू ४, ६१.

दीर्घ-सूक्ष्म-क्ष्मः योसू २, ५०.

दीर्घ-सुत्र-

दीर्घसूत्रिन्-त्री गी १८, २८.

दीर्घ-स्वप्न-स्वप्नम् वरा २, ६४.

दीर्घ-स्वर-युत्-युता रार २, ९६<sup>०</sup>.

g) °पामिः इति अख्या. सुपा. यनि. सु-शोषः (तु. उन्न.) । b) बस. । c) °स्त्रायाम् इति आन. ।

d) तैत्रा ३, १०, १, २ । e) =देवीविशेष- । f) वैप १ यद. । g) अ ३, ३६, १४ । h) =नकार-बीजाक्षर- । दीर्घ<sup>०</sup>

इति निसा. अख्या. च सुपा. यनि. सु-शोषौ (तु. आन.) । i) =कलाविशेष- । j) °रासेवितः इत्यपि पाभे. ।

k) तु. सस्थ. टि. अच्छिन्न- । l) °भाजि इति अख्या. । m) °भाजी इति अख्या. । n) °युता इति आन. । o) °युजा

इति अख्या. ।

दीर्घा(घ-आ)घ- -घः सूता २, १५.  
 !दीर्घा(घ-अ)नल- -लम् राउ  
 १, २.  
 दीर्घा(घ-आ)यु-  
 दीर्घायु-त्व- -त्वस्य सूता २,  
 ६५.  
 दीर्घा(घ-आ)युज्य-प्र(द>)दा-  
 -दा रा ४२५: २१.  
 दीर्घा(घ-आ)युस्- -युः अह्ना २.  
 दीर्घा(घ-अ)घै(घ-इ)न्दु- -युज्-  
 -युजा रार २, २.  
 दीर्घा(घ-अ)स्थि- -स्थि योशि ६, ८.  
 √दु(उपतापे)  
 दाव-  
 दाव-दाह-  
 दावदाह-मय- -यम् अज  
 १, ३५.  
 दावा(व-अ)नल-  
 दावानल-कालामि-हनुमत्-  
 -मते लां २१३: ५; २१४: ३.  
 १दुं दे १९; व ४३१: ३.  
 २दुं व ३१२: १६; व ४२६: ३;  
 दुं-दुं व ४३७: ३.  
 दुःख- -खम् वृ ४, ४, १४; खे ३,  
 १०; गौ ३, ४३; ४, ८२; पहे २;  
 वृ ५, २०; नि ९; ३२; ३३;  
 ते १, १४; ५, ४४; ९१; ९९; ६,  
 ५; १००; नाद ५३; १योत १३;  
 ५६; आवो २०; ३०; नाप ३,  
 २७; ८६; महा २, ४९; ५६; ३,  
 ६; ४, १११; ५, १६८?; योशि  
 १, ११; ३७; ५, ६१; अज ५,  
 ११७; अक्षि २२; ४७; कुं ८;  
 १अव २८; दत्ता २; इ ११:  
 १८३; १९; राधा ३, ८; सार  
 २९१: २१; शि ७, १११; ११८;

व ४५६: १३; भव १, १०;  
 २७१<sup>h</sup>; पित्र १, १५; ५, ७; वउ  
 ५, २९; ४८; सांसू १, ८४; ३,  
 ५३; सांका ५५<sup>२</sup>; योसू २, १५;  
 १६; गौ ५, ६; ६, ३२; १०, ४;  
 १२, ५; १३, ६; १४, १६; १८,  
 ८; -खस्य खे ६, २०; अज ५,  
 ७०; भव १, १०; -खात् हे १;  
 सांसू १, ८४; ६, ६; -खानाम्  
 महा ५, ८५; ६, २६; -खानि वृजा  
 ८, ६; श १४; महा ४, २९; ६,  
 २४; भव १, ६; -खाय महा ५,  
 १८१; अज ४, १५; -खे पहे ४;  
 अन्न ४, ६९; वरा ४, २२; -खेन  
 गर्भ ४; योशि ३, १३; तुअ  
 १७; शि ७, ११८; गौ ६, २२;  
 -खेभ्यः ऊ ६४: ११; -खेषु गौ  
 २, ५६; -खैः १योत ४; योशि  
 १, १; अन्न ५, ७; भव १, ८.  
 दुःख-कण्टक-शालिन्- -लिषु महा  
 ४, ११३.  
 दुःख-क्षय- -यः गौ ३, ४०.  
 दुःख-जन्म-भय-प्र(द>)दा-  
 -दाम् महा ६, ५१.  
 दुःख-जाल-परीता(त-आ)त्मन्-  
 -त्मा महा ५, १२७.  
 दुःख-तर- -रम् गौ २, ३६.  
 दुःख-ता- -ताम् छां ७, २६, २;  
 मैत्रि ७, ११.  
 दुःख-त्रया(य-अ)भिधात- -तात्  
 सांका १.  
 दुःख-द- -दः योशि १, २७.  
 दुःख-दायि(न>)नी- -नी महा ५,  
 ९५.  
 दुःख-दौर्मनस्या(स्य-अ)ङ्गमेजयत्व-  
 इवास-प्रदवास- -सा: योसू १, ३१

दुःख-निघ(न>)ना- -नाम् अर  
 ९९.  
 दुःख-निवृत्ति- -त्ते: सांसू ५, ६७.  
 दुःख-पक्ष- -क्षे सांसू ६, ८.  
 दुःख-पद्धति- -ति: भव १, ७.  
 दुःख-प्रवाह- -हम् पित्र ५, ४.  
 दुःख-बद्ध- -द्ध: महा ४, १२५.  
 दुःख-बीज- -जानाम् अन्न ४,  
 ७३.  
 दुःख-बुद्धि- -द्धि: ससा १, १९;  
 त्रिवि ५, ४.  
 दुःख-भय- -येभ्यः अ २<sup>k</sup>.  
 दुःख-भागिन्- -गी भव ४, ३.  
 दुःख-भाज्- -भाक् अज ५, १८.  
 दुःख-योनि- -नयः गौ ५, २२.  
 दुःख-रत्न-समुद्र-  
 दुःखरत्नसमुद्र-क- -कम् अज  
 ४, ४०.  
 दुःख-विघात- -ता: सांका ५१.  
 दुःख-विमुक्ति-हेतु- -तु: हे ८.  
 दुःख-वृक्ष- -क्षस्य भव १, २९.  
 दुःख-शत- -तै: योशि १, ३०.  
 दुःख-शबल- -लम् सांसू ६, ८.  
 दुःख-शृङ्खला- -लया महा ३, ४७;  
 या २, १३.  
 दुःख-शोका(क-आ)मय-प्रद- -दा:  
 गौ १७, ९.  
 दुःख-संयोग-वियोग- -गम् गौ  
 ६, २३.  
 दुःख-संतति- -त्ते: अन्न ५, ७०.  
 दुःख-सागर- -रम् वरा २, ६४.  
 दुःख-हन्- -हा गौ ६, १७.  
 दुःखा(ख-अ)ज्ञाना(न-अ)न्-अ-  
 न्त-फल- -ला: योसू २, ३४.  
 दुःखा(ख-आ)व्य- -व्यम् ते १, २<sup>१</sup>;  
 कर २५.

- a) =रा-बीजाक्षर-। b) खि १, ५०, २। c) =आम्-बीजाक्षर-। d) तु. टि. कुं। e) =बीजमन्त्रविशेष-।  
 f) वैपश् यद्र.। g) °खयु° इति निसा. मुपा. यनि. सु-बोधः (तु. अख्या.)। h) 'सुखम्' इति मुपा. यनि. सु-बोधः।  
 i) नीरन्ध्रदुःख° इति अख्या., °शास्त्रिषु इति अख्या. संटि.। j) तैआ १, २७, १। k) °भवे° इति अख्या. संटि.।  
 l) 'दुःसाध्यम्' इति आन.।



|   |  |   |
|---|--|---|
| दुःखा(ख-आ)दि-भेद- -दः पाशु<br>२, २४.  | दु(स्)>:-स्थिति- -तिः ते ६, २४.  | ७८९ <sup>०</sup> ; ७९९ <sup>०</sup> ; ९ <sup>०</sup> मना १,<br>१०; २शिसं ३६; व ४६२: १२.   |
| दुःखा(ख-अ)दुःख- -खम् ते ३, ५५.  | दु(स्)>:-स्प(र्श)>र्शा- -शाः महा<br>३, ४३; या २, ९.                                      | दुर्-आधि <sup>०</sup> - -धयः महा ३, १६; ४,<br>२९.   |
| दुःखा(ख-अ)नुशय-<br>दुःखानुशयिन्- -यी योस् २,<br>८१ <sup>०</sup> .           | दु(स्)>:-स्वप्न- -मम् व ४३२: १७.   | दु(इ-आ)रा-राध्य <sup>०</sup> - -ध्यम् ते १, २.  |
| दुःखा(ख-अ)न्त- -न्तम् हे ११; गी<br>१८, ३६.                                  | दुःस्वप्न-नाशि(न्)>नी- -नी<br>मना १, ७; व ४६४: ४.  | दुराराध्य-देव-वेदन- -नम् पित्र ६,<br>१६.  |
| दुःखा(ख-अ)पार्जन-रक्षण <sup>०</sup> - -गम्<br>शि ५, ८.                      | १, २दुग्ध- / दुह् द्र.   | दुर्-आलाप <sup>०</sup> - -पम् ते ६, २५.   |
| दुःखा(ख-अ)म्बुधि- -धेः अन्न ४,<br>६४.                                       | दुच्छु(न)>ना <sup>०</sup> -<br>/ दुच्छुनाय्, दुच्छुनायते मना २,<br>६८९ <sup>०</sup> .    | दुर्-आशा <sup>०</sup> - -शा ते ६, २५.   |
| दुःखा(ख-आ)लय- -यम् गी ८, १५.  | दुन्दुभि <sup>०</sup> - -भेः वृ २, ४, ७ <sup>०</sup> ; ४, ५, ८;<br>५, १०, १; राप् ४, २१. | दु(इ-आ)रा-सद <sup>०</sup> - -दम् गी ३, ४३.  |
| दुःखित <sup>०</sup> - -तः भव १, २; -ताः<br>१संन्या २, ९९; -तेषु अन्न २, ३०. | दुन्दुभ्या(भि-आ)घात- -तस्य वृ<br>२, ४, ७; ४, ५, ८.                                       | दुर्-इत <sup>०</sup> - -तम् मना २, ३१९ <sup>०</sup> ;<br>३२९ <sup>०</sup> ; ६४९ <sup>०</sup> ; दे १२; राउ ५,<br>७; १२; व ४५९: १०; -ता<br>मना २, १ <sup>०</sup> ; ९ <sup>०</sup> ; ९ <sup>०</sup> ; ३९९ <sup>०</sup> ; त्रिता<br>१, ७९ <sup>०</sup> ; व ४३०: ७९ <sup>०</sup> ; ४६१:<br>७९ <sup>०</sup> ; १२९ <sup>०</sup> ; -तानि मना २,<br>११९ <sup>०</sup> ; व ४६१: १५९ <sup>०</sup> . |
| दुःखिन्- -खिनः १अव ११; -खी<br>ध्या ९३, १; महा ४, १२६.                       | दुर्-अक्षर- -राणि वपं ३१३: ७.  | दुरिता(त-अ)पह- -हम् शि ५, २.  |
| दुःखो(ख-उ)दधि- -धौ गर्भ ४.  | दुर्-अत्य(य)>या <sup>०</sup> - -या क १, ३,<br>१४; गी ७, १४.                              | दुर-उक्त <sup>०</sup> - -क्तान् मना २, ४१९ <sup>०</sup> .   |
| दुःखौ(ख-ओ)व-  | दुर्-अन्त <sup>०</sup> - -न्तान् वरा २, ३७.  | दुर-उद्गीथ- -थम् छां १, ५, ५ <sup>०</sup> <sup>b</sup> .  |
| दुःखौव-मय- -यम् वरा २, २२.  | दुर्-अहंकृति- -त्या महा ५, ९४.   | ?दुरुष्व-हन्- -हा मना २, ३८९ <sup>०</sup> .   |
| दु(स्)>:-शक्य <sup>०</sup> - -क्यम् मैत्रि १, २.                            | १दुर्-आचार <sup>०</sup> -<br>दुराचार-रत- -तः सु १, १, १८;<br>-ताय सु १, १, ४७.           | दुराण <sup>०</sup> -<br>९ <sup>d</sup> दुरोण-सद्- -सत् क २, २, २;<br>मना २, १२, २; २, ४०; वृप् ३, ६;<br>नाप ५, १; त्रिता ४, २७; वप्<br>२, ३.  |
| दु(स्)>:-ष्वप्न-  | दुराचार-विघाति(न्)>नी- -नीम्<br>दे १९.   | १दुर्-ग <sup>०</sup> - -गम् क १, ३, १४.   |
| दुःष्वम-हन्- -हन् मना २, ३८९ <sup>०</sup> .                                 | २दुर्-आचार <sup>०</sup> - -रः भव ४, ३.   | २दुर्-ग <sup>०</sup> - -गानि मना २, १ <sup>०</sup> ; ९ <sup>०</sup> ; ९ <sup>०</sup> ;<br>९ <sup>०</sup> ; त्रिता १, ७९ <sup>०</sup> ; २, ३२९ <sup>०</sup> ;  |
| दुःष्वमिय- -यम् मना २, ३९९ <sup>०</sup> .                                   | दुर्-आत्मन्- -त्मनः भव २, ६६;<br>३, १९; -त्मने ते ६, १०८; श<br>३२; -स्मा महा ५, ९३.      |   |
| दु(स्)>:-सह- -ह अक्ष ५; -हम्<br>ते ६, २५; -होः महा ४, २९.                   | दु(इ-आ)रा-धर्ष, र्पा <sup>०</sup> - -र्षम् मना २,  |   |
| दु(स्)>:-साध <sup>०</sup> - -धानि अन्न ४, ८१.                               |  |   |
| दु(स्)>:-साध्य <sup>०</sup> - -ध्यम् पित्र ६,<br>१६.                        |  |   |

a) पा. १ उद्देश्यविधेयात्मकतया लक्षणे स्वारस्यात् ०य-> ०यः इत्येष मौलिकः पा. इति संभाव्येत (तु. टि. सप्र. तन्वनुबन्ध-> -न्धः) । b) कस. । पूष. बस. । c) पा ५, २, ३६ । d) उस. । उप. खलर्थे यत् प्र. उसं. (पा ३, ३, १२६) । e) तैआ १०, ४८, १ । f) तैआ १०, ४९, १ । g) पा ३, ३, १२६ । h) उस. । उप. खलर्थे ण्यत् प्र. उसं. (पा ३, ३, १२६) । i) तैआ १०, १, ७ । j) वैप १ यद्र. । k) ऋ १०, ३७, १२ । l) बस. । उप. भाप. <अती(ति)√इ) । m) बस. । n) प्रास. (पा २, २, १८) । o) तैआ १०, ६२, १ । p) तैआ १०, ६३, १<sup>०</sup> । q) खि ५, ८७, ९ । r) पा ३, ३, १२६ (वैतु. शं. बस. इति) । s) तैआ १०, २४, १ । t) तैआ १०, २५, १ । u) तैआ १०, ६४ । v) ऋ १, ९९, १ । w) ऋ ५, ४, ९ । x) ऋ ५, ८२, ५ । y) 'दुरिताति' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. शौ ७, ६५, १) । z) बस. । उप. भाप. । विशेषेति [=अपभाषिन्- (वैतु. सा. [तैआ १०, ३९, १] अर्थश्च वा. च? [तु. सस्थ. टि. √बुद्>नुदमान-]]] । a') तैआ १०, ३९, १ । b') ०तम् इति आन. (तु. शं.) सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. रामा., आन. संदि., JC.) । c') पा. १ [तु. JC.; वैतु. 'दुरुष्वह' इति तैआ. (१०, ४८, १), 'दुरुष्वह' इति निसा.] । d') ऋ ४, ४०, ५ । e') विप. । f') विशेषेति. । g') ऋ १, १८९, २ । h') शौ ७, ६५, १ ।

व ४३० : ७९<sup>a</sup>; ४६१ : ७९<sup>a</sup>;  
१०९<sup>b</sup>; १५९<sup>c</sup>; गार्त् दे १८; गौ  
क २, १, १४; वृ ६, १, ३<sup>३</sup>; नाप  
४, २०.

दुर्दुर्ग-हन्- हा मना २, १; व  
४६१ : १२.

३दुर-ग-

दुर्गा<sup>१०</sup>- गार्त् दे १८<sup>३</sup>; ९<sup>१५</sup>; सिशि  
३८३ : ३; गार ४०७ : १८; व  
४२६ : ११; गार्म् मना २, १९<sup>१</sup>;  
रार १, ७; रापू ५, ३; दे ४९<sup>१</sup>;  
१९; व ४२६ : १३; ४२७ : १६;  
४६१ : ९९<sup>१</sup>; ४६५ : २१; गार्त्  
सूता ४, २; व ४३१ : ३; ४३७ :  
४; -० गौ त्रिता २, ७०; दे १९;  
व ४५५ : २३; ४५८ : १२;  
४६६ : २.

दुर्गा-मनु- नोः श्या १८.

दुर-गति<sup>११</sup>- तिम्र व ४३२ : १८;  
गी ६, ४०.

दुर-गन्ध<sup>१२</sup>- न्धम् मैत्रे २, ६; न्धे मै  
१, २; मैत्रि १, ३.

दुर-गन्धि<sup>१३</sup>- न्धि छां १, २, २; ९;  
नाप ३, ४६.

दुर-गम, मा<sup>१४</sup>- मम् रापू ४, ६७;  
-माम् दे १९.

दुर्नि<sup>१५</sup>- निः मना १, ७९<sup>k</sup>; २, १९<sup>१</sup>;  
व ४६२ : ५; ४६३ : ८९<sup>m</sup>.

दुर-जन<sup>१६</sup>- नैः अघ्या ४७; शि ७,  
८५; भव ४, १४.

दुर-जय, या<sup>१७</sup>- या कृ ११; -याः  
महा ५, ७७.

दुर-जर<sup>१८</sup>- रम् भव ४, १३.

दुर-दर्श<sup>१९</sup>- शैः गौ ३, ३९; ब्रवि ९६;

-शैम् क १, २, १२; गौ ४, १००;  
पित्र १, १.

दुर-दृष्टि<sup>२०</sup>- दृष्टिः सु २, २, ६०<sup>n</sup>.

दुर-ध(र>)रा<sup>२१</sup>- रा पी ४२२ : ८.

दुर-धर्ष<sup>२२</sup>- -० र्ष अक्ष ५; -र्षम् मना  
२, ७८९<sup>o</sup>.

दुर-नि-ग्रह<sup>२३</sup>- हम् गी ६, ३५.

दुर-निर्-ईक्ष्य<sup>२४</sup>- क्ष्यम् गी ११, १७.

दुर-नि-वार्य<sup>२५</sup>- र्यम् मै ४, २; मैत्रि  
४, २.

दुर्निष्पत्त<sup>२६</sup>- रम् छां ५, १०, ६.

दुर-बुद्धि<sup>२७</sup>- द्धेः गी १, २३.

दुर-बोध<sup>२८</sup>- -धम् कृ १०.

दुर-ब्राह्मण<sup>२९</sup>- णः इ १६ : १५.

दौर्ब्राह्मण्य-

दौर्ब्राह्मण्य-निवृत्ति- तिम्र नाप  
२.

दुर-भाग्य<sup>३०</sup>-

दौर्भाग्य-

दौर्भाग्य-नाश- -वाः काम ९.

दुर-भिक्षा<sup>३१</sup>-

भुमिक्षा(क्ष-आ)दि-भय- -यम्  
राउ ५, २६.

दुर-भिक्ष्य<sup>३२</sup>- -ज्यम् वृ ४, ३, १४.

दुर-भेद्य<sup>३३</sup>- -द्यम् यो २, ४१.

दुर-मति<sup>३४</sup>- -तिम् व ४३२ : १७.

दुर-मति<sup>३५</sup>- -तिः गी १८, १६.

दुर-मलो(ल-उ)पेत- -तम् मैत्रे २, ६.

दुर-मि(त्र>)त्रा- -त्राः मना १,  
११९<sup>r</sup>.

दुर-मेधस्<sup>३६</sup>- -धाः गी १८, ३५.

दुर-योधन<sup>३७</sup>- -नः गी १, २.

दुर-लक्ष्य<sup>३८</sup>- -क्ष्यम् पित्र ६, १६.

दुर-लभ, भा<sup>३९</sup>- -भः महा ४, ७७;

योशि २, ५; यो २, ४; वरा २,  
७६; पित्र ५, ५; -भम् ते १,  
२<sup>p</sup>; १योत ५१; त्रित्रा २, १०८;

शां १, ७, १४; महा ४, ७७; जाद

६, २०; ७, १४; वरा २, ५; ७६;

सिशि ३८३ : ५; -भा महा ४,

७७; यो २, ४; ३७<sup>३</sup>; वरा २, ७६;

सार २७७ : २३; -भाः क १, १,

२५; -० भे तुल ७० : १६.

दुर्लभ-तर, रा- -रः पदं १; तुअ

३; पप ४२० : १०; सार २८८ :

१०; -रम् सार २४४ : ७; २५७ :

२१; २७७ : २३; गी ६, ४२;

-राः सार २३६ : १५.

दुर-वाक्य- -क्यम् ते ६, २४.

दुर-वासना-रज्जु- -ज्जुः या २,

१२; महा ३, ४६.

दुर-वासस्<sup>४०</sup>- -सम् वृजा ६, ५;

-ससे गोउ १<sup>३</sup>; -साः वृजा ६,

५; व ४५२ : १६.

दुर-वृत्त<sup>४१</sup>- -तम् नाप ४, ३४; -त्ताय

ते ६, १०८; श ३२.

दुर-ह(ण>)णा<sup>४२</sup>- -णा व ४४० :

१२; ४४५ : १७; ४५० : १७;

४५४ : २.

✓दुल्>दोलि

दोलयित्वा सार २५४ : ६.

दोला- -लाम् सार २५४ : ६;

-लायाम् सार २६७ : २३.

दोला-विद्रुम-लता- -ताः सार

२६७ : २२.

दु(स्>)श्-चरित- -श्चम् मना

२, ३०; प्रा १, ६; -त्ताव क १, २,

२४; नाप २, १९; महा ४, ६९.

a) ऋ १, ९९, १। b) ऋ १, १८९, २। c) गौ ७, ६५, १। d) ऋ ५, ४, ९। e) =देवीविशेष-। f) खि  
१०, १२७, १२। g) प्रास.। h) बस.। i) बस. इदादेशः उसं. (पा ५, ४, १३५)। j) पा ३, ३, १२६। k) तैश्चा  
१०, १, ७। l) तैश्चा १०, १, १६। m) तैश्चा १०, १, ८। n) 'तद्दृष्टिः' इति अज्या. संटि.। o) तैश्चा १०, ६२, १।  
p) दु. टि. दुःसाध्य-। q) =पतन- वा 'पत-तर- वा ? (दु. शं.)। r) 'दुर्मित्रियाः' इति मा ६, २२; jC.।  
s) पा ५, ४, १२२। t) पावा ३, ३, १३०। u) 'दुर्लक्षम्' इति आन.। v) 'माम्' इति अज्या.। w) =ऋषिविशेष-।  
x) 'सनम्' इति निसा. संटि.। y) ऋ १, ३८, ६। वैप१ यद्र.। z) 'चु' (तैश्चा १०, २३, १) इति स्वरः ?।

दु(स्)>श्-चित्त- -त्तम् व ४३२ :  
१८.

√दुष्, >दूषि<sup>a</sup>, दुष्यति छां ८, १०,  
१; ३.

दूषयति सार २५० : ७; व  
४६५:१४; दूषय-दूषय गरु ६;  
दूषयेत् नाप ६, ४.

दुष्ट,ष्टा- -ष्टः महा ६, २७; -ष्टम्  
जाद ४, ५४; व ४५९ : १०;  
भव ४, १२; -ष्टस्य भव ५, १३;  
-ष्टानाम् गरु ६; -ष्टासु गी १, ४१.

दुष्ट-क्रीट-

दुष्टक्रीट-कपि-श्वान-माजार्-  
जम्बुक-व्याघ्र-वराह- -हाणाम्  
गरु २४.

दुष्ट-गति- -तयः सार २७९ :  
२२.

दुष्ट-ग्रह- -हान् व ४५६:१२.

दुष्टग्रह-ज्वाला-माला-

दुष्टग्रहज्वालामालि-

(न<)नी- -०नि व ४४९:८.

दुष्टग्रह-नाशि(न<)नी-

-०नि व ४२७:२०.

दुष्टग्रह-मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-

भ्रमर(>)री- -०रि व ४३२:  
११.

दुष्ट-जन- -नाः व ४६५:१९.

दुष्ट-मतङ्ग-ज-जः मु२, २, ४४.

दुष्ट-मदना(न-अ)-भाव- -वात्  
नाप ५, १.

दुष्टा(ष्ट-आ)त्मन्- -स्मा ते ६,  
२५.

दुष्टा(ष्ट-अ)श्व- -श्वाः क१, ३, ५.

दुष्टाश्व-युक्त- -कम् श्वे २,  
९; भव ३, २६.

दूषण- -णम् वस् १.

दूषक(>)षिका- -का १योत ५७.

दूष्य- -ष्यम् ते ६, ११.

दोष- -षः गौ ४, ४३; ते ६, ३६;

१संन्या २, ६३; यो ३, २८;

अद्वैमा २०; सांसू १, ९०; ९१;

ब्रसू २, ३, ३०; ४, ११; -षम् ते

५, ९७; नाप ३, ३६; शि ३, ११;

गी १, ३८; ३९; -षाः मैत्रि ६,

१८; अना ७; वृजा ५, १८; मं

१, २, १; १संन्या २, ८<sup>२</sup>; जाद ६,

३०; शि ६, १५९; सार २९२:

२; भव ४, ११; -षात् ब्रसू २,

२, १६; २३; -षान् जा २; अना

८; नाप ३, ३३; ५, ३२; राउ

३, १; यो १, ३१<sup>b</sup>; -षाय सु २,

२, ९; -षेण छां ८, १०, १; ३;

गी १८, ४८; -षैः १योत १३;

योशि १, ११; १६; ६४; सिशि

३८०:६; गी १, ४३.

दोष-क्षय- -यात् मैत्रि ६, ३०.

दोष-जाल- -लम् योचू १०२.

दोष-दर्शन- -नात् सांसू ४, २८.

दोष-दावा(व-अ)भि- -दग्ध-

-ग्धे महा ३, ५५.

दोष-द्वय-प्रसक्ति- -क्तेः सांसू

६, १२.

दोष-बीज-क्षय- -ये योसू ३,

५१.

दोष-बोध- -धे सांसू ३, ७०.

दोष-बोधिन्- -धिने पा २, २१.

दोष-योग- -गे सांसू ५, ११९.

दोष-रत्न- -त्नानाम् महा ३,

४७; पा २, १३.

दोष-वत्<sup>०</sup> गी १८, ३.

दोष-वर्जित, ता- -तः अन्न ५,

७५; जाद १०, २; -ता वृजा ३, १.

दोष-विनाशा(श-अ)र्थ- -र्थम्

१योत १४; योशि १, १२.

दु(स्)>ष-कर<sup>d</sup>- -रः वरा ५, ८; -रम्  
महा ५, १८४; का २.

दुष्कर-ता- -ताम् महा ४, ८९.

दु(स्)>ष-कृत्- -कृताम् गी ४, ८.

दु(स्)<sup>e</sup>>ष-कृत- -त्तम् छां ८, ४, १;

कौ १, ४; मैत्रि ६, ९; मना १, ८९<sup>f</sup>;

१२९<sup>g</sup>; ते ५, ५७; नाप ३, ५१; स्व

६१ : ७; -९<sup>h</sup>तानि मना १, ११;

त्रिवि ७, ४; सु २९३ : १४.

दुष्कृता(त-अ)भि- -शिखा- -खाः

महा ३, ४३; पा २, ९.

दुष्कृतिन्- -तिनः गी ७, १५.

दुष्कृतौ(त-ओ)घ- -घात् व ४५५:  
११.

दु(स्)>ष-पूर<sup>d</sup>- -रम् गी १६, १०;  
-रेण गी ३, ३९.

दु(स्)>ष-प्रा(प्र-आ)प<sup>d</sup>- -पः गी ६,  
३६; -पम् १योत ६; योशि १, ३.

दु(स्)>ष-प्रे(प्र-ई)क्ष्य<sup>i</sup>- -क्ष्यम् ते  
१, २; ८<sup>j</sup>.

दुस्-त(र<)रा<sup>d</sup>- -रा श २१.

√दुह्, दुग्धे छां १, ३, ७; १३, ४; २,  
८, ३.

दुह्यति इ १८ : १२.

९<sup>k</sup>दुदुहे ह १५; सर २, ७.

१दुग्ध<sup>l</sup>-

दुग्ध-दोहा- -हाः क १,  
१, ३.

२दुग्ध<sup>m</sup>-

दुग्ध-दधि-नवनीत-रस-

-साः सार २७५ : ४.

दुग्ध-फेना(न-अ)नेक-भोग-

-गाः सार २६७ : ७.

दुग्ध-सिक्त- -क्तेन यो २,  
४५.

दुग्ध-सिन्धु- -न्धुः सार

२७४ : २०; -न्धौ कृ १७.

a) पा ६, ४, ९०। b) °षाः इति अज्या। c) वैतु. शं. पक्षे मतुबन्तमिति। d) पा ३, ३, १२६।

e) वैतु. पाका २, २, १८ दुर इति। f) तैआ १०, १, ८। g) तैआ १०, १, १२। h) तैआ ३, १२, ३, ४। i) तु.टि.  
दुःसाध्य-। j) 'दुष्पाप्यम्' इति अज्या. संटि.। k) ऋ ८, १००, १०। l) =भाप.। m) =क्षीर- (=द्रव्यवचन-).



दुग्धा(ग्ध-अ)म्बु-  
 दुग्धाम्बु-वत् नाद ३२.  
 दुग्धो(ग्ध-उ)दधि- -धिः कृ  
 १७.  
 दुग्धोदधि-मध्य-स्थिता-  
 (त-अ)मृता(त-अ)मृत-कलश-  
 दुग्धोदधिमध्यस्थिता-  
 मृतामृतकलश-वत् त्रिवि १,  
 ११<sup>१०</sup>.  
 दुहान, ना- -ऽ<sup>१०</sup>ना दे ५, सर २, ८;  
 -नाः मना २, ४०<sup>१०</sup>.  
 दो(ग्ध>)ग्धी- -ग्धीम् मन्त्रि ७;  
 चू ७.  
 दोह- -हः, -हम् छां १, ३, ७; १३,  
 ४; २, ८, ३.  
 दोहमान- -नम् त्रिवि ७, ५; सु  
 २९३: १६<sup>१०</sup>.  
 दुहित<sup>०</sup>- -तरम् छां ४, २, ३; -ता वृ ३,  
 ३, १; ६, ४, १७; दे ८; ह १८<sup>१०</sup>.  
 दौहित्र- -त्रः इ १५: १९.  
 दुहितृ-स्नुषा(षा-अ)भिगमन-  
 -नात् मुद्र ४.  
 दूत<sup>०</sup>- -तः सार २२६: १०; -तम् कौ २,  
 १<sup>१०</sup>; ३; <sup>१०</sup>व ४३९: १४; ४४४:  
 १९; ४५०: ३; ४५३: १३.  
 दूत-त्व- -त्वम् सार २२६: ७; १६.  
 दूत-वत्- -वान् कौ २, १.  
 दूर<sup>१०</sup>- दूः वृ १, ३, ९<sup>१०</sup>.  
 दूर<sup>०</sup>- -रः ते ५, ५; -रम्<sup>१</sup> क १, २,  
 ४; २१; वृ १, ३, ९<sup>१</sup>; मैत्रि ७,  
 ९; ते ४, १५; ५, ३७; ६, ७;  
 महा ४, १०६; अध्या ६; १शिसं  
 १९<sup>१०</sup>; २शिसं ८९<sup>१०</sup>; -रात् मुं ३,

१, ७; मना २, ११<sup>१०</sup>; अन्न २,  
 ३८; राउ ५, १०; गु ३६; -रे  
 ई ५; महा ५, ५१; भ १, ६;  
 -रेण अन्न १, ४६; गी २, ४९.  
 दवीयस्<sup>१०</sup>- -यः आर्षे ८: ११.  
 दवीयसी-  
 दवीय(सी>)सि<sup>१०</sup>-त-  
 (म>)मा- -माः आर्षे ९: १.  
<sup>१०</sup>दूर-क- -के व ४२९: १३; ४६२:  
 १७.  
 दूर-ग- -गम् नाप ३, ६६.  
<sup>१०</sup>दूर-गम- -मम् १शिसं १; २शिसं  
 ८.  
 दूर-तर- -रम् महा ३, १८; -रे  
 अक्षि २६.  
 दूर-तस्(>) मैत्रे २, ११; ते ६,  
 ११०; नाप ६, ३१; ७; त्रिवि २,  
 ८; ६, १; महा ४, १२८; अन्न ४,  
 ८२; ५, ६९; सु २, २, १५; आर्षे  
 ८: ११; शि ७, १७; ३८.  
 दूर-दर्शन- -नम् योशि ५, ४७.  
 दूर-दृष्टि- -ष्टिः १योत ७३.  
 दूर-यात्रा- -त्राम् नाप ३, ७२.  
 दूर-श्रवण-कारण- -णम् योशि ५,  
 ४७.  
 दूर-श्रुति- -तिः १योत ७३.  
 दूर-स्थ- -स्थः पै ४, ९<sup>१</sup>; महा २,  
 ६४; -स्थम् ते २, ३९; गी १३,  
 १५.  
 दूरा(र-आ)गम- -गमः १योत ७३.  
 दूर्वा<sup>०</sup>- -र्वया शि ४, ६०; -<sup>१०</sup>र्वा मना  
 १, ७; व ४६४: ४; -र्वाम् शि  
 ६, २२५; -र्वामिः रा ४२५: १३;

-<sup>१०</sup>र्वे मना १, ९; व ४६४: ६.  
 दूर्वा-गर्भ-स्थित- -तम् शि ७, ४३.  
 दूर्वा(र्वा-अ)ङ्कुर- -रैः ग १८.  
 दूर्वा(र्वा-अ)शन- -नः गोउ ५<sup>१</sup>.  
 दूर्वा(र्वा-आ)शिन- -शिनम् गोउ  
 ४<sup>१</sup>.  
 दूषण-, दूषिका-, दूष्य- √दुष् द.  
 दृढ- √दृढ द.  
 √दृष्  
 दर्प- -र्पः नाप ३, ३३; कृ १४; गी  
 १६, ४; -र्पम् ते १, १२; गी १६,  
 १८; १८, ५३.  
 दर्प-लोभ-मोहा(ह-आ)दि-  
 -दयः नाप ५, ३२.  
 दर्पण- -णे ते ६, ९८; सर ३, १२;  
 -णैः शि ६, १३७.  
 दर्पण-वत् रा ४२५: १.  
 दर्पणा(ण-अ)न्तर(>) अध्या  
 १०.  
 दर्पणा(ण-अ)न्वित- -तम् शि  
 ६, १२९.  
 दस-  
 दस-बालाकि<sup>१०</sup>- -किः वृ २, १, १.  
 √दृश्, > दक्षि, दिदृश्, ददृशौ छां ८,  
 ९-११, १; सर २, ९९<sup>१०</sup>; सार  
 २४३: ९; गा ८; वउ ३, १६;  
 ४०; ६२; दृष्ट्युः योचू ८१; २प्र  
 ३३: २०; सार २३३: १८; २४२:  
 २; ३; ५; २४३: १३; २४९: २३;  
 पित्र १, ४; वउ ४, २८; दृक्ष्यसि गी  
 ४, ३५; दृक्ष्यामि वृ १, ५, २१;  
 दृक्ष्यामः सार २३२: ७; अदृशन्  
 सूता १, १३<sup>१०</sup>; नी २, १९<sup>१०</sup>;

a) 'तामृतक' इति अज्या. संटि. । b) ऋ ८, १००, ११ । c) तैसं ४, २, ९, ६ । d) तैत्रा ३, १२, ३, ४ ।  
 e) वैपश् यद्र. । f) ऋ ३, ५३, १५ । 'रिता इति निसा. । g) 'भूतम्' इति अज्या. । h) ऋ १, १२, १ । i) व्यु. १ ।  
 j) वा. क्रिवि. द. । k) मा ३४, १ । l) तैत्रा १०, ९, १ । m) पा ६, ४, १५६ । n) पा ६, ३, ४३ । o) ऋ ९, ६७, २१ ।  
 p) तैत्रा १०, १, ७ । q) मा १३, २० । r) 'दुर्वासनः' इति निसा., 'दुर्वासिनः' इति आन. । s) 'दुर्वाससम्'  
 इति निसा., 'सिनम्' इति अज्या. संटि., 'दुर्वासिनम्' इति आन. । t) <चुरा. धा. संदीपने । u) कस. । उप.  
 =अनूचान-विशेष- । व्यु. ? <बलाका- इति शं. । v) ऋ १०, ७१, ४ । w) 'अदृशन्, अदृशन्' इति मा १६, ७ ।  
 x) 'अदृशन्' इति मा १६, ७ ।

अद्राक्षीः वृ ४, १, ४; अदर्शम्  
ऐ ३, १३; वृ १, ५, ३; ५, १४, ४<sup>३</sup>;  
अद्राक्षम् वृ ४, १, ४; गा १२;  
अद्राक्षम् क १, १, २७.

दृश्यते क १, ३, १२; छां १, ६,  
६; ७, ५; ४, ११-१३, १; १५, १;  
५, १२, १; १३, १; ८, ७, ४; श्वे  
१, १३; ६, ८; गौ १, २०; कौ  
२, १२<sup>३</sup>; मै १, ७; मैत्रि १, ४;  
मैत्रे १, २; ब्रवि १२; मना २,  
१३, १४<sup>३</sup>; दृश्यन्ते त्रिवि १, ११;  
मं २, २, १; महा ३, ४९; योशि  
१, १५७; ६, ६४<sup>३</sup>; या २, २; सार  
२२२: १९; दृश्यताम् महा  
५, ५७; दृश्यते छां ५, १, ७.

दृश्ये ५, १४, ३; सार २४२: ७;  
दृश्यिरे सार २४२: ७.

दर्शयति छां ७, २६, २; नृपु ४,  
१४; नृउ ९, ४; राउ ४, १;  
त्रिता १, ३९; ता ३, १; आथ  
३९९: १९; ब्रसू १, २, ३१;  
दर्शयतः ब्रसू ४, ४, २०; दर्श-  
यन्ति सार २३८: १०; २५५: ७;  
दर्शय सार २४२: १०; गी ११,  
४; ४५; दर्शय-दर्शय चा ५;  
अदर्शयन् सार २८६: ८; दर्श-  
येत् गौ २, २९; ब्रवि ५२;  
१योत ५६; नाप ५, २३; गोपू  
२३; सार २५०: १०; शि ६,  
१२५; वउ ६, २५.

दर्शयिष्यसि सार २६१: २३.

दिदृक्षन्ते वृ १, ३, २५.

दृक्षिवस्-वान् क १, १, ११.

दर्शत-तस्म वृ ५, १४, ३<sup>३</sup>; ६; गा  
७१<sup>३</sup>; ८१<sup>३</sup>; ताय वृ ५, १४, ७;  
गा २३१<sup>३</sup>; ने वृ ५, १४, ४;  
गा १०१<sup>३</sup>.

२दर्शन-नम् गौ ४, ३३; ३४; गर्भ  
५; १योत ५६; त्रिवि ५, १२;  
महा २, ६६; ६९; कः ५; इ  
१९: ८; सार २३२: ३; २२;  
२३६: ६; २०; २४२: १७;  
२४९: २२; २५७: ११; २प्र  
३३: १; कश्चु ३, ५; सांका ६१;  
ब्रसू १, १, २५; ३, ४, ९; -नात्  
गौ ४, ३६; ते १, ३५; रुजा १, ४;  
२, १२<sup>३</sup>; तुल ७०: ५; सार २३४:  
१८; सांसू ५, ३९; ब्रसू १, ३,  
२७; ३०; ४०: २, २, १५; ३, १,  
२०; २, २१; ३, ४८; ६६; ४, २,  
१; ३, १३; -नाय छां ८, ३, १;  
१२, ४; -ने त्रिवा २, १२७;  
-नेन वृ २, ४, ५.

दर्शन-काङ्क्ष-काङ्क्षाः सार २७८:  
१३.

दर्शन-काङ्क्षिन्-काङ्क्षिणः गौ  
११, ५२.

दर्शन-दृष्टि-गो-चर-रः सार  
२८६: ९.

दर्शन-प्रत्यया(य-आ)भास-  
सम् महा ६, १८.

दर्शन-प्रथमा(म-आ)भास-  
-सम् मैत्रे २, २९<sup>३</sup>; वरा ४, २०<sup>३</sup>.

दर्शन-योग्य-ग्यम् राधा २, ६.  
दर्शनयोग्य-ता-ताम् सार  
२५६: २.

दर्शन-सुख-सम् सार २४९: १.

दर्शन-स्पर्शन-नाभ्याम् रुजा  
१, १.

दर्शन-स्पर्शा(र्श-आ)लाप-  
सुख-लीला-रति-तिः सार  
२४९: ९.

दर्शना(न-आ)ख्य-ख्यम् महा  
६, ३७.

दर्शना(न-आ)क्षि<sup>१२</sup>-क्षिः गर्भ  
५<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; प्रा २, १.

दर्शना(न-आ)दर्शन-ने सु २,  
२, ६४.

दर्शना(न-आ)र्थ-र्थम् सार  
२५६: ८; सांका २१.

दर्शना(न-आ)लाप-कथा(था-आ)-  
बुभव-व(वा:)<sup>३</sup> सार २५६:  
१५.

दर्शनीय-यम् छां १, २, ४;  
-यानि शि ६, २१.

दर्शयत्-यतः ब्रसू ४, २, ६; -यन्  
इ १५: १४.

दर्शयन्ती-न्ती सार २६५:  
१७.

\*दर्शया-

\*दर्शयाम(म्/अ)स् (भुवि),  
दर्शयामास रापू ४, २१; सार  
२३२: ४; २४१: ११; २४६:  
२१; २७६: २३; २७७: २; गौ  
११, ९; ५०.

दर्शयित्वा छां ७, ११, १<sup>३</sup>; नृउ ९,  
५; वउ ६, २०; २७; सांका ५९.

दर्शित-तम् म ४८: ६; गौ ११,  
४७.

दर्शितवत्-वान् सार २८५: १८.

दृश्-दृक् ते ५, २७<sup>३</sup>; दृशः महा ५,  
१२३; दृशम् लां २१६: १८.

दृक्-स्थिति-तिः ते १, १५.

दृक्-स्व-रूपा(प-अ)वस्थान-  
-नम् मं २, २, ५.

दृग्-अ-विशिष्टा(ष्ट-आ)त्मन्-  
-त्मानः आपू ४.

दृग्-दर्शन-शक्ति-क्तयोः योसू  
२, ६.

दृग्-दृश्य-इयम्<sup>६</sup> ते २, ३१;  
-इययोः सर ३, १८.

a) तैआ १०, ११, १। b) 'दृश्यते' इति अच्चा। c) °क्षि° इति सुपा. यनि. सु-शोषः। d) दशा प्र°  
इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोषः (तु. निसा. संटि.; वैतु. अच्चा. दर्शात् प्र° इति)। e) सुपा. °नप्रत्यया° इति शोषः  
द्र. (तु. नापू.)। f) पा.° यनि. शोषः द्र.। g) समाहारे द्वस.।

दृश्य-स्वरूप-पम् नि  
 २७.  
 दृग्-द्रव्य-व्येषु महा ५, ७०<sup>१०</sup>;  
 मु २, २, २३.  
 दृग्-रूप-पः ते ३, १५; -पम्  
 ते ५, ७५.  
 दृशि-शिः मु २, २, ७४; -शोः  
 योसू २, २५.  
 दृशि-गो-चर-रः वरा २, २४.  
 दृशि-मात्र-त्रः योसू २, २०.  
 दृशि-स्वरूप-पम् मु २, २,  
 ७३.  
 दृश्य<sup>१०</sup>-श्यः योशि १, ४२; वउ ४,  
 ४; -श्यम् ते १, ५०; २, १; ३,  
 ५२; ५, २७; १०४; ब्रवि ७८;  
 महा २, ३८; ६६; ४, १०; ४८;  
 ५, ६२; १७२; ६, ३५<sup>१</sup>; अन्न १,  
 ४७; त्रिता १, ५४; पित्र ६, १२;  
 वउ २, २०<sup>३</sup>; योसू २, १८;  
 -श्यस्य महा ४, ४७; योसू २,  
 २१; -श्याः सर ३, २६; -श्यात्  
 महा २, ७१; -श्ये महा ४, ५४;  
 अन्न ५, ११.  
 दृश्य-कलना-ना महा २, ५३.  
 दृश्य-जात-तम् वरा ४, ३०.  
 दृश्य-ता-ताम् अन्न २, २१.  
 दृश्य-त्व-त्वात् योसू ४, १८;  
 -त्वेन त्रिता १, १५.  
 दृश्य-दर्शन-नयोः १ संन्या २,  
 १७.  
 दृश्यदर्शन-निर्मुक्त-क्तः  
 महा ६, ७९.  
 दृश्यदर्शन-संबन्ध-न्धे  
 अन्न २, २२; ५, ४४.  
 दृश्य-पाप-पम् ते ३, ६०.  
 दृश्य-मार्जन-नम् महा २, ३८.  
 दृश्य-रूप-पम् ते ५, ७५.

दृश्य-वश-शात् महा ४, ४८.  
 दृश्य-विलय-यः आपू ३.  
 दृश्य-शब्द-ब्दौ सर ३,  
 २८<sup>१०</sup>.  
 दृश्यशब्दा(ब्द-अ)नुभेद-  
 -देन सर ३, २६<sup>१</sup>.  
 दृश्य-संबलित-तः अन्न २, १८.  
 दृश्य-समायोग-गात् महा ६,  
 १७.  
 दृश्य-संभ्रम-मे महा ४, ५४.  
 दृश्या(श्य-अ)दृश्य-श्ये मं २,  
 ३, ७.  
 दृश्या(श्य-अ)नुविद्ध-द्धः सर  
 ३, २७.  
 दृश्यानुविद्ध-हीना(न-आ)-  
 त्मन्-त्मा ते ४, ७६.  
 दृश्या(श्य-अ)भाव-वे ते ५,  
 २७; महा ४, ४८.  
 दृश्या(श्य-अ)संभव-बोध-  
 -धः महा ४, ६३; -धेन महा ४,  
 ६२.  
 दृश्यमान, ना-नम् कौ २, ८; ९;  
 कालि ४०२: १७; -नस्य शु ३, ८;  
 -ना सार २३९: २१; -ने वरा  
 ५, ५७.  
 दृष्ट, दृष्टा-ष्टः श्वे ५, ८; १२; ६, ५; गौ  
 २, ३५; ४, ८४; वउ ९, १२<sup>३</sup>;  
 १९<sup>३</sup>; सूता १, १३<sup>१०</sup>; सार २५७:  
 ९; सांसू ४, १८; ब्रसू ३, ३, ५०;  
 गी २, १६; -ष्टः-ष्टः वृजा ६, ७;  
 -ष्टम् ऐ ३, ११; छां ३, १३, ७; ४,  
 ३, ८<sup>३</sup>; गौ २, ९; ३१; मैत्रि ६, १०;  
 पदं ४<sup>३</sup>; सुबा ४; ते ३, ५४; ध्या  
 ९३, १२; अता ६; महा ५, १६;  
 ५८; ६, ९; २२; अध्या ६५;  
 जाद १, ९; सार २३०: १०;  
 २३७: २; भव १, १५; ३, ७१<sup>१</sup>;

सांका ४; ५; ब्रसू १, ३, १५; ४,  
 १, १२; -ष्टम्-ष्टम् प्र ४, ५; -ष्टा  
 वउ ९, ४; महा ३, ४१; यो २,  
 १२; या २, ७; शा २७; सांका  
 ६१; ६६<sup>३</sup>; -ष्टा: वउ ९, १३;  
 निरु १, १८; सार २२६: २०<sup>३</sup>;  
 सांका ४३; -ष्टात् सांसू १, २;  
 १०३; सांका ६; -ष्टानि सार  
 २५७: १५; -ष्टाय नी २, ३; -ष्टे  
 सुं २, २, ८; वृ ४, ५, ६; गौ २,  
 ३१; ध्या १५; योचू ११; ११३;  
 महा ४, ८२; ११५; योशि ५,  
 ४५; अन्न ४, ३१; सर ३, ३२;  
 सांका १; ३०; -ष्टौ अन्न २, ३६.  
 दृष्ट-त्व-त्वात् त्रिवि २, १;  
 सांसू ४, ४; ५, ११८; ब्रसू ४,  
 ४, ४.  
 दृष्ट-दन्ता(न्त-अ)स्थि-शक-  
 ल-लम् महा ३, ३०<sup>६</sup>.  
 दृष्ट-पूर्व-र्वम् गी ११, ४७.  
 दृष्ट-बाधा(धा-आ)दि-प्रसक्ति-  
 -क्तिः सांसू ५, ४९.  
 दृष्ट-मात्र-त्रेण मुद्र २.  
 दृष्ट-वत् सांका २.  
 दृष्ट-विभव-वः सार २५७:  
 १३.  
 दृष्ट-श्रवण-विषय-वैतुष्य-  
 -ष्यम् नाप २.  
 दृष्ट-स्मृति-तिभ्याम् ब्रसू ३,  
 १, ८.  
 दृष्ट-हानि-निः सांसू ३, ७४.  
 दृष्टा(ष्ट-अ)क(र्क<sup>१०</sup>)<sup>१</sup>-कम् पारा  
 १७.  
 दृष्टा(ष्ट-अ)दृष्ट-जन्म-वेद-  
 नीय-यः योसू २, १२.  
 दृष्टा(ष्ट-अ)ध्याय-यः ब्रवि  
 ९६.

a) गपू. (पृ७) अक्षिदृश्य- > -श्येषु इत्यत्र 'अक्षि दृग्द्रव्येषु' इति पदद्वयेन शोधः द्र. । b) पा ३, १, ११० ।  
 c) 'ब्दाद्यपे' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । d) 'ब्दादिभे' इति अज्या. संटि. । e) तैसं ४, ५, १, ३  
 f) 'द्रष्टुम्' इति शोधः द्र. । g) दृष्टम°, दृष्टं दन्ता° इति अज्या. संटि. । h) पा. इयनि. शोधः द्र. । i) बस. । उप. < ✓ अर्च ।



दृष्टा(ष्ट-आ)नुश्रविक-विषय-  
वि-तृष्ण- -ष्णस्य योसू १, १५.  
दृष्टा(ष्ट-आ)नुश्रविक-विषय-  
वैतृष्ण्य- -ष्ण्यम् १संन्या २, १३.  
दृष्टा(ष्ट-अ)न्त- -न्तः गौ ४,  
१३; २०.

दाष्टान्तिक- -कम् ते ५,  
२९.

दृष्टान्त-भाव- -वात् ब्रसू  
२, १, ९.

दृष्टान्ता(न्त-अ-)सिद्धि-  
-द्धेः सांसू १, ३७.

दृष्टवत्- -वान् गौ ११, ५२; ५३.

दृष्टवती- -ती सार २७२: ३.

दृष्टि- -ष्ट्यः मं २, १, ६<sup>a</sup>; -ष्ट्ये ई  
१५; वृ ५, १५, १९<sup>b</sup>; -ष्टिः ऐ  
५, २<sup>c</sup>; छां ३, १३, ७; कौ ३, ३;  
ते १, २९; नाद ५६; ध्या ८०;  
योचू ५२; २१; महा ४, ९; ५,  
४८; योशि ५, ४०; ६, ७०;  
१संन्या २, २४; अज १, २५;  
५१; सार २८९: २१; पित्र ६,  
१२; -ष्टिम् ते १, २९; ३०<sup>d</sup>;  
अता ११; त्रिवि ७, ४८; महा  
६, ६६; शां १, ७, ४३; अज २,  
१९; ४, ६४; ५, ५८; योशि १,  
७१; कुं १२९; गौ १६, ९; -ष्टे:  
वृ ३, ४, २; ४, ३, २३; सांसू ३, ६०;  
-ष्टौ मं १, ३, ५; अता १२; -ष्ट्या  
शां १, ७, १५; श्या २०; सांसू  
१, १५५.

दृष्टि-गो-चर- -रम् सार २३९:  
८; २८२: १७; -राः सार २५०:  
१९.

दृष्टि-निरोध- -धे आबो २६.

दृष्टि-पथ- -थम् सार २३६:

११; २६०: १७; २८९: १२; -थे  
सार २६२: १.

दृष्टि-पूत- -तम् भव ५, १०.

दृष्टि-प्रिय- -यम् भव ४, १९.

दृष्टि-बन्ध- -न्धेन सार २२५: ३.

दृष्टि-बीज<sup>e</sup>- -जे रार ३, १.

दृष्टि-मोह(न>)ना<sup>f</sup>- -ना सार  
२६३: १.

दृष्टि-वि(ष>)षा- -षाम् नाप  
६, ३१.

दृष्टि-शूल-

दृष्टिशूल-मुष्टिशूल-मुष्टि-  
पृष्ठशूल-मुष्टिपाश्वशूल-सव-  
शूल-पारावार- -गम(न>)-  
ना- -नायै व ४३४: १२.

दृष्टय(ष्टि-अ)प्र- -अं मं १, २, ९;  
अता ६.

दृष्ट्वा क १, २, ११; ऐ ३, ५; छां  
२, ९, ७; ३, ६-१०, १; ३; वृ ४,  
३, १५-१७; ३४; गौ २, ३८<sup>g</sup>;  
मैत्रि ६, २०; गर्भ ४; वृजा ५,  
१३; वृषू २, १४; वृउ ३, ७;  
यो १, ८२<sup>h</sup>.

दृष्टव्य- -व्यः वृ २, ४, ५; ४, ५,  
६; महा ४, २२; -व्यम् प्र ४,  
८; सुबा ५; ६; ९<sup>i</sup>; महा ५, ५८;  
६, ९; ता ३, ८; -व्ये सुबा ५.

दृष्टुम् मन्त्रि ३; सार २५८: १७;  
चू ३; गौ ११, ३; ४; ७; ८; ४६;  
४८; ५३; ५४.

दृष्टृ- -ष्टरि १संन्या २, १८; -ष्टा  
प्र ४, ९; छां ७, ८, १; ९, १; वृ ३,  
७, २३<sup>j</sup>; ४, ३, ३२; मैत्रि ६, ७;  
११; वृउ २, २८; ९, ११; नाप ६,  
१<sup>k</sup>; स्क ४; त्रिता ५, १; महा ४,  
४८; वरा २, ८; महा ४, ४८;

६, ८०; योशि ४, १२; सार  
२९१: २०; पित्र ६, १२; योसू  
२, २०; गौ १४, १९, -ष्टार:  
१अव १४; -ष्टारम् वृ ३, ४, २;  
महा ५, ६३; -ष्टुः वृ ४, ३, २३;  
वृउ ९, ११; महा ४, ४७; ६, १७;  
योसू १, ३; -ष्टु वृ ३, ८, ११<sup>l</sup>.  
दृष्टृ-त्व- -त्वम् सांका १९;  
-त्वात् नाप ६, १<sup>m</sup>.

दृष्टृत्वा(त्व-आ)दि- -दि:  
सांसू २, २९<sup>n</sup>.

दृष्टृ-दर्शन-दृश्य- -श्यम्<sup>1</sup> ते  
५, १५; -श्यानाम् ते १, ३०;  
महा २, ६९; -श्यानि मैत्रे २,  
२९; वरा ४, २०; महा ६, १८.

दृष्टृदर्शनदृश्या(श्य-आ)-  
दि-भाव- -शून्य- -न्ये अध्या  
२३.

दृष्टृदर्शनदृश्या(श्य-आ)-  
दि-वर्जित- -तम् महा ५, ४८.  
दृष्टृ-दृश्य- -श्ययोः योसू २,  
१७.

दृष्टृदृश्यो(श्य-उ)परक्त-  
-क्तम् योसू ४, २२.

दृष्टृ-दृश्य-दृशा(शा-अ)-  
न्तर<sup>1</sup>- -रे महा ६, ३६.

दृष्टृ<sup>k</sup>- -षदम् इ १८: १६; १८.

✓दृष्ट्

१दृष्ट, दृष्टा<sup>1</sup>- -दः अज २, २४; -दम्  
गौ ३, १७; १योत १५; ११२;  
१२०; योचू ४६; सुद्र २<sup>m</sup>; शां  
१, ३, ८; महा ५, ३२; ११८;  
१७९; योशि १, १४; ११०; ६,  
७९; १अव ३१; यो १, १०;  
१२; ३६; ४८; जाद ३, ७; वरा  
५, ३७; शि ६, १४६; १४९;

a) 'मूर्त्यः' इति निसा. । b) का ४०, १, १६ । c) 'दृष्टिः' इति क्वाचित्कः निसा. मुपा. यति. सु-शोधः ।  
d) °ष्टिः इति अज्या. । e) =ई-बीजाक्षर- । f) 'दृष्टृत्वा' इति अज्या. । g) 'दृष्टृत्वात्' इतिपरः शोधः द्र. (वैतु.  
अदृष्टं इति अज्या.) । h) °त्वादि इत्यपि पाभे. । i) समाहारे द्रस. । j) द्रस. > षस. । k) वैपरी यद्र. ।  
l) विप. । m) 'दृष्टमन्त्रि' इति अज्या. ।

भव १, ४६; गी ६, ३४; १८, ६४; -दया १योत ११८; -दस्य छां १, ३, ५; -दाः अज ४, ८४; रुजा १, ११; सु २, २, १३; -दान रुजा १, १३; -दाम् योचू १०७; -देन गी १०, ३.

दार्ढ्य-

दार्ढ्या(र्ढ्य-अ)र्थ- -र्थम् सांसू ६, २३.

दृढ-चित्त- -त्तः ध्या ९९; योशि ५, ३९.

दृढ-तर, रा- -रम् ध्या ६९; योचू ४०; -रा त्रिवि ५, ९; -राम यो २, २.

दृढतर-देहा(ह-आ)स्म- अम- -मः त्रिवि ५, ४.

दृढतर-शुद्ध-सात्त्विक- वासना- -नया त्रिवि ५, १०.

दृढ-ता- -ता शां १, ७, ४; सु १, १, २८.

दृढ-निग्रह- -हे महा ४, १०५.

दृढ-निश्चय- -यः गी १२, १४.

दृढ-पट्ट-चतुष्टय- -यम् शि ३, ४.

दृढ-परिणामिन्- -मिनि अज १, ५५.

दृढ-भावना- -नया महा ६, २; अज ४, ४६; सु २, २, ५७; -ना अज ४, ४१; सु २, २, ४८.

दृढ-भूमि- -मिः योसू १, १४.

दृढ-वंश-प्रकल्पित- -तम् शि ६, १३५.

दृढ-वैराग्य- -व्यात् महा ४, २६.

दृढ-व्रत- -ताः गी ७, २८; ९, १४.

दृढ-शरीर- -रः १योत १०३.

दृढा(ढ-अ)ङ्ग- -ङ्गः नाप ५, १.

दृढा(ढ-अ)भ्यस्त-पदार्थि(र्थ-ए)- क-भावन- -नात् सु २, २, २५.

दृढा(ढ-अ)भ्यास- -सात् शां १, ७, २८.

दृढाभ्यास-वश- -शात् महा ५, १४८.

दृढा(ढ-आ)सन- -नः सौ २, ७.

दृढिष्ठ- -ष्ठः तै २, ८, १.

दृढी/कृ, दृढीकुरुवरा ४, १३.

दृढी-कुर्वत्- -र्वन् अध्या १८.

दृढी/भू

दृढी-भूत-

दृढीभूत-पीनो(न-उ)ञ्ज-

त-पयो-धर-युग्मा(म्-आ)-

ज्या- -ज्याम् पी ४२१ : ४.

२दृढ-

दृढिन्- -ढी ए १.

✓दृह>दारि, दारय-दारय गरु ६; व ४५९ : १०.

देदीप्यमान- ✓दीप् द.

देय- ✓दा (दाने) द.

१-२ देव-देवता- ✓दिव् द.

?देवतैः<sup>b</sup> सिशि ३८२ : २१.

देश- ✓दिश् द.

देह- ✓दिह् द.

✓दे>दा(शोधने)

२दान- -नम् सांका ५१.

दैन्य- ✓दी(क्षये) द.

दैर्घ्य- दीर्घ- द.

दैव-दैवत-दैवोदासि- ✓दिव् द.

✓दो>दा(अवखण्डने)

दान- -त्रेण महा ४, ९५.

दिति-

दैत्य- -त्याः कृ ९; -स्यान् ए

१२०; -स्यानाम् गी १०, ३०;

-त्यः सिशि ३८२ : २२.

दैत्य-गण- -णाः ए ७.

दैत्य-दानव-कामिनी-वेता-

ल-अक्षराक्षस-कोलाहल-नाग-

पाशा(श-अ)नन्त-वासुकि-तक्ष-

क-काकोटक-लिङ्ग-पद्मक-कुमुद-

ज्वल-रोग-पाश-महामारि-

-रीन् लां २१५ : ९.

दैत्य-पक्ष- -क्षेष् कृ ५.

दैत्य-मुख्य- -मुख्यम् पा ६,

१०.

दोग्धी- ✓दुह् द.

दोलयित्वा, दोला- ✓दुल् द.

दोष- ✓दुष् द.

?दोषयति<sup>d</sup> २प्र ३६ : ५.

दोषा<sup>e</sup> छां ६, १३, १.

दोस्- दोर्भ्याम् त्रिवा २, ४१; ५०;

दोषः ते ४, ९; पां ३, ९; ७, ६;

९, १.

दोह-, दोहमान- ✓दुह् द.

दौर्वाहण्य- दुर्वाहण- द.

दौर्भाग्य- दुर्भाग्य- द.

दौहित्र- ✓दुह् द.

द्याः, द्यावा-, द्यु- ✓दिव् द.

✓द्युत्, >द्योति, द्योतते गार ४५० :

१९.

द्योतयति अशि ४, १३<sup>f</sup>; अ २;

वटु ३१६ : ५; द्योतयन्ति सार

२५७ : १९.

दिक्षुतान- -नः वा १६.

द्युति- -तिः व ४६६ : १९.

द्युति-मध्य-गत(>)त्ता- -ता व

४६६ : २०.

द्योतमान- -नम् मैत्रि ६, २०.

द्योतिता- -ताः सार २२२ :

१३; २२.

a) भाप. । b) पा. ! 'दैवतैः' इति शोधः द. । c) पा. ! 'स्यात्' इति अज्या. । d) पा. ! दोष-पात->'तिन्->'ती इत्येवं शोधः द. [एतदनु वैप२, ५१८ इत्यत्रापि शोधः द. (वैतु. 'दोषपतिः' इति गोत्रा १, १, २८; 'ती' इति गोत्रा. संटि.)] । e) =नक्तम् । वैप१ यद्र. । f) =भुज- । वैप१ यद्र. । g) 'द्योतयते' इति आन., 'विद्योतयति' इति अज्या. ।

द्युम्नस्-

द्युम्नो-दा- -दा: मना २, ७९<sup>६</sup>.

द्युत-द्यो- √दिव् द.

द्योतमान-द्योतित- √द्युत द.

द्रं दत्ता १, ४; ५.

द्रप्स<sup>d</sup> -प्स: सु २९४ : ५९<sup>०</sup>.

√द्रम् > दन्द्रम्य

दन्द्रम्यमाण- -णा: क १, २, ५;

मेत्रि ७, ९.

द्रविण<sup>d</sup> -ण: मना २, ४१९<sup>f</sup>; -णम् तै

१, १०, १; वृ ६, ४, ६; मना २,

३६९<sup>६</sup>; नाप ४, ३८९<sup>६</sup>; दे २९<sup>f</sup>;

व ४३७ : १४९<sup>f</sup>; -णानि कौ २,

११९<sup>k</sup>.

द्रव्य<sup>d</sup> -व्यम् गौ ४, ५३; काला ४;

५; ते २, २९; द्रवि ३६; भ १,

१; इ १६ : २३; ऊ ६३ : २;

भव ४, ८; -व्यस्य गौ ४, ५३;

-व्याणाम् वि ७; -व्ये सांसू ५,

१०८; -व्यै: क १, २, १०.

द्रव्य-ज- -जम् शि ४, ३२.

द्रव्य-त्व- -त्वम् गौ ४, ५३.

द्रव्यत्वा(त्व-अ)-भाव-योग-

द्रव्यत्वाभावयोग-तत्स(>)

गौ ४, ५०; ५२.

द्रव्य-दर्शन-संबन्ध- -न्धे अञ्ज

२, १८.

द्रव्य-देश-क्रिया- -याणाम् भव

४, ४.

द्रव्य-नाश- -शे भव १, २८.

द्रव्य-निष्ठ- -ष्ठ: १संन्या २, १७.

द्रव्य-मन्त्र-क्रिया-काल-युक्ति-

-क्तय: अञ्ज ४, ६; वरा ३, २९;

-क्त्या वरा ३, २६.

द्रव्य-मन्त्र-क्रिया-काल-शक्ति-

-क्त्या अञ्ज ४, २<sup>१</sup>.

द्रव्य-मन्त्र-स्थला(ल-आ)दि-

सहित- -तम् गोच ६५ : २.

द्रव्य-मन्त्र-स्थाना(न-आ)दि-

सहित- -तम् वा २.

द्रव्य-मय- -यात् गौ ४, ३३.

द्रव्य-यज्ञ- -ज्ञा: गौ ४, २८.

द्रव्य-शक्ति- -क्ति: वउ ४, १३.

द्रव्य-संपद्- -पद: भव ४, ७.

द्रव्या(व्य-आ)दान- -नम् हं ८.

द्रव्या(व्य-आ)दि-विषय- -या:

गर्भं २<sup>m</sup>.

द्रव्या(व्य-अ)पहारिन्- -रिण: इ

१७ : १३.

द्रव्या(व्य-अ)र्थ- -र्थम् मैत्रे २, २०.

द्रष्टव्य-, द्रष्टुम्, द्रष्टृ- √हृश् द.

द्रां दत्ता १, ३; ४; आथ ३९४ : १०; व

४३१ : २२; द्रां-द्रां व ४५७ : १.

द्राक्<sup>d</sup> अञ्ज ४, ७४; सु २, २, ८; आषे

८ : १५; छाग २५ : १५.

द्राक्षा<sup>o</sup>-

द्राक्षा-फल- -लानि शि ६, १०;

-लेषु शि ६, १२.

द्रां आथ ३९४ : ११; व ४५६ : २०;

द्रां-द्रां व ४५७ : १.

√द्रु, > द्रावि, द्रवन्ति गौ ११, २८; ३६

द्रावयति भ २, ८; का १०;

द्रावयन्ति शौ ५३ : २३; द्रावय-

द्रावय व ४५७ : ३.

द्रव- -व: व ४५६ : २३; -वम् गर्भं

१; आबो १५; शारी १; यो १, ७०.

द्रवा(व-आ)कृति- -ति वरा

५, १.

द्रावण<sup>p</sup>-

द्रावण-बाण<sup>q</sup>- -णाथ व ४५७ : १

द्रावि(न् >)णी-

द्राविणी-सुद्रा<sup>r</sup>- -द्रा आथ

३९४ : १२.

द्रुत<sup>s</sup>- -तम् अशि ४, १९; १योत

४०; वडु ३१६ : ११; शि ७,

७२; ९९.

द्रु<sup>t</sup>-

द्रु-पद<sup>u</sup>- -द: गौ १, ४; १८.

द्रौप(द >)दी-

द्रौपदेय- -या: गौ १, ६;

१८.

द्रुपद-पुत्र- -त्रेण गौ १, ३.

द्रु-म<sup>v</sup>- -म: रार ५, ९; रापू २, २;

अञ्ज ४, ५४; -मा: कृ ९.

द्रुमा(म-आ)कीर्ण- -र्णम् राधा

२, २.

√द्रुह

द्रुहिण<sup>w</sup>-

द्रुहिणा(ण-आ)दिम-देवे(व-ई)-

श-षट्-पदा(द-आ)लि-

विराजित- -तम् वपू १, ५.

द्रोह- -हम् नाप ३, ७०; ५, ३१.

द्रोहिन्- -हिणाम् रा ४२६ : २.

१द्रोण<sup>d</sup>-

द्रोण-कलश- -श: प्रा ३, १; ४, १.

२द्रोण<sup>ex</sup>- -ण: गौ ११, २६; -णम् गौ

२, ४; ११, ३४.

द्रुद्ध-, द्रात्रिंशत्-, द्रादशन्-, द्रापर-

द्वि- द्र.

द्वार<sup>d</sup>- द्वा: ऐ ३, १२; सार २६७ : १८;

द्वारा ऐ ३, १२; द्वारि नाप ५,

१२; महा २, २१; सार २४० : १३.

- a) व्यु. ? । b) तैआ १०, ६३, १ । c) =बीजमन्त्रविशेष- । d) वैप १ यद्र. । e) ऋ ९, ९६, १९ । f) तैआ १०, ३९, १ । g) शौ १९, ७१, ९ । h) तैआ ७, १०, १ । i) ऋ १०, १२५, २ । j) ऋ २, २३, १५ । k) ऋ २, २१, ६ । l) °याजाल° इति अज्या. संदि. । m) द्रव्यवि° इति आन., अज्या. । n) व्यु. ? अव्य. । =तूर्णम् । o) व्यु. ? =सृद्धीका- । p) कर्तरि युच् । q) बस. । r) मलो. कस. । s) वा. क्वि. द. । t) बअ. सत् वव्यु. प्राति. द. । u) अवयवार्थः ? =तृपविशेष- । v) पा ५, २, १०८ । w) =प्रजापति- । x) व्यु. ? =आचार्यविशेष- ।



द्वार<sup>a</sup> -रम् कौ १, २; मैत्रि ६, ३०;  
योचू २१; ३७; त्रिवि ७, ५९<sup>b</sup>;  
शां १, ७, ३७; रुजा १, १२; सार  
२६६: १८; सु २९३: १५९<sup>b</sup>;  
शि ४, ३; ५; गी १६, २१; -राणाम्  
योचू १०७; -राणि ब्रवि ७५;  
नाप ६, १; त्रिवि ५, १२; अज  
३, ७; सार २२२: ९; २६३:  
१७; २०; २६४: १७; सांका ३५;  
-रे त्रिवा २, १२६<sup>c</sup>; सार २४२:  
२; २५३: १९; २०; २५७: २०;  
-रेण योचू ३७; -रेषु १योत  
१४१; २योत २, ३; -रै: १योत  
१४२.  
द्वार(क>)का<sup>d</sup> -का राधा ४, ४;  
-कायाम् गोच ६५: ४.  
द्वारकाक्षेत्र<sup>e</sup> -त्रम् म ४८: ८.  
द्वारकानिलय<sup>f</sup> -०य वा ११;  
गोच ६६: ९.  
द्वारगोपा -पौ कौ १, ३; ५०.  
द्वारतत्सु(>) पी ४२२: ६.  
द्वारप -पा: छां ३, १३, ६; -पान्  
छां ३, १३, ६.  
द्वारपाल -ला: महा ४, २; राधा  
२, ५.  
द्वारपूजा -जाम् रापू ५, १.  
द्वारव(त् >)ती -स्याम् गोच  
६९: ५.  
द्वारविवर -र: मैत्रि ६, ३०.  
द्वारशाखा -व्यवस्थित -तौ शि  
२, १५.  
द्वारश्री -श्रियै सूता ४, १; २.  
द्वार(रक>)रिका<sup>d</sup> -कायाम् सार  
२४०: १७; २४२: १.  
द्वारिकालीला -लायाम् सार  
२४१: ८.

द्वारिन् -रि सांका ३५.  
द्वारो(र-उ)पेत -तम् रापू ४, ५३.  
द्वि<sup>a</sup> -  
द्व, द्वा- द्वयो: मैत्रि ७, ११; अना  
३८<sup>f</sup>; वृजा ४, १४; ध्या ९१;  
त्रिवा २, ४७; योचू ७; महा ६,  
१९; सौ १, १; सु २९३: ९; सांस्  
१, २९; द्वयो: द्वयो: गौ ३, १२;  
द्वा सुं ३, १, १९<sup>g</sup>; श्वे ४, ६९<sup>g</sup>;  
नाउ १, ३९<sup>g</sup>; गोउ १३; भव  
२, २९<sup>g</sup>; द्वाभ्याम् वृ ३, ८, २;  
श्वे ६, ३; मैत्रि ६, ९; श २५<sup>h</sup>;  
महा ४, ५८; प्रा १, १; निरु १,  
७; सांस् ३, ६; द्वे सुं १, १, ४;  
छां ३, १७, ६; ७, ३, १<sup>i</sup>; वृ १, ५,  
१; २; २, ३, १; ४, ३, ९; ५, १;  
५, ५, ३<sup>i</sup>; ४<sup>i</sup>; ६, २, २९<sup>b</sup>; श्वे  
५, १; ना ३; मना २, १२, २९<sup>i</sup>;  
मै ५, ३; मैत्रि ६, ३; १५; ब्रवि  
१७; वृपू ४, ८; द्वे-द्वे अव्य ५;  
द्वौ छां ४, ३, ४; ७, ३, १; वृ ३,  
८, १; २; ९, १; ८; ५, ५, ३; ४;  
८, १; १४, ४; ६, ४, १५; श्वे १,  
९; गौ १, ११; मै ५, १; मैत्रि  
६, १; वृजा ४, २०; नाप ३,  
५६; अज ४, ३२<sup>j</sup>; रापू १, ८<sup>k</sup>.  
द्वन्द्व<sup>a</sup> -न्द्व: गी १०, ३३; -न्द्वानि  
कौ १, ४; -न्द्वेषु अज १, ४९;  
-न्द्वै: मै ३, १; २; मैत्रि ३, १;  
२<sup>i</sup>; निरु २, ७; गी १५, ५.  
द्वन्द्व-जात -तम् ते ५, १०४.  
द्वन्द्व-जाल -लस्य योशि १,  
६९.  
द्वन्द्व-तितिक्षा -क्षाम् मैत्रि ६,  
२९.  
द्वन्द्व-मल्लिका-कुडमल<sup>l</sup> -लै:

रा ४२४: ११.  
द्वन्द्व-मोह -हेन १संन्या २,  
३०; गी ७, २७.  
द्वन्द्वमोह-निर्मुक्त -क्ता: गी  
७, २८.  
द्वन्द्व-सह -ह: शा १८.  
द्वन्द्व-सहिष्णु -ष्णु: नाप ३, ८६.  
द्वन्द्व-हीन -न: मैत्रे ३, ४.  
द्वन्द्व(ान्द्र-अ)तीत -त: ध्या  
९३, १५; गी ४, २२.  
द्वन्द्व(ान्द्र-अ)न्-अभिघात -त:  
योस् २, ४८.  
द्वय<sup>m</sup> -यम् गौ ४, ७२; ७५; ८७;  
ते ६, २७; ३६; त्रिवा २, ७८;  
योशि ४, ११; यो १, ८; सर ३,  
२४; कालि ४०३: १४; शि ७,  
११४; न्या: वृ १, ३, १; गौ ४,  
४; -येन अव्य ६.  
द्वय-काल -ला: गौ २, १४.  
द्वय-नाश -  
द्वयनाश-तत्स(>) गौ ४,  
२४.  
द्वया(य-अ)भाव -वम् गौ  
४, ७५.  
द्वया(य-आ)भास -सम् गौ ३,  
२९; ३०<sup>i</sup>; ४, ६१<sup>i</sup>; ६२<sup>i</sup>.  
द्वा-त्रिंशत्<sup>n</sup> -शत् वृजा ७, ८;  
वृपू २, ३; ४, १५; ३३; म २, २;  
सिशि ३८२: १; ५; -शतम् छां  
८, ७, ३; ९, ३<sup>i</sup>; १०, ४<sup>i</sup>; वृ ३, ३,  
२; -शत्सु वृपू ५, ८; -शत्रि:  
अव्य ५.  
द्वात्रिंशत्-केसरा(र-अ)-  
न्वित -तम् ध्या २६.  
द्वात्रिंशत्-तत्त्व-निष्कर्ष -  
र्षम् पत्र २.

a) वैपश् यद्र. । b) तैत्रा ३, १२, ३, ४ । c) तु. सस्थ. टि. जठर-> -रे । d) नगर्यां मत्वर्थे वुन्->अकः  
प्र. इत्त्विकल्पश्च उरसं. (पा ५, २, ६२; पावा ७, ३, ४५) । e) °रा° इति अख्या. । f) 'तस्य' इति आन. । g) ऋ  
१, १६४, २० । h) ऋ १०, ८८, १५ । i) ऋ ४, ५८, ३ । j) 'द्वा' इति अख्या. । k) तु. सस्थ. टि. ? द्वि°- ।  
l) षस. > मलो. कस. । पूष. =°विशिष्ट- । m) तु. टि. त्रि-> त्रय- । n) पूष. आत्वम् (पा ६, ३, ४७) ।

द्वात्रिंशत्-पत्र- -त्रम् नृपू  
५, ६.  
द्वात्रिंशत्-संख्या(क>)का-  
-कानाम् सु १, २, ३.  
द्वात्रिंशत्-स्थान- -नम्  
वृजा ४, १५.  
द्वात्रिंशत्स्थान-क- -के  
वृजा ४, १२.  
१द्वात्रिंशद्-अक्षर<sup>a</sup>-  
द्वात्रिंशदक्षरी- -र्या  
त्रिता १, ५०.  
२द्वात्रिंशद्-अक्षर, रा<sup>b</sup>-  
-रम् नृपू १, ७; ५, ८; -रा नृपू २,  
३; ५, ६; अव्य ५; वपू २, ३.  
द्वात्रिंशद्-अर- -रम् नृपू  
५, ६.  
१द्वात्रिंशद्-दल<sup>c</sup>- -लेषु रार  
३, १.  
२द्वात्रिंशद्-दल<sup>b</sup>- -लाः  
नापू ६, १४.  
द्वात्रिंशद्-दल-पञ्च- -अम्  
रार ३, १; त्रिवि ७, ४०.  
द्वात्रिंशद्-वर्णक- -कः द  
१३.  
द्वात्रिंशद्-व्यूह-भेद- -दैः  
त्रिवि ७, २०.  
द्वात्रिंशन्-मात्रा- -त्रया  
१योत ४२; त्रिवा २, ९७; शां  
१, ६; जाद ६, ६.  
१द्वात्रिंश<sup>c</sup>- -शे अत् ५.  
२द्वात्रिंश<sup>d</sup>-  
द्वात्रिंशा(श-अ)ख्यो-  
(ख्य-उ)पनिषद्- -पदम् सु १,  
१, २८.

द्वात्रिंशा(श-अ)र- -रम् रापू  
४, ५०.  
द्वा-त्रिंशति<sup>e</sup>- -ति<sup>f</sup> नापू ६, ३.  
द्वा-दशन्<sup>g</sup>- -श छां ४, १०, १; वृ  
३, ९, २; ५; ना १; मना २,  
१५<sup>h</sup>; वृजा ७, ८; त्रिवि २, १६;  
योचू १०४<sup>i</sup>; त्रिवा १, ८; रापू  
१, ८; राउ ४, ३४; २प्र ३४ :  
१२१५<sup>j</sup>; -श-श वृजा ७, ८<sup>k</sup>; म  
२, २; -शभिः अता ६; अव्य ५;  
१संन्या २, १०४; सूता १, ३१;  
-शसु नृपू ५, ८.  
द्वादश-क- -कौ २प्र ३६;  
१; २.  
द्वादशक-पल- -लानि  
निरु २, ३.  
द्वादशक-पाल- -लम् कथु  
२, ३.  
द्वादश-कुल-वृश्चि(क>)-  
का- -कानाम् लां २१६ : ३.  
द्वादश-त्रयोदशन्-  
द्वादश-त्रयोदश<sup>k</sup>- -शेन  
कौ १, २.  
द्वादशत्रयोदश-  
मास<sup>l</sup>- -सः कौ १, २.  
१द्वादश-दल<sup>m</sup>- -लेषु रार  
३, १.  
२द्वादश-दल<sup>b</sup>- -लम् रार  
३, १; रापू ४, ६७; नापू ६, ३;  
-लाः नापू ६, ९.  
द्वादशदल-पञ्च- -अम्  
त्रिवि ७, ३४.  
द्वादश-दिश- -दिक्षु रार  
३, १.

१द्वादश-द्वार<sup>n</sup>-  
द्वादशद्वार-युत- -तम्  
सार २७२:७.  
२द्वादश-द्वार<sup>o</sup>- -रे सार  
२७२:८.  
द्वादश-धा मै ४, ५; मैत्रि  
५, २.  
द्वादश-नाड्य(डि-अ)न्तः-  
प्रवृत्त- -त्ताः त्रिवा १, ८.  
द्वादश-पत्र- -त्रम् नृपू ५,  
४; वपू ३, १.  
द्वादश-प(ल>)ला- -ला  
गर्भ ५.  
द्वादश-मन्त्रा(न्त्र-आ)द्य-  
-द्याः सूता ५, ६.  
द्वादश-मात्र, त्रा- -त्रः अना  
२४; -त्रया शां १, ५.  
द्वादश-मुख- -खम् रुजा  
२, १४.  
द्वादश-रात्र- -त्रम् कर १<sup>p</sup>;  
कथु २, ३<sup>q</sup>; -त्रस्य कर १; कथु  
२, ३.  
द्वादश-राशि-खण्ड-  
-ण्डम् सौ १, ३.  
द्वादश-लक्ष-जप- -पः सौ  
१, ३.  
द्वादश-वज्र- -ज्रः त्रिवि  
७, ४३.  
द्वादश-वत्सर- -रम् वरा  
१, १<sup>m</sup>.  
द्वादश-वर्णक- -कः द ९.  
१द्वादश-वर्ष<sup>n</sup>-  
द्वादशवर्षा(र्ष-अ)-  
न्त- -न्ते यो २, ४८.

a) दिस. । b) बस. । c) तु. टि. १एकत्रिंश- । d) तु. टि. २एकत्रिंश- । e) उप. =त्रिंशत्- । f) °ति  
इति मूको. च °तिः इति सुपा. चोभावयसंगतौ द. । °दल- > -लम् इति कृत्वा बस. त्रुटितोत्तरपदपूर्त्या शोधः द. ।  
g) पा ६, ३, ४७ । h) तैत्ति १०, १, १६ । i) 'द्वादशाः' इति अख्या. । j) यनि. सुपा. 'द्वादशकाः' इत्येवं सु-शोधः  
(तु. गोत्रा १, १, २४) । k) बस. समासान्तः डच् प्र. (पा ५, ४, ७३) । l) पा. १ यनि. बस. > बस. । अत्र 'बार्हतपाद-  
त्रयं पूर्वार्धे' (वैतु. वे. त्रैष्टुभदष्टिः) इति कृत्वा 'स जाये (उपु १) उपजायमानः' इति १मः पादः द. । m) °शसंख<sup>o</sup>  
इति अख्या. ।

२द्वादश-वर्ष<sup>a</sup>-  
द्वादशवर्ष-शुश्रूषा-  
पूर्वक- -कम् नाप १; पै १, १.  
द्वादशवर्ष-सत्र-या-  
गो(ग-उ)पस्थित- -ता: नाप १.  
द्वादशवर्ष-सेवा-  
पुर:-सर- -रम्<sup>b</sup> नाप २.  
३द्वादश-वर्ष<sup>c</sup>- -र्ष: छां  
६, १, २.  
द्वादश-श्रेणि- -णिषु सार  
२६३: १७.  
द्वादशश्रेणि-संवलित-  
-तम् सार २७०: ४.  
द्वादश-सहस्र-  
द्वादशसहस्र-प्रणव-  
-वम् भ १, १.  
द्वादशसहस्र<sup>d</sup>- -क्षम्  
१ संन्या २, १०३; १०४.  
द्वादशा(श-आ)कृति- -तिम्  
प्र १, ११.  
१द्वादशा(श-अ)क्षर<sup>e</sup>-  
द्वादशाक्षर-संवलित-  
-तम् सार २७६: १४.  
२द्वादशा(श-अ)क्षर, रा<sup>f</sup>-  
-र: दत्ता १, ५; रार २, ५४;  
-रम् नृपू ५, ४७; रापू ४, ४७; ४९;  
-रा नृपू ५, ४.  
द्वादशाक्षर-मन्त्र-  
-मन्त्रस्य सार २, ५१.  
द्वादशा(श-अ)कुल, ला<sup>g</sup>-  
-लम् ब्रविष्ठ<sup>h</sup>; ला योशि ५, १७.  
द्वादशाकुल-दैर्घ्य-  
-र्घ्यम् यो १, ११.  
द्वादशाकुल-पर्यं(रि-अ)-  
-न्त- -न्तम् अत्र ५, २८; -न्ते  
शां १, ७, ३२.  
द्वादशाङ्गुल-मान-

द्वादशाङ्गुलमान-  
तस(>:) त्रिन्ना २, ५४.  
द्वादशाङ्गुल-समीक्षित-  
-तु: अता ६.  
द्वादशाङ्गुल(ल-अ)-  
धिक- -क: शां १, ४.  
द्वादशा(श-अ)ङ्गुलि-  
द्वादशाङ्गुलि-मान-  
ज्योतिस्- -ति: मं १, २, १०<sup>h</sup>.  
द्वादशा(श-आ)त्मक- -क:  
सूता १, २९; -कम् मैत्रि ६, १४.  
द्वादशा(श-आ)दित्य-रूप-  
-पम् रुजा २, १४.  
द्वादशा(श-आ)दिवा-  
(त्य-अ)वलोकन- -नम् निर्वा  
२९७: ५.  
द्वादशा(श-अ)निल-वाह-  
(क>)का- -का: वरा ५, २८.  
द्वादशा(श-अ)न्त- -न्ते नृउ  
३, ९; योशि ५, ४३.  
द्वादशान्त-गा- -गे शां  
१, ७, ३१.  
द्वादशान्त-गत- -तम्  
वरा ५, ७०.  
द्वादशान्त-पद- -दम्  
द १५.  
द्वादशान्त-स्थित-पर-  
मा(म-आ)त्मन्- -त्मानम् त्रिवि  
५, १२.  
द्वादशा(श-अ)ब्द- -ब्दम्  
१ योत २१; योशि २, २.  
१द्वादशा(श-अ)र<sup>i</sup>-  
-र: द्वादशार-युत- -तम् शां  
१, ४.  
२द्वादशा(श-अ)र<sup>j</sup>- -रम्  
नृपू ५, ४; त्रिन्ना २, ६०; योशि  
१, १७३; ५, ९; वरा ५, २२; स

३७८: ६; वपू २, ४; -रे योचू  
१३; वपू २, ४.  
द्वादशार-महा-चक्र-  
-क्रे ध्या ४९.  
द्वादशा(श-अ)रक- -कम्  
योचू ५.  
द्वादशा(श-अ)र्क-तेजस्-  
-०ज: लां २१६: ११.  
द्वादशा(श-अ)र्ण- -र्णम्  
त्रिता ४, २४.  
द्वादशा(श-अ)ह- -हम् वृ  
६, ३, १.  
द्वादशाह-वत् वस् ४,  
४, १२.  
द्वादशाहिक- -कम् व  
४३३: १८.  
द्वादश- -श: महा १, १; -क्षम्  
योचू १०३; ऊ ६४: ९; नापू  
३, ८; गोउ २६; गार ४०७: ७;  
१२; -शे अत्र ५; त्रिता १, ७५;  
सूता ५, १३; -शेन सूता २, १७.  
द्वादशी<sup>k</sup>- -शी नाद ११;  
नाप ८, १९; -क्ष्याम् नाद १६;  
इ १९: ३.  
द्वादश-श्रेणि- -श्रेणाम्  
सार २७०: २०.  
द्वा-पर<sup>l</sup>-  
द्वापरा(र-आ)दि- -दौ २ प्र  
३६: ५.  
द्वापरा(र-अ)न्त- -न्ते कलि १.  
द्वा-विंशद्-  
द्वाविंशद्-अक्षर<sup>m</sup>- -र: रार  
२, ६८.  
द्वा-विंशति- -ति: छां २, १०, ४.  
द्वाविंश- -क्षम् गार ४०७:  
९; १५; -शे अत्र ५; -शेन छां  
२, १०, ५.

a) पा ५, १, ८८ । b) वा. क्रिवि. द्र. । c) पा ५, १, ८९ । d) उप. वृद्धि: (पा ७, ३, १५) । e) द्विस. ।  
f) वस. । g) पा ५, ४, ८६ । h) 'द्वादशाङ्गुलिमानं ज्योतिः' इति निसा. । i) 'शी' इति निसा., ज्ञान. ।  
j) =युग-विशेष- ।



द्वा-ससति- -ति: प्र ३,६; सुबा ४.  
 द्वाससति-सहस्र- -खाणि वृ २,  
 १,१९; लु १७; त्रिबा २,७५.  
 द्वि-करा(र-अ)ङ्गुलि- -लिभि: मं  
 २, २, २.  
 द्वि-गुण,णा<sup>a</sup>- -ण: पा २, २; -णम्  
 रार १,७; रुजा १, १; शि ४,  
 ४५; ४७; ६, ८७; २४९; -णा  
 योचू १०४; -णेन शि ३,९; -णै:  
 भ २, २५.  
 द्विगुण-दीर्घ- -र्घम् शि ६,  
 १४५.  
 द्विगुणा(ण-आ)य(त>)ता-  
 -ता शि २,११.  
 द्वि-चत्वारिंशत्- -शत् सिशि  
 ३८२: २.  
 द्विचत्वारिंश- -शे अक्ष ५.  
 द्वि-चन्द्र-  
 द्विचन्द्र-त्व- -त्वम् योशि ४,  
 १६.  
 द्विचन्द्र-शुक्तिका-मृगनृष्णा-  
 (ष्णा-आ)दि-भेद-  
 द्विचन्द्रशुक्तिका-मृगनृष्णा-  
 दिभेद-तस(>) महा ५,१५.  
 द्वि-ज<sup>b</sup>- -ज महा ३, २६; ५,  
 २०; ११४; १७४; अज ५,११६;  
 त्रिबा २,३४; १३३; -ज: अ ३;  
 नाप ३, २३; ४, ३८; श ३६;  
 अज ४, २; कृ ११; मु १, २२;  
 २४; इ ११: १५; १२: २१; १३:  
 १७; १७: १९; १८: २१; शि ५,  
 ४; भव ४, १; -जम् १ संन्या २,  
 ६; -जा: मन्त्रि १६; चू १६;  
 -जानाम् त्रिबा २, ५९; -जै: भव  
 १, ५५; ५, ११.  
 द्विज-गो(गो-अ)इव-मृगा-  
 (ग-आ)दि- -दिषु नाप ५, ३८.

द्विज-नृसि- -सि: सौ १, ३.  
 द्विज-पुङ्गव- -व त्रिबा २,  
 ११४.  
 द्विज-श्रेष्ठ- -ष्ठ त्रिबा २, २५.  
 द्विज-सत्तम- -म त्रिबा २,  
 ६१; ८०; ८८.  
 द्विजा(ज-अ)घम- -म: नाप ३,  
 १३.  
 द्विजा(ज-आलि>)ली- -ली  
 सार २४४: १८.  
 द्विजो(ज-उ)त्तम- -म श  
 ३५; महा ६, ५७; गौ १, ७;  
 -म: कर् ११; नाउ ३, ११; शि  
 ४, ३०; ५, ३०; ६, २०९; -मा:  
 सु १, १, ४२; स ३७९: १; -मै:  
 नाउ ३, १७.  
 द्वि-जन्मन्- -न्मनाम् शि ५, १५.  
 द्वि-जा(त>)ता<sup>c</sup>- -ता मना २, ३६.  
 द्वि-जाति<sup>d</sup>- -तय: भव २, ६३.  
 द्वि-ठ- -ठ: रार २, ४२.  
 द्वि-तय<sup>e</sup>- -यम् शु ३, ११.  
 द्वि-ता-  
 १ द्वैत- -तम् वृ २, ४, १४; ४,  
 ५, १५; गौ १, १७; १८; ३,  
 १८<sup>३</sup>; ३१<sup>३</sup>; सुबा ५; ते ४,  
 १५; ५, २७; ९४; ६, १२;  
 मन्त्रि १५; पै ४, १२०; योशि  
 ४, ९; अज ५, ६३; स्व ६२: ५;  
 चू १५; सांसू ६, ४६; -तस्य गौ  
 १, १३; २९; -ते अलि ३१; वरा  
 ४, १२.  
 २ द्वैत<sup>f</sup>- -त: वउ २, १४.  
 द्वैत-दु:ख- -खम् ते ३, ६२.  
 द्वैत-भया(य-आ)तुर- -रम्  
 द १८६.  
 द्वैत-भावन- -नम् मैत्रे २,  
 १०.

द्वैत-भाव-विमुक्त- -क्त:  
 अज ५, ६८.  
 द्वैत-रहित- -त: नृउ २,  
 ११; राउ ३, १; वउ ५, ४२.  
 द्वैत-वर्जित- -त: सर ३,  
 २७; -ता: मि ११; -ते मैत्रे २,  
 ३; स्क १२.  
 द्वैत-विद्- -वित् मैत्रि ६,  
 ३५.  
 द्वैत-सत्य- -त्यम् ते ५, ३७.  
 द्वैत-सिद्धि- -द्धि: नृउ २, २.  
 द्वैता(त-अ)द्वैत- -तम् ते ६,  
 १९; आबो १.  
 द्वैताद्वैत-रहित- -तम्  
 अद्वै २२.  
 द्वैताद्वैत-विलक्षण- -ण:  
 अवि १०१.  
 द्वैताद्वैत-विवर्जित- -त:  
 ते ४, ६६.  
 द्वैताद्वैत-विहीन- -न:  
 मैत्रे ३, ४.  
 द्वैताद्वैत-समुद्भूत- -तै:  
 महा ६, ६२.  
 द्वैताद्वैत-समुद्भेद- -दै:  
 अज २, ४०.  
 द्वैताद्वैत-स्वरूपा-  
 (प-आ)त्मन्- -त्मा ते ४,  
 ६६.  
 द्वैताद्वैता(त-आ)दि-  
 भाषण- -णम् ते ५, ८३.  
 द्वैता(त-अ)भाव- -वे ते  
 ५, २७.  
 द्वैतिन्- -तिन: गौ ३, १७.  
 द्वैती/भू  
 द्वैती-भाव- -व: मैत्रि ७,  
 ११.  
 द्वैती-भूत- -तम् मै ५, ७;

a) पावा ५, २, ३७। b) =त्रैवर्णिक-दन्त-पञ्चिन्-। c) पा.१ द्विज-> -जानाम् इति शोब: द्र. (तु. सश्रु.  
 शौ.(१९, ७१, १), तत्र कीर्ति-> -तिम् इत्युपरि वैपश् यस्या. टि. च)। d) बस.। उप. भाप.। e) पा ५, २, ४२; ४३।  
 f) मत्वर्थीयोऽच् प्र. (पा ५, २, १२७)। g) बद्धद्वै इति अख्या.।

मैत्रि ६, ७.

द्वितीय,या<sup>a</sup>- -यः मां ४; छां २, २३, १; वृ १, २, ४; ५, १२<sup>b</sup>; २, १, ११; कौ ४, ११; हं १६; ना २; वृपू २, २; ४, ५; वृउ १, ७; ३, ३; ८, १०; नाप ८, १०; त्रिवि १, ९; ११; २, १६; राउ ३, १; महा ६, ५६; योशि १, १०३; अन्न ४, ४१<sup>d</sup>; यो १, ४१<sup>e</sup>; सावि १०; अद्वै १; तु ७; द्र १; २प्र ३५; १३; १७; नापू ५, ६; गार ४०६; ५; ९; गुषो ४२०; ६; वपू १, ७<sup>३</sup>; वउ १, ७; -यस् क १, १, ४९<sup>f</sup>; ऐ ४, ३; छां ३, ७, १; वृ १, ४, ३; ४, ३, २३-३०; ५, १४, ६; अशि ७, ८; वृजा ३, ३४; वृपू १, ३; ८; २, ४; ६; वउ ९, १४; नाप ६, १; योचू ३; रापू ४, ३५; योशि १, ७५; त्रिता २, ६; १०; १७; ४०; ५०; यो १, ५९; गोपू ११; दत्ता १, ३; ५; ६; सौ ३, १; मु २, २, ४८; योरा ७; अद्वै २६; आच ६; सूता १, ३०; ऊ ६४; ६; वृष ८४; ३; ६; ११; ८५; ६; नापू १, ४; ६, २; सार २२५; ४; २३६; ९; शि २, ३; काम ६; ११; गार ४०७; ५; १०; गा २१; विद्या १; वपू १, ६; २, १; २; वउ ४, १९; २५; -यया मना २, ७९<sup>g</sup>; मुद्र १, २; २प्र ३२; १२; -यस्य वृपू १, ९; ११; वृउ ३, १; १संन्या २, ८१; त्रिता २, ४; वृष ८४; १५; १९; ८५; २; -या मां १०; अशि ५, १०; मैत्रि ६, ३३; अ १<sup>h</sup>; ३; वृजा ७, ७; वृपू २, २<sup>b</sup>; वृउ ३, १; ३; काला

१४; नाप ८, १; सी ६; महा ५, २४; ९०; अन्न ५, ८२; त्रिता ३, ६; वरा ४, १<sup>i</sup>; जाबा २२; सौ १, २; ३; २प्र ३४; २१; गार ४०६; ६; गु ३; ८३; -यात् वृ १, ४, २; कौ ४, ११<sup>d</sup>; वृउ ६, ३; अव्य ५; गोपू ३०; -यानि त्रिता १, १०; -याम् छां ५, २०, १; ६, ११, २; अक्षि २८; गोउ २६; सौ २, ६१<sup>j</sup>; इ १९; ४; -याय श्वे ३, २९<sup>k</sup>; अशि ५, ३; वटु ३१७; १; -यायाम् नाद १३; रा ४२५; १९; शि ७, ४९; -ये हं १८; सुबा ४; ते ५, २१; ध्या ११; अक्ष ५; त्रिता १, ५९; यो १, ५४; म ४८; १२; सूता ५, ६; राधा २, ३; मृ १७; -येन क १, १, १३; १९; वृपू २, ४; पिं ८; २प्र ३२; ९; सूता २, १६; वपू २, २. द्वितीय-क- -कः शां १, ७, २२; अन्न १, १४; सूता २, १६; -कम् ध्या ४३; योचू ६; गु ७९. द्वितीय-कारणा(ण-अ-भाव- -चात् महा ५, ५८. द्वितीय-कू(ट>)टा- -टाम् विद्या २.

द्वितीयकूटा(ट-अ)क्षर- -रः विद्या १. द्वितीय-चक्र(क-ई)श्च(र>)- -री- -री आथ ३९५; १५. द्वितीय-पद- -दात् गोपू २९. द्वितीय-परिणाह- -हे सार २८१; ११. द्वितीय-याम- -मे रा ४२५; ७. द्वितीय-रेखा- -खा ध्या ९३, १३ द्वितीयरेखा-वल्लय- -यम्

ध्या ९३, १३.

द्वितीय-वत्- -वान् वृ २, १, ११; कौ ४, ११.

द्वितीय-वस्तु-रहित- -तः अद्वै २७.

द्वितीय-अणि- -ण्याम् सार २७०; ६.

द्वितीया(य-अ)क्षर- -रः राउ १, २; ता २, १.

द्वितीया(या-अ)न्त- -न्तम् रार ३, १; रापू ४, ४१.

द्वितीया(य-अ)न्ता(न्त-अ)र्ध- -र्धस्य वृपू १, १३.

द्वितीया(य-अ)न्त्य- -न्त्यम् वृपू १, १५.

द्वितीया-रूप- -पः षो ९.

द्वितीया(य-अ)क्षरण- -णम् रार ३, १.

द्वितीया(य-अ)ष्ट-दल-मूल- -ले रार ३, १.

द्वि-त्रि- -त्रीणि पाशु २, ५<sup>k</sup>.

द्वित्रि-क्रम- -मेण श्या १६.

द्वित्रि-भवा(व-अ)न्तर- -राः महा ५, १३८.

द्वित्रि-वर्ण-सहित(त&gt;)ता- -ता पाशु १, ४.

द्वित्रि-वार- -रेण नाप ३, ३.

द्वि-दल- -लम् योचू ५; योशि १, १७५; ५, ११.

द्विदली/कृ

द्विदली-कृ(त&gt;)ता- -ता यो ३, १८.

द्वि-दिन- -ने त्रिवा २, १२७.

द्वि-धा<sup>a</sup> मै ५, १; मैत्रि ६, १; ७, ११; अशि ३, २<sup>१</sup>; ६, ५; सुबा ३; २; शु ३, १०; त्रिवा २, २३; मं १, ३, १; अता ८; नाप ४,

a) पा ५, २, ५४। b) °लोऽद्वि° इति काचित्कः निसा. पा. १। c) अद्वि° इति निसा.। d) °यम् इति अज्या.। e) उत्तरेण संघिरार्थः। f) तैत्रा ३, ११, ८, १। g) तैत्रा १०, ५, १। h) °यः इति निसा.। i) °या इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोषः (तु. अज्या.।) j) तैसं १, ८, ६, १। k) °त्राणाम् इति निसा.। l) °त्रिधा इति अज्या.।

३०; रार २, २५; ५, १०; पै १, १९; अज ५, ७७; त्रिता १, ६७; जाद १०, ४; शा ९; सर ३, ६; च २१: १७; सार २२१: ८; २४५: १४; २४९: ४; वटु ३१५: १; भव ३, ९.  
 द्विधा-भिन्न- -जम् नाप ४, ३०.  
 द्विधा-भूत- -तम् शि ७, ८३.  
 ✓द्विधाय<sup>b</sup> द्विधायते ह १४.  
 द्विधा-रूप- -पम् अद्वै २.  
 द्वि-निमित्तै(त-ए)क-मोह- -हम् श्वे १, ४; नाप ९, ३.  
 द्वि-पञ्च-त्रि-चतुर-वर्ण- -णै: रार २, ६१.  
 ?द्वि-प(घ)>आ<sup>c</sup>- -आ सौ १, २.  
 द्वि-पा(द)>द्- -पद: वृ २, ५, १८;  
 श्वे ४, १३९<sup>d</sup>; रशिसं ३३९<sup>d</sup>;  
 -पदाम् गौ ४, १; त्रिब्रा २, ५६; इ १५: ५; -पदे प्रा १, ४९<sup>e</sup>; स शां ९<sup>f</sup>.  
 द्विप(दु)>दी- -दी वृ ५, १४, ७; ह १६९<sup>g</sup>; गा २२; चक्र २९<sup>g</sup>;  
 द्वि-प्रकार- -रम् अक्षि २०; शां १, १.  
 द्वि-मुज, जा- -ज: रापू ४, ७; ३०;  
 राधा १, १७; -जम् रार २, १००; १०४; १०६; गोपू ८;  
 -जया रापू ४, ९.  
 द्वि-भे(द)>दा- -दा सार २२२: १.  
 द्वि-मात्र- -त्र: ब्रवि ३९; -त्रेण प्र ५, ४.  
 द्वि-मात्रक- -क: अना ३१<sup>h</sup>.

द्वि-मास-  
 द्विमासा(स-अ)भ्य-अन्तर-  
 -रे निरु १, ११.  
 द्विमासिक- -कम् वटु ३३: १९.  
 द्वि-योनि- -निम् (?नि<sup>i</sup>)गर्भ १.  
 द्वि-रात्र- -त्रम् नाप ४, १५.  
 द्वि-रेख- -खम् सु २९३: ८; य ८.  
 द्वि-वक्त्र- -वक्त्रम् रुजा २, २.  
 द्वि-वर्ण<sup>j</sup>-  
 द्वि-वर्ण-मातृ- -ता पाशु १, ४.  
 रद्वि-वर्ण<sup>k</sup>- -र्ण: २प्र ३५: १३;  
 -र्णम् २प्र ३२: ५९<sup>l</sup>.  
 द्वि-वार- -रम् नाप ७.  
 द्वि-विद<sup>m</sup>- -द: व ४५९: १४.  
 द्वि-विध, धा- -ध: ध्या ८६;  
 योचू ६०; त्रिवि २, २; ६; ३, २;  
 नाप ५, १; रार २, ९; २६; ५५;  
 शां १, ७, १४; अज ४, १४;  
 अक्षि २०; यो १, २०; जाद २, १३; १४; सर ३, २५; सु २, २, ३; ३२; सांका २४; -धम् मै ४, ४, ६; मैत्रि ६, ३४; ब्रवि १; हं १४; मं १, ३, १; अता ८; १०;  
 शां १, १; २<sup>n</sup>; १०; त्रिता ५, २;  
 यो १, ४; गोड ६१; सु २, २, १;  
 भव १, ४८; ५, ६; अवि १; -धा  
 वृजा २, २; योशि ४, २१; १संन्या  
 २, १०१; सु २, २, ६१; काम  
 १२; गी ३, ३; -धा: योशि १, २५; १५१; सार २९१: १५;  
 -धे त्रिब्रा २, २७.

द्वैविध्य- -ध्यम् त्रिब्रा २, २५; जाद २, १४; -ध्यात् सांस् ६, ९.  
 द्विविधा(ध-आ)कार- -रम् अवि १४.  
 द्वि-शत-साहस्र-शीर्ष<sup>o</sup>- -र्षम्<sup>p</sup>  
 पारा १३.  
 द्वि-षड्-आर- -रेण बा १६.  
 द्विस(>:)\* मैत्रि ६, ३८<sup>q</sup>; ७, ११<sup>q</sup>; रार ३, १; त्रिता ३, १९.  
 द्विस-तावत्- -वत् छां ३, ७-१०, ४; वृ ३, ३, २<sup>r</sup>.  
 द्वि-संख्या-  
 द्विसंख्या-वत्- -वान् मैत्रे ३, ७.  
 द्वि-ससति- -ति: ध्या ५१<sup>s</sup>; योचू १५<sup>s</sup>.  
 द्विससति-सहस्र- -त्ताणि ध्या ९८; ब्रवि ११; योशि ६, १४; १७; जाद ४, ६; १प्र ३१: १९<sup>t</sup>;  
 -खेषु शां १, ४.  
 द्वि-ससन्- -स रापू ३, १.  
 द्विस-रात्र- -त्रात् निरु १, १०.  
 द्वि-सर- -रम् रुजा १, १७; -रौ नी. ३, ९.  
 द्वि-सहस्र-गो-प्रदान-फल-  
 -लम् वृजा ७, ८; रुजा ३, १.  
 द्वि-स्थान- -नम् २प्र ३५: १६<sup>u</sup>.  
 द्वि-हस्त-  
 द्विहस्त-मात्र-विस्ती(र्ण)>-  
 णां- -णां शि ४, १४.

a) 'द्विविधा' इति अख्या. । b) नाधा. उ.सं. (पा ३, १, १२) । c) पा. ? हि प<sup>o</sup> इति पदद्वयपरः शोधः द्र. । d) ऋ १०, १२१, ३ । e) मा १०, ८३ । f) खि १०, १९१, १५ । g) ऋ १, १६४, ४१ । h) 'द्विमात्रः' इति आन. । i) निसा. सुपा. यनि. शोधः (तु. आन.; वैतु. अख्या. त्रि<sup>o</sup>) । j) द्विस. । k) बस. । l) 'विवर्णम्' इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. गोब्रा १, १, १६) । m) =वानरविशेष- । n) द्विस. > मलो. कस. [तम् आवर्तितं सा<sup>o</sup> (=पुरुषसक्तम्)] । o) वा. क्वि. द्र. । p) पा. ? उत्तरेण स. सति वि/स्त् > वि-स्त् > -तम् इत्येतत्परः शोधः द्र. (तु. सस्थ. टि. त्रि-धा) । q) पा. ? (तु. राती. ?) । 'अणोहंणं' \*हि \*व्यणु कण्ठदेशे इत्येवं पादः सु-शोधः । एस्थि. वा. 'विदि' इति क्रिप. योगे सति व्यणु-> -णु इति च व्यणुक-> -कम् इति च क्वि. द्र. । r) वा. ? °ख-> -खम् (द्वि १ अलुक्) + [✓धा+कि: (पा ३, ३, ९३)>]धि-°खन्धि-> (नैप्र.) °त्ताणि-> -णि(?णि: =प्र १ इति शोधः) इत्येवमुपपत्तिः स्यात् । s) द्वि:° इति सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. गोब्रा १, १, २७) ।



द्विहस्त-विस्तीर्ण- -णम् शि  
४, ९.  
द्विह(स्तक>)स्तिका- -का शि  
४, १७.  
द्वीप- -पा: योशिद, ११; पित्र १, ९.  
द्वीपा(प-अ)न्त-र(य>)या<sup>१</sup>-  
-या अक्ष १५०.  
द्वीपिन्<sup>२</sup>-  
द्वीपि-चर्मन्- -र्मणि शि ६,  
७२.  
द्वे-धा वृ १, ४, ३; अव्य १; सांका  
५२.  
द्वि(अ)क्षर- -र: रार २, ७;  
९; शि १, १९; २०; -रम् छां २,  
१०, २; ता १, २; शि १, २१;  
७, ११५.  
द्वि(अ)ङ्गुल- -लम् जाद ४,  
११; -लात् त्रिभा २, ६६; शां  
१, ४<sup>३</sup>; जाद ४, २<sup>३</sup>; वरा ५,  
१९; २०.  
द्वि(अ)युत- -तम् त्रि ७९.  
द्वि(अ)श्र- -श्रम् स ३७८: ६.  
द्वि(अ)ष्ट-व(र्ष>)र्षा- -र्षा  
तारा ८३: १८.  
द्वि(अ)ह-  
द्विहिक- -कम् व ४३३: १७.  
द्वि(अ)च- -चम् सूता २, ७१<sup>४</sup>.  
?द्विचत्वारिषडष्टानाम्<sup>५</sup> राष्ट्र १, ८.  
?द्वितीयरुक्मसः<sup>६</sup> सूता ३, १२.  
?द्विदलनश्वेतमृत्तिकाखण्डमुक्ति-  
साधिका:<sup>७</sup> ऊ ६३: ४.  
✓द्विष्ट-द्वेष्टि मना १, ११<sup>८</sup>; कौ २, ९;

१३; पदं ४; नाप ५, १७; महा  
२, ६०; व ४६४: १७<sup>९</sup>; ४६५:  
११; गी २, ५७; ५, ३; १२, १७;  
१४, २२; १८, १०; द्विषन्ति कौ  
२, १३; रुह ७<sup>१</sup>; द्विष्म: मना  
१, ११<sup>१०</sup>; कौ २, ९; व ४६४:  
१८<sup>११</sup>; द्विष्यात् वृ ५, १४, ७;  
६, ४, १२.  
द्विष्-<sup>१२</sup>द्विष: मना १, ९; व ४६३:  
२३; द्विषम् व ४<sup>१२</sup>: ७.  
द्विषत्- -षत: वृ २, २, १; सूता २,  
११<sup>१३</sup>; गी १६, १९; -षन् वृ  
१, ३, ७; -षन्त: तै ३, १०, ४;  
मना २, ७९<sup>१४</sup>; -षन्तम् सूता  
२, ११<sup>१५</sup>; व ४३७: ४; ४५९:  
११; ४६४: १९.  
द्विष्टि- -ष्टि: मै ३, ५<sup>१६</sup>; मैत्रि  
३, ५<sup>१</sup>.  
द्वेष- -ष: भा २३; कृ १४; सिशि  
३८१: २; योसू २, ८; गी १३,  
६; -षम् नाप ३, ७०.  
द्वेष-कोप-मति- -ति: ध्या  
९३, ४.

द्वेष्य- -ष्य: गी ९, २९.

?द्विषंन<sup>१७</sup> सूता २, १२.

१-२ द्वैत- द्वि-द्र.

## ध

ध<sup>१</sup> ध-ध-ध व ४३४: २०.

ध-कार- -र: त्रिता १, २४.

धा(ध-अ)न्त- -न्त: राष्ट्र ४,

६१<sup>२३</sup>.

धं<sup>२४</sup> आथ ३९५: २३; व ४३६: ५;  
हंषो ९.

धं-कार- -०र अक्ष ५.

धन<sup>२५</sup>- -नम् ई १; तै १, ११, १; छां  
१, ११, ३; ५, ११, ५; मना २,  
६३<sup>२६</sup>; तै २, २२; अता १८;  
महा ४, १२९; १संन्या २, ८९;  
सु १, १, ४६; इ १६: २२; १७:  
१; १९: २२; द १३; स्व ६२:  
३; शि ६, १६५; व ४३५: १४;  
४६१: ३०<sup>२७</sup>; ४६४: २०<sup>२८</sup>; भव  
४, २; गी १६, १३; -नस्य छां  
३, ११, ६; -नानि सुबा ४; महा  
३, ७; ४, २८; वरा ३, २२; शि  
६, १६६; गी १, ३३; -नैन छां  
५, १५, १; कै १, ३९<sup>२९</sup>; मना २,  
१२, ३९<sup>३०</sup>; नाप ४, ३८; १अव  
५; २शिसं २३; स ३७९: १०.

धन-ज- -जम् त्रिता १, ७३.

धन-द, दा- -द: वपू २, ३; ५; -दा  
सौ १, ३.

धनदा(द-आ)दि-काष्ठा-पति-

-ति: वपू १, ६.

धन-दार- -रेषु महा ५, १६८.

धन-धा(न>)नी- -न्यै मना २,  
६७<sup>३१</sup>.

धन-धान्य-कवित्व- -त्वम् तारा  
८४: ९.

धन-धान्य-बहुरक्ष-

धनधान्यबहुरक्ष-वत्- -वन्त:

सूता १, १९.

a) तु. वैप १, २२३h, यस्था. च। b) तु. 'देशान्तरया-'. c) 'द्वीपान्तरं यासि' इति निसा.। d) 'अर्चम्'  
इति मुपा. यनि. सु-शोध:। e) पा. ? 'द्वौ चत्वार: षड् अष्टाऽऽसाम्' इति पदपञ्चकतया सु-शोध: (तु. JC. 'द्वि चत्वारि  
षडष्टासाम्')। f) पा. ? 'द्वितीय: ऋगू-न्यास:' इति शोध: द्र.। g) पा. ? 'सद्विद्वर-> -०र अत: श्वेतमृत्तिकाखण्डा  
मुक्तिसाधका:' इत्येतत्पर: शोध: स्यात्। h) मा ६, २२; तैसं १, ४, ४१, १; ७, ३, ११, १। i) तैआ ४, ३९, १। j) मा  
६, २२। k) ऋ ८, ६१, १३। l) पा. ? 'द्विषते' इत्येवं शोध: द्र. (तु. ऋ १, ५०, १३)। m) तैआ १०, ६३, १<sup>३</sup>। n) ऋ १,  
५०, १३। o) सकृत् 'द्विष्ट:' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. मैत्रि ३, ५)। p) पा. ? 'द्विषन्तम्' इति शोध: द्र.।  
q) =वर्ण-। r) =नकार-बीजाक्षर-। s) 'यान्त:' इति निसा. अज्या. च मुपा. यनि. सु-शोधौ (तु. आन.)। t) =बीजमन्त्र-  
विशेष-। u) वैप १ यद्र.। v) तैआआ १०, ६३। w) ऋ १०, ८४, ७। x) तैआ १०, १०, ३। y) तैआआ १०, ६७।

धन-धान्या(न्य-आ)दि- -देः शां  
१,२<sup>१</sup>.  
धनधान्यादि-संपत्-प्रद- -० द  
अक्ष ५.  
धन-पति- -तेः इ १८ : २१.  
धन-मात्रा- -त्राम् छां १,१०,६.  
धन-मान-मदा(द-आ)न्वित-  
-ताः गी १६,१७.  
धन-वत्- -वन्तः सूता १, २०;  
-वन्तम् वरा ३,१३; -वान् नाप  
९,२०; शि ३,११.  
धन-वृद्ध- -द्धाः मैत्रे २,२४.  
धन-व्यय- -यः भव ३, २०.  
धन-सनि- -नयः छां १,७,६.  
धना(न-आ)व्य- -व्यम् शि ६,२२२.  
धना(न-आ)र्थ-  
धनार्थिन्- -र्थी वपू २,५.  
धनिक- -कानाम् ते ६,९५.  
धनिन्- -नी या २,१७.  
धने(न-इ)च्छा- -च्छया वरा ३,१३.  
धने(न-ई)द्वर- -रान् शि ७, २७.  
धनेद्वरी<sup>१</sup>- -री सौ १,३.  
धन्य<sup>b</sup>- -न्यः द २०; पै ३, ३;  
१अव २७<sup>१</sup>-२९<sup>१</sup>; ३०<sup>१</sup>; यो ३,  
३३; इ १० : १३; -न्याः ते १,  
४४; सार २५६:१६.  
१धनं-जय<sup>१०</sup>- -०य गी २, ४८; ४९;  
४, ४१; ७, ७; ९, ९; १२, ९;  
१८, २९; ७२; -यः गी १, १५;  
१०, ३७; ११, १४.  
२धनं-जय<sup>११</sup>- -यस्य वृजा ६, १.  
३धनं-जय<sup>१२</sup>- -यः ध्या ५७; त्रिवि

६७; त्रिबा २, ७७; ८७; योचू  
२३:२६; जाद ४, २४; ३३.  
धनंजय-कर्मन्- -र्म शां १, ४.  
धनुस्<sup>१३</sup>- -नुः सुं २, २, ३; ४; वृ ३,  
८, २; मैत्रि ६, २४; २८<sup>३</sup>; ध्या  
१४; त्रिबा २, ४३; रुह ३८; कृ  
२३; नी १, ७९<sup>६</sup>; २, १०९<sup>६</sup>;  
१२९<sup>६</sup>; १८९<sup>६</sup>; शि ७, ८२; गी  
१, २०; -नुषः छां १, ३, ५; -नुषा  
त्रि १३; -नुषि रार २, ७२.  
धनुः-खट्वा(ङ-आ)युधा(ध-आ)-  
दि- -दीनि शि ६, २४३.  
धनुः-ग्रमाण-पर्यन्त- -न्ते यो १,  
२२.  
धनुर्-आसन<sup>१४</sup>- -नम् त्रिबा २,  
४३.  
धनुर्-धर, रा- -रः राप् ४, ७; ३०;  
गी १८, ७८; -रा व ४५८ : ७.  
धनुर्-बाण-धर- -रम् रार २,  
१०१; १०३.  
धनुर्-बाण-धारि(न् >)णी-  
-णीम् त्रिता १, ८१.  
धनुर्-वेद<sup>१५</sup>- -दः सी ३०; नापू ५,  
३८.  
धनुष्-पाणि- -णये रार २, ४८.  
धन्वन्<sup>१६</sup>- -न्वनः नी २, ८९<sup>१६</sup>; १४९<sup>१६</sup>;  
-न्वने नी २, ७९<sup>१६</sup>; वपू १, १.  
धमत्<sup>१७</sup>-, धमन-<sup>१८</sup>, धमनि- ✓ध्मा द.  
धर-<sup>१९</sup>, धरणी-<sup>२०</sup>, धरत्<sup>२१</sup>, धरमाण-<sup>२२</sup>,  
धरित्री-<sup>२३</sup>, धरुण- ✓धृ द.  
१धर्ता<sup>२४</sup> अशि ६, ५.  
धर्तु-<sup>२५</sup>, धर्म-<sup>२६</sup>, धर्मन्- ✓धृ द.

१धवल<sup>२७</sup>- -लम् योशि १, ८१.  
धवली ✓कृ  
धवली-कृत-  
धवलीकृत-जगत्-त्रय-  
-०य लां २१४ : ४.  
२धवल, ला<sup>२८</sup>- -०ल अक्ष ५; -ला  
वृजा ३, १; -लाः अक्ष ३.  
✓धा<sup>२९</sup>(बधा.), धत्ते मै ४, ३; मैत्रि ६,  
३४; त्रिबा २, २९; यो १, ५;  
वरा २, ७९; अल्ला १<sup>३</sup>; दधाति  
ई ४; वृ १, ४, ११; धे ४, १;  
व ४६६:१४९<sup>३०</sup>; धत्तः शां १, ४<sup>३१</sup>;  
दधे कौ २, १५<sup>३२</sup>; दधामि वृ  
६, ४, २२; २५<sup>३३</sup>; २संन्या १७:  
६९<sup>३४</sup>; दे २<sup>३५</sup>; गी १४, ३;  
दध्मः अल्ला २<sup>३६</sup>; दध्मसि सूता  
२, ९९<sup>३७</sup>; दधातु प्र सुं मां शां १, ९<sup>३८</sup>;  
वृ ६, ४, २१९<sup>३९</sup>; धे ६, १०<sup>४०</sup>; मना  
१, ९९<sup>४१</sup>; २, ४२९<sup>४२</sup>; ४४<sup>४३</sup>;  
६७९<sup>४४</sup>; अशि अ वृजा नृपू सी  
श शां १, ९<sup>४५</sup>; त्रिवि शां १, ९<sup>४६</sup>;  
७, ५९<sup>४७</sup>; रार राप् शां पप अक्ष शां १, ९<sup>४८</sup>;  
सू शां १, ९<sup>४९</sup>; २१९<sup>५०</sup>; १आ पाशु  
पत्रत्रिता भा भ ग मवा गोपू कृ  
ह दत्ता गरु अक्षि पहं सि शां १, ९<sup>५१</sup>;  
रा ४२३:२९<sup>५२</sup>; पित्र शां १, ९<sup>५३</sup>; धेहि वृ  
६, ४, २१<sup>५४</sup>; कौ २, ११९<sup>५५</sup>; मैत्रि  
६, ३५<sup>५६</sup>; प्रा १, ४९<sup>५७</sup>; व ४३७:  
१४९<sup>५८</sup>; ४६०:६९<sup>५९</sup>; धत्तम् लि  
३१०:१९<sup>६०</sup>; दधातन मना १,  
११९<sup>६१</sup>; दधानि कौ २, १५<sup>६२</sup>;  
दधावहै वृ ६, ४, २०; दधीत

a) न्यायार्जितधन<sup>०</sup> इति श्रुत्या. । b) पा ४, ४, ८४ । c) व्यु. ? = अर्जुन- । d) व्यु. ? = ब्राह्मणविशेष- ।  
e) व्यु. ? = वायुविशेष- । f) = चाप- । वैप १ यद्र. । g) तैसं ४, ५, १, १ । h) मा १६, १३ । i) मा १६, १० । j) मा  
१६, ११ । k) = आसनविशेष- । l) = वेदाङ्गविशेष- । m) वैप १ यद्र. । n) मा १६, ९ । o) मा १६, १२ । p) मा  
१६, १४ । q) पा. ? 'धृता' इत्येवं शोधः द्र. । r) विप. । वैप १ यद्र. । s) विशेषि. । t) धा. धारणे वृत्तिः ।  
u) ऋ ९, ९४, ४ । v) 'धत्ते' इति श्रुत्या. । w) शौ ७, ८७, २ । x) ऋ १०, १२५, २ । y) ऋ १, ५०, १२ । z) ऋ  
१, ८९, ६ । a') ऋ १०, १८४, १ । b') 'दधात्' इति आन. । c') तैआ १०, ४०, १ । d') तैसं ३, १, २<sup>३</sup> ।  
e') तैआआ १०, ६७ । f') तैआ ३, १२, ३, ४ । g') ऋ १०, १५८, ३ । h') ऋ १०, १८४, २<sup>३</sup> । i') ऋ २, २१, ६ ।  
j') मा ११, ८३ । k') ऋ २, २३, १५ । l') ऋ १०, ८३, ४ । m') ऋ ६, ७४, ३ । n') ऋ १०, ९, १ ।

वृ ६, ४, १०; ११; दध्यात् कुं  
९१<sup>a</sup>; रुजा १, १६.  
दधे सर २, ४९<sup>b</sup>; दधौ वड ३,  
५६; धास्यसि कौ १, १<sup>c</sup>; अधात्  
रापू ३, १<sup>d</sup>.  
दधत्- -धत् महा ५, १३३; पा ७,  
३; -धत्म् द ३.  
दधती- -तीम् व ४२७: १२.  
दधान, ना- -नः द ५; शा ६;  
-नम् रार २, २४; -ना पा ९, २;  
-नाः शा ११; पा ८, १०; व  
४६१: ४९<sup>e</sup>; ४६४: २१; -नाम्  
पी ४२१: ३; व ४२६: १०.  
१दधि<sup>f</sup>-  
दधि-क्रा<sup>g</sup>- -क्राम् व ४३७:  
१२९<sup>h</sup>.  
दधि-वामन<sup>i</sup>- -नाय त्रिवि ७,  
३५.  
दधीचि<sup>j</sup>- -चिः वृजा ६, ४.  
दध्य(धि-अ)ञ्च्- -धीचः वृ २,  
६, ३; ४, ३; -धीचे वृ २, ५,  
१७; -ध्यञ्च् वृ २, ५, १६<sup>k</sup>;  
१७-१९; ६, ३; ४, ६, ३.  
२दधि<sup>l</sup>- -धि वृ ६, ४, २५; इ  
१७: २१; शि ४, ६१; ७, ८८.  
दधन्<sup>m</sup>- -धनि वृ ६, ३, १३;  
धे १, ५<sup>k</sup>; व ३, १०; इ १५:  
६<sup>l</sup>; -धन्तः छां ६, ६, १; -ध्ना भ  
२, २२.  
दधि-क्षीर-घृता(त-अ)म्भस-  
-म्भसाम् शि ६, ५९.

दधि-ग्रह- -हे कृ १७.  
दधि-ग्राम<sup>n</sup>- -मे सार २६०: ७.  
दधि-दुग्ध-तक्र-नवनीत-घृता-  
(त-अ)द्य- -द्यान् सार २२४:  
१८.  
दधि-दुग्ध-नवनीता(त-अ)द्य-  
-द्यान् सार २५०: २०.  
दधि-मथन-क्रिया-प(र>)-  
रा- -राः सार २७५: १.  
दधि-मधु- -धुनोः छां ५, २, ४.  
दधि-मन्थन-घोष- -घेण सार  
२७६: ५.  
दधि-वन<sup>o</sup>- -नम् सार २२१:  
१३.  
दधि-विक्रया(य-अ)धिष्ठान-  
-नम् सार २६०: ८.  
दध्य(धि-अ)धिष्ठान- -नम् सार  
२६०: ७.  
दध्यो(धि-अ)दन- -नम् वृ ६,  
४, १५.  
धातु<sup>p</sup>- -तवः जा ४; नाप ३, ७७;  
त्रिब्रा २, ५; पप ४१८: १०; या  
१, १; वरा ५, ४८; पित्र १, ९;  
-तुः छां ६, ५, १-३; मैत्रि २, ६;  
२प्र ३४: ५; ३५: ५; -तुत् योशि  
१, १२५; १४७; -तूनाम् वरा  
५, ४९.  
धातु-काम- -मः मैत्रि ६, २८.  
धातु-गत-दोष-विनाशन-  
-नम् योशि १, ९४; यो १, २९.  
धातु-प्रवाल-नट-वेष-विचि-

त्रिता(त-अ)ङ्ग-शोभा-  
(भा-आद्य>)व्या- -व्या सार  
२६५: १८.  
धातु-बद्ध- -द्धम् मैत्रे २, ५;  
१योत १०; योशि १, ८.  
धातु-मय- -यम् सार २३६:  
११; -यानि सार २५८: ९.  
धातु-रञ्जित- -तम् नाप ३, ३०.  
धातु-स्त्री-लौल्यका(क-आ)दि-  
-दीनि १योत ३१.  
धातु-स्व-भाव-  
धातुस्वभाव-तत्स(>) गौ  
४, ८१.  
धात्व(तु-अ)र्थ-वचन- -नम्  
२प्र ३६: २.  
धातु- -०तः तै १, ४, ३; -ता वृ ६,  
४, २१९<sup>q</sup>; मै ५, ८; मैत्रि ६, ८;  
७, २; मना १, १४९<sup>q</sup>; सुबा ६<sup>r</sup>;  
योचू ७२; द २०; ए ६; ११;  
सू २१९<sup>q</sup>; कठ १<sup>r</sup>; मवा  
२९<sup>q</sup>; कश्रु २, २<sup>r</sup>; वपू १,  
१<sup>r</sup>; गी ९, १७; १०, ३३;  
-तारम् नाप ९, १६; त्रिवि ४,  
६<sup>r</sup>; रापू ४, ५२; ग ४; गी ८,  
९; -९<sup>r</sup>तुः क १, २, २०<sup>r</sup>; धे  
३, २०<sup>r</sup>; मना २, १२, १<sup>r</sup>; नाप  
९, १३; श १८; नाड १, ८;  
पा ९, ३; -त्रे सार २५१: १३.  
१धात्री- -त्री सौ १, ३; तुल  
७०: २०.  
२धात्री<sup>w</sup>-  
धात्री-फल-प्रमाण-  
-णम् रुजा १, ६.

a) 'दधात्' इति अख्या. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. सस्थ. टि. नि. ✓धै>निदिध्यासन- > -नम्).  
b) ऋ १, ३, ११। c) सकृत् 'यास्यसि' इति अख्या.। d) 'अध्यात्' इति आन.। e) ऋ १०, ८४, ७। f) वैपश्  
यद्र.। g) ऋ १०, १०१, १। h) अर्थे व्या. च? = नाड. दध्यञ्च्-। पाप्र. \*दध्यञ्चि- इति कल्पयित्वा तत्र दधि<sup>o</sup>-  
> धी<sup>o</sup> इति °अञ्चि->°चि- इति च यथायोगम् उलं. (पा ६, ३, १३८; ४, १३८) विषयः द्र.। i) नाप. (नभा.  
= दही).। वैपश् यद्र.। j) पा ७, १, ७५। k) °धनि इति आन.। l) °धनि इति सुपा. यनि. सु-शोधः।  
m) बअ. प्राति. द्र.। n) ऋ १०, १८४, १। o) ऋ १०, १९०, ३। p) ऋ १०, १५८, ३। q) तैआ ३, १२, ७।  
r) पा. १ प्रकरणतः पुंसि परंपरितः वा. द्र.। s) तैआ १०, १०, १। t) पा. १ (तु. तैआ. प्रसू.; वैतु. शं., आन. धातु<sup>o</sup>  
इति स. इति).। u) इह शं. पा. विकल्पप्रस्तः, आन. च = यनि. इति नापू. टि. विशेषः। v) धातु<sup>o</sup> इति नादी.।  
w) धा. दारणे वृत्तिः = आमलकी-।



धाता(ःतृ<sup>३</sup>)-ध्रुव-सोमा(म-अ)-  
निला(ल-अ)नल-प्रत्युष-प्रभा-  
स<sup>११</sup>-सः(ःसाः<sup>३</sup>) सूता ५, ६.  
धात्र(तृ-अ)र्यमां(म-अ)शु-म-  
ध्यमणि-भवेन्द्र-विवस्वत्-पूष-  
गभस्ति-मार्ता(ःतृ<sup>३</sup>)ण्ड-जगच्च-  
क्षुस- -क्षुषः सूता ५, ८.  
धा(न>)ना<sup>३</sup>-नाः छां ६, १२, १.  
धाना-रुह- -हः वृ ३, ९, २८, ५.  
धान्य<sup>३</sup>- -न्यम् मना २, ६७<sup>०</sup>;  
व४३५:१४; न्यानि वृ ६, ३, १३  
धान्य-वर्जित- -तम् वृजा  
३, ९.  
धान्या(न्य-अ)र्थ-  
धान्यार्थिन्<sup>३</sup>- -र्थी ब्रवि  
१८; त्रिता ५, १८; अवि १८.  
धामन्<sup>३</sup>- -म सुं ३, २, १; मैत्रि  
६, ३८; ७, ३; मना २, १२, २९<sup>०</sup>;  
२, ३५<sup>१</sup>; कौ ३, १; वृजा ८, ६;  
वृषू ५, २०; ते ६, ६७; त्रिवि १,  
११; अन्व ७; त्रिता १, २९;  
४९; ५७; २, २०; त्रि ७; शा ४;  
दत्ता १, १; सु १, १, २७; सार  
२५७: २१; सु २९४: ६९<sup>६</sup>;  
भव ३, ५; गौ ८, २१; १०, १२;  
११, ३८; १५, ६; -मनि त्रिता  
१, ५९; ६०; ६२; ६४-६६; ६८;  
६९; ७१; ७३; ७५; ४, ३०;  
-मसु गौ १, ५; २२; कै १, १८;  
-मानि श्वे २, ५९<sup>३</sup>; मना १, ४<sup>३</sup>९<sup>१</sup>;  
द १५; -मि त्रिता १, ४; सार  
२५८: १६; -म्रे पा २, १; -म्रो:  
त्रिता २, १९.

धाम-त्रय-नियन्तृ- -न्तारम्  
पं ८.  
धाम-त्रय-समन्वित- -तम् पं  
८.  
धित्वा वृ ३, ३, २.  
१हित- -तः गौ ४, २; महा ६, ७०;  
-तम् वृ ३, ९, ३; कौ २, १०९<sup>१</sup>;  
मना २, १२, ३९<sup>६</sup>; ते ३, ५३;  
नाप ३, ६३; वरा ५, ९; शि ७,  
९२; -ताय मैत्रि ७, ७.  
१-२धारण-, धारणा-, धारयत्-,  
धारयमाण-, धारयितृ-, धार-  
यित्वा ✓धृ द्र.  
धारा<sup>१</sup>- -रया वृ ६, ३, १; व ४६४:  
१५९<sup>३</sup>; -रा क १, ३, १४; वृ ३,  
३, २; -राः मना २, ४०९<sup>३</sup>; त्रिवि  
७, ५; २प्र ३३: १८१<sup>०</sup>; सार  
२८१: १२; सु २९३: १६९<sup>०</sup>;  
-राभ्यः महा २, १३; -राम् मना  
२, ४०९<sup>३</sup>.  
धारा-पोतृ- -ता प्रा ३, १; ४, १.  
धारिणी-, धारित-, धार्म-, धार्मिक-  
धार्थ-, धार्थमाण- ✓धृ द्र.  
✓धाव्(गतौ), > धावि, धावति क  
२, ३, ३; ते २, ८, १; वृ ४, ३,  
१९; वृषू २, १४; सुबा ४; नाद  
४४; ध्या ५८<sup>०</sup>; योचू २८; महा  
४, १२३; योशि ६, ५१<sup>२</sup>;  
धावन्ति वृ २, १, १; कौ ४, १;  
आर्षे ८: १०.  
धावयति(ःन्ति<sup>३</sup>) यो १, ७६;  
धावयेत् करु १,  
धावत्- -वतः ई ४.

धावन- -नम् ते ६, २१.  
धावयत्- -यन् कौ १, ४.  
✓धाव्(शुद्धौ), > धावि, धावयेत् शि  
७, ४९.  
धौत- -तम् वृजा ३, ३३; ४, १;  
जाद ४, ५४.  
धौत-वस्त्र- -स्त्रः वृजा ३, ५.  
धिक् छां ७, १५, २; वृजा ५, १६<sup>४</sup>;  
महा ४, ८९.  
✓धिन्व्, धिनुयुः बा १७.  
धिष्णिय<sup>३</sup>- -याः गरु ११९<sup>१</sup>.  
धिष्ण्य<sup>३</sup>- -ष्ण्याः वृ ६, ४, ५.  
१धी- ✓ध्वे द्र.  
२धी<sup>१</sup> त्रिता १, ४६; ५३.  
धीर, रा<sup>१</sup>- -रः क १, २, २१; ११; १२;  
२२; २, १, १, ४; ३, ६; वृ ४, ४,  
२१; गौ १, २८; सुबा ३; शु  
१९; नाप ९, १५; रापू ४, ७;  
महा ५, ८७; अन्न ४, ३७; ५,  
९१; जाद ४, ६२; मवा ८९<sup>३</sup>;  
वरा २, ३०; ४, ३३; शा २३;  
२८; पा ७, ५; गौ २, १३; १४,  
२४; -रम् गौ २, १५; -राः कै  
१, २; २, ५; क २, १, २; २, १२;  
१३; सुं १, १, ६; २, २, ७; ३, २,  
१; ५; वृ ४, ४, ८; श्वे ६, १२;  
गौ ४, ३; मना १, १५९<sup>३</sup>; ब्र ३,  
८; अशि ५, १७; अन्न ५, २४;  
रुह ३२; गोपू १९; २०; वरा  
४, ३४; नापू ४, ८९<sup>३</sup>; वड  
३१३: २; १शिंसं २९<sup>३</sup>; २शिंसं  
२; ३९<sup>३</sup>; १५९<sup>३</sup>; १६; स ३७८:  
१२; गु ४४; भव २, ४८;

a) पा.१ यनि. शोधः द्र.। b) वैप१ यद्र.। c) तैआआ १०, ६७। d) पावा ५, २, १३५। e) ऋ २, ३, ११। f) तैआआ १०, ३५। g) ऋ २, ९६, १९। h) ऋ १०, १३, १। i) एकतरत्र 'धामन्' इति मा ३२, १०। j) मंत्रा १, ५, १०। 'श्रुतम्' इति शांआ ४, १०। k) ऋ ४, ५८, ४। l) वैप१ यद्र.। बअ. प्राति. द्र.। m) तैआ ४, ३८, १। n) तैसं ४, २, ९, ६। o) 'धाराणाम्' इति मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. गोत्रा १, १, २३ संटि.)। p) तैआ ३, १२, ३, ४। q) प्रधा<sup>०</sup> इति निसा.। r) प्रधा<sup>०</sup> इति अज्या.। s) पा.१ यनि. शोधः (तु. अज्या. संटि., उज्र.)। 'धारयति' इति निसा. संटि.। t) अज्य.। u) 'धिष्ण्याः' इति मा १२, ४। v) 'धीमहि' इत्यस्य पूर्वाशः द्र.। w) तैआ ३, १२, ७। x) तैआ १०, १, १५। y) ऋ १०, ७१, २। z) मा ३४, २। a') मा ३१, १८।

-राणाम् ई १०; १३; -रेषु अन्न  
२, ३०.  
धैर्य- -र्यम् जाद ३, १२; वि  
२; -र्येण क २, ३, १७.  
धैर्य-कन्धा- -न्धा निर्वा  
२९७ : ७.  
धैर्य-माधुर्य- -र्ये नाप ४, १२.  
धैर्य-वत्- -वान् अन्न २, ३०.  
धैर्य-सर्व-स्व-हारिन्-  
-रिणम् अन्न ५, ३५.  
धैर्या(र्य-आ)कर्षि(न् >)णी-  
-णी आथ ३९५:९.  
धीर-धी- -धीः महा ५, ७०; अन्न  
२, ३१; सु २, २, २३.  
धीर-समीर- -रे सार २२५:१०.  
धीर-स्वर- -रम् पं ७.  
✓धु, धुनोति पा २, ८.  
धुनि<sup>१</sup>- -निः मना १, १९<sup>१</sup>.  
धुर<sup>२</sup>- -धुरम् पा २, ८; धूः पा ६,  
९; ८, ३; ९, ६; धूः-धूः पा  
९, ६०.  
धुरं-धर- -राय पा ८, ७.  
धुरं-धुर- -धूः पा ६, ९.  
धुर्य<sup>३</sup>- -र्याणाम् ज्ञाण २४:२३.  
धु(र >)रा<sup>४</sup>- -राणाम् पा ६, ९.  
✓धू, धूयते कौ १, ४९<sup>५</sup>.  
धूयते महा ४, ९६<sup>६</sup>.  
धूत-  
धूत-संसार-बन्धन- -नात्  
१ अव १.  
धूत्वा ज्ञां ८, १३, १.  
धूप<sup>७</sup>- -पः मं २, २, ५; भा ३६;  
शि १, २७; वड ६, ३०; -पेन  
वड ६, ३९; -पैः शि ६, १८३.

धूप-क- -कम् ते ६, २२.  
धूप-दीप- -पयोः वड ६, ३०; -पैः  
रा ४२५ : १.  
धूप-वेला-प्रमाणा(ण-अ)र्थ-  
-र्थम् शि ६, १३१.  
धूपा(प-आ)दि-त्रय-भक्ष्या-  
(द्य-आ)दि- -दि वड ६, २६.  
धूपित- -तम् १ योत ३४.  
धूम<sup>८</sup>- -मः ज्ञां २, १२, १; ५, ४-८, १;  
१०, ५; वृ ६, २, ९-१३; १४;  
गी ८, २५; -मम् ज्ञां ५, १०,  
३; वृ ६, २, १६; -मस्य मैत्रि  
७, ११; -माः वृ २, ४, १०; ४,  
५, ११; मैत्रि ६, ३२; -मात् ज्ञां  
५, १०, ३; वृ ६, २, १६; -मेन  
गी ३, ३८; १८, ४८.  
धूम-गन्ध- -न्धम् कौ २, ३; ४.  
धूम-निर्गमना(न-अ)र्थ- -र्थाय  
शि ४, ६.  
धूम-मार्ग-विस्तृत- -तम् गोच ६९:  
१२.  
धूम-श्च-गर्दभ-ध्वाङ्ग- -ङ्गाः शि  
४, २२.  
धूमा(म-आ)कार- -रम् योरा १६.  
धूमा(म-आ)दि- -दिभिः सांस् १,  
६०.  
धूमा(म-अ)चिद्र-विष्कुलिङ्ग- -ङ्गाः  
मैत्रि ६, ३१.  
धू(म >)मा<sup>९</sup>-व(त् >)ती<sup>१०</sup>- -ती व  
२२.  
१ धूत्र<sup>११</sup>- -अः त्रिजा २, १४०.  
धूत्र-वर्ण, र्णा- -र्णः व ४४१:  
४; -र्णां रु ७.  
धूत्र-शिखा(खा-आ)कार-

-रम् सौ ३, १.  
२ धूत्र<sup>१२</sup>- -अः गर्भ २; -अम्  
१ योत ९८.  
✓\*धूय<sup>(धूलने<sup>१३</sup>)</sup> > धूयि, धूययेत् शि  
७, ४४.  
✓धूर्त्  
धूर्त्-  
धूर्त्-गोष्ठी- -ष्टी १ योत ३०.  
धूर्त्-ता- -ता या २, १६.  
धूर्त्-राज- -जाः भव १, ५५.  
धूर्ति- -र्तिः अशि ३, ५९<sup>१४</sup>; वड  
३१५:४९<sup>१५</sup>; -र्तेः च २१:१९९<sup>१६</sup>.  
✓धृ, > धारि, धरते पा १, ५;  
१ धरन्ति<sup>१७</sup> वरा ५, ३१<sup>१८</sup>; धर  
पा ६, ५<sup>१९</sup>.  
दध्रे ज्ञां ४, १०, ३; वृ १, ५,  
२१; ३, १, २; गोपू १५; दधार  
अव्य ५; पा ७, ८; वपू २, ३;  
दाधार पा ६, ३; दध्निरे वृ १,  
५, २१.  
ध्रियते वृ ४, ३, १९; मना २,  
८०९<sup>२०</sup>; वरा ५, २२; अध्रियत् वृ  
१, २, ५; ६; अध्रियन्त वृ १, ५,  
२३.  
धारयते स ३७९:११; गी १८,  
३३; ३४; धारयति ध्या ९३,  
१५; सी १६; का १५; सु २९५:  
३; धारयन्ति वृजा ५, १५<sup>२१</sup>; सार  
२५५:१०; २५९:९; धारयामि  
गी १५, १३; धारयस्व वृ ३, ८, ५;  
धारय महा ४, ९२; जाद ४,  
६१<sup>२२</sup>; धारय-धारय हंषो १४;  
धारयाम > मा मना २, १२,  
२९<sup>२३</sup>; धारयेत श्वे २, ९; शि ७,

a) वैपश् यद्र. । b) ऋ १०, ८९, ५ । c) वैतु. पाटी. °र्य° इति समस्तमिति । d) पा ४,  
४, ७७ । e) =धुर- । f) 'धुनुते' इति आन.; 'धुनुवाते' इति शांआ ३, ४ । g) व्यु. १ । h) पा ६, ३, १२० ।  
i) विप. । वैपश् यद्र. । j) विशेवि. । वैपश् यद्र. । k) धूल्याच्छादने पाधा. उंसं. । l) ऋ ८, ४८, ३ । m) 'धूर्तिः' इति  
ऋ ८, ४८, ३ । n) अवस्थाने गौतौ वा भ्वा. उंसं. । o) 'चरन्ति' इति अज्या. । p) लोटि मपु १ (वैतु. पाटी. नाउ.  
ऐकपयं चिकीर्षुः धरत्- > -रताम् इति) । q) तैआ १०, ६४, १ । r) पा. ? 'अवधारय' इति शोधः द्र. (तु. अज्या.) ।  
s) ऋ ४, ५८, २ ।

७१; भव ३, २६; धारयेत् अना  
२०; मैत्रि ६, १९; व्र २३; वृजा  
३, ६; ४, १७; २९; ३१; ५, १;  
१योत ३९; ७२<sup>a</sup>; ८७; ९०;  
९४; ९६; ९७; ११२; ११७;  
१४०; २योत २, ३; नाप ३,  
३०; ७७; ७९; ८०; त्रिवा २,  
१०९; ११५; योचू ९५; ११४;  
वा ९; १०; १३-१५; १९<sup>c</sup>; ३५;  
३८; शां १, ७, १; ४३; ४४; ५०;  
योशि १, ४४; ९३; ५, ४९-५१;  
कुं ९; पत्र ३, ३; ४; १०<sup>d</sup>; १२;  
१४; यो १, १२; ४८; ४९; रुजा  
१, १०<sup>e</sup>; १३; १९; २०; २२; २३;  
२, ७; जाद ६, ४; ५; ८; २२<sup>b</sup>;  
३१; ३३; ७, १२; ८, १; ९; ८; ९;  
का११; १२; गोच ६६; १२-१४;  
१८; ६७; ३; १३; नार ९; १०;  
य २; ४; ९; सु २९३: ४; ९;  
लि ३०९; ६; ९; ३१०: ७; शि  
६, १५५; १६२; १६३; २१६;  
७, १२; ४३; ४४; ४६; ५०; ९०;  
भव ३, २८; कश्चु ३, १.  
धारयिष्यसि पा २, ५; धारयि-  
ष्यामि मना १, ८९<sup>g</sup>; व ४६४:  
१०९<sup>h</sup>.  
धार्यते मैत्रि ६, ९; त्रिता १, २४;  
रुजा १, १<sup>i</sup>; प्रा २, १; गी ७, ५.  
धर- -र: वृजा ४, १६<sup>j</sup>; -राय पा  
१, ७.  
धरा<sup>k</sup>- -रा कृ १५; पित्र १,  
१५<sup>l</sup>; ९<sup>m</sup>; ४, ७; -राम् त्रिवा २,  
४७; शां १, ३, १०.  
धरा-पति- -०ते भव ५,  
१७.  
धरा-विवर-मस- -भानाम्

१संन्या २, ३०.  
रधरा<sup>n</sup>-  
धरा-ना(मन् >) स्त्री- -स्त्री  
सार २, ५२: १०.  
धर(णि >) णी<sup>o</sup>- -९<sup>o</sup> णी मना १,  
८; य ६; सु २९३: ६.  
धरणी-धर<sup>p</sup>- -र: ता २, ३.  
रधरणी-धर<sup>h</sup>-  
धरणीधर-कन्दर- -रे  
१संन्या २, ५२.  
धरण्या(णी-आ)दि- -दौ योशि  
१, १७६.  
धरमाण- -ण: पा ६, ५.  
धरि(त् >) स्त्री- -स्त्री पा १०, १;  
-स्त्रीम् पा ८, १; -ज्यै पा १, ५.  
धरण- -णम् व ४६०: १२९<sup>i</sup>.  
धर्तु- -र्ता त्रि १५; ग २.  
धर्म<sup>j</sup>- -र्म: क १, १, २१; छां ७,  
२, १; वृ १, ४, १४<sup>k</sup>; २, ५, ११;  
गौ ३, १; ४, ६; ८; ८१; कौ २,  
१; २; मना २, ७८९<sup>k</sup>; ७९९<sup>l</sup>; ते  
५, २०; नाद २; महा ४, ९९;  
नाप ५, ३३; अध्या ३७; पाशु  
२, २३; पत्र २<sup>q</sup>; रुह ७६; भ  
१, ८<sup>r</sup>; २, १५; शा ३६; अद्वै  
७९<sup>m</sup>; इ १४: १८; निरु १, १;  
सार २२०: १; २२७: १८;  
२४९: १७; २५०: ९; २७९:  
१५; २८१: १६; शि ६, १६७;  
७, ६५; १०२; गार ४०६: १;  
चक्र १२; १कौल ३: २; २कौल  
३; ५; भव २, ६८; ४, १; ५, ११;  
आश्र ४; सांका २३; -र्मम् तै  
१, ११, १; छां ७, २, १; ७, १; वृ  
१, ४, १४<sup>k</sup>; ५, २३; मना २,  
७९९<sup>l</sup>; अशि १, ११; ते ५,

१३; नाप ३, २३; ५, ३०; महा  
२, ५२; १संन्या २, १२; कृ १९;  
इ ११: १०; बा १२; सार  
२८३: १; शि ६, १६८; भव  
१, ३४; ब्रसू ३, २, ४०; गी १८,  
३१; ३२; -र्मस्य वृ २, ५, ११;  
गौ ४, ६; ८२; मै ४, ३<sup>n</sup>; नाप  
६, २७; गी २, ४०; ४, ७; ९, ३;  
१४, २७; -र्मा: के शां<sup>o</sup>; छां शां<sup>o</sup>;  
२, १, ४; गौ ४, १०; ३३; ४६;  
५४; ५८; ९१-९३; ९८; ९९;  
मै मैत्रे आरु योचू वा महा अव्य  
१संन्या कुं सावि रुजा जाद जाबा  
शां<sup>o</sup>; सार २८१: १७; २८२: १;  
२८३: ५; २८७: १५; २९०:  
४; शि १, ७; भव २, ६२;  
-र्माणाम् गौ ४, ५३; योसू ४,  
१२; -र्मात् क १, २, १४; तै १,  
११, १; वृ १, ४, १४; गौ ४,  
२१; मना २, ७८९<sup>k</sup>; -र्मान् क  
२, १, १४; गौ ४, १; ४१; ससा  
१, १४; सं १७; सार २३४:  
२३; २३६: ४; सु २९४: १; गु  
४३; भव ५, १४; -र्माय मना  
२, ६७९<sup>l</sup>; सार २४७: ११; -र्मै  
वृ २, ५, ११; मना २, ७८९<sup>k</sup>; ध्या  
९३, २; गी १, ४०; -र्मैण वृ १,  
४, १४; मना २, ७८९<sup>k</sup>; ७९९<sup>l</sup>;  
अशि १, ११; गोड ३६<sup>p</sup>; सार  
२५६: १९; २७३: १०; २८२:  
२०; सांका ४४; -र्मैषु गौ ४,  
५९; ९६; ९९; -र्मै: पाशु २, ३३<sup>q</sup>;  
सार २३१: १७; १८.  
धार्म- -र्म: वृ २, ५, ११.  
धार्मिक- -क: वसू ४; २०;  
२१; शि ६, १६२; -कान् छां  
८, १५, १.

- a) 'सुसाधयेत्' इति निसा. । b) 'धारणात्' इति अज्या. । c) तैआ १०, १, ८ । d) =वसुविशेष- ।  
e) =वृथिवी । f) वैसं. । g) =शेषनाग- । h) =पर्वत- । i) ऋ १०, ८३, ७ । j) वैप१ यद्र. । k) तैआ १०, ६२, १ ।  
l) तैआ १०, ६३, १ । m) 'धर्म' इति मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. सस्थ. टि. कालसं०) । n) स्वध<sup>o</sup> इति अज्या. ।  
o) तैआ १०, ६७ । p) स्वध<sup>o</sup> इति आन. ।



धर्म-कर्मन्- -र्म अद्वैमा ८.

धर्म-काम- -मा: तै १, ११, ४१.

धर्म-कामा(म-अ)र्थ- -र्थान् गी १८, ३४.

धर्मकामार्थ-सिद्धि- -द्धये महा ५, १६३.

धर्म-कारिन्- -रिणः सार २८८: १६.

धर्म-कीर्ति-मति- -ति: वि २; १६.

धर्म-क्षेत्र- -त्रे गी १, १.

धर्म-ज- -जम् गौ ४, ५४.

धर्म-जिज्ञासा- -सा लि ३०९: १; १कौल २:३; २कौल १.

धर्म-ज्ञ- -ज्ञः नाप ४, ३५; राप् ४, ३८; योशि १, २४.

धर्मज्ञ-लेखिता(त-अ)र्थ- -र्थम् सी २८.

धर्म-ज्ञान- -नम् शारी ५.

धर्म-ज्ञान-वैराग्यै(ग्य-ऐ)श्वर्य- -र्यै: सूता ४, ७.

धर्म-ज्ञान-वैराग्यै(ग्य-ऐ)श्वर्या- (र्य-अ)धर्मा(र्म-अ)ज्ञाना(न-अ)- वैराग्या(ग्य-अ)नैश्वर्य-सत्त्व- रजस्-तमो-माया(या-अ)विद्या- (द्या-अ)नन्त-पद्म- -द्मा: त्रिवि ७, ४८.

धर्म-तत्-पर- -रम् शिदि, २२२.

धर्म-तत्(>) या २, १.

धर्म-त्व- -त्वम् सांसू ५, ४२.

धर्म-धर्मिन्-

धर्मधर्मि-त्व-

धर्मधर्मि-त्व-वार्ता- -र्ता पाशु २, २५.

धर्म-वीर- -रः पित्र १, १; २, १; १०.

धर्म-निष्ठ- -ष्ठः शि ६, १५७.

धर्म-पाल- -लः राप् ४, ३७.

धर्म-प्राप्ति-कर- -र अक्ष ५.

धर्म-फल- -लम् शि ६, १७४.

धर्म-मय- -यः वृ ४, ४, ५.

धर्म-मार्ग- -र्गम् राप् १, ४.

धर्म-मेघ<sup>१७</sup>- -घः योसू ४, २८;

-घम् पै ३, १; अध्या ३८.

धर्म-याग- -गः पाशु १, २९.

धर्म-राज- -राट् सृ १२.

धर्म-लक्षण- -णम् नाप ३, २४;

भव ५, १२.

धर्म-लक्षणा(ण-अ)वस्था-परि-

णाम- -मा: योसू ३, १३.

धर्म-वत् सांसू १, १३८.

धर्म-वत्-

धर्मिष्ठ<sup>१८</sup>- -ष्ठः शा ३१; -ष्ठम् मना २, ७९<sup>१९</sup>.

धर्मिष्ठ-ता- -ताम् कालि ४०२: २.

धर्म-विज्ञान- -नम् भव ५, १६.

धर्म-विरुद्ध- -द्धा: १ कौल ३:४.

धर्म-विरोधिन्- -धिनः सार २५०:७.

धर्म-विहित- -ता: १ कौल ३:५.

धर्म-शास्त्र- -स्त्रम् सी २९; नापू ५, ३७; स्त्राणि सुबा २; सं १६;

सार २८५:१४; -स्त्रे जाद २, १२.

धर्म-शील- -लः भव १, ४१.

धर्म-संस्थापना(न-अ)र्थ-

-र्थाय गी ४, ८.

धर्म-संकुल- -ले गोच ६९:१९.

धर्म-संज्ञा-

धर्मसंज्ञित- -तः कृ २०.

धर्म-सम- -मः, -मम् शिदि, १६७

धर्म-संमूढ-चेतस्- -ता: गी २, ७.

धर्म-साधन- -नानि सार २७८: ८.

धर्म-साहस- -सम् नाप ४, ६.

धर्म-स्कन्ध- -न्धा: छां २, २३, १.

धर्मा(र्म-आ)त्मन्- -त्मा गी ९, ३१.

धर्मा(र्म-आ)दि- -दि: सांसू २,

१४<sup>२०</sup>; -दीनाम् सांसू ५, २५;

सांका ६७; -दे: पं ३३.

धर्मादि-लक्षण- -णम् वरा २, १२.

धर्मा(र्म-आ)दिक- -कान् राप् ४, ६६; ५, ३.

धर्मा(र्म-आ)द्य- -द्या: सांका ४३.

धर्मा(र्म-अ)धर्म- -र्मम् सुबा १५; ते ३, ५६; -र्माय(र्मयो:२)

कालि ४०२: १६; -र्मौ गौ २,

२५; मि १०; महा २, ४९;

५६; १अव ६; सार २३१:६;

८; २४८: १९; २८७: १९;

२९०: ७; पित्र ६, ९.

धर्माधर्म-विचार-साधन-

-नेन सार २८२: २२.

धर्माधर्म-विरक्त- -क्ता: सार २४४: ५.

धर्माधर्म-संयम- -मात् शां १, ७, ५२.

धर्माधर्मा(र्म-आ)दिक-

-कम् नाप ६, ३४.

धर्मा(र्म-अ)न्तर- -रेण ब्रसू २,

१, १७.

धर्मा(र्म-अ)पलाप- -पः सांसू ५, २०.

धर्मा(र्म-अ)मृत-धारा- -रा:

अध्या ३८.

धर्मा(र्म-अ)र्थ-काम-केयूर- -रै:

गोड ५७.

धर्मा(र्म-अ)र्थ-काम-द- -द

अक्ष ५.

धर्मा(र्म-अ)र्थ-काम-मोक्ष-

-क्षम् ग १६; -क्षाणाम्

a) बस. । पू. वृत्तस. । b) =समाधिविशेष- । c) पा ५, ३, ६५ । d) तैआ १०, ६३, ११ । e) ०दि इत्यपि पाभे ।

f) समाहारे द्वस. । g) पा. यनि. शोधः द्र. ।

या २,२०; -क्षेपु नापू ४,१८.  
धर्मार्थकाममोक्षा(ल-अ)र्थ-  
-थे कालि ४०३:१३; व४२६:४.  
धर्मा(र्म-अ)वह,हा- -हम् श्वे  
६,६; -हाम् गु ६६.  
धर्मा(र्म-अ)विरुद्ध- -द्ध: गी  
७,११.

धर्मिन्- -र्मी योसू ३,१४.

धर्मि-ग्राहक-प्रमाण-

बाध- -धात् सांसू ५,९८<sup>०</sup>.

धर्मि-ग्राहक-मान-बाध-

-धात् सांसू ६,४.

धर्मि-भूत- -तम् ससा १,  
२२<sup>१०</sup>.

धर्मो(र्म-उ)क्ति- -क्ते: ब्रसू १,  
२,२१.

धर्मो(र्म-उ)पपत्ति- -त्ते: ब्रसू १,  
३,९.

धर्मो(र्म-उ)पासक- -का: सार  
२४९:२०.

धर्म्य- -र्म्यम् क १,२,१३; गी  
२,३३:९,२; १८,७०; -र्म्यात्  
गी २,३१.

धर्म्या(र्म्य-अ)मृत- -तम् गी  
१२,२०<sup>०</sup>.

धर्मेन्<sup>d</sup>- -र्माणि त्रिता १,११; मवा  
१०९<sup>०</sup>.

१धारण<sup>f</sup>- -ण: तै १,४,१; नाप  
४,३८९<sup>०</sup>.

२धारण<sup>b</sup>- -णम् मना २,९९<sup>१</sup>; वृजा  
४,३६<sup>२</sup>; ते १,३५; त्रिब्रा २,  
३१; १२९; १३४; मं १,१,८;  
शां १,८; त्रिता १,४७; मं १,  
१; जाद ६,१३; ह २०९<sup>१</sup>; लिं  
३०९:५; ३१०:५; १२; १८;  
१९<sup>३</sup>; २०<sup>३</sup>; २१<sup>३</sup>; २२; ३११:८;

१; -णात् ब्र २; वृजा ४,३३;  
३५; नाप ३,८०; १योत ५२;  
वा ७; त्रिब्रा २,११०; ११३;  
११४; पत्र ३,४; रुजा १,४;  
५,२,२; १२; जाद ६,२४; ३५<sup>१</sup>;  
ऊ ६३:१४; गोच ६६:५; -णे  
गर्भ १; सिशि ३८०:१३.

धारण-तत्स(>): रुजा २,९.

धारण-मात्र- -त्रेण वृजा ७,८;

रुजा २,११; १५; ३,१; गोच  
६७:४.

धारण-वत् ब्रसू ३,४,२०.

धारणा- -णा मैत्रि ६,१८; २०;

अना ६; १६; ते १,१६; ३५;

ध्या ४१; १योत २५; ८४; त्रिब्रा

२,३१; १३४; योचू २; १११;

शां १,१; ९; जाद १,५; ८,३;

त्रिता १,२४; वरा ५,१२; सर

१,४; २,५; भव ३,२८; योसू

३,१; -णा: १योत १०३; जाद

८,१; -णाभि: अना ८; लु १३;

नाद ८; योचू ११०; -णाम्

लु १; योचू १०७; जाद ८,७;

२अव ३३७:८; लिं ३०९:३;

९; -णासु योसू २,५३.

धारणा-योजन- -नम् अना

२४.

धारणा(णा-आ)सन-स्वकर्मन्-

-र्मणा सांसू ३,३२.

धारयत्- -यन् यो १,३६; राधा

३,१२; गी ५,९; ६,१३.

धारयमाण- -ण: सूता १,२४; सं

८.

धारयितृ- -ऽता मना २,९; ह

२०.

धारयित्वा अना १६; १योत ३९;

११३; शां १,७,४३; ४८.

धारि(न्>)णी- -णी मुं २,१,३;

कै १,१५; ना १; वपू १,२.

धारित,ता- -त: त्रिब्रा २,११४;

-तम् अशि ६,५; वा ३; गोच

६५:३; -ता ऊ ६३:८९<sup>k</sup>; -ता:

अशि ६,५.

धार्य- -र्यम् वृजा ३,१<sup>२</sup>; ५,४-६;

नाप ३,८४; त्रिब्रा २,११; पत्र

३,८; मं १,१०; रुजा १,१५;

२१; कृ १; जाबा १५; ऊ ६४:

२; ५; रु ८; २१; स ३७९:३;

सिशि ३८१:१४; १६; सांका

३२; -यै: सिशि ३८३:८.

धार्य-धारण- -णात् अ ३.

धार्यमाण- -णे वृजा ७,८<sup>२</sup>; रुजा

३,१<sup>२</sup>.

धृत- -त: पंहं ३<sup>२</sup>; नाप ५,२<sup>२</sup>;

त्रिब्रा २,११३; -तम् वृजा ५,

७; त्रिता ४,२९; कृ २४; नार

९; पा १,४; शि ७,९०; सिशि

३८१:२०.

धृत-कुम्भक- -क: मं २,२,२.

धृत-चक्र-धारिन्- -री य १;

सु २९३:१.

धृत-च्छत्र- -त्रम् रार २,१४;

रापू ४,३३.

धृत-पुण्य-लेख- -श: सिशि

३८१:३.

धृत-बाले(ल-इ)न्दु- -मौलि-

धृतबालेन्दुमौलिन्-

-लिनम् १योत १००.

धृत-मर्याद- -दा: नाप ५,१०;

महा ४,२०<sup>१</sup>.

धृत-राष्ट्र- -ष्ट्र: गी १,१;

-ष्ट्रस्य गी ११,२६.

a) °कमान° इत्यपि पाठे. । b) °मीभूतात्मा इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (वैतु. आन., अज्या.) ।

c) °र्मा° इत्यपि पाठे. । d) वैपश् यद्र. । e) ऋ १, १६४, ५० । f) कर्तरि कृत् । g) तैआ ७, ४, १ । h) भावे कृत् । i) तैआ १०, ७, १ । j) 'धारयेत्' इति अज्या. । k) 'धारयिष्यामि' इति तैआ १०, १, ८ । l) हत° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.) ।

धार्तराष्ट्र- -ष्ट्रस्य गी १,  
२३; -ष्ट्राः गी १, ४६; २, ६;  
-ष्ट्राणाम् गी १, १९; -ष्ट्रान् गी  
१, २०; ३६; ३७.

धृत-शरीर- -रः सांसू ३, ८२;  
सांका ६७.

धृता(त-अ)कार- -रम् १योत  
१०१.

धृता(त-अ)क्षि- -क्षिम् १प्र ३०:  
४.

धृता(त-अ)भिमान- -नाः स्व  
६१: २.

१धृति<sup>a</sup>- -तिः ऐ ५, २; वृ १, ५,  
३; मैत्रि ६, ३०; ३१; गर्भ ५;  
नाप ३, २४; ४, १२; त्रिवा  
२, ३३; शां १, १; महा ६, ३०;  
जाद १, ६; १८; वरा ५, १३;  
१शिसं ३९<sup>b</sup>; २शिस ४९<sup>b</sup>; भव  
५, १२; गी १०, ३४; १३, ६;  
१६, ३; १८, ३३-३५; ४३; -तिम्  
गी ११, २४; -तेः ब्रसू १, ३,  
१६; गी १८, २९; -स्या क १,  
२, ११; गी १८, ३३; ३४; ५१.

धृति-गृही(त>)ता- -तया ध्या  
९३, १४; गी ६, २५.

धृति-दण्ड- -ण्डम् मैत्रि ६,  
२८०.

धृति-मत्- -मता योशि १, ९०.

धृत्यु(ति-उ)त्साह-समन्वित-  
-तः गी १८, २६.

२धृति<sup>d</sup>- -तिः नाद ११०.

धृत्वा वृजा ७, १; नाप ५, ३९;  
रापू ४, ३१; शां १, ७, ४३;  
पप ४१९:१; भ १, ६; वरा ५,  
६१; सौ २, ३; सार २८३:६;  
शि ७, ५७.

✓धृष्, दधृषुः वृ ३, १, २; ९, २७.

धृषित- -ताः व ४६०: १३९<sup>f</sup>.

धृष्ट-

धृष्ट-केतु<sup>g</sup>- -तुः गी १, ५.

धृष्ट-सुम्न<sup>h</sup>- -न्नः गी १, १७.

१धृष्टि<sup>i</sup>-

धृष्टि-रूप- -पः कृ ११.

२धृष्टि<sup>j</sup>- -ष्टिः रापू ४, ३६.

धृष्ट्य(ष्टि-अ)ष्टक-विभूषित-  
-तः रापू ४, ८१<sup>i</sup>.

धृष्ट्या(ष्टि-अ)दि- -दि रार ३,  
१२<sup>j</sup>.

धृष्ट्या(ष्टि-अ)दिक- -कैः रापू  
५, ६१<sup>j</sup>.

धृष्णु- -ष्णवे नी २, ६९<sup>k</sup>.

✓धे, > धा

धातवे<sup>l</sup> वृ ६, ४, २७<sup>m</sup>.

धे(न>)ना<sup>1</sup>- -नाः मना २, ४०<sup>n</sup>.

धेनु<sup>1</sup>- -ऽनवः अशि ४, २१; वटु

३१६: १३; -नुः मना १, ८९<sup>p</sup>;

वृजा ३, २; दे ५९<sup>q</sup>; सर २,

८३<sup>q</sup>; य ६९<sup>p</sup>; सु २९३: ६९<sup>p</sup>;

-नुम् वृ ५, ८, १; वृजा ३, १;

३; नाप ४, ३८; शि ७, ८१;

९<sup>v</sup> ४४१: २०; ४४७: ३;

४५१: १७; ४५४: २२; -नूनाम्

गी १०, २८.

धेनु-वत् सांसू २, ३७.

धेनु-स्तन-क्षीर- -रम् सं ३, १, ५.

धैर्य- धीर- द्र.

धौत- ✓धाव् (सुदौ) द्र.

✓ध्मा, > धम्, धमेत् शि ७, ६९.

दध्मौ गी १, १२; १५; दध्मुः

गी १, १८.

धमन- -नात् अना ७<sup>5</sup>.

धमनि<sup>6</sup>- -नयः छां ३, १९, २<sup>u</sup>.

ध्माय- \*आ-ध्माय- टि. द्र.

ध्मायमान- -नस्य वृ २, ४, ८; ४, ५, ९

१ध्यातपूर्वामुख<sup>v</sup>- -खः च २०: ५.

✓ध्यै > ध्या, धी, ध्यायि, ध्यायते अशि

५, १०-१२; मन्त्रि ४; वा २५;

योचू ८३; योशि १, ७२; २प्र

३४: २०; कश्रु ३, १; चू ४;

ध्यावति छां ७, ६, १<sup>3</sup>; वृ ४, ३,

७; कौ २, १३<sup>3</sup>; ते ५, ८५; ग

१४; गोपू ५; सार २५९: २३;

पी ४२२: १६; ध्यायन्ति छां

७, ६, १<sup>3</sup>; दे १२; ग ६; सर

२, ५; सार २५५: १३; २शिसं

३७; ध्यायसे सार २२०: २३;

ध्यायसि सार २२०: २२;

२५८: ४; ध्याये गर्भ ४<sup>w</sup>;

ध्यायामि द १४; १अव २०;

सार २५८: ६; व ४६४: १५९<sup>x</sup>;

ध्यायतु १अव २५; ध्यायस्व

वृजा ६, ७; ध्यायथ<sup>y</sup>(=त) मुं २,

२, ६; अध्यायत<sup>z</sup> महा १, १<sup>3</sup>;

a) भाप. = धैर्य- । b) मा ३४, ३ । c) 'धृतिर्दण्डम्' इति सात. सुपा. यनि. सु-शोधः । d) = मात्रा-  
विशेष- । e) 'ध्रुवा' इति आन. । f) ऋ १०, ८४, १ । g) भाप. = १धृति- (तु. उन्न.) । h) = दाशरथिमन्त्रिविशेष- ।  
i) धृ<sup>o</sup> इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.; वैतु. धृत्य<sup>o</sup> इति आन. संटि.) । j) धृ<sup>o</sup> इति निसा. सुपा.  
यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.) । k) मा १६, १४ । l) वैप१ यद्र. । m) ऋ १, १६४, ४९ । n) तैसं ४, २, ९, ६ ।  
o) ऋ ७, ३२, २२ । p) तैआ १०, १, ८ । q) ऋ ८, १००, ११ । r) ऋ १, ९१, २० ।  
s) 'धमता' इति अज्या. । t) = नाडी- । u) 'धनसनयः' इति निसा. । v) पा. ? 'अध्यायत् पूर्वामुख-> -खः'  
इति पदद्वयपरः शोधः द्र. (तु. महा १, १) । w) 'प्रपद्ये' इति आन., अज्या. । x) तैआ ४, ३८, १ । y) यस्य  
स्थाने ताऽऽदेशविकल्पः उस्सं. [पा ३, ४, १०१ (वैतु. विधु. [IHO १७, ८९] वर्ण-विकार इति [तु. गपू. ३३१b])] ।  
z) 'अध्यायत' इति अज्या. ।



अध्यायत् महा १,१; अध्यायन्  
अशि १, १३<sup>a</sup>; ध्यायेत् प्रा २,  
१; ध्यायेत् हं १३; ब्रवि १६;  
शु २, ५<sup>a</sup>; ध्या १९; ब्रवि ८०;  
१योत् २३; नाप ५, २४; त्रिब्रा  
२, २१; अता ९; रार २, ३३;  
ध्यायेम सार २, ५८: १२.

ध्यायीत अना २२<sup>b</sup>; अ ३.  
धीमहि छां ५, २, ७९<sup>a</sup>; वृ  
६, ३, ६९<sup>a</sup>; मै ५, ७९<sup>a</sup>; मैत्रि ६,  
७९<sup>a</sup>; मना १, ५९<sup>a</sup>; ६९<sup>a</sup>;  
७९<sup>a</sup>; २, २०९<sup>a</sup>; ३५९<sup>a</sup>; नृपू ४,  
१३९<sup>a</sup>; त्रिवि ७, ३९<sup>a</sup>; ४१<sup>a</sup>;  
४३; ४४९<sup>a</sup>; रार २, ८७; सू  
६९<sup>a</sup>; २२; सावि १०९<sup>a</sup>; त्रिता  
१, ५९<sup>a</sup>; २४९<sup>a</sup>; २७९<sup>a</sup>; ४, ३३;  
दे ७; ग १०; ऊ ६३: १२; तुल  
७०: ११; नापू ३, २; ४, २-४;  
नृष ८४: २०; पारा २९<sup>a</sup>; ३;  
५९<sup>a</sup>; ९; गार ४०५: १३; १९; व  
४२९: १८९<sup>a</sup>; ४३४: ६; ४३६:  
१; ४५७: १०९<sup>a</sup>; ४५९: १२;  
४६१: २०; ४६२: ५; ८; २३९<sup>a</sup>;  
४६३: १-५९<sup>a</sup>; ६-८९<sup>a</sup>; ९-२०;  
वड २, ८९<sup>a</sup>.

ध्यायते मैत्रि ६, १७.

१धी- धियः वृ ६, ३, ६९<sup>a</sup>; श्वे २,  
१९<sup>a</sup>; ४९<sup>a</sup>; कौ १, ७; २, १५<sup>a</sup>; ३,  
५; ६; मै ५, ७<sup>a</sup>; ९<sup>a</sup>; मैत्रि ६, ७<sup>a</sup>; ९<sup>a</sup>;  
मना २, १२, ३९<sup>m</sup>; २, ३५९<sup>a</sup>; त्रिवि  
७, ३९९<sup>a</sup>; ४४९<sup>a</sup>; महा २, ७३;  
सू ७९<sup>a</sup>; सावि १०<sup>a</sup>; ९<sup>a</sup>; त्रितां १,  
५९<sup>a</sup>; ३०९<sup>a</sup>; ३२९<sup>a</sup>; ४८; सर २,

५९<sup>a</sup>; पारा २९<sup>a</sup>; ५९<sup>a</sup>; गार ४०५:  
१४; २०; ९<sup>a</sup> व ४२९: १९;  
४५७: १०; धियम् कौ ३, ६९<sup>a</sup>;  
ब्रवि १३<sup>a</sup>; श्वे २, ३९<sup>a</sup>; मैत्रि ६,  
२५; ते १, ५१; १योत् ११८;  
महा २, ५६-५८; ४, ९२; १२८;  
६, ७८<sup>a</sup>; शारी ५; योशि १, ९७;  
५, ३५; अन्न २, ४२; ५, ५४;  
१०२; त्रिता १, २४; यो १, ६२;  
पी ४२१: ६; भव १, ३६;  
धिया-धिया वृ १, ५, २; धी:  
वृ १, ५, ३; कौ ३, ७; मैत्रि ६,  
३०; नाप ३, २४<sup>a</sup>; महा ४, ३८;  
जाद १०, ५; १अव २५; भव  
५, १२; धीनाम् सर २, १९<sup>a</sup>.

धियम्

९<sup>a</sup> धियं-जिन्व- न्वम् व  
४४२: ८; ४४७: १४; ४५२:  
१; ४५५: ६.

धिया

धिया-वसु- -सु: सर २,  
३९<sup>a</sup>.

धी-चक्र- -क्राय त्रिवि ७, ४२.

धी-मत्- -मत: गौ ३, ३४;

-मत्ता अन्न ४, ८९; शि १, ४; गी

१, ३; -मताम् महा ५, ३९;

योशि ६, ३६; पाशु २, २; गी

६, ४२; -मान् मैत्रि ७, १; मैत्रे

२, ४; नाप ३, १३; स्क १२;

जाद ५, ९.

धी-विक्रिया-सहस्र- -स्नाणाम्

सु १, १, ३.

ध्यात- -त: ते ५, ६४; श ३६; गोपू

२५; जावा २७; सार २५७:  
९; -तम् ऐ ३, ११; शु १, १६;  
-तानि कौ ३, ४<sup>tw</sup>; -तै: कौ ३,  
३<sup>xx</sup>; ४, १९<sup>x</sup>.

ध्यातव्य- -व्यम् ते ४, २०; ६, २१.

ध्यातृ- -ता मना २, १३, १९<sup>y</sup>; अ  
१, ३<sup>z</sup>; ते १, १०; ४, १८.

ध्यातृ-ध्यान- -ने पै ३, १;  
अध्या ३५.

ध्यातृध्यान-विहीन- -न:

मैत्रे ३, ११.

ध्यात्वा ऐ ३, ८; मैत्रि ६, ३८; कै  
१, ७; अना १६; वृजा ६, ७;  
ब्रवि २०; नाप ४, ३८; त्रिब्रा २,  
१२९; योचू ९६; त्रिवि ५, १२<sup>z</sup>.

ध्यान- -नम् छां ७, ६, १<sup>z</sup>; २<sup>z</sup>;

२६, १; कौ ३, २१<sup>a</sup>; मैत्रि ६,

९; १८; २४; मैत्रे २, २; मना

२, १३, १९<sup>y</sup>; पहे ४; ब्र ३, १४;

अना ६; अ १<sup>z</sup>; ३; नृपू १, ५;

शु १, १८; २, ५<sup>z</sup>; ते १, १; २;

१०; २, २१; ४, १८; ५, ४४; ७७;

६, १२; २१<sup>b</sup>; ध्या ४१; ६९;

१योत् २५; १०४; नाप ३, ८६;

५, ३३; ६, २; योचू २; ४०;

११२; त्रिब्रा २, ३१; १४८; मं

१, १, ९; २, २, ५; द ३; १४;

स्क ११; रार २, ५७; ९४; शां

१, १; १०; योशि ६, ४५; सावि

१०; पाशु १, २२; १अव १७;

२०; २अव ३३८: १; त्रिता ५,

५; जाद १, ५; ९, १; वरा ५,

१२; ह ६; गरु ५; सु २, २, ५०;

a) 'ध्यायन्ति' इति अज्या. । b) 'ध्यायेत' इति आन. । c) ऋ ५, ८२, १ । d) ऋ ३, ६२, १० ।

e) तैआ १०, १, ५<sup>a</sup> । f) तैआ १०, १, ६<sup>a</sup> । g) तैआ १०, १, ७<sup>a</sup> । h) तैआ १०, ४६, १ । i) तैआ १०, १, ६ ।

j) तैआ १०, १, ५ । k) तैआ १०, १, ७ । l) मा ११, ४ । m) तैआ १०, १०, ३ । n) ऋ १, ३, १२ । o) 'मनः'

इति शांआ ५, ६ । p) 'ध्रुवम्' इति आन. । q) मा ११, ३ । r) 'यथेच्छया' इति निसा. संदि. । s) 'हीः' इति

अज्या., 'हीविद्या श्रीविद्या' इति अज्या. संदि. । t) ऋ ६, ६१, ४ । u) ऋ १, ८९, ५ । v) ऋ १, ३, १० । w) सकृत्

'ध्यानानि' इति आन. । x) 'ध्यानैः' इति आन. । y) तैआ १०, ११, १ । z) द्रस. । a') 'ध्यातम्' इत्येतत्परः

शोधः द. (तु. आन., अज्या., शांआ ५, २) । b') 'आनम्' इति अज्या. ।

योरा २; आपू १; सूता २,  
२; पा ४, ६; लां २१३: १२;  
सार २४४: ३; २६०: १५;  
२७५: १६; गु ६; २४; ७८; व  
४२६: ९; ४५९: १८; भव ३,  
२९; अबि ५; वउ १, २५; सांसू  
३, ३०; ६, २५; योसू ३, २; गी  
१२, १२; -नस्थ छां ७, ६, २;  
त्रिब्रा २, ३२; २अव ३३८: २;  
-नात् छां ७, ६, २; ७, १; योशि  
१, ३३; हे ६; ब्रसू ४, १, ८; गी  
१२, १२; -ने नाप ६, १; -नेन  
ब्रवि २२; ब्र २; अना ८; त्रिवि  
५, १२; त्रिब्रा २, १५२; रापू  
१, ५; सर १, ३; राधा १, २८;  
३, १७; ४, २५; सार २२७: ४;  
२४२: ३; २४६: १३; २५६:  
११; २५८: ३; २५९: २०;  
२६०: १५; गी १३, २४; -नै:  
अन्न ४, ४४.

ध्यान-क्रिया- -याभ्याम् मन्त्रि  
७; चू ७.

ध्यान-ज- -जम् योसू ४, ६.

ध्यान-तत्-पर- -र: नाप ४,  
३२.

ध्यान-तत्(>) महा ४, ९३.

ध्यान-द्वादशक- -केन योचू  
११२.

ध्यान-धारणा(गा-अ)भ्यास-वै-  
राग्या(गय-आ)दि- -दिभि:  
सांसू ६, २९.

ध्यान-ध्येय- -यौ मं २,  
३, ७.

ध्यान-निर्मथन- -नात् स  
३७९: १८.

ध्याननिर्मथना(न-अ)भ्यास-  
-सात् श्वे १, १४; ध्या २२; ब्र  
३, ६.

ध्यान-निष्ठा- -छा पप ४२०: ७.

ध्यान-निष्पाद्य- -द्यम् भव ३,  
३०.

ध्यान-बल-योग- -गेन लु १३.

ध्यान-मय- -यम् सार २३६: ७.

ध्यान-यज्ञ- -ज्ञ: अव्य ३; -ज्ञम्  
अव्य ४.

ध्यान-युक्त- -क्त: नाप ४, १८;  
-क्तम् शां १, २.

ध्यान-योग- -गस्य पै ४, १५;  
वउ १, २८; -गेन लु १८; ध्या  
१; नाप ३, ५१; शि १, २६.

ध्यानयोग-पर- -र: गी १८,  
५२.

ध्यानयोग-परा(र-अ)यण-  
-ण: नाप ५, ३४.

ध्यानयोगा(ग-अ)नुगत-  
-ता: श्वे १, ३; नाप ९, २.

ध्यान-विस्मृति- -ति: मं १,  
१, १०.

ध्यान-शब्द- -ब्देन ते १, ३६.

ध्यान-संध्या- -ध्या ब्र ३, १५.

ध्यान-सहस्र-

ध्यानसहस्र-तत्(>) १अव  
१९.

ध्यान-स्थ- -स्थ: योशि १, २७.

ध्यान-स्थित- -ता: वउ ४, २९.

ध्यान-स्वरूप- -पम् नापू १,  
१२.

ध्यान-हे(य>)या- -या: योसू  
२, ११.

ध्याना(न-आ)दि- -दौ अ ३.

ध्याना(न-आ)धिकार- -र: नाप  
७.

ध्याना(न-आ)नुभावना- -ना  
सार २४४: १.

ध्याना(न-आ)न्त- -स्थ- -स्थस्य  
महा १, १; च २०: ३.

ध्याना(न-आ)पञ्च, ज्ञा- -ज्ञ:  
सार २२०: २१; २३६: ७; २४३:

८; २४४: ८; २५९: १९; २२;  
२६०: १५; २७५: १४; -ज्ञा सार  
२८५: १७; -ज्ञै: सार २३३: २.  
ध्याना(न-आ)पादां(द-अं)श-  
-शा: छां ७, ६, १.

ध्याना(न-आ)भ्यास-प्रकर्ष-  
ध्यानाभ्यासप्रकर्ष-तत्(>):  
सु २, २, ५३.

ध्याना(न-आ)वस्था- -स्थाम्  
सार २५७: १७; -स्थायाम् सार  
२७५: १२.

ध्याना(न-आ)वाहना(न-आ)-  
दि- -दि वउ ५, ३३.

ध्याने(न-इ)च्छा-रहित- -ते  
त्रिता १, ३२.

ध्याय<sup>१</sup>-

ध्यायिक- -का: इ १५: २१०.

ध्यायत्- -यत् कौ २, १४; ३, २;  
-यत: त्रिब्रा २, १५६; १५८;

१६०; योचू ९८; योशि ३,  
२४; योरा ११; १९; शि ७,

१३०; गी २, ६२; -यन् छां १,  
३, १२; २, २२, २; मै ५, ३; हं

४; ६; शु ३, १७; १योत ८६;  
आबो १; रार २, ३४; ४७;

४, ४; मुद्र ४; शां १, ६; पै ३,  
२; महा ६, ३६; ३८; पप ४१८:

२५; कर १; यो ३, ३३; जाद  
५, १; ७; ६, ८; गोउ ४५; सु १,

१, २४; पा ९, ४; वपू १, २, ४;  
वउ ५, ४१; -यन्त: छां ५, १,

८-१०; गोपू ४६; गी १२, ६;  
-यन्तम् लां २१४: २.

ध्यायन्ती- -न्ती सार २५७: २०

ध्यायमान, ना- -न: सुं ३, १, ८;  
मन्त्रि ३; भ १, ११; सार २५८:

२; २९०: १८; शि ५, १८; ३३;  
-ना सार २४४: १४; २८६: २;  
-ना: सार २१९: २.

ध्यायितव्य- -व्यम् अ १<sup>२</sup>.

ध्यायिन्- -यी मैत्रि ६, ३४<sup>०</sup>.

ध्येय, या- -यः अ १; ३<sup>२</sup>; ते १, १०<sup>३</sup>; निर्वा २९८: २<sup>०</sup>; श १; ७; ३१; त्रिवि १, १; रार ५, १६; महा ६, ४३; म २, १<sup>३</sup>; सं १९; -यम् ते ४, १८; ५, ७७; ध्या ९; ९५; अता ११; सूता १, ३; नाप ४, २६; सार २४५: १०; २५९: १८; २०; भव ३, ५; पित्र २, ४; -या त्रिता १, ६४; कालि ४०१: ७; गु ५०; इया १०; तारा ८३: २२; -या: पी ४२२: १५; -यान् श ३०; -वेभ्यः अ २<sup>०</sup>.

ध्येय-स्याग-विलासि(न् >)-

नी- -नीम् महा ६, ६६.

ध्येय-मान<sup>१</sup>- -नः चू ३.

ध्येय-संख्यागिन्- -गी महा २, ४५; ६, ४५.

ध्येय-हीन- -नः मैत्रे ३, ११.

ध्येया(य-अ)तीत- -तम् अञ्ज ५, ७४; जाद ९, ५<sup>०</sup>.

ध्येयै(य-ए)क-गो-चर- -रम् पै ३, १; अध्या ३५.

१ ध्रुव, वा<sup>१</sup>- -वः छां ७, ४-५, ३; वृ ४, ४, २०; ब्रवि ९६; नाप ३, २०; महा ३, ५०; गी २, २७; -वम् क १, २, १०; ३, १५; २, १, २; वृ ४, ४, २०; श्वे २, १५; गौ ४, १२; ब्रवि ८; मैत्रि ६, २३; ३८; ७, ३; मैत्रे १, ४, १०; अ ३; मन्त्रि ८<sup>६</sup>; ते १, ८; नाद

५३; ध्या ३५; १योत १४; ७३; १०२; १२७; १२९; १३०; त्रिवा २, १२७; योचू ८३; त्रिवि ७, १७; पै ३, ४; योशि १, ५६; १६०; ३, २१; ६, ६९; अस्ति २; पाशु २, ४२; त्रिता ५, ६; यो ३, ३५; जाद २, ९; बि २६; शि ६, १६५; चू ८; अवि ८; गी २, २७; १२, ३; -वा छां ७, २६, २; वृ १, ५, १४; यो २, ४८<sup>५</sup>; गी १८, ७८; -वान् छां ७, ४-५, ३; -वाम् मन्त्रि ३; चू ३; -वाय मना २, ६७९<sup>१</sup>; पा ९, ६.

ध्रुव-क्षिति- -तये मना २, ६७९<sup>१</sup>.

ध्रुव-शील- -लः आह ४; नाप ७; पप ४१९: १०.

ध्रुवशील-तस् (>) शा २०<sup>१</sup>.

ध्रुवा(व-अ)ग्नि- -ग्निम् ब्रवि १<sup>६</sup>.

२ ध्रुव-

ध्रुवा<sup>१</sup>- -वाम् २प्र ३३: ७; वायाम् वृ ३, ९, २४.

३ ध्रुव<sup>२</sup>- -वः वृजा ४, १६.

४ ध्रुव<sup>३</sup>- -वस्य मै १, ७; मैत्रि १, ४; मैत्रे १, २; गु १६; -वे शां १, ७, ५२; योसू ३, २९.

ध्रुव-मण्डल- -लस्य त्रिवि ५, १२.

५ ध्रुव<sup>०</sup>- -वम् त्रिवि ५, १२.

६ ध्रुव<sup>०</sup>-

ध्रुवा(व-अ)दि- -दि रार ३, १.

✓ध्वंस्

ध्वंस- -सम् पित्र ६, १५.

ध्वंसन- -नम् शि ५, ३.

ध्वस्त-

ध्वस्त-मनना(न-आ)का(र>)-  
रा- -रा महा ५, ५.

✓ध्वज

ध्वज- -जा: गोउ ५२<sup>०</sup>; -जाय त्रिवि ७, ४२.

ध्वज-च्छत्र-पताका- -काभि: शि ६, १८३.

ध्वज-च्छत्र-विमाना(न-आ)द्य-  
-द्यै: शि ६, १७२.

ध्वज-वज्रा(ज-आ)दि-विहि-  
त-पाद-पद्म- -द्या: राधा ३, १३.

ध्वज-सिंह- -हौ शि ४, २२.

१ ध्वज-हस्त<sup>१</sup>- -स्ताभ्याम् व ४५१: ७.

२ ध्वज-हस्त<sup>२</sup>- -स्त: व

४४१: ४.

ध्वजा(ज-अ)ष्टक- -कम् शि ६, १५०.

✓ध्वन्

ध्वनि- -नि: सौ २, ५; नाद ३२<sup>१</sup>; ध्या १०२; योचू ८०; ११५; मं ५, १, ४; योशि ६, २१; वउ ४, ७; -ने: मं ५, १, ४; योशि ६, २१.

ध्वनि-रूप- -प: षो १७.

ध्वन्या(नि-आ)त्मक- -कम् त्रिवि ७, ५०.

ध्वान्त<sup>१</sup>- -ऽन्तम् मना २, ७३; चा २०.

ध्वान्त-वत् सांसू १, ५६; ६, १४.

a) वैतु. सात. अधी(धि/इ)>अ<sup>०</sup> इतीव पाठकः?। b) 'धायः' इति अज्या.। c) 'ध्यायिभ्यः' इति अज्या.संदि.। d) बस.। उप.भाप.<✓मा माने (वैतु.नादी. पक्षे =ध्यायमान- इति)। e) 'देहातीतम्' इति अज्या.। f) विप.। वैप१ यद्र.। g) 'परम्' इति अज्या.। h) 'वम्' इति अज्या. संदि.। i) तैआआ १०, ६७। j) 'लता' इति अज्या.। k) 'ग्निः' इति आन., अज्या.। l) =दिग्विशेष-। m) =वसुविशेष-। n) =नक्षत्रविशेष-। o) =देव-विशेष-। p) =दासारथिमन्त्रिविशेष-। q) 'जः' इति आन.। r) मलो. कस.। s) बस.। t) 'निम्' इति अज्या.। u) =तमस्-। वैप१ यद्र.। v) ऋ १०, ७३, ११।



## न

१न<sup>१</sup>

१न-कार-

नकारा(र-आ)दि-य-कारा-  
(र-अ)न्त-न्तम् पं २५.न<sup>२</sup> आथ ३९५:२३; व ४३६:६;

हंषो ९.

न-कार-००२ अक्ष ५.

२न<sup>२</sup>२न-कार-र: ता १, २; सिशि  
३८२: १०.३न<sup>३</sup>

३न-कार-र: ता १, २.

४न<sup>४</sup> तै ३, १०, ६; वृ २, ५, १६९<sup>१</sup>;नृपू २, ८९<sup>२</sup>; १३९<sup>३</sup>; बा १५;नापू ४, १०९<sup>४</sup>; व ४३७:१५९<sup>५</sup>;४६१: १२९<sup>६</sup>.५न<sup>५</sup>\* ई २<sup>१</sup>; के १, ३<sup>२</sup>; क १, १, १२<sup>३</sup>;प्र १, १०; सुं १, २, ९; मां ५<sup>४</sup>;तै १, ११, १<sup>५</sup>; २, ४, १; ऐ १, १;२, २<sup>६</sup>; छां १, १, १०; ४, ३, ७<sup>७</sup>;वृ १, ५, २३; श्वे १, १२; ३, ९९<sup>८</sup>;मैत्रे ३, १७<sup>९</sup>; कृ २२९<sup>१०</sup>; पा ४,२९<sup>११</sup>.

४न-कार-

नकार-रहित-त: मैत्रे ३, १९९.

न-किंचिद्-भावना(ना-आ)कार-

-रम् अक्ष ५, ४८.

न-चाण्डाल-ल: वृ २.

न-चिर-रात्रि गी १२, ७; -रेण गी

५, ६.

न-तापस-स: वृ २; त्रिता ५, १.

न-दण्ड-धर-रा: आश्र ४.

न-द्वार-पुत्रा(त्र-अ)मिलाषिन्-

-धी या २, १.

न-दिवा-रात्रि-विभाग-ग:

त्रिवि १, ११.

न-देव-वा: वृ २.

न-नमस्-कार-र: नाप ३, ८६;

पहं ४<sup>१</sup>; पप ४२०: १४; या २, १.

न-निज-जम् स्क २.

१न-निन्द-न्दा(१न्द:\*) पहं ४<sup>२</sup>.

न-निन्दा-स्तुति-ति: नाप ३,

८६.

न-निर्विण्ण-वण: सार २९१:९;

-वणा: सार २७८:२३.

न-पितृ-ता वृ २.

न-पुनर्-आगमन-नम् य १०;

सु २९३: १०.

न-पुनर्-भव-वाय काला १०.

न-पौलकस-स: वृ २; त्रिता ५, १.

न-मन्त्र-तन्त्रो(न्त्र-उ)पासक-

-क: पप ४२०: १५.

न-ममर्-म शि ७, ११४<sup>३</sup>.

न-मातृ-ता वृ २.

न-यज्ञ-ज्ञा: वृ २.

न-लोक-क: वृ २.

न-विप्र-आ: वृ २; त्रिता ५, १.

न-विसर्जन-पर-र: पप ४२०:

१५.

न-वेद-द: वृ २.

न-श्रमण-ण: वृ २.

न-संवत्सरादि-काल-विभाग-

-ग: त्रिवि १, ११.

न-स्तुति-ति: पहं ४<sup>४</sup>.

न-स्तुषा-षा वृ २.

न-स्वधा-कार-र: नाप ३, ८६;

पहं ४<sup>५</sup>; पप ४२०: १४.

न-स्वाहा-कार-र: नाप ३, ८६;

पहं ४<sup>६</sup>; पप ४२०: १४.ना(न-अ)ति-नीच<sup>७</sup>-चम् १योत

३५; गी ६, ११.

ना(न-अ)तिमानिता-ता गी

१६, ३<sup>८</sup>.ना(न-अ)ति-सक्त<sup>९</sup>-क्त: सार

२९१:९; -क्ता: सार २७८:२३;

२७९: १.

ना(न-अ)त्यु(ति-उ)च्च-नीच-चे

यो १, २३.

ना(न-अ)त्यु(ति-उ)च्च-नीचा-

(च-आ)यत-तम् शां १, ५.

ना(न-अ)त्यु(ति-उ)च्छ्रित<sup>१०</sup>-तम्

१योत ३५; गी ६, ११.

ना(न-अ)धिकारिन्-रिण: नाप

३, १.

ना(न-अ)धिष्ठान-न: पा ५, १०.

ना(न-अ)न्य-गामिन्-मिना गी

८, ८.

ना(न-अ)स्ति

नास्तिक<sup>११</sup>-क: १संन्या २, ३;

सार २८७: २१; -काय ते ६;

१०८; श ३२; त्रिवि ८, २०; मु

१, १, ४७; सिशि ३८३: ११.

नास्तिक्य-क्यम् मै ३, ५;

मैत्रि ३, ५; ते ६, १४<sup>१२</sup>.

a) =वर्ण-। b) =बीजमन्त्रविशेष-। c) =नमस्- इत्यस्याऽऽद्याऽक्षर-। d) नारायण-> -णाय  
इत्यस्याऽऽद्याऽक्षर-। e) अव्य. =इव। f) ऋ १, ११६, १२। g) ऋ २, ३३, ११। h) ऋ १, १५४, २।  
i) ऋ १, ६९, १। j) ऋ ५, ४, ९। k) अव्य.। पाप्र. =नव्। l) तु. सस्थ. टि. उपा(प/आ)स> उपास्महे।  
m) तैआ १०, १०, ३<sup>३</sup>। n) 'अविना' इति अख्या.। o) तु. सस्थ. टि. एवमादि-। p) पा. ? अ-धु(र)>र-> -रम्  
(क्रि.वि.) इति नाउ. पदं व्यक्छेद्यम्। q) वि° इति अख्या. संटि.। r) वैतु. शंदी. पदद्वयीति। s) पा. ? यनि. शोधः  
द्र.। t) तु. वैप १, ५६६। u) गपू. (पृ २३) अति-नीच- इत्यत्र यनि. शोधः द्र.। v) °भिमानिता इति SCHR.  
पाप्मे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। w) गपू. (पृ २५) अति-सक्त- इत्यत्र यनि. शोधः द्र.। x) गपू. (पृ २७)  
अत्युच्छ्रित-> -तम् इत्यत्र यनि. शोधः द्र.। y) पा ४, ४, ६०। z) वा. कृतेऽन्त इति-पदं आव्यम्।

|   |   |  |
|---|---|--|
| नास्ति-त्व-   | ३, २४; ५, २७; -त्रे कौ २, ३;                              | नगर-पुरी-पट्टग-राजधानी-संमो-                             |
| नास्ति-त्व-साधना(न-अ-)-   | -त्रेण वृ ६, ३, १; -त्रेभ्यः मना २,                       | हि(न>)नी-०नि व ४५७;                                      |
| भाव-वात् सांसू ६, १.  | ५९ <sup>m</sup> ; ६७९ <sup>n</sup> ; -त्रेषु तै ३, १०, ३. | १९.  |
| नास्ति-त्वा(त्व-आ)दि-विव-   | नक्षत्र-गण- -णाः सार २६४:२३.                              | नगर-राज-मुख-बन्धन-०न लां                                 |
| जित- -तः ते ५, ७०.  | नक्षत्र-लोक <sup>३</sup> - -काः, -केषु वृ ३,              | २१६:१२.  |
| नास्ति-नास्ति-विमुक्त <sup>३</sup> - -क्तः                        | ६, १.   | नगर-स्थ- -स्थम् शि २, १९.                                |
| मैत्रे ३, १९.   | नक्षत्र-विद्या <sup>३</sup> - -द्या छां ७, १, ४;          | ✓नगराय, नगरायते नाप ३, ५६.                               |
| नै(न-ए)कधा बा १९.   | -द्याम् छां ७, १, २; २, १; ७, १.                          | नग्न <sup>३</sup> - -अः नाप ४, ३२; ६, २४; कालि           |
| नै(न-ए)क-मार्ग- -र्गेण ब्रवि २५.                                  | नख <sup>३</sup> - -खान् शि ७, ५४; -खानाम्                 | ४०२:१२.  |
| नै(न-ए)क-रूप- -पाः मैत्रि ६, ३०.                                  | पं ३०; -खानि गार ४०८:१०;                                  | नग्न-निवर्तिन्-  |
| नै(न-ए)क>)का- -का दे १७ <sup>३</sup> ; ९९ <sup>३</sup> .          | -खेन वृजा ६, ७; -खेभ्यः छां ८,                            | नग्ननिवर्ति-ते(१के <sup>३</sup> )न-पुलक <sup>३</sup> -   |
| नो <sup>b</sup> तै १, ११; २; वृ ४, ४, २२;                         | ८, १; कौ ४, १९; -खैः श ६;                                 | -कः व ४५६:२३.  |
| कौ ४, ६; वृजा ३, १ <sup>३</sup> ; ते १,                           | शि ७, ५२; ५४ <sup>३</sup> .                               | नचि-केत <sup>३</sup> -                                   |
| २८; नाप ३, ११; महा ३, ५७;   | नख-केश-निकृन्तन- -नम् इ                                   | नाचिकेत <sup>३</sup> - -तः क १, २, १०; -तम्              |
| अध्या ४५; मु १, १, २८; गी   | १४:७.   | क १, १, १८; ३, २; १६.                                    |
| १७, २८.   | नख-चन्द्र-तेजस्- -जसा सार                                 | नचि-केतस् <sup>३</sup> - -तः <sup>३</sup> (१ताः) क २, ३, |
| १नकुल <sup>३</sup> - -ले सुबा १३.                                 | २४५:८.  | १८; -०तः क १, १, १४; १९;                                 |
| ९ <sup>३</sup> नकुली- -ली ह १७; व ४४३:                            | नख-च्छेदन-  | २१; २४; २५; २, ३; ९; ११;                                 |
| २२.   | नखच्छेदन-क- -कम् शि ६,                                    | -तसम् क १, २, ४; १३; मैत्रि                              |
| २नकुल <sup>३</sup> - -लः गी १, १६.                                | २३३.  | ७, ९; -ताः क १, १, १; २९.                                |
| नक्त <sup>३</sup> - -क्तम् <sup>३</sup> छां ८, ४, २; वृ ६,        | नख-निकृन्तन- -नेन छां ६, १, ६.                            | नज <sup>३</sup> -  |
| ३, ६९ <sup>३</sup> ; मना २, ३९९ <sup>३</sup> ; ५९९ <sup>३</sup> ; | नख-रोम-व्यादेश- -शः निरु १,                               | १नज-पूर्व <sup>३</sup> - -वैः सूता ४, ८.                 |
| नाप ६, १; १संन्या १, १; अव्य                                      | १२.   | ✓नट  |
| ५; सं २१; कश्चु १, १.   | नखा(ख-अ)ग्र- -ग्रेभ्यः वृ १, ४,                           | नट <sup>३</sup> - -टः मै ४, २; मैत्रि ४, २;              |
| १नक्ताद्वर <sup>३</sup> - १संन्या २, ६२.                          | ७; आर्षे ८:१७.  | नटी- -टी वरा २, ८२.                                      |
| नक्षत्र <sup>३</sup> - -त्राणाम् गी १०, २१; -त्राणि               | नग <sup>३</sup> -   | नट-नाट्य-युक्त- -क्तः सार                                |
| तै १, ७, १; छां १, ६, ४ <sup>३</sup> ; २, २०;                     | नग(ग-इ)न्द्रा(न्द्र-अ)ष्टक-भू-                            | २४५:१२.  |
| १; २१, १; ४, १२, १; ५, ४, १; ७,                                   | षित- -तम् शि ६, १०५.                                      | नट-वत् सांका ४२.   |
| १२, १; वृ १, १, १; ३, ९, ३; ६,                                    | नगर <sup>३</sup> - -रम् नाप ३, ५७; ७ <sup>३</sup> ; शि ७, | नटा(ट-आ)दि-प्रेक्षण- -णम्                                |
| २, ११; मैत्रि ७, १; वृजा ८, ६;                                    | ६०; -राणि सुबा ४; पिब १,                                  | नाप ३, ६९.   |
| नृप ५, २०; राउ ४, २९; महा   | १३ <sup>३</sup> ; -रे नाप ४, १४; २१; शां                  | नत-नति- ✓नम् द.  |
| १, १; सावि ७ <sup>३</sup> ; च २०:२; २प्र                          | १, ५; मि ६; १संन्या १, १ <sup>३</sup> ;                   | १नत्यात् <sup>३</sup> कृपु १९.                           |
| ३३:२; सार २७२:१३; वड  | आश्र ४; कश्चु १, १ <sup>३</sup> .                         | नत्वा <sup>३</sup> ✓नम् द.                               |

a) °स्तिबन्धवि° इति अज्या. संटि. । b) तु. वैप१, ९७८ । c) तु. गपू. २८३n । d) पा ६, ३, ७५ ।  
 =जन्तुविशेष- । वैप१ यद्र. । e) मंत्रा १, ७, १५ । f) व्यु? =पाण्डवविशेष- । g) अव्य. वैप१ यद्र. । h) वा.  
 किवि. द्र. । i) ऋ १, ९०, ७ । j) तैआआ १०, ५९ । k) पा. १ नक्ता(क-अ)ग्रन्-> -ग्रनः (पं१) इति शोधः? ।  
 l) पा ६, ३, ७५ । वैप१ यद्र. । m) तैआआ १०, ४, १ । n) तैआआ १०, ६७ । o) पा ६, ३, ७७ । वैप१ यद्र. ।  
 p) व्यु? । q) 'पत्तनम्' इति अज्या. । r) वैप१ यद्र. । s) पा. १ यनि. शोधः द्र. । t) पंस. + बस. > कस. । u) व्यु? =नचिकेतस्- । v) =ऋषिपुत्र-विशेष- । व्यु? बस. पूप. =आर्चि- स्यात्? [वैतु. भा. (तैआ३, ११, ८, १) =नस्पृवौ लिङ् रूप-  
 चिकेत्युत्तरः तस.] । w) पा. १ (तु. आन. संटि.; वैतु. निशा., आन.) । x) पा. १ पूप. =नमस्- इति शोधः । y) पा. वा. च ?

✓नद् (\*बधा.)

नद्- -दा: गु २०.

नदी- -दी कौ १,३; अद्वै १०;  
म४९: १९; -दीनाम् गी ११, २८;  
-दीभि: पित्र १, ११; -दीम् कौ १,  
३; ४; -द्य: प्र ६, ५; सुं ३, २, ८;  
छां ३, १९, २; ६, १०, १; वृ ३,  
८, ९; कौ १, ३<sup>b</sup>; मैत्रि ६, २२;  
सुबा ४; महा ५, १४२; इ १०:  
९; गु २०; ३१; ३८.

नदी-तडाग-वापी- -पीषु  
शि ५, १४.

नदी-त(म>)मा- -०मे सर  
२, १०<sup>१</sup>.

नदी-तीर- -रे शां १, ५;  
जाद ५, ४; तारा ८३: १३.

नदी-पुलिन-शायिन्- -यी  
कुं ११; कर ३; कशु ३, ३.

नदी-वेग- -ग: ते ६, ८८.

नद्य(दी-अ)न्त-र(य>)-  
या<sup>d</sup>- -या अक्ष १<sup>५</sup>.

नद्य(दी-उ)त्तरण- -णम् नाप  
५, १; ७.

नदथु- -थु: छां ३, १३, ७.

नाद<sup>a</sup>- -द: हं ८<sup>b</sup>; ९; नाद ३२;  
३३; ४५; ४८; ध्या १०२;  
१०३; ब्रवि ७६; नाप ८, १; सी  
२०; रार ५, ७; राउ १, २; योशि  
१, १७०; ३, २; ३; ११; ५, ७;  
३०; ६, ७२; पत्र २<sup>c</sup>; ग ८; जाद  
६, ३६; ता २, १; वरा २, ८३;  
५, ५२; सौ २, ४; तु ८; नापू १,  
११; सिसि ३८२: १३; व ४६७:  
१; विद्या १; अद्वैमा ४; पित्र १,  
१५; वउ २, १०; ११<sup>३</sup>; १२; -दम्  
हं १६; नाद ३१; ३६; ४०; ४१;

ध्या २; १०३; १०५<sup>१</sup>; १योत  
१३९; २योत २, १; योशि २, १५;  
पित्र ३, ४; -दा: नाद ३<sup>५</sup>; योशि  
१, १२७; १४७; २, २०; -दे  
नाद ३८; ३९; ४१; योशि ५,  
४७; पप ४१९: २९.

नाद-कोटि-सहस्र- -स्त्राणि नाद  
५०.

नाद-ग्रहण-

नादग्रहण-तस्(>) नाद  
४३.

नाद-बिन्दु- -न्दू १योत १२१;  
योशि १, १०५.

नादबिन्दु-समायुत- -तम्  
रापू ४, ५०.

नाद-बिन्दु-कला(ला-अ)तीत-  
-त(१तम्) पाशु २, ४<sup>१</sup>; -तम् मं  
२, १, ४.

नाद-बिन्दु-कला(ला-अ)ध्या-  
त्म-स्व-रूप- -पम् त्रिवि ७,  
५०.

नाद-मध्य-ग(त>)ता- -ता:  
व ४६७: १.

नाद-यक्ष-योगिनी-परिवृ(त>)  
ता- -०ते व ४२७: २०.

नाद-रूप, पा- -पम् योशि १,  
१७८; ५, १५; -पा योशि ६, ४८.

नादरूपि(व>)णी- -णी  
वरा ५, २९.

नाद-लिङ्ग- -ङ्गम् योशि २, ६;  
१३.

नाद-समुद्भव- -वा: योशि ३, ८.

नाद-सिद्धि- -द्धि: योचू ११५.

नाद-स्व-रूप- -प: ता ३, ५, ८.

नादा(द-अ)धा(र>)रा- -रा  
वरा ५, २९.

नादा(द-अ)नन्द-

नादानन्द-मय-

नादानन्दमया(य-अ)-

त्मक- -क: ते ५, ३.

नादा(द-अ)नुसंधान- -नम् पाशु  
१, १२; नाद ४९; योशि ६, ७१.

नादा(द-अ)न्त- -न्ते अ ३; नाद  
४८.

नादा(द-अ)न्तर-ज्योतिस्<sup>१</sup>-

-ति: ते ५, ६; ७.

नादान्तज्योति(१ती<sup>६</sup>)-रूपक-

-क: ते ५, ५.

नादा(द-अ)भिव्यक्ति- -क्ति:  
योचू ९९; शां १, ७, ८; जाद  
५, १२.

नादा(द-अ)सक्त- -क्तम् जाद  
४२.

नदधि- ✓नह द.

ननु<sup>१</sup> महा ५, १८२<sup>m</sup>; व ४६०: १८<sup>१</sup>.

✓नन्द, नन्दते १कौल ८: ४; नन्दन्ति  
अक्ष ५, २४; अनन्दत् अव्य १.

१नन्द<sup>१</sup>- -न्द: कृ ३; सार २५२:  
१०; -न्दस्य सार २५३: १;  
२६०: ४; २६२: १; १०.

नन्द-गृह- -हम् सार २६२: २;  
२६६: १; -हात् सार २५३: ४;  
२६२: ७; २७४: २३.

नन्द-ग्राम<sup>१</sup>- -मे सार २८९: ९.

नन्द-यशोदा-वृषभानु-सत्या-

(त्या-अ)दि- -दय: सार २५४:  
११.

नन्द-रूप- -पम् सार २५२:  
१६.

नन्द-वसु- -सुभि: सार २६२: ७.

नन्द-वृषभानु- -नो: सार  
२५३: ८.

a) धा. अर्थ: १. b) 'नद्य:' इति बे. c) अ २, ४१, १६. d) तु. सस्थ. देशान्तरया-। e) 'नद्यन्तरं

यासि' इति निसा.। f) बअ. प्राति. द्र.। g) 'नादे' इति निसा., आन.। h) वा.१ (तु. उत्र. ज्योस्वि<sup>०</sup> इति१)।

i) पा.१ [तु. अ. ब्या. संटि. '०त्' इति (यत्र यनि. शोध: द्र.); वैतु. निसा., अ. ब्या. '०ला त्रीणि इति]। j) '०न्तज्यो' इति

अ. ब्या. संटि.। k) पा.१ यनि. शोध: द्र.। l) अव्य. वैप१ यद्र.। m) तु. सस्थ. टि. १अननुसङ्गति। n) अ १०, ८४, ३।



नन्दा(न्द-आ)दि- -दयः सार  
२५०:२१; २८०:२.  
नन्दो(न्द-उ)पनन्द-भद्राश्व-  
कृतवद्-उग्रभङ्गो(ङ्ग-उ)दधि-  
सामन्ता(त-अ)तिरोचिष्मत्-  
कात्येयमत्स्य(ति-अ)नघ-रोचि-  
ष्मद्-उष्णीषरश्मि-वसु-सुजय<sup>१</sup>-  
-याः सार २५२:१२.  
नन्द-  
नन्दा<sup>१</sup>- -न्दा वृजा १,१.  
नन्दक<sup>१०</sup>- -काय त्रिवि ७,४२.  
नन्दन<sup>१</sup>- -ने १कौल ८:४; २कौल  
१४.  
नान्दन- -नम् ऐ ३,१२.  
नन्दि<sup>१०</sup>- -न्दिः मना १,६९<sup>१</sup>; २,  
१९<sup>०</sup>; -न्दिम् व ४५९:६.  
नन्दि-विद्या<sup>१</sup>- -द्या त्रिता १,  
६८.  
नन्दि-स्कन्द-महाकाल<sup>१</sup>- -ला:  
शि ७,१३५.  
नन्दी(न्दि-ई)श्वर-  
नन्दीश्वर-महाकाल<sup>१</sup>- -लौ शि  
२,१५.  
नन्दिन्- -न्दी वपू २,४.  
नपुंसक,का<sup>१</sup>- -कः श्वे ५,१०; गर्भ  
३; निरु १,७; भव २,२५;  
-कम् वृजा ४,६; -का गु ६५.  
नपुंसक-कुमार- -रस्य ते ६,९०.  
नपुंसक-नामन्- -मानि कौ १,७९<sup>१</sup>.  
नभ- नाभि- द्र.  
नभस्<sup>१</sup>- -भः वृ १,१,१; त्रिवा २,  
१४१; महा ५,१८४; अघ्या ५१;  
५२; कुं २४; ग ६; बा १५; पा  
७,६; गी १,१९; -भसः मैत्रि ६,

३५<sup>१</sup>; ७,११<sup>१</sup>; अन्न २, २३;  
-भसि मैत्रि ६,२७; ७,७; ११.  
नाभस- -से वरा ५,५१<sup>१</sup>.  
नभ-स्थल- -लम् महा ३,२४.  
नभः-स्थ- -स्थः योशि ५, ३२;  
-स्थम् ब्रवि २०.  
नभः-स्पृश- -स्पृशम् गी ११,२४.  
नभः-स्वरूप- -पात् अन्न ३,  
२४.  
नभस्-वत्<sup>१</sup>- -वता त्रिवा २,८५.  
नभो-जल- -लम् योचू ५०.  
नभो<sup>१</sup>(भस्-उ)पम- -मः त्रिता ५,  
१३; अवि १३.  
नभो-मार्ग- -गौम् त्रिवि ५,१२.  
नभो-मुद्रा<sup>१</sup>- -द्रा ध्या ८५; योचू  
४५; ५८.  
नभो-विहरणा(ण-आ)दिक- -कम्  
अन्न ४,२.  
नभो-वृक्ष- -क्षः योशि ४,१९.  
नभ्य- नाभि- द्र.  
✓नम्, >नामि, नमन्ति चपू २, १७;  
राउ ५,३; कृ २२; सार २७३;  
१; शि ५,२८; नमामि गौ ४,  
२; चपू २,६; १२; १७<sup>१</sup>; ९<sup>१</sup>; चउ  
४,४; ५,१-३; ६,१; शु १,१८;  
त्रिवि ७,४०; योशि ६, २०;  
अव्य २; दे १६; १९; भ १,५;  
सर १,४; ३,६; तुल ७१:५; मृ  
१५; वपं ३१२:११; व ४२६;  
१३; ४२७:४; ४५७:१३;  
४५९:२०; नमामः दे ६; नमेत्  
नाप ५,१; नमेरन् गी ११,३७.  
ननाम महा २,२८; वउ ३,६२.  
नम्यन्ते तै ३,१०,४.

नामयति अशि ४,३; वउ ३१५:  
१८; नामयेत् १योत ११४<sup>१</sup>.  
नत-  
नतो(त-उ)त्तमा(म-अ)ङ्ग- -ङ्गः  
भ १,१.  
नति<sup>१</sup>- -तिः रार २,७५; ९२; रापू  
४,५७; ६३; अन्न १,५.  
नति-युत- -तः रार २, २५.  
नति-शक्ति- -कम् रार २,  
९५.  
नत्य(ति-अ)न्त- -न्तः रार २,  
१९.  
नत्वा वउ ४,१-३; नाप १; मं १,  
१, १; रापू ५, ३<sup>१</sup>; शां १, ५;  
महा ३,२; योशि ६,४१; पप  
४१८:३३; अन्न १,१०; अञ्जि १.  
नमत्- -मताम् हे १२.  
नमस्<sup>१</sup>- -मः क १,१,९; प्र ६,८<sup>१</sup>;  
मुं ३, २, ११<sup>१</sup>; तै शां<sup>१</sup>; ३,  
१०,४; छां २,२४,५; वृ २,६,  
३; मै ४,४,१४; मैत्रि ४,१; अशि  
६,२९<sup>१</sup>; मना १,१२<sup>१</sup>; -मः-मः  
श्वे २,१७; अशि ६,४९<sup>१</sup>; चपू ४,  
१५,१; १संन्या २,२५; अञ्ज १२;  
त्रिता ४,३७; रुह १७; वरा २,३३;  
ग १५; -<sup>१</sup>मसा मना २, ५३;  
२शिसं २९; -मांसि नी २,६९<sup>१</sup>;  
-मोभिः श्वे २, ५९<sup>१</sup>; मना २,  
१२,२९<sup>१</sup>.  
<sup>१</sup>नम-उक्ति- -क्तिम् ई १८; वृ  
५,१५,१.  
नमः-पद- -दम् राउ ५,३.  
नमः-स्वाहा-वषट्-वौषट्-पदा-  
(द-अ)न्त- -न्ताः नापू ४,२०.

a) =गोविशेष-। b) =विष्णुखण्ड-। c) तु. टि. दन्ति-। d) तैआ १०,१,६। e) तैआ १०,१,१६।  
f) पा ६,३,७५। वैप १ यद्र.। g) 'नपुंसकानि' इति आन.; शांआ ३, ७; बे.। h) वैप १ यद्र.। i) 'नाम्भसे' इति  
निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अघ्या.)। j) पा ५, २, ९४; १, ४, १९। k) संधिरार्षः द्र.। l) 'मानयेत्' इति  
अघ्या. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. निसा.)। m) =नमस्-। n) नन्दी<sup>१</sup> इति निसा. संटि.; 'नम्पूर्वान्' इति आन., अघ्या.।  
o) ऐआ ८,९,५<sup>१</sup>; तैआ ७,१,१<sup>१</sup>। p) शौ ७,८७,१। q) तैआ १०,१,१२<sup>१</sup>। r) माश्रौ ६,२,४। s) 'सदम्' इत्।  
त्वा' इति ऋ १,११४,८। t) 'नमः' इति मा १६,१४। u) ऋ १०,१३,१। v) ऋ ४,५८,२। w) ऋ १,१८९,१।

नमस्<sup>१</sup>/क, नमस्करोति<sup>२</sup> राउ  
४, १; नमस्कर्मः गौ ४, १००;  
नमस्कुरु गी ९, ३४; १८,  
६५; नमस्कुरीति त्रिता ३, ३०;  
नमस्कुर्यात् अव्य ७; रुह २४;  
शि ७, ६; ७.

नमस्-कार- -रः ते ६, २३;  
मं २, २, ५; भा ३९; आपू ६; -रम्  
रुह ११; इ १६; १३; -रात् षो  
२०; -रेण वृ ३, ८, १२ ब्रवि ५६;  
शि ७, ५.

नमस्कार-पुरस्-सर-  
-रः शि ७, ६७.

नमस्कारा(र-अ)भिवाद-  
न- -नम् शि ७, ८७.

नमस्-कार्य- -र्यम् त्रिता १,  
२३.

नमस्-कृत, ता- -तः रा  
४२३: १४; -ताम् सुमु १७.

नमस्-कृत्य मै १, १; मैत्रे १,  
१; योचू १०६; त्रिवि ५, १; ६,  
१०; वा १; वरा १, १; ऊ ६३:  
५; गोच ६५: १; ६६: ३; वि  
१०; गार ४०५: १.

नमस्-कृत्वा<sup>३</sup> वा ६; गी ११,  
३५.

नमस्-तारा(र-अ)त्मक- -कः  
रार २, ७४.

✓नमस्य, नमस्यन्ति रुह ६;  
शुषो ४२१: ८; गी ११, ३६;  
नमस्यामि रुह २४; नमस्याम<sup>४</sup>  
च २१: १९.

नमस्यत्- -स्यन्तः गी ९, १४  
नमस्य- -स्यः क १, ९; -स्यम्  
योशि ३, १९; स्याः शि ७, १३८.

नमो(मस्-अ)न्तक- -कः रार २,  
९८; १०१; १०३.

नमामि<sup>५</sup>

नमामि-स्व- -स्वात् वृ ७, ९.

नम्र, आ- -अः शि ७, २१; -आः सार  
२२२: २२; २२६: ४; २२९: १२;  
२३४: १५; २४३: १५; २६९:  
६; १९; २८१: १२; २८७: २२;  
-आणि सार २६६: १०; २७०:  
१९.

नम्र-तनु- -नोः श १७.

नामयत्- -यन्तम् अशि ५, ८.

नमत्- -नमस्<sup>६</sup> ✓नम् द्र.

नमस्यान्<sup>७</sup> आग २४: ९.

नमा<sup>८</sup> वृपू १, १३.

नमि<sup>९</sup>

नमि-केतु<sup>१०</sup>- -तुम् गार ४०७:  
१५.

नमुते<sup>११</sup> के १, ५.

नय- -नयत्- -नयन- ✓नी द्र.

नयनप्रधान<sup>१२</sup>- -नम् रकौल ४.

नर<sup>१३</sup>- -रः क १, ३, ९; अना १३: ते  
६, २६; ७७; ध्या ३८; ६४; ६९;  
ब्रवि २८; ३०; ५४; नाप ३, ३८;  
त्रिना २, १०२; ११९; योचू ४०;  
त्रिवि ८, २२; अता ५; राउ ५,  
१५; शां १, ७, ४५; पै ४, १५;  
महा ४, ७९; योशि १, १४८;  
६, २५; ३०; ४४; त्रि ११; कर  
२४; २५; २८; रुह १७; ३६; यो  
१, २; रुजा १, ५; ६; १९; २, १७;  
जाद १, २२; ४, ५५; ६, २३; २५;  
२८; ३९; च २०: ३; लां २१६:  
२१; शि १, २३; २, ३१; ४, ५५;  
५८; ६, ३२; ३५; ५६; ६४; ७०;

७१; १०३; १३२; १९९; २०२;  
२०४; २११; २१८; २१९; २३०;  
२७०; २७३; ७, १०३; स ३७९:  
११; भव २, १२; ३२; ३८; ६२;  
गी २, २२; ५, २३; १२, १९; १६,  
२२; १८, १५; ४५; ७१; -रम् सी  
३६; महा ३, ३५; ४३; योशि  
१, १६०; या २, ९; शि ६, १६७;  
-राः वृजा ५, १३; ते १, ४३; शि  
१, ३; ३२; ५, २८; ६, १८७; तारा  
८४; १४; भव १, ५४; -राणाम् गी  
१०, २७; -रात् वृ ३, ३३; -रे  
ई २; -रेण क १, २, ८; -रैः रुजा  
१, १; भव १, ३२; गी १७, १७.  
नारी<sup>१४</sup>- -री नाद १११; महा  
३, ४६; रुह १७; या २, १२; शि ६,  
२२२; -रीणाम् गी १०, ३४; -रीम्  
नाप ३, ६४; ६, ३१; -र्यैः १योत  
६१; महा ३, ४३; ४५; या २, ९;  
११.

नारी(री-ई)श्वर- -रः कालि  
४०१: ६; स्या ६.

नर-केसरि-विग्रह- -हम् वृपू १, १२  
नर-द्वयो(य-उ)च्छित- -ते शि ७,  
७६.

नर-नागा(ग-अ)मर- -रेषु अज  
५, ९४.

नर-नारायण-पुरी<sup>१५</sup>- -री राधा ४, ५  
नर-पति- -तिः भव २, ३४.

नर-पञ्च-मृगा(ग-आ)दि- -द्वयः  
नापू ५, २३.

नर-पुं-गव- -वः गी १, ५.

नर-भाव- -वम् जाद ४, ६१.

नर-मृग-किंपुरुषा(ष-अ)मर-किंनरा-  
(र-अ)प्सरो-गण- -णान् नाप १.

a) गतित्वं द्र. (पा १, ४, ७४)। b) पा ८, ३, ४०। c) पा ७, १, ३८। 'नमस्कृत्य' इति अज्या। d) विशिष्ट इह  
ऋ. (८, ४८, ३) पाप्मे। e) 'नमस्य' इति अज्या. (वैतु. अज्या. संटि.)। f) मन्त्रगतस्य क्रिप. स्वरूपानुकारः। g) वा. ?।  
h) 'नमामि' इत्यस्य पूर्वाशः द्र.। i) 'नाम' इति निसा.। j) अर्थः व्यु. च १। k) = अषिविशेष-। l) ना<sup>१</sup> इति  
मुपा. यनि. सु-आधः। m) 'मनुते' इतिपरः शोधः (तु. निसा.)। n) पा. ? 'नयनं प्रधानम्' इति द्विपदः शोधः द्र.।  
o) वैप १ यद्र. [वैतु. उब्र. (सी ६) = पन<sup>१</sup> + र- (तस.)]। p) पावा ४, १, ७३। q) = मात्राविशेष-। 'मौनी' इति आन.।

नर-लोक-वीर- -राः गी ११, २८.  
नर-वपुस्- -पुषम् अव्य २.  
नर-विग्रह- -हम् वरा २, ५.  
नर-विहंग- -गानाम् महा ३, ४५;  
या २, ११.

नर-शृङ्ग- -क्षेण ते ६, ७५.

नर-सिंह<sup>१</sup>- -०ह त्रिवि ७, ३१; -हः  
नापू ५, ६<sup>१</sup>; -हाय त्रिवि ७, ४१<sup>७</sup>.

नारसिंह- -हः मना १, ७९<sup>०</sup>;  
२, १९<sup>१</sup>; व ४६३ : ५९<sup>०</sup>; -हम्  
वृपू १, २; २, १; ५, ८<sup>२</sup>; १२-१६;  
१८; वृष्ट ४, २; रार १, ७; रापू  
४, ५५; वृष ८४:१५; ८५:१५;  
-हस्य वृपू ३, १; ४, १; ५, १; ११;  
-हानि वृष ८४ : २; ४; ८५ : ८;  
-हाय वृष ८४:१९; वर्ष ३१२ :  
१३; -हेन वृष्ट २, ११.

नारसिंह<sup>१</sup>- -०हि व  
४५४:१३; ४५८:१२; -ही वृपू  
३, २; पी ४२२:१०; श्या १३.

नारसिंह-गाय-

त्री- -त्रीम् वृष ८४ : १३.

नारसिंहि-(क>)-

का<sup>१</sup>- -का कालि ४०१ : ११<sup>०</sup>.

नारसिंह-चक्र- -कम् वृष  
८४ : १; २; -क्राणाम् वृष ८४ :  
१७; २१; ८५:५; -क्राणि वृष ८५:  
११.

नारसिंहचक्र-नामन्-

-मानि वृष ८४:८.

नारसिंह-बीज<sup>१</sup>- -जम्

रार ३, १.

नारसिंह-वद(न>)ना<sup>१</sup>-

-०ने व ४६४:२२.

नारसिंह-वाराह- -हे रार

३, १.

नरसिंह-पुरी<sup>१</sup>- -री राधा ४, ५.

नरा(र-अ)धम- -मः महा ६, २३;

-माः गी ७, १५; -मान् गी १६,  
१९.

नरा(र-अ)धिप- -पम् गी १०, २७.

नरा(र-आ)रूढ- -ढः व ४४० : ५.

नरे(र-इ)न्द्र- -०न्द्र इ ११ : २३;  
१३ : ९.

नर्य- -र्या नाप ४, ३८९<sup>४</sup>.

नर्य-भस्मन्- -स्म भ १, १०.

१नरक<sup>१</sup>- -कः नि ९; ३३; ३४९<sup>१</sup>;

पित्र १, १५<sup>२</sup>; ९१; -कम् ते ५,

९१; ब्रवि ४८; नाप ३, १३; २९;

इ १३ : ८; १६; १४ : १२; १७:

२२; शि ७, २८; ३७; भव १, ३४;

-कस्य गी १६, २१; -कात् गोच

द ७:१; -कान् पहं ३; नाप ५,

२; -काय गी १, ४२; -के नाप

३, ४८; ४, २८; इ १९:१२; भव

१, ६; ७; ५४; गी १, ४४; १६, १६.

नारक- -कैः भव १, ६.

नारकिन्- -की नाप ४, १६.

नरका(क-अ)भि- -अ्रीनाम् महा ३,

४४; या २, १०.

२नरक<sup>१</sup>-

नरका(क-अ)न्तक- -कः कुं १७.

नरा-शंस<sup>१</sup>-

नाराशंस<sup>१</sup>- -सेषु शौ ५१ : २.

नाराशंसी- -सीः वृजा ८, ५;

वृपू ५, १८; वृष्ट ५, १९.

नर्तकी- -वृत्त द्र.

नव<sup>१</sup>- -वम् शि ६, ८; -वानि भव २,

३८<sup>२</sup>; गी २, २२<sup>२</sup>; -वैः कौ २,

१५; शि ४, ४९; ६, १४५.

नव-कार<sup>१</sup>-

नवकार-श्मशान-भस्मन्-

-स्मना व ४३३ : १५.

नव-किशोरी- -री सार २४४ : ९.

नव-जाया- -यया सार २७७ : १.

नव-तर- -रः वृ ३, ९, २८, ४; -रम्  
वृ ४, ४, ४<sup>२</sup>.

नव-दूर्वा-सदृशी- -शी व ४२६ :  
११.

नव-नीत-

नवनीत-रस- -साः सार २६७:६

नव-प्रसूत, ता- -तस्य महा ५, १२;

-ताम् वृजा ३, १.

नव-रोम-राजि-

नवरोमराजी(य>)या- -या

सार २४५ : ३.

नव-श्राद्ध- -द्धम् मना २, ६४९<sup>३</sup>.

नवा(व-अ)वस्था- -स्था महा ५, ११.

नव्यस(>: <sup>१</sup>) मना २, १९<sup>०</sup>; व  
४६१ : १०९<sup>३</sup>; १६९<sup>१</sup>.

नवन्<sup>१</sup>- -व छां ५, ९, १; ब्रवि ७५;

योचू १०७; राउ ४, ३०; त्रि २<sup>१</sup>;

भा ९; रुजा २, ११; इ १५:१;

निरु २, २; गु ७; -वभिः १योत

१४२; शां १, ४; शि २, २६;

-वसु योरा ५; -वानाम् त्रि २.

१नव-कोण<sup>१</sup>-

नवकोण-(ग>)गा- -गाः श्या  
१२.

२नव-कोण<sup>१</sup>- -णम् कालि ४०१:८.

नव-खेट<sup>१</sup>- -टः(१टा: <sup>१</sup>) सूता ५, ६.

नव-ग्रह<sup>१</sup>- -हाः गार ४०८ : १०.

नव-चक्र<sup>१</sup>- -कम् मं ४, १, ५;

-क्राणाम् योरा १९.

नवचक्र-विवेक- -कम् सौ ३, १.

नव-तत्त्व<sup>१</sup>- -त्वम् पत्र २.

नवतत्त्व-त्रिर-आवृत्त(१त्त<sup>१</sup>)-

-त्त(१त्त<sup>१</sup>)म् पाशु १, १४.

a) ०सिद्धः इति सुपा. यनि. सु-शोधः । b) ना<sup>०</sup> इति निसा. । c) तैआ १०, १, ७ । d) तैआ १०, १, १६ ।

e) ०सिंहो इति तान्त्रि. । f) =कुर्यौ । g) तैआ २, ५, ८, ८ । h) व्यु. ? । i) व्यु. ? =राक्षसविशेष- । j) वैप १ यद्र. ।

k) =नवीन- । वैप १ यद्र. । l) वस. । उप. =रकाळ- । m) तैआआ १०, ६४ । n) वा. क्रिवि. द्र. । o) ऋ १,

१८९, २; ८, ११, १० । p) ऋ १, १८९, २ । q) ऋ ८, ११, १० । r) द्विस. । s) वस. । t) पा. ? यनि. शोधः द्र. ।



नवति<sup>a</sup>-

नवत्य(ति-अ)कुल-लम् शि ४,  
३.  
नव-दल-पञ्च- -द्यम् त्रिवि ७, ३२.  
नव-द्वार<sup>b</sup>- -रे १योत १४१;  
२योत २, ४.  
नवद्वार-मल-स्त्राव- -वम् मैत्रे  
२, ६.  
नव-द्वार, रा<sup>c</sup>- -रम् गु ३२; -रा  
अरु १८९<sup>d</sup>; -रे श्वे ३, १८; योशि  
१, ७२; गु ५०; गी ५, १३.  
नव-धा छां ७, २६, २; सांस् ३,  
३९; ४३; सांका ४७.  
नव-नाथ-नाम-विशिष्ट- -ष्टम्  
पारा ११.  
नव-नाथा(थ-अ)धिष्ठित- -तः चक्र  
९.  
नव-पा(द>)द्-  
९<sup>e</sup>नवप(द>)दी- -दी ह १६;  
चक्र ३.  
नव-ब्रह्मा(ह्य-आ)ख्य-नव-गुणो-  
(ण-उ)पेत- -तम् पत्र २.  
नव-म- -मः हं १६; नापू ५, ७;  
शि २, २५; -मम् हं १७; नृपू  
२, ६; त्रिता २, ६४; यो १, ६०;  
जाद ३, २; दत्ता १, ६; योरा  
१७; ऊ ६४ : ८; गार ४०७ :  
६; १२; -मे हं २०; गर्भ ३; अक्ष  
५; त्रिता १, ६९; निरु १, १४;  
सूता ५, १२; -मेन पिं १५.  
नवमी-मी नाद ११; नाप ८,  
१; त्रिता ३, १३; १६; तु ९;  
सार २६७ : १९; -मीम् गोउ २६;  
-म्याम् नाद १६; व ४६२ : १०.

नवम-श्रेणी- -ण्याम् सार

२७० : १६.

नव-मान-मित- -तम् पत्र २<sup>f</sup>.  
नव-रत्न-द्वीप- -पः भा ४.  
नव-रन्ध्र-रूप- -पः भा २.  
नव-रेखा(ख-अ)- -स्वर-मध्य-  
-ध्यम् त्रि १०१<sup>g</sup>.  
नव-लक्ष-जप- -पम् त्रिता ३, २२.  
नव-वक्त्र<sup>h</sup>- -क्त्रम् रुजा २, ११.  
नव-व(र्ष>)र्षा<sup>i</sup>- -र्षा इ १६ : १६.  
नव-शक्ति<sup>b</sup>-  
नवशक्ति-रूप- -पम् भा ३<sup>b</sup>.  
नवशक्त्य(क्ति-अ)धिदैवत- -तम्  
रुजा २, ११.  
नव-शक्ति<sup>c</sup>- -क्तिम् सौ १, ३.  
नव-सूत्र<sup>d</sup>- -त्रान् पाशु १, २७.  
नव-हस्त<sup>e</sup>- -स्तः शि २, ७.  
नवां(व-अ)शक- -कम् मैत्रि ६, १४.  
नवा(व-अ)क्षर- -रः द ४.  
नवा(व-अ)कुल- -लम् त्रित्रा २, ५८;  
शां १, ४; जाद ४, ३; -लात् वरा  
५, २०<sup>h</sup>.  
नवा(व-अ)त्मक- -कम् नृउ ४, ३;  
त्रिता २, ४७.  
नवा(व-अ)धिक-शत- -तम् सु १,  
१, १२.  
नवा(व-अ)र्ण- -र्णः रार २, ४०;  
-र्णेन रार ३, १.  
नवा(व-अ)र्णक- -कः दे १४.  
नवा(व-अ)शीति-न्यास- -सानाम्  
रा ४२३ : १३-१६.  
नवा(व-अ)ह-  
नवाहिक- -कम् व ४३३ : १८.  
नवनावमाख्यम्<sup>j</sup> रशिसं ७.

नवस्<sup>k</sup>-नवो-द<sup>l</sup>- -दः बा ८.

नव्यस्- नव- द्र.

✓नश्(अदर्शने), > नाशि, नश्यते बरा  
५, ५; नश्यति छां ८, ५, ३; ९,  
१; २; आबो १८; अता १९;  
त्रित्रा २, १२२<sup>m</sup>; महा ४, २९;  
योशि १, ५१; अत्र ४, १६; सू  
२७; अध्या ४; जाद ६, १९;  
नश्यतः अत्र ४, ५४; नश्यन्ते  
चू १८; नश्यन्ति त्रिवि ५, १०;  
शां १, ७, १४<sup>n</sup>; ५१<sup>o</sup>; योशि १,  
३६; यो १, १८; जाद ६, ३०;  
चा २; गोच ६८ : २; नश्यतु  
मना १, १०९<sup>p</sup>; व ४६२ : ७;  
१४९<sup>q</sup>; नश्येत् ते १, ४८.  
अनेशान् नी २, १३९<sup>r</sup>.  
नाशयते वृजा ४, ३२; दे ४<sup>s</sup>; गरु  
५; नाशयति जा २; ना ५<sup>t</sup>;  
राउ ३, १ अक्ष १६<sup>u</sup>; दे २२<sup>v</sup>;  
रुजा ३, १<sup>v</sup>; ग १६<sup>w</sup>; मवा १२<sup>x</sup>;  
इ १० : १६; गोच ६७ : १९;  
नाशयामि मना २, ६६९<sup>y</sup>; गी  
१०, ११; नाशय सूता २, ९९<sup>z</sup>;  
व ४३२ : १८; ४६४ : १७९<sup>aa</sup>;  
नाशय-नाशय गरु ६<sup>ab</sup>; लां  
२१४ : १८; व ४३८ : १५; हंषो  
१२; नाशयेत् ते ३, ६६; आबो  
२८<sup>ac</sup>; नाप ६, ३६; राउ ५, १५;  
अनीनशः सूता ३, १०९<sup>ad</sup>.  
नश्यत्- -न्यत्सु गी ८, २०.  
नश्वर- -रम् शु ३, १४; नाप ५,  
१<sup>ae</sup>; ६, १; महा ३, ५३.  
नष्ट, द्या- -ष्टः ते ६, ७५; योशि

a) पा ५, १, ५९ । b) द्विस. । c) बस. । d) शौ १०, २, ३१ । e) ऋ १, १६४, ४१ । f) °तः इति  
निसा. । g) रवे रेखा स्व° इति निसा. अज्या. च सुपा. यनि. सु-शोघौ (तु. तान्त्रि.) । h) °क्तिमयम् इति अज्या.,  
°चक्र° इति तान्त्रि. । i) नता° इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोघः (तु. अज्या.) । j) पा. ? = नवना(न-अ)वभास्य->  
-स्यम् । एस्थि. पूष. < ✓ तु द्र. । k) नैप्र. = नमस्- (= अन्न-) । l) उस. उप. कर्तरि < ✓ दा(दाने) । m) 'न श्रुतिः' इति  
निसा. । n) 'नश्यति' इति अज्या. । o) विन° इति अज्या. । p) तैआ १०, १, १० । q) मा १६, १० । r) 'नाशयते'  
इति अज्या. । s) तैआआ १०, ६६ । t) ऋ १, ५०, ११ । u) तैआ ४, ३९, १ । v) तैआ ३, ७, ६, २ ।

१,३५, गी ४,२; १८,७३; -ष्टम्  
बृजा ४,३३; ते ३,५५; ६,१०;  
आबो २१; शां १,७,२२; अज  
४,१३; ५,३; जाद ६,४५; गरु  
९; १२-२४; इ १३; १६; १४:  
१२; मृ १३; शि ६,२४८; २४९;  
२५१; ७,८०; ८३; योसू २,२२;  
-ष्टम्-ष्टम् महा ५, १७०; -ष्टा  
महा ५, ११६; योशि १,३४; -ष्टा:  
वरा ३,२२; -ष्टान् गी ३, ३२;  
-ष्टायाः त्रिवि ५, १, २; -ष्टे नाद  
२६; १आ २२; यो ३, ३१; जाद  
४, ६३; ६, ४६; गी १, ४०.  
नष्ट-ज्ञान- -नाः वृजा ६, ५.  
नष्ट-द्वन्द्व- -द्वः मं ३, १, ४.  
नष्ट-प्रज्ञ- -ज्ञेषु महा ४, ११२.  
नष्ट-व(त्स>)त्सा- -त्सा इ  
१२: १८.  
नष्टा(ष्ट-आ)त्मन्- -त्मानः गी  
१६, ९.  
नष्टा(ष्ट-अ)पहृत- -तम् शि ६,  
२४७.  
नष्टे(ष्ट-इ)ष्टा(ष्ट-अ)निष्ट-  
कलन<sup>a</sup>- -नः १संन्या २, ४९.  
नाश- -शः कै २, ३; ते ५, ७७<sup>b</sup>;  
६, ७९; त्रिब्रा २, १०६; महा ५,  
९७; योशि १, १२४; अध्या ५८;  
मु २, २, ३८; सांस् १, १२१;  
-शम् छां ८, ९, १; ते ६, २१; महा  
३, ५२; ५, ९८; १६४; अज ४,  
१५; वरा १, ८; मु २, २, ३३;  
३९; शि ६, १५९; व ४६५: १५;  
-शाय गी ११, २९<sup>c</sup>; -शे योचू  
७२; जाद ६, ५१.

नाश-हेतु- -तवे १योत ६३.  
नाशै(श-ए)क-धर्म-  
नाशैकधर्मिन्- -र्मिणः महा  
३, ३१.  
नाशन- -नम् गी १६, २१.  
नाशित- -तम् गी ५, १६; -ता:  
राउ ५, २५; -ते ते ६, ७७.  
ना(शि>)शी- -शी जा २<sup>१०</sup>; ४<sup>१५</sup>;  
राउ ३, १<sup>१०</sup>; -श्याम् जा २<sup>१०</sup>;  
राउ ३, १<sup>११</sup>.

नष्ट- ✓नश(अदर्शने) द.

नस्- -नस्य- नासा- द.

✓नह्

नद्धि(इद्धि<sup>d</sup>) - -द्ध(इद्ध<sup>e</sup>)यः छाग  
२५: ११.

१नाक<sup>h</sup>- -कम् छां २, १०, ५; कै १,  
३४<sup>i</sup>; मना २, १२, ३४<sup>i</sup>; २, ७९<sup>j</sup>;  
मवा १०<sup>k</sup>; सु २९४: ४; -कस्य  
मु १, २, १०; मना १, १४<sup>i</sup>; १३<sup>m</sup>;  
२, २४<sup>n</sup>; त्रि ७; व ४६१: १९<sup>o</sup>.

२नाक<sup>o</sup>- -कः तै १, ९, १; वृ ६, ४, ४.

१नाग<sup>p</sup>- -गः वृजा ४, २३; -गाः अशि  
६, ६; गोउ २२; -गान् वृपू ५,  
१५; वउ ३, २३; -गानाम् ह ९;  
गी १०, २९; -गेन वृ १, ३, २२.  
नाग-क- -कः गरु २२.

नागक-दूत- -तः गरु २२

नाग-कन्या- -न्याः वृजा ४, २३.

नाग-भूषण- -णम् गरु ५.

नाग-रू(प>)पा- -पा त्रिब्रा २, ६५.

नाग-लोक<sup>q</sup>- -काः गु १९; -के सार  
२४२: १४.

नागा(ग-आ)भरण-भूषित- -तम्  
गरु ५<sup>r</sup>.

२नाग<sup>s</sup>- -गः ध्या ५७; ब्रवि ६७;  
योचू २३; २५; त्रिब्रा २, ७७;  
८६; जाद ४, २४; -गम् सुबा ९<sup>t</sup>;  
१५.

नाग-कर्मन्- -र्मं शां १, ४.

नाग-कर्म-कृकर-देवदत्त-धनं-

जय<sup>u</sup>- -याः शां १, ४; पै २, १०.

नागा(ग-आ)दि-वायु- -यवः त्रिब्रा  
२, ८२; शां १, ४; जाद ४, ३०.

नागा(ग-आ)द्य- -द्याः ध्या ५७.

३नाग<sup>v</sup>-

नाग-दन्ता(न्त-आ)दि-संभूत-  
-तम् शि ७, ६४.

नाग-सम- -मः वउ ५, २१.

नागा(ग-आ)नन- -नः हे १२.

नागे(ग-इ)न्द्र- -न्द्रः ते ६, ७४;  
-न्द्रम् सु २, २, ४७.

नागेन्द्र-हस्त- -स्ताः सार  
२६५: १३.

४नाग<sup>w</sup>-

नाग-केसर<sup>x</sup>- -रम् शि ६, ७४.

नागकेसर-पुष्प- -ष्पम् शि ४,  
३७.

नाग-पुष्प<sup>y</sup>-

नागपुष्प-शिरो-रु(ह>)हा-  
-हाम् व ४५६: २.

५नाग<sup>z</sup>-

नाग-वीथी<sup>aa</sup>- -थी गु १०.

नाचिकेत- नचिकेत- द.

नाडि, डी<sup>x</sup>- -डयः योचू २१; त्रिब्रा २,  
७५; जाद ४, ६; वरा ५, २७;  
-डिभिः १प्र ३१: १९; -डी वृ  
४, २, ३; मैत्रि ६, २१; ३७;  
७, ११; सुबा ५<sup>aa</sup>; वु ८; २०<sup>y</sup>;

a) बस. । उष. द्वस. गर्भितः बस. । b) °शम् इति अज्या. । c) °सी इति आन., अज्या. । d) °सी इति निसा. अज्या. च मुपा. यनि. सु. शोघौ (तु. आन.) । e) °स्याम् इति आन., अज्या. । f) °स्याम् इति निसा. अज्या. च मुपा. यनि. सु. शोघौ (तु. आन.) । g) पा. ? यनि. शोघः । h) वैपश् यद्र. । i) तैआ १०, १०, ३ । j) तैआ १०, ६३, १ । k) श्र १, १६४, ५० । l) तैआ १०, १, १ । m) तैआ १०, १, १३ । n) तैआ १०, १, १६ । o) व्यु. ? = अष्टविशेष- । p) व्यु. ? = सर्पविशेष- । q) नादा° इति निसा. । r) व्यु. ? = वायुविशेष- । s) व्यु. ? = हस्तिन्- । t) अर्थः व्यु. च ? । u) व्यु. ? = ओषधिविशेष- । v) व्यु. ? = १नाक- ? । w) = नक्षत्रविशेषान्तर्गत-गगनैकदेश- । x) व्यु. ? । y) °डीनाम् इति अज्या. ।

ध्या ५५<sup>a</sup>; ब्रवि १०; त्रिब्रा २, ६८;  
७३; योशि ५, २०; २३<sup>c</sup>; २४;  
२७; जाद ४, ५; १८; २२; २३;  
वरा ५, २३; २५; -डी: वरा ५,  
१८; -डीनाम् प्र ३, ६; त्रिब्रा २,  
८९; वरा ५, २०; ४२; ५४;  
-डीभि: छुट<sup>b</sup>; शां १, ४; -डीभ्य:  
छां ८, ६, २; -डीभ्याम् शां १, ७,  
४९; योशि १, ९३; यो १, २६;  
-डीम् जु ९, ११; ब्रवि ११<sup>c</sup>;  
षो २३; -डीषु छां ८, ६, २, ३;  
योचू २६; शां १, ४<sup>d</sup>; जाद ४,  
२४; वरा ५, ३१; ब्रसू ३, २, ७;  
-ड्य: क २, ३, १६; सुं २, २, ६;  
छां ८, ६, १, ६; वृ २, १, १९; ४,  
२, ३; ३, २०; ब्र १; कौ ४, १९;  
सुबा ४<sup>e</sup>; ११; ध्या ५१; ५५;  
त्रिब्रा २, ७५; ९९; योचू १५;  
शां १, ३, १२<sup>d</sup>; १, ४<sup>d</sup>; योशि ५;  
२०; २६; ६, ४; १४; भा १४; वरा  
५, २८; ५४; -ड्याम् सुबा ५<sup>f</sup>.  
नाडि-(क>)का- -का: त्रिब्रा २, ७५;  
११८; -के त्रिब्रा २, ७१.  
नाडि-गण- -णा: योचू ९८; शां १,  
७, १.  
नाडि-जाल- -लस्य योचू ६५.  
नाडि-मार्ग- -गेषु ध्या ९८<sup>g</sup>.  
नाडि-शत- -तम् जु १५; योशि ६, ५  
नाडि-शोधन- -नात् योचू ९९; शां  
१, ८.  
नाडि-संचय- -यम् जु १५<sup>f</sup>.  
नाडी-गति- -तिम् वरा ५, ३१.  
नाडी-चक्र- -क्रम् योचू ९४; योशि  
५, २७; वरा ५, २२; -क्रम्य योशि  
५, १६; -के शां १, ७, ९.  
नाडी-जला(ल-अ)पह- -हम् योशि  
१, ९४.

नाडी-जलो(ल<sup>h</sup>)द(ह<sup>h</sup>)र- -रम्  
यो १, २९.  
नाडी-द्वार- -राणि योशि ६, १७;  
-रेषु ध्या ७०.  
नाडी-नामन्- -मानि सुबा ६.  
नाडी-पुञ्ज- -ञ्जम् जाद ४, ६१.  
नाडी-भेद- -दम् त्रिब्रा २, ८८.  
नाडी-मध्य- -ध्यम् पै २, ४१.  
नाडी-मय- -यम् ध्या ५४.  
नाडी-महा-चक्र- -क्रम् योचू १८.  
नाडी-मार्ग- -गेषु शां १, ४.  
नाडी-शत- -तम् जु १९.  
नाडी-शुद्धि- -द्धि: १योत ४४<sup>i</sup>; शां  
१, ५; -द्धिम् त्रिब्रा २, ५३; जाद  
५, १; २, ११.  
नाडी-संशोधन- -नम् शां १, ४.  
नाडी-संस्पर्शो(न-उ)द्यत- -त:  
अञ्ज ४, ४२.  
नाडी-सहस्र- -स्रेषु ध्या ५१; ५८;  
योचू १५.  
नाडी-सूत्र-गत- -तेन गर्भ ३१<sup>j</sup>.  
नाडी-स्थान- -नम् शां १, ४.  
नाड्या(डी-आ)दि- -दौ ब्रवि ७२.

✓नाथ

नाथ- -०थ सार २७८: २; -थ: ए  
२; वरा २, ८०<sup>k</sup>; -थम् वरा २,  
८०.

नाद- ✓नद् द्र.

✓नाध्

§<sup>l</sup>नाधमान- -ना: मना २, ७३; चा  
२०.

नाधिष्ठान- -पन- द्र.

नाना<sup>m</sup> क २, १, १०; ११<sup>n</sup>; छां १, १,  
१०; वृ ४, ४, १९<sup>n</sup>; गौ ३, २४;  
कौ ३, ९; नि २२; आबो १; त्रिवि  
३, २; योशि १, १५७; अञ्ज २,  
७; अध्या ६३.

नाना-कवि-कृत-स्थिति-सिद्धा-  
(द्व-अ)न्त- -न्तै: सार २३१:  
१४.

नाना-कर्मन्- -माणि सार २९०:  
३.

नाना-कर्म-व्रतो(त-उ)पवासा-  
(स-आ)दि- -दिभि: सार २३१:  
१४.

नाना-कल-शब्द- -ब्दै: सार २६९:  
१६.

नाना-कलमष-शोधित- -तम्  
१संन्या २, ९.

नाना-कौतुक-क्रीडा- -डाम् सार  
२८६: १६.

नाना-कौतुका(क-आ)वि(ष्ट>)ष्टा-  
-ष्टा: सार २२९: १३.

नाना-गन्ध- -न्धम् शौ ५१: १६.

नाना(ना-अ)ङ्ग-राग- -गम् सार  
२६४: १५.

नाना-चान्द्रायण- -जै: राउ ५, २१.

नाना(ना-आ)चार-समार(म्भ>)-  
म्भा- -म्भा: महा ५, १६२.

नाना-चिह्न-

नानाचिह्नित- -ता: भ २, २७.

नाना-जल-केलि-सुख-संपत्ति-  
-त्ति: सार २६४: ८.

नाना(ना-आ)त्म-भेद-हीन- -न:  
मैत्रे ३, ८.

नाना(ना-अ)त्यय- -या: छां ४, १०,  
३; -यानाम् छां ६, ९, १.

नाना-स्व- -स्वम् गौ ३, १३; ४, ९१;  
मै ३, ३<sup>o</sup>; मैत्रि ३, ३<sup>o</sup>; अञ्ज २,  
४४; सांस् २, २७; सांका २७;

-स्वस्य मै ३, ३; मैत्रि ३, ३.

नाना-दर्शन-सिद्धान्त-विचार-  
-रै: सार २३१: १५.

नाना-देवत- -ता: स्व ६१: १५.

a) 'भागो' इति निसा. । b) 'दिभि: इति अज्या. । c) 'सूर्यम्' इति आन. । d) 'ड्य: इति  
अज्या. । e) 'डी' इति निसा. । f) 'ये इति अज्या. । g) पा. १ यनि. शोध: । h) 'नाडी' इति पा. १ यनि. शोध:  
(तु. गपू. ११२a) । i) ऋ १०, ७३, ११ । j) अव्य. । वैप१ यद्र. । k) मलो. कस. ।



नाना-देशिक-वक्त्र-स्थ-स्थैः  
शां १,७,३६<sup>६</sup>.  
नाना-नाडी-प्रसव-ग-गम्  
योशि ६,१३.  
नाना-नाडी-समावृत्त-तम् त्रिब्रा  
२,६७<sup>७</sup>.  
नाना-नाद-दाः योशि १, १२७.  
नाना(ना-अ)क्रमय-रस-सान्  
सार २७० : १२.  
नाना-पर्ण-पुट-टानाम् शि ६,  
२६६.  
१नाना-पुष्प-पैः सार २३४ : १२  
नानापुष्प-प्रकरण-गम् शि ७,  
३४.  
२नाना-पुष्प-  
नानापुष्प-वृक्ष-क्षैः सार  
२३२ : १५.  
नाना-प्रेक्षणक-कानि शि ६, १८६.  
नाना-भक्ति-समन्वित-तम् शि  
६, १३६.  
नाना-भक्ष्य-भोज्य-ज्यानि सार  
२६६ : १५.  
नाना-भजन-भाव-वम् सार  
२५२ : १८.  
नाना-भजन-योग्य-ग्यानि सार  
२५४ : १६.  
नाना(ना-आ)भरण-पूजा-जाभिः  
शि ६, १४८.  
नाना(ना-आ)भरण-युक्त-कानि  
शि ६, १२५.  
नाना-भाव-वात् ब्रसू १, ४, ११;  
वान् गी १८, २१; वेन सार  
२२४ : ८; २२९ : २०.  
नानाभाव-भेद-दम् सार  
२२९ : २०.  
नाना-भोग-गान् सार २२४ : ४;  
२३८ : १.  
नाना-भोग-रस-सान् सार

२७० : ९.  
नाना-मणि-णयः सार २२४ : ९.  
नाना-मणि-मुक्ता-प्रथित-जाम्बू-  
नद-सुवर्ण-खचित-तः सार  
२६४ : २२.  
नाना-मनो-भाव-वम् सार  
२३८ : ५.  
१नाना-मार्ग-गैः १योत ६;  
योशि १, ३.  
२नाना-मा(र्ग>)र्गा-गाः योशि  
१, १५७.  
नाना-मुख-खाः भ २, २७.  
नाना-योग-गः सांसू १, १५०.  
नाना-योनि-शत-तम् त्रिब्रा २,  
१७.  
नाना-योनि-सहस्र-स्त्राणि निरु  
१, १६.  
१नाना-रङ्ग-ङ्गाः सार २३७ : ७;  
-ङ्गैः सार २७१ : १५; २७६ : २०.  
नानारङ्ग-मय-यानि सार  
२७१ : १.  
नानारङ्गमय-फल-पुष्प-वृ-  
क्षा(क्ष-आ)दि-राजमा(न>)-  
ना-नाम् सार २४६ : ३.  
नानारङ्ग-रचित(त>)ता-ता  
सार २६६ : ६.  
२नाना-रङ्ग-ङ्गैः सार २६२ : १७.  
नानारङ्ग-मणि-स्तम्भ-शत-  
शोभित-तम् सार २७० : ३.  
नाना-रति-सुख-खम् सार २३८ :  
३.  
नाना-रत्न-प्रवेष्टित-तम् ध्या २७.  
नाना-रमण-स्थान-नम् सार २४६ :  
६.  
१नाना-रस-साः मैत्रि ६, २२; सार  
२६७ : ६; सैः सार २३३ : १९.  
२नाना-रस-सम् शौ ५१ : १६.  
नाना-राग-रङ्ग-भोग-गाः सार

२३७ : २१.  
नाना-राग-रञ्जित(त>)ता-ताः  
सार २६६ : ११.  
१नाना-रूप-पाणि मै ३, ५; मैत्रि  
३, ५; योशि १, ४४; सार २६९ :  
१५.  
नानारूप-धर-राः भ २, २७.  
२नाना-रूप, पा-पम् शौ ५१ :  
१५; पा गु ७०; पान् गु ७०;  
-पैः सार २३४ : १०.  
नाना(ना-अ)र्थ-र्थे क १, २, १.  
नाना(ना-अ)लंकार-सुख-रूप(प>)-  
पा-पाः सार २७० : ८.  
नाना-लता-ताभिः सार २७० : ४.  
नाना-लीला-लयां राधा ३, ७.  
१नाना-वर्ण-  
नानावर्ण-धर-रम् त्रिब्रा २,  
१५५.  
२नाना-वर्ण, र्णा-र्णम् शौ ५१ :  
१५; -र्णाः वरा ५, २८.  
नाना-वर्णा(र्ण-आ)कृति-तीनि  
गी ११, ५.  
नाना-वस्तु-  
नानावस्तु-मय-याः सार  
२३७ : १९.  
नाना-वाद-दैः सार २३१ : १३.  
नाना-विचित्र-त्राणि सार २७० :  
१०; १९.  
नानाविचित्र-जगन्-निर्माण-  
सामर्थ्य-बुद्धि-रूप(प>)पा-  
पा नि १९.  
नाना-विध, धा-धः नाद ३३; महा  
५, १५; -धम् सुमु ८; -धाः गर्भ  
४<sup>१</sup>; नाद ३५; निरु १, १७; -धानि  
श १४; नापू ५, ३१; सार २७० :  
६; १३; गी ११, ५; -धाम् भ  
२, ३०; -धासु अन्न २, ४४; -धैः  
योशि १, २९; ६०; भव १, ८;

a) °कसूक्तैश्च इति निसा. संदि. । b) 'प्राणापानसमायुताः' इति निसा. । c) कस. । d) बस. ।  
e) °ध्याबु° इति अथ्या. । f) 'विविधाः' इति आन., अथ्या. ।

सांका ६०.  
 नानाविध-स्त्र्य(स्त्री-अ)लंकार-  
 विराजि(त>)ता- ता तारा  
 ८३:१८.  
 नाना-विभव-रूप-  
 नानाविभवरूपि(न>)णी-  
 णी महा ५,२०.  
 नाना-विभ्रम-कारिन्- -रिणा महा  
 ३,३४.  
 नाना-वृक्ष- -क्षा: सार २६९: १८.  
 नाना-वेष- -वै: सार २६९: १९.  
 नाना-व्यपदेश- -शात् वस् २, ३,  
 ४३.  
 १ नाना-शक्ति°-  
 नानाशक्ति-धर- -र: योशि १, ४१  
 २ नाना-शक्ति°- -क्ति(क्ति:°)  
 अद्वैभा ६.  
 नाना-शब्द- -दम् शौ ५१: १६.  
 नाना-शरीर-भाव- -वम् सार  
 २९१: १०.  
 नाना-शस्त्र-धारिन्- -रिण: भ २,  
 २७.  
 नाना-शस्त्र-प्रहरण- -गा: नी १, ९.  
 नाना(ना-आ)श्र(य>)या- -या  
 सांका ६२.  
 ना(१गा<sup>d</sup>)ना(ना-अ)ष्टक-सम-  
 न्वित- -तम् पं ६.  
 नाना-संसार-जनित- -तान् सार  
 २९०: १९.  
 नाना-सखी- -खीनाम् सार २२४:  
 ४; -खीभि: सार २६९: १२.  
 नाना-संकल्प-कल्पित- -तै: शां १,  
 ७, ३६.  
 नाना-सुख- -खम् सार २३८: ५;

२६९: १०; २८४: १.  
 नाना-सुगन्ध- -न्धान् सार २७०:  
 १४.  
 नाना-सुगन्ध-रस- -सान् सार  
 २२५: २२.  
 नानासुगन्धरस-भेद-(ज्ञ>)-  
 ज्ञा- -ज्ञा सार २६३: ७.  
 नाना-सुगन्धा(न्ध-अ)ङ्गराग-  
 -गेण सार २४३: १.  
 नाना-सुरत-कला- -लाम् सार  
 २३८: ४.  
 नाना-सुरता(त-आ)नन्द-निधि-  
 -धये सार २५१: १५.  
 नाना-सृष्टि- -ष्टिम् सार २४५: १९.  
 नाना(ना-आ)स्तरण- -जै: सार  
 २६६: १३.  
 नाना-स्तुति-भेद- -दै: सार २७०:  
 १८.  
 नाना-स्पर्श- -शैम् शौ ५१: १६.  
 नाना-स्मृत्यु(ति-उ)क्त- -क्तान् सार  
 २३४: २३.  
 नाना-स्वरूप- -पम् वरा ३, १.  
 नानो(ना-उ)पनिषद्-अभ्यास-  
 -स: शा १५.  
 ?नानायत्नादिशेषान्ते° शि ६, १८६.  
 ?नानासत्त्वमयानि° सार २५७:  
 १५.  
 नानन्दन- / नन्द द्र.  
 नान्यगामिन्- -नम् द्र.  
 ?नाप्रसं° अद्वै ११.  
 नाभि<sup>१b</sup>- -भि: ऐ१, ४; मै५, ६; मैत्रि  
 ६, ६; मना १, २९<sup>१</sup>; २, १२, २९<sup>१</sup>;  
 व २; वृजा ४, २५; २६; वृषू २,  
 १८९<sup>६</sup>; ५, २; त्रिवा २, ५९; शां १,

४; शारी १; भ १, ६; जाद ४  
 ५; ए२<sup>१</sup>; गार ४०८: ८; -भिम्  
 ऐ२, ४; त्रिवा २, १३१; आच ९;  
 बा १३; लिं ३१०: ४९<sup>m</sup>; -भै:  
 अना २२<sup>n</sup>; ध्या ५०; ७६; योचू  
 १४; ४९; त्रिवा २, ६२; १३९;  
 शां १, ४; योशि १, १०८; ५,  
 २६; वउ ३, १७; ५०; -भौ छां  
 ७, १५, १; कौ ३, ९; वृजा ४,  
 १४; २३; २८; २९; ५, २; वृउ ३,  
 ९; योचू ५, ९; शां १, ७, ४९;  
 ५२; योशि ५, २०; ३८; भ १,  
 ६; जाद ४, २७; ६, २८; २९; ऊ  
 ६४: ६; वपं ३१२: २; सिशि  
 ३८१: १३; व ४३६: ३; पित्रद,  
 ६; -भ्या: ऐ १, ४; -भ्याम् मना  
 २, १३, २९<sup>०</sup>; वृजा ४, २१; ३४;  
 ६, १२<sup>n</sup>; वृषू ५, २; ८<sup>३</sup>; त्रिता २,  
 ६७; प्रा २, १.

नभ<sup>a</sup>-

नभ्य<sup>a</sup>- -भ्यम् वृ १, ५, १५.  
 नाभि-कन्द- -न्दात् त्रिवा २, १४९;  
 जाद ४, ११; -न्दे व्रवि २२; त्रिवा  
 २, १०९; जाद ७, १२; -न्देष्टु  
 त्रिवा २, ११०.

नाभि-कुण्डल-

नाभिकुण्डलिन्-

नाभिकुण्डलि-क्षेत्र<sup>a</sup>- -त्रम्  
 म ४९: १४.

नाभि-चक्र- -क्रम् योशि ५, २१; वरा  
 ५, २९<sup>१</sup>; सौ ३, १; योरा ९; -क्रे  
 व्रवि ६८; शां १, ७, ५२; योसू  
 ३, ३०.

नाभि-दक्षिण- -जे ऊ ६४: ७.

a) कस. । b) बस. । c) पा. ? यनि. शोध: द्र. । d) पा. ? यनि. शोध: द्र. (तु. अ. व्या.) । e) पा. ? 'नाना-रत्ना-  
 (न-आ)दि-भूषा-> -षां ये' इति द्विपद: शोध: द्र. । f) पा. ? 'नाना-सत्त्व-> -त्त्वानि मया' इति द्विपद: शोध: द्र. ।  
 g) पा. ? 'ना(न-अ)वरस- [=अन(न-अ)वरस-] > -सम् इति शोध: द्र. । h) वैप१ यद. । i) तैआ १०, १, २ ।  
 j) ऋ ४, ५८, १ । k) 'नाम' इति कौ ३, १, ९ । l) 'ताभि:' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अ. व्या.) ।  
 m) ऋ २, ४०, १ । n) 'नातिम्' इति आन. । o) तैआ १०, ११, २ । p) 'याम्याम्' इति निसा. । q) पावा ५,  
 १, २ । r) °भी° इति अ. व्या. ।

नाभि-दशो(घ-उ)दक- -कम् नाप  
४,३८.  
नाभि-देश- -शम् यो ३,११; ज्ञात्  
जाद ७, ७; शे अना ३५; लु  
७; नाद ३; योचू २४; योशि  
१,१७२; ५,९; जाद ७,६.  
नाभि-पादर्व- -इर्वयोः वृजा ४,  
१८; शां १,३,१०; जाद ३,१०;  
-इर्वे त्रिब्रा २,४७.  
नाभि-प्रदेश- -शे सिशि ३८१:  
१८.  
नाभि-मण्डल- -लम् ध्या ४९;  
त्रिब्रा २,७९; योशि ५,३२; -ले  
योचू १३.  
नाभिमण्डल-संस्थान- -ने त्रिवि  
७,७.  
नाभिमण्डल-संस्थित- -तः  
त्रिब्रा २, ६.  
नाभि-मध्य- -ध्ये शां १,७, ४३;  
४५; जाद ४, २६; ६, २२; २४.  
नाभि-मध्यम- -मे त्रिवि २३.  
नाभि-रन्ध्र- -न्ध्रात् त्रिवि १६.  
नाभि-स्थ- -स्थम् व ४५६: २१.  
नाभि-स्थान- -ने ध्या ३०; त्रिवि १५.  
नाभि-हृदय-कण्ठ-मूर्धन- -धंसु पत्र  
२.  
नाभि-हृद-कुहर- -रे सार २६५:  
११.  
नाभ्या(भि-आ)दि-जान्व(तु-अ)-  
न्त- -न्तम् वपं ३१२: ३.  
नाभ्या(भि-आ)दि-ब्रह्म-विल-  
प्रमाण- -णम् पत्र २.  
नाभ्या(भि-आ)दि-ब्रह्म-रन्ध्रा-  
(न्ध्र-अ)न्त-प्रमाण- -णम्

पत्र ३,१०.  
नाभ्यु(भि-उ)त्तर- -रे ऊ ६४: ८.  
नाभ्यु(भि-ऊ)रु- -वों: रार २, ११.  
नाभ्यु(भि-ऊ)रु-जाजु-पाद- -देषु  
रार २, ४३.  
नामन्<sup>१</sup>- -म<sup>०</sup> के ४, ६; क १, १,  
१; ३; प्र ६, ४; सुं १, १, ९;  
२, २, १; ऐ ३, १२; १४<sup>२</sup>; छां  
१, ६, ७; ५, ५<sup>२</sup>; ३, १५, २<sup>४</sup>; ४,  
२, ५, ४, २<sup>३</sup>; ४<sup>३</sup>; ५, २; ६, ३; ५,  
२, १; ६, ८, १; ३; ७, १, ३; ४<sup>३</sup>;  
५<sup>२</sup>; ३, १; २६, १; ८, ३, ४; १४,  
१; वृ १, ३, ९; ४, १; ७; ५, १७;  
६, १; २, १, १७; १९; २, ४; ३,  
२, १२<sup>३</sup>; ४, २, २; ३; ३, २०; ४,  
११९<sup>४</sup>; ६, ४, २६<sup>३</sup>; खे ४, १९९<sup>०</sup>;  
कौ २, ११<sup>१</sup>; २३ ३३: १८१<sup>३</sup>;  
-मभि: वृ १, ६, १; २, १, १५; कौ  
३, ३<sup>३</sup>; ४, १९; वृजा १, १; अञ  
५, ५६; सूता १, ३१; -मानि वृ  
१, ६, १<sup>३</sup>; ३, २, ३; कौ १, ७; ३,  
६<sup>४</sup>; जा ३<sup>१</sup>; वृजा १, १; मवाट<sup>१</sup>;  
वृष ८४: ६; पा ७, ५; सार २२१:  
१२; गु २; भव २, १४; -अ: छां  
७, १, ५<sup>३</sup>; २, १; मना २, ६७९<sup>३</sup>;  
कौ ४, ९१<sup>१</sup>; १६<sup>३</sup>; -आ क १, १,  
१६; वृ ३, २, ३; कौ २, ११;  
रापू ४, ३<sup>३</sup>; शां १, ७, ४२<sup>०</sup>; महा  
४, ११२; सार २३८: १; २; -आम्  
कलि २; -अ: छां ७, ४, १<sup>३</sup>; ५, १<sup>३</sup>.  
नाम-गोत्र- -त्रे इ १६: १२.  
नामगोत्रा(त्र-आ)दि- -दि नाप  
४, २.  
नाम-ग्रहण- -णात् भव १, ५१.

नाम-ग्राहम्<sup>२</sup> शौ ५१: १२<sup>३</sup>.  
नाम-जात्या(ति-आ)दि- -दिभि:  
सर २, ७.  
नाम-तस(>) मैत्रि ६, २३; मं ४,  
१, ५; रापू १, ४.  
नाम-द्वय- -यम् गुषो ४२०: १०.  
नामद्वय-संपुटित- -तम् कालि  
४०३: १४.  
नाम-धेय, या- -यम् छां ६, १, ४-६;  
४, १-४; वृ २, ३, ६; पत्र ३; -या  
नाद १०९<sup>११५</sup>; -यानि ऐ ५, २.  
नाम-पञ्चक- -कस्य वृजा ६, १.  
नाम-पारा(र-अ)यण-  
नामपारायणिन्- -णी पारा १४.  
नाम-मन्त्र- -न्त्रेण वृजा ४, १७.  
नाम-म(य>)यी- -यीम् पारा ११.  
नाम-यज्ञ- -ज्ञै: गी १६, १७.  
नाम-रूप- -पयो: छां ८, १४, १;  
-पात् सुं ३, २, ८; गु ३८; -पाभ्याम्  
वृ १, ४, ७<sup>३</sup>; -पे प्र ६, ५<sup>३</sup>; सुं ३,  
२, ८; छां ६, ३, २; ३; वृ १, ६, ३;  
सर ३, २४; गु ३८.  
नामरूप-द्वार- -द्वारा नि १७.  
नामरूप-पृथक्-कृति- -ति: सर  
३, ३०.  
नामरूप-विमुक्त- -क्त: ते ६, ३६.  
नामरूप-विवर्जित- -तम् शु  
३, ५.  
नामरूप-विहीना(न-आ)स्मन्-  
-स्मा ते ४, ४९.  
नामरूपा(प-आ)स्मक- -कम् नृउ  
२, ९; सर २, १०.  
नामरूपा(प-आ)स्मन्- -स्मना  
सर २, १.

अ) °भिदेशात् इति अञ्ज्या. । b) वैपश् यद्र. । c) एतत् रू. एव कचित् वा. क्वि. इति कृत्वा द्वि१  
सदन्यै: पृथक् अव्य. इति प्रादर्शि (तु. MW.) । d) मा ४०, ३ । e) मा ३२, ३ । f) सकृत् 'माऽऽविथ' इति  
अन., 'माविथ' इति अञ्ज्या. । g) तु. सस्थ. टि. धारा->-रा: । h) 'सामानि' इति काचित्क: निसा. मुपा. यनि.  
सु-शोध: । i) 'अमृतनामधेयानि' इति अन., 'नामधेयानि' इति अञ्ज्या. । j) तैआ ३, १२, ७ । k) तैआआ १०,  
६७ । 'नान्य:' इति नादी., 'मान्य:' इति नादी. संटि. । l) 'नाम्नि' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अञ्ज्या.) ।  
m) 'वाच:' इति शांआ ६, १७ । n) °अ: इति अञ्ज्या. । o) 'नाम' इति अञ्ज्या. । p) पा ३, ४, ५८ । q) =मात्राविशेष- ।



नामरूपा(प-आ)दि-  
नामरूपादि-क- -कम् ते ५,  
११.  
नाम-रूप-ज्ञाना(न-अ)-गोचर-  
-रम् मुद्र २.  
नाम-षट्क- -कम् व ४६२:४.  
नाम-संकीर्तन- -नात् शि १,२०.  
नामसंकीर्तन-पर- -र: १संन्या  
२, ५९.  
नाम-संख्या(ख्या-आ)दि(क>)-  
का- -का: महा ५, १२३.  
नाम-सौन्दर्य-जाति- -तथ: आबो  
२२.  
नामा(म-आ)कर्षि(न्>)णी<sup>१</sup>- -णी  
आथ ३९५: ११.  
नामा(म-आ)ख्यात<sup>२</sup>- -तम् २प्र  
३४: ५.  
नामा(म-आ)दि- -दिभ्य: या २, ३.  
नामिन्<sup>३</sup>- -मी राष्ट्र ४, ३.  
नामो(म-उ)च्चार-मात्र- -त्रेण रुजा  
१, १९.  
नामो(म-उ)च्चारण-मात्र- -त्रेण  
कलि १.  
नायक- ✓नी द्र.  
नारक- -नारकिन्- १नरक- द्र.  
नारङ्ग<sup>४</sup>- -ङ्गै: सार २३३: १५.  
नारङ्ग-फल- -लम् शि ६, १३.  
नारद<sup>५</sup>- -न्द नाप २; ६, १४; १५;  
३३; ३७; -द: छां७, १, १; पदं१;  
नाप १<sup>३</sup>; २<sup>३</sup>; ३, १; ७७; ४, ३८;  
५, १; ६, १; ८, १; ९, १; वा १;  
गोउ२३; कृ२४; दृ१; ९; गरु१;  
कलि १; २; ३; गोच ६५: १;  
तुल ७०: १; नार १; राधा २,  
७; सार २३०: ८; १७; २२;

२३१: ४; २३२: ४; व ४६५;  
१; गी १०, १३; २६; -दम् नाप  
१; २<sup>३</sup>; ७; सार २३०: ९; -दात्  
गोउ ६८; -दाय ह ९; गरु १;  
व ४६५: १; -देन नाप २; सार  
२३०: १८; २३२: ६; १३.  
नारद-तु(त>)ता- -०ते तुल  
७१: ७.  
नारद-सनका(क-आ)दि- -दिभ्य:  
तुल ७१: २१.  
नारदा(द-आ)दि- -दय: नापू ५,  
२४; सार २४९: २०; -दिभि:  
सार २३५: १६.  
नारदो(द-उ)क्त-स्तव-राज- -जम्  
रार १, ९.  
नारसिंह- नर- द्र.  
नारायण<sup>६</sup>- -ण<sup>६</sup> नाप३, ५९; नापू४,  
१७; -०ण त्रिवि ७, ४३<sup>३</sup>; गोपू  
४५; नापू ३, १६; नाउ २, ३;  
३, १९; -ण: मै ५, ८; मैत्रि ६,  
८; ७, ७; ना १; २<sup>१</sup>; मना २,  
१३, १<sup>६</sup>; २४<sup>१</sup>; सुबा ६<sup>१०</sup>; ७;  
नाप ४, १४; मं १, १, २; त्रिवि  
१, ११; २, १, १५; १६<sup>१६</sup>; १७<sup>३</sup>;  
४, १४; ५, १०; १२; ७, ४३<sup>३</sup>; ८,  
६; १३; मुद्र २; पै ४, ३; महा  
१, १<sup>३</sup>; तुअ २; पप ४१९: २०;  
अध्या १; कुं १७; ता ३, १-८;  
गोउ १७; १९; ६३; दत्ता ३;  
सु १, १, ३१<sup>६</sup>; च २०: १; द्र २;  
म ४८: १८; तुल ७०: २; ७१:  
२१; नापू १, २; १३<sup>३</sup>; १५; २,  
१६; ४, २; ३०; ५, १२; १५;  
१६<sup>३</sup>; १७<sup>३</sup>; नाउ १, ११<sup>३</sup>; १२<sup>३</sup>;  
१३<sup>३</sup>; १७<sup>३</sup>; १८<sup>३</sup>; २३; २८; २, १;

१३; ३, १; २; ५; २२; कृपु २५;  
सार २२०: १९; २०; २५६:  
१३; २५७: १७; २१; २७४: ५;  
२७५: ८; १३; १४; १६; २७६:  
८; २८०: १४; २८५: १३;  
२८९: १; १६; भव२, ४२; -णम्  
गर्म ४; ना ४; मना २, १३, १<sup>३</sup>;  
नृपू ५, ८; १योत ८९; आबो १;  
त्रिभार, १४३; त्रिवि ८, ५; रार १,  
७; राउ ४, १; महा १, १४<sup>३</sup>; योशि  
५, ४४; दत्ता १, १<sup>३</sup>; च २०:  
१०<sup>३</sup>; नापू १, १४; १७; १९;  
४, २६; नाउ १, २४; सार २४३:  
४; २५०: १५; २५२: १९;  
२५७: २०; २३; २७४: ३;  
-णस्य ना ३<sup>३</sup>; त्रिवि २, १<sup>३</sup>; ता  
१, २; कलि १; नापू २, ३; -णात्  
ना १<sup>६</sup>; सुबा १२; त्रिवि २,  
१६<sup>१०</sup>; नापू ५, ४; नाउ १, १३;  
३, ४; ५<sup>३</sup>; -णाय ना ३<sup>३</sup>; ४; मना  
१, ६<sup>३</sup>; आबो १<sup>३</sup>; त्रिवि ७, ३१;  
३४; ३९<sup>३</sup>; ४१; ४५; ता १, २<sup>३</sup>;  
म ४८: ११; १६; २१; ४९: ६;  
१३; १७; २१; कृ ६३: ११;  
नापू २, २; ३, २; ६; ७; ९; १४; ५,  
४; ६, १५; नाउ २, १०; ११; व  
४५७: ८; ११; ४६३: ४४<sup>३</sup>;  
४६४: २३; -णे ना १; त्रिवि २,  
१६; ८, ५; योशि ५, ५४; कृ ६४:  
९; नाउ १, २८; -णेन दे १४;  
रार २, ६<sup>१०</sup>; दत्ता १, १; सार २३६:  
२३; २३७: १.  
नारायणी<sup>७</sup>- -०णि व ४३१: २;  
४५८: १०; -णी कलि ४०१:  
१०; श्या १३.

a) समाहारे द्रस. । b) टिलोप: (पा ६, ४, १४४) । c) 'रणमा' इति अज्या. । d) व्यु. ? = फलविशेष- ।  
e) व्यु. ? = देवर्षि- । f) व्यु. ? [वेतु. मनु १, १० (= नर- > -नार- >)] । g) अविभक्तिको निर्देश: द्र. । h) तैआ  
१०, ११, १<sup>३</sup> । अन्यत्र 'णप' इति सुपा. (तु. एकत्र तैआ १०, ११, १) यनि. सु-शोध: (तु. j.c.) । i) तैआ १०,  
११, २ । j) एकतरत्र तु. एप्. टि. । k) = तदाख्योपनिषद्विशेष- । l) तैआ १०, ११, १<sup>३</sup> । m) तैआ १०, ११, १ ।  
n) तैआ १०, १, ६ । o) = आकाराक्षरेण । 'ण: ना' इति निसा. सुपा. यनि. सु-शोध: (तु. अज्या.) ।

नारायण-क्रीडा-कन्तुक- -कम्  
त्रिवि ६, ५.  
नारायण-निवेशि(त>)ता- -ताः  
नापू ५, ३९.  
नारायण-नृसिंहा(ह-अ)ष्टा(ष्ट-अ)-  
क्षर-मन्त्र- -न्त्रौ त्रिवि ७, ३१.  
नारायण-पद- -दम् ता ३, ९.  
नारायण-पर-ब्रह्मन्- -ह्यणि नापू  
५, ४१.  
नारायण-प्रतिपादित- -तम् नापू  
३, ५.  
नारायण-प्रसाद- -देन नाउ ३, १५.  
नारायण-बीज<sup>a</sup>- -जम् त्रिवि ७,  
३०.  
नारायणबीज-युक्त- -क्तम् त्रिवि  
७, ३३.  
नारायण-मन- -मि(य>)या- -ये  
तुल ७१ : ७.  
नारायण-मन्त्र- -न्त्रः नापू ३, १.  
नारायण-मय- -यः योशि ५, ५४<sup>b</sup>;  
-यानि त्रिवि ५, १०.  
नारायण-मुख- -खात् सार २१९:  
७; २६० : १५; २७६ : ६.  
नारायण-यन्त्र-मन्त्रा(न्त्र-आ)व-  
रणपूजा- -जाम् नापू ६, १.  
नारायण-वासुदेव-द्वादशा-  
(श-अ)क्षर-मन्त्र- -न्त्रौ त्रिवि  
७, ३४.  
नारायण-व्यतिरिक्त- -क्तम् त्रिवि  
५, १०.  
नारायण-शब्द-पर-ब्रह्मन्- -ह्य  
नापू २, ४.  
नारायण-सायुज्य- -ज्यम् ना ५<sup>c</sup>;  
ऊ ६४ : ४.  
नारायण-सारूप्य- -प्यम् त्रिवि ६,  
२१.

नारायण-हयग्रीव-गायत्री-  
मन्त्र- -न्त्रौ त्रिवि ७, ३९.  
नारायणां(ण-अं)श- -शैः त्रिवि ६,  
७<sup>d</sup>.  
नारायणा(ण<sup>a</sup>-आ)त्मक- -कः रापू  
४, ६३.  
नारायणा(ण-आ)त्मन्- -त्मा नाउ  
३, २.  
नारायणा(ण-अ)ष्टा(ष्ट-अ)क्षर- -रः  
रार ३, १०; -रम् नापू १, १; -रे  
रार ५, ३.  
नारायणा(ण-अ)ष्टा(ष्ट-अ)क्षर-  
मन्त्र- -न्त्रम् नापू २, १.  
नारायणा(ण-अ)ष्टा(ष्ट-अ)र्ण-  
-र्णान् रापू ४, ४६<sup>d</sup>.  
नारायणा(ण-अ)स्त्र-मन्त्र- -न्त्रः  
त्रिवि ७, ४५<sup>e</sup>.  
नारायणो(ण-उ)पासक- -काः सार  
२३५ : १२.  
नाराशंस- नराशंस- द.  
नारिकेल<sup>f</sup>- -लम् शि ६, १५.  
नारी- नर- द.  
नाल<sup>g</sup>-  
नाल-मात्र- -त्रेण ध्या ३९.  
नाल-स्थ-तन्तु- -न्तुना ते ६, ८२.  
नालमात्राविनिष्कम्प<sup>h</sup>- -म्पः  
अना २४.  
नावरस- ?नाप्रसं टि. द.  
नाविक- नौ- द.  
नाश-, नाशन-, नाशित-, नाशी-  
√नश् (अदर्शने) द.  
नास्त्य<sup>i</sup>- -त्यः वृजा ४, २०.  
ना(स>)सा<sup>l</sup>- -सया १योत ७०;  
१संन्या २, १८; साते ४, १०; सुबा  
५; सार २४४ : १७; २६५ : ५;  
गु ११; साभ्याम् शां १, ७, १४<sup>k</sup>;

४३; जाद ६, ३०; ७, १०; -साम्  
सुबा ९<sup>l</sup>; सार २६५ : ६; सायाम्  
सुबा ५.  
नासिका<sup>m</sup>- -कया श्वे २, ९; भव  
३, २६०; -का गर्भ १; प्रा ४,  
१; गु २३; -काभ्याम् ऐ १, ४;  
-कायाः ध्या ४०<sup>n</sup>; -के ऐ १, ४;  
२, ४; वृ २, ४, ११; ४, ५, १२; कुं  
१९; २प्र ३२ : १४.  
नस्<sup>o</sup>- नसोः मना २, ७२<sup>o</sup>.  
नस्य<sup>m</sup>- -स्यम् १योत  
१२८.  
नासिका(का-अ)ग्र- -ग्रम्  
गी ६, १३; -ग्रे अता ६.  
नासिका(का-अ)न्त- -न्तम्  
योशि ५, १८<sup>n</sup>.  
नासिका-पुट- -टम् अना  
२०; त्रिबा २, ९५; -टयोः त्रिबा  
२, ११७.  
नासिका-मध्य- -ध्यम् यो  
१, ३६.  
नासिका-रन्ध्र- -न्ध्रम् यो  
२, ४५.  
नासिका-शोधन- -नम् शि  
६, २३२.  
नासिक्य- -क्यम् छां १, २, २  
नासा(सा-अ)ग्र- -ग्रम् मं २, १, ७;  
शां १, ३, ६; -ग्रे ब्रवि ४२; ४३;  
६९; त्रिबा २, १०९; मं १, २,  
८; शां १, ६०; ७, ३२; ४३; ४५;  
५१; ५२; योशि १, ७१; जाद  
५, ६; ६, २२; वरा ५, ३२.  
नासाग्र-गमना(न-आ)वर्त-  
-र्तम् अन्न ५, ३२.  
नासाग्र-दत्ते(त-ई)क्षण- -णः  
शां १, ७, १६.

a) =आकार-बीजाक्षर- । b) 'यम्' इति अज्या. संटि. । c) 'रीमन्त्रः' इति अज्या. । d) 'र्णम्' इति  
आन. । e) 'न्त्राः' इति निसा. । f) व्यु. १=फलविशेष- । g) व्यु. ? । h) ताल<sup>o</sup> इत्येवं शोधः द. (तु. अज्या.; वैतु.  
'ताला मात्रा तथाऽऽयामः' इति आन.) । i) वैपश् यद्र. । j) 'याम्' इति आन. । k) पा ६, १, ६३ । l) शौ  
१९, ६०, १ । m) पावा ६, १, ६३ । n) नाडि<sup>o</sup> इति अज्या. । o) 'प्रक्ष' इति अज्या. ।

नासाग्र-दर्शन-दृढ-भावना-  
-नया मं २, २, २.  
नासाग्र-दृष्टि- -ष्टिः योचू ७१;  
१०६.  
नासाग्र-धारण- -णात् त्रिवा २,  
१११<sup>०</sup>; जाद ६, २३.  
नासाग्र-न्यस्त-नयन- -नः  
त्रिवा २, ९२; १४६.  
नासाग्रा(ग्र-अ)बलोकि(न्-)>-  
नी- -नी ते १, २९; ३०.  
नासा-चञ्चु- -ञ्चुः सार २४४;  
१६.  
नासा-द्वय- -द्वयम् १ संन्या २, १०.  
नासा(सा-आ)दि- -दयः ऊ ६४;  
५; -दि<sup>०</sup> १ प्र ३१ : १८.  
नासादि-केश-पर्यन्त- -न्तम्  
य ४; सु २९३ : ४.  
नासादि-केशा(श-अ)न्त-  
-न्तम् का ७; नार ७.  
नासा(सा-अ)न्त- -न्तम् त्रिवा २,  
१३९.  
नासा-पुट- -टे गार ४०८ : ७; -टौ  
जाद ६, ३४.  
नासापुट-युगल- -लम् सौ २, ३.  
नासा(सा-आ)भरण-नील-पीत-  
रक्त-मणि-ज्योत्स्ना- -त्स्ना  
सार २६५ : ६.  
नासा(सा-अ)भ्यन्तर-चारिन्-  
-रिणः लु ५; योशि ६, ७; -रिणौ  
गी ५, २७.  
नासा-वक्त्र- -क्त्रे वृजा ४, १३.  
नासिका- नासा- द्र.  
नासी(र>)रा<sup>१०</sup>- -राम् सुवा ९<sup>१</sup>.  
नास्तिक-, नास्तित्व- -न-<sup>०</sup> द्र.  
नाहाश्वथ्यः<sup>०</sup> सूता ३, ४.

नि<sup>१</sup> छां २, ८, २.  
१नि(स्>):-शङ्क<sup>०</sup>- -ङ्कम्<sup>०</sup> महा ४,  
१४; सु२, २, १३; सार २८४ : १९.  
निःशङ्क-रति-(द>)दा<sup>१</sup>- -दा सार  
२२३ : ५.  
२निःशङ्क(ङ्क>)ङ्का<sup>१</sup>- -ङ्का सार  
२३४ : ६; २६३ : ३; २८२ :  
१०; २८४ : १५.  
नि(स्>):-शब्द<sup>०</sup>- -ब्दः मैत्रि ६, २३;  
-ब्दम् लु २; २१; नाद ४८;  
४९; ध्या २.  
नि(स्>):-शिष>शेषि  
निःशेषित-  
निःशेषित-जगत्-कार्य- -र्यः  
महा २, २९.  
नि(स्>):-शेष<sup>०</sup>- -षम्<sup>०</sup> राउ ५, ७,  
२३; पै ३, १; अन्न ४, ८४;  
अध्या ३९; -षेण<sup>०</sup> ते ६, ९६.  
निःशेष-दुःख-निवृत्ति- -त्तौ सांसू  
३, ८४.  
निःशेष-त्रिलय- -यः अध्या १७.  
निःशेषा(ष-अ)शेष-चेष्टित-  
-तः वरा २, ८१.  
नि(स्>):-श्रेयस<sup>१</sup>- -सम् कौ २,  
१४; शां ३, ४; योशि ६, ४४; साय  
त्रिवा २, १२८; सार २३० : ३.  
नैःश्रेयसिक<sup>१</sup>- -कम् भव ५, ६.  
निःश्रेयस-कर- -रम् भव ५, ८; -रौ  
गी ५, २.  
निःश्रेयसा(स-आ)दान- -नम् कौ  
२, १४; ३, २<sup>१</sup>.  
नि(स्>):-श्वस<sup>१</sup>  
निःश्वसत्- -सम् २ योत २, ४.  
निःश्वस्य यो १, ४५.  
निःश्वस- -सः १ योत १४१<sup>१</sup>.

निःश्वसो(स-उ)च्छ्वास-कास-  
-साः जाद ४, ३०.  
निःश्वसो(स-उ)च्छ्वासन-  
-नम् जाद ४, ४५.  
नि(स्>):-संशय<sup>०</sup>- -यः निर्वा २९७;  
३.  
१नि(स्>):-संकल्प<sup>०</sup>- -ल्पात् महा  
२, ७०.  
निःसंकल्प-क्षमा-लघ्वा(बु-आ)-  
हारा(र-अ)प्रमादता-तत्त्व-  
सेवन<sup>०</sup>- -नम् मं १, २, २.  
२नि(स्>):-संकल्प<sup>०</sup>- -ल्पः मैत्रि ६,  
१९; ३०.  
नि(स्>):-सङ्ग<sup>०</sup>- -ङ्गः गौ ३, ४५;  
नाप ५, २५; २ कौल ९; -ङ्गम्  
गौ ४, ७९<sup>०</sup>; -ङ्गस्य सांसू ५, १३;  
-ङ्गे सांसू ६, २७.  
निःसङ्ग-तत्त्व-योग-ज्ञ- -ज्ञः लु  
२१<sup>०</sup>.  
निःसङ्ग-ता- -ता मं १, १, ४.  
निःसङ्ग-त्व- -त्वात् सांसू ५, ६५.  
निःसङ्ग-व्यवहार-  
निःसङ्गव्यवहार-त्व- -त्वात्  
अन्न ४, ८८.  
नि(स>):-सार<sup>०</sup>- -रः महा २, ३४;  
-रम् नाप ३, १५; भव १, १;  
-रे मै १, २; मैत्रि १, २; सुवा ८;  
द १६.  
नि(स>):-स्व  
निःस्व, ता- -तम् क २, ३, २;  
सुवा ८; -ता<sup>०</sup> क २, ३, १६; छां  
८, ६, ६; योशि ६, ४.  
नि(स>):-स्तुति<sup>०</sup>- -तिः नाप ६, ३८.  
नि(स>):-स्त्रीक<sup>०</sup>- -कस्य महा ३,  
४८; या २, १४<sup>०</sup>.

a) 'प्रे घा<sup>०</sup> इति निसा. । b) वा.क्रि.वि.द्र. । c) द्रस. एकवत्त्वं द्र. (पा २, ४, २) । d) व्यु. ? = नाडीविशेष- ।  
e) पा. ? 'नः आह आश्मरथ्य- (< अश्मरथ- >) -थ्यः' इति त्रिपदः शोधः द्र. । f) 'निघनम्' इत्यस्य पूर्वाशः द्र. ।  
g) बस. (पावा २, २, २४) । h) विशेषि. द्र. । i) पा ५, ४, ७७ । j) पा ५, १, १०९ । k) 'निःश्रेयसम्' इति आन.,  
अध्या. । l) 'निश्चसन्' इति निसा., 'श्चसत्, श्चसत्' इति अध्या. संदि. । m) प्रास. (पावा २, २, १८) । n) समाहारे  
द्रस. । o) 'निःसङ्गः साङ्गयोगज्ञः' इति अध्या. । p) तु. सस्थ. टि. 'अभि' । q) विसर्गलोपः (पावा ८, ३, ३६) ।



नि(स्>):स्पृह<sup>a</sup> - हः मै २, ११;  
मैत्रि २, ७<sup>b</sup>; नाप ३, ५९; रार  
४, २; महा २, ६३; तुअ १८;  
गी २, ७१; ६, १८.

निःस्पृह-चेतस- -तसा त्रिवा २,  
१६३; २अव ३२८: ३.

निःस्पृह-ता- -ता शां १, १०.

निःस्पृह-त्व- -त्वम् नाप ४, २४.

नि(स्>):स्वधा-कार<sup>a</sup> -रः गौ २,  
३७; नाप ३, ७५; ६, ३८.

नि/कष

नि-कष<sup>a</sup> - षे रुजा १, १४.

नि/कि, निचिक्युः<sup>d</sup> वृ ४, ४, १८.

नि/कित् (निवासि)

नि-केतन<sup>e</sup> - नम् १संन्या १, १;  
कथु १, १.

नि/किरविरहिततदाश्रितकर्मो-  
चितकृत्य<sup>f</sup> - त्वम् नाप २.

नि/कुञ्ज

नि-कुञ्जन- -नात् योरा २१.

नि-कुञ्ज<sup>g</sup> - आः सार २२१: १९;  
२२५: ११; २३२: १५; २५५: ३;  
२७५: २३; २८१: १९; आनाम्  
सार २२४: २३; २२५: ११;  
२३४: २; अः सार २२५: १५;  
२५१: २१; २५३: २२; २७४:  
२२; २७९: ९; २८४: २३;  
२८६: १५; अः सार २३७:  
७; अः सार २६९: २२.

नि-कुञ्ज-केलि-कौतुका(क-आ)-

विष्ट-दे(ह>)हा- -हाम् सार  
२३२: ११.

नि-कुञ्ज-ता- -ताम् सार २२२: १९;  
२२३: १; २३७: ६; २४२: ६.

नि-कुञ्ज-देवी- -वीम् सार २८०: ४;  
-व्या सार २२३: १०; २२६: १;

२२९: ६; २३२: २२; २४०: ३;

२४५: १०; २४६: ७; १९;

२४८: १६; २५०: १५; २५२:

१७; २६१: २२; २७५: ४; ५;

२७७: २२; २८१: ९; २८३:

८; -व्या: सार २२२: २;

१६; २२३: १३; २२४: १;

१६; २२६: १४; २२७: २०;

२३९: १४; १७; २२; २४०:

५; २४८: ११; १२; २५०:

१८; २५२: ११; २५४: १८;

२५९: २; ३; २६०: १७; २७९:

२०; २८१: १२; २८७: ४; १२;

२८८: ११; २९१: १५.

नि-कुञ्ज-नाना-लता-ग्रन्थि-

-न्थि: सार २४५: २२.

नि-कुञ्ज-रास-स्थल- -लानि सार  
२४८: १५.

नि-कुञ्ज-लीला- -ला: सार २२६:  
२१.

नि-कुञ्ज-श्रेणि- -णिषु सार २२४:  
४; २४५: २३; २६३: ४.

नि-कुञ्ज(ज-ई)श्व(र>)री- -यां सार  
२५८: ६.

नि/कृ

नि-कृत-

नि-कृत-त्व- -त्वम् मै ३, ५<sup>i</sup>.

नि/कृन्त>कृन्ति, नि-कृन्तयेत् वृजा  
३, ३४; लु १३; त्रिवा २, २२;  
योशि ६, २७.

नि/कृष्

नि-कृष्<sup>h</sup> - -र्वेण इ १६: १०.

नि/क्षिप्, निक्षिपन्ते सांस् ६, ८;  
निक्षिपेत् वृजा ३, १२; जाद ३,  
१०.

नि-क्षिप्त- -सम् ब्रवि ४४.

नि-क्षिप्य मै २, ५, २; जाद ३, ९;  
१०; प्रा १, १; ऊ ६३: १०; वष  
३१२: २३.

नि/खन्, >खानि, निखनेत् शा ८.  
नि-खान सं १४; १७.

नि-खानयन्ति आपे ७: ६.

नि-खर<sup>b</sup> - -रम् ब्रवि ७३.

नि-खिल<sup>c</sup> - -ल: हे १२; -लानि श्वे  
१, ३; नाप ९, २.

नि-खिल-निगमो(म-उ)दित-स-

काम-कर्म-व्यवहार- -र:  
मवा ४.

नि/गच्छ, गम्, निगच्छति वृ २, १,  
१८; ४, ३, ३६; नाप ३, ३६;  
यो १, ५०; गी ९, ३१; १८, ३६.

नि-गम<sup>i</sup> - -म: कृष् ५; -मम्  
कृष् १४; -मा: सूता १, ७.

नैगम- -म: नाप ५, २६.

निगमा(म-अ)न्त-रूप- -पम्  
पा ९, ७.

निगमो(म-उ)दित- -तानि सूता  
३, १.

नि-गमन- -नम् सुबा १३<sup>j</sup>.

नि/गद्, निगद्यते लु १०; व्या ४४;  
४८; योचू ७; ४९; गोउ ५०;  
५६; ५८; वउ २, ३०; निग-  
द्यन्ते गार ४०७: २०.

नि/गल्

नि-गल<sup>k</sup> -

निगल-च्छेदन- -नाय त्रिवि ७,  
४६<sup>k</sup>.

नि-गीर्ण- नि/गृ(निगरणे) द्र.

नि/गृह

निगृह, डा- -ढम् ब्रवि २०; अवि  
२०; -ढाम् श्वे १, ३; कै १, १;  
नाप ९, २; बि १.

a) बस. (पावा २, २, २४)। b) विसर्गलोपः (पावा ८, ३, ३६)। c) °हा इति अज्या. सुपा. यनि. सु-शोधः।

d) वैतु. पा. (६, १, ३५) <नि/की</चाय् इति। e) पा. ? निकरविरहिततदाश्रमोचितकृत्य- इति शोधः  
(तु. अज्या.)। f) 'निराकृतित्वम्' इति मैत्रि ३, ५। g) नाप.। =नोत्र। h) तु. सस्थ. टि. गोलाख-। i) °नप्र°  
इति आन., °नः इति अज्या.। j) =निगड- (=पाश-)। k) निर्गल° इति निसा.।

निगृह-गुच्छ-पुष्प-पराग-

-गाः सार २२८ : १५.

निगृह-वत् श्वे १, १४; ब्र ३, ९;  
ध्या २२.नि/गृह, ग्रह, निगृहामि गी ९,  
१९; निगृहीयात् गौ ३, ४२;  
शि ७, ३६.नि-गृहीत- -तम् गौ ३, २५; -तस्य  
गौ ३, ३४; महा ५, ७३; -तानि  
गी २, ६८.निगृहीता(त-अ)निल- -लम्  
मैत्रि ६, २१.निगृहीते(त-इ)न्द्रिय-द्विष्-  
-द्विषः महा ५, ७७; मु २, २, ४१.

नि-गृह भव ३, २७.

नि-ग्रह- -हः गौ ३, ४१; अज ४,  
९२; गी ३, ३३; -हम् गी ६,  
३४; -हे मु २, २, ३८.निग्रह-कर्मन्- -मणि महा ४,  
१०५.निग्रहा(ह-अ)नुग्रह-रूप(प>)-  
पा- -पा सी ३४.निग्रहा(ह-अ)यत्त- -त्तम् गौ  
३, ४०.नि/गृ(निगिरणे)>गिर, निगिरति मै  
२, ७; मैत्रि २, ६; निगिरेत् ते  
६, ८६<sup>b</sup>.

नि-गीर्ण- -र्णः महा ४, ६५.

नि/चाय्

नि-चाय्य क १, १, १७; ३, १५; श्वे  
२, १९<sup>c</sup>; ४, ११; अशि ५, ६<sup>d</sup>.

नि-चाय्य-

निचाय्य-स्व- -स्वात् ब्रसू १,  
२, ७.

नि/चृत्

नि-चृत्-

निचृद्-गायत्री- -त्री वउ ५, २.

१निज<sup>०</sup> भव २, २६.२निज, जा<sup>१</sup>- -जम् मैत्रे १, ४, १२;

१योत १७; स्क १३; योशि १, १५;

अज ५, १३; -जया त्रिवि ४, १४.

निज-धर्मा(र्म-अ)भिव्यक्ति- -क्तिः  
सांसू ५, ९५.

निज-बोध-बीज- -जम् हे १३.

निज-मन्दिर- -रम् त्रिवि ७, ६;  
सि ६, २७.

निज-महिमन्- -झि आबो ३.

निज-मुक्त- -क्तस्य सांसू १, ८६.

निज-वत् स्क २.

निज-शक्ति- -क्तिः सांसू ५, ४३.

निजशक्ति-योग- -गाः सांसू ५,  
३६.

निजशक्त्य(क्ति-अ)भिव्यक्ति-

-क्तेः सांसू ५, ५१.

निजशक्त्यु(क्ति-उ)द्भव- -वम्  
सांसू ५, ३१.

निज-स्वरूप- -पाय गोड ६४.

निजा(ज-आ)नन्द- -न्दे द १८.

निजा(ज-अ)भ्यास-मार्ग- -गात् सौ  
२, २.

नि/तप्, नितपति छां ७, ११, १.

नि-तर-

नितराम्<sup>१</sup> सार २६५ : ५.नि-तल<sup>१</sup>-नितल-लोक-ज्ञान- -नम् शां १,  
७, ५२.१नित्य, त्या<sup>०</sup>- -त्यः क १, २, १८; २,

२, १३; वृ ४, ४, २३; श्वे ६, १३;

गौ ४, ५९; हं २१; ना २; वृड

९, ८; सुबा ७; ससा २; ४; शु

२, १७; ते ३, ४२; ४८; ६, ८७;

ब्रवि ९७; मैत्रे १, ४, ११; ३,

२; ६; नाप ६, २३; श २०; ३०;

त्रिबा १, २; त्रिवि १, ११; २,

१६<sup>१</sup>; ३, २; योशि ४, १२; अज

५, ७५; कुं २५; म १, ८; जाद

५, १३; १०, २; गोपू २०; गोड

३०; ३५; इ १२ : १२; नापू १,

१२; भव २, २१; २७; ३०; ३७;

४०; ४९; वउ ५, ४९; ६, ५१;

सांसू ६, १३; गी २, २०; २४; स्वम्

क १, २, १०; ३, १५; सुं १, १,

६; ३, १५; श्वे १, १२; ३, २१; ४,

२१; ६, ३; १७; गौ १, ३; ३, ३३;

४, ११; ७२; ८२; मैत्रि ७, ८; ब्रवि

३; कै १, १६; मना २, १३, १९<sup>१</sup>;

अना २६; २८; २९; अशि ३, ९;

वृजा ८, १-५; वृपू ४, १५, ३३;

४, १६; ५, १२-१८; वृड ९, ११;

१७; शु १, १८; ते १, ५१; २, ८;

६, ७०; ८०; ब्रवि ४७; ७७; ८०;

१योत ९; १२३; १२६; १२८<sup>१</sup>;

नाप ३, ३१; ४०; ५३; ६८; ७०;

७३; ७४; ५, ३५<sup>१</sup>; ६, ३६; ९,

११; त्रिबा २, २०; २६; योचू

२३; ३६; ७२<sup>१</sup>; ८७<sup>१</sup>; सी २६;

निर्वा २९८; १७; मं ३, १, २; श

२७; त्रिवि २, १; ७, १<sup>१</sup>; रार १,९; ४, १; १२; राउ १, २; ५, १<sup>१</sup>; ४;

वा ३३; ३६; मुद्र ४; शां १, ७,

५१; पै ३, ४; ४, २३; मि ६; महा

१, १९<sup>१</sup>; ३, ४७; ४, १६; १७;

८६; ५, ६२; ६३; ६, १९; ६१;

६४; ८३; योशि १, ६; ६६; ८४;

१०१; १२६; ६, ५४; १संन्या २,

६०; ७७; ए १३; अज १, ३२;

३४; २, ४२; ४, २६; ५, ४९; ५२;

६९; ७२; ११५; अक्षि १, ८; ३६;

अध्या १; ६१; पाशु २, २९; ४१;

१अव २७; त्रिता ४, ३७; ५, १;

दे १०; करु ७; २४; २९; रुह ३;

b) अत्र पूष. 'मनसः' इति नापू. पदेनाऽन्वितमिति गमकत्वात् स. सुमर्षः । b) 'निगिरिः' इति अज्या. ।

o) मा ११, १ । d) 'निदिध्यात्' इति अज्या. । e) व्यु. ? = अव्य. (= पन<sup>१</sup>) । f) वैपश् यद्र. । g) पा ५, ४, ११ ।

h) तैआ १०, ११, १ । i) 'त्यग' इति मुपा. यनि. शोधः (तु. निसा.) ।

३२; यो १, १७; ४६; ५५; ५६;  
 ६२; २, २२; ३३; ३, ३५; भ  
 २, १; २७; रुजा ३, १; ग ३; ६१;  
 १४; जाद २, ५; ३, ३; ४, २६;  
 २७; ३९; ५, १०; ६, १०; ११;  
 १८; ८, ८; ९, ३; पं ३३; गोपू  
 २८; गोड ४९; ६०; या २,  
 १३; २२; वरा २, २१; ४, १५;  
 ३५; ५, ५; ६; ४८; ५६; शा ११;  
 दत्ता १, ६; ३; सौ ३, १; सर ३,  
 १; २; ७; ८; ११; सु १, १, २२;  
 २, २, ७२; च २० : १०<sup>१</sup>; चा  
 १३; २प्र ३४ : २०; २३; ३५ :  
 २; का ६; नार ५; नापू २, १३;  
 नाड ३, ६; पा ९, १०; १०, ३;  
 राधा १, ५; सार २२८ : १२;  
 २३१; ९; २४३ : ८; २४९ : ३;  
 २५३; १७; २५४ : १२; २५८ :  
 १; ५; २७०; १; २७८; १; २७९ :  
 २०; २८३ : ११; मृ ५; वड  
 ३१५ : ९; शि ५, २९; ७, ४२;  
 ४५; ४६; ४८; ९२; सिसि ३८२ :  
 १५; रा ४२३ : १०; व ४५६ :  
 १; ४६२; ४; ४६५ : १२; विद्या  
 १; १कौल ३; २; भव १, १०<sup>३</sup>;  
 ३७; २, १३; ५७; ६०; ३, ४; ४,  
 १; ५, ११; १४; पित्र ६, १९;  
 अवि ३; वड ५, ६; ९; १६; ब्रसू  
 २, २, १४; गी २, २१; २६; ३०;  
 ३, १५; ३१; ९, ६; १०, ९; ११,  
 ५२; १३, ९; १८, ५३; -त्यस्य  
 आबो २५; १आ २९; सांसू १,  
 १२; गी २, १८; -त्या १संन्या २,  
 ४४; राधा ३, १५; आथ ३९८ : २;  
 १६; गु ७१; -त्या योशि १,  
 १५५; भव २, १; १४; -त्यानाम्

श्व ६, १३; गोपू २०; गु ७१;  
 भव २, ४९; -त्याय नाड २, ४;  
 -त्ये महा ४, १२२; ६, १३; नापू  
 ५, ३०; वड ५, ४५; ६, १५; -०त्ये  
 व ४६६ : १; -त्येन वड ६, २२.  
 नैत्यक<sup>b</sup> -कम् शि ७, २५.  
 नित्य-कर्मन् -र्म सूता १, २४;  
 -र्माणि जाद ७, ४.  
 नित्य-क्रीडा -डाम् सार २४६ : ८.  
 नित्यक्रीडा (डा-आ)त्मन् -त्मने  
 सार २५१ : ११.  
 नित्य-चिद्-घन -नम् महा ४,  
 ११९.  
 नित्य-चिन्मात्र-रूप -पः मैत्रे ३,  
 १६.<sup>c</sup>  
 नित्य-जात -तम् गी २, २६.  
 नित्य-ज्ञाना (न-आ)नन्द-रूप-  
 -पाः सि २, १२.  
 नित्य-ता -ता महा ६, २९.  
 नित्य-तृप्त, सा -सः ते ३, १५; पप  
 ४२० : १२; अन्न ५, ९७; १आ  
 १३; गी ४, २०; -सा अन्न १, ४८.  
 नित्य-तृप्ति -सिः मं ५, १, ८.  
 नित्य-त्व -स्वम् ब्रवि २५; त्रिवि  
 २, १<sup>३</sup>; ८; ३, २<sup>३</sup>; सांसू ५, ४५;  
 ४८; ब्रसू १, ३, २९; -स्वात् योसू  
 ४, १०; ब्रसू २, ३, १७; ४, १६;  
 -स्वे सांसू ६, ३३; -स्वेन ससा १,  
 २३.  
 नित्यत्व-साधन -नम् ब्रवि २६.  
 नित्यत्वा (त्व-आ)नित्यत्व - -त्वे  
 त्रिवि २, १.  
 नित्य-दा<sup>d</sup> ते ३, २७<sup>e</sup>; रुजा २, ३; ४.  
 नित्य-निर्मल-रूपा (प-आ)त्मन् -  
 -स्मा ते ६, ४०.  
 नित्य-निवृत्त, ता -तः पदं २; -त्ता

वृत् ९, ४.  
 नित्य-नूल-भाव-भेद-शृङ्गार<sup>f</sup>-  
 -रम् सार २२८ : १२.  
 नित्य-नैमित्तिक (>)का -काः भव  
 २, ६७.  
 नित्यनैमित्तिक-कर्मन् -र्मभिः  
 सी ३६.  
 नित्यनैमित्तिक-याग-व्रत-  
 तपो-दाना (न-आ)दि -दिषु नि  
 २६.  
 नित्य-परिपूर्ण -र्णः त्रिवि १, ११;  
 २, १५; -र्णम् त्रिवि ७, १७.  
 १<sup>g</sup>नित्य-पु (ष्ट>)ष्टा -ष्टाम् मना  
 १, १०; २शिसं ३६; व ४६२ : १२.  
 नित्य-पूत -तः पप ४२० : १०;  
 ब्रवि ९८; तुअ ४.  
 नित्यपूत-स्थ -स्थः पदं १<sup>h</sup>;  
 लिं ३११ : ५; ६.  
 नित्य-प्रत्यक्ष-निर्णय -यः ते ४,  
 ७०<sup>i</sup>.  
 नित्य-प्रत्यक्ष-रूपा (प-आ)त्मन् -  
 -स्मा ते ४, ७०.  
 नित्य-प्रबुद्ध-चित्त -तः महा ४, ११  
 नित्य-प्रमुदित -ताः मैत्रि ७, ८.  
 नित्य-प्रवसित -ताः मैत्रि ७, ८.  
 नित्य-बलि -लिम् शि ४, १६.  
 नित्य-बुद्ध-विशुद्धै (द-ए)क-सच्-  
 चिद्-आनन्द<sup>j</sup> -न्दम् ते ३,  
 ११.  
 नित्य-बोध -धः पदं २<sup>k</sup>.  
 नित्य-बोध-स्वरूप (>)पा -पः  
 (?पा<sup>l</sup>) ध्या ९, ३, १४; -पा ध्या  
 ९, ३, १३.  
 नित्य-ब्रह्म-चारिन् -री म ४९ : ९.  
 नित्य-मङ्गल -लम् त्रिवि ७, २;  
 सि १, ८.

a) तैआ १०, ११, १। b) पा ५, १, १३२। c) ०त्यं चि० इति अज्या.। d) कालवाचित्वसामान्यस्य  
 उर्से. (पा ५, ३, १५)। e) 'सर्वदा' 'नित्यशः' इति यक. अज्या., अज्या. संटि.। f) बस. > कस. > बस.। g) खि  
 ५, ८७, ९। h) ०कृट् इति निसा.। i) ०क्षनिर्णितः, ०क्षनिर्णीतः इति यक. अज्या., अज्या. संटि.। j) समाहारे  
 द्वस.। k) ०पूतस्थः इति अज्या.। l) पा. ? यनि. शोधः (तु. निसा.)।



नित्यमङ्गल-मन्दिर-रम् त्रिवि  
७, १९; सि ६, ६.

नित्य-मुक्त-क्तः सांस् ५, ७; -क्तम्  
पै १, ३; -क्तस्य मैत्रि ६, २८<sup>a</sup>;  
-क्तः त्रिवि ६, २१; २३; सि ५,  
१४; ६, १६.

नित्यमुक्त-चिद्-आत्मन्-त्मने  
वरा २, ३३.

नित्यमुक्त-त्व-त्वम् सांस् १,  
१६२.

नित्यमुक्त-ब्रह्म-स्थान-नम् नि  
४९.

नित्यमुक्त-स्वरूप-पम् त्रिवि  
७, १७; सि ६, ३.

नित्यमुक्तस्वरूप-वत्-वान्  
ते ३, २९.

नित्य-याचनक-काः मैत्रि ७, ८.

नित्य-युक्त-क्तः नाप ६, २; गी  
७, १७; -क्तस्य गौ १, २५; गी  
८, १४; -क्ताः गी ९, १४; १२,  
२; -क्तैः सु २९४; १६.

नित्य-रूप-पः ते ३, २.

नित्य-लीला-लया सार २४८:  
२२; -लयाम् सार २२४: ३;  
२४१: ३.

नित्यलीला(ला-अ)नुरक्त-क्तः  
राधा ४, २१.

नित्यलीला-भजना(न-आ)-  
नन्द-न्दः सार २५४: ११.

नित्य-विनिश्चल-लः कुं १६.

नित्य-विहार-रहस्य-केलि-कला-  
(ला-आ)विर्भाव-भावित-  
-तम् सार २५५: २.

नित्य-विहित-कर्म-फल-त्याग-  
-गः शां १८, ८.

नित्य-वैकुण्ठ-ण्डम् त्रिवि १, ११.

नित्य-वैरिन्-रिणा गी ३, ३९.

नित्य-शस(>) ब्रवि १४; शु १२;  
त्रिवा २, ६३; १अव १०; २२;

त्रिता ५, १४; रुजा २, २; ४,  
१२; राधा ३, १४; अबि १४;  
गी ८, १४.

नित्य-शान्ति-न्त्यै गोपू २३.

नित्य-शुचि-सुखा(ख-आ)त्म-

ख्याति-तिः योसू २, ५.

नित्य-शुद्ध-द्ध अक्ष ५; -द्धः  
ते ३, २०; ५, ४०; मं ३, १, ६;  
-द्धाय नाउ २, ४.

नित्य-शुद्ध-चिद्-आनन्द-सत्ता-  
मात्र-त्रः ते ३, ११.

नित्य-शुद्ध-बुद्ध-परब्रह्मा(द्वा-आ)-  
नन्दमय-यः नापू २, १७.

नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-शिवै(व-ऐ)-  
क्य-भक्त<sup>b</sup>-क्ताः शि ३, ८.

नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-सत्य-परमा-  
(म-अ)नन्ता(न्त-अ)द्वय-परिपूर्ण-  
-णः ता ३, ८<sup>c</sup>.

नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-सद्-अद्वय-  
-यः अक्षि ४६.

नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वभाव-  
-वस्य सांस् १, १९.

नित्य-शुद्ध-विमुक्तै(क्त-ए)क-कम्  
वरा ३, २.

नित्य-शेष-स्वरूप-पः ते ३, १२.

नित्य-सत्त्व-स्थ-स्थः नाप ४,  
१३; गी २, ४५.

नित्य-संन्यासिन्-सी गी ५, ३.

नित्य-समाधि-धिना सौ २, १८.

नित्य-सा(स-आ)कार-रः त्रिवि  
२, ६<sup>d</sup>.

नित्य-सिद्ध-द्धः १आ ६.

नित्य-सिद्धि-स्वरूप-पः ते ५, ६९

नित्य-स्थल-लम् राधा १, २८; ३,  
१८; ४, २६; -लानि राधा ३, ६.

नित्यस्थल-सामीप्य-योग्य-

-न्यः राधा २, ७.

नित्या(त्य-आ)कान्त-न्ते चक्र १.

नित्या(त्य-आ)क्षालन-नम् वउ

६, ३९.

नित्या(त्य-आ)नन्द, न्दा-न्दः शु  
१, १८<sup>e</sup>; ते ४, ६; श २०; सार  
२४५: २०; -न्दम् वउ २, १; शु  
१, १८; -न्दा अक्ष १, ५; -न्दाय  
सार २४५: १५; -न्दे रापू १, ६.

नित्यानन्द-चिद्विलासा-

(स-आ)त्मक-

नित्यानन्दचिद्विलासात्मक-

त्व-त्वात् त्रिवि ३, २.

नित्यानन्द-मय-यः नाप ८,  
१२; -यम् शु १, १८<sup>f</sup>; ते ६,  
७२; १०२.

नित्यानन्द-मूर्ति-

नित्यानन्दमूर्ति-मत्-

-मद्भिः सि ५, ८.

नित्यानन्द-रूप-पः सार  
२३८: १८; काम १६; -पम् सार  
२४८: १५; -पेण सार २३८: १८.  
नित्यानन्द-लीला-लाम् सार  
२७०: ३.

नित्यानन्द-स्वरूप-पः ते ३, २७

नित्यानन्दस्वरूपा(प-आ)-

त्मन्-त्मा ते ४, ६२.

नित्यानन्दा(न्द-अ)वासि-सिः  
सु २, १, १.

नित्यानन्दै(न्द-ए)क-स्वरूप-  
-पः गोउ ३०.

नित्या(त्य-आ)नन्दि(न्>)नी-  
-०नि व ४३५: १२.

१ नित्या(त्य-आ)नित्य<sup>d</sup>-त्यः अशि  
१, ३.

२ नित्या(त्य-आ)नित्य<sup>e</sup>-

नित्यानित्य-रूप(प>)पा-पा  
सी १५.

नित्यानित्य-वस्तु-विचार-  
-रात् नि ४१.

नित्यानित्य-विवेक-कः वरा  
२, ३; -केन म४८: १०; १५: २०;

a) °युक्त° इति आन. संटि.। b) दस. > कस. > षस.। उप. वृत्.। c) °रमानन्दान° इति अख्या.। d) कस.। e) दस.।

४९: ५; ११; १९.  
 नित्यानित्य-विहीना(न-आ)-  
 त्मन्- -त्मा ते ४, ७२.  
 नित्या(त्य-अ)नुभव-रूप- -पस्य  
 १अव २१.  
 नित्या(त्य-अ)भियुक्त- -क्तानाम्  
 गी ९, २२.  
 नित्यो(त्य-उ)दय-  
 नित्योदय-व(त>)ती- -ती  
 अन्न ५, ५६.  
 नित्यो(त्य-उ)दित- -तः महा ६,  
 ८०; -तम् त्रिब्रा २, १५३; अन्न  
 १, १९; ५, ६६.  
 नित्यो(त्य-उ)द्युक्त- -क्तः यो २, ३१;  
 -क्ताः गोपू २१.  
 नित्यो(त्य-उ)पलब्ध्य(ब्धि-अ)-  
 उपलब्धि-प्रसङ्ग- -ङ्गः ब्रसू २,  
 ३, ३२.  
 रनि(त्य>)त्या<sup>१</sup>- -त्या सुसु ११.  
 नि/द्व, निदधाति मना २, १९<sup>b</sup>;  
 त्रिता १, ६९<sup>b</sup>; २, ३१; ९<sup>b</sup>व४३०:  
 ६; ४६१: ६.  
 १नि-दाघ<sup>२</sup>-  
 निदाघ-विनोदन-धारा-गृह-  
 शीकर-वर्षण- -णम् महा ४,  
 २६.  
 रनिदाघ<sup>३</sup>- -०घ महा ४, १; १७; ६५;  
 ५, ३६; १७०; ६, ३९; अन्न १,  
 ३; १६; २, १३; ४, १८; २५; ७७;  
 ५, ७; ५७; वरा ४, १३; -घः ते  
 ५, १; महा ३, १; अन्न १, १;  
 १७; २, १; वरा ४, १; ५, १.  
 निदाघ-जडभरत-दत्तात्रेय-काल्या-  
 यन-भरद्वाज-कपिल-वसिष्ठ-पि-  
 प्लादा(द-आ)दि- -दयः  
 रुजा ३, १.

नि-दान<sup>१०</sup>- -नम् वृपू ४, १३.  
 निदान-वत्- -वान् वृपू ४, १३.  
 निदिध्यास-, निदिध्यासन-  
 नि/ध्यै द्र.  
 नि/दिश  
 नि-देश-  
 निदेश-वर्तिन्- -र्ती गुषो ४२१:  
 ७.  
 नि/दृश्  
 नि-दर्शन- -नम् गौ ३, ३; वृपू ३,  
 ४; ६; वपू १, ४; ५; २, २; ३<sup>१</sup>;  
 -नात् गौ ४, ३३.  
 नि/द्रा  
 नि-द्रा<sup>११</sup>- -द्रया योशि ६, २३; -द्रा  
 गौ १, १५; मै ३, ५; मैत्रि ३, ५;  
 ६, २५; ध्या ८०; नाप ३, ८६;  
 योचू ५३; योशि ५, ४२; वरा २,  
 ५९<sup>१</sup>; योसू १, १०; -द्राम् गौ  
 १, १४; सौ २, २; -द्रायाः रापू  
 ४, ५७<sup>१</sup>; अध्या ५.  
 निद्रा-जागरि(त>)ता<sup>१</sup>- -ता  
 सार २८२: ११.  
 निद्रा(द्रा-आ)दि-कर्म-कृत-  
 -कृत त्रिब्रा २, ८७.  
 निद्रा-भय-सरीसृप- -पम् मं  
 १, २, ३.  
 निद्रा-भिक्षा- -क्षे १अव-१४.  
 निद्रा-रूप- -पम् यो १, ५९.  
 निद्रा(द्रा-अ)ल(स>)सा<sup>१</sup>- -सा  
 सार २६९: १.  
 निद्रा(द्रा-आ)लस्य- -स्यौ  
 (?स्ये<sup>१२</sup>) नाप ६, १; शारी ४.  
 निद्रालस्य-मति- -तिः ध्या  
 ९३, ३.  
 निद्रालस्या(स्य-आ)दि-  
 -दयः हं ८; भव ४, ११.

निद्रा(द्रा-आ)लस्य-प्रमादो-  
 (द-उ)त्थ- -त्थम् गी १८, ३९.  
 निद्रा(द्रा-आ)लस्य-भय<sup>१३</sup>-  
 -यम् वि ६.  
 निद्रा(द्रा-अ)वस्था- -स्था ध्या  
 ९३, १२.  
 निद्रावस्था-मध्य- -ध्ये ध्या  
 ९३, १२.  
 निद्रा-संचलि(त>)ता<sup>१४</sup>- -ता  
 सार २३४: ५.  
 निद्रा-संभावित-विप्रलम्भ-  
 सुख-समनुभव-तिरस्कृत-  
 रसिका(क-आ)नन्दा(न्द-आ)-  
 त्मन्- -त्मने सार २५२: ४.  
 निद्राल- -लुः अक्षि ३६; वरा ४,  
 १५.  
 नि/धा, >धापि, निदधाति पा९, ८;  
 निदधति छां २, ९, ८; निदध्मसि  
 सूता २, १०९<sup>१</sup>; निधेहि नी २,  
 १५९<sup>१</sup>; निधेतन मना २, ६०९<sup>१</sup>;  
 निदध्यात् वृजा ३, ११; वरा ५,  
 १७.  
 ९<sup>१</sup>निदधे नापू ३, ३; व ४४३:  
 १६; ४४९: २; ४५३: १; निदधौ  
 के ३, ६; १०; छां १, १०, ५.  
 निधीयते वृ ३, २, १३; मैत्रि ६,  
 २४.  
 नि-धन<sup>१५</sup>- -नम् छां २, २, १; २; ३,  
 २; ४-७, १; ८, २; ९, ८; १०, ४;  
 ११, १; १२, १<sup>१</sup>; १३, १<sup>१</sup>;  
 १४-२१, १; वृ ६, ३, ४; मैत्रि ६,  
 २२; ब्र १; गी ३, ३५.  
 निधन-पति- -तये मना २,  
 १६९<sup>१</sup>; वृजा ३, १४.  
 निधनपता[?त्य<sup>१६</sup>(ति-अ)]-  
 न्तिक- -काय मना २, १६९<sup>१</sup>.

a) =देवीविशेष-। b) ऋ १, ९९, १। c) =घर्म-। d) व्यु.?=ऋषिविशेष-। e) व्यु.?=आदिकारण-।  
 वैपश् यद्र.। f) =भकार-बीजाक्षर-। g) पा.१ यनि. शोधः द्र. (वृ. अ.व्या.)। h) समाहारे द्रस.। i) ऋ १, ५०,  
 १२। j) मा १६, १२। k) ऋ १०, ३७, १२। l) ऋ १, २९, १७। m) क्युः प्र. (पाठ २, ८१)। n) तैआआ १०,  
 १६। o) पा.१ यनि. शोधः द्र.।

निधन-भाजिन्- -जिनः छां २,

९, ८.

नि-धा<sup>१</sup>- -ध्या मना २, ७३;

चा २१.

नि-धान- -नम् सुं ३, १, ६; गी

९, १८; ११, १८; ३८.

नि-धापयित्वा<sup>२</sup> मै १, १; मैत्रि १, २.

नि-धाय वृ ६, ४, २५; शां १, ७, ४३;

त्रिता १, ७९; म १, ३, ४; ५.

नि-धि- -धयः सार २, ३५; सार

२२३: २३<sup>३</sup>; -धिः छां ७, १, ४;

या २, १; -धिम् छां ७, १, २, २,

१; ७, १; इ १२: ७; १९: २१;

कालिष्ठ ०३: २; -धीन् सार २२४:

१०.

निधि-दातृ- -ता वपू १, ६; ७.

निधि-पति- -तिः वउ २, ७.

नि-हित- -तः क १, २, २०९<sup>४</sup>; २,

१, ८९<sup>४</sup>; श्वे ३, २०९<sup>४</sup>; मना २,

१२, १९<sup>४</sup>; मै २, ९; ५, ७; मैत्रि २,

६; ६, ७; सुबा ७; ८; नाप ९,

१३९<sup>४</sup>; श १८९<sup>४</sup>; ए ५; अध्या १;

नाउ १, ७९<sup>४</sup>; पा २, ३९<sup>४</sup>; -तम्

क १, १, १४; सुं २, १, १०; ३,

१, ७; २, १; तै २, १, १; छां ८,

३, २; वृ २, २, ३<sup>२</sup>; मै ५, ४;

मैत्रि ४, ५; ६, ४; २७<sup>२</sup>; कै १,

३९<sup>४</sup>; मना १, ३९<sup>४</sup>; २, १२, ३९<sup>४</sup>;

सुबा ८, कर ११; रुह ३६; बा

१८; नाउ १, १४९<sup>४</sup>; गु ३६;

-ता मना १, ४९<sup>४</sup>; ए ९; सर २,

६९<sup>४</sup>; नापू ४, ९९<sup>४</sup>; ५, ३३९<sup>४</sup>;

-ताः सुं २, १, ८; २, २; मना २,

१२, १९<sup>४</sup>; -ते श्वे ५, १.

निहिता(त-अ)र्थ- -र्थः श्वे ४, १.

निधायेत<sup>५</sup> मैत्रि ६, १९.

नि/धै>दिध्यास्, निदिध्यासे

१अव १७<sup>१</sup>; निदिध्यासस्व वृ

२, ४, ४; ४, ५, ५.

नि-दिध्यास- -सः नाप ७<sup>३</sup>.

नि-दिध्यासन- -नम् शु ३, १३;

पै ३, १; अध्या ३४; कुं ९<sup>३</sup>.

नि-दिध्यासितव्य- -व्यः वृ २, ४,

५; ४, ५, ६.

निधुव<sup>१०</sup>-

निधुवि<sup>१</sup>- -विः, -वेः वृ ६, ५, ३.

नि/नद्

नि-नद्- -दम् छां ३, १३, ७.

नि-नाद्- -दः नाद ४५; सौ २, ८.

निन्द, निन्दति अत्र ५, २४; निन्द-

न्ति वृजा ५, १५; निन्दामि अत्र

५, ५९; निन्दात् २कौल ७<sup>१५</sup>;

८<sup>१५</sup>; निन्देत् छां २, १४-१८,

२; २०, २; निन्दात् १कौल ७: १.

निन्दा-

निन्दा-गर्व-मत्सर-दम्भ-दर्पे-

(र्व-इ)च्छा-द्वेष-सुख-दुःख-काम-

क्रोध-लोभ-मोह-हर्षा(र्व-अ)-

सूया(या-अ)हंकार(र-आ)दि-

-दीन् पठं २.

निन्दा(न्दा-अ)निन्दा-गर्व-

मत्सर-दम्भ-दर्पे-द्वेष-काम-क्रोध-

लोभ-मोह-हर्षा(र्व-अ)मर्षा-

(र्व-अ)सूया(या-आ)स्मर्सरक्षणा-

(ण-आ)दिक- -कम् तुअ १२<sup>१</sup>.

निन्दा(न्दा-अ)पवाद- -दम् शि

७, ३६.

निन्दा(न्दा-अ)मर्ष-सहिष्णु-

-ष्णुः पप ४२०: १२.

निन्दा-स्तुति- -ती शा १८.

निन्दास्तुति-न्यतिरिक्त-

-क्तः पप ४२०: १५.

निन्दा(न्दा-अ)हंकार-मत्सर-

गर्व-दम्भे(म्भ-ई)र्ष्या(र्ष्या-अ)-

सूये(या-इ)च्छा-द्वेष-सुख-दुःख-

काम-क्रोध-लोभ-मोहा(ह-आ)-

दि- -दीन् नाप ३, ८६.

निन्दित- -तः कठ ४; कुं १२;

कश्रु ३, ४; भव ४, ३; -ताः इ

१९: ११.

निन्द- -न्यम् नाप ५, १२.

नि/पत्(पतने), निपतन्ति महा ५,

१४२; न्यपतत् सार २४३, १०.

निपपात सूता ३, ८.

नि-पतित- -तम् सार २४३: १०.

नि-पात<sup>११</sup>- -तः २प्र ३४: ७; -तेषु

२प्र ३५: ७.

नि/पद्, निपद्यते वृ ६, ३, १.

नि/पीड

नि-पीड्य वृउ ४, ५; ध्या ९३;

त्रिब्रा २, ४४; ४६; जाद ३, ८.

नि/पुण

नि-पुण- -णः अत्र २, ६; वरा ३,

२६; भव २, २९.

नि/पृ>पृ, निपृणाति वृ १, ४, १६.

नि/बन्ध, निबध्नाति मै ३, २; मैत्रि

३, २; ६, २०; भव ३, १०; गी

१४, ७; ८; निबध्नन्ति सु २,

२, ४७; गी ४, ४१; ९, ९; १४,

५; निबध्नीयात् शां १, ३, ३.

निबध्मते गी ४, २२; ५, १२;

१८, १७; निबध्नन्ते शि १, १३.

नि-बद्ध- -द्धः ध्या ८६; शि ७,

१०३; गी १८, ६०.

नि-बध्नात्- -ध्नात् त्रिब्रा २, ९३.

a) अ १०, ७३, ११। b) पा ७, १, ३८। c) तैआ १०, १०, १। d) अ ३, २९, २। e) तैआ १०, १०, ३।

f) 'विभृत्तम्' इति मा ३२, ९। g) तैआ ८, १, १। h) मा ३२, ९। i) अ १, १६४, ४५। j) अ १०, ७१, २।

k) पा! 'र्थे' इति शोधः द्र. (तु. नापू. मन्त्रे 'धारयेत्' इति)। l) 'निदिध्यासेत्' इति अज्या। m) 'सनम्' इति अज्या।

n) 'न' इति अज्या. सुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या. संति.)। o) व्यु! = योत्रप्रवर्तक-अभिधिशेष-। p) पा! 'निन्दात्' इति शोधः द्र. (तु. १कौल ७: १)। q) 'दर्पेच्छा' इति अज्या। r) पा ७, ३, ८०।



नि-बन्ध- -न्धाः सी २९; -न्धाय  
गी १६, ५.

नि-बन्धन- -नम् सुबा ५१; ते ६, ५.

नि/बर्ह>बर्हि, निबर्हय व ४६२:  
१९.

नि-बिड<sup>१</sup>- -डम् आबो २८<sup>१</sup>.

निबिड-तर- -रम् वरा ३, ११.

नि/बुध>बोधि, निबोध क १, १,  
१४; गी १, ७; १८, १३; ५०;

निबोधत क १, ३, १४; गौ १, ३;

४; ४, ५; नाद ८; वरा १, १०.

निबोधयति मै २, ५.

नि/भल>भालि, निभालयसे छां  
६, १२-१३, २.

नि/भृ

नि-भृत- -तम् १योत ११६.

निभृत-निकुञ्ज-गृह- -हम्

सार २८४: २२.

नि/मज्ज<sup>२</sup>, निमज्जति महा ५, २१;

योशि १, २२; अञ्ज १, ४२; ४३;

४, ४; वरा ३, २८; निमज्जसि

ते ५, ७२.

नि-मज्ज<sup>३</sup>- -मः सुं ३, १, २; श्वे ४, ७;

ए २<sup>१</sup>; ५; -मस्य आबो १७;

-आः सार २५४: १०; -आनाम्

सार २३५: २३.

निमज्ज-ता- -ताम् सार २८३: ७.

नि-मज्जन- -नम् मै १, ७; मैत्रि १,

४; मैत्रे १, २; ध्या ९३, १२-१४.

नि-मज्ज्य त्रिवि ५, १३; ६, १०; २१.

नि/मन्त्रि(<मन्त्र-)

नि-मन्त्रित- -तम् १संन्या २, ६८;

-ते इ १४: १३.

निमित्त<sup>४</sup>- -तः नाप ५, १९<sup>१</sup>; -तम्

गौ ४, २७; करु ३१; स्व ६०:

४; सांस् ३, ६८; योस् ४, ३;

-तस्य गौ ४, २५; सांस् ५,

११९; -तानाम् करु ३१; -तानि

गी १, ३१.

नैमित्तिक- -कम् भव २, ६०.

निमित्त-त्व- -त्वम् सांस् ३, ७४.

निमित्त-नैमित्तिक-प्रसङ्ग- -ङ्गेन

सांका ४२.

निमित्त-मात्र<sup>५</sup>- -त्रम् गी ११, ३३.

निमित्त-व्यपदेश- -शात् सांस् ५,

११०.

निमित्त-संन्यास<sup>६</sup>- -सः नाप ५,

११; ११<sup>१</sup>.

निमित्त-संभव- -वात् सांस् ६, ५६.

निमित्ता(त-अ)भाव- -वात् सांस्

६, ४४.

नि/मिष>मेषि, न्यमीमिषत् क

४, ४.

नि-मिष- -षम् ते ६, ८९.

नैमिष<sup>७</sup>- -षे छाग २३: ९;

२४: ११.

नैमिषा(ष-अ)रण्य<sup>८</sup>-

-ण्यम् नाप १.

नैमिषीय- -याणाम् छां

१, २, १३<sup>१</sup>.

निमिषा(ष-अ)र्ध- -धम् ते १, ४७

नि-मिषत्- -षत् सुं २, २, १; -षतः

२शिसं ३३<sup>१</sup>; -षत् १संन्या २,

४७; सिशि ३८१: ११; गी ५, ९.

नि-मेष<sup>९</sup>- -षः त्रिवि ३, ७; ४,

१२<sup>१</sup>; ११<sup>१</sup>; गार ४०८: ११; -षम्

सी १४; -षाः वृ ३, ८, ९; मना

१, २९<sup>१</sup>; -षेण महा ४, ५९.

निमेष-काल- -लः, -ले त्रिवि ४,

१२.

निमेष-तत्(>) ते १, २४.

निमेष-मात्र- -त्रैः निरु २, ८.

निमेषा(ष-आ)दि-काल- -लात्  
मैत्रि ६, १४.

निमेषो(ष-उ)न्मेष- -षौ पित्र १,  
१३.

निमेषोन्मेष-वर्जित(>)ता-

-ता शां १, ७, १४; -तायाम् मं १,

३, ५; अता १२.

निमेषोन्मेष-संज्ञक- -कम्

गु १८.

निमेषो(ष-उ)न्मेष-सृष्टि-स्थिति-

संहार-तिरोधाना(न-अ)नुग्रहा-

(ह-आ)दि-सर्व-शक्ति-सा-

मर्थ्य- -ध्यात् सी ३४.

नि-मेषण-

निमेषणो(ण-उ)न्मेष- -षौ महा

६, २५.

नि/मील्

नि-मीलन-

निमीलना(न-आ)दि- -दि श

१, ४; जाद ४, ३४.

नि-मीलित-

निमीलित-दर्शन- -नम् मं २,

१, ६.

निमीलिता(त-अ)क्ष- -क्षः रुजा

१, १; अता २; -क्षस्व सिशि

३८१: २१.

नि/मृज्, नि...मृजे तै १, ४, ३; नि-

मृज्यात् वृ ६, ४, ५.

निम्न<sup>१०</sup>-

निम्न-ग, गा- -गः वृजा २, ८; -गाः

योशि ६, ११.

निम्न-नाभि- -भिम् वपू २, २.

निम्नो(प्र-उ)न्नत-स्थल- -लम्

१आ १८.

निम्ब<sup>११</sup>-

निम्ब-क- -कम् शि ६, ८०.

a) बस. (पावा २, २, २४)। उप. = बिल-? (तु. MW.)। b) 'महतीम्' इति अज्या., 'महति' इति अज्या. संटि.। c) = पाधा. / मस्त्र्। d) पावा १, १, ४७। e) 'ग्नप' इति निसा. मुपा. यनि. सु-शोधः (तु. अज्या.)। f) 'निलनः' इति अज्या.। g) व्यु?। h) तु. टि. चिन्मात्र-। i) = वनविशेष-। j) वैतु. 'शी' इति काचित्कः निसा., ग्रान. (शं.), BW.। k) अ १०, १२१, ३। l) मा ३२, २। m) वैप१ यद्र.। n) व्यु? = वृक्षविशेष-।

नि/मुच्

नि-मुच्-सूक् सूता २, १३९<sup>a</sup>.नि-ओचत्-चन् सूता ३, १०९<sup>b</sup>.

नि/म्रेड्, निम्रेडेरन् छां ३, १९, ४.

नि/म्लुच्, निम्लोचति छां ३, ११, ३;

निम्लोच छां ३, ११, २.

नि-म्लोचत्-चन् वृ १, १, १.

नि/यच्छ, यम्(यमने), &gt;यमि,

यामि, नियच्छति ब्र १; सर २,

५; नियच्छन्ति मैत्रि ६, १४;

नियच्छेत् क १, ३, १३.

नियमयन्ति मु २, २, ४६.

नि-यत्-तः भव २, २१; ३, २४;

-तम् सुं १, २, १; मना २, ७८९<sup>c</sup>;

पै ४, १९; महा ४, ७२; वरा २,

४३; सांका ४०; गी १, ४४; ३,

८; १८, ९; २३; -तस्य गी १८, ७;

-ताः नाप ६, ५; दे ३; सांका

३९; गी ७, २०; -ताम् गौ २, १३.

नियत-कारण-णात् सांसू १,

५६.

नियतकारण-त्व- -त्वात्

सांसू ३, २५.

नियत-धर्म-साहित्य- -त्यम्

सांसू ५, २९.

नियत-मानस- -सः गी ६, १५.

नियत-व्रत- -तः चू २०.

नियता(त-आ)कार- -रः १ संन्या

२, १९.

१ नियता(त-आ)स्मन्<sup>d</sup>-

नियतास्म-वत्- -वान् भव

३, १७.

२ नियता(त-आ)स्मन्<sup>e</sup>- -स्मनाम्

नाप ४, १३; -स्मने सूता ६, ६;

-स्मभिः गी ८, २; -स्मा नाप ४,

१६.

नियता(त-आ)हार- -राः गी ४,

३०.

नि-यति<sup>f</sup>- -तिः श्वे १, २; नाप ९, १;

-तिम् नाप ५, १०; महा ४, २०.

नियति-सहित- -ताः भा ९<sup>f</sup>.

नि-यन्तृ- -न्ता मै २, ९; मैत्रि २,

६; ६, ३१<sup>g</sup>; अशि ५, २०; नृड

९, ७; ब्रवि ९८; वटु ३१७: १०.

नि-यम<sup>h</sup>- -मः अना २४; ते १,

१५; १८; १योत २४; नाप ७;

त्रिब्रा २, २९; निर्वा २९८:

७; १आ ५; २अव ३३७: ४;

म १, १; जाद १, ४; वरा ५, ११;

सांसू १, ४१; ७०; २, ७; ३, ७६;

५, २२; ३९; १०३; १०८; १०९;

१११; ६, २२; २४; ३८; -मम्

गी ७, २०; -माः मं १, १, ४; शां

१, १; २; जाद २, २; योशि ६,

४६६; वरा ५, १४; शि ७, १०१;

योसू २, ३२; -मात् ते १, १८;

१कौल ७: २; २कौल ८; ब्रसू

३, ४, ७; -मेन पाशु २, ८; १२;

१४; लिं ३१०: १०; कालि

४०१: १३; १कौल ७: २;

२कौल ८; तारा ८४: ५; -मेषु

१योत २९; नाप ६, २६; -मै:

त्रिब्रा २, ५३; सार २३१: १४; १८.

नियम-ग्रह- -हः शां १, ७, ५.

नियम-वत्- -वन्तः शां ११.

नियम-व्रत-दान- -नानि शि ६,

२२९.

नियम-स्थित- -तः अन्न १, ८.

नियमा(म-आख्या)&gt;ख्य-

-ख्यैः भव ३, २४.

नियमा(म-आ)तद्रूपा(प-अ)-

भाव- -वेभ्यः ब्रसू ३, ४, ४०.

नियमा(म-आ)तिक्रमो(म-उ)-

ज्व- -वाः राउ ५, २५.

नियमा(म-आ)नन्द-विशेष-

गण्य- -ण्यम् नाप १.

नियमा(म-आ)नियम- -मम् पप

४१९: १३.

नियमा(म-आ)भाव- -वात् वसू

१०.

नि-यमित- -तम् योचू ९८; शां

१, ७, १.

नि-यम्य मैत्रि ६, १९; योचू ११४;

त्रिब्रा २, ३८; योशि १, २८; गी

३, ७; ४१; ६, २६; १८, ५१.

नि-यामन-

नियामन-समर्थ- -र्थः नाद ४५.

१ नियमात्तानि<sup>h</sup> शि ७, ४०.

नि/युज्(योगे), &gt;योजि, नियुजी-

यात्<sup>i</sup> अना १२१<sup>i</sup>; १४.नियुयुजे बा १<sup>k</sup>; नियोज्यति

महा ५, ११७; गी १८, ५९.

नियोजयसि गी ३, १; नियो-

जयेत् १योत ११२; त्रिब्रा २,

३६; शां १, ३, २; जाद ३, ३;

योशि ६, ७४; यो ३, १२; वरा

५, ३८.

नि-युक्त- -क्तः इ १३: ७; -क्ताः

जावा १२; -क्तेन जाद ६, ४१.

नि-योक्तव्य- -व्यम् महा ४, २२.

नि-योग- -गम् नार २.

नि-योजित- -तः गी ३, ३६.

नि-योज्य शां १, ७, ४३; यो २, ४५.

नियुजीयात् नि/युज्(योगे) द.

नियुत<sup>l</sup>- -तम् २शिसं १३९<sup>m</sup>.निर-अंश<sup>n</sup>- -शः ते ३, ४४; महा ५,

९९; १ संन्या २, ५६; अन्न ५, १३;

९२.

a) तैब्रा ३, ७, ६, २३। b) तैब्रा ३, ७, ६, २१। c) तैब्रा १०, ६२, १। d) कस.। e) वस.। f) पूष.  
 ०तिः इतिमात्रं तान्त्रि., ०त- इति कृत्वा यनि. स. पूष. अख्या.। g) ०मानि इति अख्या.। h) पा. १ ०मास्ता<sup>o</sup>  
 इति शोधः द्र.। i) यासुदसीयुदावुभावपि द्र. (पा ३, ४, १०२; १०३)। j) युजी<sup>o</sup> इति आन. मुपा. यनि.  
 शोधः द्र.। k) 'नियुजे' इति ने.। l) वैप१ यद्र.। m) मा १७, २।

निरंश-ध्यान-विश्रान्ति-मूक-  
-कस्य १ संन्या २, ५३.

निर-अक्षर-रम् त्रिता १, ३८<sup>a</sup>.

निर-अग्नि-शिशिः नाप ५, १४; गी ६, १.

निर-अङ्कुश-शः ते ५, ६५.

निर-अञ्जन, ना-नः मुं ३, १, ३; हं  
२१; ना २; वृ ९, ८; ते ३,  
४२; ब्रवि ७८; ९७; त्रिआ १, २;  
त्रिवि १, ११; २, १६; १ संन्या  
२, २१; १ आ १; २ आ ३; त्रिता  
१, १४; १६; म ४९; ९; कृपू १;  
-नम् ६, १९; ब्रवि ८; नृपू १,  
३; ते ६, ७०; ध्या ४; २८; १ योत  
९; २ योत २, ५; योचू ७२; निर्वा  
२९७; ३; त्रिवि ७, १७; २९;  
५०; शां २-३, १; योशि १, ७;  
२, १७; ३, १६; अक्ष ३, २३;  
अध्या ६२; त्रिता ५, ८; यो ३,  
३; म १, १; स ३७९; १२; सि  
१, ६; पित्र १, ४; अवि ८; वपू  
१, ६; -नाम् त्रिता १, ८४; गु  
७३; -नाय हं ११; -ने नाद ५०;  
योशि ५, ४३; ६, ७१; १ आ ३०.

निरञ्जन-ज्ञाना(न-अर्थ)-षट्-  
चक्र-जाम्(१ग<sup>b</sup>)ती(१ति<sup>b</sup>)-  
निरञ्जनज्ञानार्थषट्चक्रजाम्-  
(१ग<sup>b</sup>)ती(१ति<sup>b</sup>)-मय-यम् म  
४८; २.

निरञ्जन-ता-ताम् अक्ष १, १९.

निरञ्जन-वस्तु-स्तु नाउ ३, २.

निरञ्जना(न-अ)व्यक्ता(क्त-अ)-  
मृत-निधि-धौ स्व ६०; १.

निर-रत-नि/रम् द्र.

निर-अतिशय-यम् योम् १, २५.

निरतिशय-दिव्य-तेजो-मण्डल-  
-लम् त्रिवि ७, २.

निरतिशयदिव्यतेजोमण्डल-  
कुन्दा(न्द-आ)कार-परमा-

नन्द-शुद्ध-बोध-स्वरूप-पम्  
सि १, १६.

निरतिशयदिव्यतेजोमण्डल-  
(ल-आ)कार-राः सि ५, २१.

निरतिशय-दिव्य-तेजो-राशि-  
-शिः त्रिवि ७, १३.

निरतिशयदिव्यतेजोराश्य-  
(शि-अ)न्तर-समासीन-नम्  
त्रिवि ६, १९.

निरतिशय-निरङ्कुश-सर्वज्ञ-सर्व-  
शक्ति-सर्वनियन्तृ-

निरतिशयनिरङ्कुशसर्वज्ञसर्व-  
शक्तिसर्वनियन्तृ-त्व-

निरतिशयनिरङ्कुशसर्वज्ञ-  
सर्वशक्तिसर्वनियन्तृत्वा(त्व-आ)-  
द्य(दि-अ)न्त-कल्याण-गुणा-  
(ण-आ)कार-रः त्रिवि २, १५.

निरतिशय-परमानन्द-परम-मूर्ति-  
विशेष-मण्डल-लम् त्रिवि  
७, २०.

निरतिशय-परमानन्द-पारावार-  
-रम् त्रिवि ७, २.

निरतिशय-परमानन्द-लक्षण-  
परं(१र<sup>c</sup>)-ब्रह्मन्-ह्यणः त्रिवि  
७, २०.

निरतिशय-ब्रह्म-गन्ध-स्वरूप-  
-पम् त्रिवि ७, ५०.

निरतिशय-ब्रह्मा(ज्ञ-आ)नन्द-  
परम-मूर्ति-महा-यन्त्र-नम्  
त्रिवि ७, २९.

निरतिशय-विक्रम-विलास-सम्  
त्रिवि ७, ६.

निरतिशय-सुख-स्वम् अता ५.

निरतिशय-सौन्दर्य-पारावार-  
-रम् त्रिवि ७, ५०.

निरतिशय-सौन्दर्य-लावण्या-  
(एय-अ)धिदेवता-ताम्  
त्रिवि ६, २३.

निरतिशया(य-आ)कारा(र-अ)-  
वलम्बिन्-म्बिना नाप २.

निरतिशया(य-अ)द्वैत-परमानन्द-  
लक्षण-णः त्रिवि ८, ५; -णम्  
त्रिवि ७, ५०.

निरतिशयाद्वैतपरमानन्द-  
लक्षण-पर-ब्रह्मन्-ह्य त्रिवि ८,  
१८.

निरतिशया(य-अ)नन्त-कान्ति-  
विशेषा(ष-आ)वर्त-तैः त्रिवि  
७, ५०<sup>d</sup>.

निरतिशया(य-अ)नन्त-दिव्या-  
(व्य-आ)नन्द-तेजो-ज्वाला-  
राशि-मण्डल-लम् सि ३, ५.

निरतिशया(य-अ)नन्त-परमा-  
नन्द-पारावार-जाल-लम्  
सि १, १७.

१ निरतिशया(य-आ)नन्द<sup>e</sup>-  
निरतिशयानन्दा(न्द-आ)विर्भा-  
व-वः त्रिवि ८, ४.

२ निरतिशया(य-आ)नन्द<sup>f</sup>-न्दः  
त्रिवि १, १; -न्दः(१न्दाः<sup>g</sup>) त्रिवि  
७, २०; -न्दम् त्रिवि ६, २१;  
२३; -न्दैः त्रिवि ६, २२.

निरतिशयानन्द-चामर-वि-  
शेष-षैः त्रिवि ७, ५०.

निरतिशयानन्द-तेजो-मण्ड-  
ल-लम् त्रिवि ७, २०.

निरतिशयानन्द-तेजो-राशि-  
-शिः त्रिवि ७, २५.

निरतिशयानन्दतेजोराशि-  
विशेष-षम् त्रिवि ४, १.

निरतिशयानन्दतेजोराश्य-  
(शि-अ)भ्यन्तर-समासीन-  
-नम् त्रिवि ७, ५०.

निरतिशयानन्द-दिव्य-तेजो-  
राशि-शिः त्रिवि ५, १४; ६,  
१९; ७, ७; सि १, १०.

a) अनन्त इति अञ्जा. b) पा. १ यनि. शोधः द्र. c) पा. १ यनि. शोधः द्र. (तु. निसा.) d) °न्दं कान्ति°  
इति निसा. e) कस. f) वस. g) वस.



निरतिशयानन्ददिव्यतेजो-  
राशि-मण्डल- -लम् सि ५, १.  
निरतिशयानन्द-परम-मङ्गल-  
विशेष-समष्ट्या(ष्टि-आ)-  
कार- -रम् त्रिवि ७, २०.  
निरतिशयानन्द-पारावार- -रः  
त्रिवि ६, १०.  
निरतिशयानन्दपारावारा-  
(र-आ)कार- -रम् त्रिवि ७, १९.  
निरतिशयानन्द-ब्रह्म-गन्ध-  
विशेषा(ष-आ)कार- -रम्  
त्रिवि ७, ५०.  
निरतिशयानन्द-मय-  
निरतिशयानन्दमया(य-आ)-  
नन्त-परम-विभूति-समष्टि-  
-ष्ट्या त्रिवि २, १५.  
निरतिशयानन्द-लक्षण- -णम्  
त्रिवि ७, २२; मं ४, १, ३.  
निरतिशयानन्दलक्षण-  
महा-विष्णु-स्वरूप- -पम्  
त्रिवि ६, २०.  
निरतिशयानन्द-सहस्र-प्रा-  
कार- -रैः त्रिवि ७, १९.  
निरतिशयानन्द-सागर- -रः  
त्रिवि ७, १.  
निरतिशयानन्दा(न्द-अ)खण्ड-  
ब्रह्मा(ह्य-आ)नन्द-निज-मूर्त्या-  
(ति-आ)कार- -रेण त्रिवि १,  
११.  
निरतिशयानन्दा(न्द-अ)द्वि-  
तीय- -यः त्रिवि ८, १५.  
निरतिशयानन्दा(न्द-अ)नन्त-  
तद्धित-पर्वता(त-आ)कार-  
-रम् त्रिवि ७, १७.  
निरतिशयानन्दा(न्द-अ)मृत-  
सागर- -रेशु त्रिवि ६, २३.  
निरतिशयानन्दा(द-अ)मृत-  
सार-सागरा(र-अ)नन्त-मकर-

न्दा(न्द-आ)कार- -रम् सि  
६, २०.  
निर-अध्यवसाय- -यः मैत्रि ६, २०.  
निर-अन्तर- -रः कुं २६; -रम् अता  
५<sup>१</sup>; योशि ६, ३५; पाशु २, १०;  
१ अव २६; त्रिता ४, ३५; सर ३,  
३१; सार २१९ : २; ३; २२० :  
१९; २२६ : १०; २२७ : ८;  
२३० : ६; २३४ : ७; २१;  
२४३ : २२; २४४ : १; २५५ :  
५; १६; २५८ : ३; २५९ : ६;  
२०<sup>२</sup>; २७२ : १६; १७; २७५ :  
१२; २८० : १३; २८२ : १२;  
२३; २८५ : १; ४; १२; २८६ :  
५; ६; २९२ : १९; पित्र ५, ६.  
नैरन्तर्य- -र्यम् ससा १, ११;  
३२; -र्येण सु १, २, ६.  
निरन्तर-क्रीडा-प(र>)रा- -रा  
सार २८८ : ७.  
निरन्तर-क्रीडा-स्थल- -लम् सार  
२२६ : २२.  
निरन्तर-निरूपम-निरतिशयो-  
(य-उ)कट-ज्ञाना(न-आ)नन्दा-  
(न्द-अ)नन्त-गुच्छ-फल-  
-लैः त्रिवि ७, ५०.  
निरन्तर-रास-क्रीडा(डा-आ)-  
सक्त- -काय सार २६१ : १.  
निरन्तर-समाधि-परंपरा- -राभिः  
त्रिवि ५, ११.  
निरन्तर-सेवा- -वायाम् सार  
२८९, ५.  
निरन्तरा(र-अ)तितुरीय-निरति-  
शय-सौन्दर्या(र्य-आ)नन्द-  
पारावार- -रम् त्रिवि ७, ५०<sup>७</sup>.  
निरन्तरा(र-अ)नुसंधान- -नात् स  
३७८ : ५.  
निरन्तरा(र-अ)भि-नव- -वम्  
त्रिवि ७, १७.

निर-अन्तराय- -यम् हे १३.  
निर-अपेक्षा(त्ता>)त्ता- -क्षः नृउ ९,  
१०; लु २१; ब्रवि ९८; नाप  
३, ४४; ७६.  
नैरपेक्ष्य- -क्ष्ये सांस् ३, ६८.  
निर-अपेक्षक- -कम् १आ ७.  
निर-अभिमान- -नः २आ ३.  
नि/रम्  
निर-त- -ते के छां आह मै मैत्रे  
योचू वा महा १संन्या अव्य कुं  
सावि रुजा जाद जाबा शां<sup>१</sup>.  
निरय<sup>२</sup>- -यः मै ३, ४; मैत्रे १, ३;  
स्व ६१ : ११; २कौल ८; -यम्  
पत्र ३, ९; भव २, ५९; -ये(यः<sup>३</sup>)  
मत्रि ३, ४; भव १, ३.  
निर-अर्थक- -कः नाप ४, ३३; -कम्  
जाद ४, ५३; शि ४, ४८; भव  
१, ४५; -काः योशि ६, १८.  
निर-अवयव, द्या- -द्याः नृउ ९, ११;  
सुबा १३; ब्रवि ९७; -द्यम् धे ६,  
१९; त्रिवि ७, १७; ५०; सि ६, १;  
-द्याम् गु ७३; -द्ये १आ ३०.  
निर-अवधि<sup>४</sup>-  
निरवधि-कार-  
निरवधिकार-ता- -तया सुबा  
१३.  
निरवधि-नाराच-विकि(श्निक<sup>५</sup>)र-  
पात- -तः महा ४, २६.  
निरवधि-निःसीम-तस्व-  
निरवधिनिःसीमतस्व-मात्र-  
-त्रः आबो ७<sup>६</sup>.  
निरवधि-निज-बोध- -द्यः आबो ७.  
निर-अवयव- -वः आबो ६; -वम्  
त्रिवि २, १; ८; ७, १७; सि  
१, ५.  
निरवयव-स्व- -त्वात् त्रिवि २, ८.  
निरवयवत्व-शब्द-कोष- -यः  
ब्रस् २, १, २६.

a) वा.क्रि.व.द.। b) तु.सस्थ.टि.अद्वैतपरमानन्द-> -न्दम्। c) व्यु. ? = १ नरक- [वैतु. अभा. = निर- + अव- (= उत्सव-) >  
वस.]। d) पा. ? यनि.शोधः द. (तु. मै ३, ४)। e) प्रास.। f) पा. ? यनि.शोधः द. (तु. अज्या. संटि.)। g) °मसस्व इति अज्या.।

निरवयवा(व-आ)त्मन्- स्मा १आ  
१; २आ ३.  
निर-अशन-  
निरशन-जपा(प-अ)मिहोत्रा-  
(त्र-आ)दि- -दिषु नि ४५.  
निर-अस्(क्षेपणे)  
निर-असन- -न्म् रु २८.  
निर-अस्त,स्ता- -स्तम् त्रिवि २,  
८; -स्तायाम् मं २,३,१.  
निरस्त-कल्पना-जाल- -लम्  
महा ५,६०.  
निरस्त-धातुमय<sup>a</sup>- -यानि सार  
२५५: १६.  
निरस्त-निःशेष-संकल्प-स्थि-  
ति- -तिम् महा ४,६०.  
निरस्त-मनना(न-आ)नन्द<sup>b</sup>-  
-न्दः १संन्या २, ४७.  
निरस्त-विषया(य-आ)सङ्ग-  
-ङ्गम् ब्रविष्ठ, त्रिता ५,४; अविष्ठ.  
निरस्ता(स्त-अ)तिशया-  
(य-आ)ह्लाद-सुख-भावै(व-ए)-  
क-लक्ष(ण)>णा- -णा भव  
१, ३१.  
निरस्ता(स्त-अ)विद्या-तमो-  
मोह,हा- -हः वृड २, ११; राड  
३, १; -हम्(हः<sup>c</sup>) वड १, १८;  
-हा विद्या ४.  
निरस्ता(स्त-अ)विद्यातमो-  
मोहा(ह-अ)हंकार-प्रधान-  
-नम्(हः<sup>d</sup>) वड ५, ४३.  
निर-अस्तव्य- -व्यः अध्या १.  
निर-अस्य मं २, ४, ४.  
निर-अस्यत्- -स्यन् सार २९०:  
२१.  
निर-अहंकार,रा- -रः नि ५२; ते  
१, ३; नाप ३, ७६; ६, १९; वड  
२, २८; गी २, ७१; १२, १३;

-रम् १संन्या २, ३७; -रा अञ  
१, ४९; -राः सार २८३: ११.  
निरहंकार-ता- -ताम् १संन्या २,  
३६.  
निरहंकार-पक्षि(न>)णी- -णी  
१संन्या २, ३८.  
निरहंकार-रूप-  
निरहंकार-रूपि(न>)णी- -णी  
अञ ५, ५५.  
निर-अहंकृति- -तिः नाप ६, २४.  
योशि १, १२३.  
निर-अहंभाव- -वः महा २, ५०.  
निर-अहम्- -हम् कुं १७; १आ ११.  
निर-आका(ब्ता)>इक्ष- -ङ्क्षः १आ  
१; २आ ३.  
निर-आकार- -रः ते ३, २१; अद्वै  
२०; राधा १, १७; वड २, २८;  
-रम् ते १, ६<sup>d</sup>; त्रिवि १, ५; २,  
१<sup>e</sup>; ७, ५०; योशि २, १७; म  
४८: ३; -रस्य त्रिवि २, १२;  
-रे अध्या २२.  
निर-आकुल- -लम् महा ४, ३३.  
निर-आ/कृ, >चिकीर्ष, निराकरोत्,  
निराकुर्याम् के छां आरु मै मैत्रे  
योचू वा महा १संन्या अव्य कुं  
सावि रुजा जाद जावा शा<sup>f</sup>.  
निराचकार सं १०.  
निरा-कृत्य छां ४, ४, ५.  
निरा-चिकीर्षत्- -र्षन् सं १४<sup>g</sup>.  
निर-आकृति- -तिः कुं २५.  
निराकृति-त्व- -त्वम् मैत्रि ३, ५<sup>h</sup>.  
निर-आ(ख्या)>ख्य- -ख्यः श २०.  
निर-आख्यात- -तः ना२; ब्रवि ९७;  
त्रिवि १, ११; २, १६; कृपु १;  
-तम् योचू ७२.  
निर-आगार- -राः वृड ६, ४<sup>h</sup>.  
निर-आतङ्क- -ङ्कः महा ४, १०४;

-ङ्गम् सर ३, ७.  
निर-आत्मक- -कः ते ४, ६३; -कम्  
अना १२; वृड ७, ४; ८, ३; ९, १०.  
निरात्मक-त्व- -त्वम् मैत्रि ६, २१;  
-त्वात् मैत्रि ६, २०; २१.  
निर-आत्मन्- -स्मा मैत्रि २, ४; ६,  
२०; २८; ७, ४.  
नैरात्म्य-  
नैरात्म्य-वाद-कुहक- -कैः मैत्रि  
७, ८.  
नैरात्म्य-सिद्धान्त-दशा-  
-शाम् १संन्या २, २८<sup>i</sup>.  
निर-आधार,रा- -रम् त्रिवि ७,  
१७; वरा २, १०; सि १, ५; -रा  
अञ १, ५.  
निर-आधि- -धिना सु २, २, ३१.  
निर-आनन्द- -न्दः अञ ३, १८;  
-न्दम् महा ५, ९८.  
निर-आ(अ<sup>j</sup>)पाय- -यम् योशि ३,  
२१.  
निर-आभास- -सः ते ३, ४४; महा  
६, ८०; अञ ५, ३४; -सम् मैत्रि १,  
४, १०; सौ २, १७; -साय हं ११.  
निर-आमय- -यः ते ३, ६; ५, ६१;  
७१; त्रिवा २, ९३; महा ४, ५६;  
१संन्या २, ४९; -यम् ध्या ६५;  
ब्रवि ७७; १योत ८; पै ३, ४;  
महा २, ६८; ५, ६९; योशि १,  
५; अञ ५, ६८; यो ३, ३५; वरा  
३, ६; सौ २, १७; -ये अध्या २३.  
निर-आरम्भ- -म्भः नाप ६, ३०.  
निर-आलम्ब- -म्बः त्रिवि ८, ८९<sup>k</sup>;  
कुं २५; -म्बम् नि २; मं ३, १,  
३; पै ४, १४; महा ५, ४५; ६,  
३८; तुअ २२; सु १, १, ३३<sup>l</sup>; व  
४३०: १९; -म्बाय नि १; -म्बे  
योशि ५, ४३.

a) बस. । उप. तत्प्रकृतवचने मयद् प्र. (पा ५, ४, २१) । b) बस. <द्वस. । c) पा. ? यनि. शोधः द्र. ।

d) 'निराधारम्' इति आन. । e) °र्ष(ति) इति मुपा.यनि.सु-शोधः । f) निङ्° इति मै ३, ५ । g) °का° इति निसा. ।

h) °दात्मद° इति निसा.मुपा.यनि.सु-शोधः (तु.निसा.संति, अज्या.) । i) =योगविशेष- । j) =तदाख्योपनिषद्विशेष- ।

निरालम्ब-तल- -ले शां १, ७, ४२.  
 निरालम्ब-ता- -तया ते १, ३६.  
 निरालम्ब-पीठ- -ठः (१ठम्) निर्वा  
 २९७:४; -ठम् निर्वा २९८:४.  
 निरालम्ब-योग- -गः त्रिवि ८, ८.  
 निरालम्बयोगा(ग-अ)धिका-  
 रिन्- -री त्रिवि ८, ९; १०.  
 निरालम्बो(म्ब-उ)पनिषद्-  
 -षदम् नि ५६.  
 निर-आलम्बन- -ने राधा १, ६.  
 निर-आलोक- -कम् सुवा १५.  
 निर-आश, शा- -शः मैत्रि ६, ३०<sup>b</sup>;  
 सांस् ४, ११; -शाः इ१३:२;  
 १७:४; १८: १९: ८; -शायाम्  
 १संन्या २, ५१.  
 निराश-ता- -ता महा ६, २९.  
 निर-आशा-  
 निराशा-स्व- -स्वम् अज ५, ३८.  
 निर-आशिष- -षः नाप ३, ४४<sup>०</sup>; ७६<sup>०</sup>.  
 निर-आशिष- -शिषः महा ५, १०६;  
 -शीः ते १, ३; नाप ३, ७५; गी  
 ३, ३०; ४, २१; ६, १०.  
 निर-आश्रय, या- -यः ते १, ५<sup>d</sup>; अज  
 ५, ९७; पित्र ४, १; ३; गी ४,  
 २०; -यम् मैत्रि ६, १९; ते १,  
 ६; मं ५, १, २; त्रिवि ७, १७;  
 ५०; योशि ३, २१; शि ६, ४१;  
 सि ६, १; पित्र ४, ३; ६; १०;  
 सांका ४१; -या पित्र ४, ८.  
 निर-आरूप(द>)दा- -दा महा ५,  
 १०३.  
 निर-आहार- -रस्य गी २, ५९.  
 निर-इ, निरियाय व ४६६: १४९<sup>०</sup>.  
 निर-इ(च्छा>)च्छु- -च्छः महा २,  
 ५१; -च्छम् महा ५, ५५; -च्छे

महा ४, १३.  
 निरिच्छ-स्व- -स्वात् महा ४, १४.  
 निर-इच्छु<sup>f</sup>- -च्छोः अज ४, ७<sup>g</sup>.  
 निर-इन्द्रिय, या- -यः वृ ६, ४, १२;  
 वृउ ७, ३; १४; ब्रवि ९८; -याः  
 क १, १, ३; वृ ६, ४, ४; -याम्  
 वृजा ३, १.  
 निर-इन्धन- -नः मै ४, ४; मैत्रि ६,  
 ३४; मैत्रे १, ४, ३; त्रिब्रा २, १६३;  
 त्रिवि ३, ७; २अव ३३८: ४.  
 निर-ईक्ष्, निरीक्षते महा ४, ८०;  
 वरा २, १८<sup>h</sup>; निरीक्षन्ते १संन्या  
 २, ६०; निरीक्षे गी १, २२;  
 निरीक्षेत मैत्रि ६, २१; शां १,  
 ३, ६.  
 निरीक्ष्यते ते ५, ४६.  
 निर-ईक्ष्य त्रिवि ६, १; सार २२०:  
 २१; २२५: १८; २२६: १४<sup>i</sup>;  
 २६९: २०.  
 निर-ईप्सित- -तः १संन्या २, ५६.  
 निर-ईश्वर- -रः कुं १७; -रम् पा  
 १०, ६.  
 निर-ई(हा>)ह- -हः ते ३, ६; महार,  
 ७४; १संन्या २, ५६; राधा १,  
 १८; वउ २, २८.  
 निरीह-ता- -ता महा ६, २९.  
 निरुक्त- निर-वृत् द्र.  
 निर-उद्विग्न<sup>j</sup>- -ग्नः शि १, २३.  
 नि-रुध्, >रुन्धि<sup>k</sup>, रोधि, निरुन्धन्ति  
 योशि ६, ३४<sup>k</sup>.  
 निरुध्यते शां १, ७, २८; २९<sup>l</sup>;  
 ३०-३६; अज ४, ८७.  
 निरुन्धयेत्<sup>l</sup> योचू ८९; १००;  
 १०५.  
 निरोधयेत् त्रिब्रा २, २२; योचू

९२; शां १, ७, ४७; योशि ६, १७;  
 यो १, ५३; ३, ८; जाद ६, २६-३०;  
 ४१; ७, ५; ६; ७<sup>m</sup>; ८; १३; वरा  
 ५, ५७.  
 निरुद्ध- -द्धः योचू ५९; -द्धम्  
 योशि ३, १४; गी ६, २०.  
 निरुद्ध-करणा(ण-आ)श्रय(>)-  
 या- -या यो २, २१<sup>m</sup>.  
 निरुध्य कै १, ५; हं ६; लु ३, ४;  
 १योट ३७; १०५; १०६; त्रिब्रा  
 २, ६४; त्रिवि ५, १२; शां १, ४;  
 योशि १, ८२; यो २, ४५; जाद ४,  
 १२; ६, ४२; सौ २, ३; गी ८, १२.  
 निरुद्धव्य- -व्यम् मै ४, ४, ८; मैत्रि  
 ६, ३४; ब्रवि ५; त्रिता ५, ५;  
 अबि ५.  
 निरुध- -धः प्र १, १०; छां ८,  
 ६, ५; गौ २, ३२; ते १, ३१; १आ  
 ३१; १अव ८; त्रिता ५, १०;  
 ब्रवि १०; अबि १०; सांस् ३,  
 ३४; -धम् मैत्रि १, ४<sup>n</sup>; -धे योशि  
 ६, १९; योसू १, ५१; -धेन नाप  
 ३, ४५; अज ५, ४३; भव ५, ९.  
 निरोध-क्षण-चित्ता(त-अ)-  
 न्वय- -यः योसू ३, ९.  
 निरोध-परिणाम- -मः योसू ३, ९.  
 निरुधक- -कः वरा ५, ४१; ४४.  
 निरुधन- -नम् मै १, ६.  
 निरुधित- -ते शां १, ७, २५.  
 ?निरुध्यः<sup>०</sup> ए ८.  
 निर-उपक्रम- -मम् योसू ३, २३.  
 निर-उपद्रव- -वः त्रिवि ८, ११; कालि  
 ४०३: १९; -वे १योट १४२;  
 २योट २, ६; महा ४, १२२.  
 निर-उपमोग- -गम् सांका ४०.

a) पा. ? यनि. शोधः द्र. । b) गपू. (पृ ५०) अनिराश-> -शः इत्यत्र यनि. शोधः द्र. (तु. राती., jC., सात.) । c) मिषः इति अज्या. । d) °यम् इति आन., अज्या. । e) ऋ ९, ९४, ४ । f) तस. । पू. =पन<sup>n</sup>. । g) °री° इति अज्या. संटि. । h) °क्ष्यते इति अज्या. संटि. । i) वस. । उप. भाप. । j) निचः सार्वधातुकत्व-विकल्पः (पा ३, ४, ११७) । यद्वा शान्तात् कृतः (तु. पा ३, १, १३८) नांवा. द्र. (तु. गपू ३३३a) । k) 'निरुद्धन्ति' इति अज्या. । l) °रोध° इति निसा. संटि. । m) वि° इति निसा. संटि. । n) °धनम् इति सात. । o) ) पा. वा. च ? ।



निर-उप(मा&gt;)म-

निरुपम-नित्य-निरवद्य-निरतिशय-

निरवधिक-तेजो-राशि-

विशेष-यम् त्रिवि ७, १९.

निरुपम-नित्य-निरवद्य-निरतिशय-

निरवधिक-ब्रह्मानन्दा-

(न्द-अ)चल-लः त्रिवि ५,

१३; सि १, ९.

निरुपम-निरवद्य-नित्य-शुद्ध-बुद्ध-

निरतिशय-तेजो-राशि-

विशेष(ष-अ)नन्ता(न्त-आ)-

नन्द-विमान-जाला(ल-आ)-

वलि-लिभिः सि ६, १२.

निर-उपा(ख्या&gt;)ख्य-ख्यम् मै ५,

७; मैत्रि ६, ७.

निर-उपाधि-धिः त्रिता १, १४;

सार २९१: १३.

निरुपाधि-तादात्म्य-प्रतिपादन-

नेन त्रिता १, ३८.

निरुपाधि-संस्थित-तः पै ४, ११.

निर-उपाधिक-कः त्रिवि २, २; वरा

२, ५३.

निरुपाधिक-नित्य-त्यम् वरा ३,

१०.

निरुपाधिक-साकार-रः त्रिवि २,

५; ६; रस्य त्रिवि २, ८.

निर-उपाश्रय-यम् महा ५, ६७.

निर-उपासङ्ग-ङ्गम् महा ५, ६७.

निरुहा निर/वह द्र.

निर-उ&gt;ऊद(क&gt;)का-का व ३,

१५.

निर/रूप,&gt;रूपि, निरूपयति सार

२४०: २.

निरूपयत्-यन् सार २६०: १९.

निरूपित-तम् त्रिवि ४, १-३.

निरूप्य नाप ३, १.

निरूप्यमा(या&gt;)णा-णा ससा

१, ४०<sup>b</sup>.

निर/ऊह(प्रापणे)

निर-ऊह नृउ ७, १२.

निर-रोद्धव्य-, नि-रोध-, नि-रोधक-,

नि-रोधन-, नि-रोधित-

निर/रुध द्र.

निर-कृति<sup>२८</sup>-त्ये त्रिवि ७, ४७; गोउ६६: -ति: व ४४०: ५; ६; १२४<sup>d</sup>;४४५: १०; १७४<sup>d</sup>; ४५०:१७४<sup>d</sup>; ४५४: २४<sup>d</sup>; -तिना

सिंशि ३८३: १; -तिम् मना १,

४४०: -०ते व ४४०: ६; ४५०:

१४<sup>d</sup>.

१नैर्कृत-

नैर्कृती<sup>d</sup>-०ति व ४३१:

१६; -स्याम् नाप ६, १; राधा १,

२१; शि ६, ८०; व ४३०: १६;

४४०: ५; ४४५: १०; ४५०:

१३.

२नैर्कृत-तम् शि २,

१९; -ते हं ८; शि ६, ७४; ८४;

-त्तौ(३ते<sup>b</sup>) सूता ४, ४.

नैर्कृत-दल-लम्

ध्या २३, ५; ले ध्या २३, ५; वि ७.

नैर्कृत-दण्ड-०ण्ड व ४३५:

१०.

नैर्कृत-दिश-दिशम् व ४२८:

१४.

नैर्कृत-द्वार-रम् व ४२७: २२.

नैर्कृत-मण्डल-लम् व ४४०:

६; ७.

नैर्कृत-लोक-ज्ञान-नम् शां १,

७, ५२.

निर/गच्छ, गम्, &gt; गमि, निर्गच्छेत्

शि ७, ६७.

निर्जगाम मै १, १; मैत्रि १, २;

मैत्रे १, १; रापू ४, २३.

निर्गमय-निर्गमय लां २१६:

१४.

निर-गत-तम् पाशु २, ५; शि ७,

१०८; -ता: गौ ४, ५०; ५२.

निर्गत-गुण-त्रय-यम् निर्वा

२९७: १०.

निर-गत्य गु २८.

निर/गल्

निर-गलित-

निर्गलित-मा(न&gt;)ना-ना:

सार २४२: ८; १७.

निर-गुण, णा-ण: श्वे ६, ११; मैत्रि

६, १०; ७, १; मैत्रे ३, ४; २२; व

३, ७; ते ३, २१; ४, १; ५, ६५;

ब्रवि ७५; ९८; नाप ६, १; १आ

१; २आ ३; गोउ ६५; राधा १,

१७; ४, २४; २शिं २२; वउ २,

२७; णम् मन्त्रि २; १४; नि १४;

त्रिवि ७, ५०; शां १, १०<sup>d</sup>; महा

४, ७०; योशि ३, २१; अघ्या

६२; करु ३४; म १, १; गोउ

५८; वरा २, २०; सार २३१:

१; चू २; १४; गी १३, १४;

-णस्य नाप ६, १; -णा राधा ३,

१५; गु ६९.

निर्गुण-त्व-त्वम् सांसू ६, १०;

-त्वात् सांसू १, १४६; ६, ६२;

गी १३, ३१.

निर्गुण-ध्यान-युक्त-क्तस्य १योत

१०५.

निर्गुण-निरवद्यवा(व-आ)दि-

प्रतीति-ति: त्रिवि ३, ७.

निर्गुण-प्रणव<sup>१</sup>-व: नाप ८, १; तु ३.निर्गुण-ब्रह्मा(ह्य-अ)पित<sup>१</sup>-तम्

अद्वे २४.

निर्गुणा(णि-आ)स्मक-कम् गोउ

६१<sup>d</sup>.a) ०<sup>०</sup> इति सात. । b) ०<sup>०</sup> इति आन. । c) = देवताविशेष- । वैप १ यद्र. । d) ऋ १, ३८, ६ । e) तैआ१०, १, ४ । f) ०<sup>०</sup> इति सुपा. यनि. सु-शोधः । g) = देवीविशेष- वा दिग्विशेष- वा । h) पा. ? यनि. शोधः द्र. ।i) वस. । j) गप्. (पृ ९७) / \*अर्पे > अर्पित- > तम् इत्यत्र सस्थ. यनि. शोधः द्र. । k) ०<sup>०</sup> तथा इति आन. ।

निर्गुणा(ण-आ)दि-श्रुति-विरोध-  
-घः सांसू १,५३.

निर्गुणा(ण-अ)वस्था-स्था अद्वै  
२४.

निर्-ग्रन्थ- -ग्रन्थः जा ६०.

निर्-ग्रन्थि- -ग्रन्थिः अक्षि ३९.

निर्-घात- निर्/घृत् द.

निर्-ज(ज<sup>०</sup>)न- -ने १योत १४२;  
२योत २,६; नाप ४,१६; यो १,  
२२; शि ७,९५; तारा ८३:१२.

निर्जन-देवा(व-आ)गार- -रे तारा  
८३:१२.

निर्-जर- -रैः सिशि ३८३:९.

निर्/जि

निर्-जित्य तुअ १२०.

निर्-जीव- -वः वरा ५,७४.

निर्/ज्ञा

निर्-ज्ञात- -ताः अक्ष ३,९.

निर्भर<sup>०</sup>- -रात् महा ५,१३७.

निर्/णि(<नि)ज्

निर्-णिज्य छां ५,२,७.

निर्/णी(<नी)

निर्-णय- -यः गौ ३, ६; ब्रवि  
४२; योचू १०४; योशि ५,१६;  
पिब्र १,२; -यम्<sup>०</sup> ते ५,८८.

निर्-णीत- -तः ते ३,१९; -तम्  
ते ५,८७; सु २,२,३०.

निर्/णु(<नु), निर्णुमः व ४६२:  
१६.

निर्/णु(<नु)द, निर्णुद मना १,  
९९<sup>६</sup>; २,६६९<sup>६</sup>.

निर्/दह, निर्दहन्ति इ १२:१६;  
निर्दहेत् पै ४,११; १संन्या २,८.

निर्-दग्ध-

निर्दग्ध-वासना-बीज- -जः  
अक्ष ५,१८.

निर्-दह- -हन् मे १,१; मैत्रि १,  
२; मैत्रे १,१.

निर्/दिश्

निर्-दिष्ट,ष्टा- -ष्टः नाप ५, २०;  
-ष्टम् ते १,२४; ५,४८; त्रिता ५,  
१; सौ २,१; -ष्टा सांका ३०;  
-ष्टाः शि १,७.

निर्-देश- -शाः रापू ४, ४०; गौ  
१७,२३; -शम् नाप ३,६१.

निर्देश-भृतक-न्याय- -येन  
नाप ५,१.

निर्देश-विपर्यय- -यः ब्रसू २,  
३,३६.

निर्-द्वेष्टुम् ते ५,९.

निर्/दी(गतौ), निर्दीयम् ऐ ४,५९<sup>१</sup>.

निर्-दोष,षा- -षम् शि ३,१३; गौ  
५,१९; -षा वि १८.

निर्-द्वन्द्व- -न्द्वः ते १, ३; नाप ३,  
७५; ८६; ४,१३; ३१; ५,१७;  
६,२३; गौ २,४५; ५,३; -न्द्वम्  
महा ५,६७; -न्द्वः भि १२; या२,  
१<sup>१</sup>; सार २८३:११; -न्द्वे योशि  
५,४३; जाद ७,१३.

निर्-द्वय- -यः कुं २५; -यम् १आ  
२१.

निर्-धन- -नः १आ १२.

निर्-धनिक<sup>०</sup>- -कः नाप ९,२०.

निर्-धर्मक-

निर्धर्मक-स्व- -स्वात् सांसू ५,७४.

निर्/धू

निर्-धूत-

निर्धूत-कलि- -लिः कलि १.

निर्धूत-रजस- -जसः बृजा  
६, ६.

निर्धूता(त-अ)शेष-पापौ-  
(प-ओ)घ- -घः सु १,१,२१.

निर्/धृ>धारि

निर्-धारण- -णात् ब्रसू ३,३,४७.

निर्-नमस्कार- -रः गौ २, ३७;  
नाप ३,७५; ६,३८.

निर्-निमित्त- -त्तः गौ ४,७५.

निर्-बीज,जा- -जः सुवा ९; योसू १,  
५१; -जम् सुवा ९<sup>११</sup>; -जम्ब  
योसू ३,८; -जा अक्ष ५,१६.

निर्-भय- -यः नाप ४, ३१; ६,२३;  
पाशु २,३१; वृषट् ५:१८; -यम्  
गौ १,२५; ३, १५; यो १,१३.

निर्भय-ता- -ता महादि, २९; २कौल  
११.

निर्-भर- -रम्<sup>१</sup> अध्या ५४.

निर्भर-सेचन-रस-संकुलि(त>)-  
ता- -ताः सार २६७:१५.

निर्-भाग- -गम् पत्र २,१.

निर्भाग-स्व- -स्वम् सांसू ५,७१.

निर्भाग-श्रुति- -तेः सांसू ५,  
७३.

निर्-भाव- -वम् १संन्या २,३७.

निर्/भिद्, निर्भिन्त्यात् कामे १७.  
निर्भिद्यत ऐ १, ४<sup>१</sup>; छां ३,  
१९,१; निर्भिद्येताम् ऐ १, ४<sup>३</sup>.

निर्-भिद्य योशि ६,३३.

निर्-भेद- -दम् कठ २६.

निर्-मनन- -नः अक्ष ५,११४.

निर्-मनस्- -नसः महा ४,९७.

निर्-मनस्क- -कम् १संन्या २,३७.

निर्भनस्क-स्वभाव-

निर्भनस्कस्वभाव-स्व- -स्वात्  
१संन्या २,४५.

निर्/मन्थ, निर्मन्थताम् वृ ६, ४,  
२२९<sup>११</sup>.

निर्-मथ्य सर २,९.

निर्-मन्दर- -रः महा ४,४१<sup>११</sup>.

a) 'निर्द्वन्द्वः' इति आन., अज्या. । b) द्वित्वम् (पा ८, ४, ४६) । c) 'निर्भिद्य' इति निता. अज्या. च संटि. । d) व्यु. १. । e) सत्य. यत् इति न. अनुवादकतया न. द्र. । f) 'निर्भिद्य' इति अज्या. संटि. । g) तैआ १०, १, १. । h) तैआ १०, ६६. । i) अक्ष ४, २७, १. । j) 'नन्दः' इति अज्या. । k) तु. टि. निरिच्छु. । l) वा. किंवि. द्र. । m) 'निर्मन्थतः' इति अक्ष १०, १८४, ३. । n) 'नन्धरः' इति अज्या. ।

निर्मम<sup>१</sup>-म<sup>२</sup> महा ४, ७२<sup>३</sup>; वरा  
२, ४३; ४४; -मः जा६, नि५२;  
नाप ३, ३३; ७६; ८६; ४, ३१;  
६, १९; २३; २४; महा ६, ४४;  
१संन्या २, १९; पप ४१९: ३;  
कुं १७; १आ १; ११; या २,  
१; गी २, ७१; ३, ३०; १२, १३;  
१८, ५३; -माः सार२८३: ११.  
निर्मम-स्व-स्वात् मै २, १०; मैत्रि  
२, ७; -स्वेन योचु ८४.

निर्म-मल, ला- -ल अच ५<sup>१</sup>; -लः  
ब्रवि ९७; योशि १, ४२; सु २,  
२, ७५; शि ५, ४१; भव ३, १९;  
-लम् ब्रवि२१; नाद१७७; १योत  
८; १७; त्रिवि ७, १७; ५०; पै  
४, ९; महा ५, १०; योशि १,  
५; २०; अन्न १, ५६<sup>४</sup>; शि १,  
३३; सि ६, १; रा ४२५: १;  
भव २, ५६; गी १४, १६; -ला  
२८३: १६९<sup>५</sup>; -लायाम् १संन्या  
२, ५१.

निर्मल-गात्र- -त्रम् निर्वा२९८: ४.

निर्मल-स्व-स्वात् गी १४, ६.

निर्मल-निर्वाण-मूर्ति- -र्तिः आबो  
६.

निर्मल-लोचन- -नः शां १, ७, १४.

निर्मल-विभूति- -तिः रु ७.

निर्मल-स्फटिका(क-आ)कार- -रम्  
ब्रवि ६५.

निर्मला(ल-आ)त्मन्- -स्मा ते ४,  
६३; ६८.

निर्/मा(माने), निर्ममे अव्य ५<sup>३</sup>; वउ  
३, १७.

निर्-माण- -णे भव १, १५.

निर्माण-चित्त- -त्तानि योसू४, ४  
निर्-मातृ- -ता वउ ३, ३१; -तारम्  
ब्रसू ३, २, २.  
निर्-माय वृ ४, ३, ९.  
निर्-मित, ता- -तः वृ ३, ९, २२;  
ते ६, ९०; -ताम् वउ३२: १९.  
निर्मित-क- -कः गौ ४, ७०.  
निर्-मिमाण- -णः क२, २, ८; सं७.  
निर्-मान- -नः नाप ५, १७; महा२,  
५०; ३, ५७.

निर्-मान-मोह- -हाः गी १५, ५.

निर्-माल्य<sup>६</sup>- -ल्यम् रु २६.

निर्/मुच, > मोक्ष<sup>७</sup>, निर्मुच्यते निरु  
२, ७.

निर्-मुक्त- -क्तः मना १, १३९<sup>८</sup>;  
यो २, ९.

निर्मुक्त-रोग-जाल- -लः शां  
१, ७, १४.

निर्-मोक्ष<sup>९</sup>- -क्षाय नाप ४, ३३.

निर्-मूल- -लम् महा ६, ४६; अन्न  
२, २५.

निर्मुलि, निर्मूल्य-निर्मूल्य चा  
७; लां २१५: ८.

निर्मूल्यत्- -यन् १संन्या २,  
४८.

निर्/यस

निर्-यास- -सम् शि ७, ९१.

निर्-योग-क्षेम- -मः गी २, ४५.

निर्-लक्षण- -णः त्रिता १, १४.

निर्-ल(ज>)जा<sup>१</sup>- -जा सार२६३:  
३; २८२: १०; २८४: १९.

निर्-लेष- -पः वरा२, ४८; पिब्र६, ९.

निर्-लेषक- -कम् योशि ३, २१.

निर्-लोलुप<sup>१</sup>- -पः सुअ १५.

निर्/वच

निर्-उक्त- -क्तः छां २, २२, १; -क्तम्  
सुं १, १, ५९<sup>११</sup>; तै२, ६, १; छां८,  
३, ३; सुबा २९<sup>१२</sup>; सी २७९<sup>१३</sup>;  
रुह २९९<sup>१४</sup>; २प्र ३४: ११९<sup>१५</sup>;  
गार४०६: ११<sup>१६</sup>; -क्तानि शां ३, १.

१निर्-वचन<sup>१७</sup>- -नम् महा ५, २६.

२निर्-वचन<sup>१</sup>- -नम् मै ५, ७; मैत्रि  
६, ७.

निर्/वप, > वापि, निर्वपेत् १संन्या  
१, १<sup>१८</sup>; २संन्या १५: ५; कुं २;  
कश्रु २, ३.

निर्वापयेत् शि ७, ७१.

निर्वर्तयत्, निर्वर्त्य निर्/वृत् द्र.

निर्/वह<sup>१९</sup>

निर्-उह<sup>२०</sup> वृ ३, ९, २६.

निर्/वह(वहने)

निर्-वहिवृ- -ता छां ८, १४, १.

निर्/वा

निर्-वाण<sup>२१</sup>- -णः ब्र२; निर्वा२९७:  
३; महा ४, १११; १संन्या २,  
५६; अन्न १, १९; २, ३२; अन्नि  
३९; २योत २, ४; त्रिता २,  
३६; ५, १; शा १०; स्व ६१:  
११; शि ४, २९; ६, १७६; १९४.

निर्वाण-काल- -ले लु २३.

निर्वाण-चक्र<sup>२२</sup>- -कम् सौ ३, १.

निर्वाण-दर्शन- -नम् निर्वा  
२९८: १७.

निर्वाण-निर्वृति- -तिः महा२, ३८

निर्वाण-पद- -दम् त्रिबा २,  
१६६; २अव ३३८: ९.

निर्वाण-पर(म>)मा- -माम्  
गी ६, १५.

अ) बस. । उप. \*रममर्\* (=भाप.) यद्र. । b) पदानुक्रमेतिर्विभक्तिकः संकेतः द्र. । c) 'निष्कलम्' इति  
आन. । d) 'निष्कलम्' इति निसा. संटि. । e) प्राय. =नैवेद्यशेष- । व्यु. ? < / मल् \*निवेदने पाधा. उसं. ।  
f) यनि. अकर्मकात् घा. इच्छाऽविषयेऽपि सन् प्र. उसं. (पा ७, ४, ५७) । g) तैश्चा १०, १, १३ । h) भाप.  
=निर्मोचन- । i) तु. टि. निरिच्छु- । j) =वैदाङ्गविशेष- । k) °क्तः इति मुपा. यनि. शोधः द्र. । l) बस. ।  
m) 'कुर्यात्' इति अज्या. । n) अर्थः? सं. गताविति । o) वैतु. रामा. < / ऊहू तर्के इति (तु. सस्थ. प्रति/वहू  
प्रत्युह) । p) पा ८, २, ५० ।



निर्वाण-प्राप्ति-पद्धति- -तिः  
त्रिन्ना २,६९.  
निर्वाण-मण्डल<sup>१०</sup>- -लम् सु  
१,१,३४.  
निर्वाण-म(य>)यी-  
निर्वाणमय-संविद्- -विदम्  
मैत्रे १,४,१०.  
निर्वाण-मार्ग- -गौ सार २९१:  
१७.  
निर्वाण-मोक्ष- -क्षम् तारा ८४:  
९.  
१ निर्वाण-रूप<sup>b</sup>-  
निर्वाणरूपि(न्>)णी- -णी  
अञ्ज ५, ८६.  
२ निर्वाण-रूप<sup>c</sup>- -पः हंपो ४.  
निर्वाण-वत्- -वान् अञ्ज ५,  
११४.  
निर्वाण-सुख-रूप-  
निर्वाणसुखरूप-वत्- -वान्  
ते ३,४०.  
निर्वाण-सूचक- -कम् योरा १६.  
निर्वाण(ण-अ)नुशासन- -नम्  
सुबा २; ५-७; १०; ११;  
१३-१६; आरु ५; स्क १५;  
अध्या ७०.  
निर्वाणो(ण-उ)पनिषद्<sup>११</sup>- -दम्  
निर्वा २९७ : १.  
निर्-वात- -ते २योत २,६.  
निर्-वास(ना>)न- -नः वरा ४,२३;  
-नम् अञ्ज ५,६२; सु २,२,२०.  
निर्वासन-ता- -तया अञ्ज ४,६०.  
निर्वासन-मनस- -नाः अञ्ज ४,२५.  
निर्-विकल्प,ल्पा- -ल्पः गौ २,३५;  
ना २; ब्रवि ९७; त्रिवि १,११;  
२,१६; श २०; १संन्या २,५८;  
कुं २५; २७; १आ १; २आ ३;  
महा ४, १०३; १०९; १२८;

अध्या १६; वरा ५, ५५; सर  
३, २५; २९; कृपु १; वउ २,  
२८; -ल्पम् मैत्रे १,४,१०; ब्रवि  
८; ९; वसू २३; ते १, ६; योचू  
७२; अञ्ज ४,६९<sup>d</sup>; अध्या ६२;  
त्रिता ५,८; ९; वरा २,४५; सौ २,  
१२; अवि ८,९; -ल्पस्य गौ ३,  
३४; -ल्पा महा ५,१०३; अध्या  
४४; -ल्पे महा ५,५५; अञ्ज २,  
२७; जाद ७,१३; सौ २, १३;  
-ल्पेन कालि ४०२:२२; चक्र १०.  
निर्विकल्प-चिद्-आभास- -सः  
१संन्या २,२१.  
निर्विकल्प-ता- -ता महा ६,२९.  
निर्विकल्प-पद- -दम् महा ६,८२.  
निर्विकल्प-मनस- -नाः अञ्ज ४,२५.  
निर्विकल्प-समाधि<sup>१२</sup>- -धिता नि  
५४; महा २, ७६; १संन्या २,  
५३.  
निर्विकल्पसमाधि-तस(>:)  
अञ्ज ४,६२.  
१ निर्विकल्प-स्वरूप<sup>b</sup>-  
निर्विकल्पस्वरूप-वत्- -वान्  
ते ३,४१.  
निर्विकल्पस्वरूपा(प-आ)त्मन्-  
-स्मा ते ४,७५.  
निर्विकल्पस्वरूप-ज्ञ- -ज्ञः  
१संन्या २,५८.  
२ निर्विकल्प-स्वरूप<sup>c</sup>- -पः ते ३,६.  
निर्विकल्पा(ल्प-आ)त्मन्- -त्मना  
अध्या ६४; सर २,७.  
निर्-विकल्पक- -के त्रिता १, ३२.  
निर्-विकार,रा- -रः ते ३, ६; ५,  
७१; ब्रवि ९८; नाप ३,६४; त्रिन्ना  
२,१३; महा ४,८३; पप ४१९:  
१३; अञ्ज ५, १००; १आ १<sup>o</sup>;  
अध्या ४३; वरा २,४९; ८१; गौ

१८,२६; -रम् त्रिवि ७,१७; म  
१,२,१३; योशि २,१७; ३,२१;  
नाउ ३,२; सि १,६; वउ ४,६;  
-रया १संन्या २, २६; -रे महा  
४,१२२; अध्या २२.  
निर्विकार-ता- -तया ते १,३७.  
निर्विकार-स्वरूप-  
निर्विकारस्वरूपा(प-आ)त्मन्-  
-स्मा ते ४,६४.  
निर्विकारस्वरूपिन्- -पिणः  
आबो २५.  
निर्-विकारिन्<sup>१</sup>- -रिणम् सु १,१,३.  
निर्-विघ्न- -घ्नः वृउ ३,७<sup>d</sup>.  
निर्-विचार,रा- -रः मैत्रे ३, १०;  
-रा योसू १,४४.  
निर्विचार-वैशारद्य- -द्ये योसू १,४७  
निर्-विचिकित्स- -स्ते अध्या ३४.  
निर्-वित(र्क>)र्का- -र्का योसू १,४३.  
निर्/विद्(ज्ञाने)  
१ निर्-विद्य वृ ३, ५, १<sup>३</sup>; अञ्ज ४,  
३८<sup>२</sup>; शा २४<sup>२</sup>.  
निर्/विद्(लाभे), १<sup>४</sup> निराविन्दन् वृपू  
१, १; वृजा १, १.  
निर्-विण्ण- -ण्णाः पित्र १,४.  
२ निर्-विद्य सार २८८: १८.  
निर्-वेद<sup>१५</sup>- -दः सार २७९: १;  
-दम् सुं १, २, १२; नाप १; गौ  
२, ५२; -दात शु १,४.  
निर्-वेदन<sup>१६</sup>- -नेन सुबा ३.  
निर्-वि(द्या>)द्य<sup>१</sup>- -द्यः अव्य ५.  
निर्-विभाग- -गः १संन्या २,५०.  
निर्-विश(ङ्गा>)ङ्ग- -ङ्गम् छ २२<sup>१</sup>.  
निर्-विशेष- -षम् त्रिवि ४,१<sup>३</sup>; योशि  
३, १६; -वे अध्या २२; २४;  
कर ३२.  
निर्विशेष-प्रणव- -वः सिसि ३८२:  
१४.

a) उपनिषद्विशेषयोः समाहारे द्वस. । b) कस. । c) वस. । d) वा. क्रिवि. द्र. । e) 'निर्मिमानः' इति  
आन. । f) तु. टि. निरिच्छु- । g) °गनः इति निसा. । h) ऋ १०,१२९,४ । i) उप. विद्या- < / विद् (ज्ञाने) यद्र. ।  
j) °ङ्कः इति आन. ।

निर-विष- -यम् लां २१५: १०; व  
४६५: ८.

निर-विषय- -यः त्रिता ५, १; -यम्  
गौ ४, ७२; मै ४, ४, ११; मैत्रि  
६, ३४; मैत्रे २, २; ब्रवि २, ३;  
मं ५, १, १; स्क ११; त्रिता ५,  
१; ३; शा १; भव ३, १४; अवि  
२, ३; सांस् ६, २५; -यस्य ब्रवि  
३; अवि ३.

निर/वृ(वरणे)

निर-वृत्त-

निर्वृत्त-स्व- -स्वम् मैत्रि ६, २२.

निर-वृत्ति- -तिः महा ४, ७; जाद  
१०, १२; भव १, ७; -तेः महा  
३, १२; अज २, ४१.

निर्वृत्ति-कारि(न>)णी- -णी  
यो १, ८७<sup>b</sup>.

निर/वृत्त, >वर्ति, निरवर्तत छां ३,  
१९, १; वृ १, २, २.

निर्वर्तयेत् कश्च १, १.

निर-वर्तयत्- -यन् १ संन्या १, १<sup>o</sup>;  
शा १८<sup>d</sup>; -यन्तः आश्र ३<sup>f</sup>.

निर-वर्त्य वृजा ३, १७; नाप १, २;  
४, ३८<sup>f</sup>; भ २, २.

निर-वृत्त- -त्तः मैत्रि ६, ३०; २ प्र  
३५: १४.

निर-वृत्त्य नाप ३, ९; ५, १<sup>o</sup>.

१ निर-वैर- -रेण नाप ५, ३८.

२ निर-वैर- -रः नाप १<sup>g</sup>; गौ ११, ५५.

निर-व्याधि-

निर्व्याधि-व(म<sup>h</sup>)त्- -व(म<sup>h</sup>)न्तः  
सूता १, १९.

निर-व्यापार-

निर्व्यापार-स्वरूप-

निर्व्यापारस्वरूप-वत्- -वान् ते  
३, ४४.

निर-वृत्त- -णम् १ योत ३२.

निर-व्री(डा>)ड-

निर्व्रीड-स्व- -स्वम् मै ३, ५; मैत्रि  
३, ५<sup>i</sup>.

निर/हन्, निर्हन्ति सूता १, ८;  
निर्जहि<sup>j</sup> वृ ६, ४, २३.

निर-घात<sup>k</sup>-

निर्घात-पात- -तात् व ४५६:  
१६.

नि/ली, निलयन्ताम् व ४५९:  
१७९<sup>k</sup>.

निलय- -यः वरा ५, ५४; -ये त्रिता  
१, ४.

निलयन- -नम् तै २, ६, १; छाग  
२५: ४<sup>l</sup>.

नि/वप्, निवपन्तु वृप् २, ८९<sup>l</sup>.

निवर्तक- -निवर्तिषुम् नि/वृत्त द्र.

नि/वस्(निवासे), निवसते त्रिता ४,  
३१; निवसति वरा ५, २६;

सार २२६: १३; निवसन्ति

सार २५५: १४; २७९: २३;

निवसेत् नाप ७<sup>m</sup>; भ २, ३०<sup>n</sup>;

निवसेः नाप ४, ३८<sup>m</sup>; १ संन्या

२, ६१<sup>n</sup>.

निवसिष्यसि गौ १२, ८.

नि-वसत्- -सताम् भ २, १७;

-सन् महा ६, ३४; सार २२७:

१६; -सन्तः सार २४३: १६.

नि-वास- -सः सुबा ६; गौ ९, १८.

नि-वात- -तम् १ योत १४२; -ते मैत्रि  
६, २२.

निवात-दीप-

निवातदीप-वत् अध्या ३५.

निवातदीप-सदृश- -शम् त्रिजा  
२, १५८.

निवात-स्थ- -स्थः गौ ६, १९.

निवात-स्थित-दीप-

निवातस्थितदीप-वत् मं २, ३,  
१; पै ३, १; सर ३, २९.

निवार्य नि/वृ (आच्छादने) द्र.

नि/विद्(ज्ञाने), >वेदि, निवेदयामि

जाबा ३; सि १, २; वड ६, ३१;

निवेदय जाबा ७; न्यवेदयत

राप् ४, २६; निवेदयेत् द १७;

शि ६, ५; ७; १०; १८; १९; २४;

३१; ३५; ५३; ८१; २४५; २४७;

२५०; ७, २४; २५; रा ४२५:

१७; सुसु ९.

निवेदयीत शि ६, २२; २४;

२३०.

नि-विद्<sup>o</sup>- -विदा, विदि वृ ३, ९, १.

नि-वेदन- -नम् वड ६, २७; -ने

शि ६, ३१; २६४; वड ६, ११.

नि-वेदयत्- -यन् त्रि १२.

\*नि-वेदया-

\*निवेदयाम(म्/अ)स्(भुवि),

निवेदयामास जाबा ८.

नि-वेदयित्वा<sup>p</sup> शि ६, ८९; ९९;

१०२; २०९.

नि-वेदित- -तम् शि ६, ४६.

नि-वेदि(न>)नी- -न्या वड ६, १२

नि-वेद्य वृजा ६, १; शि ६, १७; २७;

२८; ३३; ७१; ८८; १००; १०१;

२०२; २०४; २३७; २४८;

२५१; २६३; सुसु ८; १६; १७;

वड ६, ३; २१; २४; २६.

नि-वेद्य-

नैवेद्य<sup>q</sup>- -द्यम् मं २, २, ५; भा

३७; भ २, ३; २४; आपू ५; शि

१, २७; ६, १; ४४; ७, ७७; सिशि

३८३: ६; सुसु १६.

नैवेद्य-फल-ताम्बूल- -लेषु

वड ६, ३१.

a) = आच्छादने इति MW. ? लक्ष्याऽभावात् । b) °रणा इति अज्या । c) 'निवर्तयेत्' इति अज्या । d) 'निवर्तयन्' इति अज्या । e) 'निर्वर्त्य' इति अज्या । f) प्रास । g) वस । h) पा. ? यनि. शोधः । i) °र्वा<sup>o</sup> इति सात । j) घा. गतौ वृत्तिः द्र. । k) ऋ १०, ८४, ७ । l) ऋ २, ३३, ११ । m) 'निवसेत्' इति अज्या । n) 'निवसेत्' इति सुपा. यनि. शोधः । o) घा. वृत्तिः पुनर्विभ्रुया । p) पा ७, १, ३८ ।



नैवेद्य-भूत<sup>१</sup>-

नैवेद्यभूत-बलिदानादि-

सुस्थ-षड्-अङ्ग<sup>१</sup>- ज्ञानि तारा  
८४: १.नि/विश्व>वेशि, निवेशय महा ५,  
१६६; गी १२, ८; निवेशयेत्  
नाप ६, १; यो २, ४१; शि ६,  
१६१; १७२.नि-विशमा(न>)ना- ना सार  
२७६: १०.नि-विद्य मना २, ७०<sup>५५</sup>.नि-विष्ट-ष्ट: मना २, ६९<sup>१०५५</sup>;  
मुद्र ३५<sup>५</sup>; हे १०; -ष्टम् स्व ६१:  
१२.निवेशन(न>)नी- नी मना १, १०<sup>५५</sup>नि-वेशयत्- -यन् व ४३७: ६५<sup>५</sup>.नि-वेशयित्वा<sup>१</sup> मैत्रि ६, १९.नि-वेशित- -तस्य मै ४, ४, ९; मैत्रि  
६, ३४; भव ३, ३१.नि-वेद्य त्रिवा २, ४१; ४५; महा  
१, १; अक्ष ४; अध्या ९.नि/वृ(आच्छादने<sup>१</sup>), >वारि, निवारय  
आरु ३५<sup>५</sup>; नाप ४, ३८<sup>५५</sup>; पप  
४१८: ३१५<sup>५</sup>; निवारय-निवारय  
दत्ता २<sup>३</sup>; व ४५६: १३.निवारय<sup>१</sup>निवारय-पद-द्वय- -यम् रार  
२, ७८.नि/वृत्त>वर्ति, निवर्तते मै ४, ३;  
मैत्रि ४, ३; मैत्रे १, ४, २; वृजा  
२, १३; ससा १, ६; १अव १९;  
भव १, ४२; सांका ५९; गी २,  
५९; ८, २५; निवर्तन्ते तै २, ४,  
१; ९, १; छां ५, १०, ५; ८, ४, १;ध्या १५; नाप ९, २०; शा १७<sup>५५</sup>;

व ३, १६; वृजा ८, ६; वृपू ५,

२०; तै १, २०; २१; शां २, १५<sup>५५</sup>;

महा ४, ५७; अक्ष २, ३३; ५,

१२; कर्ह ३१; कुं २२; सांका ३९;

गी ८, २१; ९, ३; १५, ६; नि-

वर्तन्ति गी १५, ४; निवर्तस्व

व ४६२: १८; निवर्तते गौ १,

१७; भव ४, १६.

निवर्तते के ३, ६; १०.

निवर्तय सु १, १, २८; निवर्तयेत्

गौ ३, ४३; वरा ५, ३४; इ १६:

६; ७.

नि-वर्तक- -कम् मै ४, २; १आ ५.

नि-वर्तितुम् गी १, ३९.

नि-वृत्त- -त्त: आबो १२; अक्ष १,

१६<sup>५</sup>; -त्तम् भव ५, ६; ७; -त्तस्य

गौ ४, ८०; महा ४, ४०; -त्तानि

गी १४, २२.

निवृत्त-प्रसव(व&gt;)वा- -वाम्

सांका ६५.

नि-वृत्ति- -त्ति: अध्या २९; वृजा

१, १; सांस् ३, ६९; -त्तिम् गी

१६, ७; १८, ३०; -त्ते: गौ १,

१०; सांस् १, २; -त्तौ शां १, १;

-त्त्या पाशु २, ३६.

निवृत्ति-कारण- -णम् त्रिता २, ६

निवेदन-, निवेदयत्, \*निवेदया-,

निवेदयित्वा, निवेदित-, निवेद्य,

निवेद्य- नि/विद्(ज्ञाने) द.

नि/व्ये>वी<sup>१</sup>नि-वीत<sup>१</sup>

निवीतिन्- -तिना शि ५, ५०;

-ती शि ५, ५१.

नि/शम्

नि-शम्भ मं २, २, २.

निशा<sup>१०</sup>- -शा गी २, ६९<sup>५</sup>; -शायाम्  
छां ४, १, २; यो १, ५६; राधा ४,  
१; कालि ४०३: १८; तारा ८४:  
१३.निश<sup>११</sup>- निशा<sup>१२</sup>सार २२४: ७; निशि  
महा ४, १८; ५, ७८; सु २, २, ४०;  
पा ९, ८; सार २२४: ६; २८६:  
८; शि ५, १४; ब्रसू ४, २, १९.निशा-कर<sup>१३</sup>- -र: मै ४, ४, १२;  
मैत्रि ५, १.निशाकर-चतुर्मुख-दिग्-वाता-  
(त-अ)र्क-वरुणा(रा-अ)द्वय-  
(श्वि-अ)सी((मि-इ)न्द्रो(न्द्र-उ)-  
पेन्द्र-प्रजापति-यम<sup>१४</sup>- -मा:  
त्रिवा १, ८<sup>५</sup>.निशीथ<sup>१०</sup>- -थम् सार २२४: ८; -थे  
वृजा ४, ५; दे २२; सार २४१:  
१६.नि/शुच्(दीप्तौ), निशोचति छां ७,  
११, १.निशुम्भ<sup>१५</sup>-निशुम्भा(म्भ-अ)प(ह>)हा-  
-० हे व ४६६: १.

नि/शु&gt;शीर्

नि-शीर्ष नी २, ६५<sup>५</sup>.नि/शो>शि<sup>१</sup>

नि-शित-

निशिता- -वा क १, ३, १४.

निशित-धार- -रेण त्रिवा २,  
२२.निशिता(त-अ)ङ्कुश- -श:  
नाद ४५.

a) पूष. उप. चौमे कर्तृपदे द. (तु. अ ८, २, ४०)। b) कस. >सस. >कस. °सुस्थ° > °मुक्ष्य° इति सुपा. कोष्यः शोषः?। c) तैआ १०, ३६, १५। d) तैआआ १०, ६९<sup>१०</sup>। e) तैआ ३, १४, १ (तु. वैप २, ५६४ दि.; वैतु. सा. अन्यथा मन्वानः)। f) अ १, २२, १५। g) अ १, ३५, २। h) पा ७, १, ३८। i) या. वृत्तिः पुनर्विमुखा। j) आपमं २, ९, ५। k) बौध २, १०, १७, ३२। l) तु. गपू. २४६b। m) तैआ ८, ४, १। n) पा ६, १, १५। o) व्यु. ? = रात्रि-। p) पा ६, १, ६३। q) वृ १ सत् किंवि. द.। r) = चन्द्रमस-। s) °यमादवा° इति अज्या. संदि.। t) व्यु. ? = दानवविशेष-। u) मा १६, १३। v) पा ७, ४, ४१।



निशिता(त-अ)सि-शत-पा-  
तन-नम् महा ४,२६.  
नि(स्)श्/चर, निश्चरति गौ ६,  
२६; निश्चरन्ति मैत्रि ६,३२.  
निश्-चरत्-रत् गौ ३,४५.  
नि(स्)श्-चल, ला-लः गौ ३,२२;  
४,८; ते ६,८८; ब्रवि ९७; योचू  
८९; त्रिब्रा २,३७; अञ ५,५४;  
जाद ७,१०; लम् गौ ३,४५;  
ते १,६; ६,९२; योशि ६,५८;  
त्रिता ५,२०; वरा ५, ७४; सौ  
२, १८; अबि २१; ला गौ ४,  
८०<sup>a</sup>; १योत १३९; २योत २,  
१; गौ २, ५३; लाम् अचि  
१६; ले योचू ८९; लेन महा  
४,७५; वरा २,५६.  
निश्चल-ज्ञान-नम् आपू २.  
निश्चलज्ञान-संयुत-तः २अव  
३३८: ५<sup>b</sup>.  
निश्चल-तारा<sup>c</sup>-रया शां १,७,१५.  
निश्चल-त्व-त्वम् मं १, १, ३;  
२,२,५; आपू ५.  
निश्चली/भू  
निश्चली-भाव-वः त्रिब्रा २,  
३१.  
निश्चलीभाव-धारणा-  
णाम् २अव ३३७: ८<sup>d</sup>.  
नि(स्)श्/चि(ज्ञाने), निश्चिनुते ते  
५,४१; निश्चिनु ते ३,२०; ५,  
१६; १७; ३१; ४२; ५०; ५२;  
५४; ५५; ५८; ७४; १०५.  
निश्चियते ते ५,४६<sup>e</sup>; ८५.  
निश्-चय-न्यः वृजा ५,१२; १४;  
ते ४,३; २९; ३८; ५, १४; ६,  
१००; महा २, ६९; ५, ९२;

६, ५४-५८; ६०; अञ ५,  
१९<sup>f</sup>; सार २३१: ७; २३६:  
१५; गु ८३; भव २,६७; -यम्  
ते ४, ३८<sup>g</sup>; ३९; महा ६,७८;  
१संन्या २, १; अञ २, ३४; सर  
३,१०; यो १, १८; गौ १८, ४;  
-यात् मं १, ४, ३; -येन मं ३,  
१,३; स्व ६२: ४; गौ ६, २३.  
निश्चय-ज्ञान-नम् मं २,२,५.  
निश्चयज्ञान-संयुत-तः  
त्रिब्रा २,१६४.  
निश्चय-शून्य-न्यः ते ४,४७.  
निश्चया(य-आ)त्मक-कम् ते  
१,५०.  
निश्चयी/कृ  
निश्चयी-कर्तुम् पै २,५३.  
निश्-चित, ता-तः गौ १,२२; महा  
२,३४; योशि १,१२०; शि ७,  
३८; सिशि ३८३: १०; -तम्  
गौ ३, २३; मैत्रे २, १५; ते ५,  
५४; १योत ४६<sup>h</sup>; १४३; २योत  
२,६; योचू ८२; ८३; त्रिवि १,  
१; वा ३१; योरा १४; गौ २;  
७; १८, ६; ता महा ४, ६८;  
अञ १, ५०; वरा २,११; ताः  
गौ १,१४; ३,१७; गौ १६,११.  
-तायाम् गौ २,१८.  
निश्-चितवत्-वान् महा ४,१२७.  
निश्-चित्य नि ५४; ते ६,१०४;  
१०७; नाप २; ५, १; त्रिवि ८,  
१३; अता ९; महा ६,३४; अञ  
२,३५; ४,३५; ५,५७; पत्र २;  
रुह ४८; यो ३,२०; गौ ३,२.  
नि(स्)श्-चित्त-तः महा २,६१.  
नि(स्)श्-चित्तन-नम् आपू १.

नि(स्)श्-चिन्ता-न्ता मं २,२,५.  
नि(स्)श्-चे(ष्टा)ष्ट-ष्टः वरा  
२,८१.  
१नि/श्वस्, निश्चसेत् अना १४<sup>i</sup>.  
१नि-श्वास-साः अञ ४,१२.  
निश्वासो(स-उ)च्छ्वास-सः  
ते ६,६.  
निश्वासो(स-उ)च्छ्वास-कास-  
सः(१साः<sup>j</sup>) शां १,४.  
२नि<sup>k</sup>/श्वस्  
नि-श्वासित-तः ब्रवि १९; -तम्  
वृ २, ४,१०; ४,५, ११<sup>l</sup>; मैत्रि  
६, ३२<sup>j</sup>; सुबा २; नापू ५,४०;  
-तानि<sup>k</sup> वृ २,४,१०; ४,५, ११.  
२नि-श्वास-  
निश्वास-भूत-ताः मु १,१,९.  
नि(स्)श्-श(क्का)क्क-  
निश्शक्का(क्क-आ)नन्द-मोक्ष-सा-  
त्राज्य-चिन्तामणि-फला-  
(ल-अ)नन्त<sup>l</sup>-न्तैः सि ६,२१.  
नि(स्)श्-शेष-  
निश्शेषी/कृ  
निश्शेषीकृत-  
निश्शेषीकृत-रक्तबीज-दनु-  
(ज)जा-जेव ४६६: १.  
१निषङ्गथिः(१थिः<sup>m</sup>) नी २,१३.  
नि/ष(<स)ञ्ज  
नि-षक्त-कम् वृ ४,४,६.  
नि/ष(<स)द, नि...सत्सि २प्र ३६:  
२२४<sup>n</sup>.  
१निषसाद ह १५; सर २, ७;  
१निषेदुः श्वे ४, ८; मना १, १;  
वृपू ४, ९; ५, ९; वृजा ६, १२;  
राउ ५, २९; गु ५३.  
नि-षण्ण-णः द ८; कृपु २४.  
नि-षाद<sup>o</sup>-दाः सुबा २.

a) 'निश्चलम्' इति संदि. । b) 'लं जा' इति संदि. । c) उप. = कनीनिका- । d) 'वं धारणा' इति संदि. ।  
e) 'निश्चयम्' इति अज्या. संदि. । f) 'अनुच्छ्वसेत्' इति आन., 'इवा' इति अज्या. । g) पा. १ यनि. शोधः द्र. ।  
h) मूलतः निस् इत्यस्य सतः विसर्गलोपः (पावा ८, ३, ३६) । i) निः इति आन. संदि. । j) निः इति JC. ।  
k) विः इति निसा. । l) कस. > पस. । m) पा. १ यनि. शोधः द्र. (तु. मा १६, १०) । n) इति आन., JC. ।  
o) अ ६, १६, १० । o) अ ८, १००, १० । p) अ १, १६४, ३९ । q) व्यु. १ = पञ्चमवर्णोपचरित- । वैपश् यद्र. ।

नि/वि(<सि)ञ्च्, निषिञ्चेत् वृ ६,  
३, ७-१२.

१°नि-षिक्त- -क्तम् मना २, २; व  
४६१: १८.

नि/वि(<सि)ष्

नि-षिद्ध- -द्धे १योत १४१<sup>b</sup>; २योत  
२, ४; ६; -द्धै: १योत १४२.

नि-षेध- -ध: नाप ६, १५; योशि १,  
१८; पाशु २, २३.

नि-षेधन- -नम् ते १, ३२.

नि/वे(<से)ष्, निषेवेत जा १; राउ  
१, १; ता १, १.

निषेव्यन्ते सु २, २, १२.

निष्क<sup>१०</sup>- -ष्क: छां ४, २, २; ४; -ष्कम्  
छां ४, २, १; ३.

नि(स्)>ष्-करु(णा)>ण-

नैष्कारुण्य- -ण्यम् मैत्रि ३, ५<sup>d</sup>.

नि(स्)>ष्-कर्मन्-

नैष्कर्म्य- -र्म्यम् अज २, ५; गोपू  
१४; भव १, ५२; गी ३, ४; -र्म्येण  
सु २, २, २०.

नैष्कर्म्य-सिद्धि- -द्धिम् गी  
१८, ४९.

निष्कर्म-ता- -ताम् सार २९२: ५.

निष्कर्म-मार्ग-

निष्कर्ममार्गिन्- -र्गिणः सार  
२३६: १७.

निष्कर्ममार्गीय- -यः सार  
२९०: ५.

नि(स्)>ष्-कल, ला- -लः ब्रवि ३३;  
३७; ३८<sup>१</sup>; ३९; ९८; महा २,  
६१; १संन्या २, २१; कुं २५; २आ  
३; -लम् सुं २, २, ९; ३, १, ८;  
श्वे ६, १९; ब्रवि ८; २१; कै २, ४;  
ब्र १; ध्या ३२; ब्रवि १७; २०;

५४; १योत ८; १७; २३; १३९;  
रार ५, ४; शां ३, १<sup>१</sup>; योशि १,  
५; १९; २०; ३, २१; अज ३,  
२४; त्रिता ५, ८; २०; म १, १;  
२, ३; स ३७९: १५; अवि ८;  
२१; -लस्व रापू १, ७; -ला ध्या  
८; ब्रवि ३७; -लाम् गु ३७; ७३;  
-लाय गोपू ४२; -ले ध्या ८; ब्रवि  
३९; १आ ३०.

निष्कल-ता- -ताम् ब्रवि १९.

निष्कल-प्रवृत्ति- -त्ति: निर्वा २९७:  
३१<sup>१</sup>.

निष्कल-रूप-

निष्कलरूपि(न्)>णी- -णी

महा ५, १०१.

निष्कला(ल-आ)स्मक- -क: अज ४,  
१९.

निष्कला(ल-आ)स्मन्- -स्मा ते ४,  
६८.

नि(स्)>ष्-कलङ्क, क्का- -ङ्क लां  
२१४: १५; -ङ्क: ना २; त्रिवि  
१, ११; -क्का अज ५, ५५.

नि(स्)>ष्-कलङ्कमय- -य: ते ३, ४३

नि(स्)>ष्-कलमप- -प: त्रिता १,  
४६<sup>१</sup>; भव ४, १८.

नि(स्)>ष्-काम, मा- -म: बृ ४, ४, ६;

मैत्रि ६, ३०; ब्र १; वृ ५, १-३;

सुवा १३; रार ४, ३; गोउ २; भव

३, १६; -मम् भव ५, ७; -मस्य

वृपू ५, २१<sup>१</sup>; -मा महा ६, ७३;

-मानाम् सौ १, ३; -मेन गोउ ३६.

निष्काम-स्व- -स्वम् मैत्रि ६, ३०.

निष्काम-रूप-

निष्कामरूपिन्- -पी १आ ११.

नि(स्)>ष्-का(म्य)>म्या- -म्या

गोउ २०; -म्या: गोउ १९.

नि(स्)>ष्-कीलि(त)>ता- -ता  
काम ८<sup>१</sup>.

नि(स्)>ष्/कृ, निष्कुर्म: छाग २५:  
१६.

निष्-कृति- -ति: मना २, ७९<sup>१</sup>;

-ते: शा २६; -तौ वि २७.

नैष्कृतिक- -क: गी १८, २८<sup>१</sup>.

नि(स्)>ष्/कुन्त(वेदने),

निष्-कृत्य कशु १, १<sup>१</sup>; २, २<sup>१</sup>; ३<sup>१</sup>.

नि(स्)>ष्/कृष्

निष्-कृत्य कर १<sup>१</sup>.

नि(स्)>ष्-केवल-

निष्केवल-ज्ञान- -नम् निर्वा २९७:  
३.

नि(स्)>ष्/कम्, >काम्, निष्का-  
मति वृ ४, ४, २.

निष्-कम्य नाप ५, १५; इ १०: ५;

कशु १, १<sup>१</sup>; २, २.

निष्-कान्त- -न्त: १संन्या २, ६१;

भव १, १५; -न्तम् मै ३, ४; मैत्रि

३, ४; मैत्रे १, ३.

निष्-क्रान्ति- -न्ति: योच ९०.

नि(स्)>ष्-क्रिय, या- -य: ब्रवि ९७;

अध्या ४९; कुं २५; १आ १;

२आ ३; -यम् श्वे ६, १९; त्रिवि

७, ५०; शां २, १; ३, १<sup>१</sup>; अध्या

६२; म २, ३; -यस्य सांसु १,

४९; ५, ७६; -याणाम् श्वे ६, १२;

ब्र ३, ८<sup>१</sup>; गु ७०; -याम् गु ७३;

-यायाम् १आ २७; -ये १आ ३०.

निष्क्रिय-ता- -ता महा ६, २९.

निष्क्रिय-धामन्- -म आबो ५.

नि(स्)>ष्/ट(<त)ञ्, निष्टतञ्:

मना २, १२, ३१<sup>१</sup>.

a) तैश्चा १०, १, १६। b) °द्धम् इति निसा.। c) वैपश् यद्र.। d) वैका° इति मै ३, ५। e) °कुल°  
इति निसा. सुपा. यनि. शोध: (तु. अज्या.)। f) तस.। पूप. = ५न°.। g) 'निष्कल:' इति अज्या. संटि.।  
h) = अकी°-। i) तैश्चा १०, ६३, १। j) 'नैष्कृतिक:' इति आन. संटि.। k) 'छित्वा' इति अज्या. संटि.। l) 'निष्कृत्य'  
निष्कृत्य' इति अज्या. संटि.। m) 'निष्क्रम्य' इति अज्या. संटि.। n) 'सर्वभूतान्तरात्मा' इति निसा., 'यायाम्',  
°यणी इति अज्या. संटि.। o) ऋ ४, ५८, ४।



नि/ष्ठा (&lt;स्था)

नि-ष्ठा- -ष्ठा छां ७, २०, १; द १;  
महा २, ११; राधा १, २; गी ३,  
३; १७, १; १८, ५०; -ष्ठाम्  
छां ७, २०, १; शा २६; ३०;  
३३.

नैष्ठिक-कः आश्र १; -कम्  
शा २६; शि ६, १९२.

नैष्ठिकी- -कीम् गी  
५, १२.

नैष्ठिक-व्रत- -तम् शि ५,  
२७.

निष्ठा-वत्- -वान् महा ३, ५१;  
नि-ष्ठाय<sup>१</sup> वृ ६, ४, ९-११; २१.

नि/ष्ठिव् > छीव्<sup>२</sup>, निष्ठीवेत् छां २,  
१२, २.

निष्ठुर-

निष्ठुर-ता- -ताम् २कौल ११.

नि/ष्ठा (&lt;स्था)

नि-ष्ठात्- -तः मैत्रि ६, २२; ब्रवि  
१७; त्रिता ५, १७; अवि १७.

नि(स्)>ष्/पद्, >पादि, निष्पाद्यते  
भव ३, २९.

निष्-पत्ति- -तिः १योत २०; वरा  
५, ७२; -त्तौ सौ २, १०.

निष्पत्ति-भूमिका- -का वरा ५,  
७५.

निष्-पक्ष, बा- -भम् गौ ३, ४६;  
-ब्बाः १योत १२९<sup>३</sup>.

नि-स्पन्द- -न्दम् महा ६, १७.

निष्पन्द-भावो(व-उ)त्तर- -रम् शां  
१, ७, १६<sup>४</sup>.

नि(स्)>ष्-परिग्रह- -हः जा ६; नाप  
३, ७५; ८६; ६, ३३; -हाः वृष ६,  
४; मि १२; या २, १<sup>५</sup>; सार  
२८३; ११.

नि(स्)&gt;ष्/पीड

निष्-पीड्य १योत १३१; २योत  
१, ३.

नि(स्)>ष्-प्रपञ्च- -ञ्चाय नि १.

नि(स्)>ष्-फल- -लम् अध्या २९;  
जाद २, १६<sup>६</sup>; वरा ३, २३; इ  
१४; १५; १७; १७; का ७; शि  
६, ४१.

नैष्कल्य- -ल्यम् सांस् ५, १७<sup>७</sup>.

निस्-तरङ्ग-

निस्तरङ्ग-समुद्र-

निस्तरङ्ग-समुद्र-वत् मं २, ३, १.

निस्तरङ्गा(ङ्ग-अ)द्वैता(त-अ)पार-

निरतिशय-सच्चिद्-

आनन्द-समुद्र- -द्रः त्रिवि  
८, ५.

निस्-तु(ला)&gt;ल-

निस्तुल-दक्षि-रूप-वस्तु-मात्र-  
-त्रः आबो १.

निस्-तृ(ष्णा)>ष्ण- -ष्णः सौ २, २.

निस्-तृ&gt;तीर्

निस्-तीर्थ शा १८<sup>८</sup>.

निस्-त्रैगुण्य- -ण्यः गी २, ४५.

निस्त्रैगुण्य-पद- -दः आबो ५.

निस्त्रैगुण्य-स्वरूपा(प-अ)नुसं-  
धान- -नम् निर्वा २९८; १२.

नि-स्पन्द- -न्दात् गौ ४, ४९<sup>९</sup>; ५१.

निस्पन्द-ता- -ता भव १, ४५.

नि-स्पृह- -हः ब्रवि ९८<sup>१०</sup>.

नि-स्तुति- -तिः गौ २, ३७.

निस्-सार- -रे सुबा ८.

निस्-सु

निस्-सु(त)>ता- -ता वपं ३१२;  
१८.

नि(स्)>:-स्तोत्र- -त्रः अन्न ५, १००.

निस्-स्था>तिष्ठ, निस्तिष्ठति छां

७, २०, १; २१, १<sup>१</sup>; निस्तिष्ठन्ति  
छां ६, ९, १.

निस्-तिष्ठत्- -ष्ठन् छां ७, २०, १.

नि/हन्, निहन्ति योशि १, ९२; यो  
१, २५; ३१; निहन्मि महा ६,  
२७.

नि-हत्- -ताः गी ११, ३३.

नि-हृत्य वृ ४, ४, ३; ४; मैत्रि ६,  
२८; राष्ट्र ४, २४; वरा २, ६५;  
गी १, ३६.

नि-हित- नि/धा द्र.

नि/हृ

नी<sup>१२</sup>-हार<sup>१३</sup>- -रः छां ३, १९, २.

नीहार-धूमा(म-अ)र्का(र्क-अ)-

नला(ल-अ)निल- -लानाम् श्वे  
२, ११<sup>१४</sup>.

नीहार-वेला- -लायाम् शि ६,  
२१३.

नीहार-हार-घनसार-सुधाकरा-  
(र-आभ)>भा- -भाम् सर  
१, ४.

नि/हु, निहुते गौ ३, २६; निहुयात्  
मैत्रि ४, ६.

नि/हे, निहये व ४३७; १२४<sup>१५</sup>.

नि-हव- -वः छां १, १३, २.

✓नी, >नाथि, नेनीय, नयते छां ६, ८,  
५; गौ १, २३; नयति प्र ३,  
५; ७; १०; ४, ४; छां ४, १५, ३<sup>१६</sup>;

मै २, ७; गर्भ २; ब्र १<sup>१७</sup>; सुबा

११; महा ४, ६८; अक्षि १७;

इ ११; १; १५; १५; ८; सार

२४१; ९; २६८; १८; २०;

२६९; ११; ब्रस् ४, ३, १५;

नयन्ते छां ६, ८, ३; नयन्ति सुं

१, २, ५; अन्न ४, १३; सार २६८;

१२; १३; २८७; १९; २९२; २;

a) 'निष्ठाप्य' इति आन. संदि. । b) पा ७, ३, ७५ । c) व्यु. ? । d) °जा इति निसा. । e) पूष. निस् इत्यस्य सतः विसर्गलोपः (पावा ८, ३, ३६) । f) °प्य इति अज्या. । g) °हः इति अज्या. । h) °लः इति अज्या. संदि. । i) नैःफ इत्यपि पाभे. । j) तिती इति निसा. ? । k) °न्दम् इति संदि. । l) 'निस्स्पृहः' इति अज्या. । m) पा ६, ३, १२२ । n) वैपश् यद्र. । o) °निलानला इति आन. । p) ऋ १०, १०१, १ ।



नयसे व ४६०: १८९<sup>a</sup>; नयाते  
बा ५; नय ई १८९<sup>b</sup>; वृ ५, १५,  
१९<sup>b</sup>; नाद २१; अञ्ज ५, ११७;  
वरा २, ४६; व ४३७: ५;  
४६४: २०; नयेत् घ्या ३९;  
१संन्या २, ५९; ७७; अञ्ज १,  
३१; सर ३, ३१; गी ६, २६.  
नीयते १आ १८; १९; नीयेत्  
त्रिता ५, १३; अवि १३.  
अनीनयत् सं ३, २, २.  
१नेनीयते १शिसं ६; २शिसं ५.  
नय<sup>१</sup>- -य: ते ४, २७.  
नय-कोवि(द>)दा- -दा: सार  
२३०: १३.  
नयत्- -यन् शां १, ७, १३; भव ३,  
१६.  
नयन<sup>१</sup>- -नम् १कौल ३: ४; -नात्  
वृजा ७, ८; रुजा ३, १; वड ३,  
१८; -ने वड ३, ३९; -नेभ्य:  
सिशि ३८१: २२.  
नयनो(न-उ)ज्ज्वल-ज्वाला-  
सहस्र-परिवृ(त>)ता- -०ते  
व ४३१: ११.  
नायक- -का: गौ४, ९८; गी१, ७<sup>०</sup>;  
-काय व ४३४: १३.  
नीत, ता- -त: छां ८, ६, ४; मै २,  
१०; -तम् अध्या ६५; -ताम्  
त्रिता २, ४४.  
नीति<sup>१</sup>- -ति: सी ३१; गी १०,  
३८; १८, ७८.  
नीति-मत्- -मत् अचि १७.  
नीत्वा ते १, ५०; योचू १०७; अता  
९<sup>६</sup>; महा ४, ९३; अञ्ज ४, १५;

त्रिता २, ३८; वरा २, ४८; शि  
७, ९६; भव १, ५०.  
नीयमान, ना- -ना: क १, २, ५; सुं  
१, २, ८; मैत्रि ७, ९; -नासु क  
१, १, २; -नेत्रिता ५, १३<sup>b</sup>; अवि  
१३.  
नेत्- -ता मैत्रि ६, ७; १आ १.  
नेत्र<sup>१</sup>- -त्रम् ते ५, ४७; पाशु २, ४१<sup>१</sup>;  
सूता १, ३०; -त्रयो: वृजा ४,  
१३; रार २, ८४; म १, ६; व  
४२६: ८; -त्राभ्याम् शां १, ५;  
जाद ५, ६; वरा ५, ३३; -त्रे नाप  
६, १; योचू ७४; सौ २, ३; सार  
२६५: ४; -त्रेण ते ५, ४६; -त्रै:  
सार २६०: १९.  
नेत्र-कृपा-कटाक्ष- -क्षै: सार  
२४४: १४.  
नेत्र-चपल- -ल: या २, १८.  
नेत्र-त्रय- -त्राय शु १, १८; लां  
२१३: १०; वपू २, २.  
नेत्र-द्वन्द्व- -न्द्वे जाद ६, ३०<sup>१</sup>.  
नेत्र-द्वय- -द्वयम् योशि ५, २१.  
नेत्र-रोग- -गा: जाद ६, ३१.  
नेत्र-श्रम- -म: घ्या ९३, १२.  
नेत्र-स्थ- -स्थम् व ३, १३<sup>६</sup>;  
नाप ५, १.  
नेत्र-हाव-भाव-कटाक्ष-संव-  
लित-काम- -रस-भाव-भेद-  
-दानि सार २२८: १०.  
नेत्रा(त्र-आ)दि-रहित- -त:  
मैत्रि ३, १४.  
नेय- -य: महा ६, ४४.  
नी(नि/इ)न्येति वृ ४, ३, ३६; ४, १.

१न्याय<sup>१</sup>- -य: लि ३१०: ७<sup>m</sup>;  
१कौल ५: २<sup>m</sup>; २कौल ६<sup>m</sup>; -येन  
भव ५, १३.  
२न्याय<sup>१n</sup>- -य: सुवा २; २आ  
२; अवि ५; -येन ते ५, ८७.  
न्याय-विस्तर- -र: नापू ५,  
३६.  
न्याय-पूर्वक- -कम् गौ २, ३.  
न्याया(य-अ)र्जित- -तस्य शां  
१, २०.  
न्यायार्जित-धन- -नम् जाद  
२, ७.  
न्याय<sup>१p</sup>- -व्यम् ते ३, ५३; गी  
१८, १५.  
नीच<sup>१</sup>- -च: महा ३, २७; -चै: यो ३,  
२१; जाद २, १६; २प्र ३६: १०.  
नीच-ता- -ताम् महा ५, १२७.  
नीच-यति- -ति: नाप ६, ७.  
नीच-शय्या(य्या-आ)सन- -न:  
शि ७, १४.  
नीड<sup>१q</sup>-  
नीडा(ड-आ)भि-मुख- -खम् पै २, ४३  
नीर<sup>१s</sup>- -रम् योशि ४, १५; -रै:  
१संन्या १, १<sup>६</sup>; कश्रु १, १<sup>६</sup>.  
नीर-द-  
नीरदा(द-आभा>)म- -मम्  
पं ३.  
नी(<निर्)-रन्ध्र- -न्ध्रम् महा ४,  
११३<sup>३</sup>; अञ्ज १, २२.  
नी(<निर्)-रस, सा- -स: अचि ३;  
-सम् अञ्ज २, ९; -सा: योचू ६८;  
महा ३, ४४; पा २, १०.  
नी(<निर्)-राम- -म: ते ३, ४२<sup>१</sup>; अञ्ज  
५, ९२; -मम् महा ५, ६७; ७०;

a) ऋ १०, ८४, ३। b) ऋ १, १८९, १। c) 'लीयेत' इति अज्या.। d) मा ३४, ६। e) 'कान्' इति  
SCHR. पाभे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। f) 'मति:' इति SCHR. पाभे. [वैतु. वे. (NIA २, २३१)]। g) 'तीर्त्वा'  
इति अज्या. संटि.। h) 'मिचमाने' इति अज्या. संटि.। i) 'नेत्र' इति अज्या. मुपा. यनि. शोध: द. (तु. निचा.)।  
j) 'न्द्वम्' इति अज्या. संटि.। k) 'त्रे स्थम्' इति अज्या. संटि.। l) =अग्नेष- (पा ३, ३, १२२)। m) सस्व.  
न-न्याय- इति वस. इति कृत्वा गपू. (पृ ६८) निर्देशे विवेक: सुवच:। n) =न्यायशास्त्र-। o) 'वचन' इति अज्या.।  
p) पा ४, ४, ९२। q) वैपश् यद्र.। r) तु. टि. गपू. १७३८। s) व्यु? =जल-। t) भूयस: पाभे. कृते तु. अज्या.  
संटि.। u) 'अधु:ख' इति अज्या.। v) 'निराग:' इति अज्या. संटि.।

६,७३; सु २,२,२३.  
नीराग-चेतस- -तसः अज ५,२४.  
नीराग-ता- -ताम् वरा २,४८.  
नी(<नि)/राज  
नी-राजन<sup>१</sup>- -नैः पी ४२२ : १६.  
नी(<नि)-रुज- -जः १संन्या २,९३.  
नी(<नि)-रोग-  
नीरोग-ता- -ताम् जाद ६,२५.  
नीली<sup>२</sup>- -लः छां ८, ६, १; श्वे ४, ४;  
-लम् छां १, ६, ५, ६; ७, ४<sup>३</sup>; वृ  
४, ४, ९; ते ४, २५; -लस्य छां  
८, ६, १; वृ ४, ३, २०; सुबा ४.  
नीली<sup>३</sup>-  
नीली-युक्त- -क्तम् त्रिता ३,  
२१.  
नील-कण्ठ<sup>४</sup>- -ण्ठम् कै १, ७; मं १,  
४, १; श १४; -ण्ठाय वृजा ४,  
३२; त्रिवि ७, ४७; -ण्ठेन नी ३,  
४०.  
नीलकण्ठ-न्यक्षरी-गरुड-  
पञ्चाक्षरी-मन्त्र- -न्त्रौ त्रिवि  
७, ३८.  
नीलकण्ठे(एठ-ई)इवर- -रः गोउ  
२३<sup>५</sup>.  
नील-ग्री(वा)>व<sup>६</sup>- -वः सूता १,  
१२९<sup>०</sup>; नी ३, १; ३<sup>१</sup>; -वम् नी १,  
१; २; २, १९<sup>६</sup>; -वाय म १, ६.  
नील-जीमूत-संकाश- -शम् नापू  
४, २१.  
नील-जीमूत-संनिभ- -भम् ध्या  
९५.  
नील-तोयद-मध्य- -स्थ>स्था-  
-<sup>७</sup>स्था मना २, १३, २१<sup>१</sup>; कालि

४०३ : ४; वा २२<sup>१</sup>.  
नील-स्व- -स्वम् महा ५, ५२; योशि  
४, १५.  
नील-द्युति- -ति मं १, २, ८.  
नील-मणि<sup>१३</sup>- -णिना सार २३९ : २.  
नीलमणि-पुष्प-संवलित- -ताः  
सार २८१ : २१.  
नील-लोहित- -तः म २, ३०; स  
३७८ : २; -तम् वृपू १, १२ स  
३७८ : १.  
नील-वर्ण- -र्णः व ४३९ : १९;  
४४० : ६; ४४२ : २३; -र्णम्  
ध्या ९३, ५; -र्णे वि ७.  
नील-शिखण्ड<sup>१</sup>- -ण्ड नी ३, ६<sup>१</sup>;  
-ण्डाय नी २, ४९<sup>६</sup>; ३, ९<sup>१</sup>.  
नीला(ल-अ)प्र-नासिका-वक्त्र-  
-क्त्रम् गरु ५.  
नीलि(मन्)>मा-  
नीलिमा-सत्य- -स्ये ते ६,  
७६.  
नीलो(ल-उ)व्यल- -लैः रा ४२४ : ५.  
नीलोव्यल-दल-इया(म)>मा-  
-माः शि ४, २६.  
नीली<sup>१</sup>-  
नील-चेतस- -तसम् योरा  
१७.  
नीली<sup>१३</sup>-  
नील-मुख्य- -ख्यैः रापू ५, ७.  
नीला(ल-आ)दि- -दि रार ३, १;  
-दिभिः रापू ४, ३९.  
नीली<sup>१३</sup>- -लम् कौ ३, १९<sup>०</sup>.  
नी(ल)>ला<sup>१३</sup>- -ला सी १८; कालि  
४०१ : १०; श्या १२.

नीला(ल-आख्य)>ख्या- -ख्या  
तारा ८३ : ४.  
नी-वार<sup>१३</sup>-  
नीवार-शूक-  
<sup>१३</sup>नीवारशूक-वत् मना २, १३,  
२; वा २२; नाउ १, १९; कालि  
४०३ : ५.  
नीहार- नि/ह द्र.  
नु<sup>१</sup> के २, १; क २, २, १४; प्र ४, १; सुं  
१, १, ३; ऐ १, १; ३<sup>१</sup>; छां १, ४,  
३; ३, १९, ३<sup>१३</sup>; वृ १, ३, ८;  
मना १, ३९<sup>१</sup>; कौ ४, १८; महा  
४, १३२.  
✓नु, <sup>१३</sup>नोनूमः अशि ४, २०; वद  
३१६ : १३.  
नुति- -तिभिः वपं ३१२ : २०.  
✓नुद्, >नुनुत्स, नुनुत्सते कौ ३, ९९<sup>१</sup>.  
नुदमान- -नाः मना २, ४१<sup>१३</sup>.  
नुब<sup>१</sup>- -बेषु शौ ५१ : २.  
नूतन, ना<sup>१</sup>- -नः सार २७७ : १; -नाः  
सार २२३ : ९; -नानि सार  
२७० : १३; २८६ : २२; -नाम्  
सार २७९ : ११.  
नूतन-प्रतिमा- -मायाम् दे २२.  
नूतन-स्वा(स्व-आ)विर्भाव-  
रतो(त-उ)ह(व)>वा- -वा  
सार २८६ : २०.  
नूत, ला<sup>१</sup>- -लः सार २२८ : १३;  
-लम् सार २२८ : १२<sup>३</sup>; १३<sup>३</sup>;  
-ला सार २२८ : १२; -लाः सार  
२३७ : २२; -लानि सार २३७ :  
१६.  
नूनम्<sup>१</sup> के २, १; छां ४, १४, २;

a) =वर्णविशेष- । वैप१ यद्र. । b) पा ४, १, ४२ । c) °लशिखण्डेन इति JC. । d) °ण्ठविश्वे°  
इति आन. । e) मा १६, ७ । f) °लागलशीलाः इति आन., °लागलसाला इति JC. । g) 'नीलग्रीवः' इति मा  
१६, ७ । h) तैआ १०, ११, २ । i) °स्थाव इति मुपा. यनि. शोधः (तु. तैआ १०, ११, २) । j) °ण्डेन इति आन. ।  
k) 'नीलग्रीवाय' इति मा १६, ८ । l) व्यु. ? =शुद्ध- । m) वैसं. । n) व्यु. ? =बाधना- ? । o) °ले इति शांआ ५, १ ।  
p) व्यु. ? =देवीविशेष- । q) वैप१ यद्र. । r) अव्य. । वैप१ यद्र. । s) तु. गपू. ५७g । t) मा ३२, ९ । u) ऋ  
७, ३२, २२ । v) 'अधो निनीषते' इति शांआ ५, ८; आन.; 'नदत्सते' इति अव्य. संटि. । w) 'लघुमाणाः ?'  
इति तैआ १०, ३९, १ (तु. सा. प्रष्ट.) मुपा. यनि. सु-शोधः । x) पा ८, २, ५६ ।



अशि ३, ४९<sup>a</sup>; नृप २, १७९<sup>b</sup>; ते  
१, ४६; शां १, ७, २५; महा ३,  
८; अन्न १, २४; अक्षि २६.

नृपुर<sup>३०</sup> - राभ्याम् सार २६५: १४.  
नृ<sup>३</sup> - नरः व ४६०: १४९<sup>३</sup>; अनरा

वृ २, ५, १६९<sup>३</sup>; ना नृप २, १३;  
नृणाम् मना २, ७६९<sup>३</sup>; ध्या २;  
नाप ५, २३; योच ६६; ७०; पै  
२, ५०; महा ४, १३२; योशि १,  
३०; ३, २४; जाद २, ५; शि  
१, ६; भव १, २८; ३०; २, ६४;  
३, १०; नृषु गी ७, ८; नृणाम्  
प ९; गोच ६८: २४; भव १, ३;  
५, १.

नृ-केसरि<sup>३</sup> - रिम् नृप १, १०<sup>b</sup>.

नृ-चक्षस् - क्षसम् मना २, ५१९<sup>३</sup>;  
-क्षा: वा ४; २५.

नृ-प<sup>३</sup> - ०प भव २, १; ७; ५९; ३,  
२९; ५, १६; -प: महा २, २८;  
शि ६, ९१; १३१; -पा: शि ७,  
१२२; -पाणाम् शि ६, १५६;  
भव ५, १३; -पेषु महा ४, ३४;  
-पै: शि ३, १.

नृप-नन्दन - ०न भव ३, ८.

नृप-श्रेष्ठ - ०ष्ठ भव १, ७.

नृप-सत्तम - ०म भव २, १७;  
२०; ६०; ६२; ५, १४.

नृपे(प-इ)न्द्र - ०न्द्र भव २, २७.

नृपो(प-उ)त्तम - ०म त्रिवि ७,  
४०; रार २, ८१; रापू ४, १५;  
भव १, ३२.

नृ-पति - ०ते मना २, ७६९<sup>३</sup>.

नृ-लोक<sup>३</sup> - के गी ११, ४८.

नृ-शंस<sup>३</sup> - साय श ३३.

नृ-शृङ्ग -

नृशृङ्ग-वत् सांसू १, ११४; ५, ५२.

नृ-वृद्ध - वत् क २, २, २; मना २,  
१२, २; २, ४०; नृपू ३, ६; नाप  
५, १; त्रिता ४, २७; वपू २, ३.

नृ-सिंह<sup>३</sup> - ०ह स्क १३; -ह: नृपू  
२, १३; ४, १५, १-३२; नृउ २,  
११; ४, ४<sup>३</sup>; ६; ५, १<sup>३</sup>; २<sup>३</sup>; ३; ८,  
१; ९, २; शु २, ५; रापू ४,  
५६; अव्य ७; नृष ८५: ९; पा  
७, २; -हम् नृजा ६, १; नृपू २, ६;  
१३<sup>३</sup>; ९<sup>३</sup>; नृउ ५, ३; ६, १;  
७, २; त्रिवि ७, ४०; श ४; अव्य  
२; वपं ३१२: ११; व ४५७:  
१३; -हाय नृपू ४, १३; पा ६,  
१०; -हे नृउ ५, १-३.

नृसिंह-गायत्री - त्री नृपू ४,  
१३; -त्रीम् नृपू ४, २.

नृसिंह-स्व - स्वात् नृउ ७, ९<sup>३</sup>.

नृसिंह-बीज<sup>३</sup> - जम् ऊ ६३: १०

नृसिंह-मन्त्र-राज(ज-आ) -

नुष्टुभ - मन्त्र - न्त्र: रार ३, १.

नृसिंह-माला-मन्त्र - न्त्र:

त्रिवि ७, ३३.

नृसिंह-सुदर्शन-ब्रह्म-गायत्री -

मन्त्र - न्त्रा: त्रिवि ७, ३९.

नृसिंह-हयग्रीवा(व-आ)नुष्टु-

भ - मन्त्र - न्त्रौ त्रिवि ७, ४०.

नृसिंहा(ह-आय) - चा - चा:

सार २५८: १.

नृसिंहा(ह-आ)नान्दिन् - न्दी

नृष ८५: १२; १३.

नृसिंहा(ह-अ)नुष्टुभ - न्दुभा

नृउ ६, १; २.

नृसिंहा(ह-अ)वतार - राय नापू

५, ९.

नृसिंहे(ह-ए)का(क-अ)क्षर -

युक्त - कम् त्रिवि ७, ३४.

नृत्, नृत्यति ध्या २३, ११; योशि ६,  
२८. नृत्यन्ति गोउ २२; नृत्यन्तु  
स्व ६१: १८.

नर्त(क>)की - की सांका ५९.

नर्तकी-वत् सांसू ३, ६९.

नृत्त - नृत्त नाप ६, ३२<sup>३</sup>.

नृत्त-शालिन् - लिने गोपू ४०<sup>३</sup>.

नृत्य - नृत्यम् सार २२५: ३; -नृत्यत्  
सांका ५९.

नृत्य-क -

नृत्यक-व(त>)ती<sup>३</sup> - नृत्या  
सार २३७: २३.

नृत्य-कला(ला-अ)भि(ज्ञ>)-

ज्ञा<sup>३</sup> - ज्ञा सार २४२: २२.

नृत्य-क्रीडा-प्रयोग - नेण शि  
६, १४२.

नृत्य-गीत<sup>३</sup> - ते क १, १, २६.

नृत्य-प(र>)रा<sup>३</sup> - रा सार  
२३४: ८; २८४: १४.

नृत्य-(स्थ>)स्था - स्थाम् शि  
६, ११९.

नृत्यत् - नृत्यन्तम् वरा २, ३२.

नृत्यन्ती - नृत्य: सार २३२: १९.

नेतृ - नेत्र - नृनी द.

नेदिष्ट<sup>३</sup> - ष्टम् के ४, २; ३; -ष्टय  
सांसू ५, १०१.

नेदीयस्<sup>३</sup> - नय: आपे ८: ११.

नेदीयसी -

नेदीयसि-त(म>)मा<sup>३</sup> - मा:

आपे ८: २३; ९: १.

नेमि<sup>३</sup> - मि: कौ ३, ९; सु २९४:  
२; -मिना सु २९४: २.

नेय - नृनी द.

नैक - पन<sup>३</sup> द.

नैगम - नि<sup>३</sup> गच्छ, गम् द.

नैत्यक - नित्य - द.

a) ऋ ८, ४८, ३। b) ऋ १, ४०, ५। c) व्यु: = पादभूषण-विशेष-। d) वैप १ यद.। e) ऋ १०,  
८४, १। f) ऋ १, ११६, १२। g) ऋ २, १, १। h) °रिविग्रहम् इति निसा.। i) तैआ ३, १५, १। j) उस. उप.  
<✓/पा रत्तणे। k) उस. उप. <✓/शंस हिंसायाम्। l) ऋ ४, ४०, ५। m) = अवतारविशेष-। n) 'नृत्यम्'  
इति अब्बा. संति.। o) नृत्य° इति आन.। p) नृत्त° इति निसा.। q) पा ६, ३, ४३।



नैधुवि- निधुव- द्र.  
 नैमित्तिक- निमित्त- द्र.  
 नैरन्तर्य- निरन्तर- द्र.  
 नैरपेक्ष्य- निरपेक्ष- द्र.  
 नैरात्म्य- निरात्मन्- द्र.  
 १-२नैर्ऋत- निर्ऋति- द्र.  
 नैवेद्य- नि/विद(ज्ञाने) द्र.  
 नैऋयसिक- निऋयस्- द्र.  
 नैष्कर्म्य- निष्कर्मन्- द्र.  
 नैष्कारण्य- निष्कारण- द्र.  
 नैष्कृतिक- निष्कृति- द्र.  
 नैष्ठिक- नि/ष्टा द्र.  
 नैष्फल्य- निष्फल- द्र.  
 नो ५नं- द्र.  
 नौ<sup>१६</sup>- नावम् वृ ४, २, १; नाप ६, १;  
 १संन्या २, ९६<sup>७</sup>; गी २, ६७;  
 नावा मना २, १<sup>३</sup>; ९<sup>०</sup>; त्रिता १,  
 ७९<sup>६</sup>; व ४३० : ७९<sup>०</sup>; ४६१ :  
 ७९<sup>०</sup>; १२९<sup>६</sup>; नौः महा ४, १०६.  
 नौ-(क>)का-  
 नौका-रस-कल्लोह- -काम्याम्  
 सार २४७ : २३.  
 नौका-व(व>)ती<sup>१</sup>- -ती सार  
 २६९ : ८.  
 नौ-कूळ- -ले पा ८, ९.

न्येत<sup>०</sup> व ४२७ : १७.  
 न्यग्रोध<sup>१६</sup>-  
 न्यग्रोध-फल- -लम् छां ६, १२, १.  
 न्यग्रोधा(ध-अ)न्त-निवासिन्-  
 -सिनम् द १४.  
 न्यर्बुद<sup>१६</sup>- -दम् २शिसं १३९<sup>६</sup>; १४.  
 न्य(नि/अ)स्(क्षेपणे), न्यासि, न्यसेत्  
 द ७; रार २, ४०; ६१;  
 ८३; रापू ४, ४; भ १, ६; सौ  
 १, १; शि २, ३; ६, ७६; ७८<sup>३</sup>;  
 ७९; ८४; १४७; गुषो ४२० :  
 १; ३<sup>३</sup>; ४; ६; ७; १०; ११; ४२१ :  
 २; ३<sup>३</sup>; ५; ७; चक्र ७; ८; षो  
 ३; ४; ६; ९; ११; १३; १५;  
 २२; हंषो ९; १०; १५; १७;  
 भव ५, १०; वपू ३, १<sup>३</sup>.  
 न्यासयेत् १संन्या २, २.  
 न्य(नि-अ)सन- -नम् वृष ८५ : ११;  
 १४; गुषो ४२१ : ७; पी ४२२ :  
 १९; -नात् वृष ८५ : १२; -नेन  
 रा ४२३ : १३; १४<sup>३</sup>; १६.  
 न्य(नि-अ)स्त- -स्तः शि ७, १०६;  
 -स्तम् वि १६; वपू २, ३.  
 न्यस्त-हृदय- -यः वा २१<sup>१६</sup>.  
 न्य(नि-अ)स्य त्रिवा २, ९३; रार २,

८३; यो २, ४६<sup>७</sup>; षो २३; हंषो  
 १४.  
 न्य(नि-अ)स्य- -स्यानि वृष ८५ :  
 ६; ११.  
 न्या(नि-आ)स- -सः मना २, ७८<sup>३</sup>;  
 ७९<sup>६</sup>; द ४; ६; ९; ११; सर  
 २, १-१०; सूता २, २; गुषो  
 ४२१ : ७; पी ४२२ : २०;  
 -सम् मना २, ७९<sup>६</sup>; वपू २, ५;  
 गी १८, २; -सान् रार २, ७१.  
 न्यास-ध्याना(न-आ)दिक-  
 -कम् रार २, ५१.  
 न्यासो(स-उ)पयोग- -गः सूता  
 ३, ११.  
 १-२न्याय- -न्याय्य- नी(नि/इ) द्र.  
 न्यु(नि/उ)ञ्ज  
 न्यु(नि-उ)ञ्ज- -ञ्जम् वि ३०.  
 न्यू<sup>१६</sup>-  
 न्यू<sup>१६</sup> न्यू<sup>१६</sup>यन्ति शौ ५२ : २१.  
 न्यू<sup>१६</sup>यिष्यन्ति शौ ५२ : १९.  
 न्यू<sup>१६</sup>यत्- -यन्तः शौ ५२ : २०.  
 न्यू(नि-ऊ)न<sup>१६</sup>- -नम् बुद, ४, २४; त्रिवा  
 २, ५५; शां १, ४<sup>१</sup>; गोचद ८ : १४.  
 न्ये(नि-आ)इ  
 न्ये(न्या-इ)त् वृ ४, ४, १.

इति वैदिकपदानुक्रमकोष औपनिषदे तृतीये विभागे

प्रथमः खण्डः समाप्तः

a) वैपश् यद्र. । b) 'यानम्, भावम्' इति अज्या. संटि. । c) ऋ १, ९९, १। d) ऋ ५, ४, ९। e) 'तन्मे'  
 इत्यस्य गुहाजपार्श्वो विपर्यासः । f) सा १७, २ । g) 'यपुण्ड्र' इति निसा. मुपा. यनि. शोधः द्र. (तु. अज्या.) ।  
 h) 'स्तव' इति अज्या. । i) तैआ १०, ६२, १<sup>१</sup> । j) तैआ १०, ६३, १ । k) प्रास. । l) 'अन्यूनम्' इति निसा. संटि. ।